CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) NTA

राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET)

दर्शनशास्त्र

प्रश्न पत्र : II

परीक्षा ज्ञान कोश

व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र

संपादक
ए. के. महाजन
लेखन सहयोग
अशोक तिवारी (एम.ए., दर्शनशास्त्र)

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
बालकृष्ण, चरन सिंह, विनय साहू

संपादकीय कार्यालय
यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स
12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002
मो. : 9415650134
Email : yctap12@gmail.com
website : www.yctbooks.com

प्रकाशन घोषणा
सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने रूप प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित करवाकर, यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स, 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।
इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सहयोग और सुझाव सादर अपेक्षित है
किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

मूल्य : 695/-

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

विषय-सूची

दर्शनशास्त्र

भाग-1

- यू. जी. सी. NTA नेट दर्शनशास्त्र नवीन परीक्षा पाठ्यक्रम ---------- 3-4
- यू. जी. सी. NTA नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2021/जून-2022 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 5-28
  (परीक्षा तिथि : 14.10.2022)
- यू. जी. सी. NTA नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2020/जून-2021 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 29-51
  (परीक्षा तिथि : 20.11.2021)
- यू. जी. सी. NTA नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2020/जून-2021 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 52-72
  (परीक्षा तिथि : 20.11.2021)
- यू. जी. सी. NTA नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जून-2020 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 73-88
- यू. जी. सी. NTA नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2019 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 89-102
- यू. जी. सी. NTA नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जून-2019 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 103-116

भाग-2

- यू. जी. सी. NTA नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2018 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 5-17
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जुलाई-2018 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 18-31
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा नवम्बर-2017 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 32-39
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा नवम्बर-2017 : तृतीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 40-49
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जनवरी-2017 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 50-57
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जनवरी-2017 : तृतीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 58-68
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जुलाई-2016 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 69-76
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जुलाई-2016 : तृतीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 77-85
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2015 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 86-92
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2015 : तृतीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 93-101
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जून-2015 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 102-108
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जून-2015 : तृतीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 109-117
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2014 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 118-123
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2014 : तृतीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 124-132
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जून-2014 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 133-138
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जून-2014 : तृतीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 139-147
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2013 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 148-154
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2013 : तृतीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 155-162
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जून-2013 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 163-169
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जून-2013 : तृतीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 170-177
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2012 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 178-183
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा दिसम्बर-2012 : तृतीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 184-191
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जून-2012 : द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 192-198
- यू. जी. सी. नेट दर्शनशास्त्र परीक्षा जून-2012 : तृतीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 199-208

असिस्टेंट प्रोफेसर

- राजस्थान लोक सेवा आयोग कॉलेज लेक्चरर-2014 दर्शनशास्त्र प्रथम प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 209-232
- राजस्थान लोक सेवा आयोग कॉलेज लेक्चरर-2014 दर्शनशास्त्र द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 233-249
- मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग असिस्टेंट प्रोफेसर-2017 दर्शनशास्त्र व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र ---------- 250-276
- राजस्थान लोक सेवा आयोग असिस्टेंट प्रोफेसर-2020 दर्शनशास्त्र प्रथम प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 277-300
- राजस्थान लोक सेवा आयोग असिस्टेंट प्रोफेसर-2020 दर्शनशास्त्र द्वितीय प्रश्न-पत्र व्याख्या सहित हल ---------- 301-320

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी NTA नेट दर्शनशास्त्र : नवीन पाठ्यक्रम

इकाई–I : पारम्परिक भारतीय ज्ञान मीमांसा और तत्व मीमांसा

■ **वैदिक एवं औपनिषदिक :** ऋत – विश्व व्यवस्था, दैवी एवं मानवीय परिक्षेत्र, यज्ञ (बलि) संस्थान की केन्द्रीयभूतता, सृष्टि सिद्धान्त, आत्मा, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तुरीय, ब्रह्म।

■ **चार्वाक :** प्रत्यक्षमात्र प्रमाण, अनुमान एवं शब्द की समीक्षा, उपोत्पाद के रूप में चेतना।

■ **जैनदर्शन :** सत्ता (Satta) की अवधारणा–सत्, द्रव्य, गुण, पर्याय, जीव, अजीव, अनेकांतवाद, स्याद्वाद तथा नयवाद, ज्ञानमीमांसा।

■ **बौद्धधर्म :** चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, ब्राह्मण एवं श्रमण परम्परा में भेद, प्रतीत्य समुत्पाद, क्षणभंगवाद, अनात्मवाद। बौद्धदर्शन के सम्प्रदाय, वैभाषिक, सौत्रांतिक, योगाचार माध्यमिक तथा तिब्बती बौद्धदर्शन।

■ **न्याय :** प्रमा तथा अप्रमा, प्रमाण के सिद्धान्त, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द। हेत्वाभास। ईश्वर की अवधारणा। बौद्ध और न्याय की प्रमाण व्यवस्था तथा प्रमाण संप्लव के विषय में विवाद। अन्यथाख्याति।

■ **वैशेषिक :** पदार्थ की अवधारणा तथा इसके प्रकार, असत्कार्यवाद, कारण के प्रकार, समवायि, असमवायी, तथा निमित्त कारण, परमाणुकारणवाद।

■ **सांख्य :** सत्कार्यवाद, प्रकृति और उसके उद्भूत, प्रकृति के अस्तित्व की सिद्धि हेतु युक्तियाँ, पुरुष का स्वरूप, पुरुष के अस्तित्व और बहुलता के लिए युक्तियाँ, पुरुष और प्रकृति के बीच संबंध, निरीश्वरवाद।

■ **योग :** पतंजलि द्वारा प्रतिपादित प्रमाण का सिद्धान्त, चित्त की अवधारणा और चित्तवृत्तियाँ, चित्तभूमियाँ, योग में ईश्वर की भूमिका।

■ **पूर्व-मीमांसा :** प्रामाण्यवाद : स्वतःप्रामाण्यवाद तथा परतःप्रामाण्यवाद, श्रुति तथा इसका महत्व, श्रुति-वाक्यों का वर्गीकरण, विधि, निषेध और अर्थवाद, धर्म, भावना, शब्द-नित्यवाद, जाति, शक्तिवाद, मीमांसा के कुमारिल एवं प्रभाकर सम्प्रदाय तथा उनके प्रमुख मतभेद, त्रिपुटी – संबित, ज्ञातता, अभाव और अनुपलब्धि, अन्विताभिधानवाद, अभिहितान्वयवाद, भ्रम के सिद्धान्तः अख्याति, विपरीत ख्याति, निरीश्वरवाद।

■ वेदान्तः

■ **अद्वैत :** ब्रह्म, ब्रह्म और आत्मा के बीच सम्बन्ध, सत्ता त्रैविध्य, अध्यास, माया, जीव, विवर्तवाद, अनिवर्चनीय-ख्याति।

■ **विशिष्टाद्वैत :** सगुण ब्रह्म, माया का निराकरण, अपृथकसिद्धि, परिणामवाद, जीव, भक्ति एवं प्रपत्ति, ब्रह्म-परिणामवाद सत्ख्याति।

■ **द्वैत :** निर्गुण ब्रह्म तथा माया का निराकरण, भेद तथा साक्षी, भक्ति।

■ **द्वैताद्वैत :** ज्ञानस्वरूप की अवधारणा, निर्जीव के प्रकार

■ **शुद्धाद्वैत :** अविकृत-परिणामवाद की अवधारणा।

इकाई–II : पारम्परिक पाश्चात्य दर्शन : प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक : ज्ञान मीमांसा तथा तत्व मीमांसा

■ **सुकरात-पूर्व दार्शनिक :** थेल्स, अनेक्सागोरस, अनाक्जमेनीज, आयोनियन्स, पायथागोरस, पारमेनाइडीज, हेराक्लिटस और डेमॉक्रिटस।

सोफिस्ट और सुकरात

प्लेटो और अरस्तू :

■ **प्लेटो :** ज्ञान मीमांसा, ज्ञान और मत, प्रत्यय के सिद्धान्त, द्वन्द्वात्मक पद्धति, आत्मा और ईश्वर।

■ **अरस्तू :** विज्ञानों का वर्गीकरण, सैद्धान्तिक, व्यावहारिक तथा उत्पादक, अन्वीक्षिकी के रूप में तर्कशास्त्र, प्लेटो के प्रत्यय सिद्धान्त की मीमांसा, कारणता का सिद्धान्त, आकार एवं जड़ द्रव्य, संभाव्यता एवं वास्तविकता, आत्मा और ईश्वर।

मध्यकालीन दर्शन :

■ **संत ऑगस्टाइन :** अशुभ की समस्या

■ **संत एन्सेल्म :** सत्तामूलक तर्क

■ **संत थॉमस एक्विनास :** आस्था और तर्कबुद्धि, सार एवं अस्तित्व, ईश्वर का अस्तित्व।

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन

■ **डेकार्त :** दार्शनिक पद्धति की संकल्पना, सत्य की कसौटी, संदेह तथा संशय-पद्धति, 'कोजिटो इर्गो सम', जन्मजात संप्रत्यय, देकार्तवादी द्वैतवाद मन तथा जड़ द्रव्य, ईश्वर के अस्तित्व हेतु प्रमाण, क्रिया-प्रतिक्रिया वाद।

■ **स्पिनोजा :** द्रव्य, गुण व पर्याय, ईश्वर अथवा प्रकृति की अवधारणा, ईश्वर के प्रति बौद्धिक प्रेम, समानांतरवाद, सर्वेश्वरवाद, ज्ञान के तीन स्तर।

■ **लाइबनित्ज :** चिद्णुवाद, तर्कबुद्धि और तथ्य के सत्य, प्रत्ययों की जन्मजातता, ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण, अव्याघात, पर्याप्त कारण और अदृश्यों के अभेद के सिद्धांत, पूर्व-स्थापित सामंजस्य का सिद्धान्त, स्वतंत्रता की समस्या।

■ **लॉक :** प्रत्यय तथा उनका वर्गीकरण, सहज प्रत्ययों का खण्डन, द्रव्य सिद्धांत, प्राथमिक एवं गौण गुणों के बीच अन्तर, ज्ञानमीमांसा, ज्ञान के तीन स्तर।

■ **बर्कले :** प्राथमिक तथा गौण गुणों का खंडन, अभौतिकवाद, अमूर्त प्रत्ययों की आलोचना, सत्ता-दृश्यता, अहंमात्रतावाद की समस्या, ईश्वर और आत्मा।

■ **ह्यूम :** संस्कार एवं प्रत्यय, प्रत्ययों के संबंध से संबंधित ज्ञान तथा तथ्य से संबंधित ज्ञान, आगमन तथा कारणता, वाह्यजगत एवं आत्मा, वैयक्तिक अनन्यता, तत्वमीमांसा का खण्डन, संशयवाद, बुद्धि और वासनाएँ।

■ **काण्ट :** समीक्षात्मक दर्शन, निर्णयों का वर्गीकरण, संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णयों की संभावना कोपर्निकीय क्रान्ति, संवेदन-शक्ति के आकार, बुद्धि-विकल्प, बुद्धि-विकल्पों का तत्वमीमांसीय एवं अतीन्द्रिय निगमन, व्यवहार तथा परमार्थ, तर्कबुद्धि के प्रत्यय – आत्मा, ईश्वर तथा विश्व की समग्रता, परिकल्पनात्मक तत्व मीमांसा का खण्डन।

■ **हेगल :** आत्मा की अवधारणा, द्वन्द्वात्मक प्रणाली, सत्, असत् तथा संभवन की अवधारणा, निरपेक्ष प्रत्ययवाद, स्वतंत्रता।

इकाई–III भारतीय नीतिशास्त्र

■ पुरुषार्थ, श्रेयस तथा प्रेयस की अवधारणा

■ वर्णाश्रम, धर्म, साधारण धर्म

■ ऋण तथा यज्ञ, कर्त्तव्य की अवधारणा

■ कर्मयोग, स्थितप्रज्ञ, स्वधर्म, लोकसंग्रह

■ अपूर्व तथा अदृष्ट

■ साध्य – साधन – इतिकर्त्तव्यता

■ कर्म के नियम, नीतिपरक निहितार्थ

■ ऋत और सत्य

■ योग-क्षेम

■ अष्टांग योग

■ जैनवाद : संवर-निर्जरा, त्रि-रत्न, पंच-व्रत

■ बौद्धवाद : उपाय कौशल, ब्रह्मविहार : मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा, बोधिसत्व

■ चार्वाक का सुखवाद

इकाई–IV पाश्चात्य नीतिशास्त्र

■ प्रयोजनवादी तथा अप्रयोजनवादी सिद्धान्तों में प्रतिपादित शुभ, अधिकार, न्याय, कर्तव्य, दायित्व, मूल सदगुण, आत्म-पूर्णतावाद तथा अन्तःप्रज्ञा की संकल्पनाएँ।

■ अहंवाद, परार्थवाद, सार्वभौमिकवाद

■ व्यक्तिनिष्टतावाद, सांस्कृतिक सापेक्षतावाद, अति-प्रकृतिवाद

■ नैतिक यथार्थ, अन्तःप्रज्ञावाद

■ कांट द्वारा प्रतिपादित नैतिक सिद्धान्त, नैतिकता की पूर्व मान्यताएँ, शुभसंकल्प, निरपेक्ष आदेश, कर्त्तव्य, साधन और साध्य, सूक्तियाँ।

■ उपयोगितावाद : उपयोगिता का सिद्धान्त, नैतिकता को संस्वीकृत करने तथा न्यायसंगत ठहराने की समस्या, उपयोगितावाद के प्रकार, बेंथम, जे.एस. मिल, सिडविक, बर्नर्ड विलियम्स के नैतिक सिद्धान्त।

■ दंड के सिद्धांत

■ नैतिक संज्ञानवाद तथा असंज्ञानवाद, संवेगवाद, आदेशवाद, वर्णनवाद।

इकाई–V समकालीन भारतीय दर्शन

■ **विवेकानन्द :** व्यावहारिक वेदान्त, सार्वभौमिक धर्म, धार्मिक अनुभव, धार्मिक अनुष्ठान

■ **श्री अरविन्द :** विकास, मन एवं अतिमनस, समग्र योग

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

■ **इकबाल :** आत्म, ईश्वर, मानव तथा अतिमानव, बुद्धि तथा अन्तःप्रज्ञा
■ **टैगोर :** मानवधर्म, शिक्षा सम्बन्धी विचार, राष्ट्रवाद की अवधारणा
■ **के सी भट्टाचार्य :** विचारों में स्वराज, दर्शन की अवधारणा, स्वतंत्रता के रूप में ज्ञाता, मायावाद
■ **राधाकृष्णन :** बुद्धि तथा अन्तःप्रज्ञा, जीवन का आदर्शवादी दृष्टिकोण, सार्वभौमिक धर्म की संकल्पना, जीवन के प्रति हिन्दू दृष्टिकोण
■ **जे. कृष्णमूर्ति :** विचार, प्रत्यय, ज्ञात से स्वतंत्रता, आत्म का विश्लेषण, विकल्प विहीन जागरूकता
■ **गाँधी :** सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज, आधुनिक सभ्यता की समीक्षा
■ **अम्बेडकर :** जाति का उच्छेदन, हिन्दूवाद का दर्शन, नवबुद्धवाद
■ **डी डी उपाध्याय :** समग्र मानववाद, अद्वैत वैदान्त, पुरुषार्थ
■ **नारायण गुरु :** आध्यात्मिक स्वतंत्रता और सामाजिक समानता, एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर
■ **तिरुवल्लूर :** तिरुक्कुरल
■ **जोतिबा फूले :** जाति व्यवस्था का महत्वपूर्ण बोध
■ **एम एन राय :** उग्र मानवतावाद, भौतिकवाद
■ **मौलाना आजाद :** मानवतावाद

इकाई–VI समकालीन पाश्चात्य दर्शन

विश्लेषणात्मक एवं महाद्वीपीय दर्शन

■ **फ्रेगे :** अर्थ और संदर्भ
■ **तार्किक प्रत्यक्षवाद :** अर्थ का सत्यापन सिद्धांत, तत्व मीमांसा का निरसन, दर्शन की अवधारणा
■ **मूर :** अर्थ एवं संदर्भ के बीच अन्तर, प्रत्ययवाद का खण्डन, सामान्य बुद्धि के पक्ष में तर्क, बाह्य-विश्व का प्रमाण
■ **रसेल :** तार्किक अणुवाद, निश्चयात्मक वर्णन, प्रत्ययवाद का खण्डन
■ **विट्गेस्टाइन :** भाषा और सत्ता, तथ्य और चीजें, नाम तथा प्रतिज्ञप्ति, निजी भाषा की आलोचना, अर्थ तथा प्रयोग, जीवन के आकार, दर्शन की धारणा, विट्गेस्टाइन का आस्थावाद, ऑन सर्टेंटी
■ **गिल्बर्ट राइल :** योजनाबद्ध भ्रामक अभिव्यक्तियाँ, कोटि-दोष, मन की अवधारणा, देकार्तवादी द्वैतवाद की मीमांसा
■ **ए जे ऐयर :** ज्ञान की समस्या
■ **डब्ल्यू वी ओ क्वाइन :** अनुभववाद की दो हटधर्मिताएँ
■ **एच पी ग्राइस तथा पी एफ स्ट्रासन :** हटधर्मिता सिद्धांतों की रक्षा

संवृत्तिशास्त्र एवं अस्तित्ववाद

■ **हुसर्ल :** सांवृत्तिक पद्धति, दर्शनशास्त्र एक दृढ़ विज्ञान के रूप में, विषय-सापेक्षता, सांवृत्तिक अपचयन, अन्तर्विषयता
■ **हाईडेगर :** मानव-अस्तित्व (डासीन) की अवधारणा, विश्व में सत् के रूप में मनुष्य, प्रौद्योगिकीय सभ्यता की आलोचना
■ **किर्केगार्ड :** सत्य के रूप में आत्मनिष्ठता, आस्था की छलाँग
■ **सार्त्र :** स्वतंत्रता की अवधारणा, गन्दी आस्था, मानवतावाद
■ **मार्ले पोंटी :** प्रत्यक्ष बोध, अन्तर्भूत चेतनता

अर्थक्रियावाद

■ **विलियम जेम्स :** अर्थ तथा सत्य के अर्थक्रियावादी सिद्धान्त, धार्मिक अनुभव के विविध प्रकार
■ **जॉन डी वी :** सत्य की अवधारणा, सर्वनिष्ठ आस्था, शिक्षा

उत्तर आधुनिकतावाद :

■ **नीत्शे :** प्रबुद्धता की समालोचना, शक्ति का संकल्प, नैतिकता की वंशावली
■ **रिचर्ड रॉर्टी :** प्रतिनिधित्ववाद की आलोचना, ज्ञान-मीमांसीय विधि के विरुद्ध, उपदेशात्मक (इडिफायिंग)

दर्शन :

■ **इम्मेनुअल लेविनस :** नैतिकता प्रथम दर्शन के रूप में, 'अन्य' का दर्शन

इकाई–VII सामाजिक तथा राजनीतिक दर्शन : भारतीय

■ **महाभारत :** दण्ड नीति, आधार, राजधर्म, कानून और प्रशासन, राजा युधिष्ठर को नारद के प्रश्न
■ **कौटिल्य :** संप्रभुता, राज्य शिल्प के सात स्तम्भ, राज्य, समाज, सामाजिक जीवन, राज्य प्रशासन, राज्य की अर्थव्यवस्था, विधि और न्याय, आन्तरिक सुरक्षा, कल्याण और विदेश नीति
■ **कामन्दकीय :** सामाजिक व्यवस्था और राज्य के तत्व, संवैधानिक नैतिकता, धर्म निरपेक्षता और मौलिक अधिकार संविधानवाद, पूर्ण क्रांतिवाद, आतंकवाद, स्वदेशी, सत्याग्रह, सर्वोदय, सामाजिक लोकतंत्र, राज्य का समाजवाद, सकारात्मक क्रिया, सामाजिक न्याय
■ **सामाजिक संस्थाएँ :** परिवार, विवाह, सम्पत्ति, शिक्षा और धर्म उपनिवेशवाद

इकाई–VIII सामाजिक और राजनीतिक दर्शन : पाश्चात्य

■ **प्लेटो :** आदर्श राज्य तथा न्याय
■ **लॉक, हाब्स, रूसो :** सामाजिक संविदा सिद्धान्त
■ **एसाय बर्लिन :** स्वतंत्रता की अवधारणाएँ
■ **बर्नार्ड विलियम्स :** समानता का विचार
■ **उदारतावाद : राल्स :** वितरणात्मक न्याय, नॉजिक : पात्रता के रूप में न्याय, डोर्किन : समानता के रूप में न्याय, अमर्त्य सेन : वैश्विक न्याय, स्वतंत्रता तथा सक्षमता
■ **मार्क्सवाद :** द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, परकीयन, पूंजीवाद की आलोचना, वर्ग संघर्ष और वर्गहीन समाज का सिद्धांत
■ **समुदायवाद :** स्व-उदार की समुदायपरक आलोचना, सार्वभौमिकवाद बनाम विशेषवाद चार्ल्स टेलर का सिद्धान्त, मैकइंटायर, माइकेल संडल का सिद्धान्त
■ **बहुसंस्कृतिवाद : चार्ल्स टेलर :** पहचान की राजनीति, विल किमलिका, अल्पसंख्यक अधिकार की अवधारणा
■ **नारीवाद :** मूलभूत संकल्पनाएँ, पितृतंत्र, नारी द्वेष, लिंग, नारीवाद के सिद्धान्त, उदारतावादी, समाजवादी, उग्रवादी तथा पारिस्थितिकीय-नारीवाद।

इकाई–IX तर्कशास्त्र

■ सत्य और वैधता
■ वस्तवर्थ और गुणार्थ प्रतिज्ञप्तियों की प्रकृति
■ निरपेक्ष न्याय वाक्य
■ विचार के नियम
■ प्रतिज्ञप्तियों का वर्गीकरण
■ परम्परागत विरोध वर्ग
■ सत्यता-फलन तथा प्रतिज्ञप्तिपरक तर्कशास्त्र
■ परिमाणन और परिमाणन के नियम
■ प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र : प्रतीकों का प्रयोग
■ निर्णय प्रक्रियाएँ : सत्यता सारिणी, युक्तियों की वैधता के परीक्षण हेतु सत्यता सारिणियों का प्रयोग
■ वेन आरेख, अनौपचारिक एवं औपचारिक तर्क दोष
■ वैधता का परीक्षण तथा युक्ति और युक्ति आकार
■ स्वयं सिद्धि प्रणाली, संगति, पूर्णता
■ निगमनात्मक एवं आगनात्मक तर्कशास्त्र में भेद

इकाई–X अनुप्रयुक्त दर्शन शास्त्र

अनुप्रयुक्त दर्शन शास्त्र क्या है?

■ **प्रौद्योगिकी का दर्शन :** प्रौद्योगिकी, प्रभुत्व, शक्ति तथा सामाजिक असमानताएँ, प्रौद्योगिकियों का लोकतन्त्रीयकरण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लोक मूल्यांकन, सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी और अप्रौद्योगिकी का नीतिशास्त्रीय निहितार्थ।
■ **पर्यावरणीय नीतिशास्त्र :** साधन अथवा साध्य के रूप में प्रकृति, आल्डो-लियोपोल्ड : भूनीतिशास्त्र, अर्नेनैस : गहन पारिस्थितिकी, पीटर सिंगर : जानवरों के अधिकार।
■ **आयुर्विज्ञान का नीतिशास्त्र :** स्थानापन्न मातृत्व, चिकित्सक-मरीज संबंध, गर्भपात, इच्छामृत्यु, कन्या भ्रूण हत्या।
■ **व्यावसायिक नीतिशास्त्र :** व्यवसायिक प्रशासन तथा नैतिक उत्तरदायित्व।
■ **मीडिया नीतिशास्त्र :** निजीगोपनीयता, साइबर स्पेस, अश्लील विवरण (पोर्नोग्राफी) से सम्बन्धित नैतिक मुद्दे, प्रतिनिधित्व तथा मतभेद, पार्श्वीकरण।
■ **विधिक नीतिशास्त्र :** विधि और नैतिकता, विधिक दायित्व, विधि का प्राधिकार और अधिमान्यता।
■ **दार्शनिक परामर्शन :** दैनिक समस्याओं का प्रबन्धन।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2021/जून-2022
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल (परीक्षा तिथि : 14.10.2022)

1. Match List I with List II
सूची -I को सूची -II से सूमेलित कीजिए:

List-I	List-II
A. Hobbes/हॉब्स	i. Absolute Idealism एब्सॉलयूट आइडियलिज्म
B. Amartya Sen अमर्त्य सेन	ii. The Second Sex द सेकेंड सेक्स
C. Hegel/हेगेल	iii. Social Contract सोशल कॉन्टैक्ट
D. Simone Beauvoir सिमोन-दि-बोबा	iv. The Idea of Justice द आइडिया ऑफ़ जस्टिस

Choose the correct anser from the options given belo
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A - IV, B - II, C - III, D - I
(b) A - II, B - IV, C - I, D - I
(c) A - III, B - IV, C - I, D - II
(d) A - I, B - IV, C - III, D - II

Ans. (c) : सही उत्तर निम्नलिखित है-

List-I	List-II
A. हॉब्स	iii. सोशल कान्ट्रैक्ट
B. अमर्त्य सेन	iv. द आइडिया ऑफ़ जस्टिस
C. हेगेल	i. आब्सोल्यूट आइडियलिज्म
D. सिमोन-दि-बोबा	ii. द सेकेंड सेक्स

2. In Nyaya epistemology, by which sannikarsa do we perceive the relation between my hand and the pen I am writing with?
न्याय मीमांसा में किस सन्निकर्ष द्वारा हम यह अनुभव करते हैं कि मेरे हाथ और कलम जिससे मैं लिख रहा हूँ उसके बीच कोई संबंध है?

(a) Samyoga/संयोग
(b) Samyukta sanavaya/संयुक्त समवाय
(c) Samavaya/समवाय
(d) Visesanata/विशेषणता

Ans. (b) : न्यायमीमांसा के संयुक्त समवाय सन्निकर्ष द्वारा हम यह अनुभव करते हैं की मेरे हाँथ और कलम जिससे मैं लिख रहा हूँ उसके बीच कोई सम्बन्ध है। संयुक्त समवाय सन्निकर्ष में इन्द्रिय का सीधा सम्बन्ध वस्तु के साथ न होकर एक माध्यम के साथ होता है। एक अन्य उदाहरण- घड़े की लालिमा का ज्ञान। इसमें सबसे पहले आँख का संपर्क घड़े से होता है और घड़ा लालिमा से सम्बन्धित है। चूँकि घड़ा लालिमा से सम्बन्धित है इसलिए आँख का सम्बन्ध लालिमा से घड़े के माध्यम से होता है।

3. What of the following is incorrect as far as Rationalism is concerned (as a Philosophical theory)?
तर्क बुद्धिवाद के संबंध में (दार्शनिक सिद्धांत के रूप में) निम्नलिखित में से कौन सा असत्य है?

(a) Reason and Reason alone is the source of all philosophical knowledge/कारण और केवल कारण सभी प्रकार के दार्शनिक ज्ञान का स्रोत है
(b) Reason is permanent and unchanged कारण स्थायी है और अपरिवर्तनीय है
(c) Sense experience is deceptive and therefore connot act as as ource of philosophical knowledge इंद्रिय अनुभव एक छलावा है इसलिए यह दार्शनिक ज्ञान के स्रोत के रूप में कार्य नहीं कर सकता
(d) Reason limits itelf and is defective कारण स्वयं को सीमित करता है और दोषपूर्ण है

Ans. (d) : तर्क बुद्धिवाद के दार्शनिक सिद्धांत के अनुसार-
(1) कारण और केवल कारण सभी प्रकार के दार्शनिक ज्ञान का श्रोत है।
(2) कारण स्थायी और अपरिवर्तनीय है।
(3) इन्द्रिय अनुभव एक छलावा है इसलिए यह दार्शनिक ज्ञान के श्रोत के रूप में कार्य नहीं कर सकता है। जबकि विकल्प (d) असत्य है।

4. "The so called cause is nothing but one event immediately succeeded by another event, the succeeded event may be called effect. That is all". Who among the following holds this view?
तथाकथित कारण कुछ नहीं है बल्कि एक घटना तुरंत पूर्ववर्ती घटना का स्थान ले लेती है, परवर्ती घटना को प्रभाव कहा जा सकता है, ऐसा ही है। निम्नलिखित में से विचार किसके हैं?

(a) Locke/लॉक (b) Kant/कांट
(c) Hume/ह्यूम (d) Descartes/डेकार्ट

Ans. (c) : ह्यूम के अनुसार तथाकथित कारण कुछ नही है बल्कि एक घटना तुरंत पूर्ववर्ती घटना का स्थान ले लेती है। परवर्ती घटना को प्रभाव कहा जा सकता है। ऐसा ही हैं।

5. Which one among the following is NOT a characteristic of sat hetu?
निम्नलिखित में क्या सत्हेतु की विशेषता है?

(a) Paksasattva/पक्षसत्व
(b) Vipaksasattvo/विपक्षसत्व
(c) Sapaksosattava/सपक्षसत्व
(d) Abadhita visyatva/अबाधित विषयत्व

Ans. (b) : विपक्षसत्व, सत हेतु की विशेषता नही है। जबकि पक्षसत्व, सपक्षसत्व, अबाधित विषयत्व सत हेतु की विशेषताएं है।

6. "Men may come and men may go, but the man-type, the human race goes on forever". Whose view is this?
''इंसान आता है और जाता है, किन्तु मानव जाति, मानवीय प्रजाति सदैव चलायमान होते हैं'' ये किसके विचार है?

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) Aristotle/अरस्तू (b) Plato/प्लेटो
(c) Protogoras/प्रोटोगोरस (d) Gorgias/गार्जियाज

Ans. (b) : ग्रीक दार्शनिक प्लेटो सुकरात के शिष्य थे। प्लेटो ने बुद्धिवाद (Rationalism) का समर्थन किया था। इनकी प्रसिद्ध उक्ति है कि "इंसान आता है और इंसान जाता है, किन्तु मानव जाति, मानवीय प्रजाति, सदैव चलायमान होते हैं।"

7. Kumarila's advocacy of pramanas was endorsed by which of the following systems?
कुमारिलो के प्रमाणों के समर्थन की संतुष्टि निम्न किस पद्धति द्वारा की गई थी?
(a) Nyaya/न्याय
(b) Samkhya/सांख्य
(c) Advatita/अद्वैत
(d) Suddha Advaita/शुद्ध अद्वैत

Ans. (c) : कुमारिलों के प्रमाणों के समर्थन की संपुष्टि 'अद्वैत' पद्धति द्वारा की गई। कुमारिलभट्ट और अद्वैत वेदांत द्वारा अनुपलब्धि को 'स्वतंत्र प्रमाण' मानने को लेकर मतैक्यता है। किसी विषय के अभाव का साक्षात ज्ञान हमें अनुपलब्धि के द्वारा होता है।
ध्यातव्य है कि प्रभाकर, सांख्य और न्याय अनुपलब्धि को स्वतंत्र प्रमाण नहीं मानते वे उसे प्रत्यक्ष के अंतर्गत ही रखते हैं।

8. What is multiculturalism?
बहुसंस्कृतिवाद क्या है?
(a) It is the existence of cultural diversity within a given society/किसी सामज के अंतर्गत सांस्कृतिक बहुलता की उपस्थिति
(b) It is the existence of minority groups in a society
किसी समाज में अल्पसंख्यक समुदायों की उपस्थिति
(c) it is the existence of political diversity a society
किसी समाज में राजनीतिक बहुलता की उपस्थिति
(d) It is the existence of ethnic minority groups in a society/किसी समाज में मानवजातीय अल्पसंख्यक समुदायो की उपस्थिति

Ans. (a) : किसी समाज के अंतर्गत सांस्कृतिक बहुलता की उपस्थिति बहुसंस्कृतिवाद है। सामान्यतया बहु संस्कृतिवाद वह अवधारणा है जिसके अनुसार "जब किसी समाज में विभिन्न संस्कृतियों के लोग एक साथ रहते हैं तो इसे बहुसंस्कृतिवाद कहते हैं।" इस तरह के समाज में विभिन्न जाति तथा धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं।

9. Consider the following explanation of the fallacies:
Statement I: The deliberate misrepresentation of opponent's is the fallacy of straw man
दोषों की निम्नलिखित व्याख्याओं पर विचार कीजिए
कथन I: प्रतिपक्षी स्थिति का जानबूझकर मिथ्या निरूपण पुतला दोष है
कथन II: प्रतिपक्षी के चरित्र अथवा प्रमुख परिस्थितियों पर आक्षेप में एड होमिनेमः का दोष पाया जाता है।
Statement II: An attack upon the character or special circumstances of the opponent involves fallacy of Ad hominem
In light of the above statements, choose the most appropriate answer form the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) Both statement I and statement II are correct
कथन I और II दोनों सत्य हैं
(b) Both statement I and statement II are incorrect/कथन I और II दोनों असत्य है
(c) Statement I is correct but statement II is incorrect/कथन I सत्य है, किन्तु कथन II असत्य है
(d) Statement I is incorrect but statement II is correct/कथन I असत्य है, किन्तु कथन II सत्य है

Ans. (a) : प्रश्नगत कथन (i) और (ii) दोनों सत्य हैं।
पुतला दोष (Fallacy of Strawman) में जानबूझकर प्रतिपक्षी की स्थिति का मिथ्या निरूपण किया जाता है। जबकि 'एड होमिनेम दोष' (Fallacy of Ad hominem) में प्रतिपक्षी के चरित्र अथवा प्रमुख परिस्थितियों पर आक्षेप किया जाता है।

10. The division of qualities into primary and secondary is unphilosophical. Who held this vies?
"प्राथमिक एवं द्वितीयक के रूप में गुणों का विभाजन अदार्शनिक है।" यह किसका मत है?
(a) Locke/लॉक
(b) Berkeley/बर्कले
(c) Locke and Berkeley/लॉक और बर्कले
(d) Locke and Descartes/लॉक और डेकार्त

Ans. (b) : बर्कले 'प्राथमिक एवं द्वितीयक' के रूप में गुणों का विभाजन अदार्शनिक मानते हैं। बर्कले का मानना है कि इन गुणों के बीच अंतर भ्रामक है क्योंकि यह दोनों ही समजातिक हैं तथा दोनों ही मन में रहते हैं। ऐसा रंग नहीं हो सकता जो विस्तार के अभाव में हो तथा ऐसा कोई विस्तार नहीं हो सकता है जो रंग आदि द्वितीयक गुणों में पड़ता हो। अतः मूल गुण भी आत्मनिष्ठ होते हैं। मूल गुण तथा उपगुण में अंतर का निषेध कर बर्कले ने सिद्ध किया की अनुभव से प्रत्यय की ही सत्ता सिद्ध होती है।

11. According to Merleau Ponty, Perception is:
मर्लिन पॉन्टी के अनुसार, प्रत्यक्ष बोध
(a) A science of the world /संसार का एक विज्ञान है
(b) A conscious act/यह एक सचेतन कार्य है
(c) Not embodied/यह मूर्त रूप में नहीं है
(d) Not perspectival /यह सांदर्भिक नहीं है

Ans. (*) : इस प्रश्न को आयोग द्वारा ड्राप (Drop) कर दिया गया है।

12. Select the correct sequence:
सही क्रम का यचन करें:
A. Avagraha/अवग्रह
B. Dharana/धारणा
C. Iha/इहा
D. Avaya/अवाय
Choose the correct answer from the options given below
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A, C, D and B (b) A, B C and D
(c) A, D, C and B (d) C, A, B and D

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : सही क्रम इस प्रकार है- 1– AC DE
अवग्रह →इहा →अवाय →धारणा।

13. Which type of cause is Kapalasamyoga in the production of ghatah?
घटः की उत्पत्ति में कौन-सा कपालसंयोग हेतु है?
(a) Samavayi/समवायि
(b) Asamavayi/असमवायि
(c) Nimitta/निमित्त
(d) Nimitta-Upadana/निमित्त उपादान

Ans. (b) : घट की उत्पत्ति में 'असमवायि' नामक कपाल संयोग हेतु के रूप में कार्य करता है। असमवायि कारण वह है जो 'समवायि' कारण में समवाय संबंध से रहकर कार्य की उत्पत्ति में सहायक होती है। जैसे 'तागे का रंग' तागे में, जो कपड़े का समवायि कारण है अतः तागे का रंग कपड़े का असमवायि कारण है।

14. Which of the following philosophers conceptualized God as "personal being" or "supreme person".
निम्नलिखित में से किस दार्शनिक ने ईश्वर को वैयक्तिा सत् अथवा सर्वोच्च व्यक्ति के रूप में विचार दिया?
(a) Iqbal/इक़बाल
(b) Radhakrishnan/राधाकृष्णन
(c) Ambedkar/अम्बेडकर
(d) Tagore/टैगोर

Ans. (d) : रविन्द्रनाथ टैगोर के धार्मिक विचार उपनिषद दर्शन से प्रभावित थे। ईश्वर के सम्बन्ध में इनका विचार है कि "ईश्वर वैयक्तिक सत अथवा सर्वोच्च व्यक्ति के रूप में है।"

15. Dworkin proposed that rights should be thought of as:
डोर्किन द्वारा प्रस्तावित अधिकारों को किस प्रकार मानना चाहिए:
(a) "Triumphs" which reveal their distinctive power
"विजय" जो अपनी विशिष्ट शक्ति प्रदर्शित करती है
(b) "Privileges" which reveal their unique power
"विशेषाधिकार" जो अपनी शक्ति प्रदर्शित करता है
(c) "Opportunities" which reveal their capacities
"अवसर" जो अपनी क्षमताएं प्रदर्शित करते हैं
(d) "Wealth" which discloses the inner power
"संपत्ति" जो अंतर्निहित शक्ति को दर्शाता है

Ans. (a) : डोर्किन के अनुसार 'अधिकार' उस 'विजय' के रूप में हैं जो अपनी विशिष्ट शक्ति प्रदर्शित करते हैं।

16. Who holds the following view about emotive theory?
सावेगात्मक सिद्धान्त के बारे में निम्नलिखित मत किसका है:
"Only the propositions of the mathematics and empirical sciences have sense, and all other propositions are without senses".
"केवल गणित एवं अनुभवाश्रित विज्ञानों के तर्कवाक्य में संवेदना होती है, और सभी अन्य तर्क वाक्य बिना संवेदना के होते हैं"
A. A. J. Ayer/ए.जे.अय्यर/एअर
B. R. Camap/आर. कारनैप
C. G.E. Moore/जी.इ.मूरे
D. B. Russell/बी.रसेल
Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A only/केवल A
(b) A and B only/केवल A और B
(c) B only/केवल B
(d) C and D only/केवल C और D

Ans. (c) : "केवल गणित और अनुभवाश्रित तर्कवाक्यों मे संवेदना होती है, और सभी अन्य तर्कवाक्य बिना संवेदना के होते हैं।" यह कथन आर. कार्नेप का है।
कार्नेप तार्किक भाववादी हैं। इन्होंने दर्शन का भावात्मक विश्लेषण किया है। कार्नेप के अनुसार दर्शन का भावात्मक कार्य (Positive function) है- अर्थपूर्ण कथनों का विश्लेषण तथा स्पष्टीकरण करना है। क्योंकि विज्ञान प्रथम स्तर का अध्ययन है जबकि दर्शन द्वितीय स्तर का।

17. Who among the following admits both Jivanmukti and Videhamukti
निम्नलिखित में से कौन जीवनमुक्ति और विदेहमुक्ति दोनों को मानते हैं-
A. Sankara/शंकर **B. Buddha/बुद्ध**
C. Ramanuja/रामनुज **D. Madhva/मध्व**
Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A only/केवल A
(b) B only/केवल B
(c) A and A only/केवल A और A
(d) A, B and C only/केवल A, B और C

Ans. (c) : जीवनमुक्ति और विदेह मुक्ति दोनों को मानने वाले दार्शनिकों मे मुख्य रूप से शंकर और बुद्ध दोनों हैं। शंकर का मानना है कि मुक्ति प्राप्ति के बाद भी मानव का शरीर कायम रह सकता है। मुक्ति का अर्थ शरीर का अंत नहीं है। शरीर तो प्रारब्ध कर्मों का फल है जब तक यह फल समाप्त नहीं हो जाता है शरीर विद्यमान रहता है। यही जीवन मुक्ति है। शंकर के जीवन मुक्ति की तरह, सांख्य, योग, जैन बौद्ध ने भी जीवन मुक्ति को अपनाया है। जीवन मुक्त व्यक्ति संसार के कर्मों में भाग लेता है। परन्तु फिर भी बंधन ग्रस्त नही होता है इसका कारण यह है कि उसके कर्म अनासक्त भाव से किए जाते है। जो कर्म आसक्त भाव से किए जाते हैं उससे फल की प्राप्ति होती है परन्तु निष्काम कर्म भुजे हुए बीज की तरह हैं जिससे फल की प्राप्ति नहीं होती हैं जब जीवन मुक्त व्यक्ति के स्थूल और सूक्ष्म शरीर का अंत हो जाता है तब 'विदेह मुक्ति' की प्राप्ति होती है। विदेह मुक्ति मृत्यु के उपरांत प्राप्त होती है।

18. Which one of the following is unacceptable to David Hume?
निम्नलिखित में से कौन सा डेविड ह्यूम को अस्वीकारयोग्य है?
(a) Knowledge as relation of ideas
प्रत्ययों के संबंधों के रूप में ज्ञान
(b) Knowledge as matters of fact
तथ्य के विषय के रूप में ज्ञान

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) Refutation of the causal relation
हेतुक संबंध का खंडन
(d) Knowledge of Soul, World and God is possible/आत्मा, विश्व और ईश्वर का ज्ञान संभव है

Ans. (d) : डेविड के अनुसार आत्मा, ईश्वर और विश्व का ज्ञान संभव नहीं है। ह्यूम विशुद्ध अनुभववादी हैं उन्होंने पाया की अनुभववाद के आधार पर आत्मा की तात्विक सत्ता को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। उनके अनुसार यदि आत्मा है तो उसका ज्ञान होना चाहिए बुद्धि से या अनुभव से।
वास्तव में ह्यूम ने ज्ञान के दो प्रकार मानें-
(i) प्रत्ययों के संबंधों का ज्ञान (ii) तथ्य के विषय के रूप में ज्ञान। इसके अतिरिक्त ह्यूम ने हेतुक संबंध का खण्डन भी किया। ह्यूम ने कहा कि प्रत्ययों के संबंधों का ज्ञान प्रागनुभविक व आकारिक ज्ञान है जिसकी सत्यता का निर्धारण अनुभव के आधार पर नहीं बल्कि उसे व्यक्त करने वाली प्रतिज्ञप्ति की विश्लेषणात्मकता के आधार पर होता है। यह ज्ञान अनिवार्य तथा निश्चयात्मक होता है। इसलिए ह्यूम ने इसे प्रथम कोटि का ज्ञान माना है। गणित तथा तर्कशास्त्र में इस प्रकार का ज्ञान उपलब्ध होता है। इसके बावजूद ह्यूम ने कहा की यह ज्ञान कोरी कल्पना मात्र है क्योंकि इससे हमें अपने जगत के संबंध में कोई नई जानकारी प्राप्त नहीं होती है। तथ्यों का ज्ञान द्वितीयक कोटि का ज्ञान है क्योंकि यह अनिवार्य नहीं, मात्र संभाव्य होता है। इसका कारण है की यह अनुभव पर आधारित व संश्लेषणात्मक प्रतिज्ञप्तियों में व्यक्त होता है। प्राकृतिक विज्ञानों में तथा हमारे सामान्य जीवन में इस प्रकार का ज्ञान बहुतायत में पाया जाता है।

19. "Knowledge is possible: It is concerned with the general and typical, not the particular and accidental". Who among the following holds this vies?
"ज्ञान संभावना है, इसका संबंध सामान्य और प्रारूपिक से है न कि विशिष्ट और घटना से है" ये किसके विचार हैं?
(a) Sophists/सोफिस्ट
(b) Atomists/अणुवादी
(c) Socrates/सुकरात
(d) Empedocles/इंपेडोक्लीज

Ans. (c) : "ज्ञान संभावना है इसका संबंध सामान्य और प्रारुप से है न की विशिष्ट और घटना से है।" यह विचार ग्रीक दार्शनिक सुकरात के हैं। सुकरात ने ज्ञान को बुद्धि पर आधारित किया और सत्य की वस्तुनिष्ठता फिर से स्थापित की। सुकरात के अनुसार समस्त ज्ञान संप्रत्यय पर आधारित है। सुकरात कहते हैं की हमें प्रत्यक्ष अथवा कल्पना द्वारा प्राप्त विशेष वस्तुओं के प्रत्ययों के अतिरिक्त सामान्य प्रत्ययों का भी बोध होता है जो विशेष वस्तुओं के विषय में नहीं बल्कि वस्तुओं के वर्ग के विषय में होते हैं। यही हमारा सामान्य विचार है, इसी को संप्रत्यय कहते हैं। इस प्रकार सुकरात ने समस्त ज्ञान का आधार संप्रत्यय को बताया है।

20. Who among the following is inclined to accept Transcendental Idealism?
निम्नलिखित में से किसका झुकाव अतीन्द्रिय प्रत्ययवाद को स्वीकारने की ओर है?
(a) Hegel/हेगल (b) Kant/कांट
(c) Descartes/डेकार्ट (d) Hume/ह्यूम

Ans. (b) : काण्ट के अनुसार प्रज्ञा के प्रत्यय (जगत या प्रकृति का प्रत्यय, आत्मा का प्रत्यय, ईश्वर का प्रत्यय), ज्ञान नहीं अतीन्द्रिय भ्रम हैं यह आनुभविक भ्रम नहीं हैं। आनुभविक भ्रम तब होता है जब प्रत्यक्ष की प्रक्रिया में कल्पना अवैध निष्कर्ष निकाल लेती है। अतीन्द्रिय भ्रम का प्रत्यक्ष से कोई संबंध नहीं है ये तब होते हैं जब प्रज्ञा संवेदन के अभाव में विचारों का बुद्धि विकल्पों का अवैध प्रयोग करती है। आनुभविक भ्रम अगले अनुभव से खण्डित हो जाते हैं किन्तु अतीन्द्रिय भ्रम खण्डित नहीं किए जा सकते। काण्ट यह भी मानता है कि अतीन्द्रिय भ्रम ज्ञान के विषय तो नही हैं किन्तु आस्था के विषय अवश्य हैं।

21. "The impulse towards pleasure, if too predominant, defeats its own aim". Who among the following holds this view?
"आनंद की ओर आवेग यदि अत्यधिक प्रबल हो तो यह मूल उद्देश्य से भटक जाता है।" निम्नलिखित में से यह किसका मत है?
(a) Bentham/बेंथम (b) J.S. Mill/जे.एस.मिल
(c) Sidgwick/सिजविक (d) Kant/काण्ट

Ans. (c) : "आनंद की ओर आवेग यदि अत्यधिक प्रबल हो तो यह मूल उद्देश्य से भटक जाता है" यह मत सिजविक का है।

22. By which relation, the relation between a pot and its colour is related with the pot according to the Vaisesikas?
वैशेषिक के अनुसार किस संबंध द्वारा घट और उसके रंग के बीच का संबंध घट से संबंधित है?
(a) Samavaya/समवाय (b) Samyoga/संयोग
(c) Tadatmya/तादात्म्य (d) Svarupa/स्वरूप

Ans. (d) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार 'स्वरुप' संबंध के द्वारा घट और उसके रंग के बीच का संबंध घट से संबंधित है।

23. Which system of Vedanta, postulates the conception of three grades of Satta (Sattatraya)?
वेदांत की किस पद्धति में सत्ता (सत्तात्रय) के तीन स्तरों की संकल्पना है?
(a) Visistaavaita Vedanta/विशिष्टाद्वैत वेदांत
(b) Dvaita Vedanta/द्वैत वेदांत
(c) Advaita Vedanta/अद्वैत वेदांत
(d) Dvaitadvaita Vedanta/द्वैताद्वैत वेदांत

Ans. (c) : अद्वैत वेदांत में सत्ता के तीन स्तरों की संकल्पना है-
(i) पारमार्थिक सत्ता :- पारमार्थिक सत्ता शुद्ध सत्ता है जो न बाधित होती है और जिसके बाधित होने की कल्पना भी नहीं की सकती है।
(ii) व्यावहारिक सत्ताः व्यावहारिक सत्ता में वे वस्तुएं आती हैं जो जाग्रत अवस्था में सत्य प्रतीत होती है। तार्किक दृष्टि से इनका खण्डन किया जा सकता है अतः इन्हें पूर्णतः सत्य नहीं माना जाता।
(iii) प्रातिभासिक सत्ताः प्रातिभासिक सत्ता में वे विषयवस्तु आते हैं जो स्वप्न या भ्रम में उपस्थित होते हैं। यह क्षण भर के लिए रहते हैं इनका खण्डन जाग्रत अवस्था के अनुभवों से हो जाता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

24. If A and B are the statements and X, Y and Z are false statements, determine which one of the following is true.
यदि A और B सही कथन हैं और X, Y और Z गलत कथन हैं, सुनिश्चित कीजिए कि निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?
(a) [A ⊃ (X. Y)] ⊃ [(A ⊃ X) v (A ⊃ Y)]
(b) [(A.X) ⊃ (A ⊃ X)]
(c) [(X ⊃ Z) ⊃ B] ⊃ Y
(d) [(A.X) ⊃ Y] ⊃ (A ⊃ X)

Ans. (a) : यदि A और B सही कथन है और X, Y Z गलत कथन हैं तो- [A ⊃ (X. Y)] ⊃ [(A ⊃ X) v (A ⊃ Y)] सही है।

25. In Vaisesika metaphysics, which dravyas can be both niravayava and savayava?
वैशेषिक तत्त्व-मीमांसा में कौन-से द्रव्य निरवायव्य एवं सावायव्य दोनों हो सकते हैं?
(a) Ksiti, ap, teja, and marut only
केवल क्षिति, अप, तेज और मरूत
(b) Ap, teja, marut and vyoma only
केवल अप, तेज मरूत और व्योम
(c) Ksiti, ap, teja, marut and vyoma only
केवल क्षिति, अप, तेज मरूत और व्योम
(d) Ksiti, manas, arut, ap and vyoma only
केवल क्षिति, मनस, मरूत और व्योम

Ans. (a) : वैशेषिक तत्वमीमांसा के अनुसार क्षिति (पृथ्वी), अप (जल) तेज (अग्नि) तथा मरूत (वायु) के द्रव्य निरवायव्य तथा सावयव्य दोनों हो सकते हैं।
पृथ्वी शाश्वत और अशाश्वत दोनों है। पृथ्वी के परमाणु शाश्वत हैं जबकि उससे बने पदार्थ अशाश्वत है। इसी प्रकार जल, अग्नि तथा वायु के परमाणु भी शाश्वत हैं तथा इनसे बनी वस्तुएं अशाश्वत हैं।

26. By begetting off-spring one can repay:
संतति को अस्वीकार करते हुए कोई चुका सकता है:
(a) Pitrrna only/केवल पितृऋण
(b) Pitrran and rsirna/पितृऋण और ऋषिऋण
(c) Rsirna only/केवल ऋषिऋण
(d) Devarna only/केवल देवऋण

Ans. (a) : संसति को अस्वीकार करते हुए केवल पितृ ऋण चुकाया जा सकता है। पितृ ऋण का सम्बन्ध हमारे पूर्वजों से है। इस ऋण को पितृ पक्ष में तर्पण तथा श्राद्ध आदि संस्कारों के माध्यम से उतारा जा सकता है।

27. Consider the following statements with reference to conjunction and choose the correct combination:
निम्नलिखित कथनों पर समुच्चबोधक के संदर्भ में विचार कीजिए और सही युग्म को चुनिए
A. If ' P' is true and 'q' is true, then 'p.q' is true
यदि ' P' सही है और 'q' सही है, तब 'p.q' सही है
B. If 'p' is false and 'q' is false, then 'p.q' is false
यदि ' P' गलत है और 'q' सही है, तब 'p.q' गलत है
C. If 'p' is true, and 'q' is false, then 'p.q' is true
यदि ' P' सही है और 'q' गलत है, तब 'p.q' सही है
D. If 'p' is false and 'q' is false, then 'p.q' is true
यदि ' P' गलत है और 'q' गलत है, तब 'p.q' सही है
Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A only/केवल A
(b) A and C only/केवल A और C
(c) A and B only/केवल A और B
(d) C only/केवल C

Ans. (c) : सही युग्म इस प्रकार हैं-
(a) यदि 'P' सही है और 'q' सही है तब 'p.q' सही है।
(b) यदि 'P' गलत है और 'q' सही है तब 'p.q' गलत है।

28. Given below are two statements:
नीचे दो कथन दिए गए है:
Statement I: Gandhian trinity of development consists in Sarvadaya, Swadeshia nd Swaraj
कथन-I: गाँधी के विकास के त्रयी सिद्धांत में स्वदेशी, स्वराज्य और अस्तेय निहित हैं
Statement II: Gandhian trinity of development consists in Swadeshi, Swaraj and Asteya
कथन - II: गाँधी के विकास के त्रयी सिद्धांत में स्वेदेशी, स्वराज्य और अस्तेय निहित हैं
In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) Both Statement I and Statement II are true
कथन I और II दोनों सत्य हैं
(b) Both Statement I and Statement II are false
कथन I और II दोनों असत्य हैं
(c) Statement I is true but Statement II is false/कथन I सत्य हैं किन्तु कथन II असत्य है
(d) Statement I is false but Statement II is true/कथन I असत्य है, किन्तु कथन II सत्य है

Ans. (c) : गांधीजी ने अपने विकास की अवधारणा में स्वदेशी, सर्वोदय और स्वराज के सिद्धांत दिए। 'अस्तेय' का सम्बन्ध गांधी के विकास की अवधारणा से नहीं था। 'अस्तेय' का संबंध गांधी नीतिशास्त्र में बताए गए एकादश ब्रतों से है, जो इस प्रकार हैं- (1) अहिंसा (2) सत्य (3) अस्तेय (4) ब्रह्मचर्य (5) अपरिग्रह (6) श्रम (7) अस्वाद (8) अभय (9) सर्वधर्म समभाव (10) स्वदेशी (11) छुआछूत से परहेज करना।

29. Match List I with List II
सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए:

List I/सूची- I	List II/सूची- II
A. Empedocles एम्पेडोकल्स	I. Atomic Theory अणु सिद्धांत
B. Anaxagoras एनौक्सेगोरस	II. The doctrine of elements तत्व का सिद्धांत
C. Pythagoras पाइथागोरस	III. The doctrine of nous नॉउस का सिद्धांत
D. Leucippus and Democritus/ल्यूसिपस और डेमोक्रिट्स	IV. The doctrine of numbers साँख्य का सिद्धांत

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A - III, B - IV, C - I, D - II
(b) A - II, B - III, C - IV, D - I
(c) A - III, B - II, C - I, D - IV
(d) A - IV, B - II, C - I, D - III

Ans. (b) : सही सुमेल निम्नलिखित हैं-

List I/सूची- I	List II/सूची- II
A. एम्पेडोकल्स	II. तत्व का सिद्धांत
B. एनौक्सेगोरस	III. नॉउस का सिद्धांत
C. पाइथागोरस	IV. संख्या का सिद्धांत
D. ल्यूसिपस और डेमोक्रिट्स	I. अणु सिद्धांत

30. Wittgenstein is convinced that that the particular employment of words are deemed to be one of the following:
विटगेन्सटाइन यह मानते हैं कि शब्दों के विशिष्ट नियोजन को निम्नलिखित में से क्य माना जा सकता है:

(a) An ontological use of language
भाषा का सत्तात्मक उपयोग
(b) Metaphysical use of language
भाषा का तत्वमीमांसात्मक उपयोग
(c) Axiological use of language
भाषा का मूल्य- मीमांसात्मक उपयोग
(d) An ethical use of language
भाषा का नीतिपरक उपयोग

Ans. (*) : इस प्रश्न को आयोग द्वारा छोड़ (Drop) दिया गया है।

31. Which of the following is not acceptable to Kant?
निम्नलिखित में से कौन सा कांट को स्वीकार्य नहीं है?

(a) Knowledge consists of synthetic a priori judgments
सश्लेषणात्मक अनुभव निरपेक्ष निर्णयों से युक्त ज्ञान
(b) Analytic judgments are always a priori
विश्लेषणात्मक निर्णय सदैव अनुभव निरपेक्ष होते हैं
(c) Analytic judgment do not add to our knowledge
विश्लेषणात्मक निर्णय हमारे ज्ञान में कुछ नहीं जोड़ते
(d) Synthetic judgments give cent percent sure knowledge
संश्लेषणात्मक निर्णय शत प्रतिशत निश्चित ज्ञान देते हैं

Ans. (d) : "संश्लेषणात्मक निर्णय शत प्रतिशत निश्चित ज्ञात देते हैं।" यह विचार काण्ट को स्वीकार्य नहीं है। काण्ट ने ज्ञान की परिभाषा में कहा कि "ज्ञान संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णयों की व्यवस्था है।" इस परिभाषा का विश्लेषण तीन शब्दों के आधार पर किया जा सकता है- (i) निर्णय (ii) संश्लेषणात्मक (iii) प्रागनुभविक। काण्ट ने कहा कि निर्णय प्रतिज्ञप्ति है जिसमें उद्देश्य और विधेय दोनों होते हैं। प्रतिज्ञप्तियां भी दो प्रकार की हो सकती हैं- संश्लेषणात्मक व विश्लेषणात्मक। संश्लेषणात्मक प्रतिज्ञप्ति वह है जिसका विधेय पद, उद्देश्य पद के संबंध में कोई नई सूचना प्रदान करें। जबकि विश्लेषणात्मक प्रतिज्ञप्ति वह है जिसका विधेय पद उद्देश्य पद की ही व्याख्या करता है कोई नयी सूचना नहीं देता है। प्रतिज्ञप्तियों को अनुभव की अपेक्षा के आधार पर पुनः दो वर्गों में बांटा जा सकता है- (i) आनुभविक प्रतिज्ञप्ति (ii) प्रागनुभविक प्रतिज्ञप्ति। आनुभविक प्रतिज्ञप्ति की सत्यता अनुभव के आधार पर स्थापित होती है जबकि प्रागनुभविक प्रतिज्ञप्ति अनुभव से निरपेक्ष और अनिवार्य होती है। काण्ट ने इन दोनों आधारों पर किए गए भेदों को परस्पर मिलाया और पाया की संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक प्रतिज्ञप्ति वह है जो प्रागनुभविक होने के कारण अनिवार्य और सार्वभौम ज्ञान देती है, संश्लेषणात्मक होने के कारण उसमें नवीनता भी होती है। विश्लेषणात्मक प्रागनुभविक प्रतिज्ञप्तियों में नवीनता नहीं होती। संश्लेषणात्मक आनुभविक प्रतिज्ञप्तियों में अनिवार्यता तथा सार्वभौमिकता नहीं होती जबकि विश्लेषणात्मक आनुभविक प्रतिज्ञप्ति संभव ही नहीं है।

32. Which of the following statements is incompatible with Descartes?
डेकार्ट के अनुसार असंगत क्या है?

(a) Taking mathematics as the model of philosophical method
गणित को दार्शनिक विधि के मॉडल के रूप में लेना
(b) Setting the face against old authorities
प्राचीन विद्वानों के विपरीत नए चेहरे लाना
(c) Viewing sense-experiences as a gateway to all knowledge /इन्द्रिय अनुभव को समस्त ज्ञान के प्रवेशद्वार के रूप में देखना
(d) Reconciliation of mechanism and the notions of God. Soul and Freedom/यांत्रिकता का समन्वय और ईश्वर आत्मा और स्वातंत्र्य एक अभिप्राय

Ans. (c) : डेकार्ट इन्द्रिय अनुभव को समस्त ज्ञान के प्रवेश द्वार के रूप में नहीं मानता है। डेकार्ट ने बुद्धिवादी ज्ञानमीमांसा को चुना है। डेकार्ट का आदर्श बुद्धिवाद है और बुद्धिवादी ज्ञानमीमांसा का आदर्श गणित है। अतः स्वाभाविक है कि डेकार्ट दर्शन में गणितीय पद्धति का प्रयोग करना चाहता है। वह कहता है कि गणितीय पद्धति से प्राप्त ज्ञान में निश्चितता, स्पष्टता और सुभिन्नता होती है।

डेकार्ट के समर्थकों ने यांत्रिक समन्वय के संबंध में एक नई व्याख्या प्रस्तुत की। इसके अनुसार आत्मा और शरीर के संबंध की स्थापना ईश्वर स्वयं करता है

मानसिक संकल्प तथा शारीरिक उत्तेजनाएं वे अवसर है जिनका उपयोग करके ईश्वर उनके समतुल्य स्थिति पैदा करता है। ईश्वर हर क्षण यह नहीं करता उसने ब्रह्माण्ड की गति और आत्मा की क्रियाओं के मध्य एक ऐसा संबंध बना दिया है जिससे यह व्यवस्था स्वतः परिचालित होती रहती है। ग्यूलिंक्स ने एक घड़ी साज द्वारा बनाई गई दो घड़ियों के माध्यम से यह समझाने का प्रयास किया कि जिस प्रकार दो घड़ियां स्वतंत्र होकर भी एक दूसरे से सुसंगत हैं उसी प्रकार ईश्वर निर्मित व्यवस्था के कारण आत्मा व शरीर परस्पर स्वतंत्र होकर भी परस्पर सुसंगत है।

33. Match List I with List II
सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए:

List I/सूची- I	List II/सूची - II
A. Bhasarvanja भासरवज्ञ	I. Tattvopaplavasingha तत्वोपप्लव सिंह
B. Jayrasibhatta जयराशिभट्ट	II. Nyayasara न्यायसार
C. Hemachnadra हेमचन्द्र	III. Vijnptimatratasiddhi विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि
D. Vasubandhu वसुबंधु	IV. Pramanamimamsa प्रमाणमीमांसा

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(a) A - I, B - II, C - III, D - IV
(b) A - II, B - I, C - IV, D - III
(c) A - I, B - III, C - II, D - IV
(d) A - II, B - III, C - I, D - IV

Ans. (b) : सही समेल निम्नवत है-

सूची- I	सूची - II
A. भासरवज्ञ	II. न्यायसार
B. जयराशिभट्ट	I. तत्वोपप्लव सिंह
C. हेमचन्द्र	IV. प्रमाणमीमांसा
D. वसुबंधु	III. विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि

34. Who among the following contemporary Indian Thinkers expresses the view that self knowledge is equivalent to knowing oneself in relation?
निम्नलिखित में किस समकालीन भारतीय विचारक ने विचार दिया कि आत्मज्ञान स्वयं के बारे में जानने के बराबर है?
(a) M. N. Roy/एम.एन. राय
(b) K.C. Bhattacharya/के.सी.भट्टाचार्य
(c) Jiddu Krishnamurithy/जिद्दू कृष्णामूर्ति
(d) Jyotiba Phule/ज्योतिबाफुले

Ans. (c) : जिद्दू कृष्णमूर्ति एक समकालीन भारतीय विचारक थे। इन्होंने विचार दिया की आत्मज्ञान स्वयं के बारे में जानने के बराबर है।

35. Who amongst the following criticized Cartesian Rationalism?
निम्नलिखित में से किसने डेकार्टवादी बुद्धिवाद की आलोचना की थी?
(a) St. Augustine/सेंट आगस्टाइन
(b) Spinoza/स्पिनोज़ा
(c) Leibnitz/लाइबनित्ज़
(d) Hume/ह्यूम

Ans. (d) : ह्यूम ने डेकार्टवादी बुद्धिवादी की आलोचना की थी। ह्यूम अनुभववादी हैं इन्होने कहा कि हमारा संपूर्ण ज्ञान अनुभव या प्रत्यक्ष पर आधारित है। ह्यूम ने कहा कि संवेदना या विज्ञान के अतिरिक्त हमें "किसी सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता। इन्द्रियानुभव से किसी नित्य और अपरिणामी द्रव्य की, चाहे वह जड़ हो या चेतन, सिद्धि नहीं हो सकती है। विज्ञानों के अनुभविता के रूप में आत्मा की कल्पना करना असंगत है क्योंकि क्षणिक विज्ञान ही स्वयं अपनी अनुभविता हैं। नित्य, एक, समरस और कूटस्थ आत्मा का हमें कभी अनुभव नहीं हो सकता, क्योंकि हमारे विज्ञान जिनका हमें अनुभव हो सकता है अनित्य, अनेक, विशेष और क्षणिक है। इन क्षणिक संवेदनों या विज्ञानों में सादृश्य और आनन्तर्य है एकता और नित्यता नहीं। तथाकथित आत्मा वस्तुतः क्षणिक संवेदनों या विज्ञानों का निरंतर प्रवाह मात्र है। सुषुप्ति में यह धारा टूट जाती है अतः हमें आत्मा का अनुभव नहीं होता है। इस संवेदन पुंज को हम आत्मा का रूप दे देते हैं। यह हमारी कल्पना है वास्तविक तथ्य नहीं।

36. Consider the following syllogism and identify the fallacy involved in it:
Some friends are rich/कुछ मित्र धनवान हैं
No rich persons are helpful
कोई धनवान मित्र मददगार नहीं है
No helpful persons are friends
कोई मददगार व्यक्ति मित्र नहीं है
निम्नलिखित न्यायवाक्य पर विचार कीजिए और इनमें व्याप्त दोष पहचानिए:
(a) Illicit major/अवैध मुख्य पद
(b) Illicit minor/अवैध अमुख्य पद
(c) Undistributed middle/अव्याप्त हेतु (मध्य)
(d) Fallacy of four terms/चतुष्पदीय दोष

Ans. (a) : कुछ मित्र धनवान हैं।
कोई धनवान मित्र मददगार नहीं है।
∴ कोई धनवान मित्र मददगार नहीं है।
कोई मददगार व्यक्ति मित्र नहीं है।
प्रश्नगत न्याय वाक्य में अवैध मुख्य पद दोष है।

37. "Self-realization is the highest good". This view is maintained by:
"आत्मानुभूति परम शुभ है"
यह मत किसके द्वारा संपोषित है:
Rigorism
Eudaemonism
Emotivism
Egoism
Choose the correct answer from the option given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) B only/केवल B
(b) A and B only/केवल A और B
(c) B and D only/केवल B और D
(d) C and D only/केवल C और D

Ans. (b) : 'आत्मानुभूति परम शुभ है' यह मत संकीर्णवाद तथा आत्मप्रसादवाद का है।

38. Who held the view that God is the Unmoved Mover'.
"ईश्वर अविचल गतिकर्ता है"; निम्न में से ये कथन किसका है?
(a) Socrates/सुकरात (b) Plato/प्लेटो
(c) Thales/थेल्स (d) Aristaotle/अरस्तू

Ans. (d) : 'ईश्वर अविचल गतिकर्ता है' यह विचार अरस्तू का है। विकासवाद की व्याख्या करते हुए अरस्तू ने विकास के कई स्तर बताए हैं जिसमें अंतिम स्तर शुद्ध आकार का है। यह स्तर अनुभवातीत है तथा यह शुद्ध आकार ईश्वर ही है। यहाँ ईश्वर को निमित्त कारण के रूप में स्वीकार किया गया है जो कि पदार्थ और आकार के संयोग के लिए गति प्रदान करके विकास आरम्भ करता है। इस शुद्ध आकार को ही अरस्तू ने यहाँ 'गतिहीन चालक' कहा है जो स्वयं गतिहीन रहते हुए भी पूरे जगत की गति का कारण है।

39. Who propounded the ethics of ambiguity?
अस्पष्टता के नीतिशास्त्र का प्रतिपादन किसने किया है?
(a) Martin Heidegger/मार्टिन हेगर
(b) Karl Jaspers/कार्ल जैसपर्स
(c) Simon De Beauvoir/सिमोन दि बोवा
(d) Jean Paul Sartre/ज्यां - पॉल - सार्त्रे

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : 'अस्पष्टता' के नीतिशास्त्र का प्रतिपादन सिमोन दि बोवा ने किया है। सिमोन दि बोवा जर्मन की प्रसिद्ध लेखिका थी यह अपने नारीवादी लेखों के लिए प्रसिद्ध थी।

40. Consider the following syllogism and identify the fallacy in it.
निम्नलिखित न्यायवाक्य पर विचार कीजिए और इसमें व्याप्त दोष को पहचानिए

No dogs are bipeds/कोई कुत्ते दो पैर वाले नहीं हैं
No cats are bipeds/कोई बिल्ली दो पैर वाली नहीं है
No cats are doge/कोई बिल्ली कुत्ता नहीं है

(a) Illicit minor/अवैध
(b) Fallacy of ambiguity/द्वि-अर्थी दोष
(c) Fallacy of two negative premises
दो निषेधात्मक आधारवाक्य का दोष
(d) Undistributed middle/अव्याप्त-हेतु

Ans. (c) : कोई कुत्ते दो पैर वाले नही हैं।
कोई बिल्ली दो पैर वाली नहीं हैं।
∴ कोई बिल्ली कुत्ता नहीं हैं।
प्रश्नगत न्याय वाक्य में दो निषेधात्मक आधार वाक्य का दोष है।

41. We can perceive, according to Nyaya, the external substances by:
न्याय के अनुसार, हम बाह्य पदार्थों का आभास किसके द्वारा कर सकते हैं

A. Visual sense organ/दृश्य संवेदी अंग
B. Tactual sense organ/स्पर्श संवेदी अंग
C. Gustatory sense organ/स्वाद संवेदी अंग
D. Internal sense organ/अंतः संवेदी अंग

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें

(a) A only/केवल A
(b) A and B only/केवल A और B
(c) A and C only/केवल A और C
(d) A, B and C only/केवल A, B और C

Ans. (b) : न्याय के अनुसार वाह्य पदार्थो का आभास दृश्य और संवेदी अंगों के द्वारा होता है।

42. In Vedic literature Rate is equated with:
वैदिक साहित्य में ऋत की समानता किसके साथ है?

(a) Satya only/केवल सत्य
(b) Dharma only/केलव धर्म
(c) Both Satya and Dharma/सत्य और धर्म दोनों
(d) Neither Satya nor Dharma/न सत्य न धर्म

Ans. (c) : वैदिक साहित्य में ऋत् की समानता सत्य और धर्म दोनों से की गई है। वैदिक साहित्य में 'ऋत्' सही, सनातन प्राकृतिक व्यवस्था और संतुलन के सिद्धांत को कहते हैं। अर्थात वह तत्व जो पूरे संसार और ब्रह्माण्ड को धार्मिक स्थिति में रखे या लाए। वैदिक संस्कृत में इसका ठीक से अर्थ है- जुड़ा हुआ, सत्य, सही या सुव्यवस्थित। यह हिन्दू धर्म का एक मूल सिद्धान्त है।

43. Given below are two statements, one is labelled as Assertion A and the other is labeled as Reason R
नीचे दो कथन दिए गए है: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है

Assertion A: According to Madhva, Jiva (individual self) is not the same as Brahman.
अभिकथन (A): मध्व के अनुसार जीव (जीवात्मा) ब्रह्म के समान नहीं है

Reason R: Jiva (individual self) entirely depends on Brahman fro its existence (satta), Knowledge (pramiti) and action (kriya).
कारण (R) जीव (जीवात्मा) अपने अस्तित्व (सत्ता) ज्ञान (प्रमिति) और क्रिया के लिए पूर्ण रूप से ब्रह्म पर आश्रित होता है।

In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/ (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है
(b) Both A and R are true but R is NOT the correct explanation of A/ (A) और (R) दोनों सही हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है
(c) A is true but R is false
(A) सही है परन्तु (R) सही नहीं है
(d) A is false but R is true
(A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है

Ans. (a) : मध्वाचार्य ने जीव (जीवात्मा) को ब्रह्म के समान नहीं माना है। इसका कारण यह है कि जीवात्मा अपने अस्तित्व, ज्ञान और क्रिया के लिए पूर्णरूपेण ब्रह्म पर आश्रित है। मध्वाचार्य ने तर्क दिया की जो आश्रित है वह आश्रय देने वाले के समान कैसे हो सकता है? अतः कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य है तथ कारण द्वारा कथन की व्याख्या की जा रही है।

44. What is the place of God in Plato's philosophy?
प्लेटो के दर्शन में ईश्वर की स्थिति क्या है?

(a) God is the cause of Idea/ईश्वर प्रत्यय का कारण है
(b) God is different from of Idea
ईश्वर प्रत्यय से भिन्न है
(c) God is different from Idea/ईश्वर प्रत्यय के जैसा है
(d) Idea is the cause of God/प्रत्यय ईश्वर का कारण है

Ans. (c) : प्लेटो के दर्शन में ईश्वर प्रत्यय के जैसा है। प्लेटो ने ईश्वर को पूर्णता का अंश कहा। उन्होंने कहा कि वह सरल और शुद्ध है वह कूटस्थ और नित्य है। उसका स्वभाव सदैव एक रूप सा है। नित्यता, शुद्धता, स्वप्रतिष्ठा, और पूर्णता आदि उसकी विशेषताएँ हैं। यह सब विशेषताएँ उसी वस्तु में पाई जाती हैं जो वस्तुतः सत्य है अतः ईश्वर पूर्णरूपेण सत्य है। प्लेटो ने इसी तरह की परिभाषा प्रत्यय की भी दी है।

45. Which one of the following represents the relation between propositions provided below?
निम्नलिखित में से कौन-सा एक तर्कवाक्यों के मध्य संबंध को दर्शाता है?

Some pens are red/कुछ कलम लाल हैं
some pens are not red/कुछ कलम लाल नहीं हैं

(a) Contrary/विपरीतार्थक
(b) Contradictory/व्याघाती
(c) Sub-Altern/उपाश्रयी
(d) Sub-Contrary/उप-विपरीतार्थक

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : 'उपविपरीतार्थक' (Sub-Contrary) संबंध प्रश्नगत तर्क वाक्यों के मध्य पाया जाता है।

46. Match List I with List II
सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए:

List I/सूची- I	List II/सूची- II
A. Buddhism/बौद्ध धर्म	I. Sadhana Catustaya साधन-चतुष्टय
B. Yoga/योग	II. Pancha Mahavrata पंच महाव्रत
C. Jainism/जैन धर्म	III. Dwadasanidana द्वादसनिदान
D. Advatia Vedanta अद्वैत वेदांत	IV. Pancaklesha पंचक्लेश

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों मे से सही उत्तर चुनिए:

(a) A - IV, B - II, C - III, D -I
(b) A - I, B - III, C - II, D - IV
(c) A -III, B - IV, C - II, D - I
(d) A - II, B - III, C - I, D - IV

Ans. (c) : सही सुमेल निम्नलिखित हैं-

सूची- I	सूची- II
A. बौद्ध धर्म	III. द्वादसनिदान
B. योग	IV. पंचक्लेश
C. जैन धर्म	II. पंच महाव्रत
D. अद्वैत वेदांत	I. साधन-चतुष्टय

47. According to whom - One idea cannot perceive another idea. Therefore there should exist a soul which perceives ideas'.
एक प्रत्यय दूसरे प्रत्यय का प्रत्यक्ष नहीं कर सकता है। इसलिए प्रत्ययों के प्रत्यक्ष हेतु एक आत्मा होनी चाहिए। 'यह किसका मत है?

(a) Locke/लॉक
(b) Hume/ह्यूम
(c) Berkeley/बर्कले
(d) Leibniz/लाइबनित्ज़

Ans. (c) : "एक प्रत्यय दूसरे प्रत्यय का प्रत्यक्ष नहीं कर सकता है। इसलिए प्रत्ययों के प्रत्यक्ष हेतु एक आत्मा होनी चाहिए।" यह कथन बर्कले का है। बर्कले अनुभववादी दार्शनिक हैं। बर्कले कहते हैं कि आत्मा और उसके विज्ञानों के अतिरिक्त कोई सत्ता नहीं है। हमारे विज्ञान ही सत्य वस्तुएं है, इनकी सत्ता आत्मा से बाहर नहीं हैं, आत्मा ही इनका प्रत्यक्ष करती है।

48. Which of the following aim is NOT conducive to Immanuel Kent?
इमैनुअल कांट के लिए कौन सा सहायक नहीं है?

(a) To limit Hume's skepticism
ह्यूम के संशयवाद को सीमित करना
(b) To limit dogmatism/हठधर्मिता को सीमित करना
(c) To prove the reason was all in all
यह सिद्ध करना कि तर्क सब कुछ था
(d) To show the possibility of synthetic apriori propositions /संश्लेषित अनुभव निरपेक्ष तर्क वाक्यों की संभावना प्रदर्शित करना

Ans. (c) : काण्ट ने ह्यूम के संशयवाद को सीमित किया। काण्ट समीक्षावादी दार्शनिक हैं। इन्होंने बुद्धिवाद और अनुभववाद की सीमाओं से बचते हुए ज्ञान की परिभाषा 'संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णयों की व्यवस्था के रूप में दी। बुद्धिवादियों ने परिकल्पनात्मक तत्वमीमांसा के रूप में कई काल्पनिक सत्ताओं को स्वीकार किया था जबकी ह्यूम जैसे प्रखर अनुभववादियों ने आत्मा, जगत और ईश्वर की सत्ता पर संदेह किया था। काण्ट के अनुसार इन क्षेत्रों में ज्ञान की संभावना है ही नहीं अतः इसका समर्थन या विरोध ज्ञानात्मक आधार पर नहीं हो सकता।

49. Given below are two statements, one is labeled as Assertion A and the other is labeled as Reason R
नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
Assertion A : Vedas cannot be a ground for God's existence.
अभिकथन (A) : वेद ईश्वर के अस्तित्व का आधार नहीं हो सकते हैं
Reason R: God is the author of the Vedas.
In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
कारण (R) : ईश्वर वेदों के लेखक हैं
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों

(a) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है
(b) Both A and R are true but R is NOT the correct explanation of A/ (A) और (R) दोनों सही हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है
(c) A is true R is false
(A) सही है परन्तु (R) सही नहीं है
(d) A is false but R is true
(A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है।

Ans. (d) : प्रश्नगत कथन (A) गलत है जबकि कारण (R) सही है भारतीय वैचारिक, दार्शनिक परंपरा में वेदों को ईश्वरीय अस्तित्व का आधार माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि वेदों की रचना ईश्वर ने की है।

50. Which one among the following is NOT a means of Saktigraha?
निम्नलिखित में से क्या शक्तिग्रह का साधन नहीं है?

(a) Aptavakya/आप्तवाक्य
(b) Samanyalaksana pratyaksa/सामान्यलक्षणप्रत्यक्ष
(c) Vyakarana/व्याकरण
(d) Vrddhavyavahara/वृद्धव्यवहार

Ans. (b) : 'सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष' शक्ति ग्रह का साधन नहीं है। यह न्याय दर्शन के प्रत्यक्ष के एक भाग अलौकिक प्रत्यक्ष का एक वर्गीकरण है। इसके अनुसार "विशेष वस्तुओं के प्रत्यक्षीकरण के आधार पर उनमें निहित जाति का प्रत्यक्ष ही सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष है। जैसे- राम, श्याम आदि मनुष्य एक दूसरे से भिन्न है फिर भी राम को देखते ही कहते हैं की यह 'मनुष्य' है। इसका कारण यह है की राम के प्रत्यक्षीकरण में 'मनुष्यत्व' का प्रत्यक्षीकरण होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

51. For Kant, what is the faculty that coordinates sensations and perception?
कांट में संवेदना और धारणा का जो सामंजस्य करता है, वह मनः शक्ति क्या है?
(a) Time/समय
(b) Transcendental unity of apperception
आत्मबोध की अतीन्द्रिय एकता
(c) Space/स्थान
(d) Category/कोटि

Ans. (b) : काण्ट में संवेदना और धारणा का जो सामंजस्य करता है वह मनः शक्ति आत्मबोध की अतीन्द्रिय एकता है। काण्ट ने अतीन्द्रिय निगमन के अंतर्गत तार्किक आत्मा का भी विश्लेषण किया है और बताया की बुद्धि ज्ञान की प्रक्रिया कैसे पूर्ण करती है। काण्ट के अनुसार हम ह्यूम की तरह तात्विक आत्मा को तो स्वीकार नहीं कर सकते किंतु तार्किक रूप से एक ज्ञानात्मक क्षमता को स्वीकार करना होगा जिसे उसने 'समाकल्पन की संश्लेषणात्मक एकता' कहा। इसके अंतर्गत न केवल बुद्धि की कोटियां बल्कि संवेदन की प्रक्रिया से जुड़ी तीन क्षमताएँ भी निहित हैं- (i) सहज प्रत्यक्ष करते हुए विभिन्न संवेदनाओं को धारण करने की योग्यता (Synthesis of Apprehension)। (ii) उन संवेदनाओं को कल्पना के माध्यम से स्मरण कर पाने की योग्यता (The synthesis of Reproduction in imagination)। (iii) संप्रत्यय निर्माण के लिए संवेदनाओं को पहचान पाने की योग्यता (The synthesis of Recognition in concept)। बुद्धि विकल्प इसी तार्किक आत्मा में विद्यमान हैं और ज्ञान को संभव बनाते हैं।

52. Which one among the following is the direct knowledge of the thoughts of others in Jaina epistemology?
निम्नलिखित में से किसमें यह मान्यता है कि जैन मीमांसा में प्रत्यक्ष ज्ञान दूसरों के विचारों से प्राप्त होता है?
(a) Pratyaksa/प्रत्यक्ष
(b) Avadhi/अवधि
(c) Manahparyaya/मनः पर्याय
(d) Kevalo/केवल

Ans. (c) : 'मनः पर्याय' के अनुसार जैन मीमांसा में प्रत्यक्ष ज्ञान दूसरों के विचारों से प्राप्त होता है।

53. Which of the following is philosophically unacceptable to St Anselm?
दार्शनिकता की दृष्टि से सेंट एंसलम को क्या स्वीकार्य नहीं है?
(a) Faith/आस्था
(b) Understanding faith/आस्था को समझना
(c) Understanding why revelation is true
आविर्भाव क्यों सत्य है, को समझना
(d) Giving up reason/तर्क का परित्याग करना

Ans. (d) : दार्शनिकता की दृष्टि से सेंट एन्सलम को स्वीकार्य है-
(i) आस्था
(ii) आस्था को समझना।
(iii) यह समझना की 'आविर्भाव क्यों सत्य है।''
जबकि तर्क का परित्याग करना उन्हें स्वीकार्य नहीं है।

54. Which one of the following is consistent with Spinoza?
निम्नलिखित में से कौन सा स्पिनोज़ा के साथ सुसंगत है?
(a) Mind and Matter are the parallel attributes of substance
मन और जड़ वस्तु द्रव्य के समानांतर गुण हैं।
(b) Mind and Matter are two distinct substances
मन और जड़ वस्तु पृथक द्रव्य हैं।
(c) Mind is derived from Matter
मन जड़ वस्तु से व्युत्पन्न है।
(d) Matter is derived from Mind
जड़ वस्तु मन से व्युत्पन्न है।

Ans. (a) : स्पिनोजा 'मन और जड़ वस्तु' को द्रव्य के समानान्तर गुण मानते हैं। स्पिनोजा का मानना है की मन और देह (जड़) भिन्न तो हैं परन्तु विरोधी नहीं है क्योंकि प्रत्येक वस्तु में चैतन्य और विस्तार सामानान्तर रूप में व्यक्त होते हैं।
स्पिनोजा ने गुणों की व्याख्या द्रव्य के सार तत्व के रूप में की है। चूंकि द्रव्य असीमित व निरपेक्ष है इसलिए उसमें गुणों की संख्या भी असीमित है लेकिन मानवीय बुद्धि की सीमा यह है की वह द्रव्य या ईश्वर के अनंत गुणों में से मात्र दो गुणों को जान पाती है क्योंकि मनुष्य में यही दो गुण होते हैं- (i) चैतन्य (consciousness) और विस्तार (Extension)।

55. Given below are two statements:
नीचे दो कथन दिए गए हैः
Statement I: Radhakrishnan rejects naturalistic explanation of the world as it fails to appreciate the nature of the ultimate reality
कथन - I: राधाकृष्णन ने विश्व की प्रकृतिवादी व्याख्या को अस्वीकार किया क्योंकि वह परम सत् की प्रकृति के महत्व को समझने में विफल रहा
Statement II: The absolute is conceived by Radhakrishnan as pure consciousness, pure freedom and infinite possibility.
कथन - II: निरपेक्ष को राधाकृष्णन द्वारा शुद्ध चेतना शुद्ध स्वतंत्रता और अनन्त संभावना के रूप में प्रकट किया गया।
In light the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) Both Statement I and Statement II are true
कथन I और II दोनों सत्य हैं
(b) Both Statement I and Statement II are false
कथन I और II दोनों असत्य हैं
(c) Statement I is true but Statement II is false
कथन I सत्य है, किन्तु कथन II असत्य है
(d) Statement is false but Statement II is true
कथन I असत्य है, किन्तु कथन II सत्य है

Ans. (a) : प्रश्नगत कथन (i) राधाकृष्ण ने विश्व की प्रकृतिवादी व्याख्या को अस्वीकार किया क्योंकि वह परम सत की प्रकृति के महत्व को समझने में विफल रहा।'' असत्य है। परन्तु कथन (ii) ''निरपेक्ष को राधाकृष्णन् द्वारा शुद्ध चेतना और शुद्ध स्वतंत्रता और अनन्त संभावना के रूप में प्रकट किया गया।'' सत्य है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

56. Lokasamgraha stands for:
लोक संग्रह निम्न के लिए प्रयुक्त होता है:

A. Fruitless activities/फलहीन कार्यकलाप
B. Moral activities/नैतिक कार्यकलाप
C. Religious activities /धार्मिक कार्यकलाप
D. Public welfare activities
लोक कल्याण कार्यकलाप

Choose the correct answer from the options given below
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A only/केवल A
(b) A and B only/केलव A और B
(c) C and D only/केवल C और D
(d) D only/केवल D

Ans. (d) : लोक संग्रह को प्राप्त साधक अपने अन्दर की पूर्णता से तृप्त होकर किसी भी व्यक्ति या पदार्थ पर स्वार्थ रूप में आश्रित नहीं होते। यह सिद्धि इतनी विलक्षण होती है कि उसके प्रत्येक कर्म भगवदकर्म बन जाते हैं। गीता में कृष्ण ने अर्जुन से कहा "अर्जुन तू निरंतर आसक्ति रहित होकर (फलहीन क्रियाकलाप) सदा ही कर्त्तव्य कर्मों को करता रह क्योंकि आसक्ति से रहित होकर कर्म करता हुआ मनुष्य परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।"

57. According to P, F, Strawson, the concept of a person that is embodied mind is a primitive concept and through this argument, Strawson rejected one of the following:
पी.एफ.स्ट्रॉसन के अनुसार, व्यक्ति की संकल्पना- कि वह चित्त का मूर्त अवधान है- एक पुरातन अवधारणा है और तर्क के मामध्य से स्ट्रॉसन ने निम्नलिखित में से किसे अस्वीकार किया है:

(a) Psychological behaviourism and Cartesian dualism
मनोवैज्ञानिक व्यवहारवाद और कार्टीजन द्वैतवाद
(b) Empiricism and Rationalism
व्यवहारवाद और बुद्धिवाद
(c) Transendental Idealism/अनुभवातीत आदर्शवाद
(d) Idealism/आदर्शवाद

Ans. (a) : पी.एफ. स्ट्रासन के अनुसार व्यक्ति की संकल्पना- कि वह चित्त का मूर्त अवधान है- एक पुरातन अवधारणा है और तर्क के माध्यम से स्ट्रासन ने 'मनोवैज्ञानिक व्यवहारवाद और कार्टीजन द्वैतवाद' को अस्वीकार किया है।

58. Which school is of the opinion that there is no contradiction in holding the judgment that a ghatah is and is not at the same time?
किस विचारधारा का यह मत है कि एक ही समय में घट है भी और नहीं भी, ऐसी मान्यता विरोधाभाषी नहीं है?

(a) Nyaya/न्याय
(b) Bauddha/बौद्ध
(c) Jaina/जैन
(d) Advaita Vedanta/अद्वैत वेदान्त

Ans. (c) : जैन मत के अनुसार एक ही समय में घट है भी और नहीं भी है, ऐसी मान्यता, विरोधाभासी नहीं है। जैन दर्शन के सप्तभंगीनय सिद्धांत 'स्यात अस्ति च' नास्ति च' के अनुसार वस्तु की सत्ता एक अन्य दृष्टिकोण से हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है। ऐसी स्थिति में 'स्यात है और स्यात नहीं है' का ही प्रयोग हो सकता है।

59. Which of the following is the correct view of Anaxagoras?
अनक्सगोरास के विचार में कौन-सा कथन सही है?

(a) Elements are without qualities.
तत्व बिना गुणों के होते हैं
(b) Elements are only four in number
तत्व केवल चार प्रकार के होते है
(c) Change is impossible/परिवर्तन असंभव है
(d) Mind initiates motion in the elements
मस्तिष्क तत्वों को गतिशील बनाता है।

Ans. (d) : अनाक्जागोरस के अनुसार 'मस्तिष्क तत्वों को गतिशील बनाता है।" अनाक्जागोरस को दर्शन और प्राकृतिक विज्ञान को यूनान लाने का श्रेय जाता है। इनके दर्शन की प्रमुख विशेषता विश्व की यांत्रिकवादी भौतिक व्याख्या है।

60. Given below are two statements, one is labeled Assertion a and other is labelled as Reason R
नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है

Answer with reference to Mill's Utilitarianism
मिल के उपयोगितावाद के संदर्भ में उत्तर दीजिए:

Assertion A: The general happiness is good to the aggregate of all persons
अभिकथन A: समष्टि के लिए सर्वसुख सर्वोत्तान है

Reason R: Each person's happiness is good to the person concerned.
कारण R: प्रत्येक का सुख संबंधित व्यक्ति हेतु उत्तम है

In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) Both A and R are true and R is the correct explanation of A
A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(b) Both A and R are true but R, A is NOT the correct explanation of A/A और R दोनों सही हैं परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(c) A is true but R is false
A सही है परन्तु R सही नहीं है
(d) A is false but R is true
A सही नहीं है परन्तु R सही है।

Ans. (a) : मिल के उपयोगितावाद के अनुसार समष्टि के लिए सर्वसुख सर्वोत्तान है, इसका कारण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति का सुख उस व्यक्ति के लिए उत्तम है। ध्यातव्य है कि जे.एस. मिल उपयोगितावादी दार्शनिक हैं मिल के अनुसार "मनुष्य एक उपयोगितावादी प्राणी हैं। वह वही कार्य करता है जिससे सुख की प्राप्ति हो।

61. What is the nature of jiva (individual self) according to Ramanuja?
रामानुज के अनुसार जीव (जीवात्मा) की क्या प्रकृति है?

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) Jiva is fundamentally non dual with Brahman
जीव मूलतः ब्रह्म के साथ अद्वैत है
(b) Jiva is absolutely different from Brahman
जीव ब्रह्म से निरपेक्ष रूप से अलग है।
(c) Jiva is both fundamentally non dual and absolutely different from Brahaman/जीव मूलतः अद्वैत और बह्म से निरपेक्ष रूप से अलग दोनों है।
(d) Jiva is existentially different but inseparably connected with Brahman. /जीव अस्तित्वात्मक रूप से अलग है,परन्तु ब्रह्म से अटूट रूप से संबद्ध है

Ans. (d) : रामानुज के अनुसार जीव अस्तित्वात्मक रूप से अलग है परन्तु ब्रह्म से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। रामानुज कहते हैं की जीव ब्रह्म का अंश है परन्तु शंकर को यह मत मान्य नहीं है क्योंकि ब्रह्म निरवयव है। वल्लभाचार्य कहते हैं की जीव ब्रह्म का विकार है परन्तु शंकर को यह मत मान्य नहीं है क्योंकि ब्रह्म अविकारी है। जीव न आत्मा का अंश है न आत्मा का विकार है और न आत्मा से भिन्न है बल्कि यह स्वतः आत्मा है। यदि जीव को ब्रह्म से भिन्न मान लिया जाए तो वह ब्रह्म से तादात्म्यक नहीं हो सकता है क्योंकि दो भिन्न वस्तुओं में तादात्म्यकता संभव नहीं है।
शंकर कहते हैं की जीव और ब्रह्म के बीच में जो भेद दिखाई पड़ता है वह सत्य नही है इसका कारण यह है की दोनों का भेद उपाधि के द्वारा निर्मित है। दोनों का भेद व्यवहारिक है सत्य तो यह है की जीव और ब्रह्म में परमार्थतः कोई भेद नहीं है। शंकर का यह कथन कि 'तत् त्वम् असि' आत्मा और जीव की अभिन्नता को प्रमाणित करता है।

62. In Nyaya philosophy of language Isvareccha is:
न्याय भाषा दर्शन में ईश्वरेच्छा है:
(a) The cause of sabda/शब्द का कारण
(b) The cause of sakti/शक्ति का कारण
(c) Sabda iteslf/स्वयं शब्द
(d) Sakti iteslf/स्वयं शक्ति

Ans. (d) : न्याय भाषा दर्शन के अनुसार 'स्वयं शक्ति' ईश्वर की इच्छा है।

63. Which one of the following is the obversion of the proposition "All residents are voters"?
निम्मलिखित में से कौन-सा एक तर्कवाक्य का परिवर्तन है? ''सभी निवासी मतदाता हैं''
(a) All voters are residents/सभी मतदाता निवासी हैं
(b) No voters are residents
कोई मतदाता, निवासी नहीं है
(c) No residents are voters
कोई निवासी, मतदाता नहीं है
(d) No residents are non-voters
कोई निवासी गैर-मतदाता नहीं है

Ans. (d) : 'सभी निवासी मतदाता हैं' यह 'A' प्रकार का तर्कवाक्य है इसका परिवर्तन ''कोई निवासी गैर मतदाता नही है'' होगा।

64. Which type of hetvabhasa is committed by the anumana: Sabdah nityah sabdatvat?
अनुमान द्वारा किस प्रकार की हेत्वाभास की प्रतिबद्धता है: शब्दः नित्यः शब्दावात?
(a) Sadharana savyabhicara/साधारण सव्यभिचार
(b) Asadharana savyabhicara/असाधारण सव्यभिचार
(c) Svarupasiddha/स्वरूपासिद्ध
(d) Viruddha/विरूद्ध

Ans. (b) : अनुमान द्वारा 'असाधारण सव्यभिचार' की प्रतिबद्धता है। जब हेतु केवल पक्ष में रहता है परन्तु सपक्ष और विपक्ष में नहीं जैसे- भूमि नित्य है, क्योंकि इसमें गन्ध है। इसमें गन्ध हेतु केवल पक्ष (भूमि) में है। यह हेतु जहाँ साध्य का नित्य होना निश्चित है जैसे-आकाश आदि में नहीं रहता और जहाँ साध्य के अभाव का होना, अनित्य होना निश्चित है जैसे- जल आदि विपक्ष में नहीं है।

65. Which one of the following presents Kierkegaard's philosophy appropriately?
निम्नलिखित में से क्या किर्कगार्ड के दर्शन का समुचित प्रतिनिधित्व करता है?
(a) Subjectivity is truth/आत्मनिष्ठता सत्य है
(b) Hegelianism and Rationalism
हेगेलवाद और बुद्धिवाद
(c) Being of the human being/मानव होना
(d) Reality of the Universal/सार्वभौम की वास्तविकता

Ans. (a) : प्रश्नगत विकल्पों में 'आत्मनिष्ठता सत्य है' के द्वारा किर्कगार्ड के दर्शन का समुचित प्रतिनिधत्व होता है। अस्तित्ववाद के प्रणेता किर्कगार्ड ने स्पष्ट घोषणा की है कि 'सत्य आत्मनिष्ठता है।'' आत्मनिष्ठता सत्य की कोटि (Category) नहीं वरन् सत्य आत्मनिष्ठता ही है। वह कहता भी है कि ''मैं सत्य को तब तक नहीं जान सकता जब तक की वह मुझमें चरितार्थ न हो जाए।''
सत्य की आत्मनिष्ठता को सिद्ध करने के लिए किर्कगार्ड ने एक तर्क भी दिया है उसके अनुसार दो आत्माओं या आत्मा और ईश्वर के मध्य वस्तुनिष्ठ संबंध होना संभव ही नहीं है क्योंकि ऐसी स्थिति में किसी एक का आत्मनिष्ठ रूप खण्डित हो जाएगा। अतः सत्य आत्मनिष्ठ ही हो सकता है।

66. Which of the following philosophers advocate a distinction between Anumana and Arthapatti pramana?
निम्नलिखित में से कौन-कौन से भारतीय दार्शनिक अनुमान और अर्थापत्ति प्रमाण में भेद करते हैं?
(a) Ramanuja and Madhva/रामानुज और मध्व
(b) Samkara and Kumarila/शंकर और कुमारिल
(c) Madhva and Nimbarka/माधव और निंबार्क
(d) Kumarila and Ramanuja/कुमारिल और रामानुज

Ans. (b) : शंकर और कुमारिल दोनों ने अनुमान और अर्थापत्ति प्रमाण में भेद किया है। शंकर अद्वैत वेदान्त के प्रणेता हैं जबकि कुमारिल का संबंध मीमांसा दर्शन से है।

67. Who is the chief architect for the reconciliation between Rationalism and Empiricism?
बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों के समन्वय का प्रमुख वास्तुकार कौन है?
(a) Locke/लॉक (b) Spinoza/स्पिनोज़ा
(c) Hume/ह्यूम (d) Kant/कांट

Ans. (d) : काण्ट ने बुद्धिवाद और अनुभववाद का समन्वय किया। काण्ट ने तो पूरी तरह बुद्धिवाद का और न ही अनुभववाद का अनुसरण किया। इन्होंने कहा की बुद्धिवादियों के ज्ञान में अनिवार्यता और सार्वभौमिकता तो मिल जाती है किन्तु नवीनता तथा वास्तविकता नहीं मिलती जबकि अनुभववादियों के ज्ञान में केवल नवीनता मिलती है, अनिवार्यता और सार्वभौमिकता नहीं। काण्ट ने ऐसे ज्ञान को खोजा जिसमें यह तीनों तत्त्व एक साथ मिलें और उसकी यह खेज ज्ञान की जिस परिभाषा में पूरी हुई, वह है ''ज्ञान संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णयों की व्यवस्था है।''

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

68. Which of the following text is composed by Maulana Azad?
निम्नलिखित में कौन-सी पुस्तके मौलाना आज़ाद द्वारा लिखी गयी हैं?

(A) Ghubar-e-Khatir/गुबार-ए-खातिर
(B) Education and Religious identity
एजुकेशन एण्ड रिलीजियस आइडेंटिटी
(C) India Wins Freedom/इण्डिया विन्स फ्रीडम
(D) Tarjumanul Quran/तर्जुमानुल कुरान
(E) Tarjumanul Geeta/तर्जुमानुल गीता

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A and D only/केवल A और D
(b) A, C and D only/केवल A, C और D
(c) A, B, C, D and E/ A, B, C, D और E
(d) A, D and E only/ केवल A, D और E

Ans. (b) : मौलाना आजाद द्वारा लिखी गई पुस्तकें-
गुबार-ए-खातिर।
इण्डिया विन्स फ्रीडम।
तर्जुमानुल कुरान।

69. Consider the following and select the code consistent with Kant's Categorical imperative:
निम्नलिखित पर विचार कीजिए और कांट के निरपेक्ष आदेश से संबंधित कूट को चुनिये:

A. Internal law of conscience
अंतःकरण की आंतरिक विधि
B. Apriori/अनुभव निरपेक्ष
C. Moral law/नैतिक विधि
D. Natural law/नैसर्गिक विधि

Choose the correct answer from the options given below
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A only/केवल A
(b) A and B only/केवल A और B
(c) A, B and C only/केवल A, B और C
(d) B, C and D only/केवल B, C और D

Ans. (c) : 'अंतःकरण की आंतरिक विधि, अनुभव निरपेक्ष तथा नैतिक विधि' तीनों का संबंध काण्ट के निरपेक्ष आदेश से है। काण्ट के अनुसार "निरपेक्ष आदेश वह आदेश है जो कर्म को किसी प्रयोजन की पूर्ति का साधन न मानकर उसे अपने आप में शुभ तथा अनिवार्य मानता है।" अर्थात वह नैतिक सिद्धांत जो किसी साध्य प्रयोजन या हेतु द्वारा नियंत्रित नहीं रहता। जब कर्तव्य के लिए कर्तव्य किया जाता है तब उस कर्तव्य या नैतिक सिद्धांत को निरपेक्ष आदेश कहा जाता है।

70. What is the concern to the ethics of Levinas?
लेविनास का नीतिशास्त्र किससे संबंधित है?

(a) Responsibility towards other
दूसरों के प्रति दायित्व मानना
(b) Regulation with oneself
अपने आप को नियमबद्ध करना
(c) Charity to the other/दूसरों के प्रति सद्भाव रखना
(d) Unconditional faith to the other
दूसरों पर शर्तहीन विश्वास करना

Ans. (a) : 'लेविनास का नीतिशास्त्र 'दूसरों के प्रति दायित्व मानने' से संबंधित है। लेविनास का उत्तरदायित्व का सिद्धांत सत्तामीमांसा या मौलिक नैतिकता है। इस सिद्धांत का सबसे सकारात्मक पहलू आत्मनिष्ठता की अवधारणा है।

71. Match List I with List II
सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए:

List I/सूची - I	**List II/ सूची - II**
A. Interactionism क्रिया-प्रतिक्रियावाद	I. Hume/ह्यूम
B. Parallelism/सामांतरवाद	II. Descartes/डेकार्ट
C. Per-established harmony/पूर्वस्थापित सामंजस्य	III. Spinoza/स्पिनोजा
D. Scepticism/संशयावाद	IV. Leibnitz/लाइबनित्ज

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A - II, B - II, C - I, D - IV
(b) A - II, B - III, C - IV, D - I
(c) A - III, B - I, C - II, D - IV
(d) A - I, B - II, C - III, D - IV

Ans. (b) : सही सुमेल निम्नलिखित है-

सूची - I	**सूची - II**
A. क्रिया-प्रतिक्रियावाद	II. डेकार्ट
B. सामांतरवाद	III. स्पिनोजा
C. पूर्वस्थापित सामंजस्य	IV. लाइबनित्ज
D. संशयावाद	I. ह्यूम

72. Figures of categorical syllogism are determined on the basis of:
कोटिबद्ध न्यायवाक्य की आकृतियाँ किस आधार पर निर्धारित होती हैं?

(a) Position of the major term in the premises
आधारवाक्य में मुख्यपद की स्थिति पर
(b) Position of the minor term in the premises
आधारवाक्य में अमुख्य पद की स्थिति पर
(c) Position of the middle term in the premises
आधारवाक्य में मध्यपद की स्थिति पर
(d) Positions of the major term in the conclusion
निष्कर्ष में मुख्यपद की स्थिति पर

Ans. (c) : कोटिबद्ध न्याय वाक्य की आकृतियां आधार वाक्य में मध्य पद की स्थिति पर निर्धारित होती हैं। इस तरह के न्याय वाक्यों में मध्यम पद दोनों आधार वाक्यों में होता है निष्कर्ष में नहीं।
जैसे- सभी जीव मरणशील हैं।
सभी मनुष्य जीव हैं।
∴ सभी मनुष्य मरणशील हैं।
इसमें 'जीव' शब्द दोनों आधार वाक्यों में है जो कि मध्यम पद है।

73. Who among the following are votaries of caturvamya systey?
निम्नलिखित में से कौन चातुर्वर्ण्य परंपरा के समर्थक हैं

A. M. K. Gandhi/एम.के गाँधी
B. Sarvepalli Radhakrishnn/सर्वपल्ली राधाकृष्णन
C. Narayana Guru/नारायण गुरू
D. Deendayal Upadhyaya/दीनदयाल उपाध्याय

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Choose the correct answer from the options given below:
नीच दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A and B only/केवल A और B
(b) A, B and C only/केवल A, B और
(c) A, B and D only/केवल A, B और D
(d) A, B, C and D/ A, B, C और D

Ans. (c) : चतुर्वर्ण्य परंपरा के समर्थकों में एम.के. गांधी, सर्वपल्ली राधाकृष्णन, तथा दीनदयाल उपाध्याय हैं जबकी नारायण गुरू चातुर्वर्ण्य परंपरा के विरोधी थे।

74. Which of the following statement is incompatible with Hegel's view?
हीगल से क्या असंगत है?

(a) Contradiction is the root of all life and movement
विरोधाभास समग्र जीवन और गति का मूल है
(b) Everything tends to change into its opposite
प्रत्येक वस्तु की प्रवृत्ति अपने विरूद्ध बदलने की है
(c) The seed for example contradicts itself and transcends itself/जैसे बीज अपने विरूद्ध होते हुए अपना अतिक्रमण करता है
(d) The Absolute is a myth/निरपेक्ष एक मिथक है

Ans. (d) : "निरपेक्ष एक मिथक है।" यह हीगल के असंगत है। निम्नलिखित हीगेल के सुसंगत है-
(i) विरोधाभास समग्र जीवन और गति का मूल है।
(ii) प्रत्येक वस्तु की प्रवृत्ति अपने विरूद्ध बदलने की है।
(iii) जैसे बीज अपने विरूद्ध होते हुए अपना अतिक्रमण करता है।
हीगेल का दर्शन निरपेक्ष प्रत्ययवाद कहलाता है। प्रत्ययवाद उस सिद्धांत को कहते हैं जिसके अनुसार अंतिम सत्ता अंतिम तत्व की नहीं बल्कि प्रत्यय की है निरपेक्ष का अर्थ ऐसे तत्व से है जिसको अपनी सत्ता और ज्ञान के लिए किसी अन्य की अपेक्षा नही है जो स्वयंभू स्वतंत्र है हीगेल मानता है की तात्विक दृष्टि से केवल एक प्रत्यय की सत्ता है जो पूर्णतया निरपेक्ष है।

75. Which one of the following is the correct combination of moods in the fourth figure?
निम्नलिखित में से कौन-सा एक चतुर्थ आकार में विन्यास का सही संयोजन है?

(a) Datisi, Disarmis and Ferison
दातिसि, दिसामिस और फेरिसान
(b) Camenes, Dimaris and Festino
केमेनेस, दिमारिस और फेस्टिनो
(c) Datisi, Disamis and Ferio
दातिसि, दिसामिस और फेरियो
(d) Camenes, Dimaris and Fresison
केमेनेस, दिमारिस और फ्रेसिसान

Ans. (d) चतुर्थ आकार में विन्यास का सही संयोजन इस प्रकार है-
BRAMANTIP → CAMENES → FESAPO → DIMARIS → FRESISON

76. Consider the following statements with reference to Iqbal's intuition.
इक़बाल की अंतःप्राज्ञ के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

Statement I: Intuition is an immediate knowledge of reality
कथन - अंतः प्रज्ञा सत् का अपरोक्ष ज्ञान है।
Statement II: Intuition is the property of heart
कथन - अंतःप्रज्ञा हृदय का गुण है
In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) Both Statement I and Statement II are true
कथन और दोनों सत्य है
(b) Both Statement I and Statement II are false
कथन और दोनों असत्य है
(c) Statement I is true but Statement II is false
कथन सत्य है, किन्तु कथन असत्य है
(d) Statement I is false but Statement II is true
कथन असत्य है, किन्तु कथन सत्य है

Ans. (a) : मुहम्मद इकबाल के अनुसार अंतः प्रज्ञा की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-
(i) यह सत का अपरोक्ष ज्ञान है।
(ii) यह हृदय का गुण है।
इस प्रकार कथन (i) और कथन (ii) दोनों सत्य है।

77. Match List I with List II
सूची - को सूची - से सुमेलित कीजिए:

List I/सूची - I	List II/सूची - II
A. The effect is produced in the presence of its cause कारण की उपस्थिति में कार्य की उत्पत्ति होती है	I. Vaisesika/वैशेषिक
B. The effect is produced in the absence of its cause/कार्य की उत्पत्ति उसके कारण की अनुपस्थिति में होती है	II. Advaita Vedanta अद्वैत वेदांत
C. The effect preexists in its cause before its production/कार्य उत्पत्ति-पूर्व अपने कारण में पूर्व-विद्यमान होता है	III. Bauddha/बौद्ध
D. The effect is not real but the cause is real कार्य वास्तविक नहीं है, परंतु कारण वास्तविक है	IV. Samkhya/सांख्य

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A - I, B - II, C - III, D - IV
(b) A - I, B - III, C - IV, D - II
(c) A - II, B - III, C - IV, D - I
(d) A - I, B - II, C - IV, D - III

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : सही सुमेल निम्नलिखित है-

सूची - I	सूची - II
A. कारण की उपस्थिति में कार्य की उत्पत्ति होती है	I. वैशेषिक
B. कार्य की उत्पत्ति उसके कारण की अनुपस्थिति में होती है	III. बौद्ध
C. कार्य उत्पत्ति-पूर्व अपने कारण में पूर्व-विद्यमान होता है	IV. सांख्य
D. कार्य वास्तविक नहीं है, परंतु कारण वास्तविक है	II. अद्वैत वेदांत

78. Which one of the following does not fall under the category of Relevance?
निम्नलिखित में से कौन-सा एक प्रासंगिकता दोष की कोटि में आता है?
(a) The Red Herring/भ्रामक संकेत
(b) The Straw Man/पुतला
(c) The appeal to emotion/भावना के लिए आग्रह
(d) Begging the question/प्रश्नापेच्छा

Ans. (d) : 'प्रश्नापेच्छा' प्रासंगिकता कोटि की दोष में आता है। ऐसी सभी युक्तियों के तार्किक रूप से आधार वाक्य अपने निष्कर्ष के लिए अप्रासंगिक होते है तब यह तर्कदोष होता है। दूसरे शब्दों में वे दोष जो भाषा पर आश्रित नहीं है, प्रासंगिकता दोष कहे जाते हैं।

79. Match List I with List II
सूची - की सूची - से सुमेलित कीजिए:

List I	List II
A. Self is active and consicious/आत्मा सक्रिय और सचेतन है	I. Advaita Vedanta अद्वैत वेदांत
B. Self is inactive and consicious/आत्मा असक्रिय और सचेतन है	II. Samkhya/सांख्य
C. Self is the body itself/आत्मा ही शरीर है	III. Vaisesika/वैशेषिक
D. Self is knowledge itself/आत्मा ही ज्ञान है	IV. Carvaka/चार्वाक

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(a) A - I, B - II, C - III, D - IV
(b) A - I, B - II, C - IV, D - III
(c) A - III, B - II, C - IV, D - I
(d) A - III, B - IV, C - I, D - II

Ans. (c) :

सूची- I	सूची- II
A. आत्मा सक्रिय और सचेतन है	III. वैशेषिक
B. आत्मा असक्रिय और सचेतन है	II. सांख्य
C. आत्मा ही शरीर है	IV. चार्वाक
D. आत्मा ही ज्ञान है	I. अद्वैत वेदांत

80. Consider the following and select the code stating Bahiranga Limbs of Astanga yoga:
निम्नलिखित पर विचार कीजिए और अष्टांग योग के बहिरंग अवयव को वर्णित करने वाले कूट को चुनिये:
A. Yama, Niyama, Asana/यम, नियम, आसन
B. Dhyana, Dharana/ध्यान, धारणा
C. Pranayama, Pratyahara/प्राणायाम, प्रत्याहार
D. Dharana, Dhyanya, Somadhi धारणा, ध्यान, समाधि
Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से उत्तर चुनें:
(a) A and B only/केवल A और B
(b) A and C only/केवल A और C
(c) A and D only/केवल A और D
(d) C and D only/केवल A और D

Ans. (b) : योग दर्शन के अनुसार योग के आठ अंग हैं- (i) यम (ii) नियम (iii) आसन (iv) प्राणायाम (v) प्रत्याहार (vi) धारणा (vii) ध्यान (viii) समाधि। इसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम तथा प्रत्याहार बहिरंग अवयव हैं तथा ध्यान, धारणा एवं समाधि अंतरंग अवयव हैं।

81. Match List I with List II
सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए:

List I/सूची - I	List II/सूची - II
A. Constructive Dilemma संरचनात्मक उभयतोपाश	I. pvq. ~p, ∴ q
B. Addition/योग	II. p ⊃ q, p, ∴ q
C. Modus Ponens मोडस पोनेस	III. p ∴ p, v q
D. Disjunctive Syllogism वियोजक न्यायवाक्य	IV. (p ⊃ q). (r ⊃ s), pvr, ∴ qvs

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(a) A - I, B - III, C - II, D - IV
(b) A - II, B - I, C - IV, D - III
(c) A - IV, B - III, C - II, D - I
(d) A - III, B - II, C - I, D - IV

Ans. (c) : सही सुमेल निम्नलिखित है-

सूची - I	सूची - II
A. संरचनात्मक उभयतोपाश	IV. (p ⊃ q). (r ⊃ s), pvr, ∴ qvs
B. योग	III. p ∴ p, v q
C. मोडस पोनेस	II. p ⊃ q, p, ∴ q
D. वियोजक न्यायवाक्य	I. pvq. ~p, ∴ q

82. Consider the following and select the correct sequence from the codes given below:
निम्नलिखित पर विचार कीजिए और नीचे दिये गये कूट में से सही क्रम चुनिये:
A. Artha/अर्थ **B. Dharma/धर्म**
C. Moksa/मोक्ष **D. Kama/काम**
Choose the correct answer from the options given below
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) A, B, C and D/ A, B, C और D
(b) B, A, D and C/ B, A, D और C
(c) B, A, C and D/ B, A, C और D
(d) D, A, B and C/ D, A, B और C

Ans. (b) : सही क्रम इस प्रकार है-
धर्म → अर्थ → काम → मोक्ष।

83. Match List I with List II
सूची - को सूची - से सुमेलित कीजिए:

List I/सूची- I	List II/सूची - II
A. Advaita Vedantal अद्वैत वेदांत	I. Egoistic Hedonism अहंवादी सुखवाद
B. Buddhism/बौद्व धर्म	II. Performance of Duties कर्तव्य निष्पादन
C. Gita/गीता	III. Self-realization आत्मानुभूति
D. Carvaka/चार्वाक	IV. Noble Truth परम सत्य

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(a) A - I, B - II, C - III, D - IV
(b) A - III, B - IV, C - II, D - I
(c) A - IV, B - III, C - I, D - II
(d) A - I, B - III, C - IV, D - II

Ans. (b) : सही सुमेल निम्नलिखित है-

सूची- I	सूची - II
A. अद्वैत वेदांत	III. आत्मानुभूति
B. बौद्व धर्म	IV. परम सत्य
C. गीता	II. कर्तव्य निष्पादन
D. चार्वाक	I. अहंवादी सुखवाद

84. Which of the following position is incompatible with the view of Berkeley?
बर्कले के साथ असंगत है?
(a) Acceptance of Ideas/प्रत्ययों की स्वीकार्यता
(b) Acceptance of the existence of soul
आत्मा के अस्तित्व की स्वीकार्यता
(c) Acceptance of abstract ideas
अमूर्त प्रत्ययों की स्वीकार्यता
(d) Acceptance of nominalism
नामरूपवाद की स्वीकार्यता

Ans. (c) : बर्कले को स्वीकार्य है-
(i) प्रत्ययों की सत्ता
(ii) आत्मा के अस्तित्व की स्वीकार्यता
(iii) नामरूपवाद की स्वीकार्यता
जबकि बर्कले अमूर्त प्रत्ययों की सत्ता अस्वीकार करते हैं। यद्यपि बर्कले सामान्य के प्रत्यय स्वीकार करते हैं।

85. Consider the following with reference to distribution of terms in categorical propositions:
निम्नलिखित कथनों के तर्कवाक्यों में पदों के व्यापत होने के संदर्भ में विचार कीजिए:
A. A proposition distributes only its predicate term
ए तर्कवाक्य में केवल इसके विधेय पद व्याप्त होते है
B. E proposition distributes both its subject and predicate terms
ई तर्कवाक्य में इसके उद्देश्य और विधेय पद व्याप्त होते है
C. I proposition distributes its only subject term
आई तर्कवाक्य में केवल उद्देश्य पद व्याप्त होते हैं
D. O proposition distributes only its predicate term
ओ तर्कवाक्य में केवल विधेय पद व्याप्त होते है
Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A and B only/केवल A और B
(b) B and C only/केवल B और C
(c) A and D only/केवल A और D
(d) B and D only/केवल B और D

Ans. (d) : 'ई' तर्कवाक्य में उसके उद्देश्य और विधेय पद व्याप्त होते हैं।
'ओ' तर्कवाक्य में केवल विधेय पद व्याप्त होते हैं।
'ई' तर्कवाक्य का उदाहरण-
कोई कलाकार चित्रकार नहीं है/(E)
'ओ' तर्कवाक्य का उदाहरण-
कुछ मनुष्य बिल्लियाँ नहीं है।

86. Who said that " I don't care of God, if he is anything but truth"?
'मै ईश्वर की परवाह नहीं करता, यदि चाहे वह सत्य ही हो' यह कथन निम्नलिखित में से किसका है
(a) K. C. Bhattacharya/के.सी.भट्टाचार्य
(b) Iqbal/इक़बाल
(c) Vivekananda/विवेकानंद
(d) M.K. Gandhi/एम.के. गाँधी

Ans. (d) : "मैं ईश्वर की परवाह नहीं करता, यदि चाहे वह सत्य ही हो।"
यह कथन मोहनदास कमरचंद गांधी का है।

87. According to the Carvakas fire burns because:
चार्वाक के अनुसार अग्नि जलाती है, क्योंकि:
(a) It is divine will/यह दैवीय इच्छा है
(b) It is a cosmic order/यह एक सांसारिक व्यवस्था है
(c) It is the nature of fire/यह अग्नि की प्रकृति है
(d) The burning power is the essence of fire
जलाने की शक्ति अग्नि का तात्विक गुण है

Ans. (c) : चार्वाक का मानना है कि अग्नि जलाती है क्योंकि यह अग्नि की प्रकृति है। चार्वाक नास्तिक दार्शनिक है। इनका ईश्वरीय सत्ता में विश्वास नहीं है यह आत्मा में भी विश्वास नहीं करते हैं। प्रत्यक्ष को केवल प्रमाण मानते है।

88. Who among the following is the ancient Greek pluralist?
निम्नलिखित में से कौन प्राचीन ग्रीक बहुलवादी विचारक है?

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) Permenides/परमेनाइडेस
(b) Zeno/जीनो
(c) Empedocles/एंपेडोक्लीस
(d) Anaximander/अनाक्सीमंडर

Ans. (c) : एंपेडोक्लीस प्राचीन बहुलवादी विचारक हैं। यह ग्रीक के प्राचीन दार्शनिकों में गिने जाते हैं।

89. Identify the contraposition of the proposition "Some philosophers are not-scientists"
तर्कवाक्य की विपरीतता को पहचानिए
''कुछ दार्शनिक-वैज्ञानिक नहीं है''

(a) Some non-scientists are not non-philosophers
कुछ गैर-वैज्ञानिक, गैर-दार्शनिक नहीं हैं
(b) Some non-philosophers are non-scientists
कुछ गैर-दार्शनिक, गैर-वैज्ञानिक हैं
(c) No non-scientists are non-philosophers
कोई भी गैर-वैज्ञानिक, गैर-दार्शनिक नहीं है
(d) All scientists are non-philosophers
सभी वैज्ञानिक, गैर-दार्शनिक हैं।

Ans. (a) : 'कुछ दार्शनिक वैज्ञानिक नहीं है' का प्रतिपरिवर्तन (Contraposition) 'कुछ गैर वैज्ञानिक गैर दार्शनिक नहीं है।' प्रतिपरिवर्तन की प्रक्रिया में निष्कर्ष का उद्देश्य पद आधार वाक्य के विधेय पद का पूरक एवं निष्कर्ष का विधेय पद आधार वाक्य के उद्देश्य पद का पूरक लिखकर एक ऐसे तर्कवाक्य को निष्कर्ष के रूप में निकालते हैं , जिससे मूल तर्कवाक्य के अर्थ और निष्कर्ष के अर्थ में किसी प्रकार का अंतर नहीं आता है।

90. Berkeley is called as Idealist because:
बर्कले को आदर्शवादी कहा जा सकता है क्योंकि

(a) He was a bishop/वह एक विषप था
(b) There is no knowledge which in not in the form of ideas
ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जो आदर्श रूप में न हो
(c) Matter matters least to him
विषय उसके लिए महत्वपुर्ण विषय नहीं है
(d) He postulated the principle : Think with the learned and speak with the vulgar
उसने ''शिष्टता के साथ सोचना तथा अशिष्टता से बोलना'' सिद्धांत को अभिगृहित किया

Ans. (b) : बर्कले को आदर्शवादी इसलिए का जा सकता है क्योंकि ऐसा कोई ज्ञान नही है जो आदर्श रूप में न हो। बर्कले अनुभववादी दार्शनिक हैं। इन्होंने अपने महत्वपूर्ण सिद्धांत ''सत्ता दृश्यता' है के माध्यम से भौतिकवाद तथा वस्तुवाद दोनों का खण्डन किया है।

91. There the below passage and answer the five question that follow:
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

There are several reasons why "Know yourself" has obscured "Take care of yourself". We are more inclined to see taking care of ourselves as an immorality, as a means of escape from all possible rules. We inherit the tradition of Christian morality which makes self-renunciation the condition for salvation. To know oneself was, paradoxically, a means of sefl-renuciation. We also inherit a secular tradition that sees in external law the basis for morality. How then can respect for the self be the basis for morality? We are the inheritors of a social morality that seeks the rules for acceptable behavior in relations with others, Since the 16th century, criticism of established morality has been undertakes in the name of the importance of recognizing and knowing the self. Therefore, it is difficult to see the care of the self as compatible with morality, "Know thyself" has obscured "Take care of yourself because our morality, amorality of asceticism, insist that the self is that which one can reject.
...To summarize: There has been an inversion in the hierarchy of the two principles of antiquity, "Take care of yourself" and "Know yourself". In Greco-Roman culture, knowledge of oneself appeared as the consequence of the care of the self. In the modern world, knowledge of oneself constitutes the fundamental principle".

"Know yourself" has obscured "Take care of yourself" because:
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

'स्वयं को जानने' की अस्पष्ट अवधारणा का ''अपने आप का ध्यान रखना'' की धारणा के रूप में परिवर्तित हो जाने के अनेक कारण हैं। हम अपने आप का ही ध्यान रखने के लिए अधिक प्रवृत्त होने को अनैतिक मानते हैं, जो कि सभी संभावित नियमों से दूर ले जाने का साधन मात्र है। इस क्रम में हम ईसाई नैतिकता की परंपरा का अवधान करते हैं जिसमें आत्म-त्याग को मोक्ष की शर्त्त माना जाता है। अपने आप को जानना (आत्म-ज्ञान), विरोधस्वरूप आत्म-त्याग का साधन है। साथ ही हम एक धर्म - निरपेक्ष परंपरा का भी अवधान करते हैं, जो बाह्य सिद्धांत को नैतिकता का आधार मानता है। इस प्रकार, आत्म मुग्धता नैतिकता का आधार कैसे हो सकती है, जो दूसरों के साथ स्वीकार्य व्यवहार के लिए नियमों की मांग करते हैं। 16वीं शताब्दी से ही, आत्म बोध और आत्म ज्ञान के महत्त्व के नाम पर स्थापित नैतिकता की आलोचना की जाती रही है। अतः आत्मानुरक्षा (स्वयं की देख-रेख) को नैतिकता के समान मान्यता देना कठिन प्रतीत होता है। ''स्वयं को जानो'' द्वारा ''अपना'' ध्यान रखो'' और ''अपने आप को जानो'' के पुरातन दो सिद्धांतों के अनुक्रम में व्यतिरेक रहा है। ग्रीक - रोमन संस्कृति में, अपने आप का बोध या ज्ञान आत्मानुरक्षण का परिणाम है। आधुनिक युग में, आत्मज्ञान का अभिप्राय 'मौलिक सिद्धांत से है।

"Know yourself" has obscured "Take care of yourself" because:
'स्वयं को जानने' की अस्पष्ट अवधारणा है 'अपने आप की देख-भाल करना; क्योंकि

(a) Our morality is able to appropriate the Self
हमारी नैतिकता स्वयं का परिमार्जन करने में सक्षम है
(b) A morality of asceticism rejects the Self
वैराग्यवाद की नीति स्वयं का अस्वीकरण करती है
(c) We inherited the tradition of Christian morality
हम ईसाई नैतिकता की परंपरा का अवधान करते हैं
(d) Morality is recognized in terms of knowing the Self
नैतिकता की अधिमान्यता है 'स्वयं को जानना'

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : 'स्वयं को जानो' के द्वारा अपना ध्यान रखो के अस्पष्ट अवबोधन का कारण यह है की हमारी नैतिकता वैराग्यवाद की नैतिकता है जिसमें आत्मबोध उसको माना जाता है जहाँ स्वयं का त्याग (अस्वीकार) किया जाता है।

92. Read the below passage and answer the five questions that follows:
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

There are several reasons why "Know yourself" has obscured "Take care of yourself". We are more inclined to see taking care of ourselves as an immorality, as a means of escape from all possible rules. We inherit the tradition of Christian morality which makes self-renunciation the condition for salvation. To know oneself was, paradoxically, a means of sefl-renuciation. We also inherit a secular tradition that sees in external law the basis for morality. How then can respect for the self be the basis for morality? We are the inheritors of a social morality that seeks the rules for acceptable behavior in relations with others, Since the 16th century, criticism of established morality has been undertakes in the name of the importance of recognizing and knowing the self. Therefore, it is difficult to see the care of the self as compatible with morality, "Know thyself" has obscured "Take care of yourself because our morality, amorality of asceticism, insist that the self is that which one can reject.

...To summarize: There has been an inversion in the hierarchy of the two principles of antiquity, "Take care of yourself" and "Know yourself". In Greco-Roman culture, knowledge of oneself appeared as the consequence of the care of the self. In the modern world, knowledge of oneself constitutes the fundamental principle".

'स्वयं को जानने' की अस्पष्ट अवधारणा का "अपने आप का ध्यान रखना" की धारणा के रूप में परिवर्तित हो जाने के अनेक कारण हैं। हम अपने आप का ही ध्यान रखने के लिए अधिक प्रवृत्त होने को अनैतिक मानते हैं, जो कि सभी संभावित नियमों से दूर ले जाने का साधन मात्र है। इस क्रम में हम ईसाई नैतिकता की परंपरा का अवधान करते हैं जिसमें आत्म-त्याग को मोक्ष की शर्त्त माना जाता है। अपने आप को जानना (आत्म-ज्ञान), विरोधस्वरूप आत्म-त्याग का साधन है। साथ ही हम एक धर्म - निरपेक्ष परंपरा का भी अवधान करते हैं, जो बाह्य सिद्धांत को नैतिकता का आधार मानता है। इस प्रकार, आत्म मुग्धता नैतिकता का आधार कैसे हो सकती है, जो दूसरों के साथ स्वीकार्य व्यवहार के लिए नियमों की मांग करते हैं। 16वीं शताब्दी से ही, आत्म बोध और आत्म ज्ञान के महत्त्व के नाम पर स्थापित नैतिकता की आलोचना की जाती रही है। अतः आत्मानुरक्षा (स्वयं की देख-रेख) को नैतिकता के समान मान्यता देना कठिन प्रतीत होता है। "स्वयं को जानो" द्वारा "अपना" ध्यान रखो" और "अपने आप को जानो" के पुरातन दो सिद्धांतों के अनुक्रम में व्यतिरेक रहा है। ग्रीक - रोमन संस्कृति में, अपने आप का बोध या ज्ञान आत्मानुरक्षण का परिणाम है। आधुनिक युग में, आत्मज्ञान का अभिप्राय 'मौलिक सिद्धांत से है।

Select circumstances as the basis for morality
धर्मनिरपेक्ष परंपरा निम्नलिखित में से किसका समर्थन करती है?

(a) External circumstances as the basis for morality/नैतिकता के लिए बाह्य परिस्थितियों को आधार माना जाता है
(b) Internal circumstances as the basis for morality/नैतिकता के लिए आंतरिक परिस्थितियों को आधार माना जाता है
(c) Respect for la as the basis for morality/नैतिकता के लिए नियमों के सम्मान को आधार माना जाता हैं
(d) External law as the basis for morality
नैतिकता के लिए बाह्य सिद्धांत को आधार माना जाता है

Ans. (d) : धर्म निरपेक्ष परंपरा में नैतिकता के लिए वाह्य सिद्धांत को आधार माना जाता है।

93. Read the below passage and answer the five questins that follow:
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

There are several reasons why "Know yourself" has obscured "Take care of yourself". We are more inclined to see taking care of ourselves as an immorality, as a means of escape from all possible rules. We inherit the tradition of Christian morality which makes self-renunciation the condition for salvation. To know oneself was, paradoxically, a means of sefl-renuciation. We also inherit a secular tradition that sees in external law the basis for morality. How then can respect for the self be the basis for morality? We are the inheritors of a social morality that seeks the rules for acceptable behavior in relations with others, Since the 16th century, criticism of established morality has been undertakes in the name of the importance of recognizing and knowing the self. Therefore, it is difficult to see the care of the self as compatible with morality, "Know thyself" has obscured "Take care of yourself because our morality, amorality of asceticism, insist that the self is that which one can reject.

...To summarize: There has been an inversion in the hierarchy of the two principles of antiquity, "Take care of yourself" and "Know yourself". In Greco-Roman culture, knowledge of oneself appeared as the consequence of the care of the self. In the modern world, knowledge of oneself constitutes the fundamental principle".

'स्वयं को जानने' की अस्पष्ट अवधारणा का "अपने आप का ध्यान रखना" की धारणा के रूप में परिवर्तित हो जाने के अनेक कारण हैं। हम अपने आप का ही ध्यान रखने के लिए अधिक प्रवृत्त होने को अनैतिक मानते हैं, जो कि सभी संभावित नियमों से दूर ले जाने का साधन मात्र है। इस क्रम में हम ईसाई नैतिकता की परंपरा का अवधान करते हैं जिसमें आत्म-त्याग को मोक्ष की शर्त्त माना जाता है। अपने आप को जानना (आत्म-ज्ञान), विरोधस्वरूप आत्म-त्याग का साधन है। साथ ही हम एक धर्म - निरपेक्ष परंपरा का भी अवधान करते हैं, जो बाह्य सिद्धांत को नैतिकता का आधार मानता है। इस

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

प्रकार, आत्म मुग्धता नैतिकता का आधार कैसे हो सकती है, जो दूसरों के साथ स्वीकार्य व्यवहार के लिए नियमों की मांग करते हैं। 16वीं शताब्दी से ही, आत्म बोध और आत्म ज्ञान के महत्त्व के नाम पर स्थापित नैतिकता की आलोचना की जाती रही है। अतः आत्मानुरक्षा (स्वयं की देख-रेख) को नैतिकता के समान मान्यता देना कठिन प्रतीत होता है। "स्वयं को जानो" द्वारा "अपना" ध्यान रखो" और "अपने आप को जानो" के पुरातन दो सिद्धांतों के अनुक्रम में व्यतिरेक रहा है। ग्रीक - रोमन संस्कृति में, अपने आप का बोध या ज्ञान आत्मानुरक्षण का परिणाम है। आधुनिक युग में, आत्मज्ञान का अभिप्राय 'मौलिक सिद्धांत से है।

What do you understand as the import of this paragraph?
आप इस अनुच्छेद के अभिप्राय को किस प्रकार समझते हैं?

(a) Greece-Roman understanding of Self
आत्मा के संबंध में ग्रीफ एवं रोम का ज्ञान
(b) Compatibility of the care of the self with morality/आत्मा की देख - रेख की नैतिकता के
(c) Development of the understanding of Self
आत्मा की ज्ञान का विकास
(d) Self as the ultimate moral principle
आत्मा की मान्यता चरम नैतिक सिद्धांत के रूप में है।

Ans. (c) : प्रस्तुत गद्यांश के अभिप्राय का सारांश है आत्मा के ज्ञान का विकास। अपने आप का बोध (आत्म ज्ञान) आत्म अनुरक्षण का परिणाम है।

94. Read the below passage and answer the five questins that follow:
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

There are several reasons why "Know yourself" has obscured "Take care of yourself". We are more inclined to see taking care of ourselves as an immorality, as a means of escape from all possible rules. We inherit the tradition of Christian morality which makes self-renunciation the condition for salvation. To know oneself was, paradoxically, a means of sefl-renuciation. We also inherit a secular tradition that sees in external law the basis for morality. How then can respect for the self be the basis for morality? We are the inheritors of a social morality that seeks the rules for acceptable behavior in relations with others, Since the 16th century, criticism of established morality has been undertakes in the name of the importance of recognizing and knowing the self. Therefore, it is difficult to see the care of the self as compatible with morality, "Know thyself" has obscured "Take care of yourself because our morality, amorality of asceticism, insist that the self is that which one can reject.

…To summarize: There has been an inversion in the hierarchy of the two principles of antiquity, "Take care of yourself" and "Know yourself". In Greco-Roman culture, knowledge of oneself appeared as the consequence of the care of the self. In the modern world, knowledge of oneself constitutes the fundamental principle".

'स्वयं को जानने' की अस्पष्ट अवधारणा का "अपने आप का ध्यान रखना" की धारणा के रूप में परिवर्तित हो जाने के अनेक कारण हैं। हम अपने आप का ही ध्यान रखने के लिए अधिक प्रवृत्त होने को अनैतिक मानते हैं, जो कि सभी संभावित नियमों से दूर ले जाने का साधन मात्र है। इस क्रम में हम ईसाई नैतिकता की परंपरा का अवधान करते हैं जिसमें आत्म-त्याग को मोक्ष की शर्त्त माना जाता है। अपने आप को जानना (आत्म-ज्ञान), विरोधस्वरूप आत्म-त्याग का साधन है। साथ ही हम एक धर्म - निरपेक्ष परंपरा का भी अवधान करते हैं, जो बाह्य सिद्धांत को नैतिकता का आधार मानता है। इस प्रकार, आत्म मुग्धता नैतिकता का आधार कैसे हो सकती है, जो दूसरों के साथ स्वीकार्य व्यवहार के लिए नियमों की मांग करते हैं। 16वीं शताब्दी से ही, आत्म बोध और आत्म ज्ञान के महत्त्व के नाम पर स्थापित नैतिकता की आलोचना की जाती रही है। अतः आत्मानुरक्षा (स्वयं की देख-रेख) को नैतिकता के समान मान्यता देना कठिन प्रतीत होता है। "स्वयं को जानो" द्वारा "अपना" ध्यान रखो" और "अपने आप को जानो" के पुरातन दो सिद्धांतों के अनुक्रम में व्यतिरेक रहा है। ग्रीक - रोमन संस्कृति में, अपने आप का बोध या ज्ञान आत्मानुरक्षण का परिणाम है। आधुनिक युग में, आत्मज्ञान का अभिप्राय 'मौलिक सिद्धांत से है।

According ot Michel Foucault:
माइकल फॉकल्ट के अनुसारः

(a) Renouncing the world is a path towards salvation, /संसार का त्याग मोक्ष का मार्ग है
(b) Self-realization and self-renunciation are same./आत्मानुभूति और आत्म त्याग समान है
(c) Self-renunciation is the condition to salvation, आत्मत्याग मोक्ष की शर्त्त है
(d) Self-knowledge is the condition for salvation
मोक्ष के लिए शर्त्त है- आत्मज्ञान

Ans. (c) : माइकल फाकल्ट ने 'आत्मत्याग' को मोक्ष की शर्त माना है।

95. Read the below passage and answer the five questins that follow:
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

There are several reasons why "Know yourself" has obscured "Take care of yourself". We are more inclined to see taking care of ourselves as an immorality, as a means of escape from all possible rules. We inherit the tradition of Christian morality which makes self-renunciation the condition for salvation. To know oneself was, paradoxically, a means of sefl-renuciation. We also inherit a secular tradition that sees in external law the basis for morality. How then can respect for the self be the basis for morality? We are the inheritors of a social morality that seeks the rules for acceptable behavior in relations with others, Since the 16th century, criticism of established morality has been undertakes in the name of the importance of recognizing and knowing the self. Therefore, it is difficult to see the care of the self as compatible with morality, "Know thyself" has obscured "Take care of yourself because our morality, amorality of asceticism, insist that the self is that which one can reject.

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

…To summarize: There has been an inversion in the hierarchy of the two principles of antiquity, "Take care of yourself" and "Know yourself". In Greco-Roman culture, knowledge of oneself appeared as the consequence of the care of the self. In the modern world, knowledge of oneself constitutes the fundamental principle".

'स्वयं को जानने' की अस्पष्ट अवधारणा का ''अपने आप का ध्यान रखना'' की धारणा के रूप में परिवर्तित हो जाने के अनेक कारण हैं। हम अपने आप का ही ध्यान रखने के लिए अधिक प्रवृत्त होने को अनैतिक मानते हैं, जो कि सभी संभावित नियमों से दूर ले जाने का साधन मात्र है। इस क्रम में हम ईसाई नैतिकता की परंपरा का अवधान करते हैं जिसमें आत्म-त्याग को मोक्ष की शर्त माना जाता है। अपने आप को जानना (आत्म-ज्ञान), विरोधस्वरूप आत्म-त्याग का साधन है। साथ ही हम एक धर्म - निरपेक्ष परंपरा का भी अवधान करते हैं, जो बाह्य सिद्धांत को नैतिकता का आधार मानता है। इस प्रकार, आत्म मुग्धता नैतिकता का आधार कैसे हो सकती है, जो दूसरों के साथ स्वीकार्य व्यवहार के लिए नियमों की मांग करते हैं। 16वीं शताब्दी से ही, आत्म बोध और आत्म ज्ञान के महत्त्व के नाम पर स्थापित नैतिकता की आलोचना की जाती रही है। अतः आत्मानुरक्षा (स्वयं की देख-रेख) को नैतिकता के समान मान्यता देना कठिन प्रतीत होता है। ''स्वयं को जानो'' द्वारा ''अपना'' ध्यान रखो'' और ''अपने आप को जानो'' के पुरातन दो सिद्धांतों के अनुक्रम में व्यतिरेक रहा है। ग्रीक - रोमन संस्कृति में, अपने आप का बोध या ज्ञान आत्मानुरक्षण का परिणाम है। आधुनिक युग में, आत्मज्ञान का अभिप्राय 'मौलिक सिद्धांत से है।

According to Foucault, social morality implies one of the following:
फॉकल्ट के अनुसार, सामजिक नैतिकता का आशय निम्न में से किससे है:

(a) Importance of recognizing and knowing the Self/आत्मबोध एवं आत्मज्ञान का महत्व
(b) Importance of external law
बाह्य सिद्धांत का महत्व
(c) Seeks rules for acceptable behavior in relation with others/अन्य के साथ स्वीकार्य व्यवहार के लिए नियमों की मांग करना
(d) Importance of the knowledge of oneself
अपने आप को ज्ञान का महत्त्व

Ans. (c) : फाकल्ट के अनुसार सामाजिक नैतिकता का आशय है ''अन्य के साथ स्वीकार्य व्यवहार के लिए नियमों की मांग करना है।''

96. Read the below passage and answer the following five questions.
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

Summing up, then, it should first of all, be borne in mind that the morms and tendencies of the Deep Ecology movement are not derived from ecology or logic or induction. Ecological knowledge and the style of the ecological field ecology field worker have suggested, inspired and fortified the perspectives of Deep Ecology movements. Secondly, it should be fully appreciated that significant tenets of the Deep Ecology movement are clearly and forcefully normative. They express a value priority system only in part based on result (or law of results) of scientific research. Today, ecologists try to influence policy-making bodies largely through threats, that policy makers accept at lest certain minimum norms concerning health and just distribution. There are political potentials in this movement which have little to do with pollution and resource depletion. Thirdly, in so far as ecology movements deserve our attention, they are ecophilosophical rather than ecological. Philosophy is the most general forum of debate on fundamentals, descriptive as well as prescriptive, and political philosophy one of its subsections. By an ecosophy, I mean a philosophy of ecological harmony or equilibrium. A philosophy as a kind of Sofia wisdom, is openly normative; it contains both norms, rules, postulates, value priority announcements and hypotheses concerning the kind constructed by Aristotle or Spinoza…The basic relation is that between subsets of premises and subsets of conclusions, that is, the relation of derivability. At the moment, ecosoph might profitably use models of systems, rough approximations of global systemizations…. under the name of ecologism, various deviations from the deep movement have been championed - primarily with a one sided stress on pollution and resource depletion…."

समापन करते हुए, सर्वप्रथम यह ध्यान में रखा जाए कि सघन पारिस्थितिक आंदोलन की शर्ते और प्रवृत्तियां पारिस्थितिकी या तर्क या आगमन से व्युत्पन्न नहीं हुई हैं, पारिस्थितिकी विज्ञान और पारिस्थतिकीय क्षेत्र कार्यकर्ताओं की जीवन शैली ने सघन पारिस्थितिकी आंदोलन के संदर्भ पर सुझाव, प्रेरणा और रक्षण प्रदान किया है।

दूसरा, इस बात की पूरी तरह सराहना की जानी चाहिए कि सघन पारिस्थिति की आंदोलन के महत्त्वपूर्ण नियम स्पष्ट तथा सशक्त रूप के मानकीय हैं। इनमें वैज्ञानिक शोध के परिणामों (परिणामों की न्यूनतम) पर आंशिक आधार पर मूल्य प्राथमिकता प्रणाली को अभिव्यक्ति दी जाती है।

आज पारिस्थितिकीविद नीति निर्माता निकायों को प्रदूषणता और संसाधनों के क्षरण की चिंताओं, खतरे के पूर्वानुमानों के जरिये प्रभावित करते हैं। यह जानते हुए कि नीति निर्माता स्वास्थ्य और न्यायपूर्ण वितरण से संबंधित कुछ न्यूनतम शर्तो को मान लेते हैं। इस आंदोलन में कुछ राजनीति की संभावना भी होती है जिसे नजर अंदाज नहीं किया जाना चाहिए और इसका प्रदूषण और संसाधन क्षरण में कुछ खास काम नहीं होता

तीसरी, पारिस्थितिकी आंदोलन में जो ध्यान देना है, वे पारिस्थितिकी की बजाए पारिस्थितिकी दार्शनिकता की है। पारिस्थितिकी एक सीमित विज्ञान है जिसमें वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है। दर्शनशास्त्र मूलभूत वर्णानात्मक

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

तथा निदेशात्मक परिचर्या का सर्वोत्तम सामान्य मंच है तथा राजनैतिक दर्शन इसका उप अनुभाग है। पारिस्थितिक दार्शनिकता का अर्थ है पारिस्थितिकी सामंजस्य या समानता, तत्त्वज्ञान के रूप में दर्शनशास्त्र मुक्तरूप में मानकीय है। इसमें मानदंडों, नियमों, अभिगृहितों, मुख्य प्राथमिकता, उद्घोषणाओं तथा विश्वव्यापी कार्यों के स्तर संबंधी प्रायः प्राक्कल्पना दोनों का समावेश है। पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र अरस्तू या स्पिनोजा द्वारा निर्मित एक प्रकार की प्रणाली है। दोनों में मूल संबंध आधार वाक्य और निष्कर्ष का उपसमुच्चय है व्युत्पत्तिकारकता का संबंध। कभी कभार पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र प्रणाली के मंडलों, वैश्विक व्यवस्थापनों में कच्चे अनुमानों के प्रतिदर्शों का प्रयोग किया जाता है। पारिस्थितिकीवाद के नाम पर सघन आंदोलन में विभिन्न परिवर्तनों का समर्थन किया गया है। विशेषकर प्रदूषण और संसाधनों के क्षरण पर एकतरफा दबाव दिया गया है।

Deep Ecology movement is fortified by one of the following:
सघन पारिस्थितिकी आंदोलन निम्नलिखित में से किसके द्वारा आरक्षित है?

(a) Policy-making bodies by ecologists
पारिस्थितिकीविदों द्वारा पॉलिसी निर्माता निकाय
(b) A movement that culminated in ecosophy
पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र में पराकाष्ठा में पहुंचा आंदोलन
(c) Ecological knowledge and the life style of the ecological field workers./पारिस्थितिकी ज्ञान तथा पारिस्थितिकी क्षेत्र कार्यकर्ताओं की जीवन शैली
(d) A policy that emphasizes ecological harmony.
पारिस्थितिकीय सामंजस्य पर बल देनेवाली नीति

Ans. (c) : सघन पारिस्थितिकी आंदोलन और प्रवृत्तियाँ पारिस्थितिकी या तर्क या आगमन से व्युत्पन्न नहीं है, पारिस्थितिकी विज्ञान और पारिस्थितिकी क्षेत्र कार्यकर्ताओं की जीवन शैली ने सघन पारिस्थितिकी आंदोलन की संदर्श पर सुझाव, प्रेरणा और रक्षण प्रदान किया है।

97. Read the below passage and answer the following five questions.
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

Summing up, then, it should first of all, be borne in mind that the morms and tendencies of the Deep Ecology movement are not derived from ecology or logic or induction. Ecological knowledge and the style of the ecological field ecology field worker have suggested, inspired and fortified the perspectives of Deep Ecology movements. Secondly, it should be fully appreciated that significant tenets of the Deep Ecology movement are clearly and forcefully normative. They express a value priority system only in part based on result (or law of results) of scientific research. Today, ecologists try to influence policy-making bodies largely through threats, that policy makers accept at lest certain minimum norms concerning health and just distribution. There are political potentials in this movement which have little to do with pollution and resource depletion. Thirdly, in so far as ecology movements deserve our attention, they are ecophilosophical rather than ecological. Philosophy is the most general forum of debate on fundamentals, descriptive as well as prescriptive, and political philosophy one of its subsections. By an ecosophy, I mean a philosophy of ecological harmony or equilibrium. A philosophy as a kind of Sofia wisdom, is openly normative; it contains both norms, rules, postulates, value priority announcements and hypotheses concerning the kind constructed by Aristotle or Spinoza…The basic relation is that between subsets of premises and subsets of conclusions, that is, the relation of derivability. At the moment, ecosoph might profitably use models of systems, rough approximations of global systemizations…. under the name of ecologism, various deviations from the deep movement have been championed - primarily with a one sided stress on pollution and resource depletion…."

समापन करते हुए, सर्वप्रथम यह ध्यान में रखा जाए कि सघन पारिस्थितिक आंदोलन की शर्तें और प्रवृत्तियां पारिस्थितिकी या तर्क या आगमन से व्युत्पन्न नहीं हुई हैं, पारिस्थितिकी विज्ञान और पारिस्थितिकीय क्षेत्र कार्यकर्ताओं की जीवन शैली ने सघन पारिस्थितिकी आंदोलन के संदर्भ पर सुझाव, प्रेरणा और रक्षण प्रदान किया है।
दूसरा, इस बात की पूरी तरह सराहना की जानी चाहिए कि सघन पारिस्थिति की आंदोलन के महत्त्वपूर्ण नियम स्पष्ट तथा सशक्त रूप के मानकीय हैं। इनमें वैज्ञानिक शोध के परिणामों (परिणामों की न्यूनतम) पर आंशिक आधार पर मूल्य प्राथमिकता प्रणाली को अभिव्यक्ति दी जाती है।
आज पारिस्थितिकीविद नीति निर्माता निकायों को प्रदूषणता और संसाधनों के क्षरण की चिंताओं, खतरे के पूर्वानुमानों के जरिये प्रभावित करते हैं। यह जानते हुए कि नीति निर्माता स्वास्थ्य और न्यायपूर्ण वितरण से संबंधित कुछ न्यूनतम शर्तों को मान लेते हैं। इस आंदोलन में कुछ राजनीति की संभावना भी होती है जिसे नजर अंदाज नहीं किया जाना चाहिए और इसका प्रदूषण और संसाधन क्षरण में कुछ खास काम नहीं होता
तीसरी, पारिस्थितिकी आंदोलन में जो ध्यान देना है, वे पारिस्थितिकी की बजाए पारिस्थितिकी दार्शनिकता की है। पारिस्थितिकी एक सीमित विज्ञान है जिसमें वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है। दर्शनशास्त्र मूलभूत वर्णात्मक तथा निदेशात्मक परिचर्या का सर्वोत्तम सामान्य मंच है तथा राजनैतिक दर्शन इसका उप अनुभाग है। पारिस्थितिक दार्शनिकता का अर्थ है पारिस्थितिकी सामंजस्य या समानता, तत्त्वज्ञान के रूप में दर्शनशास्त्र मुक्तरूप में मानकीय है। इसमें मानदंडों, नियमों, अभिगृहितों, मुख्य प्राथमिकता, उद्घोषणाओं तथा विश्वव्यापी कार्यों के स्तर संबंधी प्रायः प्राक्कल्पना दोनों का समावेश है। पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र अरस्तू या स्पिनोजा द्वारा निर्मित एक प्रकार की प्रणाली है। दोनों में मूल संबंध आधार वाक्य और निष्कर्ष का उपसमुच्चय है व्युत्पत्तिकारकता का संबंध। कभी कभार पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र प्रणाली के मंडलों, वैश्विक

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

व्यवस्थापनों में कच्चे अनुमानों के प्रतिदर्शों का प्रयोग किया जाता है। पारिस्थितिकीवाद के नाम पर सघन आंदोलन में विभिन्न परिवर्तनों का समर्थन किया गया है। विशेषकर प्रदूषण और संसाधनों के क्षरण पर एकतरफा दबाव दिया गया है।

In the name of ecologism, deep movement has various deviations which are one sided and laid emphasis on:
पारिस्थितिकीवाद के नाम पर, सघन आंदोलन में विभिन्न परिवर्तन हुए हैं जो एकतरफ हैं और निम्न पर बल देते हैं

(a) Advocating a theory of ecologist
पारिस्थितिकी सामंजस्य
(b) Advocating a philosophy of ecological harmony/प्रदूषण और संसाधनों का क्षरण
(c) Advocating the limitation of ecology as a science/पारिस्थितिकी ज्ञान
(d) Advocating the perspective of Deep Ecology movement that has normative and ecophilosophical dimensions.
पारिस्थितिकीवाद का सिद्धांत

Ans. (b) : पारिस्थितिकीवाद के नाम पर सघन आंदोलन में विभिन्न परिवर्तन हुए हैं जो एकतरफा है तथा प्रदूषण और संसाधनों के क्षरण पर बल देते हैं। पारिस्थितिकी नीति निर्माता निकायों को प्रदूषणता और संसाधनों के क्षरण की चिताओं, खतरे के पूर्वानुमानों के जरिए प्रभावित करते हैं।

98. Read the below passage and answer the following five questions.
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

Summing up, then, it should first of all, be borne in mind that the morms and tendencies of the Deep Ecology movement are not derived from ecology or logic or induction. Ecological knowledge and the style of the ecological field ecology field worker have suggested, inspired and fortified the perspectives of Deep Ecology movements. Secondly, it should be fully appreciated that significant tenets of the Deep Ecology movement are clearly and forcefully normative. They express a value priority system only in part based on result (or law of results) of scientific research. Today, ecologists try to influence policy-making bodies largely through threats, that policy makers accept at lest certain minimum norms concerning health and just distribution. There are political potentials in this movement which have little to do with pollution and resource depletion. Thirdly, in so far as ecology movements deserve our attention, they are ecophilosophical rather than ecological. Philosophy is the most general forum of debate on fundamentals, descriptive as well as prescriptive, and political philosophy one of its subsections. By an ecosophy, I mean a philosophy of ecological harmony or equilibrium. A philosophy as a kind of Sofia wisdom, is openly normative; it contains both norms, rules, postulates, value priority announcements and hypotheses concerning the kind constructed by Aristotle or Spinoza…The basic relation is that between subsets of premises and subsets of conclusions, that is, the relation of derivability. At the moment, ecosoph might profitably use models of systems, rough approximations of global systemizations…. under the name of ecologism, various deviations from the deep movement have been championed - primarily with a one sided stress on pollution and resource depletion…."

समापन करते हुए, सर्वप्रथम यह ध्यान में रखा जाए कि सघन पारिस्थितिक आंदोलन की शर्तें और प्रवृत्तियां पारिस्थितिकी या तर्क या आगमन से व्युत्पन्न नहीं हुई हैं, पारिस्थितिकी विज्ञान और पारिस्थतिकीय क्षेत्र कार्यकर्ताओं की जीवन शैली ने सघन पारिस्थितिकी आंदोलन के संदर्भ पर सुझाव, प्रेरणा और रक्षण प्रदान किया है।

दूसरा, इस बात की पूरी तरह सराहना की जानी चाहिए कि सघन पारिस्थिति की आंदोलन के महत्त्वपूर्ण नियम स्पष्ट तथा सशक्त रूप के मानकीय हैं। इनमें वैज्ञानिक शोध के परिणामों (परिणामों की न्यूनतम) पर आंशिक आधार पर मूल्य प्राथमिकता प्रणाली को अभिव्यक्ति दी जाती है।

आज पारिस्थितिकीविद नीति निर्माता निकायों को प्रदूषणता और संसाधनों के क्षरण की चिंताओं, खतरे के पूर्वानुमानों के जरिये प्रभावित करते हैं। यह जानते हुए कि नीति निर्माता स्वास्थ्य और न्यायपूर्ण वितरण से संबंधित कुछ न्यूनतम शर्तों को मान लेते हैं। इस आंदोलन में कुछ राजनीति की संभावना भी होती है जिसे नजर अंदाज नहीं किया जाना चाहिए और इसका प्रदूषण और संसाधन क्षरण में कुछ खास काम नहीं होता

तीसरी, पारिस्थितिकी आंदोलन में जो ध्यान देना है, वे पारिस्थितिकी की बजाए पारिस्थितिकी दार्शनिकता की है। पारिस्थितिकी एक सीमित विज्ञान है जिसमें वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है। दर्शनशास्त्र मूलभूत वर्णानात्मक तथा निदेशात्मक परिचर्या का सर्वोत्तम सामान्य मंच है तथा राजनैतिक दर्शन इसका उप अनुभाग है। पारिस्थितिक दार्शनिकता का अर्थ है पारिस्थितिकी सामंजस्य या समानता, तत्वज्ञान के रूप में दर्शनशास्त्र मुक्तरूप में मानकीय है। इसमें मानदंडों, नियमों, अभिगृहितों, मुख्य प्राथमिकता, उद्घोषणाओं तथा विश्वव्यापी कार्यों के स्तर संबंधी प्रायः प्राक्कल्पना दोनों का समावेश है। पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र अरस्तू या स्पिनोजा द्वारा निर्मित एक प्रकार की प्रणाली है। दोनों में मूल संबंध आधार वाक्य और निष्कर्ष का उपसमुच्चय है व्युत्पत्तिकारकता का संबंध। कभी कभार पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र प्रणाली के मंडलों, वैश्विक व्यवस्थापनों में कच्चे अनुमानों के प्रतिदर्शों का प्रयोग किया जाता है। पारिस्थितिकीवाद के नाम पर सघन आंदोलन में विभिन्न परिवर्तनों का समर्थन किया गया है। विशेषकर प्रदूषण और संसाधनों के क्षरण पर एकतरफा दबाव दिया गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

What does Arne Naess intendt to convey in this paragraph?
इस अवतरण में अर्ने नेस का अभिप्राय क्या है?

(a) Value priority system based on results of scientific research
पारिस्थितिकीवाद के सिद्धांत का समर्थन करना

(b) Scientific potentials based on scientific research/पारिस्थितिकीय सामंजस्य के दर्शनशास्त्र का समर्थन करना

(c) Policy-making bodies of ecologists/विज्ञान के रूप में पारिस्थितिकी के परिसीमन का समर्थन करना

(d) A philosophical outlook that implies ecological harmony/सघन पारिस्थितिकी आंदोलन के परिदृश्य का समर्थन करना जिसके मानकीय और पारिस्थितिकीय दार्शनिक दृष्टिकोण हों

Ans. (d) : प्रस्तुत अवतरण में अर्नेनेस का अभिप्राय है "सघन पारिस्थितिकी आंदोलनों का समर्थन करना जिसके मानकीय, पारिस्थितिकीय और दार्शनिक दृष्टिकोण हों।

99. Read the below passage and answer the following five questions.
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

Summing up, then, it should first of all, be borne in mind that the morms and tendencies of the Deep Ecology movement are not derived from ecology or logic or induction. Ecological knowledge and the style of the ecological field ecology field worker have suggested, inspired and fortified the perspectives of Deep Ecology movements. Secondly, it should be fully appreciated that significant tenets of the Deep Ecology movement are clearly and forcefully normative. They express a value priority system only in part based on result (or law of results) of scientific research. Today, ecologists try to influence policy-making bodies largely through threats, that policy makers accept at lest certain minimum norms concerning health and just distribution. There are political potentials in this movement which have little to do with pollution and resource depletion. Thirdly, in so far as ecology movements deserve our attention, they are ecophilosophical rather than ecological. Philosophy is the most general forum of debate on fundamentals, descriptive as well as prescriptive, and political philosophy one of its subsections. By an ecosophy, I mean a philosophy of ecological harmony or equilibrium. A philosophy as a kind of Sofia wisdom, is openly normative; it contains both norms, rules, postulates, value priority announcements and hypotheses concerning the kind constructed by Aristotle or Spinoza…The basic relation is that between subsets of premises and subsets of conclusions, that is, the relation of derivability. At the moment, ecosoph might profitably use models of systems, rough approximations of global systemizations…. under the name of ecologism, various deviations from the deep movement have been championed - primarily with a one sided stress on pollution and resource depletion…."

समापन करते हुए, सर्वप्रथम यह ध्यान में रखा जाए कि सघन पारिस्थितिक आंदोलन की शर्ते और प्रवृत्तियां पारिस्थितिकी या तर्क या आगमन से व्युत्पन्न नहीं हुई हैं, पारिस्थितिकी विज्ञान और पारिस्थितिकीय क्षेत्र कार्यकर्ताओं की जीवन शैली ने सघन पारिस्थितिकी आंदोलन के संदर्भ पर सुझाव, प्रेरणा और रक्षण प्रदान किया है।
दूसरा, इस बात की पूरी तरह सराहना की जानी चाहिए कि सघन पारिस्थिति की आंदोलन के महत्त्वपूर्ण नियम स्पष्ट तथा सशक्त रूप के मानकीय हैं। इनमें वैज्ञानिक शोध के परिणामों (परिणामों की न्यूनतम) पर आंशिक आधार पर मूल्य प्राथमिकता प्रणाली को अभिव्यक्ति दी जाती है।
आज पारिस्थितिकीविद नीति निर्माता निकायों को प्रदूषणता और संसाधनों के क्षरण की चिंताओं, खतरे के पूर्वानुमानों के जरिये प्रभावित करते हैं। यह जानते हुए कि नीति निर्माता स्वास्थ्य और न्यायपूर्ण वितरण से संबंधित कुछ न्यूनतम शर्तों को मान लेते हैं। इस आंदोलन में कुछ राजनीति की संभावना भी होती है जिसे नजर अंदाज नहीं किया जाना चाहिए और इसका प्रदूषण और संसाधन क्षरण में कुछ खास काम नहीं होता
तीसरी, पारिस्थितिकी आंदोलन में जो ध्यान देना है, वे पारिस्थितिकी की बजाए पारिस्थितिकी दार्शनिकता की है। पारिस्थितिकी एक सीमित विज्ञान है जिसमें वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है। दर्शनशास्त्र मूलभूत वर्णानात्मक तथा निदेशात्मक परिचर्या का सर्वोत्तम सामान्य मंच है तथा राजनैतिक दर्शन इसका उप अनुभाग है। पारिस्थितिक दार्शनिकता का अर्थ है पारिस्थितिकी सामंजस्य या समानता, तत्त्वज्ञान के रूप में दर्शनशास्त्र मुक्तरूप में मानकीय है। इसमें मानदंडों, नियमों, अभिगृहितों, मुख्य प्राथमिकता, उद्घोषणाओं तथा विश्वव्यापी कार्यों के स्तर संबंधी प्रायः प्राक्कल्पना दोनों का समावेश है। पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र अरस्तू या स्पिनोजा द्वारा निर्मित एक प्रकार की प्रणाली है। दोनों में मूल संबंध आधार वाक्य और निष्कर्ष का उपसमुच्चय है व्युत्पत्तिकारकता का संबंध। कभी कभार पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र प्रणाली के मंडलों, वैश्विक व्यवस्थापनों में कच्चे अनुमानों के प्रतिदर्शों का प्रयोग किया जाता है। पारिस्थितिकीवाद के नाम पर सघन आंदोलन में विभिन्न परिवर्तनों का समर्थन किया गया है। विशेषकर प्रदूषण और संसाधनों के क्षरण पर एकतरफा दबाव दिया गया है।

According to Naeass, Deep Ecology movement involves:
नेस के अनुसार सघन पारिस्थितिकी आंदोलन का संबंध है

(a) A theory of ecologism/वैज्ञानिक शोध के परिणामों के आधार पर मूल्य प्राथमिकता प्रणाली

(b) A philosophy of ecological harmony
वैज्ञानिक शोध पर आधारित वैज्ञानिक संभावनाएं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) A limited science based on scientific methods
पारिस्थितिकीविदों के पॉलिसी निर्माता निकाय

(d) A normative theory on ecology/एक दार्शनिक दृष्टिकोण जो पारिस्थितिकी सामंजस्य में निहित है।

Ans. (a) : नेस के अनुसार सघन पारिस्थितिकी आंदोलन का संबंध है "वैज्ञानिक शोध के परिणामों के आधार पर मूल्य प्राथमिकता प्रणाली।" पारिस्थितिकी आंदोलन के महत्त्वपूर्ण नियम स्पष्ट तथा सशक्त रूप से मानकीय हैं।

100. Read the below passage and answer the following five questions.
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

Summing up, then, it should first of all, be borne in mind that the morms and tendencies of the Deep Ecology movement are not derived from ecology or logic or induction. Ecological knowledge and the style of the ecological field ecology field worker have suggested, inspired and fortified the perspectives of Deep Ecology movements. Secondly, it should be fully appreciated that significant tenets of the Deep Ecology movement are clearly and forcefully normative. They express a value priority system only in part based on result (or law of results) of scientific research. Today, ecologists try to influence policy-making bodies largely through threats, that policy makers accept at lest certain minimum norms concerning health and just distribution. There are political potentials in this movement which have little to do with pollution and resource depletion. Thirdly, in so far as ecology movements deserve our attention, they are ecophilosophical rather than ecological. Philosophy is the most general forum of debate on fundamentals, descriptive as well as prescriptive, and political philosophy one of its subsections. By an ecosophy, I mean a philosophy of ecological harmony or equilibrium. A philosophy as a kind of Sofia wisdom, is openly normative; it contains both norms, rules, postulates, value priority announcements and hypotheses concerning the kind constructed by Aristotle or Spinoza…The basic relation is that between subsets of premises and subsets of conclusions, that is, the relation of derivability. At the moment, ecosoph might profitably use models of systems, rough approximations of global systemizations…. under the name of ecologism, various deviations from the deep movement have been championed - primarily with a one sided stress on pollution and resource depletion…."

समापन करते हुए, सर्वप्रथम यह ध्यान में रखा जाए कि सघन पारिस्थितिक आंदोलन की शर्तें और प्रवृत्तियां पारिस्थितिकी या तर्क या आगमन से व्युत्पन्न नहीं हुई हैं, पारिस्थितिकी विज्ञान और पारिस्थतिकीय क्षेत्र कार्यकर्ताओं की जीवन शैली ने सघन पारिस्थितिकी आंदोलन के संदर्भ पर सुझाव, प्रेरणा और रक्षण प्रदान किया है।

दूसरा, इस बात की पूरी तरह सराहना की जानी चाहिए कि सघन पारिस्थिति की आंदोलन के महत्त्वपूर्ण नियम स्पष्ट तथा सशक्त रूप के मानकीय हैं। इनमें वैज्ञानिक शोध के परिणामों (परिणामों की न्यूनतम) पर आंशिक आधार पर मूल्य प्राथमिकता प्रणाली को अभिव्यक्ति दी जाती है।

आज पारिस्थितिकीविद नीति निर्माता निकायों को प्रदूषणता और संसाधनों के क्षरण की चिंताओं, खतरे के पूर्वानुमानों के जरिये प्रभावित करते हैं। यह जानते हुए कि नीति निर्माता स्वास्थ्य और न्यायपूर्ण वितरण से संबंधित कुछ न्यूनतम शर्तों को मान लेते हैं। इस आंदोलन में कुछ राजनीति की संभावना भी होती है जिसे नजर अंदाज नहीं किया जाना चाहिए और इसका प्रदूषण और संसाधन क्षरण में कुछ खास काम नहीं होता

तीसरी, पारिस्थितिकी आंदोलन में जो ध्यान देना है, वे पारिस्थितिकी की बजाए पारिस्थितिकी दार्शनिकता की है। पारिस्थितिकी एक सीमित विज्ञान है जिसमें वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है। दर्शनशास्त्र मूलभूत वर्णात्मक तथा निदेशात्मक परिचर्या का सर्वोत्तम सामान्य मंच है तथा राजनैतिक दर्शन इसका उप अनुभाग है। पारिस्थितिक दार्शनिकता का अर्थ है पारिस्थितिकी सामंजस्य या समानता, तत्त्वज्ञान के रूप में दर्शनशास्त्र मुक्तरूप में मानकीय है। इसमें मानदंडों, नियमों, अभिगृहितों, मुख्य प्राथमिकता, उद्घोषणाओं तथा विश्वव्यापी कार्यों के स्तर संबंधी प्रायः प्राक्कल्पना दोनों का समावेश है। पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र अरस्तू या स्पिनोजा द्वारा निर्मित एक प्रकार की प्रणाली है। दोनों में मूल संबंध आधार वाक्य और निष्कर्ष का उपसमुच्चय है व्युत्पत्तिकारकता का संबंध। कभी कभार पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र प्रणाली के मंडलों, वैश्विक व्यवस्थापनों में कच्चे अनुमानों के प्रतिदर्शों का प्रयोग किया जाता है। पारिस्थितिकीवाद के नाम पर सघन आंदोलन में विभिन्न परिवर्तनों का समर्थन किया गया है। विशेषकर प्रदूषण और संसाधनों के क्षरण पर एकतरफा दबाव दिया गया है।

According to Naess, ecosophy is:
नेस के अनुसार पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र है-

(a) Advocating a theory of ecologism
परिस्थितिकीवाद का सिद्धांत

(b) Advocating a philosophy of ecological harmony/पारिस्थितिकी सामंजस्य का दर्शनशास्त्र

(c) Advocating the limitation of ecology as a science
वैज्ञानिक विधियों पर आधारित परिसीमित विज्ञान

(d) Advocating the perspective of Deep Ecology movement that has normative and ecophilosophical dimensions.
पारिस्थितिकी पर मानकीय सिद्धांत

Ans. (b) : दर्शनशास्त्र मूलभूत वर्णात्मक तथा निदेशात्मक परिचर्या का सर्वोत्तम सामान्य मंच है तथा राजनैतिक दर्शन इसका उप अनुभाग है। पारिस्थितिकी दार्शनिकता का अर्थ है पारिस्थितिकी सामंजस्य या समानता, तत्व ज्ञान के रूप में दर्शनशास्त्र मुक्त रूप में मानकीय है। पारिस्थितिकी दर्शनशास्त्र अरस्तू या स्पिनोजा द्वारा निर्मित एक प्रकार की प्रणाली है। पारिस्थितिकीवाद के नाम पर सघन आंदोलन में विभिन्न परिवर्तनों का समर्थन किया गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2020/जून-2021
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल (परीक्षा तिथि : 20.11.2021 S-I)

Read the passage and answer the following questions:-

In one sense it must be admitted that we can never prove the existence of things other than ourselves and our experiences. No logical absurdity results from the hypothesis that the world consists of myself and my thoughts and feelings and sensations and that everything else is mere fancy. In dreams a very complicated world may seem to be present and yet on waking we find it was a delusion; that is to say, we find that the sense-data in the dream do not appear to have corresponded with such physical objects as we should naturally infer from our sense-data. (It is true that, when the physical world is assumed, it is possible to find physical causes for the sense-data in dreams: a door banging for instance, may cause us to dream of a naval engagement. But although, in this case, there is a physical cause for the sense-data, there is not a physical object corresponding to the sense-data in the way in which an actual naval battle would correspond.) There is no logical impossibility in the supposition that the whole of life is a dream, in which we ourselves create all the objects that come before us. But although this is not logically impossible, there is no reason whatever to suppose that it is true; and it is, in fact, a less simple hypothesis, viewed as a means of accounting for the facts of our own life, than the common-sense hypothesis that there really are objects independent of us, whose action on us causes our sensations.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

एक अर्थ में इसे अवश्य स्वीकार किया जाना चाहिए कि हम स्वयं और अपने अनुभवों के अतिरिक्त किसी वस्तु के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर सकते हैं। इस प्राक्कल्पना कि जगत मुझसे और मेरे विचारों और भावनाओं और संवेदनाओं से बना है और बाकी सब कुछ मात्र कल्पना है, से कोई तार्किक बेतुकापन नहीं निकलता है। सपनों में एक बहुत ही जटिल संसार प्रतीत हो सकता है, और फिर भी जागने पर हम पाते हैं कि वह एक भ्रम था; अर्थात, हम पाते हैं कि स्वप्न में जो चेतना - तथ्य है वह भौतिक वस्तुओं से मेल नहीं खाता है, जैसा कि हमें स्वाभाविक रूप से अपने चेतना - तथ्य से अनुमान लगाना चाहिए। (यह सच है कि, जब भौतिक दुनिया की कल्पना की जाती है, तो सपनों में चेतना-तथ्य के भौतिक कारणों का पता लगाना संभव है: उदाहरण के लिए, एक दरवाजा खटखटाने से हमें नौसेना मुठभेड़ का सपना देखने को मिल सकता है। लेकिन हालांकि, इस मामले में, चेतना - तथ्य के लिए एक भौतिक कारण है, जिस तरह से एक वास्तविक नौसेना युद्ध के अनुरूप होगा, उस तरह से चेतना - तथ्य के अनुरूप कोई भौतिक वस्तु नहीं है)। इस अनुमान में कोई तार्किक असंभवता नहीं है कि पूरा जीवन ही एक सपना है, जिसमें हम अपने सामने आने वाली सभी वस्तुओं को खुद बनाते हैं। लेकिन यद्यपि यह तार्किक रूप से असंभव नहीं है, फिर भी यह मानने का कोई कारण नहीं है कि यह सच है; और यह, वास्तव में, एक कम सरल परिकल्पना है, जिसे हमारे अपने जीवन के तथ्यों की गणना के लिए एक साधन के रूप में देखा जाता है, जबकि सामान्य ज्ञान की परिकल्पना की तुलना में वास्तव में हमसे स्वतंत्र वस्तुएँ हैं, जिनकी कार्रवाई हमारी संवेदनाओं का कारण बनती है।

1. Which of the following philosophers could possibly by attributed with the view - "In one sense it must be admitted that we can never prove the existence of things other than ourselves and our experiences."? Consider the following options and choose the most appropriate option given thereafter.
निम्नलिखित में से कौन-कौन से दार्शनिकों का सम्बन्ध संभवतः इस विचार से हो सकता है कि ''एक अर्थ में इसे अवश्य स्वीकार किया जाना चाहिए कि हम स्वयं और अपने अनुभवों के अतिरिक्त किसी वस्तु के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर सकते हैं''?

A. Berkley/बर्कले
B. Descartes/देकार्त
C. Hume/ह्यूम
D. Locke/लॉक

Choose the most appropriate answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A, B and C only/केवल A, B और C
(b) A, B and D only/केवल A, B और D
(c) A, C and D only/केवल A, C और D
(d) B, C and D only/केवल B, C और D

Ans. (a) : ''एक अर्थ में इसे अवश्य स्वीकार किया जाना चाहिए कि हम स्वयं और अपने अनुभवों के अतिरिक्त किसी वस्तु के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर सकते।'' इस विचार से बर्कले, देकार्त तथा ह्यूम तीनों का संबंध है। ध्यातव्य है की बर्कले तथा ह्यूम अनुभववादी हैं, ये अनुभववाद की प्रतिष्ठा करते हैं।
देकार्त बुद्धिवादी हैं। वे कहते हैं, ज्ञान के लिए इन्द्रिय-प्रत्यक्ष आवश्यक है परन्तु बुद्धि द्वारा पुष्टि होने पर ही वह प्रमाणित होता है।

2. The argument - "There is no logical impossibility in the supposition that the whole of life is a dream, in which we ourselves create all the objects that come before us." is also presented in which of the following text of Philosophy?
दर्शन शास्त्र की किस पुस्तक में भी यह तर्क है कि- ''यह मानने में कोई तार्किक असम्भाव्यता नहीं है कि सम्पूर्ण जीवन एक स्वप्न है जिसमें हम स्वयं उन सभी वस्तुओं का सृजन करते हैं हमारे समक्ष आते हैं''

(a) A Critique of Pure Reason
अ क्रिटीक ऑफ प्योर रीजन
(b) A Treatise of Human Nature
अ ट्रीटीज ऑफ ह्यूमन नेचर

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) An Essay Concerning Human
ऐन एस्से कन्सर्निंग ह्युमन अंडरस्टैंडिंग

(d) Discourse on Method/डिस्कोर्स ऑन मेथड

Ans. (d) : यह मानने में कोई तार्किक असंम्भाव्यता नहीं है कि संपूर्ण जीवन एक स्वप्न है जिसमें हम स्वयं उन सभी वस्तुओं का सृजन करते हैं हमारे समक्ष आते हैं। यह तर्क 'डिस्कोर्स आन मेथड' से सम्बन्धित है। इस पुस्तक की रचना बुद्धिवादी दार्शनिक रेने डेकार्ट ने की थी।

3. From the last sentence of the paragraph what could be possibly inferred about the overall philosophical position of the author?
इस गद्यांश के अंतिम वाक्य से लेखक के दार्शनिक विचार के बारे में क्या अनुमान किया जा सकता है?

(a) The author is arguing against realism in favor of idealism/लेखक प्रत्ययवाद के पक्ष में यथार्थवाद के विरुद्ध तर्क दे रहा है

(b) The author is arguing against scepticism in favour of possibility of knowledge/लेखक ज्ञान की सम्भावना के पक्ष में संशयवाद के विरुद्ध तर्क दे रहा है

(c) The author is arguing in favor of scepticism/लेखक संशयवाद के पक्ष में तर्क दे रहा है

(d) The author is merely suggesting that skeptic's position is insurmountable/लेखक केवल यह सुझाव दे रहा है कि संशयवादी की स्थिति दुर्लंघ्य है

Ans. (b) : इस अनुमान में कोई तार्किक असंभवता नहीं है कि पूरा जीवन ही एक सपना है, जिसमें हम अपने सामने आने वाली सभी वस्तुओं को खुद बनाते हैं। लेकिन यद्यपि यह तार्किक रूप में असंभव नहीं है। फिर भी यह मानने का कोई कारण नहीं है कि यह सच है............कम सरल परिकल्पना है जिसे हमारे जीवन के तथ्यों की गणना के लिए एक साधन के रूप में देखा जाता है जबकि सामान्य ज्ञान की परिकल्पना की तुलना में वास्तव में हमसे स्वतंत्र वस्तुएँ हैं जिनकी कार्यवाई हमारी संवेदनाओं का कारण बनती है। यह वाक्य संशयवाद के विरुद्ध संभावना के पक्ष में तर्क दे रहा है।

4. The view that "the hypothesis that the world consists of myself and my thoughts and feelings and sensations and that everything else is mere fancy." is compatible with which of the following doctrine/s?
यह विचार निम्नलिखित में से किन-किन सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है कि ''यह प्राक्कल्पना की जगत मुझसे और मेरे विचारों और भावों और संवेदनाओं से बना है और यह कि अन्य बातें कल्पना मात्र हैं''?

A. Solipsism/अहं मात्र वाद

B. Idealism/प्रत्यय वाद

C. Phenomenalism/दृश्य प्रपंच वाद

D. Naïve Realism/सहज यथार्थवाद

(a) A, B and C only/केवल A, B और C
(b) A, B and D only/केवल A, B और D
(c) A, C and D only/केवल A, C और D
(d) B, C and D only/केवल B, C और D

Ans. (a) : ''यह प्राकल्पना की जगत मुझसे और मेरे विचारों और भावों और संवेदनाओं से बना है और यह कि अन्य बातें कल्पना मात्र हैं।'' यह विचार अहंमात्रवाद, प्रत्ययवाद तथा दृश्य प्रपंचवाद के विपरीत है। परन्तु यह विचार सहज यथार्थवाद के अनुकूल है।
सहज यथार्थवाद एक अचेतन संज्ञानात्मक आदत है जो जागरुकता के प्रत्येक क्षण में संचालित होती है। सहज यथार्थवाद के अनुसार धारणा की वस्तुएँ केवल बाहरी वस्तुओं का प्रतिनिधित्व नहीं है बल्कि वास्तव में वे बाहरी वस्तुएँ हैं।

5. The statement - "There is a physical cause for the sense-data" is compatible with which of the following philosophical position/s?
यह कथन निम्नलिखित दार्शनिक विचार के अनुरूप है कि- ''इन्द्रिय - दत्त के भौतिक कारण होते हैं''

A. Naïve Realism/सहज यथार्थवाद

B. Representative Realism
प्रतिनिधानात्मक यथार्थवाद

C. Idealism/प्रत्ययवाद

D. Solipsism/अहंमात्रवाद

Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A and B only/केवल A और B
(b) A and C only/केवल A और C
(c) B and D only/केवल B और D
(d) C and D only/केवल C और D

Ans. (a) : कथन ''इन्द्रिय दत्त के भौतिक कारण होते हैं'' सहज यथार्थवाद, प्रतिनिधानात्मक यथार्थवाद के अनुरूप है। सहज यथार्थवाद एक अचेतन संज्ञानात्मक विचार है जो चेतना के प्रत्येक क्षण में संचालित होती है। सहज यथार्थवाद के अनुसार धारणा की वस्तुएँ केवल बाहरी वस्तुओं का प्रतिनिधित्व नहीं है, बल्कि वास्तव में वे बाहरी वस्तुएँ हैं।
प्रतिनिधानात्मक यथार्थवाद के अनुसार ''हम बाहरी दुनिया को वैसा नहीं समझते जैसा वह वास्तव में है, लेकिन केवल अपने विचारों और दुनिया के व्याख्याओं के बारे में जानते हैं।

Read the passage and answer the following questions:

All the objects of human reason or enquiry may naturally be divided into two kinds, which are relations of ideas, and matters of fact. Of the first kind are the sciences of Geometry, Algebra and Arithmetic; and in short, every affirmation which is either intuitively or demonstratively certain. That the square of hypotenuse is equal to the squares of the two sides is a proposition which expresses a relation between these figures. That three times five is equal to the half of thirty, expresses a relation between these numbers. Propositions of this kind are discoverable by the mere operation of thought, without dependence on what is anywhere existent in the universe. Though there never was a circle or triangle in nature, the truths demonstrated by Euclid would forever retain their certainty and evidence. Matters of fact, which are the second objects of human reason, are not ascertained in the same manner, nor is our evidence of their truth, however great of a like nature with the foregoing. The contrary of every matter of fact is still possible; because it can never imply a contradiction and is conceived by the mind with the same facility and

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

distinctness, as if ever so conformable to reality. That the sun will not rise tomorrow is no less intelligible a proposition and implies no more contradiction than the affirmation, that it will rise. We should in vain, therefore, attempt to demonstrate its falsehood.

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मानव बुद्धि या गवेषणा के सभी विषयों को दो प्रकारों में बांटा जा सकता है- प्रत्ययों के सम्बन्ध और वस्तु स्थिति। पहले प्रकार के अंतर्गत ज्यामिति, बीजगणित और अंक गणित संक्षेपतः प्रत्येक प्रतिज्ञान जो या तो अन्तः प्रज्ञात्मक या निरूपणात्मक रूप से निश्चित हों, आते हैं। कर्ण का वर्ग दो भुजाओं के वर्ग के बराबर होता है- यह एक ऐसा तर्क वाक्य है जो इन आकृतियों के बीच सम्बन्ध को अभिव्यक्त करता है। पांच का तीन गुना तीस के आधे के बराबर होता है- यह इन संख्याओं के बीच सम्बन्ध को अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार के तर्क वाक्य की खोज केवल ऐसी विचार संक्रिया द्वारा ही की जा सकती है जो ब्रह्माण्ड के किसी भी अस्तित्व पर निर्भर नहीं करते हैं। यद्यपि प्रकृति में कहीं भी वृत्त या त्रिभुज नहीं है, फिर भी यूक्लिड द्वारा दर्शाए गए सत्य हमेशा अपनी निश्चितता और साक्ष्य बनाए रखेंगे। वस्तु स्थिति जो मानव बुद्धि के दूसरे विषय हैं, को इसी प्रकार निश्चित नहीं किया जाता है, न ही उनकी सत्यता का हमारे पास साक्ष्य है। चाहे जितना भी महान हो,....................किसी भी वस्तु स्थिति का विलोम अभी भी संभव हैः क्योंकि इसमें विरोधाभास का पुट नहीं हो सकता है और मन इसे उतनी ही सुगमता और स्पष्टता से ग्रहण करता है मानो हमेशा यथार्थ के साथ सहज हो।

6. As per the perspective of the passage, the nature of reasoning concerning matters of fact are based on:
इस गद्यांश के परिप्रेक्ष्य के अनुसार वस्तु स्थिति से सम्बन्धित तर्क की प्रकृति किस पर आधारित है:

(a) Both perception and inference
प्रत्यक्ष और अनुमान दोनों
(b) Inference only/केवल अनुमान
(c) Perception only/केवल प्रत्यक्ष
(d) Relation of cause and effect only
कारण और कार्य के बीच सम्बन्ध मात्र

Ans. (a) : वस्तु स्थिति से सम्बनिधत तर्क की प्रकृति प्रत्यक्ष और अनुमान पर आधारित होती है। वस्तुस्थिति जो मानव बुद्धि के दूसरे विषय है, को इसी प्रकार निश्चित नहीं किया जा सकता है और न ही उनकी सत्यता का हमारे पास कोई साक्ष्य है। किसी भी वस्तुस्थिति का विलोम अभी भी संभव है क्योंकि इसमें विरोधाभास का पुट नहीं हो सकता और मन उसे उतनी ही सुगमता और स्पष्टता से ग्रहण कर सकता है मानो हमेशा यथार्थ के साथ सहज हो।

7. As per the perspective of the passage, Knowledge in empirical sciences would fall under which of the following kinds?
इस गद्यांश के परिप्रेक्ष्य में इन्द्रियानुभाविक विज्ञानों में ज्ञान निम्नलिखित में से किस प्रकार के विषय के अंतर्गत आएगा?

(a) Matters of fact/वस्तु स्थिति
(b) Pure speculation/शुद्ध परिकल्पना
(c) Relations of ideas/प्रत्ययों का सम्बन्ध
(d) Transcendental knowledge/अनुभवातीत ज्ञान

Ans. (c) : प्रस्तुत गद्यांश के अनुसार इन्द्रियानुभविक विज्ञानों में ज्ञान 'प्रत्ययों के सम्बन्ध' के अंतर्गत आएगा। प्रत्ययों के सम्बन्ध के अंतर्गत ज्यामिति, बीजगणित, अंकगणित संक्षेपतः प्रत्येक प्रतिज्ञान जो या तो अन्तः प्रज्ञात्मक या निरूपणात्मक रूप से निश्चित हों आते हैं।

8. Given below are two statements, one is labelled as Assertion A and the other is labelled as Reason R/नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है।

Assertion A : Though there never was a circle or triangle in nature, the truths demonstrated by Euclid would forever retain their certainty and evidence.

अभिकथन (A) : यद्यपि प्रकृति में कहीं भी वृत्त या त्रिभुज नहीं है, फिर भी यूक्लिड द्वारा दर्शाए गए सत्य हमेशा अपनी निश्चितता और साक्ष्य बनाए रखेंगे।

Reason R : Propositions of this kind are discoverable by the mere operation of thought, without dependence on what is anywhere existent in the universe.

तर्क (R) : इस प्रकार के तर्क वाक्य की खोज केवल ऐसी विचार संक्रिया द्वारा ही की जा सकती है जो ब्रह्माण्ड के किसी भी अस्तित्व पर निर्भर नहीं करते हैं

In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below.
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A is false but R is true
(A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है
(b) A is true but R is false
(A) सही है परन्तु (R) सही नहीं है
(c) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है
(d) Both A and R are true but R is NOT the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है

Ans. (c) : यद्यपि प्रकृति में कहीं भी वृत्त या त्रिभुज नहीं है फिर भी यूक्लिड द्वारा दर्शाए गए सत्य हमेशा अपनी निश्चितता और साक्ष्य बनाए रखेंगे। इसका कारण यह है कि इस प्रकार के तर्क वाक्यों की खोज केवल ऐसी विचार प्रक्रिया द्वारा ही की जा सकती है जो ब्राह्माण्ड के किसी भी अस्तित्व पर निर्भर नहीं करते। इस व्याख्या से स्पष्ट है कि कथन और तर्क दोनों सत्य हैं तथा तर्क द्वारा कथन की स्पष्ट व्याख्या की जाती है।

9. "That the sun will not rise tomorrow is no less intelligible a proposition and implies no more contradiction than the affirmation, that it will rise." According to the passage which of the following could be most appropriate reason for this statement?
यह तथ्य कि कल सूर्योदय नहीं होगा- यह तर्क वाक्य इस प्रतिज्ञान कि कल सूर्योदय होगा-से कम सुग्राह्य और अधिक विरोधाभासी नहीं है। अतः हमें व्यर्थ ही इसके झूठेपन को दर्शाने का प्रयास करना चाहिए।
इस गद्यांश के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा इस कथन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त तर्क हो सकता है?

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

A. That both the statements namely 'sun will not rise tomorrow' and 'that it will rise' are matters of fact/कि 'कल सूर्योदय नहीं होगा' और 'कल सूर्योदय होगा' दोनों कथन वस्तु स्थिति हैं।

B. The statements 'sun will not rise tomorrow' and 'that it will rise' do not imply any contradiction/'कल सूर्योदय नहीं होगा' और 'कल सूर्योदय होगा' दोनों कथनों में कोई विरोधाभास नहीं है

C. Both the statements are conceived by the mind with the same facility and distinctness/मन दोनों कथनों को उतनी ही सुगमता और स्पष्टता से ग्रहण करता है

D. Propositions of this kind are discoverable by the mere operation of thought/इस प्रकार के तर्क वाक्य की खोज केवल विचार संक्रिया से की जा सकती है

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A and D only/केवल A और D
(b) A, B and C only/केवल A, B और C
(c) A, B and D only/केवल A, B और D
(d) B and C only/केवल B और C

Ans. (b) : प्रश्नगत कथन "कल सूर्योदय नहीं होगा, यह तर्क वाक्य इस प्रतिज्ञान की कल सूर्योदय होगा" के लिए निम्नलिखित तर्क उपयुक्त होंगे-
(1) कि 'कल सूर्योदय नहीं होगा' और 'कल सूर्योदय होगा' दोनों कथन वस्तु स्थिति हैं।
(2) 'कल सूर्योदय नहीं होगा' और 'कल सूर्योदय होगा' दोनों कथनों में कोई विरोधाभास नहीं है।
(3) मन दोनों कथनों को उतनी ही सुगमता और स्पष्टता से ग्रहण करता है।

10. According to the given passage Geometry is concerned with :
दिए गए गद्यांश के अनुसार ज्यामिति किससे सम्बन्धित है :

(a) Both matters of fact and relations of ideas
वस्तु स्थिति और प्रत्ययों के सम्बन्ध दोनों
(b) Matters of fact/वस्तु स्थिति
(c) Relations between facts/तथ्यों के बीच सम्बन्ध
(d) Relations of Ideas/प्रत्ययों के सम्बन्ध

Ans. (d) : मानवीय बुद्धि के सभी विषयों को दो प्रकार में बांटा जा सकता है (i) प्रत्ययों के सम्बन्ध (ii) वस्तुस्थिति।
प्रत्ययों के सम्बन्ध के अंतर्गत ज्यामिति, बीजगणित, अंकगणित संक्षेप में, प्रत्येक प्रतिज्ञान जो या तो अन्तः प्रज्ञात्मक या निरूपणात्मक रूप से निश्चित, हो आते हैं।

11. Who advocates the view that Brahman is abhinnanimittopādāna karana of jagat?
यह किसका विचार है कि ब्रह्म जगत का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण है?

(a) Sankara and Kapila/शंकर और कपिल
(b) Sankara and Rāmānuja/शंकर और रामानुज
(c) Madhva and Kanāda/माधव और कणाद
(d) Sankara and Madhva/शंकर और माधव

Ans. (b) : ब्रह्म जगत का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण है। यह विचार शंकर और रामानुज दोनों का है। शंकर के अनुसार ब्रह्म भूत जगत का आधार है। जगत ब्रह्म का विवर्त है, परिणाम नहीं। शंकर ने केवल इसी अर्थ में ब्रह्म को विश्व का कारण माना है। रामानुज ने ब्रह्म को विश्व का निर्माणकर्ता कहा है। ब्रह्म विश्व का उपादान और निमित्त कारण है वह अपने अंदर निहित अचित से विश्व का निर्माण करता है। जिस प्रकार मकड़ा अपने सामग्री से जाल बुन लेता है उसी प्रकार ईश्वर स्वयं सृष्टि कर लेता है। रामानुज कहते हैं कि विश्व ब्रह्म का रूपांतरित रूप है।

12. Read the following statement carefully and choose the correct option given thereafter :
निम्नलिखित कथन को सावधानीपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए :

"The buddhi obtains an intention when it thinks that the soul has a desire for experience and because it has that experience the sense organs [too obtain an intention]. This is incorrect; because [they are] unconscious. For the buddhi is unconscious and so are the sense organs. If they do not experience intention, how can their modification into the shape of the objects be decided upon?"
बुद्धि को उद्देश्य की प्राप्ति होती है जब यह समझती है कि आत्मा में अनुभव करने की इच्छा होती है और चूँकि इसमें वह अनुभूति होती है, ज्ञानेन्दियों को (भी उद्देश्य की प्राप्ति होती है)। यह सही नहीं है; क्योंकि वे अचेतन होती हैं। बुद्धि अचेतन होती है और ज्ञानेन्दियाँ भी यदि वे उद्देश्य का अनुभव नहीं करती हैं, वस्तुओं के आकार में उनके रूपांतर पर कैसे निर्णय किया जा सकता है?

Above statement represents the criticism of :
उपर्युक्त कथन में किसकी आलोचना है :

(a) Advaita by the Sāṁkhya school
सांख्य दर्शन द्वारा अद्वैत की
(b) Advaita by the Visistadvaita school
विशिष्टद्वैत द्वारा अद्वैत की
(c) Nyaya by the Saṁkhya school
सांख्य दर्शन द्वारा न्याय की
(d) Sāṁkhya by the Nyāya school
न्याय दर्शन द्वारा सांख्य की

Ans. (d) : बुद्धि को उद्देश्य की प्राप्ति होती है जब यह समझती है कि आत्मा में अनुभव करने की इच्छा होती है और चूँकि इसमें वह अनुभूति होती है, ज्ञानेन्द्रियों को भी उद्देश्य की प्राप्ति होती है। यह सही नहीं है, क्योंकि वे अचेतन होती है। बुद्धि अचेतन होती है और ज्ञानेन्द्रियाँ भी यदि वे उद्देश्य का अनुभव नहीं करती है। वस्तुओं के आकार में उनके रूपांतर पर कैसे निर्णय किया जा सकता है? न्याय द्वारा की गई यह आलोचना सांख्य के विषय में है ।

13. Which one of the following is an invalid inference?
निम्नलिखित में से कौन सा अवैध अनुमान है?

(a) Either p or q, not p, therefore q
p या q, p नहीं, इसलिए q
(b) If p then q, not p, therefore q
यदि p तो q, p नहीं, इसलिए q
(c) If p then q, not q, therefore not p
यदि p तो q, q नहीं, इसलिए p नहीं
(d) If p then q, p, therefore q
यदि p तो q, p इसलिए q

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : यदि p तो q, p नहीं, इसलिए q
यह एक अवैध युक्ति है।
प्रतीकात्मक रूप में,
$p \supset q$
$\sim p$
$\therefore q$
'p' यहां कारण है और q कार्य। यदि कारण नहीं होगा तो कार्य घटित नहीं होगा। अतः यह युक्ति अवैध है।
(a) इसी प्रकार, p या q, p नहीं इसलिए q. का सांकेतिक प्रतीक
$p \vee q$
$\sim q$
$\therefore p$
वैकल्पिक न्यायवाक्य है। जो वैध है।
(c) यदि p तो q, q नहीं
इसलिए p नहीं, का सांकेतिक तर्कवाक्य
$p \supset q$
$\sim q$
$\therefore \sim p$
जो शेषवत अनुमान है।
यह तर्कवाक्य वैध है।
(d) यदि p तो q, p इसलिए q का प्रतीकात्मक रूप है–
$p \supset q$
p
$\therefore q$
यह पूर्ववत अनुमान है जो एक वैध युक्ति है।

14. Which one is the contra positive of the proposition "All members are voters?"
निम्नलिखित में से कौन सा तर्क वाक्य 'सभी सदस्य मतदाता हैं?' का प्रतिपरिवर्तित रूप है:
(a) All nonvoters are members
सभी गैर मतदाता सदस्य हैं
(b) All non-voters are non-members
सभी गैर मतदाता गैर सदस्य हैं
(c) All voters are non-members
सभी मतदाता गैर सदस्य हैं
(d) No non-voters are members
सभी गैर मतदाता सदस्य हैं

Ans. (b) : 'सभी सदस्य मतदाता है' का प्रतिपरिवर्तन इस प्रकार है- सभी गैर मतदाता गैर सदस्य हैं।
प्रतिपरिवर्तन का नियमः-
(1) आधार वाक्य का विधेय पद का पूरक, निष्कर्ष में उद्देश्य पद हो जाता है।
(2) आधार वाक्य के उद्देश्य पद का पूरक निष्कर्ष में विधेय पद हो जाता है।
(3) आधार वाक्य एवं निष्कर्ष का गुण समान रहता है।
(4) आधार वाक्य में जो पद अव्याप्त है उसे निष्कर्ष में व्याप्त नहीं होना चाहिए।

15. Read the following statements carefully.
निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
A. Mechanistic view of creation is premised on the idea that matter formed itself unaided into organisms of an almost incredible complexity/सृष्टि का यांत्रिक सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि द्रव्य ने स्वयं को बिना किसी सहायता के लगभग अविश्वसनीय रूप से जटिल प्राणियों में परिवर्तित किया।
B. Teleological view of creation is premised on the idea that order and efficacy apparent in the things created have been imposed from outside by a rational agent working on plan/सृष्टि का प्रयोजनमूलक सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि सृजित वस्तुओं में दृश्य व्यवस्था और कुशलता योजनाबद्ध तरीके से कार्य कर रहे यौक्तिक कर्ता द्वारा बाहर से आरोपित है।
C. Nyāya view of creation is mechanistic
न्याय दर्शन के सृजन का सिद्धांत यांत्रिक है।
D. Nyāya view of creation is teleological
न्याय दर्शन के सृजन का सिद्धांत प्रयोजनपरक है।
Choose the most appropriate answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A and B only/केवल A और B
(b) A and C only/केवल A और C
(c) A, B and D only/केवल A, B और D
(d) B and C only/केवल B और C

Ans. (a) : 'द्रव्य ने स्वयं को बिना किसी सहायता से लगभग अविश्वसनीय रूप से जटिल प्राणियों में परिवर्तित किया है' यह विचार सृष्टि के यांत्रिक सिद्धांत का आधार है।
'सृजित वस्तुओं में दृश्य व्यवस्था और कुशलता योजनाबद्ध तरीके से कार्य कर रहे यौक्तिक कर्ता द्वारा बाहर से आरोपित है।'' यह विचार सृष्टि के प्रयोजन मूलक सिद्धांत का आधार है। इस प्रकार कथन (A) और (B) सत्य है।

16. According to Sāṁkhya system dharma and adharma are :
सांख्य दर्शन के अनुसार धर्म और अधर्म क्या हैं:
(a) Modifications of Buddhi/बुद्धि के रूपान्तर
(b) Modifications of the soul/आत्मा के रूपान्तर
(c) Qualities of Buddhi/बुद्धि के गुण
(d) Qualities of the soul/आत्मा के गुण

Ans. (a) : सांख्य दर्शन के अनुसार धर्म और अधर्म को बुद्धि का रूपांतर माना गया है।

17. Which of the following is true regarding R.M. Hare's views on moral judgements?
निम्नलिखित में से कौन-कौन से नैतिक निर्णयन पर आर एम हेअर के विचारों के सम्बन्ध में सही है?
A. They are prescriptive in character
वे आदेशात्मक प्रकृति के होते हैं।
B. To assent to them is to assent to the imperatives that they entail/उन्हें स्वीकृति प्रदान करना उनके आदेशों को स्वीकार करना है।
C. To assent to an imperative involves doikng something or making something the case/किसी आदेश को स्वीकार करने में कुछ करना या किसी वस्तु को कारक बनाना शामिल है
D. They are a kind of fact-stating, truthfunctional discourse/वे तथ्य का कथन करने वाले, सत्य प्रकार्यात्मक विमर्श होते हैं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A, B and C only/केवल A, B और C
(b) A, B and D only/केवल A, B और D
(c) A, C and D only/केवल A, C और D
(d) B, C and D only/केवल B, C और D

Ans. (a) : नैतिक निर्णयन पर आर.एम. हेअर के विचार-
(1) नैतिक निर्णयन आदेशात्मक प्रकृति के होते है।
(2) उन्हें स्वीकृति प्रदान करना, उनके आदेशों को स्वीकार करना है।
(3) किसी आदेश को स्वीकार करने में कुछ करना या किसी वस्तु को कारक बनाना शामिल हे।

18. Given below are two statements :
नीचे दो कथन दिए गए हैं :

Statement I : The deterministic doctrine states roughly that human actions like all other natural events are determined by preceding conditions, by the immutable laws of nature

कथन - I : निर्धारणात्मक सिद्धांत मोटे तौर पर यह कहता है कि सभी अन्य प्राकृतिक घटनाओं की तरह मानव कार्य का भी निर्धारण पूर्व परिस्थितियों, प्रकृति के अपरिवर्त्य नियम के द्वारा होता है।

Statement II : The karma doctrine endorsed by most the Classical Indian Schools of Philosophy leads to determinism since a person's present actions are a product of his actions

कथन - II : दर्शन शास्त्र की अधिकांश क्लासिकी भारतीय विचारधाराओं द्वारा अनुसमर्थित कर्म का सिद्धांत निर्धारण वाद की ओर ले जाता है क्योंकि किसी व्यक्ति के वर्तमान कर्म उसके अतीत के कर्मो के परिणाम होते हैं:

In light of the above statements, choose the most appropriate answer from the options given below:
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) Both Statement I and Statement II are correct
कथन I और II दोनों सही हैं
(b) Both Statement I and Statement II are incorrect/कथन I और II दोनों गलत हैं
(c) Statement I is correct but Statement II is incorrect/कथन I सही है, किन्तु कथन II गलत है
(d) Statement I is incorrect but Statement II is correct/कथन I गलत है, किन्तु कथन II सही है

Ans. (c) : प्रश्नगत कथन (I) ''निर्धारणात्मक सिद्धांत मोटे तौर पर यह कहता है कि सभी अन्य प्राकृतिक घटनाओं की तरह मानव कार्य का भी निर्धारण पूर्व परिस्थितियों, प्रकृति के अपरिवर्त्य नियम द्वारा होता है।'' सत्य है।
कथन (III) दर्शन शास्त्र की अधिकांश क्लासिकी भारतीय विचारधाराओं द्वारा अनुसमर्थित कर्म का सिद्धांत निर्धारणवाद की ओर ले जाता है, क्योंकि किसी व्यक्ति के वर्तमान कर्म उसके अतीत के कर्मो के परिणाम होते हैं।'' गलत है। क्योंकि प्राचीन भारतीय दर्शन कर्मवाद में विश्वास करते हैं जिसके अनुसार वर्तमान जन्म के फल पूर्व जन्म के कर्मो का परिणाम होते हैं। लेकिन यह आवश्यक नहीं कि वो निर्धारणवाद को मानते हों।

19. Which one of the following is the view of Vivekananda with regard to the origin of religion?
धर्म के उद्गम के सम्बन्ध में विवेकानंद का विचार निम्नलिखित में से कौन है?

(a) In the conceptualization of evil/बुराई के संप्रत्यय में
(b) Only in Ancestor worship/केवल पूर्वज पूजा में
(c) Only in nature worship/केवल प्रकृति पूजा में
(d) The struggle to transcend the limitations of the senses/इन्द्रियातीत होने के लिए संघर्ष

Ans. (d) : आधुनिक सामाजिक, धार्मिक सुधारकों में से एक स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि ''इन्द्रिय जगत से परे की लालसा ही धर्म के उद्भव का कारण रही है।'' इन्द्रियातीत सत्ता की अनुभूति के पश्चात् मनुष्य ने उस सत्ता को एक विशेष आवरण से आच्छादित करने का प्रयास किया। इसे उसने धर्म का नाम दिया। मनुष्य अपने विवेकशील अवस्था से ही पारलौकिक सत्ता की अनुभूति के लिए संघर्षरत रहा है। इस संघर्ष के परिणाम स्वरूप उसे जिस दिव्यता की अनुभूति हुई उसको उसने एक विशेष और आदरणीय ढाँचे में ढालने का प्रयास किया और उसे धर्म की संज्ञा दी।

20. Who refuted the doctrine of abstract ideas?
किसने अमूर्त विचारों के सिद्धांत का खंडन किया?

(a) Berkeley/बर्कले
(b) Kant/कांट
(c) Locke/लॉक
(d) Spinoza/स्पिनोजा

Ans. (a) : अमूर्त विचार के सिद्धान्तों का खण्डन बर्कले ने किया। बर्कले कहते हैं कि 'अमूर्त विचार' एक असंगत कल्पना है क्योंकि हम इन्द्रियों द्वारा विशेष का ही ज्ञान कर सकते हैं, सामान्य का नहीं। 'सामान्य मनुष्य' की कल्पना करते ही किसी मनुष्य-विशेष की आकृति मस्तिष्क में आती है। काल्पनिक विज्ञान वदतो-व्याघात है। ध्यान देने की बात है कि बर्कले सामान्य का खण्डन नहीं करते। सामान्य और सार्वभौम विज्ञानों की सत्ता उन्हें मान्य है। उनका कथन है कि ये सामान्य विज्ञान इन्द्रियानुभव से नहीं आते और न इनको अमूर्त या काल्पनिक कहा जा सकता है। अतः इन तथाकथित 'अमूर्त विज्ञानों' के आधार पर भी बाह्य द्रव्यों की सत्ता नहीं मानी जा सकती है।

21. Select the code which is not correct in the context of deductive argument with two premises:
ऐसे कूट का चयन कीजिए जो दो आधार वाक्यों के निगमनात्मक तर्क के सन्दर्भ में सही नहीं है:

(a) An argument with one true and one false premises and a false conclusion is valid/एक सही और एक गलत आधार वाक्य वाला तर्क और एक गलत निष्कर्ष वैध है
(b) An argument with two false premises and a false conclusion is valid/दो गलत आधार वाक्य वाला तर्क और एक गलत निष्कर्ष वैध है
(c) An argument with two true premises and a false conclusion is valid/दो सही आधार वाक्यों वाला तर्क और एक गलत निष्कर्ष वैध है
(d) An argument with two true premises and a true conclusion is valid/दो सही आधार वाक्यों वाला तर्क और एक सही निष्कर्ष वैध है

Ans. (c) : दो आधार वाक्यों के निगमनात्मक तर्क की विशेषताएँ-
(1) एक सही और एक गलत आधार वाक्य वाला तर्क और एक गलत निष्कर्ष वैध होता है।
(2) दो गलत आधार वाक्य वाला तर्क और एक गलत निष्कर्ष वैध है।
(3) दो सही आधार वाक्यों वाला तर्क और एक सही निष्कर्ष वैध है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

22. Atma according to Nyāya can be :
न्याय दर्शन के अनुसार आत्मा क्या हो सकती है :
(a) Knower only/केवल ज्ञाता
(b) Knowledge only/केवल ज्ञान
(c) Both knower and known/ज्ञाता और ज्ञात दोनों
(d) Known only/केवल ज्ञात

Ans. (c) : न्याय दर्शन के अनुसार आत्मा ज्ञाता और ज्ञात दोनों है। जानना, आत्मा का धर्म है। वह ज्ञान का विषय नहीं हो सकता। आत्मा भोक्ता है। वह सुख-दुख का अनुभव करता है। न्याय दर्शन के अनुसार आत्मा नित्य, निरवयव तथा अविनाशी है। न्याय दर्शन के अनुसार आत्मा सबका द्रष्टा, सुख-दुख को भोगने वाला वस्तुओं को जानने वाला है।

23. Select the code that states the correct sequence of the following:
सही क्रम का चयन करें :
A. Ahiṁsā/अहिंसा
B. Satya/सत्य
C. Brahmacharya/ब्रह्मचर्य
D. Asteya/अस्तेय
E. Aprigraha/अपरिग्रह
Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A, B, D, C, E (b) A, B, E, C, D
(c) A, B, C, D, E (d) A, C, B, D, E

Ans. (a) : अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को जैन दर्शन में पंचमहाव्रत कहा गया है।
अहिंसा- अहिंसा का अर्थ है, हिंसा का परित्याग। किसी भी प्रकार के जीव की हिंसा का परित्याग।
सत्य- सत्य का अर्थ है, असत्य का परित्याग। सत्य का पालन मन, वचन और कर्म से करना चाहिए।
अस्तेय- अस्तेय का अर्थ है, चोरी का निषेध। जैनदर्शन में चोरी न करना नैतिक अनुशासन कहा गया है।
ब्रह्मचर्य- ब्रह्मचर्य का अर्थ है, वासनाओं का परित्याग करना। जैनों ने ब्रह्मचर्य का पालन मन, वचन, कर्म से करने का निर्देश दिया है।
अपरिग्रह- अपरिग्रह का अर्थ है, विषय वासनाओं का परित्याग। जैन दर्शन में अपरिग्रह को रूप, रस, गंध, स्पर्श, स्वाद से उत्पन्न विषय को कहा गया है।

24. As per the politics of recognition of Charles Taylor, which one of the following is true.
चार्ल्स टेलर की मान्यता की राजनीति के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा सत्य है?
(a) It advocated politics of difference that emphasized that everyone owed recognition of the unique identity/इसने मतभेद की राजनीति का समर्थन किया जो इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ट पहचान की मान्यता का धारक है
(b) It advocated politics of difference that emphasized that everyone owed recognition of the universal shared identity/इसने मतभेद की राजनीति का समर्थन किया जो इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक व्यक्ति सार्वभौम साझी पहचान की मान्यता का धारक है
(c) It advocated politics of indifference that emphasized that everyone owed recognition of the unique identity/इसने उदासीनता की राजनीति का समर्थन किया जो इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ट पहचान की मान्यता का धारक है
(d) It emphasized a move from recognition to non-recognition/इसने मान्यता से गैर मान्यता की ओर अंतरण पर बल दिया

Ans. (a) : चार्ल्स टेलर की मान्यता की राजनीति के अनुसार "इसने मतभेद की राजनीति का समर्थन किया जो इस बात पर बल देता है कि प्रत्येक व्यक्ति एक विशिष्ट पहचान की मान्यता का धारक है।"

25. According to K C Bhattacharya Philosophy is concerned with:
के सी भट्टाचार्य के अनुसार दर्शन शास्त्र किससे सम्बंधित है:
A. Transcendental consciousness/पराचेतन
B. Objective consciousness/वस्तुपरक चेतना
C. Spiritual consciousness/आध्यात्मिक चेतना
D. Empirical consciousness/आनुभविक चेतना
Choose the correct answer from the option given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A and B only/केवल A और B
(b) A, B and C only/केवल A, B और C
(c) B and C only/केवल B और C
(d) D only/केवल D

Ans. (b) : के.सी. भट्टाचार्य के अनुसार दर्शनशास्त्र का सम्बन्ध निम्नलिखित तीन सत्ताओं से है-
(i) पराचेतना
(ii) वस्तुपरक चेतना
(iii) आध्यात्मिक चेतना

26. What type of absence (abhāva) is the absence of cowness in horseness according to the Vaisesikas?
वैशेषिकों के अनुसार अश्व जाति में गोजाति का अभाव किस प्रकार का अभाव है?
(a) Anyonyābhāva/अन्योन्याभाव
(b) Prāgbhāva/प्रागभाव
(c) Atyantābhāva/अत्यन्ताभाव
(d) Dhvaṁsābhāva/ध्वंसाभाव

Ans. (a) : न्याय दर्शन के अनुसार 'अश्व' जाति में 'गो' जाति का अभाव अन्योन्याभाव है। अन्योन्याभाव का अर्थ है दो वस्तुओं की भिन्नता। अभिप्राय यह है कि जब एक वस्तु का दूसरे वस्तु से भेद बतलाया जाता है तब अन्योन्याभाव का प्रयोग होता है। अन्योन्याभाव का उदाहरण है-घोड़ा गाय नहीं है।

27. Given below are four statements, two among them are related in such a manner that they can both be true but they cannot both be false. Select the code that indicates those two statements/नीचे चार कथन दिए गए हैं, इनमें से दो इस प्रकार सम्बन्धित हैं कि ये दोनों सही हो सकते हैं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

लेकिन वे दोनों गलत नहीं हो सकते हैं। ऐसे दो कथनों को दर्शाने वाले सही कूट का चयन कीजिए:

A. Honest persons hardly suffer
ईमानदार व्यक्तियों को शायद ही कष्ट होता है।

B. Honest persons never suffer
ईमानदार व्यक्तियों को कभी कष्ट नहीं होता है।

C. Almost all honest persons suffer
लगभग सभी ईमानदार व्यक्तियों को कष्ट होता है।

D. Each and every honest person suffers
प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति को कष्ट होता है।

Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में सही उत्तर चुनें:

(a) A and C only/केवल A और C
(b) A and B only/केवल A और B
(c) B and C only/केवल B और C
(d) C and D only/केवल C और D

Ans. (a) : प्रश्नगत कथनों में कथन (A) ईमानदार व्यक्तियों को शायद ही कष्ट होता है तथा कथन (C) लगभग सभी ईमानदार व्यक्तियों को कष्ट होता है। सत्य है। परन्तु कथन (B) असत्य है, यह आवश्यक नहीं है कि ईमानदार व्यक्तियों को कभी कष्ट नहीं होता, क्योंकि ईमानदार व्यक्तियों को भी कष्ट होता है।
इसी प्रकार कथन (D) भी असत्य है, यह जरूरी नहीं की प्रत्येक ईमानदार को कष्ट हो।

28. Match List I with List II
सूची-I के साथ सूची-II से सुमेलित कीजिए:

	List-I/सूची-I/ सिद्धांत		**List-II/सूची-II/ लेखक/विचारक/सिद्धांत का नाम आदि**
A.	Biocentrism/जीव केन्द्रिकता	I.	The ethical belief that some animals warrant moral consideration as ends in themselves, rather than means to human ends/यह नैतिक धारणा कि कुछ प्राणियों के लिए नैतिक विचार अपने आप में लक्ष्य होते हैं, न कि मानव उद्देश्यों के साधन
B.	Ecocentricism/पारि केन्द्रिकता	II.	The ethical belief that all living individual beings have moral value as ends in themselves, rather than as means to human ends/यह नैतिक धारणा कि सभी जीवित व्यक्तियों के लिए नैतिक मूल्य अपने आप में लक्ष्य होते हैं, न कि मानव उद्देश्यों के साधन
C.	Anthropocentrism/ मानव केन्द्रिकता	III.	The ethical belief that both individuals and whole ecosystems, watersheds, species, the biotic community have inherent value as ends in themselves /यह नैतिक धारणा कि व्यक्ति और सम्पूर्ण पारितंत्र दोनों, जल संभर, प्रजातियों, जैव समुदाय में मूल्य अन्तर्निहित होते हैं जो अपने आप में लक्ष्य होते हैं
D.	Zoocentricism/ प्राणी केन्द्रिकता	IV.	The view that human beings are the only, or the primary, bearers of moral rights/यह विचार कि मनुष्य नैतिक अधिकारों के एक मात्र या प्राथमिक वाहक होते हैं

Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) A - II, B - I, C - IV, D - III
(b) A - II, B - III, C - IV, D - I
(c) A - II, B - IV, C - I, D - III
(d) A - III, B - I, C - II, D - IV

Ans. (b) : सही सुमेल इस प्रकार है-

सूची-I		**सूची-II**
जीव केन्द्रिकता	-	यह नैतिक धारणा कि सभी जीवित व्यक्तियों के लिए नैतिक मूल्य अपने आप में लक्ष्य होते हैं, न कि मानव उद्देश्यों के साधन।
पारि केन्द्रिकता	-	यह नैतिक धारणा कि कुछ प्राणियों के लिए नैतिक विचार अपने आप में लक्ष्य होते हैं, न कि मानव उद्देश्यों के साधन।
मानव केन्द्रिकता	-	यह विचार कि मनुष्य नैतिक अधिकारों के एक मात्र या प्राथमिक वाहक होते हैं।
प्राणी केन्द्रिकता	-	यह नैतिक धारणा कि व्यक्ति और सम्पूर्ण पारितंत्र दोनों, जल संभर, प्रजातियों, जैव समुदाय में मूल्य अन्तर्निहित होते हैं जो अपने आप में लक्ष्य होते हैं।

29. Which dravyas according to the Vaisesikas are sometimes nitya and sometimes anitya.
Select the correct code.
वैशेषिकों के अनुसार कौन-सा द्रव कभी नित्य होता है और कभी अनित्य होता है :

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) Earth, water, fire, air and ether only
केवल पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश
(b) Earth and water only/केवल पृथ्वी और जल
(c) Earth, water and fire only
केवल पृथ्वी, जल और अग्नि
(d) Earth, water, fire and air only
केवल पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु

Ans. (d) : द्रव्य वैशेषिक-दर्शन का प्रथम पदार्थ है। द्रव्य की परिभाषा इस प्रकार दी गई है "क्रियागुणवतसमवायिकारणमिति द्रव्य लक्षणम्।" द्रव्य की परिभाषा से यह सूचित होता है कि द्रव्यगुण और कर्म का आधार होने के अतिरिक्त अपने कार्यों का समवायि कारण है। द्रव्य में सामान्य निहित होता है। द्रव्य के सामान्य को 'द्रव्यत्व' कहा जाता है द्रव्य नौ प्रकार के होते हैं-
(1) पृथ्वी, (2) अग्नि, (3) वायु, (4) जल, (5) आकाश, (6) दिक, (7) काल, (8) आत्मा, (9) मन।
इनमें प्रथम पांच को पंचभूत कहा जाता है। प्रतयेक का एक विशिष्ट गुण होता है। पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु अपने कारणरूप में नित्य तथा कार्यरूप में अनित्य होते हैं। ये अपने परमाणु रूप में नित्य हैं इनके परमाणु अविभाज्य, निरवयव नित्य, परिमण्डलाकार गतिहीन, गुण एवं परिमाण की दृष्टि से परस्पर भिन्न तथा भौतिक जगत के उपादान कारण हैं।
पृथ्वी शाश्वत और अशाश्वत दोनों है। पृथ्वी के परमाणु शाश्वत हैं परन्तु उससे बने पदार्थ अनित्य है। इसी प्रकार जल के भी परमाणु शाश्वत हैं तथा जल से निर्मित पदार्थ अनित्य हैं। अग्नि के परमाणु नित्य हैं जबकी अग्नि से बने पदार्थ अनित्य हैं। वायु के परमाणु नित्य हैं परन्तु इससे बनी वस्तुएँ अनित्य हैं।
इस प्रकार स्पष्ट है कि वैशेषिक दर्शन के अनुसार पृथ्वी, जल, अग्नि, और वायु नामक द्रव्य कभी नित्य होते हैं, कभी अनित्य।

30. Upeksha, according to Kamandaka is:
कामंदक के अनुसार उपेक्षा क्या है:
(a) Abandoning the decision
निर्णय का परित्याग करना
(b) Deliberate neglect of the situation
परिस्थिति की सुविचारित उपेक्षा
(c) Diplomatic impatience/कूटनीतिक अधीरता
(d) Diplomatic indifference/कूटनीतिक उदासीनता

Ans. (d) : कामंदकीय नीतिसार के अनुसार उपेक्षा एक कूटनीतिक उदासीनता है। कामंदक नीतिसार अहिंसक है वह सह अस्तित्व पर बल देती है। कामंदक, कौटिल्य के साम, दाम, दण्ड, भेद, उपेक्षा में विश्वास नहीं रखते हैं। वे मंत्रणा शक्ति, प्रभु शक्ति और उत्साह शक्ति की बात करते हैं। कामंदक, कौटिल्य के 'उपेक्षा' नीति की तुलना कूटनीतिक उदासीनता से करते हैं।

31. By what relation the absence of duhkha exists in liberated self, according to the Vaisesikas:
वैशेषिकों के अनुसार बंधन मुक्त आत्मा में दु:ख का अभाव किस सम्बन्ध से रहता है:
(a) Tādātmya/तादात्म्य (b) Samavāya/समवाय
(c) Saṁyoga/संयोग (d) Svarūapa/स्वरूप

Ans. (d) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार बंधन मुक्त आत्मा में दु:ख का अभाव स्वरूप संबंध से रहता है। वैशेषिक दर्शन का मोक्ष (बंधन मुक्त आत्मा) संबंधी विचार भी अभाव को प्रमाणिकता प्रदान करता है मोक्ष का अर्थ दु:खों का पूर्ण अभाव कहा जाता है। मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य माना जाता है। यदि अभाव को नहीं माना जाए तो वैशेषिक का मोक्ष विचार काल्पनिक होगा।

32. Consider the following statements with reference to Kautilya/कौटिल्य के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
A. The aim of the polity is the yogakshema of the subjects/राजनीति का लक्ष्य प्रजाओं का योगक्षेम है।
B. Curbing of the mastyanyaya within the State is advocated/राज्य के भीतर मत्स्यन्याय पर अंकुश लगाने का समर्थन किया गया है।
C. Yogakshema is not the responsibility of the state/योगक्षेम का दायित्व राज्य का नहीं है।
Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A and B only/केवल A और B
(b) A only/केवल A
(c) A, B and C only/केवल A, B और C
(d) C only/केवल C

Ans. (a) : कौटिल्यीय नीतिशास्त्र में बताया गया है कि राजनीति का लक्ष्य प्रजा का योगक्षेम है और यह योग क्षेम का दायित्व राज्य पर है। कौटिल्य नीतिशास्त्र में राज्य के भीतर मत्स्यन्याय पर अंकुश लगाने का कार्य किया गया है। ताकि शक्तिशाली व्यक्ति कमजोरों का शोषण न करें और अराजकता की स्थिति से बचा जा सके।

33. Which of the following are Kant's postulates of morality?/निम्नलिखित में से कौन सा कांट का नैतिकता का अभ्युपगम है?
A. Freedom of the will/इच्छा की स्वतंत्रता
B. Immortality of the soul/आत्मा की अमरता
C. The existence of God/ईश्वर का अस्तित्व
D. Kingdom of Ends/सांध्यजगत
Choose the correct from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A, B and C only/केवल A, B और C
(b) A, B and D only/केवल A, B और D
(c) A, C and D only/केवल A, C और D
(d) B, C and D only/केवल B, C और D

Ans. (a) : काण्ट के अनुसार-
(1) इच्छा की स्वतंत्रता
(2) आत्मा की अमरता
(3) ईश्वर का अस्तित्व
काण्ट की नैतिकता के अभ्युपगम है। काण्ट अपने इन पूर्वमान्यताओं को आस्था पर आधारित मानता है। यह तर्कबुद्धि का विषय नहीं है। काण्ट ने इन तीनों मान्यताओं को नैतिकता के लिए अनिवार्य माना है।

34. Which one of the following is the correct combination of moods of the third figure?
निम्नलिखित में से कौन तृतीय आकृति की मनोदशाओं का सही सम्मिश्रण है?
(a) Darapti, Darii, Felapaton, Ferison, Disamis and Bocardo/दरप्ती, दारी, फेलाप्टोन, फेरिसन, डिसमिस और बोकार्दो
(b) Darapti, Datisi, Felapton, Ferison, Dimaris and Bocardo/दरप्ती, दातिसी, फेलाप्टोन, फेरीसन, डिमारिस और बोकार्दो

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) Darapti, Datisi, Felapton, Ferison, Disamis and Bocardo/दरप्ती, दातिसी, फेलाप्टोन, फेरिसन, डिसमिस और बोकार्दो
(d) Darapti, Datisi, Felapton, Fesapo, Disamis and Bocardo/दरप्ती, दातिसी, फेलाप्टोन, फेसापो, डिसमिस और बोकार्दो

Ans. (c) : तृतीय आकृति की मनोदशाओं का सही सम्मिश्रण इस प्रकार है-

दाराप्ती	(DARAPTI)	(A A I)
दातिसी	(DATISI)	(A I I)
फेलाप्तान	(FELAPTON)	(E A O)
फेरिसान	(FERISON)	(E I O)
दिसामिस	(DISAMIS)	(I A I)
बोकार्दो	(BOCARDO)	(O A O)

35. Mark what is not acceptable to Kant.
निम्नलिखित में से कांट को क्या स्वीकार्य नहीं है:
(a) Knowledge arises independent of sensations
ज्ञान अनुभूतियों से स्वतंत्र पैदा होता है
(b) Knowledge begins with sensations
ज्ञान की शुरूआत अनुभूति से होती है
(c) Knowledge is limited to the realm of sensations, forms of perception and categories of understanding/ज्ञान, अनुभूति क्षेत्र, प्रत्यक्षीकरण के रूप और बोध की श्रेणियों से सीमित होता है
(d) Thing-in-itself is the cause of sensations
वस्तु स्वयं अनुभूतियों का कारण होता है

Ans. (a) : काण्ट के अनुसार अनुभववादियों का यह कथन कि "इन्द्रियानुभाव के बिना सत्य ज्ञान नहीं हो सकता सत्य है। हमारे ज्ञान के एक मात्र विषय हमारी संवेदना का विज्ञान ही है। काण्ट के अनुसार हमारा ज्ञान इन्द्रियानुभव से प्रारम्भ होता है। किन्तु उत्पत्ति अनुभव से नहीं होती है।
इस विश्लेषण के आधार पर काण्ट को स्वीकार्य है-
(1) ज्ञान की शुरुआत अनुभूति से होती है।
(2) ज्ञान अनुभूति क्षेत्र, प्रत्यक्षीकरण के रूप और बोध की श्रेणियों से सीमित होता है।
(3) वस्तु स्वयं अनुभूतियों का कारण होता है।

36. Match List I with List II
सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

	List-I/सूची-I		List-II/सूची-II
A.	Viparitakhyāti/ विपरीताख्यति	I.	Prabhākara/ प्रभाकर
B.	Akhyāti/आख्याति	II.	Kumārila/ कुमारिल
C.	Anyathākhyāti/ अन्यथाख्याति	III.	Madhva/ माधव
D.	Abhinavaanyathākhyāti/ अभिनवान्यथाख्याति	IV.	Gautama/ गौतम

Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(a) A - II, B - I, C - IV, D - III
(b) A - III, B - II, C - I, D - IV
(c) A - I, B - II, C - III, D - IV
(d) A - II, B - III, C - I, D - IV

Ans. (a) : भारतीय दर्शन के अनुसार ख्याति का अर्थ है त्रुटि और वाद का अर्थ है प्रवचन या सिद्धांत। अतः स्पष्ट है ख्यातिवाद का अर्थ है- त्रुटि का सिद्धान्त। इसे भ्रम सिद्धांत भी कहते हैं।
सही सुमेल इस प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
विपरीताख्याति	कुमारिल
आख्याति	प्रभाकर
अन्यथाख्याति	गौतम
अभिनवान्यथाख्याति	माधव

37. Which of the following statements are true with reference to Descartes? Mark the correct code/देकार्ते के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं? सही कूट का चयन कीजिए:
A. Matter is something that does not exist
द्रव्य वह है जिसका अस्तित्व नहीं है।
B. I think, therefore I am
मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ।
C. I am, then I think/मैं हूँ, तो मैं सोचता हूँ।
(a) A and B is correct/A और B सही है
(b) A and C is correct/A और C सही है
(c) B and C is correct/B और C सही है
(d) B only is correct/केवल B सही है

Ans. (d) : देकार्ते कहते हैं कि इस जगत में एक बात में तनिक भी अवकाश नहीं है और वह है मेरी सत्ता। ज्यों ही मैं कोई विचार करता हूँ, त्यों ही मेरी सत्ता सामने आ जाती है। मैं कुछ भी कहूँ, विचार करूँ उन सब में मेरा अस्तित्व अन्तर्निहित है। अतः भलीभांति सोच लेने के बाद और प्रत्येक बात की सावधानी से परीक्षा कर लेने के बाद में इस परिणाम पर पहुँचने के लिए बाध्य हूँ कि "मैं सोचता हूँ, इसलिए मेरा अस्तित्व है।"

38. Who advocated the principle of 'Synthetic unity of apperception'?
'अहं प्रत्यय की संश्लेषी एकता' के सिद्धात का समर्थन किसने किया?
(a) David Hume/डेविड ह्यूम (b) Hegel/हीगेल
(c) Kant/कांट (d) Locke/लॉक

Ans. (c) :
अहं प्रत्यय की संश्लेषी एकता - काण्ट
विज्ञानों में सादृश्य, कालगत तथा कार्य-कारण सम्बन्ध का खण्डन- ह्यूम
निरपेक्ष विज्ञानवाद - हेगल
अनुभववाद - लॉक

39. Select the code that states the correct sequence of the following/सही क्रम का चयन करें:
A. Upādāna/उपादान
B. Trsna/तृष्णा
C. Bhava/भव
D. Jati/जाति
Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :
(a) A, C, B, D (b) B, A, C, D
(c) A, B, C, D (d) B, C, A, D

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : प्रश्नगत विकल्पों का सम्बन्ध बौद्ध दर्शन के प्रतीत्य समुत्पाद सिद्धान्त से है। भूत, वर्तमान और भविष्य की दृष्टि से प्रतीतत्य समुत्पाद के जो भेद किए गए हैं, उन्हें इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है-

अतीत जीवन से- (1) अविद्या, (2) संस्कार, (3) विज्ञान, (4) नामरूप, (5) षडायतन

वर्तमान जीवन से- (1) स्पर्श, (2) वेदना, (3) तृष्णा, (4) उपादान, (5) भव

भावी जीवन से- (1) जाति, (2) जरामरण

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि सही विकल्प BACD होगा।

40. "Though we do not perceive the substratum in which colour, shape etc reside, still we have to regard unperceived substratum as existing" - Whose is this view?

"यद्यपि हम ऐसे अधिष्ठान का अनुभव नहीं करते हैं जिसमें रंग, रूप आदि का आश्रय हो, फिर भी हमें अबोधगम्य अधिष्ठान के अस्तित्त्व को मानना पड़ता है"- यह किसका विचार है?

(a) Descartes and Hume/देकार्त और ह्यूम
(b) Leibnitz/लाइबनित्ज
(c) Locke and Berkeley/लॉक और बर्कले
(d) Locke/लॉक

Ans. (d) : "यद्यपि हम ऐसे अधिष्ठान का अनुभव नहीं करते जिसमें रंग, रूप आदि का आश्रय हो, फिर भी हमें अबोधगम्य अधिष्ठान के अस्तित्व को मानना पड़ेगा।" यह विचार अनुभववादी दार्शनिक लॉक का है। लॉक कहते हैं कि हमारी आत्मा में कोई जन्मजात प्रत्यय नहीं है। समस्त ज्ञान की जननी इन्द्रियानुभूति है। हमारे ज्ञान का आदि और अंत इन्द्रियानुभव में होता है।

41. "Moral words like "good" and "wrong" resemble ordinary descriptive words like "red" and "rectangular" in that their meaning and their application-conditions are firmly linked, so that to change either is to change the other." Which of the following metaethical theories is best represented by this statement?

"नैतिक शब्द जैसे "अच्छा" और "गलत" सामान्य वर्णनात्मक शब्दों जैसे "लाल' और "आयताकार" से मिलते-जुलते हैं। उनके अर्थ और उनके अनुप्रयोग की स्थितियां बिलकुल जुड़े हुए हैं जिससे एक में परिवर्तन का अर्थ दूसरे में परिवर्तन करना है. "निम्नलिखित में से किस अधिनैतिक सिद्धांत का निरूपण इस कथन द्वारा सर्वोत्तम तरीके से होता है?

(a) Cognitivism/संज्ञानवादिता
(b) Descriptivism/वर्णनवादिता
(c) Emotivism/संवेगवादिता
(d) Prescriptivism/आदेशवादिता

Ans. (b) : "नैतिक शब्द जैसे 'अच्छा' और गलत सामान्य वर्णनात्मक शब्दों जैसे लाल और आयताकार से मिलते-जुलते हैं उनके अर्थ और उनके अनुप्रयोग की स्थितियाँ बिल्कुल जुड़े हुए हैं जिससे एक में परिवर्तन का अर्थ दूसरे में परिवर्तन करना है।" इस कथन द्वारा 'वर्णनवादिता' सिद्धांत का निरूपण होता है।

अधिनीतिशास्त्र के सिद्धांत प्रमुख रूप से वर्णनात्मक तथा अवर्णनात्मक प्रकृति के होते हैं वर्णनात्मक सिद्धांत में नैतिक निर्णयों को तथ्यात्मक निर्णयों की भांति सत्य या असत्य माना जाता है। जो किसी विषय, वस्तु या गुण का वर्णन करते हैं। प्रमुख वर्णनात्मक सिद्धांत प्रकृतिवाद, व्यक्तिनिष्ठवाद तथा वस्तुनिष्ठवाद हैं। अवर्णनात्मक सिद्धांत तथ्यात्मक निर्णयों से अलग, निर्णयकर्ता की भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। संवेगावाद एवं परामर्शवाद अवर्णनात्मक सिद्धांत हैं। उपर्युक्त कथन द्वारा वर्णनवादिता सिद्धांत का निरूपण होता है।

42. In Jaina Philosophy intuitive, complete and absolute knowledge is called:

जैन दर्शन में अंतः प्रज्ञाजन्य, पूर्ण और निरपेक्ष ज्ञान क्या कहा जाता है:

(a) Kevela/केवल
(b) Mati/मति
(c) Sruta/श्रुत
(d) Avadhi/अवधि

Ans. (a) : जैन दर्शन के अनुसार केवल ज्ञान की प्राप्ति के क्रम में सर्वप्रथम मोहनीय कर्म का क्षय होता है। तदन्तर पाँच ज्ञानावरण कर्म, चार दर्शनावरण कर्म तथा पांच अन्तराय कर्मों का क्षय करने के बाद अंततः तिरसठ प्रवृत्तियों का नाश होकर केवल ज्ञान प्राप्त होता है। आत्मा की ज्ञान शक्ति का पूर्ण विकास या आविर्भव ही केवल ज्ञान है। केवल ज्ञान, शुद्ध-निर्मल, सकल परिपूर्ण असाधारण और अनंत है। केवल ज्ञान अन्तः प्रज्ञाजन्य पूर्ण और निरपेक्ष ज्ञान है। केवल ज्ञान में समस्त द्रव्यों की तीनों कालों की पर्याएँ एक साथ ज्ञात होने पर भी प्रत्येक पर्याय का विशिष्ट स्वरूप प्रदेश काल, आकारादि विशेषताएँ स्पष्ट ज्ञात होती है। संपूर्ण प्रदेशों की अविकल सत्ता केवली के ज्ञान का स्पष्ट विषय होती है।

43. Which one of the following feminist theories argue for working within the structure of mainstream society to integrate women into that structure?

निम्नलिखित में से कौन सा नारीवाद सिद्धांत महिलाओं को समाज की मुख्यधारा के ढांचे से समेकित करने हेतु इसी संरचना के भीतर कार्य करने की वकालत करता है?

(a) Ecofeminism/पारिनारीवाद
(b) Liberal feminism/उदारवादी नारीवाद
(c) Radical feminism/अति नारीवाद
(d) Socialist feminism/समाजवादी नारीवाद

Ans. (b) : उदारवादी नारीवाद फ्रांस की क्रांति द्वारा प्रेरित और आत्मज्ञान के विज्ञान पर आधारित था। इस नारीवाद का मुख्य विचार यह है कि सब मनुष्य ईश्वर द्वारा बनाए गए हैं उदारवादी नारीवादियों ने महिलाओं और पुरुषों की समानता और अधिकार पर जोर दिया। उदारनारीवाद, राजनैतिक आंदोलनों विचारधाराओं और सामाजिक आंदोलनों की एक श्रेणी है, जो राजनैतिक, आर्थिक, व्यक्तिगत, सामाजिक और लैगिक समानताओं को परिभाषित करने और प्राप्त करने के एक लक्ष्य को साझा करते हैं। इसमें महिलाओं के लिए पुरुषों के समान शैक्षिक और पेशेवर अवसर स्थापित करना शामिल है।

44. Who among the following ethicists argues that the hedonist definition implies that the question "is anything which is pleasant good?" means the same as the question "is anything which is pleasant pleasant?"

निम्नलिखित में से कौन सा आचारवादी यह तर्क देता है कि सुखवाद की परिभाषा का निहितार्थ है कि इस प्रश्न "क्या कुछ भी जो आनंददायक है, अच्छा है" का अभिप्राय वही है जो इस प्रश्न का कि "क्या कुछ भी जो आनंद दायक है, आनंद दायक है?"

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) C L Stevenson/सी एल स्टीवेंशन
(b) G E Moore/जी ई मूर
(c) Kant/कांट
(d) R M Hare/आर एम हेअर

Ans. (b) : जी ई मूर यह तर्क देते हैं कि ''सुखवाद की परिभाषा का निहितार्थ है कि इस प्रश्न ''क्या कुछ भी जो आनंददायक है, अच्छा है'' का अभिप्राय वही है जो इस प्रश्न का की 'क्या कुछ भी जो आनंददायक है, आनंददायक है।'' इस तरह की परिभाषा में मूर के अनुसार एक तरह का 'प्रकृतिवाद दोष' है।
मूर सुखवाद के इस विचार से तो सहमत हैं कि आनंद अपने आप में अच्छा है लेकिन वह केवल आंतरिक रूप से मूल्यवान चीज नहीं है। एक और महत्वपूर्ण अच्छाई जो अपने आप में मूल्यवान है वह है- सुंदरता, उदाहरण के लिए प्राकृतिक सुंदरता। मूर का तर्क है कि इस तरह की दुनिया एक बदसूरत दुनिया से बेहतर होगी, भले ही किसी मामले में इसका आनंद लेने के लिए, कोई नहीं है जो यह दर्शाता है की आनंद ही अपने आप में अच्छा नहीं है।

45. Which of the following are true with reference to Plato? Mark the correct code.
निम्नलिखित में से कौन प्लेटो के सन्दर्भ में सही है? सही कूट का चयन कीजिए।
A. Ideas belong to a realm of their own
विचारों की अपनी दुनिया होती है।
B. Ideas are temporal/विचार कालिक होते हैं।
C. Ideas as Forms are real
आकार के रूप में विचार वास्तविक होते हैं।
D. Ideas are appearances/विचार बाह्याकृति होते हैं।
(a) A and B/A और B (b) A and C/A और C
(c) B and C/B और C (d) C and D/C और D

Ans. (b) : प्लेटो के अनुसार विचारों की अपनी दुनिया होती है। विचार या प्रत्यय ही चरम सत्य है, वह शाश्वत और अखण्ड है तथा ईश्वर उसका सर्जक है। इसके अनुसार यह वस्तु जगत प्रत्यय जगत का अनुसरण है। प्रत्यय स्वाश्रित, सामान्य और बौद्धिक हैं।
प्लेटों के अनुसार वास्तविक संसार अनंत तथा परिवर्तनशील विचारों का अमूर्त क्षेत्र है भौतिक संसार के पदार्थ व वस्तुएँ केवल आभास है, जो विचारों के संसार के आकार मात्र हैं।
अतः उपरोक्त विश्लेषण के अनुसार-
(1) विचारों की अपनी दुनिया होती है।
(2) आकार रूप में विचार वास्तविक होते हैं। सत्य है।

46. Who holds the view that "Some of our ideas resemble the qualities and others do not"?
यह किसका विचार है कि ''हमारे कुछ विचार गुणें से मिलते-जुलते हैं और दूसरे विचार गुणों से मिलते-जुलते नहीं हैं?''
(a) Berkeley/बर्कले
(b) Hume/ह्यूम
(c) Locke and Berkeley/लॉक और बर्कले
(d) Locke/लॉक

Ans. (d) : ''हमारे कुछ विचार गुणों से मिलते-जुलते हैं और दूसरे विचार गुणों से मिलते-जुलते नहीं हैं।'' यह कथन अनुभववादी लॉक का है।
''हम वाह्य जड़ पदार्थ का प्रत्यक्ष नहीं कर सकते, क्योंकि प्रत्यक्ष होता है केवल गुणों का वाह्य पदार्थ का नहीं।'' - बर्कले।
''विज्ञानों में तीन प्रकार के सम्बन्ध है- सादृश्य, कालगत तथा कार्य-कारण सम्बन्ध'' - ह्यूम।

47. Which one among the following is Not a cittavritti according to Patanjala-yoga?
पतंजलि योग के अनुसार निम्नलिखित में से कौन चित्तवृत्ति नहीं है?
(a) Avidya/अविद्या (b) Nidra/निद्रा
(c) Pramana/प्रमाण (d) Vikalpa/विकल्प

Ans. (a) : पतंजलि योग दर्शन के अनुसार ''चित्तवृत्तियाँ पाँच प्रकार की होती हैं-
(1) प्रमाण, (2) विपर्यय, (3) विकल्प, (4) निद्रा, (5) स्मृति।
चित्तभूमियाँ भी पाँच प्रकार की होती हैं-
(1) क्षिप्त, (2) मूढ़, (3) विक्षिप्त, (4) एकाग्र, (5) निरुद्ध।
योग के अष्टांग साधन-
(1) यम, (2) नियम, (3) आसन, (4) प्राणायाम, (5) प्रत्याहार, (6) धारणा, (7) ध्यान, (8) समाधि।

48. "The forms of sensibility are intuitional and the understanding in conceptual." - To whom this is acceptable?
''संवेद शक्ति के रूप अन्तः प्राज्ञिक और बोध अवधारणात्मक होते हैं'' - यह किसे मान्य है?
(a) Hegel/हीगेल (b) Hume/ह्यूम
(c) Kant/कांट (d) Locke/लॉक

Ans. (c) : ''संवेद शक्ति के रूप अन्तः प्राज्ञिक और बोध अवधारणात्मक होते हैं''- यह कथन काण्ट का है।''
''संवेदन या विज्ञान के अतिरिक्त हमें किसी सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता- ह्यूम।'' इन्द्रिय संवेदन, भावना, इच्छा संकल्प आदि सब विज्ञान के विविध रूप है।''- हेगल।

49. To live authentically, for Sartre, means,
सार्त्र के अनुसार प्रामाणिक रूप से जीने का अभिप्राय है :
(a) To make choices intentionally about one's death/किसी के मृत्यु के बारे में सोद्देश्य विकल्प चुनना
(b) To make choices intentionally about one's life and one's future/किसी के जीवन और किसी के भविष्य के बारे में सोद्देश्य विकल्प चुनना
(c) To make choices unintentionally about one's life and one's future/किसी के जीवन और किसी के भविष्य के बारे में मंशारति होकर विकल्प चुनना
(d) To make choices unintentionally about one's life and other's future/किसी के जीवन और किसी के अन्य भविष्य के बारे में मंशा रहित होकर विकल्प चुनना

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : "प्रामाणिक रूप से जीने का अभिप्राय है- किसी के जीवन और किसी के भविष्य के बारे में सोद्देश्य विकल्प चुनना।" - सार्त्र। सार्त्र एक 'अस्तित्ववादी, मानववादी दार्शनिक थे। वे कहते थे कि "मनुष्य स्वयं का निर्माता है, वह जैसे स्वयं को बनाता है, उसके अतिरिक्त वह कुछ नहीं है। मनुष्य अपने बारे में जैसा सोचता है, वैसा नहीं होता बल्कि वैसा होता है जैसा वह संकल्प करता है।

50. Who propounded the existence of God by the argument from motion?
किसने गति के तर्क द्वारा ईश्वर के अस्तित्व का प्रतिपादन किया?

(a) Gorgias/जार्जियास
(b) Pythagoras/पाइथागोरस
(c) St Aquinas/सेंट एक्विनास
(d) Thales/थेल्स

Ans. (c) : गति के तर्क द्वारा ईश्वर के अस्तित्व का प्रतिपादन सेंट एक्विनास ने किया। एक्विनास ने कहा कि जगत की गति के लिए एक स्वयंभू और अपरिणामी चेतन कारण आवश्यक है। ईश्वर सिद्ध स्वरूप है। वह जगत के गति का कारण है। समस्त जगत गतिमान होकर विकसित हो रहा है। विश्व जड़ है, अतः जड़ता के अभाव और विशुद्ध चैतन्य के भाव रूप में ईश्वर की सत्ता सिद्ध है।

51. Given below are two statements
नीचे दो कथन दिए गए हैं:

Statement I : Emotivism as a metaethical theory holds that the action-guiding force of morality could be explained only with reference to the special "evaluative element" in moral judgment.
कथन-I : अधिनैतिक सिद्धांत के रूप में संवेगवाद यह मानता है कि नैतिकता के कार्य प्रेरक बल को नैतिक निर्णयन में विशेष 'मूल्यांकक अवयव' के सन्दर्भ में ही व्याख्यायित किया जा सकता है।

Statement II : Prescriptivism as a metaethical theory held that the action-guiding force of morality could be explained only with reference to the special "evaluative element" in moral judgment.
कथन-II : अधिनैतिक सिद्धांत के रूप में निर्देशवाद ने यह माना कि नैतिकता के कार्य प्रेरक बल को नैतिक निर्णयन में विशेष 'मूल्यांकक अवयव' के सन्दर्भ में ही व्याख्यायित किया जा सकता है।

In light of the above statements, choose the most appropriate answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(a) Both Statement I and Statement II are correct
कथन I और II दोनों सही हैं।
(b) Both Statement I and Statement II are incorrect/कथन I और II दोनों गलत हैं।
(c) Statement I is correct but Statement II is incorrect/कथन I सही है, किन्तु कथन II गलत हैं।
(d) Statement I is incorrect but statement II is correct/कथन I गलत है, किन्तु कथन II सही हैं।

Ans. (a) : संवेगवाद के अनुसार नैतिकता मात्र मनुष्य के संवेगों, अभिवृत्तियों की अभिव्यक्ति है। नैतिक शब्दों में मनुष्य के अनुमोदन, अवश्य व्यक्त रहते हैं, पर उनमें वर्णनात्मक तत्व भी अवश्य रहता है। कथनों के संवेगात्मक अर्थ ही नैतिक निर्णय नहीं बनाते जैसा संवेगवादी मानते हैं। संवेगवाद यह मानता है कि नैतिक प्रेरक बल नैतिक निर्णय में 'मूल्यांकन अवयव' के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं और निदेशवाद भी इसी तरह का विचार रखता है।
अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कथन (I) और कथन (II) दोनों सत्य हैं।

52. According to the Nyāya epistemology, we perceive a snake on a rope by:
न्याय ज्ञान मीमांसा के अनुसार हम किस कारण से रस्सी को सर्प समझते हैं:

(a) Yogaja sannikarsa/योगज सन्निकर्ष
(b) Jnanalaksana sannikarsa/ज्ञान लक्षण सन्निकर्ष
(c) Samanyalaksana sannikarsa
सामान्य लक्षण सन्निकर्ष
(d) Saṁyoga sannikarsa/संयोग सन्निकर्ष

Ans. (b) : न्याय दर्शन के अनुसार ज्ञान लक्षण सन्निकर्ष प्रत्यक्ष का वह भेद है जिसके द्वारा इन्द्रियाँ अपने विषय से भिन्न विषय का ज्ञान भी ग्रहण करती हैं, जैसे जाड़े के दिनों में बर्फ को देखते ही सिहरन होने लगती है।
रस्सी को सर्प समझने का उदाहरण न्याय दर्शन के अनुसार ज्ञान लक्षण सन्निकर्ष का उदाहरण है। जब हम रस्सी को सर्प समझ लेते हैं, तो न्याय दर्शन के अनुसार हमारे पूर्व अनुभूत सर्प की स्मृति, वर्तमान अनुभूत रस्सी की अनुभूति से इस प्रकार मिल जाती है कि रस्सी को स्मृति की वस्तु सांप से हम पृथक नहीं कर पाते। इस को ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष का भ्रामक रूप कहा गया है।

53. Who among the following advocated the view that "If you withhold your assent to religious beliefs, then you will lose the benefits that come from accepting those beliefs, And it is worse to lose the benefits than to gain the protection from erring."
निम्नलिखित में से किसने इस विचार का समर्थन किया कि "यदि आप धार्मिक विश्वासों को स्वीकार नहीं करते हैं, तो आप उन विश्वासों को स्वीकार नहीं करने से मिलने वाले लाभ गंवा देंगे और भूल करके संरक्षण प्राप्त करने की तुलना में लाभ गँवा देना बदतर है"।

(a) Kierkegaard/किर्कगार्ड
(b) Nietzsche/नीत्से
(c) Sartre/सार्त्र
(d) William James/विलियम जेम्स

Ans. (d) : यह विचार "यदि आप धार्मिक विश्वासों को स्वीकार नहीं करते हैं, तो आप उन विश्वासों को स्वीकार नहीं करने से मिलने वाले लाभ गंवा देंगे और भूल करके संरक्षण प्राप्त करने की तुलना में लाभ गँवा देना बदतर है"। विलियम जेम्स का है। "हमारा जीवन हमेशा हमारे प्रमुख विचारों के परिणामों को व्यक्त करता हैं।" किर्कगार्ड।
"मानव व्यक्तित्व का विकास ही मानव की क्षमताओं को प्रकट करेगा- नीत्शे। सार्त्र एक अनीश्वरवादी अस्तित्ववादी है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

54. Match List I with List II
सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए :

	List-I/सूची-I Philosophers/ दार्शनिक		List-II/सूची-II Doctrines/सिद्धांत
A.	Spinoza/स्पिनोजा	I.	Ontological Dualism/सत्ताशास्त्रीय द्वैतवाद
B.	Descartes/देकार्ते	II.	Parallelism of attributes/गुणों की समानांतरता
C.	Berkeley/बर्कले	III.	Preestablished Harmony/पूर्व स्थापित सामंजस्य
D.	Leibnitz/लाइबनित्ज	IV.	Immaterialism/ अभौतिकवाद

Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :
(a) A - I, B - II, C - III, D - IV
(b) A - II, B - I, C - IV, D - III
(c) A - III, B - IV, C - II, D - I
(d) A - IV, B - III, C - I, D - II

Ans. (b) :

सूची-I		सूची-II
स्पिनोजा	-	गुणों की समांतरता
देकार्ते	-	सत्ताशास्त्रीय द्वैतवाद
बर्कले	-	अभौतिकवाद
लाइबनित्ज	-	पूर्व स्थापित सामंजस्य

55. What is the main plank of Kant's criticism of Ontological argument for existence of God?
ईश्वर के अस्तित्व की प्रत्यय सत्ता युक्ति की कांट की आलोचना का मुख्य आधार क्या है?
(a) Atheists challenge the existence of God
नास्तिक, ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती देते हैं
(b) Existence is not perfection/अस्तित्व पूर्णता नहीं है
(c) Existence if perfection/अस्तित्व पूर्णता है
(d) God resides in an extra-terrestrial region
ईश्वर पृथक भू क्षेत्र में रहता है

Ans. (b) : ईश्वर के अस्तित्व संबंधी प्रत्यय सत्ता युक्ति की कांट ने आलोचना की। प्रत्यय सत्ता युक्ति के अनुसार 'ईश्वरीय अस्तित्व पूर्ण है।' कांट इसी की आलोचना करते हैं और कहते हैं की "अस्तित्व पूर्णता नहीं है।" कांट ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में अपने नैतिक अनुभवों को देखते हैं और नैतिक प्रमाण के साथ शुरू करते हैं कि, यह व्यावहारिक रूप से ईश्वर के अस्तित्व की मांग करता है और अनुभवजन्य चीजों का अस्तित्व है, जो भौतिक रूप से एक आध्यात्मिक प्रमाण है।

56. Given below are two statements, one is labelled as Assertion A and the other is labelled as Reason R.
नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है।

Assertion A : According to advocates of animal killing the argument that to kill an animal is objectionable because it is contrary to its will is not acceptable.
अभिकथन (A) : पशु हत्या की वकालत करने वालों के अनुसार यह तर्क स्वीकार्य नहीं है कि किसी पशु की हत्या करना आपत्तिजनक है क्योंकि यह उसकी इच्छा के विरूद्ध है।
Reason R : Animals lack the degree of self-consciousness necessary to conceive of, deliberate about, and plan for their own future lives.
तर्क (R) : पशुओं में अपने भावी जीवन की संकल्पना करने, उस पर विचार करने और उसके लिए योजना बनाने के लिए आवश्यक आत्म चेतना की मात्र की कमी होती है।
In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A is false but R is true
(A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है
(b) A is true but R is false
(A) सही है परन्तु (R) सही नहीं है
(c) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/(A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है
(d) Both A and R are true but R is NOT the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है

Ans. (c) : चूँकि पशुओं में अपने भावी जीवन के बारे में संकल्पना करने की शक्ति नहीं होती है, उनमें भावी जीवन पर विचार करने उसके लिए योजना बनाने हेतु आवश्यक आत्म चेतना की कमी होती है। इसीलिए पशु हत्या करने वाले यह तर्क अस्वीकार करते हैं कि पशु हत्या उसकी (पशुओं की) इच्छा के विरुद्ध है। अतः स्पष्ट है कि कथन और तर्क दोनों सही है तथा तर्क द्वारा कथन की सही व्याख्या की जा रही है।

57. Given below are two statements, one is labelled as Assertion A and the other is labelled as Reason R.
नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है।
Consider them and select the correct code in the context of Cārvāka Philosophy:
इन पर विचार कीजिये और चार्वाक दर्शन के सन्दर्भ में सही कूट का चयन कीजिये:
Assertion A : The dead body must be as much conscious as the living body is.
अभिकथन (A) : मृत शरीर को ही उतना ही चेतन होना चाहिए जितना जीवित शरीर को
Reason R : Consciousness is an attribute of body.
तर्क (R) : चेतना शरीर का गुण है
In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) A is false but R is true
(A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है
(b) A is true but R is false
(A) सही है परन्तु (R) सही नहीं है
(c) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है
(d) Both A and R are true but R is Not the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है

Ans. (a) : भारतीय दार्शनिक परंपरा में चार्वाक दर्शन को नास्तिक दर्शन की श्रेणी में रखा जाता है। चार्वाक आत्मा के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते थे। उनका मानना था कि चेतनता शरीर का गुण है जैसे ही शरीर का नाश होता है वैसे ही चेतनता भी नष्ट हो जाती है। चार्वाक कहते हैं कि चेतना शरीर से पृथक नहीं है यदि शरीर से पृथक होती तो मृत्युपरांत दिखलाई पड़ती। चार्वाक के अनुसार चेतन शरीर ही आत्मा है। आत्मा और शरीर के बीच अभेद के कारण चार्वाक के आत्मा संबंधी विचारों को 'देहात्मवाद' कहा जाता है। कथन (A) गलत है जबकि तर्क (R) सत्य है।

58. "When shell is perceived as silver, some real silver is actually present in that shell". Who holds this view?
''जब सीप को रजत समझा जाता है, तब वास्तव में उस सीप में कुछ यथार्थ रजत उपस्थित होता है।'' यह किसका विचार है?
(a) Kumarila/कुमारिल (b) Prabhakar/प्रभाकर
(c) Ramanuja/रामानुज (d) Sankara/शंकर

Ans. (c) : रामानुज के अनुसार जब सीप को रजत समझा जाता है, तब वास्तव में उस सीप में कुछ यथार्थ रजत उपस्थित होता है।' रामानुज के भ्रम विचार को 'सतख्यातिवाद' के नाम से जाना जाता है। इनके अनुसार सभी ज्ञान यथार्थ है। जिस विषय का ज्ञान होता है वह सत है। ज्ञान के विषय को मिथ्या मानना भ्रामक है। यदि सीप को रजत समझा जाता है तब सीप में रजत का अंश है दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि सीप में रजत इसलिए प्रतीत होता है कि सीप में रजत के कुछ लक्षण निहित है। रजत सर्वथा मिथ्या नहीं है।

59. Consider the following syllogism and mark the correct code.
निम्नलिखित न्याय वाक्य पर विचार कीजिए और सही उत्तर दीजिए :
Some snakes are friendly/कुछ सांप मैत्रीपूर्ण होते हैं
No friendly beings bite
कोई मैत्रीपूर्ण प्राणी काटते नहीं है
Therefore, no Snakes bite
अतः कोई सांप काटते नहीं है
(a) Commits the fallacy of four terms
इसमें चतुष्पद दोष है
(b) Commits the fallacy of illicit major
इसमें अव्याप्त साध्य (मुख्य पद) दोष है
(c) Commits the fallacy of illicit minor
इसमें अव्याप्त पक्ष (अमुख्य पद) दोष है
(d) It is a valid syllogism/यह वैध न्याय वाक्य है

Ans. (c) : कुछ सांप मैत्रीपूर्ण होते हैं। कोई मैत्रीपूर्ण प्राणी काटते नहीं हैं। अतः कोई सांप काटते नहीं हैं इसमें अव्याप्त पक्ष दोष है। किसी भी वैध निरपेक्ष न्यायवाक्य की वैधता के लिए छः नियम माने गये हैं। अव्याप्त या अमुख्य पद दोष वहां होता है जब निरपेक्ष न्यायवाक्य के निष्कर्ष में अमुख्य पद व्याप्त हो और आधार वाक्यों में अव्याप्त हो। अर्थात् वैधता के नियमों में से एक के अनुसार, मानक निरपेक्ष न्यायवाक्य में जो पद निष्कर्ष वाक्य में व्याप्त हो इसे आधार वाक्यों में भी अवश्यक व्याप्त होना चाहिए।

60. Given below are two statements, one is labelled as Assertion A and the other is labelled as Reason R. Consider them with reference to Kierkegaard.
नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है। किर्केगार्ड के सन्दर्भ में विचार कीजिए।
Assertion A : Truth is subjective
अभिकथन (A) : सत्य व्यक्तिपरक है
Reason R : Truth is not in what you believe, but in how you live.
तर्क (R) : सत्य वह नहीं है जो आप मानते हैं, बल्कि सत्य वह है जो आप जीते हैं
In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A is false but R is true
(A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है
(b) A is true but R is false
(A) सही है परन्तु (R) सही नहीं है
(c) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है
(d) Both A and R are true but R is NOT the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है

Ans. (d) : किर्केगार्ड सत्य को व्यक्तिपरक मानते हैं। किर्केगार्ड अपने विश्लेषण में कहते हैं कि सत्य वह नहीं जो आप मानते हैं बल्कि सत्य वह है जिसे आप जीते हैं। इस प्रकार किर्केगार्ड के अनुसार कथन और तर्क दोनों सत्य है परन्तु तर्क द्वारा कथन की व्याख्या नहीं की जाती है।

61. Who is the author of the books-I) Discourse on Method and II) Meditations?
इन पुस्तकों का लेखक कौन है-I) डिस्कोर्स ऑन मेथड और II) मिडिटेशन्स
(a) Berkeley/बर्कले (b) Descartes/देकार्ते
(c) Locke/लॉक (d) Spinoza/स्पिनोजा

Ans. (b) : 'डिस्कोर्स ऑन मेथड' तथा 'मिडिटेशन्स' के लेखक 'देकार्ते' हैं।
देकार्ते एक बुद्धिवादी दार्शनिक हैं। इनकी ख्याति दर्शन और गणित के विद्वान के रूप में है। इनका जन्म फ्रांस में हुआ था।

62. Which one of the following is not correct with reference to Affirmative action?
सकरात्मक कार्य के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से क्या सही नहीं है?

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) It does not support opportunities on the basis of race, gender and caste/यह नस्ल, लिंग और जाति के आधार पर अवसर का समर्थन नहीं करता है
(b) It is intended to promote opportunities to the defined disadvantage groups/परिभाषित वंचित समूहों के अवसरों का संवर्धन इसका उद्देश्य है
(c) It justifies the compensation for the past discrimination/यह अतीत में भेदभाव की भरपाई को उचित ठहराता है
(d) It provides equal access to disadvantaged minorities/यह वंचित अल्पसंख्यकों को समानता प्रदान करता है

Ans. (a) : सकारात्मक कार्य के संदर्भ में निम्नलिखित बातें सत्य हैं-
(i) परिभाषित वंचित समूहों के अवसरों का संवर्धन इसका उद्देश्य है।
(ii) यह अतीत में भेदभाव की भरपाई को उचित ठहराता है।
(iii) यह वंचित अल्पसंख्यकों को समानता प्रदान करता है।
(iv) सकारात्मक कार्य द्वारा, किसी व्यक्ति की जाति, राष्ट्रीयता, भाषा लिंग, धर्म, यौन अभिविन्यास या सम्बद्धता के आधार पर भेदभाव को दूर किया जाता है।

63. Which of the following statements is true of Karma theory as advocated in Classical Indian notions of ethics and morality?
जैसा कि आचार शास्त्र और नैतिकता की शास्त्रीय भारतीय अवधारणा के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांत कर्म सिद्धांत के बारे में सही है?

A. The karma theory in its simplest form means that every act, whether good or bad, produces a certain result or consequence which can be escaped or overcome by the perpetrator of the act.
कर्म सिद्धांत का सबसे सामान्य अभिप्राय यह है कि प्रत्येक कर्म, अच्छा या बुरा, का एक निश्चित फल या परिणाम होता है जिससे उस कृत्य का कर्ता बच सकता है या अपने कर्मो से ऊपर उठ सकता है।

B. The doctrine of karma is posited in a religious context as a moral necessity.
कर्म के सिद्धांत को धार्मिक सन्दर्भ में नैतिक जरूरत के रूप में देखा जाता है।

C. It is an attempt to answer the question of moral responsibility in man.
यह मनुष्य में नैतिक दायित्व के सवाल का उत्तर देने का प्रयास है।

D. Metaphysically, it is based upon the doctrine of physical causation, according to which each effect has to be accounted for by its causal precedents.
तत्व मीमांसा के तौर पर यह भौतिक करण-कार्य सिद्धांत के सिद्धांत पर आधारित है जिसके अनुसार प्रत्येक परिणाम का पूर्व कारण होता है।

E. It is a kind of extrapolation or extension of the doctrine of causation from the physical realm to the moral realm.
यह एक प्रकार के कारण-कार्य सिद्धांत का भौतिक क्षेत्र से नैतिक क्षेत्र तक वाग्विस्तार या विस्तार है।

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें।
(a) A and C only/केवल A और C
(b) A, B and D only/केवल A, B और D
(c) A, B, C and D only/केवल A, B, C और D
(d) B, C, D and E only/केवल B, C, D और E

Ans. (d) : नैतिकता की शास्त्रीय भारतीय अवधारणा के अनुसार कर्म सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित बातें सत्य हैं-
(i) कर्म के सिद्धान्त को धार्मिक संदर्भ में नैतिक जरूरत के रूप में देखा जाता है।
(ii) कर्म का सिद्धांत मनुष्य को नैतिक रूप से उत्तरदायी ठहराता है।
(iii) तत्वमीमांसीय विश्लेषण के अनुसार कर्म सिद्धान्त कार्य-कारण सिद्धांत पर आधारित है किसी भी कार्य का कारण होता है।
(iv) कर्म सिद्धांत एक प्रकार से भौतिक से नैतिक क्षेत्र तक का विस्तार है।

64. "We think that we are free agents; this is nothing but illusion"- Whose is this view?
'हम समझते हैं कि हम स्वतंत्र अभिकर्ता हैं, यह भ्रम के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हैं- ''यह किसका विचार है?
(a) Descartes/देकार्ते (b) Hume/ह्यूम
(c) Leibnitz/लिबनित्ज (d) Spinoza/स्पिनोजा

Ans. (d) : 'हम समझते हैं कि हम स्वतंत्र अभिकर्ता हैं, यह भ्रम के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।' यह विचार स्पिनोजा का है। स्पिनोजा बुद्धिवादी दार्शनिक हैं। द्रव्य गुण और पर्याय स्पिनोजा दर्शन के आधार स्तम्भ है।

65. Consider the following in the context of Vedic philosophy and select the code indicating the correct assertions.
वैदिक दर्शन के सन्दर्भ में निम्नलिखित पर विचार कीजिए और सही कथनों को दर्शाने वाले कूट का चयन कीजिए।

A. The Rtvika of Rkveda is called hota
ऋग्वेद का ऋत्विक होता कहा जाता है
B. Rsirna can be paid off by brahmacarya
ब्रह्मचर्य द्वारा ऋषि ऋण को चुकाया जा सकता है
C. Rta regulates not only natural phenomena but also heavenly bodies
ऋत न केवल प्राकृतिक घटना बल्कि आकाशीय पिंडों को भी विनियमित करता है
D. Rta is identified with truth
ऋत सत्य से सम्बन्धित है

Choose the correct answer from the options given below :
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :
(a) A and B only/केवल A और B
(b) A only/केवल A
(c) A, B and C only/केवल A, B और C
(d) A, B, C and D/केवल A, B, C और D

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : ऋग्वैदिक दर्शन के ऋग्वेद के ऋत्विक को होता कहा जाता था। होता का मुख्य कार्य यज्ञीय कार्यों को सम्पन्न कराना तथा मंत्रोच्चार करना था।
भारतीय दार्शनिक परंपरा कुल तीन प्रकार के ऋणों का विधान करती है। (1) पितृ ऋण (2) देव ऋण (3) ऋषि ऋण। ऋषि-ऋण को ब्रह्मचर्य का पालन करके चुकाया जा सकता है।
ऋत नियम के द्वारा वैदिक ऋषि विश्व की नैतिक व्यवस्था की व्याख्या करते थे। इस नियम के कारण ही सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, प्रातःकाल, दिन और रात की गति का नियमन होता है। ऋत का यही नियम उपनिषद दर्शन में 'कर्मवाद' में रूपांतरित हो जाता है। वैदिक दर्शन में ऋत को सत्य से सम्बन्धित किया गया है।

66. "The events are so pre-organized by God in this universe, that there is peace and harmony everywhere" - Who accepts this view?
''इस ब्रह्माण्ड में घटनाएं ईश्वर द्वारा इस प्रकार पूर्व आयोजित हैं कि हर जगह शांति और सौहार्द्र है'' - इस विचार को कौन मानता है?
(a) Descartes/देकार्ते (b) Kant/कांट
(c) Leibnitz/लिब्नित्ज (d) Locke/लॉक

Ans. (c) : 'इस ब्रह्माण्ड में घटनाएं ईश्वर द्वारा इस प्रकार पूर्व आयोजित हैं कि हर जगह शांति और सौहार्द्र हैं' यह विचार लिब्नित्ज का है। लिब्नित्ज के अनुसार ईश्वर सृष्टिकर्ता है। उन्होंने संपूर्ण चिदणुओं की सृष्टि करके उसमें सामंजस्य स्थापित कर दिया है। सृष्टि का विकास क्रम ईश्वर द्वारा पहले ही निर्धारित हो चुका है।

67. "We do not know that events like earthquakes and epidemics have a place in the total selection of things created by God" - This is acceptable to whom?
''हम नहीं जानते हैं कि ईश्वर द्वारा सृजित वस्तुओं के कुल चयन में भूकंप और वैश्विक महामारी जैसी घटनाओं का स्थान है'' - यह किसे स्वीकार्य है?
(a) Berkeley/बर्कले (b) Descartes/देकार्ते
(c) Leibnitz/लाइबनित्ज (d) Locke/लॉक

Ans. (c) : लाइबनित्ज ने अपनी पुस्तक 'फिलॉस्फर्स कन्फेसन' और 'थियोडसी' में अशुभ की समस्या पर ध्यान केन्द्रित किया है। लाइबनित्ज एक बुद्धिवादी दार्शनिक थे उनका कहना था कि ''हम नहीं जानते कि ईश्वर द्वारा सृजित कुल वस्तुओं के चयन में भूकंप और महामारी जैसी वैश्विक घटनाओं का स्थान है।''

68. As per the axioms of quality of a categorical syllogism;
श्रेणीबद्ध न्याय वाक्य के गुण के अभिगृहीत के अनुसार :
(a) Both the premises can be negative
दोनों आधार वाक्य नकारात्मक हो सकते हैं
(b) If one premise is negative, the conclusion can be either positive or negative/यदि एक आधार वाक्य नकारात्मक है, तो निष्कर्ष सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है
(c) If one premises is negative, the conclusion must be negative/यदि एक आधार वाक्य नकारात्मक है, तो निष्कर्ष नकारात्मक ही होगा
(d) If one premise is positive, the conclusion must be positive/यदि एक आधार वाक्य सकारात्मक है, तो निष्कर्ष सकारात्मक ही होगा

Ans. (c) : श्रेणीबद्ध न्याय वाक्य में यदि एक आधार वाक्य नकारात्मक है तो निष्कर्ष भी नकारात्मक ही होगा।
जैसे- कुछ मानव निर्मित उपग्रह अमरीकी आविष्कार नहीं है। मानव निर्मित सभी उपग्रह महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धियाँ है। अतः महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धियाँ अमरीकी आविष्कार नहीं है।

अवस्था-0A0	O	M	$\bar{P}$	$\neq 0$
आकृति-तृतीय	A	M	$\bar{S}$	$= 0$
	O	$\therefore$ S	$\bar{P}$	$\neq 0$

69. Which of the following is not correctly matched?
निम्नलिखित में से कौन सुमेलित नहीं है?
(a) Critical Philosophy — Kant/कांट
समालोचनात्मक दर्शन शास्त्र
(b) Esse East Percipii — Berkeley/बर्कले
दृश्यते इति वर्तते
(c) Radical Pluralism — David Hume
अति बहुलतावाद — डेविड ह्यूम
(d) Rationalism — Descartes/देकार्ते
तर्क बुद्धिवाद

Ans. (c) : सही सुमेल इस प्रकार है-

समालोचनात्मक दर्शन शास्त्र	-	कांट
दृश्यते इति वर्तते	-	बर्कले
तर्क बुद्धिवाद	-	देकार्ते
अति बहुलतावाद	-	फ्रेंक कनिंघम

70. Who among the following holds the view that earth is a flat disc floating on water?
निम्नलिखित में से किसका विचार है कि पृथ्वी जल पर बहती हुई चपटी डिस्क है?
(a) Anaxagoras/एनैक्सागोरस
(b) Democritus/डेमोक्रिटस
(c) Pythagoras/पाइथागोरस
(d) Thales/थेल्स

Ans. (d) : थेल्स की गणना ग्रीक के महान दार्शनिक में की जाती है। इनके अनुसार विश्व का परमतत्व जल है। सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय दोनों जल में ही है। जल बिन्दु रूप से सबका जनक है। सृष्टि की उत्पत्ति जल में है और जल के ऊपर ही इसकी स्थिति है।

71. Which one of the following represents the relation between the following propositions?
निम्नलिखित में से कौन सा नीचे दिए गए तर्कवाक्यों के बीच सम्बन्ध को दर्शाता है?
All students are young.
सभी विद्यार्थी युवा हैं।
Some students are not young.
कुछ विद्यार्थी युवा नहीं है।
(a) Contradictory/विरोधाभासी
(b) Contrary/विपरीत
(c) Subaltern/उपाश्रयी
(d) Subcontrary/उप विपरीत

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : (A) सभी विद्यार्थी युवा हैं। (O) कुछ विद्यार्थी युवा नहीं है। यह तर्क वाक्य परस्पर विरोधाभासी हैं। जब दो तर्क वाक्य न तो एक साथ सत्य हो और न तो एक साथ असत्य हो, उन्हें विरोधाभासी तर्क वाक्य कहते हैं।
जब दो तर्क वाक्यों के उद्देश्य और विधेय पद समान हो किन्तु परिमाण और गुण दोनों भिन्न हों तो ऐसी स्थिति में उन दोनों तर्क वाक्यों में विरोधाभासी सम्बन्ध होता है। (A) और (O) तथा (E) और (I) तर्कवाक्यों में विरोधाभासी सम्बन्ध होता है।

72. What is the fundamental stuff of the universe according to Heraclitus?
हेराक्लिटस के अनुसार ब्रह्माण्ड का आधारभूत तत्त्व क्या है?
(a) Air/वायु (b) Apeiron/अपरिमित
(c) Fire/अग्नि (d) Water/जल

Ans. (c) : हेराक्लाइट्स ने ब्रह्माण्ड के आधारभूत तत्व के रूप में अग्नि को माना है। इन्होंने कहा कि अग्नि या तेजसतत्व परम तत्व है। इसी से जल और पृथ्वी की उत्पत्ति होती है। यह तत्व ज्वलन्त और गतिशील है। संसार में कुछ भी नित्य नहीं है, सब अनित्य और क्षणिक है। अग्नि या परिवर्तन ही एक मात्र तत्व है।

73. In Vedic tradition fire burns because:
वैदिक परंपरा में आग जलती है क्योंकि:
(a) There is a cosmic order/यह सृष्टि की व्यवस्था है
(b) It is a natural law/यह नैसर्गिक नियम है
(c) It is the will of God/यह ईश्वर की इच्छा है
(d) There is a physical order/यह भौतिक क्रम है

Ans. (a) : वैदिक परंपरा के अनुसार सृष्टि की व्यवस्था के रूप में आग जलती है।
वैदिक परंपरा में अग्नि को एक लोकप्रिय देवता के रूप में स्वीकार किया गया है। अग्नि को सृष्टि और देवताओं के बीच एक कड़ी के रूप में स्वीकार किया गया है।
वैदिक परंपरा में अग्नि को सूर्य के तुल्य माना गया है, वे सूर्य की तरह चमकते हैं और अन्धकार का नाश करते हैं और प्रकाश फैलाते हैं। अग्नि उपासकों के हितैसी हैं वे उन्हें विपदाओं से बचाते हैं। समृद्धि के देव के रूप में अग्नि को माना गया है।

74. Match List I with List II
सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए :

	List-I/सूची-I		List-II/सूची-II
A.	Veda/वेद	I.	Rta is a cosmic order/ऋत सृष्टि का क्रम है
B.	Cārvāka/चार्वाक	II.	Fire burns out of its own nature/आग अपनी प्रकृति के अनुसार जलती है
C.	Vaiśeṣika/वैशेषिक	III.	Sabda is not a separate pramana/शब्द पृथक प्रमाण नहीं है
D.	Mimāṁsā/मीमांसा	IV.	Anupalabdhi is a separate pramana/अनुपलब्धि पृथक प्रमाण है

Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(a) A - I, B - II, C - III, D - IV
(b) A - II, B - I, C - III, D - IV
(c) A - I, B - II, C - IV, D - III
(d) A - II, B - II, C - IV, D - III

Ans. (a) : सही सुमेल इस प्रकार है-

सूची-I		**सूची-II**
वेद	-	ऋत सृष्टि का क्रम है।
चार्वाक	-	आग अपनी प्रकृति के अनुसार जलती है।
वैशेषिक	-	शब्द पृथक प्रमाण नहीं है।
मीमांसा	-	अनुपलब्धि पृथक प्रमाण है।

75. "Our responsibility for the other is not a derivative feature of our subjectivity, rather it founds our subjective being-in-the-world by giving it a meaningful direction and orientation."- is the perspective of which one of the following philosophers?
''दूसरे के लिए हमारा दायित्व हमारी व्यक्तिपरकता से व्युत्पन्न विशेषता नहीं है, बल्कि यह संसार में हमारी व्यक्तिपरकता को अर्थपूर्ण दिशा और उन्मुखता प्रदान कर आधार प्रदान करता है।
(a) Immanuel Levinas/इमैनुअल लेविनास
(b) Morleau-Ponty/मोर्ली पोंटी
(c) Nietzsche/नीत्से
(d) Rorty/रोर्ति

Ans. (a) : दूसरों के लिए हमारा दायित्व हमारी व्यक्ति परकता से उत्पन्न विशेषता नहीं है, बल्कि यह संसार में हमारी व्यक्ति परकता को अर्थपूर्ण दिशा और उन्मुखता प्रदान कर आधार प्रदान करता है। यह विचार इमैनुअल लेविनास का है। यह एक फ्रांसीसी दार्शनिक थे। लेविनास यहूदी दर्शन, अस्तित्ववाद और घटना विज्ञान के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने अपने दर्शन के केन्द्र बिन्दु में नैतिकता और तत्व मीमांसा को रखा है।

76. "In this universe, no straight line is really straight; no circle is perfectly circular. Yet perfect straight line or circle exist in their own worlds."- This view is acceptable to whom?
''इस ब्रह्माण्ड में कोई सीधी रेखा वास्तव में सीधी नहीं है, कोई वृत्त वास्तव में वृत्ताकार नहीं है। फिर भी पूर्ण सीधी रेखा या वृत्त उनके अपने संसार में रहते हैं- ''यह विचार किसे स्वीकार है?
(a) Aristotle/अरस्तु
(b) Plato/प्लेटो
(c) St Aquinas/सेंट एक्विनास
(d) Thales/थेल्स

Ans. (b) : ''इस ब्रह्माण्ड में कोई सीधी रेखा वास्तव में सीधी नहीं है, कोई वृत्त वास्तव में वृत्ताकार नहीं है। फिर भी पूर्ण सीधी रेखा या वृत्त उनके अपने संसार में रहते हैं।'' यह कथन ग्रीक दार्शनिक प्लेटो का है। प्लेटो ने ग्रीक दर्शन को चरम उत्कर्ष पर पहुँचाया। अतः उनको पूर्ण ग्रीक की उपाधि दी गई। प्लेटों का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त उनका विज्ञानवाद या प्रत्ययवाद है। इस संसार की सभी वस्तुएं अपूर्ण हैं और वह प्रत्ययों के जगत में पूर्ण होती हैं। पूर्ण वस्तुएं प्रत्ययों के जगत में निवास करती हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

77. By which sannikarsa do we perceive the absence of a pot on the ground according to Nyaya?
न्याय दर्शन के अनुसार किस सन्निकर्ष द्वारा भूमि पर घट के अभाव का बोध होता है?
(a) Visesanata/विशेषणता
(b) Samavaya/समवाय
(c) Samaveta Samavaya/समवेत समवाय
(d) Saṁyoga/संयोग

Ans. (a) : न्याय दर्शन के अनुसार भूमि पर घट के अभाव का बोध विशेषणता सन्निकर्ष द्वारा होता है। इस प्रकार के सन्निकर्ष में अभाव का प्रत्यक्ष होता है। जैसे हम कहते हैं की 'घटाभाववत भूतलम्' तो यहाँ घटाभाव विषय है जिसमें चक्षु का सन्निकर्ष होता है। यहाँ घटाभाव चक्षु से संयुक्त भूतल का विशेषण है।

78. Consider the following statements with reference to the distribution of the terms of the categorical propositions?
निम्नलिखित कथनों पर निरूपाधिक तर्क वाक्य के पदों के वितरण के सन्दर्भ में विचार कीजिए?
A. Predicate term of the Negative propositions is distributed.
नकारात्मक तर्क वाक्य के विधेय पद वितरित होते हैं
B. Predicate term of the affirmative propositions is undistributed.
सकारात्मक तर्क वाक्य के विधेय पद अवितरित होते हैं।
C. Subject term of the universal propositions is distributed.
सार्वभौम तर्क वाक्य के उद्देश्य पद वितरित होते हैं।
Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A and B only/केवल A और B
(b) A only/केवल A
(c) A, B and C only/केवल A, B और C
(d) B only/केवल B

Ans. (c) : निरूपाधिक तर्कवाक्य चार प्रकार के होते हैं। प्रत्येक तर्कवाक्य के मानक आकार में 'उद्देश्य' एवं 'विधेय' दो पद होते हैं। 'परिमाणक' से वाक्य का प्रारम्भ (सभी, कोई, कुछ) होता है। 'है', 'नहीं है' को संयोजक कहते हैं। तर्कवाक्य का 'गुण' उसके 'सकारात्मक' या 'नकारात्मक' होने को कहते हैं। निरूपाधिक तर्क वाक्यों के संदर्भ में निम्नलिखित बातें सत्य हैं-
(i) निरूपाधिक तर्क वाक्यों में, नकारात्मक तर्क वाक्य के विधेय पद वितरित होते हैं।
(ii) निरूपाधिक सकारात्मक तर्क वाक्य के विधेय पद अवितरित होते हैं।
(iii) सार्वभौम तर्क वाक्य के उद्देश्य पद वितरित होते हैं।

79. According to whom, the Absolute is an identity of opposites?
किसके अनुसार पूर्ण/सत विलोमों का अभिज्ञान है?
(a) F.H. Bradley/एफ.एच ब्रैडले
(b) Hegel/हीगेल
(c) Kant/कांट
(d) Locke/लॉक

Ans. (b) : 'पूर्ण विलोमों का अभिज्ञान हीगेल मानते हैं।' आधुनिक युग के दर्शन में हीगेल का महत्वपूर्ण योगदान है। इनके अनुसार दर्शन का कार्य भूत, वर्तमान और भविष्य एवं व्यापक तथा प्रगतिशील सत्ता का निरूपण करना है। हेगल के अनुसार दर्शनशास्त्र का लक्ष्य परमतत्व के विकास की समुचित व्याख्या करना है। इनके अनुसार एक मात्र तत्व निरपेक्ष या पूर्ण विज्ञान है। सम्पूर्ण विश्व इसी का परिणाम है।

80. What is a 'thing' according to Aristotle?
अरस्तु के अनुसार 'वस्तु' क्या है?
(a) A compound of a Matter and Form
पदार्थ और रूप का यौगिक
(b) Neither Form nor Matter/न रूप, न पदार्थ
(c) Pure Form/शुद्ध रूप
(d) Pure Matter/शुद्ध पदार्थ

Ans. (a) : अरस्तू के अनुसार पदार्थ (Matter) और रूप (Form) का यौगिक ही वस्तु है। अरस्तू कहते हैं कि संसार में दो ही वस्तुएँ हैं- एक तो द्रव्य और दूसरे उनके परिणाम। अरस्तू कहते हैं कि संसार के विविध पदार्थ अपनी जड़ता (Matter) के कारण अनित्य, परिणामी और विनाशशील हैं। इनका सामान्य जो इनका रूप (Form) है, नित्य, अपरिणामी और अविनाशी है। यह भी इनमें अभिव्यक्त होने के कारण इनकी जड़ता से परिच्छिन्न हो जाता है। अरस्तू कहते हैं कि शुद्ध स्वरूप (Pure Form) जो जड़ता (Matter) से नितान्त रहित हो, केवल ईश्वर और आत्मा ही है अतः ये ही वस्तुतः तत्व है।

81. Who among the following ascribed rarefaction and condensation as two different processes of the creation of the universe?
निम्नलिखित में से किसने विरलन और संघनन को ब्रह्माण्ड के सृजन की दी भिन्न प्रक्रियाओं के रूप में बताया?
(a) Anaximander/एनेक्जिमेण्डर
(b) Anaximenes/एनेक्जिमेनीज
(c) Empedocles/एम्पेडाक्लीज
(d) Thales/थेल्स

Ans. (b) : एनेक्जिमेनीज ने विरलन और संघनन को ब्रह्मांड के सृजन की दो भिन्न प्रक्रियाओं के रूप में बताया। इन्होंने वायु को परम तत्व माना और उसे ही असीम और अनन्त माना। इनके अनुसार वायु ही अग्नि का रूप लेती है और तरल होकर जल बन जाती है और जमकर पृथ्वी के रूप में परिणित हो जाती है। समस्त ब्रह्माण्ड वायु के आधार पर ही टिका हुआ है।

82. Read the following sentences with reference to ethics of Vaisesika philosophy:
वैशैषिक दर्शन के सन्दर्भ में नीचे दिए गए कथनों को पढ़िए:
Statement I : Correct knowledge enables people to see that all activity leas to suffering.
कथन-I : सम्यक ज्ञान लोगों को यह समझने योग्य बनाता है कि सभी कर्मों की परिणति दुःख में होती है।
Statement II: One should abstain from all activity and obtain liberation.
कथन-II : किसी व्यक्ति को सभी कर्मों से विमुख होकर मोक्ष प्राप्त करना चाहिए।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

In light of the above statements, choose the most appropriate answer from the options given below :
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनें:

(a) Both Statement I and Statement II are correct/कथन I और II दोनों सही हैं
(b) Both Statement I and Statement II are incorrect/कथन I और II दोनों गलत हैं
(c) Statement I is correct but Statement II is incorrect/कथन I सही है, किन्तु कथन II गलत है
(d) Statement I is incorrect but Statement II is correct/कथन I गलत है, किन्तु कथन II सही है

Ans. (b) : चूंकि कर्म बन्धन का कारण है, अतः कर्म से विरति मोक्ष का साधन है। लेकिन यहां सभी कर्मों से विरति की स्थिति नहीं हो सकती है। अतः कुछ कर्म जो वेदविहित नित्य है का सम्पादन मोक्ष का साधन हैं अर्थात काम्य और प्रतिषिद्ध कर्मों से दूर रहने की बात न्याय-वैशेषिक में की जाती है। न्याय-वैशेषिक मोक्ष को अपवर्ग कहता है। मिथ्या ज्ञान के कारण आत्मा में राग-द्वेष एवं बंधन उत्पन्न होते हैं। आत्मा कर्मों में प्रवृत्त होकर तरह-तरह के दुःखो को भोगती है। काम्य और प्रतिसिद्ध कर्म जो सुख-दुःख का कारण है विरति से मनुष्य आत्मा को शरीर से अलग समझने लगता है। कर्मों से विमुख हो जाने पर मनुष्य आत्मा को शरीर से भिन्न समझने लगता है मनुष्य के इस मिथ्या ज्ञान "मैं शरीर और मन हूँ" का अन्त हो जाता है। यह आत्मज्ञान की स्थिति है। इसमें आत्मा दुःखों से मुक्त हो जाती है। यह मोक्षावस्था है। ध्यातव्य है कि न्याय-वैशेषिक दर्शन में केवल विदेह मुक्ति को ही प्रामाणिकता मिली है।

83. Given below are two statements, one is labelled as Assertion A and the other is labelled as Reason R. Consider them in the context of Philosophy of Iqbal.
नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है। इकबाल के दर्शन के सन्दर्भ में विचार कीजिए।

Assertion A : Intuition is an unanalyzable unity.
अभिकथन (A) : अंतः प्रज्ञा एक अविश्लेषणीय ऐक्य है।

Reason R : In intuition, the knower becomes one with the known and thereby realizes it.
तर्क (R) : अंतः प्रज्ञा में ज्ञाता ज्ञात के साथ एक हो जाता है और इसके द्वारा अनुभव करता है।

In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A is true but R is false
A सही है परन्तु R सही नहीं है
(b) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है
(c) Both A and R are true but R is NOT the correct explanation of A/A और R दोनों सही हैं परन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(d) A is false but R is true
A सही नहीं है परन्तु R सही है

Ans. (b) : इकबाल ने कहा कि "अन्तःप्रज्ञा एक ऐसा एक्य है जो अविश्लेषणीय है। इसके पीछे उनका तर्क है कि "अंतःप्रज्ञा में ज्ञाता और ज्ञात तादात्म्यक हो जाते हैं और ज्ञाता, ज्ञात के द्वारा अनुभव करता है।
अतः कथन और तर्क दोनों सही है तथा तर्क द्वारा कथन की पुष्टि हो रही है।

84. "Students are never foolish" is a proposition of the form of;
"विद्यार्थी मूर्ख कभी नहीं होते हैं" किस प्रकार का तर्क वाक्य है :

(a) A proposition/A तर्क वाक्य
(b) E proposition/E तर्क वाक्य
(c) I proposition/I तर्क वाक्य
(d) O Proposition/O तर्क वाक्य

Ans. (b) : गुण और परिमाण को दृष्टिगत रखते हुए निरूपाधिक तर्कवाक्य चार प्रकार के होते हैं। सर्वव्यापी सकारात्मक(A), सर्वव्यापी नकारात्मक(E), अंशव्यापी सकारात्मक(I), अंशव्यापी नकारात्मक(O). प्रश्नगत तर्क वाक्य 'सर्वव्यापी निषेधात्मक तर्क वाक्य' है। जब किसी तर्क वाक्य का उद्देश्य पद का वर्ग विधेय पद के वर्ग में पूर्णतया समाहित न हो तो उसे सर्वव्यापी निषेधात्मक तर्क वाक्य (E) कहते हैं।

85. Which one of the following is an asamavayikarana of a pot according to the Vasesikas?
वैशैषिकों के अनुसार घट का असमवायिकारण कौन सा है?

(a) Kapala/कपाल
(b) Kapala-danda Saṁyoga/कपाल-दंड संयोग
(c) Danda/दंड
(d) Kapalasaṁyoga/कपालसंयोग

Ans. (d) : वैशेषिकों के अनुसार घट का असमवायिकारण 'कपालसंयोग' है।
असमवायिकारण उस गुण या कर्म को कहते हैं जो उपादान कारण में समवेत रहकर कार्य की उत्पत्ति में सहायक होता है। जैसे कपड़े का निर्माण सूतों के संयोग से होता है। इसी प्रकार घट का निर्माण कपाल के संयोग से होता है।

86. Consider the following and select the code acceptable to the Carvakas:
चार्वाक दर्शन को स्वीकार्य कूट का चयन करें:

A. Karmavada/कर्मवाद
B. Bhutacaitanyavada/भूत चैतन्य वाद
C. Dehatmavada/देहात्मवाद
D. Sukhavada/सुखवाद

Choose the correct answer from the options given below :
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(a) A and B only/केवल A और B
(b) A, B and C only/केवल A, B और C
(c) B and C only/केवल B और C
(d) B, C and D only/केवल B, C और D

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : चार्वाक दर्शन 'कर्मवाद' को स्वीकार नहीं करता है। परन्तु भूत चैतन्यवाद, देहात्मवाद तथा सुखवाद को स्वीकार करता है। प्राण और चेतना का विकास भूत से ही हुआ है। ज्ञात हो चार्वाक दर्शन, चार भूतों से सृष्टि की उत्पत्ति मानते हैं।
चार्वाक आत्मा को शरीर से भिन्न नहीं मानते हैं। वे कहते हैं कि 'चेतन शरीर ही आत्मा है।' आत्मा और शरीर के बीच अभेद मानने के फलस्वरूप चार्वाक के आत्मा संबंधी विचारों को देहात्मवाद कहा जाता है। इसी प्रकार चार्वाक सुखवादी भी है। वह कहते हैं कि मनुष्य को सुखपूर्वक रहने के लिए सभी आवश्यक उपायों को अपनाना चाहिए।

87. Match List I with List II
सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए:

List-I/सूची-I		List-II/सूची-II	
A.	Vedanta/वेदांत	I.	Knowledge is a quality of atma/ज्ञान आत्मा का गुण है
B.	Jaina/जैन	II.	Knowledge is the essence of atma/ज्ञान आत्मा का सार है
C.	Mimamsa/मीमांसा	III.	Knowledge is an act of atma/ज्ञान आत्मा का कृत्य है
D.	Nyaya/न्याय	IV.	Knowledge is atma itself/ज्ञान स्वयं आत्मा है

Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(a) A - I, B - II, C - III, D - IV
(b) A - II, B - I, C - III, D - IV
(c) A - II, B - I, C - IV, D - III
(d) A - IV, B - II, C - III, D - I

Ans. (d) : सही सुमेल इस प्रकार है-

सूची-I		**सूची-II**
वेदांत	-	ज्ञान स्वयं आत्मा है
जैन	-	ज्ञान आत्मा का सार है
मीमांसा	-	ज्ञान आत्मा का कृत्य है
न्याय	-	ज्ञान आत्मा का गुण है

88. "To know good is to do good; no place for pleasure in ethical life"- Who holds this view?
"अच्छाई को जानना अच्छा करना है; नैतिक जीवन में सुख के लिए कोई स्थान नहीं है" - यह किसका विचार है?
(a) Aristotle/अरस्तु (b) Plato/प्लेटो
(c) Sophist/सोफिस्ट (d) Socrates/सुकरात

Ans. (d) : "अच्छाई को जानना अच्छा करना है; नैतिक जीवन में सुख के लिए कोई स्थान नहीं है" यह विचार प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक सुकरात का है।
सुकरात की नैतिकता में सुःख का कोई मूल्य नहीं है। सुःख व्यक्ति के नैतिक बनने के मार्ग में बाधा है। अतः सुकरात कहते हैं कि नैतिकतापूर्ण जीवन में सुःख का कोई स्थन नहीं होना चाहिए। सोफिस्टों का 'मनुष्य सभी वस्तुओं का मापदण्ड है।' प्लेटो ने 'बौद्धिक आनन्द' को 'विशुद्ध आनन्द' कहा है। अरस्तू ने 'मध्यमार्ग' का सिद्धांत दिया है।

89. Which of the following theory of morality advocates the view that basic moral propositions are self-evident and that moral properties are non-natural properties?
निम्नलिखित में नैतिकता का कौन सा सिद्धांत इस विचार का समर्थन करता है कि मूल नैतिक आधारवाक्य स्वतः सिद्ध हैं और नैतिक गुण गैर-स्वाभाविक गुण हैं?
(a) Emotivism/संवेगवाद
(b) Intuitionism/अन्तः प्रज्ञावाद
(c) Prescriptivism/आदेशवादिता
(d) Supernaturalism/अतिप्रकृतिवाद

Ans. (b) : अन्तः प्रज्ञावाद का सिद्धांत इस विचार का समर्थन करता है कि मूल नैतिक आधार वाक्य स्वतः सिद्ध है और नैतिक गुण गैर-स्वाभाविक गुण है।
अन्तः प्रज्ञावाद के अनुसार "मनुष्य की अन्तःप्रज्ञा में ही शुभत्व का प्रत्यय निहित है अर्थात् मनुष्य मूलतः नैतिक प्राणी है। मनुष्य सदैव शुभ कार्य करना चाहता है। वह अशुभ का चयन या तो अज्ञानता में करता है या विकल्प हीनता की स्थिति में।

90. In vedic tradition, Rtvika of sāmveda is called :
वैदिक परंपरा में सामवेद का ऋत्विक क्या कहा जाता है।
(a) Brahma/ब्रह्मा (b) Hotā/होता
(c) Adhvurya/अध्वुर्य (d) Udgata/उद्गाता

Ans. (d) : वैदिक पंरपरा में ऋत्विकों के माध्यम से मंत्रोच्चार तथा यज्ञीय विधियों का निर्वहन किया जाता था।

वेद	**-**	**ऋत्विक**
ऋग्वेद	-	होता
यजुर्वेद	-	अध्वर्यु
सामवेद	-	उदगाता
अथर्ववेद	-	ब्रह्मा

91. According to Vaisesika philosophy which of the following are included among qualities of the soul?
वैशेषिक दर्शन के अनुसार निम्नलिखित में से कौन से आत्मा के गुणों में शामिल हैं?
A. Effort/प्रयास
B. Subliminal impressions/उदात्त प्रभाव
C. Desire/इच्छा
D. Indifference/उदासीनता
Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) A, B and D only/केवल A, B और D
(b) A, B and C only/केवल A, B और C
(c) A, C and D only/केवल A, C और D
(d) C and D only/केवल C और D

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : वैशेषिक दर्शन में आत्मा उस सत्ता को कहा गया है जो चैतन्य का आधार है। ज्ञान को आत्मा का आकस्मिक गुण माना गया है। वैशेषिक दो प्रकार की आत्मा मानते हैं- (1) जीवात्मा, (2) परमात्मा।
वैशेषिकों के अनुसार ज्ञान, सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रयास, भावना धर्म, अधर्म इत्यादि आत्मा के विशेष गुण हैं। उसके ये गुण भी आगन्तुक हैं। जीवात्माएँ अनेक है। जितने शरीर हैं उतनी ही जीवात्मा होती है। वैशेषिक आत्मा को अमर मानते हैं। इनके अनुसार यह अनादि और अनंत है।

92. Given below are two statements, one is labelled as Assertion A and the other is labelled as Reason R.
नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है।

Assertion A : All that exist are ideas, with reference to Berkeley.
अभिकथन (A) : बर्कले के सन्दर्भ में हैं, विचारों (प्रत्ययों) का ही अस्तित्व है।

Reason R : There is no knowledge, which is not in the form of ideas, in the view of Berkeley.
तर्क (R) : बर्कले की दृष्टि में ऐसा कोई ज्ञान नहीं है जो विचारों (प्रत्ययों) के रूप में न हो।

In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below:
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A is false but R is true
(A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है।
(b) A is true but R is false
(A) सही है परन्तु (R) सही नहीं है।
(c) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(d) Both A and R are true but R is NOT the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

Ans. (c) : बर्कले केवल विचारों का ही अस्तित्व मानते हैं। इसके पीछे उनका तर्क है कि सभी ज्ञान विचारों के रूप में अस्तित्ववान है। आत्मा और उसके प्रत्ययों के अतिरिक्त किसी की सत्ता नहीं है। प्रत्यय आत्मनिष्ठ हैं न कि वस्तुनिष्ठ। अतः स्पष्ट है कि कथन (A) सत्य है तथा तर्क (R) द्वारा उसकी स्पष्ट व्याख्या हो रही है।

93. Which of the following are true according to St Augustine?
सेंट अगस्टाइन के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

A. Reason is the anti-thesis of revelation
तर्क प्रकटन का प्रतिपक्ष है।
B. God can be known by reason
ईश्वर को तर्क से जाना जा सकता है।
C. Reason grows into revelation
तर्क की परिणति प्रकटन में होती है।
D. God can be known by revelation
ईश्वर को प्रकटन द्वारा जाना जा सकता है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(a) A and B are true/A और B सही हैं
(b) B and C are true/B और C सही हैं
(c) C and D are true/C और D सही हैं
(d) D and A are true/D और A सही हैं

Ans. (c) : सेंट अगस्टाइन अफ्रीकी दार्शनिक थे। इनका मानना था कि तर्क की परिणति प्रकटन में होती है और ईश्वर को प्रकटन के द्वारा जाना जा सकता है।
अगस्टाइन ने चिंतन का केन्द्र जगत के स्थान पर आत्मा और ईश्वर को बनाया। इन्होंने आत्मा के अमरत्व, स्वतः सिद्धत्व, ज्ञानस्वरूपत्व और संकल्प स्वातंत्र्य का समर्थन किया। अगस्टाइन आत्मा की सत्ता स्वतः सिद्ध मानते हैं। आत्मा में बुद्धि, स्मृति तथा संकल्प नाम की शक्तियाँ विद्यमान हैं।

94. Which one among the following is Not a means of vyāptigraha?
निम्नलिखित में से कौन सा व्याप्तिग्रह का साधन नहीं है?
(a) Anvaya/अन्वय
(b) Samanyalaksana Pratyakasa
सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष
(c) Upamāna/उपमान
(d) Vyatireka/व्यतिरेक

Ans. (c) : न्याय दर्शन के अनुसार व्याप्तिग्रह के कुल छः साधनों में 'उपमान' नहीं है।
व्याप्तिग्रह के छः साधन इस प्रकार है-
(1) अन्वय, (2) व्यतिरेक, (3) व्यभिचाराग्रह, (4) उपाधिनिरास, (5) तर्क, (6) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष
'उपमान' न्याय दर्शन के चार प्रमाणों में से एक है। यह चार प्रमाण इस प्रकार हैं- (1) प्रत्यक्ष, (2) अनुमान, (3) शब्द, (4) उपमान। उपमान ज्ञान का एक साधन है जिससे वस्तु का स्वभावबोध (Denotation) सूचित होता है।

95. Which of the following represents the correct ordering of ascent from mind to supermind as per Aurobindo?
निम्नलिखित में से कौन सा अरविंदो के अनुसार मन से परा मन की ओर सही क्रम को दर्शाता है?
(a) Higher mind, illumined mind, intuition and overmind/उच्चतर मन, प्रबुद्ध मन, अंतः प्रज्ञा और अति मन
(b) Higher mind, intuition, overmind and illumined mind/उच्चतर मन, अंतः प्रज्ञा, अति मन और प्रबुद्ध मन
(c) Higher mind, overmind, illumined mind and intuition/उच्चतर मन, अति मन, प्रबुद्ध मन और अंतः
(d) Illumined mind, intuition, overmind and higher mind/प्रबुद्ध मन, अंतः प्रज्ञा, अति मन और उच्चतर मन

Ans. (a) : श्री अरविन्दो के अनुसार मन से परामन का सही क्रम इस प्रकार है-
उच्चतर मन → प्रबुद्ध मन → अंतः प्रज्ञा → अति मन।
अरविन्द विश्व के क्रमबद्ध विकास में विश्वास करते हैं। यह विकास सोद्देश्य है। अरविन्द के दर्शन में विश्व का विकास आध्यात्मिक स्वरूप का होकर उसका परम लक्ष्य अनन्त पूर्णत्व की प्राप्ति है। अरविन्द कहते हैं कि विकास का प्रारम्भ जड़ पुद्गल (Matter) से होकर उसमें चैतन्य (प्राण) आया तथा चैतन्य से मनस आविर्भूत हुआ। अब मनस के बाद अति मनस आने वाला है यही सच्चिदानंद स्वरूप है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

96. Svalaksana according to the Buddhists is:
बौद्धों के अनुसार स्वलक्षण क्या है:

A. Eternal/शाश्वत
B. Real/यथार्थ
C. Momentary/क्षणिक
D. Unreal/अयथार्थ

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A and D only/केवल A और D
(b) A and B only/केवल A और B
(c) B and C only/केवल B और C
(d) C and D only/केवल C और D

Ans. (c) : 'विज्ञप्तिमात्रता' को आचार्य दिग्नांग ने 'स्वलक्षण' नाम दिया। उनके अनुसार स्वलक्षण ही परमार्थ सत् (यथार्थ) है। यह प्रपंचातीत, सर्वलक्षण शून्य, अभिलाप्य एवं अनिर्वचनीय है। उनके अनुसार 'विज्ञप्तिमात्रता' अथवा 'स्वलक्षण' क्षणिक एवं सतत प्रवाहशील विज्ञान सन्तान रूप है। आचार्य दिग्नांग 'स्वलक्षण' के आधार पर अपोहवाद की स्थापना करते हैं और सामान्यों की सत्ता का खण्डन करते हैं।

97. Isvarapranidhana, according to Yoga philosophy is a kind of :
योग दर्शन के अनुसार ईश्वर प्रणिधान किसका प्रकार है :

(a) Dhyāna/ध्यान
(b) Niyama/नियम
(c) Āsana/आसन
(d) Yama/यम

Ans. (b) : योग दर्शन के अनुसार 'ईश्वर प्राणिधान' योग के अष्टांग मार्गो में से एक 'नियम' का प्रकार है। योग के अष्टांग मार्ग इस प्रकार है-
(1) यम, (2) नियम, (3) आसन, (4) प्राणायम, (5) प्रत्याहार, (6) धारणा, (7) ध्यान, (8) समाधि।
'नियम' के पांच प्रकारों में से एक ईश्वर प्राणिधान का अर्थ है ईश्वर के प्रति श्रद्धाभाव रखना। योग दर्शन में ईश्वर के ध्यान को योग का सर्वश्रेष्ठ विषय माना गया है। नियम के अन्तर्गत क्रमशः शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्राणिधान आते हैं।

98. Consider the following statements with reference to Heidegger.
हाइडेगर के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

A. Innermost nature of human being is caring/मनुष्य की आंतरिक प्रकृति दूसरों का ध्यान रखने की है।
B. Human beings are essentially temporal beings/मनुष्य अनिवार्यतः कालिक होते हैं।
C. The temporality of human thinking is 'ecstatic.'/मानव सोच की कालिकता 'भावातिरेकी' होती है।

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A and C only/केवल A और C
(b) A only/केवल A
(c) A, B and C only/केवल A, B और C
(d) C only/केवल C

Ans. (c) : हाइडेगर ने अपने विश्लेषणात्मक दर्शन में 'अपनी दुनिया में एक व्यक्ति के रूप में और उनके सामाजिक संदर्भ में मनुष्य के अस्तित्व पर ध्यान केन्द्रित किया। इस दृष्टिकोण में संसार और प्रणी दोनों को अविभाज्य रूप में देखा जाता है।
हाइडेगर के संदर्भ में प्रश्नगत तीनों कथन-
(1) मनुष्य की आंतरिक प्रकृति दूसरों का ध्यान रखने की है।
(2) मनुष्य अनिवार्यतः कालिक होते हैं।
(3) मानव सोच की कालिकता 'भावातिरेकी' होती है। सत्य है।

99. Which of the following forms of satyagraha are advocated by Gandhi?
गाँधी द्वारा सत्याग्रह के किन रूपों का समर्थन किया गया है?

(a) Disobedience, direct action and non-cooperation/अवज्ञा, प्रत्यक्ष कार्रवाई और असहयोग
(b) Disobedience, direct cooperation and direct action/अवज्ञा, प्रत्यक्ष सहयोग और असहयोग
(c) Disobedience, indirect action and fasting/अवज्ञा, अप्रत्यक्ष कार्रवाई और उपवास
(d) Disobedience, indirect action and non-cooperation/अवज्ञा, परोक्ष कार्रवाई और असहयोग

Ans. (a) : गाँधी जी सत्याग्रह के संदर्भ में अवज्ञा, प्रत्यक्ष कार्यवाई और असहयोग का समर्थन करते थे। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य का आग्रह। इसका अहिंसा या प्रेम से घनिष्ठ सम्बन्ध है। सत्याग्रह में किसी को पीड़ा अथवा कष्ट नहीं पहुँचाते तथा सत्य के लिए ही सब कुछ किया जाता है। सत्याग्रह में स्वयं सब कुछ सहा जाता है इसमें शत्रुता का भाव नहीं रहता है।
सत्याग्रह सदैव साधना का फल है। सत्याग्रह की पद्धति के रूप में उपवास या अनशन को उसका सहायक माना जाता है। इससे चित्त की शांति होती है।

100. When Advaita Vedanta says that the world is mithya, what is the implication?
जब अद्वैत वेदान्त कहता है कि जगत मिथ्या है, तब इसका क्या निहितार्थ है?

(a) World is both existent and non-existent
जगत सत्य और मिथ्या दोनों है
(b) World is absolutely existent/जगत पूर्णतः सत्य है
(c) World is absolutely non-existent
जगत पूर्णतः मिथ्या है
(d) World is neither existent nor non-existent, but different from both/जगत न सत्य है और न मिथ्या है, बल्कि दोनों से भिन्न है

Ans. (d) : उपर्युक्त प्रश्न की अंग्रेजी NTA ने सही दिया है लेकिन हिन्दी अर्थ गलत है। जहां 'सत्य' की जगह 'सत्' और 'मिथ्या' की जगह 'असत्' होना चाहिए। इस हिसाब से शंकर के दर्शन में न जगत न तो सत है और न असत है। बल्कि सदसत विलक्षण है। जगत की व्यावहारिक सत्ता तो है परन्तु पारमार्थिक रूप से असत है। अर्थात् शंकराचार्य के अनुसार, 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः'' (ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है, जगत मिथ्या है तथा जीव और ब्रह्म अभिन्न है)। यद्यपि जगत मिथ्या है फिर भी जगत का कुछ न कुछ आधार है जिस प्रकार रस्सी में दिखाई देने वाले सांप का आधार रस्सी है उसी प्रकार जगत का आधार ब्रह्म है। शंकर कहते हैं कि संपूर्ण जगत ब्रह्म का विवर्त मात्र है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2020/जून-2021
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल (परीक्षा तिथि : 28.11.2021 S-II)

1. In Vedic tradition by performing yajna one can be free from :
वैदिक परंपरा में यज्ञ अनुष्ठान के द्वारा कोई भी किस से मुक्त हो सकता है?
(a) Trsna only/केवल तृष्णा से
(b) Devarna only/केवल देवऋण से
(c) Pitrrna only/केवल पितृऋण से
(d) Both Trsna and Devarna/तृष्णा और देवऋण दोनों से

Ans. (b) : वैदिक परम्परा के अनुसार मनुष्य यज्ञ अनुष्ठान के द्वारा केवल देवऋण से मुक्त हो सकता है। वैदिक वाङ्मय में ऋणत्रय की चर्चा मिलती है। मनुष्य जन्म से ही तीन प्रकार के ऋण यथा-देव, पितृ और ऋषि का ऋणी हो जाता है। गृहस्थ का यह कर्त्तव्य है कि वह इस ऋणत्रय से मुक्त हो। मनुष्य को ईश्वर और देवों के प्रति ऋणी होना चाहिए तथा यज्ञों और देवस्तुतियों द्वारा देवऋण से मुक्त होना चाहिए। पितृऋण से तात्पर्य माता-पिता और पूर्वजों के प्रति ऋण से है। श्राद्ध द्वारा पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर तथा सन्तानोत्पत्ति द्वारा शृष्टि प्रक्रिया में सहयोग कर पितृऋण से मुक्त हुआ जा सकता है।

2. Which system holds that which has origination (utpatti), stability (sthiti) and destruction (vināśa) is satdravya?
उत्पत्ति स्थिति और विनाश किस प्रथा में सतद्रव्य के रूप में निहित है
(a) Vaisesika/वैशेषिक (b) Vedanta/वेदान्त
(c) Sāṁkhya /सांख्य (d) Jaina/जैन

Ans. (d) : जैन दर्शन के अनुसार, जो सत है, वह द्रव्य है। सत् वह है जिसमें उत्पत्ति, विनाश और ध्रौव्य (स्थिति) तीनों हों। जगत् की सारी वस्तुएं इन रुपों में हैं। वैशेषिक दर्शन में, द्रव्य, गुण और कर्म का अधिष्ठान है और अपने कार्यों का उपादान कारण माना जाता है। सांख्य दर्शन में गुण का अर्थ तत्त्व अथवा द्रव्य किया गया है।

3. Consider the following and select the code that presents the Cārvāka position correctly.
निम्नलिखित पर विचार करें और उस कूट का चयन करें जो चार्वाक दर्शन की स्थिति को सही तरीके से प्रस्तुत करता है
(a) Sukhavāda only/केवल सुखवाद
(b) Dehātmavāda only/केवल देहात्मवाद
(c) Both Sukhavāda and Dehātmavāda
सुखवाद और देहात्मवाद दोनों
(d) Neither Sukhavāda nor Dehātmavāda
न तो सुखवाद न तो देहात्मवाद

Ans. (c) : चार्वाक दर्शन एक भौतिकवादी दर्शन है। यह एक प्रकार से सुखवादी दर्शन भी है क्योंकि इसका ध्येय वाक्य है– "यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्।" चार्वाक दर्शन में चैतन्य की सत्ता को स्वीकार किया गया है। किन्तु चेतना को शरीर का गुण माना गया है। चार्वाकी चेतन शरीर को ही आत्मा मानते हैं। आत्मा एवं देह (शरीर) अलग नहीं है। शरीर का अन्त आत्मा का अन्त है। यह मत देहात्मवाद कहलाता है।

4. Anumana cannot be a pramana according to the Carvakas because :
चार्वाक दर्शन के अनुसार अनुमान एक प्रमाण नहीं हो सकता क्योंकि :
(a) Anumana is always incorrect
अनुमान सदैव असत्य होता है।
(b) Anumana is sometimes incorrect
अनुमान कभी-कभी असत्य होता है
(c) Vyapti relation of a Anumāna cannot be established/अनुमान के व्याप्ति समबन्ध को स्थापित नहीं किया जा सकता है
(d) Anumana is always dependent on pratyaksa
अनुमान सदैव प्रत्यक्ष पर अवलम्बित होता है

Ans. (c) : चार्वाक दर्शन में प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण के रुप में माना गया है। चार्वाकों के अनुसार अनुमान को प्रमाण नहीं माना जा सकता है। चूंकि अनुमान व्याप्ति पर आधारित है। परन्तु इसकी स्थापना सम्भव नहीं है।

5. In Vedic tradition Brahma can be the rtvika of:
वैदिक परम्परा में ब्रह्म इनमें किसका ऋत्विक हो सकता है?
(a) Rk veda only/केवल ऋग्वेद
(b) Samveda only/केवल सामवेद
(c) Yajurveda only/केवल यजुर्वेद
(d) Rk veda, Sāmveda and Yajurveda
ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद

Ans. (d) : वैदिक परम्परा में ब्रह्म ऋग्वेद, सामवेद, और यजुर्वेद का ऋत्विक हो सकता है। ध्यातव्य हो कि वेदों का विभाजन वैदिक यज्ञों में कार्य करने वाले ऋत्विजों/ऋत्विकों के आधार पर हुआ था। यज्ञ को सम्पन्न कराने के लिए चार प्रकार के ऋत्विक होते थे– होता, अध्वर्यु, उद्गाता तथा ब्रह्मा। इनमें ब्रह्मा नामक ऋत्विक यज्ञ का निरीक्षण करता है। यद्यपि वह सभी वेदों का ज्ञाता होता है परन्तु उसका अपना विशिष्ट वेद अथर्ववेद है। ऋत्विक या ऋत्विज से तात्पर्य यज्ञ कराने वालों से है।

6. Which school holds that there are external objects but we cannot perceive them?
किस दार्शनिक मत के अनुसार बह्यीय वस्तुएं होती तो हैं किन्तु हम उनका अनुभव नहीं कर सकते हैं?
(a) Sautrantika/सौत्रान्तिक
(b) Vaibhasika/वैभाषिक
(c) Mādhyamika/माध्यमिक
(d) Yogacara/योगाचार

Ans. (a) : सौत्रान्तिकों का बाह्य वस्तुओं का ज्ञान सम्बन्धी मत बाह्य-अनुमेयवाद कहलाता है। सौत्रान्तिक सम्प्रदाय यह मानता है कि चित्त तथा बाह्य वस्तुएं हैं। किन्तु इन वस्तुओं का ज्ञान प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा न होकर अनुमान के द्वारा होता है। अतः यहां सौत्रान्तिक सही विकल्प होगा।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

7. The asamavayi karana of a trasarenu according to the Vaisesikas is :
वैशेषिक के अनुसार एक ऋसरेणु (trasarenu) का असमवायी कारण है

(a) Paramanu/परमाणु
(b) Dvyanuka/द्वय-अणु
(c) Dvyanuka saṁyoga/द्वय-अणु संयोग
(d) Paramanu saṁyoga/परमाणु संयोग

Ans. (c) : असमवायिकारण वह है जो समवायिकारण से सम्बन्ध रखता है। एक त्रसरेणु के निर्माण में द्वय अणु संयोग असमवायिकारण है। संयोग में जो द्रव्य की असमवायि कारणता रहती है वह हमेशा साक्षात् सम्बन्ध-समवाय से ही है।

8. By what sannikarsa, according to Nyaya, do we perceive the relation between a pot and its colour?
न्याय दर्शन के अनुसार किस सन्निकर्ष के कारण बर्तन और इसके रंग के बीच सम्बन्ध का हम अनुभव करते हैं?

(a) Samavaya/समवाय
(b) Saṁyukta samavaya/संयुक्त समवाय
(c) Visesanata/विशेषणता
(d) Saṁyoga/संयोग

Ans. (c) : न्याय-वैशेषिक निकाय में छः प्रकार के सन्निकर्ष माने गये हैं, यथा– (1) संयोग, (2) समवाय, (3) संयुक्त समवाय, (4) संयुक्त-समवेत-समवाय, (5) समवेत समवाय, (6) विशेष्य-विशेषण-भाव। वस्तुतः विशेष्य-विशेषण-भाव सन्निकर्ष दो प्रकार से होता है- विशेषण भाव तथा विशेष्य भाव। प्रस्तुत प्रश्न में विशेषणता सन्निकर्ष सत्य होगा जिसे विशेषण भाव सन्निकर्ष भी कहते हैं।

9. Which one among the following is not a means of śaktigraha according to Nyā+ya?
न्याय दर्शन के अनुसार निम्नलिखित में कौन-सा एक शक्तिग्रह का साधन नहीं है

(a) Apatavakya/आप्तवाक्य (b) Vyakarana/व्याकरण
(c) Tarka/तर्क (d) Upamāna/उपमान

Ans. (a) : संज्ञा-संज्ञी-सम्बन्ध को ही शक्ति (संकेत) कहते हैं। प्रसिद्ध वस्तु के साधर्म्य के आधार पर नहीं देखी गयी वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना उपमिति है। संज्ञा-संज्ञी-सम्बन्ध उपमिति से सम्बन्धित है और इस सम्बन्ध के विषय को 'शक्तिग्रह' (संकेतज्ञान) कहते हैं। 'शक्तिग्रह' के लिए व्याकरण, तर्क और उपमान साधन रुप है।

10. By which sense-organ do we perceive the absence of bitterness in the water according to Nyaya?
न्याय दर्शन के अनुसार पानी में कड़वाहट के अभाव का हम किस ज्ञानेन्द्रिय द्वारा अनुभव करते हैं?

(a) Visual senses-organ/दृश्य-इन्द्रियों द्वारा
(b) Tectual senses- organ/स्पर्श-इन्द्रियों द्वारा
(c) Gustary senses-organ/स्वाद-इन्द्रियों द्वारा
(d) Auditory senses-organ/श्रवण-इन्द्रियों द्वारा

Ans. (c) : न्याय दर्शन के अनुसार, प्रत्यक्ष प्रमा का मुख्य साधन इन्द्रियाँ हैं। घ्राण (नाक), रसना (जीभ), चक्षु, त्वक्, और श्रोत पंच बाह्येन्द्रियां हैं जो बाह्य पदार्थो के ज्ञान का साधन है। स्वाद लेने का कार्य जिह्वा (रसना) इन्द्रिय द्वारा होता है। अतः पानी में कड़वाहट के आभाव का ज्ञान स्वादेन्द्रिय (रसनेन्द्रिय) द्वारा होता है।

11. Sabda gunah caksusatvat'
Which type of hetvabhasa is committed by the above anumāna?
शब्द गुणाः चाक्षुसात्वत
हेत्वाभास का कौन सा प्रकार उपरोक्त अनुमान द्वारा प्रतिबद्ध है?

(a) Sadharana savyabhicara/साधारण सव्यभिचार
(b) Sarupasiddha/स्वरूपासिद्ध
(c) Virudha/विरुद्ध
(d) Asrayasiddha/आश्रयासिद्ध

Ans. (b) : हेत्वाभास दुष्ट हेतु को कहते हैं। सही हेतु की पहचान के लिए हेत्वाभास का ज्ञान होना चाहिए। ध्यातव्य हो कि हेत्वाभास के पांच प्रकार यथा– (1) सव्यभिचार (2) विरूद्ध (3) सत्प्रतिपक्ष (4) असिद्ध (5) बाधित विषय। प्रस्तुत प्रश्न में स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास है। स्वरूपासिद्ध वह हेत्वाभास है जिसका स्वरुप प्रमाण सिद्ध न हो। यहां शब्द गुण चक्षु का स्वरुप नहीं है बल्कि श्रोत का है।

12. Who among the following holds that the existence of God cannot be proved for the lack of pramana (isvarasiddhe Pramanabhavat)?
निम्नलिखित में से किसने यह विचार दिया है कि प्रमाण (ईश्वरसिद्धि प्रमाणाभावात) के अभाव में ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध नहीं किया जा सकता है?

(a) Gautama/गौतम (b) Sankara/शंकर
(c) Kumarila/कुमारिल (d) Kapila/कपिल

Ans. (d) : सांख्य दर्शन में दो मत है – सेश्वर और निरीश्वर। विज्ञानभिक्षु ने, जो सांख्यवादी हैं अपने सूत्र "ईश्वरासिद्धेः" में "प्रमाणाभावात्" इस पद का उल्लेख कर ईश्वर को स्वीकार किया है। यहां कपिल मुनि, जो सांख्य के प्रणेता है, का भी मानना है कि प्रमाण के आभाव में ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध नहीं किया जा सकता।

13. The first evolute of Prakrti in Sāṁkhya theory of evolution is :
सांख्य के क्रम-विकास वाद में प्रकृति का प्रथम विकासज है :

(a) Ahaṁkara/अहंकार (b) Manas/मनस
(c) Buddhi/बुद्धि (d) Jnanendriya/ज्ञानेन्द्रियां

Ans. (c) : सांख्य दर्शन के अनुसार पुरुष और प्रकृति के संयोग से सृष्टि का विकास होता है। यह सृष्टि के सम्बन्ध में विकासवाद का प्रतिपादन करता है। प्रकृति के क्रम-विकासवाद से सर्वप्रथम महत् (बुद्धि) की उत्पत्ति होती है। क्रमशः बुद्धि से अहंकार की, अहंकार से पंच ज्ञानेन्द्रिय, पंच कर्मेन्द्रिय तथा मन की उत्पत्ति होती है। तामस् अहंकार से पंचतन्मात्राओं और उसके बाद पंचमहाभूतों की उत्पत्ति होती है। सांख्य का विकासवाद अचेतन प्रयोजनवाद का उदाहरण है।

14. "When silver is perceived in a shell, the silver is actually remembered although it is not present in perception as remembered silver." Who holds this view?
''जब रजत का सीप में अनुभव किया जाता है, वास्तव में रजत स्मरण में ही आता है यद्यपि यह स्मरण में लाये गये रजत के रूप में प्रत्यक्ष ज्ञान में विद्यमान नहीं होता है'' यह विचार किसने दिया है?

(a) Nagarjuna/नागार्जुन (b) Sankara/शंकर
(c) Prabhakara/प्रभाकर (d) Kumarila/कुमारिल

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : प्रस्तुत कथन भ्रम के सिद्धान्त से सम्बन्धित है। जो प्रभाकर के 'अख्यातिवाद' से सम्बन्धित है। अख्यतिवाद के अनुसार, प्रत्यक्ष और स्मृति के भेदज्ञान के आभाव के कारण भ्रम उत्पन्न होता है। अतः स्मरण न होने के कारण भ्रमवश हम शुक्ति (सीप) को रजत समझ बैठते हैं।

15. Which of the following systems approve jivanmukti? Select the code.
निम्नलिखित में से कौन सा मत जीवनमुक्ति की अवधारणा को मान्यता देता है? सही कूट का चयन कीजिए।

(a) Sāṁkhya and Dvaita only/केवल सांख्य और द्वारा
(b) Advaita and Cārvāka only
केवल अद्वैत और चार्वाक द्वारा
(c) Dvaita and Advaita only
केवल द्वैत और अद्वैत द्वारा
(d) Advaita and Sāṁkhya only
केवल अद्वैत और सांख्य द्वारा

Ans. (d) : अद्वैत वेदान्त और सांख्य मत जीवन के रहते हुए मुक्ति की सम्भावना को मानते हैं। अर्थात् ये दर्शन जीवन मुक्ति को मानते हैं। चार्वाक दर्शन मोक्ष मृत्यु को ही मानते हैं (मरणं एव अपवर्गः)।

16. Given below are two statements, one is labelled as Assertion A and the other is labelled as Reason R consider them and select the correct code in the context of Cārvāka Philosophy.
नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है।
चार्वाक दर्शन के सन्दर्भ में इस पर विचार करें और सही कूट का चयन करें:

Assertion (A) : Water flows downward.
अभिकथन (A) : पानी नीचे की ओर बहता है।

Reason (R): The earth is round.
तर्क (R) : पृथ्वी गोल है।

In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें

(a) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) Both A and R are true R is NOT the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही है परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A is true but R is false/(A) सही है परन्तु (R) सही नहीं है।
(d) A is false but R is true/(A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है।

Ans. (b) : चार्वाक दर्शन स्वभाववाद को मानता है। अतः जल का ऊपर से नीचे की ओर बहना उसका स्वभाव है। पृथ्वी गोल है यह भी एक तथ्य है। यहां दोनों कथन सत्य हैं परन्तु (R) (A) की सही व्याख्या नहीं है।

17. Given below are two statements, one is labelled as Assertion A and the other is labelled as Reason R Consider them and select the correct code

Assertion A : Even the state of nirvana cannot be completely free from duḥkha.
Reason R : Sarvaṁ duḥkhaṁ duḥkhaṁ
In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
नीचे दो कथन दिए गए है : एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है।
इस पर विचार करें और सही कूट का चयन करें।
अभिकथन (A) : यहाँ तक कि निर्वाण की अवस्था भी दुख से पूर्णतया मुक्त नहीं हो सकती है।
तर्क (R) : सर्वम दुःखम दुःखम।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें।

(a) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) Both A and R are true but R is NOT the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A is true but R is false
(A) सही है परन्तु (R) सही नहीं।
(d) A is false but R is true
(A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है।

Ans. (d) : बौद्ध दर्शन में निर्वाण की अवस्था को दुःखों से पूर्ण निवृत्ति की अवस्था माना गया है। अतः अभिकथन (A) सही नहीं है। बौद्ध दर्शन के चार आर्य सत्यों में से एक 'सर्वम् दुःखम् दुःखम्' है। अतः तर्क (R) सही है।

18. Select the correct sequence of the following :
निम्नलिखित के सही क्रम का चयन करें :

(A) Avagraha/अवग्रह (B) Iha/इहा
(C) Avaya/अवाय (D) Dharana/धारणा

Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिए गए विकल्पों में सही क्रम का चयन करें।

(a) A, C, B, D (b) A, B, C, D
(c) B, A, D, C (d) D, C, A, B

Ans. (b) : जैन दर्शन में मति ज्ञान एवं श्रुत ज्ञान दो तरह के लौकिक ज्ञान हैं। मति ज्ञान इन्द्रिय और मन से उत्पन्न होने वाला ज्ञान है। मति ज्ञान के चार प्रमुख भेद क्रमशः अवग्रह, ईहा, अवाय एवं धारणा है। इन्द्रिय और अर्थ के सम्बन्ध से जो ज्ञान होता है वह क्रमशः है।

19. Select the correct sequence of the following:
निम्नलिखित के सही क्रम का चयन करें:

(A) Samyak vyayam/सम्यक व्यायाम
(B) Samyak ajiva/सम्यक आजीव
(C) Samyak samadhi/सम्यक समाधि
(D) Samyak smrti/सम्यक स्मृति

Chose the correct answer from the options given below/ नीचे दिए गए विकल्पों में सही उत्तर चुनें :

(a) A, B, C, D (b) A, C, B, D
(c) B, A, D, C (d) D, C, A, B

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : बौद्ध दर्शन में चतुर्थ आर्य सत्य में निर्वाण प्राप्ति के उपाय बताये गये हैं, जिन्हें अष्टांगिक मार्ग के रुप में जाना जाता है। ये मार्ग हैं, क्रमशः- (1) सम्यक् दृष्टि (2) सम्यक् संकल्प (3) सम्यक् वाक् (4) सम्यक् कर्मान्त (5) सम्यक् आजीव (6) सम्यक् व्यायाम (7) सम्यक् स्मृति (8) सम्यक् समाधि। जो प्राणी इन मार्गों का पालन करता है वह दुःख से निवृत्ति प्राप्त करता है।

20. Consider the following schools and select the code that represents the school(s) which takes (s) the help of adrsta to prove the existence of God./निम्नलिखित शाखाओं पर विचार करें और उस कूट का चयन करें जो ईश्वर के अस्तित्व को अदृष्ट की सहायता से सिद्ध करने वाली शाखा का प्रतिनिधित्व करती है।

(A) Nyaya/न्याय
(B) Vaisesika/वैशेषिक
(C) Mimaṁsa/मीमांसा
(D) Samkhya/साँख्य

Choose the correct answer from the options given below:/नीचे दिए गए विकल्पों से सही को चुनिए :

(a) A only/केवल A
(b) A and B only/केवल A और B
(c) B only/केवल B
(d) A, B and C only/केवल A, B और C

Ans. (b) : न्याय-वैशेषिक दर्शन में ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने के लिए जो प्रमाण दिये गये हैं, उनमें एक प्रमाण अदृष्ट के आधार पर है। ज्ञात हो की नैयायिक ईश्वर की सत्ता की सिद्धि के लिए आगमन प्रमाण और अनुमान दोनों को आधार बनाते हैं। न्याय दर्शन में अनुमान के आधार पर जो प्रमाण दिये गये हैं वो हैं– (1) कार्य (2) अदृष्ट (3) आयोजन (4) धृति (5) विनाश (6) पद (7) प्रत्यय (8) श्रुति (9) वाक्य (10) संख्या-विशेष। ये सब प्रमाण उदयनाचार्य ने अपने ग्रन्थ 'न्यायकुसुमांजलि' में दिया है। ईश्वर के स्वरुप और प्रमाण के सम्बन्ध में न्याय और वैशेषिक दर्शन के आचार्यों में कोई मतभेद नहीं है।

21. Which of the following statements are correct in the context of vedic philosophy? Select the code given bellow.
वैदिक दर्शन के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन से सही हैं? नीचे दिए कूट का चयन करें:

(A) Rta comes out of God/ऋत ईश्वर की उत्पत्ति है
(B) God comes out of Rta/ईश्वर ऋत की उत्पत्ति है
(C) Rta controls heavenly bodies
ऋत दिव्य काय का नियंत्रित करता है
(D) Rta controls natural phenomena
ऋत प्राकृतिक परिघटनाओं को नियंत्रित करता है।

Choose the correct answer from the options given below:/ नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(a) A and B only/केवल A और B
(b) B and C only/केवल B और C
(c) B, C and D only/केवल B, C और D
(d) A, B and C only/केवल A, B और C

Ans. (c) : ऋत् की संकल्पना वैदिक दर्शन में मिलती है। यह एक नैतिक अवधारणा भी है और वरूण देव को 'ऋतस्य गोप्ता' (ऋत् के गोप्ता) के रुप में देखा गया। यह विश्व-व्यवस्था के भौतिक पक्ष के साथ नैतिक पक्ष का नियमन और नियंत्रण करते हैं। 'ऋत्' की अवधारणा में निम्न विशेषताएं हैं-
(1) ऋत् सभी प्राकृतिक तथा समस्त खगोलीय घटनाओं का नियमन और नियंत्रण करता है।
(2) ऋत् 'विश्व-व्यवस्था' का भी प्रतीक है जिसमें उषस् का आगमन, सूर्य का चमकना, तारों, नक्षत्रों और चंद्र की नियमित गति और क्रम सब आ जाते हैं।
(3) ऋत् का मार्ग सदाचार का मार्ग है। उत्तरवर्ती दार्शनिकों ने बाद में 'कर्म-सिद्धान्त' का आधार 'ऋत्' की अवधारणा से जोड़ दिया
(4) ऋत् दिव्य 'कार्य को' भी नियंत्रित करता है और वरूण इसके अभिरक्षक हैं जिससे सारे देव जुड़े हैं।
(5) 'ऋत्' को वैदिक दर्शन के सन्दर्भ में सर्वोच्च सत्ता माना गया है तथा ईश्वर को ऋत् की उत्पत्ति माना गया है।
(6) ऋत् को धार्मिक व्यवस्था से भी सम्बन्धित माना जाता था।

22. Who among the following advocate (s) the apauruseyatva of the Vedas?
निम्नलिखित में से कौन वेदों की अपौरुषेयता के पक्षधर रहे हैं?

(a) Jaimini/जैमिनी
(b) Kumārila/कुमारिल
(c) Prabhākara/प्रभाकर
(d) Vasubandhu/वसबंधु

Choose the correct answer from the options given below:/ नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(a) B and D only/केवल B और D
(b) A, B and C only/केवल A, B और C
(c) A and D only/केवल A और D
(d) C and D only/केवल C और D

Ans. (b) : जैमिनी, कुमारिल और प्रभाकर वेदों के 'अपौरूषेयता' के समर्थक हैं। वसुबंधु बौद्ध दर्शन के समर्थक हैं जहाँ 'वेदों' की मान्यताओं का निषेध मिलता है। 'जैमिनी' को मीमांसा दर्शन का प्रणेता माना जाता है और कुमारिल एवं प्रभाकर इससे सम्बन्धित दार्शनिक हैं। मीमांसा दर्शन वेद की प्रामाणिकता में विश्वास करता है। मीमांसक शब्द के दो भेद- पौरुषेय एवं अपौरुषेय मानते हैं। इसी आधार पर मीमांसा दर्शन में वेदों की अपौरुषेयता की बात करते हैं तथा वेद वाक्यों को स्वतः प्रमाण मानते हैं।

23. What is the role of saksi in Dvaita Vedānta?
द्वैत वेदान्त में साक्षी की भूमिका क्या है?

(a) In the production of knowledge/ज्ञान के उत्पत्ति में
(b) In the ascertainment and validation of knowledge/ज्ञान की प्रतीति और वैधता में
(c) In being a sense organ/ज्ञानेन्द्रिय होने के रूप में
(d) In producing doubtful cognition.
संदेहपूर्ण अनुभूति की रचना करने में

Choose the correct answer from the options given below:/ नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(a) B and D only/केवल B और D
(b) A, B and C only/केवल A, B और C
(c) C only/केवल C
(d) A and D only/केवल A और D

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : द्वैत वेदान्त का प्रतिपादक माध्वाचार्य हैं। साक्षी की अवधारणा इस दर्शन की विशिष्टता है। आत्मा के स्वरुपभूत चैतेन्द्रिय को साक्षी कहते हैं। साक्षी की भूमिका ज्ञानेन्द्रिय होने के रुप में है। 'साक्षी' का कार्य है 'वृत्ति-ज्ञान' को प्रमाणित एवं प्रकाशित करना। क्योंकि 'वृत्ति-ज्ञान' मन, इन्द्रिय आदि से जन्य अन्तःकरण के परिणाम रूप अचेतन होने के कारण स्वयं को प्रमाणित नहीं कर सकता। ध्यातव्य है कि द्वैत वेदान्ती दो प्रकार ज्ञान को मानते हैं- यथा- वृत्ति ज्ञान और साक्षी ज्ञान।

24. Match List I with List II
सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:

List-I/ सूची I	List-II/ सूची II
A. Kevala/केवल	I. Direct Knowledge of past, subtle and distant object/भूतकाल, सूक्ष्म और दूरस्थ वस्तु (OBJECT) का प्रत्यक्ष ज्ञान
B. Manahparyāya /मनः पर्याय	II. Direct knowledge of the thoughts of other/दूसरे के विचारों का प्रत्यक्ष ज्ञान
C. Avadhi/अवधि	III. Mediate percentage knowledge/व्यवहित बोधात्मक ज्ञान
D. Mati/मति	IV. Intuitive, complete and absolute knowledge/अंतः प्रज्ञात्मक पूर्ण और निरपेक्ष ज्ञान

Choose the correct answer from the options given below:/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-IV, B-II, C-I, D-III
(c) A-II, B-I, C-III, D-IV
(d) A-IV, B-II, C-III, D-I

Ans. (b) :

	सूची-I		सूची-II
(A)	केवल	IV	अंतः प्रज्ञात्मक, निरपेक्ष तथा पूर्ण ज्ञान
(B)	मनःपर्याय	II	दूसरे के विचारों का प्रत्यक्ष ज्ञान
(C)	अवधि	I	भूतकाल, सूक्ष्म और दूरस्थ वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान।
(D)	मति	III	व्यवहित बोधात्मक ज्ञान

25. Match List I with List II
सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए :

List-I/ सूची I	List-II/ सूची II
A. Satta सत्ता	I. Parasamanya परसामान्य
B. Prthivitva पृथ्वीत्व	II. Aparasamanya अपरसामान्य
C. Guntva/गुणत्व	III. Paraparsamanya परापरसामान्य
D. Udhbutatva उद्धुतत्व	IV. Upadhi/उपाधि

Choose the correct answer from the options given below:/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-II, B-I, C-III, D-IV
(c) A-II, B-III, C-I, D-IV
(d) A-I, B-III, C-IV, D-II

Ans. (a) :

	सूची-I		सूची-II
(A)	सत्ता	I	परसामान्य
(B)	पृथ्वीत्व	II	अपरसामान्य
(C)	गुणत्व	III	परापरसामान्य
(D)	उद्भूतत्व	IV	उपाधि

26. Vivekananda's conception of Reality is:
विवेकानन्द की यथार्थता का संप्रत्यय है:

(a) Pluralistic/बहुलवाद
(b) Monistic/अद्वैतात्मक
(c) Heterogenous/असदृश
(d) Imperfect Unity/अपूर्ण एकत्व

Ans. (b) : स्वामी विवेकानन्द का दर्शन वेदान्त के अद्वैत मत से प्रभावित है। उन्होंने शंकर के अद्वैत वेदान्त का सरल तथा वैज्ञानिक भाषा में प्रस्तुतिकरण किया है। इनका दर्शन व्यावहारिक वेदान्त के रुप में जाना जाता है। विवेकानन्द के अनुसार जगत् यथार्थ एवं आभास का, निश्चय और भ्रम का आपरिभाषेय मेल है। स्वामी विवेकानन्द के दर्शन में सत् (यर्थाथ-Reality) की अवधारणा (प्रत्यय) अद्वैतात्मक है। 'सत्' को ही 'ब्रह्म' कहा गया है, जो निराकार, सर्वव्यापी चेतना है।

27. Consider the following statements with regard to the distinction between Satyagraha and passive resistance that Gandhi maintains.
गाँधी जी द्वारा पालन किए गए सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध के बीच विभेद के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।

A. Satyagraha unlike passive resistance involves force./निष्क्रिय प्रतिरोध के विपरीत सत्याग्रह में बल निहित होता है।

B. Satyagrahi respects the law, unlike a person of passive resistance./निष्क्रिय प्रतिरोध के विपरीत सत्याग्रही कानूनों का पालन करता है।

C. Satyagraha is based on the feeling of love. सत्याग्रह प्रेम की अनुभूति पर आधारित होता है

Choose the correct answer from the options given below:/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A only/केवल A
(b) B only/केवल B
(c) A and B only/केवल A और B
(d) B and C only/केवल B और C

Ans. (d) : सत्याग्रह का अर्थ है 'सत्य के प्रति आग्रह'। गांधी जी सत्ता एवं मूल्य को सत्य का पर्याय मानते थे। सत्याग्रह इसी से सम्बद्ध चिन्तन है। जबकि निष्क्रिय प्रतिरोध, सत्याग्रह के विरोधी पक्ष को सूचित करता है, जिसका अर्थ है- 'प्रत्याक्रमण न करना'। निष्क्रिय प्रतिरोध कहीं न कहीं बदले की भावना से प्रेरित होता है। जबकि गांधी जी सत्याग्रह के आग्रह के माध्यम से 'जैसे को तैसा' करने की भावना का परित्याग करने की बात करते हैं। सत्याग्रह में प्रेम एवं शान्ति का भाव होना अनिवार्य है। सत्याग्रही कानून पालन करता है इसके विपरीत निष्क्रिय प्रतिरोध में ऐसा अनिवार्य नहीं है। सत्याग्रह सकारात्मक पहलू से सम्बन्धित है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

28. Given below are two statements, one is labelled as Assertion A and the other is labelled as Reason (R)
नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है।

Assertion A : The difference between mind and super mind consists in the difference between their manners of apprehending reality.
अभिकथन (A) : मनस और परम मनस के बीच अंतर यथार्थ को समझने के तरीके में अंतर है।

Reason (R) : Supermind essentially gets the unitary picture of reality, whereas the mind creates division./ तर्क (R) : परम मनस में यथार्थता का एकात्मक मित्र आवश्यक रूप से प्राप्त होता है। जबकि मनस विभेद उत्पन्न करता है।

In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सही उत्तर चुनेः

(a) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) Both A and R are true but R is NOT the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं। परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A is true but R is false
(A) सही है। परन्तु (R) सही नहीं है।
(d) A is false but R is true
(A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है।

Ans. (d) : सृष्टि प्रक्रिया को समझाने के लिए श्री अरविन्द सत् (Reality-यथार्थ) के आठ स्तरों की बात करते हैं। जो क्रमशः सत्, चित्-शक्ति, आनन्द, अतिमन, मनस्, आत्मा, जीवन, भौतिक वस्तु (जड़ पदार्थ) हैं। श्री अरविन्द के अनुसार, विकास प्रक्रिया में 'मनस्' मानव मन से सम्बन्धित है जो अपने निचले स्तरों से तो ऊपर है लेकिन अभी भी वह सत् (यथार्थ) को भेद दृष्टि से ही देखता है। जबकि परम मनस् (अतिमन) सत् को एकात्म रुप में प्रस्तुत करता है। सत् या यथार्थ को समझने की दृष्टि से मनस् और परम मनस् में अन्तर है।

29. According to K C Bhattacharya, Philosophy is concerned with:
के.सी. भट्टाचार्य के अनुसार दर्शन-शास्त्र किस से सम्बन्धित है?

A. Empirical consciousness/एन्द्रिकानुभाव
B. Objective consciousness/विषय-निष्ठ चेतना
C. Spiritual consciousness/आध्यात्मिक चेतना
D. Transcendental consciousness
प्रगानुभाविक चेतना

Choose the correct answer from the options given below:
निम्नलिखित दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुने :

(a) A and B only/केवल A और B
(b) B and C only/केवल B और C
(c) B, C and D only/केवल B, C और D
(d) D only/केवल D

Ans. (c) : के.सी. भट्टाचार्य के अनुसार चेतना के चार स्तर हो सकते हैं-
(1) आनुभविक चेतना
(2) विषयनिष्ठ चेतना (Objective Consciousness)
(3) आध्यात्मिक चेतना
(4) प्रागनुभविक चेतना। चेतना के इन स्तरों में प्रथम स्तर का सम्बन्ध विज्ञान से है। बाकि तीन स्तर आनुभविक से ऊपर हैं, जिनका सम्बन्ध दर्शनशास्त्र से है।

30. Given below are two statements, one is labelled as Assertion A and the other is labelled as Reason R
नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है।

Assertion A : Intuition is an immediate knowledge of reality
अंतःप्रज्ञा यथार्थ का अव्यवहित ज्ञान है।

Reason R : Intuition is the property of the heart.
तर्क (R) : अंतः प्रज्ञा हृदय का गुणधर्म है।

In light of the above statements, choose the correct answer from the options given below
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सही उत्तर चुनेः

(a) Both A and R are true and R is the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) Both A and R are true but R is NOT the correct explanation of A/(A) और (R) दोनों सही हैं परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A is true but R is false/(A) सही है परन्तु (R) सही नहीं है।
(d) A is false but R is true/(A) सही नहीं है परन्तु (R) सही है।

Ans. (b) : अन्तः प्रज्ञावाद एक वस्तुनिष्ठ सिद्धान्त माना जाता है। क्लार्क ने इस सम्बन्ध में चार नैतिक सिद्धान्त दिये- जो स्वतः सिद्ध, अपरिवर्तनीय एवं निरपेक्ष है तथा अन्तः प्रज्ञा द्वारा इनका अव्यवहित (Immediate) ज्ञान प्राप्त होता है-
(1) ईश्वर/सत्/यथार्थ के प्रति निष्ठा (2) समानता (3) परोपकार तथा (4) आत्म रक्षा का सिद्धान्त। यह बौद्धिक अन्तःप्रज्ञावाद है। इसके अतिरिक्त भावनात्मक अंतःप्रज्ञावादी, अंतःप्रज्ञा को हृदय का गुणधर्म मानते हैं, जो भावनाओं पर आधारित होते हैं। स्पष्ट है कि दोनों कथन तो सत्य हैं, परन्तु अभिकथन (A) की तर्क (R) व्याख्या नहीं करता है।

31. Leap of faith is explained by Kierkegaard in terms of:
कीर्कगार्ड द्वारा आस्था की छलांग किन पदों में व्याख्यायित है?

(a) Intellectual, impassionate and finite commitment to God/बौद्धिक,उदासीन और ईश्वर के प्रति सीमित प्रतिद्धता
(b) Non-intellectual, passionate and finite commitment to God/गैर-बौद्धिक, आवेश-पूर्ण और ईश्वर के प्रति सीमित प्रतिबद्धता

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) Non-intellectual passionate and infinite commitment to God/गैर-बौद्धिक, आवेश-पूर्ण और ईश्वर के प्रति असीमित प्रतिबद्धता
(d) Intellectual, impassionate, infinite commitment to God/बौद्धिक, उदासीन, ईश्वर के प्रति असीमित प्रतिबद्धता

Ans. (c) : सोरेन कीर्कगार्ड जो एक ईश्वरवादी अस्तित्ववादी है, ने कहीं भी आस्था की छलांग (Leap of faith) की बात नहीं की है। इसकी जगह उन्होंने 'गुणों के छलांग' की बात की है। फिर भी उनके विचार इस छलांग से मिलते हैं। इस आधार पर आस्था की छलांग को, गैर-बौद्धिक, आवेशपूर्ण और ईश्वर के प्रति असीमित प्रतिबद्धता के रूप में व्याख्यायित किया जाता है।

32. Consider the following statements with reference to Sartre./सार्त्र के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

A. Human beings have being-in-itself alone. मानव का अस्तित्व केवल अपने आप में होता है।

B. Human beings have being-for-itself alone. मानव का अस्तित्व केवल अपने लिए होता है।

C. Human beings have both being-in-itself and being-for-itself./मानव का अस्तित्व दोनों अपने आप में और अपने लिए होता है।

D. Human beings are condemned to be free, as God exists./चूँकि ईश्वर का अस्तित्व है, इसलिए मानव स्वतंत्र होने के लिए अभिशप्त है।

Choose the correct answer from the options given below:
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(a) A and D only/केवल A और D
(b) B and D only/केवल B और D
(c) C only/केवल C
(d) C and D only/केवल C और D

Ans. (c) : सार्त्र निरीश्वरवादी अस्तित्ववाद का प्रतिपादन करते हैं। सार्त्र के अनुसार अस्तित्व भाव से पहले है। सार्त्र के अनुसार मानव चेतना का लक्ष्य आत्म को इस प्रकार अनुभूत करना जैसे वह कोई 'स्व-अस्तित्व' हो। मानव का अस्तित्व दोनों अपने आप में (Being-in-itself) और अपने लिए (Being-for-itself) होता है।

33. The concept of everydayness is used by Heidegger to :
हीडेगर द्वारा प्रयुक्त दैनदिन संकल्पना किसके लिए है?

(a) Explain how human beings lead authentic lives/मानव प्रामाणिक जीवन कैसे जीता है, इसकी व्याख्या करता है।
(b) Explain why human beings lead unthinking lives/मानव चिंतनहीन जीवन क्यों जीता है, इसकी व्याख्या करता है।
(c) Explain why human being lead lives to their potential/मानव अपनी संभाव्यताओं के लिए जीवन क्यों जीता है, इसकी व्याख्या करता है।
(d) Explain why human beings lead a life of rationality/मानव तार्किकता वाला जीवन क्यों जीता है, इसकी व्याख्या करता है।

Ans. (b) : सार्त्र निरीश्वरवादी अस्तित्ववाद का प्रतिपादन करते हैं। सार्त्र के अनुसार अस्तित्व भाव से पहले है। सार्त्र के अनुसार मानव चेतना का लक्ष्य आत्म को इस प्रकार अनुभूत करना जैसे वह कोई 'स्व-अस्तित्व' हो। मानव का अस्तित्व दोनों अपने आप में (Being-in-itself) और अपने लिए (Being-for-itself) होता है।

34. Who among the following argued that the subjectivity is primordially ethical and our responsibility for the other is the foundation of our subjectivity?
निम्नलिखित में से किसने तर्क दिया कि व्यक्तिनिष्ठता मौलिक रूप से नीतिपरक है और दूसरों के लिए हमारा उत्तरदायित्व ही हमारी व्यक्ति निष्ठता का आधार है?

(a) Immanuel Levinas/इमैनुएल लेविनस
(b) Morleau-Ponty/मोर्लु-पोंटि
(c) Rorty/रोर्टी
(d) Nietzsche/नीत्शे

Ans. (d) : इमैनुएल लेविनस के अनुसार, 'व्यक्तिनिष्ठता मौलिक रूप से नीतिपरक है और दूसरों के लिए हमारा उत्तरदायित्व ही हमारी व्यक्तिनिष्ठता का आधार है।' इमैनुएल लेविनास की बौद्धिक परियोजना 'प्रथम दर्शन को विकसित करने की थी। परम्परागत रुप से प्राथमिक दर्शन के अन्तर्गत या तो तत्त्वमीमांसा या धर्मशास्त्र को निरूपित किया जाता था। केवल हाइडेगर द्वारा परम्परागत सत्तामीमांसा को पुनः प्राप्त किया गया। लेविनास का तर्क है कि नीतिशास्त्र ही ऐसा है जिसके बारे में कल्पना किया जा सकता है।

35. Consider the following statements with reference to Arthasastra./ अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये?

A. The aim of the polity is the yogakshema and the rakshana of the subjects./ राजनीति का लक्ष्य प्रजा का योगक्षेम और रक्षण करना है।

B. Yogakshema is not the responsibility of the state./ योगक्षेम राज्य का उत्तरदायित्व नहीं है।

C. Curbing of the matasyanyāyā within the state is advocate./ राज्य के भीतर मत्स्यन्याय पर अंकुश का पक्षधर है।

Choose the correct answer from the options given below :/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) A only/केवल A
(b) A and C only/केवल A और C
(c) C only/केवल C
(d) A, B and C/A, B और C

Ans. (b) : 'अर्थशास्त्र' कौटिल्य की रचना है। यह पुस्तक मुख्य रूप से राजनीति के प्रबन्धन और राजा-प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व से सम्बन्धित है। 'अर्थशास्त्र' के अनुसार, राजनीति का लक्ष्य प्रजा का योगक्षेम और रक्षण करना है। राज्य में ऐसी स्थिति न आने पाये कि शक्तिशाली अपने से कमजोर पर अत्याचार कर सके। अर्थात् मत्स्यन्याय की स्थिति पर अंकुश लगा सके। राजा का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने राज्य की प्रजा और सीमाओं का बाह्य शत्रुओं से रक्षण करे।

36. Who among the following advocated upeksha as a supreme virtue?
निम्नलिखित में किसने उपेक्षा को परम सद्गुण के रूप में माना जाता है?

(a) Yudhisthira/युधिष्ठिर
(b) Kamandaka/कामंदक
(c) Kautilya/कौटिल्य
(d) Narada/नारद

Ans. (b) : 'कांमदकीय नीतिशास्त्र' कामंदक द्वारा राजनीतिशास्त्र पर लिखी गयी रचना है। यह ग्रन्थ राजनीतिक नैतिकता से सम्बन्धित है। कामंदक 'उपेक्षा' को परम सद्गुण के रुप मे मानते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

37. The purpose of affirmative action is :
विधानात्मक/सकारात्मक कृत्य (एफेर्मेटिव एक्शन) का उद्देश्य क्या है

(a) To promote historic inequalities
ऐतिहासिक असमानताओं को प्रोत्साहन होना
(b) To bridge historic inequalities
ऐतिहासिक असमानताओं के बीच अंतर समाप्त करना
(c) To support absolute freedom
पूर्ण स्वतंत्रता का समर्थन करना
(d) To curb historic diversity
ऐतिहासिक विविधताओं पर नियंत्रण करना

Ans. (b) : सकारात्मक कृत्य (Affirmative Action) वंचित वर्ग अथवा भेदभाव का शिकार हुए लोगों के लिए रोजगार, शिक्षा जैसे अवसरों में प्रतिनिधित्व देने से सम्बन्धित है। यह एक तरह से सामाजिक-राजनीतिक न्याय से भी सम्बन्धित है। अर्थात् इसका लक्ष्य ऐतिहासिक असमानताओं के बीच अन्तर समाप्त करना है। इसकी शुरूआत सं. रा. अमेरिका से मानी जाती है।

38. Which one of the following is not true with reference to Ecofeminism?
निम्नलिखित में से कौन एक पारिस्थितिकीय नारीवाद (ecofeminism) के संदर्भ में नहीं है?

(a) It explores the relationship between nature and humans./इससे प्रकृति और मानव के बीच संबंधों का पता चलता है।
(b) It addresses the parallels between oppression of nature and oppression of women./इससे प्रकृति के दमन और महिला उत्पीड़न के बीच समानताओं की व्याख्या होती है।
(c) It considers a separation between nature and culture to be the root source of all planetary ills./यह सभी ग्रहीय बुराईयों का मूल स्रोत प्रकृति और संस्कृति के होने के बीच अलगाव पर विचार करता है।
(d) It criticizes the oppressing role of nature on women/यह प्रकृति द्वारा महिलाओं का दमन करने की भूमिका की आलोचना करता है।

Ans. (d) : पारिस्थितिकीय नारीवाद (Eco feminism) सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलन है। यह महिलाओं के ऊपर हुए अत्याचार और शोषण तथा पर्यावरण क्षरण के मध्य गहन सम्बन्ध स्वीकार करता है। पारिस्थितिकीय नारीवाद लैंगिक विभेद, पर्यावरण प्रदुषण, नस्लवाद, रंगभेद, प्रजातिवाद एवं अन्य सामाजिक विषमताओं में गहन अंतर सम्बन्ध स्वीकार करता है। यहां यह प्रश्न ही नहीं उठता कि प्रकृति द्वारा महिलाओं का दमन हो क्योंकि यह प्रकृति और महिलाओं में एक सकारात्मक अन्तर्सम्बन्ध की बात करता है।

39. The problematic separation between a subject and an object that properly belong together is conceptualized in Marxism as;
मार्क्सवाद में विषय और प्रयोजन जो सम्यक रूप में एक साथ रहता है, इसके बीच समस्यात्मक पृथक्करण का संप्रत्यय किस रूप में है।

(a) Objectification/वस्तुकरण
(b) Alienation/विसंबंधन
(c) Fetishism/प्रतीकाँधभक्ति
(d) Estrangement/अलगाव

Ans. (b) : मार्क्सवादी दर्शन का मानवीय चेहरा 1844 में प्रकाशित ग्रन्थ 'इकोनॉमिक एण्ड फिलॉसॉफिकल मैन्युस्क्रिप्ट्स' में दिखा। इसमें पूंजीवाद का विश्लेषण वर्ग शत्रुता, वर्ग संघर्ष तथा हिंसात्मक क्रान्ति के आधार पर नहीं किया गया है। बल्कि पूंजीवाद की व्याख्या बुरे प्रभावों के अलगाव, पहचान और स्वतंत्रता के खोने के आधार पर की गयी है। अलगाव के सिद्धान्त के चार स्तर हैं- (1) मनुष्य अपने उत्पाद और कार्य प्रक्रिया से अलग-थलग पड़ जाता है। (2) व्यक्ति प्रकृति से अलग हो जाता है, और उसका यांत्रिकीकरण हो जाता है। (3) व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अलग हो जाता है। और (4) अन्त मे व्यक्ति स्वयं से कट जाता है।

40. As per the politics of recognition of Charles Taylor, which one of the following it true.
चार्ल्स टेलर की मान्यता की राजनीति के अनुसार निम्नलिखित में से कौन एक सही है

(a) It advocated politics of difference that emphasized that everyone owed recognition of the unique identity./इसने मतभेद की राजनीति का समर्थन किया जो कि इस बात पर बल देता है कि सभी व्यक्ति विशिष्ट पहचान की मान्यता के धारक हैं
(b) It advocate politics of indifference that emphasized that everyone owed recognition of the unique identity/इसने उदासीनता की राजनीति का समर्थन किया जो की इस बात पर बल देता है कि सभी व्यक्ति विशिष्ट पहचान की मान्यता के धारक हैं
(c) It advocated politics of difference that emphasized that everyone owed recognition of the universal shared identity./इसने मतभेद की राजनीति का समर्थन किया जो इस बात पर बल देता है कि सभी व्यक्ति वैश्विक रूप से साझा की गई पहचान की मान्यता के धारक हैं
(d) It emphasized a move from recognition to non-recognition/यह मान्यता से गैर-मान्यता की तरफ जाने पर बल देती हैं

Ans. (a) : चार्ल्स टेलर ने, मतभेद की राजनीति का समर्थन किया है। वे उदारवादी Unencumbered self (आभार ग्रस्त स्व) के बजाए, Encumbered self (भार ग्रस्त स्व) को स्वीकार करते हैं। टेलर ने उदारवादियों के तटस्थ राज्य के विचार के प्रयोग का विरोध किया राज्यों को मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए का समर्थन किया।

41. As per the axioms of Quantity of a categorical syllogism;
श्रेणीबद्ध तर्कवाक्य के परिमाण के अभिगृहीत के अनुसारः

(a) The middle term must be undistributed at least once/मध्य पद आवश्यक रूप से कम से कम एक बार अवितरित होगा
(b) The middle term must be distributed in all cases/मध्य पद सभी केसों में आवश्यक रूप से वितरित होगा
(c) The middle term must be distributed at least once/मध्य पद आवश्यक रूप से कम से कम एक बार वितरित होगा
(d) The middle term must be undistributed in all the cases/मध्य पद आवश्यक रूप से सभी केसों में अवितरित होगा।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : श्रेणीबद्ध या निरूपाधिक तर्कवाक्य वे होते हैं जो वर्गों (Class) के बारे में कथन होते हैं। निरपेक्ष न्यायवाक्य या Categorical Syllogism वह युक्ति है जिसमें दो आधार वाक्यों से एक निष्कर्ष निगमित किया जाता है। तीनों तर्कवाक्यों में कुल मिलाकर तीन पद क्रमशः मुख्य पद, अमुख्य पद और मध्यम पद होते हैं। निरपेक्ष न्यायवाक्य में मध्यम पद आवश्यक रुप से कम से कम एक बार वितरित होता है। ऐसा न होने पर अव्याप्त/अवितरित मध्यम पद दोष होगा।

42. Which one of the following is the correct combination of moods of the second figure?
दूसरे आकृति की मनोदशा का निम्नलिखित में से कौन सा एक सही युग्म है?
(a) Camestres, Baroco, Cesare and Festino
कामेस्त्रेस, बरोको, सेसरे और फेस्तिनो
(b) Camestres,Baroco, Celarent and Festino
कामेस्त्रेस, बरोको, सेलारेंट और फेस्तिनो
(c) Camestres, Celarent, Cesare and Festino
कामेस्त्रेस, सेलारेंट, सेसरे और फेस्तिनो
(d) Camestres, Baroco, Cesare, Ferio
कामेस्त्रेस, बरोको, सेसरे, फेरियो

Ans. (a) : न्याय वाक्य के प्रामाणिक (आकृति व अवस्था के आधार पर) अवस्थाएं निम्न हैं:-
प्रथम आकृति में- BARBARA, DARII, CELARENT, FERIO, → 4 अवस्थाएं वैध।
द्वितीय आकृति में- CESARE, CAMESTRES, FESTINO, BAROCO → 4 अवस्थाएं वैध।
तृतीय आकृति में - DARAPTI, DISAMIS, DATISI, FELAPTON, BOCARDO, FERISON → 6 अवस्थाएं वैध।
चतुर्थ आकृति में- BRAMANTIP, CAMENES, DIMARIS, FESAPO, FRESISON → कुल 5 अवस्थाएं वैध।
यह कुल मिलाकर 19 वैध अवस्थाएं हैं जो कि अरस्तू के अनुसार हैं।

43. Which one of the following represents the relation between the following propositions?
No dogs are cats.
Some dogs are cats.
निम्नलिखित तर्कवाक्यों के बीच का सम्बन्ध किस विकल्प में प्रदर्शित होता है?
कोई कुत्ता बिल्ली नहीं है।
कुछ कुत्ते बिल्ली हैं।
(a) Subcontrary/उप-विपरीत
(b) Contradictory/विरोधभाषी
(c) Subaltern/उपाश्रयी
(d) Contrary/विपरीत

Ans. (b) : 'कोई कुत्ता बिल्ली नहीं है' → 'E' तर्कवाक्य
'कुछ कुत्ते बिल्ली हैं' → 'I' तर्कवाक्य
परम्परागत विरोध वर्ग के अनुसार, जब दो तर्कवाक्य न एक साथ सत्य हों और न ही एक साथ असत्य, तो वो वहां व्याघाती/विरोधाभासी सम्बन्ध होता है। प्रस्तुत तर्कवाक्यों E और I में यही सम्बन्ध है।

44. Which one of the following is a valid inference?
निम्नलिखित में से कौन एक वैध अनुमान है?
(a) If P then q, p, therefore q
यदि p तब q है, p है, अतः q है।
(b) If p then q, not q, therefore p
यदि p तब q है, न कि q अतः p है
(c) If p then q, not p, therefore not q.
यदि p तब q है, न कि p अतः न कि q है
(d) Either p or q, p therefore not q.
या तो p अथवा q, p है, अतः न कि q है।

Ans. (d) : सम्बन्धित अनुमानों का प्रतीकात्मक रुप निम्न है-
$P \supset q$
P
$\therefore q$
यहां पर पूर्ववत अनुमान है।

45. Which one of the following is a tautology?
निम्नलिखित में से कौन एक पुनरुक्ति है?
(a) $(p \vee q) \supset p$
(b) $(p \supset q) \vee (q \supset p)$
(c) $p \supset q$
(d) $(p.q) \vee p$

Ans. (b) : पुनरूक्ति (Tautology) वह वाक्याकार है जिसके केवल सत्य-प्रतिस्थापन उदाहरण होते हैं। अतः यहां $(p \supset q) \vee (q \supset p)$ के ही केवल सत्य प्रतिस्थापन उदाहरण हैं।

46. Consider the following statements with reference to the distribution of the terms of the categorical propositions?
निरुपाधिक प्रतिज्ञप्ती के पदों में व्याप्तता (डिस्ट्रीब्यूशन) के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।
(a) Predicate term of the Negative propositions is distributed/नकारात्मक तर्कवाक्यों का विधेय पद व्याप्त होता है।
(b) Subject term of the particular propositions is undistributed/विशेषात्मक तर्कवाक्यों का उद्देश्य पद अव्याप्त होता है।
(c) Subject term of the universal propositions is distributed/सार्वभौमिक तर्कवाक्यों का उद्देश्य पद व्याप्त होता है।

Choose the correct answer from the options given below/नीचे दिये गये विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :
(a) A only/केवल A
(b) A and B only/केवल A और B
(c) B only/केवल B
(d) A, B and C/A, B और C

Ans. (d) : निरुपाधिक प्रतिज्ञप्ति। तर्कवाक्य प्रायः चार प्रकार के होते हैं, क्रमशः- (गुण और परिमाण के अनुसार), सार्वभौमिक स्वीकारात्मक (A); सार्वभौमिक निषेधात्मक/नकारात्मक (E), विशेषात्मक (अंशव्यापी) स्वीकारात्मक (I) और विशेषात्मक (अंशव्यापी) (O) नकारात्मक/प्रत्येक निरूपाधिक प्रतिज्ञप्ति में, 'उद्देश्य' एवं 'विधेय' दो पद होते हैं तथा वाक्य का प्रारम्भ (सभी कोई, कुछ) परिमाणक से होता है। और अन्त में 'संयोजक' ('है', 'नहीं हैं') होता है।
→ (1) 'A' तर्कवाक्य/प्रतिज्ञप्ति का उद्देश्य पद व्याप्त होता है तथा विधेय अव्याप्त (Undistributed)
(2) 'E' तर्कवाक्य/प्रतिज्ञप्ति का उद्देश्य एवं विधेय दोनों पद व्याप्त (distributed) होता है।
(3) 'I' तर्कवाक्य अपने किसी पद को व्याप्त नहीं करता है तथा
(4) 'O' तर्कवाक्य में केवल विधेय पद व्याप्त होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

47. Consider the following syllogism and mark the correct code.
Some dogs are friendly
No friendly animals bark
Therefore, No dogs bark
निम्नलिखित न्यायवाक्यों पर विचार करें और सही कूट को चिन्हित करें।
कुछ कुत्ते मित्रवत हैं।
कोई भी मित्रवत जानवर भौंकते नहीं हैं।

(a) It is a valid syllogism/यह एक वैध न्यायवाक्य है
(b) Commits the fallacy of illicit major
अवैध मुख्य पद का दोष कारित करता है।
(c) Commits the fallacy of four terms
चार पदों के दोष कारित करता है।
(d) Commits the fallacy of illicit minor
अवैध अमुख्य पद का दोष कारित करता है।

Ans. (d) : किसी भी न्यायवाक्य की वैधता के छः नियम बताये गये हैं। प्रस्तुत न्यायवाक्य में 'अनियमित/अवैध अमुख्य पद का दोष' है। क्योंकि निष्कर्ष का उद्देश्य पद, अमुख्य पद होता है और अमुख्य पद जिस किसी भी तर्कवाक्य (आधारवाक्य) में होते हैं, अमुख्य आधार वाक्य कहा जाता है। यहां निष्कर्ष में अमुख्य पद व्याप्त है लेकिन आधारवाक्यों में अव्याप्त है।

48. The contraposition of which one of the following propositions is not a valid inference?
निम्नलिखित तर्कवाक्यों में से कौन एक प्रतिपरिवर्तन का वैध अनुमान नहीं है?

(a) Universal Affirmative proposition
सार्वभौमिक सकारात्मक तर्कवाक्य
(b) Universal Negative proposition
सार्वभौमिक नकारात्मक तर्कवाक्य
(c) Particular Affirmative proposition
अंशव्यापी सकारात्मक तर्कवाक्य
(d) Particular Negative proposition
अंशव्यापी नकारात्मक तर्कवाक्य

Ans. (c) : प्रतिपरिवर्तन (Contraposition) में किसी तर्कवाक्य को बदलने के लिए पहले उस तर्कवाक्य का प्रतिवर्तन करना होता है और फिर परिवर्तन। सार्वभौमिक सकारात्मक (A) तथा अंशव्यापी नकारात्मक (O) तर्कवाक्य का प्रतिपरिवर्तन होता है। सार्वभौमिक नकारात्मक का परिमित प्रतिपरिवर्तन होता है। किन्तु अंशव्यापी सकारात्मक तर्कवाक्य को प्रतिपरिवर्तन का वैध अनुमान नहीं है।

49. If two standard form categorical propositions with the same subject and the same predicate are related in such a manner that if one is undetermined, the other must be undetermined, what is their relation?
यदि समान उद्देश्य तथा समान विधेय वाले दो मानक रूप निरपेक्ष तर्कवाक्य इस रूप में सम्बन्धित हैं कि यदि एक अनिश्चित हो तो दूसरा भी आवश्य ही अनिश्चित होगा, तो उनके बीच क्या तार्किक सम्बन्ध है?

(a) contrary/विपरीत
(b) Sub-contrary/उप-विपरीत
(c) Sub-altern/उपाश्रयी
(d) Contradictory/व्याघातक

Ans. (d) : परम्परागत विरोध वर्ग के अनुसार 4 प्रकार के विरोधों की बात की गयी है; जिनके आधार पर हम सत्यता-असत्यता की बात करते हैं। 'व्याघाती' तर्कवाक्य ऐसा सम्बन्ध है जहां पर दो तर्कवाक्य न तो एक साथ सत्य हो सकते हैं और न ही एक साथ असत्य। अर्थात् अगर एक सत्य/असत्य होगा तो दूसरा असत्य/सत्य होगा। इसी प्रकार अगर कोई एक अनिश्चित हुआ तो दूसरा भी अनिश्चित हो जायेगा। 'A' और 'O' तथा 'E' और 'I' में व्याघात सम्बन्ध होता है।

50. Given below are two premises (I and II). Four Conclusions are drawn from them. (A, B, C and D). Select the code that indicates validly drawn conclusion (s) only (taking the premises individually or jointly).
नीचे दो आधार वाक्य (I और II) दिए गए हैं I उनसे चार निष्कर्ष निकाले गए हैं (A,B,C,D), I उस कूट का चयन करें जो केवल वैध तरीके से निकाले गए निष्कर्षों (वैयक्तिक अथवा संयुक्त रूप से आधारवाक्य लेते हुए) का संकेत करता है।

Premises:/आधारवाक्य:
I. Most of the Students are honest.
अधिकांशतःविद्यार्थी ईमानदार होते हैं।
II. Most of the girls are students.
अधिकांशतः लड़कियाँ विद्यार्थी होती हैं।
Conclusions:/निष्कर्ष
A. Most of the girls are honest.
अधिकांशतः लड़कियाँ ईमानदार होती हैं।
B. Most of the honest persons are students.
अधिकांशतः ईमानदार लोग विद्यार्थी होते हैं।
C. Most of the students are girls.
अधिकांशतः विद्यार्थी लड़कियाँ होती हैं।
D. Most of the honest persons are girls.
अधिकांशतः ईमानदार लोग लड़कियाँ होते हैं।
Choose the correct answer from the options given below:/नीचे दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें :

(a) A, B and C only/केवल A, B और C
(b) B and C only/केवल B और C
(c) C and D only/केवल C और D
(d) A and D only/केवल A और D

Ans. (b) : दिये गये आधार वाक्यों (वैयक्तिक या संयुक्त रूप से लेते हुए)
I. अधिकांशतः विद्यार्थी ईमानदार होते हैं, और
II. अधिकांशतः लड़कियां विद्यार्थी होती हैं।
वैध तरीके से निकाले गये निष्कर्षों विकल्प (B) अधिकांशतः ईमानदार लोग विद्यार्थी होते है। एवं (C) अधिकांशतः विद्यार्थी लड़कियां होती हैं। का परिवर्तन कर निकाला गया है। जो वैध है।

51. "Being, knowledge and communication are all impossible"- who holds this view?
"अस्तित्व ज्ञान और सम्प्रेषण सभी असम्भव है"- यह उक्ति किसकी है।

(a) Socrates/सुकरात (b) Plato/प्लेटो
(c) Gorgias/गार्जियस (d) Aristotle/अरस्तू

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : "अस्तित्व, ज्ञान और सम्प्रेषण सभी असंभव हैं" यह कथन गार्जियस (Gorgias) का है। जो एक सोफिस्ट विचारक हैं। ऐसा माना जाता है, इनका चिंतन संशयवादी चिंतन था।
जॉर्जियस की तीन बातें निम्न हैं–
(1) किसी भी वस्तु का अस्तित्व नहीं है।
(2) यदि कोई वस्तु है, तो वह अज्ञेय है। और
(3) अगर उस वस्तु का ज्ञान हो भी जाये तो किसी और को संप्रेषित नहीं किया जा सकता।

52. "Oak tree is already there in the Oak seed though not in the manifest form" This is view of
"ओक का पेड़, ओक के बीज में पूर्व से ही निहित होता है यद्यपि यह अव्यक्त स्वरूप में होता है" यह विचार किसका है?
(a) Socrates/सुकरात (b) Plato/प्लेटो
(c) Aristotle/अरस्तू (d) Thales/थेल्स

Ans. (c) : 'ओक का पेड़ ओक के बीज में अव्यक्त स्वरुप में निहित होता है।' यह कथन अरस्तु का है। अरस्तु के अनुसार सभी प्रकार का परिवर्तन संभाव्यता से वास्तविकता की ओर अग्रसर होता है। अर्थात् अरस्तू के अनुसार, 'प्रारम्भ अन्त में ही विद्यमान है।'

53. Which of the following statements are true with reference to Plato? Mark the correct code:/प्लेटो के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सही है? सही कूट को चिन्हित करें:
A. Plato rejected the view that knowledge is opinion/प्लेटो ने इस विचार का खंडन किया कि ज्ञान अभिमत है।
B. Plato said that artists should be banished from the country/प्लेटो ने बताया है कि कलाकारों को देश से निर्वासित कर देना चाहिए।
C. Plato said that everything is subjective.
प्लेटो ने बताया कि सभी चीजें विषयनिष्ठ हैं
(a) A and B are true/A और B सही है।
(b) B and C are true/B और C सही है।
(c) C and A are true/C और A सही है।
(d) C alone is true/C अकेला सही है।

Ans. (a) : प्लेटो ने 'ज्ञान मत है' का खण्डन किया है। मत चाहे सही हो अथवा गलत वह ज्ञान नहीं हैं। इसके अतिरिक्त वह प्रवृत्तिगत विश्वास को भी ज्ञान नहीं मानते। इसके अतिरिक्त उनके अनुसार कलाकारों को देश से निस्काषित कर देना चाहिए। प्लेटो के अनुसार कवि या चित्रकार का महत्त्व मोची या बढ़ई से भी कम है, क्योंकि वह अनुकृति मात्र प्रस्तुत करता है, जो सत्य से बहुत दूर होता है। यही प्लेटो का अनुकरण सिद्धान्त है। प्लेटो का ज्ञान से सम्बन्धित सिद्धान्त शुद्ध प्रत्ययवाद कहलाता है। प्रत्यय स्वतंत्र, निरपेक्ष होते हैं। अतः आत्मनिष्ठता का प्रश्न ही नहीं उठता है।

54. Which of the following statements are true with reference to Heraclitus?
हेराक्लिटस के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों में कौन से कथन सही हैं?
(A) Air is the fundamental stuff of the universe.
वायु ब्रह्माण्ड की मौलिक सामग्री है।
(B) The real remains the same forever.
वास्तविक अवशेष हमेशा के लिए समान होता है।
(C) Strife is the father of all the things.
संघर्ष सभी वस्तुओं का जनक है।
(D) A things is an identity of opposites.
एक वस्तु विरोधों की पहचान है।
(a) A and B are true/A और B सही हैं
(b) A and C are true/A और C सही हैं
(c) C and D are true/C और D सही हैं
(d) A and D are true/A और D सही हैं

Ans. (c) : हेराक्लाइट्स के अनुसार, कोई भी वस्तु उसी क्षण है भी और नहीं भी। यह संभूति का सिद्धान्त है। उनके अनुसार सत् में ही नहीं, संसार की सभी वस्तुओं में उसका विरोधी तत्त्व मौजूद है। हेराक्लाट्स अग्नि को जगत् का मूल तत्त्व मानते हैं। वायु को एनेक्जिमेनीज ने मौलिक तत्व माना है। हेराक्लाट्स परिवर्तन को सत् मानते हैं और संघर्ष को सभी वस्तुओं का जनक मानते हैं।

55. "Conventional morality is man-made; it is invented by the weak. Might is right". Who holds this view?
"पारंपरिक नैतिकता मानव निर्मित है: यह निर्बलों द्वारा बनाया गया है। जिसकी लाठी उसकी भैंस (माईट इज राइट)" यह उक्ति किसकी है?
(a) Socrates/सुकरात
(b) Plato/प्लेटो
(c) Sophists/सोफिस्ट
(d) Marcus Aurelius/मार्कस आरेलियस

Ans. (c) : साफिस्टों का नैतिक दर्शन मानवकेन्द्रित तथा भौतिकवादी था। इनके अनुसार, शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित आदि व्यक्ति-सापेक्ष होते हैं और वस्तुओं के सभी गुण वस्तुपरक न होकर व्यक्तिनिष्ठ होते हैं। अर्थात् व्यक्ति विशेष की इच्छाओं या भावनाओं के अनुकूल कर्म ही शुभ या उचित है। उपर्युक्त कथन सोफिस्टों का है।

56. Which statements among the following are correct?
निम्नलिखित कथनों में से कौन से सही है?
(A) St Augustine was theist/सेंट आगस्टाइन आस्तिक थे
(B) St Augustine closely follows Plato
सेंट आगस्टाइन ने प्लेटो का गहन अनुसरण किया
(C) St Augustine was a sceptic
सेंट आगस्टाइन संदेहवादी थे
(D) St Augustine was an agnostic
सेंट आगस्टाइन अज्ञेयवादी थे
(a) A and B are correct/A और B सही है।
(b) B and C are correct/B और C सही है।
(c) C and D are correct/C और D सही है।
(d) A and D are correct/A और D सही है।

Ans. (a) : सेंट आगस्टाइन एक ईश्वरवादी दार्शनिक थे। इनको 'ईसाई धर्म का प्लेटो' कहा जाता है। ये प्लेटो के दर्शन से प्रभावित थे। ये न तो संदेहवादी थे और न ही अज्ञेयवादी थे। आगस्टाइन के अनुसार ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणों द्वारा जाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त ईश्वर को श्रद्धा तथा धर्मग्रन्थों के आधार पर भी जाना जा सकता है।

57. "Only in God there is no composition at all, his essence is purely and simply his act of existence". This is acceptable to whom?
"केवल ईश्वर में ही कोई भी निर्मात्री तत्त्व नहीं है, उसका सार विशुद्ध रूप और अस्तित्व का केवल उसका कृत्य है" इसे किसने स्वीकार किया है?
(a) St Augustine/सेंट आगस्टाइन
(b) St Thomas Aquinas/सेंट थॉमस एक्विनास
(c) St Anselm/सेंट एन्स्लेम
(d) Plotinus/प्लोतिनस (प्लॉटिनस)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : सन्त एन्सेलम अपने दर्शन में ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए कई प्रमाण देते हैं। उनके अनुसार ईश्वर पूर्ण सत् है तथा वही परम् सत्ता है। एन्सेलम ने ईश्वर को 'पूर्ण द्रव्य' माना जिसके अन्दर गुणों का आभाव पाया जाता है। लेकिन यह कथन कि, 'ईश्वर ही है जिसमें कोई निर्मात्री तत्व नहीं है, उसका सार विशुद्ध रुप और अस्तित्व का केवल उसका कृत्य है' टॉमस एक्वीनास का है। एक्वीनास ने ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करने के लिए पांच तर्क दिये हैं। एक्वीनास अज्ञेयवाद और सर्वेश्वरवाद के मध्य का मार्ग चुनते हैं।

58. Mark this correct answer with reference to Leibnitz/लैबनिट्ज के सन्दर्भ में सही उत्तर को चिन्हित करें–

A. In Leibnitz monism and pluralism are reconciled/लैबनिट्ज में एकेश्वरवाद और बहुवाद की संगति है।

B. In Leibnitz idealism and realism meet लैबनिट्ज में प्रत्ययवाद और यथार्थवाद पाया जाता है।

C. In Leibnitz, utter materialism is accepted लैबनिट्ज में चरम भौतिकवाद स्वीकार्य है

D. 'Law of sufficient Reason' is Leibnitz's defence of monadology. पर्याप्त कारण का नियम "लैबनिट्ज के चिद्णुवाद की रक्षा करना है

(a) A and C are true/A और C सही है।
(b) B and C are true/B और C सही है।
(c) C and D are true/C और D सही है।
(d) A, B and D are true/A, B और D सही है।

Ans. (d) : लाइबनित्ज जो एक बुद्धिवादी दार्शनिक थे का दर्शन 'चिदणुवाद के रूप में जाना जाता है। उनके अनुसार द्रव्य एक नहीं है बल्कि अनन्त, असंख्य तथा ब्रह्माण्ड में सब जगह है। चिदणु परमाणुओं की तरह भौतिक कण नहीं हैं, इनकी प्रकृति 'चेतन' है। चिदणु ही विश्व के मूल द्रव्य हैं अतः लाइबनित्ज किसी भी तरह से भौतिकवादी नहीं हैं। लाइबनित्ज चार प्रकार के नियम मानता है जो चिदणु मे पाये जाते हैं। सातत्य का नियम, समानता का नियम, असमानता का नियम, शक्ति के संरक्षण का नियम।

59. "This world created by god is the best of all the possible worlds"- who propounds this view? ईश्वर द्वारा सृजित यह विश्व सभी संभव हो पाने वाले विश्व का सर्वश्रेष्ठ है" इस विचार का प्रतिपादन किसने किया?

(a) Descartes/देकार्त
(b) Spinoza/स्पिनोजा
(c) Leibnitz/लाइबनित्ज
(d) Locke/लॉक

Ans. (c) : लाइबनित्ज के अनुसार, 'ईश्वर पूर्णतम चिदणु है' वह सभी चिदणुओं का भी चिदणु है। लाइबनित्ज जगत को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति मानता है।

60. "The events are so organized in this universe that there is no room for chance"- this is advocated by whom? "इस ब्रह्माण्ड में घटनाएँ इतनी व्यवस्थित हैं कि यहाँ संयोग के लिए भी स्थान नहीं है।" इसका पक्ष किसने लिया है?

(a) David Hume/डेविड ह्यूम
(b) Spinoza/स्पिनोजा
(c) Heraclitus/हेराक्लिट्स
(d) Anaximenes/ऐनेक्समेनिज

Ans. (b) : स्पिनोजा ने डेकार्ट के संयोगवाद की आलोचना की है। डेकार्ट ने मन-शरीर सम्बन्ध की क्रिया-प्रतिक्रिया चिदाचित् - संयोग के आधार पर व्याख्या की है। स्पिनोजा का मत समानांतरवाद कहलाता है। स्पिनोजा के अनुसार, "इस ब्रह्माण्ड में घटनाएं इतनी व्यवस्थित हैं कि जहां संयोग के लिए कोई भी स्थान नहीं है।" स्पिनोजा का दर्शन सर्वेश्वरवाद, अद्वैतवाद के नाम से जाना जाता है। उनके अनुसार ईश्वर जगत् का निमित्त और उपादान दोनों कारण है।

61. Match List I with List II सूची -I को सूची -II से सुमेलित कीजिए

List-I/ सूची -I	List-II/ सूची -II
(Doctrines) सिद्धान्त	(Philosophers) /दार्शनिक
A. Subjective Idealism/ विषयनिष्ठ प्रत्ययवाद	I. Spinoza/स्पिनोजा
B. Mind-body Dualism/मन-शरीर द्वैतवाद	II. Leibnitz/लाइबनित्ज
C. Pantheism/ सर्वेश्वरवाद	III. Descartes/ देकार्त
D. Monadology/ चिद्णुवाद	IV. Berkeley/बर्कले

Choose the correct answer from the options given below:/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-III, B-IV, C-II-D-I
(b) A-IV, B-III, C-I, D-II
(c) A-II, B-I, C-IV, D-III
(d) A-I, B-II, C-III, D-IV

Ans. (b) :

	सूची-I		सूची-II
(A)	विषयनिष्ठ प्रत्ययवाद	IV	बर्कले
(B)	मन-शरीर द्वैतवाद	III	डेकार्ट
(C)	सर्वेश्वरवाद	I	स्पिनोजा
(D)	चिदणुवाद	II	लाइबनित्ज

62. "All essential truths about the world are ascertainable through reason"-This is the basic contention of? "विश्व के बारे में सभी महत्वपूर्ण सत्य युक्ति/तर्कबुद्धि द्वारा पता लगाने योग्य है" यह विवाद किसका है?

(a) Kantianism/कांटवाद
(b) Rationalism/तर्कबुद्धिवाद
(c) Empiricism/इन्द्रियानुभाविक
(d) Mysticism/रहस्यवाद

Ans. (b) : तर्क-बुद्धिवाद अथवा बुद्धिवाद के अनुसार समस्त ज्ञान जन्म से ही बुद्धि में ही है। विश्व के बारे में समस्त सत्यों का उद्घाटन हम बुद्धि (Reason) के द्वारा कर सकते हैं। कांटवाद एक तरह का समन्वयवाद है और यह इन्द्रियानुभव और बुद्धिवाद का समन्वय करता है। इन्द्रियानुभविक समस्त सत्य ज्ञान को इन्द्रियों के माध्यम से मानता है। और रहस्यवादी ज्ञान को रहस्य के रुप में देखता है।

63. Who propounded Epistemological dualism? किसने ज्ञानमीमांसीय द्वैतवाद का प्रतिपादन किया?

(a) Berkeley/बर्कले
(b) Locke/लॉक
(c) Descartes/देकार्त
(d) Democritus/डेमोक्रिटस

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : लॉक का दर्शन ज्ञानमीमांसीय द्वैतवाद है। डेकार्ट भी द्वैतवादी दार्शनिक है, किन्तु तत्वमीमांसीय रूप में। बर्कले आत्मनिष्ठ प्रत्ययवादी हैं। बर्कले ने लॉक के द्वैतवाद की आलोचना की है और बाह्य/जड़ पदार्थों की सत्ता को आत्मा पर निर्भर माना है। डेमोक्रिटस का सिद्धान्त परमाणुवाद है।

64. Who among the following propounded the doctrine of Nominalism?
निम्नलिखित में से किसने नाममात्रवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन किया?

(a) Berkeley/बर्कले (b) Kant/कांट
(c) Descartes/देकार्त (d) Leibnitz/लाइबनित्ज

Ans. (a) : बर्कले के अनुसार, 'अमूर्त काल्पनिक विज्ञान' असंभव है। बर्कले के अनुसार हमारा ज्ञान विशेषों का है न कि सामान्यों का। बर्कले के अनुसार, सार्वभौमिक (सामान्य) और अमूर्त वस्तुएं काल्पनिक हैं, नाममात्र हैं। उनका कोई अस्तित्व नहीं हैं। अर्थात् काल्पनिक विज्ञान वदतोव्याघात है।

65. Which of the following are true, with reference to Kant the correct answer./कान्ट के सन्दर्भ में निम्नलिखित में कौन से सही है? सही उत्तर को चिन्हित करें

A. Space and time are apriori forms of perception/दिक् और काल अवबोध के प्रागनुभविक स्वरूप हैं

B. The existence of god can be proved by the ontological argument/प्रत्यय-सत्ता युक्ति द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित किया जा सकता है।

C. The Noumenon cannot be known
प्रत्यय-निरपेक्ष-सत को जाना नहीं जा सकता

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) Only A is true/केवल A सही हैं।
(b) Only A and B are true/केवल A और B सही हैं।
(c) Only A and C are true/केवल A और C सही हैं।
(d) Only B and C are true/केवल B और C सही हैं।

Ans. (c) : काण्ट के अनुसार, देश-काल अवबोध (Perception) के प्रागनुभविक आकार हैं। यह विशुद्ध प्रत्यक्ष हैं। देश-काल का विभाजन सम्भव नहीं है। काण्ट के अनुसार प्रत्यय-निरपेक्ष-सत (Noumenon)/परमार्थ को जाना नहीं जा सकता है। हमारे ज्ञान का विषय 'संवृत्ति' (Phenomenon) है। इसके अतिरिक्त काण्ट ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में दिये गये प्रमाणों का खण्डन करते हैं, यथा-प्रत्यय-सत्तामूलक, विश्व-कारण-मूलक, भौतिक धार्मिक युक्तियाँ।

66. "Art is a form of intuition". This is acceptable to whom?
"कला अंतः प्रज्ञा का एक प्रकार है" यह किसे स्वीकार्य है?

(a) Kant/कान्ट (b) Hegel/हेगेल
(c) Spinoza/स्पिनोजा (d) Leibnitz/लाईबिनित्ज

Ans. (b) : हेगेल के दर्शन में, कला अंतः प्रज्ञा का एक प्रकार है। हेगेल अंतः - प्रज्ञा/निरपेक्ष आत्मा को तीन प्रकार से परिभाषित करता है, क्रमशः - कला, धर्म, दर्शन। हेगेल, कला के ऊपर धर्म का स्थान तथा धर्म एवं कला से उत्कृष्ट दर्शन को मानता है।

67. Which of the following statements are acceptable with reference to Leibnitz? Mark the correct code./ लाईबिनित्ज के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन से कथन स्वीकार्य है? सही उत्तर को चिन्हित करें।

A. Monads are windowless/ चिद्णु गवाक्षहीन है।

B. Monads are physical points
चिद्णु भौतिक बिंदु हैं।

C. Monads are mathematical points
चिद्णु गणितीय बिंदु है।

(a) A and B are correct/A और B सही है।
(b) A and C are correct/A और C सही है।
(c) B and C are correct/B और C सही है।
(d) A only is correct/केवल A सही है।

Ans. (d) : लाइबनित्ज अपने चिदणुवाद में चिदणुओं को चेतन मानते हैं। लाइबनित्ज ने चार प्रकार से चेतना को परिभाषित किया है– (1) स्वचेतन (2) चेतन (3) उपचेतन (4) अचेतन। यहां 'अचेतन' से तात्पर्य चेतना का आभाव नहीं है, बल्कि चेतना की कमी है। उपचेतन और अचेतन को लाइबनित्ज 'लघु चेतन' कहते हैं। चिदणुओं में कोई तात्विक भेद न होकर संख्यागत भेद हैं। प्रत्येक चिदणु को गवाक्षहीन (Windowless) माना गया है। फिर भी प्रत्येक चिदणु स्वयं को और पूरे ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करने की क्षमता रखता है।

68. Who strongly advocated Determinism?
किसने निश्चयवाद का प्रबल तरीके से पक्ष लिया?

(a) Bertrand Russell/बर्टेंड रसेल
(b) Spinoza/स्पिनोजा
(c) David Hume/डेविड ह्यूम
(d) Protagoras/प्रोटागोरस

Ans. (b) : स्पिनोजा ने निश्चयवाद का समर्थन किया है। स्पिनोजा के अनुसार विश्व की प्रत्येक घटना में अनिवार्यता है। स्पिनोजा के अनुसार जगत ईश्वर की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। ऐसे में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का स्थान कम हो जाता है। स्पिनोजा किसी भी प्रकार का प्रयोजन नहीं मानते। ईश्वर में प्रयोजन मानना त्रुटिपूर्ण है। स्पिनोजा का दर्शन सर्वेश्वरवाद या रहस्यवाद कहलाता है।

69. To which of the following views, Descartes did not subscribe? Mark the correct code.
निम्नलिखित किस विचार से देकार्त सहमत नहीं होते थे? सही कूट को चिन्हित करें

(A) Theory of Innate ideas/सहज प्रत्यय का सिद्धांत
(B) Tertium quid/उभयेत्तर वस्तु
(C) Representative theory of knowledge
ज्ञान का निरूपक सिद्धांत
(D) Interactionism/अन्योन्यक्रियावाद

(a) A and B/A और B (b) A and D/A और D
(c) B and D/B और D (d) C only/केवल C

Ans. (d) : डेकार्ट के अनुसार, हमारा समस्त ज्ञान जन्मजात है। सहज प्रत्ययों (Innate Ideas) और निगमन के द्वारा यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। मन-शरीर सम्बन्ध का अन्योंन्य क्रियावाद, सहज-प्रत्यय ज्ञान, तथा उभयेत्तर वस्तु का सिद्धान्त डेकार्ट का है। ज्ञान का निरूपक सिद्धान्त डेकार्ट का न होकर प्लेटो का है।

70. According to whom human mind is only receptive and not creative?
किसके अनुसार मानव बुद्धि केवल ग्राही है न कि सर्जनात्मक?

(a) Descartes/देकार्त (b) Locke/लाक
(c) Berkeley/बर्कले (d) Leibnitz/लाईबिनित्ज

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : लॉक के अनुसार, मानव बुद्धि सर्जनात्मक न होकर ग्राही (Receptive) है। डेकार्ट के अनुसार, 'बुद्धि यथार्थ ज्ञान की जननी है। अर्थात् सर्जनात्मक है। लाइबनित्ज भी बुद्धि को सर्जनात्मक मानते हैं। लेकिन लॉक के अनुसार हमारा समस्त ज्ञान इन्द्रियानुभव से आता है। बर्कले के अनुसार कुछ विषयों को हमारी बुद्धि स्वयं उत्पन्न करती है।

71. Mark the correct option of the following.
सही विकल्प को चिन्हित करें:

(a) Hegel is an absolute idealist and Hume a rationalist./हेगेल एक निरपेक्ष प्रत्ययवादी और ह्यूम एक तर्कबुद्धिवादी हैं।
(b) Hegel's is Dialectical method and Descartes doctrine is Ontological Dualism/हेगेल की द्वंदात्मक प्रणाली और देकार्त का सिद्धांत सत्तामीमांसीय द्वैतवाद है।
(c) Hegel toned down Kant's philosophical agnosticism and Locke is a consistent empiricist/हेगेल ने कान्ट के दार्शनिक अज्ञेयवाद पर अपने स्वर को धीमा किया है और लाक एक सतत इन्द्रियानुभविक हैं।
(d) 'The real is the rational' is Hegel's statement and Berkeley's stand is in materialism./'यथार्थ तर्कमूलक है' हेगल का कथन है और बर्कले भौतिकवाद के पक्षधर हैं।

Ans. (b) : (1) हेगेल एक निरपेक्ष प्रत्ययवादी तो है लेकिन डेविड ह्यूम तर्क बुद्धिवादी न होकर अनुभववादी एवं संशयवादी हैं।
(2) हेगेल एक द्वन्द्वात्मक प्रणाली के समर्थक है, वहीं डेकार्ट का सिद्धान्त सत्तामीमांसीय द्वैतवाद है।
(3) हेगेल काण्ट के अज्ञेयवाद और द्वैतवाद के घोर विरोधी हैं।
(4) 'यथार्थ तर्कमूलक है' (Real is Rational) हेगेल का कथन है परन्तु बर्कले का दर्शन भौतिकवादी न होकर विज्ञानानुभववादी है।

72. "Whenever we know any object, there is an idea of that object in our mind through which we know that object" What does this statement imply?
''जब कभी हमें किसी वस्तु का ज्ञान होता है तो हमारे मस्तिष्क में उस वस्तु को जानने का प्रत्यय निहित होता है जिसके माध्यम से हम उस वस्तु को जान पाते हैं। ''इस कथन में क्या अन्तर्निहित है?

(a) Idealistic theory/प्रत्ययवादी सिद्धांत
(b) Representative theory of perception
अवबोध का प्रतिनिधानात्मक सिद्धांत
(c) Realistic theory/यथार्थवादी सिद्धांत
(d) Scepticism/संदेहवाद

Ans. (b) : अवबोध के प्रतिनिधानात्मक सिद्धान्त, को प्रत्यय प्रतिनिधित्ववाद के नाम से भी जाना जाता है। अरस्तू, जॉन लॉक इस सिद्धान्त का समर्थन करते हैं। लॉक के अनुसार बाह्य पदार्थ का प्रत्यक्ष नहीं होता, केवल अनुमान होता है। प्रत्यक्ष केवल गुणों का होता है, द्रव्य का नहीं। यह कथन कि 'जब हमें किसी वस्तु का प्रत्यक्ष होता है, तो वह हमारे मस्तिष्क में प्रत्यय के रुप में होता है। इसी प्रत्यय के माध्यम से हम बाह्य वस्तु को जानते हैं।' लॉक का है।

73. Which of the following is approved by David Hume?
निम्नलिखित में से किसे डेविड ह्यूम द्वारा मान्यता दी गई है?

(A) Relations of ideas/प्रत्ययों का सम्बन्ध
(B) Matters of fact/तथ्यों के विषय
(C) Unperceived substratum/अबोधित उप-स्तर
(D) Rejection of the doctrine of causation
कार्यकारण-भाव के सिद्धांत का खंडन

(a) A, B and D/A, B और D
(b) A and D/A और D
(c) B and C/B और C
(d) A and C/A और C

Ans. (a) : डेविड ह्यूम एक संदेहवादी दार्शनिक हैं। ह्यूम के अनुसार संस्कारों और विज्ञानों को छोड़कर और कोई हमारे ज्ञान का विषय नहीं हो सकता है। डेविड ह्यूम ने प्रत्ययों (विज्ञानों) के सम्बन्ध के साथ तथ्यों के विषय की बात कही है। ह्यूम के अनुसार हमारा ज्ञान दो प्रकार से होता है- प्रत्ययों का और तथ्यों के जगत का। डेविड ह्यूम ने कारण-कार्य नियम का खण्डन किया है।

74. Mark what is true of the following statement, with reference to Kant/कान्ट के सन्दर्भ में, निम्नलिखित कथनों में से जो सही है, उसे चिन्हित करें

(A) Knowledge is limited to the phenomenon
ज्ञान परिघटनाओं तक ही सीमित है
(B) The Noumenon is beyond knowledge
प्रत्यय निरपेक्ष-सत ज्ञान से परे है
(C) Phenomenon is the appearance of the Noumenon/परिघटना प्रत्यय निरपेक्ष-सत का प्रकटन है
(D) The categories of understandng are twenty in number/बुद्धिमत्ता की कोटियाँ संख्या में बीस हैं

(a) A, and D/A और D सही हैं
(b) B and D/B और D सही हैं
(c) C and D/C और D सही हैं
(d) A, B and C/A, B और C सही हैं

Ans. (d) : बुद्धिमत्ता की कोटियां संख्या में 12 होती हैं। काण्ट प्रत्यय-निरपेक्ष सत् (परमार्थ) को अनिवर्चनीय और अज्ञेय मानते थे। परिघटना (संवृत्ति-Phenomenon) परमार्थ का प्रकटन है। हमारा ज्ञान इन्हीं परिघटनाओं तक ही सीमित है। वास्तव में परमार्थ का विधिरूप ज्ञान असम्भव है क्योंकि विधिरूप ज्ञान सदा इन्द्रिय सम्वेदन और बुद्धि-विकल्प इन दोनों पर निर्भर रहता है।

75. Mark what is true of the following statements with reference to Kant/कान्ट के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों में जो सही है, उसे चिन्हित करें

A. Kant rejects the traditional proofs for the existence of god./कान्ट ईश्वर के अस्तित्व के लिए दिए जाने वाले पारंपरिक प्रमाणों का खंडन करता है।
B. Kant accepts space and time as transcendentally real./कान्ट दिक और काल को प्रागनुभविक यथार्थ के रूप में मान्यता देता है।
C. The categorical Imperative is a moral maxim./निरपेक्ष आदेश एक नैतिक सूक्ति है।
D. Kant's book Critique of Judgment is a work of moral principles./कान्ट की पुस्तक न्याय की समालोचना नैतिक सिद्धांतों पर लिखी गई है

(a) A and B are true/A और B सही हैं
(b) B and C are true/B और C सही हैं
(c) C and D are true/C और D सही हैं
(d) A and C are true/A और C सही हैं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : काण्ट ईश्वर के अस्तित्व के लिए दिये गये पारम्परिक प्रमाणों का खण्डन करते हैं। काण्ट के दर्शन में दिक् और काल प्रागनुभविक सत्/यथार्थ न होकर प्रत्यक्ष के प्रागनुभविक आकार हैं। काण्ट का नैतिक सिद्धान्त 'निरपेक्ष आदेश का सिद्धान्त' कहलाता है। काण्ट की पुस्तक 'न्याय की समालोचना' सौंदर्यशास्त्र पर लिखी गयी है जबकि नैतिक सिद्धान्तों पर लिखी गयी पुस्तक 'व्यावहारिक बुद्धि की समालोचना' है।

76. According to the Jaina ethics which of the following qualities (gunās) does the jīva possess?/जैन नीतिशास्त्र के अनुसार जीव निम्नलिखित में से कौन से गुणों से युक्त है?

A. Caitanya (Consciousness)/चेतना

B. Sukha (Bliss)/सुख

C. Vīrya (Virtue) /वीर्य

D. Śreyas (Lasting Good) /श्रेयस

(a) A, B and D only/केवल A, B और D
(b) A, B and C only/केवल A, B और C
(c) A and D only/केवल A और D
(d) A and C only/केवल A और C

Ans. (d) : जैन दर्शन के अनुसार, चैतन्य जीव का स्वभाव है, जीव कर्त्ता, भोक्ता तथा ज्ञाता है। जीव अनन्त है, जीव में चार प्रकार की पूर्णताएं - अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य एवं अनन्त आनन्द पायी जाती हैं।

77. Which of the following statements is true regarding theory of karma advocated in Classical theories of Indian Ethics? /भारतीय नीतिशास्त्र के शास्त्रीय (क्लासिकीय) सिद्धांतों में समर्थित कर्म सिद्धांत के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन सही है।

A. The karma doctrine requires that man's own 'character' be his own 'destiny'./कर्मवाद में अपेक्षा की जाती है। कि व्यक्ति का स्वयं का 'चरित्र' ही उसके स्वयं की 'नियति' हो।

B. An ethical agent's past actions are responsible for his/her present joys and sorrows. /नैतिक रूप से साधक के अतीत कर्म ही उसके/उसकी वर्तमान की खुशियों और दुखों के लिए उत्तरदायी होते हैं।

C. A person's present is determined by his/her past. /किसी व्यक्ति का वर्तमान उसके/उसकी अतीत द्वारा निर्धारित होता है।

D. Human beings are free agents मानव स्वतंत्र साधक है।

E. A person's future is not determined by the present/किसी व्यक्ति का भविष्य, वर्तमान द्वारा निर्धारित नहीं होता है।

(a) A, B and C only/केवल A, B और C
(b) A, B, and D only/केवल A, B, C और D
(c) A, B, and E only/केवल A, B, C और E
(d) A, B, C, D and E/A, B, C, D और E

Ans. (b) : भारतीय नीतिशास्त्र में कर्मवाद का सिद्धान्त मानव के पूर्वजन्म, वर्तमान जीवन, और भविष्य जीवन से सम्बन्धित है। कर्मवाद के सिद्धान्त में प्राणी मात्र द्वारा किये गये कर्म, कर्म बन्धन और कर्मफल के बारे में विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है।

78. Given below are two statements नीचे दो कथन दिए हैं :

Statement I : We can 'solve' the problem of evil and inequalities of individual happiness and unhappiness in a theistic system only if we assume the karma hypothesis. /कथन I : ईश्वरवादी व्यवस्था में केवल कर्म संकल्पना को मानकर ही हम वैयक्तिक प्रसन्नता और अप्रसन्नता के अशुभ एवं असमताओं की समस्या का समाधान कर सकते हैं।

Statement II : In a non-theistic system like Buddhism, karma is posited in order to explain the same inequalities between one man's potential and another.
कथन - II : गैर-ईश्वरवादी व्यवस्था जैसे बौद्ध धर्म में, कर्म को एक व्यक्ति की संभाव्यताओं और दूसरे के बीच की समान असमताओं की व्याख्या के क्रम में ग्रहण किया गया है।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(a) Both Statement I and statement II are correct कथन I और II दोनों सही हैं।
(b) Both Statement I and Statement II are incorrect/कथन I और II दोनों गलत हैं।
(c) Statement I is correct but Statement II is incorrect/कथन I सत्य है, किन्तु कथन II गलत है।
(d) Statement I is incorrect but Statement II is correct/कथन I असत्य है, किन्तु कथन II सही है।

Ans. (a) : ईश्वरवादी व्यवस्था में कर्म संकल्पना का महत्व है। और प्रारब्ध को सुधारकर भविष्य जीवन में प्रसन्नता प्राप्त कर सकते हैं वहीं गैर-ईश्वरीय व्यवस्था में कर्म एक संभाव्यता के रुप में ग्रहीत है।

79. "The mind, though diversified by countless impression, is there in order to provide experience and liberation for something else, viz. the soil; this follows from its composite nature." This statement pertains to which of the following schools of Classical Indian Philosophy?
"मन यद्यपि अनगिनत छापों द्वारा विविधिकृत, कोई अन्य वस्तु अर्थात आत्मा को अनुभव और मुक्ति प्रदान करने के क्रम में वहाँ है, यह इसके सम्मिश्र प्रकृति से इसका अनुसरण करती है" यह कथन भारतीय शास्त्रीय दर्शन की निम्नलिखित की किस शाखा से सम्बन्धित है?

(a) Nyaya/न्याय (b) Mimamsa/मीमॉंशा
(c) Jainism/जैन धर्म (d) Samkhya/सांख्य

Ans. (d) : सांख्य दर्शन में मन को एक आभ्यान्तरिक इन्द्रिय माना गया है। इसके अतिरिक्त पुरुष या आत्मा की सत्ता स्वयं सिद्ध मानी जाती है।

80. Which of the following is correct according to Samkhya philosophy?
सांख्य दर्शन के अनुसार निम्नलिखित में कौन सही है।

(a) The soul is conscious and completely inactive/अत्मा चेतन है और पूर्णतया असक्रिय है।
(b) Soul is physically inactive but mentally active/आत्मा भौतिक रूप से असक्रिय है लेकिन मानसिक रूप से सक्रिय है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) Soul is not conscious but mentally active
आत्मा चेतन नहीं है लेकिन मानसिक रूप से सक्रिय है।

(d) Soul is inactive but can influence both body and mind/आत्मा असक्रिय है लेकिन यह शरीर और मन, दोनों को प्रभावित कर सकता है।

Ans. (a) : सांख्य दर्शन मे दो तरह की सत्ताओं की बात हुई है- पुरुष एवं प्रकृति। जहां प्रकृति त्रिगुणात्मिका है और सक्रिय है, वहीं पुरुष चेतन एवं निष्क्रिय है। पुरुष त्रिगुणों से रहित है तो प्रकृति अचेतन है। पुरुष नानाविधि बहुत्व में है वही प्रकृति एक है। पुरुष को ही सांख्य दर्शन में आत्मा कहा जाता है।

81. Arrange the following in chronological order with reference to Vaisesika philosophy?
वैशेषिक दर्शन के सन्दर्भ में निम्नलिखित को कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए?

(A) Effort (prayatna)/प्रयत्न
(B) Knowledge (buddhi)/बुधि (विद्या)
(C) Subliminal impression (Saṃskāra)/संस्कार
(D) Virtue (dharma)/धर्म (क्षमता)

कूट :

(a) B, C, D, A (b) A, B, D, C
(c) B, A, D, C (d) B, C, A, D

Ans. (c) : वैशेषिक दर्शन में सात पदार्थ माने गये हैं। दिया गया प्रश्न 'गुण' पदार्थ के कालाक्रम से सम्बन्धित है। 'गुण' 'द्रव्य' में रहता है और गुण का कोई गुण नहीं होता है। 'गुण' संख्या में 24 हैं, जो क्रमशः- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, संयोग, विभाग, परत्व और अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, गुरूत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म और अधर्म, शब्द हैं।
अतः बुद्धि → प्रयत्न → संस्कार → धर्म।

82. "The disappearance of incorrect knowledge (mithyajnana) is followed by the disappearance of the faults (dosa), this in its turn by the disappearance of activity (pravrtti), this by the disappearance of birth (janman), this again by the disappearance of suffering." This statement pertains to the text of which of the following schools of Indian Philosophy?
''मिथ्याज्ञान के लोप का दोष के लोप द्वारा, यह अपने प्रयोग के समय पर प्रवृत्ति के लोप द्वारा, यह जन्म के लोप द्वारा, यह फिर कष्ट के लोप द्वारा अनुगमन किया जाता है'' यह कथन भारतीय दर्शन की निम्नलिखित शाखा के किस विषय से सम्बन्धित है।

(a) Nyaya/न्याय (b) Mīmāṁsā/मीमांसा
(c) Jainism/जैनधर्म (d) Cārvāka/चार्वाक

Ans. (a) : सभी दर्शनों की भांति न्याय दर्शन में भी बन्धन का कारण गलत ज्ञान (अविद्या) मिथ्या ज्ञान माना गया है। उपयुक्त कथन न्याय दर्शन से सम्बन्धित है।

83. Who among the following ethicists argues that the hedonist definition implies that the question "is anything which is pleasant good"? means the same as the question "is anything which is pleasant pleasant?"
निम्नलिखित में से किस नीतिशास्त्री ने तर्क किया कि सुखवादी परिभाषा का निहितार्थ यह है कि प्रश्न ''क्या कोई वस्तु जो कि सुखद शुभ है?'' का अर्थ इस प्रश्न के जैसे है कि ''क्या कोई वस्तु जो कि सुखद सुखद है?''

(a) Kant/कान्ट
(b) G E Moore/जी ई. मूर
(c) C L Stevenson/सी.एल. स्टीवेंसन
(d) R M Hare/आर एम हेयर

Ans. (b) : जी.ई. मूर का नैतिक दर्शन नव्य-अन्तः प्रज्ञावाद के नाम से जाना जाता है। मूर के अनुसार, 'शुभ' अपरिभाष्य एवं अविश्लेष्य है। उनके अनुसार 'शुभ वस्तु' को परिभाषित किया जा सकता है। मूर ने सुखवाद, विकासवाद, आत्मपूर्णतावाद, आदि सभी सिद्धान्तों का खण्डन किया है। उनके अनुसार, सुखवादियों का यह कथन कि 'कोई वस्तु सुखद है, शुभ है' अर्थात यहाँ 'शुभ' की प्रकृतिवादी व्याख्या की जा रही है। जो एक तरह का प्रकृतिवादी दोष है।

84. Given below are two statements
Statement I : According to Rule Utilitarianism and action is right if and only if it conforms to a set of rules the general acceptance of which would produce the greatest balance of pleasure over pain for the greatest number.
Statement II : According to Act Utilitarianism an action is right if and only if it produces the greatest balance of pleasure over pain for the greatest number.
In light of the above statements, choose the most appropriate answer from the options given below
निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा सबसे उपयुक्त विकल्प को चुनें:
कथन-I : नियम-उपयोगितावाद के अनुसार एक कृत्य तभी और केवल तभी उचित होगा जब वह एक ऐसे नियम- समूह का अनुगमन करता हो जिससे अधिकतम लोगों के लिए दुःख पर सुख का अधिकतम संतुलन उत्पन्न होता हो,
कथन-II : कृत्य उपयोगितावाद के अनुसार एक कृत्य तभी और केवल तभी उचित होगा जब वह एक ऐसे नियम-समूह का अनुगमन करता हो जिससे अधिकतम लोगों के लिए दुःख पर सुख का अधिकतम संतुलन उत्पन्न होता हो,
उपर्युक्त कथनों के अलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर का चुनाव कीजिए:

(a) Both statement I and Statement II are correct
कथन I और II दोनों सही हैं।
(b) Both statement I and statement II are incorrect/कथन I और II दोनों गलत हैं।
(c) Statement I is correct while statement II is incorrect/कथन I सत्य है किन्तु कथन II गलत है।
(d) Statement I is incorrect while statement II is correct/कथन I असत्य है किन्तु कथन II सही है।

Ans. (a) : नियम उपयोगितावाद और कृत्य/कर्म उपयोगितावाद उपयोगितावाद का एक प्रकार है। नियम उपयोगितावादी किसी भी कृत्य को तभी उचित मानता है जब वह कुछ नैतिक नियमों के समूह से सम्बन्धित हो और अधिकतम व्यक्ति के अधिकतम सुख की बात करता हो। इसके अलावा कर्म/कृत्य उपयोगितावादी किसी भी कार्य को तभी उचित कहता है जिसे करने पर अधिकतम व्यक्तियों को अधिकतम सुख प्राप्त हो।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

85. The statement - "The criminal act is a negation, and punishment is the negation of a negation" - is an expression of which of the following theories of punishment?
कथन - ''अपराधिक कृत्य एक निषेध है, और दण्ड एक निषेध का निषेध है'' यह दण्ड के निम्नलिखित किस सिद्धांत की एक अभिव्यक्ति है?

(a) Retributive theory/प्रतिकारी सिद्धांत
(b) Reformative theory/सुधारात्मक सिद्धांत
(c) Deterrent theory/निवारणार्थ सिद्धांत
(d) Preventive theory/निरोधक सिद्धांत

Ans. (a) : 'दण्ड' शब्द एक कानूनी शब्द है। दण्ड के तीन सिद्धान्त- (1) प्रतिरोधात्मक (2) सुधारात्मक तथा (3) प्रतिकारात्मक सिद्धान्त। प्रतिरोधात्मक सिद्धान्त के अनुसार, किसी अपराधी को दण्ड देने का उद्देश्य भविष्य में अन्य व्यक्तियों को अपराध करने से रोकना है। सुधारात्मक सिद्धान्त, अपराधी को दण्ड देने का उद्देश्य अपराधी के चरित्र में सुधार करना है। प्रतिकारात्मक सिद्धान्त में, दण्ड देने का उद्देश्य यह है कि अपराधी का यह अर्जित फल है अर्थात् यदि उसने किसी का सिर फोड़ा है तो उस व्यक्ति/अपराधी का भी सिर फोड़ दिया जाये। इस तरह, इस सिद्धान्त के अनुसार, 'अपराधी के कृत्य का एक तरह का निषेध है।' अतः इस निषेध का भी निषेध होना चाहिए।

86. Which of the following statements are true with regard to ethical thoughts of Locks and Kant?
लॉक और कान्ट के नीतिशास्त्रीय विचारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों में कौन से सही हैं?

(A) They maintained that the foremost of "the rights of man" is the rights to life/उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा कि ''मानव के अधिकारों'' में सर्वप्रथम अधिकार जीवन का अधिकार है।
(B) They argued that these rights are violated when one commits a crime of taking somebody's life/उन्होंने तर्क दिया है कि इन अधिकारों का तब उल्लंघन होता है जब कोई किसी के जीवन को समाप्त करने का अपराध कर डालता है।
(C) They believed that a murderer "forfeits" his own life and therefore deserves to die/वे विश्वास करते थे कि एक हत्यारा अपने स्वयं के जीवन जीने की पात्रता को खो देता है और इस प्रकार मृत्यु का पात्र हो जाता है।
(D) They believed that right to life being foremost it can never be taken away even from the criminal/वे विश्वास करते थे कि चूँकि जीवन का अधिकार सर्वप्रथम है इसे अपराधी से भी कदापि नहीं छीना जा सकता है।

Choose the correct answer from the options given below:/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर को चुनिएः

(a) A, B and C only/केवल A, B और C
(b) A, B and D only/केवल A, B और D
(c) A, C and D only/केवल A, C और D
(d) B, C and D only/केवल B, C और D

Ans. (a) : मानवअधिकार ऐसे आधारभूत अधिकार हैं, जिन्हे प्रायः 'न छिने' जाने योग्य माना जाता है। लॉक ने अपने नैतिक और राजनैतिक दर्शन में मानवाधिकारों की व्याख्या की है, जिन्हें वह 'प्राकृतिक अधिकार' के रूप में कहता है। काण्ट ने भी अपने नैतिक दर्शन में मानव को नैतिक मापदण्ड का साध्य मानकर 'मानव अधिकारों' की बात कही है। 'द ट्वेल्व आर्टिकल्स ऑफ द ब्लैक फॉरेस्ट' को यूरोप मे मानवाधिकारों का सर्वप्रथम दस्तावेज माना जाता है।

87. Read the following two statements carefully and choose the most correct option:
Statement I : Kant's theory supports capital punishment.
Statement II : Supporters of Capital Punishment rest their position on principles of retributive justice and the appropriateness of society's moral indignation at murder.
नीचे दो कथन दिए गए हैः
कथन I- कांट का नैतिक सिद्धांत मृत्यु- दण्ड को समर्थन देता है,
कथन II- हत्या के लिए मृत्यु - दण्ड के समर्थक प्रतिकारात्मक न्याय तथा समाज के नैतिक रोष की उपयुक्तता पर अपने मत को आधारित करते हैं,
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर का चुनाव कीजिएः

(a) Both Statement I and Statement II are correct
कथन I और II दोनों सही हैं।
(b) Both Statement I and Statement II are incorrect/कथन I और II दोनों गलत है।
(c) Statement I is correct but Statement II is incorrect/कथन I सत्य है किन्तु कथन II गलत है।
(d) Statement I is incorrect but Statement II is correct/कथन II असत्य है किन्तु कथन II सही है।

Ans. (a) : कांट के अनुसार अपराधी को दण्ड इसलिए दिया जाना चाहिए कि उसने अपराध किया है। उसके अपराध का इनाम, उसके विनाशकारी मूल्य के बराबर दिया जाना चाहिए। अतः काण्ट दण्ड के प्रतिकारात्मक सिद्धान्त का समर्थक है। जहां हत्या करने की सजा मृत्युदण्ड हो। वास्तव मे हत्या के लिए मृत्युदण्ड के समर्थक प्रतिकारात्मक न्याय और समाज के नैतिक रोष के आधार पर अपने मत का समर्थन करते हैं।

88. Read the following two statements carefully and choose the most appropriate option:
Statement I : Charles L. Stevenson regarded evaluative utterances and factual statements as having different logical characters.
Statement II : Charles L. Stevenson considered that there could be no logical relationship between evaluative and factual utterances.
निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़े तथा सबसे उपयुक्त विकल्प को चुनें:
कथन I- चार्ल्स एल स्टीवेंसन ने मूल्यांकन - परक कथन तथा तथ्यात्मक कथनों को भिन्न तार्किक विशेषताओं से युक्त माना
कथन II- चार्ल्स एल स्टीवेंसन ने माना की मूल्यांकन-परक कथन तथा तथ्यात्मक कथनों के बीच कोई सम्बन्ध नहीं होता

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर का चुनाव कीजिए:

(a) Both Statement I and Statement II are correct
कथन I और II दोनों सही हैं।

(b) Both Statement I and Statement II are incorrect/कथन I और II दोनों गलत हैं।

(c) Statement I is correct but Statement II is incorrect/कथन I सत्य है किन्तु कथन II गलत है।

(d) Statement I is incorrect but Statement II is correct/कथन I असत्य है किन्तु कथन II सही है।

Ans. (a) : चार्ल्स एल. स्टीवेन्सन नैतिक भाषा के सन्दर्भ में एक संवेगवादी दार्शनिक हैं। स्टीवेन्सन अवर्णनात्मक सिद्धान्त के समर्थक है। अवर्णनात्मक सिद्धान्त के अनुसार नैतिक निर्णय मूलतः तथ्यात्मक निर्णयों से अलग होते हैं और वे किसी तथ्य का वर्णन मात्र न करके निर्णयकर्त्ता की भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं।

89. Which of the following branches of ethics is construed as an inquiry into the meanings and logical properties of the MORAL TERMS?
नीतिशास्त्र की कौन सी निम्नलिखित शाखा को नैतिक पदों के अर्थ और तार्किक विशेषताओं विषयक अन्वेषण के रूप में संप्रेषित किया जाता है?

(a) Metaethics/अधिनितिशास्त्र

(b) Act-Deontology
कृत्य-फलनिरपेक्ष नीतिशास्त्र (एक्ट-डीओंटोलोजी)

(c) Rule-Deontology
नियम-फलनिरपेक्ष नीतिशास्त्र (रूल-डीओंटोलोजी)

(d) Conventional Ethics/पारंपरिक नीतिशास्त्र

Ans. (a) : नीतिशास्त्र की चार शाखाएं हैं- (1) वर्णनात्मक नीतिशास्त्र (2) मानकीय नीतिशास्त्र (3) अधिनीतिशास्त्र (4) व्यावहारिक नीतिशास्त्र। अधिनीतिशास्त्र (Meta ethics) में नैतिक पदों के अर्थ और तार्किक विशेषताओं का विश्लेषण एवं जाँच की जाती है।

90. Which of the following statements are true of The Separation Thesis in the area of Business Ethics?
व्यवसायिक नीतिशास्त्र के क्षेत्र में पृथक्करण पक्ष के निम्नलिखत कथनों में कौन से सही हैं?

(a) Sentences like "X is a business decision" have no moral content/"X एक व्यवसायिक विनिश्चय है" जैसे वाक्यों में कोई नैतिक अंश नहीं है।

(b) Sentences like "X is a moral decision" have no business content/ X एक नैतिक विनिश्चय है" जैसे वाक्यों में कोई व्यवसायिक अंश नही है।

(c) Sentences like "X is a business decision" has both moral and business content/ X एक व्यावसायिक विनिश्चय है" जैसे वाक्यों में नैतिक और व्यवसायिक दोनों अंश है।

(d) Sentences like "X is a business decision" have a moral content whereas sentences like "X is a moral decision" may or may not have business content
"X एक व्यावसायिक विनिश्चय है" जैसे वाक्यों में नैतिक अंश है "जबकि X एक नैतिक विनिश्चय है" जैसे वाक्यों में व्यवसायिक अंश हो भी सकता है अथवा नहीं भी हो सकता है।

Choose the correct answer from the options given below:/नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुने :

(a) A and B only/केवल A और B

(b) A and D only/ केवल A और D

(c) C and D only/ केवल C और D

(d) B and C only/ केवल B और C

Ans. (a) : गैरेट के अनुसार, "व्यावसायिक नीतिशास्त्र उस विशेष दायित्व का अध्ययन करता है जिसे एक व्यक्ति और नागरिक स्वीकार करते हैं जब वह व्यवसाय की दुनिया का हिस्सा बन जाता है।" व्यावसायिक नैतिकता नैतिक सिद्धान्तों की व्यवस्था और व्यवसाय पर लागू आचरण को सन्दर्भित करती है।"

Direction (91-95) : Read the passage and answer the following question:-

The value of philosophy is, in fact, to be sought largely in its very uncertainty. The man who has no tincture of philosophy goes through life imprisoned in the prejudices derived from common sense, from the habitual beliefs of his age or his nation, and from convictions which have grown up in his mind without the co-operation or consent of his deliberate reason To such a man the world tends to become definite, finite, obvious; common objects rouse no questions, and unfamiliar possibilities are contemptuously rejected. As soon as we begin to philosophize, on the contrary, we find that even the most everyday things lead to problems to which only very incomplete answers can be given. Philosophy, though unable to tell us with certainty what is the true answer to the doubts which it raises, is able to suggest many possibilities which enlarge our thoughts and free them from the tyranny of custom. Thus, while diminishing our feeling of certainty as to what things are, it greatly increases our knowledge as to what they may be; it removes the somewhat arrogant dogmatism of those who have never travelled into the region of liberating doubt, and it keeps alive our sense of wonder by showing familiar things in an unfamiliar aspect. Philosophy is to be studied, not for the sake of any definite answer to its question since no definite answer can, as a rule, be known to be true, but rather for the sake of the questions themselves; because these questions enlarge our conception of what is possible, enrich our intellectual imagination and diminish the dogmatic assurance which closes the mind against speculation; but above all because, through the greatness of the universe which philosophy contemplates, the mind also is rendered great, and becomes capable of that union with the universe which constitutes its highest good.

दर्शन शास्त्र का महत्व मुख्यतः उसकी अनिश्चितता में खोजा जाना चाहिए। कोई व्यक्ति जिसे दर्शन शास्त्र का ज्ञान नहीं ऐसे पूर्वाग्रहों की कैद में अपना जीवन व्यतीत करता है जिनका निर्माण, किसी व्यक्ति के राष्ट्र तथा समान्य परिवेश से जुड़ी आदतगत मान्यताओं तथा ऐसे विश्वासों से जनित लोकमान्यताओं से होता है जो उसके विचारशील तर्क स्वीकृति अथवा सहयोग के बिना ही उत्पन्न हो गए होते हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए संसार निश्चित, सीमित तथा सुस्पष्ट हो जाता है, सामान्य विषय पर उसके लिए कोई प्रश्न नहीं उठते, अन्जानी संभाव्यताएं उसके द्वारा पूर्वाग्रहों द्वारा अस्वीकृति कर दी जाती है, उसके विपरीत हम जैसे ही दार्शनिक-चिंतन आरम्भ करते हैं, हम पाते हैं कि प्रतिदिन वस्तुएँ भी ऐसे प्रश्नों से पूर्ण हो जाती हैं,

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

जिसके केवल अपूर्ण उत्तर ही दिये जा सकते हैं। दार्शनशास्त्र हालांकि अपने द्वारा उठाये गए संशयों का निश्चित उत्तर नहीं दे पाता, परन्तु वह हमें बहुत सी संभावनायें जरूर दर्शा देता है जिससे हमारी सोच का दायरा बढ़ता है तथा हमारी सोच को परम्पराओं के बंधन से मुक्ति मिलती है। इससे ऐसे लोगों की हठी रूढ़ीवादिता का वरण होता है, जिन्होंने स्वतन्त्रतादायी संशय के क्षेत्र में कभी प्रवेश ही नहीं किया तथा यह जानी-पहचानी वस्तुओं को अनजाने परिपेक्षों में प्रस्तुत कर हमारे अश्चार्यबोध को भी सजीव रखता है।

दर्शन-शास्त्र को निश्चित उत्तरों के लिए नहीं पढ़ा जाना चाहिए क्योंकि किन्हीं भी उत्तरों को कभी भी निश्चितता के साथ सही नहीं जाना जा सकता, बल्कि इसे प्रश्नों के महत्व के लिए ही पढ़ा जाना चाहिए क्योंकि प्रश्न संभावनाओं की हमारी समझ को बढ़ाते हैं, हमारी बोधिक कल्पना को संवर्धित करते हैं, तथा ऐसी रूढ़िगत सुनिश्चितता का वरण करते हैं, जो हमारी बुद्धि की विचारशीलता को सीमित करती है; किन्तु सर्वोपरि इसे इसलिए पढ़ा जाना चाहिए, क्योंकि दर्शन-शास्त्र विश्व की जिस विशालता का मनन करता है जिससे बुद्धि भी उसी विशालता को प्राप्त करती है तथा उस ब्रह्माण्ड से तादात्म्य स्थापित करती है जिससे परमाशुभ का निर्माण होता है,

91. "As soon as we begin to philosophize, on the contrary, we find that even the most everyday things lead to problems to which only very incomplete answer can be given." With reference to the overall import of the passage, what could be possibly inferred from this statement?
''उसके विपरीत हम जैसे ही दार्शनिक-चिंतन आरम्भ करते हैं, हम पाते हैं कि प्रतिदिन वस्तुएं भी ऐसे प्रश्नों से पूर्ण हो जाती है जिसके केवल अपूर्ण उत्तर ही दिए जा सकते है''. गद्यांश के अभिप्राय के सन्दर्भ में, इस कथन में संभवतः क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(a) The ultimate fate of philosophy is to become decadent in skepticism/दर्शनशास्त्र की अंतिम नियति संशयवाद में ह्रासोन्मुखी हो जाना है
(b) Philosophy should rather work to preserve our already existent ken of knowledge
दर्शनशास्त्र को पहले से ही हमारे ज्ञान की विद्यमान सीमा का रक्षण करना चाहिए।
(c) We may never find definite answer to certain question but philosophers should keep raising questions for their emancipator value/हम कुछ प्रश्नों के निश्चित उत्तर को कभी नहीं पा सकते लेकिन दर्शनशास्त्रियों को उनके मुक्तिदायक मूल्यों के लिए प्रश्नों को करते रहना चाहिए।
(d) Philosophy should stop engaging with questions regarding nature of things
दर्शनशास्त्र को चीजों की प्रकृति से सम्बन्धित प्रश्नों के साथ उलझने से बचना चाहिए।

Ans. (c) : दर्शनशास्त्र एक ऐसी विधा है, जहां जीवन व जगत, ज्ञान और व्यवहार आदि से सम्बन्धित कई अनसुलझे प्रश्नों का समाधान खोजने का प्रयास चिंतन के माध्यम से किया जाता है। यह जरूरी नही है कि कोई निश्चित उत्तर मिले लेकिन दार्शनिकों का काम है कि उनके मुक्तिदायक मूल्यों को पाने के लिए निरन्तर चिन्तन और प्रश्न करते रहना चाहिए। एक अच्छा दार्शनिक वही है जिसे प्रश्न की समझ हो और लोगों में उस प्रश्न की समझ विकसित कर सके।

92. Which of the following statement could be said to be true with regard to the above passage?
उपरोक्त गद्यांश के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों में किस को सही माना जा सकता है?

(A) It presents an argument against dogmatism
यह रूढ़िवादिता के विरोध में तर्क प्रस्तुत करता है।
(B) It prsent an argument in favour of scepticism
यह संशयवाद के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करता है
(C) It presents an argument in favour of critical nature of philosophy/यह दर्शन-शास्त्र के आलोचनात्मक स्वरूप के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करता है
(D) It present an argument against the speculative nature of Philosophy/यह दर्शन-शास्त्र के परिकल्पनात्मक स्वरूप के विरोध में तर्क प्रस्तुत करता है

Choose the correct answer from the options given below: /नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर को चुने

(a) A and D only/केवल A और D
(b) A and C only/ केवल A और C
(c) C and D only/ केवल C और D
(d) A and B only/ केवल A और B

Ans. (b) : प्रस्तुत गद्यांश में पूर्वाग्रहों एवं रूढ़िवादिता के विरोध में तर्क प्रस्तुत किया गया है। प्रश्न करने की ओर निश्चित उत्तर न खोजने के कारण हम रूढ़िवादिता से बच सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह गद्यांश दर्शनशास्त्र के आलोचनात्मक स्वरूप को भी उदघाटित करता है।

93. What is being interpreted as liberating nature of philosophy in the above passage?
उपरोक्त गद्यांश में दर्शनशास्त्र के स्वतंत्र करने वाली प्रकृति के रूप में क्या व्याख्यायित हो रहा है?

(a) Pursuit of philosophy explicates the limitations of our customary ways of thinking/दर्शनशास्त्र का लक्ष्य सोचने के हमारे प्रचलित तरीकों की सीमाओं को सुस्पष्ट करना है
(b) Philosophy shows us the limits of our thought/दर्शनशास्त्र हमारे विचार की सीमा को हमें दर्शाता है।
(c) Philosophy helps us preserve our already existent limit of knowledge/दर्शनशास्त्र हमारे पहले से ज्ञान की विद्यमान सीमा का रक्षण करने में हमारी सहायता करता है।
(d) Philosophy liberates us by providing us definite answer to metaphysical questions
दर्शनशास्त्र तत्वमीमांसीय प्रश्नों के निश्चित उत्तर प्रदान करने के द्वारा हमें स्वतंत्र करता है।

Ans. (a) : दर्शनशास्त्र का लक्ष्य हमारी सोच के दायरे को बढ़ाना है ताकि हम पूर्वाग्रहों से मुक्त हो सकें। और यह तभी सम्भव है जब सोचने के हमारे प्रचलित तरीकों की सीमाएं सुस्पष्ट हो। और यह कार्य दर्शनशास्त्र का है।

94. According to the passage the phrase- "feeling of certainty as to what things are"- is being associated with which of following terms used in the passage?
गद्यांश के अनुसार वाक्यांश- ''वस्तुएं क्या हैं इस विषय में निश्चितता''- निम्नलिखित में से किस विषय से जुड़ा है?

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) Intellectual Imagination/बौद्धिक कल्पनाशीलता
(b) Dogmatism/मताग्रह/रूढ़िवादिता
(c) Speculation/प्रकाल्पना/मीमान्सीय चिंतन
(d) Deliberate Reason/मंत्रणा तर्कबुद्धि

Ans. (b) : दर्शनशास्त्र को निश्चितता के अर्थ मे नहीं पढ़ा जाना चाहिए बल्कि अनिश्चितता के अर्थ में। वस्तुएं क्या हैं इस विषय में निश्चितता की भावना मतान्धता या पूर्वाग्रह है। निश्चतता की भावना रूढ़िगत सुनिश्चितता का वरण करती है। जो हमारी बौद्धिक विशालता को सीमित करती है।

95. Which of the following is a crucial contributing factor to the value of philosophy according to the author of the passage?
गद्यांश के लेखक के अनुसार निम्नलिखित में से कोन-दर्शनशास्त्र के मूल्य में योगदान देने वाला एक महत्वपूर्ण घटक है?
(a) Adhering to certainty/निश्चिता के साथ संसक्त होना
(b) Adhering to definite answers
निश्चित उत्तरों के साथ संसक्त होना
(c) Unquestioned assurance/अपरीक्षित आश्वासन
(d) Questions that we raise as philosophers
प्रश्न जिन्हें हम दर्शनशास्त्री के रूप में पूछते हैं।

Ans. (d) : प्रश्न वह जो हम एक दर्शनशास्त्री के रुप में पूछते हैं, दर्शनशास्त्र के मूल्य मे योगदान देने वाला एक महत्त्वपूर्ण घटक है। निश्चितता किसी भी प्रकार की हो उसकी तथा अपरीक्षित अश्वासन की आलोचना यहां की गयी है।

Question (96-100) : Read the passage and answer the following question.

The Logicians intend to mean that word-interpenetrated perception may be analyzed into two elements, viz. (1) its knowledge element and (2) its word -element. The knowledge element represent perceptions. It is generated by the sense-organs If it illuminates its object aright then it is piece of valid perceptual knowledge. Again, if its word-element, i.e., the designation if the above perception such as the apprehension of colour or that of taste is stressed upon then it does not discharge the function of an apprehension (i.e., the words, e.g., the apprehension of colour etc., do not reveal colour but simply signify an object). Thus, the word 'apprehension' play the role of an object. Hence, in the capacity of a word, it is not at all, a piece of knowledge. Thus, there is no possibility of its being called a fifth type of valid knowledge, i.e., a new species of valid knowledge.

Though in some cases, the recollection of the name of an objects is one of the conditions of determinate perception yet it is not derived only from the knowledge of the word since the sense-organ plays the important role of a cause but the remembrance of the name plays the subordinate part of an accessory condition like a lamp to the eye.

Now, if the hypothesis that determinate perception is sense - perception is thus proved then a new difficulty is to be faced viz., indeterminate perception does not come within the province of perception.

On the other hand, some critics think that the so - called determinate perception is derived from the verbal testimony since it is a piece of verbalized knowledge. Now, a retort to this critical remark is as follows:

If even some word - interpenetrated knowledge is proved to be sense - perception then there is no doubt that apprehension which is absolutely free from the association with words is sense - perception.

The argument –"the recollection of the name of an object is one of the conditions of determinate perception yet it is not derived only from the knowledge of the word" is aimed to prevent equivocation between which of the following two kinds of cognitions?
(1) Sabda with Nirvikalpaka Pratyaksa
(2) Savikalpaka Pratyakṣa with Upamana
(3) Savikalpaka Pratyakṣa with sabda
(4) Nirvikalpaka Pratyakṣa with Savikalpaka Pratyaksa

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए तथा उसके बाद दिए गए प्रश्न का उत्तर दीजिये :

नैयायिको के अनुसार शब्दाबद्ध प्रत्यक्ष को दो अवयवों में विश्लेषित किया जा सकता है (1) उसका ज्ञान-अवयव तथा (2) उसका शब्द-अवयव ज्ञान अवयव प्रत्यक्ष को दर्शाता है तथा इन्द्रियों द्वारा जनित होता है। यदि वह अपने विषय को सही प्रकार से प्रकाशमान कर रहा है तो वह वैध प्रत्यक्ष-ज्ञान का अंश है। यदि उसके शब्द अवयव जैसे की रंग, स्वाद का बोध के नाम को अधिक महत्व दिया जाये तब वह अपने अवबोध के कार्य का निष्पादन नहीं कर पायेगा (रंग से जुड़ा शब्द रंग का बोध तो कराता है किन्तु रंग की प्रस्तुति नहीं करता वरन केवल उसके विषय के रूप में इंगित करता है।) अतः 'बोध' शब्द यहाँ विषय की भूमिका निभाता है। इसलिए शब्द की भूमिका में वह किसी भी रूप में ज्ञान का अंश नहीं है। इसलिए इसकी, पाँचवे प्रकार के ज्ञान यदि वैध ज्ञान की नयी प्रजाति कहलाने, की कोई संभावना नहीं होती।

हालाँकि कुछ परिस्थितियों में वस्तु के नाम का संस्मरण सविकल्पक प्रत्यक्ष की शर्तो में से एक है, तब भी उसे शब्द के ज्ञान से जनित नहीं माना जा सकता क्योंकि इन्द्रियां वहां कारण की विशेष भूमिका निभाती हैं किन्तु संस्मरण यहाँ आँखों के देखने के लिए प्रकाश-स्रोत के सहायक भूमिका की तरह एक गौण भूमिका निभाता है।

अब यदि इस प्राक्कल्पना कि सविकल्पक प्रत्यक्ष इन्द्रिय-प्रत्यक्ष है को प्रमाणित मान भी लिया जाये तब एक नयी समस्या सामने आ जाती है कि निर्विकल्पक प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष की परिधि से बाहर चला जाता है।

दूसरी ओर कुछ समीक्षकों के अनुसार तथाकथित सविकल्पक प्रत्यक्ष शब्द-प्रमाण से ही जनित होता है क्योंकि वह शब्दिकृत ज्ञान का ही अंश है, इसका परिहार करने के लिए निम्नलिखित आलोचनात्मक टिप्पणी है:

यदि शब्दाबद्ध ज्ञान का इन्द्रिय-प्रत्यक्ष होना प्रमाणित मान भी लिया जाये तब यह निःसंशय कहा जा सकता है कि वह अवबोध जो शब्दबद्धता से बिल्कुल स्वतन्त्र है इन्द्रिय प्रत्यक्ष होता है।

96. The argument- "the recollection of the name of an object is one of an object is one of the conditions off determinate perception yet it is not derived only from the knowledge of the word" is aimed to prevent equivocation between which of the following two kinds of cognitions?
''कुछ परिस्थितियों में वस्तु के नाम का संस्मरण सविकल्पक प्रत्यक्ष की शर्तों में से एक है, तब भी उसे शब्द के ज्ञान से जनित नहीं माना जा सकता'' इस तर्क का उद्देश्य संज्ञान के निम्नलिखित दो प्रकारों में से किनके बीच अनेकार्थता का निवारण करना है?

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) Sabda with Nirvikalpaka Pratyaksa
निर्विकल्पक प्रत्यक्ष का शब्द के साथ
(b) Savikalpaka Pratyaksa with Upamana
उपमान का सविकल्पक प्रत्यक्ष के साथ
(c) Savikalpaka Pratyaksa with sabda
शब्द का सविकल्पक प्रत्यक्ष के साथ
(d) Nirvikalpaka Pratyaksa with Savikalpaka Pratyaksa/सविकल्पक प्रत्यक्ष का निर्विकल्पक प्रत्यक्ष के साथ

Ans. (c) : हालांकि कुछ परिस्थितियों में वस्तु के नाम का संस्मरण सविकल्प प्रत्यक्ष की शर्तों में से एक है, परन्तु उसे शब्द के ज्ञान से जनित नहीं माना जा सकता है। ऐसा इसलिए है कि इन्द्रियां वहां कारण की विशेष भूमिका निभाती हैं। किन्तु संस्मरण यहां आंखों को देखने के लिए प्रकाश स्रोत के सहायक की भूमिका की तरह एक गौण भूमिका निभाता है। ज्ञात हो नैयायिकों के अनुसार, अर्थपूर्ण शब्दों के संयोग से वाक्य बनता है। वाक्यों की सार्थकता के लिए निम्न शर्तों का होना जरूरी है-
(1) आकांक्षा (2) योग्यता (3) सन्निधि (4) तात्पर्य

97. Which of the following statements form a part of the overall theme of the given passage?
निम्नलिखित में से कौन से कथन दिए गए गद्यांश के समग्र मूल विषय के भाग है?
(A) Deliniating the domain of knowledge by perception/प्रत्यक्ष द्वारा ज्ञान के क्षेत्र का वर्णन
(B) Whether perception is only 'pure unverbalised seeing'/क्या प्रत्यक्ष केवल 'विशुद्ध शब्द-रहित अवलोकन' है,
(C) Whether perception should always have a determinate character/क्या प्रत्यक्ष का हमेशा एक निर्धारित स्वरूप होना चाहिए।
(D) Whether perception is a valid source of knowledge/क्या प्रत्यक्ष ज्ञान का वैध स्रोत है
(a) A, B and D only/केवल A, B और D
(b) A, B and C only/केवल A, B और C
(c) B and D only/केवल B और D
(d) B, C and D only/केवल B, C और D

Ans. (b) : प्रस्तुत गद्यांश में शब्दाबद्ध प्रत्यक्ष की बात नैयायिकों के सन्दर्भ में की गयी है। शब्दाबद्ध प्रत्यक्ष को दो तरह से विश्लेषित किया जा सकता है- (1) उसका ज्ञान अवयव (2) उसका शब्द-अवयव। प्रस्तुत गद्यांश में प्रत्यक्ष द्वारा ज्ञान के क्षेत्र, निर्धारित स्वरूप तथा प्रत्यक्ष का विशुद्ध शब्द रहित अवलोकन का विश्लेषण किया गया है।

98. What according to the author of the passage is the most appropriate condition to be fulfilled for perceptual knowledge to be deemed as valid?
गद्यांश के लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष ज्ञान को वैध मानेजाने के लिए उपयुक्त शर्त क्या है?
(a) It is indeterminate in character
वह स्वरूपगत निर्विकल्पक होता है
(b) It corresponds to the actual nature of the object thus revealed/वह तद्प्रकाशित वस्तु के वास्तविक रूप के अनुरूप होता है।
(c) It is determinate in character
वह स्वरूपगत सविकल्पक होता है
(d) It is both indeterminate and determinate in character/वह स्वरूपगत निर्विकल्पक तथा सविकल्पक दोनों होता है।

Ans. (b) : प्रत्यक्ष ज्ञान को वैध माने जाने के लिए, वह ज्ञान तद्प्रकाशित वस्तु के वास्तविक रूप के अनुरूप होना चाहिए। न्याय दर्शन के अनुसार, 'प्रत्यक्ष ज्ञान, ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होता है।'

99. Which of the following statements is true with regard to the role of remembrance in knowledge according to the passage?
गद्यांश के अनुसार ज्ञान में स्मृति/संस्मरण की भूमिका के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन स कथन सही है?
(a) Remembrance is an independent source of knowledge/स्मृति ज्ञान का स्वतन्त्र स्रोत है।
(b) Remembrance of name gives a determinate character to perception /नाम की स्मृति प्रत्यक्ष को एक सविकल्पक रूप प्रदान करता है।
(c) Remembrance of name constitutes indeterminate character of all perception
नाम की स्मृति समस्त प्रत्यक्ष को निर्विकल्पक रूप प्रदान करता है।
(d) Remembrance of name is an invariable part of knowledge through similarity/नाम की स्मृति उपमिति का अपरिहार्य भाग है,

Ans. (b) : नाम की स्मृति प्रत्यक्ष को एक सविकल्पक रूप प्रदान करती है। न्याय दर्शन में ज्ञान दो प्रकार का होता है- स्मृति और अनुभव। संस्कार मात्र से उत्पन्न होने वाला ज्ञान स्मृति कहलाता है। स्मृति से भिन्न ज्ञान को अनुभव कहते हैं।

100. Which of the following statements most appropriately represents the position of the author of the passage regarding perceptual knowledge?
प्रत्यक्ष ज्ञान के सम्बन्ध के निम्नलिखित में से कौन सा कथन गद्यांश के लेखक के मत को सर्वाधिक उपयुक्त रूप में प्रस्तुत करता है?
(a) Author accepts only indeterminate cognition as perception/लेखक केवल निर्विकल्पक संज्ञान को ही प्रत्यक्ष के रूप में स्वीकार करता है
(b) Author accepts only determinate cognition as perception/लेखक केवल सविकल्पक संज्ञान को ही प्रत्यक्ष के रूप में स्वीकार करता है
(c) Author accepts both determinate and indeterminate cognition as perception/लेखक केवल निर्विकल्पक और सविकल्पक संज्ञान दोनों को प्रत्यक्ष के रूप में स्वीकार करता है।
(d) Author makes no difference between perception and inference as source of knowledge/लेखक प्रमाण के रूप में प्रत्यक्ष और अनुमान के बीच कोई अंतर नहीं करता है।

Ans. (c) : लेखक निर्विकल्पक तथा सविकल्पक संज्ञान दोनों को प्रत्यक्ष के रूप में स्वीकार करता है। सुपरिभाषित होना सविकल्पक संज्ञान है, हालांकि सभी ज्ञान सविकल्प ही होते हैं। किन्तु सविकल्प होने के पूर्व उन्हें निर्विकल्प अवस्था से होकर गुजरना पड़ता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2020

दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)

(परीक्षा तिथि : 25.09.2020)

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. वैदिक परंपरा में ब्रह्माण्ड की नियंता शक्ति है-

(a) ईश्वर
(b) ब्राह्मण
(c) ऋत्
(d) ब्रह्मा

Ans. (c) : वैदिक परंपरा के अनुसार ऋत् ब्रहमाण्ड की नियंता शक्ति है। इसके द्वारा विश्वव्यवस्था के नैतिक पक्ष के साथ-साथ भौतिक पक्ष अर्थात् ब्रहमांड के नियम भी निर्देशित होते है। ब्रहमाण्डीय नियम, खगोलीय पिण्डों की नियमित गति एवं क्रम से ऋत् की अवधारणा आई।

2. निम्नलिखित में से कौन न्याय ज्ञान मीमांसा में सत हेतु का लक्षण नही है?

(a) पक्षसत्व
(b) सपक्षसत्व
(c) विपक्षसत्व
(d) अबाधित विषयत्व

Ans. (*) : जिस पदार्थ में साध्य की व्याप्ति और पक्षधर्मता के ज्ञान से अनुमिति की उत्पत्ति होती है उसे हेतु कहते है। न्याय ज्ञान मीमांसा में सत हेतु के निम्नलिखित लक्षण है- (1) पक्षसत्व, (2) सपक्षसत्व, (3) विपक्षसत्व, (4) अबाधित विषयत्व, (5) असतप्रतिपक्षत्व। यह सत् हेतु के पाँच लक्षण हैं। यद्यपि इस प्रश्न का उत्तर NTA ने विकल्प (c) माना है।

3. न्याय ज्ञान भी मीमांसा में हम सामान्य लक्षण सन्निकर्ष के द्वारा प्राप्त करते हैं-

(a) अग्नि की विशेष घटना का
(b) अग्नि की कुछ घटनाओं का
(c) अग्नित्व का
(d) अग्नि की सभी घटनाओं का

Ans. (d) : न्याय दर्शन के अनुसार इन्द्रिय और वस्तु का सन्निकर्ष (संपर्क) ही प्रत्यक्ष है। प्रत्यक्ष द्वारा प्राप्त ज्ञान यथार्थ होता है। न्याय का वस्तुवाद इसी विचार पर केन्द्रित है। न्याय के अनुसार विशेष वस्तुओं के प्रत्यक्षीकरण के आधार पर उसमें निहित संपूर्ण जाति का प्रत्यक्ष हो जाता है। अतः इस सामान्य लक्षण के आधार पर अग्नि की सभी घटनाओ का प्रत्यक्ष हो जाता है।

4. वैशेषिक तत्वमीमांसा में द्रव्यों के परिमाण के संदर्भ में सही कूट का चयन कीजिए?

(a) आकाश, काल, आत्मा
(b) आकाश, काल, मनस
(c) काल, परमाणु, दिक
(d) मनस, आत्मा, दिक

Ans. (a) : वैशेषिक तत्व मीमांसा में द्रव्यों के परिमाण के संदर्भ में सही क्रम इस प्रकार है- (1) पृथ्वी (2) अग्नि (3) वायु (4) जल (5) आकाश (6) दिक (7) काल (8) आत्मा (9) मन। अतः स्पष्ट है कि विकल्प (1) सही होगा।

5. वैदिक परम्परा में किसके लाभ के लिए यज्ञ किया जाता है?

(a) देवता
(b) ऋषि
(c) ऋत्विक
(d) यजमान

Ans. (d) : वैदिक परंपरा में यज्ञ को 'यजमान' के आत्मिक और भौतिक लाभ के लिए संपन्न किया जाता था यज्ञ कई प्रकार के होते थे जैस- (1) अश्वमेघ यज्ञ – चक्रवर्ती सम्राट बनने के लिए (2) राजसूययज्ञ- अन्य राज्यों से कर वसूल करने के लिए (3) पुत्रेष्ठि यज्ञ- पुत्र की कामना हेतु सपंन्न किया जाता था। (4) सोमयज्ञ – सभी की कल्याण की कामना के लिए (5) पर्जन्य यज्ञ –अच्छी वर्षा की कामना हेतु।

6. जैन तत्व मीमांसा में निम्न में से कौन अजीव द्रव्य नहीं है?

(a) आकाश
(b) स्थावर
(c) पुदगल
(d) धर्म

Ans. (b) : जैन द्रव्य के दो भाग है (i) आस्तिकाय (ii) अनास्तिकाय आस्तिकाय का विभाजन जीव और अजीव में हुआ है। अजीव तत्व चार प्रकार के है। (i) धर्म (ii) अधर्म (iii) पुदगल (iv) आकाश। अतः स्पष्ट है स्थावर का अजीव से कोई संबंध नही है इसे चार्ट द्वारा समझ सकते हैं -

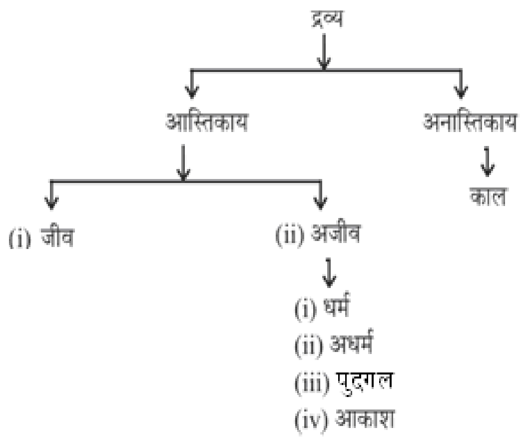

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

7. **नीचे दो कथन दिए गए हैं। एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है:**
अभिकथन (A): ईश्वर दुःख रहित है
तर्क (R) : ईश्वर शरीर रहित है।
उपर्युक्त कथनों के अवलोक में निम्न में से सही विकल्प चुनिए:
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है और (R) सही है।

Ans. (a) : भारतीय अस्तिक दार्शनिक परंपरा में ईश्वर को दुख रहित माना जाता है। यह सबको प्रकाश देने वाला तथा कर्मो का अधिष्ठाता है, सुख-दुख, प्रदान करता है। यह शरीर रहित है, यह विश्व में अपने कार्यों का संपादन माया के द्वारा करता है। माया इसकी शक्ति है। (A) और (R) दोनो सही है तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।

8. **यह किसका विचार है की नीले रंग का प्रत्यय और इसका ज्ञान एक ही है?**
(a) वसुबधु
(b) नागार्जुन
(c) कुमारिल
(d) प्रशस्तपाद

Ans. (a) : वसुबंधु, हीनायानी वैभाषिक वेत्ता थे बाद में महायान मत स्वीकार कर लिया था। वैभाषिक न्याय में ज्ञेय और ज्ञान दोनो को प्रत्यक्ष माना जाता है, वसुबन्धु का मानना था नीले रंग प्रत्यय और इसका ज्ञान, प्रत्यक्ष और एक ही है।

9. **श्रेयस और प्रेयस के संबंध में किसके बीच संवाद हुआ था?**
(a) प्रजापति और इन्द्र
(b) विरोचन और प्रजापति
(c) यम और नचिकेता
(d) याज्ञवल्क और मैत्रेयी।

Ans. (c) : श्रेयस और प्रेयस का संबंध यम और नचिकेता संवाद से है। इसका वर्णन कठ उपनिषद में है। नचिकेता कहते हैं कि मुझे धन अर्थात् प्रेयस नहीं बल्कि आत्म तत्व का मार्ग अर्थात् 'श्रेयस' की कामना है। दोनों का संवाद ही, श्रेयस और प्रेयस के नाम से जाना जाता है।

10. **अपूर्व के संबंध में निम्न में से कौन असत्य है?**
(a) अपूर्व जगत का पालन कर सका है।
(b) अपूर्व कर्म और कर्मफल के बीच की कड़ी है।
(c) अपूर्व कर्म में निहित कार्य शक्ति है।
(d) अपूर्व कर्ता की आत्मा में उत्पन्न होता है।

Ans. (a) : मीमांसा दर्शन के अनुसार अपूर्व एक अदृश्य पारलौकिक शक्ति है जो कर्म से उत्पन्न होती है और कर्मफल तक ले जाती है। इस प्रकार यह कर्म तथा उसके परिणाम के बीच एक कड़ी है अपूर्व कर्म का फल त्वरित न प्रदान कर भविष्य में प्रदान करता है। यह कर्ता की आत्मा में उत्पन्न होता है।

11. **आग ठंडी है क्योंकि यह द्रव्य है –**
उपर्युक्त अनुमान में किस प्रकार का दोष है?
(a) सव्यभिचार
(b) विरुद्ध
(c) असिद्ध
(d) बाधित

Ans. (d) : जब हेतु द्वारा सिद्ध साध्य को दूसरे प्रमाण से निश्चित रूप से खंडन हो जाए जो उसे बाधित हेत्वाभास (दोष) कहा जाता है। यहाँ द्रव्य के आधार पर आग का ठण्डा होना प्रमाणित किया गया है। श्पर्स ज्ञान द्वारा यह खंडन हो जाता है। श्पर्स ज्ञान इसका उलटा सिद्धकरता है की आग में गर्मी है। बाधित हेत्वाभास का निगमन अनुभव द्वारा खंडित हो जाता है।

12. **यह निम्न में से किसका कथन है कि ''भविष्य के बड़े शुभ की तुलना में वर्तमान छोटे शुभ को तुलना नहीं दी जानी चाहिए।**
(a) सिज्विक
(b) हॉब्स
(c) स्पेंन्सर
(d) कांण्ट

Ans. (a) : हेनरी सिजविक उपयोगितावादी थे। इनका मानना था की भविष्य के बड़े शुभ की तुलना में छोटे शुभ को महत्व नहीं दिया जाना चाहिए। इनके अनुसार व्यक्ति को अपने आप से विवेकपूर्ण आत्मप्रेम जरूर करना चाहिए क्योंकि ऐसा करना अन्तः प्रज्ञा से सुसंगत है इसके तहत उसे क्षणिक सुखों पर बल देने की बजाय स्थायी सुखों को अधिक महत्व देना चाहिए।

13. **यह किसका मत है कि कानून व्यक्ति के लिए बना है न की व्यक्ति कानून के लिए?**
(a) काण्ट
(b) मैकेंजी
(c) जैकोबी
(d) स्पेंन्सर

Ans. (c) : ''कानून व्यक्ति के लिए बना है न की व्यक्ति कानून के लिए'' यह मत जैकोबी का है। जैकोबी को प्रसिद्ध सामाजिक दार्शनिक विचार 'नास्तिवाद' को शुरू करने का जिम्मेदार माना जाता है। यह ऐसा दार्शनिक सिद्धांत है जो जीवन के एक या अधिक अर्थपूर्ण पहलुओं का नकारता है।

14. **यह किसका विचार है की ''विज्ञान शाब्दिक विचार है, परन्तु दर्शन प्रतीकात्मक चिंतन है।''**
(a) जे कृष्णमूर्ति
(b) एम. एन. राय
(c) के. सी. भट्टाचार्य
(d) मौलाना आजाद

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : समकालीन भारतीय दार्शनिकों में के. सी. भट्टाचार्य का महत्वपूर्ण स्थान है।। दर्शन और विज्ञान की तुलना पर इनका महत्वपूर्ण कथन है कि "विज्ञान शाब्दिक विचार है, परन्तु दर्शन प्रतीकात्मक चिंतन है।"
के. सी. भट्टाचार्य समकालीन दर्शन में अपने आत्मपरकता के विचार के लिए भी जाने जाते हैं। इन्होंने आत्मपरकता के तीन स्तर सुझाए- (i) शारीरिक आत्मपरकता (ii) मानसिक आत्मपरकता (iii) आध्यात्मिक आत्मपरकता।

15. ब्राह्मण वर्ण के संबंध में निम्न में से कौन गुण के संगत है?
(a) प्रशान्ति, संयम
(b) शुचता, क्षमा
(c) इन्द्रियनियंत्रण, विवेक
(d) नायकत्व और सम्प्रभुता

Ans. (d) : ब्राह्मण वर्ण की कुछ विशेषताएं हैं जैसे- प्रशान्ति, संयम, शुचता एवं क्षमा, इन्द्रिय नियंत्रण और विवेक आदि। परन्तु नायकत्व और संप्रभुता ब्राह्मण वर्ण की विशेषता नहीं है।

16. निम्न में से कौन सा कथन असत्य है?
(a) असत्य तर्क वाक्य का अभिप्राय कोई भी तर्कवाक्य है।
(b) सत्य तर्कवाक्य का अभिप्राय कोई भी तर्कवाक्य है।
(c) तर्कवाक्यात्म प्रकार्य सत्य अथवा असत्य हो सकता है।
(d) एकल तर्कवाक्य में दृष्टांतीकरण की आवश्यकता नहीं होती।

Ans. (c) : तर्कवाक्य के अंतर्गत यह कथन के असत्य है की "तर्क वाक्यात्मक प्रकार्य सत्य अथवा असत्य हो सकता है।" शेष सभी कथन सत्य हैं।

17. निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(a) '-' निषेध एक द्विचर सत्यता फलन संक्रिया है।
(b) 'आगमन प्लुति (इनुक्टिव लीप), किसी आगमनात्मक तर्क के निष्कर्ष को संभव बनाता है।
(c) बुलीय व्याख्या केवल तर्क वाक्यो के विरोधाभासी विरोध वर्ग को स्वीकार करती है।
(d) सत्यता सारणी एक निर्णय प्रक्रिया है।

Ans. (a) : यह कथन की "निषेध एक द्विचर सत्यता फलन संक्रिया है" असत्य है। शेष कथन जैसे- (2) आगमन प्लुति किसी आगमनात्मक तर्क के निष्कर्ष को संभव बनाता है। (3) बुलीय व्याख्या केवल तर्क वाक्यों के विरोधाभासी विरोध वर्ग को स्वीकार करती है। (4) सत्यता सारणी एक निर्णय प्रक्रिया है, सत्य है।

18. दिए गए वाक्य में निम्नलिखित में से कौन सही प्रतीकात्मक विकल्प है?
(a) $R \supset S$
(b) $S \supset (RV - R)$
(c) $(RV\text{-}R) \supset S$
(d) $(R - R) \supset S$

Ans. (c) : W = हम तैरेंगे, R = वर्षा होगी का सही प्रतीकात्मक विकल्प है = $(RV - R) \supset S$

19. निम्न में से कौन सा चिकित्सा नैतिकता से सीधे संबंधित नहीं है?
A. उपचार के लिए सहमति और उपचार के लिए कर्तव्य
B. सत्य बोलना
C. पितृवृत्ति
D. गोपनीयता
E. चिकित्सा दवाओं और अन्य चिकित्सा उत्पादों का विज्ञापन
(a) केवल A, B, D, E
(b) केवल A, C और E
(c) केवल A, B, C, D और E
(d) केवल A, B, C, D

Ans. (*) : चिकित्सा दवाओं और अन्य चिकित्सा उत्पादों का विज्ञापन, चिकित्सा नैतिकता से सीधे संबंधित है। जबकि उपचार के लिए सहमति और कर्तव्य, सत्य बोलना, पितृवृत्ति तथा गोपनीयता का सीधे संबंध चिकित्सा नैतिकता से नही है। इस प्रश्न को NTA ने विलोपित कर दिया है।

20. ह्यूम के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है?
(a) कथन सत्य है, यदि वह सत्यापनीय है
(b) तथ्यगत ज्ञान असंभव है
(c) तत्वमीमांसीय कथन अर्थहीन है
(d) कारणता संबंध सतत संयोग पर आधारित है।

Ans. (d) : ह्यूम मुख्य रूप से संशयवादी थे। दर्शन में संशयवाद को अनुभववाद का तार्किक परिणाम माना जाता है। ह्यूम का मानना था की कारणता संबंध संतत संयोग पर आधारित है। शेष कथनो की सत्यता से ह्यूम सहमत नहीं थे।

21. सभी ज्ञान संप्रयात्मक है यह किसका विचार है?
(a) एनेक्जिमेन्डर (b) एनोक्जीमेनीज
(c) प्रोटोगोरस (d) सुकरात

Ans. (d) : सभी ज्ञान संप्रयात्मक हैं यह विचार सुकरात का है। सुकरात ग्रीक के महान दार्शनिकों में से थे। सुकरात ने सामान्य को ही संप्रत्यय कहा है। वे एक ही जाति की अलग-अलग वस्तु विशेषों में निहित सारगुणों को सामान्य कहते थे।

22. 'द्रव्य कुछ है लेकिन क्या है मैं नहीं जानता' अधोलिखित में से यह किसका विचार है?
(a) बर्कले और डेकार्टस
(b) स्पिनोजा और डेविड ह्यूम
(c) केवल लाक
(d) डेकार्ट और लाक

Ans. (c) : लाक कहते हैं कि प्रत्यक्ष केवल गुणों का होता है। इसी को प्रत्यय प्रतिनिधित्वाद भी कहते हैं। लाक के अनुसार ज्ञान का एक मात्र श्रोत प्रत्यक्ष है। अतः द्रव्य का प्रत्यक्ष न होने के कारण उन्होंने द्रव्य को अज्ञेय कहा। हमारे लिए द्रव्य गुणों का समुदाय मात्र हैं, किन्तु गुणों के अतिरिक्त उनका आधारभूत द्रव्य होना अवश्य चाहिए भले ही वह हमारे लिए अज्ञेय हो। इसीलिए लाक ने कहा "द्रव्य कुछ है लेकिन क्या, मैं नहीं जानता।"

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

23. ईश्वर के संबंध में अरस्तू का सही विवरण क्या है?
(a) शुद्ध द्रव्य और शुद्ध संभाव्यता
(b) शुद्ध द्रव्य और शुद्ध वास्तविकता
(c) शुद्ध आकार और शुद्ध वास्तविकता
(d) शुद्ध आकार और शुद्ध संभाव्यता

Ans. (c) : अरस्तू का कथन है की तत्व शब्द का प्रयोग वस्तुतः सामान्य या स्वरूप (Form) के लिए ही होना चाहिए। किन्तु शुद्ध स्वरूप (Pure Form) जो जड़ता (Matter) से नितान्त रहित हो केवल ईश्वर और आत्मा ही है। अतः ये ही वस्तुतः तत्व है।

24. अधोलिखित में से डेविड ह्यूम को क्या स्वीकार्य है?
(a) कारणता मानवीय बुद्धि की एक कोटि है।
(b) कारणता प्राकृतिक एकरूपता का एक प्रकार है।
(c) कारणता, कारण और कार्य के बीच एक अनिवार्य संबंध है।
(d) कारणता मानवीय मन की आदत है।

Ans. (d) : ह्यूम का मानना था की कारणता मानवीय मन की आदत है। ह्यूम का विचार है कि कारणता का आरोप करना व्यर्थ है। कारण और कार्य का संबंध वास्तविक नहीं है। वाह्य जगत में हम दो घटनाओं को साथ घटते देखते है। ऐसा सदैव होने की अनुभूति के आधार पर हम एक को कार्य और दूसरे को कारण समझ लेते हैं।

25. निम्न में से कौन स्पिनोजा दर्शन के संगत है?
(a) अज्ञेयवाद
(b) अनीश्वरवाद
(c) सर्वेश्वरवाद
(d) ईश्वरवाद

Ans. (c) : स्पिनोजा सर्वेश्वरवदी थे। स्पिनोजा द्वैत को नकारते थे। उनके अनुसार सत्ता एक है। वह स्वतंत्र और सर्वव्यापी है। सब कुछ द्रव्य या द्रव्य ही सब कुछ है। स्पिनोजा ने अपने द्रव्य को अर्मूत से बचाने के लिए ईश्वर नाम दिया है। इस तरह स्पिनोजा के द्रव्य सिद्धांत से उसका सर्वेश्वरवाद फलित होता है।

26. निम्न में से किस दार्शनिक का मत है की वह चाँदी जो सीपी में आभासित होती है न तो वास्तविक है न तो अवास्तविक
(a) विशिष्टाद्वैतवादी
(b) शून्यवादी
(c) सांख्य
(d) अद्वैती

Ans. (d) : अद्वैत वेदान्त का मानना है की भ्रम में जो पदार्थ दिखाई देता है उसे न तो वास्तविक कहा जा सकता है न तो अवास्तविक। भ्रम में जो वस्तु दिखाई देती है वह अनिर्वचनयी होती है। विचार करने पर पाते हैं की चाँदी में सीपी का आभास न तो वास्तविक हैं न तो अवास्तविक। अद्वैत वेदान्त में इसे अध्यास कहा जाता है यह माया के कारण होता है।

27. वह कौन से दार्शनिक हैं जो यह मानते हैं की तंतु से निर्मित पट कुछ नया है?
(a) अद्वैती (b) मीमांसक
(c) नैयायिक (d) सांख्य

Ans. (c) : नैयायिक यह मानते हैं की तंतु से निर्मित पट कुछ नया है। कपड़े का निर्माण सूतों के संयोग से होता है। यही सूतों का संयोग (कर्म) कपड़े का असमवायि कारण है। असमवायि कारण उस गुण को कहते हैं जो उपादान कारण में समवेत रहकर कार्य की उत्पत्ति में सहायक होता है।

28. दार्शनिक पद 'अभेद का तादात्म्य' निम्न में से किससे संबंधित है?
(a) लाक
(b) लाइबिनत्ज
(c) डेकार्ट
(d) डेविड ह्यूम

Ans. (b) : 'अभेद के तादात्म्य' सिद्धान्त का संबंध जर्मन के बुद्धिवादी दार्शनिक 'लाइब्नित्ज' से है। इनका मानना था की प्रत्येक चिदणु अपनी स्वतंत्र सत्ता और विशेषता रखते हुए भी विश्व की एकतन्त्रता को छुण्ण नहीं करता।

29. किसके अनुसार कैवल्य का उचित मार्ग पुरुष प्रकृति का विवेक ज्ञान है?
(a) पूर्वमीमांसा
(b) न्याय
(c) सांख्य
(d) वैशेषिक

Ans. (c) : सांख्य दर्शन के अनुसार ज्ञान ही कैवल्य का साधन है। सांख्य ने पुरुष और प्रकृति के भेद ज्ञान को सम्यक ज्ञान कहा है। अभिप्राय यह है की पुरुष प्रकृति का विवेक ज्ञान ही कैवल्य का उचित मार्ग है।

30. जैन ज्ञान मीमांसा में भूत, सूक्ष्म और दूरस्थ वस्तुओं का ज्ञान कहलाता है?
(a) मति
(b) केवल
(c) श्रुत
(d) अवधि

Ans. (d) : जैन दर्शन ज्ञान के दो भेद करता है (i) अपरोक्ष (ii) परोक्ष परोक्ष ज्ञान के दो प्रकार है (क) मति (ख) श्रुत। तथा अपरोक्ष ज्ञान के तीन प्रकार है- (क) अवधि (ख) मनः पर्याय (ग) केवल। अवधि ज्ञान उस ज्ञान को कहते हैं जिसके द्वारा अत्यंत दूर स्थित वस्तुओं का सूक्ष्म तथा अस्पष्ट द्रव्यों का ज्ञान होता है।

31. निम्नलिखित में से कौन सार्त्त के विचार के असंगत है?
(a) नैतिकता वस्तुगत है
(b) जीवन का अर्थ निर्भर करता है जैसा हम जीवन बनाते हैं
(c) विमर्शात्मक चेतना को नैतिक चेतना के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।
(d) मनुष्य अपने कार्यो के लिए उत्तरदायी है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : समकालीन पाश्चात्य दार्शनिक सार्त्र का विचार है कि "जीवन का अर्थ इस बात पर निर्भर करता है की हम किस प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा की "विमर्शात्मक चेतना को नैतिक चेतना के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। उनका मानना था की मनुष्य अपने कार्यों के लिए भी उत्तरदायी है। विकल्प (1) से सार्त्र का कोई संबंध नहीं है।

32. निम्न में से कौन सा कथन वेटगेन्सटाइन के संदर्भ में असत्य है?

(a) वैयक्तिक भाषा संभव नहीं है।
(b) अर्थ के बारे में मत पूंछिए भाषा के प्रयोग के बारे में पूंछिए
(c) जिस प्रकार विभिन्न भाषार्थी खेल हैं उसी प्रकार जीवन के विविध रूप है।
(d) धर्म ईश्वर के अस्तित्व पर आधारित विश्वास है।

Ans. (d) : समकालीन पाश्चात्य दार्शनिक विटगेन्सटाइन का भाषा के बारे में विचार है की "अर्थ के बारे में न पूँछकर भाषा के प्रयोग के बारे में पूँछा जाना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा की विभिन्न भाषायी खेलों की भांति जीवन के विविध रूप है। उनका मानना था की व्यक्तिगत भाषा संभव नहीं हो सकती है।

33. क्वाइन के विचार से असंगत विकल्प का चयन कीजिए।

(a) सत्तामीमांसा सापेक्षिक है
(b) दर्शन में हठधार्मिता का कोई स्थान नहीं है।
(c) पारंपरिक ज्ञान-मीमांसा प्राकृतिक ज्ञान मीमांसा की नींव है।
(d) अनुवाद सदैव अनिश्चित होता है।

Ans. (c) : क्वाइन समकालीन पाश्चात्य दार्शनिक थे। दर्शन पर इनका विचार था की दर्शन में हठधर्मिता का कोई स्थान नही है क्वाइन का यह भी मानना था की सत्ता मीमांसा सापेक्षिक है। इसी प्रकार वह कहते थे की "अनुवाद सदैव अनिश्चित होता है।

34. जी. राइल के अनुसार निम्न में से किसमें कोटि दोष है?

(a) बिल्ली कुर्सी पर है।
(b) बांझ स्त्री का बच्चा
(c) दिल्ली विश्वविद्यालय में अनेक विभाग हैं।
(d) शनिवार शय्या पर है।

Ans. (d) : समकालीन दार्शनिक गिलबर्ट राईल ब्रिटिश भाषा दार्शनिक थे। इन्होंने विटगेन्सटाइन के दार्शनिक समस्याओं के दृष्टिकोण को साझा किया। ये मुख्य रूप से कार्टेशियन दोहरीवाद की आलोचना के लिए जाने जाते है जिसके लिए इन्होंने मशीन में भूत वाक्यांश बनाया। प्रश्नगत विकल्प (d) में जी. राइल के अनुसार कोटि दोष है।

35. फ्रेगे के प्रतिकूल को चिन्हित कीजिए

(a) पद भाव प्रस्तुतिकरण का एक प्रकार है।
(b) विचार न तो शारीरिक है न मानसिक अपितु कुछ और है।
(c) फ्रेगे का अर्थ विचार संकेत पर आधारित है।
(d) विचार संप्रत्यय के समान है।

Ans. (d) : समकालीन दार्शनिकों में फ्रेगे का महत्वपूर्ण स्थान है। 'विचार' पर इनका मत है की यह न तो शारीरिक है, और न तो मानसिक इससे परे कुछ और है। इनके अनुसार 'अर्थ विचार' संकेत पर आधारित होता है। ये पदभाव को प्रस्तुतिकरण का एक प्रकार मानते थे। विकल्प (d) से इनका संबंध नहीं है।

36. भट्ट मीमांसक निम्न में से किस सिद्धांत का प्रतिपादन करते है?

(a) अन्विताविधानवाद
(b) अभिहितान्वयवाद
(c) अपोहवाद
(d) स्फोटवाद

Ans. (b) : अभिहितान्वयवाद का सिद्धांत कुमारिलभट्ट का है। इसके अनुसार पद और वाक्य में पद की सत्ता है और वाक्य सार्थक पदों के योग से बना है। जबकी अन्विताभिधानवाद प्रभाकर का है। अपोहवाद का संबंध बौद्ध दर्शन तथा स्फोटवाद को व्यवस्थित ढंग से रखने का श्रेय भर्तृहरि को है।

37. निम्नलिखित में से कौन सत्य की संतक्तता के सिद्धांत से संबंधित है?

(a) वाक्य सत्य है यदि यह तथ्य को निश्चित करना है।
(b) वह वाक्य सत्य है जिसकी परिणति सफलता में होती है।
(c) वह वाक्य सत्य है जो स्वीकृत वाक्य का विरोध न हो।
(d) कोई वाक्य अपनी संरचना के कारण सत्य अथवा असत्य होता है।

Ans. (c) : सत्य के संतक्तता सिद्धान्त का अर्थ है संगति। संगति के इस सिद्धांत के अनुसार संगति दो प्रकार की है (i) आत्म संगति (ii) परस्पर संगति। परस्पर संगति का अर्थ है- किसी ज्ञान की दूसरे ज्ञान के उदाहरणों के साथ संगति। जबकि आत्मसंगति का अर्थ है 'आत्म विरोध का अभाव।'

38. यह किस दार्शनिक का विचार है की "समाज विहीन व्यक्ति पशु है अथवा ईश्वर है।"

(a) रसेल
(b) मार्क्स
(c) जान लाक
(d) अरस्तू

Ans. (d) : ग्रीक दार्शनिक अरस्तू मानते थे की मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है परन्तु वह समाज से बाहर रहता है तो या तो पशु है अथवा देवता।

39. निम्नलिखित में से क्या डेविड ह्यूम को स्वीकार्य नही है?

(a) संवेदनवाद
(b) आत्मा और द्रव्य का समानतावाद
(c) भौतिकवाद
(d) आध्यात्मवाद

Ans. (a) : ह्यूम के अनुसार ज्ञान केवल दो विषयो पर आश्रित है। (i) इन्द्रिय संस्कार (ii) विज्ञान। ह्यूम कहते हैं की संस्कार और विज्ञान का भेद गौण है। विज्ञान किसी वाह्य वस्तु के नही अपितु संवेदन या स्वसंवेदन के ही प्रतिबिंब है। आत्मा और द्रव्य का समानतावाद, भौतिकवाद, आध्यात्मवाद ह्यूम को स्वीकार्य है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

40. निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांत स्पिनोजा के असंगत है?

(a) गुणों का समानतावाद
(b) पूर्व स्थापित संगति
(c) निश्चयवाद
(d) नेचुरा-नेचुरान्स

Ans. (b) : पूर्वस्थापित संगति का सिद्धान्त स्पिनोजा का नही है। शेष तीनो सिद्धांत जैसे-गुणों का समानतावाद, निश्चयवाद और नेचुरानेचुरान्स स्पिनोजा से संबंधित हैं।

41. न्याय ज्ञान मीमांसा के अनुसार हम सभी वस्तुओं को स्पर्शीय ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जानते हैं जिसे चाक्षुस ज्ञानेन्द्रिय के अतिरिक्त किसे जानते हैं?

A. स्पर्शत्व
B. रूपत्व
C. रूप
D. स्पर्श

(a) केवल A
(b) B और A
(c) केवल C
(d) केवल B और C

Ans. (d) : न्याय ज्ञानमीमांसा के अनुसार सभी वस्तुओं को स्पर्श ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा जाना जाता है। हम वस्तुओ को चाक्षुस ज्ञानेन्द्रियो के अतिरिक्त रूपत्व और रूप से भी जानते हैं।

42. न्याय ज्ञानभीमांसा के अनुसार हम वाह्य प्रत्ययों को निम्नलिखित के द्वारा जानते हैं?

A. चक्षुऐन्द्रिय
B. स्पर्शेन्द्रिय
C. अन्तरीन्द्रिय
D. घ्राणेन्द्रिय

(a) केवल A
(b) केवल B
(c) केवल A और B
(d) केवल B और C

Ans. (c) : न्याय दर्शन के अनुसार वाह्य प्रत्ययों का ज्ञान चक्षुरेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय के द्वारा ही होता है। न्यायदर्शन के अनुसार चक्षु और स्पर्शेन्द्रियों के द्वारा लौकिक पदार्थो के सन्निकर्ष से प्राप्त ज्ञान वाह्य प्रत्ययों का ज्ञान है।

43. न्याय ज्ञान मीमांसा से संबंधित अनुमिति की कुछ अवस्थाएं नीचे दी गई है। उस कूट को चुनिए जिसमें उस अवस्था का वर्णन है, जहाँ अनुमति संभव नही है?

A. अनुमान सिद्धिविशिष्ट इच्छा का अभाव
B. अनुमान सिद्धि का अभाव विशिष्ट इच्छा का अभाव
C. अनुमान सिद्धिविशिष्ट इच्छा की उपस्थिति
D. अनुमान सिद्धि का अभाव विशिष्ट इच्छा की उपस्थिति

(a) केवल A
(b) केवल A और B
(c) केवल A और C
(d) केवल B और C

Ans. (a) : न्याय ज्ञान मीमांसा के अनुसार अनुमिति की कुछ अवस्थाएं है जैसे – अनुमान-सिद्धि का विशिष्ट इच्छा का अभाव अनुमान- सिद्धि विशिष्ट इच्छा की उपस्थिति। परन्तु सिद्धि विशिष्ट इच्छा के अभाव में अनुमति संभव नहीं है।

44. न्याय के अनुसार शक्ति है-

A. ईश्वरेच्छा
B. इच्छामात्र
C. वृत्ति
D. अलग पदार्थ

(a) केवल A
(b) केवल A और B
(c) केवल A, B और C
(d) A, B, C और D

Ans. (c) : न्याय दर्शन आस्तिक दर्शनों में से एक है इसके प्रणेता 'गौतम' है। इसके अनुसार शक्ति-ईश्वर की इच्छा इच्छामात्र और वृत्ति का संयोग है।

45. निम्नलिखित में से कौन जीवनमुक्ति और विदेहमुक्ति दोनों को मानता है?

A. बुद्ध
B. शंकर
C. रामानुज
D. माधव

(a) केवल A
(b) केवल A और B
(c) केवल A, B और C
(d) A, B, C और D

Ans. (b) : महात्माबुद्ध और शंकर दोनों जीवनमुक्ति और विदेहमुक्ति को मानते है। महात्मा बुद्ध के अनुसार इस जीवन में ज्ञान की प्राप्ति अर्थात कैवल्य की प्राप्ति ही जीवनमुक्ति है और ज्ञानोपरांत जब शरीर का पतन हो जाता है यह विदेह मुक्ति है। इसी तरह का विचार शंकर का भी है। वे आत्म तत्व के साक्षात्कार को जीवनमुक्ति करते है।

46. डा. अम्बेडकर द्वारा स्वीकृत त्रयी सिद्धांत से संबंधित युग्म नीचे दिए गए हैं

A. स्वतंत्रता समानता और सत्य
B. स्वतंत्रता बंधुत्व और शांति
C. स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व
D. स्वतंत्रता, बंधुत्व और एकजुटता

सही विकल्प का चयन करें :

(a) केवल A
(b) केवल D
(c) केवल B
(d) केवल C

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : भारतीय संविधान के निर्माता, दलितो के मसीहा डा. अम्बेडकर की न्याय दृष्टि काफी व्यापक थी वे ऐसे समाज और धर्म की कल्पना करते थे। जिसमें स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का महत्वपूर्ण स्थान हो। उनका मानना था की स्वतंत्रता, समानता और बधुत्व से पूरित समाज ही आम आदमी के जीवन में उत्थान ला सकता है।

47. निम्नलिखित में कौन सा थेल्स के संगत है-

A. ब्रहमाण्ड का मूलभूत श्रोत वायु है।
B. ब्रहमाण्ड का मूलभूत श्रोत संख्या है।
C. ब्रहमाण्ड का मूलभूत श्रोत जल है।
D. पृथ्वी सपाट है जो पानी पर तैरती है।

(a) केवल A
(b) केवल B
(c) केवल B और D
(d) केवल C और D

Ans. (d) : थेलीज के अनुसार विश्व का परम तत्व जल है जल से ही सृष्टि की उत्पत्ति है, जल के ऊपर ही इसकी स्थिति है और जल में ही इसका प्रलय है। पृथ्वी सपाट रूप में इसी जल पर तैरती है। जल ही बिन्दु रूप से सबका जनक है। गति और परिणाम का सूचक है।

48. निम्नलिखित में से कौन सा तर्क वाक्य बर्कले द्वारा स्वीकृत है

A. दृश्यमान वस्तुएं अस्तित्व में हैं।
B. अदृश्यमान वस्तुएं अस्तित्व में है।
C. आत्मा संवेदो का समुच्चय मात्र है।
D. जड़ द्रव्य अचर रूप से अस्तित्व में है।

(a) केवल B
(b) केवल D
(c) केवल B और C
(d) केवल A और C

Ans. (d) : बर्कले के अनुसार हम बहुत से विज्ञानों की कल्पना कर सकते हैं, परन्तु वाह्य पदार्थों के अभाव में उनके संवेदन नहीं प्राप्त कर सकते है। फिर यदि वाह्य, पदार्थ हमारे विज्ञान मात्र हों, तो वे सबको लगभग एक ही रूप में क्यों प्रतीत होते हैं? यह तो स्पष्ट है की जिन संवदनों को इन्द्रियाँ वाह्य पदार्थों से ग्रहण करती हैं, उन संवेदनों को स्वयं नहीं उत्पन्न किया जा सकता है। अतः वाह्य पदार्थों की सत्ता माननी पड़ेगी, इस आधार पर कह सकते हैं कि दृश्यमान वस्तुएं अस्तित्व में हैं। बर्कले ने आत्मा को संवेदों का समुच्चय मात्र माना है।

49. निम्नलिखित कथनों में से कौन से हेरा क्लिटस को स्वीकार्य नही है?

A. सत् कुछ नही है केवल सत् है।
B. कोई एक नदी में दो बार नहीं घुस सकता।
C. सत् असत् में परिवर्तित होता है और असत् सत् में।
D. स्पेरान ब्रहमाण्ड का मूलभूत तत्व है।

(a) केवल A और B
(b) केवल B और D
(c) केवल A और C
(d) केवल A और D

Ans. (d) : हेराक्लाइट्स के अनुसार, विश्व गति है, परिणाम है, धारा है, कोई भी व्यक्ति एक नदी में दो बार नहीं जा सकता है क्योंकि जिस पानी में प्रथम बार स्नान किया, वह बह गया और उसके स्थान पर दूसरा पानी आ गया दूसरी बार स्नान दूसरे पानी में ही हो सकता है। कोई वस्तु दो क्षणों तक नहीं टिक सकती है। इन्होंने कहा की हम सत भी है और असत भी, और सदसद निर्वचनीय भी हैं। सत असत में और असत सत में परिवर्तित होता है।

50. के. सी भट्टाचार्य के अनुसार व्यक्तिनिष्ठता की अवस्थाएं नीचे दी गई है-

A. दैहिक
B. मनस्तत्व
C. आध्यात्मिक
D. जैविक

(a) केवल A और B
(b) केवल B और C
(c) केवल A, B और C
(d) केवल B, C और D

Ans. (c) : के. सी. भट्टाचार्य भारत के आधुनिक सामाजिक राजनैतिक चिंतको में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। यह कलकत्ता विश्वविद्यालय मे दर्शन के प्रोफेसर थे। इनके अनुसार व्यक्तिनिष्ठता की कुछ अवस्थाएं होती है जैसे – दैहिक, मनस्तत्व, आध्यात्मिक। जबकी, जैविक अवस्था व्यक्तिनिष्ठता की अवस्था नही है।

51. निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

A. साधना के लेखक गांधी है।
B. पर्सनालिटी के लेखक अरविन्द हैं
C. फ्रीडम एण्ड कल्चर के लेखक राधाकृष्णन है
D. धम्मपद के लेखक टैगोर है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल A
(b) केवल B
(c) केवल C
(d) केवल D

Ans. (c) : फ्रीडम एण्ड कल्चर पुस्तक के लेखक- राधाकृष्णन है।
A. साधना के लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर हैं।
B. पर्सनालिटी के लेखक अब्राहम मैस्लो है।
D. 'धम्मपद' बौद्ध धर्म की प्रसिद्ध रचना है।
आधुनिक भारत के अनेक विद्वानों ने इस पर अपनी टीकाएं लिखी है।

52. स्वतंत्र प्रमाण के रूप में अनुपलब्धि किस दार्शनिक द्वारा समर्थित है-

A. प्रभाकर
B. शंकर
C. रामानुज और मध्व
D. कुमारिल

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल A
(b) केवल C
(c) केवल A और C
(d) केवल B और D

Ans. (d) : स्वतंत्र प्रमाण के रूप में अनुपलब्धि के समर्थक शंकर और कुमारिल को माना जाता है। शंकर और कुमारिल दोनो छः प्रमाणों यथा- प्रत्यक्ष अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि को मानते है। कुमारिल के अनुसार ज्ञान की प्रमाणिकता उसके उत्पन्न होने के साथ होती है उसकी सत्यता के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नही होती। शंकर भी इसी स्वतंत्र प्रमाण के समर्थक है।

53. ''प्रकटीकरण में तर्क होता है और दोनों एक दूसरे का विरोध नहीं करते।'' निम्नलिखित में से किसने इस मत को पूर्ण रूप से अस्वीकार किया है?

A. एफ. एच. ब्रेडले
B. संेंट थामस एक्वीनास
C. संेंट आगस्टाइन
D. हेनरी बर्सन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल A और D
(b) केवल A और B
(c) केवल B और C
(d) केवल D

Ans. (d) : 'प्रकटीकरण' में तर्क होता है इस कथन को हेनरी बर्सन अस्वीकार करते है। जबकि एफ. एच. ब्रैडले, संेंट थामस एक्विनास संेंट आगस्टाइन, जैसे विचारकों का मानना है की ''प्रकटीकरण में तर्क होता है और दोनों एक दूसरे का विरोध नही करते है।

54. वास्तविक वैयक्तिक नाम एक वचन होता है, कर्ता विधेय योजना में केवल, कर्त्ता के स्थान पर रखा जाता है और यह कर्म के लिए प्रयुक्त होता है। यह किसका मत है?

A. मिल
B. रसेल
C. फ्रेगे
D. विटगेन्सटाइन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल A
(b) केवल B
(c) केवल A और B
(d) केवल B और C

Ans. (c) : समकालीन पाश्चात्य दार्शनिक 'रसेल' का मत है कि ''वास्तविक वैयक्तिक नाम एक वचन होता है, कर्ता विधेय योजना में केवल कर्ता के स्थान पर रखा जाता है और यह कर्म के लिए प्रयुक्त होता है।'' रसेल के इस मत का समर्थन मिल ने भी किया।

55. किसके अनुसार चूकी सामान्य भाषा अस्पष्ट थी, भाषा और वास्तविकता में संबंध प्रदर्शित करने के लिए आदर्श अथवा बनावटी भाषा बनाए जाने की आवश्यकता है?

A. रसेल
B. फ्रेगे
C. आस्टिन
D. राइल

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :

(a) केवल A
(b) केवल A और D
(c) केवल A और C
(d) केवल A और B

Ans. (d) : समकालीन पाश्चात्य दार्शनिकों फ्रेगे और रसेल का मत है की ''चूंकि सामान्य भाषा अस्पष्ट थी, भाषा और वास्तविकता में संबंध प्रदर्शित करने के लिए आदर्श अथवा बनावटी भाषा बनाए जाने की आवश्यकता है।

56. निम्नलिखित कथनों में कौन सा अरस्तू के अनुसार सही नहीं है?

(a) आकार एवं द्रव्य सापेक्षिक है।
(b) द्रव्य संभावित है आकार वास्तविक है।।
(c) आकार रहित द्रव्य अस्तित्ववान है।
(d) द्रव्यरहित आकार वास्तविक है।

Ans. (c) : प्राचीन ग्रीक दार्शनिकों में अरस्तू का स्थान महत्वपूर्ण है। अरस्तू का मानना है की शुद्ध आकार जो द्रव्य से नितान्त रहित हो, केवल ईश्वर और आत्मा ही है अतः ये ही वस्तुतः 'तत्व' है। इनके अनुसार आकार और द्रव्य सापेक्षिक एवं संभावित है तथा द्रव्य रहित आकार वास्तविक है।

57. प्लेटो के अनुसार निम्न में से कौन सा संगत है?

(a) प्रत्यय वास्तविक नहीं है किन्तु अस्तित्ववान हैं
(b) प्रत्यय वास्तविक है किन्तु अस्तित्ववान हैं
(c) प्रत्यय संदिग्ध है किन्तु अस्तित्ववान हैं
(d) प्रत्यय संदिग्ध है किन्तु अनअस्तित्ववान हैं।

Ans. (b) : प्लेटो को सबसे महान दार्शनिकों में माना जाता है। प्लेटो के अनुसार 'प्रत्यय या विचार ही चरम सत्य है यह शाश्वत एवं अखण्ड है तथा ईश्वर उसका सर्जक है। प्लेटो के अनुसार यह वस्तु जगत प्रत्यय जगत का अनुकरण है। प्लेटो कहते हैं की ''प्रत्यय वास्तविक हैं, किन्तु अस्तित्ववान है।''

58. मोहम्मद इकबाल के अनुसार मनुष्यों के लिए सत्य क्या है? सही विकल्प का चयन कीजिए?

A. मानव सार्वभौमिक परम अहं से दृष्टिगत है।
B. मानव सार्वभौमिक बुद्धि से विकसित होते हैं।
C. मानव दैविक रूप से निर्मित है।
D. मानव आत्मा से विकसित है।
E. मानव पदार्थ से विकसित है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए।

(a) केवल A और B
(b) केवल B, C और D
(c) केवल C और E
(d) केवल A और D

Ans. (c) : सामाजिक राजनैतिक चिंतक मुहम्मद इकबाल प्रारम्भिक शिक्षा लाहौर से पाने के बाद यही पर दर्शन शास्त्र के शिक्षक नियुक्त हुए। इन्हे पाकिस्तान का आध्यात्मिक पिता कहा जाता है। ऐसा माना जाता है यह पाकिस्तान आंदोलन के प्रेरणाश्रोत थे। ये मुख्यतया राजनैतिक चिंतक थे इनका मानना था की मनुष्य अपने स्वरूप में दैहिक रूप से निर्मित और पदार्थ से विकसित है।

59. निम्नलिखित विचारकों में से किसका मानना है की स्वतंत्रता शुद्ध प्रेक्षण में निहित होती है?

(a) जेद्दू कृष्णमूर्ति
(b) श्री अरविन्द
(c) नारायण गुरू
(d) राधाकृष्णन

Ans. (a) : जे. कृष्णमूर्ति दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विचारक थे। यह 'समाज में राजनैतिक रूप से परिवर्तन कैसे लाए' विषय पर अपने विचार रखते थे। राष्ट्रवाद पर इनका विचार था की "राष्ट्रवाद कलह और टकराव को जन्म देता है, दूसरी ओर वही राष्ट्रवाद लोगों में भ्रम पैदा करता है, लेकिन पूरा समझ लेने पर राष्ट्रवाद खत्म होने लगता है। स्वतंत्रता पर इनका विचार था की "मानव की स्वतंत्रता शुद्ध प्रेक्षण में निहित होती है।"

60. जे. एल. अस्टिन निम्न में से किस वाक क्रिया के मध्य भेद करते है?

A. अतिवचन कर्म
B. वचन कर्म
C. अवचन कर्म
D. भ्रामक वचन कर्म
E. प्रभावी वचन कर्म

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल C, D और E
(b) केवल B, C और E
(c) केवल B, C और D
(d) केवल A, C और D

Ans. (b) : ब्रिटिश दार्शनिक जे. एल. अस्टिन सामान्य भाषा दर्शन के प्रमुख समर्थक थे। ऑस्टिन के वाक क्रिया सिद्धान्त द्वारा वर्गीकृत उच्चारण के तीन कार्यों की अवधारणा महत्वपूर्ण है। आस्टिन सुझाव देते हैं की वाक क्रिया और सभी उच्चारण, शब्दों और संकेतों के साथ कुछ करने का काम है। आस्टिन, वचन कर्म, अवचन कर्म और प्रभावी वचन कर्म के बीच भेद करते है।

61. हितग्राहियों के हितों और स्टाकधारक के हितों के टकराव से संबंधित अनुप्रयोगी नीतिशास्त्र के क्षेत्र सर्वाधिक उपयुक्त रूप से किससे संबंधित हैं?

(a) व्यावसायिक नीतिशास्त्र
(b) जैव नीतिशास्त्र
(c) मीडिया नीतिशास्त्र
(d) प्रौद्योगिकी नीतिशास्त्र

Ans. (a) : व्यावसायिक नीतिशास्त्र (Corporate ethics) मुख्य रूप से व्यावसायिक नैतिकता का मार्गदर्शन करती है। यह हितग्राहियों और स्टाकधारकों के हितों के बीच किसी भी प्रकार के मतभेद की स्थिति में निराकरण करती है।

62. चार्ल्स टेलर निम्नलिखित में से किनके बीच अंतर करता है?

A. सम्मान की राजनीतिक
B. अंतर की राजनीति
C. लैंगिक राजनीति
D. हकदारी की राजनीति
E. वितरण की राजनीति

नीचे दिए गए विकल्पो में से सही उत्तर चुनिए:

(a) केवल D और E
(b) केवल A और B
(c) केवल C और E
(d) केवल A और D

Ans. (b) : राजनैतिक सामाजिक चितंक चार्ल्स टेलर कनाडाई दार्शनिक थे। इन्होंने अपने प्रमुख राजनैतिक सिद्धांतों के बीच यह भी स्पष्ट किया की "सम्मान की राजनीति और अंतर की राजनीति के बीच अंतर किया जाना चाहिए।"

63. व्यावसायिक नैतिकता का यह नैतिक दावा किससे संबंधित है की भ्रामक विज्ञापन गलत है क्योंकि दूसरों को ठगना उनके लिए अपमान जनक है और साधन मात्र के रूप में उनका उपयोग है-

(a) कांट की फलनिरपेक्ष नैतिकता
(b) गुण की नैतिकता
(c) नियम- उपयोगितावाद
(d) कार्य उपयोगितावाद

Ans. (a) : काण्ट की फलनिरपेक्ष नैतिकता 'व्यवसायिक नैतिकता के संदर्भ में उपयोग में लाई जा सकती है। व्यावसायिक नैतिकता का यह नैतिक दावा की "भ्रामक विज्ञापन गलत है, दूसरो को ठगना उनके लिए अपमान जनक है, और साधन मात्र के रूप में उनका उपयोग है"- काण्ट की फल निरपेक्ष नैतिकता से संबंधित है।

64. 'व्यक्तिर्पन' के लिए आवश्यक मानक क्या हो सकते हैं, इससे संबंधित प्रश्न किसके संदर्भ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है?

(a) गर्भपात
(b) सक्रिय इच्छामृत्यु
(c) निष्क्रिय इच्छा मृत्यु
(d) सुजननिक

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : व्यक्तित्व को प्रभावित करने के कुछ विशेष तत्व होते हैं जो व्यक्तिर्पन (Personhood) के मानक कहे जाते है। यही तत्व व्यक्तित्व को पूर्ण बनाने में सहयोग देते हैं। इन्हीं तत्वों के अनुरूप व्यक्तित्व का विकास होता है। प्रश्नगत विकल्पो में से व्यक्तिर्पन के लिए 'गर्भपात' का विकल्प सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

65. प्रौद्योगिकी की नैतिकता की ''प्रौद्योगिकी एक साधन मात्र है'' जिसका अच्छा या बुरा उपयोग इसके प्रयोग कर्ताओं पर निर्भर करता है। प्रौद्योगिकी अपने आप में अच्छा या बुरा नहीं है: किस रूप में जानी जाती है?

(a) प्रयोक्ता का द्वन्द्व
(b) कर्ता और कार्य का विभाजन
(c) तटस्थता सिद्धांत
(d) साधनपरकता की नैतिकता

Ans. (c) : प्रौद्योगिकी नैतिकता के संदर्भ में तटस्थता का सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है की ''प्रौद्योगिकी एक साधन मात्र है, जिसका अच्छा या बुरा उपयोग इसके प्रयोग कर्ताओं पर निर्भर करता है प्रौद्योगिकी अपने आप में अच्छा या बुरा नहीं है।

66. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए?

सूची-I	सूची-II
A. वेद	I. अग्नि अपनी प्रकृति के कारण जलता है।
B. चार्वाक	II. अग्नि ऋत् के कारण जलता है।
C. मीमांसा	III. अग्नि अपनी दाहिक शक्ति जो एक पृथक पदार्थ है के कारण जलता है।
D. वैशेषिक	IV. अग्नि एक भौतिक द्रव्य है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-III, B-IV, C-II, D-I
(b) A-II, B-I, C-III, D-IV
(c) A-I, B-II, C-IV, D-III
(d) A-IV, B-III, C-II, D-I

Ans. (b) : सुमेलित सूची इस प्रकार है-
A- (ii) – अग्नि ऋत् के कारण जलता है। (वेद)
B- (i) – अग्नि अपने प्रकृति के कारण जलता है। (चार्वाक)
C- (iii) – अग्नि जो अपनी दाहिक शक्ति, जो एक पृथक पदार्थ है, के कारण जलता है। (मीमांसा)
D- (iv) – अग्नि एक भौतिक द्रव्य है। (वैशेषिक)

67. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए?

सूची-I	सूची-II
A. ज्ञाततावाद	I. प्रभाकर
B. त्रिपुटी प्रत्यक्षवाद	II. कुमारिल
C. द्वैतवाद	III. माध्व
D. भेदाभेदवाद	IV. निम्बार्क

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :

(a) A-II, B-I, C-III, D-IV
(b) A-I, B-II, C-III, D-IV
(c) A-I, B-III, C-II, D-IV
(d) A-III, B-II, C-I, D-IV

Ans. (a) : सुमेलित सूची इस प्रकार है-
A – (ii) ज्ञाततावाद – कुमारिल
B – (i) त्रिपुटी प्रत्यक्षवाद – प्रभाकर
C – (iii) द्वैतवाद – माध्व
D – (iv) भेदाभेदवाद – निम्बार्क

68. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए?

सूची-I	सूची-II
A. प्रकृति की अवस्था ऐसी थी जिसमें सही और गलत का कोई प्रवर्तनीय मानक नही है।	I. लाक
B. प्रकृति की अवस्था ऐसी थी जिसमें जीवन और संपत्ति के अधिकारो को सामान्यत: प्रकृति के नियम के अंतर्गत मान्यता दी जाती थी।	II. रूसो
C. प्रकृति अवस्था में मनुष्य युद्ध से भिन्न थे इनकी तर्कशक्ति, नैतिकता और दायित्व अविकसित थे।	III. हॉब्स
D. न्याय सरकार के इस मूल सिद्धांत पर आधारित है की स्वतंत्र और बौद्धिक व्यक्ति सम्यक समानता की परिकल्पनात्मक स्थिति में सहमत होंगे।	IV. जान राल्स

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-II, B-III, C-I, D-IV
(b) A-III, B-II, C-I, D-IV
(c) A-I, B-III, C-II, D-IV
(d) A-III, B-I, C-II, D-IV

Ans. (d) : सुमेलित सूची इस प्रकार है-
A. - (iii) **हॉब्स-** प्रकृति की अवस्था ऐसी थी जिसमें सही और गलत का कोई प्रवर्तनीय मानक नहीं था।
B. - (i) **लॉक -** प्रकृति की अवस्था ऐसी थी जिसमें जीवन और संपत्ति के अधिकारों को सामान्यत: प्रकृति के नियम के अंतर्गत मान्यता दी जाती थी।
C. - (ii) **रूसो-** प्रकृति अवस्था में मनुष्य, युद्ध से भिन्न थे, इनकी तर्कशक्ति, नैतिकता, दायित्व अविकसित थे।
D. - (iv) **जान रॉल्स -** न्याय सरकार के इस मूल सिद्धांत पर आधारित है कि स्वतंत्र और बौद्धिक व्यक्ति सम्यक समानता की परिकल्पनात्मक स्थिति में सहमत होंगे।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

69. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए?

सूची-I	सूची-II
A. भेद धिक्कार	I. माधव
B. भेद सत्कार	II. शंकर
C. अचिन्त्य भेदाभेद	III. रामानुज
D. अपृथक सिद्धि	IV. चैतन्य बलदेव

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-II, B-I, C-IV, D-III
(c) A-IV, B-III, C-I, D-II
(d) A-III, B-IV, C-II, D-I

Ans. (b) : सुमेलित सूची इस प्रकार है-
A- (II) भेद धिक्कार – शंकर
B- (I) भेद सत्कार – माधव
C- (IV) अचिन्त्यभेदाभेद – चैतन्य बलदेव
D- (III) अपृथक सिद्धि – रामानुज

70. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए?

सूची-I	सूची-II
A. शंकर	I. ज्ञान कर्म समुच्चयवाद
B. रामानुज	II. ज्ञान और केवल ज्ञान
C. माध्व	III. पुष्टिमार्ग
D. वल्लभ	IV. निर्मल भक्ति

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-I, B-II, C-III, D-IV
(b) A-II, B-I, C-IV, D-III
(c) A-IV, B-III, C-II, D-I
(d) A-III, B-IV, C-I, D-II

Ans. (b) : सही सुमेल इस प्रकार है-
A- (II) शंकर - ज्ञान और केवल ज्ञान
B- (I) रामानुज - ज्ञान, कर्म, समुच्चयवाद
C- (IV) माधव - निर्मल भक्ति
D- (III) वल्लभ – पुष्टिमार्ग।

71. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए?

सूची-I	सूची-II
A. विषयनिष्ठ प्रत्ययवाद	I. बोसांके
B. यथार्थवाद	II. बर्कले
C. वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद	III. कांट
D. आलोचनात्मक दर्शन	IV. लॉक

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-II, B-IV, C-I, D-III
(b) A-IV, B-II, C-III, D-I
(c) A-I, B-II, C-IV, D-III
(d) A-III, B-II, C-I, D-IV

Ans. (a) : सही विकल्प इस प्रकार है-
A- (II) विषयनिष्ठ प्रत्ययवाद – बर्कले
B- (IV) यथार्थवाद – लाक
C- (I) वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद – बोसांके
D- (III) आलोचनात्मक दर्शन – काण्ट।

72. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए?

सूची-I	सूची-II
A. ल्यूपियस और डीमोक्रीट्स	I. ईश्वर का नगर
B. सेंट आगस्टाइन	II. ईश्वर के अस्तित्व के पांच प्रमाण
C. सेंट थामस एक्विनस	III. सत्तामूलक तर्क
D. सेंट एन्सेल्म	IV. परमाणु सिद्धांत

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-II, B-III, C-IV, D-I
(b) A-IV, B-I, C-II, D-III
(c) A-II, B-III, C-I, D-IV
(d) A-I, B-II, C-III, D-IV

Ans. (b) : सही सुमेल इस प्रकार है-
A- (IV) ल्यूपियस और डीमोक्रीट्स – परमाणु सिद्धान्त
B- (I) सेंट आगस्टाइन – ईश्वर का नगर
C- (II) सेंट थामस एक्विनस – ईश्वर के अस्तित्व के पांच प्रमाण
D- (III) सेंट एन्सेल्म – सत्तामूलक तर्क।

73. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए?

सूची-I	सूची-II
A. टैगोर	I. मालिक की तरह कार्य करना चाहिए दास की तरह नहीं
B. इकबाल	II. जो कहा गया जाता है उस पर प्रथमतः विश्वास किया जाना चाहिए।
C. विवेकानंद	III. मेरे लिए संसार वैयक्तिक और सार्वभौम होता है
D. के. सी. भट्टाचार्य	IV. शरीर संचित कर्म यह स्व की आहट है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-II, B-III, C-I, D-IV
(b) A-II, B-IV, C-I, D-III
(c) A-IV, B-I, C-III, D-II
(d) A-I, B-II, C-IV, D-III

Ans. (b) : सही विकल्प इस प्रकार है-
A- (II) टैगोर – जो कहा गया जाता है उस पर प्रथमतः विश्वास किया जाना चाहिए
B- (IV) इकबाल – शरीर संचित कर्म यह स्व की आहट है।
C- (I) विवेकानन्द – मालिक की तरह कार्य करना चाहिए दास की तरह नहीं
D- (III) के. सी. भट्टाचार्य - मेरे लिए संसार वैयक्तिक और सार्वभौम होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

74. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए?

सूची-I	सूची-II
A. $P \equiv q$	I. $(P.q)\ r$
B. $\sim (P \supset q)$	II. $(P \supset r).\ (q \supset r)$
C. $p.\ (q.r)$	III. $(P.q)\ V\ (\sim p. \sim q)$
D. $(PVq) \supset r$	IV. $P.\ r\ q$

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-III, B-II, C-I, D-IV
(b) A-II, B-IV, C-I, D-III
(c) A-I, B-III, C-IV, D-II
(d) A-III, B-IV, C-I, D-II

Ans. (d) : A- (III) $P \equiv q$ – $(P.q)\ V\ (\sim p. \sim q)$
B- (IV) $\sim (P \supset q)$ – $P. \sim q$
C- (I) $P.(q.r)$ – (P.q) ϒr
D- (II) $(PVq) \supset r$ – $(P \supset r).\ (q \supset r)$

75. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए?

सूची-I	सूची-II
A. विवेकानन्द	I. सृष्टि स्रष्टा की लीला है
B. के. सी. भट्टाचार्य	II. यथार्थ एक है, परन्तु संपूर्ण नहीं
C. टैगोर	III. दर्शन स्वतः स्पष्ट की स्वतः विस्तृत व्याख्या है।
D. इकबाल	IV. अन्तः प्रज्ञात्मक अनुभव वही होकर जानना है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A-I, B-II, C-IV, D-III
(b) A-IV, B-I, C-III, D-II
(c) A-II, B-III, C-I, D-IV
(d) A-III, B-I, C-IV, D-II

Ans. (c) : सही विकल्प इस प्रकार है-
A. विवेकानन्द – यथार्थ एक है, परन्तु संपूर्ण नहीं।
B. के. सी. भट्टाचार्य - दर्शन स्वतः स्पष्ट की स्वतः विस्तृत व्याख्या है।
C. टैगोर – सृष्टि स्रष्टा की लीला है।
D. इकबाल – अन्तः प्रज्ञात्मक अनुभव वही होकर जानना है।

76. योग समाधि में सही अनुक्रम चुनिए:

A. सानंद
B. सस्मिता
C. सवितर्क
D. सविचार

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A, B, C, D
(b) C, D, B, A
(c) C, D, A, B
(d) B, C, D, A

Ans. (c) : योग दर्शन में दो प्रकार की समाधि मानी गई है- 1. सम्प्रज्ञात 2. असम्प्रज्ञात। जिसमें ध्येय विषय का स्पष्ट ज्ञान रहता है उसे सम्प्रज्ञात समाधि कहते हैं। असम्प्रज्ञात समाधि में ध्यान का विषय लुप्त हो जाता है, इस अवस्था में आत्मा अपने यथार्थ स्वरूप को पहचान लेती है। सम्प्रज्ञात समाधि में चित्त एक विषय पर केन्द्रित रहता है जिसके साथ उसकी तादात्म्यकता रहती है चूँकि समाधि में ध्येय के विषय की निरन्तर भिन्नता रहती है, इस आधार पर सम्प्रज्ञात समाधि का क्रम इस प्रकार है- सवितर्क → सविचार → सानंद → सस्मिता

77. बौद्ध धर्म के प्रतीत्यसमुत्पाद के बाहर क्रम या निदानों का संदर्भ के साथ सही क्रम में चयन कीजिए?

A. नामरूप
B. षडायतन
C. विज्ञान
D. वेदना
E. स्पर्श

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A, B, D, C, E
(b) C, A, B, E, D
(c) C, B, D, E, A
(d) A, D, C, B, E

Ans. (b) : बौद्ध धर्म में कार्य-कारण शृंखला रूप प्रतीत्यसमुत्पाद द्वादश चक्र है जिसे द्वादश निदान भी कहते है। द्वादश निदान कार्य-कारण रूप से चक्रवत घूमते रहते है। प्रथम अंग दूसरे का कारण है, दूसरा, तीसरे का इस प्रकार से चक्र चलता रहता है यह द्वादश चक्र क्रमशः इस प्रकार है-
अविद्या → संस्कार → विज्ञान → नामरूप → षडायतन → स्पर्श → वेदना →तृष्णा → उपादान → भव → जाति → जरामरण।

78. योग नियम के संदर्भ में सही अनुक्रम चुनिए।

A. नियम
B. प्राणायाम
C. यम
D. आसन
E. प्रत्याहार

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए

(a) A, B, D, E, C
(b) C, D, E, A, B
(c) C, A, D, B, E
(d) C, A, E, B, D

Ans. (c) : योग नियम के संदर्भ में, योग, शरीर, इन्द्रियां और चित्त की शुद्धि के लिए आठ अंगों का वर्णन करता है जिसका अनुक्रम इस प्रकार है-
यम → नियम → आसन → प्राणायम → प्रत्याहार → धारणा → ध्यान → समाधि।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

79. जैन धर्म के अनुसार सही अनुक्रम चुनिए।

A. स्यान्नास्ति
B. स्यादहित नाहित च
C. स्यादवक्तव्यम्
D. स्यादस्ति च अव्यक्तम च
E. स्यादस्ति

नीचे दिए गए विकल्पों ने से सही उत्तर चुनिए

(a) A, B, C, D, E
(b) E, A, B, D, C
(c) E, A, B, C, D
(d) E, C, D, A, B

Ans. (c) : स्यादवाद को सप्तभंगी नय भी कहते हैं। जैन दर्शन नय के सात प्रकार या भंग स्वीकार करता है जो इस प्रकार है-
(1) स्यातअस्ति, (2) स्यातनास्ति, (3) स्यात अस्ति नास्ति, (4) स्यात अवक्तव्यम् (5) स्यात अस्ति च, अवक्तव्यम् (6) स्यात नास्ति च अवक्तव्यम् (7) स्यात अस्ति च नास्ति च अवक्तव्यम्।

80. श्री अरविन्दों के विकास के सिद्धांत के सही क्रम का चयन कीजिए?

A. उच्चीकरण
B. विस्तारीकरण
C. समग्रीकरण

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए-

(a) A, B, C
(b) C, B, A
(c) B, C, A
(d) B, A, C

Ans. (d) : अरविन्द का समाजदर्शन लक्ष्य की दृष्टि से आदर्शवादी, उपागम की दृष्टि से यथार्थवादी, क्रिया की दृष्टि से प्रयोजनवादी तथा महत्वाकांक्षा की दृष्टि से मानवतावादी है। इन्होंने विकास के सिद्धान्त की विवेचना करते हुए बताया की विकास के सिद्धांत का सही क्रम इस प्रकार होना चाहिए –

विस्तारीकरण →	उच्चीकरण →	समग्रीकरण
↓	↓	↓
किसी स्तर के अस्तित्ववान रूपों को समेटना।	विकास की प्रक्रिया उच्चतर रूपों की और उन्मुख होती है।	यह निम्नतर रूपों को समेटती है और उच्चतर बनाती है।

81. बौद्ध दार्शनिक मनमय में कौन एक सही अनुक्रम है:

A. अनिमित्त समाधि, अप्रणिहित समाधि, शून्यता समाधि
B. अप्रणिहित समाधि शून्यता समाधि, अनिमित्त समाधि
C. शून्यता समाधि, अनिमित्त समाधि, अप्रणिहित समाधि
D. शून्यता समाधि, अप्रणिहित समाधि, अनिमित्त समाधि

नीचे दिए गए विकल्पों में सही उत्तर चुनिए:

(a) A
(b) D
(c) B
(d) C

Ans. (d) : बौद्ध दार्शनिक मनमय के अनुसार समाधि का सही अनुक्रम इस प्रकार है-
शून्यता समाधि → अनिमित्त समाधि → अप्रणिहित समाधि।

82. द्वैत वेदान्त के मोक्ष का सही अनुक्रम क्या है?

A. सारुप्य, सायुज्य, सामीप्य, सालोक्य
B. सालोक्य, सामीप्य, सारुप्य, सायुज्य
C. सामीप्य, सालोक्य, सायुज्य, सारुप्य
D. सालोक्य, सायुज्य, सारुप्य, सामीप्य

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:

(a) A
(b) B
(c) C
(d) D

Ans. (b) : द्वैत वेदान्त मोक्ष की एक भावात्मक अवस्था है। माध्व दर्शन में मुक्तात्मा की साधना के अनुरूप आनंन्द भोग में तारतम्य की बात की जाती है। तारतम्यता के आधार पर क्रमशः सालोक्य, सामीप्य, सारुप्य, सामुज्य- भेद से चार प्रकार की मुक्ति मानी गई है। यही चार अवस्थाएं है।

83. उपनिषदो की व्यावहारिक शिक्षा में निम्न में से सही अनुक्रम क्या होगा?

A. मनन, श्रवण निदिध्यासन
B. श्रवण मनन निदिध्यासन
C. मनन, निदिध्यासन, श्रवण
D. श्रवण, निदिध्यासन, मनन

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए :

(a) A
(b) B
(c) C
(d) D

Ans. (b) : भारतीय दार्शनिक परंपरा ने उपनिषदों का महत्वपूर्ण स्थान है। उपनिषदो मे कर्मकाण्ड की बजाय, आध्यात्मिक और व्यावहारिक शिक्षा पर जोर दिया गया है। उपनिषदों की कुल ज्ञात संख्या 108 है। उपनिषदो में कहा गया है की जीवनमुक्ति के लिए- श्रवण, मनन और निदिध्यासन अत्यावश्यक है।

84. श्री अरविन्द के संदर्भ में निम्न में से कौन सा एक सही अनुक्रम है?

A. मौलिक अज्ञान, वैश्विक अज्ञान, अहंभावात्मक अज्ञान, कालिक अज्ञान
B. मौलिक अज्ञान, अहंभावात्मक अज्ञान, वैश्विक अज्ञान, कालिक अज्ञान
C. मौलिक अज्ञान, कालिक अज्ञान, वैश्विक अज्ञान, अहंभावात्मक अज्ञान
D. अहंभावात्मक अज्ञान, वैश्विक अज्ञान, मौलिक अज्ञान, कालिक अज्ञान

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(a) A
(b) B
(c) C
(d) D

Ans. (a) : अरविन्द का सामाजिक राजनैतिक दर्शन लक्ष्य की दृष्टि से आदर्शवादी, उपागम की दृष्टि से यथार्थवादी, क्रिया की दृष्टि से प्रयोजनवादी तथा महत्वाकांक्षा की दृष्टि से मानवतवादी है अरविन्द के संदर्भ में अज्ञानता पर सही अनुक्रम इस प्रकार होगा-
मौलिक अज्ञान → वैश्विक अज्ञान → अहंभावात्मक अज्ञान → कालिक अज्ञान

85. सामान्य की समस्या का प्रारम्भ दर्शनशास्त्र के किसके द्वारा किया गया था?
(a) एक्विनस
(b) अरस्तू
(c) प्लेटो
(d) बर्कले

Ans. (c) : प्लेटो ग्रीक के सबसे महान दार्शनिक थे प्लेटो के समय में ग्रीक दर्शन अपने चरम पर पहुँचा। दर्शनशास्त्र में सामान्य की समस्या का प्रारंभ प्लेटो द्वारा होता है। इनके अनुसार जगत के विविध विशेषो या व्यक्तियों की सत्ता 'सामान्यों' के कारण है। सामान्य अपनी जाति के विशेषो में अनुगत रहते हैं और उनको अन्य जाति के विशेषो से पृथक करते हैं।

86. नीचे दो कथन दिए गए है: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है:
अभिकथन (A) : भगवतगीता के आलोक में सच्चा सन्यास सभी प्रकार के कर्मों के फलों से सन्यास है।
तर्क (R) : कर्मफल मोक्ष मार्ग में बाधक होते हैं।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनिए:
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या नही है।
(c) (A) सही है परन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है परन्तु (R) सही है।

Ans. (a) : भगवत गीता कर्मफलों को मोक्ष मार्ग में बाधक मानती है। वह मोक्ष के लिए सन्यास मार्ग का प्रतिपादन करती है, उसके अनुसार कर्मफलों से संन्यास ही सच्चा संन्यास है।

87. नीचे दो कथन दिए गए है, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है:
अभिकथन (A) : सत्य निगमनात्मक तर्क के विषय में निष्कर्ष दिए गए आधार वाक्य से तार्किक रूप से निकलता है।
तर्क (R) : आधार वाक्य में निष्कर्ष औपचारिक रूप से नहीं होता है।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नलिखित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुने।
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) सही व्याख्या नही है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है परन्तु (R) सही है।

Ans. (c) : कथन A की "सत्य निगमनात्मक तर्क के विषय में निष्कर्ष दिए गए आधार वाक्य से तार्किक रूप से निकलता है।" परन्तु कारण R "आधारवाक्य में निष्कर्ष औपचारिक रूप से नही होता" गलत है क्योंकि 'आधार वाक्य में निष्कर्ष औपचारिक रूप से होता है।

88. नीचे दो कथन दिए गए है: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है:
अभिकथन (A) : अद्वैत वेदान्त के अनुसार ब्रह्म अनिश्चित है।
तर्क (R) : इसे बुद्धि द्वारा नहीं समझा जा सकता, परन्तु उसकी ओर संकेत किया जा सकता है।
उपर्युक्त उत्तर चुनें:
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही और (R), (A) की सही व्याख्या नही है।
(c) (A) सही है परन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है परन्तु (R) सही है।

Ans. (a) : अद्वैत वेदान्त के अनुसार ब्रह्म अनिर्वचनीय, अनिश्चित है कारण यह बुद्धि से परे है, फिर भी उसकी ओर संकेत किया जा सकता है।

89. नीचे दो कथन दिए गए हैं एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है।
अभिकथन (A) : रामानुज में एकतत्ववाद और दैवआस्तिकवाद स्पष्ट रूप से समरूपित है।
तर्क (R) : सामंजस्यीकरण दार्शनिक युक्तियुक्तता की कीमत पर नहीं।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुने:
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है परन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है परन्तु (R) सही है।

Ans. (a) : रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैतवाद में एकतत्ववाद और दैवआस्तिकवाद दोनों स्पष्टतः समान है। क्योंकि विशिष्टादैत में सामंजस्यीकरण दार्शनिक युक्तियुक्तता की कीमत पर नहीं होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

90. नीचे दो कथन दिए गए है: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया।

अभिकथन (A) : निर्गुण ब्रह्म की धारणा धार्मिक भावना के क्षेत्र में तटस्थ प्रतीत होती है।

तर्क (R) : धार्मिक भावना और तार्किक चिंतन एक साथ नहीं हो सकते।

उपर्युक्त कथनों के आलोक में निम्नांकित विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुने:

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है परन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है परन्तु (R) सही है।

Ans. (a) : धार्मिक भावना का भाव तार्किकता से परे होता है, इसमें तार्किक चिंतन का कोई स्थान नहीं होता है। इसीलिए निर्गुण ब्रह्म का विचार धार्मिक भावना के क्षेत्र में तटस्थ होता है।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उत्तर दीजिए?

यद्यपि भिन्न-भिन्न लोग मेज को थोड़ा-थोड़ा भिन्न प्रकार से देखते हैं तथापि वे भी जब मेंज की तरफ देखते हैं तो न्यूनाधिक रूप में एक जैसी वस्तु देखते हैं और उनके देखने में होने वाली भिन्नताओं को प्रकाश के परिप्रेक्ष्य और परावर्तन के नियमों के द्वारा समझाया जा सकता है ताकि विभिन्न लोगों के इन्द्रिय प्रदत्त कथनों में निहित स्थायी वस्तु तक पहुँचा जा सके। अतः यह सच है की विभिन्न तरंगों के विभिन्न इन्द्रिय प्रदत्त होते है तथा यह भी सच है की विभिन्न समय में दिए गए किसी एक स्थान पर एक व्यक्ति का एक ही इन्द्रिय प्रदत्त होता है जिससे हम यह जान लेते हैं की उपर्युक्त इन्द्रिय प्रदत्त कथनों के अतिरिक्त एक स्थाई सार्वजनिक वस्तु है जिसे विभिन्न समय में विभिन्न लोगो के इन्द्रिय-दत्त कथनों द्वारा देखा जाना माना जाता है।

अब जहाँ एक उपर्युक्त विचार यह माने जाने पर निर्भर करते हैं की हमारे अतिरिक्त अन्य लोग हैं जो इस प्रश्न को उठाएंगे। अन्य लोग अपनी बातें कतिपय इन्द्रिय प्रदत्त कथनों यथा उनकी दृष्टि अथवा उनकी आवाज के द्वारा बताएंगे, यदि मुझे यह विश्वास करने का कारण नही है की मेरे इन्द्रिय प्रदत्त से स्वतंत्र भी भौतिक वस्तुए हैं। यह विश्वास करने का कारण भी नही की अन्य लोग मेरे सपने के भाग के अतिरिक्त भी अस्तित्ववान है। इस प्रकार जब हम यह बताने का प्रयास करते हैं कि हमारे इन्द्रिय प्रदत्त कथन से स्वतंत्र भी वस्तुएं अवश्य होंगी तो हम अन्य व्यक्तियों के साक्ष्य को उद्धृत नहीं कर सकते हैं क्योंकि साक्ष्य में ही इन्द्रिय दत्त कथन हैं।

91. उपर्युक्त गद्यांश में दूसरे पैरा में किसे उद्धृत किया गया है?

(a) प्रत्ययवाद (b) वस्तुवाद
(c) अहंमात्रवाद (d) सापेक्षवाद

Ans. (a) : प्रश्नगत गद्यांश के दूसरे पैरा में उद्धृत है की ''जब हम यह बताने का प्रयास करते हैं की हमारे इन्द्रिय प्रदत्त कथन से स्वतंत्र भी वस्तुएं है तो हम अन्य व्यक्तियों के साक्ष्य को उद्धृत नही कर सकते क्योंकि साक्ष्य में ही इन्द्रियदत्त कथन है।'' यह उद्धरण वस्तुतः प्रत्ययवाद की ओर संकेत है।

92. उपर्युक्त गद्यांश के पहले पैरा में निम्नलिखित में से किसके विषय पक्ष प्रस्तुत किया गया है?

(a) सम्प्रत्ययवाद
(b) वस्तुवाद
(c) अहंमात्रवाद
(d) सापेक्षवाद

Ans. (b) : पैरा के अनुसार ''यह सच है की विभिन्न समय में दिए गए किसी एक स्थान पर ही व्यक्ति का एक ही इन्द्रिय प्रदत्त होता है, जिससे हम यह जान सकते हैं की उपर्युक्त इन्द्रिय प्रदत्त कथनों के अतिरिक्त एक स्थाई सार्वजनिक वस्तु है, जिसे विभिन्न समय में विभिन्न लोगों के इन्द्रिय दत्त कथनों द्वारा देखा जाना जा सकता है।'' यह वस्तुतः वस्तुवाद की व्याख्या है।

93. दिए गए गद्यांश में वाह्य जगत का अस्तित्व प्रभावित करने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा/ से कारण बताया/बताए/ गए हैं/है?

A. अन्य लोगों का साक्ष्य
B. सादृश स्थितियों में इन्द्रिय प्रदत्त में सदृशता
C. हमारे इन्द्रिय प्रदत्त में भिन्नता को प्रकाश परिप्रेक्ष्य और परावर्तन के नियमों से समझाया जा सकता है।
D. इन्द्रिय गत अनुभूति की दोषक्षमता

निम्नलिखित में सही विकल्प का चयन कीजिए?

(a) केवल A और B
(b) केवल A, B और C
(c) केवल A, B और D
(d) केवल D

Ans. (b) : वाह्य जगत का अस्तित्व निम्न कारणों से प्रभावित होता है-
(i) अन्य लोगो का साक्ष्य।
(ii) सादृश्य स्थितियो में इन्द्रिय प्रदत्त में सदृशता।
(iii) हमारे इन्द्रिय प्रदत्त में भिन्नता जो प्रकाश परिप्रेक्ष्य और परावर्तन के नियमों से समझी जा सकती है।

94. उपर्युक्त गद्यांश के अनुसार 'मेरा यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है की मेरे इन्द्रिय प्रदत्त कथनो से स्वतंत्र भी भौतिक वस्तुएं हैं। मेरा यह विश्वास करने का भी कारण नहीं है की अन्य लोग मेरे सपने के भाग के अतिरिक्त भी अस्तित्ववान हैं क्योंकि-

A. मुझे यह सुनिश्चित करने का कोई तरीका नहीं है की अन्य लोग मिथ्या बोल रहे हो।
B. अन्य व्यक्तियों का अस्तित्व भी इन्द्रिय प्रदत्त कथनों में सिमट सकता है।
C. जो वस्तु हम सपने में देखते हैं वो वास्तविक जगत में नही है।
D. मैं केवल अपनी अनुभूति के बारे में आश्वस्त हो सकता हूँ।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

निम्नलिखित विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए?

(a) केवल A
(b) केवल B
(c) केवल B और C
(d) केवल A और B

Ans. (b) : मेरा यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है की मेरे इन्द्रिय पदत्त कथनों से स्वतंत्र भी भौतिक वस्तुएँ है। मेरा यह विश्वास करने का भी कारण नही है की अन्य लोग मेरे सपने के भाग के अतिरिक्त भी अस्तित्ववान है क्योंकि अन्य व्यक्तियों का अस्तित्व भी इन्द्रिय प्रदत्त कथनो में सिमट सकता है।

95. जगत में हमारे अतिरिक्त अन्य लोग हैं, इस स्थिति की विरोधी दार्शनिक स्थिति हैः-

(a) अहंमात्रवाद
(b) व्यक्तिनिष्ठ प्रत्ययवाद
(c) अतीन्द्रिय प्रत्ययवाद
(d) संशयवाद

Ans. (a) : जगत में हमारे अतिरिक्त अन्य लोग भी है इस स्थिति की विरोधी दार्शनिक स्थिति है अहंमात्रवाद।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उत्तर दीजिए?

यदि आप सोचते हैं की सत्य ज्ञान की अमुक वस्तुएं, प्रसरण द्वारा स्थापित होती हैं, तो हमारा प्रश्न है कि वे प्रमाण कैसे स्थापित होते हैं? यदि आप समझते हैं की प्रमेय को प्रमाण द्वारा स्थापित किया जाता है, तथा वे प्रमाण अन्य प्रमाण द्वारा स्थापित होते हैं, तो यदि आप समझते हैं की प्रमाण के बिना प्रमाण स्थापित किए जाते हैं तो आप की दार्शनिक स्थिति अनुपयोगी है। यह विचार की प्रमाण, अन्य वस्तुओं के साथ-साथ स्वयं को भी स्थापित करते हैं – को स्वतः प्रमाण्यवाद करते हैं, जिसके प्रवक्ता प्रभाकर एवं शंकर रहे है।

अब यदि आप यह सोच रहे हैं की प्रमाण के स्थापित होने से प्रमेय स्थापित होते हैं और प्रमेय के स्थापित होने से प्रमाण स्थापित होते है तो उनमें अन्योन्याश्रय दोष होगा।

96. निम्नलिखित में कौन-सा भारतीय दर्शन यह विश्वास करता है की "प्रमाण स्वयं को स्थापित करता है।"

A. न्याय
B. बौद्ध
C. प्रभाकर
D. शंकर का अद्वैत

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए-

(a) केवल A और B
(b) केवल B, C और D
(c) केवल C और D
(d) केवल B और C

Ans. (c) : पूर्वमीमांसकों में प्रभाकर का महत्वपूर्ण स्थान है। ये स्वतः प्रमाण्यवाद को मानते है। प्रभाकर के अनुसार 'स्वतः' का अर्थ है 'ज्ञान जनक सामग्री'। जो दोषरहित कारण सामग्री ज्ञान को उत्पन्न करती है, वही सामग्री उस ज्ञान के प्रमाण्य को भी साथ ही उत्पन्न करती है। स्वतः प्रमाण्यवाद पर इसी तरह का मत शंकर का भी है। प्रभाकर और शंकर के अनुसार "प्रमाण अन्य वस्तुओं के साथ-साथ स्वयं को भी स्थापित करते हैं, को स्वतः प्रमाण्यवाद कहते हैं।

97. यदि हम विश्वास करें की प्रमाण के द्वारा प्रमेय स्थापित होते है और प्रमेय स्थापित होने से प्रमाण भी स्थापित हो जाते हैं, इनमे से कौन सा दोष होगा?

(a) अनवस्था दोष
(b) चक्रक दोष
(c) अन्योन्याश्रयदोष
(d) गौरव दोष

Ans. (c) : "अगर यह माना जाए की प्रमाण के द्वारा प्रमेय स्थापित होते है" और प्रमेय के द्वारा प्रमाण की स्थापना होती है तो इसमें जो दोष उत्पन्न होगा उसे अन्योन्याश्रय दोष कहते है।

98. दिए गए गद्यांश में किस प्रकार का तर्क है?

(a) उभयतः पाश
(b) विरोधाभास
(c) विभ्रांति
(d) भूसे का पुतला (स्ट्रामैन)

Ans. (a) : दो या दो से अधिक वस्तुओ में से एक का चयन करने की कठिन स्थिति को दुविधा या उभयतःपाश कहते है। प्रस्तुत गद्यांश में प्रमेय और प्रमाण के बीच असमंजस की स्थिति होने से उभयतःपाश तर्क है।

99. यदि हम यह विश्वास करते है की, प्रमाण स्वयं किसी प्रमाण से स्थापित नहीं होता है तो किस दार्शनिक स्थिति को छोड़ा जाता है?

(a) प्रमेय की स्थापना प्रमाण द्वारा होती है।
(b) प्रमाण स्वयं स्थापित है।
(c) प्रमेय स्वयं स्थापित है।
(d) प्रमाण और प्रमेय दोनो स्वयं द्वारा स्थापित है।

Ans. (a) : यदि यह समझा जाता है की प्रमेय को प्रमाण द्वारा स्थापित किया जाता है, तथा वे प्रमाण अन्य प्रमाण द्वारा स्थापित होते हैं, तो यदि यह समझा जाता है कि प्रमाण के बिना प्रमाण स्थापित किए जाते हैं तो यह अनुपयोगी दार्शनिक स्थिति होती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि "यह विश्वास की प्रमाण स्वयं किसी प्रमाण से स्थापित नहीं होता है तो जिस दार्शनिक स्थिति को छोड़ा जाता है वह है "प्रमेय की स्थापना प्रमाण द्वारा होती है।"

100. यह कथन की 'प्रमाण अन्य वस्तुओं के साथ-साथ स्वयं को भी स्थापित करते हैं, जिस सिद्धांत को निरूपित करता है?

(a) परतः प्रमाण्यवाद
(b) स्वतः प्रमाण्यवाद
(c) स्वतः अप्रमाण्यवाद
(d) परतः अप्रमाण्यवाद

Ans. (b) : जब प्रमाण अन्य वस्तुओं के साथ-साथ स्वयं को भी प्रमाणित करते है तो यह सिद्धांत स्वतः प्रमाण्यवाद कहलाता है। प्रभाकर और कुमारिल जैसे मीमांसक स्वतः प्रमाण्यवादी है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2019
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. 'शब्दः नित्यचक्षुषत्वात्' उपर्युक्त अनुमान में कौन-सा हेत्वाभास है?
(a) साधारण सष्टाभिचार
(b) स्वरूपसिद्ध
(c) विरूद्ध
(d) सत्प्रतिपक्ष

Ans. (b) : स्वरूपसिद्ध हेत्वाभास है, क्योंकि 'चाक्षु होना' हेतु स्तभावतः पक्ष शब्द में असिद्ध है, क्योंकि चाक्षुष होना कान का गुण न होकर आँख का गुण है, अतः यहां पक्ष तो असत् नही है, किन्तु हेतु का स्वरूप ही ऐसा है कि वह पक्ष में नही रह सकता।
(भारतीय दर्शन आलोतन एवं अनुशीलन- चन्द्रधर शर्मा)

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन नीति के संवेगी सिद्धान्त से समुचित है?
(A) नैतिक भाषा का कार्यभावों को अभिव्यक्त करता है।
(B) यदि कोई कथन अनुभव के द्वारा सत्यापित नहीं होता है, तो यह पुनरूविक नही है।
(C) नैतिक विधेय तथ्यात्मक होते है।
(a) केवल a (b) केवल a, c
(c) केवल a और c (d) a, b, c

Ans. (a) : नैतिक भाषा कार्यभावों को अभिव्यक्त करना नीति के संवेगी सिद्धान्त पर आधारित है, क्योंकि Ayer का कहना है, कि जब हम अपने कार्यभावों को व्यक्त करने के लिए संवगों Ayer का कहना है, कि जब हम अपने कार्यभावों को व्यक्त करने के लिए संवगों का प्रयोग करते है, जैसे- चोरी करना पाप है को हम संवेगात्मक रूप से कह सकते है कि चोरी करना छिः है।
(नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त- वेद प्रकाश वर्मा)

3. विटगेन्स्टाइन द्वारा अपने फिलोसोफिकल में प्रस्तुत उदाहरण बक्से में बन्द कीट का बॉक्स (बीटल इन द बॉक्स) में से किससे सम्बन्धित है?
(a) आस्थावाद
(b) दर्शन की धारणा
(c) चित्र सिद्धान्त
(d) व्यक्तिगत भाषा की आलोचना

Ans. (d) : विटगेस्टाइन द्वारा अपने फिलोसीफिकल में प्रस्तुत उदाहरण बक्से में बंद कीट (बीटल इन द बॉक्स) में व्यक्तिगत भाषा की आलोचना से सम्बन्धित है, क्योंकि (बीटल इन द बॉक्स) में व्यक्तिगत भाषा की आलोचना से सम्बन्धित है, क्योंकि जब कुछ दार्शनिको ने कहा 'कुछ है' तो Wittgenskin इसका खण्डन करते हुए कहते है, कि माना कि कुछ व्यक्ति है, जिनके पास अलग-अलग बॉक्स है, और कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे के Box को नहीं देख रहा है, ऐसी स्थिति में कोई व्यक्ति यह कैसे कह सकता है, कि किसके Box में क्या है सम्भव है, कि प्रत्येक के Box में अलग-अलग वस्तु हो और किसी के Box में कुछ भी नही इसलिए कुछ भी कहना ठीक नही है। इस प्रकार Wittgenstein व्यक्तिगत भाषा का खण्डन करते है।
(Tractatus- Wittgenstein)

4. सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) स्पेन्सर	(i) डेटा ऑफ एथिक्स
(B) मैकेन्जी	(ii) मेटाफिजिक्स ऑफ मॉरल्स
(C) सिजविक	(iii) ए मेनुअल ऑफ इथिक्स
(D) काण्ट	(iv) मेथड्स ऑफ इथिक्स

कूटः

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	iii	ii	i	iv
(c)	i	iii	iv	ii
(d)	i	ii	iii	iv

Ans. (c) : स्पेन्सर का 'डेटा ऑफ एथिक्स' मैकेन्जी का 'ए मेनुअल ऑफ इथिक्स', सिजविक का 'मेथडस ऑफ इथिक्स' तथा काण्ट का मेटाफिजिक्स ऑफ मोरल्स' से सम्बद्ध है।
(नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त- वेद प्रकाश वर्मा)

5. बौद्ध दर्शन में निम्नलिखित में से किस विचारधाराओं में बाह्य वस्तु को यथार्थ माना गया है?
(a) केवल माध्यात्मिक (b) केवल योगाचार
(c) केवल सौत्रन्तिक (d) सौत्रन्तिक एवं वैभाषिक

Ans. (d) : बौद्ध दर्शन में सौत्रन्तिक एवं वैभाषिक विचारधाराओं में बाह्य वस्तु को यथार्थ माना गया है, जिनमें से सौत्रन्तिक बाह्य जगत/वस्तु का ज्ञान प्रत्यक्ष से मानते है, जबकि सौत्रन्तिक बाह्य वस्तु का ज्ञान अनुमान पर आधारित मानते है।
(भारतीय दर्शन की रूपरेखा- प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

6. निम्नलिखित में से कौन दो स्पिनोजा से सम्बन्धित है?
(A) समान्तरवाद (B) अन्तः क्रियावाद
(C) सर्वेश्वरवाद (D) निमित्त/संयोगवाद
कूटः
(a) A, B, C
(b) A, B
(c) A, C
(d) A, B, C, D

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : स्पिनोजा के दर्शन के देकार्त का द्वैतवाद, अद्वैतवाद में, ईश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद में और क्रिया-प्रतिक्रियावाद समान्तरवाद में परिणत हो जाता है, इसके अतिरिक्त निमित्रवाद (देहात्मनिमित्रवाद) या संयोगवाद (देहात्मसंयोग) डेकार्ट का सिद्धान्त है।

(पाश्चात्य दर्शन- चन्द्रधर शर्मा)

7. सुमेलित करे :

(A) सार्त्र	(i) फीतर एण्ड ट्रेम्बलिंग
(B) नीत्शे	(ii) बींग एण्ड वाहींगनेस
(C) कीर्केगार्ड	(iii) वे राइटीज ऑफ रिलीजियस एक्सपीरियन्स
(D) विलियम्स जेम्स	(iv) जीनियलॉजी ऑफ मोरल्स

कूटः

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	ii	iv	i	iii
(c)	iv	ii	i	iii
(d)	iii	ii	i	iv

Ans. (b) : सार्त्र का बींग एण्ड नथिंगनेस, नीत्शे का 'दि जॉएफुल विल्ड्म', 'बियॉण्ड गुड ऐंड डीवले', दि- जीनिएलॉजी ऑफ मॉरल्स', कीर्केगार्ड का 'फीतर एण्ड ट्रेम्बलिंग', तथा विलियम्स जेम्स का 'वेराइटीज ऑफ रिलीजियस एक्सपीरियन्स' से सम्बन्ध है।

(समकालीन पाश चात्य दर्शन - बसन्स कुमार लाल)

8. यह विचार कि, 'कानून मनुष्य के लिए है, न कि कानून के लिए' यह निम्नलिखित में से किस चिंतक की आलोचना प्रस्तुत करता है।

(a) मूर (b) हीगेल
(c) काण्ट (d) स्पेन्सर

Ans. (c) : यह विचार काण्ट की आलोचना प्रस्तुत करता है। काण्ट की प्रमुख पुस्तकों में, (1781) 'Critique of Pure reason' (ज्ञान मीमांसा सम्बन्धी विषयों पर विस्तारपूर्वक विचार), 'Critique of judgement' (1790) (सौदर्य शास्त्र की मूल समस्याओं का विवेचन) 'Critique of Practical reasen (नैमिक दर्शन की मूल समस्याओं का विवेचन) है। **(पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास -डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)**

9. यह किनका मत है, कि रंग और इसका ज्ञान एक तथा समान है?

(a) वसुबन्धु (b) नागार्जुन
(c) कुमारिल (d) प्रशस्तपाद

Ans. (a) : वसुबन्धु नीला रंग और इसका ज्ञान एक तथा समान है, वसबन्धु का प्रमुख ग्रन्थ विज्ञाप्तिमात्रता है।

(भारतीय दर्शन आलोचना एवं अनुशीलन-चन्द्रधर शर्मा)

10. आईसाह बर्लिन ने नकारात्मक स्वतन्त्रता के विचार को निम्नलिखित में से मुख्य रूप से किससे सम्बद्ध किया है?

(a) शास्त्रीय मार्क्सवाद (b) उत्तरमार्क्सवाद
(c) शास्त्रीय उदारवादी परम्परा (d) समुदायवाद

Ans. (c) : आईसाह बर्लिन ने नकरात्मक स्वतन्त्रता के विचार को शास्त्रीय उदारवादी परम्परा या प्रारंभिक परम्परा से सम्बद्ध किया है, क्योंकि उदारवाद के प्रारम्भिक विचारक स्वतन्त्रता को नकारात्मक मानते थे, वे स्वतन्त्रता को बन्हानो के अभाव के रूप में देखते थे।

(सामाजिक-राजनीतिक दर्शन की रुपरेखा- प्रो. राममूर्ति पाठक)

11. निम्नलिखित में से यह किसने समर्थन किया है- 'अन्ततः राज्य का उपक्षय हो जाएगा।

(a) ईस्याह बर्लिन (b) बर्नार्ड विलियम्स
(c) रॉल्स (d) मार्क्स

Ans. (d) : कार्ल-मार्क्स ने शेषित सर्वहारा वर्ग को पूँजीपतियों के विरूद्ध संघर्ष की प्रेरणा और सफलता का रास्ता दिखाया जिसके अनुसार क्रान्ति के पश्चात् सर्वहारा-वर्ग की विजय होगी। सत्ता-मजदूरों के हाथ में होगी। पूँजीगत राज्य के स्थान पर 'श्रमजीवी' राज्य बताया गया, वर्गविहीन समाज होने के पश्चात् अन्ततः राज्य का उपक्षय या विहीन हो जाएगा।

(सामाजिक-राजनीतिक दर्शन की रूपरेखा- प्रो. राममूर्ति पाठक)

12. निम्नलिखित में से किस प्रकार का तर्क यह दावा करता है, कि इसका निष्कर्ष पूर्णरूप से इसके आधारवाक्यों द्वारा समर्थित होता है?

(a) आगमनात्मक (b) निगमनात्मक
(c) परिकल्पनात्मक तर्क (d) अप्रत्यक्ष प्रमाण

Ans. (b) : निगमनात्मक युक्ति में निष्कर्ष पूर्णरूप से इसके आधारवाक्यों द्वारा समर्थित होता है। निगमनात्मक पद्धति को व्यवस्थित रूप अरस्तु ने प्रदान किया।

निगमनात्मक युक्ति-

उदाहरण- सभी मनुष्य मरणशील है।

राम एक मनुष्य है।

∴ राम मरणशील है।

(तर्कशास्त्र प्रवेशिका- राममूर्ति पाठक)

13. सुमेलित करे :

(a) प्रमाण-व्यवस्था	(i) मीमांसा
(b) प्रमाण-संप्लत	(ii) चार्वाक
(c) स्वतः प्रमाण्यवाद	(iii) बौद्ध
(d) स्वभाववाद	(iv) न्याय

कूटः

(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iii	iv	i	ii
(c)	iii	ii	iv	i
(d)	ii	iii	iv	i

Ans. (b) : बौद्ध का प्रमाण व्यवस्था, न्याय का प्रमाण सप्लव, मीमांसा का स्वतः प्रमाण्यवाद, परतःअप्रमाण्यवाद तथा चार्वाक का स्वभाववाद, देहात्मवाद, प्रत्यक्षवाद से सम्बन्धित है।

(भारतीय दर्शन की रूपरेखा-हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

14. निम्नलिखित में से किसे वेदत्रयी में सुमेलित नहीं किया गया है?

(a) ऋग्वेद (b) यजुर्वेद
(c) अथर्ववेद (d) सामवेद

Ans. (c) : वेदत्रयी में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद को सम्मिलित किया गया है, अथर्ववेद को वेदत्रयी में सम्मिलित नही किया गया है।

(भारतीय दर्शन आलोचना अनुशीलन- चन्द्रधर शर्मा)

15. निम्नलिखित में से कौन-सा सोफिस्ट्स को स्वीकार्य है?

(a) ज्ञान वस्तुनिष्ठ है।
(b) सत्य व्यक्तिनिष्ठ है।
(c) शुभ वस्तुनिष्ठ है।
(d) सौदंर्य वस्तु में निहित है।

Ans. (b) : सोफिस्ट्स के अनुसार, सत्य व्यक्ति-निष्ठ है, जैसे कि प्रोटोगोरस के अनुसार, 'मनुष्य सभी वस्तुओं का मापदण्ड है; जबकि सुकरात इसका खण्डन करते है कि 'व्यक्ति सभी वस्तुओं का मापदण्ड नही हो सकता'।

(ग्रीक एवं मध्यकालीन दर्शन- डॉ. छोटे लाल त्रिपाठी)

16. काण्ट के वैज्ञानिक निर्णय के प्रारूप के सन्दर्भ में निम्न पर विचार कीजिए?

(A) विश्लेषणात्मक (B) संश्लेषणात्मक
(C) प्राग-आनुभाविक (D) अनुभवाश्रित

कूटः

(a) A और B (b)A और D
(c) B और C (d)C और D

Ans. (b) : काण्ट के अनुसार वैज्ञानिक निर्णय के प्रारूप के सन्दर्भ में संश्लेषणात्मक और प्राग्नुभाविक है, जिसमें संश्लेषणात्मक से तात्पर्य है, जिन निर्णयों के अन्तर्गत उद्देश्य और विधेय एक-दूसरे से भिन्न होते है, जबकि प्राग्नुभाविक निर्णय वे है, जो ज्ञान की नवीनता और यथार्थता के साथ-साथ उसे सार्वभौम और अनिवार्य बनाने के लिए ऐसे निर्णयों की आवश्यकता होती है।

(पाश्चात्य दर्शन का उद्‌भव और विकास- प्रो. हरिशंकर उपाध्याय)

17. सुमेलित करेः

(A) तत्वमीमांसा का मिरसन (i) लाइबनिज्य
(B) सत्ता-दृश्यता है (ii) लॉक
(C) ज्ञान की तीन श्रेणियाँ (iii) बर्कले
(D) स्वतन्त्रता की समस्या (iv) ह्यूम

कूटः

(a) i iii iv ii
(b) iv iii i ii
(c) iv iii ii i
(d) ii iii iv i

Ans. (c) : ह्यूम का तत्वमीमांसा का निरसन, बर्कले का 'सत्ता दृश्यता है', 'अध्यात्मवाद की स्थापना का प्रयास', 'लौक की अमूर्त प्रत्ययों की आवधारणा का खण्डन', लॉक का ज्ञान की तीन श्रेणियाँ जिसमें (a) इन्द्रिय ज्ञान (संवेदन) (b) प्रतिभ ज्ञान का अन्तः-प्रज्ञात्मक ज्ञान (c) निदर्शनात्मक ज्ञान, तथा लाइबनित्य का स्वतन्त्रता की समस्या चिद्‌णुओं के क्रियाशिक्त से है।

(पाश्चात्य दर्शन- चन्द्रधर शर्मा)

18. न्याय दर्शन के अनुसार निम्नलिखित में से कौन अदृष्ट से असंगत है?

(a) शुभ और अशुभ का आगार है
(b) आदृश्य शक्ति
(c) जड़
(d) नैतिक नियंता

Ans. (d) : न्याय दर्शन के अनुसार अदृष्ट शुभ और अशुभ का आगार, आदृश्य शक्ति तथा जड़ है, न कि कोई नैतिक नियंता है।

(भारतीय दर्शन आलोचना एवं अनुशीलन- चन्द्रधर शर्मा)

19. न्याय ज्ञानमीमांसा में निम्नलिखित में से कौन-सा केवल 'सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष' का विषय हो सकता है?

(a) धूम की विशेष स्थिति (b) धूमत्व
(c) धूम का कुछ स्थितियाँ (d) धूम की सभी स्थितियाँ

Ans. (d) : न्याय ज्ञानमीमांसा में केवल सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष का विषय धूम की सभी स्थितियाँ है, क्योंकि सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष में हम न केवल वस्तु का प्रत्यक्ष करते है, बल्कि उनमें निहित सामान्य का या जाति का भी प्रत्यक्ष कर लेते है।

(भारतीय दर्शन की रूपरेखा- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

20. कामन्दकीय नीतिसार के अनुसार 'त्रयी' पद सम्बन्धित है?

(a) भगवद्‌गीता, उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र
(b) ऋक्, यर्ज, साम
(c) स्मृति, श्रुति, उपनिषद्
(d) आरण्यक, स्मृति और अपनिषद्

Ans. (b) : कामन्दकीय नीतिसार में 'त्रयी' पद ऋक्, यर्जु, साम है, कामन्दकीय नीतिसार राज्यशास्त्र का एक संस्कृत ग्रन्थ है, कामन्दकीय नीतिसार में कुल मिलाकर 20 सर्ग (अध्याय) तथा 36 प्रकरण है, जिसमें कामन्दकीय नीतिसार के चतुर्थ सर्ग में राज्य के सप्तांगो- राजा, प्रजा, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, मित्र।

21. सुमेलित करेंः

(a) देहात्मवाद (i) वैशेषिक
(b) आत्मदेह परिमाण (ii) जैन-दर्शन
(c) नैरात्मवाद (iii) बौद्ध-दर्शन
(d) नित्यात्मावाद (iv) चार्वाक

कूटः

(a) i ii iii iv
(b) iv ii iii i
(c) iv i ii iii
(d) ii iii iv i

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : चार्वाक का देहात्मवाद, जैन दर्शन का आत्मदेह परिणाम सत्-असत् कार्यवाद, बौद्ध का नैरात्मवाद, तथा वैशेषिक दर्शन का नित्यात्मावाद, आरम्भवाद, सांख्या का सत्कार्यवाद, अद्वैत वेदान्त और विशिष्टाद्वैत का सत्कायवाद, गौड़पाद का अघातवाद, शुद्धाद्वैत का अविकृत परिणामवाद है।

(भारतीय दर्शन आलोचना एवं अनुशीलन- चन्द्रधर शर्मा)

22. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए है, उन पर विचार कीजिए और नीचे दिए गये कूट से सही उत्तर दीजिए?

अभिकथन (A) : यदि व्यक्ति साधन पर ध्यान रखे तो साध्य का औचित्य स्वतः ही सिद्ध हो जाता है।

तर्क (R) : साध्य-साधन के औचित्य को सिद्ध करता है।

(a) (A) और (R) दोनों सत्य है और (R), (A) सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य है परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नही है।
(c) (A) सत्य है और (R) असत्य है।
(d) (A) और (R) दोनों असत्य है।

Ans. (c) : गॉधीजी के अनुसार, यदि व्यक्ति साधन पर ध्यान रखे तो साध्य का औचित्य स्वतः ही सिद्ध हो जाता है, अतः साधन साध्य के औचित्य को सिद्ध करता है, जिसमें गाँधीजी साध्य के रूप में 'सत्य' को और साधन के रूप में अहिंसा को लेते है।

(सामाजिक-राजनीतिक दर्शन की रूपरेखा- प्रो. रामपूर्ति पाठक)

23. न्याय के अनुसार किस सन्निकर्ष के द्वारा गौ और गौत्व के सम्बन्ध का ज्ञान होता है?

(a) समवाय (b) संयुक्त समवाय
(c) संयोग (d) विशेषणता

Ans. (d) : प्रत्यक्ष ज्ञान का जनक इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष छह प्रकार का होता है, न्याय के अनुसार अभाव के प्रत्यक्ष में विशेषण विशेष्टाभात सन्निकर्ष होता है, अतः हात में पटाभाव का भी सन्निकर्ष विशेषण-विशेष्टाभाव अर्थात् विशेषणता का सन्निकर्ष है।

24. निम्नलिखित में से कौन-सा हीगेल के साथ असंगत है?

(a) हीगेल ने निरपेक्ष प्रत्ययवाद की वकालत की है।
(b) हीगेल ने काण्ट के अश्रेयवाद की पुष्टि की है।
(c) हीगल ने द्वन्द्वात्मक पद्धति का समर्थन किया है।
(d) हीगल ने सत् और असत् के विरोधाभासी प्रत्यय को संशलिष्ठ किया है।

Ans. (b) : काण्ट के अनुसार परमसत् अज्ञात एवं अज्ञेय है, देशकाल से परे वस्तु का अपना वास्तविक स्वरूप अज्ञात एवं अज्ञेय है, इसके विरूद्ध हीगले का कहना है कि परमसत् को अज्ञेय कहना आत्मविरोधाभासी है, कि परमसत्ता है, परन्तु वह अज्ञेय है, जो है, उसे अज्ञेय नही कहा जा सकता है, काण्ट कम से कम इतना तो जानते है, कि 'वह है' और वह संवेदनाओं का उत्पादक कारक है; अतः परमतत्व को अज्ञेय कहना भी एक प्रकार से उसे जानना है।

(पाश्चात्य दर्शन- चन्द्रधर शर्मा)

25. निम्नलिखित में से कौन 'गूढ-ज्ञानवादी प्राणी' की आवधारणा को प्रतिपादित करता है?

(a) जे. कृष्णमूर्ति (b) नारायण गुप्त
(c) डी. डी. उपाध्याय (d) श्री अरविन्दो

Ans. (d) : 'गूढ़ज्ञानाप्राणी' की आवधारणा श्री अरविन्दो द्वारा प्रतिपादित है, अरविन्द पूर्णाद्वैतवादी दार्शनिक थे। उनकी मुख्य कृति में 'दिव्य जीवन', 'सावित्री', 'The Secref of the veda', The problem of Rebirth', 'Foundation of indian cutture' है, इसके अतिरिक्त 'वन्दे मातरम्' अखबार इन्ही के द्वारा प्रतिपादित किया गया।

(आधुनिक भारतीय चिन्तन- डॉ. ओम प्रकाश टाक)

26. सुमेलित कीजिए :

(A) अख्यातिवाद (i) नागार्जुन
(B) असत्रत्यातिवाद (ii) तसुबन्धु
(C) आत्मख्यातिवाद (iii) कुमारिल
(D) विपरीतख्यातिवाद (iv) प्रभाकर

कूटः

(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	i	iii	iv
(c)	iv	i	ii	iii
(d)	iv	ii	i	iii

Ans. (c) : भारतीय दर्शन में भ्रम के सिद्धान्त को ख्यातिवाद कहते है :

(1) प्रसिद्धार्थ ख्यातिवाद - चार्वाक
(2) आत्म-ख्यातिवाद - विज्ञानवाद/योगात्तार
(3) शून्यख्यातिवाद या असतत्ख्यातिवाद -शून्यवाद/माध्यामिक
(4) अन्यथारख्यातिवाद - न्याय वैशेषिक
(5) सद्असत्ख्यातिवाद/विवेकख्यातिवाद - सांख्य दर्शन
(6) अख्यातिवाद- प्रभाकर (अन्तिताभिधानवाद)
(7) विपरीतख्यातिवाद - कुमारिल (अभिहितान्तयवाद)
(8) अनिर्वचनीय या सद्सद्विलक्षणख्याति -अद्वैत वेदान्त
(9) सत् या यथार्थख्यातिवाद - विशिष्टाद्वैत
(10) अभिनव अन्यथाख्यातिवाद - द्वैतवाद (भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा)

27. अभिकथन (A) और कारण (R) नीचे दिए गए है। उन पर विचार और लॉक के सन्दर्भ में सही कूट का चयन करे;

अभिकथन (A) : चिद्णु गवाक्षहीन है।

तर्क (R) : चिद्णुओं में पूर्व स्थापित सामंजस्य है।

(a) (A) और (R) दोनों सत्य है, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य है, और (R), (A) की सही व्याख्या नही है
(c) (A) सत्य है, और (R) असत्य है।
(d) (A) असत्य है, और (R) सत्य है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : लाइबनिज्य के अनुसार चिद्णु गवाक्षहीन है, सभी चिद्णु स्वतन्त्र और क्रियाशील है परन्तु आत्मा और शरीर के चिद्णुओं में परस्पर सम्बन्ध कैसे हो सकता है, इसके लिए लाइबनिज्य ने चिद्णुओं में पूर्व स्थापित सामंजस्य के नियम का प्रतिपादन किया। अतः चिद्णुओं में पूर्व स्थापित सामंजस्य का उसके भवाक्षहीन होने से कोई मतलब नही है।

(पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास- डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

28. न्याय-ज्ञानमीमांसा में हम जिसके द्वारा स्त्री को साँप समझते है?

(a) संयोग-सन्निकर्ष (b) सामान्य लक्षण सन्निकर्ष
(c) ज्ञानलक्षण सन्निकर्ष (d) योगज- सन्निकर्ष

Ans. (c) : न्याय दर्शन में ज्ञान लक्षण सन्निकर्ष वह सन्निकर्ष हैं, जिसमें इन्द्रियों अपने सम्बन्धित विषय से भिन्न विषय का ज्ञान प्रदान करती है, जैसे- रस्सी को साँप, चन्दन की लकड़ी के टुकड़े को देखकर उसके सुगन्धित होने का ज्ञान, न्याय-दर्शन में वस्तुवाद की रक्षा और भ्रम की सम्यक् रूपेण व्याख्या करने के लिये इस सन्निकर्ष को स्वीकार किया गया।

(भारतीय दर्शन की रूपरेखा- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

29. बहुसंस्कृतिवाद के सन्दर्भ में विलकिमात्रिका के दृष्टिकोण से निम्नलिखित में से कौन-सा सही नही है?

(a) उसने बिम्ब प्रतिनिधान का सिद्धान्त किया।
(b) वह व्यक्तिवादी प्रतिनिधित्व प्रारूप को समूह प्रतिनिधित्व प्रारूप द्वारा बदलना चाहता है।
(c) समूह का प्रतिनिधित्व जनसंख्या के अनुपात में होना चाहिए।
(d) समूह अपने पृथक् प्रतिनिधित्व की व्यवस्था को नकार नही सकते।

Ans. (d) : बहु-संस्कृतिवाद के सन्दर्भ में चार्ल्स टेलर ने 'पहचान की राजनीति' तथा विल-किमालिका ने अल्पसंख्यक अधिकार की आवधारणा दी। जिसके अन्तर्गत तिलकिमालिका की महत्वपूर्ण रचनाएँ- Multicultural Citizenship, Multicultural Odysseys है, विल किमालिका के दृष्टिकोण में समूह अपने से पृथक् प्रतिनिधित्व की व्यवस्था को नकार सकते है।

30. चार्वाक के अनुसार अनुमान प्रमाण नहीं हो सकता क्योंकि;

(a) अनुमान सदैव असत्य होता है।
(b) अनुमान कभी-कभी असत्य होता है।
(c) अनुमान प्रत्यक्ष पर निर्भर है।
(d) व्याप्ति स्थापित नही की जा सकती।

Ans. (d) : चार्वाको के अनुसार, अनुमान का प्रमुख साधन व्याप्ति ज्ञान है, जिसे स्वयं अनुमान पर आधारित माना जा सकता है, चार्वाको के अनुसार व्याप्ति की स्थापना सम्भत नही हो सकती है, अतः वह केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को ही मानते है, चार्वाको के अनुसार व्याप्ति की स्थापना प्रत्यक्ष के आहार पर सम्भव नही है, क्योंकि एक साथ सारी घटनाओं का निरीक्षण नही किया जा सकता।

31. निम्नलिखित में से यह किसका कथन है कि ''मेरा धर्म मुझे बताता है कि कोई यदि ऐसा संकट उपस्थित हो, जिसे दूर नही किया जा सकता, तो हमें व्रत (उपवास) रखना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए।

(a) विवेकानन्द (b) गाँधी
(c) टैगोर (d) राधाकृष्णन

Ans. (b) : गाँधी जी के अनुसार यदि हमारे समक्ष ऐसा संकट उपस्थित हो, जिसे दूर नही किया जा सकता, तो हमें उपवास और प्रार्थना करनी चाहिए, जिससे आत्मशुद्धि होगी और इसमें (हड़ताल) लक्ष्य स्वयं कष्ट सहन करते हुए विरोधी का हृदय परिवर्तन करना होता है।

(आधुनिक भारतीय चिन्तन- डॉ. ओमप्रकाश टाक)

32. सूत्र $\sim (P \partial Q)$ निम्नलिखित में से किसके समतुल्य है?

(a) P.Q (b) PvQ
(c) P.~Q (d) $Q \partial P$

Ans. (c) : $\sim (P \partial Q) = P.\sim Q$

33. शंकर के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा अस्वीकार्य है?

(a) प्रत्यक्षगत भ्रम अनिवर्चनीय है।
(b) ब्रह्म अनंत-कल्याण गुण परिपूर्ण है।
(c) मोक्ष का साधन ज्ञान और केवल ज्ञान है।
(d) जगत् की सत्ता व्यावहारिक है।

Ans. (b) : शंकर के अनुसार ब्रह्म निर्गुण है, परन्तु रामानुज के अनुसार ब्रह्म सगुण, साकार, पुरूषोत्तम है वह अनन्त श्रेष्ठ गुणों से युक्त तथा सभी प्रकार के हेय गुणों से रहित है। अतः ब्रह्म अनन्त-कल्याण गुण परिपूर्ण रामानुज का स्वीकार्य है।

34. अनुमान के नियमों का उपयोग करते हुए प्रतिज्ञप्तयात्मक तर्कशास्त्र में प्रस्तुत प्रमाण क्या कहलाते है?

(a) स्वाभाविक निगमन (b) अनुमान के नियम
(c) प्रारंभिक वैध तर्क (d) विचार के नियम

Ans. (a) : स्वाभाविक निगमन, अनुमान के नियम के अन्तर्गत 9 प्रकार के नियम आते है:-

(1) $\dfrac{P \partial q \quad P}{\therefore q}$ (Modus Pnens)

(2) $\dfrac{P \partial q \quad \sim q}{\therefore \sim q}$

(3) $\dfrac{P \partial q \quad q \partial r}{\therefore P \partial r}$ (हेतु-हेतुमत)

(4) $\dfrac{Pvq \quad \wedge P}{\therefore q}$ (वैकल्पिक)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

$(P \partial q).(r \partial s)$

(5) $\dfrac{Pvr}{\therefore qvs}$ (विधायक उभयतपाश)

(6) $P \partial q$
$\therefore P \partial (P.q)$ (समविलयन)

(7) $P.q$
$\therefore P$ (सरलीकरण)

(8) P
$\dfrac{q}{\therefore P.q}$ (संयोजन)

(9) P
$\therefore Pvq$ (योग)

(तर्कशास्त्र प्रवेशिका- राममूर्ति पाठक)

35. निम्नलिखित में से किस सिद्धान्त में यह प्रतिपादित किया गया है, कि दण्ड को कठोरता अपराध की गम्भीरता की समानुपाती होनी चाहिए?

(A) प्रतिरोधात्मक सिद्धान्त (निवारक)
(B) प्रतिकारात्मक सिद्धान्त (प्रतिफलनात्मक)
(C) सुधारात्मक सिद्धान्त

कूटः

(a) A और D (b) C केवल
(c) A केवल (d) B केवल

Ans. (b) : प्रतिकारात्मक सिद्धान्त वह है, जिसमें दण्ड साध्य है, और अपराधी को दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। इसमें अपराधी को उतना ही कष्ट दिया जाना चाहिए, जितना उसने पीड़ित व्यक्ति को दिया इसे यहूदियों ने धर्मग्रन्थ 'ओल्ड टेस्टामेण्ट' में स्पष्ट रूप से कहा गया कि, 'आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत'। जबकि निवारक या प्रतिरोधात्मक और सुधारात्मक में ऐसा नहीं है।

(नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त- वेद प्रकाश वर्मा)

36. अष्टांग -मार्ग के सही क्रम वाले विकल्प को चुनेः-

(a) सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त
(b) सम्यक् दृष्टि, सम्यक् वाक, सम्यक् संकल्प, सम्यक् कर्मान्त
(c) सम्यक् दृष्टि सम्यक् संकल्प, सम्यक् कर्मात, सम्यक् वाक्
(d) सम्यक् संकल्प, सम्यक् दृष्टि सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त

Ans. (a) : अष्टांग मार्ग/आष्टागिक मार्ग बौद्ध दर्शन के चतुर्थ आर्य सत्य के अन्तर्गत दुःख निरोध उपाय या निर्वाण प्राप्ति उपाय के सन्दर्भ में किया गया है, ये इस प्रकार है;

सम्यक् दृष्टि → सम्यक् संकल्प → सम्यक् वाक → सम्यक् आजीव → सम्यक् व्यायाम → सम्यक् स्मृति → सम्यक् समाधि।

37. यह विचार कि ज्ञान, ज्ञेय, ज्ञाता और स्वयं ज्ञान को प्रकाशित करता है; निम्नलिखित में से किसके द्वारा प्रतिपादित है;

(a) भट्टमीमांसा (b) प्रभाकर मीमांसा
(c) सांख्य (d) बौद्ध-दर्शन

Ans. (b) : प्रभाकर मीमांसा में प्रत्यक्ष ज्ञान के सन्दर्भ में 'त्रिपुटी-प्रत्यक्षवाद' है, जिसमें किसी भी विषय के प्रत्यक्षीकरण में ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय तीनो का प्रत्यक्ष होता है।

38. किसी निगमनात्मक तर्क के आधार वाक्य यदि सत्य है, तो वे उसके निष्कर्ष के सत्य के लिए निर्णायक आधार प्रदान करते है, निगमनात्मक तर्क की यह विशेषता क्या कहलाती है?

(a) आपादन
(b) सत्यमूल्य
(c) वैधता
(d) विधानात्मक- हेतु फलानुमान

Ans. (c) : निगमनात्मक तर्क के विशेषता वैधता या अवैधता होती है, जबकि तर्कवाक्य की विशेषता सत्यता या असत्यता होती है, अतः यदि किसी निगमनात्मक तर्क के आधारवाक्य यदि सत्य है, तो वे उसके निष्कर्ष के सत्य के लिए निर्णायक आधार प्रदान करते है, निगमनात्मक तर्क की यह विशेषता वैधता कहलाती है।

(तर्कशास्त्र प्रवेशिका- राममूर्ति पाठक)

39. निम्नलिखित में से किस सिद्धान्त का प्रतिपादन शंकर ने किया है?

(a) नित्यानित्य वस्तु-विवेक (b) ज्ञान कर्म- समुच्चयवाद
(c) भेदभाव (d) प्रपंच-नित्यत्ववाद

Ans. (a) : शंकरचार्य के अनुसार, अज्ञान का निवारण ब्रह्म ज्ञान से होता है, जिसके लिए शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि अनिवार्य है, जिसके लिए शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित साधन चतुष्टय सिद्धान्त है जो निम्न है, नित्यानित्य वस्तु विवेक, वैराग्य, शमदमादि- साधन सम्पत् और मुमुक्षत्व है।

(भारतीय दर्शन-चन्द्रधर शर्मा)

40. $(x) \; (\phi x) \; \therefore \phi\surd$ (जहाँ $\surd$ कोई एक प्रतीक है) निम्नलिखित में से किसका रूप है?

(a) सार्वभौमिक सामान्यीकरण (b) सार्वभौमिक दृष्टांतीकरण
(c) तात्विक दृष्टान्तीकरण (d) तात्विक सामान्यीकरण

Ans. (b) : सार्वभौमिक दृष्टांतीकरण = $(x)' \; (\phi x)'$

$\therefore \phi\surd$ (जहाँ $\surd$ कोई एक प्रतीक है)

जो परिमाणन के चार नियमो के अन्तर्गत पहला नियम है।

(तर्कशास्त्र प्रवेशिका- न्यायमूर्ति पाठक)

41. निम्नलिखित में से कौन-सा दार्शनिक दृष्टिकोण प्लेटों को स्वीकार्य है;

(a) प्रत्यय भ्रामक है।
(b) प्रत्यय पूर्ण एवं नित्य है।
(c) प्रत्यय क्षण-क्षण परिवर्तित होते है।
(d) प्रत्यय आपतिक रूप है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : प्लेटो के अनुसार नित्य, सार्वभौम, पूर्ण एवं अपरिवर्तनशील सत्ता सामान्य है, जिसे प्लेटो प्रत्यय कहते है; ये प्रत्यय निरपेक्ष सत् है, और इन प्रत्ययों का ज्ञान अनुभव से न होकर बुद्धि से होता है।

42. सुमेलित करे;

(A) ह्यूम	(i) संस्कार
(B) डेकार्ट	(ii) आत्मगत प्रत्ययवाद
(C) बर्कले	(iii) प्रतिनिधानवाद
(D) लॉक	(iv) द्वन्द्ववाद

कूटः

(a) i iv iii ii
(b) i iv ii iii
(c) i iii iv ii
(d) iiv ii iii iv

Ans. (b) : ह्यूम के अनुसार, हमारा सारा ज्ञान इन्द्रिय प्रत्यक्षों के माध्यम से होता है, जिसके दो घटक संस्कार और प्रत्यय है, डेकार्ट का मन-शरीर द्वन्द्ववाद या द्वैतवाद, बर्कले का आत्मगत प्रत्ययवाद और लॉक का प्रतिनिधिमूलक वस्तुवाद है, जिसमें ज्ञान के तीन पक्ष ज्ञाता, ज्ञेय और प्रत्यय है।

43. 'मूल्यों का मूल्यांतरण' का विचार किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया है?

(a) मूर (b) नीत्शे
(c) कीर्कगार्ड (d) सार्त्र

Ans. (b) : मूल्यों का मूल्यांतरण का विचार नीत्शे का है, इसके अतिरिक्त शक्ति की संकल्प, और अतिमानव का सिद्धान्त का विशेष महत्व है।

44. वैदिक परम्परा में ब्रह्मा किसका ऋत्विक् होगा?

(a) केवल ऋग्वेद का
(b) केवल सामवेद का
(c) केवल यजुर्वेद का
(d) प्रष्क, साम और यजुर्वेद का

Ans. (d) : वैदिक परम्परा में ब्रह्मा ऋक, साम और यजुर्वेद का ऋत्विक होगा, जिसमें ऋक् में देवताओं की स्तुति में गाये गये मन्त्रों का संग्रह, यजुर्वेद में अनुष्ठानों तथा कर्मकाण्डों में प्रयुक्त होने वाले श्लोको तथा मन्त्रों का संग्रह है; जबकि सामवेद में देवताओं की स्तुति में गाये जाने वाले मन्त्रों का संग्रह है।

45. $P \partial q, q \partial r, P \partial r$ यह किसका रूप है?

(a) निषेधक हेतु फलानुमान (मॉडल त्पलेन्स)
(b) हेत्ताश्रित न्यायवाक्य (हाइपोविटिकल सिलोजिन्म)
(c) विधानात्मक हेतुफलानुमान (मॉडल पोनेन्स)
(d) वियोजक न्यायवाक्य (डिसंजविटव सिलोजिज्म)

Ans. (b) : $P \partial q$
$\underline{q \partial r}$ - हेप्वापित न्याय वाक्य
$\therefore P \partial r$

46. कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार राजा में निहित नियम बनाने का अधिकार है, निम्नलिखित में से किन स्रोतों से फलित है?

(a) धर्म, व्यवहार, चरित्र और राजशासन
(b) धर्म, व्यवस्था, चरित्र और राजशासन
(c) ईश्वर, जनशासन, चरित्र और राजशासन
(d) ईश्वर, जनपद, चरित्र और प्रयी

Ans. (a) : कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अनुसार राजा धर्म, व्यवहार, चरित्र और राजशासन का नियम बनाने का अधिकार है, जिससे राज्य में शान्ति की स्थापना होगी। क्योंकि प्रजा के जीवन और सम्पत्ति की रक्षा करना तथा असामाजिक तत्वों और अवस्था उत्पन्न करने वाले व्यक्तियों को दण्डित करना है, राजा का कार्य है, कौटिल्य का मानना है कि, 'प्रजा की प्रसन्नता में ही राजा की प्रसन्नता है, प्रजा के लिए जो कुछ भी लाभकारी है, उसमें उसका अपना भी लाभ है।

47. सार्त्र के लिए स्वयं को केवल तथ्यात्मकता के भाग के रूप में मानना क्या कहलाता है?

(a) परमसत् (b) चेतनसत्ता
(c) दुरास्था/आत्मप्रवंचना (d) मानववाद

Ans. (c) : दुरास्था स्वयं को केवल तथ्यात्मकता के भाग के रूप में मानता है, इसमें व्यक्ति को प्रामणिक जीवन जीना बहुत ही कठिन लगता है, Bod Failth यह अपने आपको छलने का बहाना है, क्योंकि यह अपनी वास्तविकता को अपने ही से छिपाने का बहाना है, वह अपनी मूल विशिष्टता, अपनी मानवीयता अपनी मौलिक स्वतन्त्रता से वस्तुतः भाग भी नहीं सकता, किन्तु वह समझ बैठता है, कि वह ऐसा कर सकता है।

(समकालीन पाश्चात्य दर्शन- वसन्त कुमार लाल)

48. यह मौलिक तत्व है, जिसके माध्यम से विरलीकरण और संघनन की प्रक्रिया के द्वारा यह जगत् आस्तित्व में आता है, यह दार्शनिक मत किसका है?

(a) सुकरात (b) एर्नेग्जीमेनीज
(c) पाइथागोरस (d) एनेग्जीगोरस

Ans. (b) : एनेग्जीमेनीज के अनुसार वायु ही जगत् का मूल है यह सृष्टि दो प्रक्रियाओं द्वारा सम्पन्न होती है; पहला, विरलीकरण में वायु अत्यधिक ऊष्ण होकर अग्नि का रूप धारण करती है, और अग्नि वायु के द्वारा ऊपर उठकर तारागणों में परिवर्तित हो जाता है, तथा दूसरा संघनन में इसके विपरीत यह शीतल होकर पवन, बादल, जल, पृथ्वी तथा पत्थर का रूपधारण करता है।

49. योग दर्शन के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा चित्र भूमि नही है?

(a) क्षिप्त (b) विक्षिप्त
(c) निरूद्ध (d) राग

Ans. (d) : योग दर्शन के अनुसार चित्र की पाँच भूमियाँ या अवस्थायें होती है, जो इस प्रकार है, क्षिप्त → मूढ़ → विक्षिप्त → एकाग्र → और निरूद्ध

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

50. निम्नलिखित में से यह किसका कथन है, कि ''अनन्त और शान्त उसी प्रकार एक है, जैसे गीत और गायन एक है?''

(a) विवेकानन्द (b) टैगोर
(c) श्री अरविन्द (d) गाँधी

Ans. (b) : यह टैगोर का कथन है, इसके अतिरिक्त टैगोर की प्रमुख रचना गीतांजलि, साधना, Personality, The rellgion of man है, और इन्होंने दो देशों भारत एवं बांग्लादेश के राष्ट्रगान की रचना की।

51. नीचे चार ज्ञानेन्द्रियों की सूची दी गई है। न्याय ज्ञानमीमांसा के अनुसार जिन सभी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा हमें द्रव्य का प्रत्यक्ष होता है, उससे सम्बन्धित कूट का चयन कीजिए?

(a) चाक्षुषेन्द्रिय और श्रवणोन्द्रिय
(b) श्रवणोन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय
(c) चाक्षुषेन्द्रिय और घ्रापेन्द्रिय
(d) चाक्षुषेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय और आन्तरिक ज्ञानेन्द्रिय

Ans. (d) : न्याय ज्ञानमीमांसा के अनुसार ज्ञानेन्द्रियाँ दो प्रकार की होती है, बाह्य ज्ञानेन्द्रियाँ आँख, जीभ, कान, नाक और त्वचा। इसके अतिरिक्त मन भी एक इन्द्रिय है, जो आन्तरिक इन्द्रिय कहलाती है, इन इन्द्रियों के अभात में हमें द्रव्य का प्रत्यक्ष ज्ञान होना अंसम्भव है।

52. निम्नलिखित में से यह किसका विचार है, कि उचित और अनुचित के सभी सन्दर्भ में राज्य के नियम ही सर्वोच्च अपीलीय न्यायालय है?

(a) मिल (b) हॉब्स
(c) देकार्त (d) लॉक

Ans. (b) : हॉब्स सामाजिक समझौतावादी विद्वान है, उनका प्रमुख ग्रन्थ 'लेवियाथन' है, जिसमें उन्होंने निरकुंश राजतन्त्र का विचार दिया, हॉब्स ने बाजारवादी सम्बन्धों की सुरक्षा हेतु एक निरकुंशतापूर्ण, शक्तिशाली राजा का समर्थन किया, क्योंकि एक शक्तिशाली राजा के द्वारा ही समाज में शान्ति व सुरक्षा बनायी जा सकती है, एक सम्प्रभु शक्ति के अभाव में लोगों की सम्पत्ति खतरे में पड़ जायेगी। अतः हॉब्स के अनुसार व्यक्ति स्वतन्त्रता वही तक है, जहाँ तक राज्य व विधि का प्रतिबन्ध न हो।

53. जब केवल एक आधार वाक्य से निष्कर्ष निकाला जाता है, तो इसे क्या कहा जाता है?

(a) आगमन (b) अव्यवहित अनुमान
(c) व्यवहित अनुमान (d) आगमनात्मक व्यवहित अनुमान

Ans. (b) : अनुमान दो प्रकार के होते है:-

(i) अव्यवहित अनुमान, जिसमें अव्यवहित अनुमान में निष्कर्ष केवल एक आधार वाक्य से निकलता है;
उदाहरण - (A) सभी मनुष्य मरणशील है।
∴ कोई मनुष्य अमरणशील नही है।

(ii) व्यवहित अनुमान, जिसमें निष्कर्ष कम से कम दो आधारवाक्यों से निकलता है। अव्यवहित अनुमान - परिवर्तन, प्रतिवर्तन, प्रति परिवर्तन आता है।

54. निम्नलिखित में से यह किसका दृढ़ विचार है, कि 'नैतिक भाषा निर्देशात्मक होती है?

(a) रॉस (b) मूर
(c) हेअर (d) सअर

Ans. (c) : हेयर नैतिक भाषा को निर्देशात्मक भाषा का एक प्रकार मानते है, आदेश भी निर्देशात्मक भाषा का एक प्रकार है, निर्देशात्मक भाषा के द्वारा कुछ करने को कहा जाता है, परामर्श का उद्देश्य भी यह बताना है, कि क्या किया जाय। इसलिए नैतिक भाषा को परामशीत्मक भी कहा जा सकता है। हेयर की मुख्य कृति, द लॅग्टॉज ऑफ मॉरल्स, फ्रीडम एण्ड रीजन मुख्य है।

55. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए है, उन पर विचार कीजिए और नीचे दिए गये कूट से सही उत्तर दीलिए?

अभिकथन (A) : ह्यूम संशयवादी है।
तर्क (R) : कारणता का सिद्धान्त अनुभववाद का आहार है।

(a) (A) और (R) दोनों सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य है, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नही है।
(c) (A) सत्य है और (R) असत्य है।
(d) (A) असत्य है, और (R) सत्य है।

Ans. (b) : कारणता का सिद्धान्त अनुभववाद का आधार नही है, क्योंकि ह्यूम परम्परागत कारणता को न मानकर कारणता को साहचर्य के नियम पर आधारित मानते है, और ह्यूम एक संशयवादी दार्शनिक है जहाँ पर तो वो तार्किक अनुभववाद के पथ पर दृढ़ता से बढ़ते हुए संशयवाद में पहुँच जाते है।

56. सुमेलित करे:

(A) होता	जो मधुर स्वर में मंत्र मान करता है।
(B) उद्गाता	जो स्तुति मन्त्रों के उच्चारण से देवताओं का आह्वान करता है।
(C) अर्ध्वयु	जो विधिवत् निरीक्षण करता है, और सभी वेदों का ज्ञाता है।
(D) ब्रह्मा	जो पूर्ण विधि विधान का पालन करते हुए आहुति देता है।

कूटः

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	i	ii	iii	iv
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	iv	iii	ii	i

Ans. (a) : ऋग्वेद, जो स्तुति मंत्रों के उच्चारण से देवताओं का आह्वान करता है, इसके उच्चारक को 'होता' कहा जाता था, सामवेद में पुरोहित को उद्गाता कहा जाता है, जो मधुर स्वर में मंत्रमान करता है, यजुर्वेद में जो पूर्ण विधि-विधान का पालन करते हुए आहुति देता है, उसे अर्ध्वयु कहा जाता था, ब्रह्मा तो है, जो विधिवत् निरीक्षण करता और सभी वेदों का ज्ञाता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

57. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए है, उन पर विचार कीजिए और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर दीजिए?

अभिकथन (A) : दृयुणक नित्य होने चाहिए।

तर्क (R) : दृयुणक नित्य परमाणुओ से निर्मित है।

(a) (A) और (R) दोनों सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य है, और (R), (A) की गलत व्याख्या है।
(c) (A) सत्य है और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है और (R) सही है।

Ans. (d) : वैशेषिक के अनुसार दिक, काल, आत्मा, मन और भौतिक परमाणुओ की न सृष्टि होती है और न विनाश ही होता अतः ये नित्य द्रव्य है, तथा परमाणु के संयोग से उत्पन्न द्वयगुक, त्रंयणुक, चुतरणुक आदि को तथा कर्म को अनित्य कहा गया है।

58. सुमेलित करे :

(A) के. सी. भट्टाचार्य	(i) माया जगत का तथ्यात्मक विवरण है।
(B) टैगोर	(ii) निषेध का क्षेत्र असीम क्षेत्र है।
(C) विवेकानन्द	(iii) जगत् सत्य सुव्यवस्थित पूर्णता है।
(D) राधाकृष्णन	(iv) यदि सत् को उसकी प्रतीति से पृथक् कर दिया जाए तो सत्य का सर्वोकृष्ट अंश भंग हो जाता है।

कूटः

(a)	i	iii	ii	iv
(b)	iv	i	ii	iii
(c)	iii	i	ii	iv
(d)	ii	iv	i	iii

Ans. (d) : के. सी. भट्टाचार्य का निषेध का क्षेत्र असीम क्षेत्र है, टैगोर का यदि सत् को उसकी प्रतीति से सर्वथा पृथक् कर दिया जाए, तो सत्य के सवोकृष्ट अंश भंग हो जाता है, विवेकानन्द का माया जगत् का तथ्यात्मक विवरण है, राधाकृष्णन का जगत् सत्य सुव्यवस्थित पूर्णता है से सम्बन्ध है।

59. न्याय ज्ञानमीमांसा में सत् हेतु का निम्नलिखित में से कौन-सा लक्षण नही है?

(a) पक्षसत्व (b) विपक्षसत्व
(c) सपक्षसत्व (d) अबाधित विषयत्व

Ans. (b) : न्याय ज्ञानमीमांसा में अनुमान को प्रामणिकता के लिए हेतु को सद् होना चाहिए। सद्हेतु वह है, जिसमें साध्य को सिद्ध करने की योग्यता हो। यह योग्यता हेतु में तब आती है, जब वह पाँच गुणों से युक्त हो;

पक्षसत्व → सपक्षसत्व → विपक्षअसत्व →अवाधित

60. वह अव्यवहित अनुमान क्या कहलाता है, जिसमें उद्देश्य और विधेय शब्दों को आपस में बदल दिया जाता है?

(a) परिवर्तन (b) प्रतिवर्तन
(c) प्रतिपरिवर्तन (d) विपरिवर्तन

Ans. (a) : परिवर्तन अव्यवहित अनुमान का वह रूप है, जिसमें उद्देश्य-विधेय का स्थान परस्पर बदल जाता है A का I, E का E, I का I, तथा O का परिवर्तन नही होता है।

उदाहरण- (A) सभी मनुष्य मरणशील है।

(I) कुछ मरणशील मनुष्य है।

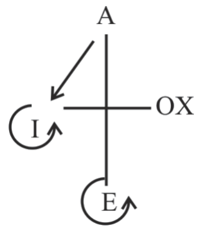

61. निम्नलिखित में से किसने प्रक्रियात्मक न्याय बनाने की पद्धति का आविष्कर्त्ता कह सकते है, जो कि मूलतात्विक न्याय की आवश्यकता की पूर्ति का साधन है?

(a) बर्नार्ड विलियम्स (b) जॉन रॉल्स
(c) राबर्ट नॉजिक (d) ड्वेर्किन

Ans. (b) : जॉन राल्स मूलतः एक उदारवादी विचारक है, उन्होंने अपनी पुस्तक 'A Theory of Justice' में अपना न्याय सिद्धान्त प्रस्तुत किया तथा इसे 'शुद्ध प्रक्रियात्मक न्याय' की संज्ञा दी। जिसका आशय न्याय का जो भी सिद्धान्त सर्वसम्मत ढंग से स्वीकार कर लिया जायेगा; उसके प्रयोग के उपरान्त जो भी विवरण व्यवस्था आस्तित्व में आयेंगी, वह अभिवार्यत, न्याय पूर्ण होगी। रॉल्स के अनुसार मुख्य समस्या प्राथमिक वस्तुओं के न्यायपूर्ण विवरण की समस्या है, प्राथमिक वस्तुओं से इसका आशय स्वतन्त्रता, अधिकार, शक्ति, अवसर, आय, सम्पत्ति, तथा आत्म सम्मान के साधनों से है।

62. निम्नलिखित नैतिक सिद्धान्तों में से कौन-सा पीटर सिंगर के अनुप्रयुक्त नीति से सम्बन्धित धारणा को प्रदर्शित करता है?

(a) कर्त्तव्य के लिए कर्त्तव्य
(b) स्वार्णिम माध्यम
(c) अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम सुख
(d) सभी वस्तुओं का अन्तनिहित मूल्य

Ans. (c) : पीटर सिंगर के अनुप्रयुक्त नीति अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम सुख से सम्बन्धित धारणा प्रदर्शित करता है, पीटर सिंगर मुख्य मुस्तक में 'एनिमल लिबरेशन' है; ये लागू नैतिकता में निपुण है।

63. सुमेलित करेः

(A) श्री अरविन्द	(i) इण्डिया विक्स फ्रीडम
(B) जे. कृष्णमूर्ति	(ii) हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ
(C) राधाकृष्णन	(iii) फ्रॉम डकिनेस टू लाइफ
(D) मौलाना आजाद	(iv) द प्रॉबलेम ऑफ रिबर्थ

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूटः

(a) iv iii ii i
(b) i iv iii ii
(c) ii i iv iii
(d) ii i iv iii

Ans. (a) : श्री अरविन्द का द प्रॉबलेम ऑफ रिबर्थ, जे. कृष्णमूर्ति का 'फ्राम डकिनेस द लाइफ', 'फ्रॉम द नोन', You are the World, total freedom, राधाकृष्णन को द हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ, The Concept of man, Eastern religion and Western thought, मौलाना आजाद का इण्डिया विन्स फ्रीडम (उद्पत्र-अल-हिलाल) में सम्बन्ध है।

64. ''युद्ध और साहस ने दान की अपेक्षा अधिक महान कार्य किए है''- यह कथन किसका है?

(a) नीत्शे (b) जॉन ड्यूई
(c) सार्त्र (d) हाइडेगर

Ans. (a) : नीत्शे नैतिकता को दो वर्गो में विभाजित किया, दासो की नैतिकता या समूह नैतिकता तथा प्रभुओं की नैतिकता या अभिजात नैतिकता, जिसमे स्नेह, दान, सहयोग, सहानुभूति, सेवा, सहनशीलता त्याग आदि गुण जिसके कारण दुर्बल व्यक्ति अपने जीवन को सुरक्षित रखने में समर्थ होते है इसके विपरीत प्रभुनैतिकता उन व्यक्तियों की नैतिकता है, जो शक्तिशाली होने के कारण दूसरो पर शासन करते है, और समाज में सदा अपना प्रभुत्व बनाए रखते है, जिसमें साहस, युद्ध, कठोरता, दृढता, अत्याचार, शोषण आदि आवश्यक मूल्य है। अतः नीत्शे प्रभुनैतिकता को वास्तव में उत्कृष्ण नैतिकता मानता है।

65. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प को काण्ट के अनुसार बुद्धि विकल्पों के वर्गीकरण में नहीं है?

(a) एकत्व (b) सीमित
(c) स्वीकार (d) कारण और कार्य

Ans. (c) : काण्ट के द्वारा निगमित 12 बुद्धि विकल्पों को चार भागों में विभक्त किया गया है,

(A) परिमाणवाचक में, (1) एकता
(2) अनेकता
(3) समग्रता
(B) गुणवाचक में, (4) सत्ता
(5) निषेध
(6) सीमा
(C) सम्बन्धवाचक में, (7) द्रव्य-गुण
(8) कारण-कार्य
(9) अन्योन्याश्रय
(D) प्रकारतावाचक में, (10) सम्भावना एवं असम्भावना
(11) अस्तित्व एवं अनस्तित्व
(12) अनिवार्यता एवं आपतिकता

66. के. सी. भट्टाचार्य के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म विषय के दर्शन की शाखा है?

(a) तर्कशास्त्र और ज्ञानमीमांसा
(b) तर्कशास्त्र और तत्वमीमांसा
(c) तर्कशास्त्र और गणित
(d) तर्कशास्त्र और विज्ञान

Ans. (b) : के. सी. भट्टाचार्य ने तर्कशास्त्र को विज्ञान न मानकर 'विषय का दर्शन' माना है, क्योंकि तर्कशास्त्र तथ्य निर्देश नहीं करते है, तर्कशास्त्र शुद्ध रूपों की खोज करता है, जो 'शुद्ध विषय' के रूप है। 'शुद्ध विषय' दर्शन की दूसरी तत्वदर्शन की विषय वस्तु है। अतः तर्कशास्त्र को तत्वमीमांसा की प्रागपेक्षा मानते है। उनके अनुसार तर्कशास्त्र में तत्वमीमांसा स्वयं को परिभाषित करती है।

67. नीचे वैशेषिक दर्शन में ईश्वर की कुछ विशेषताएँ दी गई है:

(A) जगत् का समवायिकरण (B) जगत् का निमित्तकरण
(C) परमात्मन् (D) वेदों का निमित्रकरण

कूटः

(a) A, B, C, D (b) B, C, D केवल
(c) C और D केवल (d) A और D केवल

Ans. (b) : ईश्वर जगत् का निमित्तकारण, वेदो का निमित्तिकारण, परमात्मन है, परन्तु जगत् का समवायिकरण परमाणु और परमाणुओं के संयोग से होता है।

68. प्लेटो ने निम्नलिखित में से किस संवाद में 'गाइजे की अंगूठी' के बारे में लिखा है?

(a) फ्रीडो (b) रिपब्लिक
(c) क्रीटो (d) स्पॉलॉजी

Ans. (d) : प्लेटो ने अपने संवाद रिपब्लिक में गाइजे की अँगूठी के बारे में लिखा; इसके अतिरिक्त प्लेटो के अन्य संवादों, क्रीटो, फ्रोटो, स्पालॉजी, शीटिट्स, सिम्पोजियम, मेनो, लॉज आदि महत्वपूर्ण संवाद है।

69. निम्नलिखित के प्रतीकीकरण के लिए सही विकल्प का चयन करें।

सभी महिलाएँ बहादुर है।

कुछ मनुष्य महिलाएँ है।

(a) (x) (Wx∂ Bx)
(∃x) (Hx. Wx)
∴ (∃x) (Hx. Bx)
(b) (x) (Bx ∂ Wx)
(∃x) (Wx. Hx)
∴ (∃x) (W_H ∂ Hx)
(c) (x) (Wx ∂ Bx)
(∃x) (Hx ∂ Wx)
∴ (∃x) (Hx . Bx)
(d) (x) (Wx ∂ Bx)
(∃x) (Bx. Hx)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : सभी महिलाएँ बहादुर है (x) (Wx∂ Bx)
कुछ मनुष्य महिलाएँ है। (∃x) (Hx. Wx)
इसलिए कुछ मनुष्य बहादुर है। ∴ (∃x) (Hx. Bx)

70. आत्मा की अमरता का सिद्धान्त निम्नलिखित में से किस युग्म द्वारा दिया गया?
(a) प्लेटो और जॉर्जियस (b) प्लेटो और सुकरात
(c) प्लेटो और प्रोटोगोरस (d) प्लेटो और अफाराबी

Ans. (b) : प्लेटो और सुकरात ने आत्मा की अमरता का सिद्धान्त दिया।

71. 'समस्त इस प्रत्यय के माध्यम से होता है' यह उक्ति निम्नलिखित दर्शिनिकों में किसकी है?
(a) एनेक्सीमेनीज (b) सुकरात
(c) प्रोटागोरस (d) जार्जियस

Ans. (b) : सुकरात के अनुसार, 'समस्त ज्ञान प्रत्यय के माध्यम से होता है' इसमें प्रत्यक्ष के बाद प्रत्यय (समप्रत्यय) की स्थिति आती है इन्होंने इन्द्रियों की अपेक्षा बुद्धि पर बल दिया और वह कि 'समस्त ज्ञान सम्प्रत्ययों से निर्मित है, तथ्य बुद्धि सम्प्रत्ययों का संकाय है।

72. निम्नलिखित में से कौन-सा अरस्तु को स्वीकार्य नहीं?
(a) प्रत्येक आनुभाविक वस्तु आकार और द्रव्य का मिश्रण है।
(b) तर्कशास्त्र का सम्बन्ध न्यायवाक्य है।
(c) कारणता का सिद्धान्त एक भ्रम है।
(d) तेल, तेल बीज में सम्भावित रूप से रहता है।

Ans. (c) : अरस्तु के दर्शन में कारणता का सिद्धान्त एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है, जिसे किसी भी कार्य के पीछे छिपे कारण का विश्लेषण करते हुए चार कारणों को कार्य की उत्पत्ति हेतु आवश्यक मानते है, जिसमें उपादान, निमित्त, स्वरूप तथा लक्ष्य कारण है, जो बाद में दो मूलभूत कारणों में रूपान्तरित हो गये, पहला स्वरूप कारण (निमित्त, स्वरूप, लक्ष्य) दूसरा उपादान कारण।

73. अर्थशास्त्र में वर्णित निम्नलिखित में से कौन सा उपाय शत्रु के मस्तिष्क में शंका उत्पन्न करने के लिए है?
(a) साम (b) दाम
(c) दण्ड (d) भेद

Ans. (d) : कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भेद एक ऐसा उपाय है, जो शक्तिशाली शत्रु से विजय न पाने की स्थिति में शत्रु के मस्तिष्क में शंका या फूट डालनी चाहिए, ताकि उसकी शक्ति क्षीण हो सके।

74. सुमेलित करें:
(a) एपीरॉन (i) शेल्स
(b) जल (ii) अनेक्जीमेण्डर
(c) वायु (iii) डेमोक्रिटस
(d) परमाणु (iv) एनेग्जीगोरस

कूट:
(a) i ii iii iv
(b) ii i iv iii
(c) iii iv i ii
(d) iv iii ii i

Ans. (b) : जल का थेल्स, एनेजीमेनीज का वायु, अनेक्जीमेण्डर का असीम या एपीरौन डेमोकिट्स का परमाणु, हेरावलटि्स का अग्नि, पार्मेनाइडीज का 'शुद्ध सूत्र' तथा एनेक्जागोरस का नाउस 8' को मूलतत्व के रूप में माना।

75. निम्नलिखित में से किसके अनुसार अथीपत्रि स्वतन्त्र प्रमाण है?
(a) रामानुज (b) शंकर
(c) मध्य (d) उदयन

Ans. (b) : शंकराचार्य, कुमारिल, प्रभाकर के अनुसार अथीपत्रि एक स्वतन्त्र प्रमाण है।

76. श्री अरविन्द के विविध रूपान्तरण का सही अनुक्रम बताइए?
(a) आध्यात्मिक रूपान्तरण, चैत्य रूपान्तरण, अति मानसिक रूपान्तरण
(b) चैत्य रूपान्तरण, अतिमानसिक रूपान्तरण, आध्यात्मिक रूपान्तरण
(c) अति मानसिक रूपान्तरण, आध्यात्मिक रूपान्तरण, चैत्य रूपान्तरण
(d) चैत्य रूपान्तरण, आध्यात्मिक रूपान्तरण, अतिमानसिक रूपान्तरण

Ans. (d) : अरविन्द का पूर्ण योग मानस से अतिमानस तक के विकास की प्रक्रिया है, यहाँ अरविन्द विकास की इस प्रक्रिया को सम्पन्न करने हेतु 'त्रिस्तरीय प्रक्रिया' या त्रिस्तरीय रूपान्तरणों की बात करते है ये क्रमश है;

चैत्य रूपान्तरण (आत्मिकता का रूपान्तरण) → आध्यात्मिक → अतिमानसिक रूपान्तरण

77. निम्नलिखित नारीवादी विचारको में से किसका मत है, कि महिलाओं को समाज में उनके पालन पोषण के परिणाम स्वरूप 'पुरुष का अन्य' आतित, युत्पन्न स्थिति प्रदान की गई है, और जो फ्रायड ने कथन 'शरीर संरचना नियति है' को चुनौती देती है?
(a) मेरी वोल्स्टन क्राफ्ट (b) सिमोन द बुबा
(c) कोरोल पेटमैन (d) बेट्टी फ्रीडन

Ans. (b) : फ्रायड और सिमोन द बुबी दोनों उग्रनारीवादी दार्शनिक थे। सिमोन द बुबा के अनुसार स्त्रियाँ बनाई जाती है, पैदा नहीं होती जिसके अन्तर्गत उनको समाज में पालन-पोषण के परिणामस्वरूप 'पुरुष का अन्य' आतित, व्युत्पन्न स्थिति प्रदान की गई है जो फ्रायड के कथन 'शरीर संरचना नियति है' को चुनौती देती है, जिसमें फ्रायडस्टोन ने वर्ग की आवधारणा को यौन की आवधारणा में अलग किया और माना कि यौन विभेद शारीरिक भी है, जिसके कारण दोनो की भूमिकाएं समाज में भिन्न-भिन्न होती है।

78. जैन ज्ञानमीमांसा में भूत, सूक्ष्म और दूरस्थ वस्तुओं का ज्ञान क्या कहलाता है?
(a) मति (b) मनःपर्याय
(c) अवधि (d) केवल

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : जैन दर्शन में ज्ञान के दो भेद किये गये है, पहला अपरोक्ष ज्ञान, जिसमें तीन प्रकार अवधि, मनःपर्याय तथा केवल ज्ञान आता है, तथा दूसरा परोक्ष ज्ञान, जिसमें दो प्रकार मति और श्रुत आता है। अवधि ज्ञान वह ज्ञान है जिसमें बाधाओं के हट जाने पर वस्तुओं का जो ज्ञान होता है, इस ज्ञान के द्वारा मानव अत्यन्त दूर-स्थित वस्तुओं का सूक्ष्म तथा अस्पष्ट द्रव्यों का ज्ञान पाता है।

79. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए है, उन पर विचार कीजिए और नीचे दिए गये कूट से सही उत्तर दीजिए?

अभिकथन (A) : तर्कबुद्धि को नैतिक मानदण्ड के रूप में समझा जाना चाहिए।

तर्क (R) : सुख को नैतिक मानदण्ड नही समझा जा सकता।

(a) (A) और (R) दोनों सत्य है, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य है, परन्तु (R), (A) की गलत व्याख्या है।
(c) (A) सत्य है और (R) असत्य है।
(d) (A) और (R) दोनों असत्य है।

Ans. (b) : सुख को नैतिक मानदण्ड नही समझा जा सकता और तर्क बुद्धि को नैतिक मानदण्ड के रूप में समझा जाना चाहिए दोनो सही है परन्तु सुख को नैतिक मानदण्ड नहीं समझा जा सकता क्योंकि तर्कबुद्धि को नैतिक मानदण्ड के रूप में समझा जाना चाहिए थे गलत व्याख्या है।

80. सुमेलित करें:

(A) प्रत्येक निषेध स्वीकार है — (i) लाइबनिज्
(B) पर्याप्त कारण का नियम — (ii) स्पिनोजा
(C) आत्मगत प्रत्ययवाद — (iii) काण्ट
(D) अतीन्द्रिय भ्रम — (iv) बर्कले

कूटः

(a)	i	ii	ivi	iii
(b)	ii	iv	iii	iv
(c)	ii	i	iv	iii
(d)	i	ii	iii	iv

Ans. (c) : स्पिनोजा का 'प्रत्येक निषेध स्वीकार है', लाइबनिज्य का 'पर्याप्त कारण का नियम' बर्कले का 'आत्मगत प्रत्ययवाद', काण्ट का अतीन्द्रिय भ्रम से सम्बन्ध है।

81. निम्नलिखित में से कौन बर्कले द्वारा रचित ग्रन्थ है:

(a) इन्क्वायरी कन्सर्निंग ह्यूम अण्डरस्टेडिंग
(b) प्रिंसिप्लस ऑफ ह्यूमन नॉलेज
(c) एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग
(d) फेनॉमेनालॉजी ऑफ स्पिरिट

Ans. (b) : इन्क्वायरी कन्सर्निंग ह्यूम अण्डस्टेडिग ह्यूम का ग्रन्थ, त्रिसिप्लस ऑफ ह्यूमन नॉलेज बर्कले का ग्रन्थ, एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग लॉक का ग्रन्थ, फेनोमेनॉलाजी ऑफ स्पिरिट हीगेल का ग्रन्थ है।

82. निम्नलिखित में से विचार का कौन सा नियम यह स्थापित करता है, कि 'यदि कोई कथन सत्य है' तो वह सत्य है?

(a) तादात्म्य का नियम
(b) अव्याघात का नियम
(c) मध्यम परिहार का सिद्धान्त
(d) शब्दिक आपादान का सिद्धान्त

Ans. (a) : तादात्म्य का नियम एक पुनकर्थन है, जिसमें यदि कोई कथन सत्य है, तो वह सत्य है। (P ∂ P)

83. नीचे कुछ वस्तुस्थितियाँ दी गयी है, न्याय ज्ञानमीमांसा के अनुसार उस सही विकल्प को चुने जो उस वस्तुस्थिति को इंगित करता है, जहाँ अनुमिति सम्भव नही है?

(a) अनुमान लगाने की इच्छा की अनुपस्थिति के साथ सिद्धि की अनुपस्थिति।
(b) अनुमान लगाने की इच्छा की अनुपस्थिति के साथ सिद्धि की उपास्थिति।
(c) अनुमान लगाने की इच्छा की उपस्थिति के साथ सिद्धि की अनुपस्थिति।
(d) अनुमान लगाने की इच्छा की उपस्थिति के साथ सिद्धि की उपस्थिति।

Ans. (b) : न्याय ज्ञानमीमांसा के अनुसार अनुमान लगाने की इच्छा की अनुपस्थिति के साथ सिद्धि की उपस्थिति उस वस्तुस्थिति को इंगित करता है, जहाँ अनुमति सम्भव नही है।

84. 'प्रत्ययों की सहमति अथवा असहमति ज्ञान है' इस विचार के प्रतिपादक है;

(a) अरस्तु (b) प्लेटो
(c) लॉक (d) बर्कले

Ans. (c) : लॉक के अनुसार वस्तुओं के मूलगुणों से प्राप्त मानसिक प्रत्ययों एवं वस्तुओं के बीच सहमति या असहमति के प्रत्यक्षीकरण में ज्ञान सन्निहित है, इसलिए लॉक को प्रत्यय प्रतिनिधित्ववादी माना जाता है।

85. निम्नलिखित में से कौन-सा सल्डोलियोपोल्ड की 'लैंड इथिक' के बारे में सही नही है?

(a) लैंड इथिक प्रकृति और उसके संसाधनों के बदलाव, प्रबन्धन और प्रयोग को रोक सकती है।
(b) लैंड इथिक प्रकृति और उसके संसाधनों के सतत अस्तित्व के अधिकार की पुष्टि करती है।
(c) लैंड इथिक प्राज्ञ मानवों की भूमिका को भू-समुदाय के विजेता से साधारण सदस्य और इसके नागरिक के रूप में परिवर्तित करती है।
(d) यह अपने साथी सदस्यों के सम्मान के साथ-साथ समुदाय के सम्मान को प्रदर्शित करती है।

Ans. (a) : एल्डो लियोपोल्ड सर्वाधिक प्रसिद्धि उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक 'ए सैण्ड काउण्टी पंचांग' से मिली। एल्डोलियोपोल्ड भूमि नैतिकता लोगों और प्रकृति के बीच नैतिक सम्बन्धों का पालन करने के लिए उत्प्रेरित करता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

86. निम्नलिखित में से किसकी गणना चाणक्य द्वारा राज्य के आवश्यक अंग के रूप में नही की गई है?

(a) दण्ड (b) मित्र
(c) दुर्ग (d) ज्ञानपद

Ans. (a) : चाणक्य या कौटिल्य के अनुसार राज्य के अंगों को शरीर के अंगो से तुलना करके आचार्य कौटिल्य वे यथार्थ रूप देने का प्रयत्न किया, जिसे सप्तांग सिद्धान्त कहा गया है;
(1) स्वामी (राजा) राज्य का सिर
(2) अमात्य (मंत्री) राज्य की आंख
(3) सुहत्द (राजा का मित्र) राज्य के कान
(4) कोष, राज्य का मुख यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है।
(5) सेना, राज्य का मस्तिष्क
(6) दुर्ग, राज्य की बाँहे
(7) पुर या जनपद (भूमि या प्रजा) राज्य की जधाएँ

87. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए है, उन पर विचार कीजिए और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर दीजिए?

अभिकथन (A) : स्पिनोजा के लिए ईश्वर जगत् के रूप में नेचुरा-नेचुराता है।

कारण (R) : ईश्वर नेचुरां नेचुरान्स है।

(a) (A) और (R) दोनों सत्य है, (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य है, (R), (A) की गलत व्याख्या है।
(c) (A) सही है, परन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, परन्तु (R) सही है।

Ans. (b) : स्पिनोजा के मत में ईश्वर ही विश्व का कारण है, परन्तु ईश्वर अन्तर्यामी कारण है दूरस्थ कारण नही। ईश्वर जगत् की सृष्टि अपने से भिन्न और स्वतन्त्र रूप में नही करता, ईश्वर विश्व का अन्तर्निहित कारण है। अब यदि हम ईश्वर को सक्रिय अन्तर्यामी कारण समझे, जिससे कि विश्व का प्रतिक्षण पालन होता है, तो इस रूप में स्पिनोजा ने ईश्वर को नेचुरा-नेचुरान्स कहा है। फिर यदि हम ईश्वर को विश्व के वस्तुओं की समग्रता या कार्यरूप में देखे तो ईश्वर को स्पिनोजा ने 'नेचुरेता' कहा है।

(पाश्चात्य दर्शन- चन्द्रधर शर्मा)

88. सही अनुक्रम का कथन कीजिये?

(a) तृष्णा, उपादान, भव, जाति
(b) तृष्णा, जाति, उपादान, भव
(c) उपादान, जाति, भव, तृष्णा
(d) तृष्णा, उपादान, जाति, भव

Ans. (a) : बौद्ध दर्शन के द्वितीय आर्य सत्य, 'दुख का कारण' है। जिसके अन्तर्गत प्रतीत्यसमुत्पाद या द्वादश निदान को बताया गया है जो है:-

अविधा → संस्कार → विज्ञान → नामरूप → षड्यतन → स्पर्श → वेदना → तृष्णा → उपादान → भव → जाति → जरामरण।

(भारतीय दर्शन की रूपरेखा- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

89. परम्परागत विरोध वर्ग के अनुसार यदि E असत्य दिया गया है, तो;

(a) 'T' असत्य है, 'A' अनिर्धारित है, 'O' असत्य है।
(b) 'T' असत्य है, 'A' अनिर्धारित है, 'O' अनिर्धारित है।
(c) 'T' सत्य है, 'A' सत्य है, 'O' अनिर्धारित है।
(d) 'T' सत्य है, 'A' अनिधारित है, 'O' अनिर्धारित है।

Ans. (d) :

A	E	T	O
T	f	t	F
f	T	F	t
d	F	T	d
F	d	d	T

f = Small f
t = Small t
d = अनिर्धारित

(तर्कशास्त्र प्रवेशिका-राममूति पाठक)

90. निम्नलिखित में से कौन से मुद्दे व्यावसायिक नीतिशास्त्र के परिपेक्ष्य के अन्तर्गत आती है?

(A) व्यावसायिक नैतिक एजेंसी
(B) व्यावसायिक नैतिक उत्तरदायित्व
(C) व्यावसायिक सामाजिक उत्तरदायित्व
(D) विज्ञापन

कूट:
(a) केवल B, C, D (b) केवल B और C
(c) केवल A, B, D (d) सभी A, B, C, D

Ans. (d) : व्यावसायिक नीतिशास्त्र के अन्तर्गत पेशवरों के द्वारा अपेक्षित व्यवहार के व्यक्तिगत और व्यावसायिक मानकों को शामिल किया गया है, जिसके अन्तर्गत व्यावसायिक नैतिक एजेंसी, नैतिक उत्तरदायित्व; सामाजिक और विज्ञापन (व्यावसायिक आदि के मुद्दे आते है।

निम्नलिखित परिच्छेद को सावधानीपूर्वक पढ़िए और प्रश्नों पर आधारित के उत्तर दीजिए?

'विश्लेषण' शब्द प्राचीन यूनानी पद 'स्नालुसिस' से प्राप्त किया गया है। उत्सर्ग 'एना' का तात्पर्य 'ऊपर' और लुसिस का तात्पर्य गंवाना, नियुक्ति करना या पृथक्कीकरण है जिसमें 'एनालुसिस' का तात्पर्य ढीला होना' था 'विलीनीकरण' है। यह पद तत्परता से समस्या के समाधान या विलीन करने तक विस्तारित किया गया और इस अर्थ में इसको प्राचीन यूनानी ज्यमिति और दर्शनशास्त्र में प्रयुक्त किया गया। प्राचीन यूनानी ज्यमिति में विकसित की गई विश्लेषण-विधि का प्लेटो और अरस्तु दोनों पर प्रभाव पड़ा। लेकिन, सुकरात के परिभाषा के साथ सरोकार का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है जिसमें आधुनिक अवधारणात्मक विश्लेषण की जड़े पाई जा सकती है। हमारे पास जो यूनानी विचारधारा है, वह अब कार्यविधियों का एक जटिल जाल है, जिसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण सुकरात की परिभाषा है, जिसकी प्लेटो ने अपनी विभाजन-विधि और उनसे सम्बन्धित परिकल्पना विधि में व्याख्या की, जो ज्यमितीय विश्लेषण और अरस्तु द्वारा विकसित

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

एनालिटिक्स पर आधारित है। पिहली दो सहशब्दियो से भी अधिक समय से इस बोर में सहमति न होने से आज इन कार्यविधियों के बीच सम्बन्ध बढ़ते विवाद का विषय बन गए है। इन सभी के केन्द्र में मेनो के अन्तविरोध द्वारा उठाई गई दार्शनिक समस्याएँ है, जिसको हम अब विश्लेषण के अन्तविरोध के रूप में जनित है, जो इस बात से सम्बन्धित है, कि किस प्रकार कोई विश्लेषण सही और सूचनात्मक दोनों हो सकता है तथा (प्लेटो के) अनुस्मरण सिद्धान्त के माध्यम से समाधान के प्रयास ने स्वयं इन सिद्धान्त के विषय में वृहत साहित्य को जन्म दिया है।

91. प्लेटो ने सुकरात की परिभाषा को किसमें विस्तारित किया।

(a) मेनो का अंतविर्रोध (b) ज्यामिति-विश्लेषण
(c) विभाजन-विधि (d) विज्ञान-विधि

Ans. (c)

92. प्लेटो की परिकल्पना-विधि किस पर आधारित है:

(a) दार्शनिक विश्लेषण (b) नैतिक विश्लेषण
(c) ज्यामितीय विश्लेषण (d) भौतिक विश्लेषण

Ans. (c)

93. सुकरात के परिभाषा के साथ सरोकार ने किसका मार्ग प्रशस्त किया?

(a) भौतिक विश्लेषण
(b) ज्यामितीय विश्लेषण
(c) गणितीय विश्लेषण
(d) अवधारणात्मक विश्लेषण

Ans. (d)

94. यूनानी विचारधारा में क्या सम्मिलित है:-

(a) विश्लेषण की एकल विधि
(b) विधियों का जटिल जाल (नेटवर्क)
(c) विधियों का साधारण संजाल (वेष)
(d) सभी विधियों की निरस्तगी

Ans. (b)

95. विश्लेषण का विरोधाभास किससे सम्बन्धित है?

(a) किसी रेखा को कैसे विस्तारित किया जा सकता है।
(b) कोई भी विश्लेषण कैसे सूचनात्मक हो सकता है।
(c) भौतिकी कैसे एक विज्ञान है।
(d) अनुस्मरण कैसे सम्भव है।

Ans. (b)

निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर, नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

नागार्जुन ने ज्ञानमीमांसा में जिस एक दार्शनिक समस्या को उठाता है, उसका सम्बन्ध तथाकथित प्रतिगमित औचित्य स्थापन से माना है, इस अवधारणा के कारण विज्ञान के अंशमात्र को भी जानने और पहचानने के लिए प्रमाण की जरूरत है। इसके लिए उस स्रोत को जानना आवश्यक है जिसमें वह अन्तर्निहित है। नागार्जुन का मानना है कि यह वह विसंगत है, क्योंकि इसके लिए प्रमाणों की अनन्त शृंखलाका उस प्रमाण के लिए अंछित होगी जिसे मान लिया गया है।

मीमांसा और वेदान्त दार्शनिक यह तर्क देते है, कि प्रतिगमन की ऐसी धमकी यह दर्शाती है, कि ज्ञान 'स्वतः प्रमाण्य' अपने में प्रमाणित होता है। वेदान्ती ओपनिपिदक उपदेशों के सर्वाधिक और गहन सत्य (आत्मा) से इसे जोड़ते है क्योंकि यह 'आत्मप्रकाशक चेतना' (स्वप्रकाश) है जबकि मीमांसा के ज्ञानपरक सिद्धान्त स्व-प्रमाण्य से जोड़ते है। कम से कम आध्यात्मिक ज्ञान (विधा) में चेतना, स्वचेतना है। इससे यह निष्कर्ष निकालता है कि बोध सम्बन्धी सभी प्रश्नों के लिए बोध सही है, क्योंकि केवल यह कह सकते है कि बोध की ही अपने तक पहुँच होती है। बोध विषयक एकमात्र संगत प्रश्न के लिए एकमात्र बोध के किसी भी प्रश्न के लिए एकमात्र संगत आवश्यकता उसके आस्तित्व, प्रकृति और अपने बोध की है।

96. ज्ञान की स्वतः प्रमाण्यता से क्या सिद्ध होता है?

(a) संक्षम, बोध के अन्य कार्य द्वारा बोध में बदल जाती है।
(b) संज्ञान की चेतना अनुमान आधारित है।
(c) संज्ञान बोध के साथ इसके होने से ही आता है।
(d) संज्ञान की चेतना सदा द्वितीय स्तर का कार्यकलाप होता है।

Ans. (c)

97. भारतीय दर्शन में असीम प्रतिगमन का समकक्ष क्या है?

(a) चक्रक दोष (b) अनावस्था दोष
(c) अन्योन्याश्रय दोष (d) आत्माश्रय दोष

Ans. (b)

98. निम्न गद्यांश से तार्किक रूप से क्या अर्थ नही लगाया जा सकता है?

(a) मीमांसा और वेदान्त के अनुसार सभी बोध, आत्मबोध है
(b) वस्तुएं अस्तित्वहीन है।
(c) ज्ञान के दावे का कोई अन्तिम औचित्य नही है।
(d) आत्म परिप्रेक्षता (रिफलेक्सीविटी) किसी भी बोध का अनिवार्य अंश है।

Ans. (b)

99. ऊपर दिया गद्यांश एक अच्छा तर्क किसके विरुद्ध माना जाता है?

(A) संज्ञान की सम्भावना
(B) संज्ञान के औचित्य स्थापन की सम्भावना
(C) ज्ञान की प्रकाशक प्रकृति
(D) ज्ञान की सम्पूर्ण आधार की सम्भावना

कूट:

(a) A और D (b) A, B
(c) B, D (d)B और C

Ans. (c)

100. मीमांसको के अनुसार परत; प्रमाण्यवाद में कौन-सा दोष उत्पन्न होता है?

(a) अनावस्था (b) चक्रक
(c) कूठभाषा (d) सव्याभिकारा

Ans. (a)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2019
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. पूर्व मीमांसा के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन-सही नही है?

(a) पूर्व-मीमांसा वेद को नित्य और अपौरूषेय मानता है।
(b) पूर्व-मीमांसा वेद को पुष्टिरहित अधिकार मानता है।
(c) पूर्व-मीमांसा कर्मकाण्ड को पुष्ट करता है।
(d) पूर्व-मीमांसा ज्ञानमीमांसा की कृति है।

Ans. (d) : मीमांसा वेद की प्रामाणिकता को ही नही मानती है, बल्कि वेद पर पूर्णतः आधारित है, वेद के दो अंग है, ज्ञानकाण्ड और कर्मकाण्ड जिसमें से वेद के कर्मकाण्ड का सम्बन्ध पूर्व मीमांसा से तथा वेद के ज्ञानकाण्ड का सम्बन्ध वेदान्त या उत्तर मीमांसा से है। अतः पूर्व मीमांसा का सम्बन्ध ज्ञानमीमांसा से नही है, बल्कि उत्तरमीमांसा का सम्बन्ध ज्ञानमीमांसा से है।

(भारतीय दर्शन की रूपरेखा- डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

2. न्याय के अनुसार एक वर्ग के सभी सदस्यों को हम निम्न में से किस कूट द्वारा पहचान सकते हैं?

(a) योगज सन्निकर्ष (b) सामान्य लक्षण सन्निकर्ष
(c) ज्ञान लक्षण सन्निकर्ष (d) विशेषणता सन्निकर्ष

Ans. (b) : सामान्य लक्षण सन्निकर्ष यह एक असाधारण प्रत्यक्ष है, जिसमें हम न केवल वस्तु का प्रत्यक्ष करते हैं, बल्कि उसमें निहित एक वर्ग का या जाति का प्रत्यक्ष करते हैं।
उदाहरण- मनुष्य को देखकर मनुष्यत्व का ज्ञान

(भारतीय दर्शन की रूपरेखा - डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

3. निम्नलिखित में कौन-सा कथन महात्मा गाँधी के द्वारा स्वीकृत नहीं।

(a) एक सत्याग्रही को ईश्वर में जीवन्त आस्था नही होनी चाहिए।
(b) एक सत्याग्रही में सहिष्णुता होनी चाहिए।
(c) एक सत्याग्रही को अपने विचार और वचन में सत्य का पालन करना चाहिए।
(d) एक सत्याग्रही को अपने सम्बन्धों और व्यवहारों में दृढ़ होना चाहिए।

Ans. (a) : गाँधी जी के अनुसार एक सत्याग्रही को ईश्वर में जीवन्त आस्था होनी चाहिए इनके अनुसार 'सत्य ईश्वर है और ईश्वर ही सत्य है' इसमें ईश्वर आस्था का विषय है। अतः सत्याग्रह ईश्वरीय आग्रह है, जिसमें हमे जीवन्त आस्था होनी चाहिए।

(सामाजिक-राजनीतिक दर्शन की रूपरेखा-प्रो. राममूर्ति पाठक)

4. निम्नलिखित में से टैगोर के विचार के अनुसार कौन-सा विचार संसुगत है?

(a) सच्चे धर्म का प्रयोजन ग्रहासवित नही है।
(b) सच्चे धर्म का प्रयोजन मृत्युहीनता में मरना नही है।
(c) सच्चे धर्म का प्रयोजन मनुष्य के अंतरतम सत्य को जानना है।
(d) सच्चे धर्म का प्रयोजन जीवन एवं आस्तित्व से पलायन है।

Ans. (c) : टैगोर का मानना है, मनुष्य के आन्तरिक स्वरूप की अभिव्यक्ति मानव धर्म या सच्चा धर्म है और वैयक्तिक आत्म की परम आत्म के साथ प्रेम एवं आनन्द से सराबोर की अनुभूति ही इस धर्म का लक्ष्य है। टैगोर के अनुसार ' इस जगत में मनुष्य की स्थिति अपने वास्तविक घर से बिछड़े पक्षी की तरह है और उसके घर वापस लौटने की आतुर एवं अधीर आकांक्षा ही धर्म (सच्चे धर्म) का सर्वस्व है।

(आधुनिक भारतीय चिन्तन- डॉ. ओमप्रकाश पाठक)

5. आकाश दो प्रकार का है- लोक-आकाश और अलोक-अकाश। ऊपर उल्लिखित विचार किस शाखा से सम्बद्ध है?

(a) वैशेषिक-विचार पद्धति (b) बौद्ध विचार पद्धति
(c) जैन-विचार पद्धति (d) सांख्य विचार पद्धति

Ans. (c) : जैन- दर्शन के अनुसार नित्य और अनन्त आकाश दो प्रकार का है- जिसमें द्रव्यों की स्थिति होती है वह लोकाकाश है, तथा इसके ऊपर अलोकाकाश है। जहाँ द्रव्य नही है। आकाश का प्रत्यक्ष नही होता। द्रव्यों के विस्तार की सिद्धि के लिये आकाश का अनुमान किया जाता है।

(भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा)

6. बौद्ध धर्मावलंबियो के अनुसार दुःख का तात्कालिक पूर्ववर्ती कारक है:

(a) अविद्या (b) भव
(c) जाति (d) षड़ायतन

Ans. (c) : बौद्ध धर्मावलंबियो के अनुसार दुःख का तात्कालिक पूर्ववर्ती कारक जाति है, बौद्ध दर्शन में द्वादश अंग या निदान कारण-कार्यरूप से चक्रवत् घूमते रहते हैं, प्रथम अंग द्वितीय अंग का कारण है, द्वितीय अंग तृतीय अंग का और इस प्रकार यह चक्र चलता रहता है। ये द्वादश अंग हैं- अविद्या → संस्कार → विज्ञान → नामरूप → षड़ायतन → स्पर्श → वेदना → तृष्णा → उपादान → भव → जाति →जरामरण।

(भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

7. निम्नलिखित में से शंकर को क्या स्वीकार्य है?

(a) जीव सारतः ब्रह्म ही है। (b) जगत् यथार्थ है।
(c) कर्म मोक्ष का साधन है। (d) ब्रह्म सगुण है।

Ans. (a) : शंकर के अनुसार जीव सारतः ब्रह्म ही है, उनके अनुसार 'ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या जीवों ब्रह्ममेव नापरः।' अर्थात ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है, जगत् मिथ्या है तथा जीव और ब्रह्म अभिन्न हैं। शंकर के अनुसार ब्रह्म निर्गुण, निराकार है, तथा ज्ञान मोक्ष का साधन है।

(भारतीय दर्शन की रूपरेखा- डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

8. निर्देशवाद के सम्बन्ध में कौन-सा कथन असत्य है?

(a) आर. एम. हेयर निर्देशवाद से सम्बद्ध है।
(b) यह विभिन्न नैतिक मूल्यों का निर्देश करता है।
(c) यह नैतिक कथनों के निर्देशात्मक स्वरूप को उजागर करता है।
(d) यह नैतिक आदेशों के सार्वभौमीकरण को महत्व देता है।

Ans. (b) : आर. एम. हेयर का परामर्शवाद या निर्देशवाद मूलतः अवर्णनात्मक सिद्धान्त है, यह नैतिक निर्णय किसी को कुछ करने या न करने का परामर्श या निर्देश देते हैं। हेयर के अनुसार तथ्यात्मकनिर्णय की भाँति नैतिक निर्णय भी अनिवार्यतः सार्वजनीन होते हैं अर्थात् वे समान परिस्थितियों में सभी व्यक्तियों पर समान रूप से लागू होते हैं। लेकिन हेयर के अनुसार विभिन्न निर्देशवाद विभिन्न नैतिक मूल्यों का निर्देश करता है, असत्य है।

(नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त- वेद प्रकाश वर्मा)

9. निम्नलिखित में से कौन-सा तर्कवाक्यीय फलन नही है?

(a) 'S' एक दार्शनिक है। जहाँ 'S' एक वैयक्तिक अचर है।
(b) (x) [(Sx Rx) ∂ Wx]
(c) (x) (Sx Rx) ∂ Wx
(d) (x) Wx

Ans. () : UGC Net में इसका Answer नही दिया है।

10. जैनियों के अनुसार निम्नलिखित में से क्या आत्मा का गुण है?

(a) इच्छा (b) सुख
(c) दुःख (d) चैतन्य

Ans. (d) : जैनियों के अनुसार आत्मा का गुण चैतन्य है और चैतन्य जीव (आत्मा) का स्वरूप लक्षण है। यहाँ पर अर्थात् जैन दर्शन में आत्मा के स्थान पर 'जीव' शब्द का प्रयोग किया गया है, यह जीव आत्मा का पर्यायवाची है।

11. सूची I और सूची II को सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) अजातवाद	(i) जयतीर्थ
(B) परिणामवाद	(ii) गौतम
(C) सद् सत्कार्यवाद	(iii) गौड़पाद
(D) आरम्भवाद	(iv) भर्तृ प्रपंच

निम्नलिखित में से सही विकल्प को चिन्हित कीजिए:

(a) A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)
(b) A-(iii), B-(iv), C-(i), D-(ii)
(c) A-(ii), B-(i), C-(iii), D-(iv)
(d) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv)

Ans. (b) : अजातवाद - गौड़पाद
परिणामवाद - भर्तृप्रपंच
सद्सत्कार्यवाद - जयतीर्थ
आरम्भवाद - गौतम

12. रूसों के अनुसार 'प्रकृति की ओर लौटना' निम्न में से किसके द्वारा सम्भव नही हो सकता है?

(a) प्राकृतिक सामाजिक परिस्थितियों के सृजन के द्वारा
(b) शिक्षा की प्राकृतिक पद्धति के द्वारा
(c) जब स्वातन्त्र्य आत्म-अध्यस्त प्रेम की आज्ञाकारिता के समतुल्य हो जाता है।
(d) सामान्य इच्छा से प्रतिबद्ध व्यक्ति का स्वातंत्र्य

Ans. (d) : रूसों के अनुसार 'प्रकृति की ओर लौटना' सामान्य इच्छा से प्रतिबद्ध व्यक्ति की स्वातंत्र्य से सम्भव नही है। रूसों अपनी पुस्तक Social Contract में सामाजिक समझौते के सिद्धान्त का विस्तृत वर्णन करता है, इसमें उन्होंने कहा कि 'मनुष्य स्वतन्त्र उत्पन्न हुआ है, किन्तु वह सर्वत्र बेड़ियों से जकड़ा हुआ है। वो कहते हैं कि स्वतन्त्रता, समानता और प्रसन्नता के बिना जीवन व्यर्थ है अतः हमारा अज्ञान, हमारा भोलापन, हमारी गरीबी लौटा दो, हम स्वतन्त्र हो जाएगें।

13. न्याय के अनुसार निम्नलिखित में से किस सन्निकर्ष द्वारा हमें चीनी में कड़वाहट की अनुपस्थिति का बोध होता है?

(a) संयोग
(b) संयुक्त समवाय
(c) समवाय
(d) विशेषणता या विशेष्य-विशेषणभाव

Ans. (d) : न्याय के अनुसार विशेषणता सन्निकर्ष द्वारा हमें चीनी में कड़वाहट की अनुपस्थिति का बोध होता है। विशेषणता सन्निकर्ष, उसे कहते हैं, जब हम किसी वस्तु के अभाव का प्रत्यक्ष करते हैं, तब स्वतः अभाव नही दिखाई देता है, प्रत्यय के साथ मिला हुआ कोई न कोई आधार दिखाई देता है। जैसे- घड़ा नहीं है कहने के लिए यह जानना पड़ता है, कि भूतल पर घड़े का अभाव (घटाभाव) है, यह भूतल विशेष्य और घड़े का अभाव विशेषण है।

14. निर्बीध समाधि के द्वारा निम्नलिखित में से कौन कैवल्य प्राप्त करता है?

(a) मनस् (b) व्यक्ति
(c) पुरुष (d) अंहकार

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : योग दर्शन में समाधि दो प्रकार की मानी गयी है-
(1) सम्प्रज्ञात समाधि, जिससे ध्येय विषय का स्पष्ट ज्ञान रहता हो। इसे सबीज समाधि भी कहा जाता है।
(2) असम्प्रज्ञात समाधि, जिसमें ध्यान का विषय ही लुप्त हो जाता है इस अवस्था में आत्मा अपने यथार्थ स्वरूप को पहचान लेती है, इसी समाधि को निर्बीज समाधि कहते हैं।
इसी में सभी प्रकार की चित्रवृत्तियों का निरोध हो जाता है।

15. ऋत् के द्वारा क्या सुनिश्चित नही होता है?
(a) विश्व का भौतिक संतुलन
(b) एक व्यक्ति विशेष की नैतिकता
(c) विश्व का नैतिक संतुलन
(d) विश्व का धार्मिक/कर्मकाण्डीय संतुलन

Ans. (b) : ऋत् सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त एक व्यवस्था का नाम है। इसी ऋत् के कारण विश्व की खागोलीय, भौगोलिक, नैतिक, धार्मिक, भौतिक आदि सभी प्रकार की घटनाएं नियमबद्ध तरीके से घटित होती हैं। अतः ऋत् एक व्यक्ति विशेष की नैतिकता नही है।
(भारतीय नीतिशास्त्र- वसन्त कुमार लाल)

16. निम्नलिखित अनुमान में कौन-सा हेत्वाभास है?
'सर्वम् अनित्यम् प्रमेयत्वात्'
सही विकल्प चुनिए:
(a) साधारण सव्यभिचार (b) अनुपसंहारी
(c) आश्रयासिद्ध (d) विरूद्ध

Ans. (b) : अनुपसहारी हेत्वाभास में है, जिसमें हेतु का न तो कोई अन्यय न ही व्यतिरेक दृष्टान्त की उपलब्धि हो। अतः 'सर्वम् अनित्यम् प्रमेयत्वात्' में अनुपसंहारी हेत्वाभास है।
(भारतीय दर्शन की रूपरेखा- डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

17. न्याय ज्ञानमीमांसा के अनुसार किस प्रकार के संज्ञान को प्रत्यक्ष रूप में ग्रहण नही किया जा सकता है?
(a) शब्दबोध (b) अनुमिति
(c) निर्विकल्पक प्रत्यक्ष (d) सविकल्पक प्रत्यक्ष

Ans. (c) : न्याय ज्ञानमीमांसा में संज्ञान को निर्विकल्पक प्रत्यक्ष में प्रत्यक्ष रूप में ग्रहण नही किया जा सकता क्योंकि निर्विकल्पक प्रत्यक्ष में वस्तु के अस्तित्व का केवल आभास होता है। हमें वस्तु के विशिष्ट गुणों का ज्ञान नही होता।
(भारतीय दर्शन की रूपरेखा- डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

18. निम्नलिखित कथनों पर अपूर्व के सन्दर्भ में विचार कीजिए:
(A) इसका एक प्रारम्भ होता है।
(B) वह कर्म के नियम की व्याख्या करता है।
(C) यह एक सत् स्वरूप है।
(D) यह आवश्यक रूप से वैदिक कर्मकाण्डों के निष्पादन से सम्बद्ध है।
नीचे दिए गए कूट में से सही विकल्प का चयन कीजिए :
(a) (A) और (C) सही है।
(b) (B) और (C) सही है।
(c) (C) और (D) सही है।
(d) (A), (B) और (D) सही है।

Ans. (d) : पूर्व मीमांसा के अनुसार, यज्ञ आदि वैदिक कर्मकाण्डों अनुष्ठान यज्ञकर्त्ता की आत्मा में एक अदृश्य शक्ति उत्पन्न करते हैं, जिसे अपूर्व कहते हैं, यह अपूर्व आत्मा में रहता है और कालान्तर में यज्ञ का अभीष्ट फल उत्पन्न करता है, अतः अपूर्व का एक आरम्भ होता है, और यह कर्म के नियम की व्याख्या करता है, परन्तु यह एक सत् स्वरूप नही है।
(भारतीय दर्शन की रूपरेखा- डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

19. किसका मत है कि 'नगर-राज्य की आवधारणा यह है कि उसमें नागरिक सिर्फ वही होते हैं, जिनकी शिक्षा एवं जीवन में स्थिति उन्हे शासन में सक्रिय सहभागिता के योग्य बनाती है?
(a) हॉब्स (b) रॉल्स
(c) अरस्तू (d) काण्ट

Ans. (c) : अरस्तु के अनुसार, 'नगर राज्य की आवधारणा यह है कि उसमें नागरिक सिर्फ वही होते हैं, जिनकी शिक्षा एवं जीवन में स्थिति उन्हे शासन में सक्रिय सहभागिता के योग्य बनाती हैं'

20. निम्नलिखित में से पर्यावरणीय नीतिशास्त्र के सन्दर्भ में क्या असत्य है?
(a) यह पर्यावरण को नैतिकता के दायरे में लाती है।
(b) पर्यावरण का उपभोग्य रूप में प्रयोग गलत है।
(c) पर्यावरण प्राथमिक रूप से मनुष्यो के उपयोग के लिए है।
(d) नैतिकता मनुष्यों के दायरे से परे जाती है।

Ans. (c) : पर्यावरणीय नीतिशास्त्र के सन्दर्भ में यह असत्य है कि यह प्राथमिक रूप से मनुष्यों के उपयोग के लिए है।

21. यदि एक विरोहावर्ग में 'T' सत्य हो, तो निम्नलिखित में से क्या सही तरीके से निगमित हो सकता है?
(a) 'A' सत्य, 'E' एवं 'O' अनिर्धारित
(b) 'A' असत्य, 'E' सत्य 'O' सत्य
(c) 'E' असत्य, 'A' और 'O' अनिर्धारित
(d) 'O' सत्य 'A' और 'E' अनिर्धारित

Ans. (c) : परम्परागत विरोध वर्ग के अनुसार-

A	E	T	O
T	f	t	F
f	T	F	t
d	F	T	d
F	d	d	T

(d = अनिर्धारित)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

22. निम्नलिखित में से काण्ट के नैतिक सिद्धान्त के सम्बन्ध में क्या असत्य है?
(a) नैतिक नियम सार्वभौमीकरण होने चाहिए।
(b) मनुष्य नैतिक क्रियाओं का साधन मात्र है।
(c) क्रियाओं की नैतिकता के लिए कर्त्तव्य भाव महत्वपूर्ण है।
(d) नैतिकता के लिए वस्तुनिष्ठ मापदण्ड निरर्थक है।

Ans. (b) : काण्ट के नैतिक सिद्धान्त के सम्बन्ध में मनुष्य नैतिक क्रियाओं का साधन मात्र असत्य कथन है, बल्कि नैतिक सिद्धान्त सार्वभौमीकरण, कर्त्तव्यभाव और वस्तुनिष्ठ मापदण्ड निरर्थक होना चाहिए।
(नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त- वेद प्रकाश वर्मा)

23. निम्नलिखित में से रामानुज को क्या स्वीकार्य है?
(a) जीव ब्रह्म से पूर्णतः विलग है।
(b) प्रपत्ति मोक्ष का राजमार्ग है।
(c) जगत् आभास है।
(d) ब्रह्म केवल निर्गुण है।

Ans. (b) : रामानुज के अनुसार प्रपत्ति मोक्ष का राजमार्ग है। जबकि जीव ब्रह्म से पूर्णतः विलग या पृथक मध्वाचार्य का मत है, इसके अतिरिक्त शंकराचार्य जगत् का आभास, ब्रह्म केवल निर्गुण मानते है।
(भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा)

24. स्वामी विवेकानन्द के अनुसार,
(a) माया मात्र तथ्यों का यथारूप कथन है।
(b) माया सृजनकर्ता की एक शक्ति नही है।
(c) माया एक दिव्य शक्ति है।
(d) माया को सत्ता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

Ans. (a) : स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, माया मात्र तथ्यों का यथारूप कथन है। स्वामी विवेकानन्द नव-वेदान्तवादी ही हैं, इनका माया-विचार अद्वैत वेदान्त का ऋणी तो है ही फिर भी वह सर्वथा शंकर के माया विचार जैसा नहीं है। क्योंकि शंकराचार्य के समान यह स्वीकारते हैं कि जगत के आविर्भाव एवं परिवर्तन का आधार तो 'माया' है ही कि शंकर के विचार में माया वह शक्ति है, जो भ्रान्ति उत्पन्न करती तथा जगत् को सत् समझने की भ्रान्ति का जनक है जबकि विवेकानन्द के अनुसार 'माया' जगत् की व्याख्या का कोई सिद्धान्त नहीं है, बल्कि जगत् का एक तथ्यात्मक विवरण है।

25. सूची I और II को सुमेलित करें :

सूची-I	सूची-II
(A) वैयक्तिक चर	(i) FY
(B) वैयक्तिक अचर	(ii) a-w
(C) विधेय पद	(iii) x, y, z
(D) तर्कवाक्यीय फलन	(iv) P, Q, R

दिए गए विकल्प में से सही उत्तर का चयन कीजिए।
(a) A-(iii), B-(ii), C-(iv), D-(i)
(b) A-(ii), B-(iii), C-(i), D-(iv)
(c) A-(iii), B-(i), C-(ii), D-(iv)
(d) A-(iv), B-(iii), C-(i), D-(ii)

Ans. (a) :

(A) वैयक्तिक चर	(iii) x, y, z
(B) वैयक्तिक अचर	(ii) a-w
(C) विधेय पद	(iv) P, Q, R
(D) तर्कवाक्यीय फलन	(i) FY

26. लोकसंग्रह के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
(a) यह कौशलपूर्ण गतिविधियों को निरूपित करता है।
(b) यह सभी आसक्तियो से मुक्त सार्वजानिक कल्याणकारी गतिविधियो को निरूपित करता है।
(c) यह नैतिक गतिविधियों को निरुपित करता है।
(d) यह धार्मिक गतिविधियों को निरूपित करता है।

Ans. (b) : भगवद्गीता में 'लोक संग्रह' के दर्शन का वर्णन हुआ है, यह स्थित प्रज्ञ की अवधारणा के साथ वर्णित हुआ है, लोक संग्रह का अर्थ होता है, मानवता के हित में किये गये कर्म है, यह सभी आसक्तियों से मुक्त सार्वजनिक कल्याणकारी गतिविधियों को निरूपित करता है, गीता में 'लोक संग्रह' के लिए कर्मयोग का उपदेश दिया गया है। 'लोक संग्रह' एक सामाजिक आदर्श है।

27. किस वेदान्ती के अनुसार सृष्टि के सम्बन्ध में 'पराधीन विशेषप्ति' का विचार प्रस्तुत किया गया है?
(a) रामानुज (b) शंकर
(c) मध्व (d) वल्लभ

Ans. (c) : मध्वाचार्य के अनुसार सृष्टि के सम्बन्ध में 'पराधीन विशेषप्ति' विचार है, मध्वाचार्य एक द्वैतवादी दार्शनिक हैं।
(भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा)

28. रामानुज किस प्रमाण को स्वीकार नही करते हैं?
(a) प्रत्यक्ष (b) अनुमान
(c) उपमान (d) शब्द

Ans. (c) : रामानुज उपमान को प्रमाण के रूप में स्वीकार नही करते हैं, रामानुज केवल तीन प्रमाण, प्रत्यक्ष, अनुमान तथा शब्द को स्वीकार करते हैं, जो मध्वाचार्य, निम्बार्क और वल्लभाचार्य भी स्वीकार करते हैं।
(भारतीय दर्शन की रूपरेखा- डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

29. द्वैताद्वैत वेदान्त के प्रवर्तक कौन हैं?
(a) वाचस्पति (b) मध्व
(c) वल्लभ (d) निम्बार्क

Ans. (d) : वेदान्त परम्परा में द्वैताद्वैतवाद के प्रवर्तक निम्बाक माने जाते हैं, इसके अतिरिक्त वेदान्त परम्परा में अद्वैत वेदान्त के शंकराचार्य, विशिष्टाद्वैत के रामानुज, द्वैतवाद के निम्बार्क तथा शुद्धाद्वैतवाद के वल्लभाचार्य प्रवर्तक हैं।
(भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा)

30. निम्नलिखित अभिकथनों को वैदिक दर्शन के सन्दर्भ में समझिए :
अभिकथन :
(A) ऋषि ऋण को ब्रह्मचर्य द्वारा अदा किया जा सकता है।
(B) देव ऋण को यज्ञ द्वारा अदा किया जा सकता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(C) ऋत और मण्डल का विनियमन करता है। (सौर-मण्डल)
(D) सामवेद के ऋत्विक को 'होता' कहा जाता है।
उस सही अभिकथन को चुनिए जो सही भाव प्रकट करता है :
(a) A, B, C, D (b) A, B, C
(c) B, C, D (d) A, B, D

Ans. (b) : वैदिक दर्शन के सन्दर्भ में ऋषि ऋण को ब्रह्मचर्य द्वारा, देव ऋण को यज्ञ द्वारा, पितृ ऋण को गृह आश्रय के द्वारा तथा मनुष्य ऋण को अच्छे व्यवहार के द्वारा अदा किया जाता है, इसके अतिरिक्त ऋत् सौर मण्डल का विनियमन करता है, जबकि सामदेव के ऋत्विक को 'उद्गाता' कहा जाता है, न कि 'होता' ऋग्वेद के ऋत्विक को कहा जाता है।
(भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा)

31. सेंट थॉमस एक्विनास की तरह मीमांसा को कौन-सा कथन सही अभिव्यक्त करता है?
(a) तत्वमीमांसा का सम्बन्ध सूक्ष्म भौतिक इकाइयों से है।
(b) तत्वमीमांसा का सम्बन्ध अनिवार्यतः सार्वभौम से है।
(c) वस्तु विशेष सार्वभौम से पूर्णतया भिन्न होती है।
(d) सार्वभौम विश्व की पूर्णतया व्याख्या कर सकते हैं।

Ans. (b) : सेंट थॉमस एक्विनास की तरह मीमांसा, तत्वमीमांसा का सम्बन्ध अनिवार्यतः सार्वभौम से मानता है।

32. वैशेषिक दर्शन के अनुसार विमुक्त आत्मा और दुखाभाव में किस प्रकार का सम्बन्ध है?
(a) स्वरूप (b) संयोग
(c) समवाय (d) वैशिष्ट्य

Ans. (a) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार विमुक्त आत्मा और दुःखाभाव में स्वरूप का सम्बन्ध है, वैशेषिक दर्शन में ज्ञान को आत्मा का आगन्तुक लक्षण माना गया। आत्मा अपने स्वरूपावस्था में मूलतः जड़ तथा अभौतिक है, यहाँ जड़ का तात्पर्य है, कि आत्मा चैतन्य रहित है।
(भारतीय दर्शन - चन्द्रधर शर्मा)

33. 'ये बाह्य वस्तुएँ हैं'- यह दृष्टिकोण निम्नलिखित में से किस बौद्ध दर्शन धारा का है?
(a) केवल योगाचार
(b) केवल सौत्रान्तिक
(c) केवल वैभाषिक
(d) सोत्रान्तिक और वैभाषिक दोनों

Ans. (d) : बौद्ध दर्शन में सौत्रन्तिक एवं वैभाषिक विचारधारा में दोनों बाह्य वस्तुओ को यथार्थ माना गया है, जिसमें सौत्रान्तिक बाह्य जगत्/वस्तु का ज्ञान प्रत्यक्ष से मानते हैं, जबकि सौत्रान्तिक बाह्य वस्तु का ज्ञान अनुमान पर आधारित मानते हैं।
(भारतीय दर्शन- हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

34. योग के सन्दर्भ में चित्त-भूमि का सही क्रम दर्शाने वाला विकल्प चुनिए:
(a) क्षिप्त, विक्षिप्त, एकाग्र, मूढ़ और निरूद्ध
(b) क्षिप्त, विक्षिप्त, मूढ़, एकाग्र और निरूद्ध
(c) क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निरूद्ध
(d) क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, निरूद्ध और एकाग्र

Ans. (c) : योग के सन्दर्भ में चित्त-भूमि का सही क्रमः-
क्षिप्त → मूढ़ → विक्षिप्त → एकाग्र और निरूद्ध
(भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा)

35. किसके लिए दर्शनशास्त्र का अध्ययन-चतेना का अध्ययन है?
(a) हेडेगर (b) हुर्सल
(c) गेडेमर (d) रिचर्ड रॉर्टी

Ans. (b) : हुर्सल के दर्शनशास्त्र का अध्ययन- चेतना का अध्ययन है, और इस अध्ययन के आधार पर स्वतः सिद्ध वस्तुनिष्ठ सारतत्व को प्रस्तुत करते हैं और संवृत्रिशास्त्र के विधि के माध्यम से चेतना के आदम स्वरूप एवं चेतना को आद्म रूप से प्रदत्त विश्लेषण है।
(समकालीन पश्चात्य दर्शन- वसन्त कुमार लाल)

36. निम्नलिखित में कौन-सा वक्तव्य इसका औचित्य सिद्ध करता है, कि अनुभव पर निर्भर रहे बिना प्रमाणिक ज्ञान सम्भव है?
(a) मेज भूरी है।
(b) गुलाब लाल है।
(c) योग सभी अंगों की समग्रता है।
(d) बोर्ड चमकीले हैं।

Ans. (c) : योग सभी अंगो की समग्रता है, जिससे अनुभव पर निर्भर रहे बिना प्रामाणिक ज्ञान सम्भव है।

37. तर्क पर विचार कीजिए और निम्नलिखित में से सही उत्तर का चयन कीजिए :
सभी ट्राउट स्तनधारी होते हैं।
सभी स्तनधारियों के पंख होते हैं।
अतः सभी ट्राउट के पंख होते हैं।
विकल्पः
(a) एक ऐसा तर्क जिसके तर्कवाक्य असत्य है, पर वह अवैध है।
(b) एक ऐसा तर्क जिसके तर्कवाक्य सत्य है, पर वह अवैध है।
(c) एक ऐसा तर्क जिसके तर्कवाक्य असत्य हैं, पर एक वैध है।
(d) एक ऐसा तर्क जिसके तर्कवाक्य सत्य हैं, पर वह वैध है।

Ans. (c) : सभी ट्राउट स्तनधारी होते हैं।
सभी स्तनधारियों के पंख होते हैं।
अतः सभी ट्राउट के पंख होते हैं।
यह एक ऐसा तर्क है, जिसके तर्कवाक्य असत्य हैं, पर वह वैध है।
(तर्कशास्त्र प्रवेशिका - राममूर्ति पाठक)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

38. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म हिराविलटस का मुख्य विचार है?

(a) शरीर और मन (b) ईश्वर और विश्व
(c) रूप और द्रव्य (d) स्थायित्व और परिवर्तन

Ans. (d) : हिराक्लिटस का मुख्य विचार स्थायित्व और परिवर्तन है, उनके अनुसार कोई वस्तु में स्थायित्व की प्रतीति भ्रमवश होती है हर वस्तु सतत् परिवर्तनशील है, हेरावलाइट्स के अनुसार- 'तुम उसी जल में दो बार नहीं उतर सकते, क्योंकि भिन्न-भिन्न जलराशि का निरन्तर आगमन हो रहा है।

39. पारिवारिक साम्यता क्या निरूपित करता है:

(a) समान भाषायी परिवारों के शब्दों में बहुत सी साम्यता होती है।
(b) एक शब्द के विभिन्न प्रयोगों में कुछ समानताएं होती हैं, किन्तु कोई परिभाषक लक्षण नही होता है।
(c) एक ही परिवार के विभिन्न सदस्यों में उपस्थित सामान्य विचार।
(d) एक शब्द के विभिन्न प्रयोग कुछ अनिवार्य लक्षण सामान्य रूप से रखते हैं।

Ans. (b) : विटगेन्स्टाइन भाषा सिद्धान्त के अनुसार, एक शब्द के विभिन्न प्रयोगों में कुछ समानताएँ होती हैं, किन्तु कोई परिभाषक लक्षण नहीं होता है। जैसेः- एक परिवार में विभिन्न सदस्य होते हैं, यद्यपि कोई एक समानता सभी में विद्यमान नहीं होती है, फिर भी सभी को एक परिवार का सदस्य कहते हैं, इसी के आधार पर विटगेन्स्टाइन सारतत्ववाद का खण्डन करते हैं।

40. काण्ट के नैतिक सिद्धान्त के सम्बन्ध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

(A) नैतिक क्रियाओं को मात्र कर्तव्य भाव से किया जाना चाहिए
(B) नैतिक क्रियाओं के परिणाम शुभ होने चाहिए।
(C) मात्र शुभ-इच्छा ही स्वयं में शुभ है।
(D) प्रसन्नता नैतिक क्रियाओं का एक महत्वपूर्ण परिणाम है।

निम्नलिखित कूट में से सही विकल्प चुनिए :

(a) (A) और (B) सत्य है। (b) (C) और (D) सत्य है।
(c) (A) और (C) सत्य है। (d) (B) और (D) सत्य है।

Ans. (c) : काण्ट के नैतिक सिद्धान्त के सम्बन्ध में, नैतिक क्रियाओं को मात्र कर्त्तव्यभाव से किया जाना चाहिए, जिसमें काण्ट कहते हैं कि किसी कर्म का नैतिक मूल्य उसके परिणामों द्वारा नही बल्कि उस कर्म के मूल में निहित मनुष्य की विशुद्ध कर्त्तव्य चेतना द्वारा निर्धारित होता है और काण्ट के अनुसार मात्र शुभ इच्छा ही स्वयं में शुभ है।

(नीतिशास्त्र के मूल सिद्धानत- वेद प्रकाश वर्मा)

41. प्लेटो के अनुसार निम्नलिखित में से कौन ज्ञान का स्तर नही है?

(a) बौद्धिक अंतदृष्टि (b) प्रत्यक्ष
(c) मत (d) दृढ़ विश्वास

Ans. (d) : प्लेटो के अनुसार बौद्धिक अन्तदृष्टि, प्रत्यक्ष, मत ज्ञान के स्तर हैं, जबकि दृढ़ विश्वास ज्ञान का स्तर नही है, Plato ज्ञान के लिए तीन सत्ता को आवश्यक मानते हैं, सत्य, विश्वास और प्रमाण। यदि सत्य विश्वास से प्रमाण को निकाल दिया जाये तो वह ज्ञान हो जाता है, इस प्रकार प्रमाण के आधार पर ही ज्ञान एवं विश्वास में अन्तर किया जा सकता है। ज्ञान अनिवार्य, सार्वभौम सत्य है, जबकि विश्वास सम्भाव्य सत्य है।

42. द्वैत वेदान्त के अनुसार असंगत को चिन्हित कीजिए:

(a) अमलशक्ति मोक्ष का साधन है।
(b) अभिनव अन्यथाख्याति प्रत्यक्षगत दोष की संतोषप्रद व्याख्या है।
(c) जगत् आभास है।
(d) प्रमाणों की संख्या केवल तीन है।

Ans. (c) : द्वैत वेदान्त के अनुसार जगत् आभास नही है, बल्कि शंकराचार्य के अनुसार (अद्वैत वेदान्त) जगत् आभास है। इसके अतिरिक्त मध्वाचार्य के अनुसार अभिनव अन्यथाख्याति प्रत्यक्ष दोष की संतोषप्रद व्याख्या है, अमल शक्ति मोक्ष का साधन है, तथा मध्वाचार्य के दर्शन द्वैतवाद, में प्रमाणों की संख्या केवल तीन, प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द है।

43. सूची-I और सूची-II को सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) 'सम्मम बोनम'	(i) लॉक
(B) 'कोजिटो अर्गो सम'	(ii) बर्कले
(C) 'एस्से एस्ट परसिपी एट परिसिपिएरे'	(iii) देकार्त
(D) 'टेबुला रसा'	(iv) अरस्तु

निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए :

(a) A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)
(b) A-(iii), B-(ii), C-(i), D-(iv)
(c) A-(ii), B-(iv), C-(iii), D-(i)
(d) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv)

Ans. (b) :

(A) 'सम्मम बोनम'	(iv) अरस्तु
(B) 'कोजिटो अर्गो सम'	(iii) देकार्त
(C) 'एरसे एस्ट परसिपी एट परिसिपिएरे'	(ii) बर्कले
(A) 'टेबुला रसा'	(i) लॉक

44. ज्ञान मीमांसीय मत के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प को चिन्हित कीजिए :

(A) तार्किक अनुभववाद विश्लेषणात्मक अनिवार्य साक्ष्य को स्वीकार करता है।
(B) अनुभववाद विश्लेषणात्मक साक्ष्य को स्वीकार करता है।
(C) बुद्धिवाद संश्लेषणात्मक अनिवार्य साक्ष्य को स्वीकार करता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूट :

(a) केवल (A) और (C) सही है।
(b) केवल (B) और (C) सही है।
(c) सभी (A), (B) और (C) सही है।
(d) केवल (A) और (B) सही है।

Ans. (b) : ज्ञनमीमांसीय मत के सन्दर्भ में काण्ट का कथन है कि बुद्धिवाद संश्लेषणात्मक अनिवार्य साक्ष्य को स्वीकार करता है जबकि अनुभववाद विश्लेषणात्मक साक्ष्य को स्वीकार करता है।

45. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन नैतिक यथार्थवाद का समर्थन करता है:

(a) विश्व वस्तुनिष्ठ यथार्थ है।
(b) नैतिकता व्यक्तिगत विश्वासों का विषय है।
(c) हमारी सभी गतिविधियों का एक अनिवार्य नैतिक पक्ष होता है।
(d) नैतिक मूल्यों की अपने प्रकार की सत्यता होती है।

Ans. (d) : नैतिक यथार्थवाद के अनुसार नैतिक मूल्यों की अपने प्रकार की सत्यता होती है। जबकि विश्व वस्तुनिष्ठ यथार्थ, नैतिकता व्यक्तिगत विश्वासों का विषय है, हमारी सभी गतिविधियों का एक अनिवार्य नैतिक पक्ष होता है इसका समर्थन नही करता है।

46. निम्नलिखित में से कौन-सा तत्व कौटिल्य की अन्तर्राज्यीय कूटनीति का साधन एवं राजनीति का उत्प्रेरक नही है?

(a) साम (b) बल
(c) साभ (d) दण्ड

Ans. (b) : कौटिल्य की अन्तर्राज्यीय कूटनीति का साधन एवं राजनीति का उत्प्रेरक बल नही है, जबकि साम, दाम, दण्ड, भेद अन्तर्राज्यीय कूटनीति का साधन एवं राजनीति का उत्प्रेरक है।

47. निम्नलिखित में से क्या शक्तिग्रह का माध्यम नही है?

(a) व्याकरण (b) वृद्धव्यवहार
(c) आप्तवाक्य (d) तर्क

Ans. (d) : शक्तिग्रह का माध्यम व्याकरण, कोश, आप्तवाष्य, वाक्यशेष, विवृत्रि, वृद्धव्यवहार है, तर्क नही है।

48. सुमेलित कीजिए :

सूची-I (विचारक)	**सूची-II (विचार)**
(A) के. सी. भट्टाचार्य	(i) दिव्य जीवन ही अन्तिम भाग्य है।
(B) श्री अरविन्द	(ii) धर्म ही सभी वस्तुओं का निहित सत्य है।
(C) विवेकानन्द	(iii) निरपेक्ष को सत् के रूप में भी वर्णित नही किया जा सकता है।
(D) टैगोर	(iv) दर्शन, मिथक शास्त्र एवं कर्मकाण्ड धर्म के तीन अवयव हैं।

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए :

(a) A-(iii), B-(i), C-(iv), D-(ii)
(b) A-(i), B-(iii), C-(ii), D-(iv)
(c) A-(ii), B-(iv), C-(i), D-(iii)
(d) A-(iv), B-(ii), C-(iii), D-(i)

Ans. (a) :

(A) के. सी. भट्टाचार्य	(iii) निरपेक्ष को सत् के रूप में भी वर्णित नही किया जा सकता है।
(B) श्री अरविन्द	(i) दिव्य जीवन ही अन्तिम भाग्य है।
(C) विवेकानन्द	(iv) दर्शन, मिथकशास्त्र एवं कर्मकाण्ड धर्म के तीन अवयव हैं।
(D) टैगोर	(ii) धर्म ही सभी वस्तुओं का निहित सत्य है।

49. 'स्वेच्छा मृत्यु के सन्दर्भ में कौन-सा कथन असत्य है?

(a) यह स्वेच्छा से मृत्यु का वरण करने से सम्बन्धित है।
(b) यह एक व्यक्ति का अपने जीवन एवं मृत्यु के ऊपर निरपेक्ष अधिकार स्वीकार करता है।
(c) यह जीवन के मूल्य को स्वीकार करता है।
(d) स्वेच्छा मृत्यु के लिए चिकित्सा-विधिक अनुमति आवश्यक है।

Ans. (b) : स्वेच्छा मृत्यु एक व्यक्ति का अपने जीवन एवं मृत्यु के ऊपर निरपेक्ष अधिकार को स्वीकार नही करता है; जबकि स्वेच्छा से मृत्यु का वरण करने से सम्बन्धित, जीवन के मूल्य को स्वीकार करता है, और स्वेच्छा मृत्यु के लिए चिकित्सा-विधिक अनुमति आवश्यक है।

50. कांट के दार्शनिक मत के सन्दर्भ में सूची I और सूची II को सुमेलित कीजिए :

सूची-I	**सूची-II**
(A) कांट का नीतिशास्त्र	(i) ईश्वर, आत्मा एवं नैतिकता को प्राप्त करने का बौद्धिक औचित्य
(B) कांट की तत्वमीमांसा	(ii) संवदेना एवं बौद्धिक विचार
(C) कॉंट की ज्ञानमीमांसा	(iii) सर्वाधिक प्रसन्नता नही, किन्तु प्रसन्नता के योग्य
(D) कांट की इन्द्रियातीत द्वंद्व	(iv) सत् मनुष्य के मन में सृजित होता है।

निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए :

(a) A-(iii), B-(iv), C-(ii), D-(i)
(b) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv)
(c) A-(ii), B-(iii), C-(iv), D-(i)
(d) A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) :

A. काण्ट का नीतिशास्त्र	(iii) सर्वाधिक प्रसन्नता नहीं, किन्तु प्रसन्नता के योग्य
B. काण्ट की तत्वमीमांसा	(iv) सत् मनुष्य के मन में सृजित होता है।
C. काण्ट की ज्ञान मीमांसा	(ii) संवेदना एवं बौद्धिक विचार
D. काण्ट का इन्द्रियातीत द्वन्द्व	(i) ईश्वर आत्मा एवं नैतिकता को प्राप्त करने का बौद्धिक औचित्य

51. नीचे दो कथन दिये गये हैं। एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया।

अभिकथन (A) : ईश्वर के विचार से ही ईश्वर की सत्ता आपादित होती है।

तर्क (R) : किसी वस्तु की सत्ता को विधेय बनाने से उसके प्रत्यय में किसी चीज की वृद्धि नही होती है।

मध्ययुगीन दर्शनशास्त्र के आलोक में दोनों कथन पर विचार कीजिए और निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए:

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(b) (A) सही है, परन्तु (R) गलत है।
(c) (A) गलत है, परन्तु (R) सही है।
(d) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

Ans. (a) : मध्यकलीन दर्शनशास्त्र में, किसी वस्तु की सत्ता को विधेय बनाने से उसके प्रत्यय में किसी चीज की वृद्धि नहीं होती है तथा ईश्वर के विचार से ही ईश्वर की सत्ता आपादित होती है, दोनों कथन सही है, परन्तु वस्तु की सत्ता से ईश्वर के विचार की सही व्याख्या नही होती है।

52. निम्नलिखित में से यह किसका मत है कि निरपेक्ष सत्ता शुद्ध चित्त तथा शुद्ध स्वातंत्र्य एवं अनंत संभावना है?

(a) नारायण गुरू (b) डी. डी. उपाध्याय
(c) राधाकृष्णन (d) जे. कृष्णमूर्ति

Ans. (c) : 'निरपेक्ष सत्ता शुद्ध चित्त तथा शुद्ध स्वातन्त्र्य और उन्नत सम्भावना है' यह मत राधाकृष्णन का है, जो मानते हैं कि निर्वैयक्तित्व ब्रह्म चरम सत्ता या निरपेक्ष सत् है जो शुद्ध, एक और अव्यक्त है; तथा अपनी अभिव्यक्तियों से परे है।

(आधुनिक भारतीय चिन्तन- डॉ. ओमप्रकाश टाक)

53. सूची I और सूची II को सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) थेलीज	(i) संख्या
(B) डेमोक्रिट्स	(ii) अग्नि
(C) हेराक्लिट्स	(iii) परमाणु
(D) पाइथागोरस	(iv) जल

सुकरात पूर्व दार्शनिकों के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से सही कूट चुनिए :

(a) A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)
(b) A-(i), B-(ii), C-(iv), D-(iii)
(c) A-(ii), B-(i), C-(iii), D-(iv)
(d) A-(iii), B-(iv), C-(i), D-(ii)

Ans. (a) :

(A) थेलीज	(iv) जल
(B) डेमोक्रिट्स	(iii) परमाणु
(C) हेराक्लिट्स	(ii) अग्नि
(D) पाइथगोरस	(i) संख्या

54. काण्ट के निरूपाधिक आदेश की पहचान कीजिए:

(a) क्रियांए मानवीय आचरण से नियमित होनी चाहिए।
(b) क्रियाएं दिव्य इच्छा से नियमित होनी चाहिए।
(c) क्रियाएं सामाजिक परम्पराओं से नियमित होनी चाहिए।
(d) क्रियाएं संवैधानिक प्रशासन से नियमित होनी चाहिए।

Ans. (a) : काण्ट के अनुसार निरूपाधिक आदेश वो आदेश है जिसमें क्रियाएँ मानवीय आचरण से नियमित होनी चाहिए न कि दिव्य इच्छा, सामाजिक परम्पराओं, संवैधानिक प्रशासन से।

(नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त- वेद प्रकाश वर्मा)

55. सेंट ऑगस्टीन के सन्दर्भ में निम्न में से कौन-सा वक्तव्य असत्य है?

(a) ईश्वर का विश्व के साथ तादात्म्य है।
(b) ईश्वर सर्वशक्तिमान है।
(c) बुराई अच्छाई का अभाव है।
(d) ईश्वर विश्व संपोषण करता है।

Ans. (a) : सेंट ऑगस्टीन मध्यकालीन दार्शनिक है। जो मानते हैं, कि ईश्वर सर्वशक्तिमान, विश्व का संपोषण करने वाला है, और इन्होंने अशुभ की समस्या के सन्दर्भ में बताया कि बुराई (अशुभ) अच्छाई (शुभ) का अभाव है। परन्तु वो यह नहीं मानते कि ईश्वर का विश्व के साथ तादात्म्य है।

56. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन पांडित्यवाद के अनुकूल है?

(a) नैतिकता ईश्वर की इच्छा के अनुकूल है।
(b) नैतिकता मानव-क्रिया के अनुकूल है।
(c) नैतिकता राज्य की इच्छा के अनुकूल है।
(d) नैतिकता मनुष्य की इच्छाशक्ति के अनुकूल है।

Ans. (a) : पांडित्यवाद के अनुसार नैतिकता ईश्वर की इच्छा के अनुकूल है, न कि मानव-क्रिया, राज्य की इच्छा, या मनुष्य की इच्छाशक्ति के अनुकूल।

57. निम्नलिखित में से हीगेल का त्रियक है?

(a) प्रत्यय, प्रकृति, आत्मतत्व (b) ईश्वर, आत्मा, विश्व
(c) मन, शरीर, आत्मा (d) प्रत्यय, भूत, ऊर्जा

Ans. (a) : हीगले का त्रियक प्रत्यय, प्रकृति और आत्मतत्व है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

58. जेनो के रूपक 'एकिलिस एडं टारटोइस' की मंशा किस अभिकथन में अभिव्यक्त होती है?

(a) गति मूलभूत है।
(b) स्थायित्व मूलभूत है।
(c) गति और स्थायित्व दोनों मूलभूत हैं।
(d) न तो गति न ही स्थायित्व मूलभूत है।

Ans. (b) : जेनो के रूपक 'एकिलीज एवं कछुआ' अभिकथन 'स्थायित्व मूलभूत है' में अभिव्यक्त होती है। इसमें प्रतियोगिता द्वंद्व या टाइटोइस को यह अवसर दिया जाता है कि कि वह एकिलीज से थोड़ा पहले दौड़ना आरम्भ करें तो एकिलीज उसे पकड़ने में कभी सफल नही हो सकता, क्योंकि एकिलीज के उस स्थान पर पहुँचने के पूर्व कछुआ उस स्थान से आगे बढ़ जाएगा। इस प्रकार कुछआ निरन्तर आगे बढ़ता जाएगा और एकिलीज प्रत्येक बार की दौड़ में उससे निरन्तर ही पीछे रहेगा भले ही वह प्रत्येक बार कछुए के कुछ अधिक समीप पहुँचता जाए।

(पाश्चात्य दर्शन का इतिहास (भाग-1)-प्रादेयाकृष्ण)

59. उस कूट का चयन करें जिसकी वैशेषिक दर्शन के साथ संगति नहीं है:

(a) समवाय का प्रत्यक्षीकरण हो सकता है।
(b) शब्द प्रमाण है।
(c) तमः (अंधकार) द्रव्य नही है।
(d) काल नित्य है।

Ans. (a) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार समवाय का प्रत्यक्षीकरण नही हो सकता है बल्कि समवाय परस्पर आधार एवं आधेय के रूप में सम्बद्ध दो अयुतसिद्ध पदार्थों का सम्बन्ध है, अतः समवाय एक नित्य और अपृथक्करणीय सम्बन्ध है।
समवाय सम्बन्ध के पाँच भेद हैं:-
(1) अवयव-अवयवी सम्बन्ध जैसे- तंतु एवं पट का सम्बन्ध
(2) द्रव्य-गुण सम्बन्ध जैसे- पुष्प और सुगन्ध का सम्बन्ध
(3) द्रव्य-कर्म सम्बन्ध जैसे- जल में गति
(4) सम्मान्य एवं विशेष सम्बन्ध जैसे- मनुष्यत्व और मनुष्य का सम्बन्ध।
(5) विशेष एवं नित्य द्रव्य का सम्बन्ध जैसे- प्रत्येक परमाणु में उसका अपना धर्म विशेष समवेत होता है।

60. अरस्तु के अनुसार 'एक सत्ता जो स्वयं में नही होती, बल्कि दूसरे में होती है'........कहलाती है।

(a) द्रव्य (b) माध्यम
(c) आकस्मिक गुण (d) सत्य

Ans. (c) : अरस्तु के अनुसार 'एक सत्ता जो स्वयं में नही होती, बल्कि दूसरे में होती है, वह है 'आकस्मिक गुण'।

61. नीचे दो कथन दिए गए हैं- एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है:

अभिकथन (A) : पूर्व विट्गेन्सटाइन के अनुसार, नीतिशास्त्र और धर्म अभिव्यक्ति के योग्य हैं।

तर्क (R) : क्योंकि उन्हे शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है।

विट्गेस्टाइन के दर्शनशास्त्र के प्रकाश में दोनों कथन पर विचार कीजिए और निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए:

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं, (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, किन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नही है।
(c) (A) सही है, और (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत है।

Ans. (d) : पूर्व विट्गेन्सटाइन के अनुसार, नीतिशास्त्र और धर्म अभिव्यक्ति के योग्य न होकर धारण करने योग्य हैं, और विट्गेन्सटाइन यह भी मानते हैं कि नीतिशास्त्र और धर्म को शब्दों में व्यक्त नही किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उनके अनुसार किसी शब्द का निश्चित अर्थ नही होता है, बल्कि शब्द का अर्थ सन्दर्भ के अनुसार परिवर्तित होता रहता है, "शब्दों के अर्थ को मत देखो, बल्कि उनके प्रयोग को देखो"।

62. निम्नलिखित में से कौन इस बात को अस्वीकार करता है, कि जड़ और पदार्थ ईश्वर के गुण हैं?

(a) वेदान्तदेशिक (b) निम्बार्क
(c) यामुनाचार्य (d) कुलेशखर अलवर

Ans. (b) : जड़ और पदार्थ को ईश्वर के गुण वेदान्तदेशिक, यामुनाचार्य, तथा कुलशेखर अलवर मानते हैं न कि मध्वाचार्य। मध्वाचार्य ईश्वर को निर्मित कारण, विश्वातीत, वास्तविक सृष्टिकर्ता जगत् का, स्वतन्त्र तत्व है, मानते हैं।

(भारतीय दर्शन- चन्द्रधर शर्मा)

63. निम्नलिखित में से सही विकल्प की पहचान कीजिए:

(a) पुनरूक्ति का निषेध आत्म-व्याघाती नही होता है।
(b) आत्म-व्याघाती का निषेध पुनरूक्ति नही होता है।
(c) आकस्मिकता का निषेध पुनरूक्ति है।
(d) आकस्मिकता का निषेध आकस्मिकता है।

Ans. (d) : आकस्मिकता का निषेध आकस्मिकता है।

64. सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) प्लेटो	(i) अनुभव से स्वतन्त्र कोई सामान्य प्रत्यय नही होता है।
(B) लाइबनिज्य	(ii) यथार्थ प्रत्यक्ष और प्रत्ययकर्ताओ से बनता है।
(C) लॉक	(iii) सभी घटनाओं में मानसिक और भौतिक पूर्व निर्धारित सामंजस्य होता है।
(D) बर्कले	(iv) ज्ञान, मत, विचार तथा प्रत्यक्ष अन्तः प्रज्ञा के द्वारा ज्ञान विकसित होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए:

(a) A-(i), B-(iii), C-(ii), D-(iv)
(b) A-(iv), B-(iii), C-(i), D-(ii)
(c) A-(ii), B-(i), C-(iii), D-(iv)
(d) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv)

Ans. (b) :

A. प्लेटो	(iv) ज्ञान, मत, विचार तथा प्रत्यक्ष अन्तः प्रज्ञा के द्वारा ज्ञान विकसित होता है।
B. लाइबनित्ज	(iii) सभी घटनाओं में मानसिक और भौतिकपूर्व निर्धारित सामंजस्य होता है।
C. लॉक	(i) अनुभव से स्वतन्त्र कोई सामान्य प्रत्यय नही होता है।
D. बर्कले	(ii) यथार्थ प्रत्यक्ष और प्रत्ययकत्ताओं से बनता है।

65. नीचे दिए गए कूट में से निम्न वक्तव्य की सही व्याख्या का चयन करें :
''आप एक ही नदी में दो बार नही प्रवेश कर सकते है।''
कूट:

(a) प्रत्येक चीज नियत है।
(b) प्रत्येक चीज आभासी है।
(c) प्रत्येक चीज परिवर्तनशील है।
(d) प्रत्येक चीज वास्तविक है।

Ans. (c) : हेरावलाइट्स ने अपने परिवर्तन के नियम के अन्तर्गत यह बताया कि संसार में प्रत्येक वस्तु सतत् परिवर्तनशील है हेराक्लाइट्स ने अपने विचार में इसे व्यक्त किया कि 'तुम उसी नदी में दो बार नही उतर सकते, क्योंकि भिन्न-भिन्न जलराशि का निरन्तर आगमन हो रहा है।'

66. नीति शास्त्रीय सिद्धान्त, जिसके अनुसार सही कार्य का उद्देश्य व्यक्तिगत कुशलता और खुशी है, वह है।

(a) परार्थवाद (b) आत्मप्रसादवाद
(c) सुरवाद (d) उपयोगितावाद

Ans. (b) : आत्मप्रसादवाद या आत्मपूर्णतावाद सिद्धान्त के अनुसार सही कार्य का उद्देश्य व्यक्तिगत कुशलता और खुशी है। इस सिद्धान्त के समर्थकों का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति को व्यापक सामाजिक कल्याण के भाग के रूप में ही अपने व्यक्तिगत हित अथवा कल्याण के लिए प्रयास करना चाहिए, क्योंकि समाज में रहकर ही उसका वास्तविक कल्याण सम्भव है। स्पष्ट है कि इस सिद्धान्त में मनुष्य की स्वार्थमूलक तथा परोपकारमूलक इन दोनों स्वाभाविक वृत्तियों के समन्वय को ही स्वीकार किया गया है।
(नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त- वेद प्रकाश वर्मा)

67. अरस्तु द्वारा दी गई 'रूप' की आवधारणा के आलोक में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं?

(A) रूप किसी वस्तु का सार्वभौमिक पक्ष है।
(B) रूप का जगत् भिन्न होता है।
(C) ईश्वर शुद्ध रूप है।
(D) केवल एक ईश्वर है।

निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए:

(a) (A) और (B) सही है। (b) (C) और (D) सही है।
(c) (A) और (C) सही है। (d) (B) और (D) सही है।

Ans. (c) : अरस्तु द्वारा दी गई 'आकार या रूप' की आवधारणा के आलोक में यह कहा गया है कि यह किसी वस्तु का सार्वभौमिक पक्ष है, तथा इन्होंने ईश्वर शुद्ध रूप या शुद्ध आकार के रूप में स्वीकार किया गया है, इसे ही 'अगतिशील गतिदाता' कहा गया है। यह ईश्वर अनुभव जगत् में न होकर अनुभवातीत है। ईश्वर को जगत् का आकारिक, निमित्त और प्रयोजन कारण तीनो स्वीकार किया गया है। अरस्तु के दर्शन में आकार का स्वरूप वास्तविक है, जबकि जड़द्रव्य या उपादान कारण का स्वरूप सम्भाव्य या शक्यता है। अरस्तु ईश्वर को अव्यक्तित्वपूर्ण मानते हैं।

68. ''पश्चिमी दर्शन में प्लेटो के बाद हुआ विकास प्लेटो के दर्शन पर टिप्पणी है'' निम्नलिखित में से किसका यह मानना है?

(a) बर्ट्रेल रसेल (b) ए. एन. व्हाईटहेड
(c) जे. एस. मिल (d) ए. जे. अय्यर

Ans. (b) : ए. एन. व्हाईटहेड के अनुसार, 'पश्चिमी दर्शन में प्लेटो के बाद हुआ विकास प्लेटो के दर्शन पर टिप्पणी है।'

69. 'मेरी एकल सत्ता है, क्योंकि मुझे पता है कि मुझसे तथा मेरे विचारो से परे कोई विश्व नही है', यह दावा निम्नलिखित में से किसका है।

(a) संशयवाद (b) सापेक्षवाद
(c) अहंमात्रवाद (d) व्यक्तिनिष्ठवाद

Ans. (c) : अहंमात्रवाद के अनुसार, 'मेरी एकल सत्ता है, क्योंकि मुझे पता है कि मुझसे तथा मेरे विचारो से परे कोई विश्व नही है।'

70. सत्य-सारणी का प्रयोग करते हुए निर्णय करें कि निम्नलिखित तर्कतः समतुल्य हैं?
[P∂ (q∂r)] ≡ [(P∂q)∂ r]

(a) समतुल्य 6 और 8 पंक्तियों द्वारा प्रदर्शित
(b) समतुल्य नही 6 और 8 पक्तियों द्वारा प्रदर्शित
(c) समतुल्य 3 और 6 पंक्तियों द्वारा प्रदर्शित
(d) समतुल्य नही 3 और 6 पंक्तियों द्वारा प्रदर्शित

Ans. (b) : समतुल्य नही है, 6 और 8 पक्तियों द्वारा प्रदर्शित।

P	q	r	q∂r	P∂(q∂r)	P∂q	(P∂q)∂r	[P∂(q∂r)]≡	[(P∂q)∂r]
T	T	T	T	T	T	T	T	T
T	T	F	F	F	T	F	F	F
T	F	T	T	T	F	T	T	T
T	F	F	T	T	F	T	T	T
F	T	T	T	T	T	T	T	T
F	T	F	F	T	T	F	[T	F]
F	F	T	T	T	T	T	T	T
F	F	F	T	T	T	F	[T	F]

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

71. सेंट ऑगस्टीन के सन्दर्भ में कौन-सा वक्तव्य असत्य है?

(a) प्राप्त करने योग्य एकमात्र ज्ञान ईश्वर और स्वयं का ज्ञान है
(b) गैर-आध्यात्मिक ज्ञान का केवल सहायक मूल्य होता है।
(c) आस्था बुद्धिसंगत होनी चाहिए
(d) बुद्धिसंगत व्याख्या का स्वतन्त्र अस्तित्व होना चाहिए।

Ans. (d) : सेंट ऑगस्टीन के सन्दर्भ में बुद्धिसंगत व्याख्या का स्वतन्त्र आस्तित्व नही है, क्योंकि ईश्वर आस्था का विषय है, तर्क का नही। इसके अतिरिक्त ऑगस्टीन मानते है कि प्राप्त करने योग्य एकमात्र ज्ञान ईश्वर और स्वयं का ज्ञान है। गैर-आध्यात्मिक ज्ञान का केवल सहायक मूल्य होता है।

72. निम्नलिखित में से यह किसका विचार है, कि कार्य और कारण के बीच अनिवार्य सम्बन्ध नही है?

(a) बेनेडिक्ट स्पिनोजा (b) थॉमस एक्विनास
(c) डेविड ह्यूम (d) इमानुएल काण्ट

Ans. (c) : डेविड ह्यूम के अनुसार कार्य और कारण के बीच अनिवार्य सम्बन्ध न होकर साहचर्य का सम्बन्ध होता है।

73. निम्नलिखित में से जे. एस. मिल के नैतिक सिद्धान्त के सन्दर्भ में क्या सुसंगत नही है:

(a) यह एक उपयोगितावादी सिद्धान्त है।
(b) नैतिकता का सर्वोच्च मानदण्ड नैतिकता है।
(c) यह सुखों के स्तरीकरण को स्वीकार नही करता है।
(d) नैतिकता कर्त्तव्य के भाव से निर्धारित नही होती है।

Ans. (c) : जे. एस. मिल एक उपयोगितावादी दार्शनिक है, उनकी नीतिशास्त्र पर एकमात्र पुस्तक 'युटिलिटेरियानिज्म' है, जिसमें उन्होंने उपयोगितावाद सिद्धान्त के सन्दर्भ में विस्तारपूर्वक अपने विचार व्यक्त किये हैं। मिल नैतिक सिद्धान्त के अन्तर्गत सुखों के स्तरीकरण या कोटि को स्वीकार करते हैं, जिसमें निम्न स्तरों तथा उच्च स्तर है, मिल उपरिष्कृत इन्द्रियपरक सुखवाद को स्वीकार नही करते।

74. जैन धर्म के अनुसार प्रायश्चित कर्मो से क्या तीव्रतर हो जाता है।

(a) आस्तव (b) बंध
(c) संवर (d) निर्जरा

Ans. (d) : जैन धर्म के अनुसार प्रायश्चित कर्मों निर्जरा तीव्रतर हो जाता है।

75. सेंट थॉमस एक्विनास के धर्मशास्त्र के बारे में कौन-सा कथन असंगत है?

(a) ईश्वर सबसे पहला अविस्थापित विस्थापक है।
(b) वे ईश्वर के लिए धर्मशास्त्रीय साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।
(c) ये ईश्वर के लिए सत्रात्मक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।
(d) ईश्वर सम्पूर्णता की उच्चतम श्रेणी का प्रतिनिधित्व करता है।

Ans. (c) : सेण्ट थॉमस एक्विनास ईश्वर के अस्तित्व के लिए विश्वमूलक प्रमाण देते हैं, जिसमें वो बताते हैं कि ईश्वर सबसे पहला अविस्थापित विस्थापक है, ईश्वर के लिए धर्मशास्त्रीय साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं, ईश्वर सम्पूर्णता की उच्चतम श्रेणी का प्रतिनिधित्व करता है लेकिन एक्विनास इस बात को धर्मशास्त्र के बारे में नही स्वीकारते ईश्वर के अस्तित्व के लिए सत्तामूलक प्रमाण है बल्कि सत्तामूलक प्रमाण को एन्सेलम, डेकार्ट, प्लेटो स्वीकार करते हैं।

76. कौटिल्य के अनुसार एक 'जनपद' किससे मुक्त होना चाहिए?

(a) शत्रुद्वेषी
(b) कर्मशील कर्षक (श्रमशील कृषक)
(c) भक्त शुचिः मनुष्य (शुद्ध हृदय नागरिक)
(d) प्रमाद (उदासहीनता)

Ans. (d) : कौटिल्य के अनुसार एक 'जनपद' को प्रमाद (उदासहीनता) से मुक्त होना चाहिए यहाँ जनपद से तात्पर्य प्रजा से है। जो शत्रुद्वेषी, कर्मशील कर्षक; भक्तशुचिः मनुष्य (शुद्ध हृदय नागरिक) है।

77. संवेगवाद के विषय में क्या नहीं कहा जा सकता है?

(a) यह नैतिक कथनों के भौतिक परिणामों को महत्व देता है।
(b) यह एक असंज्ञानात्मक नैतिक सिद्धान्त है।
(c) नैतिक अनुनय संवेगवाद का एक महत्वपूर्ण घटक है।
(d) यह नैतिक तथ्य प्रदान नही करता है।

Ans. (a) : संवेगवाद तथा परामर्शवाद ये दो मुख्य अवर्णनात्मक या असंज्ञानात्मक नैतिक सिद्धान्त हैं, यहाँ नैतिक अनुनय संवेगवाद का एक महत्वपूर्ण घटक है, इसके द्वारा नैतिक तथ्य प्रदान नही होता। इसके द्वारा हम नैतिक कथनों के भौतिक परिणामों को महत्व न देकर नैतिक कथनो के नैतिक परिणामों को महत्व देते हैं।

78. सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) सेंट ऑगस्टाइन	(i) मेडिटेशन्स
(B) देकार्त	(ii) फेनोमिनोलॉजी ऑफ माइंड
(C) हीगेल	(iii) एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमेन अण्डरस्टैंडिंग
(D) लॉक	(iv) कन्फेशन्स

कूट :

(a) A-(iv), B-(i), C-(ii), D-(iii)
(b) A-(ii), B-(iii), C-(iv), D-(i)
(c) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv)
(d) A-(iii), B-(iv), C-(i), D-(ii)

Ans. (a) :

A. सेंट ऑगस्टाइन	(iv) कन्फेशन्स
B. देकार्त	(i) मेडिटेशन्स
C. हीगेल	(ii) फेनोमिनोलॉजी ऑफ माइण्ड
D. लॉक	(iii) एन एस्से कन्सर्निग ह्यूमैन अण्डरस्टैण्डिग

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

79. निम्नलिखित में से क्या कपड़े के टुकड़े के रंग का समवायीकरण है।

(a) स्वयं कपड़ा (b) स्वयं धागा
(c) धागों का संयोजन (d) धागों का रंग

Ans. (a) : न्याय दर्शन में तीन प्रकार के कारण माने गये हैं- (1) उपादान कारण (समवायी), (2) असमवायी कारण, (3) निमित्त कारण। जिसमें से उपादान कारण उस द्रव्य को कहा जाता है, जिसके द्वारा कार्य का निर्माण होता है जैसे मिट्टी घड़े का, सूत कपड़े का तथा कपड़े के टुकड़े के रंग का स्वयं कपड़ा समवायी करण है। दूसरा असमवायी कारण उस गुण या कर्म को कहते हैं, जो समवायी कारण में समवेत रहकर कार्य की उत्पत्ति में सहायक होता है, कपड़े का निर्माण सूतों के संयोग से होता है, यही सूतों का संयोग (कर्म) कपड़े का असमवायीकरण है तीसरा निमित्त कारण वो है, जो द्रव्य से कार्य उत्पन्न करने में सहायक होता है। जैसे- कुम्भकार मिट्टी से घड़े का निर्माण करता है, इसलिए कुम्भकार ही घड़े का निर्मित कारण है।

(भारतीय दर्शन की रूपेरखा- डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

80. निम्नलिखित में से कौन पूर्व-पारम्परिक सांख्य के सन्दर्भ से सही नही है?

(a) सांख्य बहुलपुरूषवाद का संस्थापक है।
(b) सांख्य यथार्थवाद है।
(c) सांख्य द्वैतवाद है।
(d) सांख्य एकेश्वरवाद आध्यात्मिकता है।

Ans. (d) : पूर्व-पारम्परिक सांख्य एक द्वैतवाद दर्शन है, जिसमें दो चरम सत्ताएँ पहली प्रकृति और दूसरी पुरूष है। यहाँ बहुल पुरूषवाद, यथार्थवाद दर्शन है। सांख्य दर्शन ईश्वर की चर्चा नहीं हुई है। सांख्य ईश्वर के सम्बन्ध में पूर्णतः मौन है, यह एक अनीश्वरवाद दर्शन है। सांख्य में कहा गया है कि ईश्वर असिद्ध है ईश्वर का अभाव है, नही कहा गया है।

81. निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए:

(a) किसी वैध निगमनात्मक तर्क में निष्कर्ष आधार वाक्यों में व्याप्त होता है।
(b) आगमनात्मक तर्क की स्थिति में निष्कर्ष आधार वाक्यों में व्याप्त नही होता है।
(c) आगमनात्मक तर्क की स्थिति में, आधार वाक्यों तथा निष्कर्ष के मध्य आपादान सम्बन्ध होता है।
(d) किसी वैध निगमनात्मक तर्क की स्थिति में आधार वाक्यों से निष्कर्ष तर्कतः निगमित होता है।

Ans. (d) : किसी वैध निगमनात्मक तर्क की स्थिति में आधार वाक्यों से निष्कर्ष तर्कतः निगमित होता है।

जैसे- सभी मनुष्य मरणशील हैं। (मुख्य पद)
राम एक मनुष्य है। (अमुख्य)
∴ राम मरणशील है।

82. 'कोई भी अश्व विनम्र है जिसे अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया गया है'। निम्नलिखित में से इस तर्कवाक्य को कौन सही निरूपित करता है?

(a) (x) [(Tx) (Gx. Hx)] (b) (x) [(Tx Gx)∂ Hx]
(c) (x) [(Hx Gx)∂ Tx] (d) (x) [(Hx Tx)∂ Gx]

Ans. (d) : 'कोई भी अश्व विनम्र है जिसे अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया गया है' = (x) [(Hx Tx)∂ Gx]

83. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन कर्म सिद्धान्त से निःसृत नही होता है?

(a) पूर्व जन्म होते हैं
(b) भविष्य में भी जन्म होंगे
(c) एक व्यक्ति मात्र नैतिक हो सकता है।
(d) नैतिकता पुरस्कृत होती है।

Ans. (c) : कर्म सिद्धान्त नैतिक जगत् का नियम है, इसके अनुसार मनुष्य जो करता है, उसका फल वही भोगता है, कर्मो के नैतिक मूल्यों का बिना फल दिये लोप नही होता परन्तु सभी कर्मों का फल तत्काल नही मिल जाता कुछ कर्मो के फल तो फौरन मिल जाते हैं, और कुछ कर्म संचित होकर पुनर्जन्म में फल देते हैं, कर्म सिद्धान्त में भविष्य में भी जन्म होंगे। इससे हमारे अच्छे कर्मों से नैतिकता पुरस्कृत होती है, परन्तु यह एक व्यक्ति मात्र नैतिक नही हो सकता है।

84. पातंजल योग के सन्दर्भ में असंगत को चिन्हित कीजिए:

(a) ईश्वर विशेष प्रकार का पुरूष है, जो नित्य मुक्त है।
(b) ईश्वर सृष्टि का निर्माता, संरक्षक और संहारक है।
(c) ईश्वर शुद्धतम ज्ञान है।
(d) ईश्वर का पुरूष के बंधन और मोक्ष से कोई सम्बन्ध नही है।

Ans. (b) : योग दर्शन को सेश्वर- सांख्य कहा जाता है, यह एक ईश्वरवादी दर्शन है, इसमें ईश्वर को सृष्टि का निर्माता संरक्षक और संहारक बताया गया है। 'ओउम' ईश्वर का प्रतीक है।

85. जेरेमी बेन्थम के नैतिक सिद्धान्त के सन्दर्भ में कौन सा कथन असत्य है?

(a) यह प्रसन्नता को सर्वाधिक महत्व देता है।
(b) यह पारम्परिक नैतिकता को यथोचित महत्व देता है।
(c) सर्वाधिक व्यक्तियों के लिए सर्वाधिक प्रसन्नता ही सर्वोच्च नैतिक मूल्य है।
(d) यह एक सुखवादी कलन प्रस्तुत करता है।

Ans. (b) : जेरेमी बेन्थम के नैतिक सिद्धानत मुख्यतः मनोवैज्ञानिक सुखवाद पर आधारित हैं इसमें पारम्परिक नैतिकता को यथोचित महत्व नही देते हैं, बेन्थम के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के समस्त कर्मों का एकमात्र मूल प्रयोजन स्वयं अपने लिये अधिकतम सुख प्राप्त करना ही है। हॉब्स की भाँति वे भी मनुष्य को स्वभावतः पूर्णरूपेण स्वार्थी मानते हुए कहते हैं कि वह सदैव केवल अपने हित की कामना करता है, और दूसरो के हित के लिए तब तक किसी प्रकार का त्याग नही करता जब, तक ऐसा करने से स्वयं उसे कोई लाभ न हो अतः बेन्थम नैतिक सिद्धान्त में पारम्पारिक नैतिकता को यथोचित महत्व नहीं देता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

86. योग-सूत्र के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन अहिंसा की सिद्धि को दर्शाता है?

(a) किसी भी प्राणी को हानि नही पहुँचना
(b) आध्यात्मिक जीवन जीना
(c) हिसंक प्राणियों का हिंसक स्वभाव त्यागना
(d) सम्पूर्ण मानसिक शान्ति

Ans. (d) : योगसूत्र के अनुसार सम्पूर्ण मानसिक शान्ति अंहिसा की सिद्धि को दर्शाता है।

87. वल्लभ निम्नलिखित में से किसका समर्थन करते हैं?

(a) विवर्तवाद (b) परिणामवाद
(c) अविकृतपरिणामवाद (d) आरम्भवाद

Ans. (c) : वल्लभ शुद्धाद्वैतवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। वल्लभ अविकृति परिणामवाद का समर्थन करते हैं जिसमें ब्रह्म स्वयं जगत् के रूप में परिणाम को प्राप्त होना है, और इसके बाद भी वह अविकृत रहता है, अर्थात् उसमें कोई विकार नही आता है।

88. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प नैयायिको द्वारा स्वीकृत वृत्तियों का सही रूप में वर्णन करता है?

(a) केवल शक्ति (b) केवल व्यंजना
(c) केवल लक्षणा (d) शक्ति और लक्षणा दोनो

Ans. (d) : शब्द के अर्थ को व्यक्त करने की शक्ति ही वृत्ति कहलाती है नैयायिकों में अभिधा और लक्षणा इन दो वृत्तियों को स्वीकार किया गया है, अभिधा (शक्ति) शब्द की मुख्य वृत्ति है। इसी से शब्द के अर्थ का बोध किया जाता है, सामान्य परिस्थितियों में।
जैसे - काग एक पक्षी है, परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों में लक्षणा (गौण अर्थ) के माध्यम से भी वाक्य के अर्थ का बोध किया जाता है;
(1) जहत् लक्षणा (मुख्यार्थ को पूरी तरह छोड़ना)
(2) अजहत् लक्षणा (नही छोड़ना)
(3) जहत्-अजहत् लक्षणा (कुछ छोड़ना और कुछ नही छोड़ना)

89. निम्नलिखित में से कौन पातंजल योग पद्धति में शब्द कैवल्य का सही अर्थ है:

(a) कैवल्य का अर्थ ईश्वर के साथ ऐक्य है।
(b) कैवल्य का अर्थ प्रकृति से पुरुष का पार्थक्य है।
(c) कैवल्य का अर्थ आत्ममुग्धि है।
(d) कैवल्य का अर्थ श्वास नियंत्रण है।

Ans. (a) : पातंजल योग पद्धति में कैवल्य शब्द का सही अर्थ है कि 'ईश्वर के साथ ऐक्य' योग के मतानुसार मोक्ष की प्राप्ति ही जीवन का चरम लक्ष्य है, मोक्ष (कैवल्य) की प्राप्ति के लिये विवेक ज्ञान को ही पर्याप्त नही माना गया, बल्कि योगाभ्यास पर भी बल दिया गया है योग एक व्यवहारिक दर्शन है।

90. न्याय के अनुसार निम्नलिखित में से संज्ञान का साधारण कारण क्या होता है।

(a) इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष (b) मनःइन्द्रिय संयोग
(c) त्वंमन संयोग (d) आलोक संयोग

Ans. (c) : न्याय के अनुसार त्वंमन संयोग संज्ञान का साधारण कारण होता है, इसके अतिरिक्त इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष, मनःइन्द्रिय संयोग और आलोक संयोग संज्ञान का साधारण कारण नही है।

91. 'पर्याप्त औचित्य का नियम' निम्नलिखित में से किसने दिया है?

(a) लॉक (b) देकार्त
(c) लाइबनिज्य (d) स्पिनोजा

Ans. (c) : 'पर्याप्त औचित्य का नियम' लाइबनिज्य ने दिया है। जिसमें लाइबनिज्य का दावा है कि केवल उसी वस्तु को सत्य माना जा सकता है जिसका कोई पर्याप्त कारण हो। इसी प्रकार इस सृष्टि का भी कोई न कोई 'पर्याप्त कारण' अवश्य होगा।

92. निम्नलिखित में से कौन-सा दर्शन स्वतः प्रामाण्यवाद को स्वीकार नही करता।

(a) पूर्व-मीमांसा (b) न्याय-वैशेषिक
(c) अद्वैत वेदान्त (d) विशिष्टाद्वैत वेदान्त

Ans. (b) : न्याय वैशेषिक दर्शन स्वतः प्रामाण्यवाद को स्वीकार नही करता बल्कि परतः प्रामाण्यवाद और परतः अप्रमाण्यवाद स्वीकार करता है। जबकि पूर्व मीमांसा अद्वैत विशिष्टाद्वैत, सांख्य स्वतः प्रामाण्यवाद को स्वीकार करते हैं।

93. अभिप्रायिकता का क्या अर्थ है?

(a) तदर्थता (b) शून्य
(c) मुक्ति (d) समानता

Ans. (a) : अभिप्रायिकता या विषयापेक्षी का अर्थ तदर्थता है- हुर्सल के दर्शन में विषयापेक्षी को जानना, इसकी विषयोन्मुखता (तदर्थता) को जानना। इसी सिद्धान्त के प्रभाव में हुर्सल को एक आधार मिल जाता है, चेतना के विश्लेषण में प्रदत्त विषय को ढूंढ़ लेने का।
(समकालीन पाश्चात्य दर्शन- वसन्त कुमार लाल)

94. एक दृढ़ विज्ञान के रूप में हुर्सल के दर्शन का मुख्य उद्देश्य है।

(a) एक नवीन और अधिक आधारभूत घटना क्रिया विज्ञान को विकसित करना।
(b) सटीक विज्ञान की एक विधि विकसित करना।
(c) नवीन साक्ष्य की खोज नही करना।
(d) दिये गए तथ्य को तत्काल उपस्थिति चेतना की खोज न करे।

Ans. (a) : हुर्सल का उद्देश्य एक दृढ़ विज्ञान के रूप में एक नवीन और आधारभूत घटना क्रिया विज्ञान को विकसित करना है, जो पूर्वग्रहों, मान्यताओं, पक्षपातों तथा संकुचित दृष्टिकोणो आदि से रहित हो।
(समकालीन पाश्चात्य दर्शन- वसन्त कुमार लाल)

95. एक प्रतिज्ञप्ति का एक अशिंक जिसमें से एक है?

(a) यह विधेय है, मूल विधेय का विरोधाभासी है, जबकि उद्देश्य मूल उद्देश्य है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(b) यह विधेय है और उद्देश्य क्रमशः मूल विधेय और उद्देश्य के विरोधाभासी हैं।
(c) यह उद्देश्य मूल उद्देश्य का विरोधाभासी है, यह विधेय है मूल विधेय है।
(d) उद्देश्य मूल उद्देश्य है और गुणवत्ता को बदल दिया जाता है।

Ans. (d) : एक प्रतिज्ञप्ति का अंशिक में उद्देश्य मूल उद्देश्य है और गुणवत्ता को बदल दिया जाता है।

96. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सुकरात के विचार से संगत नही है।
(a) ज्ञान सम्भव है।
(b) युवाओं को संस्कारवान बनना चाहिए।
(c) हर चीज व्यक्तिनिष्ठ है।
(d) अपरिचित जीवन जीने लायक नहीं है।

Ans. (b) : सुकरात के अनुसार हर चीज व्यक्तिनिष्ठ नही है, बल्कि वस्तुनिष्ठ होती है, सुकरात इसी आधार पर सोफिस्टों के मत कि, 'मनुष्य सभी वस्तुओं का मापदण्ड है', व्यक्तिनिष्ठ का खण्डन करते हुए कहते हैं; व्यक्ति सभी वस्तुओं का मापदण्ड नही है।'

97. हीगेल के निम्नलिखित में से किस विचार से कार्ल मार्क्स प्रभावित थे?
(a) अलगाव की भावना (b) न्याय
(c) द्वन्द्व (d) भौतिकवाद

Ans. (c) : द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धान्त मार्क्स के सम्पूर्ण चिन्तन का मूलाधार है, इस सिद्धान्त के प्रतिपादन में मार्क्स द्वन्द्ववाद का विचार हीगेल की द्वन्द्वात्मक पद्धति से ग्रहण किया और भौतिकवाद का दृष्टिकोण 'फायर बाख' से। अतः काल मार्क्स फायर बाख और हीगेल दोना के विचारो से प्रभावित थे।

98. सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) अज्ञेयवाद	(i) ऐसे ईश्वर में विश्वास जो प्रकृति में हर चीज में है।
(B) सर्वेश्वरवाद	(ii) अनेक देवो में विश्वास
(C) एकदा एकदेववाद	(iii) ईश्वर के सम्बन्ध में किसी ज्ञान के न होने का विश्वास
(D) बहुदेववाद	(iv) अनेक देवों में से एक विशेष देव में विश्वास

कूटः
(a) A-(ii), B-(i), C-(iv), D-(iii)
(b) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv)
(c) A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)
(d) A-(iii), B-(i), C-(iv), D-(ii)

Ans. (d) :

A. अज्ञेयवाद	(iii) ईश्वर के सम्बन्ध में किसी ज्ञान के न होने का विश्वास
B. सर्वेश्वरवाद	(i) ऐसे ईश्वर में विश्वास जो प्रकृति में हर चीज में है।
C. एकदा एकदेववाद	(iv) अनेक देवों में एक विशेष देव में विश्वास
D. बहुदेववाद	(ii) अनेक देवों में विश्वास

99. ईश्वर की सत्ता की विश्वमूलक सिद्धि किस दार्शनिक की है?
(a) डेकार्ट (b) सेन्ट एन्सेलम
(c) ऑगस्टाइन (d) थॉमस एक्विनॉस

Ans. (d) : ईश्वर की सत्ता या आस्तित्व के लिए मध्यकालीन दर्शन में निम्न सिद्धि है;
(i) विश्वमूलक सिद्धि - थॉमस एक्विनॉस
(ii) प्रयोजनामूलक सिद्धि - प्लेटो, एक्विनॉस, मार्टिन्यू
(iii) नैतिक सिद्धि - काण्ट, सोर्ले, मार्टिन्यू, रैशडल
(iv) प्रत्ययमूलक या सत्तामूलक सिद्धि - एन्सेलम, डेकार्ट, प्लेटो, आगस्टिन
(v) सृष्टि वैज्ञानिक तर्क (कारण-कार्य नियम) - एन्सेलम

100. सुमेलित कीजिए :

सूची-I	सूची-II
(A) यदि 'P' सत्य है, तो P सत्य है।	(i) अव्याघात का सिद्धान्त
(B) 'P' एक ही साथ सत्य और असत्य दोनो नही हो सकता।	(ii) तादात्म्य का सिद्धान्त
(C) यदि 'P' है, तो Q है 'P' है अतः Q है।	(iii) मध्य परिहार का सिद्धान्त
(D) P या तो P है अथवा P नही है।	(iv) पर्याप्त तर्क का सिद्धान्त

कूटः
(a) A-(iv), B-(iii), C-(ii), D-(i)
(b) A-(ii), B-(i), C-(iv), D-(iii)
(c) A-(i), B-(ii), C-(iii), D-(iv)
(d) A-(iii), B-(iv), C-(i), D-(ii)

Ans. (b) :
A. यदि 'P' सत्य है, तो P सत्य है → (ii) तादात्म्य का नियम
B. 'P' एक ही साथ सत्य और असत्य दोनो नहीं हो सकता → (i) अव्याघात का सिद्धान्त
C. यदि 'P' है, तो Q है, 'P' है, अतः Q है। → (iv) पर्याप्त तर्क का सिद्धान्त
D. P या तो P है अथवा P नहीं है → (iii) मध्य परिहार का सिद्धान्त

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2018
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. नैयायिकों के अनुसार किन इन्द्रियों के द्वारा हम बाह्य द्रव्यों का अनुभव करते हैं?

(i) चाक्षुष (ii) स्पर्श
(iii) श्रवण (iv) स्वाद

नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए :

(a) केवल (i) (b) केवल (i) और (ii)
(c) केवल (ii) और (iii) (d) केवल (iii) और (iv)

Ans. (b) नैयायिकों के अनुसार चाक्षुष और स्पर्श के द्वारा हमे बाहय द्रव्यों का अनुभव होता है।

2. निम्नलिखित अनुमान में किस प्रकार का हेत्वाभास है? यज्ञ स्वर्ग का कारण नहीं है क्योंकि यह क्रियात्वात् है।

(a) सव्यभिचार (b) असिद्ध
(c) निरुद्ध (d) बाधित

Ans. (d) 'यज्ञ' का सम्बन्ध स्वर्ग से है। अतः प्रस्तुत उदाहरण में 'बाधित' हेत्वाभास है। किसी अनुमान का हेतु किसी अन्य प्रमाण से यदि बाधित हो जाय तो वहां बाधिक हेत्वाभास पाया जाता है।

3. नैयायिकों के अनुसार पात्र और इसके रंग के बीच संबंध को..........के द्वारा अनुभव किया जा सकता है।

(a) समवेत समवाय सन्निकर्ष (b) संयुक्त समवाय सन्निकर्ष
(c) समवाय सन्निकर्ष (d) विशेषणता सन्निकर्ष

Ans. (d) विशेषणता सन्निकर्ष नैयायिकों के अनुसार पात्र और इसके रंग के बीच संबंध को विशेषणता सन्निकर्ष के द्वारा अनुभव किया जा सकता है। नैयायिक मूलतः वस्तुवादी दार्शनिक हैं।

4. न्याय ज्ञान मीमांसा में किस प्रकार के प्रत्यक्ष को अतीन्द्रिय कहा जाता है?

(a) अनुव्यवसाय (b) निर्विकल्पक प्रत्यक्ष
(c) सविकल्पक प्रत्यक्ष (d) अलौकिक प्रत्यक्ष

Ans. (*) यूजीसी की उत्तरमाला के अनुसार निर्विकल्पक प्रत्यक्ष को न्याय ज्ञान मीमांसा में अतीन्द्रीय कहा जाता है। न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष के दो स्वरूप निर्विकल्पक प्रत्यक्ष एवं सविकल्पक प्रत्यक्ष होते हैं।

5. निम्नलिखित में से कौन-सा एक वाक्यार्थबोध की शर्त नहीं है?

(a) असत्ति (b) योग्यता
(c) वाक्यशेष (d) तात्पर्य

Ans. (c) प्रत्येक अर्थपूर्ण वाक्य का अर्थ समझने के लिए (वाक्यार्थ बोध की शर्त) चार शर्तों को पूरा होना चाहिए। आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि (असत्ति) और तात्पर्यज्ञान। अतः यहां वाक्यांश नहीं होगा।

6. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। उन पर विचार कीजिए और चार्वाक दर्शन के संदर्भ में नीचे दिए गए सही कूट को चुनिए–

अभिकथन (A) : चेतना केवल चार भूतों-पृथ्वी, अप, तेजस और वायु का उत्पाद है।

तर्क (R) : चार भूतों से अतिरिक्त और ऊपर कुछ भी नहीं है।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं किन्तु (R) (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) की सही व्याख्या है।
(c) (A) गलत है किन्तु (R) सही है।
(d) (A) सही है किन्तु (R) गलत है।

Ans. (b) चार्वाक दर्शन के अनुसार, चार-भूतों से ही सृष्टि का उद्भव और विकास हुआ है। वे अभौतिक तत्व की सत्ता को स्वीकार नहीं करते। चार्वाक दर्शन में चेतना को चार भूतों-पृथ्वी, अप, तेजस और वायु का उत्पाद माना गया है। इसके अतिरिक्त चेतन तत्व कुछ भी नहीं है।

7. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) कुमारिल	(i) अख्याति
(b) नागार्जुन	(ii) विपरीत ख्याति
(c) प्रभाकर	(iii) अभिनव अन्यथा ख्याति
(d) मध्व	(iv) असत् ख्याति

(a) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iv)
(b) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(i)
(c) (a)-(ii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(iii)
(d) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(i), (d)-(iii)

Ans. (c) कुमारिल विपरीतख्यातिवाद नागार्जुन असत्ख्यातिवाद, प्रभाकर अख्यातिवाद और मध्व अभिनवअन्यथा ख्यातिवाद के समर्थक है।

8. किसके अनुसार वेद ईश्वर रचित है?

(a) पूर्व मीमांसा (b) न्याय
(c) सांख्य (d) वैशेषिक

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) न्याय दर्शन में वेदों को ईश्वरसृष्टि होने के नाते पौरुषेय माना जाता है। न्याय-दर्शन का तर्क है कि वेदों की प्रामाणिकता का कारण ईश्वर है। भले ही वेदों में भिन्न भाग हो, परन्तु उनमें अभिप्राय की एकता है। इससे उनका रचयिता भी नित्य, अतीन्द्रियार्थदर्शी, पूर्ण सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान व्यक्ति ही हो सकता हैं ऐसा रचयिता मनुष्य नहीं हो सकता, क्योंकि वह अत्यन्त सीमित है। अतः वेदों का रचयिता ईश्वर है।

9. वह मुख्य बात कौन-सी है जिस पर पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा एकमत हैं?
(a) आत्म (जीव) निष्क्रिय है।
(b) वेद सभी ज्ञान की आधारशिला हैं।
(c) वेद पौरुषेय हैं।
(d) जगत आभास है।

Ans. (b) वेद सभी ज्ञान की आधारशिला है। पूर्वमीमांसा और उत्तर मीमांसा (वेदान्त) 'वेद' को सभी प्रकार के ज्ञान का मुख्य आधार मानते हैं। दोनों ही सम्प्रदाय वेद को 'अपौरुषेय' मानते हैं।

10. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता है?
(a) चार्वाक और मध्व (b) ईश्वरकृष्ण और चार्वाक
(c) चार्वाक और शंकर (d) मध्व और उद्यन

Ans. (d) 'मध्व और उद्यन चार्वाक ईश्वर की सत्ता को नहीं मानते, ईश्वरकृष्ण, शंकर मध्व और उद्यन आदि ईश्वर की सत्ता को मानते हैं। अतः अभीष्ट विकल्प 'मध्व और उद्यन' होगा।

11. निम्नलिखित विकल्पों में से कौन-सा शास्त्रीय सांख्य दर्शन का उपयुक्त विवरण है?
(a) सतत सक्रियवाद का दर्शन
(b) केवल बहुलवादी भौतिकवाद का दर्शन
(c) पुरुष-प्रकृति विवेक ज्ञान का दर्शन
(d) एकेश्वरवाद का दर्शन

Ans. (c)
शास्त्रीय सांख्य दर्शन पुरुष-प्रकृति के विवेक ज्ञान पर बल देता है। अर्थात् मोक्ष के लिए पुरुष और प्रकृति का विवेक अर्थात् प्रकृति एवं पुरुष के परस्पर भिन्न होने का ज्ञान होना चाहिए। अर्थात् सांख्य दर्शन तत्वज्ञान को मोक्ष (कैवल्य) का साधन मानता है। जो विवेक ज्ञान है।

12. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) शंकर	(i) अनुभाष्य
(b) रामानुज	(ii) दृग्दृश्यविवेक
(c) मध्व	(iii) वेदार्थसंग्रह
(d) वल्लभ	(iv) भाष्य-प्रकाश

(a) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(i)
(b) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(iv)
(c) (a)-(i), (b) (ii), (c)-(iv), (d)-(iii)
(d) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(i)

Ans. (b)
(a) शंकर – दृग्दृश्यविवेक
(b) रामानुज – वेदार्थसंग्रह
(c) मध्व – अनुभाष्य
(d) वल्लभ – भाष्य-प्रकाश

13. यह विचार कि आत्म केवल मनोदशाओं का समुच्चय है, किसका है?
(a) न्याय और सांख्य
(b) प्रारम्भिक बौद्धमत और वेदांत
(c) योग और वैशेषिक
(d) केवल प्रारम्भिक बौद्धमत

Ans. (d) प्रारम्भिक बौद्ध दर्शन में आत्मा को क्षणिक मनोदशाओं का संघात (समुच्चय) माना जाता है। इनके अनुसार संसार में सब कुछ क्षणिक, परिवर्तनशील है। इनके अनुसार जब हम आत्म तत्व का विश्लेषण करते हुए जब अन्दर की ओर देखते हैं तो हमें सर्दी या गर्मी, रोशनी या छाया, प्रेम-घृणा, सुख-दुःख आदि मनोदशाओं का ही अनुभव होता है। इनका यह विचार 'अनात्मवाद' कहलाता है।

14. निम्नलिखित में से किसका ईश्वर में विश्वास नहीं है?
(a) ईश्वरकृष्ण (b) कणाद
(c) धर्मकीर्ति (d) गौतम

Ans. (c) ईश्वर कृष्ण, कणाद और गौतम अपनी रचनाओं में ईश्वर के बारे में तर्क देते हैं, जबकि 'धर्मकीर्ति' ईश्वर को नहीं मानते। 'धर्मकीर्ति' बौद्ध-दार्शनिक है।

15. उपनिषदों के संदर्भ में सही क्रम चिन्हित कीजिए–
(a) प्राज्ञ, वैश्वानर, तैजस
(b) तैजस, वैश्वानर, प्राज्ञ
(c) वैश्वानर, प्राज्ञ, तैजस
(d) तैजस, प्राज्ञ, वैश्वानर

Ans. () इस प्रश्न को गलत माना गया है।
उपनिषदों में जीवात्मा की चार अवस्थाओं को माना गया है जो क्रमशः है–जाग्रत स्वप्न, सुषुप्त तथा तुरीय अवस्था है। जिसमें आत्मा को क्रमशः–'वैश्वानर', 'तैजस', 'प्राज्ञ' और ब्रह्म कहा जाता हैं।

16. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) हेतु सभी भावात्मक उदाहरणों, जिनमें साध्य है, में अवश्य विद्यमान होगा।	(i) अबाधित
(b) हेतु पक्ष के साथ असंगत नहीं होगा।	(ii) पक्षधर्मता
(c) हेतु पक्ष में विद्यमान होगा	(iii) सपक्षसत्व
(d) हेतु सभी अभावात्मक उदाहरणों जिनमें साध्य नहीं हैं, में विद्यमान नहीं होगा।	(iv) विपक्षसत्व

(a) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iv)
(b) (a)-(i), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(ii)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(iv)
(d) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(i), (d) (iii)

Ans. (a)

(a) हेतु सभी भावात्मक उदाहरणों, जिनमें साध्य है, में अवश्य विद्यमान होगा।	(iii) सपक्षसत्व
(b) हेतु पक्ष के साथ असंगत नहीं होगा	(i) अबाधित
(c) हेतु पक्ष में विद्यमान होगा	(ii) पक्षधर्मता
(d) हेतु सभी अभावात्मक उदाहरणों, जिनमें साध्य नहीं है, में विद्यमान नहीं होगा।	(iv) विपक्षसत्व

17. वैदिक परम्परा में ईश्वर की सभी शक्तियों का स्रोत है–
(a) ब्रह्म (b) प्रजापति
(c) ऋत (d) यज्ञ

Ans. (c) वैदिक परम्परा में ईश्वर की सभी शक्तियों का स्रोत 'ऋत' ही है। समस्त सृष्टि 'ऋत' के नियमों से ही संचालित है। वेदों में 'ऋत' का प्रयोग विश्व व्यवस्था के साथ-साथ नैतिक व्यवस्था के अर्थ में हुआ हैं।

18. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। गांधी के आलोक में (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट चुनिए–
अभिकथन (A) : सभी धर्म सत्य हैं।
तर्क (R) : सभी धर्मों में कुछ त्रुटियाँ हैं।
कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं किन्तु (R) (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलती है किन्तु (R) सही है।

Ans. (b) गाँधी जी के अनुसार सभी धर्म सत्य है और सभी धर्मों में कुछ त्रुटियां हैं परन्तु (A) और (R) दोनों सही होते हुए भी (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

19. के.सी. भट्टाचार्य के दर्शन में किसे छोड़ कर निम्नलिखित सभी कथन सही हैं–
(a) तर्कशास्त्र तत्त्वमीमांसा की प्रागपेक्षा है।
(b) तर्कशास्त्र विषय के दर्शन की शाखा है।
(c) तर्कशास्त्र विज्ञान है।
(d) तर्कशास्त्र में तत्त्वमीमांसा स्वयं को परिभाषित करती है।

Ans. (c) के.सी. भट्टाचार्य ने तर्कशास्त्र को विज्ञान न मानकर 'विषय का दर्शन' माना है। क्योंकि तर्कशास्त्र तथ्य-निर्देश नहीं करते। तर्कशास्त्र 'शुद्ध रूपों' की खोज करता है जो 'शुद्ध विषयों' के रूप हैं। 'शुद्ध-विषय' दर्शन की दूसरी शाखा तत्त्वदर्शन की विषयवस्तु है। अतः वह तर्कशास्त्र को तत्त्वमीमांसा की प्रागपेक्षा मानते हैं। उनके अनुसार तर्कशास्त्र में तत्त्वमीमांसा स्वयं को परिभाषित करती है।

20. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। टैगोर की माया की अवधारणा के आलोक में नीचे दिए गए सही कूट को चुनिए–
अभिकथन (A) : माया विश्वभ्रान्ति का कारक सिद्धान्त है।
तर्क (R) : माया ईश्वर का स्वारोपित बंधन है।
कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं किन्तु (R) (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है किन्तु (R) सही है।

Ans. (b) टैगोर के अनुसार 'माया विश्वभ्रान्ति का कारक सिद्धांत है क्योंकि अर्न्तमन में जगत को गलत दृष्टि से देखने की प्रवृत्ति है और यही माया है। उनके अनुसार माया ईश्वर का स्वारोपित बंधन है। परन्तु (R) (A) की सही व्याख्या नहीं है।

21. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	**सूची-II**
(a) विवेकानन्द	**(i) समग्र अद्वैतवाद**
(b) श्री अरविंद	**(ii) संपर्क अधिकारी**
(c) राधाकृष्णन्	**(iii) व्यावहारिक वेदान्त**
(d) इक़बाल	**(iv) इस्लामी सत्यों की पुनर्संरचना**

(a) (iii), (b) (i), (c) (ii), (d) (iv)
(a) (i), (b) (ii), (c) (iii), (d) (iv)
(a) (ii), (b) (iv), (c) (i), (d) (iii)
(a) (iv), (b) (iii), (c) (ii), (d) (i)

Ans. (a)
(a) विवेकानन्द – व्यावहारिक वेदान्त
(b) अरविन्द – समग्र अद्वैतवाद
(c) राधाकृष्णन – सम्पर्क अधिकारी
(d) इकबाल – इस्लामी सत्यों की पुनर्संरचना

22. अरविंद के दर्शन में विकास की प्रक्रिया में मन विविध अवस्थाओं को निरूपित करने के सही क्रम का सही कूट चुनिए–
(a) उच्चतर मन, प्रदीप्त मन, अधिमन, अंतर्भास
(b) उच्चतर मन, अधिमन, अंतर्भास, प्रदीप्त मन
(c) उच्चतर मन, प्रदीप्त मन, अंतर्भास, अधिमन
(d) उच्चतर मन, अंतर्भास, प्रदीप्त मन, अधिमन

Ans. (c) श्री अरविन्द के दर्शन में विकास की प्रक्रिया में मन की विविध अवस्थाएं–उच्चतर मन, प्रदीप्त मन, अंतर्भास, अधिमन।

23. टैगोर के अनुसार निम्नलिखित में से किसे 'देवता का मंदिर' माना जाता है?
(a) आत्मा (b) शरीर
(c) मन (d) इन्द्रिय

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) टैगोर के अनुसार शरीर 'देवता का मन्दिर' है। टैगोर 'शरीर' को मानव अस्तित्व को सर्वथा असत् या भ्रामक पक्ष न कहकर यह कहते हैं। किन्तु मन्दिर को ईश्वर (देवता) समझ लेने की भूल नहीं करनी चाहिए। अतः हमारी एकाग्रता शरीर पर न होकर ईश्वर- (देवता) पर होना चाहिए।

24. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। जैन दर्शन के आलोक में (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट को चुनिए–

अभिकथन (A) : द्रव्य और गुण अपृथक्करणीय हैं।

तर्क (R) : द्रव्य गुण का आश्रय है।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं किन्तु (R) (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है किन्तु (R) सही है।

Ans. (b) जैन दर्शन में द्रव्य और गुण को अपृथक्करणीय माना गया है। द्रव्य को गुण का आश्रय भी माना गया है। परन्तु फिर भी यह व्याख्या अपर्याप्त है।

25. यज्ञ..............के लाभ के लिए किया जाता है।

(a) यजमान
(b) ऋत्विक
(c) देवता
(d) यजमान और ऋत्विक दोनों

Ans. (a) 'यज्ञ' यजमान के लाभ के लिए किया जाता है।

26. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) प्रिंसिपिया फिलोसोफिया	(i) बर्कले
(b) एन एम्से कंसनिंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग	(ii) ह्यूम
(c) प्रिंसिपल्स ऑफ ह्यूमन नॉलेज	(iii) देकार्त
(d) एन इंक्वायरी कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग	(iv) लॉक

(a) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(b) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(i)
(c) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(ii)
(d) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(ii), (d)-(i)

Ans. (c)

(a) प्रिंसिपिया फिलासोफिया	–	देकार्त
(b) एन एस्से कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग	–	लॉक
(c) प्रिसिपल्स ऑफ ह्यूमन नॉलेज	–	बर्कले
(d) एन इंक्वायरी कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैडिंग	–	ह्यूम

27. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और आधुनिक पाश्चात्य दर्शनशास्त्र के संदर्भ में सही कूट को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) संशयवादी	(i) बर्कले
(b) आदर्शवादी	(ii) लॉक
(c) गुणों का विभाजन	(iii) ह्यूम
(d) ईश्वर-प्रेमोन्मत्त	(iv) स्पिनोजा

(a) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iv)
(b) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(c) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(iv)
(d) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(i), (d)-(iv)

Ans. (a) ह्यूम संशयवादी, बर्कले आदर्शवादी, लॉक गुणों का विभाजन, स्पिनोजा ईश्वर–प्रेमोन्मत दार्शनिक हैं।

28. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और लॉक के संदर्भ में सही कूट को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) बाह्य-प्रत्यक्ष ज्ञान	(i) आत्मा का ज्ञान
(b) परोक्ष ज्ञान	(ii) जगत का ज्ञान
(c) आन्तर-प्रत्यक्ष ज्ञान	(iii) ईश्वर का ज्ञान

(a) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iii)
(b) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(i)
(c) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii)
(d) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(ii)

Ans. (b) लॉक के दर्शन के सन्दर्भ में–बाह्य-प्रत्यक्ष ज्ञान का जगत का ज्ञान, परोक्षज्ञान का ईश्वर का ज्ञान और आन्तर-प्रत्यक्ष ज्ञान का आत्मा का ज्ञान से सम्बन्धित है।

29. सही युग्म को चिन्हित कीजिए–

(a) सार्वभौमिक और अनुभबाश्रित
(b) विशिष्ट और प्रागनुभविक
(c) सार्वभौमिक और प्रागनुभविक
(d) विशिष्ट और अनुभबाश्रित

Ans. (c) सहज प्रत्यय वे प्रत्यय हैं जो सार्वभौमिक और प्रागनुभविक होते हैं। बुद्धवादियों के अनुसार समस्त ज्ञान जन्मजात हमारी बुद्धि में निगूढ़ होता है जिसकी अभिव्यक्ति अनुभव के माध्यम से होती है।

30. हेराक्लाइट्स के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट को चिह्नित कीजिए।

(i) ब्रह्माण्ड का मूल द्रव्य अग्नि है।
(ii) सत् निरन्तर परिवर्तनशील है।
(iii) सत् अपरिवर्तनशील और स्थाई है।

(a) केवल (i) सही है।
(b) केवल (ii) सही है।
(c) केवल (i) और (iii) सही है।
(d) केवल (i) और (ii) सही है।

Ans. (d) ग्रीक दार्शनिक हेराक्लाइट्स परिवर्तन को ही सत् मानता है। उसके अनुसार सत् निरन्तर परिवर्तनशील है और ब्रह्माण्ड का मूल द्रव्य अग्नि है। यह पार्मेनिडीज के सत अपरिवर्तनशील और स्थाई सिद्धान्त के विपरीत है। अतः कथन (i) और (ii) सत्य है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

31. पारमेनाइडीज़ के आलोक में दिए गए अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए और सही कूट को चिह्नित कीजिए–

अभिकथन (A) : रिक्तता संभव नहीं है।

तर्क (R) : रिक्त स्थान अ-सत् होगा इसलिए इसका अस्तित्व नहीं है।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं किन्तु (R) (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है किन्तु (R) सही है।

Ans. (a) चूंकि पर्मेनाइडीज सत् की ही एकमात्र सत्ता मानते हैं तथा वह दैशिक, परिमित, गोलाकार मानते हैं तथा सत को स्वयं चारों ओर सत् से जकड़ा मानते हैं अतः रिक्तता की बात ही नहीं हो सकती है क्योंकि रिक्त स्थान होने पर सत् सत न होकर अ-सत होगा। अतः (A), (R) दोनों सही हैं और (A), (R) की सही व्याख्या भी है।

32. निम्नलिखित मध्ययुगीन दार्शनिकों में से किसने यह तर्क दिया था कि अस्तित्व वह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वास्तविकता है जिसके बिना सार भी वास्तविक नहीं हो सकता है।

(a) संत आगस्टॉइन (b) संत ऐन्सेल्म
(c) थॉमस एक्वीनस (d) हाईपेशिया

Ans. (c) थॉमस एक्वीनस के अनुसार ईश्वर के 'अस्तित्व' एवं 'सारतत्व' में कोई भेद नहीं है। उसके अनुसार 'अस्तित्व वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण वास्तविकता है जिसके बिना सार भी वास्तविक नहीं हो सकता है। वह एन्सेल्म के सत्तामूलक तर्क का खण्डन करता है।

33. वाक्-क्रिया सिद्धान्त के संदर्भ में यह कथन कि ''मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि कृष्ण निर्दोष है''

(a) निष्पादक वाक्य है
(b) वचन कर्म है
(c) निरर्थक उक्ति है
(d) व्यस्थित रूप से भ्रामक अभिव्यक्ति है

Ans. (a) ''मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि कृष्ण निर्दोष है'' एक निष्पादक वाक्य है। वाक्-क्रिया सिद्धान्त में 'निस्पादक वाक्य' वे वाक्य हैं जिनका उच्चारण स्वयं में एक क्रिया का निस्पादन करना है। प्रस्तुत कथन में कृष्ण को निर्दोष साबित करने की क्रिया हो रही है।

34. हाइडेगर की 'डेसिन' की संकल्पना के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(a) प्रामाणिक आत्मा 'दे-सेल्फ' है।
(b) अप्रामाणिक आत्मा 'बन्स-सेल्फ' है।
(c) प्रामाणिक आत्मा 'फॉलेन-सेल्फ' है।
(d) अप्रामाणिक आत्मा 'दे-सेल्फ' है।

Ans. (d) हाइडेगर की डेसिन का आशय मानव अस्तित्व से है। इसकी संकल्पना के संदर्भ में डेसिन को अप्रामाणिक आत्मा 'द-सेल्फ' कहा जाता है।

35. तर्कीय प्रत्यक्षवाद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही है?

(a) विश्लेषणात्मक प्रागनुभविक ज्ञान असंभव है।
(b) संश्लेषणात्मक अनुभवाश्रित ज्ञान असंभव है।
(c) संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक ज्ञान असंभव है।
(d) विश्लेषणात्मक अनुभवाश्रित ज्ञान संभव है।

Ans. (c) तर्कीय प्रत्यक्षवादी संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक ज्ञान को असंभव मानते हैं। तर्कीय प्रत्यक्षवादी एयर के अनुसार जब संश्लेषणात्मक ज्ञान की बात की जाती है तो वहां पर मनोवैज्ञानिक आधार होता है तथा जब विश्लेषणात्मक ज्ञान की बात की जाती है तो तार्किक/ध्यातव्य हो कि संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक ज्ञान की संभावना की बात काण्ट ने की थी।

36. यह मत किसने दिया कि ''ईश्वर द्वारा सभी चीज़ों की रचना मंगलकारी रूप में की गई और अमंगल उस मंगल का भ्रष्ट रूप है''?

(a) संत आगस्टॉइन (b) संत ऐन्सेल्म
(c) थॉमस एक्वीनस (d) प्लोटिनस

Ans. (a) संत ऑगस्टाइन के अनुसार 'ईश्वर द्वारा सभी चीजों की रचना मंगलकारी रूप में की गई और अमंगल उस मंगल का भ्रष्ट रूप है।' सृष्टि ईश्वर के संकल्प-स्वातन्त्र्य का परिणाम या अभिव्यक्ति है। प्रत्येक सत् वस्तु शुभ (मंगलकारी) है। अशुभ (अमंगल) शुभ (मंगल) का अभाव है।

37. लॉक के अनुसार, विस्तार और अवधि के प्रत्यक्ष

(a) सरल हैं, इसलिए अप्रत्यक्ष रूप से ज्ञात हैं
(b) जटिल हैं, इसलिए प्रत्यक्ष रूप से ज्ञात हैं
(c) सरल हैं, इसलिए प्रत्यक्ष रूप से ज्ञात हैं
(d) सरल और जटिल दोनों हैं और इनहें जाना नहीं जा सकता है

Ans. (c) सरल है, इसलिए प्रत्यक्ष रूप से ज्ञात है। लॉक के अनुसार सरल प्रत्यय वे हैं जो संवेदन और स्वसंवेदन दोनों से प्राप्त होते हैं। सुगंध, मिठास, शीतलता का स्पर्श, ध्वनि के संवेदन, गति, विराम, आकार, विस्तार, संशय करना, स्मरण करना, चिन्तन करना, सुख-दुःख, शक्ति, सत्ता, एकता, अनुक्रम, अवधि आदि सरल प्रत्यय हैं। सरल प्रत्यय हमारी आत्मा को प्रदत्त है।

38. कांट के अनुसार 'कारणता' है–

(a) प्रागनुभविक संकल्पना (b) वर्णनात्मक विवरण
(c) अनुभबाश्रित संकल्पना (d) विशिष्ट श्रेणी

Ans. (a) काण्ट ने ह्यूम द्वारा प्रतिपादित कारणता की अनुभव-सापेक्ष एवं मनोवैज्ञानिक अवधारणा का खण्डन किया। काण्ट कारण-कार्य नियम को बुद्धि विकल्प कहते हैं। अतः यह स्वरूपतः प्रागनुभविक संकल्पना है। काण्ट इसे अनुभव निरपेक्ष अवधारणा मानता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

39. थेलीज़ दर्शन निम्नलिखित में से एक को छोड़कर सबके साथ सुसंगत है। इसका चयन कीजिए।

(a) पृथ्वी एक सपाट डिस्क है जो जल पर तैरती है
(b) सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जल से घिरा हुआ है
(c) जल ब्रह्माण्ड का आधारभूत स्रोत है
(d) एपियरॉन ब्रह्माण्ड का आधारभूत स्रोत है

Ans. (d) 'एपिरॉन' को ब्रह्माण्ड का आधारभूत स्रोत थेलीज ने नहीं एनैक्जिमेण्डर ने माना है। थेलीज ने जल को आधारभूत स्रोत माना है। उनके अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड जल से घिरा हुआ है तथा पृथ्वी एक सपाट डिस्क है जो जल पर तैरती है। यह ग्रीक दार्शनिक आयोनियन (मिलेटस) सम्प्रदाय का संस्थापक था।

40. निम्नलिखित में से कौन-सा दार्शनिक 'सत्य की इच्छा को शक्ति की इच्छा' के बराबर मानता है?

(a) हाइडेगर (b) विटगेंस्टाइन
(c) नीत्शे (d) पीयर्स

Ans. (c) नीत्शे के अनुसार सभी वस्तुएं 'शक्ति पाने इच्छा की सृष्टि है। उनके अनुसार, 'प्रबलतम या सबसे शक्तिशाली होना विकास का लक्ष्य है।' उनके अनुसार 'विश्व नियत शक्ति कणों से बना है जिनमें मनुष्य भी एक क्षणिक है।' शक्तिशाली जीवन ही अच्छा जीवन है। उसका आदर्श गतिमान है। वह 'मूल्यों के मूल्यानतरण' सिद्धान्त का प्रतिपादक है।

41. यह विचार किसका है–"सम्पूर्ण जीवन और सम्पूर्ण शक्ति की इच्छा से संचालित होते हैं"?

(a) राइल (b) नीत्शे
(c) हुसर्ल (d) विलियम जेम्स

Ans. (b) नीत्शे के अनुसार, 'सम्पूर्ण जीवन और सम्पूर्ण प्रसन्नता शक्ति की इच्छा से संचालित है। नीत्शे शक्ति का तारतम्य मानता है। शक्ति अल्पतम से अधिकतम होती है। शक्ति शून्यता नाम की कोई चीज नहीं है। अधिकतम शक्ति से बढ़कर अनन्त शक्ति है। मनुष्य के पास बुद्धि होने से पशुओं से अधिक शक्ति।

42. विलियम जेम्स के व्यवहारवादी सिद्धांत के आलोक में दिए गए अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए और सही कूट चिह्नित कीजिए–

अभिकथन (A) : जेम्स ने सत्य की सार्वभौमवादी धारणा को अस्वीकृत किया।

तर्क (R) : जेम्स के लिए, 'प्रत्यय में सत्यता घटित होती है'।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं किन्तु (R) (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलती है किन्तु (R) सही है।

Ans. (b) विलियम जेम्स उत्कट अनुभववाद के समर्थक दार्शनिक है। उनमें व्यवहारवादी सिद्धान्त के आलोक में अभिकथन (A) सत्य है और तर्क (R) भी सही है परन्तु (R) (A) की व्याख्या नहीं है।

43. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) प्लेटो	**(i) 'मेटाफिजिक्स'**
(b) अरस्तू	**(ii) 'सिम्पोजियम'**
(c) स्पिनोजा	**(iii) 'एन इंक्वायरी कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैन्डिंग'**
(d) ह्यूम	**(iv) 'इथिक्स'**

(a) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(b) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(iii)
(c) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(i)
(d) (a)-(iii), (b)-(ii), (c)-(i), (d)-(iv)

Ans. (b)

(a) प्लेटो	–	'सिम्पोजियम'
(b) अरस्तू	–	'मेटाफिजिक्स'
(c) स्पिनोजा	–	'इथिक्स'
(d) ह्यूम	–	'एन इंक्वायरी कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंन्डिग

44. पूर्वस्थापित सामंजस्य का सिद्धांत किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया?

(a) बर्कले (b) देकार्त
(c) कांट (d) लाइबनिज़

Ans. (d) लाइबनित्ज़ बुद्धिवादी दार्शनिक हैं जो चिदणुवाद के समर्थक हैं। उन्होंने अपने चिदणुओं की व्याख्या और मन-शरीर के सम्बन्ध की व्याख्या के लिए पूर्वस्थापित सामंजस्य सिद्धान्त का समर्थन किया है। लाइबनित्ज के अनुसार ईश्वर ने परस्पर स्वतंत्र चिदणुओं को इस प्रकार बनाया है कि वह एक दूसरे से स्वतंत्र होते हुए भी एकता के सूत्र में बंधे हुए हैं। यह एकता या सामंजस्य चिदणुओं में ईश्वर ने पहले से स्थापित कर दिया है। यह सार्वभौम पूर्वस्थापित सामंजस्य नियम है।

45. "किसी वस्तु को जाने बिना, मैं स्वयं को जान सकता हूँ।"– यह विचार निम्नलिखित में से किसका है?

(a) बर्कले और लॉक (b) लॉक और ह्यूम
(c) बर्कले और कांट (d) ह्यूम और बर्कले

Ans. (d) अनुभववादी दार्शनिक ह्यूम और बर्कले के अनुसार, "किसी वस्तु को जाने बिना मैं स्वयं को जान सकता हूँ।" लेकिन जहाँ बर्कले आत्मा की सत्ता को मानता है वहीं ह्यूम आत्मा पर संशय करता है।

46. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) वायु ब्रह्माण्ड का आधारभूत स्रोत है	**(i) एम्पेडॉक्लीज़**
(b) संख्या ब्रह्माण्ड का आधारभूत स्रोत है	**(ii) अरस्तू**
(c) चार तत्त्वों का सिद्धांत	**(iii) पाइथागोरस**
(d) ईश्वर अप्रवर्तित प्रवर्तक है	**(iv) एनेक्सीमेनिज़**

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) (iii), (b) (iv), (c) (ii), (d) (i)
(a) (iv), (b) (iii), (c) (i), (d) (ii)
(a) (i), (b) (ii), (c) (iii), (d) (iv)
(a) (iii), (b) (i), (c) (ii), (d) (iv)

Ans. (b)
(a) वायु ब्रह्माण्ड का आधारभूत स्रोत है – एनेक्सीमेनिज
(b) संख्य ब्रह्माण्ड का आधारभूत स्रोत है – पाइथागोरस
(c) चार तत्वों का सिद्धान्त – एम्पेडॉक्लीज
(d) ईश्वर अप्रवर्तित प्रवर्तक है – एनेक्सीमेनिज

47. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। उन पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए–
अभिकथन (A) : पार्मेनाइडीज़ एक एकतत्त्ववादी था।
तर्क (R) : पार्मेनाइडीज़ के अनुसार सत्ता एक, शाश्वत और अविभाज्य है।
कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं किन्तु (R) (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है किन्तु (R) सही है।

Ans. (a) ग्रीक दार्शनिक पार्मेनडरीज सत् का सिद्धान्त प्रतिपादित करता है। वह केवल सत् को ही एकमात्र तत्व मानता था। वह एकतत्त्ववादी दार्शनिक था। उसके अनुसार सत्ता या सत् एक शाश्वत और अविभाज्य है। (A) और (R) दोनों सही हैं, की (R) (A) व्याख्या है।

48. निम्नलिखित में से कौन-सा एक नित्य द्रव्य नहीं है?
(a) परमाणु (b) त्रसरेणु
(c) आकाश (d) मनस

Ans. (b) चूंकि त्रसरेणु परमाणु से ही निर्मित है। अतः परमाणुओं से निर्मित वस्तुएं अनित्य होंगी। परमाणु नित्य हैं। आकाश और मनस भी नित्य सत्ताएं हैं।

49. किस दर्शन का यह विचार है कि द्रव्य और इसके गुण के बीच समवाय संबंध है किंतु हम इसका प्रत्यक्ष नहीं कर सकते हैं?
(a) न्याय (b) वैशेषिक
(c) मीमांसा (d) वेदांत

Ans. (b) वैशेषिक के अनुसार, ''क्रिया गुणवत् समवाय कारण मिति द्रव्य लक्षणम्'। द्रव्य और इसके गुण के बीच समवाय संबंध है किन्तु इसका हम प्रत्यक्ष नहीं कर सकते हैं। गुण, द्रव्य में रहता हो किन्तु 'गुण' का स्वयं कोई गुण नहीं है। गुण गौण रूप से वस्तु में रहकर सहायक होता है।

50. निम्नलिखित अनुमान में किस प्रकार का हेत्वाभास है? सही कूट चुनिए।
(a) साधारण सव्यभिचार (b) स्वरूपासिद्ध
(c) विरुद्ध (d) बाधित

Ans. (b) स्वरूपासिद्ध हेतु वहां होता है जहां आश्रय या पक्ष सत् होता है, किन्तु हेतु अपनी प्रकृति के कारण उसमें असिद्ध होता है। जैसे, शब्द नित्य है, क्योंकि वह चाक्षुष है, जैसे रूप। चाक्षुष होना कान का गुण न होकर आँसू का गुण है।

51. निम्नलिखित में से कौन-सी पद्धति प्रमा की परिभाषा 'तद्वति तत्प्रकारकोऽनुभवों' के रूप में करता है?
(a) बौद्ध (b) न्याय
(c) मीमांसा (d) जैन

Ans. (b) न्याय दर्शन एक वस्तुवादी (यथार्थवादी) प्रमाणमीमांसा प्रस्तुत करता है। न्याय दर्शन ज्ञान को अनुभव कहता है जिसके दो भेद प्रमा और अप्रमा करता है। प्रमा यथार्थ अनुभव है अर्थात् यत्र यदस्ति तत्र तस्यानुभवः प्रमा, तद्वति तत्प्रकारकानुभवो वा।

52. न्याय दर्शन के संदर्भ में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) 'चाय गर्म प्रतीत होती है' प्रत्यक्ष	(i) सामान्यलक्षण
(b) किसी वर्ग के सभी सदस्यों का प्रत्यक्ष करना	(ii) ज्ञानलक्षण प्रत्यक्ष
(c) विगत, वर्तमान और भविष्य की सभी वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण	(iii) निर्विकल्पक प्रत्यक्ष
(d) नाम से असंबद्ध वस्तु का प्रत्यक्षीकरण	(iv) योगज प्रत्यक्ष

(a) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(b) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(iii)
(c) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(ii)
(d) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)

Ans. (b)
(a) 'चाय गर्म प्रतीत होती है' – ज्ञानलक्षण प्रत्यक्ष
(b) किसी वर्ग के सभी सदस्यों का प्रत्यय करना – सामान्यलक्षण प्रत्यक्ष
(c) विगत वर्तमान और भविष्य की सभी वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण – योगज प्रत्यक्ष
(d) नाम से असंबद्ध वस्तु का प्रत्यक्षीकरण – निर्विकल्पक प्रत्यक्ष

53. विज्ञानवादी–बौद्धमत के भ्रम सिद्धांत का नाम है
(a) असत्ख्याति (b) सत्ख्याति
(c) आत्मख्याति (d) अनिर्वचनीय ख्याति

Ans. (c) बौद्ध मत के सम्प्रदायों के भ्रम-सिद्धांत क्रमशः शून्यवाद में असतख्यतिवाद या शून्यताख्यातिवाद या अनिर्वचनीय ख्यातिवाद तथा विज्ञानवाद 'आत्मख्याति' या 'विज्ञानख्यातिवाद' के नाम से जाना जाता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

54. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) सांख्य दर्शन	(i) अप्रामाण्यम् स्वतः है प्रामाण्यम् परतः है।
(b) बौद्ध दर्शन	(ii) प्रामाण्यम् और अप्रामाण्यम् दोनों स्वतः है
(c) न्याय दर्शन	(iii) प्रामाण्यम् स्वतः है अप्रामाण्यम् परतः है
(d) पूर्व मीमांसा दर्शन	(iv) प्रामाण्यम् और अप्रमाण्यम् दोनों परतः हैं।

(a) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(b) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(iii)
(c) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)
(d) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(ii)

Ans. (b)
(a) सांख्य दर्शन – प्रामाण्यम् और अप्रामाण्यम् दोनों स्वतः है।
(b) बौद्ध दर्शन – अप्रमाण्यम् स्वतः और प्रमाण्यम् परतः है।
(c) न्याय दर्शन – प्रामाण्यम् और अप्रामाण्यम् दोनों परतः है।
(d) पूर्व मीमांसा दर्शन – प्रामाण्यम् स्वतः है अप्रामाण्यम् परतः है।

55. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) शांतरक्षित	(i) अन्विताभिधानवाद
(b) प्रभाकर मिश्र	(ii) स्फोटवाद
(c) भर्तृहरि	(iii) अभिहितान्वयवाद
(d) कुमारिल भट्ट	(iv) अपोहवाद

कूट–
(a) (a)-(i), (b)-(iv), (c)-(iii), (d)-(ii)
(b) (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iii)
(c) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(i)
(d) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)

Ans. (b)
(a) शांतरक्षित – अपोहवाद
(b) प्रभाकर मिश्र – अन्विताभिधानवाद
(c) भार्तृहरि – स्फोटवाद
(d) कुमारिल भट्ट – अभिहितान्वयवाद

56. निम्नलिखित में से कौन-सी एक पुनरुक्ति है?
(a) $p \vee p$ (b) $p \supset p$
(c) p.p (d) $p \supset q$

Ans. (b) '$p \supset p$' एक पुनरुक्ति होगा। जिस वाक्याकार के केवल सत्य-प्रतिस्थापन उदाहरण होते हैं, उन्हें पुनर्कथन या पुनरुक्ति कहते हैं। '$p \supset p$' एक पुनरुक्ति है।

57. किसके अनुसार शब्द केवल जाति को निर्दिष्ट करता है?
(a) कुमारिल (b) कणाद
(c) वात्स्यायन (d) धर्मकीर्ति

Ans. (a) कुमारिल के अनुसार शब्द केवल जाति को निर्दिष्ट करता है। कुमारिल का मत अभिहितान्वयवाद है।

58. निम्नलिखित वेदांतियों में से किसके द्वारा अनुप्रमाण और केवल प्रमाण के बीच स्पष्ट भेद किया गया था?
(a) रामानुज (b) निम्बार्क
(c) मध्व (d) शंकर

Ans. (c) माध्वाचार्य उग्र द्वैतवादी वेदान्ती दार्शनिक है। उनके अनुसार 'यथार्थ प्रमाणम्'। जिसके दो अर्थ–केवल प्रमाण और अनु-प्रमाण। केवल प्रमाण को वह यथार्थ ज्ञान तथा उसकी प्राप्ति के साधन को अनुप्रमाण।

59. ज्येष्ठों के व्यवहार से शब्द के अर्थ जानने को कहा जाता है।
(a) आप्तवाक्य (b) प्रसिद्वपदसान्निध्य
(c) विवरण (d) बृद्धव्यवहार

Ans. (d) वृद्धव्यवहार ज्येष्ठों के व्यवहार से शब्द के अर्थ जानने को वृद्धव्यवहार कहा जाता है।

60. वैशेषिक तत्त्वमीमांसा में किस प्रकार का कारण किसी भी तरह से समवाय के संबंध के द्वारा अपने कार्य से संबंधित नहीं है? सही उत्तर चुनिए।
(a) समवाधि और निमित्त
(b) असमवाधि और निमित्त
(c) समवाधि और असमवाधि
(d) मात्र निमित्त

Ans. (d) वैशेषिक तत्त्वमीमांसा में तीन प्रकार के कारण माने गये हैं, समवापिकरण, असमवापिकरण तथ्य निमित्तकरण। जो न तो समवापि कारण है एवं न असमवापिकरण वह निमित्तकरण है। यह कारण किसी भी तरह से समवाय के संबंध द्वारा अपने कार्य से संबंधित नहीं है।

61. निम्नलिखित में से कौन-सा जैनियों के त्रिरत्न में सम्मिलित नहीं है?
(a) सम्यक् ज्ञान (b) सम्यक् कर्मान्त
(c) सम्यक् दर्शन (d) सम्यक् चारित्र

Ans. (b) जैन दर्शन की आचार्यमीमांसा 'त्रिरत्न' को मोक्ष मार्ग माना जाता है। यह है–सम्यक् दर्शन, समयक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र। यह सम्मिलित रूप से मोक्ष के साधन हैं।

62. न्याय के अनुसार गोत्व...........के द्वारा प्रत्यक्ष किया जा सकता है।
(a) संयोग सन्निकर्ष
(b) समवेत समवाय सन्निकर्ष
(c) संयुक्त समवाय
(d) सामान्य लक्षण सन्निकर्ष

Ans. (c) न्याय के अनुसार गोत्व संयुक्त समवाय के द्वारा प्रत्यक्ष किया जा सकता है। जिस सम्बन्ध में संयोग एवं समवाय दोनों की अपेक्षा होती है। चूंकि नैय्यायिक जाति या सामान्य की स्वतन्त्र सत्ता मानकर इसकी व्याख्या करते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

63. निम्नलिखित में से किसने कहा है कि 'गीता की शिक्षा कर्म का त्याग नहीं है अपितु कर्म में त्याग है'?

(a) श्री अरविंद (b) तिलक
(c) एम. हिरिपन्ना (d) राधाकृष्णन्

Ans. (c) एम. हिरिपन्ना के अनुसार 'गीता की शिक्षा कर्म का त्याग नहीं है, अपितु कर्म में त्याग है।'

64. सही क्रम बताने वाला विकल्प चुनिए

(a) मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा
(b) मैत्री, मुदिता, करुणा, उपेक्षा
(c) करुणा, मुदिता, उपेक्षा, मैत्री
(d) मुदिता, करुणा, मैत्री, उपेक्षा

Ans. (a) मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा, क्रमशः। पातंजलि योगसूत्र में श्लोक "मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुख-दुःख पुण्यापुण्यविषयाणां भावनातश्चित्त प्रसादनम्" सुखी व्यक्तियों के प्रति मित्रता की दुःखी व्यक्तियों के प्रति करुणा की सज्जन/पूण्यात्माओं के प्रति मुदिता (खुशी) व पापी व दुष्ट व्यक्तियों के प्रति उपेक्षा की भावना रखने से चित्र एकाग्र होता है।

65. निम्नलिखित में से किसका यह विचार है कि 'भगवद्गीतमात्र कर्ममार्गी' है?

(a) शंकराचार्य (b) रामानुजाचार्य
(c) तिलक (d) विवेकानंद

Ans. (c) बाल गंगाधर तिलक अपने 'भगवद्गीता भाष्य' में यह विचार देते हैं कि 'भगवद्गीता मात्र कर्मभागी' है।

66. निम्नलिखित में से कौन-सी सद् हेतु की विशेषता नहीं है?

(a) पक्षसत्व (b) विपक्षासत्व
(c) पक्षता (d) अबाधितविषयत्व

Ans. (c) न्याय दर्शन में सद्-हेतु में पक्ष सत्व, सपक्षसत्व, विपक्षाऽसत्त्व, असत्प्रतिपक्षत्व और अबाधितविषयत्व पांच गुण होने चाहिए। यदि हेतु में इनमें से किसी भी गुण की त्रुटि हो तो वह हेतु न होकर 'हेत्वभास' हो जाता है।

67. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) प्राकृत संख्याएँ तार्किक संख्याओं से निगमित होती हैं	(i) रसेल
(b) तार्किक परमाणुवाद	(ii) फ्रेगे
(c) तार्किक सिद्धांत	(iii) विट्गेंस्टाइन
(d) अर्थ का प्रयोग सिद्धांत	(iv) स्ट्रॉसन

(a) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(iii)
(b) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(c) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(ii), (d)-(i)
(d) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(ii)

Ans. (a)

(a) प्राकृत संख्याएं तार्किक संख्याओं से निगमित होती है।	–	फ्रेगे
(b) तार्किक परमाणुवाद	–	रसेल
(c) तार्किक सिद्धान्त	–	स्ट्रासन
(d) अर्थ का प्रयोग सिद्धान्त	–	विट्गेंस्टाइन

68. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) फेनोमेनोलॉजी	(i) मैं हूँ और केवल मेरा अस्तित्व है
(b) अहंमात्रवाद	(ii) चिह्न का सिद्धांत
(c) व्यवहारवादी	(iii) प्रमुख संकल्पनाएँ विषयपरक और ज्ञानपरक होती हैं
(d) संकेतविज्ञानवादी	(iv) वाक् क्रिया

(a) (i), (b) (iii), (c) (ii), (d) (iv)
(a) (iii), (b) (i), (c) (iv), (d) (ii)
(a) (iv), (b) (ii), (c) (iii), (d) (i)
(a) (ii), (b) (iii), (c) (i), (d) (iv)

Ans. (b)

(a) फेनोभेनोलॉजी	–	प्रमुख संकल्पनाएं विषयपरक और ज्ञानपरक होती हैं।
(b) अहंमात्रवाद	–	मैं हूँ, और केवल मेरा अस्तित्व है।
(c) व्यवहारवादी	–	बाक्क्रिया
(d) संकेत विज्ञानवादी	–	चिन्ह का सिद्धान्त

69. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है। 'उदारवादी नारीवादी' के आलोक में (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजिए–

अभिकथन (A) : पुरुष और महिलाएँ बराबर हैं।

तर्क (R) : पुरुष और महिलाएँ दोनों ही अनिवार्यतः बौद्धिक प्राणी हैं।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं किन्तु (R) (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है किन्तु (R) सही है।

Ans. (a) 'उदारवादी नारीवाद' में पुरुष और महिलाओं को बराबरी का दर्जा प्राप्त है। इसका कारण पुरुष और महिलाओं दोनों को ही बौद्धिक प्राणी माना जाता है। अतः (A) व (R) सही है तथा (R) (A) की सही व्याख्या है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

70 न्याय-ज्ञानमीमांसा के अनुसार, अधोलिखित में किस प्रकार का अनुमान है?
जो ज्ञेय है वह अभिधेय है
घट ज्ञेय है
∴ यह अभिधेय है।
(a) पूर्ववत्   (b) शेषवत्
(c) केवलान्वयी   (d) केवल-व्यतिरेकी

Ans. (c) केवलान्वयी व्याप्ति के प्रकार भेद से अनुमान भी त्रिविध होता है। केवलान्वयी अनुमान वहां होता है जहां केवल अन्वय व्याप्ति हो। प्रस्तुत अनुमान में केवल अन्वय व्याप्ति का सहारा लिया गया है। अतः यहां पर केवलन्वयी अनुमान होगा।

71. ''तुम्हारा मन प्रत्यय के रूप में प्राप्त द्रव्य की इकाई है, और शरीर विस्तार के रूप में प्राप्त द्रव्य की इकाई है'' –वह दृष्टिकोण किसका है?
(a) देकार्त   (b) स्पिनोजा
(c) लॉक   (d) बर्कले

Ans. (b) स्पिनोजा ने द्रव्य के दो गुण बताएं हैं–प्रत्यय या विचार तथा विस्तार। उनके अनुसार, तुम्हारा मन प्रतयय के रूप में प्राप्त द्रव्य की इकाई है, और शरीर विस्तार के रूप में प्राप्त द्रव्य की इकाई है।

72. निम्नलिखित दार्शनिकों में से कौन-सा दार्शनिक प्रत्यक्ष को गतिशील द्रव्य से निःसृत मानता है?
(a) बर्कले   (b) ह्यूम
(c) हॉब्स   (d) देकार्त

Ans. (c) हॉब्स गतिशील द्रव्य से प्रत्यक्ष को निःसृत मानता है।

73. सत्यता के सहभागिता सिद्धांत के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही है?
(a) वास्तविक स्थिति सही कथनों के समनुरूप नहीं होती है।
(b) सही कथन वास्तविक स्थिति के समनुरूप होते हैं।
(c) सही कथन वास्तविक स्थिति के समनुरूप नहीं होते हैं।
(d) सही कथन उनकी स्वयं की अर्थविषयक संरचनाओं के सत्य के समनुरूप होते हैं।

Ans. (b) वस्तुवादियों ने सत्यता के सहभागिता सिद्धान्त (सुसंगति सिद्धान्त) का समर्थन किया है। यदि कोई निर्वाध सत्ता का संवादी होता है, तो वह सत्य होगा। अर्थात् सही/सत्य कथन वास्तविक स्थिति के समनुरूप होते हैं। प्लेटो, लॉक आदि इस सिद्धान्त का प्रयोग करते हैं।

74. कर्म के सिद्धांत का अर्थ है।
(a) वैदिक संस्कार का सिद्धांत
(b) निष्कामकर्म का सिद्धांत
(c) अदृष्टवाद
(d) नैतिक कारणता का सिद्धांत

Ans. (d) कर्म के सिद्धान्त का अर्थ भारतीय दर्शन में नैतिक कारणता का सिद्धान्त है। भारतीय दर्शन की मान्यता है कि मनुष्य द्वारा किये गये कर्मों का फल अवश्य मिलता है। जैसा जिसका कर्म रहेगा उसका वैसा ही परिणाम मिलेगा। वर्तमान जन्म पूर्व जन्म के कर्मों के कारण ही है।

75. बौद्ध धर्म में अनात्मवाद का क्या अर्थ है?
(a) आत्मा शरीर से भिन्न है
(b) आत्मा मन नहीं है
(c) मृत्यु के बाद कोई आत्मा नहीं होती
(d) आत्मा स्कंधों का समुच्चय है

Ans. (d) बौद्ध धर्म में शाश्वत आत्मा के अस्तित्व का निषेध किया गया है और प्रतिक्षण परिवर्तनशील माना गया है। बौद्ध धर्म को आत्मा का सिद्धान्त 'अनात्मवाद' कहलाता है। अनात्मवाद के अनुसार, 'आत्मा स्कंधों का समुच्चय है।'

76. कान्ट के नैतिक सूत्रों के आलोक में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट चिह्नित कीजिए–
(i) उसी सूत्र के अनुसार कार्य कीजिए जिसे आप तत्क्षण संकल्प द्वारा सामान्य नियम के रूप में प्रस्तुत कर सकें।
(ii) इस प्रकार आचरण कीजिए कि मानवता चाहे आप में हो अथवा किसी अन्य के व्यक्तित्व में, सदैव साध्य रूप में सम्मानित हो, साधन रूप में नहीं।
(iii) इस प्रकार आचरण कीजिए कि साध्यों के साम्राज्य की आप सदस्यता ग्रहण कर सकें।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए
कूट–
(a) केवल (i) सही है
(b) केवल (ii) सही है
(c) केवल (i) और (ii) सही है
(d) सभी (i), (ii) और (iii) सही हैं

Ans. (d) काण्ट अपनी पुस्तक 'क्रिटिक ऑफ प्रेक्टिकल रीजन' में नैतिकता पांच सूत्र बताता है जो ये हैं–सार्वभौमविधान का सूत्र, प्रकृति विधान का सूत्र, स्वयं साध्य का सूत्र, स्वतंत्रता का सूत्र तथा साध्यों के राज्य का सूत्र/उपर्युक्त (i), (ii) और (iii) तीनों इन्हीं से सम्बन्धित हैं। इन्हें काण्ट अहैतुक या निरपेक्ष आदेश कहता है।

77. निम्नलिखित में से कौन-सा सिद्धांत नैतिक निर्णय को विषय के अनुमोदन और निरनुमोदन की अभिव्यक्ति के रूप में मानता है?
(a) नैतिक वस्तुनिष्ठवाद   (b) नैतिक विषयनिष्ठवाद
(c) नैतिक प्रकृतिवाद   (d) नैतिक सापेक्षवाद

Ans. (b) नैतिक विषयिनिष्ठ वाद (Subjectism) नैतिक निर्णय को विषय के अनुमोहन और निरनुमोदन की अभिव्यक्ति के रूप में मानता है।

78. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) कान्ट	(i) फाउन्डेशन्स ऑफ एथिक्स
(b) इंविंग	(ii) एथिक्स एंड लैंग्वेज

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) रॉस **(iii) द मेटाफिजिक्स ऑफ मोरल्स**
(d) स्टीवेन्सन **(iv) सेकंड थॉट्स इन मोरल फिलॉसोफी**

(a) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iv)
(b) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(i)
(c) (a)-(ii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(iii)
(d) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(i), (d)-(iii)

Ans. (b)

(a) काण्ट	–	द मेटाफिजिक्स ऑफ मोरल्स
(b) ईविंग	–	सेकण्ड थॉट्स इन मोरल फिलासोफी
(c) रॉस	–	फाउण्डेशन्स ऑफ एथिक्स
(d) स्टीवेन्सन	–	एथिक्स एवं लैंग्वेज।

79. निम्नलिखित में से कौन इस विचार का समर्थक है कि ''मानव और प्रत्येक बौद्धिक प्राणी की गरिमा का आधार स्वायत्तता है''?
(a) हॉब्स (b) स्पेन्सर
(c) कान्ट (d) बेन्थम

Ans. (c) काण्ट अपने नैतिक विचारों के आलोक में कहता है कि ''मानव और प्रत्येक बौद्धिक प्राणी की गरिमा का आधार स्वायत्तता है।'' काण्ट 'संकल्प की स्वतंत्रता' को एक पूर्वमान्यता के रूप में मानता है। यह स्वायत्ता तभी सम्भव है जब मनुष्य अपने स्वतंत्र-संकल्प से कार्य करे।

80. निम्नलिखित में से कौन-सा दंड के निरोधात्मक सिद्धांत के उद्देश्य के संबंध में सत्य है?
(a) अपराधी को अपराध करने तथा दूसरों को भी अपराध करने से रोकना
(b) अपराध के द्वारा गड़बड़ हो गए नैतिक व्यवस्था के पुनर्स्थापन और सामाजिक एकजुटता को सुदृढ़ करना
(c) अपराधी को पुनः अपराध करने के लिए अनुमति देना
(d) अपराधी को कानून का पालन करने वाला नागरिक बनाना

Ans. (a) दण्ड के तीन सिद्धान्त-प्रतिरोधात्मक या निरोधात्मक, सुधारात्मक तथा प्रतिकारात्मक सिद्धान्त। निरोधात्मक सिद्धान्त का उद्देश्य 'अपराधी को अपराध करने तथा दूसरों को भी अपराध करने से रोकना' है।

81. निम्नलिखित में से किसका यह विचार है कि ''नैतिकता राज्य के कानून के आज्ञापालन में है''?
(a) बेन्थम (b) मिल
(c) हॉब्स (d) स्पेन्सर

Ans. (c) हॉब्स 'मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद' के प्रमुख समर्थक हैं। उनके अनुसार, ''नैतिकता राज्य के कानून के आज्ञापालन में है।'' यह स्वयं के हित में है।

82. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) कान्ट	(i) आदर्श आत्मा नैतिक उत्तरदायित्व का स्रोत है।
(b) टी.एच. ग्रीन	(ii) ईश्वर नैतिक उत्तरदायित्व का स्रोत है।
(c) मार्टिनो	(iii) सभी नैतिकता का चरम स्रोत और उत्तरदायित्व का आधार दुःख है जो कर्त्तव्य के उल्लंघन का अनुवर्ती है।
(d) जे.एस. मिल	(iv) व्यावहारिक बुद्धि नैतिक उत्तरदायित्व का सच्चा स्रोत है।

(a) (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iii)
(b) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(iii)
(c) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(ii)
(d) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)

Ans. (a)

(a) काण्ट के अनुसार	–	व्यावहारिक बुद्धि नैतिक उत्तरदायित्व का सच्चा स्रोत है।
(b) टी.एच. ग्रीन	–	आदर्श आत्मा नैतिक उत्तरदायित्व का स्रोत है।
(c) मार्टिना	–	ईश्वर नैतिक उत्तरदायित्व का स्रोत है।
(d) जे.एस. मिल	–	सभी नैतिकता का चरम स्रोत और उत्तरदायित्व का आधार दुःख है जो कर्त्तव्य के उल्लंघन का अनुवर्ती है।

83. निम्नलिखित में से यह विचार किसका है कि नैतिक नियमों के ज्ञान व्यावहारिक बुद्धि के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं?
(a) कान्ट (b) हाचिसन
(c) क्लार्क (d) मार्टिनो

Ans. (a) काण्ट के अनुसार नैतिक नियमों के ज्ञान व्यावहारिक बुद्धि के माध्यम से प्राप्त किये जाते हैं। काण्ट ने तीन पुस्तकें 'क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन', 'क्रिटिक ऑफ जजमेण्ट', 'क्रिटिक ऑफ प्रक्टिकल रीजन' लिखी है जो क्रमशः ज्ञानमीमांसा, सौंदर्यमीमांसा तथा नीतिमीमांसा से सम्बन्धित है।

84. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। गाँधी के आलोक में (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट चुनिए–
अभिकथन (A) : यदि हम साधन का ध्यान रखें तो हम निश्चित रूप से साध्य पर पहुँचेंगे।
तर्क (R) : साधन साध्य का औचित्य सिद्ध करता है।
कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) की सही व्याख्या है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(b) (A) और (R) दोनों सही हैं किन्तु (R) (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है किन्तु (R) सही है।

Ans. (a) गाँधी अपने दर्शन में साध्य के अलावा साधन की शुद्धता पर ज्यादा जोर देते हैं उनके अनुसार यदि हम साधन की उचितता पर ध्यान दें तो हम निश्चित रूप से साध्य पर पहुँच जायेंगे क्योंकि यदि साधन पवित्र नहीं है तो साध्य का कोई औचित्य नहीं। अतः (A) और (R) दोनों सही है तथा (R) (A) की व्यख्या है।

85. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I (लेखन)	सूची-II (लेखक)
(a) द सीक्रेट्स ऑफ द सेल्फ	(i) टैगोर
(b) द फ्लाइट ऑफ द ईगल	(ii) राधाकृष्णन्
(c) क्राइसिस इन सिविलाइजेशन	(iii) इकबाल
(d) द रेन ऑफ रिलीजन इन कन्टेम्पररी फिलॉसोफी	(iv) जे. कृष्णमूर्ति

(a) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(iii)
(b) (a)-(iii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(ii)
(c) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iv), (d)-(iii)
(d) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(i), (d)-(ii)

Ans. (b)

(a) द सीक्रेट ऑफ सेल्फ	–	इकबाल
(b) द फ्लाइट ऑफ द ईगल	–	जे. कृष्णमूर्ति
(c) क्राइसिस इन सिविलाइजेशन	–	टैगोर
(d) द रेन ऑफ रिलीजन इन कटेम्परी फिलॉसफी	–	राधाकृष्णन

86. बौद्ध मत के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा दुःख का तात्कालिक पूर्ववर्ती कारण है?

(a) भव (b) अविद्या
(c) संस्कार (d) जाति

Ans. (d) गौतम बुद्ध के अनुसार, दुःख का कारण है। इसके लिए उनका कारणता सिद्धांत 'प्रतीत्यसमुत्पाद' कहलाता है। दुःखों के कारण की खोज की प्रक्रिया में बारह कड़ियों वाली एक लम्बी शृंखला की खोज किया जिसकी अन्तिम कड़ी अविद्या है जो मूलभूत कारण है। परन्तु समस्त दुःखों का सांकेतिक रूप 'जरा-मरण' को माना है जिसका तात्कालिक पूर्ववर्ती कारण 'जाति' अर्थात् जन्म लेना है।

87. निम्नलिखित दार्शनिकों में से किसका विचार है कि ''चिरस्थायी और अंतिम मानव अधिकारों का कोई भी एक अपरिवर्तनशील सेट नहीं हो सकता क्योंकि मानव स्वभाव में निरंतर परिवर्तन होता है''?

(a) लॉक (b) रूसो
(c) हॉब्स (d) ह्यूम

Ans. (b) रूसो के अनुसार, ''चिरस्थायी और अंतिम मानव अधिकारों का कोई भी एक अपरिवर्तनशील समुच्चय (सेठ) नहीं हो सकता क्योंकि मानव स्वभाव में निरन्तर परिवर्तन होता है।''

88. पॉपर के आगमन की समस्या के समाधान के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट को चिन्हित कीजिए–

(i) आगमन की कोई बौद्धिक रूप से तर्कसंगत पद्धति नहीं है।
(ii) आगमन की कोई विश्वसनीय पद्धति नहीं है।
(iii) आगमन की एक विश्वसनीय पद्धति नहीं है।
उपर्युक्त में कौन-से कथन सही हैं?
नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर को चुनिए–

(a) केवल (i) सही है
(b) केवल (i) और (ii) सही हैं
(c) केवल (ii) सही है
(d) केवल (ii) और (iii) सही हैं

Ans. (b) कार्ल आर. पॉपर मिथ्याकरण सिद्धान्त में विश्वास करते हैं। उनके अनुसार, आगमन की समस्या के समाधान के सन्दर्भ में आगमन की कोई बौद्धिक रूप से तर्कसंगत पद्धति नहीं है और आगमन की कोई विश्वसनीय पद्धति नहीं है।

89. मध्व वेदांत में स्वातंत्र्य का अर्थ है–

(a) जीव, ईश्वर से पूर्णतया स्वतंत्र है।
(b) जीव अपनी सत्ता (अस्तित्व), ज्ञान और प्रवृत्ति (क्रिया) के संबंध में ईश्वर पर निर्भर है।
(c) जीव ईश्वर के साथ प्रतिस्पर्धी है।
(d) जीव ईश्वर के साथ एकरूप है।

Ans. (b) मध्व-वेदान्त द्वैतवाद को मानता है। मध्व वेदान्त में स्वतंत्रता का अर्थ जीव अपनी सत्ता (अस्तित्व), ज्ञान और प्रवृत्ति (क्रिया) के संबंध में ईश्वर पर निर्भर है।

90. यदि E, F, और G सत्य कथन हैं तथा M और N असत्य कथन हैं, निम्नलिखित में से कौन-सा असत्य है?

(a) $\sim(E.M) \vee (F.N)$
(b) $(G.N) \vee (F \vee M)$
(c) $(E \vee G) . (M \vee F)$
(d) $\sim [F.G) \vee \sim (E.N)]$

Ans. (d) $\sim [F.G) \vee \sim (E.N)]$ असत्य है।

91. ''तर्कवाक्यीय फलन के किसी भी सत्य प्रतिस्थापन उदाहरण से हम वैध रूप से उस तर्कवाक्यीय फलन के सत्तात्मक परिमाण को निगमित कर सकते हैं।'' नियम को पहचानिए।

(a) सार्वभौमिक उदाहरणीकरण
(b) सत्तात्मक सामान्यीकरण
(c) सत्तात्मक उदाहरणीकरण
(d) सार्वभौमिक सामान्यीकरण

Ans. (b) ''तर्कवाक्यीय फलन के किसी भी सत्य प्रतिस्थापन उदाहरण से हम वैध रूप से उस तर्कवाक्यीय लन के सत्तात्मक परिमाण को निगमित कर सकते हैं।''

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

92. यदि तर्कवाक्य 'सभी मनुष्य मरणशील है' सत्य है, तो तर्कवाक्य 'कुछ मनुष्य मरणशील नहीं है' का सत्यता मूल्य क्या है?

(a) सत्य (b) असत्य
(c) अभी तक अनिश्चित (d) न तो सत्य न ही असत्य

Ans. (b) सभी मनुष्य मरणशील है, एक सकारात्मक कथन है और इसका निषेधात्मक कथन 'सभी मनुष्य मरणशील नहीं हैं।' यदि सकारात्मक कथन सत्य होता है तो निषेधात्मक कथन असत्य होगा।

93. निम्नलिखित में से किसके विचार से 'प्रत्यक्ष' की परिभाषा–'इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पनं ज्ञानं अव्यपदेश्यम् अव्यभिचारी व्यवसायात्मकम्' है?

(a) धर्मकीर्ति (b) गौतम
(c) कुमारिल (d) उदयन

Ans. (b) न्याय के प्रवर्तक आचार्य गौतम के अनुसार 'प्रत्यक्ष' की परिभाषा, 'इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पनं ज्ञानं अव्यपदेश्यम् व्याभिचारी व्यवसायात्मकम्'। यह वस्तुवाद के समर्थक हैं।

94. एक युक्ति आकार अवैध है यदि और मात्र यदि–

(a) इसमें सत्य आधार वाक्य और असत्य निष्कर्ष के साथ कोई प्रतिस्थापन उदाहरण नहीं है।
(b) इसमें सत्य आधार वाक्य और असत्य निष्कर्ष के साथ प्रतिस्थापन उदाहरण हैं।
(c) इसमें असत्य आधार वाक्य और सत्य निष्कर्ष के साथ प्रतिस्थापन उदाहरण नहीं हैं।
(d) इसमें असत्य आधार वाक्यों और सत्य निष्कर्ष के साथ प्रतिस्थापन उदाहरण हैं।

Ans. (b) एक युक्ति आकार अवैध है यदि और मात्र यदि इसमें सत्य और सत्य आधार वाक्य और असत्य निष्कर्ष के साथ प्रतिस्थापन उदाहरण थे।

95. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I (तर्कशास्त्रीय समतुल्यता का नाम)		सूची-II (तर्कीय समतुल्यता का आकार)
(a) कम्प्यूटेशन	(i)	$(p \supset q) \equiv (\sim q \supset \sim p)$
(b) डिस्ट्रिब्यूशन	(ii)	$(p \vee q) \equiv (q \vee p)$
(c) ट्रांसपोजिशन	(iii)	$(p \vee \supset q) \equiv (\sim p \vee q)$
(d) मेटीरियल इम्पलीकेशन	(iv)	$[p.(q \vee r)] \equiv [(p.q) \vee (q.r)]$

कूट–

(a) (a)-(ii), (b)-(i), (c)-(iii), (d)-(iv)
(b) (a)-(i), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(ii)
(c) (a)-(ii), (b)-(iii), (c)-(iv), (d)-(i)
(d) (a)-(ii), (b)-(iv), (c)-(i), (d)-(iii)

Ans. (d)

(a) कम्प्यूटेशन	–	$(p \vee q) \equiv (q \vee p)$
(b) डिस्ट्रीब्यूशन	–	$[p.(q \vee r)] \equiv [(p.q) \vee (q.r)]$
(c) ट्रांसपोजिशन	–	$(p \vee \supset q) \equiv (\sim p \vee q)$
(d) मेटीरियल इम्पलीकेशन	–	$(p \supset q) \equiv (\sim p \vee q)$

96. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर को चुनिए–

सूची-I	सूची-II
(a) बोकार्डो	(i) तीसरी आकृति
(b) फ्रेसिसन	(ii) पहली आकृति
(c) फरियो	(iii) चौथी आकृति
(d) सिज़ैर	(iv) दूसरी आकृति

कूट–

(a) (a)-(iii), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iv)
(b) (a)-(i), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(iv)
(c) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iv), (d)-(iii)
(d) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)

Ans. (a)

बोकार्डो	–	तीसरी आकृति
फ्रेसिसन	–	चौथी आकृति
फेरियो	–	पहली आकृति
सिज़ैर	–	दूसरी आकृति

97. सत्य ....का एक गुण है।

(a) तर्कवाक्य (b) युक्ति
(c) शब्द (d) वाक्य

Ans. (a) सत्य 'तर्कवाक्य' का एक गुण है। तर्क वाक्य में तीन पर होते हैं–उद्देश्य, विधेय और संयोजक।

98. निम्नलिखित प्रतीकात्मक रूपों में से कौन-सा तादात्म्य के सिद्धांत को सही-सही निरूपित करता है?

(a) $p. \sim p$ (b) $p \vee \sim p$
(c) $p \supset p$ (d) $p \supset \sim p$

Ans. (c) '$p \supset p$' तादाम्य के सिद्धान्त को सही सही निरुपित करता है।

99. निम्नलिखित युक्ति-रूपों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए कूट से इसमें सम्मिलित अनुमान के नियम को चिह्नित कीजिए–

कूट–

(a) हाइपोथेटिकल सिलोजिज़्म
(b) मोडस टॉलेन्स
(c) डिस्जन्कटिव सिलोजिज़्म
(d) कन्स्ट्रक्टिव डायलेमा

Ans. (d) यह युक्ति रूप एक कन्स्ट्रक्टिव डायलेमा है।

100. निम्नलिखित में से कौन-सा सोपाधिक है?

(a) संयोजन (b) वियोजन
(c) आपदन (d) निषेध

Ans. (c) सोपाधिक कथन वे कथन होते हैं जो कारण-कार्य से सम्बन्धित होते हैं। 'आपदन' सोपाधिक कथन हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जुलाई-2018
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

नोट : इस प्रश्नपत्र में सौ (100) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनवार्य हैं।

1. न्याय के अनुसार वृत्ति किसके बीच का सम्बन्ध है?
(a) दो पदा (b) दो पदार्थो
(c) पद एवं पदार्थ (d) पद एवं वाक्य

Ans. (c) : 'वृत्ति'-पद में रहने वाला वह सामर्थ्य जिससे पद, पदार्थ की अभिव्यक्ति का प्रतिपादन करता है, 'वृत्ति' है। भारतीय दर्शन, डॉ. नन्द किशोर देवराज।

2. न्याय के अनुसार, चाक्षुष इंद्रिय की वस्तुएँ स्पर्शेन्द्रिय की वस्तुएं भी होती हैं सिवाय:
(a) केवल रूप (b) केवल रूपत्व
(c) रूप और रूपत्व दोनों (d) रूप और स्पर्श दोनों

Ans. (c) : जिन वस्तुओं को हम अपने चक्षुओं (आंख) से देख सकते हैं वो साकार होती है अतः जब उनका स्पर्श होता है तो उनका प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है, परन्तु चाक्षुष के समान क्षमता न होने के कारण उनके रूप और रूपत्व का ज्ञान नहीं होता है। केवल हम स्पर्शेन्द्रिय के द्वारा उनकी उपस्थित का प्रत्यक्ष कर सकते हैं।

3. निम्नलिखित अनुमान में किस प्रकार का हेत्वाभास है? निम्नलिखित में से सही कूट का चयन कीजिए: मृण्मयः पर्वतः बह्निमान
(a) असाधारण सव्यभिचार (b) स्वरूपसिद्ध हेत्वाभास
(c) आश्रयसिद्ध हेत्वाभास (d) विरुद्ध

Ans. (c) : पक्ष हेतु का आश्रय होता है लेकिन जब पक्ष ही असत् हो तो हेतु उसमें नहीं रह सकता। यहाँ 'मृण्मयः पर्वतः बह्निमान' में पक्ष 'मृण्मयः पर्वतः' आश्रय है जो सर्वथा असत् है।
(भारतीय दर्शन, आलोचन और अनुशीलन, चन्द्रधर शर्मा)

4. न्याय के अनुसार घट में पटाभाव किस प्रकार का सन्निकर्ष है?
(a) संयोग (b) संयुक्त समवाय
(c) समवाय (d) विशेषणता

Ans. (d) : प्रत्यक्षज्ञान का जनक इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष छह प्रकार का होता है। न्याय के अनुसार अभाव के प्रत्यक्ष में विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष होते हैं। अतः घट में पटाभाव का भी सन्निकर्ष विशेषण विशेष्यभाव अर्थात् विशेषणता का सन्निकर्ष है।

5. वैशेषिक दर्शन में ईश्वर जगत का किस प्रकार का कारण है?
(a) समवायी कारण (b) असमवायी कारण
(c) उपादान कारण (d) निमित्तकारण

Ans. (d) 'वैशेषिक के अनुसार, वेद ईश्वर-वाक्य है। ईश्वर नित्य, सर्वज्ञ, पूर्ण है। ईश्वर अचेतन अदृष्ट के सञ्चालक है। ईश्वर इस जगत के निमित्तकारण और परमाणु उपादान कारण है। ईश्वर का कार्य सर्ग के समय अदृष्ट से गति लेकर परमाणुओं में आद्यस्पन्दन के रूप में सञ्चरित कर देना और प्रत्यय के समय इस गति का अवरोध करके वापस अदृष्ट में संक्रमित कर देना है।
(भारतीय दर्शन, आ. और अनु., C.D. Sharma)

6. निम्नलिखित में से कौन वैशेषिक दर्शन के अनुकूल नहीं है?
(a) प्रत्यक्ष प्रमाण है (b) अनुमान प्रमाण है
(c) शब्द प्रमाण है (d) शब्द स्वतंत्र प्रमाण है

Ans. (d) : शब्द स्वतंत्र प्रमाण है।
यह वैशेषिक दर्शन के अनुकूल नहीं है क्योंकि वैशेषिक दर्शन में दो ही स्वतंत्र प्रमाण माने गये हैं, प्रत्यक्ष और अनुमान। शब्द और उपमान को अनुमान के अन्तर्गत रखा गया है।

7. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिये गये हैं। उन पर विचार कीजिए और चार्वाक दर्शन के संदर्भ में सही कूट का चयन कीजिये।
(A) प्रत्यक्ष एकमात्र प्रमाण है।
(R) अनुमान प्रमाण नहीं है।
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है और (R) सत्य है।

Ans. (b): चार्वाक दर्शन में केवल इन्द्रिय और अर्थ के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्ष माना गया है। अतः यह प्रत्यक्ष एकमात्र प्रमाण है 'और' अनुमान प्रमाण नहीं है सत्य है। परन्तु यह कथन अनुमान प्रमाण नहीं है' 'प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण' कहीं से भी सिद्ध नहीं करता।
(भारतीय दर्शन, नन्द किशोर देवीराज)

8. यह विचार कि ईश्वर एक प्रकार की आत्मा है, किसके द्वारा स्वीकृत है?
(a) केवल चार्वाक दर्शन द्वारा
(b) केवल वैशेषिक दर्शन द्वारा
(c) केवल न्याय दर्शन द्वारा
(d) न्याय और वैशेषिक दर्शन द्वारा

Ans. (d) : न्याय और वैशेषिक दर्शन में ईश्वर को परम-आत्मा माना गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

9. जब शब्द की लक्षणा अपने शक्यार्थ का पूरी तरह त्याग कर देती है तो न्याय प्रमाणमीमांसा में उस लक्षणा को कहते हैं:

(a) जहत् लक्षणा (b) व्यंजना
(c) अजहदलक्षणा (d) जहदजहदलक्षणा

Ans. (a) : लक्ष्यार्थ के शक्यार्थ से पूर्णतया भिन्न होने पर (त्याग दिये जाने पर) जहत् -लक्षणा; लक्ष्यार्थ में शक्यार्थ का समावेश होने पर अजहदलक्षणा; लक्ष्यार्थ में शक्यार्थ के किसी भाग का समावेश होने पर जहत् -अजहत् -लक्षणा होती है। इस प्रकार लक्षणा तीन प्रकार की होती है।

10. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिये गये हैं। उन पर विचार कीजिये और नीचे दिये कूट से सही विकल्प का चयन कीजिये।

(A) परमाणु की सत्ता अवश्य स्वीकार की जानी चाहिये।
(R) द्वयणुक सावयव है।

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) का सही आधार है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) का सही आधार नहीं है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है और (R) सही है।

Ans. (a)

11. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही विकल्प का चयन कीजिये:

सूची - I	सूची - II
(a) प्रत्यक्षम् कल्पनापोढम् नामजात्याद्यसंयुक्तम्	(i) धर्मकीर्ति
(b) ज्ञानाकरणकम् ज्ञानम् प्रत्यक्षम्	(ii) दिङ्नाग
(c) इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नम् ज्ञानम् अव्यपदेशम्	(iii) गंगेश
(d) प्रत्यक्षं कल्पनापोढम् अभ्रान्तम्	(iv) गौतम

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(iv	(iii)	(i)
(c)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(d)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)

Ans. (c) :
(a) प्रत्यक्षम् कल्पनापोढम् नामजात्याद्यसंयुक्तम् (बौद्ध दर्शन) - (ii) दिङ्नाग
(b) ज्ञानाकरणकम् ज्ञानम् प्रत्यक्षम् (न्याय दर्शन) - (iii) गंगेश
(c) इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नम ज्ञानम अव्ययदेश्यम् अव्यभिचारी व्यावसायात्मिकम् प्रत्यक्षम् (न्याय दर्शन) - (iv) गौतम
(d) प्रत्यक्षं कल्पनापोढम अभ्रान्तम् (बौद्ध दर्शन) - (i) धर्मकीर्ति

12. वैशेषिक दर्शन के अनुसार आकाश है:

(a) केवल एक (b) केवल विभु
(c) केवल नित्य (d) एक,विभु और नित्य

Ans. (d) : वैशेषिक पांच महाभूत-पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश मानता है। जिनमें प्रथम चार नित्य परमाणु रूप है। पांचवां महाभूत आकाश है जो परमाणुरूप नहीं है, किन्तु विभु या व्यापक, नित्य और एक है। जिसका गुण शब्द है। आकाश एक भौतिक द्रव्य भी है।

(भारतीय दर्शन-आ. और अनु. -चन्द्रधर शर्मा)

13. न्याय दर्शन के अनुसार मोक्षावस्था में आत्मा रहित है:

(a) केवल दुःख (b) केवल सुख
(c) केवल चैतन्य (d) दुःख, सुख और चैतन्य

Ans.(d) : न्याय दर्शन में आत्मा को एक अचेतन द्रव्य माना गया है तथा ज्ञान, सुख, दुःख आदि उसका आगन्तुक धर्म है। अतः मोक्ष भी अवस्था में आत्मा अपने स्वरूपावस्था में स्थापित हो जाती है। अर्थात् अचेतन आत्मा द्रव्यमात्र रहता है और उसमें नौ गुणों का अभाव हो जाता है-बुद्धि, इच्छा, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, द्वेष, संस्कार, सुख-दुःख आदि।

14. नैयायिकों के अनुसार, आत्मा हो सकती है:

(a) केवल ज्ञाता (b) केवल ज्ञात
(c) केवल ज्ञान (d) ज्ञाता और ज्ञात

Ans. (d) : न्याय दर्शन में आत्मा को ज्ञाता, कर्ता एवं भोक्ता माना गया है। न्याय दर्शन के अनुसार आत्मा एक अभौतिक द्रव्य है जिसमें छह गुण हैं-इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान। अपने ज्ञान गुण के कारण आत्मा 'ज्ञात' (Known) भी है। आत्मा का ज्ञान इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख के अनुमान के आधार पर होता है। परन्तु नय नैयायिक मानस प्रत्यक्ष के आधार पर आत्मा के ज्ञान की बात करते हैं।

(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा-राममूर्ति पाठक)

15. वैशेषिकों के अनुसार, पट के रंग के संदर्भ में तंतु का रंग किस प्रकार का कारण है?

(a) समवायी (b) असमवायी
(c) निमित्त (d) उपादान

Ans. (b) : न्याय-वैशेषिक में कारण के तीन भेद माने गये हैं-समवायी, असमवायी और निमित्त कारण। वह द्रव्य जिससे कार्य उत्पन्न होता है, समवायीकरण है। जैसे - मिट्टी से घड़ा, तन्तुओं से पट्। जो समवायीकरण से निकट सम्बन्ध रखता है तथा जिसमें कारण का सामान्य लक्षण भी घटित होता है, वह असमवायीकरण है। यह वह गुण या कर्म है जो समवायीकरण में समवाय संबंध से रहते हुए कार्योत्पत्ति में सहायक होने के कारण है। 'तन्तु-संयोग' और 'तंतु का रंग' क्रमशः 'पट्' और 'पट्' के रंग की उत्पत्ति में सहायक है और समवाय संबंध से उसमें (पट्, कार्य में) विद्यमान रहते हैं। अतः पट् के रंग मं 'तन्तु का रंग' 'असमवायी' कारण है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

16. निम्नलिखित अनुमान में किस प्रकार का हेत्वाभास है? निम्नलिखित में से सही कूट का चयन कीजिये : वह्नि अनुष्ण, द्रव्यत्वात्

(a) आश्रयासिद्ध (b) बाधित
(c) विरुद्ध (d) सत्प्रतिपक्ष

Ans. (b) : जिस अनुमान में हेतु अबाधित विषय नहीं होता उसे बाधित हेतु कहते हैं। इसमें हेतु द्वारा प्रतिपादित साध्य प्रत्यक्ष आदि प्रबलतर अनुमानेतर प्रमाणों द्वारा बाधित होता है। वह्नि अनुष्णु, द्रव्यत्वात् में वृद्धि की अनुष्णता (शीतलता) का खण्डन प्रत्यक्ष द्वारा हो जाता है जो अनुमानेतर प्रमाण है। अतः इसमें बाधित हेत्वाभास है।

17. सूची - I सूची - II से सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही विकल्प का चयन कीजिये:

सूची - I	सूची - II
(a) पूर्व-मीमांस	(i) सदसद विलक्षण
(b) अद्वैत वेदान्त	(ii) अपृथक् सिद्धि
(c) द्वैत वेदान्त	(iii) पराधीन विशेषाप्ति
(d) विशिष्टाद्वैत वेदान्त	(iv) जातिशक्तिवाद

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(b)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(c)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(d)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

Ans. (b) :

(a) पूर्वमीमांसा	(iv) जातिशक्तिवाद
(b) अद्वैत वेदान्त	(iv) सदसद विलक्षण
(c) द्वैत वेदान्त	(iv) पराधीन विशेषाप्ति
(d) विशिष्टाद्वैत	(iv) अपृथक् सिद्धि

18. अधोलिखित में से कौन-सा कथन पूर्व-मीमांसा के कुमारिल सम्प्रदाय के साथ संगत नहीं है?

(a) अभिहितान्वयवाद का समर्थन
(b) प्रत्यक्षगत भ्रम में सीपी और चांदी का परस्पर अध्यारोपण
(c) ज्ञान त्रिपुटि संरचित है
(d) प्रत्यक्षगत भ्रम एक कार्य की स्वीकृति है

Ans. (a) CBSE (NET) ने इस प्रश्न के सभी विकल्पों को सत्य माना है। अभिहितान्वयवाद का समर्थन कुमारिल सम्प्रदाय तो करता है परन्तु अन्य तीन विकल्पों के संबंध में कुछ स्पष्ट नहीं है।

19. निम्नलिखित में से कौन द्वैत वेदान्त के साथ संगत नहीं है?

(a) भेद और विशेष का विचार द्वैत वेदान्त के लिये मौलिक और केन्द्रीय है
(b) जगत् आभास है
(c) बह्म अनन्तकल्याण-गुण परिपूर्ण है
(d) जीव और ब्रह्म का तात्त्विक भेद है

Ans. (b) : द्वैत-वेदान्त के समर्थक मध्वाचार्य, शंकर के अद्वैतवाद के विरोध में सविशेष ब्रह्मवाद, परिणामवाद, जगत्सत्यत्व, भक्तिवाद आदि का समर्थन करते हुए आत्यन्तिक भेदवाद के समर्थक है। अद्वैत वेदान्त के जगत आभास है के विपरीत द्वैत वेदान्त में जगत को वास्तविक तथा सप्रयोजन बताया गया है।

(भारतीय दण्ड-डॉ. नन्द किशोर देवराज)

20. उपनिषदों के अनुसार सही क्रम बताइए:

(a) निदिध्यासन, मनन, श्रवण
(b) मनन, श्रवण, निदिध्यासन
(c) श्रवण, मनन, निदिध्यासन
(d) श्रवण, निदिध्यासन, मनन

Ans. (c) : उपनिषदों में आत्म-साक्षात्कार के लिए श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन ये तीन मार्ग बतलाये गये हैं। सर्वप्रथम जीव गुरुमुख से ब्रह्म और आत्मा के आभेद-ज्ञान का श्रवण करता है। श्रवण के बाद मनुष्य उस ज्ञान पर तर्कपूर्ण चिंतन अर्थात् मनन करता है। जब मनन द्वारा समस्त शंकाओं का समाधान हो जाता है तो वह पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति के लिए 'ध्यान' करता है अर्थात् ब्रह्मात्मैक्यज्ञान का बारम्बार चिंतन अर्थात् 'ध्यान'। इस ध्यान को उपनिषदों में निदिध्यासन कहा गया है।

21. कुमारिल की ज्ञान-मीमांसा के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन असंगत है?

(a) स्वतः प्रामाण्यवाद (b) विपरीतख्याति वाद
(c) परतः प्रामाण्यवाद (d) अभिहितान्वयवाद

Ans. (c) : कुमारिल भी पूर्व मीमांसक है। कुमारिल की ज्ञानमीमांसा में विपरीतख्यातिवाद का सिद्धान्त भ्रम-का सिद्धान्त है, शब्द से सम्बन्धित सिद्धान्त अभिहितान्वयवाद और ज्ञान के प्रामाण्य संबंधित सिद्धान्त प्रमाण्यवाद एवं परतः अप्रमाण्यवाद कहलाता है।

22. अन्विताभिधानवाद का समर्थन निम्नलिखित में से किस दार्शनिक द्वय ने किया है?

(a) प्रभाकर और मण्डन (b) कुमारिल और वाचस्पति
(c) गौतम और प्रशस्तपाद (d) नागार्जुन और दिङ्नाग

Ans. (a) :अन्विताभिधानवाद। शब्द और उसके अर्थ को लेकर कुमारिल और प्रभाकर के अपने-अपने मत है। प्रभाकर के मत को अन्विताभिधानवाद कहते हैं। जिसका समर्थन मण्डन मिश्र भी करते हैं। अन्विताभिधान के अनुसार वाक्य के आरंभ से लेकर अन्त तक शब्द इस प्रकार अन्वित रहते हैं कि पूर्ववर्ती शब्द अपने परवर्ती शब्द में अपने अर्थ को समाविष्ट कर देता है। कुमारिल का मत अभिहितान्वयवाद कहलाता है।

23. निम्नलिखित में से कौन 'शंकर' के लिये स्वीकार्य है?

(a) ब्रह्म और जीव में परस्पर भिन्नता और तादात्म्य है
(b) ब्रह्म निर्गुण है
(c) वैष्णव धर्म के सनक सम्प्रदाय के प्रवर्तक है
(d) भक्ति से उद्भुत ईश्वर प्रसाद द्वारा ज्ञान से मोक्ष प्राप्तव्य है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : आचार्य शंकर अद्वैत वेदान्ती है। अद्वैत वेदान्त में ज्ञान को महत्व दिया गया है। ब्रह्म, जीव, जगत और जीव, ब्रह्म और जगत में द्वैत मात्र आभास है, सत्य अद्वैत है। अद्वैत वेदान्त के अनुसार ब्रह्म निर्गुण, निर्विशेष है। वह मोक्ष प्राप्ति का साधन प्रमुख रूप से ज्ञान का मानते हैं।

24. जैन दर्शन के अनुसार दूसरों के विचारों का सीधा ज्ञान हैः

(a) अवधि (b) मनःपर्याय
(c) मति (d) केवल

Ans. (b): जैन दर्शन में प्रत्यक्ष के कुल पांच भेद प्राप्त होते हैं- अवधि ज्ञान, मनः पर्यायज्ञान, केवल ज्ञान, मति ज्ञान और श्रुत ज्ञान। मनः पर्याय ज्ञान में अन्य व्यक्तियों के मन के भावों और विचारों का ज्ञान है।

(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेख -राममूर्ति पाठक)

25. डॉ. अम्बेडकर द्वारा समर्थित त्रयी सिद्धान्त क्या है?

(a) अहिंसा, सत्य और शान्ति
(b) असहयोग, चोरी न करना और असमानीकरण
(c) क्रान्ति, ऐतिहासिक भौतिकवाद और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
(d) स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व

Ans. (d) डॉ. अम्बेडकर द्वारा समर्थित त्रयी सिद्धान्त स्वतंत्रता, समानता बन्धुत्व है।
(Pradeep P. Gokhale, Rearch Professor CUTS, Sarnath, Varanasi)

26. निम्नलिखित अनुमान में कौन-सा हेत्वाभास है? सही कूट का चयन करें: शब्द अनित्य चाक्षुषत्वात्

(a) स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास (b) बाधित हेत्वाभास
(c) विरुद्ध हेत्वाभास (d) सव्यभिचार हेत्वाभास

Ans. (a) 'शब्द अनित्य चाक्षुषत्वात्' में स्वरूपासिद्ध हेत्वाभास है। क्योंकि 'चाक्षुष होना' हेतु स्वभावतः पक्ष 'शब्द' में असिद्ध है क्योंकि चाक्षुष होना कान का गुण न होकर आँख का गुण है।

27. 'कर्मयोगी' के सम्बन्ध में अधोलिखित कथन दिये गये हैं। इनमें से सही कूट का चयन कीजियेः

(a) कर्मयोगी मुक्ति के लिये कार्य करता है
(b) कर्मयोगी स्वर्ग के लिये कार्य करता है
(c) कर्मयोगी समस्त कर्मों के परित्याग के लिये कार्य करता है
(d) कर्मयोगी लोकसंग्रह के लिये कार्य करता है

कूट :

(a) (a) और (b) (b) (b) और (c)
(c) (a) और (d) (d) (b) और (d)

Ans. (c): 'कर्मयोगी' भगवद्गीता का एक प्रमुख आदर्श है। इसे 'स्थितप्रज्ञ' भी कहते हैं। जो स्थिर बुद्धिः निष्काम भाव से कर्म करता हुआ आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त होता है। जिसका प्रत्येक कर्म दूसरों की मुक्ति के लिए और लोकसंग्रह के लिए होता है।

(भगवद्गीता-गीताप्रेस)

28. गीता के अनुसार चार प्रकार के वर्णों के विभाजन का आधार क्या है?

(a) केवल गुण (b) केवल कर्म
(c) गुण और कर्म दोनों (d) केवल लोकप्रसिद्धि

Ans. (c): 'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।' अर्थात् श्री कृष्ण अर्जुन से स्पष्ट कहते हैं कि मैंने चारों वर्णो की रचना गुण और कर्म के आधार पर किया ।

(भगवद्गीता 4/13)

29. सूची - I का सूची - II के साथ मिलान करें और नीचे दिये गए कूट का प्रयोग करते हुए ख्यातिवाद के संबंध में सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I	सूची - II
(a) अख्याति	(i) विज्ञानवाद
(b) आत्मख्याति	(ii) प्रभाकरन मीमांसा
(c) अन्यथाख्याति	(iii) न्याय
(d) अनिर्वचनीयख्याति	(iv) अद्वैत वेदान्त

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(1)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(2)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(3)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(4)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)

Ans. (a) :

(a) अख्याति	(ii) प्रभाकर मीमांसा
(b) आत्मख्याति	(i) विज्ञानवाद
(c) अन्यथाख्याति	(ii) न्याय
(d) अनिर्वचनीयख्याति	(iv) अद्वैत वेदान्त

30. सूची - I का सूची- II के साथ मिलान करें और नीचे दिए कूट का प्रयोग करते हुए प्रामाण्य के संबंध में सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I	सूची- II
(a) बौद्ध	(i) परतः प्रामाण्य, अप्रामाण्य
(b) सांख्य	(ii) स्वतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य
(c) मीमांसा	(iii) स्वतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य
(d) न्याय-वैशेषिक	(iv) स्वतः प्रामाण्य, अप्रामाण्य

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(1)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(2)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(3)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(4)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)

Ans. (b) :

(a) बौद्ध	(ii) बौद्धों के प्रामाण्यवाद में स्वतः प्रामाण्य परतः अप्रामाण्य माना है।
(b) सांख्य	(iv) सांख्य स्वतः प्रामाण्य और स्वतः अप्रामाण्य मानता है।
(c) मीमांसा	(iii) मीमांसा स्वतः प्रामाण्य और परतः अप्रामाण्य
(d) न्याय-वैशेषिक	(i) न्याय वैशेषिक परतः प्रामाण्य और परतः अप्रामाण्य मानता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

31. 'समान के साथ समान व्यवहार और असमान के साथ असमान व्यवहार यह किसका विचार है?

(a) सुकरात (b) बेन्थम
(c) अरस्तू (d) मिल

Ans. (c) अरस्तू के अनुसार, 'समान के साथ समान और असमान के साथ असमान् व्यवहार करना चाहिए।' 'पॉलिटिक्स' और 'इथिक्स' अरस्तू की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

32. निम्नलिखित में से किसने कहा है कि ''व्यक्तित्व और सम्पत्ति साथ-साथ चलता है''?

(a) कांट (b) हीगल
(c) रॉस (d) रॉल्स

Ans. (b) : हेगल के अनुसार, संपत्ति का विचार व्यक्ति के आत्मा के संकल्प स्वातंत्रय की अभिव्यक्ति है। अधिकार स्वतंत्र व्यक्तियों के ही हो सकते हैं, वस्तुओं के नहीं। अर्थात् संपत्ति की अवधारणा के हेगेल एक अधिकार मानता है। और अधिकार किसी व्यक्ति के हो सकते हैं जो व्यक्तित्व सम्पन्न हो। हेगेल के अनुसार 'व्यक्तित्व और सम्पत्ति साथ चलते हैं।

33. तीन प्रकार के न्याय-वितरणात्मक, दंडात्मक, योग्यतानुपाती-की पहचान किसने की है?

(a) प्लेटो (b) अरस्तू
(c) हॉब्स (d) लॉक

Ans. (c) : अरस्तू ने अपने दर्शन में तीन तरह के न्याय बारे में बात करता है। वितरणात्मक न्याय अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को उसकी योग्यतानुसार न्याय मिलना चाहिए। दण्डात्मक न्याय अर्थात् गलत कार्यों के लिए दण्ड की व्यवस्था भी होनी चाहिए जिसे वह ऋणात्मक पुरस्कार भी कहता है।

34. 'आदमी को घोड़ा चुराने के लिए फाँसी नहीं दी जाती है बल्कि इसलिए कि कहीं दूसरे के द्वारा घोड़ा चुरा नहीं लिया जाए' इसका सम्बन्ध किससे है?

(a) दंड का प्रतीकारात्मक सिद्धान्त
(b) दंड का सुधारात्मक सिद्धान्त
(c) फाँसी की सजा का सिद्धान्त
(d) दंड का निवारक सिद्धान्त

Ans. (d) : दण्ड के तीन सिद्धान्त प्रचलित है। दण्ड के प्रतीकारात्मक सिद्धान्त के अनुसार अपराधी को उसके अपराध अनुरूप ही दण्ड मिलना चाहिए। दण्ड के निवारक सिद्धान्त के अनुसार, दण्ड को ऐसा होना चाहिए कि वह पूर्व में किये गये अपराध के लिए दण्ड का काम करे और संभावित अपराधों का भी निवारण करे। दण्ड के सुधारात्मक सिद्धान्त के अनुसार अपराधी को नियंत्रण में रखकर दण्ड तो देना ही चाहिए और साथ-साथ ही उसकी अनंत संभाव्यता को देखते हुए सुधारने का भी पूरा प्रयास करना ही चाहिए।

(नीतिशास्त्रः सिद्धान्त और व्यवहार-प्रो. नित्यानंद मिश्र)

35. 'या तो इच्छा स्वातन्त्रय वास्तविक है या नैतिक भ्रान्ति' यह किसका कथन है?

(a) हॉब्स (b) मार्टिन्यू
(c) कांट (d) हीगल

Ans. (b) : या तो इच्छा स्वातन्त्रय वास्तविक है या फिर नैतिक निर्णय भ्रान्ति यह कथन मार्टिन्यू का है।

(नीतिशास्त्रः सिद्धान्त और व्यवहार-प्रो. नित्यानंद मिश्र)

36. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन करें :

सूची-I (विचारधारा)	सूची-II (कथन)
(A) अतिवादी नारीवाद	(i) स्त्रियों की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष अनिवार्यतः पूंजीवाद के विरुद्ध संघर्ष से जुड़ा है।
(B) उदारवादी नारीवाद	(ii) स्त्री और पुरुष को समान समझना चाहिए
(C) समाजवादी नारीवाद	(iii) स्त्री, स्त्री के रूप में जन्म नहीं लेती है बल्कि बनाई जाती है।
(D) मार्क्सवादी नारीवाद	(iv) पुरुष और स्त्री दोनों अनिवार्यतः बुद्धिमान प्राणी है।

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(b)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(c)	(ii)	(i)	(iv)	(ii)
(d)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)

Ans. (a) :

(a) अतिवादी नारीवाद	(iii) स्त्री, स्त्री के रूप में जन्म नहीं लेती है, बल्कि बनाई जाती है।
(b) उदारवादी नारीवाद	(ii) स्त्री और पुरुष को समान समझना चाहिए
(c) समाजवादी नारीवाद	(iv) पुरुष और स्त्री दोनों अनिवार्ययतः बुद्धिमान प्राणी है।
(d) मार्क्सवादी नारीवाद	(i) स्त्रियों की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष अनिवार्ययतः पूंजीवाद के विरुद्ध संघर्ष से जुड़ा है।

37. स्टीवेन्सन के अनुसार, नैतिक निर्णयों की विभेदकारी विशेषता निम्नलिखित में से कौन-सी है?

(a) आदेशात्मक कथन
(b) कर्म के परिणाम का अनुमोदन
(c) तथ्यात्मक कथन
(d) अभिवृत्तीय असहमति

Ans. (d) : सी.एम. स्टीवेन्सन का नैतिक निर्णय संबंधी मत ज्ञान-निरपेक्ष अभिवृत्यात्मक मत है। अभिवृत्तीय असहमति को नैतिक निर्णयों की विभेदकारी विशेषता माना गया है।

38. यह बताया गया है कि उपयोगितावाद के लिए मिल के तर्क निम्नलिखित दोष से ग्रस्त है :

(a) मुख्य पद दोष (b) अमुख्य पद दोष
(c) अव्याप्त मध्यम पद दोष (d) आलंकारिक दोष

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d): मिल के उपयोगितावाद के समर्थन में दिये गये तर्कों में आलंकारिक दोष के साथ-साथ प्राकृतिपरक दोष, 'समेकितीकरण दोष' भी है।

39. 'किसी कर्म की अच्छाई का निर्धारण उसके परिणाम द्वारा होता है' इस सिद्धान्त का सम्बन्ध किससे है?

(a) विवरणात्मक (b) फलनिरपेक्षतावाद
(c) निर्देशात्मक (d) प्रयोजनमूलक

Ans. (d): प्रयोजनमूलक सिद्धान्त के अनुसार कोई भी कार्य सप्रयोजन होता है और सदैव अच्छाई के लिए होता है। इसका तो शुभ उद्देश्य होता है।

40. कांट के अनुसार नैतिक नियम :

(a) बुद्धि पर आधारित अनुभव निरपेक्ष होते हैं
(b) बुद्धि पर अनाश्रित अनुभव निरपेक्ष होते हैं
(c) बुद्धि पर अनाश्रित अनुभव सापेक्ष होते हैं
(d) बुद्धि पर आधारित अनुभव सापेक्ष होते हैं

Ans. (a) : कांट के अनुसार, नैतिक नियम बुद्धि पर आधारित अनुभव निरपेक्ष होते हैं। कांट ने नैतिकता को व्यावहारिक बुद्धि का विषय माना है। नैतिक नियम को सदिच्छा की संज्ञा कांट अपने दर्शन में देता है।

41. नीचे दिए गए न्याय वाक्यों में निहित दोष की पहचान करें :

- सभी पालतू घरेलू पशु हैं।
- कोई भी शेर घरेलू पशु नहीं है।

इसलिए कुछ शेर पालतू नहीं हैं।

कूट :

(a) अनन्य पद-दोष (b) अमुख्य पद-दोष
(c) सत्तात्मक -दोष (d) अव्याप्त मध्यम पद-दोष

Ans. (c) : जब दो सर्वव्यापी तर्क वाक्यों से अंशव्यापी निष्कर्ष निगमित किया जाता है, तो उसमें एक प्रकार का दोष होता है। जिसे सत्तात्मक दोष कहते हैं।

42. यदि यह नियम कि "कोई भी पद निष्कर्ष में व्याप्त है उसे आधार वाक्य में भी अवश्य व्याप्त होना चाहिए" का पालन नहीं किया जाता है तो कौन-सा दोष संयोजन उत्पन्न होगा?

(a) अव्याप्त मध्यम पद और मुख्य पद दोष
(b) अव्याप्त मध्यम पद और आधार वाक्य का अपवर्जन दोष
(c) मुख्य पद दोष और अमुख्य पद दोष
(d) आधार वाक्य अपवर्जन का दोष और मुख्य पद दोष

Ans. (c) : चूंकि निष्कर्ष में दो पद अमुख्य पद और मुख्य पद होते हैं। वैध निरपेक्ष न्याय वाक्य में कोई भी ऐसा पद निष्कर्ष में व्याप्त नहीं हो सकता जो आधार वाक्यों में व्याप्त न हो। जब किसी न्याय वाक्य का मुख्य पद आधार वाक्य में अव्याप्त और निष्कर्ष में व्याप्त हो तो अनियमित मुख्य पद दोष होता है। इसी तरह अमुख्य पद के लिए अनियमित अमुख्य पद दोष होगा।

43. तात्कालिक अनुमान में प्रतिज्ञप्ति को प्रतिवर्तित करने के लिए:

(a) केवल प्रतिज्ञप्ति के गुण को बदलना होता है।
(b) केवल प्रतिज्ञप्ति के परिमाण को बदलना होता है।
(c) गुण को बदलना होता है और विधेय पद को उसके अवयव के साथ प्रतिस्थापित करना होगा।
(d) मात्रा का बदलना होगा और विधेय पद को उसके अवयव के साथ प्रतिस्थापित करना होगा।

Ans. (c) : अव्यवहित अनुमान (तात्कालिक अनुमान) में प्रतिज्ञप्ति को प्रतिवर्तित (Obvert) करने के लिए किसी तर्कवाक्य का गुण परिवर्तन करते हैं और विधेय के स्थान प उसका पूरक पद रखते हैं। प्रतिवर्तन में उद्देश्य पद अपरिवर्तित रहता है और प्रतिवर्तित होने वाले तर्कवाक्य का परिमाण भी अपरिवर्तित रहता है।

(Introduction of logic: Irving M. Copi)

44. परम्परागत विरोध वर्ग में यदि O सत्य है, जो

(a) 'A' सत्य है, E असत्य है, 'I' अव्याप्त है।
(b) 'A' सत्य है, 'E' और, 'I' अव्याप्त हो गए हैं।
(c) 'A' असत्य है, E और 'I 'अव्याप्त' है।
(d) 'A' असत्य है, E और 'I सत्य है।

Ans. (c): परम्परागत विरोध वर्ग में यदिः-
'A' सत्य हो तो- 'E' असत्य है, 'I' सत्य है, 'O' असत्य है।
'E' सत्य हो तो - 'A' असत्य 'I' असत्यए 'O' सत्य।
'I' सत्य हो तो - 'E' असत्य, 'A' और 'O' अनिश्चित।
'O' सत्य हो तो - 'A' असत्य, 'E' और 'I' अनिश्चित।
'A' असत्य हो तो - 'O' सत्य, 'E' और 'I' अनिश्चित।
'E' असत्य हो तो - 'I' सत्य, 'A' और 'O' अनिश्चित।
'I' असत्य हो तो - 'A' असत्य, 'E' सत्य, 'O' सत्य ।
'O' असत्य हो तो - 'A' सत्य, 'E' असत्य, 'I' सत्य ।

45. सूची-I (आकार) और सूची-II (प्रकार) की सुमेलित करें और नीचे दिएगए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन करें

सूची-I (आकार)	सूची-II (प्रकार)
(A) प्रथम आकार	(i) Fresison
(B) द्वितीय आकार	(ii) Ferio
(C) तृतीय आकार	(iii) Festino
(D) चतुर्थ आकार	(iv) Ferison

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(b)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(c)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(d)	(ii)	(iv)	(i)	(ii)

Ans. (c) :

(A)	प्रथम आकार	-	(ii) FERIO
(B)	द्वितीय आकार	-	(ii) FESTINO
(C)	तृतीय आकार	-	(ii) FERISON
(D)	चतुर्थ आकार	-	(ii) FRESISON

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

46. निम्नलिखित में से किस मामले में तर्क अवैध हो सकता है।

(a) आधार वाक्य सत्य है और निष्कर्ष सत्य है
(b) आधार वाक्य सत्य है और निष्कर्ष असत्य है
(c) आधार वाक्य असत्य है और निष्कर्ष असत्य है
(d) आधार वाक्य असत्य है और निष्कर्ष सत्य है

Ans. (b) : तर्क की वैधता और अवैधता की बात निगमनात्मक अनुमान में की जाती है। निगमनात्मक युक्ति/अनुमान/तर्क तब वैध होता है जब इसके आधार वाक्य सत्य हो और निष्कर्ष के लिए निश्चायक साक्ष्य प्रस्तुत करते हो अर्थात् आधार वाक्य और निष्कर्ष इस प्रकार सम्बद्ध हो कि आधार-वाक्यों का सत्य होना तब तक असंभव हो जब तक कि निष्कर्ष भी सत्य न हो।

तर्कशास्त्र का परिचय- I.M. Copi (पाण्डेय और मिश्र)

47. निम्नलिखित प्रतिज्ञप्तियों पर ध्यान दें और सही उत्तर का चयन करें :

''सभी न्यायाधीश वकील होते हैं।''
''कुछ न्यायाधीश वकील नहीं होते हैं।''

कूट :

(a) दोनों कथन केवल गुण में विरोधी है।
(b) दोनों कथन केवल मात्रा में विरोधी है।
(c) दोनों कथन गुण और मात्रा दोनों में परस्पर विरोधी है।
(d) दोनों कथन गुण में विरोधी है मात्रा में नहीं।

Ans. (c) पहली प्रतिज्ञप्ति सर्वव्यापी स्वीकारात्मक और दूसरी प्रतिज्ञप्ति अंशव्यापी नकारात्मक (निषेधात्मक) है जो क्रमशः 'A' और 'O' को परस्पर व्याघातक प्रतिज्ञप्तियों के रूप में जाना जाता है। इसका कारण परस्पर गुण और मात्रा दोनों का विरोधी होता है।

(-वही- तर्कशास्त्र का परिचय)

48. यदि दो प्रतिज्ञप्तियाँ सत्य हो सकती हैं परन्तु दोनों एक साथ असत्य नहीं हो सकती है, तो उनका सम्बन्ध होगा :

(a) विपरीत (b) परस्पर विरोधी
(c) उप विपरीत (d) उपाश्रयण

Ans. (c): परम्परागत विरोध वर्ग के अनुसार यदि दो प्रतिज्ञप्तियां एक साथ सत्य हो सकती हैं। परन्तु दोनों एक साथ असत्य नहीं हो सकता है तो उनका संबंध उप-विपरीत का होगा।

49. निम्नलिखित तर्क में अनुमान के किस नियम का प्रयोग किया गया है?

$[N \supset (O.P)]\ [Q \supset (O.R)]$
$N \vee Q$
$\therefore (O.P) \vee (O.R)$

(a) प्राक्कल्पनात्मक न्याय वाक्य
(b) वियोजक न्या वाक्य
(c) रचनात्मक उभयतः पाश
(d) मॉडस पोनेन्स

Ans. (c): अनुमान के नौ नियमों में एक-नियम रचनात्मक उभयतः पाश (Constractive Delesmet) जिसको साधारणतया निम्न सूत्र है-

$(A \supset B) . (C \supset D)$
$A V C$
$\therefore B V D$

50. निम्नलिखित प्रकारों में से कौन-सा प्रकार 'मोडस टॉलेन्स को प्रदर्शित करता है?

(a) $p \supset q$
$\sim q$
$\therefore -p$

(b) $p \vee q$
$\sim p$
$\therefore q$

(c) $p \supset q$
$\therefore p \supset (p.q)$

(d) $p \supset q$
p
$\therefore q$

Ans. (a) : 'मोडस टॉलेनस' अनुमान का नियमों में से एक है। जो है-

$p \supset q$
$\sim q$
$\therefore \sim P$

अन्य विकल्प क्रमशः विकल्पन, समविलपन व मोडस पोनस (पूर्ववत अनुमान) के उदाहरण है।

51. प्लेटो की तत्वमीमांसा के प्रकाश में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही कूट का चयन करें:

(A) सचमुच वास्तविक वे वस्तुएं होती हैं जिनका हम संवेदी अनुभव में सामना करते हैं।
(B) सचमुच वास्तविक वे आकार होते हैं जिन्हें केवल बौद्धिक रूप से ग्रहण किया जा सकता है।
(C) आकार शाश्वत और परिवर्तनशील होते हैं।

कूट :

(a) केवल (a) सही है।
(b) केवल (a) और (c) सही है।
(c) केवल (b) सही है।
(d) केवल (b) और (c) सही है।

Ans. (c) : प्लेटो की तत्वमीमांसा बुद्धिवादी प्रत्ययवाद है। जिसमें प्रत्ययों को ही अंतिम रूप से शाश्वत सत्य माना गया है। प्लेटो के प्रत्यय जगत में स्थित वस्तुओं के शुद्ध आकार है जिनको केवल बौद्धिक रूप से ग्रहण किया जा सकता है। प्लेटो के प्रत्यय अपरिवर्तनशील है।

(पा. द. का इतिहास-1 प्रो. दयाकृष्ण)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

52. निम्नलिखित में से किनका यह मत था कि ''दर्शनशास्त्र तर्कबुद्धि के उपदेश पर; ईश्वरमीमांसा आस्था पर धारित श्रुति की सत्यताओं पर आधारित होता है और दर्शनशास्त्र ईश्वरमीमांसा के लिए सेवक के रूप में काम करता है।''

(a) ऑगस्टाइन (b) ऐन्सेल्म
(c) एक्विनॉस (d) अरस्तू

Ans. (c) : 'दर्शनशास्त्र तर्कबुद्धि के उपदेश पर ईश्वरमीमांसा आस्था पर धारित श्रुति की सत्यताओं पर आधारित होता है और दर्शनशास्त्र ईश्वरमीमांसा के लिए सेवक के रूप में काम करता है। कथन टॉमस एक्विनास का है।

53. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। उन पर प्लेटो के आकार सिद्धान्त के आलोक में विचार करें और सही कूट का चयन करें।

अभिकथन (A) : चक्रीयता भौतिक जगत में विद्यमान नहीं होती है।

कारण (R) : चक्रीयता आकार का एक उदाहरण नहीं होता है।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है।
(d) (R) सही और (A) गलत है।

Ans. (c) : प्लेटो के दर्शन में चक्रीयता को एक सामान्य प्रत्यय माना जायेगा और प्लेटो के 'सामान्य प्रत्यय' मानसिक अवधारणाएं नहीं है बल्कि वास्तविक सत्ता है। जो भौतिक जगत की वस्तुओं से अलग प्रत्ययों/सामान्यों के जगत से संबंधित है। चक्रीयता एक तरह का आकार है। अभिकथन (A) सत्य है और अभिकथन (B) गलत है।

54. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन नीत्से की स्थिति का उपयुक्त रूप में द्योतक है?

(A) वे सत्यता की इच्छा को शक्ति की इच्छा के बराबर ठहराते हैं।
(B) अच्छे और बुरे के बीच का विभेद शक्ति की इच्छा पर आधारित होता है।
(C) अच्छे और बुरे के बीच का विभेद विषयनिष्ठता में बद्धमूलक होता है।
(D) सभी प्रकार के जीवन और सभी प्रकार की प्रसन्नता शक्ति की इच्छा के द्वारा शासित होते हैं।

कूट :

(a) केवल (A) और (B) सही है।
(b) केवल (C) और (D) सही है।
(c) केवल (A), (B) और (D) सही है।
(d) केवल (B) और (D) सही है।

Ans. (c) : नीत्से की शक्ति की इच्छा (will to power) सिद्धान्त के अनुसार कथन (a), (b), (d) सही है।

55. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और सही कूट पर निशान लगाएँ

सूची-I	सूची-II
(A) फ्रेडरिक नीत्से	(i) अपने विचारों को किस प्रकार सुस्पष्ट बनाएं
(B) विलियम जेम्स	(ii) शक्ति की इच्छा
(C) सी.एस.पीयर्स	(iii) तार्किक अन्वेषण
(D) एडमंड हुसर्ल	(iv) सत्यता का अर्थ

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(b)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(c)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(d)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)

Ans. (c):

(a) फ्रेडरिक नीत्से (ii) शक्ति की इच्छा
(b) विलियम जेम्स (iv) सत्यता का अर्थ
(c) सी.एस. पीयर्स (i) अपने विचारों को किस प्रकार सुस्पष्ट बनाएं
(d) एडमण्ड हुसर्ल (iii) तार्किक अन्वेषण

56. निम्नलिखित में से किस दार्शनिक के द्वारा प्रत्ययवाद का खंडन किया गया है? सही कूट का चयन करें :

(A) मूर (B) रसेल (C) बर्कले

कूट :

(a) केवल (A) और (C) सही है।
(b) केवल (A) सही है।
(c) केवल (A) और (B) सही है।
(d) केवल (B) और (C) सही है।

Ans. (c) : समकालीन पाश्चात्य दर्शन में मूर, रसेल और आर.बी. पेरी ने प्रत्ययवाद का खण्डन किया है।

(समकालीन पा. दर्शन- बी.के. लाल)

57. निम्नलिखित में से किस तार्किक प्रत्यक्षवादी ने इस आधार पर 'सत्यापन' को 'पुष्टि से प्रतिस्थापित कर दिया कि हालांकि सार्वभौम नियमों का सत्यापन नहीं किया जा सकता, लेकिन उनकी पुष्टि की जा सकती है?

(a) कार्नेप (b) एयर
(c) श्लिक (d) डब्ल्यू. वी.ओ. क्वाइन

Ans. (b) : कार्नेप जो तार्किक प्रत्यक्षवादी है ने इस आधार पर 'सत्यापन' को 'पुष्टि' से प्रतिस्थापित कर दिया। उनके अनुसार सार्वभौमिक नियमों का सत्यापन नहीं किया जा सकता, लेकिन उनकी पुष्टि (Confirmation) की जा सकती है।

58. 'वह सत्ता जो निरपेक्ष है, तार्किक संयोजकता के साथ एक ससक्त विचार पद्धति है', इस मत का श्रेय किसे दिया जा सकता है :

(a) हेगल (b) बर्कले
(c) मूर (d) स्पिनोजा

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a): हेगल जो निरपेक्ष प्रत्ययवाद के समर्थक है। वो सत्ता को तार्किक मानते हैं। उनके अनुसार सत् ही बोध है और बोध ही सत् है। उनके अनुसार वह सत्ता जो निरपेक्ष सत्ता है, तार्किक संयोजकता के साथ एक सशक्त विचार पद्धति है।

59. 'निम्नलिखित में से कौन-सा कथन एनैक्जीमैंडर के दार्शनिक मत को ठीक-ठाक रूप में निरूपित करता है?

(a) 'असीम' ऐसी वस्तुओं का सिद्धांत है जो विद्यमान है
(b) यह 'असीम वायु' का सिद्धान्त है जिससे सब कुछ जो विद्यमान है, अस्तित्व में आया है।
(c) ''असीम संख्या'' उन वस्तुओं का सिद्धान्त है जो विद्यमान है।
(d) ''असीम पृथ्वी'' प्रत्येक अस्तित्ववान वस्तु का मूलभूत सिद्धान्त है।

Ans. (a) : एनैक्जिमैंडर माइलेशियन दार्शनिक है। उनके अनुसार जिस तत्व से जगत की उत्पत्ति हुई वह 'असीम वायु', संख्या पृथ्वी आदि से अधिक मूलभूत है (प्रिमिटिव) और इन्हें उत्पन्न करने में समर्थ है। एनेक्जिमेण्डर के अनुसार यह तत्व 'असीम' (बाउण्डलेस अपीरन) है। यहां 'असीम' ही ऐसी वस्तुओं का सिद्धान्त है जो विद्यमान है।

(पा. दर्शन का इतिहास -1, प्रो. दयाकृष्ण)

60. देहांतर के सिद्धान्त या आत्मा के पुनर्जन्म के सिद्धान्त का श्रेय निम्नांकित में किस सुकरात-पूर्व दार्शनिक को दिया जाता है?

(a) पाइथागोरस
(b) एनैक्जीमैंडर
(c) पार्मेनाइडीज़
(d) डेमोक्रॉयटस

Ans. (a) : पाइथागोरस के ऊपर आर्फिक सम्प्रदाय का प्रभाव होने के कारण वो आत्मा के आवागमन अथवा देहान्तर अथवा पुनर्जन्म सिद्धान्त में विश्वास करते थे।

(पा. दर्शन का इतिहास-1, प्रो. दयाकृष्ण)

61. हुसर्ल के सांवृत्तिक अपचय का उद्देश्य है:

(a) शुद्ध अवैयक्तिक चेतना द्वारा उत्पन्न अर्थों की जाँच करना।
(b) जगत की वस्तुओं के अर्थ की जाँच करना।
(c) वैयक्तिक चेतना की वस्तुओं के अर्थ की जाँच करना।
(d) शुद्ध अवैयक्तिक चेतना द्वारा उत्पन्न अर्थों की अस्वीकृत करना।

Ans. (a) : हुर्सल चेतना को आन्तरिक विकारों से मुक्त करने के लिए तीन स्तरों का उल्लेख करते हैं। जिनमें प्रथम स्तर को सांस्कृतिक (फैनामेनालाजिकल) अपचयन कहा जाता है जो मनोवैज्ञानिक साहचर्य से चेतना को मुक्त करने की विधि है। इसका उद्देश्य शुद्ध अवैयक्तिक चेतना द्वारा उत्पन्न अर्थों की जांच करना है। इसके अतिरिक्त तात्विक अपचयन और मूर्तकल्पी अपचयन द्वितीय और तृतीय स्तर है।

(स.पा. दर्शन-बी.के. लाल)

62. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और सही कूट का चयन करें :

सूची-I	सूची-II
(A) लॉक	(i) इन इन्क्वायरी कन्सर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग
(B) बर्कले	(ii) क्रिटिक ऑफ प्रैक्टिकल रीजन
(C) ह्यूम	(iii) थ्री डायलॉग्स बिटवीन हायलास एण्ड फिलोनीस
(D) कांट	(iv) एन एसे कन्सर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(b)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(c)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(d)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)

Ans. (a) :
(a) लॉक (iv) एन एसे कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टैंडिंग।
(b) बर्कले (iii) थ्री डायलॉग्स बिटवीन हायलास एण्ड फिलोनीस
(c) ह्यूम (i) एन इन्क्वायरी कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टैंडिंग।
(d) कांट (ii) क्रिटिक ऑफ प्रैक्टिकल रीजन।

63. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। उन पर विचार करें और सही कूट का चयन करें :

अभिकथन (A) देकार्त के दर्शनशास्त्र के संदर्भ में जो कुछ भी स्पष्ट एवं विशिष्ट है उसे अनिवार्यतः सत्य होना चाहिए।

कारण (R): ज्ञान सुस्पष्ट एवं विशिष्ट प्रत्ययों से बना होता है।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(b) (A) सही है और (R) गलत है।
(c) (A) गलत है और (R) सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(d) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।

Ans. (d) : देकार्त के अनुसार जो कुछ भी स्पष्ट एवं विशिष्ट है वह अनिवार्यतः सत्य है क्योंकि ज्ञान सुस्पष्ट एवं विशिष्ट प्रत्ययों से बना होता है।

(स्रोत : पाश्चात्य दर्शन का उद्भव एवं विकास प्रो. हरिशंकर उपाध्याय)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

64. ''द्रव्य संवेदना की स्थायी संभाव्यता है।'' यह प्रसिद्ध कथन किसका है?

(a) जेम्स मिल (b) जॉन स्टुअर्ट मिल
(c) लॉक (d) ह्यूम

Ans. (c) : लॉक के अनुसार 'द्रव्य संवेदना की स्थायी संभाव्यता है।' क्योंकि संवेदना की उत्पत्ति का कारण द्रव्य ही है।

65. एक के सिवाय निम्नलिखित में से सभी तर्कवाक्य लाइबनीज़ के दर्शन से सुसंगत है:

(a) चिदणु अपरिमित अतिसूक्ष्म आध्यात्मिक सत्ता है।
(b) चिदणुगवाक्षहीन होते हैं।
(c) चिदणुओं के बीच कोई पदानुक्रम नहीं होता है।
(d) चिदणु अविभेद्य होते हैं।

Ans. (c) : लाइबनीज़ के चिदणुवाद के अनुसार,
(1) चिदणु अपरिमित, अतिसूक्ष्म, आध्यात्मिक सत्ता है।
(2) चिदणु स्वयं प्रकाश और गवाक्षहीन है।
(3) चिदणु अविभेद्य होते हैं।
(4) प्रत्येक चिदणु में गुणात्मक रूप से कोई भेद नहीं होता है परन्तु परिमाणात्मक भेद पाया जाता है अर्थात् गुणात्मक रूप में प्रत्येक चिदणु चेतन होते हैं परन्तु परिमाणात्मक रूप से चेतना की मात्र का अंतर होता है जिसके कारण एक पदानुक्रम विकसित हो जाता है जिसमें इसके निचले पद पर नग्न चिदणु और सर्वोच्च पद पर परम चिदणु या रानी चिदणु है।

66. देकार्त की अन्योन्यक्रियावाद की हिमायत और स्पिनोजा का समानांतरवाद किसको दुर्बल करता है?

(a) एकतत्ववाद ओर द्वैतवाद (b) द्वैतवाद और बहुलवाद
(c) द्वैतवाद ओर प्रकृतिवाद (d) द्वैतवाद और सर्वेश्वरवाद

Ans. (*) यह प्रश्न संदिग्ध माना गया है।

67. जो ह्यूम के दर्शन से असंगत है उसे चिन्हित करें :

(a) कारणात्मक संबंध जैसी कोई बात नहीं होती है।
(b) तथाकथित आत्मा सिर्फ मानसिक दशाओं का योग होती है।
(c) जगत और इसमें परिवर्तन ईश्वर की सर्वोच्चता के कारण होते हैं।
(d) वह सब कुछ जिसे जाना जा सकता है उसे 'तथ्य के उपादान' और प्रत्ययों के संबंधों में विभाजित किया जा सकता है।

Ans. (c) : ह्यूम ईश्वर के अस्तित्व पर संशय करते हैं। अतः यह कथन जगत और इसमें परिवर्तन ईश्वर की सर्वोच्चता के कारण होते हैं, ह्यूम के दर्शन से असंगत है।

68. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और सही कूट का चयन करें :

सूची-I	सूची-II
(A) 'द्रव्य वह कुछ है जिसे मैं नहीं जनता'	(i) बर्कले
(B) द्रव्य मात्र अस्तित्व में नहीं है	(ii) लॉक
(C) हम जो कुछ जान सकते हैं वह सिर्फ परिघटना होती है	(iii) हेगल
(D) 'सत्ता युक्तिमूलक है'	(iv) कांट

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(c)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(d)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

Ans. (b) :

(A) 'द्रव्य वह कुछ है जिसे मैं नहीं जानता	(ii) लॉक
(B) 'द्रव्य मात्र अस्तित्व में नहीं है	(i) बर्कले
(C) हम जो कुछ जान सकते हैं वह सिर्फ परिघटना होती है	(iv) कांट
(D) सत्ता युक्तिमूलक है	(iii) हेगेल

69. (A), (B), (C) और (D) पर विचार करें और तदुपरांत देकार्त के संदर्भ में सही उत्तर का चयन करें :

(A) विज्ञानों की सत्यताओं पर संदेह किया जा सकता है।
(B) ऐंद्रिक-प्रमाण पर संदेह किया जा सकता है।
(C) आत्मा के सिवाय कुछ पर भी संदेह नहीं किया जा सकता है।
(D) संदेह करने के कृत्य पर संदेह नहीं किया जा सकता है।

(a) केवल (A) और (B) सही है।
(b) केवल (A), (B) और (C) सही है।
(c) केवल (A), (B) और (D) सही है।
(d) केवल (B), (C) और D) सही है।

Ans. (c) : देकार्त के संशयवादी पद्धति के अनुसार सभी वस्तुओं, विज्ञानों प्रमाणों यहां तक आत्मा पर भी संदेह किया जा सकता है। परन्तु संदेह पर संदेह नहीं किया जा सकता क्योंकि संदेह पर संदेह करने से संदेहकर्त्ता का अस्तित्व सिद्ध होता है।
(पा. द. का उद्भव एवं विकास-प्रो. हरिशंकर उपाध्याय)

70. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन करें:

सूची-I	सूची-II
(A) बर्कले	(i) अन्योन्यक्रियावाद
(B) स्पिनोजा	(ii) स्थिर संयोजन
(C) देकार्त	(iii) समानांतरवाद
(D) ह्यूम	(iv) विषयिसापेक्ष प्रत्ययवाद

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(b)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(c)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) :
(A) बर्कले — (iv) विषयिसापेक्ष प्रत्ययवाद
(B) स्पिनोजा — (iii) समानांतरवाद
(C) देकार्त — (i) अन्योन्यक्रियावाद
(d) ह्यूम — (ii) स्थिर संयोजन

71. अभिकथन (A) और कारण (R) नीचे दिए गए हैं। उन पर विचार करें और लॉक के संदर्भ में सही कूट का चयन करें :

अभिकथन (A) :लॉक के अनुसार ज्ञान प्रत्ययों को समझने या ग्रहण करने की मानसिक शक्ति पर निर्भर करता है न कि मात्र प्रत्ययों की ग्रहणशीलता पर।

कारण (R) : ज्ञान युक्तिमूलक होता है क्योंकि इसमें प्रत्ययों के बीच सहमति और असहमति को देखा जान समाहित होता है।

कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(b) (A) और (R)दोनों सही है और (R) (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।
(c) (A) और (R)दोनों गलत है।
(d) (A) सही है और (R) गलत है।

Ans. (*) : यह प्रश्न संदिग्ध है।

72. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं और सही कूट का चयन करें:

अभिकथन (A) : ह्यू संस्कारों को ज्ञान की मूलभूत कसौटी के रूप में मानते हैं।

कारण (R) : साहचर्य के नियम की सहायता से ह्यूम दर्शाते हैं कि कार्यकारण-भाव में कोई तर्कसंगत नहीं अपितु मनौवैज्ञानिक आवश्यकता होती है।

कूट :
(a) (A) और (R) दोनों गलत है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(c) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।
(d) (A) सही है और (R) गलत है।

Ans. (c) : अभिकथन (A) में संस्कार ज्ञान के एक प्रकार के रूप में है। (R) कारण कार्य से संबंधित ह्यूम की समस्या का मनोवैज्ञानिक हल जो दोनों तो सत्य है परन्तु एक दूसरे से भिन्न परिप्रेक्ष्य में है।

73. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। उन पर विचार करें और बर्कले के संदर्भ में सही कूट का चयन करें :

अभिकथन (A) : बर्कले ने वस्तुओं को विधि बनाने के बजाय प्रत्ययों को वस्तु बनाने की चेष्टा की। 'मैं वस्तुओं को प्रत्ययों में बदलने का पक्षधर नहीं हूँ, इसके बजाय मैं प्रत्ययों को वस्तुएं बनाना चाहता हूँ।

कारण (R) : बाह्य वस्तुएं सर्वोच्च चेतना या ईश्वर द्वारा कारित होती है जो किसी भी परिमित चेतनाओं से बाह्य होती है।

कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है। ।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।
(c) (A) और (R) दोनों गलत है।
(d) (A) सही है और (R) गलत है।

Ans. (b) : अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही है। परन्तु दोनों दो अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में सही है।

74. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन करें :

सूची-I	**सूची-II**
(A) सर्वेश्वरवाद	(i) कांट
(B) द्वैतवाद	(ii) स्पिनोजा
(C) अतींद्रिय भ्रम	(iii) देकार्त
(D) बहुलवाद	(iv) लाइबनिज़

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(b)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(c)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(d)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)

Ans. (c) :
(a) सर्वेश्वरवाद — (ii) स्पिनोजा
(b) द्वैतवाद — (iii) देकार्त
(c) अतीन्द्रिय भ्रम — (i) काण्ट
(d) बहुलवाद — (iv) लाइवनित्ज

75. सही विकल्प का चयन करें।

कांट के लिए वैज्ञानिक ज्ञान का मान है:
(a) संश्लेषणात्मक अनुभवाश्रित निर्णय
(b) विश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय
(c) संश्लेषणात्मक प्रागुभविक निर्णय
(d) विश्लेषणात्मक अनुभवाश्रित निर्णय

Ans. (c) : कांट ने अपने दर्शन संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय को वैज्ञानिक ज्ञान का प्रतिमान (Standard) कहा है क्योंकि इसमें नवीनता के साथ-साथ अनिवार्यता और सार्वभौमिकता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

76. वैदिक परम्पराओं में ऋत को किसके साथ पहचाना जाता है?

(a) केवल सत्य (b) केवल धर्म
(c) केवल कर्म (d) सत्य और धर्म

Ans. (d) 'ऋत' वैदिक परम्परा में शाश्वत नियमों के प्रतीक के रूप में सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त एक व्यवस्था का नाम है। ऋत को सत्य और धर्म के लिए पहचाना जाता है। वरुण को ऋत के संरक्षक/गोपा के रूप में जाना जाता हैं (ऋतस्य गोपा)।

(नीतिशास्त्र: सिद्धान्त और व्यवहार-प्रो. नित्यानन्द मिश्र)

77. औपनिषदिक आत्मा की अवस्थाओं के ठीक-ठाक अनुक्रम का चयन करें :

(a) सुषुप्ति, स्वप्न, जाग्रत, तुरीया
(b) जाग्रत, स्वप्न सुषुप्ति, तुरीया
(c) जाग्रत, सुषुप्ति, स्वप्न, तुरीया
(d) तुरीया, स्वप्न, सुषुप्ति, जाग्रत

Ans. (b) : माण्डक्योपनिषद के में आत्मा की चार अवस्थाओं का वर्णन क्रमशः जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय का वर्णन है। जाग्रत अवस्था में आत्मा वैश्वानर, स्वप्न में तेजस, सुषुप्ति में प्राज्ञ बतलाया गया है। तुरीय, ब्रह्म से अभिन्न है। तुरीय को लेकर आत्मा को चतुष्पात कहा गया है।

78. न्याय के अनुसार किस सन्निकर्ष से हम एक पुष्प और उसके लाल रंग के बीच के संबंध का बोध करते हैं।

(a) संयोग (b) समवाय
(c) विशेषणता (d) समवेत समवाय

Ans. (c): विशेषणता सन्निकर्ष के द्वारा हम एक पुष्प और उसके लाल रंग के बीच के संबंध का बोध करते हैं।

79. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन चर्वाक को स्वीकार्य नहीं है?

(a) चेतना उत्पन्न की हुई है
(b) चेतना सत नहीं है।
(c) चेतना भौतिक तत्त्व के द्वारा उत्पन्न है।
(d) चेतना शरीर के साथ अवश्य जायेगी।

Ans. (b) : चेतना सत् नहीं है अर्थात् चेतना असत् और यह चार्वाक को स्वीकार्य नहीं है।

80. वैशेषिकों द्वारा मुक्त आत्मा में ज्ञान के किस प्रकार के अभाव की बात मानी गई है?

(a) प्रागभाव (b) ध्वंसाभाव
(c) अत्यन्ताभाव (d) अन्योन्याभाव

Ans. (b) : वैशेषिकों के अनुसार मुक्त आत्मा में ज्ञान का आभाव ध्वंसाभाव के कारण है। प्रध्वंसाभाव किसी उत्पन्न हुए कार्य का विनाश होने पर उसके समवायीकरण में उसका आभाव है। आत्मा में ज्ञान उत्पन्न होता है और मुक्त आत्मा उसका विनाश हो जाता है।

(भा.द. की समीक्षात्मक रूपरेखा-राममूर्ति पाठक)

81. वैशेषिकों के अनुसार सामीप्य और दूरी के ज्ञान का क्या कारण है?

(a) काल (b) आकाश
(c) दिक् (d) मनस

Ans. (c) : वैशेषिक दर्शन दिक् को द्रव्य मानता है। जो सह-अस्तित्व का प्रतिपादन करता है। दिक् दृश्यमान पदार्थों का वर्णन करता है। अर्थात् उनमें समीप्य और दूरी का ज्ञान कराता है। आकाश और दिक् एक नहीं है। आकाश दिक् में भरा हुआ है ईश्वर सदृश द्रव्य है जिसमें शब्द गुण है।

(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा-राममूर्ति पाठक)

82. किस प्रमाण के द्वारा न्याय सम्प्रदाय ने निर्विकल्पक प्रत्यक्ष की अवस्था को सिद्ध किया?

(a) प्रत्यक्ष (b) अनुमान
(c) उपमान (d) शब्द

Ans. (b) : न्याय दर्शन में निर्विकल्पक प्रत्यक्ष की अवस्था को अनुमान के आधार पर स्वीकार किया गया है।

83. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार करें और वैशेषिक दृष्टिकोण से सही कूट का चयन करें :

अभिकथन (A) : परमाणु विभाज्य नहीं होता है।

कारण (R) : जो कुछ भी दृश्य नहीं है वह विजाज्य भी नहीं है।

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।
(c) (A) और (R) दोनों गलत है।
(d) (A) गलत है और (R) सही है।

Ans. (c) : वैशेषिकों के अनुसार परमाणु विभाज्य नहीं होता है। लेकिन एक द्रयणुक दृश्य न होकर भी विभाज्य है। अतः अभिकथन 'A' सत्य है परन्तु कारण (R) असत्य।

84. निम्नलिखित में से कौन व्याप्तिग्रह का एक साधन नहीं है?

(a) तर्क (b) सामान्यलक्षण प्रत्यक्ष
(c) आप्तवाक्य (d) उपाधिनिरास

Ans. (c) : आप्तवाक्य, व्याप्तिग्रह का साधन नहीं है।

85. निम्नलिखित अनुमान द्वारा किस प्रकार का हेत्वाभास किया जाता है? सही कूट का चयन करें यह प्राणि अवश्य रूप से एक गाय होनी चाहिए क्योंकि इसमें घोड़त्व है।

(a) सत्प्रतिपक्ष (b) सव्यभिचार
(c) विरुद्ध (d) बाधित

Ans. (c) 'घोड़त्व है' हेतु 'घोड़ा' नामक प्राणि का लक्षण है। अतः यह गाय के रूप को नहीं 'अभाव' को सिद्ध कर रहा है। अतः यहां विरुद्ध हेतु हेत्वाभास है। इसमें हेतु स्वव्याघाती होता है। जिसके कारण व्याप्ति संबंध साध्य के साथ न होकर साध्य के आभाव के साथ होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

86. वैशेषिकों के अनुसार निम्नलिखित में से कौन एक नित्यद्रव्य नहीं है?

(a) परमाणु (b) द्वयणुक
(c) मनस (d) दिक्

Ans. (b) : द्वयणुक परमाणु संयोग से बनते हैं और जिनमें संयोग होता है उनमें वियोग भी संभव है अतः द्वयणुक अनित्य द्रव्य है।

87. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और सही कूट से सही उत्तर का चयन करें :

सूची-I	सूची-II
(A) सवितर्क	(i) जब चित्त ध्यान के सूक्ष्म विषय पर केन्द्रित हो जैसे तन्मात्र।
(B) सविचार	(ii) जब चित्त अब भी ध्यान के सूक्ष्म विषय पर केन्द्रित हो जो सुख उत्पन्न करता है जैसे इंद्रिय।
(C) सानंद	(iii) जब चित्त ध्यान के स्थूल विषय पर केन्द्रित हो।
(D) सास्मित	(iv) जब चित्त अहं पर केन्द्रित हो जिसके साथ सामान्यतया आत्मा का तादात्म्य होता है।

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(b)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(c)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

Ans. (a) : योग दर्शन में सम्प्रज्ञात समाधि की चार अवस्थाएं क्रमशः सवितर्क, सविचार, सानन्द और सास्मित।

88. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। उन पर विचार करें और बौद्ध मत के संदभ में नीचे दिए ए कूट में से सही कूट का चयन करें:

अभिकथन (A) : निर्वाण दुःखरहित नहीं हो सकता।

कारण (R) : सर्वम् दुःखम् दुःखम् ।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है। ।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं प्रस्तुत करता है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है और (R) सही है।

Ans. (d) : बौद्ध दर्शन में 'निर्वाण' की अवधारणा सभी दुःखों का नाश होने से संबंधित है और उसका प्रथम आर्य सत्य सर्वम् दुःखम् दुःखम्। अतः अभिकथन (A) गलत और कारण (R) सही है।

89. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। उन पर विचार करें और बौद्ध मत के संदर्भ में नीचे दिए गए कूट में से सही कूट का चयन करें:

अभिकथन (A) : दुनिया में कष्ट है।

कारण (R) : इसकी उत्पत्ति हमारे द्वारा नहीं की गयी है।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।
(c) (A) गलत है और (R) सही है।
(d) (A) सही है और (R) गलत है।

Ans. (d) : 'दुनिया में कष्ट है' यह कथन सत्य है परन्तु कारण (R) असत्य है क्योंकि द्वादश-निदान चक्र के अनुसार हमारा भव-चक्र में फंसना ही हमारे दुःखों की उत्पत्ति का मूल कारण है।

90. एक के सिवाय निम्नलिखित में से सभी तर्क वाक्य पूर्व-मीमांसा के प्रभाकर सम्प्रदाय से सुसंगत हैं?

(a) ज्ञान त्रिपुटी से बना है।
(b) अन्विताभिधानवाद की हिमायत
(c) एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में अनुपलब्धि की हिमायत
(d) अकारण की क्रिया के रूपमें प्रत्यक्षपरक गलती

Ans. (c) : प्रभाकर 'अनुपलब्धि' को स्वतंत्र प्रमाण के रूप में नहीं मानते हैं जबक कुमारिल जो कि प्रभाकर की तरह पूर्वमीमांसक है 'अनुपलब्धि' को स्वतंत्र प्रमाण स्वरूप मानते हैं।

91. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। उन पर विचार करें तथा सही कूट का चयन करें :

अभिकथन (A) : मध्व की राय में ब्रह्म, जो महावस्तु है, अनंत-कल्याण-गुण-परिपूर्ण है।

कारण (R) : यहाँ तक कि एक साधारण वस्तु भी गुणों से रहित नहीं हो सकती।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(b) (A) सही है और (R) गलत है लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं प्रस्तुत नहीं करता है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(d) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।

Ans. (d): मध्व जो प्रबल द्वैतवादी है। जिनका दर्शन द्वैत-वेदान्त है। प्रत्येक जगह द्वैत को स्वीकार करते हैं। प्रत्येक वस्तु को गुण सम्पन्न मानते हैं। अतः वह ब्रह्म को भी अनंत कल्याण-गुण परिपूर्ण मानते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

92. विशिष्टाद्वैत वेदांत की दृष्टि में असंगत को चिन्हित करें:
(a) मोक्ष का साधन ज्ञान-कर्म-समुच्चय है।
(b) जीवात्मा ब्रह्म के साथ एकाकार है।
(c) सत्ख्याति प्रत्यक्षपरक गलती की संतोषजनक तरीके से व्याख्या करता है।
(d) सप्तविध अनुपपत्तियों का ध्येय माया का खंडन करता है।

Ans. (b) विशिष्टाद्वैत वेदान्त के अनुसार जीवात्मा मुक्त अवस्था में ब्रह्म में विलीन नहीं होता है अर्थात् एकाकार न होकर ब्रह्म के समान उसका शुद्ध अंग बन जाता है। यहां ब्रह्म साकार सगुण है।
(भा. दर्शन -आलोचना और अनुशीलन-चन्द्रधर शर्मा)

93. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और सही कूट का चयन करें :

सूची-I	सूची-II
(A) शंकर	(i) नित्यविभूति
(B) रामानुज	(ii) विशेष
(C) मध्व	(iii) पुष्टिमार्ग
(D) वल्लभ	(iv) अध्यास

कूट :

	A	B	C	D
(a)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(b)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(d)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

Ans. (c) :

(a) शंकर	(iv) अध्यास
(b) रामानुज	(i) नित्यविभूति
(c) मध्व	(ii) विशेष
(d) वल्लभ	(iii) पुष्टिमार्ग

94. किसके अनुसार अनुपलब्धि एक स्वतंत्र प्रमाण है?
(a) रामानुज (b) मध्व
(c) कुमारिल (d) प्रभाकर

Ans. (c) : कुमारिल ने कुल छः प्रमाणों को माना है-प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि। आभाव का ज्ञान अनुपलब्धि प्रमाण से।
(भा.द. आ. और अनु. -चन्द्रधर शर्मा)

95. निम्नलिखित में से कौन जैन दर्शन को स्वीकार्य नहीं है?
(a) वास्तव एवं बहुलवाद
(b) 'द्रव्य' और 'गुण' अवियोज्य होते हैं।
(c) हम एक वस्तु को उसके सभी पहलुओं में जान सकते हैं।
(d) केवल-ज्ञान असीमित और निरपेक्ष ज्ञान है।

Ans. (c) : जैन के अनुसार हम एक वस्तु को उसके सभी पहलुओं से नहीं जान सकते हैं। उनके अनुसार वस्तु के अन्तर्गत गुण धर्म होते हैं। हम वस्तु के कुछ ही धर्मों को जान पाते हैं।

96. अम्बेडकर का सम्बंध-सिद्धांत अनिवार्यतः है:
(a) आध्यात्मिक (b) तात्त्विक
(c) प्रकृतिवादी (d) शास्त्रार्थमीमांसक

Ans. (c): अम्बेडकर संबंध सिद्धान्त अनिवार्यतः प्रकृतिवादी है।

97. निम्नलिखित में से कौन के.सी. भट्टाचार्य के वस्तु-दर्शन की दो शाखाओं के संबंधे में सही है?
(a) नीतिशास्त्र एवं तर्क
(b) धर्म एवं नीतिशास्त्र
(c) तर्क एवं तत्त्वमीमांसा
(d) भौतिकी एवं तत्त्वमीमांसा

Ans. (c) : के.सी. भट्टाचार्य के वस्तु-दर्शन (Philosophy of object) से तर्क एवं तत्वमीमांसा नामक शाखाएं संबंधित है।

98. नीचे अस्तित्व के चार सिद्धांत दिए गए हैं।
(A) परात्म-मूल सिद्धांत
(B) ब्रह्माण्डमूलक या इहलौकिक
(C) पारलौकिक
(D) पूर्ण अद्वैतवादी या सांश्लैषिक
निम्नलिखित में से किस दार्शनिक ने अपने दर्शन में उल्लेख किया है?
(a) विवेकानंद (b) के.सी. भट्टाचार्य
(c) इकबाल (d) श्री अरबिंद

Ans. (d) : श्री अरविन्द का दर्शन ही पूर्ण-अद्वैतवादी (Integral) है। जिसमें विभिन्न प्रकार का सिद्धान्त है।

99. गांधी का न्यास संबंधी मत किसके निमित्त नहीं बनाया गया था?
(a) एक नई समाज व्यवस्था बनाने के लिए
(b) लोगों के बीच प्रेम एवं त्याग को बढ़ावा देने के लिए
(c) एक व्यक्ति को ऊपर उठने के लिए हर प्रकार का अवसर देने के लिए
(d) अभिजात्य वर्ग को उनके धन से वंचित करने के लिए बल का प्रयोग करने के लिए।

Ans. (d) : गाँधी जी कभी किसी वर्ग को उसके धन से वंचित नहीं करने का विचार देते हैं। वो व्यक्ति को सम्पत्ति का स्वामी नहीं, अपितु सम्पत्ति का न्यासी मानते हैं।

100. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?

(चिंतक)	(कृति)
(a) श्री अरविंद :	दी ह्यूमन साइकल, फ्रीडम्स बैट्टल
(b) टैगोर :	लवर्स गिफ्ट एण्ड क्रॉसिंग, माई सोल्स एगोनी
(c) गांधी :	दी व्हील ऑफ फारचुन, दिल्ली डायरी
(d) राधाकृष्णन :	रिलीजन एण्ड सोसायटी, मासेज फ्रॉम द ईस्ट

Ans. (c) : गांधी- दी व्हील ऑफ फारचुन, दिल्ली डायरी।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, नवम्बर-2017
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. व्यक्ति देवऋण से मुक्त हो सकता है:

(a) ब्रह्मचर्य का पालन करके (b) यज्ञ करके
(c) मंत्रोच्चारण करके (d) संतान को जन्म देकर

Ans : (b) सन्ततिसूत्र जिस प्रकार मनुष्य पर पितृ-ऋण के रूप में है, सवाध्याय और ब्रह्मचर्य चालन के लिए ऋषि-ऋण तथा अतिथ्य सत्कार के लिए मनुष्य-ऋण है, उसी प्रकार देवों के प्रति ऋण का शोधन यज्ञों से होता है। अर्थात व्यक्ति देवऋण से मुक्त, यज्ञ करके हो सकता है।

(भा. दर्शन- डॉ नन्द किशोर देवराज)

2. वैदिक परम्परा के अनुसार खगोलीय पिंडों की गति निर्देशित होती है:

(a) ईश्वर की इच्छा से
(b) ऋत, ब्रह्माण्डीय नियम से
(c) लोगों के नैतिक सद्गुणों से
(d) प्रजापति से

Ans : (b) 'ऋत' का अर्थ 'विश्व व्यवस्था' है। 'ऋत्' से विश्वव्यस्था के नैतिक पक्ष के साथ-साथ भौतिक पक्ष अर्थात् ब्रहमाण्डीय नियम भी निर्देशित होते है। ब्रह्माण्डीय नियम, खगोलीय पिण्डों यथा सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, तारे आदि की नियमित गति एवं क्रम से 'ऋत' धारणा का उदय हुआ।

(भा. दर्शन- डॉ नन्द किशोर देवराज)

3. सूची - I के साथ सूची - II को सुमेलित कीजिए और सही कूट चुनिए:

सूची I	सूची II
(a) ऋक्	(i) उद्गाता
(b) साम	(ii) होता
(c) यजुः	(iii) अध्वर्यु
(d) अथर्व	(iv) ब्रह्मा

कूट:

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(c)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

Ans : (b) यज्ञयाज्ञादि के विधिपूर्वक अनुष्ठान के लिए चार ऋत्विजों की आवश्यकता होती है- होता; जो स्तुति -मन्त्रों के उच्चारण से देवताओं का आह्वान करता है; उद्गाता, जो मधुर स्वर में मंत्र गान करता है; अध्वर्यु, जो यज्ञ के विविध अंगों को सविधि सम्पादन करता है; तथा ब्रह्मा, जो सम्पूर्ण यज्ञ अनुष्ठान का विधिवत निरीक्षण करता है। होता के लिए ऋक-संहिता का, उद्गाता के लिए साम-संहिता का, अध्वर्यु के लिए यजु-संहिता और ब्रह्मा के लिए अथर्व संहिता का संकलन हुआ है।

(भा. द. : आलोचन और अनुशीलन - चन्दधर शर्मा)

4. वैशेषिक के अनुसार गाय में अश्वत्व के अभाव को जाना जाता है:

(a) अन्योन्याभाव (b) प्रागभाव
(c) ध्वंसाभाव (d) अत्यन्ताभाव

Ans : (a) वैशेषिक दर्शन में आभाव चार प्रकार का माना गया है- प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव और अन्योन्याभाव। अन्योन्याभाव का अर्थ है दो वस्तुओं का परस्पर भेद, जैसे घट पट नहीं है; घट में पटाभाव और पट में घटाभाव है। यह दो वस्तुओं के तादात्म्य का अभाव है। जो अनादि और अनन्त हैं यदि यह न हो तो सब वस्तुएं अभिन्न हो जायेंगी। 'गाय', अश्वत्व का अभाव होता है। तो वहां अन्योन्याभाव होगा।

(भारतीय दर्शन- आलोचना एवं अनुशीलन- चन्दधर शर्मा)

5. आत्मा के बंधन दो प्रकार के होते हैं : भावबन्धन और द्रव्यबन्धन - यह विचार है:

(a) चार्वाक का (b) जैन का
(c) सांख्य का (d) मीमांसा का

Ans : (b) जैन दर्शन में आत्मा के बन्धन का दो प्रकार माना गया है- भावबन्धन और द्रव्यबन्धन। काषाय और कर्म का उदय भावबन्धन है तथा कर्म-पुदगलों द्वारा जीव/आत्मा को आबद्ध कर लेना द्रव्यबन्धन है।

6. निम्नलिखित में से कौन वैशेशिकों को स्वीकार्य नहीं है?

(a) वेद की रचना किसी के द्वारा नहीं की गई है।
(b) तत्वज्ञान निःश्रेयस् के लिए पर्याप्त शर्त नहीं है।
(c) अभाव का प्रत्यक्ष हो सकता है।
(d) ईश्वर एक प्रकार की आत्मा है।

Ans : (a) वैशेषिक में ईश्वर की अवधारणा का स्पष्ट उल्लेख है। यहां ईश्वर को परम आत्मा कहा गया है। वैशेषिक के अनुसार वेद ईश्वर-वाक्य है। ईश्वर नित्य, सर्वज्ञ, और पूर्व है। अतः यह कथन 'वेद की रचना किसी के द्वारा नहीं की गई है। वैशेषिकों को स्वीकार्य नहीं है।

(भा.द. : आ. एवं अनु. - चन्द्रधर शर्मा)

7. निम्नलिखित कूट में से कौन सा एक चार्वाकों को स्वीकार्य है? (a), (b), (c), (d) पर विचार करते हुए उत्तर दीजिए।

(a) क्षिति और काम (b) अर्थ और पुण्य
(c) सुख और अर्थ (d) मरुत और व्योम

कूट:

(a) (a) और (b) (b) (a) और (c)
(c) (a) और (d) (d) (b) और (c)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (b) चार्वाक दर्शन में क्षिति, जल, पावक, समीर, चार महाभूत और अर्थ एवं काम को परम पुरुषार्थ मानते हुए 'सुख' को चरम लक्ष्य स्वीकार किया है। (यावज्जीवेत सुखं जीवेत।) (लोकायतमत)

8. न्याय में अपवर्ग के संदर्भ में सही क्रम का चयन कीजिए:

(a) दुःख प्रवृत्ति,दोष, जन्म, मिथ्याज्ञान
(b) मिथ्याज्ञान, दोष, प्रवृत्ति, जन्म, दुःख
(c) जन्म, दुःख, प्रवृत्ति, दोष, मिथ्याज्ञान
(d) जनम, दुःख, मिथ्याज्ञान, प्रवृत्ति, दोष

Ans : (b) न्याय दर्शन भी अपवर्ग को मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मानता है। दुःख का नित्य और निश्चित उच्छेद (विनाश) इसके कारण-मूल कारण-के उच्छेद के बिना असम्भव है। उच्छेद का प्रारम्भ क्रमशः मिथ्या-ज्ञान, दोष, प्रवृत्ति, जन्म और अन्त में दुःख का उच्छेद कर अपवर्ग की प्राप्ति होती है।

9. नैयायिकों के अनुसार निम्नलिखित में से कौन पंचावयवीन्याय का अवयव नहीं है?

(a) उदाहरण (b) उपनय
(c) उपमान (d) निगमन

Ans : (c) न्याय दर्शन में पंचावयवीन्याय के अवयव हैं क्रमशः प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन।

10. नैयायिकों के अनुसार निम्नलिखित में से कौन वाक्यार्थ ज्ञान की शर्त नहीं है?

(a) व्याकरण (b) तात्पर्य
(c) आकांक्षा (d) आसत्ति

Ans : (a) न्याय दर्शन में वाक्यार्थ ज्ञान की शर्त के रूप में क्रमशः आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि या आसत्ति तथा तात्पर्य आदि चार शर्तों का होना आवश्यक है।
(भारतीय दर्शन को समीक्षात्मक रूपरेखा -राममूर्ति पाठक)

11. निम्नलिखित अनुमान में किस प्रकार का हेत्वाभास है सही कूट चुनिए।
'पर्वतः वह्निमान नीलधूमात्'

(a) साधारण सव्यभिचार (b) स्वरुपासिद्ध
(c) व्याप्यत्वासिद्ध (d) बाधित

Ans : (c) जिस अनुमान में हेतु का साध्य के साथ व्याप्ति- सम्बन्ध अप्रामाणिक हो, उसे व्याप्यत्वासिद्ध हेतु कहते हैं। जैसे- 'पर्वत बह्निमान नीलधूमात।' अर्थात पर्वत अग्निमय है क्योंकि वहाँ नीला धुंआ है। 'नीले धुँएं' का साध्य 'अग्नि' के साथ सम्बन्ध अप्रामाणिक है।

12. नैयायिकों के अनुसार 'पदशक्ति' है:

(a) एक अतिरिक्त पदार्थ है।
(b) एक शाश्वत पदार्थ है।
(c) दो पदों के बीच संबंध हैं
(d) पद और प्रयुज्य पदार्थ के बीच का संबंध है।

Ans : (d) 'पदशक्ति' पद और प्रयुज्य पदार्थ के बीच का संबंध हैं।

13. निम्नलिखित कथनों में से कौन पातंजल योग के संबंध में सही नहीं है?

(a) ईश्वर पुरुषों में एक है।
(b) पातंजल योग तीन प्रमाणों को स्वीकार करता है।
(c) पातंजल योग एकतत्ववाद का समर्थन करता है।
(d) पातंजल योग पूर्व नैतिक प्रशिक्षण स्वीकार करता है।

Ans : (c) पातंजल योग को सांख्य की तत्वमीमांसा मान्य है। सांख्य के पच्चीस तत्वों को योग दर्शन में माना गया है। अतः पातंजलि योग एकतत्ववाद का समर्थन नहीं करता है।

14. ''चाँदी जो सीपी में दिखाई पड़ती है अवास्तविक नहीं हो सकती क्योंकि यह दिखाई पड़ती है; चाँदी वास्तविक भी नहीं हो सकती है क्योंकि जब हम सीपी को ठीक से देखते हैं तो यह वहाँ नहीं मिलती है''। यह विचार है:

(a) रामानुज का (b) ईश्वरकृष्ण का
(c) शंकर का (d) नागार्जुन का

Ans : (c) शंकराचार्य के अनिर्वचनीयख्याति वाद के अनुसार चांदी (रजत) जो सीपी में दिखाई पड़ती है, अवास्तविक नहीं हो सकती क्योंकि यह दिखायी पड़ती है; चांदी वास्तविक नहीं हो सकती है, क्योंकि जब हम सीपी को ठीक से देखते हैं तो यह वाहं नहीं मिलती है। इस तरह जो न वास्तविक हो और न ही अवास्तविक हो अथवा न वास्तविक-अवास्तविक दोनों हो और दिखाई पड़ने के कारण स्मृति का विषय भी नहीं हो तो वह सदसद्विलक्षण या अनिवर्चनीय है।

15. सूची - I और सूची - II को सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर दीजिए।

सूची I	सूची II
(a) जीवन्मुक्ति	(i) न्याय-वैशेषिक
(b) विदेहमुक्ति	(ii) पूर्व मीमांसक
(c) निःश्रेयसः	(iii) शंकर
(d) स्वर्ग	(iv) मध्व

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(b)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(c)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(d)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

Ans : (b)
जीवन्मुक्ति - शंकर
विदेहमुक्ति - मध्व
निःश्रेयसः - न्याय-वैशेषिक
स्वर्ग - पूर्व मीमांसक

16. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। उन पर विचार कीजिए और शंकर के दर्शन के संदर्भ में नीचे दिए गए सही कूट का चयन कीजिए।

अभिकथन (A) : शंकर का दर्शन जगत को पूर्णतया अस्वीकार करता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

तर्क (R) : तथ्य यह है कि एक वास्तविक बाह्य जगत है।

कूटः

(a) (A) तथा (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) गलत हैं, और (R) सही है।
(d) (A) सही है और (R) गलत हैं।

Ans : (c) शंकराचार्य अपने दर्शन में जगत की व्यावहारिक सत्ता को स्वीकार करते है। ये अलग बात है कि तथ्यात्मक रूप से यह वास्तविक बाह्य जगत है। अतः अभिकथन (A) पूरी तरह गलत है परन्तु तर्क (R) सही हैं।

17. सांख्य के अनुसार विकास का सही क्रम हैः

(a) अहंकार, मनस्, कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ, महत्
(b) ज्ञानेन्द्रियाँ, मनस्, कर्मेन्द्रियाँ, अहंकार, महत्
(c) कर्मेन्द्रियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ, मनस्, महत्, अहंकार,
(d) महत्, अहंकार, मनस्, ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ,

Ans : (d) सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति से सृष्टि में विकास क्रमशः महत् (बुद्धि) प्रथम तत्व है, उसके बाद क्रम से - अहंकार, मनस् , ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियां विकसित हुईं।

18. सांख्य दर्शन में प्रकृतिः

(a) अचेतन और आश्रित है (b) चेतन और निष्क्रिय है
(c) अचेतन और सक्रिय है (d) चेतन और स्वतंत्र है

Ans : (c) सांख्य दर्शन में द्वितीय तत्व अव्यक्त या प्रकृति है। जो जगत का मूल कारण है। यह प्रकृति पुरुष की विरुद्धधर्मी है। यह चेतनस्वरूप, त्रिगुणातीत एवं उदासीन पुरुष के विपरीत, अचेतन, त्रिगुणात्मिका और सक्रिय है।

19. मीमांसा-दर्शन में निम्नलिखित तर्क वाक्यों में कौन सही नहीं है?

(a) मीमांसा, स्वतः प्रामाण्यवाद का समर्थन करता है।
(b) आत्मा सक्रिय है।
(c) वेद अपौरुषेय है।
(d) सीप-चांदी भ्रम में प्रत्यक्षपरक त्रुटि अध्यास के कारण है।

Ans : (d) 'मीमांसा - दर्शन में अध्यास' को प्रत्यक्षपरक त्रुटि का कारण नहीं माना गया है।

20. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। उन पर विचार कीजिए और बौद्धमत के संदर्भ में सही कूट चुनिए।

अभिकथन (A) : निर्वाण क्षणिक है।

तर्क (R) : सर्वं क्षणिकं क्षणिकम्

कूटः

(a) (A) तथा (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही हैं, और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है और (R) सही हैं।

Ans : (d) सर्व क्षणिकम् क्षणिकम्, यह बौद्धों का क्षणिकवाद सिद्धान्त है। परन्तु निर्वाण तो समस्त दुःख का निरोध है। निर्वाण प्राप्त होने पर मनुष्य भव-चक्र से मुक्त हो जाता है। निर्वाण नित्य, है अतः क्षणिक धर्म नहीं।

21. सूची - I और सूची - II को सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर दीजिए।

	सूची I (लेखक)		सूची II (लेखन)
(a)	श्री अरबिन्द	(i)	फ्रीडम फ्रॉम द नोन
(b)	जे. कृष्णमूर्ति	(ii)	द रिकवरी ऑफ फेथ
(c)	के. सी. भट्टाचार्य	(iii)	स्टडीज इन वेदान्तिज्म
(d)	एस. राधाकृष्णन्	(iv)	सावित्री, ए लीजेन्ड एंड ए सिम्बल

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(b)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(c)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(d)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)

Ans : (b)

श्री अरबिन्द - सावित्री, ए लीजेन्ड एंड ए सिम्बल
जे. कृष्णमूर्ति - फ्रीडम फ्रॉम द नोन
के. सी. भट्टाचाय - स्टडीज इन वेदान्तिज्म
एस. राधाकृष्णन् - द रिकवरी ऑफ फेथ

22. अधोलिखित में से कौन श्री अरविन्द की अतिमानसिक चेतना की तीन अवस्थाओं की अवधारणा के साथ सुमेलित नहीं है?

(a) अन्तर्दृष्टी चेतना
(b) अभिमुखदृष्टी चेतना
(c) विश्लेषणात्मक चेतना
(d) प्रक्षेपणात्मक चेतना

Ans : (c) श्री अरविन्द के दर्शन में अतिमानसिक चेतना की तीन अवस्थाएं अन्तर्दृष्टी चेतना, अभिमुखदृष्टी चेतना तथा प्रक्षेपणात्मक चेतना।

23. निम्नलिखित में से किसने परमसत् को 'जीवन देवता' के रूप में सम्बोधित किया है?

(a) श्री अरविन्द (b) एस. राधाकृष्णन्
(c) बी. आर. अम्बेडकर (d) आर. एन. टैगोर

Ans : (d) रवीन्द्र नाथ टैगोर के दर्शन में 'परम् सत् ' के लिए जिन शब्दों को प्रयोग में लाया जाता है वह है- 'The Universal Man 'The Supreme Person', 'The Supreme Spirit, The Infinite Personality' - **'जीवनदेवता'** 'असीम आत्म-पुरुष', परम-पुरुष आदि।

(समकालीन भारतीय दर्शन-बी. के. लाल)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

24. निम्नलिखित में से किसने कहा है कि 'मानव के लिए दो मिलियन ईश्वरों में अंधविश्वास करने की अपेक्षा तर्क का अनुसरण करके नास्तिक बनाना श्रयेस्कर है'?

(a) गांधी (b) टैगोर
(c) विवेकानंद (d) अम्बेडकर

Ans : (c) 'मानव के लिए मिलियन ईश्वरों में अंधविश्वास की अपेक्षा तर्क का अनुसरण करके नास्तिक बनाना श्रेयस्कर है' यह कथन स्वामी विवेकानन्द का है।

25. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। उन पर विचार कीजिए और के. सी. भट्टाचार्य के संदर्भ में नीचे दिए गए सही कूट को चुनिए।

अभिकथन (A) : दर्शन के निर्णय छद्म निर्णय हैं।
तर्क (R) : सभी दार्शनिक निर्णयों में विधेय उद्देश्य में अंतर्निहित होता है।

कूटः
(a) (A) तथा (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, किन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही हैं, किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है किन्तु (R) सही हैं।

Ans : (c) के. सी. भट्टाचार्य के अनुसार दर्शन के निर्णय छद्म निर्णय है। यह उस अर्थ में निर्णय नहीं है जिस अर्थ में विज्ञान के निर्णय है। विज्ञान के निर्णयों में उद्देश्य-विधेय के सम्बन्ध कुछ सूचना देते है। लेकिन दर्शन के निर्णय सम्बन्ध-सूचक न होकर किसी का प्रतीक है। अतः अभिकथन (A) तो सही है परन्तु तर्क (R) असत्य (गलत) है।

26. निम्नलिखित में से किसका यह विचार है कि : दैवी ज्ञान सृजनात्मक है, क्योंकि कुछ भी ईश्वर - बाह्य नहीं है। वह स्वयं अपने ज्ञान का विषय है। वह जैसा जानता है, सृजन करता है, और जैसा सृजन करता है, जानता है।

(a) टैगोर (b) विवेकानंद
(c) के. सी. भट्टाचार्य (d) इक़बाल

Ans : (d) यह इकबाल का विचार है। उनका दर्शन इस्लामिक दर्शन पर आधारित है।

27. सूची - I और सूची - II को सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर दीजिए।

सूची I (चिन्तक)	सूची II (चिन्तन)
(a) एस. राधाकृष्णन्	(i) जो कहा जाए उसे प्रथमतः विश्वास योग्य होना चाहिए।
(b) विवेकानंद	(ii) मानव आत्मा की नियति सर्वशक्तिमान के साथ एकात्मता की अनुभूति होनी चाहिए।
(c) के. सी. भट्टाचार्य	(iii) असीम और ससीम उसी प्रकार एक हैं जिस प्रकार गायक और उसका गायन
(d) टैगोर	(iv) अमरत्व प्रत्येक वस्तु के साथ एकात्मता की अनुभूति में हैं।

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(b)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(c)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)

Ans : (d)

एस. राधाकृष्णन्	-	मानव आत्मा की नियति सर्वशक्तिमान के साथ एकात्मता की अनुभूति होना चाहिए।
विवेकानंद	-	अमरत्व प्रत्येक वस्तु के साथ एकात्मता की अनुभूति में हैं।
के. सी. भट्टाचार्य	-	जो कहा जाए उसे प्रथमतः विश्वास योग्य होना चाहिए।
टैगोर	-	असीम और ससीम उसी प्रकार एक हैं जिस प्रकार गायक और उसका गायन

28. संत ऑगस्टीन के अभाव के सिद्धान्त के अनुसारः

(a) ईश्वर ने सत् में से जगत की रचना की
(b) ईश्वर ने अभाव में से जगत की रचना की
(c) ईश्वर ने भाव में अशुभ की रचना की
(d) ईश्वर ने अभाव से स्वयं की रचना की

Ans : (b) संत ऑगस्टीन के 'आभाव सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर ने अभाव से सृष्टि या जगत की रचना किया हैं ऑगस्टीन का यह मत चमत्कारवाद के नजदीक है।

29. ''यदि कोई वैयक्तिक चक्रक पदार्थ नहीं है; तो ऐसा कोई भी पदार्थ नहीं होगा जिसके स्वरूप को चक्रीय कहा जाए,'' किसे मान्य हैः

(a) सुकरात
(b) प्लेटो
(c) अरस्तू
(d) संत ऑगस्टीन

Ans : (c) 'अरस्तू के अनुसार निरपेक्ष आकार और निरपेक्ष जड़ द्रव्य का इस दृश्य जगत में स्पष्ट अभाव है। यह एक सापेक्षिक अवधारणा है। यहां कोई वस्तु एक दृष्टि से द्रव्य है तो दूसरी दृष्टि से आकार है। अतः **कोई वैयक्तिक चक्रक पदार्थ न हो, तो ऐसा कोई भी पदार्थ नहीं होगा जिसका स्वरूप (आकार) चक्रीय कहा जाये।**

(पाश्चात्य दर्शन का इतिहास - प्रो. दयाकृष्ण)

30. प्लेटो की तत्त्वमीमांसा के आलोक में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट को चिन्हित कीजियेः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) जिन वस्तुओं का हम संवेदी अनुभव में सामना करते हैं वे सत्यात्मक तथ्य नहीं है।
(b) आकार को केवल बौद्धिक रूप से समझा जा सकता है।
(c) आकार किसी के मन के प्रत्यय या सम्प्रत्यय हैं।

कूटः

(a) केवल (a) सही है।
(b) केवल (a) और (b) सही हैं।
(c) केवल (a) और (c) सही हैं।
(d) (a), (b), (c) और सभी सही हैं।

Ans : (b) प्लेटो के अनुसार,
1. जिन वस्तुओं का हम संवेदी अनुभव में सामना करते हैं वे सत्यात्मक तथ्य नहीं है।
2. आकार को केवल बौद्धिक रूप से समझा जा सकता है।
3. आकार किसी के मन के प्रत्यय या सम्प्रत्यय न होकर यह वस्तुनिष्ठ रूप से सत् हैं।

31. निम्नलिखित में से किसका यह विचार है कि ''पदार्थ, पदार्थ हैं क्योंकि उनकी गणना की जा सकती है''?

(a) पाइथागोरस (b) एनेक्जिमेन्डर
(c) हेरेक्लाइट्स (d) पार्मेनाइडीज़

Ans : (a) पाइथागोरस के अनुसार जिनकी गणना की जा सकती है वह पदार्थ है। पाइथागोरस ने परम तत्व को 'संख्या' ही कह दिया। इनके द्वारा संख्या- सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया।

32. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। उन पर थॉमस एक्विनॉस के आलोक में उन पर विचार कीजिए और सही कूट पर चिन्ह लगाइये।

अभिकथन (A) : ईश्वर जगत का कारण-रहित कारण है।
तर्क (R) : कोई वस्तु जिसका अस्तित्व है, उसके अस्तित्व के कारण का अस्तित्व पहले विद्यमान होगा।

कूटः

(a) (A) तथा (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही हैं, और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है और (R) सही हैं।

Ans : (a) थॉमस एक्विनॉस के अनुसार, ईश्वर इस जगत् का कारण-रहित कारण है अर्थात् स्वयंभू कारण है। यह एक कारण-कार्य सम्बन्ध पर आधारित कथन है जिसके अनुसार प्रत्येक अस्तित्व का जो विद्यमान हो एक कारण अवश्य होता है।

33. निम्नलिखित प्रारम्भिक ग्रीक दार्शनिकों में से किसका विचार है किः
''जो नहीं है उसे आप जान नहीं सकते और न ही अभिव्यक्त किया जा सकता है, जिसका विचार किया जा सकता है और जो हो सकता है- वे समान है।''

(a) पामेनाइडीज़ (b) हेरेक्लाइटस
(c) एम्पेडोक्लीज़ (d) डेमोक्रीटस

Ans : (a) पार्मेनाइडीज के अनुसार सत् और विचार दोनों एक हैं। वह जो हमारे विचार का विषय है और वह जिसके लिए हमारे विचार का अस्तित्व है- दोनों एकरूप (समान) है। जो नहीं है उसे आप जान नहीं सकते। अर्थात् जो हमारे विचार का विषय नहीं है उसकी सत्ता भी नहीं हो सकती और जिसकी सत्ता नहीं है अर्थात् जो पूर्ण रूप से असत् है वह हमारे विचार का विषय भी नहीं हो सकता।

34. सूची - I और सूची - II को सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर दीजिए।

सूची I	सूची II
(a) एनेक्जिमेनीज़	(i) नाउस
(b) एनेक्जिमेन्डर	(ii) वायु
(c) थेलीज़	(iii) एपीरॉन
(d) एनेक्जेगोरस	(iv) जल

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(b)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(c)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(d)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

Ans : (b)
एनेक्जिमेनीज़ - वायु
एनेक्जिमेन्डर - एपीरॉन
थेलीज़ - जल
एनेक्जेगोरस - नाउस

35. निम्नलिखित कौन सा क्रम हीगेल के अनुसार 'निरपेक्ष मनस्' के अनुक्रमिक चरणों का सही प्रतिनिधित्व करता है?

(a) कल्पना, अंतर्बोध, अवधारणा
(b) धर्म, मनोविज्ञान, दर्शन
(c) कला, धर्म, दर्शन
(d) धर्म, कला, दर्शन

Ans : (c) हेगेल के अनुसार 'निरपेक्ष मनस' के अनुक्रमिक चरणों का सही क्रम- कला, धर्म, दर्शन है।

36. कान्ट के दर्शन के आलोक में सूची - I से सूची - II को सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर दीजिए।

सूची I	सूची II
(a) समस्यापरक निर्णय	(i) ताप गति का रूप है।
(b) अनन्त निर्णय	(ii) यह विष हो सकता है।
(c) अकाट्य निर्णय	(iii) मनस अविस्तारित है।
(d) स्वीकारात्मक निर्णय	(iv) प्रत्येक कार्य का कारण है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(c)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

Ans : (b)
समस्यापरक निर्णय - यह विष हो सकता है।
अनन्त निर्णय - मनस अविस्तारित है।
अकाट्य निर्णय - प्रत्येक कार्य का कारण है।
स्वीकारात्मक निर्णय - ताप गति का रूप है।

37. हाइडेगर के दर्शन के आलोक में निम्नलिखित सूची-I और सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए :

सूची I	सूची II
(a) फेनॉमेनॉ	(i) संभाव्यता
(b) भय	(ii) जो स्वयं का प्रकट करता है
(c) रेडी-टू-हैंड	(iii) मानवीय अस्तित्व का प्रकार
(d) एग्जिस्टेन्ज़	(iv) सावधानी

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(b)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(d)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)

Ans : (c)
(i) जो स्वयं को प्रकट करता है वह फेनॉमेनॉ है।
(ii) भय मानवीय अस्तित्व का प्रकार है।
(iii) सावधानी को रेडी-टू-हैंड कहा गया है।
(iv) अस्तित्व एक तरह की संभाव्यता है।

38. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। उन पर विचार कीजिए और सही कूट चुनिए।

अभिकथन (A) : गिल्बर्ट राइल के अनुसार किसी के बारे में कहना कि 'x' बुद्धिमान है, से अभिप्राय है कि

तर्क (R) : (i) यह 'x' के मनस् के बारे में एक अभिकथन है।
(ii) यह 'x' के सार्वजनिक कार्य-निष्पादन के बारे में हमारा ज्ञान है।

कूटः
(a) (A) और (R) (i), (ii) सही हैं और (R) (i), (ii) दोनों (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) सही हैं, किन्तु केवल (R) (i), (A) की सही व्याख्या है।
(c) (A) और (R) सही हैं, किन्तु केवल (R) (ii), (A) की सही व्याख्या है।
(d) (A) और (R) गलत हैं और (R) (i), (ii) (A) की सही व्याख्या नहीं है।

Ans : (a) गिल्बर्ट राइल के अनुसार किसी के बारे में कहना कि 'x' बुद्धिमान है, से अभिप्राय है कि
(i) यह 'x' के मनस् के बारे में एक अभिकथन है।
(ii) यह 'x' के सार्वजनिक कार्य- निष्पादन के बारे में हमारा ज्ञान है।
दोनों सही वाक्य है। ऐसी बाते वह अपने 'Knowing How' और 'Knowing That' सम्बन्धी विचार में कहती है।

39. नीत्शे के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
(a) जीवनोपरान्त काल्पनिक प्रतिशोध में दास नैतिकता व्यवस्थत हो जाती है।
(b) दास नैतिकता प्रामाणिक नहीं है क्योंकि यह हमेशा एक व्यवस्थित है, मूल आवेग नहीं।
(c) दास नैतिकता जो बाहर से आये हुए को या जो भिन्न है या जो स्वयं का नहीं है, को तात्कालिक रूप से स्वीकार कर लेती हैं
(d) दास नैतिकता त्याग, विलम्बन एवं निषेध की नैतिकता है।

Ans : (c) नीत्शे अपने नीति-दर्शन में समाज के दो पहलूओं की चर्चा करता है। उसके अनुसार समाज में दो तरह की नैतिकता कार्य करती है। एक दास नैतिकता और दूसरी स्वामी नैतिकता। इसी सन्दर्भ से दास नैतिकता को दुर्बल वर्ग की नैतिकता कहता है और इसे त्याग, विलम्बन और निषेध की नैतिकता कहता है। वह दास नैतिकता को प्रामाणिक भी नहीं मानता क्योंकि यह एक प्रतिशोध है, मूल आवेग नहीं। यह प्रतिशोध एक काल्पनिक प्रतिशोध है जो जीवनोपरान्त तक उसी में व्यवस्थित हो जाती हैं यह बाहर से आये हुए को या जो भिन्न है, या जो स्वयं का नहीं है तात्कालिक रूप से स्वीकार नहीं करती हैं अर्थात् तुरन्त स्वीकार करने में कठिनाई महसूस करती है।

40. विलियम जेम्स के आलोक में, निम्नलिखित में से कौन सही कथन नहीं है?
(a) जीवन उत्तरापेक्षी है- "अनिवार्य विकल्प"
(b) मिथ्या प्रत्यय वे हैं जिनका सत्यापन हम नहीं कर सकते।
(c) सिद्धान्त केवल मानव-निर्मित भाषा हैं जिसमें हम प्रकृति की आख्या लिखते हैं।
(d) सत्य प्रत्ययों की वैधता स्थापित नहीं की जा सकती है।

Ans : (d) विलियम जेम्स के अनुसार, किसी विश्वास अथवा विचार की सत्यता की परीक्षा करने के लिए यह देखना चाहिए कि उसके सत्य होने से हमारे व्यवहारिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। सत्यता का अर्थक्रियावादी सिद्धान्त सत्य प्रत्ययों की वैधता स्थापित करने से सम्बन्धित है वह प्रत्यय शुभ एवं सत्य है जो फलोत्पादक हैं।

41. हुसर्ल के अनुसार फेनॉमिनॉलॉजी निम्नलिखित में से किस दृढ़ विश्वास पर निर्भर है?
(a) अर्थ केवल मनस् में होता है।
(b) अर्थ केवल जगत में होता है।
(c) अर्थ न तो मनस में है और न ही जगत में
(d) अर्थ मनस और जगत के बीच साभिप्राय संबंध में होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) हुसर्ल के अनुसार अर्थ मनस और जगत के बीच साभिप्राय संबंध में होता है। वास्तव में हुसर्ल की फनोमेनोलॉजी जगत् के मूल आद्य अर्थों की खोज है। हुसर्ल के अनुसार हमारी चेतना अनिवार्यतः विषयोन्मुख चेतना हैं वह ब्रेन्टानों के विषयपेक्षा सिद्धान्त से प्रभावित है।

42. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। उन पर विचार कीजिए और सही कूट चुनिए।

अभिकथन (A) : कान्ट के अनुसार, यद्यपि हम प्रत्यक्षतः परमार्थ का अनुभव नहीं कर सकते, अतींद्रिय- प्रत्यय की विशेष श्रेणी फेनॉमिनॉ और नॉमेनॉ, के बीच सेतु का कार्य करती है।

तर्क (R) : (i) प्रत्ययों को अतींद्रिय कहा जाता है क्योंकि वे केवल तर्क बुद्धि की उपज होते हैं और न कि मनस् की संवेदन के साथ अन्तर्क्रिया का परिणाम है।
(ii) वे सर्वप्रथम अनुभव से 'एकीकृत कर देते है' या 'संभव बना देते हैं'।

कूटः
(a) (A) और (R) (i), (ii) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) (i), सही हैं, और केवल (R) (i), (A) की सही व्याख्या है।
(c) (A) और (R) (ii) सही हैं, और केवल (R) (ii), (A) की सही व्याख्या है।
(d) (A) और (R) (i), (ii) दोनों गलत हैं और (R) (A) की सही व्याख्या नहीं प्रदान करता है।

Ans : (a) कांट अपनी पुस्तक 'क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन' में अतीन्द्रिय प्रत्ययवाद' की स्थापना करता है। वह परमार्थ या स्वलक्षण वस्तुओं और आभास या अनुभूत ज्ञान में भेद करता हैं उसके अनुसार परमार्थ अनुभव नहीं किया जा सकता है। इन्हें संवेदनाओं के स्रोत के रूप में जाना जाता हैं जो स्वतः असंबंध हैं। अतीन्द्रिय प्रत्ययों की विशेष श्रेणी फेनॉमिना (परमार्थ) और नॉमेना (व्यवहार) के बीच सेतु का कार्य करती है। काण्ट में अपने दर्शन में तर्कबुद्धि (Reason) से उत्पन्न प्रत्ययों को अतीन्द्रिय माना है। क्योंकि संवेदना से उत्पन्न नहीं है।
इसतरह (A) और (R) (i), (ii) दोनों सत्य है और (R) (A) की सही व्याख्या है।

43. सूची - I और सूची - II को सुमेलित कीजिए और निम्नलिखित में से सही कूट चिन्हित कीजिए:

सूची I	**सूची II**
(a) इपॉकी	(i) विषयापेक्षी चेतना
(b) आइडॉस	(ii) आनुभविक और तत्वमीमांसीय प्राक्कल्पनाओं का स्थगन
(c) अंतर्बोध	(iii) अपरिवर्ती संरचना
(d) नोएसिस	(iv) निष्क्रिय संभावनाओं का सक्रिय पुनःस्वामित्व और एक ही बार में उनका पुनरेकीकरण करना।

कूटः

	(a)	**(b)**	**(c)**	**(d)**
(a)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(b)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(c)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(d)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

Ans : (d)
इपॉकी - आनुभविक और तत्वमीमांसीय प्राक्कल्पनाओं का स्थगन
आइडॉस - अपरिवर्ती संरचना
अंतर्बोध - निष्क्रिय संभावनाओं का सक्रिय पुनःस्वामित्व और एक ही बार में उनका पुनरेकीकरण करना।
नोएसिस - विषयापेक्षी चेतना

44. नीचे दिए गए चिंतन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कूट सही है? (a), (b), (c) और (d) पर विचार करते हुए उत्तर दीजिए:
चिन्तन : "...... मनस् और शरीर, विस्तार और चिन्तन, एकल सर्वसमावेशी यथार्थ के अनेक अपृथक पहलुओं के दो अंश हैं। द्रव्य के सह-अस्तित्व होने के कारण चिन्तन और विस्तार में अन्तर्क्रिया नहीं हो सकती"।
(a) देकार्त (b) लाइबनिट्ज
(c) स्पिनोजा (d) बर्कले

कूटः
(a) स्पिनोजा (b) बर्कले और देकार्त दोनों
(c) लाइबनिट्ज (d) स्पिनोजा और बर्कले दोनों

Ans : (a) स्पिनोजा के अनुसार, मनस् और शरीर, विस्तार और चिन्तन एक सर्वसमावेशी यथार्थ के अनेक अपृथक पहलुओं के दो अंश हैं। द्रव्य के सह - अस्तित्व होने के कारण चिन्तन और विस्तार में अन्तर्क्रिया नहीं हो सकती। बशर्ते डेकार्ट ने विस्तार और विचार, मनस् और शरीर को एक दूसरे से पृथक स्वतंत्र द्रव्य मान लिया है इसलिए उनमें अंतर्क्रिया का प्रश्न ही नहीं उठता। इसीलिए स्पिनोजा समानान्तरवाद की स्थापना करता है। और द्रव्यों के द्वैतवाद का निराकरण करके दो समानान्तर गुणों के द्वैत को स्वीकार करता है।

45. लाइबनिट्ज के लिए चिदणु हैं:
(a) केवल अविभाज्य और आध्यात्मिक
(b) केवल अविभाज्य और स्व-क्रियाशील
(c) केवल स्व-क्रियाशील और भौतिक
(d) अविभाज्य, स्व-क्रियाशील और आध्यात्मिक

Ans : (d) लाइवनित्ज के चिदणु निरवयव, सरल, अविभाज्य अविनाशी और आध्यात्मिक हैं इन्ही के माध्यम से सम्पूर्ण सृष्टि की रचना हुई है।
(पा. द. का उद्भव और विकास- डॉ. हरिशंकर, उपाध्याय)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

46. सूची-I और सूची-II को सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर दीजिए:

सूची I	सूची II
(a) ह्यूम	(i) कारण-कार्य-संबंध का विचार अनिवार्यरूप से एकरूपता से नहीं जुड़ा है।
(b) लॉक	(ii) ईश्वर आत्माओं और वस्तुओं का वास्तविक कारण हैं।
(c) बर्कले	(iii) आत्मा का शरीर से संबंध पायलट और उसके मशीन के साथ संबंध की तरह का है।
(d) देकार्त	(iv) सतत संयोजन का अतीत अनुभव

कूट:

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(b)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(c)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(d)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)

Ans : (b)

ह्यूम - सतत संयोजन का अतीत अनुभव

लॉक - कारण-कार्य-संबंध का विचार अनिवार्यरूप से एकरूपता से नहीं जुड़ा है।

बर्केले - ईश्वर आत्माओं और वस्तुओं का वास्तविक कारण हैं।

देकार्त - आत्मा का शरीर से संबंध पायलट और उसके मशीन के साथ संबंध की तरह का है।

47. निम्नलिखित में से कौन-सा कूट जॉन लॉक के लिए स्वीकार्य हैं? (a), (b), (c) और (d) पर विचार कर उत्तर दीजिए:

(a) प्रत्ययों की सहमति ज्ञान है।

(b) संवेदनों की सहमति ज्ञान है।

(c) प्रत्ययों की सहमति या असहमति ज्ञान है।

(d) संवेदनों की सहमति या असहमति ज्ञान है।

कूट:

(a) (d) और (c)

(b) (d) और (a)

(c) (c) और (a)

(d) (a) और (b)

Ans : (c) लॉक के अनुसार हमारा ज्ञान प्रत्ययों की सहमति या असहमति पर निर्भर करता हैं अत: विकल्प (c) सत्य है।

48. निम्नलिखित में से कौन-सा कूट स्पिनोजा के लिए स्वीकार्य है? (a), (b), (c) और (d) पर विचार कर उत्तर दीजिए :

(a) स्वोत्पादक सत्ता के रूप में प्रकृति को नेचुरा नेचुरान्स कहा जाता है।

(b) स्वोत्पादक सत्ता के रूप में प्रकृति को नेचुरा नेचुराटा कहा जाता है।

(c) रचनात्मक उत्पाद के इसके पहलू में प्रकृति को नेचुरा नेचुराटा कहा जाता है।

(d) इसके स्थिर पहलू में प्रकृति को नेचुरा नेचुरान्स के रूप में जाना जाता हैं

कूट:

(a) (a) और (b)

(b) (a) और (c)

(c) (a) और (d)

(d) (b) और (d)

Ans : (b) स्पिनोजा ईश्वर के तीन रूपों का उल्लेख अपने दर्शन में करता है- 1. कार्य-प्रकृति (नेचुरा-नेचुराटा) 2. कारण प्रकृति (नेचुरा-नेचुरान्स) 3. पररूप (एन्स अब्सॉल्यटम इन्डिटर मिनेरम) 'Natura Naturata' यह ईश्वर का विश्वरूप है इसे द्रव्य के विकारों का जगत कहा जाता है। यहाँ रचनात्मक उत्पाद का पहलू है। यह निम्नरूप है। 'Natura Naturans' यह ईश्वर का विश्वात्मरूप है। यह स्नोत्पादक सत्ता के रूप में है। यह वस्तुओं का सार्वभौम सिद्धान्त है। यह सक्रिय प्रकृति भी है। यह बुद्धि का स्तर है।

49. बर्कले के दर्शन में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही नहीं है?

(a) भौतिक वस्तुएँ नहीं है।

(b) हम जिन्हें वस्तुएँ कहते हैं वे केवल प्रत्यय हैं।

(c) ईश्वर हममें प्रत्ययों का सृजन करता हैं।

(d) उड़ने वाले अश्वों के प्रत्यय हैं।

Ans : (d) बर्कले के अनुसार भौतिक वस्तुएं नहीं हैं जो कुछ भी है सब कुछ प्रत्यय है। ईश्वर हममे प्रत्ययों का सृजन करता है। लेकिन बर्कले उड़ने वाले अश्वों के प्रत्ययों को नहीं मानता है।

50. श्री अरविंद के दर्शन के संबंध में विकास की प्रक्रिया का सही क्रम चुनिए:

(a) विस्तारीकरण, उच्चीकरण, समाकलन

(b) उच्चीकरण, विस्तारीकरण, समाकलन

(c) उच्चीकरण, समाकलन, विस्तारीकरण

(d) समाकलन, उच्चीकरण, विस्तारीकरण

Ans : (a) श्री अरविन्द के अनुसार विकास की प्रक्रिया में तीन प्रक्रियाएं समाविष्ट है। प्रथम स्तर 'विस्तारीकरण' की प्रक्रिया है। यह किसी स्तर के अस्तित्ववान रूपों को समेटना है, उसे अपने पूर्णतया विस्तृत रूप में व्यक्त होना है। द्वितीय, 'उच्चीकरण,' है जिसमें विकास- प्रक्रिया उच्चतर रूपों की ओर उन्मुख होती है। इस उच्चत्व की ओर उठने में किसी रूप के निषेध का प्रश्न नहीं। अन्त में पूर्णीकरण या समाकलन हैं यह निम्नतर रूपों को समेटती है और उच्चतर बनाती है।

(भारतीय दर्शन की समीक्षात्म रूपरेखा : राममूर्ति पाठक)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, नवम्बर-2017
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. वैशेषिक के अनुसार अतीत और वर्तमान के अवबोध का कारण है:
(a) आकाश (b) दिक्
(c) काल (d) मनस्

Ans : (c) वैशेषिक दर्शन में 'काल' को नौ द्रव्यों में से एक द्रव्य माना गया है। काल एक, नित्य और विभु है। वस्तुतः यह अखण्ड है परन्तु व्यवहार में इनके खण्डों की कल्पना कर ली जाती है। काल के कारण **अतीत (भूत), वर्तमान, भविष्य का ज्ञान होता है**, ज्येष्ठ और कनिष्ठ का व्यवहार होता है एवं वस्तुओं की एककालता, भिन्नकालता, दीर्घकालता, तथा अल्पकालता सिद्ध होती है।
(भारतीय दर्शनः आलोचन और अनुशीलन- चन्द्रधर शर्मा)

2. रामानुज के अनुसार अपृथक-सिद्धि निम्नलिखित में से किस के बीच का सम्बंध हैं :
(a) केवल जीव और जगत के
(b) केलव जीव और ब्रह्म के
(c) केवल जगत और ब्रह्म के
(d) एक ओर ब्रह्म और जीव के बीच और दूसरी ओर ब्रह्म और जगत के बीच

Ans : (d) रामानुज, आचार्य शंकर के अभेदसूचक दृष्टि का खण्डन करते हैं और विशिष्ट अभेद पर बल देते है। उनके अनुसार जीव स्वरूपतः ब्रह्म से भिन्न है, किन्तु **ब्रह्म एवं जीव में अपृथकसिद्ध** सम्बन्ध है। **इसके अतिरिक्त ईश्वर का जगत के साथ भी अपृथकसिद्ध सम्बन्ध है।** वस्तुतः ईश्वर, चित् और अचित् की अपृथकसिद्ध एकता ही रामानुज का ब्रह्म है।
(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखाः राममूर्ति पाठक)

3. वैशेषिकों के अनुसार द्वयअणुक का असमवायीकारण क्या है?
(a) परमाणु (b) परमाणु का परिमाण
(c) परमाणु संयोग (d) ईश्वर

Ans : (c) जो समवायि कारण से निकट सम्बन्ध रखता है तथा जिसमें कारण का सामान्य लक्षण घटित होता, वह असमवायि कारण है। यह वह गुण या कर्म है जो समवायि कारण में समवाय सम्बन्ध से रहते हुए कार्योत्पत्ति में सहायक होने से कारण कहा जाता है। जैसे 'परमाणु संयोग' द्वयअणुक का असमवायि कारण है क्योंकि वह परमाणुओं में समवाय सम्बन्ध से रहता है।
(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखाः राममूर्ति पाठक)

4. वैशेषिकों के अनुसार सत्ता सामान्य निम्नलिखित में से किसमें है?
(a) केवल द्रव्य, और गुण कर्म में
(b) केवल द्रव्य, गुण, कर्म और सामान्य में
(c) केवल गुण और कर्म में
(d) केवल द्रव्य और गुण में

Ans : (a) वैशेषिक के अनुसार, 'सामान्य एक नित्य पदार्थ है जो एक होते हुए भी अनेक विशिष्ट वस्तुओं में विद्यमान रहता है।' वैशेषिक दर्शन सामान्य की स्थिति द्रव्य, गुण और कर्म पदार्थो में मानता है। वह अन्य चारों पदार्थों सामान्य, विशेष समवाय और अभाव में सामान्य की उपस्थिति को अस्वीकार करता है।
(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखाः राममूर्ति पाठक)

5. निम्नलिखित में से कौन सा मूर्तद्रव्य नहीं है?
(a) मरूत् (b) मनस्
(c) आत्मन् (d) क्षिति

Ans : (c) क्षिति, जल, पावक, और मरूत् ये मूर्त तत्व है अतः यह मूर्तद्रव्य है। मनस् एक आन्तरिक इन्द्रिय है। जो अणुरूप है। आत्मा नित्य एवं विभु है तथा अमूर्त द्रव्य है।

6. निम्नलिखित में से किस प्रारंभिक यूनानी दार्शनिक ने आभास और सत् को सतत परिवर्तन के आभासित स्थायित्व और निरन्तर परिवर्तन की प्रच्छन्न वास्तविकता में अंतर के रूप को निरूपित किया है।
(a) हेरेक्लाइटस (b) एनेक्जेगोरस
(c) एम्पेडोक्लीज (d) डेमोक्रीट्स्

Ans : (a) हेराक्लाइट्स ने संभूति के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार, परिवर्तन ही सत् है। स्थिरता और अभेद मिथ्या हैं, भ्रामक है। उसके परिवर्तन सिद्धान्त के अनुसार "एक ही नदी में हम गोता लगाते भी है और नहीं भी लगाते हैं क्योंकि वह निरन्तर प्रवाहित हो रही है। उसका आभास और सत् सम्बन्धित परिवर्तन सिद्धान्त सापेक्षता का द्योतक है। स्थायित्व आभास है और परिवर्तन सत् है।
(पाश्चात्य दर्शन का इतिहास -1 प्रा. दयाकृष्ण)

7. लॉक के दर्शन के आलोक में निम्नलिखित अभिकथनों पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिएः
(a) प्राथमिक गुण वे संवेदी गुण हैं जो प्रत्यक्षकर्त्ता पर निर्भर होते हैं।
(b) प्राथमिक गुण रंग, ध्वनि, स्वाद और स्पर्श का विषय होते हैं।
(c) गौण-गुण वे गुण होते हैं जिनका अस्तित्व प्रत्यक्षकर्त्ता से स्वतंत्र होता है।
(d) प्राथमिक गुण वस्तुओं के वस्तुनिष्ठ गुणधर्म होते हैं जबकि द्वितीयक गुण व्यक्तिनिष्ठ गुणधर्म होते हैं।

कूटः
(a) केवल (a) और (b) सत्य हैं।
(b) केवल (b) और (c) सत्य है।
(c) केवल (c) और (d) सत्य है।
(d) केवल (d) सत्य है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) प्राथमिक गुण अथवा मूल गुण बाह्य वस्तुओं में पाये जाते हैं तथा वस्तुनिष्ठ और अनिवार्य होते हैं। प्रागमिक गुण घनत्व, विस्तार, आकार, आकृति, गति, विराम, संख्या आदि हैं। द्वितीयक गुण अथवा उपगुण, मूलगुणों से उत्पन्न व्यक्तिनिष्ठ गुणधर्म होते है। उदाहरण- रंग, स्वाद, गन्ध, शीतलता उष्णता इत्यादि।

(पाश्चात्य दर्शन का इतिहास-2 प्रो. दयाकृष्ण)

8. देकार्तीय-द्वैत के अनुसार मानव निम्नलिखित का मिश्रितरूप है:

(a) मूर्त और अमूर्त द्रव्य जो अलग-अलग नियमों से संचालित होते हैं।
(b) मूर्त द्रव्य जो समान प्रकार के नियमों से संचालित होते हैं।
(c) अमूर्ति द्रव्य जो अलग-अलग नियमों से संचालित होते हैं।
(d) अमूर्त और मूर्त दोनों द्रव्य जो समान प्रकार के नियमों से संचालित होते हैं।

Ans : (a) डेकार्ट के अनुसार, आत्मा, विचारशील अमूर्त है और अनात्मा, विस्तारयुक्त मूर्त द्रव्य है। चेतन आत्मा और अचेतन जड़ तत्व अपनी सत्ता के लिए एक दूसरे पर निर्भर नहीं है। अर्थात् डेकार्ट द्वैतवाद, मानव को दो अलग-अलग मूर्त और अमूर्त द्रव्यों का मिश्रण है जिनका गुण क्रमशः विस्तार और चिंतन करना है, एक दूसरे से पूर्णतया स्वतन्त्र, अलग-अलग नियमों से संचालित, ईश्वर नामक द्रव्य पर निर्भर है।

(पाश्चात्य दर्शन का उद्भव एंव विकास- प्रो. हरिशंकर उपध्याय)

9. प्लेटो के लिए कोई व्यक्ति हो सकता है:

(a) इन्द्रियगोचर वस्तु जिसके संबंध में प्रत्यक्ष द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
(b) बिम्ब जिसके बारे में प्रत्यक्ष द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
(c) इन्द्रियगोचर वस्तु जिसके बारे में तर्क द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
(d) इन्द्रिगोचर वस्तु जिसके बारे में कल्पना द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता हैं।

Ans : (a) 'An Individual' (कोई व्यक्ति) अर्थात् एक विशेष इन्द्रियगोचर वस्तु है जिसका ज्ञान प्रत्यक्ष द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। सभी विशेष मनुष्य एक पूर्ण एवं सामान्य मनुष्य की अपेक्षा अपूर्ण हैं। पूर्ण एवं सामान्य मनुष्य का प्रत्यय अतीन्द्रिय है। जिसका ज्ञान बुद्धि द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। अर्थात् एक व्यक्ति सामान्य सत्ता न होकर, एक विशेष है और प्लेटों के दर्शन में विशेषों का ज्ञान इन्द्रियानुभव के द्वारा होता है।

10. प्लेटो के अनुसार निम्नलिखित में से किसे 'सम्मति' के अंतर्गत रखा जा सकता है?

(a) कुर्सी का विश्वास (b) कुर्सीपन
(c) कुर्सी का कालापन (d) कुर्सी का सफेदीपन

Ans : (a) प्लेटो के अनुसार सम्मति (opinion), विश्वास का ही एक रूप है। कुर्सी का विश्वास 'सम्मति' के अंतर्गत ही रखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त ज्ञान बौद्धिक विश्वास और सत्य मत से भिन्न होता है।

(पाश्चात्य दर्शन का इतिहास-1, प्रो. दयाकृष्ण)

11. निकोमेकियन नीतिशास्त्र के अनुसार व्यावहारिक प्रज्ञा से तात्पर्य है:

(a) व्यावहारिक ज्ञान (b) मुख्य सद्गुण
(c) स्वाभाविक उत्कृष्टता (d) प्रसन्नता

Ans : (b) 'Phronesis' (व्यावहारिक प्रज्ञा) एक प्राचीन ग्रीन शब्द है जो एक Wisdome अथवा Intelligence (ज्ञान) का प्रकार है। यह एक 'व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित है।

12. ''मन, कारणता और अनिवार्यता के भावों का सृजन करता हैं; हम उसे देख नहीं पाते है'' यह कथन निम्नलिखित में से किस आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिक का हैं।

(a) मिल (b) ह्यूम
(c) डेकार्ट (d) लॉक

Ans : (b) ह्यूम अपने संशयवाद में कारण - कार्य संबंन्धों की अनिवार्यता का खण्डन करते है। ह्यूम के अनुसार कारण-कार्य संबंधों पर आरोपित अनिवार्यता वास्तविक नहीं है, यह मनोवैज्ञानिक भावना है। ह्यूम के अनुसार, ''मन, कारणता और अनिवार्यता के भावों का सृजन करता है; और हम उसे देख नहीं पाते।''

(पाश्चात्य दर्शन का इतिहास-II प्रो. दयाकृष्ण)

13. विलियम जेम्स के व्यवहारवाद के संदर्भ में निम्नलिखित अभिकथनों पर विचार कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) सत्य की सार्वभौमिक धारणा अस्वीकार की जाती है।
(b) ज्ञान संदर्भ रहित है।
(c) सत्य एक विचार है।

कूट:

(a) केवल (a) सत्य है
(b) केवल (a) और (c) सत्य है
(c) केवल (b) सत्य है
(d) केवल (b) और (c) सत्य है

Ans : (b) विलियम जेम्स के व्यवहारवाद के संदर्भ में-
1. 'सत्य' विचार तथा विश्वास का लक्षण है।
2. 'सत्यता' किसी ज्ञान या तत्व का कोई निश्चित - वस्तुनिष्ठ रूप नहीं है।
3. यदि सत्य का मापदण्ड सुकार्यता है तो यह हवा में निर्धारित नहीं होती- किसी परिस्थिति में, किसी **विशेष सन्दर्भ में निर्धारित होती है।**

(समकालीन पाश्चात्य दर्शन- बसन्त कुमार लाल)

14. निम्नलिखित में से किस पाश्चात्य दार्शनिक के अनुसार 'सत्य व्यक्तिनिष्ठ स्थिति है न कि वस्तुनिष्ठ'।

(a) किर्केगार्ड (b) ह्यूम
(c) कांट (d) विलियम जेम्स

Ans : (a) सोरेन किर्केगार्ड जो कि ईश्वरवादी अस्तित्ववाद के पोषक हैं। उनके अनुसार 'सत्य व्यक्तिनिष्ठ स्थिति है न कि वस्तुनिष्ठ'। उनके अनुसार सत्य आत्मीयता है (Truth is subjectivity) कर्कगार्ड के अनुसार, ''सत्य प्रबलरूप में भावनात्मक आन्तरिकता के आत्मीकरण-प्रक्रिया के दृढ़ावलम्बन में जकड़ी हुई वस्तुनिष्ठ अनिवश्चयता है।''

(स. पाश्चात्य दर्शन : बसन्त कुमार लाल)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

15. ह्यूम के अनुसार 'आत्मा' है:

(a) स्थिर विषय (b) स्थिर भौतिक सत्ता
(c) अटल तादात्म्य रहित (d) अटल तादात्म्य सहित

Ans : (c) ह्यूम आत्मा को संस्कारों एवं प्रत्ययों अथवा परिवर्तनशील चित्तवृत्तियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं मानते है। परिवर्तनशील संस्कारों एवं प्रत्ययों के तीव्र और अविच्छिन्न प्रवाह के कारण आत्मा की एकता का भ्रम पैदा हो जाता है। ह्यूम ने आत्मा को अटल प्रादात्म्य रहित माना है।

16. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

(a) सांख्य के अनुसार शब्द, विशेष को अभिव्यंजित करता है।
(b) कुमारिल के अनुसार शब्द, विशेष का अभिव्यंजित नहीं करता है।
(c) प्रारंभिक-मीमांसकों के अनुसार शब्द का अर्थ आकृति है।
(d) नैयायिकों के अनुसार शब्द का अर्थ जाति नहीं है।

Ans : (d) नैयायिको के शब्द से हमें व्यक्ति, उसकी आकृति तथा उसकी जाति तीनों की अलग-अलग मात्रा में जानकारी मिलती है।

17. भारतीय तर्क शास्त्र में वाच्यार्थ का निम्नलिखित में से क्या तात्पर्य नहीं है :

(a) अभिधेयार्थ (b) मुख्यार्थ
(c) व्यंगार्थ (d) शक्यार्थ

Ans : (c) वाच्यार्थ का तात्पर्य अभिधेयार्थ, मुख्यार्थ और शक्यार्थ है।

18. निम्नलिखित में से किस दर्शन के अनुसार प्रमा की सत्यता को ''अबाधितार्थ विषयकत्व'' माना जाता है?

(a) चार्वाक (b) जैन
(c) अद्वैत (d) सांख्य

Ans : (c) प्रमा की परिभाषा अद्वैत वेदान्त दर्शन में यह है: अनधिगत (अज्ञात), अबाधित अर्थ-विषयक ज्ञान (अबाधितार्थ विषयकत्व) प्रमा है। जिस ज्ञान का विषय दूसरे ज्ञान से बाधित हो जाये वह ज्ञान प्रमा नहीं, अप्रमा है। स्मृति ज्ञान से भिन्न प्रमा को रखा गया है।

(भा. दर्शन- डॉ. नन्द किशोर देवराज)

19. 'नाम और सामान्य-अवधारणा, हमारी कल्पना द्वारा प्रदान किए जाते है, इस मत का प्रतिपादन निम्नलिखित में से किस दर्शन द्वारा किया गया है?

(a) अद्वैत (b) बौद्ध
(c) नैयायिक (d) वैशेषिक

Ans : (b) बौद्धों का सामान्य सम्बन्धित सिद्धान्त 'अपोहवाद' कहलाता है। जिसके अनुसार, नाम और जाति (सामान्य) अवधारणा, हमारी कल्पना द्वारा प्रदान किये जाते हैं। अर्थात् सामान्य की सत्ता वास्तविक न होकर काल्पनिक हैं।

20. निम्नलिखित में से कौन-सा ख्याति का सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि ''ख्याति आंशिक और अपूर्ण दो प्रकार के ज्ञान के बीच अंतर का बोध न हो पाना है''।

(a) विपरीत ख्याति (b) अख्याति
(c) यथार्थ ख्याति (d) अन्यथा ख्याति

Ans : (b) प्रभाकर के अनुसार, अयथार्थ या मिथ्याज्ञान के रूप में भ्रम सम्भव नहीं है। जिसे हम भ्रम कहते है वह आंशिक और अपूर्ण ज्ञान के दो प्रकारों में अन्तर का बोध न हो पाना है। सारा ज्ञान यथार्थ होता है परन्तु अपूर्ण होता है। प्रभाकर के इस मत को अख्यातिवाद कहते है।

(भा. दर्शन : आलोचन एवं अनुशीलनः चन्द्रधर शर्मा)

21. उपमान को प्रत्यभिज्ञा के स्वरूप में निम्नलिखित में से किस के द्वारा माना जाता है?

(a) जैन (b) सांख्य
(c) वैशेषिक (d) नैयायिक

Ans : (a) जैन दर्शन में तीन प्रकार के प्रमाणों को माना गया है- प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द। उपमान को प्रत्यभिज्ञा नामक परोक्ष ज्ञान के रूप में माना जाता है। प्रत्यभिज्ञा का सम्बन्ध प्रायः पहचान से है। यह ज्ञान वस्तुओं के परस्पर सादृश्य से उत्पन्न होता है।

22. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए सही कूट का चयन कीजिए:

अभिकथन (A) : अद्वैतवादी केवल 'अन्वयी' अनुमान को स्वीकार करते हैं परंतु 'केवलान्वयी' अनुमान को स्वीकार नहीं करते हैं।

तर्क (R) : इससे निकाला जाने वाला निष्कर्ष गैर-अस्तित्व के विपरीत नहीं होना चाहिए।

कूटः

(a) (A) तथा (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) गलत हैं, और (R) सही है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

Ans : (a) अद्वैत वेदान्त दर्शन में छः प्रमाण- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, और अनुपलब्धि को मानता है। अनुमान परोक्ष प्रमाण है। अद्वैत वेदान्त केवल एक ही अनुमान स्वीकार करता है वह है- अन्वयिरूप। अद्वैत वेदान्त न्याय दर्शन के केवलान्वयि, केवल व्यतिरेकी और अन्वय-व्यतिरेकी अनुमानों को अस्वीकार करता है।

(भा. दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा- राममूर्ति पाठक)

23. अद्वैत वेदान्त के अनुसार अंतःकरणवृत्ति का अर्थ है:

(a) मन की ज्ञानात्मकम विधि
(b) मन की भावात्मक विधि
(c) मन की क्रियात्मक विधि
(d) उपरोक्त सभी

Ans : (a) विषय के आकार के रूप में परिणत होना अन्तःकरण वृत्ति कहलाता है। यह वृत्ति इन्द्रिय और विषय से सन्निकर्ष की अपेक्षा करती है; इस अन्तःकरण की वृत्ति को **उपचारवश ज्ञान** कहते है। (वृत्तौज्ञानत्वोपचारात् - विवरणे)। यह मन की ज्ञानात्मक विधि है। अद्वैत मत में मन, बुद्धि आदि को अन्तःकरण ही माना गया है।

24. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए सही कूट का चयन कीजिए:

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

अभिकथन (A) : अद्वैत के अनुसार वस्तु का प्रत्यक्ष प्रमातृ-चैतन्य को अनुभूत नहीं होता।

तर्क (R) : जो प्रत्यक्ष-गत नहीं हुआ वह अज्ञान से आच्छादित होता है।

कूटः

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) सही है परंतु (R) गलत है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) गलत हैं, और (R) सही है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

Ans : (c) वृत्ति की मध्यस्थता से विषयावच्छिन्न चैतन्य या विषय चैतन्य और प्रभात-चैतन्य में तादात्म्य स्थापित हो जाता है। अर्थात् विषय या वस्तु की प्रत्यक्षता का अर्थ है उस विषय का (घट का) अपने आकारवाली वृत्ति की उपाधि वाले प्रमात् - चैतन्य की सत्ता से पृथक सत्ता- पाला न रह जाना। प्रत्यक्ष में एक तरह की योग्यता अपेक्षित है। अर्थात जो प्रत्यक्षगत नहीं हुआ वह अज्ञान से आच्छादित है।

(भारतीय दर्शन - डॉ. नन्द किशोर देवराज)

25. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग सही उत्तर का चयन कीजिए।

सूची I	सूची II
(a) साक्षात्प्रतीतिःप्रत्यक्षम्	i. दिङ्नाग
(b) विशेषावधारण-प्रधान-प्रत्यक्षम्	ii. गंगेश
(c) प्रत्यक्ष-कल्पनापोढ़म ज्ञानम्	iii. प्रभाकर
(d) ज्ञानाकरणकम् ज्ञानं प्रत्यक्षम्	iv. योग

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	i	iv	iii
(c)	iii	iv	i	ii
(d)	iv	iii	ii	i

Ans : (c)

साक्षात्प्रतीतिःप्रत्यक्षम्	-	प्रभाकर
विशेषावधारण-प्रधान-प्रत्यक्षम्	-	योग
प्रत्यक्ष-कल्पनापोढ़म ज्ञानम्	-	दिङ्नाग
ज्ञानाकरणकम् ज्ञानं प्रत्यक्षम्	-	गंगेश

26. लोकसंग्रह निम्नलिखित में से किस के लिए है?

(a) पीड़ितों के लाभ के लिए
(b) पूर्वजों के लाभ के लिए
(c) जनसमूह के लाभ के लिए
(d) कुछ लोगों के लाभ के लिए

Ans : (c) गीता का लोकसंग्रह का आदर्श प्रागैतिहासिक काल से ही राज्य के लोककल्याणकारी स्वरूप की याद दिलाता है। गीता पुरुषोत्तम एवं मुक्तात्माओं को लोककल्याण हेतु प्रयासरत दिखाकर मानवमात्र को लोककल्याण हेतु प्रेरित करती है। लोकसंग्रह के लिए स्थितप्रज्ञ एक, आदर्श पुरुष है, जो जनसाधारण के कल्याण के लिए कार्य करता है परन्तु बन्धनों में नहीं पड़ता है।

(भारतीय दर्शन समीक्षात्मक रूपरेखा : राममूर्ति पाठक)

27. निम्नलिखित में से कौन-सा त्रिरत्न नहीं है?

(a) सम्यक् ज्ञान (b) सम्यक् कर्मांत
(c) सम्यक् दर्शन (d) सम्यक् चरित्र

Ans : (b) जैन दर्शन में **सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान** और **सम्यक् चरित,** मोक्ष के मार्ग माने जाते हैं। तीनों सम्मिलित रूप से मोक्ष के स्पधन है। इसलिए जैन दार्शनिक इन्हे **'त्रिरत्न'** कहते हैं।

28. सही क्रम का चयन कीजिए

(a) अर्थ, काम, धर्म, मोक्ष (b) मोक्ष, काम, धर्म, अर्थ
(c) धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष (d) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

Ans : (d) भारतीय मूल्यमीमांसा में जिन चार प्रमुख मूल्यों को माना गया है वो क्रमानुसार, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष है।

29. ब्रह्मचर्य के पालन से निम्नलिखित ऋण चुकाए जाते है :

(a) केवल पितृ ऋण
(b) केवल ऋषि ऋण
(c) केवल देव ऋण
(d) केवल पितृ ऋण और देव ऋण

Ans : (b) ब्रह्मचर्य के पालन से केवल ऋषि-ऋण चुकाए जाते है। इसके अतिरिक्त ऋषि-ऋण का एक और तात्पर्य है कि प्राचीन पुरुषों के प्रति सांस्कृतिक दाय के लिए ऋण है, जिसे हम स्वाध्याय के द्वारा उस परम्परा को ग्रहण कर, उसे आगे की पीढ़ी तक पहुँचाकर उऋ्रण हो सकते हैं।

(भा. दर्शन- नन्दकिशोर देवराज)

30. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग सही उत्तर का चयन कीजिए।

सूची I (लेखक)	सूची II (कृति)
(a) ब्रॉड	i. लैंग्वेज ऑफ मॉरल्स
(b) अर्बन	ii. फाइव टाइप्स ऑफ एथिकल थ्योरी
(c) हेयर	iii. मेटाफिजिक्स ऑफ मॉरल्स
(d) कांट	iv. फंडामेंटल्स ऑफ इथिक्स

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	i	iii	ii	iv
(b)	iv	ii	i	iii
(c)	ii	iv	iii	i
(d)	ii	iv	i	iii

Ans : (d)

ब्रॉड	फाइव टाइप्स ऑफ एथिकल थ्योरी
अर्बन	फंडामेंटल्स ऑफ इथिक्स
हेयर	लैंग्वेज ऑफ मॉरल्स
कांट	मेटाफिजिक्स ऑफ मॉरल्स

31. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए।

सूची I (चिंतक)	सूची II (मत)
(a) ज़ेनो	i. गरिमा की भावना
(b) हीगेल	ii. सामाजिक संतुलन
(c) जे.एस.मिल	iii. मनुष्य बनो
(d) सैमुअल एलेक्जेंडर	iv. प्रकृति के अनुसार जीवन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	iv	iii	i	ii
(b)	iv	ii	i	iii
(c)	iii	ii	i	iv
(d)	ii	i	iii	iv

Ans : (a)

प्रकृति के अनुसार जीवन	ज़ेनो
मनुष्य बनो	हीगेल
गरिमा की भावना	जे.एस.मिल
सामाजिक संतुलन	सैमुअल एलेक्जेंडर

32. एयर के अनुसार जब आप कहते हैं ''यह अच्छा है'' तब आपः

(a) अपनी भावनाओं को संप्रेषित कर रहे होते हैं।
(b) अपनी भावनाओं को व्यक्त कर रहे होते हैं।
(c) किसी विशेष बात का विवरण देते हैं।
(d) दूसरों की भावनाओं को प्रभावित करते हैं।

Ans : (b) एयर, जो तार्किक प्रत्यक्षवादी दार्शनिक है, कहते है कि नैतिक वाक्य वर्णन नहीं, वरन् भावनाओं या संवेगों की अभिव्यक्ति (Express) करता है। यदि कोई कहता है कि ''यह अच्छा है।'' तो इसका मतलब वह अपनी भावनाओं को ही व्यक्त कर रहा है। अर्थात नैतिक वाक्यों का संवेगात्मक अर्थ ही हो सकता है। एयर का यह मत नैतिक संवेगभिव्यक्तिवाद कहलाता है।

(नीतिशास्त्र, सिद्धान्त और व्यवहार - प्रो. नित्यनन्द मिश्र)

33. सूची - I को सूची - II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिय गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए।

सूची I	सूची II
(a) कानूनी सिद्धांन्त	i. नैतिक दायित्व का वास्तविक स्रोत व्यावहारिक बुद्धि है।
(b) कांट का मत	ii. नैतिक दायित्व का स्रोत राज्य है।
(c) अंतः प्रज्ञावाद मत	iii. नैतिक दायित्व का स्रोत आत्मा है।
(d) आनन्दवाद मत	iv. नैतिक दायित्व का अधिरोपण अंतरात्मा द्वारा किया जाता है जो सर्वोच्च सत्ता है।

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	i	iii	ii	iv
(c)	iii	iv	ii	i
(d)	iv	iii	ii	i

Ans : (a)

नैतिक दायित्व का स्रोत राज्य है।	कानूनी सिद्धांन्त
नैतिक दायित्व का वास्तविक स्रोत व्यावहारिक बुद्धि है।	कांट का मत
नैतिक दायित्व का अधिरोपण अंतरात्मा द्वारा किया जाता है जो सर्वोच्च सत्ता है।	अंतः प्रज्ञावाद मत
नैतिक दायित्व का स्रोत आत्मा है।	आनन्दवाद मत

34. निम्नलिखित में से यह किसका कथन है कि ''दंड से विवेक प्राप्त होता है''। यह दुष्टता के निवारण की कला है :

(a) सुकरात (साक्रीटीज़) (b) प्लेटो
(c) अरस्तू (अरस्टॉटिल) (d) नीत्से

Ans : (b) प्लेटो 'दण्ड' की उपयोगिता उन दुष्ट लोगों के लिए आवश्यक मानते है जो राज्य के कार्यों में बाधा उत्पन्न करते हैं। उनके अनुसार ''दण्ड से विवेक प्राप्त होता है''। यह दुष्टता के निवारण की कला है।

35. निम्नलिखित में से किसने कहा कि ''सही नियम इस उचित विचार में है कि प्रकृति के अनुसार आचरण किया जाय और यह सार्वभौमिक प्रयोगवाला अपरिवर्तनीय और अनन्तयुगीत होता है।''?

(a) कांट (b) सिसरो
(c) हीगेल (d) डार्विन

Ans : (b) सिसरो के अनुसार, ''सही नियम इस उचित विचार में है कि प्रकृति के अनुसार आचरण किया जाय और यह सार्वभौमिक प्रयोगवाला अपरिवर्तनीय और अनन्तयुगीत होता है।''

36. मूर के अनुसार आत्मज्ञान की दृष्टि से 'शुभ' की परिभाषा होगी :

(a) प्रकृतिवादी दोष
(b) तत्वमीमांसीय दोष
(c) प्रकृतिवादी और तत्वमीमांसीय दोष
(d) प्रकृतिवादी और तत्वमीमांसीय दोष में कोई नहीं

Ans : (a) मूर ने नैतिकता के वर्णनात्मक एवं ज्ञानप्रदानात्मक मत की तीव्र आलोचना की है। मूर के अनुसार, आत्मज्ञान की दृष्टि से 'शुभ' की परिभाषा देना एक तरह का दोष करना है। जिसे वे 'प्रकृतिवादी दोष' कहते है।

(अधिनीतिशास्त्र - V.P.Verma)

37. निम्नलिखित चिन्तकों में से किसने 'विशेषणों' को उनके क्रियाओं के अनुसार तीन श्रेणियों (ए-वर्ड्स, डी-वर्ड्स, जी-वर्ड्स) में वर्गीकृत किया हैं?

(a) एयर (b) हेयर
(c) नॉवेल स्मिथ (d) स्टीवेन्सन

Ans : (c) नॉवेल स्मिथ के अनुसार एक ही शब्द का प्रयोग अनेक प्रकार के देश्यों के लिए किया जा सकता है। इसीलिए उन्होने विशेषणों को उनके क्रियाओं के अनुसार तीन श्रेणियों (ए-वर्ड्स, डी-वर्ड्स, जी-वर्ड्स. में वर्गीकृत किया है।

(नीतिशास्त्रः सिद्धान्त और व्यवहारः प्रो. नित्यानन्द मिश्र)

38. निम्नलिखित में से कौन नैतिक निर्णय के संबंध में सुसंगत है?

(a) यह एक 'है' निर्णय है
(b) यह एक तर्कसंगत निर्णय है
(c) यह एक प्राकृतिक निर्णय है
(d) यह एक निर्देशात्मक निर्णय है

Ans : (d) नैतिक निर्णय तार्किक निर्णय, सौन्दर्यशास्त्रीय निर्णय, प्रकृतिवादी या वर्णनात्मक निर्णयों से भिन्न है। नैतिक निर्णयों को देखने से पता चलता है कि वे आलोचनात्मक है। वे किसी गुण या

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

दोष को व्यक्त करते है। नैतिक निर्णय नियामक या निर्देशात्मक निर्णय (Normative) है। क्योंकि वे किसी नियम (Norm) या निष्कर्ष के आधार पर दिये जाते है।

(नीतिशास्त्र का सर्वेक्षणः संगमलाल पाण्डेय)

39. निम्नलिखित विचारों में से किसके अनुसार मूल्य-निर्णय अनिवार्यतः आदेशात्मक हैं?

(a) विवरणवाद (b) संवेगवाद

(c) निर्देशवाद (d) अंतःअनुभूतिवाद

Ans : (c) मूल्य-निर्णय अनिवार्यतः आदेशात्मक हैं। यह मानने वाला विचार निर्देशवाद (Prescriptivism) है।

40. न्यायवाक्यीय आकार में किए गए दोष का पता लगाइये : ए ए आई- 1

(a) अव्याप्त मध्यम पद (b) मुख्य पद अव्याप्त

(c) अमुख्य पद अव्याप्त (d) सत्तात्मक दोष

Ans : (d) मानक निरपेक्ष न्याय वाक्य ए ए आई-1 (A A I-1) में निष्कर्ष 'I' विशिष्ट तर्कवाक्य है और आधार वाक्य 'A A' सामान्य तर्कवाक्य है। यहां वैध निरूपाधिक न्याय के नियम - 6 का उल्लंघन है जिसके अनुसार जिस वैध निरूपाधिक न्यायवाक्य में निष्कर्ष विशिष्ट होगा उसके दोनों आधार वाक्य सामान्य नहीं हो सकते हैं। ऐसा उल्लंघन करने पर हम बिना सत्तात्मक तात्पर्य वाले दो आधारवाक्यों से एक ऐसा निष्कर्ष निकालते हैं जिसमें सत्तात्मक तात्पर्य होता है। विशिष्ट तर्कवाक्यों में एक विशेष प्रकार के सत्ता का कथन होता है। अतः दिये गये मानक निरपेक्ष न्यायवाक्य AAI-1 में एक तरह का **सत्तात्मक दोष** है।

41. नीचे अभिकथन (A) और तर्क (R) दिए गए हैं। उन पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर दीजिए:

अभिकथन (A) : किसी सोपाधिक न्याय वाक्य में चतुष्पद दोष घटित होता है यदि उसमें तीन से अधिक पदों का प्रयोग होता है।

तर्क (R) : किसी मानक आकार के सोपाधिक न्याय वाक्य में तीन और केवल तीन पद होते हैं, जो पूरे न्याय वाक्य में प्रत्येक, समान अर्थ में दो बार घटित होते हैं।

कूट:

(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(b) (A) और (R) दोनों सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(c) (A) सत्य है और (R) असत्य है।

(d) (A) और (R) दोनों असत्य हैं।

Ans : (b) न्यायवाक्य वह युक्ति है, जिसमें दो आधारवाक्यों से एक निष्कर्ष का निगमन किया जाता है। निरपेक्ष न्यायवाक्य (Categorical syllogism) वह युक्ति है जिसमें तीन निरपेक्ष तर्कवाक्य होते है। इन तीनों तर्कवाक्यों में कुल मिलाकर तीन पद होते हैं, जिनमें प्रत्येक पद दो तर्कवाक्यों में आता है। यदि तीन से अधिक पदों का प्रयोग होता है तो वहां चतुष्पद दोष होता है।

(तर्कशास्त्र का परिचयः Irving M. copi (Pandey & Mishra)

42. अरस्तवी एवम् बूलीय की सोपाधिक तर्क वाक्यों की व्याख्या में निम्नलिखित अंतर है:

(a) अरस्तवी व्याख्या विपरीत, विरूद्ध, उपाश्रयण एवं व्याघात संबंध को स्वीकार करती है जबकि बूलीय व्याख्या केवल व्याघात संबंध को स्वीकार करती है।

(b) अरस्तवी व्याख्या, विपरीत, विरुद्ध संबंध को स्वीकार करती है और बूलीय व्याख्या केवल व्याघात संबंध को स्वीकार करती है।

(c) अरस्तवी एवं बूलीय दोनों व्याया उपरोक्त सभी संबंधों को स्वीकार करती है।

(d) अरस्तवी एवं बूलीय दोनों उपर्युक्त किसी संबंध को स्वीकार नहीं करती है।

Ans : (b) निरूपाधिक तर्कवाक्यों (Categorical Propositions) से सम्बन्धित अरस्तू की व्याख्या परम्परागत विरोध वर्ग को मान्यता देती हैं जिसमें विपरीत, विरूद्ध, उपाश्रयण एवं व्याघात संबंध को स्वीकार किया गया है। परन्तु जॉर्ज बूल जो कि आधुनिक प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के एक प्रवर्तक हैं के अनुसार, परम्परागत विरोध-वर्ग में सिर्फ व्याघाती सम्बन्ध को स्वीकार करते हैं।

(तर्कशास्त्र का परिचय : इरूविंग एम. कोपी (पाण्डेय और मिश्र)

43. यदि 'A' तर्कवाक्य का परिवर्तन 'A' में होता है तथा 'E' तर्कवाक्य का प्रतिपरिवर्तन 'E' में होता है तो बूल के अनुसार निम्नलिखित तर्क दोष घटित होता है:

(a) मध्यम पद अव्याप्त (b) सत्तात्मक दोष

(c) मुख्य पद अव्याप्त (d) अमुख्य पद अव्याप्त

Ans : (b) बूलीय व्याख्या के अनुसार प्रतिवर्तन किसी भी तर्कवाक्य के साथ वैध है, किन्तु परिमित परिवर्तन और प्रतिपरिवर्तन वैध के रूप में अस्वीकृत हैं परिवर्तन 'E' और 'I' के लिए वैध हैं और प्रतिपरिवर्तन 'A' और 'O' के लिए वैध है। अतः यदि ऐसा जिस तर्कवाक्य में नहीं है वहां सत्तात्मक दोष होता है।

44. सत्यता एवं वैधता के आलोक में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(a) किसी युक्ति के निष्कर्ष की सत्यता या असत्यता उसकी वैधता या अवैधता का निर्धारण करती हैं।

(b) किसी युक्ति की वैधता उसके निष्कर्ष की सत्यता की शर्त है।

(c) सत्यता एवं असत्यता का प्रयोग युक्तियों के लिए होता है जबकि वैधता एवं अवैधता का प्रयोग तर्क वाक्यों के लिए होता है।

(d) किसी युक्ति के निष्कर्ष की सत्यता या असत्यता उस युक्ति की वैधता या अवैधता का निर्धारण नहीं करती और यदि कोई युक्ति वैध है तो वह उस युक्ति के निष्कर्ष की सत्यता की शर्त प्रदान नहीं करती।

Ans : (d) किसी युक्ति की वैधता उसके निष्कर्ष की सत्यता या असत्यता पर निर्भर नहीं होता है। युक्ति की वैधता भी निष्कर्ष की सत्यता का दावा नहीं करती है। यदि किसी पूर्वारूपेण वैध युक्ति का निष्कर्ष असत्य है तो उसका एक आधारवाक्य अवश्य असत्य होगा।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

45. डी मार्गन सिद्धान्त के संदर्भ में निम्नलिखित में से क्या सही नहीं है?

(a) ~ (pvq) ≡ (~ p . ~ q)
(b) ~ (p . q) ≡ (~ pv ~ q)
(c) ~ (p . q) ≡ ~ (pvq)
(d) (~ pv ~ q) ≡ ~ (p . q)

Ans : (c) डेमार्गन नियम, पुनर्स्थापित का नियम है।
~ (p . q) ≡ (~ pv ~ q)
~ (pvq) ≡ (~ p . ~ q) ≡ ~ (p . q)
यहां (~ p . ~ q) ≡ ~ (p . q) ≡ परन्तु (~ pv ~ q) ≢ ~ (p v q)
अतः तीसरा (c) विकल्प डेमार्गन नियम नहीं है।

46. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए और युक्ति एवं युक्ति आकार में नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

सूची I (युक्ति)	सूची II (युक्ति आकर)
(a) A ∴ AvB	i. (p ⊃ q).(r ⊃ s) p vr ∴ qvs
(b) C.D ∴ C	ii. p ∴ p vq
(c) H I ∴ H.I	iii. p.q ∴ p
(d) (A ⊃ B).(C ⊃ D) AvC ∴ BvD	iv. p q ∴ p.q

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	iii	iv	i
(c)	iii	ii	i	iv
(d)	iv	iii	ii	i

Ans : (b)

(i).	A ∴ AvB	-	p ∴ p vq
(ii)	C.D ∴ C	-	p.q ∴ p
(iii)	H I ∴ H.I	-	p q ∴ p.q
(iv)	(A ⊃ B).(C ⊃ D) AvC ∴ BvD	-	(p ⊃ q).(r ⊃ s) p vr ∴ qvs

47. शाब्दिक प्रतिपत्ति के विरोधाभास के सही प्रतीक क्या हैं?

(a) ~ p ⊃ (q ⊃ p) और p ⊃ (q ⊃ p)
(b) p ⊃ (q ⊃ p) और ~ p ⊃ (p ⊃ q)
(c) ~ p ⊃ (q ⊃ p) और ~ p ⊃ (p ⊃ q)
(d) p ⊃ (q ⊃ p) और p ⊃ (p ⊃ q)

Ans : (b) शाब्दिक प्रतिपत्ति
(p ⊃ q) ≡ (~ pvq)
का विरोधाभास p ⊃ (q ⊃ p) और ~ p ⊃ (p ⊃ q) है।

48. कथन आकार को पुनर्कथन कहा जाता है:

(a) यदि इसके सभी प्रतिस्थापन उदाहरण असत्य हैं।
(b) यदि इसके प्रतिस्थापन उदाहरण सत्य एवं असत्य दोनों का मिश्रण हो।
(c) यदि इसके सभी प्रतिस्थापन उदाहरण सत्य हों।
(d) यदि इसके प्रतिस्थापन उदाहरण न तो सत्य हों न असत्य हों।

Ans : (c) जिसके केवल सत्य प्रतिस्थापन- उदाहरण होते हैं, वह पुनर्कथन वाक्याकार है। pv~p एक पुनर्कथन है।

49. दो कथनों को शाब्दिक समतुल्य कहा जाता है यदि :

(a) दोनों सत्य हैं और दोनों असत्य हैं।
(b) एक सत्य है और दूसरा असत्य है।
(c) एक असत्य है और दूसरा सत्य है।
(d) इसमें सत्य और असत्य का कोई प्रश्न नहीं होता।

Ans : (a) जब दो वाक्य सत्यता-मूल्य में सम हो अर्थात जब वे दोनों एक साथ सत्य या असत्य हों, तब ऐसे वाक्यों को '**शाब्दिक समतुल्य**' (Materially Equivalent) कहा जाता है। इसका चिन्ह '≡' है।

50. निम्नलिखित में से किसने मानव अधिकारों की आलोचना नहीं की है?

(a) बेंथम (b) एलियन पेलेट
(c) लॉक (d) नीत्शे

Ans : (c) लॉक ने राजा के दैवीय अधिकारों के विचार का विरोध किया और तर्क दिया कि मानव के प्राकृतिक अधिकार है, सरकार जिनका हनन नहीं कर सकती है। सरकार को इनकी सुरक्षा करनी होती है। अब प्रश्न के अनुसार बेंथम, एलियन पेलेट और नीत्शे या तो मानवाधिकार की बात नहीं करते है। या आलोचना करते हैं। अतः विकलप (c) सही है।

51. किस नारीवादी कार्यकर्ता ने 'द पर्सनल इज पॉलिटिकल' नारा दिया?

(a) कैरॉल हैरीश (b) साइमन डे बूवो
(c) मैरी आर. बर्ड (d) केट मिलेट

Ans : (a) 'द पर्सलन इज पॉलिटिकल' यह एक निबन्ध संग्रह था जो 1969 ई. में कैरॉल हरीश के द्वारा इसी टाइटल से लिखा गया था। यह नारा 60 के दशक में प्रसिद्ध हुआ था। यह द्वितीय नारीवादी लहर में खूब इस्तेमाल हुआ।

52. निम्नलिखित दार्शनिकों में से कौन अर्थ के अनन्त भिन्नता के रूप में खेल मुक्त भाषा को मानता है?

(a) डेरिडा (b) रसेल
(c) विटगन्स्टीन (d) हुसर्ल

Ans : (b) डेरिडा अपनी पुस्तक 'ऑफ ग्रामेटोलॉजी' में भिन्नता (Difference) शब्द का प्रयोग करता है। अर्थ के अनन्त भिन्नता के लिए वह खेलमुक्त भाषा को मानता है। उसका दर्शन एक तरह का विखण्डनवाद है। वह अपरिचित शब्दावलियों का प्रयोग करता है और अपने विवेचन को स्वयं कई जगह खण्डित कर भाषा को परम्परागत सीमाओं से परे ले जाना चाहता है।

(समसामयिक राजनीतिक सिद्धान्तः नरेश दधीचि)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

53. निम्नलिखित में से कौन सी सूची हाइडेगर के भाषा के चार अवस्थाओं को निरूपित करता है?

(a) अभिकथन, प्रवचन, व्यर्थ वार्ता और कथन
(b) अभिकथन, तर्क, मनोभाव और व्यर्थ वार्ता
(c) अभिकथन, समझ, प्रवचन और वार्ता
(d) अभिकथन, तर्क, समझ और व्यर्थ वार्ता

Ans : (a) हाइडेगर का भाषा - दर्शन शुरू से ही एक सत्ताविषयक (ontological) भाव से प्रेरित हैं। वह जगत में मानव-अस्तित्व के अभिव्यक्ति के द्वारा तात्विक सत् जैसी भाषा प्रदर्शित करने की इच्छा रखते है। इसके लिए हाइडेगर भाषा की चार अवस्थाओं को बताते है - (i) अभिकथन (assuage) (ii) Discourse (iii) Idle Talk (Gerede) (iv) saying (sagen)

54. निम्नलिखित में से किसने अस्तित्व परक प्रवचन के प्रामाणिक तथा अप्रामाणिक आकारों के बीच विभेद किया है?

(a) हाइडेगर (b) हुसर्ल
(c) सार्त्र (d) डेरडा

Ans : (a) अस्तित्व परक प्रवचन के प्रामाणिक और अप्रामाणिक आकारों के बीच भेद मार्टिन हाइडेगर ने किया है। जो एक अस्तित्ववादी विचारक है।

55. हुसर्ल के अनुसार विषयिपेक्षा के तीन प्रमुख प्रकार हैः

(a) प्रत्यक्ष, अनुमान और मत।
(b) प्रत्यक्ष, कल्पना और बुद्धि।
(c) प्रत्यक्ष, कल्पना और महत्वीकरण।
(d) प्रत्यक्ष, अनुमान और महत्वीकरण।

Ans : (c) हुसर्ल के अनुसार विषयिपेक्षा के तीन प्रमुख प्रकार है- प्रत्यक्ष, कल्पना और महत्वीकरण।

56. सत्ता के सत्तामूलक वर्गणा के अंतर्गत सार्त्र द्वारा स्वलक्षण चेतना के दृश्य घटना संबन्धी सूची निम्नलिखित में से कौन सही हैं?

(a) अनिवार्यता, सारतत्वता, वस्तुपरकता और ख्याति
(b) अनिवार्यता, तथ्यपरकता, वस्तुपरकता और कलंक
(c) अनिवार्यता, सारतत्वता, तथ्यपरकता और कलंक
(d) सारतत्वता, तथ्यपरकता, वस्तुपरकता और ख्याति

Ans : (b) सत्ता के सत्तामूलक वर्गणां के अन्तर्गत सार्त्र द्वारा स्वलक्षण चेतना के दृश्य घटना संबंधी सूची क्रमशः अनिवार्यता, तथ्यपरकता, वस्तुपरकता तथा कलंक है।

57. गांधीवादी विचार के आलोक में अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए और सही कूट चुनिए:

अभिकथन (A) : हड़ताल की क्षमता अहिंसा की पूर्वमान्यता है।

तर्क (R) : हड़ताल निष्क्रिय प्रतिरोध है।

कूटः

(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है किन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है किन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है किन्तु (R) सही हैं।

Ans : (c) गांधी जी के अनुसार हड़ताल की क्षमता अहिंसा की पूर्वमान्यता तो है परन्तु हड़ताल निष्क्रिय प्रतिरोध न होकर सक्रिय प्रतिरोध है। अतः अभिकथन (A) सही है तथा तर्क (R) गलत है।

58. सूची - I को सूची - II से मिलान कीजिए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

सूची I (लेखक)	**सूची II (लेखन)**
(a) टैगोर	i. फाउन्डेशन्स ऑफ इंडियन कल्चर
(b) गांधी	ii. सर्च फोर द ऐब्सॅल्यूट इन निओ-वेदान्ता
(c) के. सी. भट्टाचार्य	iii. माई रिलीजन
(d) श्री अरविंद	iv. थॉट रेलिक्स

कूटः

	(a)	**(b)**	**(c)**	**(d)**
(a)	i	ii	iv	iii
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	iii	i	ii	iv

Ans : (b)

टैगोर	थॉट रेलिक्स
गांधी	माई रिलीजन
के. सी. भट्टाचार्य	सर्च फोर द ऐब्सॅल्यूट इन निओ-वेदान्ता
श्री अरविंद	फाउन्डेशन्स ऑफ इंडियन कल्चर

59. निम्नलिखित में से किसका यह विचार है कि 'मांग और आपूर्ति का सिद्धान्त किसी विज्ञान का आधार नहीं हो सकता'।

(a) अम्बेडकर (b) गांधी
(c) विवेकानन्द (d) मार्क्स

Ans : (b) गांधी जी अपने आर्थिक विचार में यह स्पष्ट करते है कि 'मांग और आपूर्ति का सिद्धान्त किसी विज्ञान का आधार नहीं हो सकता।'

60. 'रोटी श्रम' के गांधीवादी सिद्धान्त के बारे में निम्नलिखित में से कौन सही नहीं है?

(a) यह सभी नागरिकों में सादा जीवन को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया था।
(b) यह श्रमिकों की प्रतिष्ठा को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया था।
(c) यह पूंजीवादियों के विरुद्ध प्रतिक्रिया को बढ़ावा देने के लिए किया गया था।
(d) यह प्रचलित श्रम-विभाजन से परे समानता के भाव को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया था।

Ans : (c) 'रोटी श्रम' या अन्नदायी श्रम से गांधी जी का तात्पर्य है कि जीवित रहने के लिए हर व्यक्ति को श्रम करना आवश्यक है। हर व्यक्ति स्वेच्छा से ऐसा श्रम करना चाहिए। यह पूंजीपतियों के विरुद्ध प्रतिक्रिया को बढ़ावा नहीं देता है। समाज के सभी वर्ग को कुछ न कुछ शारीरिक श्रम करना चाहिए। बस इसका इतना लक्ष्य है।

(समकालीन भारतीय दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

61. निम्नलिखित में से किसने यह कहा है कि 'यदि हम लोकतंत्र की सच्ची भावना का पोषण करना चाहते हैं तो हम असहिष्णु नहीं हो सकते। असहिष्णुता लक्ष्य के प्रति विश्वासघात है'।

(a) विवेकानन्द (b) अम्बेडकर
(c) तिलक (d) गांधी

Ans : (d) गांधी के अनुसार, यदि व्यक्ति को अपने जीने के ढंग को चुनने की सवतत्रता है, तो उसके लिए यह भी अनिवार्य होता जाता है कि अन्य व्यक्तियों के ढंगों के प्रति उसके मन में सहिष्णुता हो, तथा उनके प्रति भी वह आदर की भावना रखे। यही लोकतंत्र की सच्ची भावना का पोषण करना हुआ।

62. सूची - I को सूची - II से मिलान कीजिए और नीचे दिए गए कूट में से एक चुनकर सही उत्तर दीजिए:

सूची I	**सूची II**
(a) ''ऑन रेफरिंग''	i. डोनाल्ड डेविडसन
(b) थ्योरी ऑफ डिस्क्रिप्शन	ii. जे. एल. ऑस्टिन
(c) टी-सेन्टेसेज	iii. पी. एफ. स्ट्रॉसन
(d) स्पीच-ऐक्ट	iv. बट्रेन्ड रसेल

कूट:

	(a)	**(b)**	**(c)**	**(d)**
(a)	iv	ii	i	iii
(b)	iii	ii	iv	i
(c)	iv	iii	ii	i
(d)	iii	iv	i	ii

Ans : (d)

पी. एफ. स्ट्रॉसन	''ऑन रेफरिंग''
बट्रेन्ड रसेल	थ्योरी ऑफ डिस्क्रिप्शन
डोनाल्ड डेविडसन	टी-सेन्टेसेज
जे. एल. ऑस्टिन	स्पीच-ऐक्ट

63. फ्रेगे के विचार के आलोक में निम्नलिखित में से कौन सही नहीं है?

(a) व्यक्तिवाचक नाम के साथ निश्चित विवरण में भाव और संदर्भ दोनों होता हैं और उनका संदर्भ उनके भाव द्वारा निर्धारित होता है।
(b) भाव, उस वस्तु के प्रस्तुतीकरण की अवस्था है जो अपने अर्थ की अभिव्यक्ति के संदर्भ में ली जाती हैं।
(c) विधेय का संदर्भ अवधारणा है।
(d) संदर्भ प्रस्तुतीकरण का प्रकार हैं

Ans : (d) फ्रेगे के अनुसार, सन्दर्भ प्रस्तुतीकरण का प्रकार है। फ्रेगे के अनुसार नाम एवं तर्क वाक्य दोनों में अर्थ एवं सन्दर्भ (Sense and Reference) दोनों होता है। नाम में केवल शब्द निर्देश (सन्दर्भ) होता है शब्दार्थ नहीं और तर्कवाक्य केवल शब्दार्थ (sense) होता है, सन्दर्भ नहीं।

(दर्शन- पुञ्ज-एक गहन दृष्टि- विनोद तिवारी)

64. ''अर्थ का अभिप्राय, प्रयोग है'' इसका तात्पर्य नहीं है कि :

(a) निरर्थक व्याख्यान अर्थहीन है।
(b) भाषीय-खेल जीवन के अलग-अलग रूपों में भिन्न-भिन्न होता है।
(c) यदि भाषा विषयक अभिव्यक्ति इसके भाषीय खेल के संदर्भ में एक उपयुक्त साधन बन जाता है तो यह अर्थपूर्ण है।
(d) भाषा का विश्लेषण उलझन को नहीं समाप्त कर सकता।

Ans : (d) ''अर्थ का अभिप्राय, प्रयोग है'' यह कथन विट्गेन्सटाइन का है जो उपयोग-सिद्धान्त से सम्बन्धित है। यदि भाषा से सम्बन्धित समस्याओं का निराकरण करना है तो भाषीय कथनों के उपयोग या प्रयोग को देखें।

65. जब किसी चीज को अच्छा 'कहना' विशेष रूप से प्रशंसा या सराहना या संस्तुति है; इसका अर्थ है:

(a) विवरणात्मक दोष (b) अभिकथन दोष
(c) वाक् क्रिया दोष (d) प्रकृतिवादी दोष

Ans : (c) जब हम किसी चीज को अच्छा 'कहना' विशेष रूप से प्रशंसा या सराहना या संस्तुति के अर्थ में करते है तो वहां वाक् क्रिया दोष करते है।

66. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए और अपने उत्तर के रूप में सही कूट चुनिए:

अभिकथन (A) : हम यह कल्पना कर सकते हैं कि नीले का अस्तित्व तो है फिर भी नीले का संवेदन नहीं हैं।

तर्क (R) : मूर के अनुसार संवेदन में दो तत्व हैं, एक तो चेतना और दूसरा चेतना का विषय।

कूट:

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है किन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

Ans : (a) अभिकथन (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है। हम कल्पना कर सकते हैं कि नीले का अस्तित्व तो है फिर भी नीले का संवेदन नहीं है क्योंकि संवेदन में दो तत्व है, एक तो चेतना और दूसरा चेतना का विषय।

67. मध्व के दर्शन में निम्नलिखित तर्क वाक्यों में से किसे छोड़ कर शेष सही है:

(a) ब्रह्म प्रत्येक जीव को अंदर से शासित करता है।
(b) प्रत्येक जीव ब्रह्म पर निर्भर है।
(c) जीव मुक्त नहीं है।
(d) प्रत्येक जीव सावयवी रूप से ब्रह्म से संबंधित है।

Ans : (d) रामानुज की तरह मध्व भी अपने दर्शन में 'जीव' को ईश्वर अंश माना है। जीव को ईश्वर का अंश मानने के बावजूद मध्वाचार्य रामानुज के अंश-अंशी (सावयवी रूप) को अस्वीकार करते है। मध्व के अनुसार जीव को ईश्वर का अंश कहने का अर्थ है कि जीव ईश्वर का प्रतिबिम्ब है।

(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा- डॉ राममूर्ति पाठक)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

68. बौद्धमत निम्नलिखित में से किसका समर्थन नहीं करता है:

(a) नैरात्म्यवाद (b) स्यादवाद
(c) प्रतीत्यसमुत्पाद (d) क्षणभंगुरवाद

Ans : (b) नैरात्म्यवाद, प्रतीत्यसमुत्पाद, क्षणभंगुरवाद आदि बौद्धमत हैं वहीं स्यादवाद, नयवाद आदि जैनमत हैं।

69. महावाक्य तत्त्वमसि उद्धृत है:

(a) बृहदारण्यक उपनिषद् में (b) मांडूक्य उपनिषद् में
(c) छांदोग्य उपनिषद् में (d) तैत्तिरीय उपनिषद् में

Ans : (c) 'तत्वमसि' महावाक्य का उल्लेख छान्दोग्य उपनिषद (6/8/7) में प्राप्त होता है। जिसमें त्वम् (जीव) का तत् (ब्रह्म) के साथ ऐक्य या अभेद का ज्ञान कराया गया है। तत्वमसि महावाक्य की विस्तृत व्याख्या नैष्कर्म्यसिद्धि, वेदान्तसार, और वेदान्तपरिभाषा में मिलती है।

70. सूची - I और सूची - II को सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर चुनिए:

सूची I	सूची II
(a) सत्ख्याति	i. योगाचार बौद्ध
(b) अभिनवअन्यथाख्याति	ii. माध्यमिक बौद्ध
(c) आत्मख्याति	iii. सांख्य
(d) असत्ख्याति	iv. मध्व

कूट:

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	iv	iii	ii	i
(b)	iii	iv	i	ii
(c)	i	ii	iii	iv
(d)	ii	i	iv	iii

Ans : (b)

सांख्य	सत्ख्याति
मध्व	अभिनवअन्यथाख्याति
योगाचार बौद्ध	आत्मख्याति
माध्यमिक बौद्ध	असत्ख्याति

71. 'अद्वैतियों' के 'प्रधान मल्ल' हैं:

(a) नैयायिक (b) बौद्ध
(c) सांख्य (d) वैशेषिक

Ans : (c) शारीरिक भाष्य में शंकराचार्य ने सांख्य को वेदान्त का प्रधानमल्ल बताया है। उनके अनुसार द्वैतवादी होने के कारण सांख्य को श्रुतिमूलक नहीं माना जा सकता है। अद्वैत वेदान्त ने सांख्य के प्रकृतिपरिणामवाद का खण्डन किया गया है।

(भा. दर्शन : आलोचन और अनुशील- चन्द्रधर शर्मा)

72. निम्नलिखित वाक्यों में से कौन एक रामानुज को स्वीकार्य है?

(a) रामानुज जीवनमुक्ति के प्रमुख साधन के रूप कर्म-योग का समर्थन करते हैं।
(b) रामानुज विदेहमुक्ति के प्रमुख साधन के रूप में ज्ञान-योग का समर्थन करते हैं।
(c) रामानुज विदेहमुक्ति के प्रमुख साधन के रूप में कर्म-योग का समर्थन करते हैं।
(d) रामानुज विदेहमुक्ति के प्रमुख साधन के रूप में भक्ति-योग का समर्थन करते है।

Ans : (d) विशिष्ट द्वैत दर्शन में भक्तिमार्ग को मोक्ष का साधन माना गया है। कर्मयोग एवं ज्ञानयोग भक्ति के अंग है। कर्मयोग से सत्वशुद्धि होती है और सत्वशुद्धि से ज्ञान उत्पन्न होता है। इसके बाद ईश्वर भक्ति उत्पन्न होती है। रामानुज मुक्ति का एक ही रूप मानते है वह है विदेह मुक्ति। यह विदेह मुक्ति अन्यान्य भारतीय दर्शनों में वर्णित विदेह मुक्ति से भिन्न है। रामानुज के अनुसार व्यक्ति इस अवस्था में दोषयुक्त प्राकृतिक शरीर से मुक्त हो जाता है, किन्तु वह एक निर्दोष शरीर धारण करता है जो शुद्ध सत्व से निर्मित है। इस तरह रामानुज का मोक्ष सिद्धान्त विदेहमुक्ति के साधन रूप में भक्तियोग की सस्तुति करता हैं।

73. इस्लाम के अनुसार किस एक को छोड़कर सभी निम्नलिखित वाक्य सहीं हैं:

(a) प्रार्थना और उपवास को प्रमुख स्थान दिया जाता है।
(b) दान सर्वोत्तम सद्गुण है।
(c) तीर्थयात्रा ईश्वर की कृपा पाने के लिए पवित्र प्रतिज्ञा हैं।
(d) ईश्वर संकल्प के प्रति समर्पण में विफलता।

Ans : (d) इस्लाम धर्म में, प्रार्थना और उपवास (रोज़ा) को प्रमुख स्थान, दिया जाता है, दान को सर्वोत्तम गुण माना गया है तथा तीर्थयात्रा ईश्वर की कृपा पाने के लिए पवित्र प्रतिज्ञा माना गया है। इसके अतिरिक्त चोरी न करना, मद्य-निषेध की बात भी की गई है। ईश्वर-संकल्प के प्रति समर्पण को माना गया है। कथन (d) इस्लाम धर्म के विपरीत है।

74. जैन मत के अनुसार जीव के बंधन और मुक्ति की प्रक्रिया का सही क्रम है:

(a) बंध, सम्वर, निर्जरा, मोक्ष, आस्रव
(b) आस्रव, बंध, सम्वर, निर्जरा, मोक्ष
(c) सम्वर, निर्जरा, मोक्ष, आस्रव, बंध
(d) निर्जरा, मोक्ष, आस्रव, बंध, सम्वर

Ans : (b) जैन मत में 'बंधन और मुक्ति' की प्रक्रिया क्रमशः आस्रव, बंध, सम्वर, निर्जरा मोक्ष है।

75. जरथुष्ट्रवाद के अनुसार किस एक को छोड़कर निम्नलिखित तर्कवाक्य सही हैं:

(a) जरथुष्ट्रवाद अग्नि-पूजा का समर्थन करता है।
(b) जरथुष्ट्रवाद में 'अहरमज्दा' को कल्याण का ईश्वर माना जाता है।
(c) जरथुष्ट्रवाद में 'अहरिमन' को बुराई का ईश्वर माना जाता है।
(d) जरथुष्ट्रवाद वर्णाश्रम व्यवस्था का समर्थन करता है।

Ans : (d) वर्णाश्रम व्यवस्था हिन्दु सभ्यता एवं संस्कृति की विशेषता है। जबकि जरथुस्टवाद का वर्णाश्रम व्यवस्था पर किसी भी प्रकार का कोई चिंतन नहीं है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जनवरी-2017
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. वैदिक परंपरा में पृथ्वी का संचरण निम्नलिखित में से किसके द्वारा नियंत्रित था?
(a) ब्रह्म (b) ईश्वर
(c) ऋत (d) सूर्य

Ans. (c) : वैदिक परम्परा में सभी तरह के ब्रह्माण्डीय पिण्डों का संचरण 'ऋत' द्वारा नियंत्रित था। 'ऋत' को एक शाश्वत और नैतिक व्यवस्था के रूप में भी जाना जाता था। वरुण को 'ऋतस्य गोप्ता' अर्थात प्राकृतिक एवं नैतिक नियमों के संरक्षक रूप में देखा गया है। ऋत के कारण ही सूर्य, चन्द्र, ग्रह (पृथ्वी आदि), नक्षत्र आदि की गतिविधि संचालित है।
(भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण-संगम लाल पाण्डेय)

2. वैदिक परंपरा में निम्नलिखित में से किस प्रकार के ऋण से यज्ञ के अनुष्ठान के द्वारा उऋण हुआ जा सकता है?
(a) ऋषिऋण (b) देवऋण
(c) पितृऋण (d) पृथ्वीऋण

Ans. (b) : देव-ऋण, ऋषि-ऋण और पितृ-ऋण को वैदिक परम्परा में माना गया था। देवों के प्रति कर्त्तव्य की पूर्ति यज्ञ के सम्पादन से होती है। ऋषि-ऋण का तात्पर्य है कि प्राचीन पुरुषों के प्रति सांस्कृतिक दाय के लिए ऋण है, जिसे हम स्वाध्याय के द्वारा उस परम्परा को ग्रहण कर, उसे आगे की पीढ़ी तक पहुँचाकर अनृण हो सकते हैं। अर्थात् ब्रह्मचर्य पालन से इससे उऋण हुआ जा सकता है। 'पितृ-ऋण' से अनृण्य सनृति के सूत्र को आगे बढ़ाकर प्राप्त किया जा सकता है।
(भारतीय दर्शन- डॉ. नन्द किशोर देवराज)

3. जैन विचारधारा में 'पर्याय' शब्द निम्नलिखित में से किसका उल्लेख करता है?
(a) आगन्तुक धर्म (b) नित्य धर्म
(c) मनः पर्याय (d) नय

Ans. (a) : जैन दर्शन में प्रत्येक द्रव्य के दो प्रकार के धर्म होते हैं- (1) स्वरूप अथवा नित्यधर्म (2) आगन्तुक अथवा परिवर्तनशील धर्म। नित्य धर्म में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता, परन्तु आगन्तुक धर्मों का उस वस्तु से सदैव ही संबंध एवं विच्छेद होता रहता है। जैन-दार्शनिक स्वरूप धर्मो को गुण और आगन्तुक धर्मो को पर्याय कहते हैं।
(भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण- संगम लाल पाण्डेय)

4. नीचे दिए गए दो कथनों में एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) की संज्ञा दी गई है।
चार्वाक दर्शन के संदर्भ में इन पर विचार करते हुए नीचे दिए गए कूटों में से सही का चयन कीजिएः
अभिकथन (A): मृत शरीर को चेतन होना चाहिए
तर्क (R): चेतना शरीर का एक गुण है।
कूटः
(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सत्य है और (R) असत्य है।
(d) (A) असत्य है और (R) सत्य है।

Ans. (d) : चार्वाक दर्शन में 'मृत्युरेव अपवर्ग' अर्थात् मृत्यु को ही अपवर्ग माना गया है। मृत्यु के बाद चेतना विलुप्त हो जाती है और शरीर का नाश हो जाता है। चार्वाक दर्शन में 'चेतना' को शरीर का एक गुण माना गया है। अतः मृत शरीर से चेतना का लोप हो जाता है। अभिकथन (A) असत्य है और तर्क (R) सत्य है।
(भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण- संगम लाल पाण्डेय)

5. निम्नलिखित में से किसका मानना है कि नीला रंग और नीले रंग का ज्ञान एक है और समान है?
(a) बृहस्पति (b) वसुबंधु
(c) भासर्वज्ञ (d) प्रभाकर

Ans. (b) : विज्ञानवाद पहले तो 'सहोपलम्भनियम' के आधार पर अर्थाभाव सिद्ध करता है; उसका कथन है कि 'नीला रंग' और 'नीले रंग का विज्ञान' दोनों अभिन्न हैं क्योंकि दोनों की उपलब्धि एक साथ होती है। वसुबन्धु यह बातें अपनी प्रसिद्ध कृति 'विज्ञप्ति-मात्रतासिद्धि' में करते हैं।
(भारतीय दर्शनः आलोचन और अनुशीलन- चन्द्रधर शर्मा)

6. सूची-I और सूची-II पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही का चयन कीजिए :

सूची-I	सूची-II
A. पंचशील	i. न्याय
B. पंचावयव	ii. बौद्ध
C. पंच परमेष्ठि	iii. जैन
D. पंचक्लेश	iv. योग

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	iii	iv	i
(c)	ii	i	iii	iv
(d)	iii	i	ii	iv

Ans. (c) : (a) पंचशील (ii) बौद्ध
(b) पंचावयव (i) न्याय
(c) पंच परमेष्ठि (iii) जैन
(d) पंचक्लेश (iv) योग

7. नैयायिकों द्वारा समवाय संबंध जिस सन्निकर्ष से प्राप्त होता है, उसे जाना जाता है
(a) समवाय (b) समवेत समवाय
(c) संयुक्त समवाय (d) विशेषणता

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : विशेषणता और विशेष्यता संबंधों के प्रत्यक्ष होने पर उनके बीच वर्तमान समवाय, जिसे वैशेषिक कदापि इन्द्रियवेद्य नहीं मानते, को भी न्यायदर्शन प्रत्यक्षज्ञान का विषय मानता है। इसलिए आधारभूत पदार्थ के साथ विशेषण अथवा विशेष्य के रूप में प्रसूत समवाय का भी विशेषणता या विशेष्यता सम्बन्ध से ही प्रत्यक्ष होता है।

(भारतीय दर्शन- डॉ नन्द किशोर देवराज)

8. न्याय भाषा-दर्शन में ईश्वरेच्छा है

(a) शक्ति का कारण (b) लक्षणा का कारण
(c) स्वयं शक्ति (d) शब्दबोध का कारण

Ans. (c) : न्याय भाषा-दर्शन में ईश्वरेच्छा को स्वयं शक्ति माना गया है। प्राचीन न्याय दर्शन में शब्दों में अर्थबोध कराने की शक्ति ईश्वरेच्छा पर निर्भर है। अमुक शब्द का अमुक अर्थ है यह रुढ़ि 'ईश्वर संस्थापित' है (ईश्वर संकेत) है।

(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखाः राममूर्ति पाठक)

9. ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित में से कौन दर्शन अदृष्ट की सहायता लेता है?

(a) केवल न्याय (b) न्याय और वैशेषिक
(c) न्याय, वैशेषिक और योग (d) योग और वैशेषिक

Ans. (b) : ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए न्याय-वैशेषिक दर्शन अदृष्ट की सहायता लेता है। अदृष्ट धर्म एवं अधर्म अथवा पाप एवं पुण्य के संग्रह को अदृष्ट कहते हैं, जिससे कर्मफल उत्पन्न होता है। सभी जीवों को अदृष्ट का फल मिलता है। किन्तु अदृष्ट जड़ है। इसी जड़ अदृष्ट के संचालन के लिए चेतन द्रव्य ईश्वर है।

10. सही क्रम की सुनिश्चित करने के लिए सही कूट का चयन कीजिए:

(a) क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध
(b) मूढ़, क्षिप्त, विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध
(c) क्षिप्त, विक्षिप्त, मूढ़, एकाग्र, निरुद्ध
(d) निरुद्ध, एकाग्र, मूढ़, क्षिप्त, विक्षिप्त

Ans. (a) : सही क्रम क्षिप्त, मूढ़ विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध है। योग दर्शन में इन्हें चित्त की पांच भूमियां कहा गया है। अर्थात् इन्हें चित्तभूमि कहा जाता है।

11. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
A. अभिहितान्वयवाद	i. मंडन
B. अन्विताभिधानवाद	ii. कुमारिल
C. स्फोटवाद	iii. प्रभाकर
D. अपोहवाद	iv. दिङ्नाग

	A	B	C	D
(a)	iii	ii	iv	i
(b)	ii	iii	i	iv
(c)	i	ii	iii	iv
(d)	iii	i	iv	ii

Ans. (b) : (a) अभिहितान्वयवाद (ii) कुमारिल
(b) अन्विताभिधानवाद (iii) प्रभाकर
(c) स्फोटवाद (i) मण्डन
(d) अपोहवाद (iv) दिङ्नाग

12. सूची-I के साथ सूची-II को सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
A. सांख्य दर्शन	i. असत्कार्यवाद
B. द्वैत वेदांत	ii. विवर्तवाद
C. अद्वैत वेदांत	iii. सदसत्कार्यवाद
D. न्याय दर्शन	iv. सतकार्यवाद

	A	B	C	D
(a)	iii	iv	i	ii
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	i	ii	iii	iv
(d)	ii	i	iv	iii

Ans. (b) : (a) सांख्य दर्शन (iv) सतकार्यवाद
(b) द्वैत वेदान्त (iii) सदसत्कार्यवाद
(c) अद्वैत वेदान्त (ii) विपर्टवाद
(d) न्याय दर्शन (i) असत्कार्यवाद

13. नीचे दिए गए कथनों में एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) की संज्ञा दी गई है।

शंकर दर्शन के संदर्भ में नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

अभिकथन (A): ब्रह्म जगत का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण है।

तर्क (R): ब्रह्म से भिन्न कुछ भी नहीं है।

कूटः

(a) दोनों (A) और (R) सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) दोनों (A) और (R) सही है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) असत्य है और (R) सही है।
(d) दोनों (A) और (R) असत्य हैं।

Ans. (a) : शंकराचार्य ने ईश्वर परिणामवाद का खण्डन किया तथा ब्रह्म को जगत् का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण स्वीकार किया तथा जगत को ब्रहम का विवर्त्त माना। वे जगत को मिथ्या, ब्रह्म का आभासमान कहते है और जीवों को परमार्थता ब्रह्म से अभिन्न मानते हैं।

(भारतीय दर्शनः डॉ नन्द किशोर देवराज)

14. मध्य वेदांत में मोक्ष के सही क्रम का चयन कीजिए:

(a) सायुज्य, सारूप्य, सामीप्य, सालोक्य
(b) सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य
(c) सारूप्य, सामीप्य, सालोक्य, सायुज्य
(d) सालोक्य, सायुज्य, सारूप्य, सामीप्य

Ans. (b) : मध्य वेदान्त में मोक्ष एक भावात्मक अवस्था है। मध्व दर्शन में मुक्तात्मा की साधना के अनुरूप आनन्दभोग में तारतम्य की बात की जाती है। तारतम्य के आधार पर क्रमशः सालोक्य, सामीप्य, प्रारूप्य एवं सायुज्य- भेद से चार प्रकार की मुक्ति मानी गयी है। यह चार अवस्थाएं हैं।

(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखाः राममूर्ति पाठक)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

15. शंकर की दृष्टि में, ब्रह्म-ज्ञान में एकमात्र प्रमाण है

(a) अर्थापत्ति (b) प्रत्यक्ष
(c) अनुमान (d) शब्द

Ans. (d) : शंकराचार्य के अनुसार सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, जागत्कारण एवं जगन्नियन्ता ईश्वर की सिद्धि श्रुतिवाक्यों के आधार पर होती है, अनुमान या तर्क द्वारा नहीं। अर्थात् ब्रहम-ज्ञान में एक मात्र प्रमाण शब्द है।

(भारतीय दर्शनः आलोचन और अनुशीलन- चन्द्रधर शर्मा)

16. अनुप्रमाण और केवल प्रमाण के बीच भेद करने वाला भारतीय दार्शनिक, निम्नलिखित में से कौन है?

(a) पतंजलि (b) शंकर
(c) मध्व (d) ईश्वरकृष्ण

Ans. (c) : माध्वाचार्य के अनुसार, 'यथार्थ प्रमाणम्'। वे प्रमाण का प्रयोग दो अर्थो में – केवल प्रमाण तथा अनुप्रमाण के रूप में करते हैं। केवल प्रमाण के चार भेद- ईश्वरज्ञान, लक्ष्मीज्ञान, योगिज्ञान, अयोगिज्ञान तथा अनुप्रमाण के तीन भेद- प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द।

17. शंकर के अनुसार साधन चटुष्टय के स्तरों में से एक है

(a) प्रकृति-पुरुष ज्ञान (b) मुमुक्षुत्व
(c) नित्यविभूति ज्ञान (d) अनुमान ज्ञान

Ans. (b) : अद्वैत वेदान्ती शंकर के अनुसार ज्ञानमार्ग का अधिकारी वही है जो 'साधन चतुष्टय' युक्त है। यह व्यक्ति के चित्त को शुद्ध करके उसे ज्ञानमार्ग के योग्य बनाता है। जो क्रमशः है- नित्यानित्यव स्तुविवेक, रहामुद्रार्थ भोगविराग, शमदमादिसाधनसम्पत् तथा मुमुक्षुत्व/मोक्षार्थी का मोक्ष प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प से युक्त होना ही मुमुक्षुत्व है।

18. सभी वेदान्तियों के लिए सामान्य यह शिक्षा है कि ब्रह्म

(a) निर्गुण है। (b) सगुण है।
(c) सगुण-निर्गुण है। (d) अनंत है।

Ans. (d) : सभी वेदान्ती को सामान्य रूप से यह शिक्षा है कि ब्रह्म 'सत्यं, ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' अर्थात् सत्य, ज्ञान अनन्त है। यह तैत्तरीय उपनिषद का महावाक्य सभी वेदान्त परम्परा के अनुयायियों को माना है। जिसमें ब्रह्म को अनन्त कहा गया है।

19. नीचे आत्मपरकता के कुछ स्तर दिए गए हैं :

(A) शारीरिक आत्मपरकता (B) मानसिक आत्मपरकता
(C) आध्यात्मिक आत्मपरकता (D) धार्मिक आत्मपरकता

के.सी. भट्टाचार्य द्वारा आत्मपरकता के कौन से तीन स्तर स्वीकार्य हैं?

नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

कूटः

(a) i iii iv (b) ii iii iv
(c) i ii iii (d) i ii iv

Ans. (c) : के.सी. भट्टाचार्य को आत्म परकता के तीन स्तर जो स्वीकार्य हैं निम्न हैं-
(i) शारीरिक आत्मपरकता
(ii) मानसिक आत्मपरकता
(iii) आध्यात्मिक आत्मपरकता

(समकालीन भारतीय दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

20. निम्नलिखित में से यह किसका विचार है कि 'जब आप सत्य को उसके आभास से वंचित कर देते हैं, तो सत्य के सुन्दरतम् भाग को खो देते हैं।'?

(a) श्री अरबिन्दों (b) टैगोर
(c) जे. कृष्णमूर्ति (d) विवेकानंद

Ans. (b) : टैगोर अपनी पुस्तक पर्सनाल्टी में कहते है कि एक दृष्टि से जगत 'प्रतीति' है, परन्तु इसका प्रतीति होना इसे मिथ्या या भ्रामक नहीं बना देता है। उनके अनुसार, यदि सत् की उसकी प्रतीति से सर्वथा पृथक कर दिया जाय तो सत् के सुन्दरतम् भाग को खो देते हैं। यद्यं प्रतीति या आभास मिथ्या या भ्रामक नहीं है।

21. निम्नलिखित में से यह किसका विचार है कि 'देश, काल और कारणता तत्वमीमांसीय तत्व नहीं है, वे आकार मात्र है?

(a) टैगोर (b) विवेकानंद
(c) राधाकृष्णन् (d) जे. कृष्णमूर्ति

Ans. (b) : विवेकानन्द देश, काल और कारणता को तत्त्वमीमांसीय तत्व नहीं मानते हैं। उन्हें आकार कहते हैं। क्योंकि वे स्वतंत्र रूप में आस्तित्ववान नहीं है, वे अपने में 'होने' या 'निर्देश' के लिए दूसरे तत्वों पर निर्भर हैं। स्थान, काल और कारणता की सार्थकता निरपेक्ष सत् के लिए नहीं, बल्कि सृष्टि प्रक्रिया के लिए है।

22. निम्नलिखित में से यह किसका विचार है कि 'सृष्टि अज्ञान में आत्मा का निमज्जन है' है?

(a) टैगोर (b) गांधी
(c) विवेकानंद (d) श्री अरबिन्दों

Ans. (d) : श्री अरविन्द के अनुसार, 'सृष्टि अज्ञान में आत्मा का निमज्जन है। अर्थात् 'आत्म का अज्ञान में प्रविष्ट हो जाना है।' श्री अरविन्द के अनुसार, अज्ञान ईश्वरीय चेतना की अपने को आंशिक रूप में रोक रखने की शक्ति है। यह ईश्वरीय चेतना का ही अंश है।

(समकाली भारतीय दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

23. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिएः

सूची-I (विचारक)	सूची-II (विचारधारा)
A. राधाकृष्णन्	i. ईश्वर परम आत्मरूप है।
B. टैगोर	ii. ग्रामीण लोकतंत्र
C. गांधी	iii. सैद्धांतिक अवगति, भावनात्मक भक्ति, पूजा-प्रार्थना
D. इकबाल	iv. धर्म घर के लिए आतुरता है।

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iv	ii	i	iii
(c)	iii	iv	ii	i
(d)	iii	iv	i	ii

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : (a) राधाकृष्णन	(iii) सैद्धांतिक अवगति, भावनात्मक भक्ति, पूजा-प्रार्थना
(b) टैगोर	(iv) धर्म-घर के लिए आतुरता।
(c) गांधी	(ii) ग्रामीण लोकतंत्र
(d) इकबाल	(i) ईश्वर परमआत्मरूप है।

24. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I	सूची-II
A. प्राज्ञ	i. जाग्रत
B. तैजस्	ii. सुषुप्ति
C. वैश्वानर	iii. स्वप्न
D. अद्वय	iv. तुरीय

कूटः

	A	B	C	D
(a)	iii	ii	i	iv
(b)	ii	iii	i	iv
(c)	ii	i	iii	iv
(d)	iv	iii	ii	i

Ans. (b) : (a) प्राज्ञ	(ii) सुषुप्ति
(b) तैजस्	(iii) स्वप्न
(c) वैश्वानर	(i) जाग्रत
(d) अद्वय	(iv) तुरीय

25. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
A. प्रकृति	i. निष्क्रिय
B. पुरुष	ii. सक्रिय
C. महत्	iii. द्वितीय व्यक्त रूप
D. अहंकार	iv. प्रथम व्यक्त रूप

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	i	iv	iii
(c)	iii	iv	ii	i
(d)	iv	iii	i	ii

Ans. (b) : (a) प्रकृति	(ii) सक्रिय
(b) पुरुष	(i) निष्क्रिय
(c) महत्	(iv) प्रथम व्यक्त रूप
(d) अहंकार	(iii) द्वितीय व्यक्त रूप

26. लॉक के दर्शन के संदर्भ में दिये गये अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिये तथा नीचे दिये गये विकल्पों में से सी विकल्प का चयन कीजिये:

अभिकथन (A): हमारे सभी ज्ञान अनुभवसापेक्ष होते हैं।

तर्क (R): ज्ञान संवेदन और स्वसंवेदन से प्राप्त होता है।

विकल्प :

(a) (A) और (R) दोनों सही है, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(b) (A) सही है और (R) गलत है, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(c) (A) सही है और (R) गलत है, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या है।

(d) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

Ans. (d) : लॉक के अनुसार हमारे सभी ज्ञान अनुभव सापेक्ष है तथा ज्ञान संवेदन और स्वसंवेदन से प्राप्त होता है। दोनों सत्य है और सही व्याख्या हैं।

27. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये तथा नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
A. ह्यूम	i. समानान्तरवाद
B. लॉक	ii. संशयवाद
C. बर्कले	iii. अनुभववाद
D. स्पिनोजा	iv. प्रत्ययवाद

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	i	iv	iii
(c)	ii	iii	iv	i
(d)	iv	iii	i	ii

Ans. (c) : (a) ह्यूम	(ii) संशयवाद
(b) लॉक	(iii) अनुभववाद
(c) बर्कले	(iv) प्रत्ययवाद
(d) स्पिनोजा	(i) समानान्तरवाद

(ज्ञानमीमांसा की समस्याएं: डॉ. हृदयनारायण मिश्र)

28. संवेदनवाद, अनुभववाद तथा प्रतिनिधित्ववाद सम्मिलित रूप से किससे संबंधित है?

(a) ह्यूम (b) लॉक
(c) कांट (d) बर्कले

Ans. (b) : संवेदनवाद, अनुभववाद तथा प्रतिनिधित्ववाद का प्रतिपादन लॉक के दर्शन में किया गया है। वस्तुओं से प्राप्त संवेदन जो कि हमारे अनुभव के विषय हैं, से हमारे मस्तिष्क में प्रत्ययो का निर्माण होता है। इन्हीं प्रत्ययों के अनुरूप जब बाह्य जगत में कोई वस्तु होती है तो हमें उसका अनुभव होता है और हमें ज्ञान प्राप्त होता है। वास्तव में हमारे ज्ञान के विषय प्रत्यय है जो कि बाह्य वस्तुओं के प्रतिनिधि हैं। यही प्रत्यय प्रतिनिधित्ववाद है।

29. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर चुनिये:

सूची-I (चिंतक)	सूची-II (ग्रंथ)
A. लॉक	i. प्रिंसिपल्स ऑफ ह्यूमेन नॉलेज
B. ह्यूम	ii. प्रिंसिपिया फिलॉसॉफिया
C. देकार्त	iii. एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टैंडिंग
D. बर्कले	iv. इन्क्वाइरी कन्सर्निंग ह्यूमेन अन्डरस्टैंडिंग

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	iv	iii	i
(c)	iii	i	ii	iv
(d)	iii	iv	ii	i

Ans. (d) : (a) लॉक (iii) एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टैंडिग
(b) ह्यूम (iv) इन्क्वाइरी कन्सर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टैंडिंग
(c) देकार्त (ii) प्रिंसिपिया फिलॉसॉफिया
(d) बर्कले (i) प्रिंसिपल्स ऑफ ह्यूमन नॉलेज

30. 'संस्कार' एवं विज्ञान के मध्य अन्तर..............के द्वारा किया गया था।
(a) कांट (b) लॉक
(c) ह्यूम (d) बर्कले

Ans. (c) : ह्यूम अनुभव को ही एक मात्र ज्ञान का साधन मानते हैं। उनके अनुसार संस्कार और प्रत्यय विज्ञान अनुभव के दो अंग हैं। बाहरी जगत से (संवेदन) या हमारे भीतर से (स्वसंवेदन) जो अनुभव प्राप्त होते हैं। उन्हें 'संस्कार' कहते हैं और संस्कारों के धुँधले और निर्बल और कम स्पष्ट रूप जो हमारे मन में रहता है, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।
(ज्ञानमीमांसा की समस्थाएं: डॉ. हृदयनारायण मिश्र)

31. नीचे दिये गये दो कथनों में से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) की संज्ञा दी गई है। तर्कीय प्रत्यक्षवाद के संदर्भ में (A) और (R) पर विचार करते हुए नीचे दिये गये कूटों से सही कूट चिह्नित कीजिए :
अभिकथन (A) : सत्यापन सिद्धान्त के अनुसार 'किसी तर्कवाक्य का अर्थ सत्यापन का प्रकार है।'
तर्क (R): वे सभी कथन जिनका अनुभव द्वारा न तो सत्यापन किया जा सकता है और न ही उन्हें मिथ्या साबित किया जा सकता है, सार्थक हैं।
कूटः
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, परन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।

Ans. (c) : सत्यापन सिद्धान्त तर्कीय प्रत्यक्षवाद से सम्बन्धित हैं। जो विज्ञान से प्रभावित हैं। इसके अनुसार, विज्ञान की नींव निरीक्षण प्रयोग पर आधारित है, अतः वही वाक्य ज्ञानात्मक कहा जा सकता है, जिसका आधार निरीक्षण या अनुभव हो। इस दृष्टि से उन्होंने अर्थ का एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया जिसे अर्थ का सत्यापन सिद्धान्त कहते हैं। स्लिक के अनुसार, 'किसी वाक्य या तर्कवाक्य (Proposition) का अर्थ उसके सत्यापन की विधि है।' स्लिक एक तर्कीय प्रत्यक्षवादी दार्शनिक हैं। कोई कथन सार्थक तब होता है, जब उसका अनुभव के द्वारा सत्यापन किया जा सकता है। अतः अभिकथन (A) तो सही है परन्तु तर्क (R) गलत है।
(समकालीन पाश्चात्य दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

32. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सेंट थॉमस एक्विनास के संदर्भ में सही हैं?
(a) ईश्वर के सार की पहचान बुद्धि द्वारा की जाती है।
(b) ईश्वर के सार की पहचान शुद्ध यथार्थता के रूप में उसके सार के साथ की जाती है।
(c) ईश्वर के सार की पहचान उसकी शक्ति से की जाती है।
(d) ईश्वर की सत्ता है, परंतु उसमें सार नहीं है।

Ans. (b) : सेंट थॉमस एक्वीनास के अनुसार ईश्वर के सार (essence) और ईश्वर के सारतत्व में कोई भेद नहीं है। ईश्वर शुद्ध आकार शुद्ध यथार्थता है। ईश्वर आस्था का विषय है परन्तु उसे तर्कबुद्धि के द्वारा जाना जा सकता है। ईश्वर के सारतत्व (Oral' sessence) को उसके अस्तित्व (Existence) के माध्यम से शुद्ध यथार्थता (Pure Autuality) के रूप में पहचाना जा सकता है।
(A HISTORY of Philosophy: Frank Thily)

33. विभिन्न विज्ञानों के बीच अरस्तू के भेद के अनुसार, ''शुद्ध और अमूर्त ज्ञान'' का वर्णन.........द्वारा होता है।
(a) सैद्धान्तिक विज्ञान यथा राजनीति शास्त्र और नीति शास्त्र
(b) व्यावहारिक विज्ञान यथा ईश्वर मीमांसा तथा तत्त्वमीमांसा
(c) सैद्धान्तिक विज्ञान यथा गणित और भौतिक विज्ञान
(d) व्यावहारिक विज्ञान यथा राजनीति शास्त्र और नीति शास्त्र

Ans. (c) : अरस्तू ने विज्ञानों को चार वर्गों में विभक्त किया था। पहला, तर्कशास्त्र यह बौद्धिक अनुशासन का विज्ञान हैं। दूसरा, सैद्धान्तिक विज्ञान 'शुद्ध और अमूर्त ज्ञान' के वर्णन का विज्ञान जिसमें गणित, भौतिक, मनोविज्ञान, तत्त्वमीमांसा आदि आते हैं। तीसरा, व्यावहारिक विज्ञान, नीतिशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र आते हैं। चौथा, उत्पादक विज्ञान, अरस्तू की पाइटिक्स जिसे आज सौन्द्रर्यशास्त्र कहते है, आती है।
(पाश्चात्य दर्शन का उद्भव एवं विकासः डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

34. नीचे दिये गये दो कथनों में से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) की संज्ञा दी गई है। (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजिएः
अभिकथन (A): प्लेटो ने अपनी पुस्तक थीटिटस में इस विचार को अस्वीकार किया कि ज्ञान विचार है।
तर्क (R): ज्ञान आस्था पर आधारित होना चाहिये न कि बुद्धि पर।
कूटः
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

Ans. (c) : प्लेटो अपनी पुस्तक 'थीटिटस' में ज्ञान पर विरोधात्मक दृष्टि से विचार करते हैं। वह यह स्पस्ट करते है कि ज्ञान क्या नहीं है। प्लेटो के अनुसार यदि इन्द्रिय प्रत्यक्ष और मत को ज्ञान माना जाये तो प्रामाणिक और दार्शनिक ज्ञान प्राप्त करना असंभव हो जायेगा। उसके अनुसार प्रत्यक्ष और मत पर आधारित विश्वास सत्य

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

एवं असत्य दोनों हो सकते हैं। उसके अनुसार ज्ञान का विषय अनिवार्य एवं सार्वभौमिक होता है। यह सार्वजनिक प्रतीति और वस्तुनिष्ठ मापदण्ड पर आधारित होता है। ज्ञान आस्था पर न आधारित होकर प्रत्ययों अथवा विशुद्ध आकारों का अन्तर्बोध है जो बौद्धिक अन्तर्दृष्टि (प्रतिभा) से ही प्राप्त हो सकता है। अतः अभिकथन (A) सही है और तर्क (R) गलत है।

35. ''परमाणु की सत्ता है-क्योंकि वे सत् हैं। रिक्त देश की सत्ता है जबकि इसे विरोधाभासी रूप से असत् कहा जाता है। और किसी चीज की सत्ता नहीं है।'' यह दार्शनिक उक्ति है-

(a) हेराक्लीट्स की (b) डेमोक्रीट्स की
(c) अनेक्जागोरस की (d) पारमेनिडिज की

Ans. (b) : डेमोक्रीटस् जो कि ग्रीक परमाणुवादी दार्शनिक हैं के अनुसार, ''परमाणु की सता है-क्योंकि वे सत् है। रिक्त देश की सत्ता है जबकि इसे विरोधाभासी रूप से असत् कहा जाता है और किसी चीज की सत्ता नहीं है।'' (A HISATORY OF PHILOSOPHY: FRANK THILLI)

36. निम्नलिखित में से यह किसका विश्वास था कि ''सभी वस्तुएँ आत्मा और चित्ति से भरपूर है''?

(a) डेमोक्रीट्स (b) हेराक्लीट्स
(c) पारमेनिडिज (d) पाइथागोरस

Ans. (b) : हेराक्लीट्स आत्मा की अमरता के सिद्धान्त में विश्वास करते थे। उनके अनुसार आत्मा का स्वतंत्र अस्तित्व है और अमर है। वह मानते थे कि 'सभी वस्तुएं आत्मा और चित्ति। से भरपूर हैं' हेराक्लाइटस परिवर्तन को शाश्वत् और 'अग्नि' को मूल तत्त्व मानते है।

37. प्रोटागोरस के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं? सही कूट का चयन कीजिये :

(i) मनुष्य सभी वस्तुओं का मापदंड है।
(ii) सत्य वस्तुनिष्ठ है।
(iii) एक व्यक्ति के लिये जो सत्य है, यह आवश्यक नहीं कि वह दूसरे के लिये भी सत्य हो।

कूटः

(a) केवल (i) सही है।
(b) केवल (i) और (ii) सही हैं।
(c) केवल (i) और (iii) सही हैं।
(d) केवल (ii) और (iii) सही हैं।

Ans. (c) : सोफिस् सम्प्रदाय के प्रवर्तकों में अबडेरा के निवासी प्रोटागोरस का नाम अग्रगण्य है। उनका एक सुप्रसिद्ध सिद्धान्त 'मनुष्य प्रत्येक वस्तु का मापदण्ड है' प्रोटोगोरस के अनुसार सत्य व्यक्ति की संवेदना और अनुभूति तक सीमित है। इससे स्पष्ट है कि सोफिष्ट सत्य को वस्तुनिष्ठ नहीं मानते बल्कि आत्मनिष्ठ बना देते हैं। जो व्यक्ति विशेष को सत्य प्रतीत होता है वह उसके लिए सत्य है अर्थात जो एक व्यक्ति को सत्य प्रतीत होता है वह दूसरे के लिए असत्य भी हो सकता है। सोफिस्टों का यह सिद्धान्त व्यक्तिगत या आत्मनिष्ठ सत्य और वस्तुनिष्ठ सत्य के भेद को समाप्त कर देता है।
(पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकासः डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

38. गिलबर्ट राइल का सिद्धान्त ''मशीन में प्रेत'' अस्वीकार करता है

(a) देकार्त के देह-मन के द्वैतवाद
(b) बर्कले का प्रत्ययवाद
(c) स्पिनोजा का सर्वेश्वरवाद
(d) मन की बौद्धिक क्षमता

Ans. (a) : गिल्बर्ट राइल ने अपने भाषा-दर्शन में डेकार्ट द्वारा प्रतिपादित मन-शरीर (देह-मन) की आलोचना करते हुए कहता है कि मन-शरीर का भेद करना एक तरह कोटिदोष की श्रेणी में आता है। वह इसे मशीन में प्रेत (Host in the Machine) का पूर्वाग्रह कहता है।

39. निम्नलिखित सूची-I की मदों को सूची-II से सुमेलित कीजिये और कूटों का प्रयोग करते हुए सही उत्तर चुनियेः

सूची-I	सूची-II
A. निरपेक्ष में एकता और प्रतिकूलता दोनों ही होनी चाहिए	i. लॉक
B. इन्द्रिय संवेदन के आकार अन्तःप्रज्ञानात्मक होते है, बुद्धि के वैचारिक	ii. ह्यूम
C. द्रव्यों के प्रत्यय अनुपयुक्त है।	iii. कांट
D. प्रत्यय पूर्णतः असम्बद्ध या अकस्मात संयुक्त नहीं होते, वे एक निश्चित सीमा तक सिद्धांत और सातत्य में एक दूसरे से संबंधन कराते हैं।	iv. हीगेल

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	iv	ii	iii
(b)	iii	ii	iv	i
(c)	iv	iii	i	ii
(d)	ii	i	iii	iv

Ans. (c) :

(a) निरपेक्ष में एकता और प्रतिकूलता दोनों ही होनी चाहिए।	(iv) हीगेल
(b) इन्द्रिय संवेदन के आकार अंतःप्रज्ञात्मक होते है बुद्धि के वैचारिक	(iii) कांट
(c) द्रव्यों के प्रत्यय अनुपयुक्त है।	(i) लॉक
(d) प्रत्यय पूर्णतः असम्बद्ध या अकस्मात संयुक्त नहीं होते वे एक निश्चित सीमा तक सिद्धान्त और सातत्य में एक दूसरे से संवर्धन कराते हैं।	(ii) ह्यूम

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

40. हीगेल के अनुसार, निरपेक्ष मन अपने सत्य के सार को............में अन्तः अनुभूति में अभिव्यक्त करता है।

(a) नैतिकता (b) कला
(c) धर्म (d) दर्शन

Ans. (d) : हीगेल के दर्शन में निरपेक्ष मन आत्मा विकास की सर्वोच्च अवस्था है। जिसके अन्तर्गत आत्मा की दोनों पूर्ववर्ती अवस्थाओं, आत्मनिष्ठ मन (आत्मा) और वस्तुनिष्ठ मन (आत्मा) का समन्वय हो जाता है। इस अवस्था में भी मन की अभिव्यक्ति तीन रूपों में होती है- क्रमशः कला (सौन्दर्यशास्त्र), धर्म (धर्म-दर्शन), तथा दर्शन शास्त्र (दर्शन)। प्लेटो के समान हीगेल भी मानता है कि ज्ञान और विज्ञान की विभिन्न विधाओ और शाखाओं में दर्शनशास्त्र ही सर्वोच्च है। वस्तुतः निरपेक्ष मन अपने सत्य के सार के दर्शन मे अन्तःअनुभूति अवस्था में अभिव्यक्त करता है।

(पाश्चात्य दर्शन का उद्भव एवं विकासः डॉ हरिशंकर उपाध्याय)

41. 'मृत्यु के प्रति अभिमुखता उससे पलायन हैं।' यह किसके दर्शन को अभिव्यक्त करता है?

(a) रसेल (b) हुसर्ल
(c) हाइडेगर (d) मूर

Ans. (c) : हाइडेगर के अस्तित्ववादी दर्शन में 'मृत्यु के प्रति अभिमुखता' का विशिष्ट महत्व है। उनके अनेक अनुसार, 'मृत्य निश्चित भविष्य है। 'मृत्यु की अनिवार्यता' भविष्य के लिए पूर्ण निश्चयता है और यह अनुभूति हर क्षण जीवित है- वर्तमान है। हम अपने साधारण अप्रामणिक जीवन में इस अनुभूति से पलायन कर जाते है। हम मृत्यु की अनिवार्यता को जानबूझकर भुलाये बैठे रहते है। हम ऐसे जीते है जैसे हमें वर्षों जीना है और कई मिथ्या धारणाएं कल्पित कर लेते है। इसी अर्थ में हाइडेगर कहता है कि, 'मृत्यु के प्रति अभिमुखता (Being towards death) उससे पलायन है, भाग जाना है। (Philosophy of Man: Manuel Dy Junior)

42. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर चुनियेः

सूची-I	सूची-II
A. उन सभी प्रदत्तों का समुच्चय जिनका हम अपनी सत्ता में विरोध करते हैं।	i. केअर
B. वह अनुभव जो हमारे लिये सम्पूर्ण सत् को अनावृत करता है।	ii. दासमैन
C. प्रत्येक दूसरा है और कोई भी स्व नहीं है।	iii. तथ्यात्मकता
D. सत्ता, तथ्यात्मकता और पतनशीलता में ऐक्य	iv. मूड

कूटः

	A	B	C	D
(a)	iv	i	iii	ii
(b)	i	iv	ii	iii
(c)	ii	iii	i	iv
(d)	iii	iv	ii	i

Ans. (d) : (a) तथ्यात्मकता से तात्पर्य, उन सभी प्रदत्तों का समुच्चय जिनका हम अपनी सत्ता में विरोध करते हैं।
(b) मूड से तात्पर्य वह अनुभव जो हमारे लिए सम्पूर्ण सत् की अनावृत करता है।
(c) दासमैन का तात्पर्य प्रत्येक दूसरा है और कोई भी स्व नहीं है।
(d) केअर, सता, तथ्यात्मकता, पतनशीलता में ऐक्य से सम्बन्धित है।

(समकालीन पाश्चात्य दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

43. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये। देकार्त के लिये, मानव देह मशीन की तरह है।

सूची-I	सूची-II
A. देह का गतिमान सिद्धान्त है	i. हृदय की ऊष्मा
B. गति के अंग	ii. तंत्रिकाएँ
C. संवेदन के अंग	iii. पेशियाँ

कूटः

	A	B	C
(a)	i	iii	ii
(b)	iii	i	ii
(c)	ii	i	iii
(d)	ii	iii	i

Ans. (a) : देकार्त (डेकार्ट) के अनुसार मानव मन, मानव देह में 'पीनियल ग्लैण्ड' के माध्यम से 'अन्तर्क्रिया' करता है। यदि देकार्त के लिए मानव देह मशीन की तरह हो तो (a) देह के गतिमान सिद्धान्त के रूप में हृदय की ऊष्मा को, (b) गति के अंग के रूप में पेशियों को तथा (c) संवेदन के अंग के रूप में तंत्रिकाओं को रखा जा सकता है।

44. 'उद्देश्य में विधेय सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया गया है

(a) देकार्त द्वारा (b) लाइब्नित्ज़ द्वारा
(c) स्पिनोज़ा द्वारा (d) लॉक द्वारा

Ans. (b) : लाइबनित्ज अपने सत्तामूलक तर्क में 'ईश्वर को सबसे अधिक पूर्ण सत्ता कहता है, क्योंकि सर्वाधिक पूर्ण तत्व का संप्रत्यय संभव है। लाइबनित्ज के अनुसार, सत्तामूलक युक्ति में, केवल ईश्वर के सन्दर्भ में ही विधेय पद उद्देश्य पद के अंतर्गत निहित हो सकता है। किन्तु अन्य सन्दर्भो में नहीं। इस तरह लाइबनित्ज ईश्वर के संबंध में 'उद्देश्य में विधेय' सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है।

(पाश्चात्य दर्शन को उद्भव और विकासः डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

45. निम्नलिखित में से किसके अनुसार 'नव मानव' का सार आनन्दपूर्ण प्रज्ञा है?

(a) हुसर्ल (b) मूर
(c) नीत्शे (d) फ्रेगे

Ans. (c) : नीत्शे 'नव मानव' का सार आनन्दपूर्ण प्रज्ञा है मानते हैं। इसके अतिरिक्त वे 'विल टू पॉवर' और 'सुपरमैन' सिद्धान्त भी देते हैं। नीत्शे का नीतिशास्त्र व्यक्ति केन्द्रित मूल्यवाद है।

(नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण- संगम लाल पाण्डेय)

46. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार करते हुए नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिएः
अभिकथन (A): रसेल के अनुसार, द्योतक मुहावरों को अपने आपमें कोई अर्थ नहीं होता'।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

तर्क (R): I "चार्ल्स द्वितीय के भाई को पदच्युत किया गया' में "चार्ल्स द्वितीय को पदच्युत किया गया' का कोई अर्थ नहीं है।

II 'चार्ल्स द्वितीय के भाई को पदच्युत किया गया', चार्ल्स का भाई एक द्योतक मुहावरा है और इसलिये इसका कोई अर्थ नहीं है।

कूट :

(a) (A) सही है और (R) I, II, (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) सही है और (R) I, (A) की सही व्याख्या है एवं (R) II गलत है।
(c) (A) सही है (R) II, (A) और की सही व्याख्या है एवं (R) I गलत है।
(d) (A) सही है, लेकिन न ही (R) I और न (R) II, (A) की सही व्याख्या है।

Ans. (c) : रसेल के अनुसार द्योतक मुहावरों (Denoting Phrases) वर्णनात्मक वाक्याशों (Descriptive Phroses) का अपने आप में कोई अर्थ नहीं होता है। "चार्ल्स द्वितीय के भाई का पदच्युत किया गया में "चार्ल्स द्वितीय को पदच्युत किया गया" अपने आप में एक स्वतंत्र वाक्य है। अतः रसेल के सन्दर्भ में तर्क R (I) गलत है। परन्तु तर्क R (II) में "चार्ल्स द्वितीय का भाई" (The broher of charles II) एक द्योतक मुहावरा है, अतः जैसा कि अभिकथन (A) में कहा गया है वैसे ही "चार्ल्स द्वितीय का भाई" का कोई अर्थ नहीं है। अतः अभिकथन (A) सही है, R (II) A की व्याख्या है परन्तु (R) I गलत है।

(समकालीन पाश्चात्य दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

47. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार करते हुए नीचे दिये कूटों से सही उत्तर का चयन कीजियेः

अभिकथन (A): चिदणु गवाक्षहीन हैं

तर्क (R): I बाहर से उनमें कुछ भी प्रवेश नहीं होता।

II उनकी प्रत्येक अवस्था अपने स्वभाव से संचालित होती हैं।

III चिदणुओं में अन्तःक्रिया नहीं होती।

कूटः

(a) (A) सही है और (R) I, II, III, (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) सही है और केवल (R) I, (A) की सही व्याख्या है।
(c) (A) सही है और (R) I, II, (A) की सही व्याख्या है।
(d) (A) सही है और (R) II, III, (A) की सही व्याख्या है।

Ans. (c) : लाइबनित्ज अपने चिदणुवाद में चिद्णुओं को गवाक्षहीन कहता है। जिसका तात्पर्य है चिदणु किन्हीं बाह्य वस्तुओं से प्रभावित नहीं होते अर्थात बाहर से उनमें कुछ प्रवेश नहीं होता। चूंकि प्रत्येक चिदणु अपने आप में पूर्ण है अतः वह आत्मनिर्भर है। अतः स्वतंत्र चिदगुओं में कोई पारस्परिक संबंध नहीं होता। उनकी प्रत्येक अवस्था अपने स्वभाव से संचालित होती है। अतः कथन (A) की व्याख्या तर्क (R) I, II (A) है।

(A HISTORY OF PHILOSOPHY: FRANK THILLY)

48. रसेल के तार्किक अणुवाद के आलोक में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये :

(i) तर्क के वैयक्तिक चरों तथा तर्कवाक्यीय प्रकार्यों के अनुरूप विश्व में अंशव्यापी तथा विश्वव्यापी शामिल है।
(ii) तर्क के अंशव्यापी और विश्वव्यापी के अनुरूप विश्व में अंशव्यापी और विश्वव्यापी प्रकार्य शामिल हैं।
(iii) विश्व में सामान्य तर्कवाक्यों के अनुरूप परमाण्विक तथ्य हैं।

कूटः

(a) केवल (i) सत्य है।
(b) केवल (i) और (ii) सत्य है।
(c) केवल (i) और (iii) सत्य है।
(d) केवल (ii) और (iii) सत्य है।

Ans. (c) : रसेल के तार्किक अणुवाद के आलोक में-
(i) तर्क के वैयक्ति चरों तथा तर्क वाक्यीय प्रकार्यो के अनुरूप विश्व में अंशव्यापी तथा विश्वव्यापी शामिल हैं। और
(iii) विश्व में सामान्य तर्कवाक्यों के अनुरूप स्वतंत्र परमाण्विक तथ्य हैं।
(ii) गलत है।

(समकालीन पाश्चात्य दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

49. व्यवहारवाद के आलोक में निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजिएः

(i) विलियम जेम्स और सी.एस. पीयर्स दोनों व्यवहारवाद के सिद्धान्त से पूर्णतः सहमत हैं।
(ii) व्यावहारिक आधार पर नैतिक सिद्धान्त को प्रस्तुत करने में विलियम जेम्स पीयर्स से भी आगे रहे।
(iii) सी.एस. पीयर्स ने अपने सिद्धान्त को व्यवहारवाद बताया।

कूटः

(a) केवल (i) सत्य है
(b) केवल (i) और (ii) सत्य हैं।
(c) केवल (ii) और (iii) सत्य हैं।
(d) केवल (i) और (iii) सत्य हैं।

Ans. (c) : व्यवहारवाद वह सिद्धान्त है जो 'व्यवहार' को केन्द्रीय स्थान देता है। विचारो की अर्थमूलकता भी व्यवहार पर आधारित है। सी.एस. पीयर्स ने अपने सिद्धान्त का व्यवहारवादी सिद्धान्त कहा। पीयर्स ने ही 'प्रैग्मेटोज्म' शब्द का उपयोग सर्वप्रथम किया। व्यावहारिक आधार पर नैतिक सिद्धान्त को प्रस्तुत करने में विलियम जेम्स पीयर्स से भी आगे रहे। विलियम जेम्स अपने अनुभववाद को परम्परागत अनुभववाद से अधिक मौलिक कहते हैं।

(समकालीन पाश्चात्य दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

50. निम्नलिखित में से किस दार्शनिक ने प्रैगमेटिसिज्म का समर्थन किया?

(a) विलियम जेम्स (b) सी.एस. पीयर्स
(c) जी.राइल (d) ए.जे. एयर

Ans. (b) : "प्राग्मेटिसिज्म" शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सी.एस. पीयर्स के दर्शन में हुआ माना जाता है।

(समकालीन पाश्चात्य दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जनवरी-2017
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. अद्वैत के अनुसार जिस कलम से मैं लिख रहा हूँ, वह है :

(a) सत् (b) असत्
(c) सत् और असत् दोनों (d) न ही सत् न असत्

Ans. (d) : अद्वैत वेदान्त में व्यावहारिक जगत की वस्तुओं को सदसत-विलक्षण माना गया है। अर्थात् 'न ही सत् है और न असत्।' 'कलम जिससे मै लिख रहा हूँ' भी व्यावहारिक जगत की एक वस्तु है अतः वह भी 'न सत् है और न असत् है', अर्थात् सदसत् विलक्षण है।

(भारतीय दर्शनः आलोचन और अनुशीलनः चन्द्रधर शर्मा)

2. वैशेषिकों के अनुसार घट का असमवायी कारण निम्नलिखित में से कौन है?

(a) कपाल (b) कपाल संयोग
(c) उपादान (d) दण्ड-संयोग

Ans. (b) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार गुण कभी किसी कार्य का समवायिया उपादान कारण नहीं हो सकता क्योंकि समवायि कारण केवल द्रव्य में होता है। गुण किसी कार्य का केवल असमवायि कारण ही होता है। 'संयोग' वैशेषिक दर्शन में एक गुण है। इसके अतिरिक्त किसी कार्य में असमवायि कारण वह गुण या कर्म है जो समवायि कारण में समवाय सम्बन्ध से रहते हुए कार्योत्पत्ति में सहायक होने से कारण हो जाता है। यहां 'कपाल-संयोग' घट का असमवायि कारण है, क्योंकि वह 'कपाल' में समवाय सम्बन्ध से रहता है। यहां घट 'कार्य' और 'कपाल' समवायि कारण है।

(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखाः राममूर्ति पाठक)

3. केवल नित्य मूर्तद्रव्य को वर्णित करने वाले कूट का चयन कीजिए:

(a) क्षिति, मनस्, आकाश
(b) दिक्, काल, आत्मा
(c) क्षिति के परमाणु, तेज् और मरूत्
(d) काल, आत्मा और मनस्

Ans. (c) : क्षिति, जल, पावक (तेज) और मरुत (वायु) को नित्य, एवं मूर्त्तरूप इनके परमाणु रूप में कहा गया है।

4. मीठे में कड़वेपन का अभाव किस संबंध से रहता है?

(a) समवाय (b) संयोग
(c) विशेषणता (d) स्वरूप

Ans. (d) : मीठे में कड़वेपन का अभाव इसके स्वरूप के कारण होता है। मीठापन और कड़वापन एक तरह के गुण है। और गुण में अपने स्वभावानुसार कोई अन्य गुण नहीं हो सकता है। अतः 'मीठेपन' में कड़वेपन का अभाव उसके स्वरूप सम्बन्ध से जाना जा सकता है।

5. वैशेषिक मतानुसार, घट के संबंध में कुम्हार का दंड क्या है?

(a) समवायी कारण (b) असमवायी कारण
(c) निमित्त कारण (d) अन्यथा सिद्ध

Ans. (c) : न्याय- वैशेषिक दर्शन में समवाय पदार्थ के स्वीकरण के आधार पर कारण के तीन भेद माने गये है- समवायि कारण (Inherent Cause), असमवायि कारण (Nan-Inherent Cause) तथा निमित्त कारण (Efficient Cause), समवायि कारण और असमवायि कारण तो कार्य से अभिन्न रहते है। परन्तु वह कारण जो अपनी शक्ति से उपादान कारण से कार्य उत्पन्न करता है वह निमित्त कारण है। जैसे कुम्भकार घट का निमित्त कारण है। उसका दण्ड और चाक, आदि भी सहकारी कारण होने के कारण निमित्त कारण हैं।

(भारतीय दर्शनः डॉ. नन्द किशोर देवराज)

6. कुमारिल के अनुसार जाति और व्यक्ति के बीच किस प्रकार का संबंध होता है?

(a) समवाय (b) तादात्म्य
(c) स्वरूप (d) संयोग

Ans. (b) : कुमारिल के दर्शन में संयोग एवं संयुक्त तादात्म्य में दो ही सम्बन्ध माने गये हैं। कुमारिल भाव और आभाव दोनों को पदार्थ मानते है। भाव का ज्ञान प्रत्यक्ष आदि से होता है आभावक ज्ञान अनुपलब्धि से होता है। भाव के दो अनिवार्य पक्ष सामान्य और विशेष जाति और व्यक्ति जिसमें परस्पर तादात्म्य अथवा भेदाभेद संबंध है। जाति और व्यक्ति दोनों में अभेद रहने पर उनमें भेद विद्यमान रहता है।

(भारतीय दर्शन का सर्वेक्षणः संगम लाल पाण्डेय)

7. लाइब्नित्ज के पूर्व-स्थापित सामंजस्य सिद्धान्त के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है?

(a) शरीर और आत्मा एक-दूसरे के सामंजस्य से क्रियाशील रहते हैं और एक हो जाते हैं।
(b) शरीर आत्मा के बिना और आत्मा शरीर के बिना क्रिया करते हैं किन्तु दोनों ऐसे क्रिया करते हैं जैसे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।
(c) शरीर आत्मा पर और आत्मा शरीर पर क्रिया करते हैं।
(d) शरीर और आत्मा दोनों एक और समरूप हैं।

Ans. (b) : लाइबनित्ज के अनुसार, आत्मा और शरीर न तो अंतर्क्रिया का संबंध है और न ही संयोगवाद है। आत्मा और शरीर से सम्बन्धित उसका सिद्धान्त पूर्वस्थापित सामंञ्जस्य-नियम है। आत्मा और शरीर क्रमशः चिदणुओं की क्रियाशील और अल्प-क्रियाशील दो अवस्थायें है। ईश्वर ने इन दोनों में इस प्रकार सामंजस्य स्थापित कर दिया है कि एक-दूसरे से स्वतंत्र होते हुए भी चिदणुओं में संबंध बना रहता है।

(पाश्चात्य दर्शन का इतिहास-भाग-2- प्रो. दयाकृष्ण)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

8. कांट के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए:

(i) देश और काल वस्तुगत हैं और अपने ढंग से रहते हैं।
(ii) देश और काल वस्तुगत नहीं है, बल्कि वे केवल आभास और सापेक्षिक है।
(iii) देश और काल प्रागनुभविक हैं

कूटः

(a) केवल (ii) सत्य है।
(b) केवल (i) और (ii) सत्य हैं।
(c) केवल (iii) सत्य है।
(d) केवल (i) और (iii) सत्य हैं।

Ans. (c) : कांट के अनुसार, देश-काल प्रागनुभविक है और प्रत्यक्ष के आकार है। हम देश-काल से वस्तुओं के स्वरूप को निर्धारित नहीं कर सकते है। वस्तुतः देश एवं काल की आत्मनिष्ठ शर्तों से स्वतंत्र रूप में किसी भी वस्तु के स्वरूप का निर्धारण नहीं किया जा सकता है। इसीलिए काण्ट देश–काल को आनुभविक दृष्टि से यथार्थ और अनुभव-निरपेक्ष (अतीन्द्रिय) दृष्टि से अयथार्थ (प्रत्ययात्मक) मानता है।

9. देकार्त के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए:

(i) सभी मानसिक अवस्थाओं को भौतिक अवस्थाओं में घटाया जा सकता है।
(ii) सभी भौतिक अवस्थाओं को मानसिक अवस्थाओं में घटाया जा सकता है।
(iii) मन और शरीर का संबंध तार्किक रूप से वैसा नहीं है जैसा कार और चालक का।
(iv) मनुष्य के संदर्भ में दैहिक और अदैहिक का भेद नहीं है।

कूटः

(a) केवल (iii) सत्य है।
(b) केवल (i) और (iv) सत्य हैं।
(c) केवल (ii) और (iii) सत्य हैं।
(d) केवल (ii), (iii) और (iv) सत्य हैं।

Ans. (a) : मन और शरीर का संबंध वैसा नहीं है जैसा कार और चालक का। देकार्त के मन-शरीर संबंध को 'अंतर्क्रियावाद' के नाम से जाना जाता है।

10. 'जब तक हम भौतिक शरीर में आबद्ध हैं, सम्पूर्ण सत्य का अनुभव असंभव हैं,' यह विचार है

(a) के.सी. भट्टाचार्य का (b) राधाकृष्णन का
(c) जे. कृष्णमूर्ति का (d) गांधी का

Ans. (d) : गांधी जी के अनुसार 'जब तक हम भौतिक शरीर में आबद्ध है, सम्पूर्ण सत्य का अनुभव असंभव है।' गांधी जी भैतिकता से ऊपर आध्यात्मिकता को रखते है। और हम जैसे भौतिकता से आध्यात्मिकता की तरह अग्रसर होते हैं सत्य के और निकट होते हैं।

11. ह्यूम के परिप्रेक्ष्य में अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजिए:

अभिकथन (A): वैयक्तिक अनन्यता कल्पना का कार्य है।

तर्क (R): सुख-दुःख, संवेदन और कल्पना ये सादृश्य, सामीप्य और कारणता के द्वारा एक साथ संबंधित होते हैं।

कूटः

(a) दोनों (A) और (R) सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) दोनों (A) और (R) सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सत्य है और (R) असत्य है।
(d) (A) असत्य है और (R) सत्य है।

Ans. (a) : ह्यूम के 'अ-स्वामित्व सिद्धान्त' के अनुसार, वैयक्तिक अनन्यता केवल एक काल्पनिक विचार है। यह हमारे संस्कारों और प्रत्ययों के साहचर्य से उत्पन्न होता है। अर्थात् सुख-दुःख, संवेदन और कल्पना ये सादृश्य, सामीप्य और कारणता के द्वारा एक साथ संबंधित होते है। जो एकता को उत्पन्न करते हैं।

(AHISTOR OF PHILOSOPHY- FRANK THILLY)

12. शब्द और इसके अर्थ के बीच का संबंध स्वाभाविक नहीं है, यह मत है:

(a) बौद्धों का (b) वेदांतियों का
(c) मीमांसकों का (d) नैयायिकों का

Ans. (d) : नैयायिकों ने शब्द और इसके अर्थ के बीच का संबंध स्वाभाविक न मानकर कृत्रिम माना है। उल्लेखनीय है कि मीमांसा दर्शन भी शब्द और अर्थ में संबंध स्वीकारता है परन्तु न्याय दर्शन के विपरीत वह नैसर्गिक (स्वाभाविक) एवं नित्य सम्बन्ध को मानता है।

(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखाः राममूर्ति पाठक)

13. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म इस विचार का समर्थन करता है कि 'ज्ञान की सत्यता का सत्यापन किसी दूसरे ज्ञान से नहीं होता'?

(a) वेदांत और मीमांसा (b) मीमांसा और सांख्य
(c) मीमांसा और न्याय (d) वेदांत और न्याय

Ans. (a) : 'ज्ञान की सत्यता का सत्यापन किसी दूसरे ज्ञान से नहीं होता' यह ज्ञान के प्रामाण्य से सम्बन्धित स्वतः प्रामाण्यवादी मत है, जिसका समर्थन युग्म रूप में सम्बन्धित प्रश्न की विकल्प (i) वेदान्त और मीमांसा के दर्शनों में किया गया है।

14. जब किसी शब्द के तात्पर्य, अर्थ अथवा उसकी अभिव्यक्ति अपने मूल अर्थ के आंशिक रूप से भिन्न होती है, तो यह स्थिति है:

(a) अभिधा (b) अजहत् लक्षणा
(c) जहत्-अजहत् लक्षणा (d) व्यंजना

Ans. (c) : जब किसी शब्द के तात्पर्य, अर्थ अथवा उसकी अभिव्यक्ति अपने मूल अर्थ के आंशिक रूप से भिन्न होती है, तो यह स्थिति 'जहत्- अजहत्- लक्षणा' की होती है। ध्यातव्य हो लक्षणा तीन प्रकार से क्रमशः जहत् लक्षणा, अजहत्-लक्षणा, जहत्-अजहत्- लक्षणा या भाग्य लक्षणा या भाग्य त्याग लक्षणा भी कहते हैं।

(भारतीय दर्शनः डॉ नन्द किशोर देवराज)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

15. सूची-I का सूची-II सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों का उपयोग करते हुए सही उत्तर का चयन कीजिएः

सूची-I	सूची-II
A. शब्दार्थ शक्ति जिसमें पदों के पारस्परिक अर्थ की अपेक्षा हो।	i. तात्पर्य
B. शब्दों के अर्थों के बीच संबंधों का अविरोध	ii. आसत्ति
C. उच्चरित शब्दों के अर्थ का अविलम्ब ग्रहण	iii. आकांक्षा
D. विशेष अर्थ के सम्प्रेषण में शब्द की क्षमता	iv. योग्यता

कूटः

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iii	iv
(b)	i	iii	iv	ii
(c)	iv	iii	ii	i
(d)	iii	iv	ii	i

Ans. (d) : (a) शब्दार्थ शक्ति जिसमें पदों के पारस्परिक अर्थ को आकांक्षा अपेक्षा हो
(b) शब्दों के अर्थों के बीच संबंधो का अविरोध योग्यता
(c) उच्चरित शब्दों के अर्थ का अविलम्ब ग्रहण आसत्ति
(d) विशेष अर्थ के सम्प्रेषण में शब्द की क्षमता तात्पर्य
आकांक्षा, योग्यता, आसत्ति और तात्पर्य से सम्पन्न पदों का समूह वाक्य है।
(भारतीय दर्शनः डॉ नन्द किशोर देवराज)

16. अ-गवय का निषेध एक भावात्मक सत्ता है और यह अ-गवय से भिन्न है, यह विचार हैः

(a) नैगम नय (b) अपोहवाद
(c) प्रतिबिंबवाद (d) सप्तभंगीनय

Ans. (b) : बौद्ध दर्शन में 'अपोहवाद' सामान्य या जाति को 'अपोह' कहा गया है। 'अपोह' का अर्थ है सदृश्य वस्तुओ के समूह से निसदृश वस्तुओं को अलग करना। उदाहरण के लिए गवय का अर्थ है न अजौ अर्थात जो अ-गवय नहीं है। अर्थात अ-गवय का निषेध एक भावात्मक सत्ता है और यह अ-गवय नहीं है।
(भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण- संगम लाल पाण्डेय)

17. '<u>प्रत्यक्ष कल्पनापोढ़म</u>'- प्रत्यक्ष का यह लक्षण निम्नलिखित में से किसके द्वारा प्रतिपादित है?

(a) दिङ्नाग (b) धर्म कीर्ति
(c) गंगेश (d) ईश्वर कृष्ण

Ans. (a) : 'प्रत्यक्षं कल्पनापाठेम नामजात्यादयसंयुक्तम्' -दिङनाग।
'प्रत्यक्षम् कल्पनापोठम् अभ्रान्रम'-धर्मकीर्ति
'ज्ञानाकरण कम् ज्ञानम् प्रत्यक्षम्'- गंगेश
'इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नम् ज्ञानम् अव्यपदेशम् अन्यभिचारी व्यावसायत्मिकां प्रत्यक्षण'- गौतम
'साक्षात प्रतीतिः प्रत्यक्षम'- प्रभाकर।
विशेषावधारण- प्रधान- प्रत्यक्षम्'- योग
यह विभिन्न भारतीय दर्शनों में प्रत्यक्ष से सम्बन्धित दार्शनिकों की परिभाषा हैं।
(भारतीय दर्शनः डॉ. नन्द किशोर देवराज)

18. नैयायिकों के द्वारा <u>प्रत्यक्ष</u> की <u>निर्विकल्पक</u> स्थिति की सिद्धि होती हैः

(a) प्रत्यक्ष के द्वारा (b) अनुमान के द्वारा
(c) उपमान के द्वारा (d) शब्द के द्वारा

Ans. (b) : नैयायिक प्रत्यक्ष की दो अवस्थाओं को मानते है- निर्विकल्पक और सविकल्पक। अतः प्रत्यक्ष ज्ञान भी सविकल्पक होता है। परन्तु इससे पूर्व वह निर्विकल्पक अवस्था में होता है। यह ज्ञान की पूर्व अवस्था है। प्रत्यक्ष की निर्विकल्पक स्थिति का हम अनुमान करते है।
(भारतीय दर्शनः आलोचन और अनुशीलन- चन्द्रधर शर्मा)

19. '<u>याग न स्वर्गहेतुः क्रियत्वात</u>'
उक्त अनुमान में किस प्रकार का हेत्वाभास है?

(a) बाधित (b) सत्प्रतिपक्ष
(c) विरुद्ध (d) सव्यभिचारी

Ans. (a) : बांधित हेत्वाभास में 'हेतु' अबाधित विषय नहीं होता। अर्थात् इसमे हेतु द्वारा प्रतिपादित साध्य प्रत्यक्ष आदि प्रबलतर अनुमानेत्तर प्रमाणों द्वारा बाधित होता है। जैसे- 'त्याग न स्वर्गहेतुः क्रियात्वात्'।

20. वैशेषिकों के अनुसार आत्मा तब ज्ञान का आधार नहीं हो सकती है, जब यह हो जाती हैः

(a) ज्ञाता (b) ज्ञात
(c) बंधन में (d) मुक्त

Ans. (d) : न्याय- वैशेषिक में ज्ञान को आत्मा का स्वरूप नहीं माना गया है, अतः मुक्तावस्था में 'आत्मा' ज्ञान रहित होती है।

21. यह मन है जिसके द्वारा देखा और सुना जाता है निश्चय ही प्रत्येक वस्तु प्राप्त की जाती है या बुद्धि के प्रकाश से उसकी खोज होती है जैसे अंधकार में एक वस्तु दीप के प्रकाश में प्रकाशित होती है, यह विचार निम्नलिखित में से किसका है?

(a) गंगेश (b) शंकर
(c) वल्लभ (d) कपिल

Ans. (b) : शंकर के अनुसार यह 'मन है जिसके द्वारा देखा और सुना जाता है- निश्चय ही प्रत्येक वस्तु प्राप्त की जाती है.........। यह कथन **शंकर** का मत है।

22. निम्नलिखित में से कौन से <u>पुरुषार्थ</u> चार्वाक को स्वीकार्य है? नीचे दिए गए कूट का चयन कीजिएः

(a) अर्थ और काम (b) अर्थ, काम और धर्म
(c) मोक्ष और काम (d) काम और धर्म

Ans. (a) : चार्वाक दर्शन में 'अर्थ और काम' को ही पुरुषार्थ स्वीकार किया गया है। 'धर्म और मोक्ष' को यह अस्वीकार करता है। चार्वाक दर्शन 'यावज्जीवेत सुख' जीवते और 'मृत्यु एवं अपवर्ग' के दर्शन पर चलता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

23. निम्नलिखित में से क्या भगवद्गीता का उपदेश नहीं है?

(a) कर्मो के फल का त्याग

(b) प्राकृतिक और निर्धारित कर्त्तव्यों का पालन

(c) सुख में सुखी और दुःख में दुःखी होने के भाव से ऊपर उठना

(d) सभी अहं प्रधान इच्छाओं का ईश्वर के प्रति समर्पण नहीं होना चाहिए।

Ans. (d) : भगवद्गीता में निष्काम कर्म और ईश्वर-भक्ति में समर्पण के सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है। जिसके अनुसार-
(1) फलासक्ति रहित होकर प्राकृतिक और निर्धारित कर्त्तव्यों का पालन करना- निष्काम कर्म।
(2) सुख में सुखी और दुःख में दुःखी होने के भाव से ऊपर उठना- स्थितिप्रज्ञ पुरुष
(3) सभी अहं प्रधान इच्छाओं का ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण। स्वयं श्रीकृष्ण अर्जुन को भगवद्गीता में उपदेश देते हैं।
(भारतीय दर्शनः चटर्जी एवं दत्त)

24. निम्नलिखित में से कौन 'ब्रह्मविहार' के समूह से संबंधित नहीं है?

(a) मुदिता (b) करुणा

(c) एकाग्रता (d) मैत्री

Ans. (c) : ब्रहम विहार का समूह क्रमशः मैत्री, करुणा, मुदिता तथा उपेक्षा हैं। महायान सूत्रों में साधनामार्ग ध्यान चतुष्टय, समाधित्रय, पारमिताषट्टक, चार ब्रहम विहार और भूमिदशक के रूप में वर्णित है।

25. जैन दर्शन के अनुसार निम्नलिखित में से कौन एक त्रि-रत्न नहीं है?

(a) सम्यक् भावना (b) सम्यक् चरित्र

(c) सम्यक् दर्शन (d) सम्यक् ज्ञान

Ans. (a) : जैन दर्शन में त्रिरत्नं सम्यक, चरित्र, सम्यक् दर्शन, और सम्यक ज्ञान हैं।

26. '<u>शब्द नित्य शब्दत्वात्</u>'
उक्त <u>अनुमान</u> में किस प्रकार का <u>हेत्वाभास</u> है?

(a) साधारण सव्यभिचार (b) अनूप संहारी

(c) सत्प्रतिपक्ष (d) असाधारण सव्यभिचार

Ans. (d) : 'शब्द नित्य शब्दत्वात्' अर्थात् शब्द नित्य है, क्योंकि उसमें शब्दत्व है।' में हेतु (शब्दत्व) का निजी गुण होने के कारण सजातीय दृष्टान्तों में अनुपस्थित है। अतः यहां असाधारण सत्यभिचार हेतु है। असाधारण सत्यभिचार हेत्वाभास में हेतु अत्यन्त संकीर्ण होता है। वह केवल पक्ष में होता है क्योंकि उसका निजी गुण है। वह विपक्ष एवं सपक्ष में नहीं रहता। वह सपक्षवृत्ति अर्थात् हेतु को पक्ष के साथ सपक्ष में भी रहना चाहिए का उल्लंघन करता है।
(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखाः राममूर्ति पाठक)

27. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करते हुए समतुल्यता की खोज कीजिये और नीचे दिए गए कूटों का उपयोग करते हुए सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
A. $[(p.q) \supset r] \equiv$	i. $[(p\supset q).(q\supset p)]$
B. $[p\vee (q.r)] \equiv$	ii. $\sim p\vee q$
C. $[p \equiv q] \equiv$	iii. $[p\supset(q\supset r)]$
D. $[p \supset q] \equiv$	iv. $[(p\vee q).(p\vee r)]$

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	iii	iv	ii
(b)	ii	iv	iii	i
(c)	iv	ii	i	ii
(d)	iii	iv	i	ii

Ans. (d) : A. $[(p.q) \supset r] \equiv$ iii. $[p\supset(q\supset r)]$
B. $[p\vee (q.r)] \equiv$ iv. $[(p\vee q).(p\vee r)]$
C. $[p \equiv q] \equiv$ i. $[(p\supset q).(q\supset p)]$
D. $[p \supset q] \equiv$ ii. $\sim p\vee q$
(तर्कशास्त्र का परिचयः इरविंग एम. कोपी)

28. तर्क वाक्यों के परंपरागत विरोध वर्ग के संबंध में सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिएः

सूची-I	सूची-II
A. यदि 'I' असत्य है	i. E अनिश्चित है
B. यदि 'O' सत्य है	ii. 'I' अनिश्चित है
C. यदि 'I' सत्य है	iii. 'O' अनिश्चित है
D. यदि 'A' असत्य है	iv. 'A' असत्य है

कूटः

	A	B	C	D
(a)	iv	i	iii	ii
(b)	iii	ii	iv	i
(c)	ii	iii	i	iv
(d)	i	iv	ii	iii

Ans. (a) : A. यदि 'I' असत्य है — iv. 'A' असत्य है
B. यदि 'O' सत्य है — i. 'E' अनिश्चित है
C. यदि 'I' सत्य है — iii. 'O' अनिश्चित है
D. यदि 'A' असत्य है — ii. 'I' अनिश्चित ह

29. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों का उपयोग करते हुए सही उत्तर का चयन कीजिएः

सूची-I	सूची-II
A. अच्छे प्रमाण के प्रभाव में ऐसे निर्णय के लिए जन मानस को भावनात्मक अनुरोध करने से होने वाला दोष	i. पटिश्यो प्रिंसिपाई
B. यह तरीका हमेशा ही दोष-पूर्ण नहीं होता क्योंकि इसमें अधिकारी की अपनी क्षेत्र क्षमता का महात्म्य होता है	ii. इग्नोराटियो इलेन्ची

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

C. तर्क वाक्य का सत्य स्थापित करने में ऐसे मान्य आधार वाक्य को प्रसारित करना जिसमें जो प्रश्न रूप तर्क वाक्य हो वहीं निगमनात्मक निर्णय के रूप में सामने आता है।	iii. ऑर्म्यूमेंटम एंड पोपुलम
D. ऐसे विशेष निर्णय जिससे अन्य निर्णय को अभिप्रेत रूप से स्थापित किया जाए।	iv. ऑगर्यूमेंट्म एंड वेरेक्युन्डियम

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	iii	ii	iv
(b)	ii	i	iv	iii
(c)	iii	iv	i	ii
(d)	iv	iii	ii	i

Ans. (c) : (a) अच्छो प्रमाण के अभाव में ऐसे निर्णय के लिए जनमानस को भावनात्मक अनुरोध करने से होने वाला दोष (iii) 'लोकोत्तेजक युक्ति' (Argumentum ad Populum) कहते है।
(b) यह तरीका हमेशा दोषपूर्ण नहीं होता क्योंकि इसमें अधिकारी की अपनी क्षेत्र क्षमता का महात्म्य होता है, यहाँ (iv) श्रद्धामूलक युक्ति (Argumentum and Verecuncliam) है।
(c) तर्कवाक्य का सत्य स्थापित करने में ऐसे मान्य आधार वाक्य को प्रसारित करना जिसमें जो प्रश्न रूप तर्क वाक्य वही निगमनात्मक निर्णय के रूप में सामने आता है, 'चक्रक दोष' (Petitio Principil) कहलाता है।
(d) ऐसे विशेष निर्णय जिससे अन्य निर्णय को अभिप्रेत रुप से स्थापित किया जाए- 'अर्थान्तर सिद्धि' (Ignaratio Elenchi or Irrelevant Conelusion) कहते हैं।
(तर्कशास्त्र का परिचय इरविंग एम. कोपी)

30. यूनिवर्सल और एग्ज़िस्टेंशल क्वांटिफिकेशन को सूची-I एवं सूची-II के माध्यम से सुमेलित करते हुए नीचे दिए गए कूटों का प्रयोग करते हुए सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
A. $[(x)\ \phi\ x]$	i. $\equiv [\sim (x)\ \phi\ x]$
B. $[(\exists x)\ \phi\ x]$	ii. $\equiv [\sim (\exists x)\ \phi\ x]$
C. $[(x) \sim \phi\ x]$	iii. $\equiv [\sim (x) \sim \phi\ x]$
D. $[(\exists x) \sim \phi\ x]$	iv. $\equiv [\sim (\exists x) \sim \phi\ x]$

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	iii	i	iv	ii

Ans. (b) :

A. $[(x)\ \phi\ x]$	iv. $\equiv [\sim (\exists x) \sim \phi\ x]$
B. $[(\exists x)\ \phi\ x]$	iii. $\equiv [\sim (x) \sim \phi\ x]$
C. $[(x) \sim \phi\ x]$	ii. $\equiv [\sim (\exists x)\ \phi\ x]$
D. $[(\exists x) \sim \phi\ x]$	i. $\equiv [\sim (x)\ \phi\ x]$

31. निम्नलिखित में से, 'न ही फिलमोर ना ही हार्डिंग महान प्रेसिटेंड हुए', की कौन सी सही प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है?

(a) $(\sim F).(\sim H)$ (b) $(\sim F \vee \sim H)$
(c) $F \vee H$ (d) $\sim (F.H)$

Ans. (a) : 'न ही फिलमोर ना ही हार्डिंग महान प्रेसिडेंट हुए' वाक्य एक संयुक्त तर्कवाक्य है, जो 'संयोजन' के माध्यम से इस प्रकार जुड़ा है 'वह ही फिलमोर महान प्रेसिडेंट थे और नही हार्डिंग महान प्रेसिडन्ट थे यथा, $(\sim F).(\sim H)$ इसका प्रतीकात्मक रूप है।
(तर्कशास्त्र का परिचयः इरविंग एम. कोपी)

32. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों का उपयोग करते हुए सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I (आबवटेंन्ड)	सूची-II (आबवर्स)
A. कुछ 'एस', 'पी' नहीं है।	i. कुछ 'एस' 'नॉन-पी' नहीं है।
B. कोई 'एस', 'पी' नहीं है।	ii. कोई भी 'एस' 'नॉन-पी' है।
C. कुछ 'एस','पी' हैं।	iii. कुछ 'एस', 'नॉन-पी' हैं।
D. सभी 'एस', 'पी' हैं।	iv. सभी 'एस' 'नॉन-पी' हैं।

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	iv	ii	iii
(b)	ii	iii	iv	i
(c)	iv	i	ii	iii
(d)	iii	iv	i	ii

Ans. (d) :

A. कुछ 'एस', 'पी' नहीं है।	iii. कुछ 'एस', 'नॉन-पी' हैं।
B. कोई 'एस', 'पी' नहीं है।	iv. सभी 'एस' 'नॉन-पी' हैं।
C. कुछ 'एस','पी' हैं।	i. कुछ 'एस' 'नॉन-पी' नहीं है।
D. सभी 'एस', 'पी' हैं।	ii. कोई भी 'एस' 'नॉन-पी' है।

33. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजिए:

अभिकथन (A): 'निष्कर्ष में व्याप्त पदों की संख्या का अंक आधार-वाक्यों में उपलब्ध व्याप्त पदों से एक कम होना चाहिए।'
तर्क (R): हेतु-पद निष्कर्ष में लुप्त रहता है।

कूटः

(a) (A) और (R) दोनों सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य है, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) असत्य है और (R) सत्य है।
(d) (A) और (R) दोनों असत्य हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : मानक निरपेक्ष न्याय वाक्य के छहः नियमों में एक यह भी है। जिसके अनुसार प्रत्येक आधार-वाक्यों में उपलब्ध व्याप्त पदों की संख्या से निष्कर्ष में व्याप्त पदों की संख्या एक कम होती है अर्थात् 'हेतु पद' (Middle Term) जो कि किसी एक आधारवाक्य में व्याप्त होना ही चाहिए, निष्कर्ष में लुप्त होता है। अतः (A) और (R) सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(Introduction to lagic- I. M- Copi)

34. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजिए:

अभिकथन (A): यदि आधार वाक्य विशेष है, तो निष्कर्ष भी विशेष होगा।

तर्क (R): (i) साकारात्मक विशेष तर्कवाक्य में कोई पद व्याप्त नहीं होता है।

(ii) दोनों आधार-वाक्य विशेष नहीं हो सकते, इसलिए दोनों आधार वाक्यों में मात्र भेद होना चाहिए।

कूटः

(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R) (i), (ii), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, पर (R) (i), (A) की सही व्याख्या है।
(c) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, पर (R) (ii), (A) की सही व्याख्या है।
(d) (A) सत्य है, पर (R) (i), (ii) दोनों ही (A) की सही व्याख्या नहीं है।

Ans. (c) : मानक निरपेक्ष न्याय वाक्य के नियम-6 के अनुसार यदि निरूपाधिक न्यायवाक्य जो कि वैध हो निष्कर्ष विशिष्ट हो तो उसके दोनों आधार वाक्य सामान्य नहीं हो सकते है। अर्थात् यदि एक आधारवाक्य विशेष है तो निष्कर्ष भी विशिष्ट होगा। हालांकि दोनों आधारवाक्य विशेष नहीं हो सकते हैं, इसलिए दोनों आधारवाक्य में 'मात्रा' में भी अन्तर होना चाहिए। ऐसा नहीं होने पर 'सत्तात्मक दोष' होता है। यद्यपि यह सत्य है कि सकारात्मक विशेष तर्कवाक्य में कोई पद व्याप्त नहीं होता और निषेधात्मक विशेष तर्कवाक्य में केवल एक पद व्याप्त होता है। परन्तु यह अभिकथन (A) की व्याख्या नहीं है। अतः केवल अभिकथन (A) की सही व्याख्या R (ii) ही है।

35. यदि भाषा की सत्य-परिभाषा उपलब्ध हो, तो वह सत्य के सिद्धान्त की पर्याप्त स्थिति हो जाती है; यह विचार निम्नलिखित में से किस सिद्धान्त द्वारा सम्प्रेषित होता है?

(a) सत्य का सहभागिता का सिद्धान्त
(b) सत्य का रिडन्डेन्स का सिद्धान्त
(c) सत्य का सिमेन्टिक सिद्धान्त
(d) सत्य का व्यवहारवादी सिद्धान्त

Ans. (c) : 'सत्य का सिमेन्टिक सिद्धान्त' भाषा की सत्ता-परिभाषा पर अधिक जोर देता है। यदि भाषा की सत्य- परिभाषा उपलब्ध हो तो वह सत्ता के सिद्धान्त की पर्याप्त स्थिति हो जाती है।

36. निम्नलिखित में से कौन संशयवादी नहीं है?

(a) ह्यूम (b) पाईरो
(c) बेयल (d) देकार्त

Ans. (d) : पाईरो, ह्यूम और बेयल आदि संशयवादी दार्शनिक है। संशयवाद वह विचारधारा है जो कि किसी भी चीज को निश्चिततापूर्वक जानने से इन्कार करती है। वह सभी प्रकार के 'ज्ञान' के बारे में संशय करके उससे इन्कार करते हैं। संशय करना अलग बात है, क्योंकि देकार्त ने भी अपने बुद्धिवादी दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए संशय किया किन्तु यहां 'संशय' साधन रूप था। परन्तु संशयवाद में 'संशय' साध्य की तरह इस्तेमाल होने लगता है। इसी अर्थ में पाइरो, ह्यूम और बेयल की केवल संशयवादी हैं।

37. देकार्त के अनुसार निम्नलिखित में से सत्य का कौन सा मानदण्ड हैं?

(a) स्पष्टता एवं एकरूपता (b) स्पष्टता एवं सुभिन्नता
(c) स्पष्टता एवं सम्पूर्णता (d) स्पष्टता एवं अपरोक्षता

Ans. (b) : देकार्त अपने बुद्धिवादी दर्शन के आलोक में सत्यता के मानदण्ड के रूप में स्पष्टता एवं सुभिन्नता को मानता है। यह प्रामाणिक ज्ञान की कसौटी है। देकार्त ने 'स्पष्टता' पद का प्रयोग 'साक्षात् रूप में अनुभव किये जाने के अर्थ में' और विवेकपूर्ण या सुभिन्नता (Distinct) शब्द का प्रयोग जो स्वतः जाना जा सके के अर्थ में किया है।

(पाश्चात्य दर्शन का उदभव और विकासः हरिशंकर उपाध्याय)

38. लाइब्नित्ज के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों में से कौन सा सही है?

(a) बुद्धि के सत्य- अनिवार्यतः सत्य
(b) तथ्य के सत्य- पर्याप्त कारणता के नियम पर आधारित
(c) बुद्धि के सत्य- विरोध के नियम का आधारित
(d) तथ्य के सत्य- विरोधता के बिना जिसका निषेध न हो सके

Ans. (d) : लाइबनित्ज के अनुसार 'तथ्य के सत्य' विरोधता के बिना निषेध नहीं हो सकता है। लाइबनित्ज के अनुसार सभी अस्तित्ववादी वाक्य (सत्तामूलक कथन) 'तथ्य के सत्य' है न की बुद्धि के सत्य। इस सरल सिद्धान्त कई महत्वपूर्ण परिणाम हुए।

(पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकासः हरिशंकर उपाध्याय)

39. प्रत्यय दो प्रकार के हैं, 'इन्द्रियों पर अंकित और कल्पना एवं स्मृतिजन्य;' यह विचार निम्नलिखित में से किसका है?

(a) लॉक (b) बर्कले
(c) ह्यूम (d) लाइब्नित्ज़

Ans. (b) : वर्कले के अनुसार प्रत्यय दो प्रकार के होते है 'इन्द्रियों पर अंकित और कल्पना एवं स्मृति के द्वारा निर्मित। बर्कले अपने दर्शन में प्रत्ययों को ही ज्ञान का विषय मानता है। जो या तो हमारी आत्मा द्वारा उत्पन्न किये गये है या ईश्वर द्वारा सृजित किये गये है।

(History of Philosophy- Frank Thilly)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

40. लॉक के ज्ञान के सिद्धान्त के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही कूट का चयन करें:

(i) प्रत्ययों को समझने की शक्ति पर ज्ञान आश्रित है।
(ii) ज्ञान तार्किक नहीं होता।
(iii) ज्ञान का अर्थ प्रत्ययों में सहमति एवं असहमति को देखना है।

कूट:
(a) केवल (i) कथन सत्य है।
(b) केवल (ii) कथन सत्य है।
(c) केवल (i) और (iii) कथन सत्य हैं।
(d) केवल (i) और (ii) कथन सत्य हैं।

Ans. (c) : प्रत्ययों की समझने के मानसिक शक्ति पर ज्ञान आश्रित है और (iii) ज्ञान का अर्थ प्रत्ययों में सहमति एवं असहमति है को देखना है लॉक के ज्ञान सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक प्रत्यय की अनुरूप बाह्य जगत में कोई न कोई वस्तु अवश्य होनी चाहिए अन्यथा वह 'ज्ञान' नहीं हो सकता है। इसे प्रत्यय प्रतिनिधित्ववाद कहते है।

41. भगवद्गीता के 'स्थितप्रज्ञ' के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन एक सही नहीं है?

(a) स्थितप्रज्ञ अपनी समस्त मनोकांक्षाओं का त्याग कर देता है।
(b) स्थितप्रज्ञ के मन में उद्वेग नहीं होता है।
(c) स्थितप्रज्ञ सुखों की प्राप्ति से सर्वथा निःस्पृह है।
(d) स्थितप्रज्ञ हमेशा दूसरों का अच्छा करने के लिए सोचता है।

Ans. (d) : 'स्थित प्रज्ञ' 'सुखे-दुःखे समेकृत्वा, लाभालाभौ जयाजयों तथा वह कभी यह सोचकर कर्म नहीं करता कि अच्छा करना है 'स्थितप्रज्ञ' तो स्वतः स्फूर्त रूप से जो भी कर्म करता है वह शुभ ही होता है। वह संसार के 'लोक संग्रहार्थ' कार्य करता रहता है, निष्काम भाव से। **(भगवद्गीता- गीता प्रेस)**

42. नीचे दो कथन दिये गये हैं जिसमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) की संज्ञा दी गई है। (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजियेः

अभिकथन (A): कांट का निरपेक्ष आदेश का नैतिक सिद्धान्त आकारित और कठोरतावदी है।

तर्क (R): यह भावनाओं की उपेक्षा करता है।

कूट:
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, परन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, परन्तु (R) सही है।

Ans. (a) : काण्ट के नैतिकता के क्षेत्र में दिये गये 'निरपेक्ष आदेश' के सन्दर्भ में यह कहा जाता है कि यह मानवीय भावनाओ की उपेक्षा करते हुए केवल कर्त्तव्य को महत्व देता है। इसी अर्थ में इसे कठोरतावादी (Fegasistic) और आकारिक (Formal) कहा जाता है।
(नीतिशास्त्र का सर्वेक्षणः संगम लाल पाण्डेय)

43. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये और निम्नलिखित में से सही कूट का चयन कीजियेः

सूची-I (लेखक)	सूची-II (रचनाएँ)
A. जी.ई.मूर	i. फ्रीडम एण्ड रीज़न
B. आर.एम. हेयर	ii. इथिक्स
C. टी.एच.ग्रीन	iii. द लॉजिक ऑफ मोरल डिस्कोर्स
D. पॉल एडवर्ड	iv. प्रोलिगोमिन टू इथिक्स

कूट:

	A	B	C	D
(a)	iv	i	ii	iii
(b)	i	iii	iv	ii
(c)	ii	i	iv	iii
(d)	i	ii	iii	iv

Ans. (c) : A. जी.ई.मूर ii. इथिक्स
B. आर.एम. हेयर i. फ्रीडम एण्ड रीज़न
C. टी.एच.ग्रीन iv. प्रोलिगोमिन टू इथिक्स
D. पॉल एडवर्ड iii. द लॉजिक ऑफ मोरल डिस्कोर्स

44. मिल के उत्कृष्ट परार्थवादी सुखवाद में निम्नलिखित में से कौन सा दोष है?

(a) अनियमित मुख्य पद दोष
(b) अनियमित अमुख्य पद दोष
(c) अव्याप्त मध्यम पद
(d) आलंकारिक भाषा दोष

Ans. (d) : मिल के उत्कृष्ट परार्थवादी सुखवाद में, उपयोगितावाद में अथवा सुखवाद में 'अलंकारिक भाषा दोष' है। मिल अपने उपयोगितावाद में अलंकारिक वाक्यों का प्रयोग करते हैं।

45. दंड के निरोधात्मक सिद्धान्त का उद्देश्य है

(a) किये गये अपराध के प्रति बदला लेना
(b) भविष्य में अपराध को रोकना
(c) अपराधी का सुधार
(d) वैयक्तिक स्वतंत्रता को पुष्ट करना

Ans. (d) : दण्ड के निरोधात्मक सिद्धान्त का उद्देश्य भविष्य में अपराध को रोकना है। ध्यातव्य हो कि दण्ड के तीन सिद्धान्त (1) प्रतिरोधात्मक या निरोधात्मक (2) प्रतिकारात्मक तथा (30) सुधारात्मक सिद्धान्त हैं।
(नीतिशास्त्रः सिद्धान्त और व्यवहार- प्रो. नित्यानन्द मिश्र)

46. 'यह अच्छा है' इस कथन की व्याख्या नियामक नीतिशास्त्री किस प्रकार करेगा?

(a) 'यह' जीवन का लक्ष्य है।
(b) 'यह' सामान्यतया लोगों द्वारा अनुमोदित है।
(c) मैं 'यह' का अनुमोदन करता हूँ।
(d) 'यह' करो।

Ans. (d) : नियामक नीतिशास्त्री 'यह अच्छा है' को 'यह करो' के अर्थ में व्याख्यायित करे। नियामक नीतिशास्त्री प्रायः 'यह करो' या 'उसे न करो' का विधान करता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

47. अधोलिखित में से कौन सुखवाद की मूलभूत विशेषता को स्पष्ट करता है?

(a) ईमानदारी स्वयं में अच्छी है।
(b) ईमानदारी अच्छी है क्योंकि यह सुख में वृद्धि करती है।
(c) ईमानदारी अच्छी है क्योंकि यह मनुष्य की प्राकृतिक क्षमता है।
(d) ईमानदारी अच्छी है क्योंकि यह मनुष्य और पशु में भेद करती है।

Ans. (b) : सुखवाद की मूलभूत विशेषता है कि वह कार्य जो हमारे 'सुख' में वृद्धि करता हो वह शुभ या अच्छा होता है। इसी प्रकार ईमारदारी अच्छी है क्योंकि यह सुख में वृद्धि दार्शनिकों के मत अलग-अलग है परन्तु सभी ने 'सुख' को मापदण्ड माना है।

48. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर चुनियेः

सूची-I (चिंतक)	सूची-II (चिंतन)
A. कांट	i. मूलभूत कर्त्तव्य
B. हीगेल	ii. मेरा स्थान एवं तदनुसार कर्त्तव्य
C. ब्रेडले	iii. मनुष्य बनो
D. रॉस	iv. साध्यों के लिए राज्य के सदस्य की तरह कार्य करो

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	ii	iii	i	iv
(d)	iii	i	iv	ii

Ans. (b) : (a) 'काण्ट — (iv) साध्यों के लिए राज्य के सदस्य की तरह कार्य करो।'
(b) हीगेल — (iii) 'मनुष्य बनो'
(c) ब्रेडले ' — (ii) मेरा स्थान एवं तदनुसार कर्त्तव्य'
(d) रॉस — (i) मूलभूत कर्त्तव्य

(नीतिशास्त्रः सिद्धान्त और व्यवहार- प्रो.नित्यानन्द मिश्र)

49. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर चुनियेः

सूची-I (सिद्धान्त)	सूची-II (चिंतक)
A. परामर्शवाद	i. रुडोल्फ कार्नेप
B. वर्णनसिद्धान्त	ii. बटलर
C. निप्रकृतिवाद	iii. आर.एम. हेअर
D. संवेगवाद	iv. पी.टी. गीच

कूटः

	A	B	C	D
(a)	iii	iv	ii	i
(b)	i	ii	iv	iii
(c)	ii	i	iii	iv
(d)	iv	ii	i	iii

Ans. (a) : (a) परामर्शवाद — (iii) आर.एम. हेअर
(b) वर्णन सिद्धान्त — (iv) पी.टी. गीच
(c) निप्रकृतिवाद — (ii) बटलर
(d) संवेगवाद — (i) रुडोल्ड कार्नेप

50. मूर के अनुसार 'शुभ' अपरिभाष्य है क्योंकि

(a) इसमें अगणित गुण हैं।
(b) यह एक सरल पद है।
(c) यह एक अतीन्द्रिय वस्तु है।
(d) यह एक निरर्थक पद है।

Ans. (b) : मूर 'शुभ' को 'अपरिभाष्य' कहते है। उनके अनुसार इससे 'सरल' कुछ हो ही नहीं सकता। वह 'शुभ' को एक 'सरल पद' कहते है। और 'सरल पद' वह होते है जिसका और अधिक विश्लेषण न किया जा सके। जिनकी परिभाषा नहीं दी जा सकती है।

51. निम्नलिखित वेदान्तियों में से कौन सा युग्म जीवनमुक्ति के सिद्धान्त को न्यायोचित नहीं मानता?

(a) शंकर और रामानुज (b) रामानुज और मध्व
(c) शंकर और मध्व (d) वाचस्पति और प्रकाशात्मन

Ans. (b) : रामानुज जीवन मुक्ति नहीं मानते क्योंकि जब तक शरीर है तब तक कर्मो का आत्यन्तिक क्षय नहीं हो सकता और मध्व विदेहमुक्ति को मानते है जो देह पात्र के अनन्तर सम्भव है, वह जीवन्मुक्ति का निषेध करते हैं।

52. निम्नलिखित में से किस पूर्वमीमांसक का यह विचार है कि धर्म केवल साध्य मूल्य है साधन मूल्य नहीं?

(a) कुमारिल (b) प्रभाकर
(c) शबर (d) मुरारि मिश्र

Ans. (b) : प्रभाकर 'धर्म' को साध्य मूल्य मानते हैं, साधन को मूल्य नहीं। पूर्वमीमांसा का मुख्य प्रतिपाद्य विषय धर्म के स्वरूप की व्याख्या एवं परीक्षा करना है। वेद नित्य ज्ञान के भण्डार है, साथ ही साथ वे शाश्वत विधिवाक्यों और नियमों के आगार भी है, जिसके अनुसार आचरण करना धर्म है।

53. पतञ्जलि के 'योगदर्शन' के संदर्भ में सही अनुक्रम का चयन कीजिएः

(a) नियम, यम, प्राणायाम, आसन, प्रत्याहार
(b) यम, नियम, प्राणायाम, आसन, प्रत्याहार
(c) यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार
(d) आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, यम, नियम

Ans. (c) : योगदर्शन भी बन्धन का मूल कारण अविवेक को मानता है। चित्तवृत्तियों के विरोध से ही मोक्ष प्राप्त हो सकता है। उसके लिए साधना-पाद में अष्टांग मार्ग बतलाये गये है जो क्रमानुसार- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि है। प्रथम पांच को बहिरंग तथा शेष तीन को अन्तरंग साधन कहा गया है।

(दर्शन पुंजः विनोद तिवारी)

54. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजियेः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

सूची-I	सूची-II
A. यदृच्छावाद	i. वेदान्ती
B. प्रतीत्य सममुत्पाद	ii. चार्वाक
C. ईश्वरवाद	iii. बौद्ध
D. परमाणुवाद	iv. जैन

कूटः

	A	B	C	D
(a)	**iii**	**iv**	**ii**	**i**
(b)	ii	iii	i	iv
(c)	iii	ii	iv	i
(d)	iv	ii	iii	i

Ans. (b) : (a) यदृच्छावाद (ii) चार्वाक
(b) प्रतीत्य सममुत्पाद (iii) बौद्ध
(c) ईश्वरवाद (i) वेदान्ती
(d) परमाणुवाद (iv) जैन

55. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर चुनियेः

सूची-I	सूची-II
A. चार्वाक	i. केवल प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान शब्द
B. बौद्ध	ii. केवल प्रत्यक्ष
C. सांख्य	iii. केवल प्रत्यक्ष और अनुमान
D. न्याय	iv. केवल प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द

कूटः

	A	B	C	D
(a)	ii	iii	iv	i
(b)	iii	ii	i	iv
(c)	i	iii	ii	iv
(d)	iv	ii	iii	i

Ans. (a) : चार्वाक दर्शन में केवल प्रत्यक्ष, बौद्ध दर्शन में प्रत्यक्ष, अनुमान, सांख्य दर्शन में प्रत्यक्ष, अनुमान शब्द तथा न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द प्रमाण को माना जाता है।

(भारतीय दर्शन- डॉ नन्द किशोर देवराज)

56. निम्नलिखित में से कौन भारतीय दार्शनिक 'धर्मभूत' ज्ञान और 'धर्मीभूतज्ञान' में अन्तर बताता है?

(a) वसुबन्धु (b) मध्व
(c) रामानुज (d) वल्लभ

Ans. (c) : रामानुज के दर्शन में 'धर्मभूत' और 'धर्मीभूत ज्ञान' का अन्तर किया गया है। 'धर्मभूत ज्ञान' विशेषणात्मक ज्ञान है। यह ज्ञाता का विशेषण है। यह जीव या ईश्वर को प्राप्त होता है। यह धर्म के रूप में आत्मा पर आश्रित है इसीलिए यह धर्मभूत ज्ञान है। ज्ञान द्रव्य एवं धर्म दोनों है। जीव और ईश्वर धर्मिभूत ज्ञान है। धर्मिभूत ज्ञान से धर्मभूत ज्ञान निकलता है।

(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखाः राममूर्ति पाठक)

57. निम्नलिखित में से भेदाभेद का सिद्धान्त किसका है?

(a) चित्सुख (b) कुन्दकुन्द
(c) जैमिनी (d) निम्बार्क

Ans. (d) : निम्बार्क भेदाभेदवादी या द्वैतवादी थे। इसके अतिरिक्त औडुलोमि, आश्मरथा, यादवप्रकाश, भर्तप्रपंच, भास्कराचार्य आदि अन्य भेदा भेदवादी परम्परा के दार्शनिक माने जाते हैं।

(भारतीय दर्शन का सर्वेक्षणः संगम लाल पाण्डेय)

58. निम्नलिखित में से कौन दार्शनिक अविकृत परिणामवाद का समर्थन करता है?

(a) निम्बार्क (b) शंकर
(c) वल्लभ (d) मध्व

Ans. (c) : शुद्धाद्वैतवाद के प्रतिपादक बल्लभाचार्य कारण और कार्य में शुद्ध अद्वैत या अभेद मानते हैं। ब्रह्मम जगत में परिणत होने पर भी आवेकृत रहता है। यह ब्रह्म का अविकृत परिणामवाद है।

59. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजियेः

सूची-I	सूची-II
A. तालमुड	i. जोरोस्ट्रियनिज्म
B. त्रिपिटक	ii. सिक्ख
C. ग्रंथ साहेब	iii. जुड़ाइज़्म
D. जेन्दा अवस्था	iv. बौद्ध

कूटः

	A	B	C	D
(a)	iii	iv	ii	i
(b)	iv	iii	i	ii
(c)	ii	i	iv	iii
(d)	i	ii	iii	iv

Ans. (a) : (a) तालगुड (iii) जुडाइज्म
(b) त्रिपिटक (iv) बौद्ध
(c) ग्रंथ साहेब (ii) सिक्ख
(d) जेन्दा अवेस्ता (i) जोरोस्ट्रियनिज़्म

60. निम्नलिखित में से किस धर्म में अग्निपूजा की जाती है?

(a) जुडेइज़्म (b) इसाई
(c) इस्लाम (d) जोरस्ट्रियनिज्म

Ans. (d) : जोरस्ट्रियनिज्म 'धर्म' में अग्नि की पूजा की जाती है। इसमें 'अहरमज्दा' को कल्याण का देवता माना जाता है तथा 'अहिरमन' को बुराई का देवता।

61. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए और निम्नलिखित में से सही कूट का चयन कीजियेः

अभिकथन (A) : गांधी सत्याग्रह को ब्रिटिश साम्राज्य से युद्ध का हथियार मानते हैं।
तर्क (R): वह अंग्रेजी शासकों से भयभीत थे।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूटः

(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, परन्तु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, परंतु (R) सही है।

Ans. (c) : गांधी जी 'संत्याग्रह' को एक हथियार के रूप में प्रयुक्त करते हैं। उन्होंने इसका प्रयोग ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ आजादी की लड़ाई में किया। इसका मतलब ये नहीं वह अंग्रेजी शासकों से भयभीत थे। गांधी के द्वारा प्रतिपादित सत्याग्रह के सिद्धान्त में सत्याग्रही होने का अर्थ है पूर्णतया निर्भय होना, ईमानदार एवं निष्ठावान होना है।

(समकालीन भारतीय दर्शन- बसन्त कुमार लाल)

62. पर्यावरण नारीवाद के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(a) यह संस्कृति को नारी कि रूप में और प्रकृति को पुरुष के रूप में पहचान देते हुए स्त्रियों के वर्चस्व को प्रश्न करता है।
(b) यह संस्कृति को पुरुष के रूप में और प्रकृति को नारी के रूप में पहचान देते हुए पुरुष के वर्चस्व को प्रश्न करता है।
(c) यह संस्कृति को पुरुष के रूप में और प्रकृति को नारी के रूप में पहचान देते हुए नारी के वर्चस्व को प्रश्न करता है।
(d) यह संस्कृति को नारी के रूप में और प्रकृति को पुरुष के रूप में पहचान देते हुए पुरुष के वर्चस्व को प्रश्न करता है।

Ans. (b) : पर्यावरण नारीवाद में संस्कृति को पुरुष के रूप में और प्रकृति को नारी के रूप में पहचान देते हुए पुरुष के वर्चस्व को प्रश्न करता है।

63. निम्नलिखित में से किस दार्शनिक का यह विचार है कि "प्राकृतिक अधिकार" ऐसा पुत्र है जिसका कोई पिता नहीं है?

(a) एडमर्ड बर्क (b) बेंथम
(c) नीत्शे (d) मैक इनटायर

Ans. (b) : बेंथम के अनुसार, प्राकृतिक अधिकार ऐसा पुत्र है जिसका कोई पिता नहीं है। लॉक ने भी अपने दर्शन में प्राकृतिक अधिकारों की बात कही है।

64. गांधीवादी नीतिशास्त्र के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सही नहीं है?

(a) सत्य साध्य के रूप में
(b) अहिंसा साधन के रूप में
(c) साध्य और साधन दोनों का उचित होना चाहिये।
(d) एक उचित साध्य अनुचित साधन के औचित्य प्रदान करता है।

Ans. (d) : गांधी जी के दर्शन में साध्य-साधन की स्वरूप पर भी विचार किया गया। गांधी जी के अनुसार 'साध्य' की पवित्रता जितनी जरूरी है उतनी ही साधन की पवित्रता है। गांधीवादी नीतिशास्त्र में सत्य को सवोच्च साध्य माना गया है। अहिंसा को साधन रूप में माना गया है। गांधी जी के अनुसार एक उचित साध्य साधन के औचित्य का निर्धारण नहीं कर सकता है बशर्ते एक उचित साधन यह सुनिश्चित करता है कि साध्य उचित होगा।

(समकालीन भारतीय दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

65. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये और और नीचे दिये गये कूट से सही का उत्तर का चयन कीजियेः

सूची-I (लेखक)	सूची-II (ग्रंथ)
A. देसाई महादेव	i. रिलिजन एंड सोसाइटी
B. गांधी	ii. द स्टोरी ऑफ बारदोली
C. राधाकृष्णन	iii. स्वाई सोशलिज़्म
D. नारायण जय प्रकाश	iv. द व्हील ऑफ फॉर्च्यून

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	iv	iii	i
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	iii	ii	iv	i

Ans. (c) :

(a) देसाई महादेव	(ii) द स्टोरी ऑफ बारदोली
(b) गांधी	(iv) द व्हील ऑफ फॉर्च्यून
(c) राधाकृष्णन	(i) रिलिजन एण्ड सोसाइटी
(d) नारायण जय प्रकाश	(iii) स्वाई सोसलिज्म

66. ऑस्टिन के अनुसार यह किस वाक् क्रिया का उदाहरण है? 'मैं तुम्हें मार दूँगा'?

(a) वचन-कर्म (b) वचनेत्तर कर्म
(c) प्रभावी वचन कर्म (d) अवचन कर्म

Ans. (b) : "मै तुम्हे मार दूँगा" में वचनेन्तर कर्म (ILLOCUTIONARY) का उदाहरण है। जे. एल. ऑस्टिन वाक् क्रिया का विभाजन तीन रूपों में किया है। (1) वचन कर्म (Locutionary) (2) वचनेत्तर कर्म (Illocutionary) और (3) प्रभावी वचन कर्म (Perlocutioary) जिन वाक्यों का प्रयोग एक निश्चित उद्देश्य के लिए किया जाता है उन्हे वचनेत्तर कर्म कहते है। वादा करना, प्रश्न पूछाना, चेतावनी देना, उत्तर देना आदि वचनेत्तर कर्म है।

(दर्शन पुंजः एक गहन दृष्टि-विनोद तिवारी)

67. निम्नलिखित में से कौन एक सूची ऑस्टिन के क्रिया और उसके वचनेतर शक्ति में भेद को स्पष्ट करती है?

(a) वर्डिक्टिव्स, एक्सरसिटिव्स, कामिसिव्स, बिहैविटिव्स और एक्सपोजेटिव्स
(b) वर्डिक्टिव्स, एक्सरसिटिव्स, कमिसिव्स, सिन्टैक्टिकल और एक्सपोजेटिव्स

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) वर्डिक्टिव्स, एक्सरसिटिव्स, कमिसिव्स, सिमैन्टिकल और बिहैविटिव्स
(d) वर्डिक्टिव्स, एक्सरसिटिव्स, सिमैन्टिकल, सिन्टैक्टिकल और कमीशिव्स

Ans. (a) : ऑस्टिन के क्रिया और वचनेत्तर शक्ति में भेद को स्पष्ट करती है- क्रमशः वर्डिक्टिव्स, एक्सरसिटिव्य, कमिसिव्स, बिहैविटिव्स और एक्सपोजेटिव्स। यह वचन कर्म शक्ति (Illocutionary Force) की पहचान पांच क्रिया रूपों के द्वारा है।
(समकालीन पाश्चात्य दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

68. ''होने का तात्पर्य एक चर का मूल्य होना है,'' यह विचार है
(a) क्वाइन का (b) फ्रेगे का
(c) रसल का (d) स्ट्रॉसन का

Ans. (a) : 'होने का तात्पर्य एक चर के मूल्य का होना है'- क्वाइन। क्वाइन के अनुसार किसी गुण या विधेय के होने से हम उसके निर्देश या सामान्य तक नहीं पहुँच सकते। किसी पदार्थ के प्रति सत्तात्मक प्रतिबद्धता के लिए प्रतिबद्ध चरों का प्रयोग होना नितान्त आवश्यक है। अर्थात् किसी वस्तु या इकाई के अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि वह किसी प्रतिबद्ध चर का मूल्य हो।

69. रसल के अनुसार निम्नलिखित में से कौन अनिश्चित विवरण के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता?
(a) अयोध्या का वर्तमान राजा
(b) भारत का वर्तमान राष्ट्रपति
(c) भारतीय रिजर्व बैंक का वर्तमान गवर्नर
(d) भारत का वर्तमान प्रधानमंत्री

Ans. (a) : महावाक्य 'तत्वमसि' छांदोग्य उपनिषद से उद्धृत है। 'सत्यं ज्ञानमनन्तरम् ब्रह्म' महावाक्य तैतिरीय उपनिषद में, वृहदारण्यक उपनिषद में 'विज्ञानमानन्दं ब्रह्म' उद्धृत है।
(भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलनः चन्द्रधर शर्मा)

70. किसी शब्द का कोई मानक अर्थ नहीं है, इसके जितने प्रयोग हैं, उतने अर्थ हैं और ये अनगिनत हैं यह विचार है
(a) रसल का (b) फ्रेगे का
(c) विट्गेन्स्टाइन का (d) डमेट का

Ans. (c) : विट्गेन्सटाईन के अनुसार अर्थ को नहीं प्रयोग को देखो अर्थात् किसी शब्द का कोई मानक अर्थ नहीं है, इसके जितने प्रयोग है, उतने अर्थ है और अनगिनत है। इसी अर्थ में विट्गेन्सटाईन भाग का उपयोग सिद्धान्त देता है।

71. 'मृत्यु हमारी सारी संभावनाओं का अंत है।' यह कथन है
(a) हाइडेगर का (b) हुसर्ल का
(c) सार्त्र का (d) जॉस्पर्स का

Ans. (c) : सार्त्र के अनुसार 'मृत्यु हमारी सारी संभावनाओ का अन्त है'। मनुष्य जब तक जीता है संभावनाओं के साथ-साथ। यह संसार चेतन आत्मा के लिए संभावनाओं का जगत है। वह यहां विभिन्न प्रकार से अपनी प्रतिभा को निखारता है।

72. अधोलिखित में से किसके अनुसार 'सार को वैसा ही देखा जा सकता है जैसा ध्वनि को सुना जा सकता है'?
(a) हाइडेगर (b) मॉर्सेल
(c) हुसर्ल (d) सार्त्र

Ans. (c) : हुसर्ल के अनुसार 'सार को वैसा ही देखा जा सकता है जैसा ध्वनि को सुना जा सकता है।' हुसर्ल चेतना के दार्शनिक विश्लेषण के आधार पर ऐसे स्वतः सिद्ध वस्तुनिष्ठ सारभाव को ढूढ़ लेना चाहते है जो ज्ञान-विज्ञान का आधार हो।
(समकालीन पाश्चात्य दर्शनः बसन्त कुमार लाल)

73. निम्नलिखित में से कौन हुसर्ल के फेनोमेनॉलाजी का उद्देश्य नहीं है?
(a) ज्ञान और अनुभव के आधार की खोज
(b) उस संरचना का निरूपण करना जो तार्किक विचारों के सार की संरचना करते हैं।
(c) चेतन की अवस्था के संदर्भ में तटस्थता।
(d) प्रदत्त स्वीकृति पूर्वमान्यताओं की

Ans. (d) : हुसर्ल की फेनोमेनॉलॉजी का उद्देश्य- ज्ञान और अनुभव के आधार की खोज करना, उस संरचना का निरूपण करना जिसे तार्किक विचारों के सार की संरचना कहते हैं, चेतना की अवस्था के संदर्भ में तटस्थता तथा प्रदत्तता को उसकी पूर्वमान्यताओं से स्वतंत्र होकर उसके आद्य अर्थ में पकड़ना।

74. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजियेः

सूची-I	सूची-II
A. स्लिअरमारकर	i. फेनोमेलॉजिकल हमर्यूनीटिक्स
B. हाइडेगर	ii. रेडिकल हर्म्यूनीटिक्स
C. डेरिडा	iii. माक्रिसस्ट हर्म्यूनीटिक्स
D. फ्रेड्रिक जेम्सन	iv. रोमॉन्टिक हर्म्यूनीटिक्स

कूटः

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iv	i	iii	ii
(c)	iv	ii	i	iii
(d)	iv	i	ii	iii

Ans. (d) :
(a) स्लिअरमारकर (स्लायरमाखर) (iv) रोमॉन्टिक हर्म्यूनीटिक्स
(b) हाइडेगर (i) फेनोमेनालॉजिकल हर्म्यूनिटिक्स
(c) डेरिडा (ii) रेडिकल हर्म्यूनिटिक्स
(d) फ्रेड्रिक जेम्सन (iii) मार्क्सिस् हर्म्यूनीटिक्स
(समसामायिक राजनीतिक सिद्धान्तः नरेश दधीचि)

75. निम्नलिखित में से कौन दार्शनिक हर्म्यूनीटिक्स को 'सत्तामूलक मोड़' देता है?
(a) पॉल रिकर (b) डेरिडा
(c) हेबरमास (d) हाइडेगर

Ans. (d) : हाइडेगर के फेनोमेनोलाजी का प्रभाव दर्शन क्षेत्र में इतना हुआ कि भाषा-दर्शन एवं समाज दर्शन दोनों में फेनोमेनोलाजिकल दृष्टि की एक विधा खुल गयी। भाषा दर्शन में ही अर्थ निरूपणता का एक नया आधार उपलब्ध हो गया और फेनोमेनोलाजी के प्रभाव में (Hermeneuties) शास्त्रार्थमीमांसा की एक शाखा विकसित हो गयी जिसे 'सत्तामूलक मोड़' कहते है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. नेट/जेआरएफ परीक्षा, जुलाई-2016
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. वैशेषिक के अनुसार एक घट का असमवायीकारण है :
(a) पृथ्वी स्वयं (b) घट स्वयं
(c) घट के अंश (d) घट के अंशों का संयोजन

Ans. (d) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार असमवायीकारण वह गुण या कर्म है जो समवायीकारण में समवाय सम्बन्ध से रहते हैं और कार्योत्पत्ति में सहायक होते हैं। कार्य और उसका असमवायीकारण दोनों ही समवायीकारण में समवाय सम्बन्ध में रहते हैं। 'घट के अंशों का संयोजन' घट का असमवायीकारण है, क्योंकि वह घट के अंशों में समवाय सम्बन्ध से रहता है।

2. पर्वतः वह्निमान धूमात्
उपर्युक्त अनुमान में किस प्रकार का हेत्वाभास है?
(a) असाधारण सव्यभिचार (b) अनुपसंहारी
(c) बाधित (d) व्याप्यत्वासिद्ध

Ans. (d) : पर्वतः वह्निमान धूमात् अर्थात् पर्वत वन्हिमान (अग्निमय) होने के कारण धूमवान है; यहाँ वह्नि और धूम की व्याप्ति नियत नहीं है क्योंकि लोहे के जलते गोले में वह्नि है किन्तु धूम नहीं है; वह्नि और धूम की व्याप्ति आर्द्रन्धनसंयोग रूपी उपाधि के कारण सोयाशिक है, क्योंकि गीली लकड़ी के जलने पर ही अग्नि से धूम उत्पन्न होता है। जहाँ 'हेतु' सोपाधिक होता है वहाँ 'व्याप्यत्वसिद्धि' हेत्वाभास होता है।

3. निम्नलिखित में से किस दर्शन के अनुसार एक वस्तु एक ही समय में 'हो' भी सकती है और 'नहीं भी'?
(a) चार्वाक (b) वेदांत
(c) जैन (d) बौद्ध

Ans. (c) : जैन धर्म के सप्तभंङ्गी नय के तीसरे नय के अनुसार, 'स्यात् अस्ति च नास्ति च' अर्थात् एक वस्तु है भी और नहीं भी। अर्थात् एक विशेष अर्थ में वह वस्तु है और अन्य अर्थ में नहीं भी है।

4. चार्वाक के अनुसार अनुमान एक प्रमाण नहीं हो सकता क्योंकि :
(a) यह ईश्वर को सिद्ध नहीं कर सकता है।
(b) यह भ्रमातीत नहीं है।
(c) इसकी व्याप्ति को स्थापित नहीं किया जा सकता है।
(d) यह स्व व्याघाती है।

Ans. (c) : चार्वाकों के अनुसार, अनुमान का प्रमुख साधन व्याप्ति ज्ञान है, जिसे स्वयं अनुमान पर आधारित माना जा सकता है। चार्वाकों के अनुसार व्याप्ति की स्थापना सम्भव नहीं हो सकती है। अतः वह केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को ही मानते हैं। चार्वाकों के अनुसार व्याप्ति की स्थापना प्रत्यक्ष के आधार पर सम्भव नहीं है, क्योंकि एक साथ सारी घटनाओं का निरीक्षण नहीं किया जा सकता है।

5. वैदिक परम्परा में यज्ञ को निम्नलिखित में से किसके निर्देशन में सम्पन्न किया जाता है?
(a) यजमान (b) ऋत्विक
(c) गृहकर्ता (d) ईश्वर

Ans. (b) : वैदिक परम्परा में यज्ञ को 'ऋत्विक' (पुरोहित) के निर्देशन में सम्पन्न किया जाता था। चारों संहिताओं के लिए अलग-अलग ऋत्विक (पुरोहित) है। ऋग्वेद के ऋत्विक को 'होता'; यजुर्वेद के ऋत्विक 'अध्वर्यु', सामवेद के ऋत्विक को 'उद्गाता' तथा अथर्ववेद के ऋत्विक को 'ब्रह्मन्' कहा जाता है।

6. निम्नलिखित में से सही क्रम को बताने वाले कूट का चयन करें :
(a) ब्राह्मण, संहिता, आरण्यक, उपनिषद्
(b) उपनिषद्, संहिता, आरण्यक, ब्राह्मण
(c) संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्
(d) संहिता, उपनिषद्, ब्राह्मण, आरण्यक

Ans. (c) : 'संहिता', ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद्' यह सही क्रम है। 'संहिता' में मंत्रों के संकलन प्राप्त होते हैं। 'ब्राह्मण' में यज्ञ यागादि के विविध अंगों का सर्वांगपूर्ण विवेचन है। 'आरण्यक' वनों में (अरण्य में) रहकर किये गये ऋषियों के चिन्तन है और वैदिक साहित्य के अन्तिम भाग के रूप में उपनिषद आते हैं जिनमें वैदिक दार्शनिक चिन्तन पराकाष्ठा को प्राप्त कर लेता है।

7. निम्नलिखित में से किस दार्शनिक सम्प्रदाय की यह धारणा है कि देहपरिमाण ही आत्मा का भी परिमाण है?
(a) चार्वाक (b) वैशेषिक
(c) योग (d) जैन

Ans. (a) : चार्वाको के अनुसार, देह और आत्मा कोई पृथक् तत्व नहीं हैं। बल्कि चार भूतों का मिश्रण ही है। अतः जीवित शरीर (देह) से भिन्न कोई आत्मा नहीं है। देह के नष्ट होने पर चैतन्य भी नष्ट हो जाता है। इसे ही देहपरिमाणवाद या देहात्मवाद कहते हैं।

8. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिया गया है। उन पर न्याय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में विचार करें और नीचे दिए गए कूट में से सही का चयन करें :
अभिकथन (A) : लक्षणा एक वृत्ति नहीं हो सकती है।
कारण (R) : शक्ति एक वृत्ति है और शक्ति लक्षणा नहीं है।
कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है और (R) सही है।

Ans. (d) : प्राचीन नैयायिकों ने वृत्ति के तीन भेद किये हैं–संकेत, परिभाषा और लक्षणा। संकेत को शक्ति, अभिद्या, वाचकता, मुख्य वृत्ति भी कहते हैं। लेकिन शक्ति, लक्षणा नहीं है। 'शक्ति' मुख्य वृत्ति तथा 'लक्षणा' गौड़ वृत्ति है। अतः (A) गलत है तथा (R) सही है। **(भारतीय दर्शन : डॉ. नन्द किशोर देवराज)**

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

9. निम्नलिखित में से किसके द्वारा ऋषिऋण से उऋण हुआ जा सकता है?

(a) ब्रह्मचर्य का पालन करके
(b) यज्ञ करके
(c) पुत्र उत्पन्न करके
(d) निर्धन की सहायता करके

Ans. (a) : ऋषिऋण से उऋण होने के लिए हमें स्वाध्याय और 'ब्रह्मचर्य' का पालन करना चाहिए। 'यज्ञ करके' देव ऋण से और पुत्र उत्पन्न करके पूर्वजों के ऋण (पितृ-ऋण) से मुक्ति मिलती है।

10. नीचे एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। इन्हें न्याय वैशेषिक दर्शन के परिप्रेक्ष्य में विचार कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही का चयन कीजिए :

अभिकथन (A) : मुक्त आत्मा जड़ ही है।

कारण (R) : मुक्त आत्मा अपनी चेतना को भी खो देती है।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है और (R) सही है।

Ans. (d) : मुक्तावस्था में आत्मा में विभिन्न गुणों का अभाव हो जाता है। वह अपनी पूर्वावस्था में लौट जाती है। आत्मा जड़ ही नहीं है। आत्मा वास्तविक स्वरूप में आध्यात्मिक और अभौतिक द्रव्य है। वास्तव में आत्मा की जड़ता की जो बात कही गयी है वह भौतिक जड़ता नहीं। आत्मा विशुद्ध रूप से चैतन्य नहीं है। चेतना उसका आगन्तुक गुण है। मुक्तावस्था में वह जड़, अभौतिक, आध्यात्मिक है।

11. वैशेषिक के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा एक त्र्सरेणु के परिमाण का कारण है?

(a) परमाणुओं की संख्या
(b) द्वयणुको की संख्या
(c) त्र्सरेणुओं की संख्या
(d) त्र्सरेणु स्वयं

Ans. (c) : एक त्र्सरेणु के परिमाण का कारण वैशेयिक दर्शन में त्र्सरेणुओं की संख्या है। न्याय–वैशेषिक दर्शन परमाणुओं के द्वारा शृष्टि की उत्पत्ति का सिद्धान्त देता है। उसके अनुसार सर्वप्रथम दो परमाणुओं से द्वयणुक का निर्माण होता है फिर तीन द्वयणुकों से त्र्सरेणु का और चार त्र्सरेणु मिलक चतुर्णुक और इसी प्रकार शृष्टि होती है।

12. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट में से सही कूट का चयन कीजिए:

सूची–I	सूची–II
a. ब्रह्मसूत्र	i. कणाद
b. मीमांसासूत्र	ii. जैमिनी
c. वैशेषिक सूत्र	iii. पतंजलि
d. योगसूत्र	iv. बादरायण

कूट :

	a	b	c	d
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	i	iii	ii	iv
(c)	iv	ii	i	iii
(d)	iv	i	ii	iii

Ans. (c)

(a) ब्रह्मसूत्र (iv) बादरायण
(b) मीमांसासूत्र (ii) जैमिनि
(c) वैशेषिक सूत्र (i) कणाद
(d) योगसूत्र (iii) पतंजलि

13. किसका मत है कि 'धर्म स्वीकार्यता' है, सहिष्णुता नहीं?

(a) श्री अरविन्द
(b) विवेकानन्द
(c) जे. कृष्णमूर्ति
(d) राधाकृष्णन्

Ans. (b) : स्वामी विवेकानन्द के अनुसार 'धर्म स्वीकार्यता' है, सहिष्णुता नहीं। विवेकानन्द कहते हैं कि यदि एक धर्म दूसरे को केवल 'सहन' करता रहे तो उसमें 'सार्वभौमिकता' की दृष्टि नहीं जाग सकती। उसके लिए अन्य धर्मों के लिए भावात्मक दृष्टि अनिवार्य है। इसे तो विवेकानन्द 'स्वीकृति' (Acceptance) कहते हैं।

14. किसका मत है कि जगत 'मानव आत्म रूप का पालना' है?

(a) जे. कृष्णमूर्ति
(b) के. सी. भट्टाचार्य
(c) विवेकानन्द
(d) टैगोर

Ans. (d) : रवीन्द्र नाथ टैगोर, जगत की वास्तविकता पर विश्वास करते हैं। अतः उन्होंने जगत का विशद विवरण दिया है, जिसमें मानववादी अंश विद्यमान हैं। उनके अनुसार, जगत, 'मानव आत्म रूप का पालना है।' रवीन्द्र नाथ टैगोर अपनी कविताओं में, अपनी रचनाओं में प्रकृति की मानवीय दृष्टि से व्याख्या प्रस्तुत किया है।

15. कौन दार्शनिक प्रतिपादित करता है कि व्यक्तिगत विकास के लिए पुनर्जन्म अपरिहार्य है?

(a) राधाकृष्णन्
(b) गाँधी
(c) श्री अरविन्द
(d) टैगोर

Ans. (c) : श्री अरविन्द मानते हैं कि व्यक्तिगत विकास के लिए पुनर्जन्म आवश्यक है। श्री अरविन्द के अनुसार विकास प्रक्रिया मानस के स्तर तक पहुँच चुकी है तथा अतिमानस में प्रवेश को आतुर है। इस प्रक्रिया को सक्रिय रखने का एक उपकरण पुनर्जन्म है। ईशवरत्न की उपलब्धि का ढंग जन्म तथा पुनर्जन्मों के मार्गो से होता हुआ क्रमिक उपलब्धि है। सम्भवतः ईश्वरीय लीला का यह उपकरण है।

16. निम्नलिखित में से किसका मत है कि 'निषेध का क्षेत्र अनिर्दिष्टता का क्षेत्र है'?

(a) के. सी. भट्टाचार्य
(b) विवेकानन्द
(c) टैगोर
(d) राधाकृष्णन्

Ans. (a) : के. सी. भट्टाचार्य के अनुसार, 'निषेध का क्षेत्र अनिर्दिष्टता का क्षेत्र है।' कोई भी ज्ञात भाव या कोई ज्ञात अन्तर्वस्तु निरपेक्ष सत् को निरूपित करने में असमर्थ है, क्योंकि हर भावात्मक सम्बन्ध उसे कुछ हद तक निश्चित कर देगा। निरपेक्ष सत् किसी भी रूप में इस प्रकार की निश्चित अवगति नहीं दे सकती उसमें अनिश्चितता है क्योंकि उसमें अनिर्दिष्टता है वह निर्धारित नहीं हो सकता है। यदि किसी प्रकार हम निषेध-प्रक्रिया को उसकी उच्चतम सीमा तक ले जा सकें तो उसी रूप में निरपेक्ष सत् की अवगति सम्भव है। यह निषेध प्रक्रिया का चरम महत्व है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

17. निम्नलिखित में से किसका कथन है कि 'शिक्षा का अर्थ व्यक्ति के शरीर, मन, आत्म में जो शुभत्व है उसे प्रकट करने का प्रयत्न है'?

(a) टैगोर (b) विवेकानन्द
(c) श्री अरविन्द (d) गाँधी

Ans. (d) : गाँधी का समाज तथा राजनीति दर्शन भी इस विश्वास पर आधारित है कि हर व्यक्ति में एक अनिवार्य शुभत्त्व का वास है। शुभत्त्व को जाग्रत रखने के लिए उपयुक्त शिक्षा की आवशयकता है। गाँधी शिक्षा को एक सर्वांङ्गी विकास मानते हैं। शरीर, मन तथा आत्म का सर्वांङ्गी विकास ही शिक्षा का लक्ष्य गाँधी जी के अनुसार 'शिक्षा का अर्थ व्यक्ति के शरीर, मन, आत्म में जो शुभत्व है उसे प्रकट करने का प्रयत्न करना – उसे विकसित करने का प्रयत्न करना है।

18. निम्नलिखित में से कौन सही है?

(ग्रन्थ)		(लेखक)
(a) फिलॉसफ़ी ऑफ हिन्दूइज्म, ऑन फीयर	–	अम्बेडकर
(b) यू. आर द वर्ल्ड, द लिमिट्स ऑफ थॉट	–	जे. कृष्णमूर्ति
(c) फ्रूट गैदरिंग, टोटल फ्रीडम	–	टैगोर
(d) ह्यूमन सायकिल, द रीकवरी ऑफ फेथ	–	श्री अरविन्द

Ans. (b) : यू. आर द वर्ल्ड, द लिमिट्स ऑफ थॉट – जे. कृष्णमूर्ति।
जे. कृष्णमूर्ति का दर्शन 'ध्यान' के माध्यम से मानसिक क्रान्ति, मानवीय सम्बन्ध तथा सकारात्मक परिवर्तन कैसे लायें आदि का खोज है।

19. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

अभिकथन (A) : केवल निषेध के अर्थ में शून्यता शुद्ध अभाव है।

कारण (R) : ज्ञान के सभी वैध साधनों से शून्यता बाधित हो जाती है।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।
(b) (A) गलत है और (R) सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(c) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(d) (A) सही है और (R) गलत है और (R), (A) की गलत व्याख्या प्रस्तुत करता है।

Ans. (c) : शून्यता को चतुष्कोटि विनिर्मुक्त माना गया है। यदि किसी भी कोटि से 'शून्यता' के बारे में कुछ कहेंगे तो यह विरोधाभासी होगा। माध्यमिकों के अनुसार यदि निषेध मुख से अथवा निषेध के माध्यम से शून्य के बारे में कुछ कहें तो वह 'शुद्ध अभाव' होगी।

20. रामानुज-वेदान्त में, अधोलिखित अभिकथनों में एक के सिवाय सभी सत्य हैं :

(a) जीव का ब्रह्म से अवयव-अवयवी सम्बन्ध है।
(b) जीव का ब्रह्म के साथ ऐक्य है।
(c) जीव ब्रह्म का विशेषण है।
(d) जीव ब्रह्म पर पूर्णतः आश्रित है।

Ans. (b) : रामानुज-वेदान्त, शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त के विपरीत 'विशिष्टाद्वेत के नाम से जाना जाता है। रामानुज जीव और ब्रह्म में अवयव-अवयवी (सावयवी) सम्बन्ध मानते हैं। जीव ब्रह्म का विशेषण है तथा ब्रह्म पर आश्रित है। जीव ईश्वर का गुण-धर्म है। जीव का ब्रह्म के साथ एक न होकर अपृथक सिद्धि है जो आन्तरिक अपार्थक्य है।

21. ''एक सीपी में दिखाई देने वाली चाँदी असत् नहीं हो सकती क्योंकि यह दिखती है; यह चाँदी सत् भी नहीं हो सकती क्योंकि जब हम सीपी को विधिवत् देखते हैं तो यह वहाँ उपस्थित नहीं होती।'' यह अवधारणा है:

(a) विशिष्टाद्वैती (b) शून्यवादी
(c) सांख्यवादी (d) अद्वैती

Ans. (d) : जब कोई वस्तु एक दृष्टि से सत् भी न हो और असत् भी न हो तो वे अनिर्वचनीय ख्याति होती है जिसे अद्वैत वेदान्ती मानते हैं।

22. ''ब्रह्म सभी वास्तविकताओं में स्वतंत्र है; कुछ भी उसके समान अथवा उससे श्रेष्ठ नहीं है''–इस विचार का समर्थन किया है:

(a) शंकर (b) ईश्वरकृष्ण
(c) मध्वा (d) प्रभाकर

Ans. (c) : मध्वाचार्य अपने द्वैतवादी दर्शन में ब्रह्म को ही एकमात्र स्वतन्त्र तत्व मानते हैं। ब्रह्म ही एकमात्र निरपेक्ष सत् एवं परमतत्व है जो सवर्गगुण सम्पन्न है। मध्वाचार्य के अनुसार, 'ब्रह्म सभी वास्तविकताओं में स्वतंत्र है; कुछ भी उसके समान अथवा उससे श्रेष्ठ नहीं है।

23. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची–I	सूची–II
i. ब्रह्मसूत्र	A. प्रस्थानत्रय
ii. मीमांसासूत्र	B. स्वर्ग प्राप्ति
iii. वैशेषिक सूत्र	C. असम्प्रजात समाधि
iv. योगसूत्र	D. पुरुष-प्रकृति-विवेक ज्ञान

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	iii	iv	i	ii
(d)	iii	iv	ii	i

Ans. (b)

(i) सांख्य	(d) पुरुष-प्रकृति विवेक
(ii) योग	(c) असम्प्रज्ञात समाधि
(iii) पूर्व मीमांसा	(b) स्वर्ग प्राप्ति
(iv) वेदान्त	(a) प्रस्थानत्रय

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

24. सांख्य-योग के अनुसार पुरुष है:

(a) चेतन और सक्रिय (b) चेतन और जड़
(c) अचेतन और सक्रिय (d) अचेतन और जड़

Ans. (b) : सांख्य-योग में दो स्वतंत्र तत्व स्वीकार किये गये हैं। एक जड़ प्रकृति और दूसरा चेतन पुरुष। सांख्य दर्शन में पुरुष का स्वरूप चैतन्य है। वह साक्षी है, निष्क्रिय या उदासीन (Inactive) है, कुटस्थ-नित्य एवं अपरिवर्तनशील है। वह नित्यमुक्त (केपल्य), उदासीन (माध्यस्थ); द्रष्टा एवं अकर्ता है। वह अज, नित्य, सर्वव्यापी, अनाश्रित, अलिङ्ग, निरवयव एवं स्वतंत्र है।

25. स्कंध को सही क्रम में प्रस्तुत करने वाले कूट का चयन करें :

(a) विज्ञान, रूप, वेतना, संज्ञा और संस्कार
(b) संज्ञा, विज्ञान, रूप, वेदना और संस्कार
(c) रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान
(d) रूप, संज्ञा, वेदना, संस्कार और विज्ञान

Ans. (c) : गौतम बुद्ध आत्मा का विश्लेषण उसके घटकों में करते हैं। जैसाकि बागसेन–मिलिन्द संवाद से ज्ञात होता है कि आत्मा 'पंचस्कन्धों का संघात' है। ये पांच स्कन्ध क्रमशः–रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान है। रूप स्कन्ध आत्मा का भौतिक घटक है और बाकी मानसिक घटक है।

26. ''आकार वस्तुओं से पृथक नहीं हैं, बल्कि उनमें अन्तर्निष्ठ हैं; वे इन्द्रियातीत नहीं हैं बल्कि अनुस्यूत हैं।'' यह दृष्टिकोण निमनलिखित में से किस ग्रीक दार्शनिक का है?

(a) सुकरात (b) प्लेटो
(c) अरस्तु (d) डेमोक्राइटस

Ans. (c) : अरस्तु अपने 'आकार सिद्धान्त' में कहते हैं कि 'आकार वस्तुओं से पृथक् नहीं है, बल्कि उनमें अन्तर्निष्ठ है; वे इन्द्रयातीत नहीं है बल्कि अनुस्युत है।' ध्यातव्य हो इससे पहले प्लेटो अपने आकारों को इन्द्रियातीत और वस्तुओं से पृथक् मानते हैं और उन्हें अलग लोक का निवासी कहते हैं।

27. नीचे दो कथन दिए गए हैं, इनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) की संज्ञा दी गई है। प्लेटो की ज्ञानमीमांसा के परिप्रेक्ष्य में (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन करें :

अभिकथन (A) : संकल्पनात्मक ज्ञान ही विशुद्ध ज्ञान है।

कारण (R) : संकल्पनात्मक ज्ञान अनुकूल आदर्श अथवा अमूर्त वस्तुओं की यथार्थता के लिए आवश्यक नहीं होता।

कूट :

(a) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) दोनों (A) और (R) सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

Ans. (c) : प्लेटो की ज्ञानमीमांसासा बुद्धिवादी ज्ञानमीमांसा है जो इन्द्रियानुभव को ज्ञान नहीं मानता है। वह संकल्पनात्मक ज्ञान या प्रत्ययात्मक ज्ञान को ही विशुद्ध ज्ञान मानता है। जिसका ज्ञान हमें बुद्धि या प्रतिभा (Rational Insight) के माध्यम से होता है। संकल्पनात्मक ज्ञान अनुकूल आदर्श अथवा अमूर्त वस्तुओं की यथार्थता के लिए आवश्यक होता है। प्लेटो सामान्यों के यथार्थवादी सिद्धान्त का प्रवर्तक है।

28. सेंट ऐन्सल्म के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए :

(i) उसने आस्था की सत्यता के लिए आवश्यक कारणों को जानने का प्रयास किया।
(ii) ''मैं समझने के लिये विश्वास करता हूँ।''
(iii) ईश्वर से हमारा अभिप्राय है 'कि इससे ज्यादा व्यापक नहीं सोचा जा सकता।'

कूट :

(a) मात्र (i) सही है।
(b) मात्र (i) और (ii) सही हैं।
(c) मात्र (iii) सही है।
(d) सभी (i), (ii) और (iii) सही हैं।

Ans. (d) : सेंट ऐन्सल्म मध्ययुगीन इसाई दार्शनिक है। उनके अनुसार, 'मैं समझने' के लिए विश्वास करता है। अन्सेलम ने आस्था की सन्यता के लिए आवश्यक कारणों को जानने का प्रयास किया। ऐन्सल्म के अनुसार, ईश्वर एक ऐसी सत्ता है जिससे अधिक महान (व्यापक) तत्व के बारे में नहीं सोचा जा सकता है। अन्सेलन के द्वारा ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में दिया गया सत्तामूलक तर्क प्रसिद्ध है।

29. नीचे दो कथन दिए गए हैं, इनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) की संज्ञा दी गई है। थेल्स के परिप्रेक्ष्य में (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन करें :

अभिकथन (A) : चुंबक में आत्मा है।

कारण (R) : चुंबक अन्य वस्तुओं को हिलाने की क्षमता रखता है।

कूट :

(a) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) दोनों (A) और (R) सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है।

Ans. (a) : थेल्स पाश्चात्य दर्शन के जनक थे। आयोनियन (माइलेशियन स्कूल) सम्प्रदाय के संस्थापक हैं। जल को सृष्टि का मूल आधार मानते हैं। इनके अनुसार चुम्बक में प्राण (आत्मा) है क्योंकि यह लोहे को स्पन्दित (हिलाने की क्षमता) करने की क्षमता रखता है।

(पाश्चात्य दर्शन का इतिहास–1–प्रो. दयाकृष्ण)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

30. हेराक्लाइटस के दृष्टिकोण से निमनलिखित कथनों पर विचार करें और सही कूट का चयन करें :

(i) हेराक्लाइटस ने माना कि संसार हमेशा से अस्तित्व में था और इसलिए विश्वोत्पत्ति को अस्वीकार किया।
(ii) संसार और इसके घटक निरन्तर प्रवाहमान हैं।
(iii) उन्होंने तर्क दिया कि ऊर्ध्वागामी मार्ग अधोगामी मार्ग के समान है।

कूट :

(a) मात्र (i) सही है।
(b) मात्र (i) और (ii) सही हैं।
(c) सभी (i), (ii) और (iii) सही हैं।
(d) मात्र (i) और (iii) सही हैं।

Ans. (c) : हेराक्लाइटस 'परिवर्तन–सिद्धान्त' 'सम्भूति सिद्धान्त' के प्रतिपादक हैं। जिसके अनुसार परिवर्तन ही सत् है। स्थिरता और अभेद मिथ्या है। जगत में कोई भी स्थिर नहीं है। हेराक्लाइट्स संसार उत्पत्ति और विनाश की प्रक्रिया को क्रमशः उर्ध्वगामी मार्ग तथा अधोगामी मार्ग कहा है। इन दोनों प्रक्रियाओं को एक और अभिन्न कहा है। हेराक्लाइट्स एक आरम्भ बिन्दु और प्रत्यावर्तन बिन्दु मानकर चलते हैं। वे संसार के अस्तित्व को हमेशा से मानते हैं। **(पाश्चात्य दर्शन का इतिहास–1–प्रो. दयाकृष्ण)**

31. संेट अगस्टीन के परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए :

(i) परिवर्तनशीलता प्रत्येक प्राणी की विशेषता है।
(ii) ईश्वर सुनिश्चित तौर पर अपरिवर्त्य है।
(iii) परिवर्तनशील वस्तुएँ पूर्णतः नहीं, लेकिन आंशिक रूप में सत् होती हैं।
(iv) सभी प्राणी पूर्णतः सत् होते हैं।

कूट :

(a) मात्र (i) और (ii) सही हैं।
(b) मात्र (ii) और (iv) सही हैं।
(c) मात्र (iii) और (iv) सही हैं।
(d) मात्र (i), (ii) और (iii) सही हैं।

Ans. (d) : सन्त ऑगस्टीन मध्यकालीन इसाई दार्शनिक हैं। उनके अनुसार, परिवर्तनशीलता प्रत्येक प्राणी की विशेषता है। लेकिन ईश्वर का स्वरूप और संकल्प अपरिवर्तनशील (Immutible) है। वह परिवर्तनशील वस्तुओं को आंशिक रूप में सत् मानता है। अतः वह सभी प्राणियों को पूर्णतः सत् भी नहीं मानता है, आंशिक सत् ही मानता है। **(A History of Philosophy : Frank Thilly)**

32. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची–I	सूची–II
i. लॉक	a. 'मैं चिंतन करता हूँ इसलिए मैं हूँ'।
ii. डेकार्ट	b. ईश्वर सर्वव्यापी है।
iii. स्पिनोज़ा	c. पूर्व स्थापित सामंजस्य।
iv. लाइब्नीज़	d. द्वितीयक गुण आत्मनिष्ठ है।

कूट :

	a	b	c	d
(a)	iii	ii	i	iv
(b)	ii	iii	iv	i
(c)	i	iv	ii	iii
(d)	iv	i	iii	ii

Ans. (b)

(i) लॉक – द्वितीयक गुण /उपगुण आत्मनिष्ठ है।
(ii) डेकार्ट – 'मैं चिंतन करता हूँ इसलिए मैं हूँ'।
(iii) स्पिनोज़ा – ईश्वर सर्वव्यापी है।
(iv) लाइब्नीज़ – पूर्व स्थापित सामंजस्य।

33. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए दिए गए कूटों में से सही विकल्प का चयन करें :

अभिकथन (A) : लाइबनीज़ के अनुसार द्रुतवेगी वायु और दरवाज़े के बंद होने में अनिवार्य सम्बन्ध है।

कारण (R) : यह पूर्व-स्थापित सामंजस्य है।

कूट :

(a) (A) सही है और (R) गलत है और (R), (A) की गलत व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(b) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(c) (A) गलत है और (R) सही है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(d) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की गलत व्याख्या प्रस्तुत करता है।

Ans. (b) : लाइवनीत्ज पूर्व स्थापित सामंजस्य मानता है। उसके अनुसार ईश्वर ने सभी चिट्टणुओं को स्वतंत्र बनाया है। ईश्वर उन्हें ऐसा बनाया है कि वे परस्पर एकता अथवा सामंजस्य में पूर्व से बंधे हैं। इसी अर्थ में द्रुतवेगी वायु और दरवाजे के बन्द होने में अनिवार्य सम्बन्ध है।

34. <u>सिवाय</u> एक के निम्नलिखित सभी कथन स्पिनोज़ा के अननुरूप हैं :

(a) मन और शरीर परस्पर दो भिन्न द्रव्य हैं।
(b) संदेह से संदेहकर्ता का अस्तित्व सिद्ध होता है।
(c) ईश्वर सत्तात्मक दृष्टि से संसार से भिन्न है।
(d) संसार और इसके परिवर्तन ईश्वर के प्रकार्य हैं।

Ans. (d) : स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर निर्विकार और निराकार तत्व है। स्पिनोजा के अनुसार, संसार से ईश्वर सत्तात्मक दृष्टि से भिन्न है। संसार और इसके परिवर्तन ईश्वर के प्रकार्य न होकर, ईश्वर पर आश्रित जरूर हैं। प्रकार्य द्रव्य के आगंतुक लक्षण हैं जो गुणों के माध्यम से अभिव्यक्त होते हैं।

35. ''सम्पूर्ण ब्रह्मांड पदार्थ के प्रत्येक घटक में प्रतिबिंबित होता है सिवाय इस अंतर के कि यह एक घटक में कुछ भिन्नता के साथ प्रतिबिंबित होता है।'' यह स्थिति स्वीकार्य है :

(a) स्पिनोज़ा
(b) लाइबनीज़
(c) डेकार्ट
(d) सेंट थॉमस एक्विनॉस

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : लाइबनित्ज के अनुसार 'प्रत्येक चिदणु विश्व का दर्पण है।' उसके अनुसार, 'सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पदार्थ के प्रत्येक घटक में प्रतिबिंबित होता है सिवाय इस अन्तर कि यह एक घटक से दूसरे घटक में कुछ भिन्नता के साथ प्रतिबिम्बित होता है।

(A History of Philosophy : Frank Thilly)

36. जी. ई. मूर का प्रत्ययवाद का खण्डन निम्नलिखित में से किस एक पर आधारित है?

(a) बोध की क्रिया और बोध के विषय के बीच भिन्नता
(b) ज्ञाता और ज्ञान की क्रिया के बीच भिन्नता
(c) ज्ञाता और वस्तु के बीच भिन्नता
(d) भाव और संदर्भ के बीच भिन्नता

Ans. (a) : मूर के अनुसार प्रत्यय का तात्पर्य 'बोध की क्रिया' है। जानने (बोध) की क्रिया स्वयं ज्ञान का विषय नहीं हो सकती है। प्रत्ययवादियों की सही भूल है। कि वे 'ज्ञात वस्तु' और 'यथार्थ वस्तु' को एक मान लेते हैं। अर्थात् मूर के अनुसार, बोध की क्रिया और बोध के विषय के बीच भिन्नता है।

37. रसेल की पुस्तक 'प्रोब्लेम्स ऑफ फिलोसॉफी' के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

(a) सामान्य की ही वास्तविक सत्ता होती है, जो न तो मानसिक और न ही भौतिक जगत में होती है फिर भी उनकी स्थानापन्न अथवा तार्किक स्थिति होती है।
(b) सामान्य की वास्तविक सत्ता नहीं होती है, वह सिर्फ कल्पना में होती है।
(c) सामान्य की ही वास्तविक सत्ता होती है, वह मानसिक और भौतिक दोनों जगत में होती है।
(d) सामान्य की ही वास्तविक सत्ता होती है, वह सिर्फ मानसिक जगत में होती है।

Ans. (a) : रसेल अपनी पुस्तक 'प्रोब्लेम्स ऑफ फिलोसॉफी' में दर्शन के विभिन्न समस्याओं पर विचार करते हैं। जिसमें सामान्य पर भी विचार करते हैं। उनके अनुसार, सामान्य की ही वास्तविक सत्ता होती है, जो न तो मानसिक और न ही भौतिक जगत में होती है फिर भी उनकी स्थानापन्न या तार्किक स्थिति होती है।

38. तार्किक प्रत्यक्षवाद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए :

(i) सबल अर्थ में सत्यापयनीयता का तात्पर्य है कि अर्थपूर्णता के लिए किसी कथन की सत्यता अथवा असत्यता को अनुभव सिद्ध होना चाहिए।
(ii) तार्किक अनुभववादी सत्यापयनीता को अर्थ के मानदण्ड के रूप में प्रयोग करते हैं।
(iii) सबल अर्थ में सत्यापयनीयता का तात्पर्य है सत्यापयनीयता की प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष विधि का होना।

कूट :
(a) मात्र (i) सही है।
(b) मात्र (i) और (ii) सही हैं।
(c) मात्र (iii) सही है।
(d) मात्र (i) और (iii) सही हैं।

Ans. (b) : 'तार्किक प्रत्यक्षवाद' अथवा तार्किक अनुभववाद अथवा तार्किक भाववाद अर्थ के सत्यापनीयता सिद्धान्त का समर्थन करता है। जिसके अनुसार सबल अर्थ में सत्यापनीयता का तात्पर्य है कि अर्थपूर्णता के लिए किसी कथन की सत्यता अथवा असत्यता को अनुभव सिद्ध होना चाहिए। तार्किक भाववादी/अनुभववादी सत्यापनीयता को अर्थ के मानदण्ड के रूप में प्रयोग करते हैं।

39. यह दृष्टिकोण कि ''प्रसन्नता ऐसे सुखद क्षणों की प्रबलता नहीं है जो दुख से मुक्त है अपितु शक्ति के अभिधारण और उसके प्रयोग में है।'' – निम्नलिखित में से किससे सम्बन्धित है?

(a) हेगल
(b) मूर
(c) नीत्शे
(d) हाइडेगर

Ans. (c) : नीत्शे का दर्शन 'अतिमानववाद' और 'शक्तिवाद' पर आधारित है। प्रसन्नता के बारे में वे विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'प्रसन्नता (Happiness) ऐसे सुखद क्षणों की प्रबलता नहीं है जो दुख से मुक्त है, अपितु शक्ति के अभिधारण और उसके प्रयोग में है।' **(नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण : संगमलाल पाण्डेय)**

40. सी. एस. पियर्स के उपयोगितावाद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए :

(i) उपयोगितावाद प्रतिबिंब की पद्धति नहीं है।
(ii) विचारों को स्पष्ट करने के अपने प्रयोजन हेतु उपयोगितावाद प्रतिबिंब की पद्धति है।
(iii) अवधारणों के अर्थ को स्पष्ट करने की एक मात्र पद्धति है।

कूट :
(a) मात्र (i) सही है।
(b) मात्र (i) और (ii) सही हैं।
(c) मात्र (ii) सही है।
(d) मात्र (ii) और (iii) सही हैं।

Ans. (d) : अमेरिकी दार्शनिक चार्ल्स सेण्डर्स पर्स (C.S. Peirce) को उपयोगितावाद 'Pragmaticism' शब्द का प्रथम प्रयोगकर्ता दर्शन में माना जाता है। (विलियम जेम्स के अनुसार) पर्स के अनुसार, अवधारणाओं के अर्थ को स्पष्ट करने की एकमात्र पद्धति उपयोगितावाद है तथा विचारों को स्पष्ट करने के अपने प्रयोजन हेतु यह प्रतिबिम्ब पद्धति है।

41. हेगल के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए :

(i) विकास कालिक नहीं अपितु एक तार्किक प्रक्रिया है।
(ii) निरपेक्ष सत्ता में एकता एवं विरोध दोनों हैं।
(iii) सत एक बौद्धिक प्रक्रिया, एक क्रमिक विकास है।

कूट :
(a) मात्र (i) सही है।
(b) मात्र (i) और (ii) सही हैं।
(c) मात्र (i) और (iii) सही हैं।
(d) मात्र (i), (ii) और (iii) सही हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : हेगल निरपेक्ष प्रत्ययवाद के समर्थक हैं। उनके अनुसार, 'सत् बोध है और बोध सत् है' (Real is Rational and Rational is Real). यह विचारों के विकास की बात करते हैं। उनके अनुसार विकास कालिक नहीं अपितु एक तार्किक प्रक्रिया है। सत् एक बौद्धिक प्रक्रिया है। दर्शन का उद्देश्य सत के विकास का सम्यक् मूल्यांकन करना है क्योंकि हेगल के अनुसार सत् बोधगम्य, एक क्रमिक विकास है। इस निरपेक्ष सत्ता में एकता (Unity) और विरोध (opposition) दोनों है।

42. सूची-I के साथ सूची-II को सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों का उपयोग करते हुए सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची–I	सूची–II
a. उच्चतम निश्चितता के लिए हमारी स्वीकृति ही आस्था है।	i. हेगल
b. यद्यपि हमारा समस्त ज्ञान अनुभव से प्रारम्भ होता है परन्तु इसका अर्थ ये नहीं है कि यह अनुभव से उत्पन्न होता है।	ii. ह्यूम
c. विचार अत्यधिक सरल, अमूर्त एवं रिक्त अवधारणाओं से अधिक जटिल मूर्त और बलवती धारणा की ओर बढ़ते हैं।	iii. कांट
d. मस्तिष्क विभिन्न अवबोधनों का समूह अथवा संग्रहण है।	iv. लॉक

कूट :

	a	b	c	d
(a)	iv	ii	i	iii
(b)	ii	iv	iii	i
(c)	iv	i	ii	iii
(d)	iii	ii	i	iv

Ans. (*) : यह प्रश्न गलत उत्तरों वाला है। फिर भी इसका सम्भावित उत्तर है–

(a) 'उच्चतम निश्चितता के लिए हमारी स्वीकृति आस्था है' **– हेगल**

(b) यद्यपि हमारा समस्त ज्ञान अनुभव से प्रारम्भ होता है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि यह अनुभव से उत्पन्न होता है **– कांट**

(c) विचार अत्यधिक सरल, अमूर्त एवं रिक्त अवधारणाओं से अधिक जटिल, मूर्त और बलवती धारण की ओर बढ़ते हैं **– लॉक**

(d) मस्तिष्क विभिन्न अवबोधनों (sensations) का समूह अथवा संग्रहण है **– ह्यूम**

43. जब मस्तिष्क किसी अन्य विचार के हस्तक्षेप के बिना प्रत्यक्ष निरीक्षण के द्वारा दो विचारों की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति का अनुभव करता है तो इसे जाना जाता है :

(a) अन्तर्दर्शी ज्ञान (b) निरूपणात्मक ज्ञान
(c) संवेदी ज्ञान (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (a) : जब मस्तिष्क किसी अन्य विचार के हस्तक्षेप के बिना प्रत्यक्ष निरीक्षण के द्वारा दो विचारों की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति का अनुभव करता है तो इसे 'अर्न्तदर्शीय ज्ञान' (Intuitive knowledge) कहते हैं। इसमें इन्द्रिय सम्वेदनों के बिना ज्ञान प्राप्त होता है।

44. काण्ट के अनुसार निम्नलिखित में से निर्णय का सुनिश्चित स्वरूप कौन-सा है?

(a) प्रत्येक कार्य का एक कारण होता है।
(b) यह विष हो सकता है।
(c) द्रव्य या तो ठोस है अथवा तरल है।
(d) उपर्युक्त सभी

Ans. (a) : काण्ट बारह प्रकार के निर्णयों की व्याख्या 'अतीन्द्रिय तर्कशास्त्र' के अन्तर्गत करते हैं जिनसे 12 प्रकार के बुद्धि विकल्पों का निगमन होता है। इन निर्णयों को चार वर्गों में जिनमें तीन-तीन निर्णय प्रत्येक वर्ग में रखा गया है। अन्तिम वर्ग प्रकारतावाचक (modal) का है। जिसमें अन्तिम बारहवां निर्णय आवश्यक (Apodictic) है। यह अनिवार्यता एवं आपातिकता नामक बुद्धि विकल्प का निर्देश करता है जैसे–प्रत्येक कार्य का एक कारण होता है।

45. दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार कीजिए और नीचे दिए कूटों में से सही विकल्प का चयन करें :

अभिकथन (A) : ह्यूम के लिए, हमें द्रव्य को कोई प्रत्यय नहीं होता।

कारण (R) : हमें प्रत्यक्ष के अलावा वस्तुओं का कोई प्रत्यय नहीं प्राप्त होता जबकि द्रव्य प्रत्यक्ष से पूर्णतया भिन्न है।

कूट :

(a) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(b) दोनों (A) और (R) गलत हैं और (R), (A) की गलत व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है और (R), (A) की गलत व्याख्या है।
(d) (A) गलत है लेकिन (R) सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है।

Ans. (a) : ह्यूम किसी प्रकार के द्रव्य (वस्तु, आत्मा, ईश्वर) की सत्ता को नहीं मानता। उसके अनुसार, हमें द्रव्य का कोई प्रत्यय प्राप्त नहीं होता। क्योंकि हमें प्रत्यक्ष के अलावा वस्तुओं का कोई प्रत्यय नहीं प्राप्त होता। क्योंकि द्रव्य प्रत्यक्ष से पूर्णतया भिन्न है।

46. निम्नलिखित अभिकथनों पर विचार कीजिए और जॉन लॉक के दर्शन के परिप्रेक्ष्य में सही कूट का चयन कीजिए :

(i) विचारों की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति ज्ञान है।
(ii) प्राथमिक और द्वितीयक गुणों के बीच भेद है।
(iii) वस्तुएँ अपने गुणों के माध्यम से निरूपित होती हैं।
(iv) वस्तु का ज्ञान मस्तिष्क में पूर्व स्थापित है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूट :

(a) (i) और (ii) सही हैं।

(b) (i), (ii) और (iii) सही हैं।

(c) (ii), (iii) और (iv) सही हैं।

(d) (i), (ii), (iii) और (iv) सही हैं।

Ans. (b) : 'वस्तु का ज्ञान मस्तिष्क में पूर्व स्थापित है।' यह बुद्धिवादियों के अनुसार है। लॉक एक अनुभववादी दार्शनिक हैं उसके अनुसार 'जन्म के समय हमारा मस्तिष्क 'कोरा कागज' की तरह होती है जिसमें अनुभव के द्वारा ज्ञान बाद में प्राप्त होता है। अतः विकल्प (iv) को छोड़ बाकी (i), (ii), (iii) सही हैं।

47. निम्नलिखित अभिकथनों पर विचार कीजिए और कांट के दृष्टिकोण के परिप्रेक्ष्य में सही कूट का चयन कीजिए :

(i) संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय ज्ञान का मानदंड है।

(ii) संश्लेषणात्मक आनुभविक निर्णय ज्ञान का मानदंड है।

(iii) विश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय ज्ञान का मानदंड है।

(iv) विश्लेषणात्मक आनुभविक निर्णय ज्ञान का मानदंड है।

कूट :

(a) मात्र (i) सही है। (b) मात्र (ii) सही है।

(c) मात्र (i) और (iv) सही हैं। (d) मात्र (iii) सही है।

Ans. (a) : काण्ट अपनी पुस्तक 'शुद्ध बुद्धि की आलोचना' में सार्वभौमिक नवीन और यथार्थ ज्ञान के मानदण्ड की खोज करता है जिसे वह 'संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय' कहता है। जिसे वह ज्ञान का मानदण्ड कहता है।

48. निम्नलिखित अभिकथनों पर विचार कीजिए और डेविड ह्यूम के परिप्रेक्ष्य में सही कूट का चयन कीजिए:

(i) शक्कर में मिठास अन्तर्निहित नहीं है।

(ii) शक्कर और मिठास के बीच सिर्फ पारिस्थितिक सम्बन्ध है।

(iii) शक्कर और मिठास के बीच कोई आवश्यक नैमित्तिक सम्बन्ध नहीं है।

(iv) शक्कर और मिठास के बीच सिर्फ सहयोजन है।

कूट :

(a) मात्र (i) सही है।

(b) मात्र (ii) सही है।

(c) मात्र (iii) और (iv) सही हैं।

(d) मात्र (ii) और (iv) सही हैं।

Ans. (c) : कारण–कार्य के साहचर्य और 'प्राकृतिक एकरूपता' पर आधारित आगमन पर डेविड ह्यूम के अनुसार संशय किया जा सकता है जिसे 'आगमन की समस्या' के नाम से जाना जाता है। उसके अनुसार कारण–कार्य सम्बन्ध कोई अनिवार्य सम्बन्ध नहीं है। अर्थात् यदि शक्कर में मिठास है तो इसका मतलब यह नहीं कि इनके बीच कोई आवश्यक नैमित्तिक सम्बन्ध ही हो। यह केवल साहचर्य (सहयोजन) पर आधारित है।

49. निम्नलिखित अभिकथन पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए :

दृश्यता सत्ता है–यह विचार निम्नलिखित में से किसका है:

(i) लॉक

(ii) बर्कले

(iii) लॉक और बर्कले

(iv) लॉक, बर्कले और ह्यूम

कूट :

(a) मात्र (i) सही है।

(b) मात्र (ii) सही है।

(c) मात्र (i) और (ii) सही हैं।

(d) मात्र (iv) सही है।

Ans. (b) : बर्कले अपने प्रत्ययवादी विचारों के अन्तर्गत कहता है 'सत्ता दृश्यता है।' अर्थात् 'सत्ता अनुभवमूल है।' बर्कले के अनुसार किसी वस्तु के अस्तित्वयुक्त होने का अर्थ उसका अनुभव का विषय अर्थात् दृश्य होना है।

50. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चयन कीजिए :

सूची–I	सूची–II
A. मैं स्वयं अपनी सत्ता का कारण नहीं हो सकता क्योंकि मुझमें पूर्णता का प्रत्यय है।	i. ह्यूम
B. यदि कोई सिद्धान्त बिना जाने हमारी आत्मा पर अंकित होता है तो उसके स्वरूप और उसमें भेद करना असंभव है।	ii. बर्कले
C. अमूर्त प्रत्ययों के निर्माण में मन असक्षम है।	iii. डेकार्ट
D. अनिवार्यतः वस्तु नहीं अपितु प्रत्यय ही हमारे मन के साथ संयुक्त होते हैं।	iv. लॉक

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iii	iv
(b)	iv	ii	i	iii
(c)	i	ii	iv	iii
(d)	iii	iv	ii	i

Ans. (d)

(a) **डेकार्ट** के अनुसार, मैं स्वयं अपनी सत्ता का कारण नहीं हो सकता, क्योंकि मुझमें पूर्णता का प्रत्यय है।

(b) **लॉक** के अनुसार, यदि कोई सिद्धान्त बिना जाने हमारी आत्मा पर अंकित होता है तो उसके स्वरूप और उसमें भेद करना असम्भव है।

(c) बर्कले, अमूर्त प्रत्ययों के निर्माण में मन असक्षम है।

(d) ह्यूम, अनिवार्यतः वस्तु नहीं अपितु प्रत्यय ही हमारे मन के साथ संयुक्त होते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. नेट/जेआरएफ परीक्षा, जुलाई-2016
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. वैशेषिक के अनुसार आत्मा शरीर के साथ इन संबंधों से रहता है–
(a) स्वरूप (b) समवाय
(c) संयोग (d) विशेषणता

Ans : (c) वैशेषिक दर्शन में आत्मा और शरीर का सम्बन्ध 'संयोग सम्बन्ध माना गया है। मन और आत्मा का सन्निकर्ष (सम्बन्ध) भी संयोग है। दो द्रव्यों के सन्निकर्ष (सम्बन्ध) को संयोग कहते हैं।
(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा : राममूर्ति पाठक)

2. वैशेषिक के अनुसार, ज्ञान का अभाव मानवीय आत्मा में निम्न में से किस सम्बन्धों से रहता है–
(a) समवाय (b) स्वरूप
(c) संयोग (d) वैशिष्ट्य

Ans : (b) ज्ञान का आभाव मानवीय आत्मा में 'स्वरूप' सम्बन्ध से रहता है। वैशेषिक दर्शन में 'ज्ञान' को 'आत्मा' का आगन्तुक लक्षण माना गया। आत्मा अपने स्वरूपावस्था मूलतः जड़ तथा अभौतिक है। यहाँ 'जड़' का तात्पर्य है कि आत्मा चैतन्य रहित है। आत्मा ज्ञान-स्वरूप नहीं है। अपितु ज्ञान नामक गुण का आश्रयभूत द्रव्य है। अतः ज्ञान का अभाव आत्मा में उसके 'स्वरूप' के कारण है।

3. निम्न में से कौन वैशेषिक दर्शन में विश्व का समवायिकारण है?
(a) त्रसरेणु (b) द्रयणुक
(c) परमाणु (d) ईश्वर

Ans : (b) वैशेषिक दर्शन में विश्व का समवायिकारण 'द्रयणुकों' को माना गया है। सर्वप्रथम एक ही द्रव्य के दो परमाणु आपस में संयुक्त होकर द्रयुणु का निर्माण करते हैं। द्रयणु के उपरान्त त्र्यणुक का जिसे त्रसरेणु भी कहा जाता है। तीन द्रयणुकों से त्र्यणुक बनते हैं, चार त्र्यणुकों से चतुरणुक का निर्माण होता है। इसी प्रकार क्रमानुसार जगत की शृष्टि होती है। इसे ही परमाणुवाद कहते हैं।
(भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण – संगम लाल पाण्डेय)

4. आकाश, काल और दिक् इन सभी तीन द्रव्यों की कुछ सामान्य विशेषताएँ होती हैं। निम्न में से उस एक का चयन कीजिए जो उन सभी विशेषताओं का सही-सही उल्लेख करता है–
(a) एक, भौतिक (भूत) और नित्य
(b) एक, नित्य और मिश्रित
(c) एक, सर्वव्यापी और नित्य
(d) अनेक, सर्वव्यापी और नित्य

Ans : (c) वैशेषिक दर्शन में स्वीकृत पाँच महाभूतों में पाँचवाँ आकाश है जो अपरमाणिविक और विभु (व्यापक) होने के कारण अन्य चार- पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु से अलग हैं। यह भौतिक द्रव्य है और शब्द इसका गुण है। यह एक, नित्य, निरवयव, निष्क्रिय एवं अपरमाणविक है। दिक् और काल क्रमशः सह-अस्तित्व और अनुक्रम का प्रतिपादन करते हैं। दिक् एवं काल, अलग-अलग एक सर्वव्यापी, नित्य, अतीन्द्रिय, अभौतिक एवं गुणहीन है। इस प्रकार आकाश, काल और दिक्, एक, सर्वव्यापी नित्य है।

5. निम्न में से कौन नित्य द्रव्य नहीं है?
(a) आत्मा (b) आकाश
(c) विशेष (d) काल

Ans : (c) वैशेषिक दर्शन अपनी पदार्थ मीमांसा में 'विशेष' को एक अलग पदार्थ माना है। ध्यातव्य हो वैशेषिक सात पदार्थों-द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव को मानता है। द्रव्य नौ हैं– पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश भौतिक (मूर्त्त) द्रव्य हैं तथा दिक्, काल, आत्मा और मनस् अभौतिक (अमूर्त्त) द्रव्य हैं। ये सब नित्य हैं। 'विशेष' एक अलग पदार्थ होने के कारण 'द्रव्य' नहीं हैं।
(भारतीय दर्शन– डॉ. नन्दकिशोर देवराज)

6. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए तथा दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए–
अभिकथन (A) : आकाशत्व को एक जाति होनी चाहिए।
तर्क (R) : यह आकाश की अनिवार्य विशेषता है।
कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) गलत है और (R) सही है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

Ans : (c) आकाशत्व कोई जाति (सामान्य) नहीं हो सकती। 'व्यक्तेर भेदः' अर्थात् एक व्यक्ति में रहने वाला धर्म जाति-रूप सामान्य न होकर उपाधि है। न्याय-वैशेषिक के अनुसार आकाश, काल, दिक् एक-एक है, अनेक नहीं। इसलिए आकाशत्व, कालत्व और दिक्त्व उपाधियाँ हैं, जातियाँ नहीं। अतः दोनों कथन (A) और (R) गलत हैं। **(भारतीय दर्शन– डॉ. नन्दकिशोर देवराज)**

7. ''आत्म-पहचान विभिन्न अवधारणाओं को एक साथ मिलाने से संबंधित नहीं होती है बल्कि यह एकमात्र गुण है जिसे हम कल्पना में अपने एकत्रित विचारों के कारण इन अवधारणाओं में प्रकट करते हैं'' निम्न में से किस दार्शनिक का यह विचार है?
(a) ह्यूम (b) स्पिनोजा
(c) कांट (d) किर्केगार्ड

Ans : (a) 'Personal Identity' (वैक्तिक अनन्यता) से सम्बन्धित यह कथन ह्यूम का है। जिसमें 'आत्म-पहचान-' को कल्पना में एकत्रित विचारों को अवधारणाओं में प्रकटीकरण की बात कर रहे हैं।

8. ''शरीर का मस्तिष्क के बिना कोई अस्तित्व नहीं है; और इस संदर्भ में यह कहना विरोधाभासी है कि द्रव्य मस्तिष्क के बिना ग्रहण किये अस्तित्ववान है'' यह विचार किनका है?
(a) बर्कले (b) लाइब्नित्ज
(c) स्पिनोजा (d) ह्यूम

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (a) किसी भौतिक पिंड (Bodies) का अस्तित्व मस्तिष्क (Mind) के बिना नहीं हो सकता है। बर्कले समस्त प्रत्ययों को या 'Mind' पर उपश्रित मान लेता है अथवा ईश्वर (God) पर। उसके अनुसार 'सत्ता दृश्यता है' अर्थात् कोई भी द्रव्य (Matter) जो अस्तित्व में हो और आत्मा/मन/मस्तिष्क (चाहे किसी का हो) के बिना के अस्तित्ववान हो ही नहीं सकता। अर्थात् बिना मस्तिष्क के दृश्य हुए किसी वस्तु की सत्ता हो ही नहीं सकती।

9. कांट के संदर्भ में निम्न कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए।

1. कांट उस धारणा को अस्वीकार करता है कि देश और काल वैसी अवधारणाएँ हैं जो वस्तुओं और हमारे सम्बन्धों के अनुभव से आती हैं।

2. कांट उस धारण को स्वीकार करता है कि देश और काल वैसी अवधारणाएँ हैं जो वस्तुओं और हमारे सम्बन्धों के अनुभव से आती है।

3. कांट उस धारण को अस्वीकार करता है कि देश और काल वैसी अवधारणाएँ हैं जो वस्तुओं और हमारे सम्बन्धों के अनुभव से नहीं आती हैं।

कूट :

(a) केवल 1 सही है।
(b) केवल 1 और 2 सही हैं।
(c) केवल 2 सही है।
(d) केवल 2 और 3 सही हैं।

Ans : (a) कांट अपने देश-काल सम्बन्धी विचार में, देश-काल को अनुभव-निरपेक्ष कहता है, जिसे वह सर्वव्यापक और विशुद्ध संवेदन कहता है। कांट के दर्शन में देश-काल को प्रागनुभविक और प्रत्यक्ष के आकार कहा गया है। देश और काल संवेद वस्तुओं और घटनाओं के अनुभव की तार्किक प्रागपेक्षा है।

(पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास– डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा तर्क (R) है। देकार्त की द्रव्य की अवधारणा के संदर्भ में (A) और (R) पर विचार करते हुए सही उत्तर का चयन कीजिए–

अभिकथन (A) : मन और शरीर दो सापेक्षिक द्रव्य हैं।

तर्क (R) : मन और शरीर एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) गलत है और (R) सही है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

Ans : (c) डेकार्ट के द्वैतवाद के अनुसार मन और शरीर दो सापेक्षिक द्रव्य हैं। मन और शरीर दोनों एक दूसरे के परस्पर विरुद्ध स्वभाव वाले द्रव्य हैं जो पूर्णतः परस्पर स्वतंत्र हैं। अर्थात् यह अपनी सत्ता के लिए एक दूसरे पर निर्भर नहीं हैं।

(A History of Philosophy– FRANK THILLY)

11. निम्न में से कौन-सा कथन लॉक के कारणता सिद्धांत के संदर्भ में सही है?

(a) कारणता का विचार ऐच्छिक कार्य से उत्पन्न नहीं होता है।
(b) कारणता का विचार अनविार्यतः एकरूपता से सम्बन्धित होता है।
(c) कारणता का विचार ऐच्छिक कार्य से उत्पन्न होता है और यह अनिवार्यतः एकरूपता से सम्बन्धित नहीं होता है।
(d) कारण और कार्य का एक-दूसरे से सम्बन्ध तथा उनकी एक-दूसरे पर निर्भरता हमारे विचारों में खोजी जा सकती है।

Ans : (c) लॉक के अनुसार, कारणता का विचार ऐच्छिक कार्य से उत्पन्न होता है और यह अनिवार्यतः एकरूपता से सम्बन्धित नहीं होता है। लॉक ने संवेदनों के कारण के रूप में जड़ तत्व की सत्ता को स्वीकार करता है। 'दर्शन और विज्ञान' के क्षेत्र में कारणता को वस्तु जगत् का एक सार्वभौम और अनिवार्य सम्बन्ध माना जाता है।

12. जागृत अनुभवों के प्रभाव द्वारा स्मृति में अविद्या के कारण जगत की रचना मन में होती है, इस मत का समर्थन किसके द्वारा किया गया?

(a) मीमांसा (b) वेदान्त
(c) न्याय (d) बौद्ध दर्शन

Ans : (b) वेदान्त दर्शन के अनुसार हम जो जाग्रत में देखते हैं वह हमारी स्मृति में होता है। उनके अनुसार स्मृति में अविद्या के कारण जगत की रचना मन में होती है। ध्यातव्य हो कि वेदान्त दर्शन विभिन्न स्तरों की सत्ताओं को तीन रूपों–प्रतिभ्यासिक, व्यावहारिक तथा पारमर्थिक में रखा गया है।

13. अप्रमा का कारण दोष है और प्रमा का कारण गुण है, यह किसके द्वारा समर्थित है?

(a) विश्वनाथ (b) गौतम
(c) कुमारिल (d) अभिनवगुप्त

Ans : (a) अप्रमा का कारण दोष तथा प्रमा का कारण गुण हैं। यह कथन विश्वनाथ का है। 'न्याय सिद्धान्त मुक्तावली' इनकी रचना है। ये साथ पदार्थो में आत्मा को बुद्धि का आश्रय मानते हैं। बद्धि–अनुभूति तथा स्मृति भेद से दो। अनुभूति के अन्तर्गत प्रमाणों का निरूपण।

14. 'क्रियात्मक प्रत्यय वाक्य है' यह मत किसके द्वारा समर्थित है?

(a) वेदान्त (b) बौद्ध दर्शन
(c) मीमांसा (d) न्याय

Ans : (c) क्रियात्मक प्रत्यय (Theveral suffix) वाक्य है। यह मीमांसा दर्शन को मानता है। मीमांसा दर्शन में वेद को क्रिया परक विधिवाक्य माना गया है। मीमांसा में शब्द या तो सिद्धार्थवाक्य या विद्यायक वाक्य हो सकते हैं।

15. निम्नांकित में किस मत के अनुसार शब्दों के अर्थ केवल वाक्यों में उनके प्रयोग से सीखा जा सकता है?

(a) नव्य-न्याय (b) न्याय
(c) मीमांसा (d) वेदान्त

Ans : (c) शब्दों के अर्थ को हम वाक्यों में उनके प्रयोग द्वारा ही सीख सकते हैं। मीमांसा दर्शन में शब्द और उसके अर्थ को लेकर कुमारिल और प्रभाकर क्रमशः अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद मत के समर्थक हैं।

16. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन करें–

सूची-I	सूची-II
A. ध्यान जो किसी वस्तु को मन में धारण करता है।	**i. निबन्ध**
B. साहचर्य जो विभिन्न अनुभवों को संयोजित करता है।	**ii. परिग्रह**

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

C.	**वह विशेषता जिससे पुनः स्मरण होता है कि विषय किससे सम्बन्धित है।**	**iii.**	**प्रणिधान**
D.	**धारणा जो धारक को अभिव्यंजित करती है।**	**iv.**	**लक्षण**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iii	iv
(b)	i	iv	iii	ii
(c)	iv	i	ii	iii
(d)	iii	i	iv	ii

Ans : (d)
(a) प्रणिधान– वह ध्यान है जो किसी वस्तु को मन में धारण करता है।
(b) निबंध– साहचर्य जो विभिन्न अनुभवों को संयोजित करता है।
(c) लक्षण– वह विशेषता जिससे पुनःस्मरण होता है कि किससे सम्बन्धित है।
(d) परिग्रह– धारणा जो धारक को अभिव्यंजित करती है।

17. भ्रम के सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए किस दार्शनिक ने यह तर्क दिया है कि 'इन्द्रिय जगत एक भ्रम है'?
(a) फ्रांसिस बेकन (b) पार्मेनाइडीज
(c) प्रोटागोरस (d) विलियम जेम्स

Ans : (b) पार्मेनाइडीज अपने 'सत्' को कूटस्थ नित्य कहता है। उसके अनुसार इन्द्रियों से ज्ञात जगत परिवर्तनशील एवं उत्पत्तिमान है। जबकि 'सत्' कूटस्थ, नित्य और स्थिर है जिसका ज्ञान बुद्धि से होता है। और परिवर्तनयुक्त जगत इन्द्रियजन्य भ्रम है।

18. निम्न में से किस दार्शनिक ने यह तर्क दिया कि त्रुटि का स्रोत मानवीय बुद्धि की सीमितता और मानवीय इच्छा की असीमितता के बीच का अन्तर होता है?
(a) देकार्त (b) लॉक
(c) ब्रैडले (d) किर्केगार्ड

Ans : (a) डेकार्ट के अनुसार किसी भी ज्ञान पर विश्वास करने से पहले हमें उस पर संशय करना चाहिए और इसका कारण मानव बुद्धि की सीमितता है। उसके अनुसार हमारे त्रुटि का स्रोत मानवीय बुद्धि की सीमितता और मानवीय इच्छा की असीमितता के बीच का अन्तर होता है।

19. 'तथ्य विषयक कथन' और 'विचार संबंधी कथन' के बीच के अंतर को किसके द्वारा स्पष्ट किया गया?
(a) लॉक एवं बर्कले (b) केवल बर्कले
(c) ह्यूम और लॉक (d) केवल ह्यूम

Ans : (d) ह्यूम अपने दर्शन में मानव ज्ञान को दो वर्गों में बाँटता है– 'तथ्य विषय कथन' से हमें तथ्यात्मक ज्ञान' तथा 'विचार सम्बन्धी कथन' से 'आकारिक ज्ञान' प्राप्त होता है। 'तथ्य विषयक कथन' का सम्बन्ध वस्तु जगत से है और 'विचार सम्बन्धी कथन' प्रत्ययों (विचारों) के पारस्परिक सम्बन्धों से है।

20. हेगल के अनुसार निम्नलिखित अवधारणाओं के सही क्रम को लिखें–
(a) पक्ष, सपक्ष और विपक्ष (b) पक्ष, विपक्ष और सपक्ष
(c) सपक्ष, पक्ष और विपक्ष (d) विपक्ष, पक्ष और सपक्ष

Ans : (b) हेगेल के अनुसार प्रत्येक अपूर्ण प्रत्यय में उसका विरोधी तत्व निहित होता है। किन्तु यह विरोधी तत्त्व ज्ञान अथवा प्रत्यय का यथार्थ स्वरूप नहीं है। ज्ञान और सत्ता स्वरूपतः सामञ्जस्यपूर्ण होते हैं। अतः विकास की अन्तिम अवस्था में विरोध का पूर्ण समन्वय हो जाता है। यह त्रयी क्रमशः पक्ष, विपक्ष है।

21. निम्नलिखित में से किस दार्शनिक द्वय का यह विचार है कि 'मैं किसी वस्तु से अवगत हुए बिना स्वयं से अवगत हो सकता हूँ'?
(a) लॉक और ह्यूम (b) बर्कले और लॉक
(c) ह्यूम और स्पिनोज़ा (d) ह्यूम और बर्कले

Ans : (d) बर्कले के अनुसार आत्म ज्ञान प्रत्ययात्मक नहीं है बल्कि 'अंतर्बोध' से होता है अर्थात् में किसी वस्तु से अवगत हुए बिना स्वयं से अवगत हो सकता हूँ। इसी तरह ह्यम आत्मा को विषय के स्तर पर लेआता है अतः वह मैं को प्रत्यक्षानुभव का विषय मानता है। ह्यूम आत्मा को प्रत्ययों और संस्कारों का अविच्छिन्न प्रवाह मानता है जो हमें 'आत्मा' की एकता का आभास कराता है।

22. मन अन्तःकरण की संकल्पात्मिका वृत्ति है, यह निम्नलिखित में से किसकी दृष्टि है?
(a) न्याय (b) मीमांसा
(c) अद्वैत वेदान्त (d) बौद्ध

Ans : (c) अन्तःकरण जब बाह्य विषयों के सम्पर्क में आता है तो तदाकार हो जाता है। जिसे 'वृत्ति' कहते हैं। अन्तः करण की चार आकृतियों अनिश्चय (संशय), निश्चय (संकल्प), आत्मचेतना और स्मरण। यहाँ प्रश्न में 'मन' की जगह अंग्रेजी का 'मनस्' होगा। 'मनस्' या 'बुद्धि' अंतःकरण की संकल्पात्मिका वृत्ति है।
(भारतीय दर्शन का सर्वेक्षणः संगम लाल पाण्डेय)

23. सीपी में रजत् का ज्ञान भ्रमपूर्ण होता है क्योंकि यह गैर-अस्तित्व वाले रजत् को प्रक्षिप्त करता है और हम तब सचेत होते हैं। जब रजत् सम्बन्धी हमारा ज्ञान तत्पश्चात् सीपी के ज्ञान द्वारा खण्डित होता है। यह किसका उदाहरण है?
(a) अख्याति (b) अन्यथाख्याति
(c) असत्ख्याति (d) आत्मख्याति

Ans : (c) असत्ख्यातिवाद सीपी में रजत् का ज्ञान भ्रमपूर्ण मानता है। उसके अनुसार 'रजत्' जिसका अस्तित्व है ही नहीं अर्थात् वहाँ असत् है और असत् 'रजत्' का ज्ञान जब सीपी के ज्ञान से खण्डित हो जाता है। यह माध्यमिक बौद्धों से सम्बन्धित है।

24. न्याय के अनुसार, निम्न में किसमें भूतकाल का सचेतन संदर्भ और उसी वस्तु की वर्तमान दशा अपेक्षित होत है?
(a) स्मृति (b) अनध्यवसाय
(c) प्रत्यभिज्ञा (d) निर्विकल्प प्रत्यक्ष

Ans : (c) न्याय दर्शन के अनुसार पहले जिस वस्तु का ज्ञान हो चुका है उसका पुनः प्रत्यक्षात्मक ज्ञान प्रत्यभिज्ञा है। अर्थात् प्रत्याभिज्ञा में भूतकाल का संचेतन संदर्भ और उसी वस्तु की वर्तमान दशा अपेक्षित होती है। यह स्मरण और प्रत्यक्ष का मिश्रण नहीं है।
(भारतीय दर्शन– डॉ. नन्दकिशोर देवराज)

25. न्याय के लिए कौन-सा कथन स्वीकार्य नहीं है?
(a) इन्द्रियार्थसन्निकर्ष जन्यम् ज्ञानम् प्रत्यक्षम्
(b) द्रव्याश्रिता ज्ञेया निर्गुण निष्क्रिया गुणाः
(c) संदिग्धसाध्यवान पक्षः
(d) अर्थक्रियासामर्थ्य सत् का मानदण्ड है।

Ans : (d) न्याय दर्शन को 'अर्थक्रियासामार्थ्य सत्' का मानदण्ड नही मानता है। न्याय दर्शन में 'अर्ध प्रकाशों बुद्धिः माना गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

26. सूची-I को सूची-II से मिलान कीजिए और दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन करें–

सूची-I	सूची-II
A. सभी सकारात्मक उदाहरणों में मध्य पद की उपस्थिति	i. विपक्षासत्व
B. सभी नकारात्मक उदाहरणों में मध्य पद की अनुपस्थिति	ii. असत्प्रतिपक्ष
C. मध्य पद में साध्य की विरोधी वस्तु नहीं होनी चाहिए।	iii. सपक्षसत्व
D. विरोधी कारणों की अनुपस्थिति में विरोधी निष्कर्ष निकलते	iv.अबाधितविषयत्व

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iii	iv	i	ii
(b)	ii	iii	iv	i
(c)	iii	i	iv	ii
(d)	i	iii	iv	ii

Ans : (c)
A. सभी सकारात्मक उदाहरणों में मध्य पद की उपस्थिति–
iii. सपक्षसत्व
B. सभी नकारात्मक उदाहरणों में मध्य पद की अनुपस्थिति–
i. विपक्षासत्व
C. मध्य पद में साक्ष्य की विरोधी वस्तु नही होनी चाहिए–
iv. अबाधित विषयत्व
D. विरोधी कारणों की अनुपस्थिति में विरोधी निष्कर्ष निकलते हैं–
ii. असत प्रतिपक्ष

27. किस प्रकार का हेत्वाभास निम्नलिखित अनुमान द्वारा किया जाता है? सही कूट का चयन कीजिए–
'मणिमयः पर्वतः वहिनमान धूमात् ।'
(a) अनुपसंहारी सव्यभिचार (b) आश्रयासिद्ध
(c) स्वरूपासिद्ध (d) बाधित

Ans : (b) जिसमें आश्रय या पक्ष काल्पनिक होता है, उस अनुमान को आश्रय सिद्ध या पक्षासिद्ध हेतु कहते हैं। 'मृणमय पर्वत' जो कि आश्रय/पक्ष है असत् होने के कारण हेतु भी असिद्ध है।

28. सही क्रम का चयन कीजिए–
(a) काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष (b) मोक्ष, धर्म, अर्थ, काम
(c) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष (d) धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष

Ans : (c) भारतीय दर्शन में चार प्रमुख पुरुषार्थ माने गये है जो क्रमशः धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष है। इसका वर्णन भगवद्गीता में भी मिलता है।

29. श्रीकृष्ण के अनुसार वर्ण के विभाजन का आधार है–
(a) जाति और कर्म (b) गुण और कर्म
(c) जाति और गुण (d) स्वधर्म और जाति

Ans : (b) भगवद्गीता में श्रीकृष्ण वर्ण विभाजन का आधार गुण और कर्म को मानते हैं। श्रीकृष्ण अर्जुन से स्पष्ट कहते हैं कि 'चातुर्वर्ण्य मया सृष्ट गुण कर्मविभागशः। गीता चार वर्णों– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की सामाजिक व्यवस्था का समर्थक है।

30. सम्यक् चारित्र के प्रार्थी द्वारा किसकी आवश्यकता होती है?
(a) सिद्धशील (b) गुणस्थान
(c) सदसदविवेक (d) पंचव्रत

Ans : (a) जैन दर्शन में मोक्ष प्राप्ति के तीन सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और समाज चरित्र अपरिहार्य साधन माने गये हैं। सम्यक् चरित्र, सम्यक ज्ञान को कर्म में परिणत करना है। यह 'पंचव्रतों' द्वारा ही सम्भव है। ये पंचव्रत, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्चर्य एवं अपरिग्रह हैं।

31. निम्न में से कौन-सा एक त्रिरत्न नहीं है?
(a) सम्यक् दर्शन (b) सम्यक् ज्ञान
(c) सम्यक् चरित्र (d) सम्यक् समाधि

Ans : (d) जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र के साधन माने गये हैं। तीनों के सम्मिलित रूप से ही मोक्ष के साधन हैं। इसीलिए जैन दार्शनिक इन्हें 'त्रिरत्न' (Three Jewels) कहते हैं। 'सम्यक् समाधि' बौद्ध दर्शन के अष्टांग मार्ग का अंग है।

32. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन करें–

सूची-I	सूची-II
A. सुखानुशयी	i. अभिनिवेष
B. दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मेव	ii. द्वेष
C. दुःखानुशयी	iii. अस्मिता
D. स्वरसवाही विदृषोऽपि तथारुधः	iv. राग

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iii	ii	i	iv
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	i	iii	ii	iv

Ans : (c)

A. सुखानुशयी	–	द्वेष
B. दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मेव	–	राग
C. दुःखानुशयी	–	अभिनिवेष
D. स्वरसवाही विदृषोऽपि तथारुधः	–	अस्मिता

33. निम्नलिखित में से किसने कहा है कि 'संकल्प स्वातूल्य सत्य है या नैतिक निर्णय भ्रम'?
(a) मार्टिन्यू (b) बेंथम
(c) कान्ट (d) स्पेन्सर

Ans : (a) मार्टिन्यु 'संकल्प स्वातुल्य तथा सत्य (fact) है या नैतिक निर्णय भ्रम' है। अर्थात् मार्टिन्यु अनुसार या तो संकल्प की स्वतंत्रता एक तथ्य है या फिर नैतिकता एक भ्रम है।
(नीतिशास्त्रःसिद्धान्त और व्यवहार– प्रो. नित्यानंद मिश्र)

34. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें एवं सही कूट का चयन करें–

सूची-I (लेखक)	सूची-II (विषय)
A. अर्बन	i. द लैंग्वेज ऑफ मॉरल्स
B. ब्रॉड	ii. फाइव टाइप्स ऑफ इथिकल थियरीज
C. आर.एम.हेयर	iii. द प्लेस ऑफ रीज़न इन इथिक्स
D. टुल्मिन	iv. फन्डामेन्टल्स ऑफ इथिक्स

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	iii	iv	ii
(b)	iv	ii	i	iii
(c)	iii	iv	ii	i
(d)	i	ii	iii	iv

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (b)

A. अर्बन	iv. फन्डामेन्टल्स ऑफ इथिक्स
B. ब्रॉड	ii. फाइव टाइप्स ऑफ इथिकल थियरीज
C. आर.एम.हेयर	i. द लैंग्वेज ऑफ मॉरल्स
D. टुल्मिन	iii. द प्लेस ऑफ रीज़न इन इथिक्स

35. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म असंगत है?

(a) संवेगवाद – ए.जे. एयर
(b) अन्तःप्रज्ञावाद – मार्टिन्यू
(c) प्रकृतिवाद – एस.ई. टुल्मिन
(d) बुद्धिवाद – कांट

Ans : (c) ए.जे.एयर, संवेगवादी, मार्टिन्यू अंतःप्रज्ञवादी कांट बुद्धिवादी लेकिन एस.इ.टूल्मिन प्रकृतिवादी नहीं हैं।

36. अधोलिखित में से कौन प्रकृतिवादी नैतिक सिद्धान्त से सम्बन्धित कथन है?

(a) शुभ वह है जो एक बौद्धिक व्यक्ति चाहता है।
(b) शुभ वांछनीय है।
(c) ईश्वर द्वारा अनुमोदित कर्म ही सही कर्म है।
(d) स्वयं द्वारा अनुमोदित कर्म ही सही कर्म है।

Ans : (b) जब नैतिकता की कसौटी सुख का ज्ञान अर्थात् सुखानुभूति का ज्ञान हो तो वहाँ प्राकृतिक नैतिक सिद्धान्त होता है। जब वैसे ज्ञान का विषय प्राकृतिक होता है और वह साधारण इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त होता है। जैसे– शुभ वांछनीय है। अर्थात् शुभ = इच्छा का विषय होना। उचित =सामंजस्यपूर्ण सुख का कारक होना।

37. अधोलिखित में से किसने कहा है 'स्वतंत्रता ही मानव तथा समस्त बुद्धिजीवियों के गौरव का एकमात्र आधार है'?

(a) रॉस (b) हेगेल
(c) कान्ट (d) ग्रीन

Ans : (c) काण्ट अपने दर्शन में नैतिक की तीन पूर्णमान्यताओं को मानते हैं जो है– संकल्पस्वातन्त्रता, आत्मा की अमरता और ईश्वर का अस्तिव। उसके अनुसार, स्वतंत्रता, मानव तथा समस्त बुद्धिजीवियों गौरव का एकमात्र आधार है।

38. 'जॉन को इसलिए दण्डित नहीं किया गया कि उसने भेड़ चुराई थी अपितु इसलिए कि दूसरे इसे न चुरायें' यह कथन दण्ड के किस सिद्धान्त से सम्बन्धित है ?

(a) प्रतीकारवादी (b) निवर्तनवादी
(c) सुधारवादी (d) परपीड़ाजनित सुजवाद

Ans : (b) दण्ड के तीन सिद्धान्त प्रचलित हैं– प्रतीकारवादी, निवर्तनवादी तथा सुधारवादी। निवर्तनवादी दण्ड सिद्धान्त में किसी व्यक्ति के द्वारा किये गये अपराध की सजा इसलिए दी जाती है ताकि कोई अगला अपराध करने का साहस न करे। अतः यहाँ निवर्तनवादी दण्ड सिद्धान्त है।

39. बेन्थम एवं मिल के सन्दर्भ में, निम्नलिखत में कौन अभिकथन सही है/ हैं? सही कूट का चयन करें।

i. दोनों मानते हैं कि मनुष्य अनिवार्यतः सुख चाहता है।
ii. दोनों मानते हैं कि 'चाहिए' को 'है' से निगमित किया जा सकता है।
iii. दोनों स्वार्थ के आधार पर अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख के आदर्श के औचित्य को सिद्ध करते हैं।

कूट :
(a) i और ii (b) i और ii
(c) ii और i (d) i, ii और iii

Ans : (b) बेथम और मिल दोनों सुखवादी हैं जो क्रमशः निकृष्ट और उत्कृष्ट सुखवाद की कोटि में रखे जाते हैं। दोनों का मानना है मनुष्य हमेशा सुख चाहता है। इनके अनुसार 'चाहिए' से 'है' से निगमित किया जा सकता है। मिल परार्थवादी सुखवाद को मानता है।

40. 'चाहिए' की भावना बाह्य आदेशों से आती है। निम्नलिखित में से किस एक की यह मान्यता है?

(a) वैधानिक मत (b) अन्तःप्रज्ञावाद
(c) सुखवाद (d) आदर्शवाद

Ans : (a) जब नैतिक निर्णय का स्वरूप आदेशात्मक हो अर्थात् चाहिए की भावना बाह्य आदेशों से आये तो वहां पर वैधानिक सिद्धान्त होता है। प्रत्येक विधान विधिमूलक और निषेधमूलक दोनों होता है। उसका रूप है 'यह करो और उसे मत करो'।

41. सत्यता निम्न में से किसका गुण है?

(a) पद (b) तर्कवाक्य
(c) न्यायवाक्य (d) वाक्य और न्यायवाक्य दोनों का

Ans : (b) सत्यता तर्कवाक्यों का गुण है। तर्कवाक्य ही सत्य या असत्य होते हैं। न्यायवाक्य तो इन्हीं तर्कवाक्यों से बनता है। जो वैध या अवैध होते हैं।

42. यदि एकसमान उद्देश्य और विधेय वाले दो तर्क वाक्य सत्य नहीं हो सकते हैं किन्तु दोनों गलत हो सकते हैं, उनके संबंध को कहा जाता है।

(a) सब-अल्टरनेशन (b) कोंट्राडिक्ट्री
(c) कांट्रेरी (d) सबकंट्रेरी

Ans : (c) परम्परागत विरोध वर्ग के अनुसार यदि एकसममान उद्देश्य और विधेय वाले दोनों तर्कवाक्य सत्य नहीं हो सकते हैं किन्तु दोनों गलत हो सकते हैं तो उनके सम्बन्ध को 'विपरीत' (Contrary) कहते हैं। यह सम्बन्ध A और E में होता है।
(Datrodaction to Logic– Irving M. Copi)

43. यदि O तर्कवाक्य गलत है तो इससे संबंधित A, E और I होगा।

(a) A सही, E गलत है और I गलत है।
(b) A सही है, E गलत है और I सही है।
(c) E गलत है और A एवं I दोनों अनिश्चित हैं।
(d) A गलत है और E एवं I दोनों अनिश्चित हैं।

Ans : (b) परम्परागत विरोध वर्ग के अनुसार यदि 'O' तर्कवाक्य गलत है तो 'A' का व्याघाती सम्बन्ध होने के कारण 'A' सही, 'E' का उपाश्रयण सम्बन्ध हाने के कारण 'E' गलत तथा 'I' के विरुद्ध होने के कारण विकल्प (b) सही है।

44. निम्न में से कौन-सा एक विचार का नियम नहीं है?

(a) तादात्म्य का सिद्धांत
(b) पर्याप्त कारण का सिद्धांत
(c) मध्य बहिष्कार का सिद्धांत
(d) अविरोध का सिद्धांत

Ans : (*) विचार के तीन नियम– तादात्म्य का सिद्धान्त, व्याघात का नियम, मध्य–परिहार का नियम। संबंधित प्रश्न में एक से अधिक विकल्प सही है।

45. निम्न में से कौन-सा एक पुनर्कथन है?

(a) $P \vee P$ (b) $P \cdot P$
(c) $P \cdot \sim P$ (d) $P \supset P$

Ans : (d) जिस वाक्याभर के केवल सत्य प्रतिस्थापन– उदाहरण होते हैं, वह पुनर्कथन होता है। यहाँ $P \supset P$ एक पुनर्कथन होगा।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

46. निम्नलिखित युक्ति (a) और युक्ति आकार (b) पर विचार नहीं है?

i. $(A \supset B) \cdot (C \supset D)$ $\quad \therefore A \supset B$
ii. $(p \supset q) \cdot (r \supset s)$ $\quad \therefore p \supset q$

(a) i, ii का युक्ति आकार है।
(b) ii, i का युक्ति आकार है।
(c) i, ii का विशेष युक्ति आकार है।
(d) i, ii का विशेष युक्ति आकार है।

Ans : (a) दिये गये प्रश्न में एक से अधिक उत्तर सही है। इस प्रश्न में या तो कोई विकल्प नही सही है या पूरा प्रश्न ही गलत है।

47. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें एवं सही कूट का चयन करें–

सूची-I		सूची-II
A. FERIO	**i.**	**चौथा आकार**
B. CAMESTRES	**ii.**	**तीसरा आकार**
C. DATISI	**iii.**	**दूसरा आकार**
D. DIMARIS	**iv.**	**पहला आकार**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	ii	i	iii	iv
(d)	iv	iii	i	ii

Ans : (b)
A. FERIO – iv. पहला आकार
B. CAMESTRES– iii. दूसरा आकार
C. DATISI – ii. तीसरा आकार
D. DIMARIS – i. चौथा आकार

48. 'कोई भी मनुष्य पूर्ण नहीं हैं' इस कथन का ऑबवर्जन है–

(a) सभी मनुष्य अपूर्ण हैं।
(b) सभी पूर्ण प्राणी मनुष्य हैं।
(c) कोई भी पूर्ण प्राणी मनुष्य नहीं है।
(d) कुछ पूर्ण प्राणी मनुष्य हैं।

Ans : (a) प्रतिवर्तन (Obversion) में उद्देश्य पद अपरिवर्तित रहता है और प्रतिवर्तित होने वाले तर्कवाक्य का परिमाण भी अपरिवर्तित रहता है। किसी तर्कवाक्य के 'प्रतिवर्तन' (ऑबवर्जन) में हम तर्कवाक्य का गुण परिवर्तन करते हैं और विधेय के स्थान पर उसका पूरक रख देते हैं। जैसे– 'कोई भी मनुष्य पूर्ण नहीं है' 'E' तर्कवाक्य है जिसका प्रतिवर्तन 'A' तर्कवाक्य में 'सभी मनुष्य अपूर्ण है।' होगा।

49. निम्न में से कौन-सा एक $\sim p \supset \sim\sim q$ के समतुल्य है?

(a) $q \supset \sim p$ (b) $p \vee q$
(c) $p \supset q$ (d) $\sim p \supset \sim q$

Ans : (b)
$\sim p \supset \sim\sim q$
$\sim p \supset q$
$\sim\sim p \vee q$
$p \vee q$
$\therefore \sim p \supset \sim\sim q \equiv p \vee q$

50. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें एवं सही कूट का चयन करें–

सूची-I		सूची-II
A. एक्सपोर्टेशन	**i.**	**$(p \supset q) \equiv (\sim q \supset \sim p)$**
B. टॉटोलॉजी	**ii.**	**$(p \supset q) \equiv (\sim p \vee q)$**
C. ट्रांसपोजिशन	**iii.**	**$p \equiv (p \cdot p)$**
D. मैटिरियल इम्प्लिकेशन	**iv.**	**$[(p \cdot p) \supset r] \equiv [p \supset (q \supset r)]$**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iv	ii	iii	i
(c)	iv	iii	i	ii
(d)	iii	iv	i	ii

Ans : (c)
A. एक्सपोर्टेशन– iv. $[(p \cdot p) \supset r] \equiv [p \supset (q \supset r)]$
B. टॉटोलॉजी– iii. $p \equiv (p \cdot p)$
C. ट्रांसपोजिशन– i. $(p \supset q) \equiv (\sim q \supset \sim p)$
D. मैटिरियल इम्प्लिकेशन– ii. $(p \supset q) \equiv (\sim p \vee q)$

51. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें एवं सही कूट का चयन करें–

सूची-I		सूची-II
A. हिन्दू	**i.**	**पाँच मुख्य स्तम्भ**
B. बौद्ध	**ii.**	**सप्त भंगीनय**
C. जैन	**iii.**	**प्रतीत्यसमुत्पाद**
D. इस्लाम	**iv.**	**वर्णाश्रम**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iii	iv	i	ii
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	ii	i	iv	iii
(d)	i	ii	iv	iii

Ans : (b)
A. हिन्दू – iv. वर्णाश्रम
B. बौद्ध – iii. प्रतीत्यसमुत्पाद
C. जैन – ii. सप्त भंगीनय
D. इस्लाम – i. पाँच मुख्य स्तम्भ

52. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें एवं सही कूट का चयन करें–

सूची-I		सूची-II
A. पवित्र प्रेत	**i.**	**जोरस्ट्रियन धर्म**
B. अहरमज़दा	**ii.**	**ईसाई धर्म**
C. तालमड	**iii.**	**सिक्ख धर्म**
D. गुरुबानी	**iv.**	**यहूदी धर्म**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	i	iv	iii
(c)	iii	iv	i	ii
(d)	iv	iii	ii	i

Ans : (b)
A. पवित्र प्रेत – ii. ईसाई धर्म
B. अहरमज़दा – i. जोरस्ट्रियन धर्म
C. तालमड – iv. यहूदी धर्म
D. गुरुबानी – iii. सिक्ख धर्म

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

53. हिन्दू धर्म में कर्म सिद्धांत से अभिप्राय है–
(a) भाग्यवाद
(b) नैतिक कारणता का सिद्धांत
(c) परिणाम की आशा करते हुए कर्म करना
(d) यज्ञ संपन्न करना

Ans : (b) हिन्दू धर्म में कर्म से अभिप्राय नैतिक कारणता का सिद्धान्त है। हिन्दु 'धर्म' में कर्म एवं पुनर्जन्म का सिद्धान्त एक प्रमुख नैतिक कारण है।

54. "किसी विषय के सभी पहलू यथार्थ हैं, जबकि विषय मात्र तार्किक संरचना है" यह किसका मत है?
(a) फ्रेगे (b) रसेल
(c) विट्गेन्स्टीन (d) आस्टिन

Ans : (b) रसेल अपने तार्किक परमाणुवाद में जगत् को वस्तुओं को एक तार्किक संरचना प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार 'किसी विषय के सभी पहलू यथार्थ हैं, जबकि विषय (Things) मात्र तार्किक संरचना है।

55. फ्रेगे द्वारा "होता है" और "है" के बीच विभेद के लिए सैद्धांतिक कारण को निम्नांकित में किसे स्पष्ट करने के लिए स्वीकार किया गया है?
(a) तादात्म्य (b) अभावात्मक सत्ता
(c) परोक्ष कथन (d) तर्कवाक्यीय अभिवृत्ति

Ans : (b) फ्रेगे द्वारा 'होता है' और 'है' के बीच विभेद के लिए सैद्धान्तिक कारण को स्पष्ट करने के लिए 'अभावात्मक सत्ता' को स्वीकार किया गया है।

56. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए तथा दिए गए सही विकल्प का चयन करें–
अभिकथन (A) : सत्यता की परीक्षा उसके व्यावहारिक फल में है।
तर्क (R) : फलवाद किसी तर्कवाक्य की सत्यता अथवा असत्यता का निर्धारण उसके द्वारा हमारे प्रयोजनों को पूरा करने अथवा नहीं करने के आधार पर निर्धारित करता है।
कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) गलत है और (R) सही है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

Ans : (a) फलवाद (Pragmaticism) सत्यता की परीक्षा उसके व्यावहारिक फल के आधार पर करता है। पियर्स के अनुसार विश्वासों की सत्यता का मूल्यांकन उसके व्यावहारिक परिणामों के आधार पर करना चाहिए। अतः फलवाद (अथक्रियावाद) किसी तर्कवाक्य की सत्यता अथवा असत्यता का निर्धारण उसके द्वारा हमारे प्रयोजनों को पूरा करने अथवा नहीं करने के आधार पर करता है।

57. एक ही बाह्य वस्तु के बारे में दो लोगों की अवधारणाओं के सम्बन्ध में निम्नांकित में कौन शर्त डोनाल्ड डेविडसन को स्वीकार्य नहीं है?
(a) स्वयं के बारे में विश्वास
(b) अन्य लोगों के बारे में विश्वास
(c) भाषा नियमों के बारे में विश्वास
(d) विश्वास कि जगत का अस्तित्व संयुक्त रूप से होता है।

Ans : (c) डोनाल्ड डेविड्सन भाषा नियमों के बारे में विश्वास स्वीकार्य है, एक ही बाह्य वस्तु के बारे में दो लोगों की अवधारणाओं के सम्बन्ध में।

58. हर्म्युनिटिक के संदर्भ में निम्नांकित युग्मों पर विचार कर सही कूट का चयन करें–
i. फ्रेडरिक स्लायरमाखर –रोमांटिक हर्म्युनिटिक्स
ii. हाइडेगर –रेडिकल हर्म्युनिटिक्स
iii. डैरिडा –हर्म्युनिटिक फेनेमेनोलॉजी
कूट :
(a) केवल i सही सुमेलित है।
(b) केवल i और ii सही सुमेलित हैं।
(c) केवल iii सही सुमेलित है।
(d) केवल ii और iii सही सुमेलित हैं।

Ans : (*) सभी युग्म सुमेलित हैं।
i. फ्रेडरिक स्लायरमाखर – रोमांटिक हर्म्युनिटिक्स
ii. हाइडेगर – रेडिकल हर्म्युनिटिक्स
iii. डैरिडा – हर्म्युनिटिक फेनेमेनोलॉजी

59. हुसर्ल की फेनोमेनोलॉजी में 'नोएसिस' का अर्थ है–
(a) विषयापेक्षी क्रिया की वास्तविक अन्तर्वस्तु
(b) विषयापेक्षी क्रिया की आदर्श अन्तर्वस्तु
(c) अविषयापेक्षी क्रिया की वास्तविक अन्तर्वस्तु
(d) अविषयापेक्षी क्रिया की आदर्श अन्तर्वस्तु

Ans : (a) हुसर्ल की फेनोमेनोलॉजी में 'नाएसिस' विषयापेक्षी क्रिया की वास्तविक अन्तर्वस्तु है। हुसर्ल की फेनोमेनोलॉजी की दृष्टि की सार्थकता इस बात में है कि उस दृष्टि से जो आद्य रूप में ग्राह्य होता है, वह तास्त्विक सत् की झलक है। फेनोमेनोलॉजिकल अध्ययन के केन्द्र को चेतना से सत्ता में परिवर्तित कर देते हैं। उनके अनुसार तत्वदर्शन फेनोमेनोलाजी के रूप में ही संभव है।

60. निम्नांकित में से कौन दार्शनिक फेनोमेनोलॉजिकल अध्ययन के केंद को चेतना से सत्ता में परिवर्तित करने के लिए उत्तरदायी है?
(a) हुसर्ल (b) हाइडेगर
(c) हेगेल (d) किर्केगार्ड

Ans : (b) हाइडेगर के अनुसार दार्शनिक चिन्तन का मूल लक्ष्य तत्वमीमांसीय है, तथा उनकी फेनोमेनोलॉजी की दृष्टि की सार्थकता इस बात में है कि उस दृष्टि से जो आद्य रूप में ग्राह्य होता है, वह तात्विक सत् की झलक है। फेनोमेनोलॉकिल अध्ययन के केन्द्र को चेतना से सत्ता में परिवर्तित कर देते हैं। उनके अनुसार तत्वदर्शन फेनोमेनोलॉजी के रूप में ही संभव है।

61. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें एवं सही कूट का चयन करें–

सूची-I	सूची-II
A. शुद्धाद्वैत	i. निम्बार्क
B. द्वैताद्वैत	ii. वल्लभ
C. अद्वैत	iii. मध्व
D. द्वैत	iv. शंकर

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	i	ii	iii	iv

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c)	iii	iv	i	ii
(d)	iv	iii	ii	i

Ans : (a)
A. शुद्धाद्वैत – ii. वल्लभ
B. द्वैताद्वैत – i. निम्बार्क
C. अद्वैत – iv. शंकर
D. द्वैत – iii. मध्व

62. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए तथा दिए गए सही विकल्प का चयन करें–
अभिकथन (A) : ब्रह्म विश्व का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण है।
तर्क (R) : ब्रह्म के अलावा कुछ भी नहीं है।
कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) गलत है और (R) सही है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

Ans : (b) शंकर वेदान्त में ब्रह्म को जगत का अभिन्ननिमित्तउपादान कारण माना गया है और ब्रह्म ही सबकुछ है अर्थात ब्रह्म के अलावा कुछ नही है। ब्रह्म ही एक मात्र सत् है अर्थात् 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवोब्रह्मैवनापरः।)

63. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें एवं सही कूट का चयन करें–

सूची-I	सूची-II
A. सत्	**i. माध्यमिक बौद्ध**
B. असत्	**ii. मध्व**
C. सदसत्	**iii. भर्तृप्रपंच**
D. सदसदविलक्षण	**iv. शंकर**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iv	iii
(b)	ii	i	iii	iv
(c)	iv	iii	i	ii
(d)	iii	iv	ii	i

Ans : (b)
A. सत् – ii. मध्व
B. असत् – i. माध्यमिक बौद्ध
C. सदसत् – iii. भर्तृप्रपंच
D. सदसदविलक्षण – iv. शंकर

64. वेदांत में मोक्ष से अभिप्राय है–
(a) संपूर्ण शरीर से मुक्त होने की स्वतंत्रता (स्थूल शरीर)
(b) सभी आनुभाविक सीमाओं से स्वतंत्र
(c) स्वर्ग में स्थायी रूप से ठहरना
(d) यदा-कदा स्वर्ग की यात्रा

Ans : (b) सभी आनुभविक सीमाओं से स्वतंत्र होना वेदांत में मोक्ष है। अदैत वेदान्त में 'ब्रह्मसाक्षात्कार' को मोक्ष कहा गया है। जीवन्मुक्ति और विदेह मुक्ति मोक्ष का स्वरूप है।

65. अद्वैत के अनुसार मिथ्या शब्द का अर्थ है–
(a) जगत व्यावहारिक रूप से सत् नहीं है।
(b) जगत पूर्णतः असत् है।
(c) जगत पारमार्थिक रूप से सत् नहीं है।
(d) जगत को ब्रह्म समझ लेना।

Ans : (c) अद्वैत वेदान्त दर्शन में 'मिथ्या' शब्द का प्रयोग भ्रम, अविद्या, माया, अभ्यास आदि के पर्यायवाची रूप में। जगत पारमार्थिक रूप से सत् नहीं है; यह मिथ्या शब्द का अर्थ है।

66. निम्न में से एक छोड़कर शेष सभी वाक्य गलत हैं–
(a) शंकर द्वारा कर्मयोग को मुक्ति के प्राथमिक साधन के रूप में प्रतिपादित किया गया है।
(b) शंकर द्वारा कर्मयोग को विदेह मुक्ति के प्राथमिक साधन के रूप में प्रतिपादित किया गया है।
(c) शंकर द्वारा ज्ञानयोग को जीवन मुक्ति के प्राथमिक साधन के रूप में प्रतिपादित किया गया है।
(d) शंकर द्वारा ज्ञानयोग को विदेह मुक्ति के प्राथमिक साधन के रूप में प्रतिपादित किया गया है।

Ans : (c) शंकर अविद्या निवृत्ति को ही मोक्ष मानते हैं। अविद्या निवृत्ति, ब्रह्म के स्वरूप के साक्षात्कार से होगा। मोक्ष के साधन के रूप में शंकराचार्य 'ज्ञानमार्ग' को प्राथमिक महत्व देते हैं। उनके अनुसार ज्ञान से ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।

67. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें एवं सही कूट का चयन करें–

सूची-I (लेखक)	सूची-II (विषय)
A. जीव और ब्रह्म का तादात्म्य	**i. मध्व**
B. जीव और ब्रह्म का सादृश्य	**ii. शंकर**
C. ब्रह्म के विशेषण के रूप में जीव	**iii. निम्बार्क**
D. ब्रह्म के साथ भेदाभेद सम्बन्ध के रूप में जीव	**iv. रामानुज**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iii	iv	ii	i
(b)	i	i	iv	iii
(c)	iv	iii	i	ii
(d)	iii	ii	i	iv

Ans : (b)
A. शंकर जीव और ब्रह्म का तादात्म्य मानते हैं।
B. मध्व जीव और ब्रह्म का सादृश्य
C. रामानुज ब्रह्म के विशेषण के रूप में जीव
D. निम्बार्क ब्रह्म के साथ भेदाभेद सम्बन्ध के रूप में जीव को मानते

68. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें एवं सही कूट का चयन करें–

सूची-I (लेखक)	सूची-II (विषय)
A. महादेव देसाई	**i. गांधी की शव परीक्षा**
B. गांधी	**ii. द अनिहिलेशन ऑफ कास्ट एण्ड अ रिप्लाई**
C. यशपाल	**iii. वोमेन एण्ड सोशल जस्टिस**
D. अम्बेडकर टू महात्मा गांधी	**iv. द स्टोरी ऑफ बारदोली**

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iv	iii	i	ii
(b)	i	ii	iv	iii

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) ii iv i iii
(d) iv iii ii i

Ans : (a)
A. महादेव देसाई – iv. द स्टोरी ऑफ बारदोली
B. गांधी – iii. वोमेन एण्ड सोशल जस्टिस
C. यशपाल – i. गांधी की शव परीक्षा
D. अम्बेडकर – ii. द अनिहिलेशन ऑफ कास्ट एण्ड अ रिप्लाई टू महात्मा गांधी

69. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें एवं सही कूट का चयन करें–

सूची-I (लेखक)		सूची-II (विषय)
A. गांधी	i.	माया सामान्यतः तथ्यों का कथन है, जैसे कि वे हैं।
B. टैगोर	ii.	आरोहण अवरोहण की पूर्ववर्ती प्रक्रिया से प्रतिबद्ध है।
C. श्री अरविन्द	iii.	जैसे ही हम नैतिक आधार खो देते हैं हम धार्मिक नहीं होते हैं।
D. विवेकानन्द	iv.	वह (मनुष्य) पृथ्वीपुत्र तो है, किन्तु है स्वर्ग का उत्तराधिकारी

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	iv	ii	iii
(b)	ii	iv	i	iii
(c)	iii	iv	ii	i
(d)	iv	i	iii	ii

Ans : (c) गांधी, जैसे हम नैतिक आधार खो देते हैं हम धार्मिक नहीं होते हैं। टैगोर, वह पृथ्वीपुत्र तो है, किन्तु है स्वर्ग का उत्तराधिकारी। श्री अरविन्द, आरोहण अवरोहण की पूर्ववर्ती प्रक्रिया से प्रतिबद्ध है। विवेकानन्द, जैसे कि वे हैं– माया सामान्यतः तथ्यों का कथन है।

70. निम्नलिखित में से गांधी के संदर्भ में कौन-सा कथन सत्य नहीं है?
(a) अहिंसा, सत्य की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है।
(b) मनुष्य सम्पूर्ण सत्य को जान सकता है।
(c) साध्य एवं साधन मूल्यों की एक शृंखला है।
(d) सत्य एवं अहिंसा अविभाज्य हैं।

Ans : (b) गांधी के अनुसार मनुष्य सम्पूर्ण सत्य को नहीं जान सकता है। गांधी के अनुसार हम 'सत्य' का पूर्ण दर्शन तो करते नहीं कहीं-कहीं हमें 'सत्य' की क्षणिक झांकी मिलती रहती है। इसी कारण हम 'सत्य' की पूर्ण शक्ति से अपरिचित रह जाते हैं। किन्तु अपनी पूर्णता में 'सत्य' सत् को पूर्णतया प्रकाशित कर देता है।

71. अस्पृश्यता विरोधी उपवास गांधी ने इनके विरुद्ध किया था–
(a) ब्रिटिश सरकार (b) सवर्ण हिन्दू
(c) ईसाई (d) सनातनी हिन्दू

Ans : (b) गांधी जी ने अस्पृश्यता विरोधी उपवास सवर्ण हिन्दुओं के विरुद्ध किया था। यरवदा जेल में जब गांधी जी को पता चला कि ब्रिटिश सरकार द्वारा दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र बनाया जा रहा है, तो यह उपवास 20 सितम्बर 1932 को शुरू किया गया। यहीं से 'हरिजन' शब्द दलितों के लिए प्रयुक्त हुए।

72. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें एवं सही कूट का चयन करें–

सूची-I (लेखक)		सूची-II (ग्रन्थ)
A. गांधी	i.	गांधी जी इन इंडियन रिलेज्स
B. जे.बी.कृपलानी	ii.	इथिकल रिलिजन
C. महादेव देसाई	iii.	द फिलासफी ऑफ महात्मा गांधी
D. दत्ता डी.एम.	iv.	द गांधियन वे

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	iv	i	iii
(b)	i	ii	iv	iii
(c)	iii	ii	i	iv
(d)	iv	i	iii	ii

Ans : (a)
A. गांधी – ii. इथिकल रिलिजन
B. जे.बी.कृपलानी – iv. द गांधियन वे
C. महादेव देसाई – i. गांधी जी इन इंडियन रिलेज्स
D. दत्ता डी.एम. – iii. द फिलासफी ऑफ महात्मा गांधी

73. निम्न में से किसके विचार में प्राकृतिक अधिकार एक प्रकार का आत्म संरक्षण है?
(a) हॉब्स (b) पेन
(c) कांट (d) एक्विन्स

Ans : (a) हॉब्स के विचार में प्राकृतिक अधिकार एक प्रकार क आत्म–संरक्षण है। हॉब्स 'सामाजिक समझौते का सिद्धान्त का प्रतिपादन' करता है।

74. गैडमर के अनुसार हर्म्युनिटिक समुदाय से तात्पर्य है–
(a) ग्रंथ और अध्येता का सहनिर्धारण
(b) ग्रंथ और लेखक का सहनिर्धारण
(c) ग्रंथ और संदर्भ का सहनिर्धारण
(d) लेखक और अध्येता का सहनिर्धारण

Ans : (a) गैडमर हर्म्युनिटिक के बहुत बड़े जानकार थे। उनके अनुसार हर्म्युनिटि समुदाय से तात्पर्य, ग्रन्थ और अध्येता का सहनिर्धारण है। यह 20वीं शताब्दी के महाद्वीपीय दार्शनिक के रूप में विख्यात है।

75. स्लायर माखैर के हर्म्युनिटिक्स के सिद्धांत के आलोक में निम्नांकित अभिकथनों पर विचार करें तथा सही कूट का चयन करें–
i. व्याख्या की समस्या बोध की समस्या है।
ii. हर्म्युनिटिक्स त्रुटिपूर्ण बोध के निवारण की कला है।
iii. हर्म्युनिटिक्स का क्षेत्र केवल पवित्र ग्रंथों का ही नहीं अपितु सभी मानवीय ग्रंथों एवं उनके संप्रेक्षण की विधि है।
(a) केवल i सही है।
(b) केवल i और ii सही हैं।
(c) केवल i ओर iii सही हैं।
(d) सभी i, ii और iii सही हैं।

Ans : (d) हर्म्युनिटिक्स भास्य की प्रविधि और सिद्धान्त है। श्लायर माखैर व्याकरण भाष्य और मनोवैज्ञानिक भाष्य में अन्तर करते हैं। श्लायर के विचारों में–
i. व्याख्या की समस्या बोध की समस्या है।
ii. हर्म्युनिटिक्स त्रुटिपूर्ण बोध के निवारण की कला है।
iii. हर्म्युनिटिक्स का क्षेत्र केवल पवित्र ग्रंथों का ही नहीं अपितु सभी मानवीय ग्रंथों एवं उनके संप्रेक्षण की विधि है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2015
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

नोट : इस प्रश्न पत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नैतिक संदर्भ में अधोलिखित में से किसके साथ ऋत की साम्यता संभव है?

(a) अर्थ (b) मोक्ष
(c) सत्य (d) निषेध

Ans. (c) : ऋक्संहिता में 'ऋत्' का विचार मिलता है। वैदिक ऋषि 'ऋत्' का रक्षक 'वरुण' का माना है। वेदों में 'सत्' को सत्ता दृष्टि से 'सत्य' और नैतिक नियमन की दृष्टि से 'ऋत्' तथा 'आनंद' की दृष्टि से 'मधु' या 'मधुमान' कहा है। इसके अतिरिक्त सदाचार के स्तर पर 'ऋत्' शब्द का प्रयोग सत्य व्यवस्था और औचित्य है। 'ऋत्' का विपरीत 'अनृत' है।

2. निम्नलिखित में कौन अर्थीभावना का संकेतक है?

(a) यज् धातु (b) लिंग
(c) निपात (d) अख्यात

Ans. (d) : 'अख्यात' को अर्थीभावना का संकेतक माना जाता है।

3. निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांत ख्याति को स्मृतिप्रमोष के रूप में स्वीकार करता है?

(a) असत् ख्याति (b) अख्याति
(c) अनिर्वचनीय ख्याति (d) सत् ख्याति

Ans. (b) : प्रभाकर के अनुसार, हमारा 'भ्रम' स्मृतिप्रमोष के कारण विवेकाग्रह (भेदभाव का आभाव) होने के कारण उत्पन्न है। 'स्मृतिप्रमोष' स्मरण शक्ति का दोष को कहते हैं। 'स्मृतिप्रमोष' के कारण उत्पन्न भ्रान्ति या भ्रम को प्रभाकर 'अख्याति' कहते हैं। उनके इस मत को 'आख्यातिवाद' कहते हैं।

4. दूसरों की मानसिक स्थिति को प्रकट करने के ज्ञान को जैन दर्शन में निम्नलिखित में से किस रूप में जान जाता है?

(a) अवधि (b) केवल
(c) मति (d) मनःपर्याय

Ans. (d) : जैन दर्शन में ज्ञान दो प्रकार साधारण अथवा असाधारण; अथवा अप्रत्यक्ष तथा लौकिक अथवा अलौकिक अथवा परोक्ष अथवा अपरोक्ष माने गये हैं। अपरोक्ष ज्ञान के तीन भेद-अवधि मनः पर्याय, केवल। मनः पर्याय वह ज्ञान है जो दूसरों के मानसिक स्थिति को प्रकट करता है। यह ज्ञान आत्मपूर्वक, मनुष्य क्षेत्र तक सीमित और गुण के कारण उत्पन्न है।

5. नैयायिकों के अनुसार, सभी प्रकार की धूम्र घटनाओं को हम जान सकते हैं, मात्रः

(a) योगज प्रत्यासत्ति से
(b) सामान्यलक्षण प्रत्यासत्ति से
(c) ज्ञानलक्षण प्रत्यासत्ति से
(d) समवाय सन्निकर्ष से

Ans. (b) न्याय-वैशेषिक दर्शन में तीन प्रकार के अलौकिक सन्निकर्ष को माना गया है। सामान्य लक्षण, ज्ञान लक्षण तथा योगज। विभिन्न तत्वों में समानता की प्रतीति के आधारभूत धर्म की सामान्य धर्म कहा जाता है। तत्वों या वस्तुओं के 'सामान्य धर्मों' का प्रत्यक्ष सामान्य लक्षण प्रत्यासत्ति है। उदाहरण स्वरूप 'सभी प्रकार की धूम्र घटनाओं को हम सामान्य लक्षण प्रत्यासति के आधार पर ही जानते हैं।

6. न्याय की किस अवधारणा के अनुसार, एक व्यक्ति भूतकाल, वर्तमान और भविष्य की वस्तुओं का अनुभव कर सकता है?

(a) सामान्यलक्षण से (b) योगज से
(c) श्रावण से (d) ज्ञानलक्षण से

Ans. (b) : न्याय-वैशेषिक में 'योगज प्रत्यक्ष' समस्त भूत, वर्तमान और भविष्य स्थूल और सूक्ष्म, समीपस्थ और दूरस्थ परार्थों का योगी प्रत्यक्ष करता है। अष्टांक योग के अनुष्ठान से साधकों की आत्मा में एक तरह की विलक्षण शक्ति उत्पन्न हो जाती है। जिसे 'योगज सन्निकर्ष' कहते हैं।

7. 'अग्नि शीतल है क्योंकि यह एक द्रव्य है।'
न्याय के अनुसार उपर्युक्त तर्क में किस प्रकार का दोष है?

(a) विरुद्ध (b) असिद्ध
(c) बाध (d) सत्प्रतिपक्ष

Ans. (c) : 'बाधित' हेत्वाभास वहां होता है जहां उसके साध्य के आभाव को अन्य प्रमाण द्वारा सिद्ध किया जा सके। 'बाध' या 'बाधित' हेतु में साध्यभाव अन्य प्रमाण द्वारा सिद्ध होता है। जैसे- 'अग्नि शीतल है क्योंकि यह एक द्रव्य है। यहां शीतलता का आभाव अग्नि की उष्णता का प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा सिद्ध है।
(भारतीय दर्शनः आलोचन और अनुशीलनः चन्द्रधर शर्मा)

8. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही का चयन कीजिए:

सूची - I	**सूची - II**
a. प्रागाभाव	(i) न्याय
b. प्रमाणाभाव	(ii) मीमांसा
c. प्राज्ञ	iii. वैशेषिका
d. प्रमाणसम्प्लव	iv.वेदांत

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(c)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(d)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)

Ans. (c) : इस प्रश्न को गलत माना गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

9. अभाव के संदर्भ में, 'जले गंधो नास्ति' कथन में, 'जल' से क्या अभिप्राय है?
(a) प्रतियोगी (b) अनुयोगी
(c) अनुयोगिता (d) प्रतियोगितावच्छेदकधर्म

Ans. (b) : 'जले गंधो नास्ति' में 'जल' अनुपयोगी है और गंध' प्रतियोगी है। किसी भी द्रव्य में जिस द्रव्य का आभाव सिद्ध किया जाता है। वह आभाव का प्रतियोगी तथा जिस द्रव्य में किया जाता है वह आभाव का 'अनुपयोगी' कहलाता है। जल (अनुपयोगी' में गंध (प्रतियोगी) का आभाव।

10. आकाश में 'आकाशत्व' निम्नलिखित में से किस भाव से निहित है?
(a) गुण-गुणी भाव (b) अवयव-अवयवी भाव
(c) जति-व्यक्ति भाव (d) विशेष-नित्यद्रव्य भाव

Ans. (d) : वैशेषिक दर्शन में 'आकाश' आदि नित्य पदार्थों परमाणु आदि को परस्पर भिन्न सिद्ध करने वाला 'विशेष' पदार्थ माना गया है। इसे स्वतोव्यावृत्त स्वीकार किया गया है। इन सबमे एक विशेषत्व नाम का साधारण धर्म है। पुनः न्याय-वैशेषिक दर्शन में एक व्यक्ति में रहने वाला धर्म जाति-रूप सामान्य न होकर मात्र 'उपाधि' है। न्याय-वैशेषिक के अनुसार आकाश, काल, दिक् एक-एक है अनेक नहीं। इसलिए आकाशत्व, कालत्व और दिक्त्व उपाधियां है। अतः 'आकाशत्व' कोई जाति न होकर मात्र 'विशेष नित्य द्रव्य भाव है।

11. ''संसार के निरंतर विकसित होने पर भी कुल ऊर्जा समान रहती है, एवं कारण-कार्य भी उसी शक्ति कमोवेश विकसित रूप है''-यह विचारधारा निम्नलिखित में किसके द्वारा अनुमोदित की गई है?
(a) वेदांत (b) सांख्य
(c) न्याय (d) बौद्ध दर्शन

Ans. (b) : 'संसार के निरन्तर विकसित होने पर कुल ऊर्जा समान रहती है, एवं कारण कार्य भी उसी शक्ति का कमोवेश विकसित रूप है। यह मत सांख्य दर्शन का है। वह कारण कार्य के संबंध में सत्कार्यवादी सिद्धांत को मानता है।

12. चार्वाक के अनुसार तथाकथित आत्मा कुछ भी नहीं है; अपितुः
(a) शरीर ही है (b) चेतना ही है
(c) चेतनायुक्त शरीर है (d) चेतनारहित शरीर है

Ans. (c) : चार्वाक दर्शन एक भौतिकवादी दर्शन है। चार्वाकों आत्मा, ईश्वर आदि की अवधारणा का खण्डन किया है। उनके अनुसार हम जिसे आत्मा कहते हैं वह देह विशिष्ट (शरीरयुक्त) चैतन्य है। जो शरीर के नष्ट होने के बाद नष्ट हो जाती है। इनका मत 'देहआत्मवाद' शरीरात्मवाद कहलाता है।

13. न्याय के अनुसार ज्ञान के किस प्रकार का कारण आत्मा है?
(a) समवायी (b) असमवायी
(c) निमित्त (d) उपादान

Ans. (b) : न्याय दर्शन में 'ज्ञान' को 'आत्मा' का 'आगुन्तक धर्म' माना गया है। न्याय दर्शन के अनुसार आत्मा में ज्ञान उत्पन्न होता है। ज्ञान आत्मा का एक विशेष गुण है। 'आत्मा' एक द्रव्य होने के कारण गुण 'ज्ञान' का समवायीकरण है।

14. 'पर्वत में अग्नि है क्योंकि वहाँ नील धूम्र है' न्याय के अनुसार इस अनुमान में दोष हैः
(a) अनैकांतिक (b) आश्रयासिद्ध
(c) व्याप्तत्वासिद्ध (d) बाधित

Ans. (c) : 'पर्वत में अग्नि है क्योंकि वहां नील धूम्र है' में 'नील धूम्र' सोपाधिक है। अतः यहां व्याप्तत्वासिद्ध दोष है। इसमें हेतु सोपाधिक होता है।

15. शंकर के अनुसार जगत की स्थिति हैः
(a) सत् (b) असत्
(c) सदासद्विलक्षण (d) सदासत्

Ans.(c) : आचार्य शंकर अपने अद्वैत वेदान्त में जगत् को सदसद्विलक्षण मानते हैं। उनके अनुसार सत् वह है जो त्रिकालबाधित है अर्थात् तीनों कालों में विद्यमान है और असत् वह है जिसका तीनों कालों में अभाव है। जगत् सत् नहीं है क्योंकि यह ज्ञान का विषय होने के कारण नष्टप्राय है। जगत् असत् भी नहीं है क्योंकि जगत का अनुभव होता है। इस प्रकार जगत् प्रपंच सदसद-विलक्षण होने के कारण मिथ्या है।

16. रामानुज के अनुसार ईश्वर हैः
(a) जगत का केवल निमित्तकारण
(b) जगत का केवल उपादानकारण
(c) जगत का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण
(d) अकारण

Ans. (c) : रामानुज ईश्वर को जगत् का निमित्त और उपादान दोनों कारण मानते हैं। ईश्वर की दो अवस्थाएँ-कारणावस्था तथा कार्यावस्था। प्रलयकाल में चित् और अचित् सूक्ष्मावस्था में रहते हैं यह ब्रह्म की कारणावस्था है और सृष्टि के समय चिद्चित् स्थूलरूप धारण कर लेते हैं यह ब्रह्म की कार्यावस्था है। सूक्ष्म चिदचिद्विशिष्ट ब्रह्म कारण और स्थूल चिद्चिद ब्रह्म कार्य है। ब्रह्म ही कारण और कार्य दोनों रूपों में उपादान है। सृष्टि ईश्वर की इच्छा से होती है। इसका प्रयोजन केवल लीला है। अतः जगत् का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण 'ब्रह्म' सिद्ध होता है। शंकर भी ब्रह्म को जगत् का अभिन्ननिमित्तोपादानकारण मानते हैं।

17. महावाक्य 'अहंब्रह्मास्मि' की मध्य की व्याख्या का अर्थ हैः
(a) जीव और ब्रह्म का तादात्मय
(b) जीव और ब्रह्म का सादृश्य
(c) जीव ब्रह्म का विशेषण है
(d) जीव और ब्रह्म का प्रकार-प्रकारी स्वरूप

Ans. (b) : महावाक्य 'अहंब्रह्मास्मि' की मध्व व्याख्या उनके द्वैतवादी वेदान्त दर्शन पर आधारित है। मध्व मुक्तअवस्था में जीव और ब्रह्म का सादृश्य मानते हैं। अतः उनके अनुसार, 'अहं' ब्रह्मास्मि' का तात्पर्य यह नहीं है कि मैं ही ब्रह्म हूं। अपितु मैं (आत्मा) ब्रह्म के सादृश्य हूं। मध्व ब्रह्म और जीव में साम्यता दिखाने के लिए इस महावाक्य की भेदवादी व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

18. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये गये कूटों की सहायता से सही उत्तर चुनेः

सूची-I	सूची-II
(A) विद्यारण्य	(i) तत्वप्रकाशिका
(B) श्रीनिवास	(ii) वेदान्तपारिजात
(C) जयतीर्थ	(iii) पञ्चदशी
(D) निम्बार्क	iv.यतीन्द्रमतदीपिका

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(b)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(c)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

Ans. (b) :

(a) विद्यारण्य	(iii) पञ्चदशी
(b) श्रीनिवास	(iv) यतीन्द्रमतदीपिका
(c) जयतीर्थ	(i) तत्वप्रकाशिका
(d) निम्बार्क	(iii) वेदान्तपारिजत

19. निम्नलिखित में से कौन सा अम्बेडकर द्वारा स्वीकार नहीं किया गया है?

(a) स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुत्व
(b) शिक्षा, संगठन, आन्दोलन
(c) जाति, वर्ण, कर्म
(d) बुद्ध, धम्म, संघ

Ans. (c) : अम्बेडकर जाति, वर्ण, कर्म व्यवस्था की स्वीकार नहीं करते हैं। उनके अनुसार जाति, वर्ण, कर्म के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए।

20. निम्नलिखित में से किसे टैगोर द्वारा मनुष्य के लिए अनिवार्य पक्ष माना गया है?

(a) शारीरिक एवं मानसिक
(b) प्राणिक एवं मानसिक
(c) भौतिक एवं आध्यात्मिक
(d) मानसिक एवं आध्यात्मिक

Ans. (c) : टैगोर के अनुसार, मानव स्वरूप के दो अनिवार्य पक्ष भौतिक एवं आध्यात्मिक पक्ष है। प्रथमतः मानव के स्वरूप का एक अंश उसका भौतिक एवं जैविक अंश है जो उसे विकास प्रक्रिया से प्राप्त होता है, इसको टैगोर ससीम पक्ष भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त उसका दूसरा पक्ष उसका अभौतिक एवं आध्यात्मिक अंश है तथा जो उसे विशिष्टता प्रदान करता है और जिसके कारण उसमें स्वतंत्रता का भी अंश विद्यमान है। इसको असीमता का पक्ष कहा जा सकता है।

21. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें तथा नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन करें:

सूची-I	सूची-II
(A) गाँधी	i. लाइफ अहेड
(B) टैगोर	ii. दी रिकवरी ऑफ फेथ
(C) राधाकृष्णन्	iii. क्राइसिस इन सिविलाइजेशन
(D) जे. कृष्णमूर्ति	iv. दी आर्ट ऑफ लीविंग

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(b)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(c)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(d)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

Ans. (b) :

(a) गाँधी	(iv) दी आर्ट ऑफ लिविंग
(b) टैगोर	(iii) क्राइसिस इन सिविलाइजेशन
(c) राधाकृष्णन	(ii) दी रिकवरी आफ फेथ
(d) जे.कृष्णमूर्ति	(iii) लाइफ अहेड

22. श्री अरविन्द के अनुसार विकास की प्रक्रिया में निम्नलिखित का सही क्रम क्या है?

(a) ऊर्ध्वमन, उच्चतर मन, प्रदीप्त मन, अन्तर्भासिक मन
(b) उच्तर मन, प्रदीप्त मन, अन्तर्भासिक मन, ऊर्ध्वमन
(c) प्रदीप्त मन, उच्चतन मन, अन्तर्भासिक मन, ऊर्ध्वमन
(d) महात्मा गांधी

Ans. (b) : श्री अरविन्द के अनुसार, मानस तथा अतिमानस के मध्य कुछ क्रमिक स्तर है जो क्रमानुसार -'उच्चतर मानस' (Higher mind), 'प्रदीप्त मानस' (Illumined mind), 'अन्तर्दृष्टि या अन्तर्भासिक मानस (Intuitive mind), 'व्यापक मानस' (Over mind) यह निम्न गोलाई से उच्च गोलाई में पहुंचने की विकास प्रक्रिया है। अर्थात् मानस (mind) से अतिमान (overmind) तक की विकास प्रक्रिया है।

23. वैशेषिक के अनुसार सृष्टि परमाणुओं के संयो से प्रारंभ होती है:

(a) परमाणु के स्वभाव के द्वारा
(b) ईश्वरीय इच्छा के द्वारा
(c) उत्पादक व्यवस्था के द्वारा
(d) आकस्मिक

Ans. (c) : वैशेषिक के अनुसार परमाणुओं में संयोग सृष्टि का कारण है। परमाणु भौतिक तथा निष्क्रिय है इसमें सक्रियता और गति ईश्वरीय इच्छा के द्वारा आती है। ईश्वर 'अदृष्ट' से गति लेकर परमाणुओं में डाल देता है जिससे परमाणुओं गति उत्पन्न होती है और परमाणु एक दूसरे से जुड़ने लगते हैं जिससे शृष्टि का प्रारंभ होता है।

24. बौद्ध दर्शन में प्रतीत्यसमुत्पाद से अभिप्राय है:

(a) कारण में कार्य पूर्व -स्थित होता है
(b) प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व क्षणिक है
(c) प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व सशर्त होता है
(d) जो कुछ भी है, शाश्वत है

Ans. (c): बौद्ध दर्शन के अनुसार, प्रत्येक वस्तु का कोई न कारण अवश्य होता है। अर्थात् किसी भी वस्तु का अस्तित्व अपने पूर्ववर्ती अवस्था का परिणाम है। अर्थात् वस्तु का अस्तित्व सशर्त (उपाधिस्वरूप) होता है, वह अनौपधिक नहीं होता है। 'प्रतीत्य' का अर्थ है-'अपेक्षा रखकर' या निर्भर अथवा आश्रित रहकर एवं समुत्पाद का अर्थ है 'उत्पत्ति'। अतः प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ है कारण की अपेक्षा रखकर या निर्भर रहकर कार्य की उत्पत्ति। प्रतीत्यसमुत्पाद में प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व को सशर्त माना गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

25. निम्नलिखित में से कौन सा एक, सांख्य के अनुसार प्रकृति की सत्ता के लिए कारण नहीं हो सकता?

(a) भेदानाम् परिमाणात् (b) समन्वयात्
(c) भोक्तृभावात् (d) कारण-कार्य विभागात्

Ans. (c) : प्रकृति की सत्ता के लिए कारण सांख्य दर्शन में भोक्तृभावात् नहीं हो सकता है। यह पुरुष का गुण है। जिसका अर्थ है 'भोक्ता पुरुष' सांख्य दर्शन में प्रकृति की सत्ता को सिद्ध करने के लिए पांच युक्तियां दी गयी है- (1) भेदानाम् परिमाणात् (2) समन्वयात् (3) शक्तितः प्रवृत्तेः (4) कारण-कार्य विभागात् (5) अग्निभागाद्वैश्यरूपस्य।

26. निम्नलिखित कथनों पर सेंट थॉमस एक्वीनस के दर्शन के परिप्रेक्ष्य में विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए:

(A) दर्शनशास्त्र तथ्यों से ईश्वर और धर्मशास्त्र ईश्वर से तथ्यों पर विचार करता है।
(B) उसने तर्क बुद्धि और विश्वास के बीच अंतर किया और यह तर्क दिया कि आस्था के विषय जैसे दैवी प्रकाशना आदि तर्क बुद्धि से परे हैं किन्तु उसके विरोधी नहीं है।
(C) आस्था इच्छा का विषय है और इच्छा उस स्वीकृति को निर्देशित करती है।

कूट:
(a) केवल (A) सही है
(b) केवल (B) सही है
(c) केवल (A) और (C) सही है
(d) (A), (B) और (C) सही है

Ans. (d) : सेन्ट थॉमस एक्वीनास का दर्शन ईसाई धर्म से प्रभावित था। उसके अनुसार दर्शन का क्षेत्र है तर्क तथा धर्म का क्षेत्र है श्रुति। एक्वीनस के अनुसार, दर्शनशास्त्र तथ्यों से ईश्वर और धर्मशास्त्र ईश्वर से तथ्यों पर विचार करता है।
• उसने तर्कबुद्धि (Reason) और आस्था (faith) के बीच भी अन्तर किया और यह तर्क दिया कि आस्था के विषय जैसे-दैवी प्रकाशना आदि तर्कबुद्धि से परे हैं किन्तु उसके विरोध नहीं। अर्थात् दर्शन और धर्म के क्षेत्र भले ही अलग-अलग हो परन्तु उनमें कोई विरोध नहीं।
• उसके अनुसार, आस्था इच्छा का विषय है और इच्छा उस स्वीकृति को निर्देशित करती है।

27. सूची - I के साथ सूची- II को सुमेलित कीजिउ और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
(a) प्रोटागोरस	i. जो कुछ है 'है' 'जो है' नहीं उसे जान नहीं जा सकता
(b) जार्जियस	ii. मनुष्य सभी वस्तुओं का मानदंड है
(c) थ्रेसीमेकस	iii. किसी का अस्तित्व नहीं है, यदि है इसे नहीं जान जा सकता
(d) पार्मेनाइडीज	iv. न्याय शक्तिशालियों का हित है

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(b)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(c)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(d)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)

Ans. (b):

(a) प्रोटागोरस	(ii) मनुष्य सभी वस्तुओं का मानदंड है।
(b) जार्जियस	(iii) किसी का अस्तित्व नहीं है, यदि है तो इसे नहीं जाना जा सकता।
(c) थ्रेसीमेकस	(iv) न्याय शक्तिशालियों का हित है।
(d) पार्मेनाइडीज	(ii) जो कुछ है 'है' नहीं उसे जाना नहीं जा सकता।

28. निम्नलिखित में से किस मध्यकालीन दार्शनिक ने कहा था: ''इस प्रकार से समझे कि आप विश्वास कर सकें, विश्वास इस प्रकार करें कि आप समझ सकें। कुछ बातों पर हम तब तक विश्वास नहीं करते जब तक उन्हें समझ नहीं लेते; या फिर हम तब तक नहीं समझते जब तक कि हम विश्वास नहीं करते।''

(a) सेंट एन्सल्म (b) सेंट एक्वीनस
(c) सेंट ऑगस्टीन (d) विलियम ओकैम

Ans. (c): सेंट ऑगस्टीन के अनुसार, इस प्रकार से समझे कि आप विश्वास करें, विश्वास इस प्रकार करें कि आप समझ सकें। कुछ बातों पर हम तब तक विश्वास नहीं करते जब तक उन्हें समझ नहीं लेते या फिर हम तब तक नहीं समझते जब तक कि हम विश्वास नहीं करते।

29. निम्नलिखित कथनों पर पाइथागोरस के दृष्टिकोण से विचार करें और सही कूट का चयन करें:

(A) पाइथागोरस शाश्वत पुनः आवर्तन की अवधारणा में विश्वास रखता थ।
(B) पाइथागोरस का विचार था कि आत्मा अमर है और इसका पुनर्जन्म होता है।
(C) पाइथागोरस ने इस विचार को अस्वीकृत किया कि विश्व की प्रक्रिया अंतहीन और अपरिवर्तनीय है।

कूट:
(a) केवल (a) सही है
(b) केवल (b) सही है
(c) केवल (a) और (c) सही है
(d) केवल (a) और (b) सही है

Ans. (d) : पाइथागोरस शाश्वत पुनः आवर्तन (Eternal recurrence) में विश्वास करते थे। उनके अनुसार आत्मा अमर है और इसका पुनर्जन्म होता है। यह उस पर आर्फिक सम्प्रदाय की धार्मिक और नैतिक मान्यताओं का उस पर प्रभाव था। जिसे आवगमन सिद्धान्त कहते हैं। पाइथागोरस विश्व की प्रक्रिया अंतहीन और अपरिवर्तनीय मानता है।

30. प्लेटो के ज्ञान के सिद्धांत के संदर्भ में न्यूनतम से अधिकतम के सही क्रम का चयन करें।

(a) ज्ञानेन्द्रियों से उत्पन्न ज्ञान, काल्पनिक ज्ञान, विमर्शात्मक प्रज्ञा बुद्धी, तर्कबुद्धिपरक अंतर्दृष्टी

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(b) काल्पनिक ज्ञान, ज्ञानेन्द्रियों से उत्पन्न ज्ञान, विमर्शात्मक प्रज्ञा बुद्धी, तर्कबुद्धिपरक अंतर्दृष्टी
(c) ज्ञानेन्द्रियों से उत्पन्न ज्ञान, काल्पनिक ज्ञान, तर्कबुद्धिपरक, अंतर्दृष्टी, विमर्शात्मक प्रज्ञा बुद्धी
(d) विमर्शात्मक प्रज्ञा बुद्धी, काल्पनिक ज्ञान, ज्ञानेन्द्रियों से उत्पन्न ज्ञान, तर्कबुद्धिपरक अंतर्दृष्टी

Ans. (b) :प्लेटो के ज्ञान सिद्धान्त में न्यूनतम से अधिकतम का सही क्रम-काल्पनिक ज्ञान, ज्ञानेन्द्रियां से उत्पन्न ज्ञान, विमर्शात्मक प्रज्ञा बुद्धि, तर्कबुद्धिपरक अंतदृष्टि।
प्लेटो एक बुद्धिवादी दार्शनिक था जो 'बौद्धिक अंतर्दृष्टि' को सर्वोत्कृष्ट ज्ञान मानता था।

31. नीचे दिए गए कथनों में से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) की संज्ञा दी गई है। अरस्तू के कोटि-सिद्धांत के आलोक में (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन करें।
अभिकथन (A) पदार्थों में द्रव्य प्रमुख है।
तर्क (R) द्रव्य वह है जो उद्देश्य का विधेय हो सकता है और उद्देश्य में निहित है।
कूट:
(a) दोनों (A) और (R) सही है और (A) की सही व्याख्या (R) है।
(b) दोनों (A) और (R) सही है लेकिन (A) की सही व्याख्या (R) नहीं है।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

Ans. (c) : अरस्तू के द्वारा मानी गयी कोटियों में द्रव्य (Substance) का महत्वपूर्ण स्थान है। अरस्तू ने सत्ता (Reality) को द्रव्य (Substance) कहा। अरस्तू के कोटि सिद्धांत में द्रव्य सर्वाधिक प्रमुख पदार्थ है। कोटियों को अरस्तू तर्कशास्त्र के विधेय कहता है। अरस्तू का द्रव्य किसी वाक्य का विधेय अथवा किसी वस्तु का गुण नहीं हो सकता है। जगत की सभी वस्तुएँ उसके गुण और विधेय है। अतः यह कहना द्रव्य वह है जो उद्देश्य का विधेय हो सकता है और उद्देश्य में निहित है, गलत है। अतः अभिकथन (A) सही तथा तर्क (R) गलत है।

32. 'जन्म जात प्रत्यय' सिद्धांत निम्नलिखित में से किसको स्वीकार्य है?
(a) डेकार्ट और स्पिनोजा (b) डेकार्ड और बर्कले
(c) डेकार्ड और ह्यूम (d) लॉक और फित्शे

Ans. (a): प्लेटो, डेकार्ट, स्पिनोजा तथा लाइबनित्ज जो कि बुद्धिवादी दार्शनिक है को जन्मजात प्रत्ययों का सिद्धान्त स्वीकार्य है। जबकि लॉक, बर्कले ह्यूम आदि अनुभववादी इसका खण्डन करते हैं।

33. ईश्वर के अस्तित्व के समर्थन में 'सत्तामीमांसा युक्ति' को निम्नलिखित में से किसने विख्यात किया?
(a) डेकार्ट (b) डेकार्ट और सेंट एन्सेल्स
(c) ह्यूम (d) बर्कले

Ans. (b): 'सत्तामीमांसा युक्ति' ईश्वर अस्तित्व की पूर्णता के प्रत्यय को सर्वाधिक महत्त्व देती है। यह युक्ति संतएन्सेलम और डेकार्ट द्वारा ईश्वर अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए दी गयी। यह युक्ति प्रत्यय सत्तामूलक युक्ति भी कहलाती है जो प्रागनुभविक अथवा अनुभव निरपेक्ष तर्क है।

34. लॉक्स के 'प्रत्यय' विचार को निम्नलिखित में सही रूप से कौन चित्रित करता है?
(a) जिसको मनस अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकार करता है, जो प्रत्यक्ष विचार अथवा बुद्धि की त्वरित वस्तु है।
(b) जिसको मनस प्रत्यक्ष रूप से स्वीकार करता है, जो प्रत्यक्ष विचार अथवा बुद्धि की त्वरित वस्तु है।
(c) जिसको मनस अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकार करता है, जो प्रत्यक्ष विचार अथवा बुद्धि की परीक्षा वस्तु है।
(d) जिसको मनस प्रत्यक्ष रूप से स्वीकार करता है, जो प्रत्यक्ष विचार अथवा बुद्धि की परोक्ष वस्तु है।

Ans. (b) : लॉक के 'प्रत्यय' विचार के अनुसार, जिसको मनस प्रत्यक्ष रूप से स्वीकार करता है, जो प्रत्यक्ष, विचार अथवा बुद्धि की त्वरित वस्तु है।

35. निम्नलिखित में से किस आधुनिक दार्शनिक ने संकल्पना की है- ''दर्शनशास्त्र संपूर्ण रूप में एक वृक्ष की भांति है जिसकी जड़ें तत्वमीमांसा, जिसका तना भौतिक विज्ञान और जिसकी शाखाएं, जो तने से उभरती हैं, सभी अन्य विज्ञान है।''
(a) स्पिनोज़ा (b) बर्कले
(c) डेकार्ड (d) लाइबनिट्ज

Ans. (c): डेकार्ट के अनुसार, ''दर्शनशास्त्र संपूर्ण रूप में एक वृक्ष की भांति है जिसकी जड़े तत्वमीमांसा, जिसका तना भौतिक विज्ञान और जिसकी शाखाएँ जो तने से उभरती हैं, सभी अन्य विज्ञान है।''

36. निम्नलिखित कथनों पर स्पिनोजा के ज्ञान के सिद्धांत के आलोक में विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए:
(A) अस्पष्ट और अपर्याप्त विचार संवेदन और कल्पना में अपना स्रोत रखते हैं।
(B) तर्क वस्तुओं के सार्वभौमिक तत्वों को ग्रहण करता है और इनको ईश्वर के संबंधे में समझता है।
(C) बाह्य संसार न करना
(D) प्रातिभ ज्ञान ईश्वर के कुछ गुण के वस्तुगत सार के पर्याप्त विचार के साथ वस्तुओं के पर्याप्त सोर की ओर बढ़ता है।
कूट:
(a) केवल (a) और (c) सही है
(b) केवल (b) और (c) सही है
(c) केवल (c) सही है
(d) केवल (a), (b) और (c) सही है

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d): स्पिनोजा अपने 'एथिक्स' में ज्ञान की तीन अवस्थाएं बतलाता है- (1) काल्पनिक ज्ञान- इन्द्रियजन्य एवं लोकपरम्पराओं पर आधारित ज्ञान। अस्पष्ट और अपर्याप्त विचार संवेदन और कल्पना में अपना स्रोत रखते हैं इस स्तर पर तत्व के विश्वरूप का ज्ञान।
(2) बौद्धिक ज्ञान- यह वैज्ञानिक ज्ञान है जो तर्कबुद्धि पर आधारित है। भेदों में अनुस्युत अभेद का ज्ञान प्राप्त करते हैं। तर्क वस्तुओं के सार्वभौमिक तत्वों को ग्रहण करता है और इनको ईश्वर के संबंध में समझता है। यह ईश्वर के विश्वात्म रूप का ज्ञान है।
(3) प्रातिभ ज्ञान -ईश्वर के कुछ गुण के वस्तुगत सार के पर्याप्त विचार के साथ वस्तुओं के पर्याप्त सार की ओर बढ़ता है। अतः यहां (a) (b) (c) तीनों सत्य है।

37. लाइबनिट्जे के शक्ति सिद्धांत के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(a) शक्ति तब भी रहती है जब गति रुक जाती है क्योंकि यह गति का आधार है।
(b) विस्तार शरीर का आवश्यक गुण है।
(c) कोई भी द्रव्य नहीं है जो शक्ति की अभिव्यक्ति है।
(d) जो सक्रिय है वह अवास्तविक है।

Ans. (a): लाइबनिट्जे 'शक्ति के संरक्षण के नियम' में विश्वास करता है। उसके अनुसार चिदणुओं की शक्ति का योग सदा एक बना रहता है। अर्थात् शक्ति तब भी रहती जब गति रुक जाती है। क्योंकि यह गति का आधार है।

38. निम्नलिखित में से कौन सा कथन बर्कले के संदर्भ में सही है?
(a) बर्कले, लॉक के मूल अनुभववाद का प्रयोग प्रत्ययवाद की स्थापना के लिए करता है और इसके परिणाम स्वरूप भौतिकवाद और नास्तिकवाद का समर्थन करता है।
(b) बर्कले, लॉक के मूल अनुभववाद का प्रयोग प्रत्ययवाद की स्थापना के लिए करता है और इसके पणिाम स्वरूप भौतिकवाद और नास्तिकवाद को अस्वीकार करता है।
(c) मन में अमूर्त प्रत्यय की रचना की क्षमता होती है।
(d) किसी वस्तु का अस्तित्व उस वस्तु के मन के द्वारा प्रत्यक्ष होने या ज्ञान होने पर निर्भर नहीं करता।

Ans. (b): बर्कले, लॉक के मूल अनुभववाद का प्रयोग प्रत्ययवाद की स्थापना के लिए करता है। इसके परिणामस्वरूप जड़ वस्तु की सत्ता का निराकरण कर भौतिकवाद की जगह प्रत्ययवाद और प्रत्ययों का कारण ईश्वर को मानकर नास्तिकवाद को अस्वीकार देता है।

39. ह्यूम के अनुसार कारण और कार्य के बीच तथाकथित संबंध निम्नलिखित में से हैः
(a) अनुभव से पूर्वानुमान।
(b) निरीक्षण और अनुभव पर आधारित।
(c) कार्य-कारण से निहित है।
(d) दोनों एक दूसरे से अनिवार्य रूप से संबद्ध है।

Ans. (b): ह्यूम अपने संशयवादी दर्शन के आलोक में कारण कार्य संबंधों पर भी प्रश्न चिन्ह उठाता है। उसके अनुसार, कारण और कार्य के बीच संबंध निरीक्षण और अनुभव पर आधारित है जो भूतकाल की घटनाओं के आधार पर वर्तमान और भविष्य की घटनाओं को निर्धारित करने के लिए नियत साहचर्य और प्रकृति की एकरूपता पर आधारित है।

40. कांट ने शुद्ध बुद्धि के विप्रतिषेध की व्याख्या अपने निम्नलिखित में से किस सिद्धांत में की है?
(a) अनुभवातीत ईश्वर विज्ञान
(b) अनुभवातीत सृष्टि विज्ञान
(c) अनुभवातीत आत्म विज्ञान
(d) उपर्युक्त सभी

Ans. (b): कांट के अनुसार प्रज्ञा के तीन संप्रत्यय जिन्हें आत्मा, सृष्टि और ईश्वर के नाम से जाना जाता है जिनको सिद्ध करने के लिए तीन शास्त्र क्रमशः बुद्धिपरक मनोविज्ञान, बुद्धिसृष्टि विज्ञान और बुद्धिपरक ईश्वरविज्ञान है। कांट के अनुसार ये तीनों शास्त्रों में जब बुद्धि विकल्पों का प्रयोग इनको (आत्मा, सृष्टि और ईश्वर) को सिद्ध करने के लिए होता है तो ये अंतर्विरोधों से ग्रस्त हो जाते हैं। जिन्हें क्रमशः बुद्धिपरक मनोविज्ञान में 'तर्काभास' (Paral Qgisms) सृष्टि विज्ञान में इन्हें विप्रतिषेध (Antinomies) और ईश्वरमीमांसा में इन्हें व्याघात (Contradictions) कहा जाता है।

41. 'प्राथमिक वाक्य वस्तु का सही चित्र प्रदर्शित करते हैं' निम्नलिखित में से किसके द्वारा प्रतिपादित किया गया?
(a) मूर (b) रसेल
(c) विट्गेन्स्टीन (d) हुसर्ल

Ans. (c): विट्गेंसटाइन के अनुसार, प्राथमिक प्रतिज्ञप्ति (वाक्य) वस्तु का सही चित्र प्रदर्शित करते हैं। विट्गेन्सटाइन प्राथमिक प्रतिज्ञप्ति को अणु प्रतिज्ञप्ति भी कहते हैं।

42. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिएः

सूची-I	**सूची-II**
(a) हुसर्ल	i. सत्यापन सिद्धान्त
(b) ए.जे. एयर	ii. कोटि दोष
(c) विलियम जेम्स	iii. इपोके
(d) जी. राइल	iv. उपयोगितावादी सिद्धांत

कूट :

	(A)	**(B)**	**(C)**	**(D)**
(a)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(b)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(c)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

Ans. (a): हुसर्ल द्वारा इपोके, ए.जे.एयर द्वारा सत्यापन सिद्धान्त विलियम जेम्स द्वारा उपयोगितावादी सिद्धान्त और गिल्बर्ट द्वारा कोटि-दोष सिद्धांत प्रस्तुत किया गया।

43. निम्नलिखित में से कौन-सी पुस्तक हाइडेगर के द्वारा लिखी गयी है?
(a) लेबन्सवेल्ट (b) बीइंग एंड टाइम
(c) प्रैगमेटिज्म (d) फिनॉमिनोलॉजी

Ans. (b): मार्टिन हाइडेगर जो अस्तित्ववादी विचारक है। उसकी पुस्तक बीइंग एण्ड टाइम (Sein and Zeit) और What is Metaphysics है।

44. तार्किक भाववाद निम्नलिखित में से किस आधार पर तत्त्वमीमांसा को अस्वीकार करता है?
(a) तत्त्वमीमांसीय प्रश्न मानवीय बुद्धि विकल्पों की सीमा से परे हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(b) तत्त्वमीमांसीय प्रश्न संदिग्ध है।
(c) तत्त्वमीमांसीय प्रश्न अर्थहीन है क्योंकि वे असत्यापनीय है।
(d) तत्त्वमीमांसीय प्रश्न देश और काल से परे है।

Ans. (c): तार्किक भाववाद इन्द्रिय प्रत्यक्ष को सत्यापन का आधार मानता है। भाववादियों के सत्यापन सिद्धांत के अनुसार वही कथन सत्यापनीय है जिनका प्रत्यक्ष निरीक्षण किया जा सके। उनके अनुसार तत्वमीमांसा के कथनों का प्रत्यक्ष निरीक्षण नहीं किया जा सकता है। क्योंकि यह असत्यापनीय है। अतः तत्त्वमीमांसा के प्रश्न अर्थहीन (non-sensical) है।

45. जी. राईल के अनुसार निम्नलिखित में कौन-सा एक सही है?
(a) सभी भौतिकवादी घटनाएं मानसिक घटनाओं से निःसरित होने योग्य है।
(b) सभी मानसिक घटनाएं भौतिकवादी घटनाओं से निःसरित होने योग्य है।
(c) दोनों प्रकार की घटनाएँ एक-दूसरे से निःसरित होने योग्य है।
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b): गिल्बर्ट राइल के अनुसार सभी मानसिक घटनाएँ, भौतिकवादी घटनाओं से निःसरित होने योग्य है। वह अपनी पुस्तक 'The concept of mind' में साधारण भाषा-विश्लेषण के आधार यह सिद्ध करने का प्रयास करता है कि मन और शरीर का द्वैत 'श्रेणीपरक भूल' का परिणाम है। उसके अनुसार मानसिक तथ्यों से संबंधित कथनों की व्याख्या व्यवहार या व्यवहार की प्रवृत्ति में हो सकती है।

46. मूर का परमाणुवादी विश्लेषण, किसके विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में है?
(a) कांट की ज्ञानमीमांसा एवं सत्तामीमांसा के बीच द्वन्द्व
(b) हेगल का विचार और सत्ता के बीच तादात्मय
(c) ब्रेडले का परम तत्त्ववाद
(d) उपर्युक्त सभी

Ans. (d): मूर अपने दर्शन को प्रत्ययवाद के खण्डन से प्रारंभ करता है। वह ब्रैडले के सत्ता दृश्यता है के विचार का अपने परमाणुवादी विश्लेषण में खण्डन करता है।

47. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार करते हुए कांट के ज्ञान के दृष्टिकोण के आलोक में सही विकल्प का चयन करें।
अभिकथन (A) सार्वभौमिकता, अनिवार्यता और नवीनता ज्ञान की शर्तें हैं।
तर्क (R) संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय ज्ञान की सभी आवश्यक शर्तों को पूर्ण करता है।
कूटः
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R),(A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों गलत है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(d) (A) गलत है और (R) सही है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं हैं

Ans. (a) कांट अपने आलोचनावादी दर्शन में ज्ञान की शर्तों के रूप में तीन मापदण्ड सार्वभौमिकता, अनिवार्यता और नवीनता को मानता है और इसी आधार पर कहता है कि संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय ज्ञान की सभी आवश्यक शर्तों को पूर्ण करता है। अतः (A) और (R) दोनों सही है और (R) (A) की सही व्याख्या है।

48. हेडेगर के अनुसार, अस्तित्व रचनाओं का सही क्रम निम्नलिखित में से क्या है?
(a) एग्जिसटेंज, फालेननैस, फैक्टिसिटी
(b) एग्जिसटेंज, फैक्टिसिटी, फालेननैस
(c) फैक्टिसिटी, फालेननैस, एग्जिसटेंज
(d) फालेननैस, फैक्टिसिटी, एग्जिसटेंज

Ans. (b): हाइडेगर के अनुसार अस्तित्व रचनाओं (Structric) का सही क्रम 'एग्जिस्टेज फैक्टिसिटी फालननैस है। मानव अपने आपको एकायक फेंका हुआ पाता है। उसके अस्तित्व का आभास कि वह है एक 'तथ्य हैं।

49. हुसर्ल ने विषयापेक्षी की अवधारणा को निम्नलिखित में से किस दार्शनिक से ग्रहण किया?
(a) कांट (b) हेगल
(c) ब्रेन्टानो (d) डेकार्ट

Ans. (c): हुसर्ल विषयापेक्षी की अवधारणा को ब्रेन्टानो से ग्रहण किया है। ब्रेन्टानो का चेतना के विषयापेक्षी सिद्धांत के अनुसार, चेतना एक दिशा है, जो किसी ओर उन्मुख होती है। चेतना कभी भी रिक्त नहीं होती, वह अनिवार्यतः किसी की चेतना है।

50. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार करते हुए विटगेन्सटीन के विचार के आलोक में सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A) प्रत्येक तर्क वाक्य एक स्पष्ट और निश्चित अर्थ रेखता है।
तर्क (R) दैनिक जीवन के तर्क वाक्यों की मिश्रित अभिव्यक्तियां होती हैं, जो तार्किक रूप से व्यक्ति वाचक नाम है।
कूटः
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों गलत हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(d) (A) गलत है और (R) सही है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

Ans. (c) विटगेंस्टाइन के अनुसार, प्रत्येक तर्क वाक्य एक स्पष्ट और निश्चित अर्थ रखता है। यह अभिकथन (A) सत्य है जबकि तर्क (R) दैनिक जीवन के तर्क वाक्यों की मिश्रित अभिव्यक्तियां होती है, जो तार्किक रूप से व्यक्तिवाचक नाम है। गलत है। और सही व्याख्या भी नहीं है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2015
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. निम्नांकित में *हेत्वाभास* की पहचान करें।
सभी धूम्रवान वस्तुएं वह्निवान हैं।
पर्वत धूम्रवान है।
इसलिए, पर्वत वह्निवान है।
कूट :
(a) विरुद्ध (b) प्रकरणसम
(c) असिद्ध (d) सव्यभिचार

Ans. (d) : सव्यभिचार को अनैकान्तिक भी कहते हैं। दिये गये अनुमान में व्याप्ति अपूर्ण या दोषपूर्ण है। अर्थात् यह दोष तब उत्पन्न होता है जब हेतु का सम्बन्ध कभी साध्य से और कभी साध्य से भिन्न किसी अन्य वस्तु से होता है।

2. निम्नांकित में से कौन यह अस्वीकार करता है कि प्रत्यक्षानुभवों को शब्दों में अभिव्यक्त किया जा सकता है।
(a) केवल जयराशि भट्ट (b) केवल धर्मकीर्ति
(c) केवल महावीर (d) धर्मकीर्ति और विश्वनाथ

Ans. (d) : धर्मकीर्ति और विश्वनाथ अपने दर्शन में 'प्रत्यक्षानुभव' के शब्दों में अभिव्यक्त किया जा सकता है, को अस्वीकार करते हैं। धर्मकीर्ति एक स्वतंत्रविज्ञानवादी के योगाचार सम्प्रदाय से हैं जो शब्द को अनुमान के अन्तर्गत रखते हैं।

3. निम्नांकित में किस दर्शन संप्रदाय के अनुसार अभाव का अनुभव विशेषणता सन्निकर्ष के द्वारा किया जाता है?
(a) सांख्य (b) बौद्ध
(c) न्याय (d) जैन

Ans. (c) : न्याय दर्शन में अभाव का ज्ञान विशेषण-विशेस्य-भाव (विशेषणत) सन्निकर्ष से होता है। न्याय दर्शन में सन्निकर्ष के छः भेद माने गये हैं यथा-संयोग, संयुक्त-समवाय, संयुक्त समवेत समवाय, समवाय, समवेत समवाय, विशेषण-विशेस्य भाव।
(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा-सममूर्ति पाठक)

4. समान उद्देश्य और विधेय वाले दो तर्कवाक्य सत्य हो सकते हैं, लेकिन दोनों असत्य नहीं हो सकते हैं, तो उनके बीच संबंध होता है :
(a) विरोध (b) विपरीत
(c) उप-विपरीत (d) उपाश्रित

Ans. (c) : परम्परागत विरोध वर्ग में जब समान उद्देश्य और विधेय वाले हो तर्कवाक्य सत्य हो सकते हैं, लेकिन दोनों असत्य नहीं हो सकते हैं तो उनमें उपविपरीत (Sub-contrary) सम्बन्ध होता है। अंशव्यापी सकारात्मक (II) तथा अंशव्यापी निषेधाघात्मक (O) तर्कवाक्यों के बीच यह सम्बन्ध होता है।

5. दूसरों का व्यवहार देखकर पद के अर्थ को जानना किसके रूप में जाना जाता है?
(a) आप्तवाक्य (b) प्रसिद्धपदसान्निध्य
(c) वृद्धव्यवहार (d) विवरण

Ans. (c) : दूसरों का व्यवहार देखकर पद के अर्थ को जानना 'वृद्धव्यवहार' है। न्याय दर्शन की शब्द मीमांसा के अनुसार, 'वृद्धव्यवहार' 'लम्बी रूढ़ परम्परा' से स्थापित एक तरह की शक्ति है।

6. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और सही कूट का चयन करें :

सूची I	सूची II
(A) असत्ख्यातिवाद	(i) योगाचार बौद्ध
(B) आत्मख्यातिवाद	(ii) प्रभाकर मीमांसा
(C) अन्यथाख्यातिवाद	(iii) माध्यमिक बौद्ध
(D) अख्यातिवाद	(iv) न्याय दर्शन

कोड :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(c)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(d)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)

Ans. () :
(a) असत्ख्यातिवाद (iii) माध्यमिक बौद्ध
(b) आत्मख्यातिवाद (i) योगाचार बौद्ध
(c) अन्यथाख्यातिवाद (iv) न्याय दर्शन
(d) अख्यातिवाद (ii) प्रभाकर मीमांसा

7. बरतन के मामले में कुम्भकार का जनक माना जाता है:
(a) समवायीकारण (b) असमवायीकारण
(c) अन्यथासिद्ध (d) निमित्तकारण

Ans. (c) : 'अन्यथासिद्ध' कारण वह है जिसके बिना कार्य की उत्पत्ति हो जाती है। बरतन बनाने के मामले में कुम्भकार का पिता (जनक) भले ही कुम्भकार का कारण हों, परन्तु उसकी अनुपस्थिति में भी बर्तन का निर्माण निर्विघन चलता रहता है अतः 'कुम्भकार का जनक' अन्यथा सिद्ध है।

8. द्वयणुक के उत्पादन में परमाणु संयोग की कारणता है:
(a) समवायीकारणता (b) असमवायीकारणता
(c) निमित्तकारणता (d) सामग्रीकारणता

Ans. (a) : शंकराचार्य जगत् की व्यावहारिक सत्ता मानते है। जिसे वह सद्सदनिर्वचनीय कहते हैं। वह जगत के इसी अर्थ में मिथ्या भी कहते हैं। उनके अनुसार तीन तरह की सत्ताएं प्रतिभासिक सत्ता, व्यावहारिक सत्ता और पारमार्थिक सत्ता प्रतिभासिक सत्ता का बाध व्यावहारिक सत्ता में स्तर पर, और पारमार्थिक सत्ता के स्तर पर व्यावहारिक सत्ता का बाध हो जाता है। ध्यातव्य हो कि पारमार्थिक सत्ता अद्वितीय ब्रहम की सत्ता है। जो मोक्ष की अवस्था है।

9. शंकर के अनुसार निम्नांकित में किसकी प्राप्ति होने पर जगत की 'व्यावहारिकसत्ता' समाप्त हो जाती है?
(a) केवल ब्रह्मा की *परमार्थिकसत्ता*
(b) स्वप्न वस्तुओं की *प्रतिभासिकसत्ता*
(c) ब्रह्म की *परमार्थिकसत्ता* तथा स्वप्न-वस्तुओं की *प्रतिभासिकसत्ता* दोनों
(d) सांसारिक वस्तुओं की *लौकिक अवस्था*

Ans. () :

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

10. कौन-से भूतद्रव्य नित्य हैं?
(a) केवल आकाश
(b) केवल मारूत
(c) केवल क्षिति, अप, तेज, मारुत के परमाणु
(d) आकाश और क्षिति, अप, तेज और मारुत के परमाणु

Ans. (d) : क्षिति, अप, तेज और मारूत को परमाणु रूप में नित्य माना गया है। आकाश को परमाणु रूप नहीं माना गया है। फिर भी नित्य, एक और विभु माना गया है।

11. निम्नांकित में किसके अनुसार मुक्त आत्मा भक्त है?
(a) शंकर (b) रामानुज
(c) मध्व (d) निम्बार्क

Ans. (c) : शंकर ने मुक्त आत्मा को 'ज्ञानस्वरूप ब्रहम' माना है। रामानुज मुक्त जीव को 'बह्म-प्रकार' मानते हैं। मध्व के अनुसार मुक्त जीव (आत्मा) 'भक्त' हैं।

12. मध्व के अनुसार निम्नांकित में से कौनसा सही नहीं है?
(a) जगत वास्तविक है।
(b) ब्रह्म सर्वोच्च है।
(c) मोक्ष जीव द्वारा अन्तर्निहित आनन्द की प्राप्ति है।
(d) ब्रह्म निर्गुण है।

Ans. (d) : माध्वाचार्य द्वैतवादी परम्परा के विचारक है। यह ब्रह्म को 'निर्गुण' न मानकर सगुण मानते है। उनके अनुसार जगत वास्तविक है, ब्रह्म सर्वोच्च शक्ति है। मोक्ष जीव द्वारा अन्तर्निहित आनन्द है।

13. रामानुज के अनुसार निम्नांकित में से कौन सही है?
(a) सारतः *जीव* और *ब्रह्म* समान हैं।
(b) *प्रत्यक्ष* सदैव *निर्विकल्प* होता है।
(c) *प्रपत्ति मोक्ष* का राजमार्ग है।
(d) *ब्रह्म अविद्या* का आश्रय है।

Ans. (c) : रामानुज के अनुसार, प्रपत्ति मोक्ष का राजमार्ग है। प्रपत्ति मार्ग को मोक्ष प्राप्ति का साधन मानते हैं। प्रपत्ति ईश्वर के प्रति अपने को पूर्णतया समर्पण कर देना है। यह सर्वसुलभ मार्ग है। प्राप्ति का अर्थ है 'शरणगति'। प्रपत्तिमार्ग में छः अंग हैं-आनुकूल्यसंकल्प प्रातिकूल्यवर्जन, महावश्विास, कार्यव्य, गोतृत्व वरण और आत्मनिरपेक्ष।

14. '*मोक्ष* के चार क्रम' के मत का प्रतिपादन किसने किया?
(a) शंकर (b) रामानुज
(c) निम्बार्क (d) मध्व

Ans. (d) : माध्वाचार्य अपने दर्शन में 'मोक्ष के चार क्रम' या चार अवस्थाएं बताते हैं। कर्मक्षय, उत्क्रान्तिलय, अर्चिरादिगमन, और भाग ये चार अवस्थाएं हैं।

15. *जीवनमुक्ति* यद्यपि वांछनीय है, लेकिन तार्किक रूप से युक्तिसंगत नहीं हैं – यह मत किनका था?
(a) शंकर और मध्व (b) रामानुज और शंकर
(c) रामानुज और मध्व (d) वल्लभ और वाचस्पति

Ans. (c) : वेदान्तियों में शंकर, जीवन्मुक्ति की अवधारणा को मानते हैं। परन्तु रामानुज और मध्व इस अवधारणा की तार्किकता को नहीं मानते हैं। रामानुज के अनुसार जब तक शरीर है तब तक मोक्ष नहीं मिल सकता क्योंकि जीवात्मा का शरीर धारण कर्म के ही कारण है। मुक्ति कर्मों के क्षीण हो जाने पर तथा भौतिक शरीर के पात के अनन्तर ही सम्भव है। यह विदेह मुक्ति है।

16. शंकर के अनुसार *मोक्ष* का अंतिम साधन है :
(a) *कर्म* (b) *ज्ञान कर्म समुच्चय*
(c) *ज्ञान* और केवल *ज्ञान* (d) उपर्युक्त सभी

Ans. (c) : शंकर मोक्ष का अंतिम साधन 'ज्ञान' को ही मानते है। उनके अनुसार कर्म से मुक्ति सम्भव नहीं हैं। वह भक्तिमार्ग को भी मोक्ष प्राप्ति का साधन मानते है। लेकिन कर्म को वे चित्त शुद्धि के लिए और भक्ति को एकाग्रता में सहायक मानते हैं। परन्तु यह अपर्याप्त है।

17. साधक में कर्माचरण, मोक्ष प्राप्ति की इच्छा जागृत करता है – यह विचार किसके द्वारा प्रतिपादित है :
(a) प्रकाशात्मन् (b) वाचस्पति मिश्रा
(c) पद्मपाद (d) आनन्दगिरि

Ans. (b) : 'साधक में कर्माचरण, मोक्ष प्राप्ति की इच्छा जागृत करता है। वाचस्पति मिश्र का यह विचार अद्धैत वेदान्त से सम्बन्धित है। जिनकी कृति 'भामती' से 'भामती-प्रस्थान' नामक अद्धैत वेदान्त का एक सम्प्रदाय ही विकसित हो गया।

18. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए और कूटों का प्रयोग करते हुए सही उत्तर चुनिए :

सूची I	सूची II
(a) रामानुज	(i) सांख्य कारिका
(b) मध्व	(ii) तत्व वैशार्दी
(c) वाचस्पति मिश्र	(iii) श्रीभाष्य
(d) ईश्वर कृष्ण	(iv) महाभारत तात्पर्य निर्णय

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(b)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(c)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(d)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)

Ans. (a) : रामानुज का 'श्रीभाष्य', मध्व का 'महाभारत तात्पर्य निर्णय', वाचस्पति मिश्र का 'तत्व वैशार्दी', और ईश्वर कृष्ण की 'सांख्य कारिका' नामक ग्रन्थ है।

19. किसी शब्द का अर्थ 'जातिविशिष्ट व्यक्ति' है, यह विचार किसके द्वारा दिया गया है?
(a) विश्वनाथ (b) जगदीश
(c) उदयनाचार्य (d) रामाकृष्ण

Ans. (a) : इस प्रश्न को संदिग्ध माना गया है।

20. '*संस्कारजन्य ज्ञानम*' का अभिप्राय है :
(a) प्रत्यक्ष (b) अनुमान
(c) विपर्याय (d) स्मृति

Ans. (d) : संस्कारजन्य ज्ञान को 'स्मृति' कहते हैं। किसी वस्तु का अनुभव होने पर उसके संस्कार आत्मा में रह जाते हैं। कालान्तर में ये सूत्र संस्कार प्रबुद्ध होकर दृष्टा के मन में पूर्वानुभूत वस्तु को उपस्थित कर देते हैं। इसे स्मृति कहते हैं। न्याय दर्शन में स्मृति को भी यथार्थ और अयथार्थ माना गया है। लेकिन यह अनुभव नहीं है।

21. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा तर्क (R) के रूप में हैं। वेदांत के संदर्भ में (A) और (R) पर विचार करते हुए, सही कूट का चयन कीजिए।

अभिकथन (A) : "व्यापारवद् असाधारणम कारणम कर्णम"

तर्क (R) : सभी प्रकार के ज्ञान के लिए मन के एक सामान्य कारक होने के कारण इसे एक असाधारण कारण माना जाता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) सही है लेकिन (R) सही है।

Ans. (c) : वेदान्त दर्शन के अनुसार 'व्यापारवद् असाधारणम कारणम कर्णम' सत्य है परन्तु 'सभी प्रकार के ज्ञान के लिए मन के एक सामान्य कारक होने के कारण इसे एक असाधारण कारण माना जाता है' गलत है।

22. क्रियात्व और कारकत्व के बीच के संबंध को किस रूप में जाना जाता है?
(a) आकांक्षा (b) योग्यता
(c) सन्निधि (d) तात्पर्य

Ans. (a) : यदि बिना क्रिया पद का उच्चारण किये बिना कारक पद का अर्थ समक्ष न आये तो इन दोनों पदों के परस्पर संबंध को 'आकांक्षा' कहते हैं। यह संबंध क्रियात्व और कारकत्व के बीच होता है। ध्यातव्य हो कि प्रत्येक वाक्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि तथा तात्पर्य ज्ञान नामक हेतुओं की आवश्यकता होती है।

23. भारतीय दर्शन की किस प्रणाली का विचार है कि संज्ञान का प्रामाण्य और अप्रामाण्य परतः है?
(a) बौद्ध (b) पूर्व-मीमांसा
(c) वेदांत (d) न्याय

Ans. (d) : न्याय दर्शन प्रामाण्य और अप्रामाण्य के संबंध में परतः प्रामाण्यवादी है। न्याय के अनुसार किसी भी ज्ञान की प्रामाणितता का परीक्षण उसके 'सफलप्रवृत्तिसामर्थ्य' के आधार पर किया जाता है। 'सफलप्रवृत्तिसामर्थ्य' से ज्ञान में प्रामाण्य या अप्रामाण्य का अनुमान किया जाता है। यदि सफल प्रवृति सामर्थ्य है तो प्रामाण्य और नहीं है तो अप्रामाण्य।

24. भारतीय दर्शन की किस प्रणाली के अनुसार संज्ञान का प्रामाण्य, स्वतः है और अप्रामाण्य, परतः है?
(a) न्याय (b) बौद्ध
(c) वेदांत (d) पूर्व-सीमांसा

Ans. (a)

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा तर्क (R) के रूप में हैं। अद्वैतियों के संदर्भ में (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजिए :
अभिकथन (A) : धुएं के सभी मामले आग के मामले हैं।
तर्क (R) : धुएं और अग्नि के बीच सर्वव्यापी सहवर्तिता से वास्तव में सर्वव्यापी तर्क-वाक्य निकाले जाते हैं।
कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) सही है लेकिन (R) सही है।

Ans. (a) : अद्वैत वेदान्त भी अनुमान को परोक्ष प्रमाण स्वीकार करता है। जिसमें व्याप्ति ज्ञान के आधार पर पक्ष में हेतु को देखकर साध्य का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। अभिकथन (A) धुएं के सभी मामले आग के मामले है। सही है और तर्क (R) 'धुएं-धुएं और अग्नि के बीच सर्वव्यापी सहवर्तिता से वास्तव में सर्वव्यापी तर्क-वाक्य निकाले जाते हैं, भी सही हैं। जो अनुमान और व्याप्ति में सम्बन्ध को बताते हैं।

26. नीचे दो कथन दिए गए हैं जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा तर्क (R) के रूप में हैं। (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजिए :
अभिकथन (A) : कांट का तर्क है कि सभी मानव के लिए स्थान और समय किसी वस्तु को समझने के व्यक्तिनिष्ठ रूप हैं।
तर्क (R) : कांट का मानना है कि चूँकि सभी मानव के लिए स्थान और समय एक ही प्रकार से व्यक्तिनिष्ठ हैं, वे वास्तव में वस्तुनिष्ठ हैं।
कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) सही है लेकिन (R) सही है।

Ans. (b) : कांट के अनुसार स्थान (देश) और समाज (काल) हमारे संवेदन के मुख्य द्वार है जो किसी वस्तु को समझने के व्यक्तिनिष्ठ रूप है। इसके अतिरिक्त वह मानता है कि चूँकि सभी मानव के लिए स्थान और समय एक ही प्रकार से व्यक्तिनिष्ठ हैं, वे वास्तव में वस्तुनिष्ठ हैं। परन्तु यह अभिकथन (A) के लिए पर्याप्त व्याख्या नहीं है।

27. निम्नलिखित में से कौन-सा समूह ह्यूम के, केवल विचारों पर निर्भर संबंधों की अवधारणा को सही रूप में चित्रित करता है?
(a) सादृश्यता, विपरीतता, तादात्म्य, समय और स्थान।
(b) सादृश्यता, विपरीतता, गुण में मात्रा और परिमाण में मात्रा।
(c) सादृश्यता, विपरीतता, समय और स्थान, कारण और कार्य।
(d) सादृश्यता, तादात्म्य, गुण में मात्रा औरपरिमाण में मात्रा।

Ans. (b) : डेविड ह्यूम विभिन्न प्रकार के संबंधों को मानता है यथा-सादृश्य संबंध, अभेद संबंध, देश-काल पर आश्रित संबंध, परिमाणात्मक संबंध, गुण की मात्रा का संबंध, विपरीत संबंध और कारण-कार्य संबंध। परन्तु केवल विचारों (Ideas) पर निर्भर संबंध सादृश्यता, विपरीतता, गुण में भिन्नता, परिमाण में मात्रा हैं।
(History of Western Philosophy : Frank Thilly)

28. ब्रैडले के आभास और वास्तविकता के सिद्धांत के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए सही कूट चिह्नित करें।
(a) हम वास्तविकता की प्रकृति को आभास के माध्यम से समझते हैं जो दैनिक जीवन की चीजें हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(b) वास्तविकता आभास से संबंधित है और आभास वास्तविकता का आभास है।
(c) वास्तविकता सभी आभासों में पाई जाती है लेकिन एक समान मात्रा में नहीं।

कूट :
(a) केवल (b) गलत है।
(b) केवल (b) और (c) गलत हैं।
(c) केवल (a) और (b) गलत हैं।
(d) (a), (b) और (c) सही हैं।

Ans. (d) : ब्रैडले एक प्रत्ययवादी विचारक है। उसकी रचना 'आभास और सत्' (Appearance and Reality) है। आभास और सत् (वास्तविकता) के संदर्भ में-हम वास्तविकता को प्रकृति के आभास के माध्यम से समझते है जो दैनिक जीवन की चीजें हैं। वास्तविकता (Reality) आभास से संबंधित है और आभास वास्तविकता का आभास है। वास्तविकता सभी आभासों मे पाई जाती है परन्तु एक समान मात्र में नहीं। इसके अतिरिक्त ब्रैडले निरपेक्षसत् को प्रत्येक आभास में अन्तर्व्याप्त मानता है। सत् (वास्तविकता) और आभास परस्पर आश्रित है।

29. हेडेगर की दुश्चिंता की अवधारणा वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति आ जाता है :
(a) जब उसे लगता है कि सिर्फ वही अस्तित्व का प्रश्न है और उत्तर देने की जवाबदेही भी उसी की है।
(b) जब उसे लगता है कि सभी प्रश्नों के उत्तर उसी के पास हैं।
(c) जब उसे लगता है कि सभी के पास अस्तित्व का प्रश्न है।
(d) जब वह अस्तित्व के प्रश्न और उसके उत्तर देने की जवाबदेही को अस्वीकार कर देता है।

Ans. (a) : हाइडेगर (Heidegger) एक आस्तित्ववादी विचारक माने जाते हैं। हाइडेगर का कहना है कि मानव-अस्तित्व की एक अनुभूति फेंके हुए होने तथा 'तव्यता की अनुभूति है। दूसरी ओर उसकी तात्विकता उसे 'सत्' की ओर उन्मुख करती है।, वह सत् को भी पाना चाहता है-इस तनाव मे जो अभिवृति जागती है। उसे हाइडेगर चिन्ता (दुश्चिंता) (Anxiety) कहते हैं। ऐसा तब होता है जब उसे लगता है वही अस्तित्व का प्रश्न है और उत्तर देने की जवाबदेही भी उसी की है।
(समकालीन भारतीय दर्शन-बसन्त कुमार लाल)

30. लाईबनित्ज के अनुसार वास्तविकता है :
(a) यह एक नहीं हो सकती है बल्कि अनेक होती है और प्रत्येक शाश्वत एवं वास्तविक होती है।
(b) यह एक नहीं हो सकती है बल्कि अनेक होती है और प्रत्येक अस्थायी एवं अवास्तविक होती है।
(c) यह अनेक नहीं हो सकती बल्कि एक होती है और वह शाश्वत एवं वास्तविक होती है।
(d) यह अनेक नहीं हो सकती है बल्कि एक होती है और वह अस्थायी एवं अवास्तविक होती है।

Ans. (a) : लाईबनित्ज (1696-1716 ई0) एक बुद्धिवादी दार्शनिक था। उसके अनुसार 'वास्तविकता' (सत्) एक नहीं हो सकती है बल्कि अनेक होती है और शाश्वत एवं वास्तविक होती है। लाइबनित्ज का मत 'चिदणुवाद', बुद्धिवाद, बहुलवाद है।

31. निम्नलिखित में से ''जेंडर ट्रबल'' के लेखक कौन हैं?
(a) सिमोन द बोआ　　(b) ल्यूस इरिगैरी
(c) जूडिथ बटलर　　(d) एलन शोवाल्टर

Ans. (c) : 'जेंडर ट्रबल' – जुडिथ बटलर
सिमोन द बोआ – द सेकण्ड सेम्स

32. निम्नलिखित में से किस दार्शनिक ने ''समूहगत विभेदक अधिकारों'' की अवधारणा प्रतिपादित की?
(a) थॉमस हूब्स　　(b) अमर्त्य सेन
(c) विल किमलिका　　(d) मैकेनटायर

Ans. (c) : ''समूहगत विभेदक अधिकारों'' की अवधारणा विल किमलिका ने प्रतिपादित किया। उसके अनुसार, लैंगिक पृथक्करण के आधार जेंग निस्पक्षता पर आधारित हैं। सार्वजनिक निजी भेद पर आधारित है और न्याय की अवधारणा स्वयं पुरूषों के व्यवहार एवं हितों के ध्यान में रखकर बनाई गयी हैं।

33. निम्नलिखित में से किसने 'अन्नदायी श्रम सिद्धान्त' की अवधारणा की शुरुवात किया?
(a) गाँधी　　(b) विनोबाभावे
(c) तिलक　　(d) जे.बी. कृपलानी

Ans. (a) : गाँधी जी ने 'अन्नदायी श्रम' (Bread Labour) सिद्धान्त' की अवधारणा को शुरू किया। जिसका तात्पर्य है कि जीवित रहने के लिए हर व्यक्ति को श्रम करना आवश्यक है। हर व्यक्ति स्वेच्छा से प्रत्येक दिन जाने से पहले कुछ न कुछ शारीरिक श्रम करें। गाँधी जी का यह सिद्धान्त अनुशंसा करता है कि हर व्यक्ति को पूर्णतया समान समझा जाय। 'टालस्टाय' तथा रस्किन के लेखों एवं बाइबिल के कुछ सन्दर्भों से प्रभावित।

34. सूची I को सूची II से सुमेलित करें और निम्नलिखित कूटों में से सही उत्तर का चयन करें :

सूची I (लेखक)	सूची II (रचना)
(a) गाँधी	(i) राष्ट्रीयता और समाजवाद
(b) जे.बी. कृपलानी	(ii) गाँधीजी इन इण्डियन विलेजेज
(c) महादेव देसाई	(iii) पॉलिटिक्स ऑफ चरखा
(d) नरेन्द्र देव	(iv) इथिकल रीलीजन (नीति-धर्म)

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(c)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(d)	(ii)	(ii)	(i)	(iv)

Ans. (b) : गाँधी जी-इथिकल रीलीजन (नीति धर्म), जे.बी. कृपलानी, पॉलिटिक्स ऑफ चरखा, महादेव देसाई- गाँधीजी इन इण्डियन विलेजेस तथा नरेन्द्र देव-राष्ट्रीयता और समाजवाद।

35. निम्नलिखित कथनों में से गाँधी के सन्दर्भ में कौन सही नहीं है?
(a) अहिंसा मानव जाति का नियम है।
(b) साधन, साध्य के औचित्य को सिद्ध करना है।
(c) साध्य, साधन के औचित्य को सिद्ध कारता है।
(d) समस्त भूमि गोपाल की है।

Ans. (c) : गाँधी जी अपने कर्म और चिंतन दोनों में ही साध्य को महत्वपूर्ण तो मानते थे, परन्तु वह साधन की पवित्रता पर भी जोर देते थें। उनके अनुसार साधन के औचित्य का प्रमाण या आधार नहीं बन सकता। इसके अतिरिक्त 'अहिंसा' मानव जाति का नियम है, तथा 'समस्त भूमि गोपाल की है' मानते थे।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

36. निम्नलिखित में से किसने 'ग्रामीण गणतन्त्र' का समर्थन किया है?

(a) टैगोर (b) गाँधी
(c) विवेकानन्द (d) राधाकृष्णन्

Ans. (b) : गाँधी जी ने 'ग्रामीण गणतन्त्र' की बात कही है। गाँधी जी के अनुसार शक्ति एक स्थान पर केन्द्रित नहीं रहनी चाहिए। यह शोषण का आधार बन जाता है। विकेन्द्रीकरण की नीति को राज्य में अपनाना चाहिए।

37. गाँधी के 'रचनात्मक कार्यक्रम' के उद्देश्य के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सही है?

(a) केवल बेरोजगारों को आर्थिक राहत पहुँचाना
(b) केवल कटाई-बुनाई करने वालों को कुछ मजदूरी दे पाना
(c) केवल समाज में अहिंसात्मक व्यवस्था को निर्मित करना
(d) उपरोक्त सभी

Ans. (d) : गाँधी जी के 'रचनात्मक कार्यक्रम' उनके सिद्धान्तों के आधार पर ही है। उनके अनुसार केवल बेरोजगारों को आर्थिक राहत पहुँचना, केवल कटाई-बुनाई करने वालो को कुछ मजदूरी दे पाना तथा केवल समान में अहिंसात्मक व्यवस्था को निर्मित करना।

38. निम्नलिखित में से कौन-सा ईशदूतीय धर्म का सही युग्म है?

(a) जैन धर्म और बौद्ध धर्म
(b) ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म
(c) सिक्ख धर्म और इस्लाम धर्म
(d) हिन्दू धर्म और जोरोष्ट्रियन धर्म

Ans. (b) : 'ईशदूतीय' (Prophetic) 'या पैगम्बर' के माध्यम से स्थापित धर्म 'ईसाई धर्म' और 'इस्लाम धर्म' हैं। ऐसे धर्मों में दावा किया जाता है कि ईश्वर ने उनके पैगम्बरों को आकर कुछ 'इल्हाम' कराया और उन्हें समाज सम्बन्धित 'धर्म' का प्रचार-प्रसार करने का 'आदेश' दिया।

39. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन करें :

सूची I (धर्म)	सूची II (अभीष्ट प्रक्रिया)
(a) बौद्ध धर्म	(i) गुणस्थानक
(b) इस्लाम	(ii) नामस्मरण
(c) सिक्ख धर्म	(iii) अष्टाङ्गिक मार्ग
(d) जैनधर्म	(iv) दिन में पाँच बार प्रार्थना करना

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(b)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(c)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(d)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)

Ans. (a) : बौद्ध धर्म-अष्टाङ्गिक मार्ग, इस्लाम-दिन में पाँच बार प्रार्थना करना, सिक्ख धर्म-नामस्मरण तथा जैनधर्म-गुणस्थानक।

40. निम्नलिखित में से किस दार्शनिक का मानना था कि "आगमन में अतःप्रज्ञा एक आवश्यक तत्व है, ऐसी प्रक्रिया जिसमें इन्द्रिय प्रत्यक्ष से सार्वभौमिक ज्ञान प्राप्त होता है।"

(a) अरस्तु (b) पाइथागोरस
(c) डेमोक्रेटस (d) प्रोटोगोरस

Ans. (a) : अरस्तु (389-322 ई0पू0) को तर्कशास्त्र का जनक कहा जाता है। उसके द्वारा स्थापित तर्कशास्त्र एक बौद्धिक अनुशासन का विज्ञान है। उसके अनुसार, 'आगमन में अतः प्रज्ञा एक आवश्यक तत्व है, ऐसी प्रक्रिया जिसमें इन्द्रिय प्रत्यक्ष से सार्वभौमिक ज्ञान प्राप्त होता है।'

41. नीचे दिए गए दो कथनों में से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) की संज्ञा दी गई है। (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट का चयन कीजिए :

अभिकथन (A) : स्पिनोज़ा त्रुटि को ज्ञान के विकार के रूप में नहीं देखते।

तर्क (R) : कोई भी विचार अपने आप में सही या गलत नहीं हैं, एक उपर्युक्त वस्तु की उपस्थिति एक विचार को सही बनाती है।

कूट :

(a) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) दोनों (A) और (R) सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

Ans. () : स्पिनोजा त्रुटि (भ्रम) को ज्ञान के विकार के रूप में देखते हैं। अतः कथन (A) गलत है। तर्क (R) 'कोई भी विचार अपने आप में सही या गलत नहीं है, एक उपर्युक्त वस्तु की उपस्थिति एक विचार को सही बनाती है।' यह विचार स्पिनोजा के दर्शन के लिए सही है।

42. निम्न में से किस दार्शनिक ने यह तर्क दिया कि दो पारस्परिक विरोधाभासी कथन समान रूप से सत्य हो सकते हैं, लेकिन एक, दूसरे को तुलना में "बेहतर" हो सकता है?

(a) अरस्तु (b) प्रोटोगोरस
(c) परमेनाइडीज (d) डेमोक्रेट्स

Ans. (b) : प्रोटोगोरस का मानना था कि 'मनुष्य प्रत्येक वस्तु का मापदण्ड है'। तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए वही सत्य है, जो उसे सत्य प्रतीत होता है सत्य व्यक्ति की संवदेना और अनुभूति तक ही सीमित है। ये सत्य को आत्मनिष्ठ बना देते हैं। उसके अनुसार, दो पारस्परिक विरेधाभासी कथन समान रूप से सत्य हो सकते है, लेकिन एक, दूसरे की तुलना में 'बेहतर' हो सकता हैं प्रोटोगोरस (481-411 ई0पू0) सोफिस्ट सम्प्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं।

43. लाइवनीज़ की ज्ञान मीमांसा के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?

(a) संपूर्ण ज्ञान मस्तिष्क में पहले से निहित है।
(b) अनुभव ज्ञान उत्पन्न नहीं करता।
(c) सार्वभौमिक और अनिवार्य तर्क वाक्यों को केवल संवेदन द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।
(d) लाइवनीज़ सूक्ष्म प्रत्यक्ष को स्वीकार करता है ऐसा प्रत्यक्ष जिसका प्रति मनस अचेतन है।

Ans. (c) : लाइबनित्ज की ज्ञानमीमांसा बुद्धिवाद पर आधारित है। उसके अनुसार सम्पूर्ण ज्ञान मस्तिष्क में पहले से निहित है। अनुभव द्वारा ज्ञान उत्पन्न नहीं होता बल्कि वह हमारे पूर्व ज्ञान को और अभिव्यक्त कर देता है। लाइबनित्ज जन्मजात प्रत्ययों के ज्ञान को मानता है। सार्वभौमिक और अनिवार्य नियम केवल बुद्धि के माध्यम से निगमित किये जा सकते हैं। लाइबनित्ज सूक्षम प्रत्यक्ष को स्वीकार करता है, यह, ऐसा प्रत्यक्ष जिसके प्रति मनस अवचेतन है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

44. ''सभी वस्तुओं के प्रति विश्वास अत्यंत नैसर्गिक एवं अत्यंत पराभौतिक हैं; विश्वास, ज्ञान का प्रायोगिक विकास है और विश्वासें, यथार्थ को बदलते और आकार प्रदान करते हैं''-यह धारणा निम्नलिखित में से कौन-से दार्शनिक की है?

(a) जॉन डिवी (b) कांट
(c) डेकार्ट (d) अरस्तु

Ans. (a) : 'जॉन डिवी' (1859-1952) एक उपकरणवादी दार्शनिक है। जिन्होंने अर्थक्रियावाद के उपकरणवाद मे परिणत कर दिया। इनका योगदान शिक्षाशास्त्र एवं मूल्यशास्त्र में अनुकरणीय हैं उनके अनुसार सभी वस्तुओं के प्रति विश्वास अत्यंत नैसर्गिक एवं अत्यंत पराभौतिक है; विश्वास, ज्ञान का प्रयोगिक विकास है और विश्वासें, यथार्थ को बदलते और आकार प्रदान करते हैं''।

45. सूची I के साथ सूची II को सुमेलित करें एवं नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चुनाव करें :

सूची I	सूची II
(A) बुद्धिवाद	(i) एअर
(B) संवेगवाद	(ii) हेयर
(C) उपयोगितावाद	(iii) कांट
(D) परामर्शवाद	(iv) मिल

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(c)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

Ans. (b) : सम्बन्धित प्रश्न को संदिग्ध माना गया है। परन्तु फिर भी एअर संवेगवाद, मिल उपयोगितावाद, एअर परामर्शवाद तथा कांट- समन्वयवाद।

46. 'नीति सम्बन्धी प्रकरणों में राजकीय नियम ही सर्वोच्च न्यायालय हैं,' यह विचार निम्नलिखित में से किसका है?

(a) स्पेन्सर (b) मिल
(c) कान्ट (d) हॉब्स

Ans. (d) : हॉब्स के अनुसार, 'नीति सम्बन्धी प्रकरणों में राजकीय नियम ही सर्वोच्च न्यायालय हैं। हॉब्स अपने राज्य सम्बन्धी विचार अपनी पुस्तक 'लेवियाथन' में देता हैं हॉब्स सामान्यों के नामवादी सिद्धान्त का समर्थक है तथा 'सामाजिक समझौते का सिद्धान्त' को प्रतिपादित किया।

47. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिये तथा नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन करें :

सूची I (लेखक)	सूची II (रचना)
(A) हेयर	(i) मेटॉफिजिक्स ऑफ मॉरल्स
(B) स्टीफेन	(ii) दी राइट एण्ड दी गुड
(C) रॉस	(iii) साइन्स ऑफ इथिक्स
(D) कान्ट	(iv) फ्रीडम एण्ड रीज़न

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(c)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

Ans. (d) : हेयर-फ्रीडम एण्ड रीजन, स्टीफेन-साइन्स इथिक्स, काण्ट मेटाफिजिक्स ऑफ मारल्स तथा रॉस-दी राइट एण्ड दी गुड

48. निम्नलिखित में से किस एक सिद्धान्त का विचार 'आँख के लिए आँख' है?

(a) निवर्तनवाद (b) सुधारवाद
(c) प्रतीकारवाद (d) उपरोक्त सभी

Ans. (c) : दण्ड सिद्धान्त के तीन प्रकार- प्रतीकारवाद, निर्वसनवाद, सुधारवाद। जब दण्ड का स्वरूप 'आंख के बदले आंख' का हो तो वहां प्रतिक्रिया स्वरूप दण्ड दिया जाता है अर्थात् जैसों का तैसा'। ऐसे दण्ड सिद्धान्त को प्रतिकारवाद (Retributive) दण्ड सिद्धान्त कहते हैं इसमें दण्ड की मात्रा के अनुसार दण्ड दिया जाता हैं।

49. निम्नलिखित में से किसने कहा है कि 'यदि सुख शुभ है, तो जिस अर्थ में अन्य क्रियायें शुभ हैं, उससे भिन्न अर्थ में ही वह शुभ हो सकता हैं'?

(a) मूर (b) रॉस
(c) एयर (d) हेयर

Ans. (b) : रॉस के अनुसार 'यदि सुख शुभ है, तो जिस अर्थ में अन्य क्रियाएं शुभ है, उससे भिन्न अर्थ में ही वह शुभ हो सकता है।'

50. निम्नलिखित में से किसने हा है कि 'स्वतन्त्रता ही मानव तथा समस्त बुद्धिजीवियों के गौरव का एक मात्र आधार है'?

(a) हॉब्स (b) कान्ट
(c) स्टीवेन्शन (d) बेन्थम

Ans. (b) : काण्ट अपने नीतिशास्त्र विवेचन में 'संकल्प की स्वतंत्रता' को महत्व देते है और इसे पूर्वस्थापित मान्यता मानते है। उनके अनुसार 'स्वतंत्रता ही मानव तथा समस्त बुद्धिजीवियों के गौरव का एक मात्र आधार है।'

51. निम्नलिखित में से यह किसका कथन है?
'उसी सूत्र के अनुसार कार्य कीजिये जिसे आप तत्क्षण संकल्प द्वारा सामान्य नियम के रूप में प्रस्तुत कर सकें'।

(a) कान्ट (b) हेगेल
(c) हॉब्स (d) मिल

Ans. (a) : काण्ट के शब्दों में कर्त्तव्य का रूप अहेतुक आदेश हैं। अहेतुक आदेश के पांच सूत्र काण्ट अपने दर्शन में बताता है- 1. सार्वभौम विधान का सूत्र 2. प्रकृति-विधान का सूत्र 3. स्वयं साध्य का सूत्र 4. स्वतंत्रता का सूत्र 5. साध्यों के राज्य का सूत्र। उनके सार्वभौम विधान के सूत्र के अनुसार 'उसी सूत्र के अनुसार कार्य कीजिए जिसे आपे तत्क्षण संकल्प द्वारा सामान्य नियम के रूप में प्रस्तुत कर सकें।

52. नीचे दिये गये तर्क और तर्क आकार का अध्ययन कर नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए।

$(A \cdot B) \supset C$	$p \supset q$
(1) $(A \cdot B)$	(2) p
$\therefore C$	$\therefore q$

(a) (a), (b) का तर्काकार है।
(b) (b), (a) का विशिष्ट तर्काकार है।
(c) (b), (a) का तर्काकार है।
(d) (a), (b) का विशिष्ट तर्काकार है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : युक्ति आकार या तर्काकार प्रतीकों का वह विन्यास, जिसमें वाक्यचर होते है किन्तु कोई वाक्य नहीं होता। जब वाक्यचरों के स्थान पर वाक्य रख दिये जाते है तब युक्ति आकार युक्ति बन जाती है जैसे -

$(A \cdot B) \supset C$ का युक्ति आकार या तर्काकार $p \supset q$

$(A \cdot B)$ P

$\therefore C$ $\therefore q$

53. विकल्पीय वाक्यों के सबल एवं निर्बल के निर्धारण में निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?

(a) विकल्पावय के निर्बल अर्थ में केवल एक विकल्प सत्य होता है जबकि सबल अर्थ में दोनों विकल्प सत्य होते हैं।
(b) विकल्पावय के निर्बल एवं सबल दोनों अर्थों में दोनों विकल्प सत्य होते हैं।
(c) विकल्पावय के निर्बल और सबल अर्थ में केवल एक विकल्प सत्य होता है।
(d) विकल्पावय के निर्बल अर्थ में दोनों विकल्प सत्य होते हैं जबकि सबल अर्थ में केवल एक विकल्प सत्य होता है।

Ans. (d) : दो कथनों का विकल्प उनके बीच या (or) रखकर किया जाता है। इस संगठित होने वाले दोनों कथन विकल्पावयव कहलाते हैं। विकल्पावय के निर्बल अर्थ में दोनों विकल्प सत्य होते है जबकि सबल अर्थ में केवल एक विकल्प सत्य होता है।
(दर्शन पुञ्ज एक गहन दृष्टि - विनोद तिवारी)

54. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये :

सूची I	सूची II
(A) डी.आई.एम.ए.आर.आई.एस.	(i) पहली आकृति
(B) एफ.ई.एल.ए.पी.टी.ओ.एन.	(ii) दूसरी आकृति
(C) बी.ए.आर.ओ.सी.ओ.	(iii) तीसरी आकृति
(D) डी.ए.आर.आई.आई.	(iv) चौथी आकृति

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(c)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

Ans. (d) :

DIMARIS	चौथी आकृति
FELAPTON	तीसरी आकृति
BAROCO	दूसरी आकृति
DARII	पहली आकृति

55. नीचे दिये कथनों से सही उत्तर को चीन्हित कीजिए।

(1) व्याघात तर्कवाक्यों के बीच एक संबंध है जिसमें तर्कवाक्य गुण और परिमाण दोनों में भिन्न होते हैं।
(2) विपरीत संबंध सर्वव्यापी तर्कवाक्यों के बीच होता है।
(3) विरुद्ध संबंध अंशव्यापी तर्कवाक्यों के बीच होता है।
(4) सर्वव्यापी तर्कवाक्य अंशव्यापी तर्कवाक्यो के उपाश्रय हैं।

कूट :

(a) (a) और (b) सही है।
(b) (b) और (c) गलत हैं।
(c) (c) और (d) गलत हैं।
(d) उपर्युक्त सभी कथन सही हैं।

Ans. (d) : परम्परागत विरोध वर्ग गुण और परिमाण में अलग-अलग तर्कवाक्यों में सम्बन्ध की व्याख्या करता हैं चार प्रकार के तर्कवाक्य सर्वव्यापी स्वीकारात्म (A), सर्वव्यापी निषेधात्मक (E), अंशव्यापी स्वीकारात्मक (I) अंशव्यापी निषेधात्मक (O) इस वर्ग के अनुसार संबंध-

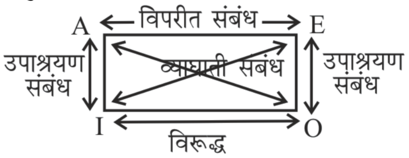

56. निम्नलिखित में से किस स्थिति में दो कथन तार्किक रूप से समतुल्य होंगे?

(a) जिनके द्विउपाधिक पुनर्कथन हैं।
(b) जिनके द्विउपाधिक व्याघात हैं।
(c) जिनके द्विउपाधिक संभाव्य हैं।
(d) दोनों समान सत्यता मूल्य रखते हैं।

Ans. (a) : दो कथन तार्किक रूप से समतुल्य तब होते है जब उनके द्विउपाधिक (Bicnditional) पुनर्कथन हो। जैसे- द्विधा-निषेध- 'P ≡ ~ ~ P' इसके लिए प्रतीक ' ≡ ' प्रतीक का प्रयोग होता है।

57. निम्नलिखित में से कौन सा व्यंजक डेमार्गन सिद्धान्त का सही आकार है?

(a) $[(p \equiv q)] \equiv [(p > q) \cdot (q > p)]$ और $[(p \equiv q)] \equiv [(p.q) \vee (\sim p \cdot \sim q)]$
(b) $[\sim(p \cdot q)] \equiv [(\sim p \vee \sim q)]$ और $[\sim(p \vee q)] \equiv [(\sim p \cdot \sim q)]$
(c) $[(p \equiv (p \cdot p)]$ और $[(p \equiv (p \vee p)]$
(d) $[(p \cdot p)] \equiv (q \cdot p)]$ और $[(p \vee q) \equiv (q \vee p)]$

Ans. (b) : डेमार्गन सिद्धान्त - $[\sim(p \cdot q)] \equiv [(\sim p \vee \sim q)]$ और $[\sim(p \vee q)] \equiv [(\sim p \cdot \sim q)]$

58. निम्नलिखित में से किस प्रकार लघु सत्यतासारणी विधि द्वारा किसी युक्ति की अवैधता सिद्ध की जा सकती है?

(a) दोनों आधार वाक्यों एवं निष्कर्षों को 'सत्य' सत्यता मूल्य निर्धारित कर
(b) दोनों आधार वाक्यों एवं निष्कर्षों को 'असत्य' सत्यता मूल्य निर्धारित कर
(c) आधार वाक्यों को 'असत्य' सत्यता मूल्य एवं निष्कर्ष को 'सत्य' सत्यता मूल्य निर्धारित कर
(d) आधार वाक्यों को 'सत्य' सत्यता मूल्य तथा निष्कर्ष को 'असत्य' सत्यता मूल्य निर्धारित कर

Ans. (d) : लघु सत्यतासारणी विधि द्वारा किसी युक्ति की अवैधता, आधार वाक्यों को 'सत्य' सत्यता मूल्य तथा निष्कर्ष को 'असत्य' सत्यता मूल्य निर्धारित कर सिद्ध की जाती है।

59. तर्क वाक्य ''सभी पत्तियाँ हरित हैं'' का प्रतिवर्तन है।

(a) कोई अ-पत्तियाँ अहरित नहीं हैं।
(b) सभी पत्तियाँ अहरित हैं।
(c) कछ पत्तियाँ अहरित हैं।
(d) कोई पत्तियां अहरित नहीं हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : प्रतिवर्तन में उद्देश्य और परिमाण तर्कवाक्य के अपरिवर्तित रहते है लेकिन विधेय के स्थान पर उसके पूरक से तथा गुण बदल दिया जाता है जैसे- ''सभी पत्तियां हरित है'' का प्रतिवर्तन है ''कोई पत्तियां अहरित नहीं है।''

60. सभी धर्मों की सामान्य और आवश्यक शिक्षा है :
(a) नैतिकता जीवन का सार है।
(b) सामाजिक मूल्यों का उन्नयन
(c) आपसी प्रेम और सम्मान के मानव धर्म की स्थापना
(d) उपर्युक्त सभी

Ans. (d) : सभी 'धर्मों' की कुछ शिक्षाएं होती है। जो लगभग सभी में समान होती है, वो है- 1. नैतिकता जीवन का सार है। 2. सामाजिक मूल्यों का उन्नयन 3. आपसी प्रेम और सम्मान के मानव धर्म की स्थापना।

61. स्ट्रासन ने अपनी पुस्तक 'लॉजिकल थियरी' में 'औपचारिक प्रणालियों' के निम्नलिखित में से किसका मूल्यांकन करने में लाभदायक होने की व्याख्या की है?
(a) 'संदर्भ मुक्त' परिचर्चा (b) 'संदर्भ सापेक्ष' परिचर्चा
(c) 'संदर्भ निरपेक्ष' परिचर्चा (d) उपर्युक्त सभी

Ans. (a) : स्ट्रॉसन अपनी पुस्तक लॉजिकल थियरी में औपचारिक प्रणालियों' के मूल्यांकन में 'सन्दर्भ मुक्त' परिचर्चा के उपयोगी होने की बात करता है।

62. मूल तर्क वाक्य, सत्यापन और तत्व, मीमांसीय कथनों के संदर्भ में दिए गए अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार करते हुए नीचे दिए गए कूटों में से सही कूट को चिह्नित कीजिए।

अभिकथन (A) : यदि सभी कथन मूल तर्क-वाक्यों के सत्यता-फलन हैं जो कि प्रेक्षण की सूचना देते हैं तो वे सभी या तो अपने आप में आनुभविक होंगे अन्यथा पुनर्कथन या व्याघात होंगे।

तर्क (R) : तत्व मीमांसीय कथनों का उपर्युक्त घटकों के अंतर्गत वर्गीकरण नहीं किया जा सकता है।

कूट :
(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

Ans. (b) : मूल तर्कवाक्य (प्राथमिक प्रतिज्ञप्ति), सत्यापन के सन्दर्भ में यदि सभी कथन प्राथमिक प्रतिज्ञप्ति मूल तर्कवाक्य के सत्यता-फलन है जो कि प्रेक्षण की सूचना देते है तो वे सभी तर्कवाक्य या तो अपने आप में आनुभविक होंगे अन्यथा पुनर्कथन या व्याघात होंगे। लेकिन इन वाक्यों का सत्यता फलन सूचनाओं का तत्वमीमांसीय कथनों से कोई सम्बन्ध नहीं है। अतः अभिकथन (A) सही हैं तथा (R) भी सही है। परन्तु (R) व्याख्या नहीं हैं।

63. विटगेंसटाइन ने 'इनवेस्टिगेशन्स' में अर्थ का सिद्धान्त प्रतिपादित किया है, इसे किस नाम से जाना जाता है?
(a) अर्थ का चित्र सिद्धान्त
(b) अर्थ का प्रयोग सिद्धान्त
(c) अर्थ का भाषायी-खेल सिद्धान्त
(d) अर्थ का वाक् कृत्य सिद्धान्त

Ans. (b) : विटगेन्सटाइन अपनी पुस्तक 'इन्वेस्टिगेशन्स' में अर्थ का सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है। जिसे 'अर्थ का प्रयोग सिद्धान्त' कहते है। चुंकि यह सिद्धान्त फुटबॉल मैच के खेल को देखने के बाद विटगेन्सटाइन के मन में आया था अतः इसे 'भाषा- खेल सिद्धान्त' भी कहते है।

64. रसेल के डिफिनिट डिस्क्रिप्शन के सिद्धान्त के अनुसार तर्क वाक्य 'वेवरली का लेखक स्काट है' निम्न प्रकार विश्लेषित किया जा सकता है :
(1) कम से कम एक व्यक्ति ने वेवरली को लिखा है।
(2) अधिक से अधिक एक व्यक्ति ने वेवरली को लिखा है।
(3) जिस किसी भी वेवरली को लिखा है स्काट है।
रसेल के अनुसार नीचे दिए गए कूटों में से कौन में से कौन-सा सही हैं?
(a) (a) और (b) का समन्वय
(b) (b) और (c) का समन्वय
(c) (a) और (c) का समन्वय
(d) (a), (b) और (c) का समन्वय

Ans. (d) : रसेल डिफिनिट डिस्टिक्रप्शन (निश्चित वर्णन) के सिद्धान्त के अनुसार ''वेवरली का लेखक स्काट है'' का विश्लेषण निम्न प्रकार करता है-
1. कम से कम एक व्यक्ति ने वेवरली को लिखा है।
2. अधिक से अधिक एक व्यक्ति ने वेवरली को लिखा है।
3. जिसने भी वेवरली लिखा वह स्काट है।
रसेल के अनुसार, 'वेवरली का लेखक' एक अपूर्ण प्रतीक है। जो एक वर्णनात्मक पदावली और जटिल प्रतीक है। जबकि 'एकार' एक व्यक्तिवाचक नाम और एक सरल प्रतीक है।

65. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन पियर्स के अपनी पुस्तक 'फाउंडेशन्स ऑफ दी थ्योरी ऑफ साइन्स' में किए गए संकेत परक वृत्ति के वर्गीकरण के आलोक में करें :

सूची I	सूची II
(A) वाक्य विन्यास विज्ञान	(i) यह चिह्नों एवं उनके भाष्यों के बीच संबंध का वर्णन करता है।
(B) संकेत विज्ञान	(ii) यह एक चिह्न से दूसरे चिह्नों के संबंधों का वर्णन करता है।
(C) व्यवहार विज्ञान	(iii) यह उस तरीके का वर्णन करता है जिनमें वे निर्धारित होते हैं।

कूट :

	(A)	(B)	(C)
(a)	(ii)	(iii)	(i)
(b)	(iii)	(ii)	(i)
(c)	(i)	(ii)	(i)
(d)	(i)	(iii)	(ii)

Ans. (a) : 'वाक्य विन्यास विज्ञान' में एक चिन्ह से दूसरे चिन्हों के संबंधों का वर्णन किया जाता है। 'संकेत विज्ञान' (Semontic) में उस तरीके का वर्णन किया जाता है जिनमें वे निर्धारित होते है। तथा व्यवहार विज्ञान में चिन्हों एवं उनके भाष्यों के बीच संबंध का वर्णन किया जाता हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

66. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार करते हुए विटगेन्सटाइन के तर्कवाक्य के विचार के आलोक में नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर का चयन कीजिए।

अभिकथन (A) : किसी तर्क वाक्य की परिसीमा का उसके सत्यता आधार से तादात्म्य होता है।

तर्क (R) : किसी तर्क वाक्य की परिसीमा परमाण्विक तर्कवाक्यों का संयोजन होता है।

कूट :

(a) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है।
(d) (A) गलत है और (R) सही है।

Ans. (b) : विट्गेन्सटाईन (1889-1959) अपने तर्कवाक्य के विचार के अनुसार किसी तर्कवाक्य की परिसीमा का उसके सत्यता आधार से तादात्म्य होता है। और तर्कवाक्यों की परिसीमा परमाण्विक तर्कवाक्यों का संयोजन होता है। परन्तु (R), (A) की व्याख्या नहीं है।

67. ''भाषा हमारी द्वितीय प्रकृति है। यह भाषा के कारण ही संभव है कि जगत हमारे लिये खुला हुआ है। यह निम्नलिखित में से किस शास्त्र मीमांसीय चिंतक का विचार है?

(a) श्लाइरमेकर (b) डिल्थे
(c) गडैमर (d) हाइडेगर

Ans. (c) : 'हैंस जार्ज गैडामर' (1900-2002) एक जर्मन शास्त्रमीमांसक है। उनके अनुसार 'भाषा हमारी द्वितीय प्रकृति है। यह भाषा के कारण ही संभव है कि जगत हमारे लिए खुला हुआ है।

68. शास्त्रमीमांसा को 'सत्तामीमांसीय मोड़' देने में निम्नलिखित में से किस दार्शनिक का योगदान है?

(a) मार्टिन हाइडेगर (b) रिकोवर
(c) डेरिडा (d) हाबरमास

Ans. (c) : मार्टिन हाइडेगर जो कि एक अस्तित्ववादी विचारक थे, ने शास्त्रमीमांसा को 'सत्तामीमांसीय मोड़' देने में योगदान दिया। उन्होंने शास्त्रमीमांसा को अपने ढंग से व्याख्यापित करते है।

69. निम्नलिखित में से किस शास्त्रमीमांसीय चिंतक ने सत्तामीमांसीय शास्त्र एवं समीक्षात्मक शास्त्रमीमांसा में समन्वय स्थापित किया?

(a) गडैमर (b) डेरिडा
(c) रिकोवर (d) हाबरमास

Ans. (a) : पॉल रिकोवर (1913 - 2015) फ्रांस के एक शास्त्रमीमांसीय चिंतक हैं। जिन्होंने शास्त्रमीमांस्य (hermeneutics) को फेनोमेनोलॉजिकल वर्णन के साथ जोड़ा। इन्होने सत्तामीमांसीय शास्त्र एवं समीक्षात्मक शास्त्रमीमांस में समन्वय स्थापित किया।

70. 'चेतनता का' संवृत्तशास्त्रीय विश्लेषण के दो पक्ष हैं (i) नोएमैटिक और (ii) नोएटिक।
उनके संबंध के बारे में नीचे दिए गए विकल्पों से सही विकल्प का चयन करें :

(a) विभाज्य (b) विभाजन से परे
(c) अविभाज्य (d) संयुक्त

Ans. (c) : चेतना का संवृत्तिशास्त्रीय विश्लेषण हुसर्ल अपने फेनोमेनोलॉजी में प्रस्तुत करता है। उसके अनुसार इसके दो अविभाज्य पक्ष है- 1. नोएमैटिक तथा 2. नोएटिक।

71. धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन के लक्ष्य की आवश्कता है :

(a) अन्तरधर्म संवादों को समझने के लिए
(b) धर्मों के बीच समानता तथा अंतर को समझने के लिए
(c) धर्मों की विविधता के मूल तथा समन्वय को प्राप्त करने के लिए
(d) उपर्युक्त सभी

Ans. (d) : धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए हमें कुछ मूलभूत लक्ष्यों की आवश्यकता है-
1. अन्तधर्म संवादों को समझने के लिए
2. धर्मों के बीच समानता तथा अंतर को समझने के लिए
3. धर्मों की विविधता के मूल तथा समन्वय को प्राप्त करने के लिए।

72. 'प्रत्यक्षम कल्पनापोढम नामजात्याद्य-संयुक्तम' प्रत्यक्ष की इस परिभाषा को किसने सही बताया?

(a) धर्मकीर्ति (b) धर्मोत्तर
(c) वात्स्यायन (d) दिङ्नाग

Ans. (d) : प्रत्यक्षम कल्पनापोढ़म नामजात्याद्य-संयुक्तम प्रत्यक्ष की इस परिभाषा को दिये गये विकल्पों के सन्दर्भ में सन्दिग्ध माना गया है। यह प्रश्न UGC ने।

73. 'ज्ञानकरणकं ज्ञानं प्रत्यक्षम्', प्रत्यक्ष की यह परिभाषा सर्वप्रथम किसके द्वारा प्रतिपादित की गई थी?

(a) दिङ्नाग (b) गौतम
(c) गंगेश (d) वाचस्पति मिश्र

Ans. (c) : 'ज्ञानकरणकं ज्ञानं प्रत्यक्षम्' - गंगेश। गंगेश को नव्यन्याय के प्रवर्तक माने जाते है। गंगेश की पुस्तक का नाम 'तत्वचिंतामणि' है।

74. निम्नलिखित में से किस एक दार्शनिक का कथन है कि 'प्रत्येक अपने लिए से प्रत्येक अन्य के लिए कोई मार्ग नहीं हैं'?

(a) मिल (b) बेन्थम
(c) कान्ट (d) मार्टिन्यू

Ans. (d) : मर्टिन्यू 'प्रत्येक अपने लिए से प्रत्येक अन्य के लिए कोई मार्ग नहीं है।' इसके अतिरिक्त उनके अनुसार, या तो संकल्प की स्वतंत्रता एक कथन है या फिर नैतिकता एक भ्रम है।

75. निम्नलिखित में से कौन नैतिकता का तत्व सीमांसीय आधार प्रदान करता है?

(a) आधारभूत गुण (b) स्वतन्त्रता तथा उत्तरदायित्व
(c) आत्मा की अमरता (d) चरित्र का विकास

Ans. (c) : नैतिककता का तत्व मीमांसीय आधार 'आत्मा की अमरता' पर जोर देता है। नैतिकता की तीन पूर्वमान्यताएं - ईश्वर की अवधारणा, आत्मा की अमरता, स्वतंत्रता की अवधारणा।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2015
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

निर्देशः इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नीचे दो कथन दिए गए है एक अभिकथन (A) और दूसरा तर्क (R) के रूप में हैं। (A) और (R) पर विचार करते हुए सही कूट चुनेः

अभिकथन (A) : तैजस् में आत्मा सूक्ष्म वस्तुओं को ग्रहण करता है।

तर्क (R) : स्वप्नावस्था में आत्मा स्वयं काल्पनिक वस्तुओं का निर्माण करता है।

कूटः

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R),(A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है लेकिन (R) गलत है।
(d) (A) गलत है लेकिन (R) सही है।

Ans. (a) : माण्डूक्योपनिषद में आत्मा के पारमार्थिक स्वरूप को जाग्रत, स्वप्न, एवं सुषुप्ति से भी परे तुरीय नामक एक चतुर्थ अवस्था बताया गया है। आत्मा की चार अवस्थाये मानी गयी है। स्वप्नावस्था में आत्मा जाग्रतावस्था की स्मृति से स्वयं काल्पनिक वस्तुओं का निर्माण करती हैं यह अवस्था 'तैजस्' कहलाती है। तैजस में आत्मा सूक्ष्म वस्तुओं का आनन्द (engoy) लेती है। (A) और (R) दोनों सही है। और (R), (A) की व्याख्या करता है।

2. उपनिषद् में हिरण्यगर्भ' को .... के रूप में भी जाना गया है।

(a) विश्वकर्मा (b) प्रजापति
(c) सहस्राक्ष (d) सहस्रशीर्ष

Ans. (b) : उपनिषद् में 'हिरण्यगर्भ' को 'प्रजापति के रूप में भी जाना जाता है। 'प्रजापति' का अर्थ है– 'अपन्यों का स्वामी'। परवर्ती संहिताओं और ब्राह्मण में प्रजापति को तत्वतः देवताओं का मूर्धन्य, सबका जनक, देवताओं और असुरों का पिता तथा प्रथम यजमान माना गया है। उन्हें विशेष रूप से ब्रह्मन् (ब्रह्मा) का तादात्म बताया गया है। 'हिरण्यगर्भ-सूक्त' (ऋग्वेद 10,121) में उन्हें हिरण्यगर्भ कहा गया हैं जिसका अर्थ है। 'स्वर्णिम बीज'।

(भारतीय दर्शन- डॉ. नन्दकिशोर देवराज)

3. सही क्रम का चयन करें:

(a) अर्थ, काम, धर्म, मोक्ष
(b) अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष
(c) मोक्ष, धर्म, अर्थ, काम
(d) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

Ans. (c) : भारतीय दर्शन में चार पुरुषार्थ माने गये हें जो क्रमशः धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष है। मानव जीवन के चार परम लक्ष्यों में 'मोक्ष' पुरुषार्थ को सबसे अन्त में रखा गया है। 'मोक्ष' को 'परम पुरुषार्थ' कहा गया है। जो मानव जीवन का 'चरम आदर्श' है।

4. सूची-I को सूची- II से सुमेलित करें तथा नीचे दिये कूट से सही उत्तर का चयन करें।

सूची-I	सूची-II
(A) नैगम नय	(i) जहाँ सामानय गुण पूर्णतः वास्तविक समझे जाते हैं एवं विशेष का अवास्तविक के रूप में निषेध हो जाता हैं।
(B) संग्रह नय	(ii) जहाँ वस्तुएँ सामान्य और विशेष गुणोंवाली समझी जाती हैं और हम उनमें भेद नहीं कर पाते।
(C) व्यवहार नय	(iii) जहाँ यथार्थ का क्षण के साथ अभिज्ञान किया जाता है।
(D) ऋजुसूत्र नय	(iv) जहाँ वस्तुओं को केवल मूर्त विशेष समझा जाता है।

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(c)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(d)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)

Ans. (c) :

(A)	नैगम नय	–	जहाँ वस्तुएँ सामान्य और विशेष गुणोंवाली समझी जाती हैं और हम उनमें भेद नहीं कर पाते।
(B)	संग्रह नय	–	जहाँ सामानय गुण पूर्णतः वास्तविक समझे जाते हैं एवं विशेष का अवास्तविक के रूप में निषेध हो जाता हैं।
(C)	व्यवहार नय	–	जहाँ वस्तुओं को केवल मूर्त विशेष समझा जाता है।
(D)	ऋजुसूत्र नय	–	जहाँ यथार्थ का क्षण के साथ अभिज्ञान किया जाता है।

5. सूची- I को सूची- II से सुमेलित करें तथा नीचे दिये कूट से सही उत्तर का चयन करें।

सूची-I	सूची-II
(a) वसुबन्धु	(i) महायान सूत्रालंकार
(b) असंग	(ii) विग्रह व्यावर्तिनी
(c) नागार्जुन	(iii) महायान श्रद्धोत्पाद शास्त्र
(d) अश्वघोष	(iv) विज्ञप्तिमात्रता सिद्धि

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(b)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(c)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

Ans. (a) :
वसुबन्ध - विज्ञप्तिमात्रता सिद्धि
असंग - महायान सूत्रालंकार
नागार्जुन - विग्रह व्यावर्तिनी
अश्वघोष - महायान श्रद्धोत्पाद शास्त्र

6. अन्योन्य अभाव की अवधारणा का प्रतिपादन किया गया हैः
(a) सांख्या द्वारा (b) न्याय द्वारा
(c) विशिष्टाद्वैत द्वारा (d) अद्वैत द्वारा

Ans. (b) : न्याय दर्शन में अनोन्य अभाव की अवधारणा का प्रतिपादन मिलता है। आभाव का ही एक रूप है। दो वस्तुओं का परस्पर अर्थात दो वस्तुओं के तादात्म्य का आभाव अन्योन्यभाव है जैसे घट पट नहीं है। यदि अन्योन्याभाव न हो तो सारी वस्तुएं अभिन्न हो जायेगी।

7. दिये गये अभिकथन (A) तथा तर्क (R) पर विचार कीजिए तथा नीचे दिये गये विकल्पों से सही उत्तर का चयन कीजिएः
अभिकथन (A): आत्मा की न उत्पत्ति होती है न ही विनाश।
तर्क (R) : यह उत्पत्ति विनाश से परे है।
कूटः
(a) (A) तथा (R) दोनों सत्य हैं और (R),(A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) तथा (R) दोनों असत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(c) (A) तथा (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(d) (A) असत्य है और (R) सत्य है, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।

Ans. (a) : यहां यह स्पष्ट नहीं कि यह किस दर्शन के आलोक में पूछा जा रहा है परन्तु यदि नास्तिक दर्शनों की आत्मा की व्याख्या को छोड़कर, आस्तिक सम्प्रदाय की आत्मा की अवधारणा को ग्रहण किया जाये तो यह कथन (A) और तर्क (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की व्याख्या है।

8. सूची- I को सूची- II से सुमेलित करें तथा नीचे दिये कूट से सही उत्तर का चयन करें।

सूची-I	सूची-II
(a) विनाशपूर्व घट का अभाव	(i) अन्योन्या भाव
(b) विनाश के पश्चात्	(ii) अत्यंता भाव
(c) पट की भांति नहीं	(iii) प्रागभाव
(d) तरल-घट की भांति नहीं	(iv) प्रध्वंसा भाव

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(c)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(d)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

Ans. (d) :
विनाशपूर्व घट का अभाव - प्रागभाव
विनाश के पश्चात् - प्रध्वंसा भाव
पट की भांति नहीं - अन्योन्या भाव
तरल-घट की भांति नहीं - अत्यंता भाव

9. पूर्व-मीमांसा के अनुसार आकृति का तात्पर्य हैः
(a) विशेष (b) संस्थान
(c) समवाय (d) गुण

Ans. (b) : पूर्व-मीमांसा में 'आकृति' का तात्पर्य संस्थान से है। इसको भ्रमवश 'जाति' भी कह दिया जाता है। लेकिन मीमांसक शब्द को जाति कहते है, उनके अनुसार शब्द का अर्थ न तो व्यक्ति है और न आकार (आकृति)।

10. रामानुज के अनुसार निर्गुण का अर्थ हैः
(a) कल्याण गुण रहित
(b) अकल्याण गुण रहित
(c) लक्षण रहित
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : रामानुज के अनुसर ब्रह्म सगुण है। परमतत्व को निर्गुण कहने का कोई प्रमाणिक ज्ञान नहीं है। निर्गुण ब्रह्म की कल्पना श्रुतिसम्मत नहीं श्रुति में वर्णित निर्गुण शब्द प्रकृति के गुणों से रहित सत्ता के अर्थ में है। रामानुज के अनुसार 'निर्गुण' का अर्थ अकल्याण गुण रहित है। रामानुज अपने दर्शन में 'निर्गुण ब्रह्म' की शंकर की अवधारणा का खण्डन करते हैं।

11. मायावाद के विरुद्ध सप्तानुपपत्ति (सात शास्त्रीय आपत्ति) को किसने प्रख्यापित किया?
(a) वल्लभ (b) मध्व
(c) रामानुज (d) निम्बार्क

Ans. (c) : शंकर का 'माया-सिद्धान्त' का रामानुज द्वारा खण्डन किया गया है। जिसे 'सप्तानुपत्ति (सात शास्त्रीय आपत्ति) कहा जाता है। रामानुज माया' को ब्रह्म की वास्तविक शक्ति मानते हैं जिसके द्वारा ब्रह्म सृष्टि की रचना करता है। यह शंकर के मत के विपरीत है। 'माया' को रामानुज ब्रह्म की प्रकृति कहते है।

12. शंकर के दर्शन को कहा जाता हैः
(a) एकतत्ववाद (b) समग्र अद्वैतवाद
(c) अद्वैतवाद (d) उपर्युक्त सभी

Ans. (c) : शंकर के वेदान्त दर्शन को 'अद्वैतवाद' के नाम से जाना जाता है शंकर के अद्वैतवाद के अनुसार पारमार्थिक दृष्टि से ब्रह्म ही एकमात्र सत् है, जगत् मिथ्या है और जीव ब्रह्म से अभिन्न है।

13. विशिष्टाद्वैत दर्शन केवल अनुमोदन करता है.......।
(a) जीवनमुक्ति का (b) विदेहमुक्ति का
(c) दोनों का (d) उपर्युक्त में से किसी का नहीं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : विशिष्टाद्वैत दर्शन, रामानुजाचार्य के नाम के साथ ज्यादा जाना जाता है। यह मोक्ष की अवस्था को अशरीरी अर्थात् विदेहमुक्ति को ही मानते है। रामानुज के अनुसार 'मोक्ष अप्राप्त की प्राप्ति' हैं विशिष्टाद्वैत दर्शन में जीवन्मुक्ति को अस्वीकार किया गया है। रामानुज की धारणा है कि क्योंकि जीवात्मा का शरीर-धारण कर्म के ही कारण है। अतः जब तक शरीर रहेगा तब मोक्ष नहीं मिल सकता है।

14. कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

(a) मध्व उत्कट बहुतत्त्ववाद के समर्थन हैं।
(b) मध्व प्रबल वस्तुवादी हैं।
(c) मध्व एक महान ईश्वरवादी हैं।
(d) मध्व ब्रह्म-जीव अभेदवाद के समर्थन हैं।

Ans. (d) : मध्वाचार्य का दर्शन द्वैतवाद का समर्थक हैं ये भी वेदान्ती है। महत्व उत्कट बहुतत्ववादी और प्रबल वस्तुवादी है। वह महान ईश्वरवादी भी है। वह जगत् सत्य है। मध्वाचार्य ने अपने दर्शन में पुंञ्चविध नित्य भेद को स्वीकार किये हैं वह ब्रह्म जीव के अभेदवाद के प्रबल विरोधी हैं और शंकर के अद्वैतवाद के विरोधी।

15. न्याय के अनुसार कार्य जाना जाता है:

(a) कारण (b) प्रगभाव प्रतियोगी
(c) असमवायी कारण (d) कारण

Ans. (b) : न्याय असत्कार्यवाद है। इसके अनुसार कार्य नई सृष्टि हैं। कार्य उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान नहीं रहता। कार्य अपने प्रागभाव को प्रतियोगी होता है। कार्य अपने प्रागभाव का आभाव है। कार्य की सत्ता का आरम्भ उसकी उत्पत्ति के साथ ही होता हैं

भारतीय दर्शन : आलोचन और अनुशीलन चन्द्रधर शर्मा

16. ज्ञान स्वयं में सत्य होना चाहिए, यह विचार प्रतिपादित है:

(a) न्याय द्वारा (b) वेदान्त द्वारा
(c) मीमांसा द्वारा (d) जैन द्वारा

Ans. (c) : मीमांसा दर्शन ज्ञान के प्रमाण्य के सम्बन्ध में स्वतः प्रमाण्यवादी हैं। उसके ज्ञान स्वयं में सत्य होता है उसके लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं हैं। अज्ञान के सम्बन्ध में मीमांसक परतः उपप्रामाण्य को मानते है।

17. चेतना आत्मा का एक आगंतुक गुण है, स्वीकार किया गया है:

(a) वेदान्त द्वारा (b) पूर्व मीमांसा द्वारा
(c) न्याय द्वारा (d) सांख्य द्वारा

Ans. (c) : न्याय दर्शन में चेतना को 'आत्मा' का आगन्तुक गुण स्वीकार किया गया है। न्याय दर्शन मुक्तावस्था में आत्मा को ज्ञान और चैतन्य रहित जड़ और अभौतिक द्रव्य मानता है। यह अन्यान्य भारतीय दर्शनों से एकदम अलग मान्यता हैं।

18. निम्नलिखित में कौन-सा कथन सही है?

(a) अपृथक्सिद्धि है, ब्रह्म का जीव के साथ सम्बन्ध।
(b) अपृथक्सिद्धि है, ब्रह्म का जीव और जगत के साथ सम्बन्ध।
(c) अपृथक्सिद्धि है, ब्रह्म का केवल जगत के साथ सम्बन्ध।
(d) अपृथक्सिद्धि कोई सम्बंध है ही नहीं।

Ans. (b) : अपृथक सिद्धि रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत दर्शन में ब्रह्म का जीव और जगत से सम्बन्ध बतलाने के लिए प्रयुक्त एक प्रकार का सम्बन्ध हैं। रामानुज के अद्वैत अर्थात् ब्रह्म तथा द्वैत अर्थात जीव एवं जगत, में अपृथकसिद्धि सम्बन्ध हैं। क्योंकि इन्हें एक-दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता है। इसीलिए रामानुजाचार्य का वेदान्त हैतुविशिष्ट-अहैतु कहलाता है।

19. न्याय का कारणता सिद्धान्त कहा जाता है:

(a) विवर्तवाद (b) असत्कार्यवाद
(c) सत्कार्यवाद (d) यदृच्छावाद

Ans. (b) : न्याय का कारण-सिद्धान्त असत्कार्यवाद कहलाता है। न्याय-वैशेषिक दर्शन के अनुसार कार्य उत्पत्ति से पूर्व अपने कारण में विद्यमान नहीं रहता है। अर्थात् कारण में कार्य उत्पत्ति से पूर्व असत् होता है। अर्थात् कार्य की सत्ता का प्रारम्भ उसकी उत्पत्ति से ही प्रारम्भ होती है। यही असत्कार्यवाद है।

20. नीचे दो कथन दिये गये हैं जिनमें एक को अभिकथन (A) कहा गया है तथा दूसरे को तर्क (R)। नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन करें।

अभिकथन (A) : "अभ्यास वैराग्यभ्याम् तन्निरोधः"।
तर्क (R) : सतत् अभ्यास और अनासक्ति के द्वारा चित्त वृत्ति का निरोध।

कूटः
(a) (A),(R) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों गलत हैं।
(c) (A) और (R) परस्पर व्याघातक हैं।
(d) (A) सही हैं,परंतु (R) गलत है।

Ans. (a) : अभ्यास और वैराग्य दोनों की आवश्यकता पर योग दर्शन में बताया गया है। महर्षि पतन्जलि ने उत्तम साधकों की चिन्तवृत्ति-निरोध के लिए 'अभ्यास-वैराग्य' को उपय के रूप में बतलाया है। सतत् अभ्यास और अनासक्ति के द्वारा चित्त वृत्ति का निरोध किया जा सकता है।

21. ईश्वर को परम अंह के रूप में कल्पित करने से इकबाल का तात्पर्य है:

(a) प्रकाश के रूप में ईश्वर
(b) एक गत्यात्मक और सर्जनात्मक जीवन
(c) अनन्त सर्जनात्मक सम्भावनाएँ
(d) जगत की एक सर्जनात्मक प्रगति

Ans. (a) : इकबाल के अनुसार ईश्वर एक परम अहं (supreme ego) है, जो अपनी सर्जनात्मकता में सृष्टि का दिशा-निर्देश करता हैं। इकबाल कुरान के ईश्वर को प्रकाश-रूप कहे जाने की व्याख्या अपने दर्शन में करते हैं। प्रकाश की उपमा से सतत गतिशीलता पूर्ण गत्यात्मकता का बोध होता है। इकबाल का कहना है कि 'प्रकाश' की उपमा उस 'परम अहं' के स्वरूप को समझने के लिए निकटतम उपमा है।

22. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही है?

(a) पर्सनाल्टी, हिन्द स्वराज-गाँधी
(b) द लाइफ डिवाइन, इस्ट एण्ड वेस्ट-श्री अरविन्द
(c) साधना, पर्सनाल्टी - टैगोर
(d) इस्ट एण्ड वेस्ट इन रिलिजन, दी ह्यूमन सायकिल - राधाकृष्णन्

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : 'साधना', 'पर्सनाल्टी' टैगोर की रचनाएं हैं। 'दी ह्यूमन सायकिल', 'द लाइफ डिवाइन'- श्री अरविन्द; 'इस्ट एण्ड वेस्ट', 'इस्ट एण्ड वेस्ट इन रिलिजन'- राधाकृष्णन; 'हिन्द स्वराज'-गांधी

23. सूची- I को सूची- II से सुमेलित करें तथा प्रदत्त कूट के आधार पर सही उत्तर चुनें:

सूची-I (लेखक)	सूची-II (ग्रन्थ)
(a) के. सी. भट्टाचार्य	(i) दी आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी
(b) राधाकृष्णन्	(ii) दी सीक्रेट्स ऑफ सेल्फ
(c) इकबाल	(iii) स्टडीज इन वेदान्तिज्म
(d) श्री अरविन्द	(iv) दी रीकवरी ऑफ फेथ

कूटः

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(b)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(c)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(d)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)

Ans. () :
के. सी. भट्टाचार्य - स्टडीज इन वेदान्तिज्म
राधाकृष्णन् - दी रीकवरी ऑफ फेथ
इकबाल - दी सीक्रेट्स ऑफ सेल्फ
श्री अरविन्द - दी आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी

24. अन्तः अनुभूति एवं प्रज्ञा एक दूसरे के पूरक हैं निम्न में से किसके अनुसार?

(a) बर्गसॉं (b) कान्ट
(c) राधाकृष्णन् (d) अम्बेडकर

Ans. (c) : राधाकृष्णन के अनुसार, अन्तःअनुभूति एवं प्रज्ञा एक दूसरे के पूरक हैं राधाकृष्णन के अनुसार अन्तः अनुभूति से प्राप्त ज्ञान प्रामाणिक ज्ञान है। बौद्धिक ज्ञान (Intellect, प्रज्ञा) कभी भी पूर्ण नहीं होता जबकि प्रतिभ ज्ञान (Intnition) एक पूर्ण ज्ञान हैं प्रज्ञा (बौद्धिक ज्ञान) के ज्ञान की सत्यता की परीक्षा की जाती है परन्तु अन्तः अनुभूति (प्रज्ञा) से प्राप्त ज्ञान की नहीं।

दर्शन पुञ्जःएक महन दृष्टि - विनोद तिवारी

25. किसके अनुसार 'मुमुक्षुत्व' अमरता के पक्ष में एक साक्ष्य है?

(a) शंकर (b) रामानुज
(c) राधाकृष्णन् (d) विवेकानन्द

Ans. (d) : स्वामी विवेकानंद के अनुसार 'मुमुक्षत्व' मृत्यु की इच्छा नहीं हैं 'मुमुक्षत्व' - मुक्त होने की हमारी प्रबल उत्कठा हैं, जो अमरता के पक्ष में एक साक्ष्य हैं। यह दुखरहित जीवन की इच्छा है। इस इच्छा की विषयवस्तु के रूप मे मृत्यु से परे की किसी स्थिति को स्वीकारना पड़ता है। मुमुक्षत्व अमरता की इच्छा हैं, अतः इस इच्छा के अनुरूप इसके इच्छित वस्तु- अमरता को स्वीकारना पड़ता है।

26. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें तथा नीचे दिये हुए कूट से सही विकल्प का चयन करें:

सूची-I	सूची-II
(A) लाइब्नित्ज	(i) जगत चिदणुओं का समूह है।
(B) विट्गेंसटाइन	(ii) जगत अणुओं का समूह है।
(C) ह्यूम	(iii) जगत संस्कारों का समूह है।
(D) बर्कले	(iv) जगत प्रत्यक्षों का समूह है।

कूटः

(a) (A) और (iv) (b) (B) और (i)
(c) (C) और (iii) (d) (D) और (ii)

Ans. (b) :
लाइब्नित्ज - जगत् चिदणुओं का समूह है।
विट्गेंसटाइन - जगत् तथ्यों की समग्रता है वस्तुओं की नहीं।
ह्यूम - जगत् संस्कारों का समूह है।
बर्कले - जगत् प्रत्ययों का प्रत्यक्ष्य हैं।

27. सूची- I को सूची- II से सुमेलित करें तथा नीचे दिये गये कूटों से गलत विकल्प का चयन करें:

सूची-I	सूची-II
(A) लॉक	(i) अन्तरक्रियावाद
(B) लाइबनित्ज	(ii) सर्वेश्वरवाद
(C) स्पिनोज़ा	(iii) बहुलवाद
(D) देकार्त	(iv) विज्ञानवाद

कूटः

(a) (C) और (ii) (b) (D) और (i)
(c) (A) और (iv) (d) (B) और (iii)

Ans. (c) : देकार्त अन्तर क्रियावाद, स्पिनोजा सर्वेश्वरवाद, तथा लाइबनित्ज बहुलवाद को मानते है लेकिन विज्ञानवादी बर्कले को कहा जाता है और लॉक प्रत्यय प्रतिनिधित्ववादी कहा जाता हैं। लॉक विज्ञानवाद (Idealism) को नहीं मानते हैं।

28. सही विकल्प का चयन करें:
बुद्धिवादियों के लिए जन्मजात प्रत्यय हैं-

(a) नित्य
(b) आकस्मिक
(c) दोनों नित्य और आकस्मिक
(d) न तो नित्य न आकस्मिक

Ans. (a) : बुद्धिवादी आत्मा (मन) में ज्ञान को जन्म से निगूढ़ मानते है। इसे ही जन्म जात प्रत्यय कहते हैं उनके अनुसार जन्मजात प्रत्यय शाश्वत (Eternal, नित्य) होते है। यह प्रागनुभविक भी होते है।

29. सही विकल्प का चयन करें:
अन्तरक्रियावाद के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया था:

(a) लाइब्नित्ज़ द्वारा (b) देकार्त द्वारा
(c) बर्कले द्वारा (d) स्पिनोज़ा द्वारा

Ans. (b) : मन और शरीर सम्बन्ध की समस्या को हल करने के लिए बुद्धिवादियों ने कई सिद्धान्त दिया। डेकार्ट ने अंतक्रियावाद, स्पिनाजो ने समानान्तरवाद तथा लाइबनित्ज ने पूर्व स्थापित सामंजस्य का सिद्धान्त प्रतिपादित किया हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

30. कौन यह स्वीकार करता है कि किसी वस्तु की सत्ता उसके अनुभव पर निर्भर करती है?

(a) प्लेटो (b) ह्यूम
(c) बर्कले (d) लॉक

Ans. (c) : बर्कले के अनुसार, 'सत्ता दृश्यता है' अर्थात् वस्तु की सत्ता उसके अनुभव पर निर्भर करती है। अर्थात जो कुछ भी दृश्य है वह अनुभव के अन्तर्गत है । और जो अनुभव के अन्तर्गत है उसकी सत्ता है।

31. सूची-I को सूची-II के साथ्र सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनें:

सूची-I	सूची-II
(A) लॉक	(i) प्रागनुभविक संश्लेषी निर्णय
(B) बर्कले	(ii) आनुभविक संश्लेषी निर्णय
(C) ह्यूम	(iii) प्रत्ययों का ज्ञान
(D) कांट	(iv) संवेदनाओं का ज्ञान

कूट:

(a) (A) और (iii) (b) (D) और (i)
(c) (C) और (ii) (d) (B) और (iv)

Ans. (b) : लॉक, संवेदनाओं के ज्ञान को, बर्कले प्रत्ययों के ज्ञान को और कांण्ट प्रागनुभविक संश्लेषी निर्णय को मानते है।

32. सही विकल्प का चयन करें:
पूर्व स्थापित सामंजस्य संबंध है-

(a) मन और शरीर के मध्य
(b) ईश्वर और प्रकृति के मध्य
(c) गुण और पर्याय के मध्य
(d) चिदणुओं के मध्य

Ans. (d) : लाइबनित्ज के अनुसार चिदणुओं के स्वभाव में ही यह पूर्व-स्थापित सामंजस्य निहित हैं कि प्रत्येक चिदणु पूर्व-स्थापित सामंजस्य के नियम से संचालित होता है। इसके अतिरिक्त लाइबनित्ज ने आत्मा और शरीर के संबंध की समस्या को अपने प्रसिद्ध 'पूर्व-स्थापित' सामंजस्य के नियम के द्वारा हल करने का प्रयास किया।

33. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें तथा नीचे दिये गये कूट से सही विकल्प का चयन करें:

सूची-I	सूची-II
(A) वाक् क्रिया	(i) विट्गेन्स्टाइन
(B) भाषा खेल	(ii) एयर
(C) अर्थ का सत्यापन सिद्धांत	(iii) पीयर्स
(D) अर्थ का उपचारात्मक सिद्धांत	(iv) राइल

कूट:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(c)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(d)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

Ans. (d) : वाक् क्रिया सिद्धान्त जे.एल. ऑस्टिन ने दिया है।
भाषा खेल सिद्धान्त विट्गेन्सटाइन का है।
अर्थ का सत्यापन सिद्धान्त एयर का है।
अर्थ का उपचारात्मक सिद्धान्त।

34. सही विकल्प का चयन करें:

(a) हीगेल एक निरपेक्ष विज्ञानवादी है तथा हुसर्ल अतीन्द्रिय विज्ञानवाद का समर्थन करता है।
(b) हीगेल एक बुद्धिवादी है तथा स्पीनोजा एक वस्तुवादी है।
(c) हुसर्ल अतीन्द्रिय विज्ञानवाद का समर्थन करता है तथा कांट एक अनुभववादी है।
(d) हीगेल एक निरपेक्ष विज्ञानवादी है किंतु हुसर्ल विज्ञानवाद का खण्डन करते हैं।

Ans. (a) : हीगेल द्वारा प्रस्तुत विज्ञानवाद निरपेक्ष सत् का वर्णन करने के कारण निरपेक्ष विज्ञानवाद हैं हुसर्ल अपने फेनोमेनोलॉजी एक तरह से अतीन्द्रिय विज्ञानवाद के तत्व उभरकर आते है।

35. जी. ई. मूर के अनुसार जब भी दार्शनिक सिद्धान्त और सामान्य बुद्धि के बीच टकराव होता है तो इस बात की संभावना अधिक होती है कि:

(a) दार्शनिक सिद्धान्त की तुलना में सामान्य बुद्धि भटक जाती है।
(b) सामान्य बुद्धि को तुलना में तर्क भटक जाता है।
(c) तर्क और सामान्य बुद्धि दोनों भटक जाते हैं।
(d) तर्क और सामान्य बुद्धि में से कोई नहीं भटकता।

Ans. (c) : मूर सामान्य बुद्धि के आधार पर दार्शनिक प्रत्ययों की व्याख्या का समर्थक हैं। उसके अनुसार जब भी दार्शनिक सिद्धान्त और सामान्य बुद्धि के बीच टकराव होता है तो इस बात की संभावना अधिक होती है कि तर्क और समान्य बुद्धि दोनों भटक जाये।

36. रसेल के दर्शन के संदर्भ में दिए गये अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार करें और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनें:

अभिकथन (A): सामान्य कथन अस्तित्वपरक नहीं हैं।
तर्क (R) : अणु न तो मानसिक हैं न ही भौतिक।

विकल्प:

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R),(A) की सीधी व्याख्या नहीं प्रदान करता है।
(b) (A) और (R) दोनों गलत हैं लेकिन (R), (A) की सीधी व्याख्या प्रदान करता है।
(c) (A) सही है, (R) गलत है और (R), (A) की सीधी व्याख्या प्रदान करता है।
(d) (A) गलत है, (R) सही है लेकिन (R), (A) की सीधी व्याख्या नहीं प्रदान करता है।

Ans. (a) : रसेल के दर्शन में यह दोनों कथन कि 'सामान्य कथन अस्तित्वपरक नहीं है तथा 'अणु न तो मानसिक है न ही भौतिक' सत्य हैं। परन्तु एक दूसरे की व्याख्या नहीं करते है। रसेल के अनुसार जो कई विशेषों में समान हो वह सामान्य हैं।

37. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन अस्तित्ववाद और गीता के अनुसार सत्य है?

(a) हम कर्त्ता और भोक्ता हैं, साक्षी-मात्र नहीं।
(b) हम साक्षी-मात्र हैं, कर्त्ता अथवा भोक्ता नहीं।
(c) हम कर्त्ता, भोक्ता और साक्षी है।
(d) ऊपर दीये गए विकल्पों में से कोई भी स्वीकार्य नहीं है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : गीता और अस्तित्ववाद दोनों को साथ-साथ यह मान्य नहीं है कि–
1. हम कर्त्ता और भोक्ता हैं, साक्षी मात्र नहीं।
2. हम साक्षी-मात्र है, कर्ता अथवा भोक्ता नहीं।
3. हम कर्त्ता, भोक्ता और साक्षी सभी है।
गीता में आत्मा का कर्त्ता, भोक्ता, ज्ञाता, माना गया है। यह अपने पारमार्थिक स्वरूप में शुद्ध साक्षिचैतन्य है।

38. इनमें से कौन 'उत्कट अनुभववादी' कहा जाता है?
(a) एयर (b) लॉक
(c) जेम्स (d) मूर

Ans. (c) : एयर को तार्किक प्रत्यक्षवादी या तार्किक अनुभववादी, लॉक का अनुभववाद संवेदनवाद, प्रत्यय प्रतिनिधित्ववाद, मूर भाषा-विश्लेषणवादी तथा विलियम जेम्स का अनुभववाद उत्कट अनुभववाद कहलाता है।

39. सीमित अर्थ में 'इपोखे' का अर्थ है:
(a) वस्तुओं के अस्तित्व में विश्वास
(b) वस्तुओं के अस्तित्व में अविश्वास
(c) बाह्य विश्व के अस्तित्व से संबंधित निरपेक्ष निर्णय प्राप्त करना।
(d) वस्तुओं के अस्तित्व विषयक निर्णयों का स्थगन।

Ans. (d) : हुसर्ल अपने फेनोमेनोलॉजी में 'शुद्ध सार भाव' तक पहुँचने के लिए विभिन्न प्रकार के विश्वासों से मुक्त होने के लिए कुछ विधियां बताते है, जिसे फेनोमेनालाजी की विधि कहते हैं। फेनोमेनालॉजी की विधि को असंबंधन (Epoche) तथा विभिन्न स्तरों के उपचयन (Reduction) की विधि कही जाती हैं, उसी सीमित अर्थ में इपोखे (असंबंधन) का अर्थ है–वस्तुओं के अस्तित्व विषयक निर्णयों का स्थगन करना। 'असंषधन' अलग रखने का प्रयत्न करना है। कोष्टीकरण (Bracketing) विमुख होना (Detachment), असम्बोधन (Disconnection) इसी विधि में प्रयुक्त है।

40. हाइडेगर के अनुसार 'केयर' के तीन पक्ष क्या है?
(a) तथ्यता, संभाव्यता, गिरावट
(b) तथ्यता, सावधानी, अनुशासन
(c) सावधानी, अनुशासन, सेवा
(d) सेवा, सावधानी, तथ्यता

Ans. (c) : हाइडेगर के अनुसार मानव के जगत के साथ संबंधित होने का तार्किक स्वरूप यह 'उद्वेगपूर्ण लगाव' (Care an concern) है। यदि यह 'केयर' (लगाव) न हो तो अस्तित्व की अनुभूति ही न रहे। हाइडेगर ने 'लगाव' (केयर) के तीन लक्षणों का उल्लेख किया हैं तीनों को क्रमशः तथ्यता (Facticity), संभावना (Possibility), तथा 'गिरावट' (Fallen ness) कहा जाता है।

41. मूर विश्लेषण करता है:
(a) भाषा (b) भाषायी तथ्य
(c) भाषेतर तत्व (d) इनमें सभी

Ans. (c) : मूर के अनुसार, जिसका विश्लेषण हो रहा है वह भाषीय तत्व नहीं बल्कि भाषा के इतर कोई तत्व (extra linguistic entity) हैं। इस भाषेतर तत्व को वह संप्रत्यय (Concept) प्रस्थापना (proposition) भाव (idea) आदि कहते हैं। परन्तु ये भाषीय अथवा शाब्दिक उक्तियां नहीं हैं

42. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?
(a) साइकोलॉजिज्म - हुस्सर्ल
(c) मशीन में प्रेत - डेकार्ट
(a) डेसिन - हाइडेगर
(c) बुद्धिवाद - हेगल

Ans. (b) : 'मशीन में प्रेत' सिद्धान्त गिल्बर्ट राइल' के दर्शन से सम्बन्धित है, जो डेकार्ट के मन-शरीर' सम्बन्ध सिद्धान्त की आलोचना है। गिल्बर्ट राइल के अनुसार यह कहना कि मन और शरीर दो विरुद्ध कोटियां हैं, और फिर दोनों के परस्पर अन्तक्रिया की बात करना और शरीर को मन में स्थापित कर देना यह 'मशीन में प्रेत' की तरह हैं।

43. सूची-I को प्लेटों के कार्यों के सन्दर्भ से सूची-II से सुमेलित करें और सही कूट का चयन करे:

सूची-I	सूची-II
(a) मेनो	(i) सुकरात के जीवन और मृत्यु
(b) गारजियस	(ii) ज्ञान की प्रकृति और निर्देश
(c) एपोलॉजी एण्ड क्रेटो	(iii) सद्गुण और आत्म नियंत्रण
(d) करमाइड्स	(iv) वक्रपटुता के अध्ययन से जुड़ा

कूट:

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(b)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(c)	(ii)	(iv)	(i)	(iii)
(d)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

Ans. (c) : प्लेटों के 'मेनो' डॉयलॉग में ज्ञान और उसकी प्रकृति एवं निर्देश के बारे में बताता है, 'गारजियस' में वाक्पटुता (rhetic) का अध्ययन, एपोलॉजी एण्ड क्रेटो में सुकरात के जीवन और मृत्य से सम्बन्धित है तथा करमाइड्स में सद्गुण तथा आत्मनियन्त्रण की बात करता हैं।

44. थॉमस एक्वीनॉस के संदर्भ में नीचे दिये गये कथनों पर विचार कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए:
(i) एक्वीनॉस सार्वभौमिक पुद्गलाकारवाद एवं आकारों की अनेकता के सिद्धान्त का निषेध करते हैं।
(ii) मनुष्य के पास एक बौद्धिक आत्मा है जो एक सारभूत आकार के रूप में कार्य करती हैं।
(iii) केवल ईश्वर ही ऐसा है जो सर्वथा संघटकविहीन है। उसका सार उसके होने में है।

कूट:
(a) केवल (ii) और (iii) सही है।
(b) केवल (i) और (ii) सही हैं।
(c) केवल (i) और (iii) सही है।
(d) सभी (i), (ii) और (iii) सही है।

Ans. (d) : एक्वीनॉस अपने दर्शन में सार्वभौमिक पुद्गलाकारवाद एवं आकारों की अनेकता के सिद्धान्त का निषेध करते हैं उनके अनुसार, मनुष्य के पास बौद्धिक आत्मा है जो एक सारभूत आकार के रूप में कार्य करती है तथा ईश्वर का सार उसके होने में है यह संघटक विहीन नित्य (शाश्वत) है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

45. संत आगस्टाइन के दर्शन के आलोक में निम्नलिखित अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार करें और सही कूट चुनें:

अभिकथन (A): शुभत्व के सोपानों का सत् के सोपानों से तादात्म्य है।

तर्क (R) : यदि किसी विशेष वस्तु में शुभत्व नहीं हैं तो इसमें किसी भी रूप में सत् नहीं है।

विकल्पः

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख नहीं है।
(c) (A) सही है, और (R) गलत है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

Ans. (b) : आगस्टाइन के अनुसार प्रत्येक सत् वस्तु शुभ है या शुभत्व की अभिव्यक्ति हैं। शुभ के न होने पर अशुभ होता है क्योंकि शुभ के न होने पर वह नहीं हो सकता है जो होना चाहिए था। आगस्टाइन के दर्शन के सन्दर्भ में यह कथन कि शुभत्व के सोपानों का सत् के सोपानों से तादात्म्य है सत्य है, और यह भी किसी विशेष वस्तु में यदि शुभत्व नहीं होती इसमें किसी भी रूप में सत् नहीं है, सत्य हैं, परन्तु यह पहले कथन की सही व्याख्या नहीं है।

46. 'तीन श्रेणी के मनुष्य' - बुद्धि के प्रेमी, सम्मान के प्रेम और अर्जन के प्रेमी- सिद्धांत प्रतिपादित किया गया:

(a) पाइथागोरस (b) हेराक्लाइटस
(c) अरस्तू (d) ल्यूसिपस्

Ans. (a) : साधना और ज्ञान की दृष्टि से पाइथागोरस ने व्यक्तियों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया। उनकी तुलना ओलम्पिक में भाग लेने वाले खिलाड़ियों से की हैं। ओलम्पिक खेलों में तीन प्रकार के व्यक्ति यथा-ग्राहक (क्रेता-विक्रता), खिलाड़ी, दर्शक भाग लेते थे जिन्हे क्रमश; निम्नतम, मध्यम, उत्तरी श्रेणी का कहा गया। उसके अनुसार संसार में भी तीन प्रकार के व्यक्ति यथा- अर्जन के प्रेमी (लवर्स ऑवगेन), सम्मान के प्रेमी (लवर्स आव ऑनर) तथा बुद्धिया ज्ञान के प्रेमी (लवर्स आव विजडम) पाये जाते हैं।

47. निम्नलिखित में से कौन सी पुस्तकें प्लेटो द्वारा लिखी गई हैं?

(i) रिपब्लिक
(ii) लॉज़
(iii) पॉलिटिक्स
(iv) क्रीटो

कूटः

(a) केवल (i) और (iv)
(b) केवल (ii), (iii) और (iv)
(c) केवल (ii) और (iv)
(d) केवल (i), (ii) और (iv)

Ans. (d) : ररिपब्लिक, लॉज, क्रीटो प्लेटो के द्वारा लिखित पुस्तके है। 'पॉलिटिक्स' अरस्तु द्वारा लिखित पुस्तक है।

48. निम्नलिखित कथनों को सावधानीपूर्वक पढ़े और फलवाद के संदर्भ में सही विकल्प का चयन करें :

अभिकथनः

(a) 'अर्थ' शब्द का अर्थ है बोध की प्रांजलता।
(b) अर्थ की उत्पत्ति प्रायोगिक प्रक्रिया में होती है।
(c) मन तात्त्विक वस्तु है।
(d) ज्ञान एक क्रिया है।

विकल्पः

(a) ऊपर लिखे सभी कथन सही हैं।
(b) केवल (i), (ii) और (iii) सही है। लेकिन (iv) गलत है।
(c) केलव (i), (ii) और (iv) सही है लेकिन (iii) गलत है।
(d) केलव (ii), (iii) और (iv) सही है लेकिन (i) गलत है।

Ans. (c) : फलवाद (Pragmatism) का दर्शन पर्स और जेम्स की अनुभवादी मान्यताओं पर आधारित हैं जिसमें मन को तात्विक वस्तु नहीं माना जाता हैं। 'अर्थ' शब्द का अर्थ है बोध की प्रांजलता और इसकी उत्पत्ति प्रायोगिक प्रक्रिया में होती हैं। फलवाद में ज्ञान को एक क्रिया (activity) माना गया है।

49. सूची- I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों में से सही विकल्प चुनें:

सूची-I	सूची-II
(A) स्पिनोज़ा	(i) प्रतिनिधित्ववाद
(B) देकार्त	(ii) समानान्तरवाद
(C) लॉक	(iii) संशयवाद
(D) ह्यूम	(iv) सर्वेश्वरवाद

कूटः

(a) (C) और (i) (b) (B) और (iv)
(c) (A) और (iii) (d) (D) और (ii)

Ans. (a) : स्पिनोजा का दर्शन सर्वेश्वरवादी और समानान्तरवादी लॉक का प्रत्यय प्रतिनिधित्ववाद तथा ह्यूम का संशयवाद हैं डेकार्ट बुद्धिवाद अंतक्रियावाद और निमित्तश्वरवाद के समर्थन है।

50. सूची- I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों में से सही विकल्प चुनें:

सूची-I	सूची-II
(A) देकार्त	(i) द्वैतवाद
(B) स्पिनोज़ा	(ii) बहुतत्त्ववादी
(C) लाइबनिज़	(iii) सर्वेश्वरवादी
(D) लॉक	(iv) प्रत्ययवादी

कूटः

(a) (D) और (iv) (b) (B) और (iii)
(c) (A) और (ii) (d) (C) और (i)

Ans. (b) : देकार्त का दर्शन द्वैतवाद, स्पिनोजा का सर्वेश्वारद, लाइबनित्ज का बहुलवाद तथा लॉक का दर्शन प्रत्यय प्रतिनिधित्ववाद है। 'प्रत्ययवाद' बर्कले, हीगेल आदि का दर्शन है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यू.जी.सी. नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2015
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. ''नाम सामान्य का अवबोध कराते हैं जो शुद्ध रूप से कल्पना प्रसूत, भ्रमात्मक और निषेधात्मक हैं।'' यह मत प्रतिपादित किया गया है:

(a) धर्मकीर्ति द्वारा (b) दिङ्नाग द्वारा
(c) प्रभाकर द्वारा (d) कमलशील द्वारा

Ans : (b) बौद्ध दर्शन का 'जाति' अथवा 'सामान्य' सम्बन्धी मत अपोहवाद कहलाता है। अपोहवाद के अनुसार 'नाम सामान्य का अवबोध कराते है जो शुद्ध रूप से कल्पना प्रसूत, भ्रमात्मक और निषेधात्मक है।' यह कथन आचार्य दिङनाग अपने दर्शन में प्रतिपादित करते हैं। इन्हीं को अपोहवाद का प्रतिपादक माना जाता है। 'अपोह' शब्द का प्रयोग दिङ्नाग ने अपने ग्रन्थ प्रमाण समुच्चय में एक सिद्धांत के रूप में किया है।

2. 'जब द्रव्य अस्तित्ववान नहीं है तो गुण, जो इन पर आश्रित हैं, भी अस्तित्ववान नहीं हैं।' यह मत है:

(a) जैनों का (b) नैयायिकों का
(c) मीमांसकों का (d) बौद्ध का

Ans : (d) बौद्ध दर्शन अनित्यवादी विचार को मानता है। उसके अनुसार प्रत्येक वस्तु प्रतिक्षण परिवर्तनशील है। संसार की जितनी वस्तुएं प्रतीत समुत्पन्न हैं। उनकी एक क्षण के लिए भी सत्ता नहीं है। कोई नित्य या कूटस्थ द्रव्य नहीं है जिसकी सत्ता हो। गुण द्रव्यों पर आश्रित माने जाते है। अतः जब द्रव्य द्रविअनित्य, परिवर्तनशील है तो गुण जो इन पर आश्रित हैं के अस्तित्वा में होने का प्रश्न ही नहीं उठता। ये सब कल्पना जन्य प्रत्यय है।

3. जैन विचार संप्रदाय द्वारा स्वीकार्य और समर्थित, निम्नलिखित में से त्रिरत्न की कौन सी श्रेणी नहीं है?

(a) सम्यक् ज्ञान (b) सम्यक् चारित्र
(c) सम्यक् प्रयास (d) सम्यक् दर्शन

Ans : (c) जैन-दर्शन में साधना मागे की तीन महत्वपूर्ण सधनों को तिरत्न कहा जाता है। जिनके बिना मोक्ष प्राप्ति सम्भव नहीं है। जो क्रमशः है - सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र और सम्यक ज्ञान।

4. ख्याति कोई एक ज्ञान नहीं है अपितु दो असंबद्ध अवबोधों का समुच्चय है। यह मत प्रतिपादित किया गया है:

(a) प्रभाकर द्वारा (b) कुमारिल द्वारा
(c) रामानुज द्वारा (d) उद्योतकर द्वारा

Ans : (a) प्रभाकर का भ्रम सिद्धांत अख्यातिवाद है। उनके अनुसार ख्याति कोई एक ज्ञान नहीं है, आपेतु दो असंबद्ध अवबोधों का समुच्चय है। भ्रम दो आंशिक ज्ञानों और उनके शिष्यों के भेद का अग्रहण या अज्ञान है। अर्थात भेदाग्रह है।

5. पूर्वमीमांसा के अनुसार निम्नलिखित में से कौन ज्ञान की नवीनता को सूचित करता है?

(a) यथार्थ (b) बाधक ज्ञानरहित
(c) अग्रहिताग्राहि (d) कारणदोषरहित

Ans : (c) पार्थसारधि मिश्र के अनुसार प्रभा को 'प्रभा के कारण दोष रहित बाधकज्ञानरहित, अग्रहतग्राहि और यथार्थ होना चाहिए (कारणदोषबाधकज्ञान-रहितमग्रहीतग्राहि ज्ञान प्रमाणमशास्त्रदीपिका)। पूर्व-मीमांशा के अनुसार, अग्रहिताग्राहि से तात्पर्य वह ज्ञान है जो पूर्व में अज्ञात हो अर्थात, नवीन हो। यह शब्द ज्ञान की नवीनता का सूचक है।

6. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों की सहायता से सही उत्तर चुनेः

सूची-I	सूची-II
(A) पक्षधर्मता	(i) अग्नि शीतल है
(B) विपक्षसत्त्व	(ii) शब्द शाश्वत है क्योंकि यह उत्पन्न होता है
(C) बाधित	(iii) पर्वत पर धूम्र है
(D) विरूद्ध	(iv) जलाशय में अग्नि है

कूटः

	A	B	C	D
(a)	iv	i	iii	ii
(b)	i	ii	iii	iv
(c)	ii	iii	i	iv
(d)	iii	iv	i	ii

Ans : (d)
पश्रधर्मता - पक्ष में सत्ता है यथा - पर्वत पर धूम्र है।
विपक्षसत्व - विपक्ष में सत्ता है यथा - जलाशय में अग्नि है।
बाधित - हेतु का प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से बाधित होना यथा - अग्नि शीतल है।
विरूद्ध - साध्य की सत्ता की जगह साध्य के आभाव को सिद्ध करना यथा शब्द शाश्वत है क्योंकि यह उत्पन्न होता है।

7. निम्नलिखित में से कौन-सा ऋत् के समान है?

(a) अदिति (b) इन्द्र
(c) सोम (d) उषस्

Ans : (a) ऋत् की अवधारणा के समान ही देवी आदिति की अवधारणा में भी नैतिक व्यवस्था का आधार प्राप्त होता है। आदिति संज्ञा शब्द है और इसका अर्थ बन्धन शहित्य है। इस शब्द का स्वतंत्रता मुक्ति और निसीमता के अर्थ में प्रयोग हुआ है। आदिति को आदित्यों की माता कहा गया है। इसी तरह देवताओं के लिए ऋत् जात शब्द का प्रयोग किया गया है।

8. भगवद्गीता में योग शब्द का प्रयोग इस आशय से नहीं किया गया है:

(a) समत्व (b) कौशल
(c) कर्म (d) क्रिया

Ans : (d) भगवद्गीता में योग की परिभाषा कई प्रकार से की गयी है। समत्व का ही नाम योग है। कर्मों में कुशलता को ही योग कहते हैं। क्रिया का प्रयोग योग के लिए नहीं किया गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

9. जैन मत में आत्मोत्थान के क्रमिक चरण जाने जाते हैं:
(a) अप्रमत्तसंयत (b) अविरत
(c) उपशान्तकषाय (d) गुणस्थान

Ans : (d) जैन दर्शन में अन्मिक गुणों के विकास की आत्मोत्थान के क्रमिक अवस्थाओं को गुणस्थान कहते हैं। गुण स्थान चौदह है। अप्रभतसेयत, अविरत, उपशान्तकषाय आदि गुणस्थान ही है। अतः विकल्प d सही है।

10. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म 'भूत' को 'क्षर' की तरह और 'कूटस्थ' को 'अक्षर' की तरह उद् घाटित करता है?
(a) प्रकृति-पुरुष (b) जीव-माया
(c) ब्रह्म-जीव (d) माया-जीव

Ans : (a) भगवद्‌गीता में सब भूतों को क्षर तथा कूटस्थ का अक्षर कहा गया है। ये तत्व सांख्य की पुरुष तथा प्रकृति के समान है। उत्तम पुरुष को इन दोनों से भिन्न परमात्मा कहा गया है। रामानुज क्षर और अक्षर का अर्थ बद्ध एवं मुक्त जीव करते है तथा शंकर क्षर का अर्थ मायाशक्ति बतलाते है। विकल्प a यहां सही है।

11. निम्नलिखित में से कौन-सा सृष्टि की प्रक्रिया को 'यज्ञ' के रूप में स्वीकार करता है?
(a) पुरुष सूक्त (b) नासदीय सूक्त
(c) हिरण्यगर्भ सूक्त (d) तैत्तिरीय ब्राह्मण

Ans : (a) यज्ञ की अवधारणा के विकास के साथ यज्ञ के रूप में सृष्टि प्रक्रिया का कल्पित किया गया है। पुरुष सूक्त के अनुसार, पुरुष की छवि बनाकर किय गये यज्ञ से ब्रह्माण्ड की समस्त वस्तु की रचने (सृष्टि) की सामग्री प्राप्त हुई। हिरण्यगर्भ में हिरण्यगर्भ प्रकृतिरूपी उपादान से सृष्टि का निर्माण करने वाला वर्णित है। नासदीयसूक्त द्वैतपरक आध्यात्मिक ज्ञान का अतिक्रमण कर उच्चतर अद्वैतवाद को स्वीकार करता है। तैत्तिरीय ब्राह्मण, ब्रहमन को शृष्टि का निर्माण कर्ता माना गया है।

12. भगवद्गीता के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा 'कर्तव्य' और 'अकर्तव्य' के बीच निर्णय का प्राधिकारी है?
(a) आप्तवाक्य (b) परम्परा
(c) शास्त्र (d) स्वात्म

Ans : (c) गीमा में कहा गया है कि निष्काम भाव से, कलाशक्ति किो त्यागकर कर्म करने की यह शिक्षा ही गीता का मौलिक उपदेश है। ज्ञानमार्ग की तरह गीता ने इस उपदेश को भक्तिमार्ग से भी जोड़ दिया है। कर्त्ताव्याकर्त्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही तेरे प्रमाण है। यह कहकर गीता ने शास्त्रों का सम्मान भी कर लिया है।

13. भगवद्गीता के अनुसार निम्नलिखित में से कौन प्रकृति से संबंधित नहीं है?
(a) महत् (b) चैतन्य
(c) कार्त्री (d) बुद्धि

Ans : (b) गीता में प्रकृति को महद्‌ब्रह्म भी कहा गया है। प्रकृति, असृधा है - भूमि, जल, अनल, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार। प्रकृति के गुण ही हमारे कर्मों के लिए उत्तर दायी है। प्रकृति ही वास्तविक कार्त्ती है। अहंकार के वश होकर हम अपने को कर्त्ता मानते है।

14. वैशेषिक के अनुसार नित्य द्रव्य है:
(a) प्रयणुक (b) आत्मा
(c) द्रयणुक (d) कर्म

Ans : (b) वैशेषिक दर्शन में आत्मा को नित्य द्रव्य माना गया है। परमाणु के संयोग से उत्पन्न द्रयणुक, त्रयणुक आदि को तथा कर्म को अनित्य कहा गया है।

15. निम्नलिखित में से कौन-सा संबंध नहीं है?
(a) स्वरूप (b) अपृथक्‌सिद्धि
(c) गुण (d) समवाय

Ans : (a) स्वरूप कोई सम्बन्ध न होकर यह तो सम्बन्धित द्रव्य का अपना स्वभाव है। अर्थात यह सम्बन्धों का आभाव है। अपृथकसिद्धि, गुण, समवाय आदि सम्बन्ध है।

16. 'धर्म घर के लिए आतुरता है' के द्वारा कहा गया है:
(a) राधाकृष्णन् (b) विवेकानन्द
(c) टैगोर (d) गाँधी

Ans : (c) टैगोर के अनुसार धर्म एक प्रकार से घर से अलग हुए व्यक्ति की घर के लिए आतुरता () है। जिस प्रकार गृहातुर पहाड़ी पक्षी समय आने पर रात दिन उड़ता हुआ पहाड़ पर अपने घोसले तक पहुँचना चाहता है वैसे ही मनुष्य आत्म अपने घर वापस जाना चाहती है जहां मृत्यु नहीं है। यही घर पहुँचने की आकांक्षा धर्म है।

17. नैयायिकों के अनुसार दिक्, आत्मा और मनस् हैं:
(a) भौतिक (b) मूर्त
(c) भौतिक और मूर्त दोनों (d) न तो भौतिक न मूर्त

Ans : (d) नैयायिकों के अनुसार दिक्‌काल आत्मा, और मनस न तो भौतिक न मूर्त तत्व है। जबकि पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और आकाश भौतिक द्रव्य है।

18. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए। नीचे दिए गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II (T)
(A) ब्रह्म	(i) व्यावहारिक सत्ता
(B) स्वप्न	(ii) पारमार्थिक सत्ता
(C) जगत्	(iii) प्रातिभासिक सत्ता
(D) तुरीय	(iv) तादात्म्य

कूटः

	A	B	C	D
(a)	iii	ii	iv	i
(b)	i	iv	ii	iii
(c)	ii	iii	i	iv
(d)	i	ii	iv	iii

Ans : (c) ब्रह्म, पारमार्थिक सत्ता, स्वप्न, प्रातिभासिक सत्ता, तुरीय तादाम्य अवस्था और जगत व्यावहारिक सत्ता है।

19. कान्तवादी नैतिक, दर्शन में 'क्रिया का वस्तुपरक सिद्धांत' कहलाता है:
(a) सूत्र (b) नियम
(c) व्यावहारिक नियम (d) आदेश

Ans : (d) काण्ट के नैतिक दर्शन में प्रक्रिया का वस्तुपरक सिद्धांत आदेश कहलाता है। जिसका वर्णन वह अपनी पुस्तक क्रिटिक ऑफ प्रेक्टिकल रीजन में करता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

20. निम्नलिखित में से किसने आन्तरिक अनुशास्तिओं की अनुशंसा की है:
(a) बेन्थम (b) स्पेन्सर
(c) मिल (d) एपीक्यूरस

Ans : (c) मिल का नीतिदर्शन सुखवादी उपयोगितावाद है। जिसमें मिल ने बेन्थम द्वारा स्वीकृति नैतिक अंकुशों के अतिरिक्त एक अन्य अंकुश को भी स्वीकार किय है। वह है मनुष्य की परोपकार सम्बन्धी स्वाभाविक भावना। इसे मिल ने आन्तरिक अनुशक्ति की संज्ञा दिया है।

21. 'संकल्प स्वातंत्र्य सत्य है या नैतिक निर्णय एक भ्रम' यह कथन है:
(a) मार्टिन्यू का (b) हॉब्स का
(c) काण्ट का (d) मिल का

Ans : (a) मार्टिन्यू अंतःप्रज्ञावाद के समर्थक है। उनके अनुसार संकल्प स्वातंत्र्य सत्य है या नैतिक निर्णय एक भ्रम है।

22. 'ईश्वरीय नियम ही चरम नैतिक नियम है' निम्नलिखित में से किस एक का यह मत है:
(a) हॉब्स (b) देकार्त
(c) बेन (d) स्पेन्सर

Ans : (b) डेकार्ट ईश्वरीय नियमों को ही चरम नैतिक नियम कहते है। डेकार्क एक ईश्वरवादी दार्शनिक थे। वह ईश्वर में अस्तित्व को परम शुभ और सर्वशक्तिमान सत्ता मानते थे।

23. निम्नलिखित में से सही विकल्प को चिह्नित करें। पूर्णतावाद के अनुसार:
(a) मात्र सुख नैतिकता का मापदण्ड है।
(b) मात्र विवेक नैतिकता का मापदण्ड है।
(c) अन्तः अनुभूति नैतिकता का मापदण्ड है।
(d) उपयोगिता नैतिकता का सूचकांक है।

Ans : (b) पूर्णतावाद अन्तः अनुभूति को नैतिकता का मापदण्ड मानता है। यह नैतिकता को आध्यात्मिक रूप प्रदान करती है। आत्मपूर्णत, आत्मसाक्षात्कार, आत्मज्ञान को नैतिक आदर्श स्वीकार किया गया है। पूर्णतावाद में आत्मनिर्माण पर, स्वार्थवाद एवं परार्थवाद का समन्वय सम्भव, सुखवाद और कर्त्तव्यवाद में भी समन्वय पर बल दिया गया है।

24. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची-I (लेखक)	सूची-II (रचना)
(A) रॉस	(i) प्रोलेगोमेना टू इथिक्स
(B) मूर	(ii) फांउन्डेशन्स ऑफ इथिक्स
(C) कान्ट	(iii) इथिक्स
(D) ग्रीन	(iv) मेटाफिजिक्स ऑफ मॉरल्स

कूटः

	A	B	C	D
(a)	ii	iii	iv	i
(b)	i	iv	ii	iii
(c)	ii	iii	i	iv
(d)	iv	ii	i	iii

Ans : (a) रॉस, फाउन्डेशन्स ऑफ इथिक्स, मूर, इथिक्स, काण्ट, मेटाफिजिक्स ऑफ मारल्ज तथा ग्रीन, प्रोलेगोमेना टू इथिक्स।

25. अधोलिखित में से किसने कहा है 'शुभ संकल्प के अतिरिक्त अन्य कुछ भी निरपेक्ष रूप से शुभ नहीं है'?
(a) क्लार्क (b) मार्टिन्यू
(c) सिजविक (d) कान्ट

Ans : (d) काण्ट अपने 'शुभ-संकल्प' सम्बन्धी सिद्धांत में, शुभ-संकल्प को निरपेक्ष रूप से शुभ बताया है। काण्ट का नैतिकता संबंधी मत कर्त्तव्य के लिए कर्त्तव्य काण्ट के अनुसार शुभ-संकल्प से युक्त कर्म हमेशा ही शुभ होता है। यह किसी वस्तु की प्राप्ति का साधन नहीं है।

26. ''मात्र कार्य का प्रयोजन ही उसके नैतिक निर्णय का आधार है'', निम्नलिखित में से किस एक का यह मत है?
(a) सुखवादी (b) बुद्धिवादी
(c) अंतर्ज्ञानवादी (d) कठोरतावादी

Ans : (c) अंतर्ज्ञानवादी मत में कार्य मात का प्रयोजन ही उसके नैतिक निर्णय का आधार है। इसमें कार्य के साध्य को महत्व नहीं दिया जाता है। इसमें कार्य के हेतु पर ध्यान दिया जाता हे। अंतर्तानवाद एक तरह का हेतुवाद है। जो कार्य के साध्य को जाने भी अंतर्ज्ञानवादी कार्य को अच्छा या बुरा कह देता है। अर्थात, चोरी का साध्य जाने बिना ही इसको अच्छा कह देते है।

(नीतिशास्त्र का सर्वेक्षणः संगमलाल पाण्डेय)

27. निम्नलिखित विचारकों में से किस एक ने ए-वर्ड, डी-वर्ड तथा जी-वर्ड को एक परिवार माना है?
(a) मूर (b) रॉस
(c) स्पेन्सर (d) नॉवेल स्मिथ

Ans : (d) अधिनीतिशास्त्री नॉवेल स्मिथ को परामर्शवादी माना जाता है। नावेल स्मिथ का विचार है नैतिक निर्णययों का प्रयोग परामर्श देने के अतिरिक्त अन्य बहुत से कार्यों के लिए किया जा सकता है। नैतिक भाषा सम्बन्धित अपने मत में उन्होंने ए-वर्ड, डी-वर्ड तथा जी-वर्ड को एक परिवार माना है

28. निम्नलिखित में से किसने कहा है कि नैतिक निर्णयों में संवेगात्मक तत्व होते हैं?
(a) मूर (b) रॉस
(c) एयर (d) स्टीवेन्शन

Ans : (c) नैतिक निर्णयों में संवेगात्मक तत्व होते है यह कथन ए.जे. एयर का है। एयर नैतिक निर्णयों से सम्बन्धित मत संवेगाभिव्यक्तिवाद है। मूर गैरप्रकृतिवाद या अप्रकृतिवादी है। स्टीवेन्शन ने नैतिक अभिव्यक्ति के बजाय उत्प्रेरणा पर अधिक बल दिया है। इन्होंने भी संवेगवाद का समर्थन किया है। गैर प्रकृतिवादी या अप्रकृतिवादी अन्तःप्रज्ञावादी मूर, रॉस दोनों है।

नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत : वेद प्रकाश वर्मा

29. गैलवे धर्म के प्रकार के रूप में निम्नलिखित को स्वीकार नहीं करता है?
(a) जन जातीय धर्म (b) राष्ट्रीय धर्म
(c) पूर्णव्यापी धर्म (d) आरम्भिक धर्म

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) गैलवे धर्म के प्रकार के रूप में आरम्भिक धर्म को स्वीकार नहीं करता जबकि जनजातीय धर्म, राष्ट्रीय धर्म और सार्वभौमिक धर्म को स्वीकार करते है।

30. निम्नलिखित में से कौन-सा 'ताओ' का स्रोत है?

(a) आरम्भिक धर्म (b) प्रकृतिवादी धर्म
(c) मानववादी धर्म (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (b) ताओ क स्रोत प्राकृतिवादी धर्म है। ताओ धर्म चीन में उत्पन्न धर्म है। इस धर्म में प्राकृतिक अराधना होती है। ताओ के दो सम्प्रदाय 'छवुआनचनताओ पंथ' और 'चड़यीताओ पंथ'। ताओ धर्म चीन का मूल धर्म और दर्शन है। इसमें सर्वोच्च देवी और देवता क्रमशः यिन और यान है। ताओ-त्सी द्वारा रचित ग्रन्थ दाओ-दे-चिंग और जुआंग-जी इस धर्म और दर्शन प्रमुख ग्रन्थ।

31. निम्नलिखित में से कौन-सी बात गाँधी के विषय में सत्य है?

(a) ईश्वर और सत्य सार्वभौमिक अवधारणाएं हैं।
(b) ईश्वर निरपेक्ष है और सत्य सापेक्ष हैं।
(c) ईश्वर और सत्य परस्पर परिवर्तनीय है।
(d) ईश्वर सत्य है और सत्य ईश्वर है।

Ans : (d) गांधी जी के दर्शन में सत्य को बड़ा महत्व दिया गया है। उन्होंने सत्य को सर्वोच्च साध्य माना है। और अहिंसा को उसका साधन। उनके अनुसार, सत्य ईश्वर है और ईश्वर सत्य है। गांधी जी के अनुसार सत्य के अतिरिक्त ईश्वर कुछ और है तो वैसे ईश्वर की उन्हें आवश्यकता नहीं है।

32. गाँधी 'रोटी के लिए श्रम' के सिद्धांत में अनिवार्यतः सम्मिलित है:

(a) मानसिक कार्य (b) शारीरिक कार्य
(c) सामाजिक कार्य (d) राजनैतिक कार्य

Ans : (b) गांधी जी के रोटी के लिए श्रम के सिद्धांत में शारीरिक श्रम अनिवार्यतः सम्मिलित है। उनका यह सिद्धांत सामाजिक असमानता को कम करने में उपयोगी होगा। जीवित रहने के लिए हर व्यक्ति को श्रम करना आवश्यक है। हर व्यक्ति को शारीरिक श्रम की गरिमा को समझना चाहिए। यह श्रम स्वेच्छापूर्ण सहयोग है।

33. गाँधी के अनुसार अहिंसा नहीं है:

(a) मानव प्रजाति का नियम
(b) मानव क्रिया की गाथा
(c) समस्त जीवन के प्रति शुभेच्छा
(d) निष्क्रिय प्रतिरोध

Ans : (d) गाँधी जी के अनुसार, अहिंसा निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं है। अहिंसा सर्वप्रमुख सद्गुण है। अहिंसा सक्रिय प्रतिरोध है। यह बिना किसी को क्षति पहुँचाये हिंसक शक्ति को नियंत्रित रखने की संकल्प शक्ति है। अहिंसता निर्भयता और प्रेम है। अहिंसा समस्तकर्मो को प्रेरणा है। यह उघसीनता या निस्क्रियता की मनोवृत्ति नहीं है।

34. गाँधी विचारधारा के आर्थिक कार्यक्रम आधारित थे:

(a) आर्थिक समझ के आदर्शात्मक सिद्धांत
(b) लोगों की आवश्यकताओं के लिए उत्पादन करना
(c) आत्मनिर्भरता का आदर्श
(d) समस्त आर्थिक उत्पादन में हिस्सेदारी

Ans : (b) गांधी यह समझते हैं कि पूर्ण आर्थिक समानता का आदर्श प्रायः अप्रात्य आदर्श है। उनके अनुसार समाज की आर्थिक संरचना का आधार भी नैतिक ही होना अनिवार्य है। महात्मा गांधी के अनुसार अगर मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार उत्पादन करे तो दुनिया में कोई भूखा नहीं मरेगा।

35. वल्लभ के अनुसार ब्रह्म है:

(a) निर्गुण-मात्र (b) सगुण-मात्र
(c) निर्गुण और सगुण दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Ans : (b) वल्लभ सगुण ब्रह्म के उपासक है। उनके दर्शन को शुद्धाद्वैत वेदान्त कहा जाता है। शुद्धाद्वैत अर्थात माया के सम्बन्ध से रहित शुद्ध ब्रह्म का अद्वैत। वल्लभ वेदान्त में प्रमेयतत्व एकमात्र ब्रह्म है जो सर्वधर्मविशिष्ट, सविशेष, सगुण, शुद्ध धर्म के समान हेयगुणरहित है।

36. मध्व के अनुसार ब्रह्म और जीव का संबंध है:

(a) अभेद (b) भेद
(c) भेदाभेद (d) उपरोक्त सभी

Ans : (b) मध्व ब्रह्म और जीव में भेद सम्बन्ध को मानते है। मध्व का दार्शनिक मत द्वैतवादी वेदान्त है। वह पंचविद्य भेद को मानते है। (1) ब्रह्म का जीव से (2) ब्रह्म का जड़ से (3) जीव का जड़ से (4) जीव का जीव से तथा (5) जड़ का जड़ से भेद मानते है।

37. किस के द्वारा 'संवृत्ति' का 'तथ्यसंवृत्ति' एवं 'मिथ्यासंवृत्ति' में भेद किया गया है:

(a) आर्यदेव (b) दिङ्नाग
(c) नागार्जुन (d) चंद्रकीर्ति

Ans : (d) चन्द्रकीर्ति ने संवृत्ति को लोकसंवृत्ति (तथ्यसंवृत्ति) तथा मिथ्यसंवृत्ति में विभक्त किया है। संवृत्ति मूलाविद्या है, व्यक्तिगत अविद्या नही। अतः इसका निरोध निर्विकल्प प्रज्ञा द्वारा सम्भव है बौद्धिक ज्ञान द्वारा नहीं क्योंकि यह स्वयं बुद्धि-विकल्प है।

38. कूटों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित को सुमेलित करें:

सूची-I	सूची-II
(A) शंकर	(i) विष्णुतत्वविनिर्णय
(B) वल्लभ	(ii) दृगदृश्य विवेक
(C) मध्व	(iii) प्रस्थानरत्नाकर
(D) निम्बार्क	(iv) वेदांत पारिजात कुसुम

कूट:

	A	B	C	D
(a)	iii	i	iv	ii
(b)	iii	iv	ii	i
(c)	ii	iii	i	iv
(d)	iv	i	iii	ii

Ans : (c)

शंकर	-	दृगदृश्य विवेक
वल्लभ	-	प्रस्थानरत्नाकर
मध्व	-	विष्णुतत्वविनिर्णय
निम्बार्क	-	वेदांत पारिजात कुसुम

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

39. शब्द संबंध मूलक हैं अतः ये मात्र सामान्य (जाति) का बोध करते हैं न कि वास्तविक (स्वलक्षण) का:
(a) आर्यदेव (b) चंद्रकीर्ति
(c) नागार्जुन (d) दिङ्नाग

Ans : (d) शब्द संबंधमूलक है अतः ये मात्र सामान्य (जाति) का बोध करते है न कि वास्तविक (स्वलक्षण) का यह कथन दिङ्नाग का है। दिङ्नाग का सामान्य सम्बन्धी मत अपोहवाद है।
(भारतीय दर्शनः डॉ. नन्द किशोर देवराज)

40. हरमन्यूटिक्स को अपने आप को ज्ञानमीमांसीय समस्याओं की व्याख्या तक सीमित कर लेना चाहिए तथा मानव अस्तित्व की गहन अवस्थाओं में संलिप्त होने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। यह मत है:
(a) पॉल रिकर (b) एमीलिओ बेट्टी
(c) हैबरमास (d) देरीदा

Ans : (b) हरमन्यूटिक्स को अपने आप को ज्ञानमीमांसीय समस्याओं की व्याख्या तक सीमित कर लेना चाहिए तथा मानव अस्तित्व की गहन अवस्थाओं में संलिप्त होने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। यह कथन एमीलिओ बेट्टी का है।

41. निम्नलिखित में से किसने व्याकरणिक व्याख्या और मनोवैज्ञानिक व्याख्या के बीच भेद किया है?
(a) विल्हेल्म डिल्थे (b) फ्रेडरिक श्लेयमाकर
(c) गैडेमर (d) हैडेगर

Ans : (b) फ्रेडरिक श्लेयमाकर अपने हर्म्युनिटिक्स में व्याकरणिक व्याख्या और मनोवैज्ञानिक व्याख्या के बीच अन्तर क्रिया है। उन्हें रोमांटिक हर्म्युनिटिक्स का समर्थक कहा जाता है।

42. सत्य प्रणालीबद्ध संसक्त समग्रता का एक अनिवार्य संघटक है- यह मत हो सकता है:
(a) सत्य के व्यावहारवादी सिद्धांत का
(b) सत्य के संवाद सिद्धांत का
(c) सत्य के संसक्तता सिद्धांत का
(d) सत्य के संबंधमूलक सिद्धांत का

Ans : (c) सत्य का संसक्तता सिद्धांत के अनुसार सत्य प्रणालीबद्ध संसक्त समग्रता का एक अनिवार्य संघटक है। संसक्तता या सुसंगति सिद्धांत के अनुसार, कोई संप्रत्यय अथवा विश्वास तभी सत्य हो सकता है। जब वह पूर्वमान्य एवं पहले से स्थापित विश्वासों के साथ सामंजस्य रखता हो अर्थात उनके विरूद्ध न हो।

43. निम्नलिखित दार्शनिकों में किस का मत है कि सत्यता का संवाद सिद्धांत तथ्य के संघटक तथा प्रतिज्ञपित के संघटक के बीच का तादात्म्य है?
(a) फ्रेगे (b) रसेल
(c) कार्नेप (d) क्वाइन

Ans : (b) रसेल सत्य के संवादिता के तार्किक सिद्धांत का समर्थक हैं। उनके अनुसार किसी प्रतिज्ञप्ति की सत्यता का अर्थ तथ्यों से संवाद है, न कि अनुभव से संवाद। यदि प्रतिज्ञप्ति के संघटक तथा तथ्य के संघटक के बीच तादाम्य है तो वह संवादिता सिद्धांत

44. निम्नलिखित में से कौन-सा 'अत्यन्ताभाव' की संकल्पना की सही तरह से उद्घाटित करता है?
(i) वायु में रंग का पूर्ण अभाव।
(ii) दो वस्तुओं के बीच भूत, वर्तमान और भविष्य में संबंध का अभाव।
(iii) इस अभाव का एक आरंभ होता है किन्तु अंत नहीं होता।
कूटः
(a) केवल (i) और (iii) सही है।
(b) केवल (i) और (ii) सही है।
(c) केवल (i) सही है।
(d) केवल (ii) सही है।

Ans : (b) अत्यन्ताभाव संसर्ग का नित्य आभाव है। अर्थात किसी भी प्रकार के संसर्ग (संबंध) के त्रकालिक आभाव को अत्यन्ताभाव कहां है। जैसे- वायु में रंग का पूर्ण आभाव। वायु में रंग - रूप आदि का वैकालिक आभाव होता है। अतः यहां अत्यन्तभाव है। अत्यन्ताभाव दो वस्तुओं के बीच भूत, वर्तमान और भविष्य में संबंध का अभाव है। इस आभाव का न आरम्भ होता है और न ही अंत होता है।

45. निम्नलिखित में से कौन-सा मत अवस्तुवादियों का है?
(a) इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि प्रत्येक घोषणा वाक्य निश्चित रूप से सत्य या असत्य होता है।
(b) प्रत्येक घोषणा वाक्य निश्चित रूप से सत्य या असत्य होता है।
(c) प्रत्येक घोषणा वाक्य सदैव सत्य होता है।
(d) प्रत्येक घोषणा वाक्य सदैव असत्य होता है।

Ans : (a) अ-वस्तुवादी (Anti-realism), इस बात की कोई गारण्टी नही कि प्रत्येक घोषणा वाक्य निश्चित रूप से सत्य या असत्य हो।

46. फ्रेगे के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही कूट चिह्नित करें।
(i) फ्रेगे संदर्भ और अभिव्यक्ति की समझ के बीच भेद प्रस्तुत करता है।
(ii) वस्तुएँ वह हैं जिनके लिए नाम विशेष प्रयुक्त हैं।
(iii) उसने परिमाणीकरण के सिद्धांत की खोज की।
कूटः
(a) केवल (i) और (ii) सही है।
(b) केवल (i) और (iii) सही है।
(c) केवल (iii) सही है।
(d) सभी (i), (ii) और (iii) सही है।

Ans : (d) फ्रेगे के अनुसार नाम एवं वर्क वाक्य दोनों में अर्थ एवं निर्देश होता है। तादात्म्य कथनों को सार्थक कथन बतलाने के लिए फ्रेगे ने यह विभेद किया है। वस्तुएं वह है जिनके लिए नाम विशेष प्रयुक्त है। उसने परिमाणीकरण के सिद्धांत की खोज की।

47. निम्नलिखित में किस दार्शनिक द्वारा मानव अधिकारों की अवधारणा की आलोचना यह कह कर की जाती है कि ''ऐसा कोई भी अधिकार तथा विश्वास नहीं है तथा इसमें विश्वास करना वैसा ही है जैसे चुडैलों और एकश्रृंग में विश्वास करना।''
(a) जेरेमी बेन्थम (b) एल्सडेयर मैकेन्टेयर
(c) एडमण्ड बर्क (d) जॉन लॉक

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (b) जान लॉक मानव अधिकारों का प्राकृतिक अधिकार कहता है। लेकिन एल्सडेयर मैकेनेयर ने इसको आलोचना करते हुए कहता है कि ऐसा कोई भी अधिकार तथा विश्वास नहीं है इसमें विश्वास करना वैसा ही है जैसे चुड़ैलों और एक शृंग में विश्वास करना।

48. न्यायमत के अनुसार अणु निष्क्रिय और गतिहीन हैं यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है:

(i) आत्मा में रहने वाले धर्म एवं अधर्म के अनुरूप अदृष्ट द्वारा अणुओं में गति प्रदान की जाती है।
(ii) अणुओं का संयोग ज्यामितीय प्रगति में होता है न कि अंक अणितीय तरीके में।
(iii) भौतिक व्यवस्था के पीछे एक नैतिक व्यवस्था होती है।

कूट:
(a) (i) एक वैध अनुमान है।
(b) (ii) एक अवैध अनुमान है।
(c) (i), (iii) एक वैध अनुमान है।
(d) (i), (ii), (iii) वैध अनुमान है।

Ans : (d) (i), (ii), (iii) वैध अनुमान है। न्यायमत में अणुओं का निस्क्रिय और गतिहीन माना जाता है। जिसके परमात्मा, अदृष्ट से गति लेकर संचालित करता है। अदृष्ट नैतिक व्यवस्था है।

49. उस कूट को चिन्हित करें जिसमें सही अभिकथन न हो:

(a) एक संयोजक सत्य है यदि इसके सभी संघटक सत्य हैं अन्यथा यह असत्य है।
(b) प्रत्येक यौगिक अभिकथन एक सत्यता-फलन अभिकथन होता है।
(c) द्विमूल्याश्रित तर्कशास्त्र में प्रत्येक अभिकथन या तो सत्य होता हैं या असत्य।
(d) एक सरल अभिकथन वह अभिकथन है जिसका संघटक इसके भाग के रूप में अन्य कोई अभिकथन नहीं होता।

Ans : (-) सत्य कथन (a), (c), (d)
असत्य कथन (b) प्रत्येक यौगिक अभिकथन एक सत्यता-फलन अभिकथन है।

50. निम्नलिखित में से किसके अनुसार देश और काल प्रागनुभविक प्रत्यक्ष हैं?

(a) ह्यूम (b) काण्ट
(c) लाइब्नित्स (d) आईस्टीन

Ans : (b) काण्ट अपने दर्शन में देश-काल को प्रागनुभाविक प्रत्यक्ष मानता है। वह इन्हें संवेदना शक्ति तथा संवेदन द्वार कहता है। काण्ट देश-काल को प्रत्यक्ष के आकार मानता है। उसके अनुसार देश काल स्वरूपता अनुभव न होकर प्रागनुभविक है। किन्तु वे संप्रत्यय न होकर शुद्ध संवेदनाएं है।

51. उपमान के संदर्भ में सही अभिकथन का परीक्षण करें तथा सही कूट का चयन करें।

(i) वेदान्ती तर्क देते हैं कि उपमान आधार वाक्यों से निगमित किया जा सकता है।
(ii) सांख्या संप्रदाय के चिंतकों के अनुसार उपमान का आविर्भाव प्रत्यक्ष में संभव है।
(iii) न्याय मतानुसार उपमान एक शब्द और उसके द्वारा इंगित वस्तु के बीच के संबंध का ज्ञान है।

कूट:
(a) केवल (i) और (ii) सही है।
(b) केवल (ii) और (iii) सही है।
(c) केवल (iii) सही है।
(d) सभी (i), (ii) और (iii) सही है।

Ans : (d) भारतीय दर्शनों में उपमान को प्रमाण माना गया है। न्यय दर्शन में उपमान को स्वतंत्र प्रमाण के रूप में माना गया है। वैदान्त दर्शन में उपमान को स्वतंत्र प्रमाण माना गया है। वेदान्तियों के अनुसार उपमान का निगमन आधार वाक्यों से किया जा सकता है। सांख्य दर्शन में उपमान को स्वतंत्र प्रमाण न मानकर उसका अविर्भाव प्रत्यक्ष प्रमाण में कर लिया गया है। जबकि न्याय मतानुसार उपमान एक शब्द और उसके द्वारा इंगित वस्तु के बीच तुलनात्मक संबंध का ज्ञान है।

52. दिये गये अभिकथन (A) और तर्क (R) की परीक्षा आगमनात्मक अनुमान के आलोक में करें और नीचे दिये गये कूट में से सही का चयन करें।

अभिकथन (A) : आगमनात्मक अनुमान में ज्ञात से अज्ञात की ओर जाते हैं।
तर्क (R) : आगमनात्मक अनुमान में किसी जाति विशेष के सभी सदस्यों के निर्णय के द्वारा उस जाति विशेष के सभी सदस्यों के बारे में निर्णय तक पहुँचते है।

कूट:
(a) दोनों (A) तथा (R) सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) दोनों (A) तथा (R) सही हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सही है, और (R) गलत है।
(d) (R) सही है, और (A) गलत है।

Ans : (c) आगमनात्मक अनुमान में हम ज्ञात विशिष्ट तर्कवाक्यों से सामान्य/व्यापक अज्ञात की ओर अग्रसर होते है। कथन (A) सही है लेकिन कथन (R) गलत है।

53. किसका मत है कि द्रव्य, गति, देश और काल सापेक्षताएँ हैं?

(a) न्यूटन (b) आइन्स्टीन
(c) ह्यूम (d) लाइबनिज

Ans : (b) आइन्सटीन द्रव्य, गति, देश और काल को सापेक्षताएं कहते है। उनका सिद्धांत सापेक्षतावादी है। न्यूटन के अनुसार देश और काल पारमार्थिक दृष्टिवास्तविक और स्वतंत्रता सत्ता है। लाइबनित्ज देश-काल में वस्तुओं का संबंध मानते है और उन्हें व्यावहारिक दृष्टि से अयथार्थ मानते है।

54. मिल के अनुसार निम्नलिखित में कौन-सा 'एकरूपता' का प्रकार नहीं है। सही विकल्प को चिह्नित करें।

(a) अनुक्रम की एकरूपता
(b) विज्ञान की एकरूपता

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) सह-अस्तित्व की एकरूपता
(d) समानता की एकरूपता

Ans : (b) मिल के अनुसार एकरूपता का प्रकार हे-
(1) अनुक्रम, (2) सह अस्तित्व, (3) समानता की एकरूपता।

55. नैतिक निर्णय का आधार कर्म फल है। निम्नलिखित में से किस एक का यह मत है?
(a) सुखवादी (b) अंतर्ज्ञानवादी
(c) कठोरतावादी (d) आदर्शवादी

Ans : (a) नैतिक निर्णय का आधार कर्म फल को मानने वाला नैतिक संप्रदाय सुखवादी है। यदि कोई कर्म कर्त्ता के लिए सुखनुभूति को सम्भव बनाता है तो वह कर्म नैतिक दृष्टि से अच्छा कर्म है। और यदि कोई कर्म वैसा नही है तो वह बुरा होगा।

56. ऑस्टिन जब संवाद का विवरण प्रस्तुत कर रहे होते हैं तब निम्नलिखित में से किसके बीच भेद करते हैं?
(a) डिस्क्रिप्टिव एण्ड डेमाँनस्ट्रेटिव कन्वेंशन्स
(b) डिस्क्रिप्टिव एण्ड कोरिलेटिव कन्वेंशन्स
(c) डेमाँस्ट्रेटिव एण्ड लोक्युशनरी कन्वेंशन्स
(d) लोक्युशनरी एण्ड परलोक्युशनरी कन्वेंशन्स

Ans : (a) ऑस्टिन जब संवाद का विवरण प्रस्तुत कर रहे होते हैं तो डिस्क्रिप्टिव एण्ड डेमॉन्स्ट्रेटिव कन्वेंशन्स के बीच अन्तर करते हैं। ऑस्टिन भी विट्गेसटाइन और राइल की भाँति भाषा विश्लेषण प्रस्तुत करता है। सर्वप्रथम उसने भाषा के दो गुप्त प्रयोगों में अन्तर्गत करता है- शाश्वत (Constrative) तथा सम्पादनात्मक (Performance) अभिव्यक्तियां।

57. निम्नलिखित में से कौन दार्शनिक फ्रेगे के स्वाभाविक अंकों के श्रेणी निर्माण की विधि की मात्र तार्किक धारणाओं के कारण आलोचना करता है?
(a) विट्गेन्स्टाइन (b) ऑस्टिन
(c) बर्ट्रेण्ड रसेल (d) स्ट्रॉसन

Ans : (c) बर्ट्रेण्ड रसल दार्शनिक फ्रेगे के स्वाभाविक अंको की श्रेणी निर्माण की विधि की मात्र तार्किक घटनाओं की आलोचना करता है। रसेल का मत तार्किक अनुवाद और फ्रेगे का मात्र तर्कान्तर्भूटगाण्डिहवाद (Logi) है।

58. रसेल के अनुसार 'डिनोटिंग फ्रेजेज' वे मुहावरे हैं:
(a) जो पूर्णार्थक है।
(b) जिनका स्वयं में कोई अर्थ नहीं होता है।
(c) तर्कवाक्य से स्वतंत्र अर्थ वाले है।
(d) स्वयं में अर्थ रखते हैं।

Ans : (c) रसेल के अनुसार 'डिनोटिंग फ्रेजेज' के मुहावरे है जिनका स्वयं में कोई अर्थ नहीं है। लेकिन यह हो सकता है जिन वाक्यों में उनका प्रयोग हो वह वाक्य अर्थपूर्ण हो। रसेल के अनुसार ऐसे वाक्यांश केवल अपने भारतीय आकार से कुछ कहते है, वस्तुतः अपने में कोई वस्तु सूचित नहीं करते।

समकालीन पाश्चात्य दर्शन - बसन्त कुमार लाल

59. तर्क निष्ठ भाववाद के अनुसार 'प्रोटोकाल स्टेटमेंट' सन्दर्भित करते हैं:
(a) पूर्णतः आनुभाविक अभिकथन को
(b) साधारण सम्बन्धात्मक को
(c) प्राथमिक अभिकथन को
(d) लाक्षणिक अभिकथन को

Ans : (c) कारनैप के अनुसार अर्थपूर्ण भाषा अर्थपूर्ण इसी कारण है कि उसके आधार कुछ ऐसे निरीक्षण वाक्य या स्वानुभवमूल वाक्य () या प्रोटोकॉल स्टेटमेंट है जो उसके सत्यापन के आधार है। तार्किक भाववाद में प्रोटोकॉल स्टेटमेंट प्राथमिक अभिकथन के सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है।

60. आगमन के सन्दर्भ में सही कथनों पर विचार करें और सही कूट का चयन करें।
(i) जे. एस. मिल आगमन को अनिवार्यतः एक प्रमाणदायी प्रक्रिया मानते हैं।
(ii) ह्वेवेल इसे अनिवार्यतः अन्वेषण मानते है।
(iii) चार्ल्स पीयर्स इसे सामान्यीकरण के रूप में देखते हैं तथा इसे अनुमान के विरूद्ध कहते हैं।

कूटः
(a) केवल (i) और (ii) सही हैं।
(b) केवल (i) और (iii) सही है।
(c) सभी (i), (ii) और (iii) सही है।
(d) केवल (iii) सही है।

Ans : (c) जे.एस. मिल आगमन को अनिवार्यतः प्रमाणदायी प्रक्रिया मानते है। ह्वेल इसे अनिवार्यतः अन्वेषण मानते है। चार्ल्स पियर्स इसे सामान्यीकरण के रूप में देखते है तथा इसे अनुमान के विरूद्ध कहते है। जबकि ह्यूम आदि दार्शनिक आगमन की प्रक्रिया पर ही सन्देह करते है।

61. निम्नलिखित में से कौन सा अभिकथन संशयवादी को स्वीकार नहीं है?
(a) कोई भी निरपेक्ष, प्रश्नातीत, पूर्ण ज्ञान संभव नहीं है।
(b) जब प्रमाण अनिश्चित हो, निर्णय को स्थगित रखा जाना चाहिए।
(c) ऐसे निश्चित और शाश्वत मूलय हैं जो`समय और स्थान से निरपेक्ष रहते हैं।
(d) प्रश्नात्मकता और संशयात्मकता ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में है।

Ans : (c) संशयवादी किसी भी वस्तु की निश्चयता और शश्वता पर संशय करता है। संशयवाद किसी भी वस्तु के अस्तित्व में पूर्ण विश्वास नहीं करता है। उसके अनुसार कोई भी निरपेक्ष, प्रश्नतीत, पूर्ण ज्ञान संभव नहीं है। प्रश्नात्मकता और संशयात्मकता ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में है।

62. प्लेटो के संदर्भ में निम्नलिखित में कौन-सा अभिकथन सही है/हैं? सही कूट का चयन करें।
(i) न्याय आत्मा का गुण हे।
(ii) सामुहिकता की आत्मा को व्यक्ति को व्याप्त करना चाहिए।
(iii) नैतिकता शाश्वत परंपरामात्र नहीं है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूटः
(a) केवल (i) सही हैं।
(b) केवल (ii) सही है।
(c) केवल (i) और (iii) सही है।
(d) (i), (ii) और (iii) सही है।

Ans : (d) प्लेटो न्याय को आत्मा का गुण मानता है। उसके अनुसार सामुहिकता की आत्मा को व्यक्ति का व्याप्त करना चाहिए। नैतिकता को प्लेटो शाश्वत परम्परागत नहीं मानता।

63. सूची-I के संदर्भ में सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही कूट का चयन करें।

	सूची- I		सूची- II
(A)	वैयक्तिक प्रत्ययवाद	(i)	सीमीत आत्मा एक का अंश, प्रकार अथवा अभास है।
(B)	एकतत्व प्रत्ययवाद	(ii)	मूर्तसत्ता वैयक्तिक आत्मत्व है।
(C)	आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद	(iii)	वस्तुओं के आदर्श रहित रूपों की यथार्थता को स्थापित करते है।
(D)	यथार्थवादी प्रत्ययवाद	(iv)	प्रकृति सीमित मन का प्रक्षेपण मात्र है।

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	iv	iii	ii	i
(b)	ii	iv	i	iii
(c)	ii	i	iv	iii
(d)	i	ii	iii	iv

Ans : (c)

(A)	वैयक्तिक प्रत्ययवाद	(ii)	मूर्तसत्ता वैयक्तिक आत्मत्व है।
(B)	एकतत्व प्रत्ययवाद	(i)	सीमीत आत्मा एक का अंश, प्रकार अथवा अभास है।
(C)	आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद	(iv)	प्रकृति सीमित मन का प्रक्षेपण मात्र है।
(D)	यथार्थवादी प्रत्ययवाद	(iii)	वस्तुओं के आदर्श रहित रूपों की यथार्थता को स्थापित करते है।

64. प्रत्यक्ष स्वलक्षण का भ्रमरहित ज्ञान है, यह मत हैः
(a) बौद्धों का (b) प्रभाकर का
(c) नैयायिकों का (d) वेदांतियों का

Ans : (a) बौद्ध दर्शन में दो प्रमाण माने गये है - प्रत्यक्ष, अनुमान। प्रतिक्षण परिवर्तित पदार्थों को बुद्धि रचित मानने वाले आचार्यदिङ्नाग ने प्रत्यक्ष का विषय केवल स्वलक्षणों को माना है। स्वलक्षण को वो समस्त कल्पनाओं से रहित मानते है।

65. 'पर्याप्त हेतु का नियम' का प्रतिपादक कौन है?
(a) अरस्तु (b) प्लेटो
(c) लाईब्नित्स (d) काण्ट

Ans : (c) पर्याप्त हेतु (कारणता) का नियम लाईब्नित्स ईश्वर अस्तित्व के प्रमाण के लिए प्रतिपादित करता है। लाईब्नित्स के अनुसार केवल वही वस्तु सत्य है जिसका पर्याप्त कारण हो। इसी प्रकार इस श्रृष्टि का भी कोई पर्याप्त कारण होना चाहिए। श्रृष्टि का यह पर्याप्त कारण ईश्वर ही हो सकता है। लाईब्नित्स का दिया गया यह तर्क प्रथम कारण के स्थान पर पर्याप्त कारण की मान्यता पर आधारित है।

66. दी गई युक्ति की परीक्षा करें और नीचे दिए गए कूटों में से तर्कदोष के सही नाम का चयन करें।
युक्तिः
सभी घोड़े चौपाया हैं।
कोई भी बैल घोड़ा नहीं है।
कोई भी बैल चौपाया नहीं है।
कूटः
(a) अनुचित बृहत-पद-दोष
(b) अनुचित मध्य-पद-दोष
(c) अनुचित लघु-पद-दोष
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (a) दी गई उपरोक्त युक्ति में अनुचित वृहत-पद () दोष है। क्योंकि वृहत पद आधार वाक्यों में व्याप्त नहीं है। जो नियम-3 वैध निरपेक्ष न्यायवाक्य में कोई भी ऐसा पद निष्कर्ष में व्याप्त नहीं हो सकता जो आधारवाक्यों में न व्याप्त हो/का उलंघन है।

67. 'तर्क वाक्यों के विरोध' के अनुसार यदि तर्क वाक्य, 'गर्मी के दिन सामान्यतः गर्म होते हैं' सत्य है तो तर्क वाक्य 'गर्मी के सीभी दिन गर्म है' होगाः
(a) सत्य (b) असत्य
(c) संदिग्ध (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) परम्परागत विरोध वर्ग के अनुसार, 'गर्मी के दिन सामान्यतः गर्म होते है।' को अंशव्यापी स्वीकारात्मक ''तर्कवाक्य माना जा सकता है। वहीं गर्मी के सभी दिन गर्म है को सर्वव्यापी स्वीकारत्मक तर्कवाक्य माना जा सकता है। '' और '' में उपाश्रयण उपाश्रित सम्बन्ध है। लेकिन इस विरोध वर्ग के अनुसार यदि सत्य होगा तो संदिग्ध हो जायेगा।

68. एक युक्ति में अनिवार्यतः होते हैंः
(a) आकार और प्रतिज्ञप्ति
(b) सत्यता और आकार
(c) सत्यता और असत्यता
(d) आकार, प्रतिज्ञप्ति और सत्यता

Ans : (a) प्रत्येक युक्ति में एक आकार और कुछ प्रतिज्ञप्तियां होती है। जिनके आधार पर निष्कर्ष निगर्मित किया जाते है। यह अनिवार्य है।

69. तर्कवाक्य ''मक्खियाँ और ततैया डंक तभी चुभोती हैं जब वे या तो क्रुद्ध अथवा डरी हुई हों'' का सही प्रतीकात्मक रूप निम्नलिखित में से कौन है? (Ax, Wx, Sx, Ax, Fx)
(a) $(\exists x)\{(Bx, Wx) \supset [(Ax \vee Fx) \supset Sx]\}$

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(b) $(x)(Bx \vee Wx) \supset [(Ax \vee Fx) \supset Sx]\}$

(c) $(x)(Bx \vee Wx) \supset Ax \vee Fx \supset Sx$

(d) $(x)(Bx \vee Wx) \supset (Ax \vee Fx) \supset Sx$

Ans : (b) Bx = 'Bees', Wx = Waps, Sx = Sting, Ax = Angry, Fx = Frightined मक्खियां (Bees) और ततैया (Waps) डंक तभी चुभोती (Sting) है जब या तो क्रुद्ध (Angry) अथवा डरी (Frightened) हुई हो। का प्रतीकात्मक रूप है-
$(x)(Bx \vee Wx) \supset [(Ax \vee Fx) \supset Sx]\}$

70. **नीचे दी गई युक्ति की परीक्षा करें और सही कूट को चिह्नित करें।**

$P \supset (Q \vee R)$

$S \supset (T.U)$

$-T$

$\therefore P \supset U$

कूटः

(a) मान्य (b) अमान्य

(c) सत्य (d) असत्य

Ans : (b) अमान्य है। यह युक्ति आकार ही अवैध है।

71. **युक्ति I और युक्ति II को सावधानी पूर्वक पढ़ें और सही कूट को चिह्नित करें।**

युक्ति I : यदि वहाँ धूम्र है तो अग्नि है। वहाँ धूम्र नहीं है। इसलिए वहाँ अग्नि नहीं है।

युक्ति II: मृत्यु जीवन का अंत है। जीवन का अंत पूर्णता है। इसलिए मृत्यु पूर्णता है।

(a) युक्ति I पूर्ववर्ती निषेध दोष है तथा II एक वैध युक्ति है।

(b) I वैध है तथा II में मध्य पद निषेध दोष है।

(c) I और II दोनों वैध युक्तियाँ हैं।

(d) युक्ति I में पूर्ववर्ती निषेध दोष है तथा युक्ति II में चतुष्पादी दोष है।

Ans : (d) युक्ति I का युक्त आकार
$P \supset Q$
$\sim P$
$\sim Q$
यह युक्ति आकार पूर्ववर्ती निषेध दोष से ग्रस्त है।
युक्ति (II) में मृत्यु, जीवन का अंत, पूर्णता,पक्ष का प्रयोग हुआ है। परन्तु मृत्यु के सन्दर्भ में जीवन का अंत का एक अर्थ और पूर्णतः के सन्दर्भ में दूसरा अर्थ है। अतः यहां चतुष्पदो दोष है।

72. **निम्नलिखित में से कौन प्रथम आकार का वैध योग्य नहीं है?**

(a) बारबरा (b) दरिआई

(c) क्लारेंट (d) बारोको

Ans : (d) बारोको प्रथम आकार का वैध योग्य नहीं है।

73. **सूची को सूची से सुमेलित करें तथा दिए गए कूट में से सही का चयन करें।**

सूची- I	सूची- II
(A) p.q ∴ p	(i) मोडस पोनेंस
(B) p>q, p ∴ q	(ii) कंस्ट्रक्टीव डाइलेमा
(C) p ∴ p∨q	(iii) सिम्प्लीफिकेशन
(D) (p>q).(r>s), p∨r ∴ q∨s	(iv) ऐडीशन

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	iii	ii	iv	i
(b)	iii	i	iv	ii
(c)	iv	ii	iii	i
(d)	iii	ii	i	iv

Ans : (b)

(A) p.q ∴ p	(iii) सिम्प्लीफिकेशन
(B) p>q, p ∴ q	(i) मोडस पोनेंस
(C) p ∴ p∨q	(iv) ऐडीशन
(D) (p>q).(r>s), p∨r ∴ q∨s	(ii) कंस्ट्रक्टीव डाइलेमा

74. **उस कूट को चिह्नित करें जो रूल ऑफ इन्फरेंस को नहीं बतला रहा है:**

(a) हाईपोथेटिकल सिलोजज्म

(b) डिस्जंक्टिव सिलोजज्म

(c) केटागोरिकल सिलोजज्म

(d) सिम्प्लाऔफिकेशन

Ans : (*)

75. **इकोफेमेनिज्म का समर्थन निम्नलिखित में से कौन करता है?**

(a) वंदना शिवा और मारिया माइस

(b) वंदना शिवा और सिमोन दि बुवा

(c) मारिया माइस और सिमोन दि बुवा

(d) सिमोन दि बुवा और महाश्वेता देवी

Ans : (*)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2014
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. विवेकानन्द के लिए 'माया' है–
(a) ब्रह्म की शक्ति (b) एक प्रकार का अशुभ
(c) तथ्यों का विवरण (d) चेतना की अवस्था

Ans : (c) स्वामी विवेकानन्द वेदान्त की व्यावहारिक व्याख्या प्रस्तु करते हैं। उन्होंने 'माया' को तथ्यों का विवरण' कहा है। उनका कहना है कि माया से जगत् का एक विशेष तथ्य सूचित होता है।

2. श्री अरबिन्द के अनुसार आरोहण की प्रक्रिया..........के द्वारा पूर्व-प्रतिबद्ध है।
(a) रूपान्तरण (b) अवरोहण
(c) आरोहण (d) मन

Ans : (b) श्री अरविन्द के अनुसार शृष्टि 'अवतरण' तथा उत्थान की प्रक्रिया है। इस उत्थान प्रक्रिया को श्री अरविन्द विकास-प्रक्रिया भी कहते हैं। 'अवतरण' की प्रक्रिया को अवरोह (Involution) या अन्तवर्तन-प्रक्रिया कहते हैं। उत्थान अथवा विकास (Evolution) आरोहण है। आरोहण की प्रक्रिया अवतरण द्वारा पूर्व-प्रतिबद्ध है।
(समकालीन भारतीय दर्शन– बसन्त कुमार लाल)

3. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन करें–

सूची-I	सूची-II
A. सत्कार्यवाद	i. सांख्य
B. असत्कार्यवाद	ii. विशिष्टाद्वैत
C. विवर्तवाद	iii. न्याय
D. ब्रह्म-परिणामवाद	iv. अद्वैत वेदान्त

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	iii	iv	ii
(b)	iii	i	iv	ii
(c)	i	iii	ii	iv
(d)	iii	i	ii	iv

Ans : (a) सत्कार्यवाद को सांख्य दर्शन, असत्कार्यवाद को न्याय दर्शन, विवर्तवाद को अद्वैतवेदान्त तथा ब्रह्मपरिणामवाद को विशिष्टाद्वैत दर्शन में कारण-कार्य के रूप में माना जाता है।

4. रामानुज के अनुसार वैयक्तिक आत्मा है–
(a) ज्ञाता मात्र (b) ज्ञाता और कर्ता
(c) कर्ता और भोक्ता (d) ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता

Ans : (d) रामानुज अपने विशिष्टाद्वैत दर्शन में वैयक्तिक आत्मा को ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता स्वीकार करते हैं। 'आत्मा' को रामानुज ने 'जीव' नाम से सम्बोधित किया है।

5. निम्नलिखित में से किसने अन्विताभिधानवाद का समर्थन किया है?
(a) गौतम (b) प्रभाकर
(c) कुमारिल (d) कणाद

Ans : (b) मीमांसा दर्शन में शब्दार्थ से सम्बन्धित दो मत मिलते हैं। एक कुमारिल का 'अभिहितत्वयवाद' तथा दूसरा प्रभाकर का 'अन्विताभिधान वाद' है।

6. किसके मतानुसार भक्ति के बिना मोक्ष प्राप्तव्य नहीं है?
(a) शंकर (b) प्रभाकर
(c) महावीर (d) रामानुज

Ans : (d) रामानुज के अनुसार 'भक्ति' के बिना मोक्ष नहीं प्राप्त हो सकता है। क्योंकि भगवद्कृपा तभी प्राप्त होगी जब हम भगवद् के समक्ष अपने आपका पूर्ण समर्पण कर देंगे। उनके अनुसार 'कर्म' और 'ज्ञान' भक्ति के सहकारी है।

7. पूर्वमीमांसा के अनुसार वेद निर्मिति है।
(a) ईश्वर की (b) भगवान कृष्ण की
(c) व्यास की (d) इनमें से किसी की नहीं

Ans : (d) पूर्वमीमांसा वेद को 'अपौरुषेय' मानता है। अर्थात् वेद किसी के द्वारा निर्मित नहीं है। यह नित्य है और स्वतः प्रमाण हैं।

8. न्याय-वैशेषिक के अनुसार सामान्य अवस्थित है।
(a) गुण, सामान्य और विशेष में
(b) द्रव्य, गुण और कर्म में
(c) द्रव्य, कर्म और अभाव में
(d) केवल द्रव्य में

Ans : (b) वैशेषिक दर्शन के सप्त पदार्थों में 'सामान्य' को भी एक पदार्थ माना गया है। वैशेषिक का सह 'सामान्य' द्रव्य गुण और कर्म, में अवस्थित है। न्याय को भी यह मान्य है।

9. सांख्य के अनुसार मुक्ति का अभिप्राय है।
(a) केवल जीवनमुक्ति
(b) केवल विदेहमुक्ति
(c) जीवनमुक्ति और विदेहमुक्ति दोनों
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) सांख्य दर्शन में मोक्ष की दो अवस्थाएं मानी गयी हैं– जीवनमुक्ति और विदेहमुक्ति। जीवन काल में ही दुःखों की आत्यन्तिक निवृत्ति जीवनमुक्ति है। प्रारब्ध कर्मों के समाप्त हो जाने पर जीवन्मुक्त का शरीर भी समाप्त हो जाता है। इसे विदेहमुक्ति कहते हैं। सांख्य दर्शन में 'मोक्ष' को 'कैवल्य' कहा गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

10. वैशेषिक मतानुसार 'पूर्व' और 'पश्चिम' की अवधारणा का कारण है।

(a) आकाश (b) काल
(c) दिक् (d) तेज

Ans : (c) वैशेषिक दर्शन में दिक्-काल की अवधारणा द्रव्य के रूप में अलग-अलग मिलती है। इसके अनुसार 'दिक्' सह-अस्तित्व का और 'काल' 'अनुक्रम' का प्रतिपादन करते हैं। दिक् उपाधि के कारण सभी दिशाओं (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) का ज्ञान कराता है। 'काल' भी उपाधि के कारण भूत, वर्तमान, भविष्य, वर्ष, मास, पक्ष का ज्ञान करता है। दिक् और काल सर्वव्यापी, निन्य, अतीन्द्रिय, अभौतिक एवं गुणहीन हैं।

11. चार्वाक के अनुसार जल........के कारण नीचे की ओर बहता है।

(a) स्वभाव (b) द्रव्यत्व
(c) गुरुता (d) तरलता

Ans : (a) चार्वाक दर्शन भौतिकवादी दर्शन है। उसका मत स्वभाववाद कहलाता है। उसके अनुसार जल अपने स्वभाव के कारण नीचे की ओर बहता है।

12. निम्नलिखित में से कौन शक्तिग्रह के साधन का सही कथन नहीं करता है?

(a) व्याकरण, आप्तवाक्य, विवरण
(b) विवरण, उपमान, अनुमान
(c) उपमान, कोश, वृद्धव्यवहार
(d) विवरण, वाक्यशेष, आप्तवाक्य

Ans : (b) 'शक्तिग्रह' के साधन, अनुमान नहीं है। जबकि व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, वाक्यशेष, विवृत्ति, वृद्धव्यवहार हैं।

13. निम्नलिखत में से कौन माया को 'वैश्विक भ्रम का सिद्धांत' स्वीकार करता है?

(a) विवेकानन्द (b) राधाकृष्णन्
(c) के.सी. भट्टाचार्य (d) टैगोर

Ans : (d) टैगोर भी वेदान्त के समान कहते हैं कि सृष्टि की प्रतीति 'माया-आधृत' है। माया को वे सबसे व्यापक अज्ञान का आधार कहते हैं यह 'विश्व-भ्रान्ति का कारक' या वैश्विक भ्रम का सिद्धान्त है। उनके अनुसार सत्य एकरूपता में है, माया भ्रमकारक है उनके अनुसार माया का कोई 'सत्' या तत्व नहीं है। न ही इसका कोई अस्तित्व है। यह ईश्वरीय रूप को सीमित भी नहीं करता है।

14. रामानुज के अनुसार 'अपृथकसिद्धि' का सम्बन्ध है।

(a) मात्र ब्रह्म का जीव के साथ
(b) मात्र जीव का जगत के साथ
(c) ब्रह्म का जीव एवं जगत के साथ
(d) मात्र ब्रह्म का जगत के साथ

Ans : (c) रामानुज ब्रह्म का जीव एवं जगत के बीच 'अपृथक सिद्धि' सम्बन्ध को मानते हैं। अर्थात् ईश्वर जीव और जगत की अपृथकसिद्ध एक ही रामानुज का ब्रह्म है।
(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूप रेखा– राममूर्ति पाठक)

15. वैदिक परंपरा में दक्षिणा का भाव संयुक्त है।

(a) ऋत् से (b) ऋण से
(c) धर्म से (d) यज्ञ से

Ans : (d) वैदिक परम्परा में दक्षिणा का भाव 'यज्ञ' से सम्बन्धित होता था।

16. मनुष्य में 'गोत्व' का अभाव किस प्रकार का अभाव है?

(a) अत्यंताभाव (b) अन्योन्याभाव
(c) प्रागभाव (d) ध्वन्साभाव

Ans : (b) 'अन्योन्याभाव' के अनुसार दो वस्तुओं में एक का दूसरे का त्रैकालिक अभाव अन्योन्याभाव है। इसका अर्थ है दो वस्तुओं में तादात्म्य नहीं हो सकता है।

17. सही क्रम का चयन करें–

(a) गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, ब्रह्मचर्य, सन्यास
(b) वानप्रस्थ, ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, सन्यास
(c) ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, गार्हस्थ्य, सन्यास
(d) ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, सन्यास

Ans : (d) आश्रमधर्म किसी व्यक्ति के जीवनक्रम से सम्बन्धित होता है। आश्रम धर्म को चार भागों में क्रमशः रखा गया है– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ्य, वानप्रस्थ, सन्यास जो क्रमशः विद्याअध्ययन गृहस्थ के रूप में घर छोड़कर तपस्या, चिंतन आदि तथा अन्त में सांसारिक जीवन को छोड़कर पूरी तरह यायावर बनकर, भिक्षाटन कर जीवनयापन करना।

18. कौन-सा एक सही सुमेलित नहीं है?

(a) अन्वय, व्यतिरेक, भूयोदर्शन
(b) अन्वय, व्यतिरेक, उपाधिनिरास
(c) उपधिनिरास, तर्क, सामान्यलक्षण प्रत्यक्ष
(d) तर्क, सामान्यलक्षण प्रत्यक्ष, आप्तवाक्य

Ans : (d) अन्वय, व्यतिरेक, भूयोदर्शन उपाधिनिरास, तर्क, सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष आदि अनुमान प्रमाण से सम्बन्धित है। जबकि आप्तवाक्य 'शब्द' प्रमाण से सम्बन्धित है।

19. ऋत् सहयुक्त है–

(a) केवल सत्य से (b) केवल धर्म से
(c) सत्य एवं धर्म दोनों से (d) न सत्य, न ही धर्म से

Ans : (c) ऋत् को सत्य और धर्म दोनों कहा गया है।

20. निम्नलिखित दो सूचियों में से सूची-I दर्शन के संप्रदाय एवं सूची-II उनके द्वारा धारित सिद्धांतों से युक्त है। निम्नलिखित में से कौन-सा कूट सही सुमेलित है?

सूची-I	सूची-II
A. जैन	i. पंचशील
B. न्याय	ii. पंचव्रत
C. बौद्ध	iii. पंचक्लेश
D. योग	iv. पंचावयव

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	i	c	d	b
(c)	b	d	i	iii
(d)	ii	i	iv	iii

Ans : (c) जैन दर्शन में पंचव्रत, न्याय दर्शन में पंचावयव, बौद्ध दर्शन में पंचशील तथा योग दर्शन में पंचक्लेश को मानते हैं।

21. निम्नलिखित में कौन एक सही क्रम को प्रदर्शित करता है?

(a) तृष्णा, वेदना, भव, जाति
(b) वेदना, तृष्णा, उपादान, भव
(c) वेदना, तृष्णा, भव, उपादान
(d) तृष्णा, भव, वेदना, जाति

Ans : (b) बौद्ध दर्शन कारण-कार्य को 'द्वादशनिदान चक्र' कहा गया है। जिसमें 12 (बारह) अंश हैं क्रमशः अविद्या, संस्कार, विज्ञान, नाम-रूप, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान भव, जाति, जरा-मरण।

22. चंदन के एक टुकड़े को देखने से, न्याय-दर्शन के अनुसार, किस सन्निकर्ष से हमें सुगंध का प्रत्यक्ष होता है?

(a) विशेषणता (b) संयुक्त-समवाय
(c) योगज (d) ज्ञानलक्षण

Ans : (d) न्याय दर्शन में तीन प्रकार के अलौकिक प्रत्यक्ष माने गये हैं– सामान्य लक्षण, ज्ञानलक्षण और योगज प्रत्यक्ष। न्याय दर्शन के अनुसार जब कोई ज्ञानेन्द्रिय अपने विषय से भिन्न विषय का ज्ञान प्राप्त करती है तो इसे 'ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष' कहते हैं। दिये गये प्रश्न में चंदन के एक टुकड़े को देखने से हमें जो सुगंध का प्रत्यक्ष हुआ है वह सन्निकर्ष 'ज्ञान लक्षण' होगा।

23. निम्नलिखित में से कौन-सा अंबेडकर द्वारा स्वीकार नहीं किया गया?

(a) स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व
(b) शिक्षा, संगठन, आंदोलन
(c) बुद्ध, धम्म, संघ
(d) जाति, वर्ण, कर्म

Ans : (d) बी.आर. अम्बेडकर ने जाति, वर्ण, कर्म को स्वीकार नहीं किया गया है। वह जाति-प्रथा, अस्पृश्यता रीति के घोर विरोधी थे।

24. न्याय के अनुसार निम्नलिखित अनुमान में किस प्रकार का दोष है?

अनुमान : शाश्वत अणुवों से निर्मित होने के कारण जगत शाश्वत है।

विकल्पः

(a) विरुद्ध (b) कालातीत
(c) सत्प्रतिपक्ष (d) सव्यभिचार

Ans : (a) 'शाश्वत अणुओं से निर्मित होने के कारण जगत शाश्वत है' इसमें अणुओं की शाश्वता को आधार बनाकर जगत को शाश्वत कहा जा रहा है, परन्तु कोई यह भी कह सकता है कि जितने भी निर्मित वस्तु है वह अशाश्वत होती है अतः जगत भी शाश्वत नहीं है अर्थात् 'निर्मित होना' हेतु अशाश्वत पदार्थों का लक्षण है। अतः यहां हेतु स्वव्याघाती होने के कारण विरुद्ध हेतु है।

25. 'प्रत्येक अनुभूति प्रमा है' यह सिद्धांत........के द्वारा प्रतिपादित किया गया।

(a) न्याय (b) चार्वाक
(c) प्रभाकर (d) कुमारिल

Ans : (c) प्रभाकर के अनुसार प्रत्येक अनुभूति प्रमा है। अनुभूति स्वतः प्रकाश होती है। अर्थ की अनुभूति सदा यथार्थ होती है और स्वतः प्रमाण होती है।
(भारतीय दर्शनः आलोचन और अनुशीलन– चन्द्रधर शर्मा)

26. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन करें–

सूची-I	सूची-II
A. तत्व मीमांसा का निरसन	i. विश्लेषणात्मक दर्शनशास्त्र
B. अर्थ का चित्र सिद्धांत	ii. संवृत्तिशास्त्र
C. असम्बन्ध	iii. अस्तित्ववाद
D. बीइंग एंड नथिंग्नेस	iv. तार्किक भाववाद

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iv	iii	ii	i
(b)	iii	i	ii	iv
(c)	ii	iii	i	iv
(d)	iv	i	ii	iii

Ans : (d) तार्किक भाववाद से तत्व मीमांसा का निरसन, विश्लेषणात्क दर्शन शास्त्र में अर्थ का चित्र सिद्धान्त, संवृतिशास्त्र से असम्बन्धन और अस्तित्ववाद बीइंग एंड नथिंग्नेस सम्बन्धित है।

27. नीत्शे के दर्शन के संदर्भ में दिए गए अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए तथा दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए–

अभिकथन (A) : अतिमानव का संप्रत्यय नीत्शे के निरीश्वरवाद और इच्छाशक्ति के सिद्धांत की परिणति है।

तर्क (R) : निरीश्वरवाद की परिणति ईश्वर प्रदत्त सभी आदेशों और मूल्यों की समाप्ति है।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) गलत है और (R) सही है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (b) नीत्शे का दर्शन 'अतिमानव वाद' है जिसमें अतिमानव का संप्रत्यय उसके निरीश्वरवाद और इच्छाशक्ति सिद्धान्त पर आधारित है। निरीश्वर वाद की परिणति ईश्वर प्रदत्त सभी आदेशों और मूल्यों की समाप्ति है। दोनों (A) और (R) सही हैं। परन्तु यह प्रश्न संदिग्ध है।

28. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन करें–

सूची-I	सूची-II
A. तार्किक भाववाद	i. विलियम जेम्स
B. संवृत्तिशास्त्र	ii. हुस्सर्ल
C. तार्किक अणुवाद	iii. एयर
D. उपयोगितावाद	iv. रसेल

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	iii	iv	ii
(b)	iii	ii	iv	i
(c)	iv	iii	ii	i
(d)	ii	iv	i	iii

Ans : (b) तार्किक भाववाद-एयर, संवृत्तिशास्त्र-हुर्सल, तार्किक अणुवाद-रसेल तथा उपयोगितावाद-विलियम जेम्स।

29. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन करें–

सूची-I	सूची-II
A. स्पिनोज़ा	i. गुणों का विभाजन
B. ह्यूम	ii. द्रव्यों का विभाजन
C. लॉक	iii. प्रत्ययों का विभाजन
D. बर्कले	iv. विकारों का विभाजन

कूट :

(a) (A) और (i) (b) (B) और (iv)
(c) (C) और (i) (d) (D) और (ii)

Ans : (c) लॉक ने गुणों का विभाजन किया। उन्होंने मूलगुण और उपगुण नामक दो प्रकार के गुणों को माना। मूलगुण बाह्य वस्तुओं के वास्तविक गुण है और 'उपगुण' इन्हीं मूलगुणों से उत्पन्न है। इन्हें वह क्रमशः प्राथमिक गुण और द्वितीयक गुण कहता है।

30. 'फेनोमेनालॉजी ऑफ माइंड' पुस्तक की रचना किसने की?

(a) हुस्सर्ल (b) हीगल
(c) कांट (d) इनमें से काई नहीं

Ans : (b) 'फेनोमेनालॉजी ऑफ माइंड' पुस्तक हीगल ने लिखी।

31. निम्नलिखित में से कौन 'चुंबक' की तरह की निर्जीव वस्तुओं में भी आत्मा का अभिधान करते हैं?

(a) थेलीज (b) एनेक्ज़ीमेंडर
(c) ज़ेनोफ़ेनीज़ (d) एम्पेडाक्लीज़

Ans : (a) 'चुंबक' को किस तरह निर्जीव वस्तुओं में भी आत्मा को थेलीज मानते है। थेलीज ग्रीक परम्परा के प्रथम दार्शनिक माने जाते हैं। यह आयोनियन सम्प्रदाय के प्रतिस्थापक माने जाते हैं।

32. निम्नलिखित कथनों में से हेराक्लाइट्स के संदर्भ में कौन सही हैं?

i. हेराक्लाइट्स ने ब्रह्माण्डोत्पत्ति को अस्वीकार किया है।
ii. विश्व निरंतर प्रवाह में है।
iii. हेराक्लाइट्स विरुद्धों की एकता में विश्वास नहीं करता।

सही कूट का चयन करें–

(a) केवल ii सही है।
(b) केवल i और ii सही हैं।
(c) i, ii और iii सही हैं।
(d) केवल iii और i सही हैं।

Ans : (b) हेराक्लाइट्स ने ब्रह्माण्डोत्पत्ति को अस्वीकार कर विश्व के निरन्तर प्रवाह को स्वीकार किया है। वह 'विरुद्धों को एकता' का सिद्धान्त देता है। जिसे 'विरोधियों शक्तियों का संवाद' सिद्धान्त कहा जाता है।

33. राईल के दर्शन के संदर्भ में दिए गए अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार कीजिए तथा दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन कीजिए–

अभिकथन (A) : मन का आधिकारिक सिद्धांत स्वीकार्य नहीं है।

तर्क (R) : क्योंकि यह अर्थ के चित्र सिद्धांत को नष्ट करता है।

कूट :

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) गलत है और (R) सही है।
(d) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

Ans : (c) राईल अपने व्यावहारवादी दर्शन के डेकार्ट के मन सिद्धान्त की कटु आलोचना करता है। वह मन के अधिकारिक सिद्धान्त को अस्वीकार करता है। वह इनमें कोटि दोष बताता है। परन्तु वह नहीं कहता कि यह अर्ध के चित्र सिद्धान्त को नष्ट करता है। अतः (A) तो सही है परन्तु (R) कलत और यह व्याख्या भी नहीं है।

34. 'प्रत्ययवाद का निषेध' का पक्षधर कौन है?

(a) रसेल और बर्कले (b) मूर और बर्कले
(c) रसेल और मूर (d) रसेल और हीगल

Ans : (a) 'प्रत्ययवाद का निषेध' पेरी, मूर तथा रसेल ने अपने-अपने दर्शन के आलोक में किया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

35. दिए गए अभिकथनों का कौन-सा कुलक (कूट) विटगेंस्टाइन के संदर्भ में सही है? सही कूट का चयन करें–

अभिकथनः

i. विश्व वह सब है जो एक स्थिति है।

ii. विश्व तथ्यों का समूह है, वस्तुओं का नहीं

iii. वस्तुस्थिति वस्तुओं का संकलन है।

iv. यदि सभी वस्तुएँ प्रदत्त हैं तो ठीक उसी रूप में सभी संभावित वस्तु स्थितियाँ भी प्रदत्त हैं।

कूटः

(a) सभी अभिकथन सही हैं।

(b) सभी अभिकथन गलत हैं।

(c) i, ii, iii सही हैं किन्तु iv गलत है।

(d) ii, iii और iv सही हैं किन्तु i गलत है।

Ans : (a) विट्गेंस्टाइन अपने 'ट्रैक्टेटेस' में यह बातें करता है–
i. विश्व वह सब है जो एक स्थिति है।
ii. विश्व तथ्यों का समूह है, वस्तुओं का नहीं।
iii. वस्तुस्थिति वस्तुओं का संकलन है।
iv. यदि सभी वस्तुएँ प्रदत्त हैं तो ठीक उसी रूप में सभी संभावित वस्तु स्थितियाँ भी प्रदत्त हैं।

36. अर्थ के चित्र सिद्धांत का पक्षधन इनमें से कौन है?

(a) मूर (b) रसेल

(c) एयर (d) इनमें से कोई नहीं

Ans : (d) 'अर्थ के चित्र सिद्धान्त' को विट्गेन्सटाइन ने प्रस्तुत किया। वह इसे अपनी पूर्व कालीन अवस्था में अपनी पूर्वकालीन अवस्था में अपनी पुस्तक 'ट्रैक्टेटस' में देता है।

37. निम्नलिखित में से कौन से कथन प्लेटो के प्रत्यय सिद्धांत के संदर्भ में सही हैं?

i. प्रत्यय उस अमूर्त वस्तुओं के जगत में वास करता है जो जगत, देश और काल में उनके मूर्त उदाहरणीकरण से भिन्न है।

ii. प्रत्यय अथवा आकार वास्तविक हैं; विशेष प्रतीति-मात्र हैं।

iii. प्रत्यय अथवा आकार वास्तविक हैं; विशेष प्रतीति-मात्र हैं।

ऊपर के अभिकथनों के संदर्भ में सही कूट का चयन करें–

(a) केवल i और ii सही हैं।

(b) i, ii और iii सही हैं।

(c) केवल i और iii सही हैं।

(d) केवल ii और iii गलत हैं।

Ans : (a) प्लेटो जगत के 'प्रत्ययो' की अभिव्यक्ति मानता है। उसके अनुसार, प्रत्यय उस अमूर्त वस्तुओं के जगत में वास करता है जो जगत, देश और काल में उनके मूर्त उदारणीकरण से भिन्न है तथा प्रत्यय अथवा आकार वास्तविक है विशेष प्रतीति-मात्र है। प्रत्यय स्थायी, कालातीत, शाश्वत और अपरिवर्तनशील है।

38. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों से सही उत्तर का चयन करें–

सूची-I	सूची-II
A. जल	i. एनेक्जिमिनीज़
B. असीमित	ii. हेराक्लाइटस
C. वायु	iii. एनेक्जीमेंडर
D. परिवर्तन	iv. थेलीज़

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	iii	iv	i
(b)	iv	i	iii	ii
(c)	iv	iii	i	ii
(d)	iv	ii	i	iii

Ans : (c) थेलीज 'जल' को 'असीमित' को एनेक्जीमेंडर, वायु की एनेक्जिमिनीज और 'परिवर्तिन' को हेराक्लाइट्स मूल मानते है।

39. निम्नलिखित में से 'ज्ञान क्या है' के संदर्भ में से किसे प्लेटों द्वारा अस्वीकार किया गया था?

i. ज्ञान इंन्द्रीय प्रत्यक्ष है।

ii. ज्ञान धारण है।

iii. ज्ञान निर्णय है।

iv. ज्ञान सत्य निर्णय है।

कूटः

(a) केवल iii, iv और i सही हैं।

(b) केवल i और ii सही हैं।

(c) केवल i, ii और iii सही हैं।

(d) केवल i और iii सही हैं।

Ans : (c) प्लेटो अपने बुद्धिवादी दर्शन के आलोक में 'ज्ञान क्या है' संदर्भ पर विचार करता है। वह सर्वप्रथम इसके निषेधात्म पक्ष क्या ज्ञान नहीं है।' पर विचार करता है। उसके अनुसार 'ज्ञान इन्द्रीय प्रत्यक्ष, धारण, निर्णय नहीं है। उसके अनुसार ज्ञान न्यायोचित सत्य विश्वास है।

40. कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) संत ऑगस्टाइन सृष्टिवाद के पक्षधर हैं

(b) संत ऑगस्टाइन उद्भवमूलक सिद्धांत को नकारते हैं।

(c) संत ऑगस्टाइन ईश्वरवादी हैं।

(d) संत ऑगस्टाइन संशयवाद के पक्षधर हैं।

Ans : (d) संत ऑगस्टाइन संशयवादी दार्शनिक नहीं है। वह एक मध्ययुगीन इसाई-दार्शनिक है। वह संशयवाद के विपरीत सृष्टिवादी, ईश्वरवादी चिंतन हैं।

41. ज्ञान के प्रतिनिधिवादी सिद्धांत का प्रतिपादन करने वाले विद्वान के नाम का चयन निम्नलिखित विकल्पों में से करें?

(a) लाइब्निज़ (b) देकार्त

(c) बर्कले (d) लॉक

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) ज्ञान के प्रतिनिधिवादी सिद्धान्त के समर्थक/प्रतिपादक लॉक हैं। इन्हें 'प्रत्यय प्रतिनिधित्ववादी' दार्शनिक माना जाता है। बाह्य जगत से प्राप्त प्रत्यय ही हमारे ज्ञान के विषय हैं।

42. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें और सही उत्तर का चयन करें–

सूची-I	सूची-II
A. स्पिनोज़ा	i. बहुवाद
B. लाइब्नित्ज़	ii. सर्वेश्वरवाद
C. देकार्त	iii. द्वैतवाद
D. लॉक	iv. संशयवाद

कूट :

(a) i और ii (b) ii और iv
(c) iii और i (d) iv और iii

Ans : (a) स्पिनोजा का मत सर्वेश्वरवाद कहलाता है। लॉक अनुभववाद लाइबनित्ज बहुलवाद तथा देकार्त-द्वैतवाद है।

43. सही विकल्प का चयन करें–
देकार्त के अनुसार मन-शरीर के संबंध को जाना जाता है।

(a) बुद्धिवाद (b) क्रिया-प्रतिक्रियावाद
(c) अनुभववाद (d) समानान्तरवाद

Ans : (b) देकार्त का मन-शरीर का सम्बन्ध क्रिया-प्रतिक्रियावाद कहलाता है। स्पिनोजा का मत 'समानान्तरवाद' तथा लाइबनित्ज का पूर्व-स्थापित सामंजस्य नियम।

44. सही विकल्प का चयन करें–
आधुनिक बुद्धिवाद का आधारभूत संप्रत्यय है।

(a) अवसरवाद (b) संदेह का सिद्धांत
(c) जन्मजात प्रत्यय (d) द्रव्य का विभाजन

Ans : (c) आधुनिक बुद्धिवाद का आधारभूत संप्रत्यय है जन्मजात प्रत्यय लाइबनित्ज के अनुसार, समस्त ज्ञान जन्मजात है। डेकार्ट, स्पिनोजा जैसे बुद्धिवादियों का भी कुछ ऐसा ही विचार है। जन्मजात प्रत्ययों का सिद्धान्त आधुनिक बुद्धिवाद और अनुभववाद के बीच एक विभाजक रेखा का कार्य करता है।

45. सही विकल्प का चयन करें–
किस तर्क में 'अस्तित्व' उसकी अवधारणा में निहित रहता है?

(a) रकारणतामूलक तर्क (b) प्रयोजनमूलक तर्क
(c) सत्तामूलक तर्क (d) सृष्टिमूलक तर्क

Ans : (c) सत्तामूलक तर्क के अनुसार किसी विचार की पूर्णता में उसका अस्तित्व अनिवार्य रूप से संयुक्त रहता है। ईश्वर की पूर्णता के अवधारणा में उसकी सत्ता (अस्तित्व) निहित है।

46. लॉक के संदर्भ में सही विकल्प का चयन करें–

(a) मस्तिष्क गौण गुणों को ग्रहण करता है।
(b) मस्तिष्क मूल गुणों को ग्रहण करता है।
(c) मस्तिष्क मूल एवं गौण दोनों गुणों को ग्रहण करता है।
(d) मस्तिष्क मूल गुणों की रचना करता है।

Ans : (b) लॉक दो प्रकार के गुणों को मानता है मूल गुण एवं बाह्य है जिनका ग्रहण मस्तिष्क द्वारा होता है। जब हमारी ज्ञानेन्द्रियों का सम्पर्क वस्तुओं के मूलगुणों से होता है तो ये मूलगुण आत्मा में अपनी संवेदना उत्पन्न करते हैं। मूलगुणों के माध्यम से ही हमारी आत्मा भी उपगुणों के प्रत्यय उत्पन्न होते हैं।

47. सही विकल्प का चयन करें–
बर्कले के अनुसार प्रत्यय हैं।

(a) मूर्त (b) अमूर्त
(c) मूर्त एवसं अमूर्त दोनों (d) न अमूर्त और न ही मूर्त

Ans : (a) लॉक के अमूर्त प्रत्ययों की अवधारण का खण्डन करके बर्कले के अनुभव से प्राप्त प्रत्ययों को ही हमारे ज्ञान का विषय बताया है। उसके अनुसार प्रत्यय मूर्त है। उसके अनुसार मन के द्वारा उन्हीं विशिष्ट वस्तुओं के प्रत्ययों की रचना की जा सकती है जो हमारे अनुभव के विषय है। अमूर्त प्रत्यय 'नाम' के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

48. सही विकल्प का चयन रकें–
कांट के अनुसार ज्ञान का सही रूप है।

(a) प्रागनुभविक विश्लेषणात्मक निर्णय
(b) प्रागनुभविक संश्लेषणात्मक निर्णय
(c) आनुभविक विश्लेषणात्मक निर्णय
(d) आनुभविक संश्लेषणात्मक निर्णय

Ans : (b) कांट के अनुसार, प्रागनुभविक संश्लेषणात्मक निर्णय ही ज्ञान का सही रूप हैं। काण्ट ऐसे निर्णयों की खोज में था। जो यथार्थ (वस्तुनिष्ठ) और नीवन ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ अनविार्य और सार्वभौम भी हों।

49. सही विकल्प का चयन करें–
कांट के अनुसार बुद्धि-विकल्पों की कुल संख्या है।

(a) 8 (b) 10
(c) 12 (d) 16

Ans : (c) काण्ट ने बुद्धि-विकल्पों की संख्या '12' माना है। काण्ट आकारिक तर्कशास्त्र के बारह प्रकार के निर्णयों के आधार पर बारह प्रकार के बुद्धि-विकल्पों का भी निगमन करता है। बुद्धि विकल्पों के द्वारा जानना, निर्णय लेना है।

50. ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए सत्तामूलक युक्ति प्रतिपादन किसने किया?

(a) अरस्तु (b) संत ऑगस्टाइन
(c) संत एन्सेल्म (d) संत एक्वीनस

Ans : (c) सत्तामूलक युक्ति का प्रतिपादन संत अन्सेल्म (एन्सेल्म) ने अपने मध्यकालीन ईसाई दर्शन में ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने के लिए। आधुनिक युग में डेकार्ट ने भी इस युक्ति का प्रयोग अपने दर्शन में किया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2014
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

नोट : इस प्रश्नपत्र में पचहत्तर (75) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. न्याय मत के अनुसार निम्नलिखित में से किस सन्निकर्ष के द्वारा हम एक जाति के सभी सदस्यों का प्रत्यक्ष प्राप्त करते हैं?

(a) विशेषणता (b) योगज
(c) संयोग (d) सामान्यलक्षण

Ans. (d) : न्याय दर्शन, सामान्य लक्षण नामक अलौकिक सन्निकर्ष को मानता है। जिसके अनुसार, सामान्य लक्षण सन्निकर्ष द्वारा हम एक जाति के सभी सदस्यों का प्रत्यक्ष प्राप्त करते हैं।

2. वैशेषिक मत के संदर्भ में उस विकल्प का चयन करें जिसके अनुसार द्रव्य न तो भूत है न मूर्त :

(a) आकाश, काल, दिक् (b) काल, दिक्, आत्मा
(c) दिक्, आत्मा, मनस् (d) आकाश, आत्मा, काल

Ans. (b) : वैशेषिक दर्शन द्वारा स्वीकृत नौ द्रव्यों में पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और आकाश भूत द्रव्य है तथा दिक्, काल, आत्मा और मनस् अभौतिक द्रव्य है। वैशेषिक में मनस् को अणुरूप माना गया है, अतः यह अमूर्त नहीं है। जबकि आकाश भौतिक है। अतः काल, दिक् और आत्मा न तो भूत है न मूर्त है।

3. वैशेषिक तत्त्वमीमांसा में निम्नलिखित में से कौन नित्यद्रव्य नहीं है?

(a) परमाणु (b) द्वयणुक
(c) काल (d) मनस्

Ans. (b) : परमाणु, काल, मनस् को वैशेषिक में नित्य द्रव्य माना गया है। परन्तु 'द्वयणुक' जो कि परमाणुओं के मिलने से बनते हैं, नष्टप्राय है। अत; नित्यद्रव्य नहीं है।

4. सूची - I और सूची- II पर विचार करें और नीचे दिए गए कूट में से सही विकल्प का चयन वैशेषिक तत्त्वमीमांसा के आलोक में करें:

सूची-I	सूची-II
A. पर-सामान्य	i. द्रव्यत्व
B. अपर-सामान्य	ii. इन्द्रियत्व
C. परापर-सामान्य	iii. सत्ता
D. उपाधि	iv. घटत्व

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	iii	i	iv
(b)	iii	iv	i	ii
(c)	i	iv	iii	ii
(d)	iv	i	ii	iii

Ans. (b) : पर-सामान्य से सत्ता, अपर-सामान्य से घटत्व, परापर-सामान्य से द्रव्यत्व तथा उपाधि से इन्द्रियत्व का सम्बन्ध है।

5. रामानुज के अनुसार उस संबंध का निर्धारण करें जिसके द्वारा ब्रह्म चित और अचित से सम्बद्ध होता है।

(a) तादात्म्य (b) समवाय
(c) स्वरूप (d) अपृथक्सिद्धि

Ans. (d) रामानुज के अनुसार ब्रह्म का चित्त और अचित्त से 'अपृथकसिद्ध' संबंध होता है। ध्यातव्य हो कि रामानुज चित्त और अचित्त को ब्रह्म का अंश मानते हैं। उनके अनुसार चित्त और अचित्त का ब्रह्म से तादात्म्य संबंध नहीं है।

6. अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार करें और सही कूट का चयन करें:

अभिकथन (A): त्र्यणुक के अंश होते हैं (द्वयणुक)।

कारण (R): जो भी दृश्यमान है वह अंशभूत है उदाहरणार्थ घट।

कूट:

(a) (A) सत्य है, किन्तु (R) असत्य है तथा (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(b) (A) सत्य है, किन्तु (R) असत्य है तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(c) (A) और (R) दोनों सत्य है तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(d) (A) और (R) दोनों सत्य है तथा (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

Ans. (c) : वैशेषिक के अनुसार समस्त जगत की दृश्यमान वस्तुएं परमाणु से निर्मित द्वयणुको का संयोग है। त्र्यणुक के अंश होते हैं द्वयणुक। यह सत्य है तथा घट द्रश्यमान होने के नाते वह भी अंशभूत है। अभिकथन (A) सत्य है और कारण (R) सत्य भी सत्य है। (R) (A) की सही व्याख्या है।

7. अरस्तू के अनुसार निम्नलिखित में से कौन से स्वीकार्य है?

(A) अलग-अलग तरह के जीवों में अलग-अलग तरह की आत्मा होती है।
(B) आत्मा जीवित शरीर का रूप है।
(C) आत्मा का अस्तित्व शरीर से बाहर हो सकता है।
(D) कुछ मनुष्यों में आत्मा का बौद्धिक अंश पूर्णतः विकसित नहीं होता।

कूट:

(a) (A) और (B) (b) (B) और (C)
(c) (A), (B) और (d) (d) (A), (B) और (D)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : अरस्तू के अनुसार, आकार और शरीर द्रव्य दोनों है। दोनों परस्पर अवियोज्य है। अरस्तू के अनुसार अलग-अलग तरह के जीवों में अत्मग -अलग तरह की आत्मा होती है। आत्मा जीवित शरीर का रूप है। आत्मा का अस्तित्व शरीर से बाहर हो ही नहीं सकता क्योंकि अशरीरी आत्मा का अस्तित्व असंगत है, तथा कुछ मनुष्यों में आत्मा का बौद्धिक अंश पूर्णतः विकसित नहीं होता है।

8. 'दो पदार्थ परस्पर सर्वथा-समान नहीं हो सकते।' इस मत का पक्षधर कौन है?

(a) केवल लाइब्नित्ज (b) केवल स्पिनोजा
(c) लाइब्नित्ज और देकार्त (d) लाइब्नित्ज और स्पिनोजा

Ans. (d) : 'दो पदार्थ (द्रव्य) परस्पर सर्वथा समान नहीं हो सकते। यह कथन लाइब्नित्ज और स्पिनोजा को मान्य है।

9. 'वैयक्तिक अनन्यता चेतना की समरूपता में समाहित है।' इस मत का पक्षधर कौन है?

(a) देकार्त (b) बर्कले
(c) कांट (d) लॉक

Ans. (d) : 'वैयक्तिक अनन्यता' का निकष जान लॉक स्मृति को मानते हैं। उसे इस सिद्धान्त का जनक कहा जाता है। वह कहता है कि वर्तमान और अतीत कर्मों की चेतना रखने वाला व्यक्ति एक ही है, जिससे दोनों कर्म (वर्तमान तथा अतीत कर्म) संबंधित होते हैं। उसके अनुसार, 'वैयक्तिक अनन्यता चेतना की समरूपता में समाहित है।'

10. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I (दार्शनिक)	सूची- II (वस्तु-विषयक मत)
A. देकार्त	i. प्रत्यय समुच्चय
B. स्पिनोजा	ii. विस्तारित द्रव्य
C. लाइब्नित्ज	iii. पर्याय
D. बर्कले	iv. आध्यात्मिक अणुओं का समुच्चय

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iii	iv
(b)	i	iii	ii	iv
(c)	ii	iii	iv	i
(d)	i	iv	i	iii

Ans. (c) : देकार्त-विस्तारित द्रव्य, स्पिनोजा-पर्याय, लाइब्नित्ज आध्यात्मिक अणुओं का समुच्चय तथा बर्कले-प्रत्यय समुच्चय।

11. निम्नलिखित में से कौन सा एक कांट को स्वीकार्य नहीं है?

(a) दिक् और काल प्रागनुभविक है।
(b) दिक् और काल समान समप्रत्यय नहीं है।
(c) दिक् और काल अतीन्द्रिय आदर्श है।
(d) दिक् और काल आनुभविक यथार्थ है।

Ans. (d) : कांट के अनुसार, दिक् और काल प्रागनुभविक है। दिक् और काल सामान्य सम्प्रत्यय नहीं-विशेष है। दिक् और काल अतीन्द्रिय आदर्श है। दिये गये चौथा विकल्प यह होगा-दिक् -काल आनुभविक यथार्थ नहीं है जो गलत है। यह कांट को स्वीकार्य नहीं है। उसके अनुसार दिक्-काल आनुभविक रूप से यथार्थ और परमार्थतः काल्पनिक है।

12. अन्विताभिधानवाद का संबंध है

(a) कुमारिल से (b) प्रभाकर से
(c) जैमिनि से (d) गौतम से

Ans. (b) : 'अन्विताभिधानवाद' का संबंध प्रभाकर मीमांसा से है। वेद के विधिवाद तथा अर्थवाद दो भाग किये जा सकते हैं। मुख्य भाग विधिवाद तथा अर्थवाद वर्णनात्मक है। प्रभाकर के अनुसार, अर्थवाद भी कर्म का सहायक बनकर प्रमाणित हो सकता है।

13. कुमारिल द्वारा समर्थित भ्रम-सिद्धांत है

(a) सत् ख्याति (b) असत् ख्याति
(c) आत्म ख्याति (d) अन्यथा ख्याति

Ans. (b) : यह प्रश्न गलत है क्योंकि 'सत् ख्याति'-रामानुजाचार्य द्वारा असत् ख्याति-शून्यवादी माध्यमिकों द्वारा, आत्म ख्याति-विज्ञानवादी योगाचार द्वारा तथा अन्य व्याख्याति न्याय दर्शन द्वारा स्वीकृत है। जबकि कुमारिल का मत विपरीत ख्याति के नाम से जाना जाता है।

14. अद्वैत वेदान्त के अनुसार जब हम रज्जु में सर्प को देखते हैं तो

(a) सर्प अयथार्थ होता है
(b) सर्प यथार्थ होता है
(c) सर्प न तो यथार्थ है, न अयथार्थ
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (c) : अद्वैत वेदान्त का 'भ्रम' सिद्धान्त को 'अनिर्वचनीय ख्याति' के नाम से जाना जाता है। जिसके अनुसार रज्जू में हम जिस सर्प को देखते है तो वह सर्प न तो अयथार्थ है, न यथार्थ। अर्थात् वह न तो सत् है और न ही असत् है वह सदसतनिर्वचनीय अर्थात् मिथ्या है।

15. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I	सूची- II
A. सांख्य	i. परतः प्रामाण्य परतः अप्रामाण्य
B. बौद्ध	ii. स्वतः प्रामाण्य स्वतः अप्रामाण्य
C. न्याय वैशेषिक	iii. परतः प्रामाण्य स्वतः अप्रामाण्य
D. मीमांसा	iv. स्वतः प्रामाण्य परतः अप्रामाण्य

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	iii	i	iv
(c)	iv	iii	ii	i
(d)	iii	ii	i	iv

Ans.(b) : सांख्यदर्शन को स्वतः प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य; बौद्ध को परतः; प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य; न्याय-वैशेषिक को परतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य तथा मीमांसा को स्वतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य मान्य है।

16. प्रत्यक्ष ज्ञान वह है जिसके पूर्व कोई अन्य ज्ञान नहीं होता। यह मत स्वीकार किया है

(a) मीमांसकों को (b) नैयायिकों ने
(c) जैनों ने (d) वैयाकरणों ने

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : नैयायिकों के अनुसार प्रत्यक्ष ज्ञान वह है जिसके पूर्व कोई अन्य ज्ञान नहीं होता है। प्रत्यक्ष ज्ञान हमेशा इन्द्रिय तथा अर्थ के सन्निकर्ष से उत्पन्न, अन्य प्रदेशे, अव्यभिचारी और व्यवसायात्मक ज्ञान है।

17. न्याय के अनुसार भ्रम निम्नलिखित में से किस एक प्रत्यक्ष पर आधारित है?

(a) सामान्य लक्षण (b) ज्ञानलक्षण
(c) योगज (d) निर्विकल्पक

Ans. (b) : न्याय-दर्शन में 'भ्रम' को ज्ञान लक्षण नामक अलौकिक प्रत्यक्ष पर आधारित बताया गया है। 'शुक्ति' और रजत के समान धर्मों के कारण पूर्वदृष्ट रजत का स्मरण होता है और स्मृति में विद्यमान रजत रूप का बाहर शुक्ति के स्थान पर ज्ञान लक्षण प्रत्यासत्ति द्वारा असाधारण प्रत्यक्ष होता है।

18. लॉक के अनुसार ज्ञान सन्निहित है

(a) प्रत्ययों के बीच सहमति में
(b) प्रत्ययों के बीच असहमति में
(c) प्रत्ययों एवं वस्तुओं के बीच सहमति या असहमति के प्रत्यक्षीकरण में
(d) प्रत्ययों के बीच सहमति या असहमति के प्रत्यक्षीकरण में

Ans. (c) : लॉक के अनुसार वस्तुओं के मूलगुणों से प्राप्त मानसिक प्रत्ययों एवं वस्तुओं के बीच सहमति या असहमति के प्रत्यक्षीकरण में ज्ञान सन्निहित है। इसीलिए लॉक को प्रत्यय प्रतिनिधित्ववादी माना जाता है।

19. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें और निम्नलिखित कूटों की सहायता से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I (दार्शनिक)	सूची- II (विभेद)
A. ह्यूम	i. संभवता, सहसंभवता
B. लाइब्नित्ज	ii. साक्षात् परिचय ज्ञान, विवरणात्मक ज्ञान
C. रसेल	iii. 'जानना कि' 'जानना कैसे'
D. राईल	iv. पूर्ववर्ती संशयवाद, अनुवर्ती संशयवाद

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	iv	iii	ii
(b)	iv	i	ii	iii
(c)	iii	iv	ii	i
(d)	i	ii	iii	iv

Ans. (*) :

(a) ह्यूम – पूर्ववर्ती संशयवाद, अनुवर्ती संशयवाद
(b) लाइब्नित्ज – संभवता, सहसंभवता
(c) रसेल – साक्षात् परिचय ज्ञान, विवरणात्मक ज्ञान
(d) राईल – 'जानना कि' 'जानना कैसे'

20. अभिकथन (A) और तर्क (R) पर विचार तथा सही विकल्प का चयन करें:

अभिकथन (A): क्वाइन अनुभववादियों के उत्कट स्थगनवाद का खंडन करते हैं।

तर्क (R): बाह्य जगत विषयक हमारे अभिकथनों की परीक्षा इन्द्रियानुभवों के न्यायाधिकरण में समग्र समूह के रूप में होती है।

कूट:

(a) (A) और (R) दोनों सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य है परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या है।
(c) (A) सत्य है, परन्तु (R) असत्य है।
(d) (A) असत्य है और (R) सत्य है।

Ans. (a) : क्वाइन अनुभववाद को दो मताग्रहों पर आधारित मानते हैं। प्रथम मताग्रह विश्लेषणात्मक और संश्लेषणात्मक वाक्यों में आधारभूत भेद पर आधारित है और दूसरा मताग्रह स्थगनवाद (Reductionism) से है। क्वाइन अनुभववादियों के उत्कट स्थगनवाद का खण्डन करते हैं और क्योंकि बाह्य जगत विषयक हमारे अभिकथनों की परीक्षा इन्द्रियानुभवों के न्यायाधिकरण में समग्र समूह के रूप में होती है।

21. निम्नलिखित में से किसने कहा कि ''अनुभववादी चींटियों की तरह हैं, वे संग्रह करते हैं और उसका उपयोग करते हैं, किंतु बुद्धिवादी मकड़ियों की तरह अपने भीतर से धागों को बुनते हैं''।

(a) लॉक (b) बेकन
(c) बर्कले (d) एयर

Ans. (b) : बेकन को आगमनात्मक तर्कशास्त्र का जनक कहा जा सकता है। बेकन इंग्लैंड की अनुभववादी प्रवृत्ति के पहले महत्वपूर्ण विचारक और विज्ञान दार्शनिक है। वह आगमनात्मक अनुभव को निरीक्षण, प्रयोग और बौद्धिक सूझ-बूझ (विश्लेषण) पर आधारित एक वैज्ञानिक पद्धति है। बेकन का रूपक है-अनुभववादी चीटियों की तरह है। वे संग्रह करते हैं और उसका उपयोग करते हैं, किन्तु बुद्धिवादी अपने भीतर से धागों को बुनते हैं।

22. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प देकार्त और लॉक दोनों के द्वारा स्वीकार्य है?

(a) हम वस्तुओं को साक्षात् रूप से अनुभव द्वारा जानते है
(b) स्मृति वैयक्तिक अनन्यता की कसौटी है
(c) अन्तःप्रज्ञा और निदर्शन हमें निश्चित ज्ञान प्रदान करते हैं
(d) ईश्वर का अस्तित्व ईश्वर के विचार से प्रतिफलित है

Ans. (c) : देकार्त बुद्धिवादी तथा लॉक अनुभववादी दार्शनिक होने के बावजूद अन्तःप्रज्ञा और निदर्शन को निश्चित ज्ञान प्रदान करने का आधार मानते हैं। हालांकि दोनों के मतों में अंतर है।

23. ''प्रत्यक्षम् कल्पनापोढ़म् नामजात्याद्यासंयुक्तम्''- प्रत्यक्ष की यह परिभाषा दी गई है:

(a) धर्मकीर्ति (b) दिग्नाग
(c) वसुबंधु (d) रत्नकीर्ति

Ans. (b) : ''प्रत्यक्षम् कल्पनापोढ़म् नामजात्याद्यासंयुक्तम्''– आचार्य दिग्नाग। दिग्नाग अपने पुस्तक 'प्रमाण समुच्चय' में यह कहते हैं। उनके अनुसार ज्ञान के केवल दो साधन प्रत्यक्ष और अनुमान है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

24. अभिकथन (A) और तर्क (R) का परीक्षण करें तथा न्याय ज्ञान मीमांसा के संदर्भ में दिए गए कूटों में से सही विकल्प का चयन करें:

अभिकथन (A): ध्वनि है।

तर्क (R): ध्वनि श्रव्य है।

कूटः

(a) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(b) (A) और (R) दोनों सत्य है लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(c) (A) और (R) दोनों सत्य है लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।

(d) (A) और (R) दोनों असत्य है लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।

Ans. (b): न्याय की ज्ञानमीमांसा में 'ध्वनि का नित्य' माना गया है तथा 'ध्वनि को श्रव्य' भी माना गया है। परंतु जो 'ध्वनि श्रव्य है' वह 'श्रव्य' ध्वनि नित्य नहीं है। अतः (A) और (R) सत्य है परंतु सही व्याख्या नहीं है।

25. ''सभी वस्तुएँ नित्य हैं क्योंकि वे ज्ञेय हैं'' - इस युक्ति में निम्नलिखित तर्कदोष है:

(a) असाधारण सव्यभिचार (b) आश्रयासिद्ध

(c) बाधित (d) अनुपसंहारी सव्यभिचार

Ans. (d) : ''सभी वस्तुएँ नित्य है क्योंकि वे ज्ञेय है।'' में ज्ञेय होना हेतु पक्ष के सर्वग्राही होने के कारण किसी सपक्ष दृष्टान्त में संभव नहीं है। अतः इसमें हेतु अनुपसंहारी है।

26. सही क्रम का चयन करें:

(a) प्रतिज्ञा, हेतु, उपनय, उदाहरण

(b) प्रतिज्ञा, हेतु, निगमन, उपनय

(c) प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय

(d) हेतु, उदाहरण, प्रतिज्ञा, निगमन

Ans. (c) : न्याय दर्शन में परार्थ अनुमान को पंचावयव माना गया है। इसीलिए परार्थानुमान को 'पंचावयव अनुमान' भी कहते हैं। जिसका क्रम निम्न है। प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन।

27. बौद्ध मत के अनुसार अविनाभाव संबंध निर्भर करता है:

(a) तादात्म्य, कारणता, निषेध

(b) तादात्म्य, नियत साहचर्य, निषेध

(c) कारणता, निषेध, नियंत साहचर्य

(d) निषेध, नियत साहयचर्य, कारणता

Ans. (a): बौद्ध मत के अनुसार अविनाभाव संबंध तादात्म्य, कारणता, निषेध पर निर्भर करता है।

28. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प बौद्धमत के अनुसार प्रत्यक्ष के रूपों का अभिकथन करता है?

(a) इंद्रियविज्ञान, मनोविज्ञान, सामान्यलक्षण, योगिज्ञान

(b) मनोविज्ञान, स्व-संवेदन, इंद्रियविज्ञान, ज्ञानलक्षण

(c) स्व-संवेदन, मनोविज्ञान, योगिज्ञान, ज्ञानलक्षण

(d) इंद्रियविज्ञान, मनोविज्ञान, स्व-संवेदन, योगिज्ञान

Ans. (a): बौद्ध मत के अनुसार, प्रत्यक्ष के रूपों का अभिकथन करता है कमशः इन्द्रियविज्ञान, मनोविज्ञान, स्व-संवेदन, योगिज्ञान। बौद्ध दर्शन में दो ही प्रमाण माने गये हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान स्वलक्षण या परमार्थ सत बुद्धिगम्य नहीं है। वह प्रत्यक्ष का विषय है।

29. लोक संग्रह का अर्थ है?

(a) मुक्त आत्मा के हित में किए गए कर्म

(b) मानवता के हित में किए गए कर्म

(c) मुक्ति प्राप्ति के लिए किए गए कर्म

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : भगवद्गीता में 'लोकसंग्रह' के दर्शन का वर्णन हुआ है। यह 'स्थित प्रज्ञ' की अवधारणा के साथ वर्णित हुआ है। लोकसंग्रह का अर्थ होता है 'मानवता के हित में किये गये कर्म।' गीता में 'लोकसंग्रह' के लिए कर्मयोग का उपदेश दिया गया है। 'लोकसंग्रह' एक सामाजिक आदर्श है।

30. गीता के संदर्भ में दिए गए अभिकथन (A) तथा तर्क (R) का परीक्षण करें और सही विकल्प का चयन करें:

अभिकथन (A): स्वधर्म का पालन करना चाहिए।

तर्क (R): यह सुखोत्पादक है।

कूटः

(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(b) (A) और (R) दोनों सत्य है लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(c) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

(d) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।

Ans. (b) : गीता के संदर्भ में 'स्वधर्म' विशिष्ट धर्म है। 'स्वधर्म' का अर्थ है अपना-अपना धर्म या अपना-अपना कर्त्तव्य। जो आत्मा के विधान के अनुकूल हो उसे स्वधर्म का पालन करना चाहिए। यह सुखोत्पादक तो है परंतु इसके उद्देश्य सामाजिक एकता बनाये रखने के लिए है। अतः अभिकथन (A) और (R) दोनों सत्य है परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा-राममूर्ति पाठक)

31. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I (लेखक)	सूची- II (पुस्तकें)
A. शंकर	i. न्याय मंजरी
B. जयराशि भट्ट	ii. तत्त्वकौमुदी
C. जयंत भट्ट	iii. ब्रह्मसूत्र
D. वाचस्पति मिश्र	iv. तत्त्वोपप्लवसिंह

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	iii	iv	ii
(b)	iii	iv	i	ii
(c)	ii	i	iv	iii
(d)	iv	iii	i	ii

Ans. (b) :

(a) शंकर – ब्रह्मसूत्र

(b) जयराशि भट्ट – तत्त्वोपप्लवसिंह

(c) जयंत भट्ट – न्याय मंजरी

(d) वाचस्पति मिश्र – तत्त्वकौमुदी

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

32. बौद्धमत के अनुसार निम्नलिखित में से कौन 'त्रिशरण' के रूप में जाना जाता है?

(a) दर्शन, ज्ञान, चरित्र (b) मैत्री, करुणा, मुदिता
(c) बुद्ध, मनन, निदिध्यासन (d) बुद्ध, धम्म, संघ

Ans. (d): बौद्धमत के अनुसार, 'बुद्ध' धम्म, संघ, त्रिशरण के नाम से जाना जाता है।

33. भगवद्गीता को सर्वाधिक महत्ता इस कारण से प्रदान की गई है:

(a) जीवन का सामंजस्यपूर्ण दर्शन
(b) क्रिया, भक्ति और ज्ञान का समन्वय
(c) नैतिक शिक्षा
(d) उपरोक्त सभी

Ans. (d): 'भगवद्गीता' को ''प्रस्थाने त्रयी' में रखा गया है। 'भगवद्गीता' जीवन का सामंजस्यपूर्ण दर्शन है। इसमें क्रिया, भक्ति और ज्ञान का समन्वय किया गया है। 'स्थितप्रज्ञ' का आदर्श और लोकसंग्रह आदि इसकी प्रमुख नैतिक अवधारणाएँ हैं जो हमें नैतिक शिक्षा प्रदान करती है।

34. निम्नलिखित में से कौन सा सही क्रम है?

(a) क्षिप्त, विक्षिप्ति, मूढ़ (b) क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त
(c) क्षिप्त, विक्षिप्त, एकाग्र (d) विक्षिप्त, मूढ़, एकाग्र

Ans. (b) : योग-दर्शन में चित्त की पांच भूमियाँ (अवस्थाएँ) मानी गयी है जो क्रमशः -क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध है। प्रथम तीन (क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त) को योग के लिए अनुपयुक्त माना जाता है तथा अंतिम दो भूमियाँ ही योग के अनुकूल है।
(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा-डॉ0 राममूर्ति पाठक)

35. यह विचार निम्नलिखित में से किस एक का है कि 'नीति सम्बन्धी बातों में राजकीय नियम ही सर्वोच्च न्यायालय है?

(a) स्पेन्सर (b) मिल
(c) कान्ट (d) हॉब्स

Ans. (d): थॉमस हॉब्स जो एक सामाजिक -राजनीतिक दार्शनिक है ने 'सामाजिक समझौते का सिद्धान्त' दिया। उसके अनुसार नीति-संबंधी बातों में राजकीय नियम ही सर्वोच्च न्यायालय है। उसके प्रसिद्ध ग्रन्थ 'लेवियाथन' है।

36. सूची-I के साथ सूची-II को सुमेलित करें एवं नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चुनाव करें:

सूची-I	सूची-II
A. कान्ट	i. स्वर्णिम माध्यम
B. हेगेल	ii. मुख्य सद्गुण
C. प्लेटो	iii. निरपेक्ष आदेश
D. अरस्तू	iv. जीने के लिए मरो

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	i	iii	iv	ii
(c)	iii	iv	ii	i
(d)	iv	i	iii	ii

Ans. (c):
(a) काण्ट – निरपेक्ष आदेश
(b) हेगेल – जीने के लिए मरो
(c) प्लेटो – मुख्य सद्गुण
(a) अरस्तू – स्वर्णिम माध्य

37. निम्नलिखित में से किस एक का मत है 'मनुष्य सभी वस्तुओं का मापदण्ड है'?

(a) जीनो (b) प्रोटेगोरस
(c) अरस्तू (d) प्लेटो

Ans. (b): प्रोटेगोरस जो कि एक ग्रीक सोफिस्ट विचारक है के अनुसार, 'मनुष्य सभी वस्तुओं का मापदण्ड है। (होमो मेन्सुरा)।

38. निम्नलिखित में से कौन एक भारतीय नीतिशास्त्र को पाश्चत्य नीतिशास्त्र से पृथक करता है?

(a) पुरुषार्थ की अवधारणा
(b) वर्ण एवं आश्रम की अवधारणा
(c) अहिंसा की अवधारणा
(d) दण्ड एवं पुरस्कार की अवधारणा

Ans. (d): भारतीय नीतिशास्त्र को पाश्चात्य नीतिशास्त्र से पृथक करती है– दण्ड एवं पुरस्कार की अवधारणा।

39. 'नैतिक निर्णय का आधार कर्मफल है।' निम्नलिखित में से किस एक का यह मत है?

(a) सुखवादी (b) अन्तःप्रज्ञावादी
(c) कठोरतावादी (d) आदर्शवादी

Ans. (a): सुखवादी विचारधारा में 'नैतिक निर्णय का आधार पर कर्मफल है'माना गया है। अर्थात् यदि किसी निर्णय या कर्म से सुख उत्पन्न हो तो वह अच्छा कर्म या निर्णय है। हालांकि विभिन्न सुखवादी दार्शनिक 'उपयोगिता' पर अधिक जोर देते हैं।

40. निम्नलिखित में से किस एक विचारक ने 'न्याय' को 'मुख्य सद्गुण' के रूप में स्वीकार किया है?

(a) साफिस्ट (b) अरिस्टिपस
(c) बेन्थम (d) प्लेटो

Ans. (d): प्लेटो अपने नैतिक और राजनीतिक दर्शन को भी अपने प्रत्ययवादी तत्वमीमांसा के आधार पर निगमित करता है। उसके अनुसार यद्यपि भौतिक वस्तुएं परिवर्तनशील है तथापि ये मूलतः अपरिवर्तनशील प्रत्ययों की अभिव्यक्तियाँ हैं। वह आत्मा के तीन भागों के अनुरूप विवेक, साहस, आत्मसंयम तथा इन तीनों के सामंजस्य से उत्पन्न न्याय को प्रमुख सद्गुण मानता है।

41. सूची-I के साथ सूची-II को सुमेलित करें एवं नीचे दिऐ गये कूट से सही उत्तर का चुनाव करें:

सूची-I (लेखक)	सूची-II (पुस्तकें)
A. संवेगवाद	i. कान्ट
B. परामर्शवाद	ii. मिल
C. उपयोगितावाद	iii. एयर
D. बुद्धिवाद	iv. हेयर

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	i	iii	ii	iv
(c)	iii	iv	ii	i
(d)	iv	ii	i	iii

Ans. (c):
(a) संवेगवाद – एयर
(b) परामर्शवाद – हेयर
(c) उपयोगितावाद – मिल
(d) बुद्धिवाद – कांट

42. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची-I	सूची-II
A. उदारवादी नरीवाद	i. सीमोन द बोउवार
B. मार्क्सवादी नारीवाद	ii. मेरी वोल्स्टनक्राफ्ट
C. अस्तित्ववादी नारीवाद	iii. जूलियट मिशेल
D. समाजवादी नारीवाद	iv. फ्रेडरिक एंजेल्स

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	iv	i	iii
(b)	i	iii	iv	ii
(c)	ii	i	iv	iii
(d)	i	iii	ii	iv

Ans. (a): सीमोन द बोउवार अस्तित्ववादी नारीवाद; मेरी वोल्स्टनक्राफ्ट उदारवादी नारीवाद, जूलियट मिशेल समाजवादी नारीवाद तथा फ्रेडरिक एंजेल्स मार्क्सवादी नारीवाद के समर्थक है।

43. मानवाधिकार सम्मेलनों के संदर्भ में सूची - I और सूची- II को सुमेलित करें और कूटों की सहायता से सही विकल्प का चयन करें।

सूची - I	सूची- II
A. मानवाधिकार की सार्वभौमिक घोषण	i. 2006
B. बच्चों के अधिकार पर आधारित सम्मेलन	ii. 1979
C. विकलांग व्यक्तियों के अधिकार पर आधारित सम्मेलन	iii. 1948
D. स्त्रियों के प्रति प्रत्येक भेदभाव के उन्मूलन के के लिए सम्मेलन	iv. 1989

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iv	i	iii	ii
(b)	iii	iv	i	ii
(c)	ii	i	iv	iii
(d)	iv	iii	i	ii

Ans. (*):
(a) मानवाधिकार की सार्वभौमिक घोषणा – 1948
(b) बच्चों के अधिकार पर आधारित सम्मेलन – 1989
(c) विकलांग व्यक्तियों के अधिकार पर आधारित सम्मेलन – 2006
(d) स्त्रियों के प्रति भेदभाव के उन्मूलन के लिए सम्मेलन – 1979

44. निम्नलिखित में से कौन मानवाधिकार की संकल्पना की किसी भी रूप में आलोचना नहीं करता है?
(a) फ्रेडरिक नीत्शे (b) एडमंड बर्क
(c) जेरेमी बेंथम (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (d): मानवाधिकार की संकल्पना का फ्रेडरिक नीत्शे, एडमंड बर्क, जेरेमी बेंथम आदि सभी किसी न किसी रूप में आलोचना करते हैं।

45. ''वैयक्ति राजनैतिक है'' केरोल हेनिश का यह लोकप्रिय नारा पर्याय है
(a) प्रथम दौर के नारीवाद का
(b) तृतीय दौर के नारीवाद का
(c) नारीवादोत्तर का
(d) द्वितीय दौर के नारीवाद का

Ans. (d): ''वैयक्तिक राजनैतिक है'' केरोल हेनिश का यह नारा द्वितीय दौर के नारीवाद का पर्याय है।

46. यदि न्याय के प्रथम आकार में वृहत् वाक्य हो तो तर्क-दोष का नाम होगा
(a) अव्याप्त मध्यपद अथवा अनुचित वृहद्पद दोष
(b) अनुचित वृहद्प अथवा अनुचित लघुपद दोष
(c) चतुष्पद दोष अथवा अव्याप्त मध्यपद दोष
(d) अनुचित लघुपद अथवा अव्याप्त मध्यपद दोष

Ans. (a): यदि न्याय के प्रथम आकार में बृहत आधार वाक्य 'I' अर्थात् अंशव्यापी स्वीकारात्मक हो तो वहां पर अव्याप्त मध्यपद अथवा अनुचित वृहद्पद दोष होता है।

47. आगमनात्मक सामान्यीकरण आधारित है:
(a) सिर्फ अनुभव पर
(b) सिर्फ सामान्यीकरण पर
(c) सिर्फ प्राकृतिक समरूपता पर
(d) उपरोक्त सभी पर

Ans. (d) आगमनात्मक सामान्यीकरण, विशिष्ट अनुभव पर आधारित सामान्यीकरण है। इसका आधार प्राकृतिक समरूपता है।

48. निम्नलिखित में से कौन अनुमान का नियम नहीं है?
(a) मोडस पोनेन्स (b) कम्युटेशन
(c) सिम्पलीफिकेशन (d) एडीशन

Ans. (b): मोडस पोनेन्स, सिम्पलीफिकेशन, एडीशन आदि अनुमान के नियम है जबकि कम्युटेशन को पुर्नस्थापन नियम के अंतर्गत रखते हैं।

49. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें और नीचे दिए गए कूटों में से सही विकल्प का चयन करें:

सूची - I	सूची- II
A. एक्सपोटेशन	i. $[p.(q \vee r] \equiv [p.q) \vee (p.r)$
B. कम्युटेशन	ii. $p \equiv (p.p)$

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

C. डिस्ट्रीब्यूशन — iii. $[p.q) \supset r] \equiv [p \supset (q \supset r)$

D. टॉटोलॉजी — iv. $(p \vee q] \equiv (q \vee p)$

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iii	iv	i	ii
(b)	i	ii	iii	iv
(c)	iv	iii	ii	i
(d)	iii	iv	ii	i

Ans. (a):
(a) एक्सपोटेशन – $[p.q) \supset r] \equiv [p \supset (q \supset r)$
(b) कम्युटेशन – $(p \vee q) \equiv (q \vee r)$
(c) डिस्ट्रीब्यूशन – $[p (q{\vee}r] \equiv [p.q) \vee (p r)]$
(d) टॉटोलॉजी – $p \equiv (p.p)$

50. 'पद की वस्तु वाचकता' का अर्थ है:
(a) इसका विस्तार (b) इसके लक्षण
(c) उपरोक्त दोनों (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (c): 'पद की वस्तु वाचकता' का अर्थ इसका विस्तार तथा इसके लक्षण दोनों है।

51. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प 'आगमनात्मक युक्ति' का संकेतक है?
(a) ऐसा नहीं हो सकता कि आधार वाक्य सत्य हो लेकिन निष्कर्ष असत्य हो।
(b) यह संभव है कि आधार वाक्य निष्कर्ष से संगत न हो।
(c) ये युक्तियाँ न तो वैध हों न अवैध।
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

Ans. (a): इस प्रश्न का हिन्दी प्रारूप गलत है। अंग्रेजी प्रारूप के अनुसार 'निगमनात्मक युक्ति' (Deductive arraument) का संकेतक है कि ऐसा नहीं हो सकता कि आधार वाक्य सत्य हो लेकिन निष्कर्ष असत्य हो। हिन्दी में 'आगमनात्मक' की जगह निगमनात्मक होगा।

52. निम्नलिखित में से उस विकल्प का चयन करें जो सही नहीं है:
(a) एक सत्यताफलन अभिकथन में यदि पूर्ववर्ती और अनुवर्ती दोनों सत्य है, तो अभिकथन सत्य है।
(b) एक सत्यताफलन अभिकथन में यदि पूर्ववर्ती सत्य है तथा अनुवर्ती असत्य, तो अभिकथन सत्य है।
(c) एक सत्यताफलन अभिकथन में यदि पूर्ववर्ती और अनुवर्ती दोनों असत्य है, तो अभिकथन सत्य है।
(d) एक सत्यताफलन अभिकथन में यदि पूर्ववर्ती सत्य है और अनुवर्ती असत्य है, तो अभिकथन असत्य है।

Ans. (b): एक सत्यताफलन कथन में यदि पूर्ववर्ती सत्य है तथा अनुवर्ती असत्य तो अभिकथन सत्य है। गलत विकल्प है।

53. यदि A और B सत्य है, किन्तु X और Y असत्य है, तो निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(a) $\sim A \vee (X.Y)$ (b) (A.X)
(c) उपरोक्त दोनों (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (b): यदि A और B सत्य है किन्तु X और Y असत्य है तो (A. X) सही है।

54. दी गई युक्तियों का परीक्षण करें और सही विकल्प का चयन करें:

युक्ति I	**युक्ति II**
$M \cup N$	$P \cup Q$
$\sim M. \sim O$	-P.-R
$\because \sim N$	$\because Q$

कूटः
(a) I और II दोनों युक्तियाँ वैध है।
(b) I और II दोनों युक्तियाँ अवैध है।
(c) युक्ति I वैध है लेकिन युक्ति II अवैध है।
(d) युक्ति I अवैध है लेकिन युक्ति II वैध है।

Ans. (d):

युक्ति I	युक्ति II
$M \cup N$	$P \cup Q$
$\sim M. \sim O$	$-P \cup -R$
$\because \sim N$	$\because Q$
अवैध	वैध

55. दी गई युक्तियों के संदर्भ में नीचे दिए गए कूटों में से सही का चयन करें:

युक्ति I **युक्ति II**

$(x)\ (S_x \vee T_x) \supset \sim (M_x \vee N_x)$ — P.q
$(\exists_x)\ (S_x \sim W_x)$ — $\because q$
$(\exists_x)\ (T_x .-X_x)$
$(x)\ (\sim W_x \supset X_x)$
$\because (\exists_x)\ (M_x . N_x)$

कूटः
(a) दोनों ही युक्तियाँ वैध हैं।
(b) दोनों ही युक्तियाँ अवैध है।
(c) युक्ति I वैध है, किन्तु युक्ति II अवैध है।
(d) युक्ति I अवैध है, किन्तु II वैध है।

Ans. (c): युक्ति I वैध है जबकि युक्ति II अवैध है।

56. उस विकल्प का चयन करें, जो सही नहीं है:
(a) एक भावात्मक व्यक्तिवाचक प्रतिज्ञप्ति यह निर्धारित करती है कि एक व्यक्ति-विशेष एक गुण-विशेष को धारण करता है।
(b) परिणामीकरण (क्वांटिफायर) अनुमान के नियमों को नहीं बदलता।
(c) एक वैध न्याय आकारिक रूप से वैध एक युक्ति है जिसकी वैधता इसकी विषयवस्तु पर आधारित है।
(d) $'p . q \supset m \vee r'$ एक आकस्मिक अभिकथन है।

Ans. (c): A, B, D सही है। परंतु (C) एक वैध न्याय आकारिक रूप से वैध एक युक्ति है जिसकी वैधता इसकी विषयवस्तु पर आधारित है।

57. मनुष्य के भीतर ईश्वर का सिद्धांत निम्नलिखित में से किनके द्वारा समर्थित है?
(a) रामानुज और कबीर (b) कबीर और गुरु नानक
(c) गुरु नानक और रामकृष्ण (d) उपर्युक्त सभी

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d): 'मनुष्य' के भीतर 'ईश्वर' है- रामानुज, कबीर, गुरुनानक, रामकृष्ण आदि मानते थे।

58. निम्नलिखित विकल्पों को पढ़ें और बौद्ध धर्म के प्रतीत्य समुत्पाद के सही क्रम का चयन करें:

(a) संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श
(b) संस्कार, स्पर्श, नामरूप, विज्ञाप, षडायतन
(c) संस्कार, विज्ञान, नामरूप, स्पर्श, षडायतन
(d) स्पर्श, संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षडायतन

Ans. (a): 'द्वादश निदान' चक्र से संबंधित है। जो क्रमशः संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श है।

59. सिख धर्म के दस गुरुओं के नाम निम्नलिखित है। उस विकल्प का चयन करें जिसमें गुरुओं के नाम पहले से शुरू करके दसवे तक क्रम से दिए गए हैं:

(a) गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु हरगोविन्द, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरिराय, गुरु हरिकिशन, गुरु तेगबहादर, गुरु गोविन्द सिंह।
(b) गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरगोविन्द, गुरु हरिराय, गुरु हरिकिशन, गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविन्द सिंह।
(c) गुरु नानक, गुरु अंगत, गुरु रामदास, गुरु अमरदास, गुरु हरगोविन्द, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरिराय, गुरु हरिकिशन, गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविन्द सिंह।
(d) गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरगोविन्द, गुरु हरिकिशन, गुरु हरिराय, गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविन्द सिंह।

Ans. (b): सिक्ख धर्म के गुरुओं के नाम क्रमशः गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरगोविन्द, गुरु हरिराय, गुरु हरिकिशन, गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविन्द सिंह।

60. निम्नलिखित में से कौन इस मत के पक्षधर है कि व्यक्ति की संकल्पना प्रीमिटिव (मूल) है?

(a) देकार्त (b) एयर
(c) ऑस्टिन (d) स्ट्रासन

Ans. (d): साधारण भाषा दार्शनिक पी0एफ0 स्ट्रॉसन के अनुसार, व्यक्ति की संकल्पना को मूल प्रत्यय (Primitive concept) के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। इससे पहले पुरुष (व्यक्ति) के संबंध में दो सिद्धान्तों स्वामित्व और अस्वामित्व सिद्धांतों का खण्डन करते हैं।

61. जॉन ड्यूई से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही विकल्प का चयन करें:

(A) ड्यूई ने देकार्त की आत्मा विषयक अवधारणा की आलोचना की।
(B) ड्यूई ने तर्क दिया कि आत्मा सामाजिक की उपज है।
(C) ड्यूई कृत 'प्रागमैटिज्म' उपयोगितावादी दर्शन की आधारशिला है।

कूट :
(a) सिर्फ (A) सत्य है।
(b) सिर्फ (B) सत्य है।
(c) (A), (B) और (C) सत्य है।
(d) सिर्फ (A) और (B) सत्य है।

Ans. (d): जॉन ड्यूई ने विलियम जेम्स के अर्थक्रियावाद को उपकरणवाद में बदल दिया। ड्यूई ने अपने दर्शन में देकार्त के आत्मा विषयक अवधारणा की आलोचना किया तथा ड्यूई की कृत "प्रागमैटिज्म" उपयोगितावादी दर्शन की आधारशिला है।

62. सूची - I को सूची- II से सुमेलित करें और सही कूट का चयन करें:

सूची - I	सूची- II
A. राइल	i. वाक् क्रिया
B. सर्ल	ii. शब्दों के द्वारा वस्तुओं का संपादन कैसे हो।
C. डेविडसन	iii. मन की अवधारणा
D. ऑस्टिन	iv. सत्य और विवेचन विषयक अन्वेषण

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iii	iv
(b)	iii	i	iv	ii
(c)	iv	ii	iii	i
(d)	iii	i	ii	iv

Ans. (b): राइल मन की अवधारणा, सर्ल वाक् क्रिया, डेविडसन सत्य और विवेचन विषयक अन्वेषण तथा ऑस्टिन शब्दों के द्वारा वस्तुओं का सम्पादन कैसे हो से संबंधित है।

63. निम्नलिखित में से कौन शब्दार्थ मीमांसावादी परंपरा का अंग नहीं है?

(A) हेन्स जार्ज गेडेमर (B) फ्रेडरिक श्क्लेयरमेकर
(C) विल्हेल्म डेल्थी (D) विटगेन्स्टाइन

कूटः
(a) केवल (D) और (A) (b) केवल (C) और (A)
(c) केवल (B) (d) केवल (D)

Ans. (d): केवल विट्गेन्स्टाइन शब्दार्थ मीमांसावादी परंपरा का अंग नहीं है। हेन्स जार्ज गेडेमर, फ्रेडरिक श्क्लेयरमेकर और डेल्थी आदि शब्दार्थ मीमांसावादी दार्शनिक है।

64. निम्नलिखित में से कौन सा लेखन एडमंड हुसर्ल का नहीं है?

(A) लॉजिकल इन्वेस्टिगेसन्स
(B) आइडियाज फॉर ए प्योर फेनोमेनोलॉजी
(C) कार्टेसियन मेडिटेसन्स
(D) ट्रान्सेन्डेन्टल फेनोमेनालॉजी एंड द क्राइसिस ऑफ द यूरोपियन साइन्सेस

कूटः
(a) केवल (C) (b) केवल (C) और (D)
(c) केवल (B), (C) और (D) (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (d): 'लॉजिकल इन्वेस्टिगेसन्स' 'कार्टेसियन मेडिटेसन्स', 'आइडियाज फॉर ए प्योर फेनोमेनोलॉजी' 'ट्रांसडेन्टल, फनोमेनालॉजी' एण्ड 'फेनोमेनोलॉजिकल फिलॉसफी द क्राइसिस ऑफ यूरोपियन साइन्सेज' एण्ड आदि पुस्तकें एडमण्ड हुसर्ल की हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

65. निम्नलिखित में से कौन 'पोर सोई' और 'एन सोई' में अंतर करता है?
(a) हेडेगर (b) श्क्लेयरमेकर
(c) सार्त्र (d) विल्हेल्म डेल्थी

Ans. (c): सार्त्र अपने अस्तित्ववादी दर्शन में सत्ता के तीन आयामों का उल्लेख करते हैं। इन्हें सार्त्र अचेतन सत् (Insoi, Being-itself), चेतन सत्ता (Being for itself, Pour -soi) तथा अन्य सत्ता (Being or others) कहते हैं।

66. अद्वैत वेदान्त के पहले सुव्यवस्थित व्याख्याता है
(a) शंकर (b) रामानुज
(c) गौडपाद (d) पद्मपाद

Ans. (c): अद्वैत वेदान्त के पहले सुव्यवस्थित व्याख्याता गौडपादाचार्य को माना जाता है। यह पहले अद्वैत वेदान्ती है जिनकी कोई कृति उपलब्ध होती है। गौडपादाचार्य जी ने मान्डूक्य उपनिषद पर भाष्य लिखा जिसे 'माण्डूक्यकारिका' III 'आगमशास्त्र' कहते हैं।

67. 'ब्रह्म स्वतः प्रकाश्य है, इसलिए माया ब्रह्म को आच्छादित नहीं कर सकती है'-यह मत सिद्ध किया गया है:
(a) आश्रयानुपपत्ति के द्वारा
(b) तिरोधानानुपपत्ति के द्वारा
(c) निवर्तकानुपपत्ति के द्वारा
(d) स्वरूपानुपपत्ति के द्वारा

Ans. (b): रामानुज शंकर के माया-सिद्धान्त का खण्डन करते हैं जिन्हें 'सप्तानुपति' कहते हैं। तिरोधानानुपपत्ति के अनुसार, ब्रह्म स्वतः प्रकाश्य है, इसलिए माया ब्रह्म को आच्छादित नहीं कर सकती है। रामानुज के अनुसार माया द्वारा ब्रह्म का तिरोधान तर्कतः असिद्ध है।

68. निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांत अद्वैत वेदान्त के द्वारा स्वीकृत नहीं है?
(a) प्रतिबिम्बवाद (b) अवच्छेदवाद
(c) आभासवाद (d) अंशवाद

Ans. (d): अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म जीव संबंध को समझाने के लिए शंकराचार्य के अनुयायियों ने तीन सिद्धान्त-प्रतिबिम्बवाद, अवच्छेदवाद तथा आभासवाद का प्रतिपादन किया। 'अंशवाद' अद्वैत वेदान्त को मान्य नहीं है।

69. गाँधी के 'स्वदेशी' की अवधारणा की मूल आत्मा का आपादान है:
(a) केवल उसी का प्रयोग जो स्वोत्पादित हो।
(b) विदेशी वस्तुओं का सर्वथा बहिष्कार।
(c) अपने आस-पास की सेवाओं तक सीमित रहना।
(d) स्थानीय उत्पादों से परे न जाना।

Ans. (a): गाँधी जी के 'स्वदेशी' की अवधारणा की मूल आत्मा का अपादान केवल उसी का प्रकार जो स्वोत्पादित हो/है। गाँधी जी के अनुसार यदि विदेशी सामानों के प्रयोग से अपने देश के उद्योगों को हानि पहुंचे तो हमें स्वदेशी ही अपनाना चाहिए।

70. किस आन्दोलन के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा की अवधारणा का प्रतिपादन हुआ?
(a) भारत छोड़ो (b) होमरूल
(c) असहयोग (d) स्वदेशी

Ans. (d): राष्ट्रीय शिक्षा की अवधारणा का प्रतिपादन 'स्वदेशी' आन्दोलन के दौरान हुआ। गाँधी जी शिक्षा सिद्धांत में बुनियादी शिक्षा की बात करते हैं।

71. गाँधीजी ने सत्याग्रह तकनीक का प्रयोग पहली बार कहाँ किया?
(a) खेड़ा (b) दांडी
(c) चंपारण (d) अहमदाबाद

Ans. (c): गाँधी जी ने सत्याग्रह तकनीक का प्रयोग सर्वप्रथम चंपारण में किया। 'सत्याग्रह' 'सत्य के प्रति आग्रह' का सिद्धान्त है। गाँधी जी के सिद्धान्त और व्यवहार में ज्यादा अंतर नहीं। वह जो कहते थे उसका पहले प्रयोग करते थे।

72. 'समस्त सम्पत्ति ईश्वर की है जो इसे रखते हैं, इसके न्यासी हैं मालिक नहीं-कहा गया है:
(a) टालस्टॉय द्वारा (b) विनोबा भावे द्वारा
(c) गाँधी द्वारा (d) तिलक द्वारा

Ans. (c): गाँधी जी अपने न्यासिता सिद्धान्त में कहते हैं, समस्त सम्पत्ति ईश्वर की है जो इसे रखते हैं इसे न्यासी है मालिक नहीं।

73. 'एक संपादन मूलक उच्चारण का प्रयोग कार्य संपादन है।' यह मत है:
(a) सर्ल का (b) विटगेन्सटाइन का
(c) फ्रेगे का (d) ऑस्टिन का

Ans. (d): ऑस्टिन का दर्शन विश्लेषणात्मक दर्शनहै जिसमें वह भाषा विश्लेषण पर जो देते हैं। उनके अनुसार एक संपादन मूलक उच्चारण का प्रयोग कार्य संपादन के लिए होता है। इस प्रकार के उच्चारण का प्रतिपादन कार्य संपादन है।

74. निम्नलिखित में से कौन इस मत का समर्थन करता है कि नैतिक पदों में चुंबकत्व होता है तथा नैतिक निर्णयों में विवरणात्मक और संवेगात्मक दोनों ही प्रकार के अर्थ होते हैं?
(a) एयर (b) प्रीचर्ड
(c) स्टीवेंसन (d) ह्यूम

Ans. (c): स्टीवेन्सन ने भाषा की प्रवृत्तिपरिवर्तनपरक शक्ति पर अत्यधिक बल दिया है। उनके अनुसार, नैतिक पदों में चुबकत्व होता है तथा नैतिक निर्णयों में विवरणात्मक और संवेगात्मक दोनों ही प्रकार के अर्थ होते हैं। स्टीवेन्सन की पुस्तक का नाम 'एथिक्स एण्ड लैंग्वेज' है।

75. 'मेरा स्थान एवं तत्संबंधी कर्त्तव्य' -यह कथन है:
(a) हेगेल का (b) ब्रॉडले का
(c) मिल का (d) मूर का

Ans. (b): ब्रॉडले ने एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया जिसे उन्होंने 'मेरा स्थान तथा तत्संबंधी कर्त्तव्य कहा। जिसके अनुसार, प्रत्येक मनुष्य सामाजिक संस्था का एक अंग होता है। मनुष्यों के अपने-अपने विशिष्ट स्थान है और उन स्थानों के अनुरूप उनके कर्त्तव्य भी हो सकते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2014
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. निम्नलिखित में से किसके योगक्षेम के लिए भूतयज्ञ किया जाता है?

(a) मृत व्यक्तियों की आत्माएँ (b) पूर्वजों की आत्माएँ
(c) अनुष्ठानकर्त्ता (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (d) शतपथ ब्राह्मण के अनुसार 'केवल पांच महायज्ञ है, वे महान सच है वे है भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, एवं ब्रह्मयज्ञ। 'भूतयज्ञ' पशु-पक्षियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए आहार देकर चुकाए जा सकते है।
(नीतिशास्त्र सिद्धांत और व्यवहार, नित्यानन्द मिश्र)

2. बौद्धों के अनुसार, द्वादशनिदान के कुछ चरणों का सही अनुक्रम हैः

(a) नामरूप विज्ञान, षडायतन, स्पर्श
(b) विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श
(c) विज्ञान, नामरूप, स्पर्श षडायतन
(d) षडायतन, विज्ञान, नामरूप, स्पर्श

Ans : (b) द्वादशनिदान को पूर्ण चरण है- अविद्या, संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति तथा जरामरण। इसे भवचक्र भी कहते हैं।

3. बन्धन दो प्रकार का होता है- भावबन्धन और द्रव्यबन्धन- यह विचार किसका है?

(a) न्याय (b) योग
(c) जैन (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) जैन धर्म एवं दर्शन में बन्धन को दो प्रकार से माना गया है- भावबन्ध तथा द्रव्यबन्ध। मन दूषित भावों का अस्तित्व ही भावबन्ध तथा जीव का पुद्गल से आक्रांत हो जाना द्रव्य बंध कहलाता है।
(भारतीय दर्शन :चटर्जी एण्ड दत्त)

4. किस सम्प्रदाय का मानना है कि ईश्वर विद्यमान है, परन्तु उसने विश्व का सृजन नहीं किया है?

(a) वैशेषिक (b) चार्वाक
(c) योग (d) न्याय

Ans : (c) योग दर्शन को 'सेश्वर संख्या' भी कहा जाता है। योग दर्शन में ईश्वर को माना तो गया है परन्तु सृष्टि (विश्व) के उद्भव और विकास में उसकी कोई भूमिका नहीं है। ईश्वर को पुरूष विशेष माना गया हैं। ईश्वर प्राणिधान, चित्त की एकाग्रता के, कैवल्य-प्राप्ति के अनेक उपायों में से एक है।

5. बौद्धों के अनुसार स्वरलक्षण हैः

(a) केवल क्षणिक
(b) केवल वास्तविक/यथार्थ
(c) क्षणिक और वास्तविकता दोनों
(d) शाश्वत और वास्तविक/यथार्थ

Ans : (c) बौद्धों ने 'स्वलक्षण' को क्षणिक तो माना है परन्तु इन्हे वास्तविक भी माना है। उनके अनुसार स्वलक्षण वस्तुएं तो हैं परन्तु प्रतिक्षण परिवर्तनशील है।

6. नीचे अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। बौद्ध दर्शन के संदर्भ में उन पर विचार करें और सही कोड का चयन करें।

अभिकथन (A) : निर्वाण भी दुःख की स्थिति है।
कारण (R) : सर्वम् दुःखम् दुःखम्।

कूटः

(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) सत्य है और (R) असत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(c) (A) असत्य हैं और (R) सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(d) (A) और (R) दोनों असत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

Ans : (c) 'निर्वाण' को बौद्ध दर्शन में एक अवर्णीय अवस्था बताया गया हैं। तथा बौद्ध दर्शन का प्रथम आर्य सत्य 'सर्व दुःखम् दुःखम' है। अभिकथन (A) गलत है और कारण (R) सत्य है परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

7. न्यायदर्शन के अनुसार, कौन सा प्रमाण अभाव के ज्ञान का साधन है?

(a) प्रत्यक्ष (b) अनुमान
(c) अनुपलब्धि (d) शब्द

Ans : (a) न्यायदर्शन आभाव के ज्ञान का साधन प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रत्यक्ष सिद्धान्त का आधार इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष है। न्याय दर्शन में अभाव का ज्ञान विशेषण-विशेष्य -भाव सन्निकर्ष से होता है।

8. निम्नलिखित में से कौन सा एक विकल्प कतिपय बौद्ध-मत में स्वीकार्य है?

(a) स्वतः- प्रामाण्य, परतः-अप्रामाण्य।
(b) स्वतः- प्रामाण्य, स्वतः-अप्रामाण्य।
(c) परतः- प्रामाण्य, स्वतः-अप्रामाण्य।
(d) परतः- प्रामाण्य, परतः-अप्रामाण्य।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (c) भारतीय दर्शन विविध सम्प्रदायों में ज्ञान के प्रामाण्य के विषय में विभिन्न सिद्धान्त निम्न हैं-
सांख्य दर्शन - स्वतः प्रामाण्य एवं स्वतः अप्रामाण्य
बौद्ध दर्शन - परतः प्रामाण्य एवं स्वतः अप्रामाण्य
न्याय दर्शन - परतः प्रामाण्य एवं परतः अप्रामाण्य
मीमांसा दर्शन - स्वतः प्रामाण्य एवं परतः अप्रामाण्य

9. योग दर्शन के अनुसार, पाँच क्लेशों का सही क्रम क्या है?

(a) अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश
(b) अस्मिता, अविद्या, राग, द्वेष, अभिनिवेश
(c) राग, अस्मिता, अविद्या, द्वेष, अभिनिवेश
(d) अभिनिवेश, राग, अस्मिता, अविद्या, द्वेष

Ans : (a) योग दर्शन में पांच क्लेशों को माना गया है जो क्रमशः है- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश। इन क्लेशों के कारण सत्व, रजस् एवं तमस् गुणों में परिणाम उत्पन्न होते रहते है।

10. श्री अरविन्द के अनुसार, ब्रह्म एवं जगत् के मध्य कड़ी क्या है?

(a) मन (b) उच्चतर मन
(c) प्रदीप्त मन (d) अतिमन

Ans : (d) श्री अरविन्द अपने दार्शनिक चिन्तन को समग्र अद्वैत या पूर्ण अद्वैत कहते है। श्री अरविन्द के अनुसार ब्रह्म एवं जगत के मध्य कड़ी 'अतिमन' को मानते है।

11. वैदिक परम्परा के अनुसार, कर्म नियम का आधार निम्नलिखित में से कौन सा एक है?

(a) ईश्वर (b) प्रकृति
(c) मनुष्य (d) ऋत

Ans : (d) वैदिक परम्परा में कर्म नियम, नैतिक नियम, ब्रह्माण्ड मूलक निमय आदि का आधार 'ऋत्को माना जाता था।

12. निम्नलिखित में से किसकी गणना चित्तवृत्ति के अन्तर्गत नहीं होती है?

(a) स्मृति (b) विपर्यय
(c) वितर्क (d) प्रमाण

Ans : (c) पातंजलि के अनुसार योगस्य चित्तवृत्तिनिरोधः। योग दर्शन में चित्त की पांच वृत्तियों का उल्लेख मिलता है। जो क्रमशः - प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति है। चिन्त का विषयाकार होना ही चित्तवृत्ति है।

13. निम्नलिखित उदाहरण में हेत्वाभास है जिसे इस रूप में जाना जाता है:
'शब्द नित्य है क्योंकि उसमें शब्दत्व है।'

(a) साधारण अनेकान्तिक के रूप में
(b) असाधारण अनेकान्तिक के रूप में
(c) अनुपसंहारी अनेकान्तिक के रूप में
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (b) 'शब्द नित्य है क्योंकि उसमें शब्दत्व है'। में हेतु (शब्दत्व) शब्द का निजी गुण होने के कारण सजातीय दृष्टान्तों में अनुपस्थित है। अतः यहां असाधारण सत्यभिचार है। इसमें सपक्षवृत्ति अर्थात हेतु को पक्ष के साथ सपक्ष में भी रहना चाहिए का अल्लंघन होता है। इसे असाधारण अनेकान्तिक भी कहते है।

14. जीवन-मुक्त की अवधारणा निम्नलिखित का आदर्श है:

(a) मीमांसा (b) द्वैत-वेदान्त
(c) विशिष्टा-द्वैत (d) अद्वैत-वेदान्त

Ans : (d) अद्वैत वेदान्त में दो तरह से मोक्ष की अवधारणा मानी गयी है एक, जीवनमुक्त तथा दूसरी, विदेह मुक्त। जीवनमुक्त उसे कहते है जब जीव शरीर अवस्था में ही रहते हुए 'ब्रह्म' साक्षात्कार प्राप्त करके अथवा मुक्त हो जाये तथा अ..... अवस्था के मोक्ष को विदेह मुक्ति कहा जाता है।

15. मन से अतिमन तक विकास की प्रक्रिया का सही क्रम श्री अरविन्द के अनुसार क्या है?

(a) प्रदीपत मन, उच्चतर मन, अन्तर्मासिक मन, उर्ध्वमन एवं अतिमन
(b) उच्चतर मन, प्रदीपत मन, अन्तर्मासिक मन, उर्ध्वमन एवं अतिमन
(c) अन्तर्मासिक मन, उर्ध्वमन, अतिमन, उच्चतर मन, प्रदीप्त मन
(d) अतिमन, उच्चतर मन, प्रदीप्त मन, अन्तर्मासिक मन एवं उर्ध्वमन

Ans : (d) श्री अरविन्द मानस से अतिमानस के बीच क्रमिक विकास स्तरों की बात करते है। उनके अनुसार मानस से अतिमानस तक पहुँचने के लिए कुछ स्तरों का होना जरूरी है। जो क्रमशः है- (मानस), उच्चतर मन, प्रदीप्त मन, अन्तर्मासिक मन (अन्तदृष्टि), उर्ध्वमन (over mind) (व्यापकमान) तथा अतिमन (अतिमानस) (The super mind)

16. श्री अरविन्द के अनुसार, अज्ञान का जनक कौन है?

(a) अतिमन (b) उर्ध्वमन
(c) प्रदीप्तमन (d) अन्तर्मासिक मन

Ans : (b) श्री अरविन्द के अनुसार व्यापक मानस या उर्ध्वमन (over mind) को अज्ञान के क्षेत्र का कहा जा सकता है क्योंकि यह व्यापक मानस अनेकता को द्वैत भाव में परिणत कर लेता है और इसी को सत् मान लेता है, क्योंकि इनका वह समन्वय नहीं कर पाता है।

17. परमसत को अतिनैतिक के रूप में किसने प्रतिपादित किया है?

(a) नीत्शे (b) गाँधी
(c) श्री अरविन्द (d) के.सी.भट्टाचार्य

Ans : (c) श्री अरविन्द अपने दर्शन में परम् सत् को सत् चित्त, आनन्द कहते है। वह अपने दर्शन में परमसत् को अतिनैतिक (Supra-ethical) कहते है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

18. श्री अरविन्द के अनुसार, विकास की त्रिविध प्रक्रिया का सही क्रम क्या है?
(a) उर्ध्वीकरण, विस्तारण एवं समाकलन
(b) विस्तारण, उर्ध्वीकरण एवं समाकलन
(c) समाकलन, उर्ध्वीकरण एवं विस्तारण
(d) उपर्युक्त में कोई नहीं

Ans : (b) श्री अरविन्द के अनुसार विकास-प्रक्रिया के तीन प्रक्रियाएं समाविष्ट है। जो क्रमशः है- विस्तारण (Widening), उच्चत्व की ओर उन्मुखता या उर्ध्वीकरण (Heightening), तथा समाकलन (Integration)

19. मीमांसा के अनुसार, ज्ञान का प्रामाण्य है
(a) स्वतः (b) परतः
(c) स्वतः और परतः दोनों (d) न स्वतः न ही परतः

Ans : (a) मीमांसा दर्शन में ज्ञान का प्रामाण्य स्वतः तथा अप्रामाण्य परतः माना गया है। मीमांसा के अनुसार ज्ञान का प्रमाण स्वतः होता है।

20. कुमारिल के अनुसार जाति का व्यक्ति से संबंध जाना जाता है
(a) भेदाभेद सम्बन्ध (b) बहिरंग सम्बन्ध
(c) अयुतसिद्ध सम्बन्ध (d) सभी तीन

Ans : (a) कुमारिल के अनुसार जाति (सामान्य) का व्यक्ति (विशेष) से सबंध भेदाभेद सम्बन्ध है। जबकि बौद्ध दर्शन में 'जाति' को अपोह 'काल्पनिक' कहा गया है।

21. निम्नलिखित को नीचे प्रदत्त कूट के आधार पर सुमेलित कीजियेः

सूची I (चिन्तक)	सूची II (सिद्धांत)
(A) विवेकानन्द	i. मनुष्य में अतिरिक्तता
(B) टैगोर	ii. सार्वभौम धर्म
(C) श्री अरविन्द	iii. नव-बौद्धवाद
(D) अम्बेडकर	iv. पूर्णाद्वैत

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	i	iv	ii	iii
(c)	iv	ii	iii	i
(d)	iii	i	ii	iv

Ans : (a)

विवेकानन्द	सार्वभौम धर्म
टैगोर	मनुष्य में अतिरिक्तता
श्री अरविन्द	पूर्णाद्वैत
अम्बेडकर	नव-बौद्धवाद

22. यह किसने प्रतिपादित कियाहै कि 'खाली पेट वाले के लिये धर्म निरर्थक है'?
(a) राधाकृष्णन् (b) टैगोर
(c) कृष्णमूर्ति (d) विवेकानन्द

Ans : (d) स्वामी विवेकानन्द के अनुसार जो भूखा है उसको रोटी की जरूरत है। उनके अनुसार 'खाली पेट वाले के लिए धर्म निरर्थक है।' वह अपने दर्शन में शन्ति का चिंतन करते है।

23. यह किसने प्रतिपादित किया है कि जड़ एवं आत्मतत्व एक ही सत्ता की निम्नतम और उच्चतम अवस्थाएँ हैं?
(a) गाँधी (b) शंकर
(c) टैगोर (d) श्री अरविन्द

Ans : (d) श्री अरविन्द अपने विकासवादी दर्शन में यह प्रतिपादित करते है कि जड़ एवं आत्मत्व एक ही सत्ता की निम्नतम और उच्चतम अवस्थाएं है।

24. सूची - I को सूची - II से सुमेलित करें तथा प्रदत्त कूट के आधार पर सही उत्तर चुनें:

सूची I (लेखक)	सूची II (ग्रन्थ)
(A) गाँधी	i. दि ह्यूमन साइकिल
(B) श्री अरविन्द	ii. माई एक्सपरिमेन्ट्स विथ ट्रुथ
(C) टैगोर	iii. दि हिन्दू व्यू ऑफ लाइफ़
(D) राधाकृष्णन्	iv. दि रेलिजन ऑफ मैन

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	i	ii	iv	iii
(c)	iii	ii	i	iv
(d)	ii	iii	iv	i

Ans : (a) गांधी - माई एक्सपरिमेन्ट्स विथ ट्रुथ, श्री अरविन्द दि ह्यूमन साइकिल, टैगोर-दि रिलिजन ऑफ मैन तथा राधाकृष्णन-दि हिन्दु व्यू ऑफ लाइफ।

25. 'इन्द्रिय संवेदनाओं के बिना बुद्धिविकल्प पंगु है और बुद्धिविकल्पों के बिना इन्द्रिय संवेदन अन्ध है।' यह किसका कथन है?
(a) केण्ट (b) लॉक
(c) बर्कले (d) स्पिनोजा

Ans : (a) काण्ट अपने समन्वयवादी दर्शन में बुद्धिवाद और अनुभववाद की समीक्षा प्रस्तुत कर उनका समन्वय करता है। उसके अनुसार 'इन्द्रिय संवेदनाओं के बिना बुद्धिविकल्प पंगु है और बुद्धि विकल्पों के बिना इन्द्रिय संवेदन अंधे है।

26. निम्नलिखित में से किसे प्राथमिक गुण नहीं समझा जाता है?
(a) सघनता और विस्तार (b) आकृति और गति
(c) विश्रन्ति और संख्या (d) वर्ण और ध्वनि

Ans : (d) लॉक अपने दर्शन में दो तरह के गुणों का भेद करता है प्रथम प्राथमिक या मूल गुण तथा द्वितीयक या गौण गुण। उसके अनुसार प्राथमिक गुण वस्तुओं में स्थित मूल गुण है। जैसे- सघनता, विस्तार, आकृति, गति, विश्रान्ति और संख्या आदि। परन्तु वे गुण जो मानसिक होते है और मूलगुणों के मस्तिष्क द्वारा ग्रहण के बाद उत्पन्न होते गौण गुण कहते है जैसे- मनोभावों को रख सकते है। वर्ण, ध्वनि, आदि।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

27. अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार करें और सत्तामीमांसीय तर्क के प्रकाश में सही विकल्प का चयन करें:

अभिकथन (A) : ईश्वर निरपेक्ष पूर्ण सत्ता के रूप में अस्तित्ववान है।

कारण (R) : पूर्णता के लिये अस्तित्व अपरिहार्य नहीं है।

कूट:

(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(b) (A) और (R) दोनों असत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(c) (A) सत्य हैं और (R) असत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(d) (A) असत्य है और (R) सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

Ans : (c) सत्तामीमांसीय तर्क में पूर्णता के लिए अस्तित्व अपरिहार्य माना गया है। अतः अभिकथन (A) ईश्वर निरपेक्ष पूर्ण सत्ता के रूप में अस्तित्ववान है सत्य है परन्तु कारण (R) असत्य है तथा (R), (A) की व्याख्या नहीं है।

28. प्लेटो के अनुसार, विज्ञानों के अधिक्रम का सही क्रम बताइए।

(a) गणित, ज्यामिति, खगोलविज्ञान, संनाद-विश्लेषण और तर्कशास्त्र

(b) तर्कशास्त्र, गणित, खगोलविज्ञान, संनाद-विश्लेषण और ज्यामिति

(c) तर्कशास्त्र, खगोलविज्ञान, गणित, ज्यामिति और संनाद-विश्लेषण

(d) गणित, खगोलविज्ञान, तर्कशास्त्र, ज्यामिति और संनाद-विश्लेषण

Ans : (b) प्लेटों विज्ञानों निम्न अधिक्रमों में बांटता है- तर्कशास्त्र, गणित, खगोलविज्ञान, संनाद-विश्लेषण और ज्यामिति। प्लेटों का शिक्षा सिद्धान्त स्पाटो की शिक्षा व्यवस्था से प्रभावित थी।

29. निम्नलिखित में से माइलेशियन सम्प्रदाय के दार्शनिक कौन हैं ? सही कोड पर चिह्न लगाए।

1. थेलिज़ 2. एनैक्सीमेण्डर
3. पर्मेनाइडीज़ 4. एनैक्सीमेनिज़

कूट:

(a) 2 और 3 (b) 1, 2 और 4
(c) 2 और 4 (d) उपर्युक्त सभी

Ans : (b) थेलिज़, एनैक्सीमेण्डर तथा एनैक्सीमेनीज माइलेशियन सम्प्रदाय के दार्शनिक हैं जिन्होने क्रमशः जल, असीमित तत्व (एपिस) तथा वायु नामक तत्व को शृष्टि का मूल आधार कहा है। 'पार्मेनाइडीज' को इलियाई सम्प्रदाय से सम्बन्धित किया जाता है जिनकी 'सत्' की अवधारणा महत्वपूर्ण।

30. नैतिकता से सम्बन्धित कथन ए.जे. एयर के अनुसार

(a) संज्ञानात्मक (b) अ-संज्ञानात्मक
(c) विश्लेषणात्मक (d) प्रागानुभविक

Ans : (b) ए.जे. एयर नैतिकता से सम्बन्धित कथनों को असंज्ञानात्मक मानता है। वह इन कथनों को संवेदात्मक कहता है। उसका मत संवेगात्मक नैतिक मत है।

31. सामान्य से अधिष्ठान को उसके समवर्ती सिद्धांत के साथ सुमेलित करें:

(a) सामान्य का स्वतन्त्र अस्तित्व होता है। i. अरस्तूवाद
(c) सामान्य केवल विशिष्ट में विद्यमान होता है। ii. नाममात्रवाद
(a) सामान्य मन में विद्यमान होता है। iii. प्रत्ययवाद
(c) सामान्य का न तो स्वतन्त्र अस्तित्व होता है न ही यह मन में रहता है। iv. वस्तुवाद

कूट:

	(a)	(b)	(c)	(d)
(a)	i	iii	iv	ii
(b)	iv	i	iii	ii
(c)	iv	ii	iii	i
(d)	ii	iii	iv	i

Ans : (b) वस्तुवाद के अनुसार, सामान्य का स्वतंत्र अस्तित्व होता है।
प्रत्ययवाद के अनुसार सामान्य मन में विद्यमान होता है।
नाममात्रवाद के अनुसार सामान्य का न तो स्वतन्त्र अस्तित्व होता है और न ही मन में रहता है।
अरस्तूवाद के अनुसार सामान्य केवल विशिष्ट में विद्यमान होता है।

32. नीचे दिए गए तत्वों के समूह में से कौन सा अरस्तू के अनुसार, 'द्रव्य' के अन्तर्गत आता है?

1. सामान्य
2. गुण
3. सम्बन्ध
4. एक अज्ञात अधिष्ठान जो स्वयं में पदार्थ कहलाता है।

कोड:

(a) 1, 2 और 3 (b) केवल 1 और 3
(c) केवल 4 (d) उपर्युक्त सभी

Ans : (d) अरस्तू ने सत्ता (Reality) को द्रव्य (substance) कहा है। द्रव्य को नित्य कूटस्थ एवं सत् कहा है। उसके अनुसार द्रव्य एक अज्ञात अधिष्टान है जो स्वयं में पदार्थ कहलाता है। अरस्तू का द्रव्य सामान्य से युक्त विशेष है। इसके अतिरिक्त सामान्य, गुण, सम्बन्ध भी द्रव्य के अन्तर्गत आते है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

33. निम्नलिखित में से दार्शनिकों का कौन सा समूह परिमाणात्मक परमाणुवाद से सम्बन्ध रखता है?
नीचे दिए कोडों में से सही को चिह्नित करें:

1. एनैक्सागोरस 2. लूसीपस
3. डेमोक्रिट्स 4. एम्पीडॉकलेस

कोडः

(a) 1, 3 और 4 (b) केवल 3
(c) 2 और 3 (d) उपर्युक्त सभी

Ans : (c) ग्रीक विचारक ल्यूसीयस और डेमोक्रिटस को परिमाणात्मक परमाणुवादी विचारक माना जाता है।

34. अनन्त और सीमारहित तत्व के रूप में ईश्वर के दार्शनिक प्रत्यय की सर्वप्रथम किसने वकालत की थी?

(a) अरस्तू (b) एनैक्सीमैंडर
(c) ऐन्सेलम (d) हेराक्लिट्स

Ans : (b) अनन्त और सीमारहित तत्व के रूप में ईश्वर के दार्शनिक प्रत्यय की सर्वप्रथम एनैक्सीमेंडर ने वकालत की। इन्होंने अपने दर्शन में 'ऐपिस' (असीम) नामक तत्व की कल्पना की। जो सूक्ष्म विषयों पर ध्यान करता है।

35. काल के आधार पर निम्नलिखित प्राचीन ग्रीक दार्शनिकों के सही क्रम का चयन करेः

(a) हेराक्लाइटस, पाइथागोरस, डेमोक्रिटस, पार्मेनाइडीज़
(b) डेमोक्रिटस, हेराक्लाइटस, पार्मेनाइडीज़, पाइथागोरस
(c) पार्मेनाइडीज़, हेराक्लाइटस, पाइथागोरस, डेमोक्रिटस
(d) पाइथागोरस, पार्मेनाइडीज़, हेराक्लाइटस, डेमोक्रिटस

Ans : (d) पाइथागोरस (छठी शताब्दी ई.पू.) थार्मेनाइडीज (520 ई.पू.) हेराक्लाइटस (532 - 475 ई. पू.), डेमोक्रिटस।

36. 'मशीन में प्रेत' सिद्धांत निम्नलिखित में किससे सम्बन्धित है?

(a) मन का अधिकारिक सिद्धांत
(b) जीवन और मृत्यु का सिद्धांत
(c) मन का आध्यात्मिक सिद्धांत
(d) रहस्यवाद

Ans : (a) गिल्बर्ट राइल अपने दर्शन में डेकार्ट के आत्मा (मन) शरीर सम्बन्ध की आलोचना करते है और इसे मशीन में प्रेत सिद्धान्त कहा जाता है।

37. नीचे दिए वाक्यों को पढ़े और नीचे दिए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन करें:

वाक्यः

I. ह्यूम ने संवेदन और प्रत्यक्ष बोध के बीच भेद किया है।
II. ह्यूम प्रत्ययवादी है।
III. ह्यूम प्रत्ययवादी है, परन्तु अनुभववादी भी है।
IV. ह्यूम संशयवादी तथा तर्कवादी दोनों हैं।

विकल्पः

(a) I और II असत्य हैं, परन्तु III और IV सत्य हैं
(b) I और II सत्य हैं, परन्तु III और IV असत्य हैं।
(c) I को छोड़कर सभी सत्य हैं।
(d) I को छोड़कर सभी असत्य है।

Ans : (d) ह्यूम का दर्शन संशयवादी है किन्तु तर्कवादी (बुद्धिवादी) न होकर अनुभववादी है। ह्यूम ने संवेदन और प्रक्ष्यक्ष बोध के बीच भेद किया है।

38. हाईडेगर के अनुसार 'केयर' के तीन पक्ष कौन है?

(a) ताथ्यिकता, संभाविता, फॉलेनेस
(b) ताथ्यिकता, अवधान, अनुशासन'
(c) अनुशासन, फॉलेनेस, संभावित
(d) अवधान, ताथ्यिकता, फॉलेनेस

Ans : (a) हाइडेगर अपेन अस्तित्ववादी दर्शन में 'केयर' या 'कन्सर्न' अथवा 'serge' को अस्तित्व की एक विद्या मानता हैं। उसके 'केयर' के तीन पक्ष है क्रमशः तथ्यता (Pacticity), संभाविता (Possibility) तथा गिरावट (fallness) है। उसके अनुसार मानव का जगत के साथ सम्बद्ध होने का कारण उसका उद्वेगपूर्ण लगाव (केयर) है।

39. सत्य के अर्थक्रियापरक सिद्धांत के अनुसार

(a) सत्य विश्वासों की एक व्यवस्था है और इसे यथार्थ के साथ सहमत नहीं होना चाहिए।
(b) सत्य को वस्तुस्थिति की प्रतिलिप्ति होना चाहिए और यथार्थ के साथ असहमत नहीं होना चाहिए
(c) सत्य को वस्तुस्थिति के साथ असहमत नहीं होना चाहिए और उसे कार्यकारित्व होना चाहिए
(d) एक विचार तभी सत्य होता है जब उसमें और जब वह वस्तुस्थिति की प्रतिलिपि कार्यकारित्व हो।

Ans : (c) सत्य का अर्थ क्रियापरक सिद्धान्त अर्थ क्रियावादियों ने दिया है। जिसके अनुसार, सत्य को वस्तुस्थिति के साथ असहमत नहीं होना चाहिए और उसे कार्यकारित्व होना चाहिए।

40. सूची - I को सूची - II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए विकल्पों से सही का चयन करें :

सूची I	सूची II
(A) डिफेंस ऑफ कॉमन-सेंस	i. विटगेंस्टीन
(B) प्रोब्लम्स ऑफ फिलोसफी	ii. रसेल
(C) दि ब्राऊन बुक	iii. मूर
(D) कांसेप्ट ऑफ माइंड	iv. राईल

विकल्पः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	iii	ii	i	iv
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	iii	ii	iv	i
(d)	i	iv	iii	ii

Ans : (a) मूर - डेफंस ऑफ कॉमनसेंस, रसेल- प्रोब्लम ऑफ फिलोसफी, विटगेंस्टीन - दि ब्राउन बुक तथा राइल- दी कन्सेण्ट ऑफ माइण्ड।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

41. नीचे दिए कथनों - अभिकथन (A) और कारण (R) का परीक्षण करें और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चुनाव करें:

अभिकथन (A) : बर्कले के अनुसार, प्राथमिक और गौण गुणों के बीच कोई अन्तर नहीं है।

कारण (R) : रसेल का मानना है कि सामान्य तर्क वाक्य कभी भी अस्तित्वपरक नहीं होते हैं।

कूट:

(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) और (R) दोनों असत्य है, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या है।
(d) (A) सत्य है (R) असत्य हैं परन्तु की सही व्याख्या है।

Ans : (b) अभिकथन (A) बर्कले, प्राथमिक और गौण गुणों के बीच कोई अन्तर नहीं करते है सही है तथा कारण (R) रसेल का मानना है कि सामान्य तर्क वाक्य कभी भी अस्तित्वपरक नहीं होते है भी सही है परन्तु (R), (A) की वयाख्या नहीं है।

42. काण्ट के अनुसार, संवेदना के दो प्रागनुभविक आकार हैं:

(a) विश्व और आत्मा (b) आत्मा और ईश्वर
(c) विश्व और ईश्वर (d) दिक् और काल

Ans : (d) काण्ट देश-काल को संवेदना के दो प्रागनुभविक आकार कहता है। वह देश-काल को दो दरवाजे कहता है जिनसे होकर संवेदन बौद्धक कोटियों तक पहुँचते है और ज्ञान का विषय बनते है।

43. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही मेलित है?

(a) विट्टगेंस्टीन - दर्शन तथा विश्लेषण
(b) सी.एस. पीयर्स - आलोचनात्मक दर्शन
(c) हुसरल - अर्थ और उपयोग
(d) जी.ई.मूर - प्रत्ययवाद का खंडन

Ans : (d) जी.ई. मूर ने प्रत्ययवाद का खण्डन किया। उन्होंने बर्कले के 'सत्ता दृश्यता है' कथन को आधार बनाकर प्रत्ययवाद का खण्डन किया है।

44. रामानुज की सत्ख्याति को निम्नलिखित नाम से भी जाना जाता है:

(a) अनिर्वचनीय ख्याति (b) अख्याति
(c) सदसत् ख्याति (d) यथार्थ ख्याति

Ans : (b) रामानुज की सतख्याति को यथार्थ ख्याति भी कहते है। भ्रम अज्ञान या अपूर्ण, किन्तु सत्य, ज्ञान है। भ्रम अन्यथा ज्ञान नहीं। समस्त ज्ञान यथार्थ होता है। भ्रम भी आंशिक ज्ञान के रूप में अंशतः सन्य है।

45. यह विचार कि 'भाषा के अनेक कार्य सम्पादित करने होते हैं'- सम्बद्ध है:

(a) अर्थ का चित्र सिद्धांत
(b) अर्थ का उपयोग सिद्धांत
(c) (a) और (b) दोनों
(d) न (a) तो और न (b)

Ans : (b) विट्गेन्सटाइन के अर्थ का चित्र सिद्धान्त के अनुसार, भाषा के कुछ निश्चित कार्य होते हैं, किन्तु उसके परवर्ती विचार अर्थ के उपयोग सिद्धान्त के अनुसार 'भाषा को अनेक कार्य सम्पादित करने होते हैं। इसे भाषा-खेल सिद्धान्त के नाम से भी जानते हैं।

46. चार्वाक के अनुसार, ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में अनुमान को स्वीकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि

(a) पक्ष तथा साध्य में कोई अनिवार्य सम्बन्ध नहीं है।
(b) पक्ष के ज्ञान के सम्बनध में सन्देह है।
(c) व्यप्ति की स्थापना नहीं की जा सकती है।
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) चर्वाक दर्शन एक भौतिकवादी दर्शन है। चर्वाक दर्शन के प्रत्यक्ष को एक मात्र प्रमाण माना गया है। अनुमान, शब्द उपमान आदि का खण्डन किया गया है। उनके अनुसार ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में अनुमान को स्वीकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि व्याप्ति की स्थापना नहीं की जा सकती है।

47. निम्नलिखित विचारकों में से किसने 'भक्ति' को गीता का सर्वप्रमुख सिद्धांत बतलाया है?

(a) शंकर (b) रामानुज
(c) लोकमान्य तिलक (d) गाँधी

Ans : (b) रामानुज अपने दर्शन में भक्तियोग को बहुत महत्व देते है। उन्होने भगवद्गीता को सर्वप्रमुख सिद्धान्त 'भक्ति' को ही माना। उनके अनुसार हमें अपने आपको ईश्वर के चरणों में पूर्णतः समर्पण करना होगा। तभी मोक्ष की प्राप्ति होगी।

48. बौद्ध-मत के अपोहवाद से निम्नलिखित विकसित होता है:

(a) नाममात्रवाद (b) प्रत्ययवाद
(c) वस्तुवाद (d) अर्थक्रियावाद

Ans : (a) बौद्ध के अपोहवाद से नाममात्रवाद का विकास होता है। बौद्ध दर्शन में जाति (सामान्य) के 'अपोह' माना गया है। अर्थात जाति 'नाम' मात्र है।

49. रसेल के अनुसार, निम्नलिखित में से किसका अपना स्वयं का एक अर्थ है?

(a) व्यक्तित्वाचक नाम (b) निश्चित विवरण
(c) अनिश्चित विवरण (d) (a) और (c) दोनों

Ans : (a) रसेल के अनुसार व्यक्तिवाचक नामों का अपना स्वयं का अर्थ होता है। वह किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु, स्थान का निर्देश करते है।

50. रसेल ने कहा है कि उनके द्वारा प्रतिपादित तार्किक परमाणुवाद का सिद्धांत निम्नलिखित विद्वान के लेखों से व्युत्पन्न है:

(a) श्लिक (b) कार्नेप
(c) फ्रेगे (d) विट्गेंस्टीन

Ans : (d) रसेल ने खुद स्वीकार किया है कि उनके द्वारा प्रतिपादित तार्किक परमाणुवाद का सिद्धान्त विट्गेंस्टीन के लेखों से प्रेरित है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2014
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. मनुष्य एवं समाज के मध्य अवयवी सम्बन्ध का प्रतिपादन कौन करता है?
(a) हेगेल (b) अरस्तू
(c) मिल (d) बेन्थम

Ans : (a) हेगल अपने दर्शन में मनुष्य एवं समाज के मध्य अवयवी सम्बन्ध (organ in relation) का प्रतिपादन करता है। हेगेल के अनुसार नैतिक चेतना की अभिव्यक्ति क्रमशः परिवार, समाज और राज्य के रूप में होती है।

2. 'साध्यों के साम्राज्य के सदस्य के रूप में कार्य करें'- यह कौन प्रतिपादित करता है?
(a) अरस्तू (b) स्पिनोजा
(c) मिल (d) केण्ट

Ans : (d) काण्ट अपने अहेतुक आदेश के पांचवे सूत्र साध्यो के राज्य का सूत्र में कहता है कि 'साध्यों के साम्राज्य के सदस्य के रूप में कार्य करें।

3. 'एक असन्तुष्ट मनुष्य होना बढ़िया है एक सन्तुष्ट सूअर की अपेक्षा, एक असन्तुष्ट सुकरात होना बढ़िया है, एक सन्तुष्ट मूर्ख की अपेक्षा'- यह कथन है
(a) केण्ट का (b) ह्यूम का
(c) मिल का (d) बेन्थम का

Ans : (c) मिल अपने सुखवादी चिंतन के आलोक में कहते है कि, 'एक असन्तुष्ट मनुष्य होना बढ़िया है एक सन्तुष्ट सूअर की अपेक्षा, एक असन्तुष्ट सुकरात होना बढ़िया है, एक सन्तुष्ट मूर्ख की अपेक्षा'। मिल बेन्थम के उपयोगितावाद में मौलिक संशोधन करता है।

4. 'शुद्ध सत्' की अवधारणा का प्रतिपादन निम्नलिखित दार्शनिकों में से किसने किया है?
(a) पाइथागोरस (b) डिमोक्रिटस
(c) हेराक्लाइटस (d) पार्मेनाइडीज़

Ans : (d) इलियाई विचारक पार्मेनाइडीज ने अपने दर्शन 'शुद्ध सत्' की अवधारणा का प्रतिपादन करने वाले ग्रीक विचारक माने जाते है। पाइथागोरस ने 'संख्या-सिद्धान्त', हेराक्लाइटस ने परिवर्तन-सिद्धांत तथा डेमोक्रिटस ने परिमाणात्मक परमाणुवाद की स्थापना किया।

5. मिथ्या प्रतीति के विषय में रामानुज को निम्नलिखित सिद्धांतों में से कौन सा एक मान्य है?
(a) सत् ख्याति (b) असत् ख्याति
(c) आत्म ख्याति (d) अनिर्वचनीय ख्याति

Ans : (a) 'मिथ्या प्रतीति के सन्दर्भ में रामानुज का मत 'सत् ख्याति' को मानते हैं जिसके अनुसार हमें जो मिथ्या ज्ञान होता है वह एक तरह का सत् ज्ञान ही है।

6. निम्नलिखित में से किसे 'प्रच्छन्न बौद्ध' कहा जाता है?
(a) महावीर (b) सांख्य
(c) शंकर (d) चार्वाक

Ans : (c) अद्वैत वेदान्त दर्शन के कुछ आलोचक जो शंकर मत की आलोचना करते है को 'प्रच्छन्न बौद्ध' कहते है।

7. 'जिन' संबंधित है
(a) बौद्ध धर्म से (b) जैन धर्म से
(c) सिक्ख धर्म से (d) इस्लाम धर्म से

Ans : (b) 'जिन' शब्द जैन धर्म से संबंधित है। 'जिन' शब्द से ही 'जैन' शब्द की व्युत्पत्ति मानी जाती है। 'जिन' शब्द का अर्थ है 'जीतना'। जो अपने निम्नकोटि के स्वभाव या मनोवेगों पर विजय प्राप्त करके सर्वोच्च सत्ता का साक्षात्कार कर लिया है वह 'जिन' है।

8. प्रज्ञा, शील और समाधि मुख्य अवधारणाएँ हैं:
(a) हिन्दू धर्म (b) जैन धर्म
(c) बौद्ध धर्म (d) इनमे से कोई नहीं

Ans : (c) अष्टांगिक मार्ग के अन्तर्गत बौद्ध दर्शन में निर्वाण प्राप्ति के लिए शील, समाधि और प्रज्ञा की शिक्षा दी जाती है। जिसे 'दिशिक्षा' कहते है। प्रज्ञा के अन्तर्गत सम्यक् दृष्टि और सम्यक् संकल्प आते है। शील में सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव और सम्यक् व्यायाम आते है। 'समाधि' में सम्यक स्मृति और सम्यक् समाधि आते हैं।

9. नैतिकता में आन्तरिक आदेश को कौन स्वीकार करता है?
(a) बेन्थम (b) मिल
(c) सिजविक (d) ह्यूम

Ans : (b) स्वार्थवाद से परार्थवाद की ओर जाने के लिए बेन्थम चार प्रकार की बाह्य अनुशास्तियां (आदेश sanctions) मानता है। मिल इन्हे अपर्याप्त बताता है और उसने परहित पर आन्तरिक आदेश (अनुशस्ति- sanction) को भी इसमें जोड़कर नैतिकता के लिए आवश्यक मानता है।

10. कोई भी प्राक्कल्पना वैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण तब है जब वह
(a) स्थापित वैज्ञानिक नियम के विरूद्ध हो।
(b) धार्मिक विश्वास के विरूद्ध हो।
(c) धार्मिक विश्वास से संगति रखता हो।
(d) सत्यापनीय हो।

Ans : (d) कोई भी प्राक्कल्पना महत्वपूर्ण तब होती है जब वह सत्यापनीय हो। चूंकि प्रत्येक वैज्ञानिक व्याख्या प्राक्कल्पना मानी जाती हैं प्राक्कल्पना के रूप में सत्य या असत्य का प्रश्न सदैव खुला रहता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

11. 'पंचलब्धि' का अर्थ क्या है?

(a) उपलब्धि, महालब्धि, कारणालब्धि, मोचनलब्धि, अनुपलब्धि
(b) क्षयोपशमलब्धि, विशुद्धिलब्धि, देशनालब्धि, प्रायोग्यलब्धि, कारणलब्धि
(c) लाभालब्धि, देशनालब्धि, कृपालब्धि, संवरालब्धि, निर्जरालब्धि
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (b) पंचलब्धि का अर्थ है- क्षयोपशमलब्धि, विशुद्धिलब्धि, देशनालब्धि, प्रायोग्यलब्धि, कारणलब्धि।

12. दिए गए अभिकथन के लिए सही प्रतीकात्मक रूप का चयन करें:

अभिकथन

यदि कुछ नष्ट होता है, तो कोई-न-कोई दोषी ठहराया जाएगा।

प्रतीकात्मक रूप:

(a) $(\exists x)\ Dx \supset (\exists y)\ (Py\ .\ By)$
(b) $(\exists x)\ Dx \supset (Py\ .\ By)$
(c) $(\exists x)\ -Dx \supset -(\exists y)\ (Py\ .\ By)$
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (b) 'यदि कुछ नष्ट होता है, तो कोई-न-कोई दोषी ठहराया जाता है। का प्रतीकाषक रूप है- $(\exists x)\ Dx \supset (Py\ .\ By)$

13. सूची - I को सूची - II से सुमेलित करें तथा नीचे दिए गए विकल्पों में से सही को चिह्नित करें :

	सूची I		सूची II
(A)	$-(p v q) \equiv (-p\ .\ -q)$	i.	डिस्ट्रीब्यूशन
(B)	$[p\ .\ (q\ v\ r)] \equiv [(p\ .\ q)\ v\ (p\ .\ r)]$	ii.	डबल-निगेशन
(C)	$p \equiv --p$	iii.	एक्सपोर्टेशन
(D)	$[(p\ .\ q) \supset r] \equiv [p \supset (q \supset r)]$	iv.	डी मॉर्गन थ्यूरम

विकल्प:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	iv	i	ii	iii
(b)	i	iii	ii	iv
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	iv	iii	ii	i

Ans : (a)

$-(pvq) \equiv (-p\ .\ -q)$	–	डी मॉर्गन थ्यूरम
$[p\ .\ (q\ v\ r)] \equiv [(p\ .\ q)\ v\ (p\ .\ r)]$	–	डिस्ट्रीब्यूशन
$p \equiv --p$	–	डबल-निगेशन
$[(p\ .\ q) \supset r] \equiv [p \supset (q \supset r)]$	–	एक्सपोर्टेशन

14. दी गई युक्ति की परीक्षा करें तथा दिए गए विकल्पों में से सही का चयन करें:

युक्ति

$(V \supset -W)\ .\ (X \supset Y)$
$(-W \supset Z)\ .\ (Y \supset -A)$
$(Z \supset -B)\ .\ (-A \supset C)$
$V\ .\ X$
$\therefore\quad -B\ .\ C$

विकल्प

(a) वैध
(b) अवैध
(c) उपर्युक्त दोनों
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (a)
$(V \supset -W)\ .\ (X \supset Y)$
$(-W \supset Z)\ .\ (Y \supset -A)$
$(Z \supset -B)\ .\ (-A \supset C)$
$V\ .\ X$
$\therefore\quad -B\ .\ C$
यह एक वैध युक्ति है।

15. रामानुज के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा एक आत्मा की सही स्थिति निरूपित करता है?

(a) आत्मा और ईश्वर में अनौपाधिक अभेद है।
(b) ईश्वर और आत्मा दो भिन्न सत्ताएँ हैं।
(c) आत्मा और शरीर अभिन्न है।
(d) आत्मा और ईश्वर का संबंध अवयव एवं अवयवी का है।

Ans : (d) रामानुज के दर्शन में जीव (आत्मा) एवं जगत का ईश्वर से अवयव-अवयवी का संबंध माना गया है। यह 'अपृथक-सिद्ध' सम्बन्ध को मानते हैं। इनका दर्शन विशिष्टाद्वैत वेदान्त कहलाता है।

16. निम्नलिखित में से कौन सा एक बौद्धमत के बारे में सही है?

(a) इस जीवन में ही निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है।
(b) मृत्योपरान्त जीवन में ही निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है।
(c) इस जीवन और मृत्योपरांत जीवन दोनों में निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है।
(d) तथागत की अनुकम्पा से निर्वाण प्राप्त किया जा सकता हैं।

Ans : (c) बौद्ध दर्शन में निर्वाण के दो भेद प्राप्त होते हैं- उपाधिशेष और निरूपाधिशेष। उपाधिशेष निर्वाण जीवन के रहते हुए निर्वाण प्राप्त कर लेना है तथा निरूपाधिशेष निर्वाण में शरीरपात या मृत्योपरांत निर्वाण प्राप्त होता है। उपाधिशेष निर्वाण प्राप्त व्यक्ति अर्हत कहलाता है। वस्तुतः 'अर्हत्' को ही निरूपाधिशेष निर्वाण प्राप्त होता है।

17. लम्बाई एवं चौड़ाई के विचार को नीतिशास्त्र में कौन स्वीकार करता है?

(a) मिल (b) स्पिनोज़ा
(c) स्पेन्सर (d) मूर

Ans : (c) हर्बट स्पेन्सर ने सुख और विकास का समन्वय कर सुखवाद को विकासवादी आयाम दिया था। स्पेन्सर ने जीवन के दो आयाम बताएं हैं जिससे जीवन की अच्छाई तथा बुराई की माप की जा सकती हैं। ये आयाम है जीवन की 'लंम्बाई' तथा चौड़ाई। जीवन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

की 'लम्बाई' से तात्पर्य 'आयु' से है तथा जीवन की 'चौड़ाई' का अर्थ जीवन की 'सक्रियता' या 'कर्मठता' है।
(नितिशास्त्र का सर्वश्रण- संगम लाला पाण्डेय)

18. ब्रह्म किस प्रकार की सत्ता है?
(a) व्यावहारिक
(b) पारमार्थिक
(c) व्यावहारिक और पारमार्थिक दोनों
(d) प्रतिभासिक

Ans : (b) शांकर अद्वैत वेदान्त दर्शन में तीन तरह की सत्ताएं क्रमशः प्रतिभासिक, व्यावहारिक तथा पारमार्थिक सत्ता मानी गयी है। भ्रम और स्वप्न के प्रत्यय प्रतिभासिक सत्ता, 'जगत', व्यावहारिक सत्ता तथा 'ब्रह्म' को पारमार्थिक सत्ता माना गया है।

19. ईश्वर से प्रार्थना और योगाभ्यास करने के लिए व्यक्ति किस आश्रम व्यवस्था में वन में जाता है?
(a) ब्रह्मचर्य (b) गृहस्थ
(c) वानप्रस्थ (d) संन्यास

Ans : (c) भारतीय दर्शन एवं जीवन पद्धति में चार प्रकार के आश्रमों के माध्यम से किसी व्यक्ति के कर्मों आदि का निर्धारण किया गया था जो क्रमशः - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास। वानप्रस्थ आश्रम में कोई भी मनुष्य गृहस्थावस्था का त्याग कर वन में ईश्वर से प्रार्थना और योगाभ्यास करने के लिए व्यक्ति जाता है।

20. नीचे दो वाक्य कथन (A) तथा तर्क (R) के रूप में दिए गए हैं। उनके अनुसार दिए गए कूट से सही का चयन करें:
कथन (A) : मीमांसा मतानुसार वेद नित्य हैं।
तर्क (R) : मीमांसा मतानुसार शब्द नित्य हैं।
कूटः
(a) (A) तथा (R) दोनों सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) तथा (R) दोनों सत्य हैं, किन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सत्य हैं, (R) असत्य है तथा (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं है।
(d) (A) असत्य है, (R) सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।

Ans : (b) मीमांसा शब्दनित्यत्ववाद का प्रतिपादन करके वेद-वाक्यों के प्रामाण्य का समर्थन करती है। उसके अनुसार वेद जिन शब्दों से बने हैं वे शब्द नित्य है। जैमिनी के अनुसार वेद की नित्यता का तात्पर्य उसके पाठ के स्थायित्व से है।

21. सूची - I को सूची - II से सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें:

सूची I	सूची II
(A) पुरूषार्थ	i. वर्ण
(B) ब्रह्मविहार	ii. मृषावादा
(C) पंचशील	iii. मोक्ष
(D) वैश्य	iv. करूणा

विकल्पः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iii	iv	ii	i
(c)	iv	ii	i	iii
(d)	iii	i	ii	iv

Ans : (b)
पुरूषार्थ – मोक्ष
ब्रह्मविहार – करूणा
पंचशील – मृषावादा
वैश्य – वर्ण

22. बैन्थम के संदर्भ से, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही कोड का चयन करें:
1. अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख
2. प्रकृति ने मानवमात्र को दो सर्वसमर्थ स्वामियों के शासन में रखा है- वेदना और प्रसन्नता
3. समुदाय वैयक्तिक व्याष्टियों का कल्पित निकाय है।

कोडः
(a) 1 और 2 सत्य हैं। (b) 1 और 3 सत्य हैं।
(c) केवल 1 सत्य है। (d) 1, 2 और 3 सत्य हैं।

Ans : (d) बेन्थम एक सुखवादी विचारक हैं। जो 'सुख' को नैतिकता का मापदण्ड मानते है। उनके सन्दर्भ अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख, प्रकृति ने मानवमात्र को दो सर्वसमर्थ स्वामियों के शासन में रखा है- वेदना और प्रसन्नता, तथा समुदाय वैयक्तिक व्यष्टियों का कल्पित निकाय है, सही है।

23. 'प्रबुद्ध अराजकता' का अर्थ है:
(a) अव्यवस्था
(b) राज्य की अविद्यमानता
(c) बुद्धिमान लोगों की अराजकता
(d) साम्राज्यवाद

Ans : (c) 'प्रबुद्ध अराजकता' का अर्थ है बुद्धिमान लोगों की अराजकता है।

24. यह विचार कि 'जाति उतनी वास्तविक है जितना कि व्यक्ति' किसका है?
(a) न्याय सम्प्रदाय (b) बौद्ध सम्प्रदाय
(c) चार्वाक सम्प्रदाय (d) अद्वैत वेदान्त सम्प्रदाय

Ans : (a) न्याय दर्शन एक वस्तुवादी दर्शन है जो जाति की सत्ता को मानता है। उसके अनुसार जाति की वस्तुगत सत्ता हैं। उसके अनुसार 'जाति उतनी वास्तविक है, जितना कि व्यक्ति'।

25. निम्नलिखित में से कौन सा कथन गांधी के जीवन-दर्शन का सही चित्रण प्रस्तुत नहीं करता?
(a) पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।
(b) अहिंसा दुष्टता के विरूद्ध नैतिक संघर्ष है।
(c) ऊपर के दोनों विकल्प सही हैं।
(d) उपर्युक्त दोनों विकल्प (a) और (b) सही नहीं हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (c) गांधी जी के विचार में सत्य, अहिंसा, प्रेम का विशिष्ट स्थान है। उनके अनुसार, पाप से घृणा करो, पापी से नहीं' तथा 'अहिंसा दुष्टता के विरूद्ध नैतिक संघर्ष है।

26. गांधीजी के अनुसार संरचनात्मक कार्यक्रम का लक्ष्य है:
(a) बेरोजगारों को आर्थिक सहायता प्रदान करना
(b) कातने वाले और बुनाई करने वालों को कुछ मजदूरी वितरित करना
(c) अहिंसावादी समाज का सृजन
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) गांधी जी के संरचनात्मक कार्यक्रम का लक्ष्य अहिंसामुक्त समाज का सृजन करना था। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की रूपरेखा गांधी जी बनाते हैं।

27. गांधीजी के अनुसार सर्वधर्म समभाव का अर्थ है
(a) सही धर्मों में एकता है।
(b) सभी धर्मों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।
(c) सभी धर्मों का संश्लेषण किया जाना चाहिए।
(d) सभी धर्म नैतिक मूल्य सिखाते हैं।

Ans : (b) गांधी जी के अनुसार सर्वधर्म समभाव का अर्थ है कि सभी धर्मों के समान व्यवहार करना चाहिए। गांधी जी धर्म को एक दृष्टि से जीने का ढंग मानते हैं, जिसके चयन में स्वतंत्रता होनी चाहिए। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने चुने हुए ढंग के साथ-साथ दूसरे के चुने हुए ढंगों की स्वतंत्रता के प्रति आदरभाव रखना चाहिए।

28. सम्यक् दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक आचरण को जैन नीतिशास्त्र में निम्नलिखित कहा जाता है जो अच्छे जीवन में चमकता है:
(a) त्रिरत्न (b) त्रिगुण
(c) त्रिज्ञान (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (a) जैन नीतिशास्त्र में बंधन से छुटकारा पाने के लिए तथा मोक्ष की प्राप्ति के लिए तीन आचार बतलाये गये हैं, जिन्हें 'त्रिरत्न' कहा जाता है, जो क्रमशः- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् आचरण है।

29. गांधीजी के अनुसार, न्यासिता का अर्थ है
(a) रोटी के लिए श्रम
(b) स्वदेशी
(c) सम्पदा रखना और जरूरतमंद में उसका वितरण
(d) लालच

Ans : (c) गांधीजी श्रम और पूंजी के सम्बन्ध में प्रेम एवं विवास पर आधारित 'न्यासता सिद्धांत' देते है। किसी भी व्यक्ति के जरूरत से अधिक सम्पत्ति है तो वह उसका अपने आपको न्यासी समझे अर्थात उसका संरक्षक समझे उसे सम्पदा को अपनी अमानत समझे जिसे उसने इसलिए संजोया है ताकि वह इसे जरूरत में ही वितरित कर सके।

30. नीचे दिये गये कूट का इस्तेमाल करते हुए निम्नलिखित सिद्धांतों को उनके सही क्रम में सजाइये:
I. प्रतीत्य समुत्पाद
II. निर्वाण
III. प्रथम आर्य सत्य
IV. आष्टांगिक मार्ग (दुःख निरोध मार्ग)

कूटः
(a) I, II, III, IV (b) IV, III, II, I
(c) III, I, II, IV (d) II, III, I, IV

Ans : (c) बौद्ध दर्शन के ये सभी सिद्धान्त किसी न किसी आर्य सत्य से सम्बन्धित हैं। जो क्रमशः प्रथम आर्यसत्य, प्रतीत्य समुत्पाद, निर्वाण तथा आष्टांगिक मार्ग है।

31. सत्याग्रह के दर्शन का श्रेय मूल रूप से किसे दिया जाता है?
(a) रस्किन (b) महात्मा गाँधी
(c) डॉ. बी.आर. अम्बेडकर (d) कौटिल्य

Ans : (b) सत्याग्रह का तात्पर्य सत्य के प्रति आग्रह है। इस प्रकार के दर्शन का श्रेय महात्मा गांधी को जाता है, जिन्होंने सत्य को साध्य बना दिया है।

32. अहिंसा शब्द का उपयोग सर्वप्रथम निम्नलिखित भारतीय ग्रंथ में किया गया था:
(a) भगवद् गीता (b) छान्दोग्योपनिषद्
(c) रामायण (d) ऋग्वेद

Ans : (b) बौदिक साहित्य में सर्वप्रथम अहिंसा शब्द को सर्वप्रथम प्रयोग छान्दोग्यउपनिषद् में मिलता है। यज्ञ स्वरूप परमात्मा की उपासना के लिए 17वें खण्ड में बताया गया है जो तप, दान, आर्जव, अहिंसा तथा सत्य वचन है, वे ही इस यज्ञ की दक्षिणा है।

33. गाँधीजी के अनुसार धर्म
(a) न्याय है। (b) प्रार्थना है।
(c) नैतिक सिद्धांत है। (d) स्वतन्त्रता है।

Ans : (c) गांधीजी धर्म को एक नैतिक सिद्धान्त से जोड़कर देखते है। गांधी जी के अनुसार वास्तविक धर्म और शुद्ध नैतिकता एक दूसरे से अटूट रूप में बंधे रहते है।

34. 'हम व्यापक उत्पादन नहीं चाहते हैं, परन्तु हम जनता के लिए उत्पादन चाहते हैं' इस कथन की हिमायत किसने की है?
(a) मार्क्स (b) गाँधी
(c) नेहरू (d) अमर्त्य सेन

Ans : (a) गांधी जी उद्योगों की अतिशयता के विरूद्ध थे। उनके अनुसार हम व्यापक उत्पादन नहीं चाहते हैं, परन्तु हम जनता के लिए उत्पादन चाहते है। गांधी जी के अनुसार उत्पादन उतना ही किया जाना चाहिए जितना जरूरत हो।

35. सूची - I एवं सूची - II पर विचार कीजिये एवं सही सुमेलित कूट का चयन करें:

सूची I	सूची II
(A) अद्वैत वेदान्त	i. निम्बार्क
(B) विशिष्टाद्वैतवाद	ii. शंकर
(C) द्वैतवाद	iii. रामानुज
(D) द्वैताद्वैतवाद	iv. मध्व

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कूटः

	A	B	C	D
(a)	iii	ii	i	iv
(b)	ii	iii	iv	i
(c)	iv	ii	iii	i
(d)	i	ii	iii	iv

Ans : (b) शंकर का अद्वैत वेदान्त, रामानुज का विशिष्टाद्वैतवाद, मध्व का द्वैतवाद तथा निम्बर्क का द्वैताद्वैतवाद।

36. निम्नलिखित में से कौन से कथन गाँधीजी के सत्य के प्रत्यय से संबंधित हैं?

1. सत्य एक तत्वमीमांसीय पदार्थ हैं।
2. सत्य एक नैतिक पदार्थ है।
3. सत्य केवल प्रतिज्ञप्तियों का गुण है।

नीचे दिये गये कूट की सहायता से सही उत्तर चुनियेः

(a) 1, 2 और 3 (b) 1 और 2
(c) 2 और 3 (d) 1 और 3

Ans : (b) गांधी जी के अनुसार, सत्य ईश्वर हैं और ईश्वर सत्य हैं। उन्होंने सत्य के प्रत्यय को तत्वमीमांसीय कोटि में रखा तथा सत्य को नैतिकता की कोटि में स्थापित किया।

37. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) का नाम दिय गया हैः

अभिकथन (A): न्याय का निष्कर्ष आधारवाक्य की तुलना में ज्यादा सामान्य नहीं हो सकता है।

कारण (R) : न्याय वाक्य का निष्कर्ष तभी सत्य होता है, जब आधारवाक्य सत्य हैं।

उपर्युक्त दो कथनों के संदर्भ में, नीचे दिए कोडों से सही उत्तर का चयन करेंः

कूटः

(a) (A) (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सत्य हैं, परन्तु (R) असत्य है।
(d) (A) असत्य है, परन्तु (R) सत्य है।

Ans : (b) किसी भी न्याय का निष्कर्ष आधारवाक्य की तुलना में ज्यादा व्यापक (सामान्य) नहीं हो सकता है। और एक न्याययुक्ति में यदि आधारवाक्य सत्य है तो निष्कर्ष को भी सत्य होना होता है अतः अभिकथन (A) और कारण (R) सत्य तो है परन्तु व्याख्या नहीं।

38. केण्ट के अनुसार स्वच्छता के नियम स्वास्थ्य के लिये सहायक होते हैंः

(a) निरपेक्ष आदेश (b) सापेक्ष आदेश
(c) नैतिक आदेश (d) इनमें से कोई नहीं

Ans : (b) काण्ट के अपने नैतिकता से सम्बन्धित आदेशों के दो रूपों में विभाजित होता है- निरूपाधिक तथा सोपाधिक आदेश। उसके अनुसार, स्वच्छता के नियम स्वास्थ्य के लिए सहायक होते हैं- ऐसे आदेश सोपाधिक होते है।

39. निम्नलिखित का मिलान करें और नीचे दिए कोड से सही उत्तर का चयन करेंः

सूची I (प्रवृत्ति)	सूची II (दार्शनिक)
(A) आलोचनात्मक दर्शन	i. रसेल
(B) बुद्धिवाद	ii. लॉक
(C) अनुभववाद	iii. स्पिनोजा
(D) विश्लेषणात्मक दर्शन	iv. केण्ट

कूटः

	A	B	C	D
(a)	iv	iii	ii	i
(b)	iii	iv	i	ii
(c)	iv	i	iii	ii
(d)	ii	i	iv	iii

Ans : (a) काण्ट का अलोचनात्मक दर्शन, स्पिनोजा का बुद्धिवाद, लॉक का अनुभववाद तथा रसेल का विश्लेषणात्मक दर्शन।

40. वैशेषिक के अनुसार, जगत् का समवायिकरण है

(a) ईश्वर (b) परमाणु संयोग
(c) द्वयणुक (d) परमाणु

Ans : (a) वैशेषिक दर्शन में जगत् का समवायिकरण परमाणुओं की स्वीकार किया गया है। समवायिकरण एक तरह से उपादान कारण ही न्याय-वैशेषिक में माने जाते है।

41. पारमार्थिक सत्ता का निम्नलिखित के द्वारा खंडन किया जा सकता हैः

(a) व्यावहारिक सत्ता (b) प्रातिभासिक सत्ता
(c) (a) और (b) दोनों (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (d) अद्वैत वेदान्त के अनुसार तीन प्रकार की रचनाएं हैं। प्रतिभासिक सत्ता, जो भ्रम, स्वप्नाति का विषय है, का बोध व्यावहारिक सत्ता द्वारा और जगत से सम्बन्धित व्यावहारिक सत्ता का बोध पारमार्थिक सत्ता के ज्ञान द्वारा हो सकता है परमार्थिक सत्ता ब्रह्म की सत्ता है।

42. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सुमेलित नहीं है?

(a) चिद्बिंदु का सिद्धांत - लाइब्नित्ज़
(b) विकार का सिद्धांत - स्पिनोजा
(c) बर्कले का दर्शन - अहंमात्रवाद
(d) 'प्रत्ययों का संबंध-विषयक ज्ञान' तथा 'वस्तु स्थिति-विषयक ज्ञान' के बीच भेद की स्थापना - केण्ट

Ans : (d) यह युग्म 'प्रत्ययों के संबंध-विषयक ज्ञान' तथा 'वस्तु स्थिति विषयक ज्ञान' के बीच भेद की स्थापना' काण्ट के दर्शन में नहीं है।

43. यह विचार कि ''ईश्वर मात्र यथार्थ है और अन्य सीमित वस्तुएँ ईश्वर के अस्तित्व में दबा दी जाती है या नष्ट कर दी जाती है'', कहलाता हैः

(a) ईश्वरवाद (b) सर्वेश्वरवाद
(c) जीववाद (d) तटस्थेश्वरवाद

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (a) यह विचार कि 'ईश्वर मात्र यथार्थ है और अन्य सीमित वस्तुएं ईश्वर के अस्तित्व में दवा दी जाती है या नष्ट कर दी जाती है।' यह एक सर्वेश्वरवादी विचार है।

44. हेगेल के दर्शन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही नहीं है?

(a) ईश्वर का प्रत्यय ≠ उच्चतम सामान्य
(b) सत् बौद्धिक है।
(c) शुद्ध सत्ता = अ-सत्ता
(d) चरम सत्ता की व्याख्या कारणता के पदों में संभव है।

Ans : (c) हेगेल का विचार निरपेक्ष प्रत्ययवाद है। जिनके अनुसार 'सत् बौद्धिक है'। 'शुद्ध सत्ता' स्वयं सत्ता का सूचक है। अतः असत्ता का प्रश्न ही नहीं उठता।

45. कौन प्रतिपादित करता है कि ईश्वर आभास है?

(a) स्पिनोजा (b) देकार्त
(c) ह्यूम (d) ब्रैडले

Ans : (d) ब्रैडले का दर्शन 'आभास और सत्' का दर्शन है। जिसमें वह सम्पूर्ण जगत में आभास दिखा कर 'सत्' की सत्ता का प्रतिपादन करते है। ब्रैडले के अनुसार हम 'सत्' को आभासों के माध्यम से ही जानते है।

46. कौन कहता है कि 'अव्याघात परमसत् की कसौटी है'?

(a) हेगेल (b) प्लेटो
(c) ब्रैडले (d) इनमें से कोई नहीं

Ans : (*)

47. नीत्शे के दर्शन के सर्वाधिक उपयुक्त समूह कौन सा है?

(a) इन्द्रिय-प्रदत्त, स्वानुभवमूलक कथन, इपोखे और त्रासदी
(b) संकट, अतिमानव, ईसाई धर्म पर आघात, विकास
(c) अधिमानस, त्रासदी, इपोखे, वाक्-क्रिया
(d) संकट, त्रासदी, स्वानुभवमूलक कथन, ईसाई धर्म पर आघात

Ans : (b) नीत्शे एक विकासवादी दार्शनिक था। उसने इसाई धर्म पर जितना आघात किया उतना किसी ने नहीं किया। इस पर समूह का क्रम संकट, अतिमानव, ईसाई धर्म पर आघात, विकास है।

48. कौन सा कथन सत्य नहीं है?

(a) आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद का परिणाम अहंमात्रवाद होता है।
(b) प्रत्ययवाद वह सिद्धांत है जो सामान्य की व्याख्या के लिये दिया गया है।
(c) कारणता आगमन का आधार है।
(d) केण्ट दिक् और काल को प्रागानुभविक प्रत्यय का नाम देता है।

Ans : (d) काण्ट देश और काल को संवेदानाओं को प्रागनुभविक तो कहता है परन्तु इन्हें संवेदना के आकार कहता है। यह संप्रत्यय या प्रत्यय नहीं है।

49. किसने कहा है - ''ज्ञान, मुख्य रूप से एक निश्चित वस्तु का होता है और अनिश्चित के बोध से इसका भेद होना चाहिए''?

(a) अम्बेडकर (b) राधाकृष्णन
(c) के.सी.भट्टाचाय (d) टैगोर

Ans : (c) के.सी. भट्टाचार्य की एक परात्ममूलक अध्यात्मवादी विचारक माना जा सकता है। उनके अनुसार, ज्ञान, मुख्य रूप से एक निश्चित वस्तु का होता है और अनिश्चित के बोध से इसका भेद होना चाहिए।

50. नीचे दो समूह - I और - II दिए गए हैं। समूह I में प्रतिपादक और समूह II में सिद्धांत दिए गए हैं। नीचे दिए कोडों से सही मेलित का चयन करें:

सूची- I	सूची- II
(a) शंकर	i. प्रपत्ति
(b) रामानुज	ii. शून्यता
(c) मध्व	iii. जीवन मुक्ति
(d) नागार्जुन	iv. आनन्द तारतम्य

कूट:

	a	b	c	d
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iii	i	iv	ii
(c)	ii	i	iii	iv
(d)	i	iii	ii	iv

Ans : (b)

शंकर	जीवन मुक्ति
रामानुज	प्रपत्ति
मध्व	आनन्द तारतम्य
नागार्जुन	शून्यता

51. स्पिनोजा ने मन और देह के बीच सम्बन्ध को निम्नलिखित की सहायता से स्पष्ट किया है:

(a) अंतःक्रियावाद (b) समानांतरवाद
(c) पूर्व-स्थापित सामंजस्य (d) भेद में अभेद

Ans : (b) पाश्चात्य दर्शन जगत में आधुनिक बुद्धिवादियों में मन-शरीर के द्वैत को स्थापित करने की समस्या एक प्रमुख समस्या रही है। स्पिनोजा, जो मन और शरीर को दो भिन्न गुण मानता है, का सम्बन्ध स्थापित करने के लिए 'समान्तरवाद' का सहारा लेता है।

52. बौद्ध दर्शन में अविनाभाव सम्बन्ध आधारित है

(a) तादात्म्य, निषेध, नियत साहचर्य पर
(b) तादात्म्य, कारणाता, निषेध पर
(c) कारणाता, निषेध, नियत साहचर्य पर
(d) कारणाता, तादात्म्य, नियत साहचर्य पर

Ans : (b) बौद्ध दर्शन में अविनाभाव सम्बन्ध तादात्म्य, कारणता, निषेध पर आधारित है।

53. निम्नलिखित उदाहरण में दोष है: 'आकाशपुष्प सुगन्धित है क्योंकि उसमें पुष्पतत्व है':

(a) अनेकान्तिक (b) सत्प्रतिपक्ष
(c) बाधित (d) आश्रयासिद्ध

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) 'आकाशपुष्प सुगन्धित है क्योंकि उसमें पुष्पत्व है।' में 'आकाशपुष्प' काल्पनिक है अतः हेतु (पुष्पत्व) असिद्ध है। अतः यहां 'आश्रयासिद्ध' दोष है।

54. नीचे दी गई युक्ति के दोष का निर्धारण दिए गए कूट के आधार पर करें:

युक्तिः

सभी हिंदू आर्य हैं:

कोई भी पारसी हिंदू नहीं है।

∴ कोई भी पारसी आर्य नहीं है।

कूटः

(a) अनुचित बृहद्-पद दोष
(b) अनुचित लघु-पद दोष
(c) चतुष्पद-दोष
(d) अव्याप्त मध्यम-पद दोष

Ans : (a) दी गयी युक्ति में अनुचित वृहद्पद दोष है। क्योंकि बृहद पद आधारवाक्य में अव्याप्त है और निष्कर्ष में व्याप्त है। अतः यहां अनुचित ब्रहद्पद होगा।

55. 'विचार के नियम' के संदर्भ में दिए गए नियमों के सर्वोत्तम संयोजन का चुनाव दिए गए कूट में से करें।:

नियमः

I. तादात्म्य का नियम
II. व्याघात का नियम
III. मध्य-दशा परिहार का नियम
IV. पर्याप्त कारणता का नियम

(संयोजन)कूटः

(a) I और II सही हैं।
(b) III और IV सही हैं।
(c) I, II और IV सही हैं।
(d) I, II, III और IV सही हैं।

Ans : (d) 'विचार के नियम' - तादात्म्य का नियम, व्याघात नियम, मध्य-दशा परिहार का नियम, पर्याप्त कारणता का नियम।

56. सूची - I तथा सूची - II को सुमेलित करें तथा नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर का चुनाव करें:

सूची- I	**सूची- II**
(A) AAA	i. फेरियो
(B) AII	ii. केलारेंट
(C) EAE	iii. डारी
(D) EIO	iv. बारबरा
	v. बारोको

कूटः

	A	B	C	D
(a)	iii	v	iv	i
(b)	iii	iv	i	ii
(c)	iv	iii	ii	i
(d)	v	iv	i	iii

Ans : (c)

AAA	–	बारबरा
AII	–	डारी
EAE	–	केलारेंट
EIO	–	फेरियो

57. फेनोमेनॉलॉजी के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सत्य है?

(a) फेनोमेनॉलॉजिस्ट तथ्य-विशेष से सरोकार नहीं रखता।
(b) फेनोमेनॉलॉजी की विषय-सामग्री आदर्श-अर्थ और सामान्य-संबंध हैं, जिनके साथ अहम् का संघर्ष अपनी अनुभूति में होता है।
(c) उपर्युक्त कथनों में से केवल (a) सत्य है तथा (b) असत्य है।
(d) उपर्युक्त कथनों में से (a) और (b) दोनों सत्य हैं।

Ans : (d) 'फेनोमेनोलॉजी' हुसर्ल के दर्शन का मुख्य बिन्दु रही है। फेनोमेनोलॉजी में फेनोमेनोलॉजिस्ट तथा-विशेष से सरोकार नहीं रखता। फेनोमेनॉलॉजी की विषय-सामग्री आदर्श-अर्थ और सामान्य संबंध है, जिनके साथ अहम् का संघर्ष अपनी अनुभूति में होता है।

58. फेनोमेनॉलॉजी के विचारणीय विषय हैं

(a) बाह्य वस्तु
(b) प्रयोजनमूलक वस्तुएँ
(c) विस्तारपरक वस्तुएँ
(d) आदर्श वस्तुएँ

Ans : (b) हुसर्ल के अनुसार चेतना का विषय अभिप्राय होता है। फेनोमेनॉलॉजी में विचारणीय प्रयोजनमूलक वस्तुएँ होती है।

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) का नाम दिय गया है:

अभिकथन (A): क्वाइन के अनुसार, सत्यापनवादी सिद्धांत में भाषा को टुकड़ों में विभाजित करके लिया गया है।

कारण (R) : इसलिये इसका परिणाम एक प्रकार के अव्याख्यावाद का हुआ है।

उपर्युक्त दो कथनों के संदर्भ में, नीचे दिए कोडों से सही उत्तर का चयन करें:

कूटः

(a) (A) (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सत्य हैं, परन्तु (R) असत्य है।
(d) (A) असत्य है, परन्तु (R)सत्य है।

Ans : (c) क्वाइन के अनुसार, सत्यापनवादी सिद्धान्त में 'भाषा को टुकड़ो में विभाजित करके लिया गया है' तो सही है, परन्तु कारण (R) न ही सही है और न इसकी व्याख्या है।

60. सूची - I को सूची - II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोडों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची- I	**सूची- II**
(A) ऑन दि लॉजिक ऑफ सोशल साइन्सिस	i. गैडामर

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(B)	बीइंग एण्ड टाइम	ii.	हैबरमास
(C)	फिलोसोफिकल हर्मेनॉटिक्स	iii.	हाइडैगर
(D)	हर्मेनॉटिक्स एण्ड क्रिट्सिज्म	iv.	श्लीयरमैकर

कूटः

	A	B	C	D
(a)	ii	iii	i	iv
(b)	iv	iii	i	ii
(c)	i	iii	iv	ii
(d)	ii	iii	iv	i

Ans : (a) हैबरमास का 'ऑन दि लॉजिकल ऑफ सोशल साइन्सिस', हाइडैगर का 'बीइंग एण्ड टाइम', गैडामर का फिलोसोफिकल, हर्मेनॉटिक्स तथा श्लीयरमैकर का हर्मेनॉटिक्स एण्ड क्रिटिसिज्म, से सम्बन्धित है।

61. सूची - I को सूची - II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोडों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची- I (लेखक)		सूची- II (पुस्तक)	
(A)	जी. ई. मूर	i.	फाउंडेशन्स ऑफ दि मैटाफिजिक्स ऑफ मोरल्स
(B)	केण्ट	ii.	राइट एण्ड दि गुड
(C)	एफ. एच. ब्रैडले	iii.	प्रिंसिपीया ऐथिका
(D)	डब्ल्यू. डी. रॉस	iv.	ऐथिकल स्ट्डीस

कूटः

	A	B	C	D
(a)	iv	i	iii	ii
(b)	iii	i	iv	ii
(c)	i	ii	iv	iii
(d)	ii	i	iii	iv

Ans : (b) जी. ई. मूर का प्रिंसिपीया ऐथिका, काण्ट का फाउंडेशन्स ऑफ दि मैटाफिजिक्स ऑफ मोरल्, एफ. एच. ब्रैडले का एथिकल स्ट्डीस, डब्ल्यू. डी. रॉस का राइट एण्ड दि गुड सम्बन्ध है।

62. जब 'A' तर्कवाक्य सत्य है, तो E और I तर्कवाक्य

(a) असत्य और सत्य (b) सत्य और असत्य
(c) असत्य और संदिग्ध (d) सत्य और संदिग्ध

Ans : (a) परम्परागत विरोध वर्ग के अनुसार यदि 'A' तर्कवाक्य सत्य है। तो 'E' असत्य तथा 'I' सत्य होगें।

63. सामाजिक अधिकार जो मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा (1948) का अंश है निम्नलिखित में से किस पहलू को सम्बोधित करता है?

(a) शिक्षा (b) खाद्य
(c) रोजगार (d) उपर्युक्त सभी

Ans : (d) सामाजिक अधिकार जो मानवाधिकारों की घोषणा (1948) के अंश शिक्षा, खाद्य, रोजगार आदि है। यह मानव के मूलभूत अधिकारों से सम्बन्धित है जो जीवन और विकास के लिए आवश्यक है।

64. निम्नलिखित में से कौन सा एक मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (1948) का भाग नहीं है?

(a) सुरक्षा का अधिकार (b) स्वतन्त्रता का अधिकार
(c) समानता का अधकार (d) समूह का अधिकार

Ans : (d) मानवधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (1948) में शामिल है- सुरक्षा को अधिकार स्वतंत्रता का अधिकार तथा समानता का अधिकार।

65. निम्नलिखित में से कौन सा सही सुमेलित नहीं है?

(a) अर्थ का उपयोग सिद्धांत प्रतिपादित किया था- (बाद के विट्गेंस्टीन ने)
(b) विवरण के सिद्धांत का समर्थन किया था - (रसेल ने)
(c) 'स्वीप एक्ट (वाक क्रिया)' सिद्धांत का सर्वप्रथम प्रयोग किया था- (ऑस्टिन ने)
(d) अर्थ के सम्पूर्णतावादी पद्धति का समर्थन किया था- (एयर)

Ans : (d) ए.जे. एयर के सिद्धान्त को तार्किक भाववाद कहा जाता है। अर्थ उपयोग सिद्धान्त- विट्गेंस्टाइन, विवरण सिद्धान्त- रसेल 'स्वीप एक्ट' (वाक क्रिया) सिद्धान्त- ऑस्टिन। और ए. जे. एयर का अर्थ का सत्यापन सिद्धान्त।

66. गुणवत्ता में भिन्न, दो समान्य तर्कवाक्य इस स्थिति में कहे जाते हैं:

(a) व्याघातक विरोध (b) उपाश्रयण विरोध
(c) वैपरीत्य विरोध (d) उप-वैपरीत्य विरोध

Ans : (c) परम्परागत विरोध वर्ग के अनुसार यदि दो सामान्य तर्कवाक्य गुणवत्ता में भिन्न हो तो उनके बीच विपरीत विरोध सम्बन्ध होगा। 'A' और 'E' तर्कवाक्य।

67. पद और पदार्थ के बीच सम्बन्ध के बारे में नैयायिकों का क्या मत है?

(a) शक्ति एवं लक्षणा
(b) गौणी एवं व्यंजना
(c) शक्ति, लक्षणा एवं व्यंजना
(d) व्यंजना, गौणी एवं लक्षणा

Ans : (a) पद और पदार्थ के बीच सम्बन्ध शक्ति एवं लक्षणा के माध्यम से नैयायिक व्यक्त होना मानते हैं। उनके अनुसार शब्द अक्षरों से जिससे अभिधा या लक्षणा से किसी पदार्थ का संकेत मिलता हैं जबकि सार्थक शब्द को पद कहते हैं। अर्थात जिस शब्द में किसी अर्थ को व्यक्त करने की शक्ति होती है पद कहते है। हम जैसे-जैसे पद के अन्तिम अक्षर को सुनते हैं, हमें उसके अर्थ का ज्ञान होता है।

68. ''अपराधी को सुधारने अथवा शिक्षित करने के लिए उसे दण्ड दिया जाता है'' यह किस सिद्धांत का विचार है?

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) दण्ड निरोधक सिद्धांत
(b) दण्ड का प्रतिकारी सिद्धांत
(c) दण्ड का सुधारात्मक सिद्धांत
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) जब कभी भी अपराधी को सुधारने अथवा शिक्षित करने के लिए उसे दण्ड दिया जाता है तो यह दण्ड का सिद्धान्त दण्ड का सुधारात्मक सिद्धान्त कहलाता है।

69. अर्थ के निम्नलिखित सिद्धांतों में से क्वाइन किसका समर्थन करते हैं?
(a) अर्थ का परमाणुवाद सिद्धांत
(b) अर्थ का सम्पूर्णवाद सिद्धांत
(c) अर्थ का प्रत्यक्षवादी सिद्धांत
(d) अवव्याख्यावादी (अपचयी) सिद्धांत

Ans : (b) क्वाइन अर्थ के सम्पूर्णतावादी सिद्धान्त के समर्थक है। इसके क्वाइन 'आमूल अनुवाद' अनुभववाद के दो मतग्रहों की समीक्षा प्रस्तुत करते है।

70. अनुमान का वह रूप जिसमें "प्रदत्त तर्क वाक्य की गुणात्मकता में परिवर्तन होता है जबकि उसका अर्थ अपरिवर्तित रहता है" क्या कहलाता है?
(a) परिवर्तन (b) प्रतिवर्तन
(c) प्रतिपरिवर्तन (d) विपरिवर्तन

Ans : (b) 'प्रतिवर्तन' अनुमान का वह रूप है जिसमें 'प्रदत्त तर्कवाक्य की गुणात्मकता में परिवर्तन होता है, जबकि उसका अर्थ अपरिवर्तित रहता है। इसमें उद्देश्य पद अपरिवर्तित रहता है और तर्कवाक्य का परिमाण भी अपरिवर्तित रहता है। किसी वर्कवाक्य के प्रतिवर्तन में हम तर्कवाक्य का गुण परिवर्तन करते हैं और विधेय के स्थान पर उसका पूरक पद रखते है।

71. ऑस्टिन के अनुसार, कुछ कह कर कुछ करने का कर्म कहलाता है:
(a) वचन कर्म/लोक्यूशनरी एक्ट
(b) इल्लोक्यूशनरी एक्ट/वचनेत्तर कर्म
(c) प्रभावी वचन कर्म
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) ऑस्टिन 'वॉक-क्रिया सिद्धान्त में विभिन्न प्रकार की वचनों में भेद करते है। उनके अनुसार, 'कुछ कह कर कुछ करने का कर्मप्रभावी वचन कर्म है।

72. सूची - I को सूची - II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोडों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची- I (विचारक)	सूची- II (पुस्तक)
(A) जी. फ्रेगे	i. फ्रोम ए लॉजिकल पॉइंट ऑफ व्यु
(B) बी. रसेल	ii. फिलोसोफिकल एनालिसिस
(C) एल.विट्टगेंस्टीन	iii. दि ब्लू एण्ड ब्राऊन बुक्स
(D) डब्ल्यू. वी. क्वाइन	iv. माई फिलोसोफिकल डेवलेपमेंट
	v. फाउंडेशन्स ऑफ अर्थमेटिक

कोड:

	A	B	C	D
(a)	iv	iii	ii	i
(b)	ii	iv	v	iii
(c)	v	iv	iii	i
(d)	iv	v	ii	iii

Ans : (c) जी.फ्रेग्रे का फाउंडेशन ऑफ अरिथमेटिक, बी रसेल का माई फिलॉसफिकल डेवलेपमेंट, एल.विट्गेंस्टीन का दि ब्लू एण्ड ब्राउन बुक्स, डब्ल्यू वी. क्वाइन का फ्रोम ए लॉजिकल प्वांइट ऑफ व्यू से सम्बन्ध है।

73. एकमात्र वस्तु जिसे काण्ट के अनुसार शुभ समझा जा सकता है वह है
(a) निरपेक्ष आदेश (b) नैतिक नियम
(c) शुभ संकल्प (d) ईश्वर का प्रत्यय

Ans : (c) काण्ट के दर्शन में 'शुभ संकल्प' को एकमात्र शुभ कहा गया है। वह 'शुभ संकल्प' मात्र को निरपेक्ष या परम शुभ कहता है। सदिच्छ (शुभ संकल्प) देश, काल, व्यक्ति तथा परिस्थिति से निरपेक्ष होकर सदा शुभ रहती है। उसके अनुसार परमशुभ निःश्रेयस या महत्तम श्रेय है।

74. सूची - I को सूची - II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए गए कोड में से सही उत्तर का चयन करें:

सूची- I	सूची- II
(A) सिमोन दि बुवा	i. जेडर ट्रबुल
(B) ज्यूडिश बटलर	ii. सेक्सुअल पॉलिटिक्स
(C) केटे मिलेट	iii. सेकेण्ड सेक्स
(D) ल्यूस इरिगेरे	iv. एन एथिक्स ऑफ सेक्सुअल डिफरेंस

कूट:

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iii	ii	iv	i
(c)	iii	iv	i	ii
(d)	iii	i	ii	iv

Ans : (d) सिमोन दि बुवा का सेकण्ड सेक्स, ज्यूडिश बटलर का जेडर ट्रबुल, केटे मिलेट का सेक्सुअल पॉलिटिक्स तथा ल्यूस इरिगेरे का एन एथिक्स ऑफ सेक्सुअल डिफरेंस है।

75. निम्नलिखित दार्शनिकों में से कौन 'मैं सोचता हूँ, इसलिये मेरी सत्ता है' से संबंधित है?
(a) स्पिनोजा (b) देकार्त
(c) लाइब्नित्ज़ (d) ह्यूम

Ans : (b) देकार्त के दर्शन में उसकी 'संदेह पद्धति' बहुत महत्वपूर्ण है। उसने सभी सत्ताओं पर सन्देह किया परन्तु सन्देह पर नहीं। अतः एक सन्देहकर्ता के रूप में वह कहता है कि मैं सोचता हूँ, इसलिए मेरी सत्ता है। वह अपनी आत्मा की सत्ता को सिद्ध करता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2013
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. नीचे दो कथन दिए गए हैं। एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) का नाम दिया गया है। इन दोनों के संदर्भ में नीचे दिए विकल्पों में से कौन सा विकल्प तर्कनिष्ठ भाववाद के अनुसार सत्य है?

अभिकथन (A) : तत्वमीमांसा निरर्थक है।

कारण (R) : तत्वमीमांसीय कथन सत्यापनीय नहीं है।

कूट:

(a) (A) सत्य हैं और (R) असत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
(c) (A) और (R) दोनों असत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(d) (A) असत्य हैं, और (R) सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं प्रदान करता है।

Ans : (b) तर्कनिष्ठ भाववाद में, वो कथन जिनका सत्यापन किसी भी प्रकार से नहीं किया जा सकता निरर्थक है। भाववादियों के अनुसार तत्वमीमांसीय कथन का सत्यापन नहीं किया जा सकता है अत: तत्वमीमांसा के कथन निरर्थक होते है।

2. दिये गये अभिकथन और कारण पर विचार करें और संत ऑगस्टाइन प्रदत्त अशुभ की समस्या के प्रकाश में, सही विकल्प बताएँ

अभिकथन (A) : वृहत्तर शुभ के लिए अशुभ आवश्यक है।

कारण (R) : अशुभ सकारात्मक नहीं, परन्तु व्यक्तिगत शुभ है।

कूट:

(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सत्य हैं, और (R) असत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(d) (A) असत्य हैं, और सत्य है और की सही व्याख्या नहीं प्रदान करता है।

Ans : (b) संत आगस्टाइन के अनुसार अशुभ शुभ का अभाव है। सृष्टि में अशुभ का विधान मानव कल्याण के साधन के रूप में हुआ है। अर्थात् वृहत्तर शुभ के लिए अशुभ आवश्यक है। ऑगस्टाइन के अनुसार अशुभ के लिए मनुष्य उत्तरदायी है क्योंकि यह मानव के कदाचार का फल है। अर्थात् अशुभ सकारात्मक नहीं है आभावात्मक परन्तु यह व्यक्तिगत है। अभिकथन (A) भी सत्य है और कारण (R) भी सत्य है। और कारण (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं। एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) का नाम दिया गया है।

अभिकथन (A) : देकार्त की पद्धति को गणितीय पद्धति कहा जाता है।

कारण (R) : उनका लक्ष्य निश्चित तथा स्वत:सिद्ध सत्य प्राप्त करना है।

उपर्युक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कोड सही है?

कूट:

(a) (A) सत्य हैं और (R) असत्य है तथा (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, किन्तु (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।
(c) (A) असत्य है, (R) सत्य हैं, तथा (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करताहै।
(d) (A) तथा (R) दोनों असत्य है तथा (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं प्रदान करता है।

Ans : (b) देकार्त की पद्धति को गणितीय पद्धति कहा जाता है। डेकार्ट अपने दर्शन में गणित से प्रभावित है और दर्शन को भी गणित के समान कुछ स्वयंसिद्धियों पर आधारित करना चाहता था। डेकार्ट का लक्ष्य दर्शन के क्षेत्र में कुछ निश्चित तथा स्वत:सिद्ध सत्य प्राप्त करना था। अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य है परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. कांट के अनुसार .... विश्वास की उचित विषयवस्तु है।

(a) (फैनोमना) संवृत्ति
(b) (नोमेना) परमार्थ
(c) फैनोमना (संवत्ति) और (परमार्थ) दोनों
(d) न तो फैनोमेना (संवृत्ति) और न ही नोमेना (परमार्थ)

Ans : (b) कांट अपने दर्शन में संवृत्ति (Phenomena) और परमार्थ (Noumena) का विभेद करता है। उसके अनुसार संवृत्ति एक संवेद्य विषय और परमार्थ बौद्धिक चिंतन का विषय है अर्थात् परमार्थ संवेद्य अनुभव का विषय नहीं है। काण्ट के अनुसार परमार्थ विश्वास की उचित विषयवस्तु है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

5. इनमें से कौन दार्शनिक पर्याप्त कारणता के नियम से सम्बन्धित हैं?

(a) लॉक (b) बर्कले
(c) लाईब्नित्ज (d) प्लेटो

Ans : (c) लाईबनित्ज ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने के लिए 'पर्याप्त कारणता' का सिद्धान्त प्रतिपादित करता है। उसके अनुसार केवल उसी वस्तु का अस्तित्व सिद्ध किया जा सकता है जिसका कोई 'पर्याप्त कारण' हो। इस सृष्टि का कोई न कोई पर्याप्त कारण अवश्य होगा। सृष्टि का यह पर्याप्त कारण ईश्वर ही हो सकता है। यह एक अनुभव पर आधारित सृष्टि वैज्ञानिक युक्ति ही है।

6. निम्नलिखित में से कौन इमैन्युल कांट की कृति नहीं है?

(a) क्रिटीक ऑफ प्योर रीज़न
(b) फाउंडेशन ऑफ मेटाफिजिक्स ऑफ मोरल्स
(c) क्रिटीक ऑफ प्रैक्टिकल रीज़न
(d) दी फेनोमेनोलॉजी ऑफ स्पिरिट

Ans : (d) 'क्रिटिक ऑफ प्योर रीज़न', 'फाउंडेशन ऑफ मेटाफिजिक्स ऑफ मोरल्स, 'क्रिटीक ऑफ प्रैक्टिकल रीज़न काण्ट की कृति है' जबकि दी फेनोमेनोलॉजी ऑफ स्पिरिट हेगेल की कृति है।

7. रसेल के अनुसर तीन 'आद्य अवधारणाएँ' हैं

(a) '0' 'संख्या' और 'अनुक्रम'
(b) 'तथ्य', 'अभिकथन' और 'तर्क'
(c) 'तार्किक परमाणुवाद', 'सामान्य बोध' और 'विज्ञान'
(d) 'ईश्वर', 'आत्मा' और 'विश्व'

Ans : (a) रसेल अपने गणित-दर्शन में कुछ मूल सिद्धान्तों की बात करते हैं। वह अपने प्रारूप सिद्धान्त के अन्तर्गत तीन आद्य अवधारणाओं (Primitive Ides) की बात करते है वे है- 0 (शून्य), संख्या (Number), तथा अनुक्रम (successor) उनके अनुसार इन्हे शुद्ध तार्किक भावों में सफलतापूर्वक रूपान्तरित कर दिया जाय।

8. नीचे दिए गए कथनों को ध्यान से पढ़े और नीचे दिए विकल्पों में से सही पर चिन्ह लगाए:

I. मूर सामान्य बोध के दार्शनिक है।
II. मूर प्रत्ययवादी है।
III. मूर इन्द्रिय-प्रदत्त के दर्शन का खंडन करते हैं।
IV. मूर यथार्थवादी हैं।

कोड:

(a) केवल I सत्य है।
(b) I और II सत्य हैं परन्तु III और IV असत्य हैं।
(c) IV को छोड़कर सभी सत्य हैं।
(d) I और IV सत्य हैं परन्तु II और III असत्य हैं।

Ans : (d) मूर एक यथार्थवादी/वस्तुवादी दार्शनिक है। जो सामान्य 'बोध' को अपने दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान देते हुए प्रत्ययवादी विचारधारा का खण्डन करते हैं। मूर इन्द्रिय-प्रदत्त के दर्शन को मानते है। उनके अनुसार इन्द्रिय-प्रदत्त शब्द अनेकार्थक है।

9. सोफिस्टों के नैतिक सिद्धान्त के संन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर ध्यान दें और नीचे दिए कोडों में से सही पर चिन्ह लगाए:

1. नैतिकता प्राथमिक नैतिक भावना तथा इच्छाओं पर आधारित है।
2. नैतिकता वह है जो अधिकांश लोगों के लिए स्वीकार्य, उपयोगी और वांछित है और इसलिए यह प्रथा पर आधारित है।
3. राज्य के नियमों का आधार है 'शक्ति ही अधिकार है'।

कोड:

(a) 1 और 3 सत्य हैं और 2 असत्य है।
(b) 1, 2 और 3 सत्य हैं।
(c) 1 और 2 सत्य हैं और 3 असत्य हैं।
(d) केवल 3 सत्य हैं और 1 और 2 असत्य हैं।

Ans : (b) सोफिस्टो को सापेक्ष नैतिकता का प्रवर्तक माना जाता है। मानव केन्द्रित नैतिक दर्शन की शुरूआत की स्थापना किया। उनके अनुसार -
1. नैतिकता प्राथमिक नैतिक भावना तथा इच्छाओं पर आधारित है
2. नैतिकता वह है जो अधिकांश लोगों के लिए स्वीकार्य, उपयोगी और वांछित है और इसलिए यह प्रथा पर आधारित है।
3. राज्य के नियमों का आधार है 'शक्ति ही अधिकार है'।

10. निम्नलिखित में से किस दार्शनिक के विचारानुसार ''पृथ्वी बेलनाकार आकृति की है और आकाश में स्वतंत्र घूमती है''?

(a) अनेक्सीमेनीज़ (b) थेलिज़
(c) अनेक्सीमेंडर (d) अरस्तु

Ans : (c) एनेक्जिमेण्डर की यह अवधारणा थी कि विश्व का केन्द्र पृथ्वी है न कि सूर्य और पृथ्वी बेलनाकार है न कि गोलाकार और इसकी चौड़ाई 1/3 है। इसकी दो सतहें, जिनमें एक पर हम रहते हैं और दूसरी सतह इसके पीछे है।

11. नीचे दिए गए दार्शनिकों के समूहों में से कौन सा प्रकृति तथा परम्परा के बीच अन्तर करने के लिए व्यापक रूप से जिम्मदार था?

(a) सोफिस्टस् (b) आइयोनिस्ट
(c) इलायटिक्स (d) माइलेशियन

Ans : (a) सोफिस्ट विचारकों ने प्रकृतिवादी विचारधारा के स्थान पर मानवकेन्द्रित विचारधारा की स्थापना किया है। यह प्राचीन यूनान में प्रचलित थी।

12. सोरेन किरकेगार्ड के साथ 'प्रथम अस्तित्ववादी दार्शनिक' किसे कहा जाता है?

(a) फ्रेडरिक नीत्शे (b) फ्रांसिस नीत्शे
(c) ज्याँ पाल सार्त्र (d) ज़ीन पाल सार्त्र

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (a) सोरेन किर्केगार्ड के साथ-साथ फ्रेडरिक नीत्शे को भी प्रथम अस्तित्ववादी' दार्शनिक माना जाता है। इसके अतिरिक्त एक्विनास, पैसकल आदि का नाम भी अस्तत्ववादी इतिहासकारों ने इसके उद्भव के सन्दर्भ में किया है।

13. सूची-I को सूची - II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए कोडों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची I	**सूची II**
(A) परमाणुवाद	(i) लॉक
(B) सहज-प्रत्ययों का खंडन	(ii) हीगल
(C) बुद्धिवाद	(iii) हुर्सल
(D) मनोविज्ञानवाद	(iv) डेमोक्रिट्स

कूट:

	(A)	**(B)**	**(C)**	**(D)**
(a)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(b)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(c)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(d)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)

Ans : (b)

परमाणुवाद	-	डेमोक्रिट्स
सहज-प्रत्ययों का खंडन	-	लॉक
बुद्धिवाद	-	हीगल
मनोविज्ञानवाद	-	हुर्सल

14. नीचे दिए दो कथनों के प्रकाश में सही विकल्प पर चिन्ह लगाए:

कथन:

I. चरम सत्ता को तर्क के पदों में स्पष्ट किया जा सकता है।

II. चरम तत्व को कारण-कार्य सम्बन्ध के पदों में स्पष्ट किया जा सकता है।

विकल्प:

(a) कथन - I हीगल के दर्शन के सन्दर्भ में सत्य है परन्तु कथन - II अद्वैत वेदान्त के सन्दर्भ में असत्य है।

(b) कथन - I वेदान्त दर्शन के संदभ में असत्य है और कथन - II हीगल दर्शन के संदर्भ में असत्य है।

(c) दोनों कथन अद्वैत वेदान्त और हीगल दर्शन के संदर्भ में सत्य है परन्तु दोनों कथन दोनों दर्शन के संदर्भ में असत्य हैं।

(d) कथन - I हीगल के दर्शन और अद्वैत वेदान्त दर्शन के संदर्भ में भी असत्य है।

Ans : (b) 'चरम सत्ता को तर्क के पदों में स्पष्ट किया जा सकता है।' कथन वेदान्त दर्शन के सन्दर्भ में असत्य है तथा 'चरम तत्व को कारण - कार्य सम्बन्ध के पदों में स्पष्ट किया जा सकता है।' यह कथन हीगल दर्शन के सन्दर्भ में असत्य है।

15. व्यवहारिकतावाद किसके विरुद्ध प्रतिक्रिया है?

(a) निरपेक्ष प्रत्ययवाद और प्रति-बौद्धिकतावाद

(b) निरपेक्ष प्रत्ययवाद और बौद्धिकतावाद

(c) प्रत्ययवाद और प्रति-बौद्धिकतावाद

(d) उपर्युक्त सभी

Ans : (b) व्यावहारिकतावाद (Pragmatism) का दर्शन अमेरिकी विचारधारा में उत्पन्न अतिशय बुद्धिवाद एवं निरपेक्ष प्रत्ययवाद के विरूद्ध प्रतिक्रिया है। इस दृष्टि से मनुष्य कोरे सिद्धान्तों की रक्षा के लिए व्यावहारिक जीवन के लिए उपयोगी मूल्यों का परित्याग नहीं कर सकता है।

16. नीचे दो कथन दिए गए हैं। एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) का नाम दिया गया है। इन दो कथनों के प्रकाश में सही विकल्प को चिन्हित करें:

अभिकथन (A) : डेविड ह्यूम संशयवादी हैं।

कारण (R) : उनके अनुसार कारण और कार्य के बीच सम्बन्ध केवल मनोवैज्ञानिक होता है, तर्कनिष्ठ नहीं

विकल्प:

(a) (A) और (R) दोनों सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(c) (A) सत्य है, (R) असत्य हैं, तथा (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।

(d) (A) असत्य है, (R) सत्य है तथा (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।

Ans : (b) डेविड ह्यूम संशयवादी दार्शनिक हैं। वो प्रकृति की एकरूपता और कारण - कार्य नियम पर भी संशय करते है। उनके अनुसार कारण और कार्य के बीच सम्बन्ध केवल मनोवैज्ञानक सम्बन्ध होता है, तार्किक नहीं।

17. रसेल के अनुसार परमाणु है

(a) भौतिक (b) आध्यात्मिक

(c) यह दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Ans : (d) परमाणु (atoms) का अर्थ है वह सरलतम अविभाज्य तत्व जिसका और विभाजन नहीं हो सके। रसेल भी ऐसे अविभाज्य परमाणु की खोज में है। किन्तु उनका कहना है कि जिन परमाणुओं तक वे पहुँचते है, वे अणु न तो भौतिक और न ही आध्यात्मिक बल्कि तार्किक परमाणु (Logical atoms) है। इसी कारण उनका परमाणुवाद तार्किक है।

18. नीचे दिए कथनों : अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार करें और दिए गए विकल्पों में से सही पर चिन्ह लगाए:

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

अभिकथन (A) : अरस्तू ने अपनी कृति 'मेटाफिजिक्स' में पाइथागोरस के संख्या सिद्धान्त की तीव्र आलोचना की है।

कारण (R) : अरस्तू की आलोचना द्रव्य और आकार के उनके दर्शन और कारणत्व के सिद्धान्त से अनुसरित हुई है।

विकल्प:

(a) (A) और (R) दोनों सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों असत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सत्य है, और (R) असत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(d) (A) असत्य है, और (R) सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।

Ans : (a) अरस्तू ने अपनी कृति 'मेटाफिजिक्स' में पाइथागोरस के संख्या सिद्धान्त की तीव्र आलोचना की है तथा उनकी आलोचना द्रव्य और आकार के उनके दर्शन और कारणत्व के सिद्धान्त से अनुसरित हुई है।

19. निम्नलिखित में से कौन से दार्शनिक आत्महत्या को इस आधार पर अस्वीकर करते हैं कि पुनर्जन्म के चक्र को समाप्त करने के बाजय, यह उसे वास्तव में सुदृढ़ करता है?

(a) पाइथागोरस (b) डेमोक्रिटस
(c) हेराक्लीटस (d) प्लेटो

Ans : (a) पाइथागोरस आत्मा के आवागमन सिद्धान्त में विश्वास करते है। उनके अनुसार शरीर आत्मा का बन्दीगृह है। मानव आत्मा एक दैवी सम्पत्ती है। पाइथागोरस 'आत्महत्या' की इस आधार पर अस्वीकार करते है कि पुनर्जन्म के चक्र को समाप्त करने के बजाय, यह वास्तव में सुदृढ़ करता है।

20. थेलिज़ से जुड़ा जड़जीववाद (या भुतजीववाद) का सिद्धांत बताया है कि

(a) केवल जल में जीवन है।
(b) भौतिक द्रव्य में जीवन है।
(c) भौतिक द्रव्य में जीवन नहीं है।
(d) भौतिक द्रव्य और चित् तत्त्व (स्पिरिट) दोनों में जीवन होता है।

Ans : (b) थेलिज़ सर्वचेतन्यवाद या जड़जीववाद में विश्वास करते थे। उनके अनुसार सभी वस्तुएं चेतना एवं जीवन से युक्त है। वह चुम्बक में भी जीवन को स्वीकार करते थे।

21. 'विरलन' तथा 'संघनन' का सिद्धान्त किसे प्रदान किया है?

(a) एपीक्योरस (b) अनेक्सीमीनस
(c) थेलज़ (d) हेराक्लीटस

Ans : (b) एनेक्जिमेनीज वायु को जगत का मूल कारण मानते थे। इसी से वह जगत की सृष्टि को मानते है। उनके अनुसार यह सृष्टि 'विरलन' और 'संघनन' नामक दो प्रक्रियाओं से होती है। विरलीकरण और 'संघनन' की यह द्विविध प्रक्रिया क्रमश: तापक्रम में वृद्धि और ह्रास से सम्बन्धित है।

22. अरस्तू के निम्नलिखित चार कारणों में से किसे प्लेटोनिक रूप का अरस्तूवादी-प्रतिपक्ष कहा जा सकता है?

(a) उपादान कारण (b) निमित्त कारण
(c) आकारिक कारण (d) अन्तिम कारण

Ans : (c) अरस्तू के चार कारणों - उपादान कारण, निमित्त कारण, आकारिक कारण, अन्तिम कारण में से आकारिक कारण को प्लेटोनिक रूप का अरस्तूवादी - प्रतिपक्ष कहा जा सकता है।

23. किसने 'उपनिषद' का अर्थ 'रहस्यमय उपदेश' बतलाया है?

(a) पॉल डायसन (b) कीथ
(c) राधाकृष्णन (d) शंकर

Ans : (a) 'पॉल डायसन' ने 'उपनिषद' का अर्थ 'रहस्यमय उपदेश' बतलाया है। पॉल डायसन ने अपने ग्रन्थ 'फिलासफी ऑफ उपनिषद' में यह अर्थ निश्चित किया है।

(भारतीय दर्शन का सवेक्षण : संगम लाला पाण्डेय)

24. वैदिक साहित्य के अनुसार तारों तथा ग्रहों की गतियों का निर्देशन कौन करता है?

(a) परमात्मा की इच्छाशक्ति
(b) देवताओं की इच्छाशाक्ति
(c) ऋत्
(d) यज्ञ

Ans : (c) वैदिक साहित्य के अनुसार समस्त ब्रह्माण्डीय नियमों भौतिक पिण्डों की गतियों यथा तारों तथा ग्रहों की गतियों का निर्देशन 'ऋत्' करता है।

25. 'आत्मा देहपरिमाण है' इस विचार का समर्थन कौन करता है?

(a) बौद्ध (b) चार्वाक
(c) बौद्ध और चार्वाक दोनों (d) जैन

Ans : (d) जैन दर्शन के अनुसार 'आत्मा' चीटीं के शरीर में चीटीं के आकार का, हाथी के शरीर में हाथी के आकार का होता है। अर्थात् वह जिस शरीर में होता है उसी के आकार का होता है। जैन दर्शन मत को 'देह परिमाण कहते हैं जो चार्वाकों के देहपरिणामवादी मत से भिन्न है।

26. बौद्ध-दर्शन में पंच स्कंधों का सही क्रम है।

(a) रूप, संस्कार, विज्ञान, सामान्य और वेदना
(b) रूप, संज्ञा, वेदना, संस्कार और विज्ञान
(c) रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान
(d) रूप, विज्ञान, संज्ञा, संस्कार और वेदना

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (c) बौद्ध दर्शन में शारीरन्द्रिय के सन्दर्भ में पंच स्कन्धों की चर्चा की गयी है जो रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान है।

27. जैन तत्वमीमांसा को जाना जाता है

(a) प्रत्ययवादी बहुतत्त्ववाद के रूप में
(b) यथार्थवादी बहुतत्त्ववाद के रूप में
(c) प्रत्ययवादी एकतत्त्ववाद के रूप में
(d) यथार्थवादी एकतत्त्ववाद के रूप में

Ans : (b) जैन तत्वमीमांसा एक तरह से यथार्थवादी (वस्तुवादी) बहुतत्ववाद है। यह सापेक्षतावादी भी हैं जिसे अनेकान्तवादी कहते है। उसके अनुसार तत्व, वस्तु, द्रव्य अनेक है और प्रत्येक वस्तु के अनन्त धर्म हैं।

28. योग दर्शन के अनुसार नियमों, का सही क्रम क्या है?

(a) शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान
(b) सन्तोष, शौच, ईश्वरप्रणिधान, तप, स्वाध्याय
(c) तप, स्वाध्याय, शौच, सन्तोष, ईश्वरप्रणिधान
(d) ईश्वरप्रणिधान, शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय

Ans : (a) योग दर्शन अपने अष्टाङ्ग योग में दूसरे अंग 'नियम' के पांच प्रकार बताते हैं, जो क्रमश: शौच अर्थात् शरीर और चिन्त के मल्लों की शुद्धि; सन्तोष अर्थात आवश्यकता से अधिक वस्तुएं संग्रहित न करना, तप अर्थात् भूख-प्यास सर्दी-गर्मी, सुख-दु:खादि द्वन्द्वों को सहन करना: स्वाध्याय अर्थात् मोक्षशास्त्रों का अध्ययन और मन्त्र-जाप और ईश्वर - प्रणिधान या ईश्वर का ध्यान एवं स्मरण।

29. सूची - I को सूची - II के मेलित करें और नीचे दिए सही सुमेलित कोड का चयन करें:

सूची I	सूची II
(A) प्रशस्तपाद	(i) तत्त्व कौमुदी
(B) वाचस्पतिमिश्र	(ii) श्लोकवार्तिक
(C) जयन्त भट्ट	(iii) न्याय मंजरी
(D) कुमारिल	(iv) पदार्थ धर्म संग्रह

कूट:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(c)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(d)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)

Ans : (b) प्रशस्तपाद का 'पदार्थ-धर्म-संग्रह, वाचस्पति मिश्र का 'तत्व- कौमुदी: जयन्त भट्ट की 'न्याय मंजरी, कुमारिल का श्लोकवार्तिक है।

30. किसके निर्देशन में यज्ञ किया जाता है?

(a) ईश्वर (b) देवता
(c) ऋत्विक (d) यजमान

Ans : (c) यज्ञयागादि के विधिपूर्वक अनुष्ठान के लिए ऋत्विजों (ऋत्विकों) की आवश्यकता होती है, जो चार होते हैं- होता, उद्गाता, अध्वर्यु और ब्रह्मा। जिनका सम्बन्ध क्रमश: ऋक्, साम, यजु तथा अथर्व - संहिता से है।

31. कपड़े के टुकड़े के रंग का असमवायीकारण है

(a) स्वयं कपड़े का टुकड़ा
(b) कपड़े के टुकड़े का रंग/वर्ण
(c) (a) और (b) दोनों
(d) तागों का रंग

Ans : (d) असमवायिकारण समवायिकारण (उपदानकारण) में समवाय सम्बन्ध से रहते हुए कार्योत्पत्ति में सहायक होता है। यह सदा गुण या कर्म होता है तन्तुरूप, पटरूप का असमवायिकारण है अर्थात कपड़े के टुकड़े के रंग का असमवायिकारण तागों (तन्तु) का रंग हैं तन्तु संयोग, पट का असमवायिकारण है।

32. भगवद्गीता के निष्काम कर्म के सिद्धान्त का मूल अर्थ है।

(a) अपने आपको ईश्वर का यंत्र समझकर कर्म करना।
(b) बिना किसी आसक्ति के कर्म करना।
(c) दूसरों के लिये कर्म करना।
(d) मोक्ष प्राप्ति के लिए कर्म करना।

Ans : (b) भगवद्गीता का कर्मयोग 'निष्काम कर्म' की बात करता है। जो कर्म का निषेध न होकर, कर्म में फलासक्ति या कामना का निषेध करती है। वासना, कामना, आसक्ति या फलाकांक्षा कर्ता को बंधन में बांधता है। अत: 'निष्काम कर्म' बिना किसी आसक्ति के कर्म करने को कहते है।

33. मीमांसकों के अनुसार निम्नलिखित श्रुति वाक्यों में शामिल होते हैं :

(a) विधि, निषेध, तर्कवाक्य
(b) विधि, तर्कवाक्य, अर्थवाद
(c) विधि, निषेध, अर्थवाद
(d) तर्कवाक्य, अर्थवाद, निषेध

Ans : (c) मीमांसकों के अनुसार, श्रुति वाक्यों में विधि, मंत्र, नामधेय, निषेध, अर्थवाद आदि शामिल है। जो वेदवाक्यों का विषयवस्तु आधारित वर्गीकरण है।

34. निम्नलिखित में से कौन वेद को चार भागों में विभाजित करता है?

(a) कृष्ण (b) व्यास
(c) मनु (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (d) वेद को कृष्ण, व्यास, मनु आदि में से किसी ने चार भागों में विभाजित नहीं किया। कुछ लोग वेद को अपौरूषेय' कुछ लोग ईश्वर द्वारा नि:सृत मानते है।

35. जैन दर्शन के अनुसार कौन सा एक तत्त्व का लक्षण नहीं है?

(a) उत्पत्ति (b) क्षय
(c) नित्यता (d) अनित्यता

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) जैनदर्शन के अनुसार, तत्व अनेक है, जिनके अनेक धर्म हैं सत् (Reality) का लक्षण है- उत्पाद, व्यय (क्षय) और नित्यत्व युक्त होना। उत्पाद व्यय ध्रौव्य संयुक्त सत् ।

36. कुमारिल आत्मा को निम्न रूप में स्वीकार करते है:
(a) केवल अंशत: जड़
(b) केवल अंशत: बोधात्मक
(c) अंशत: बोधात्मक एवं अंशत: जड़ दोनों
(d) इनमें से कोई नहीं

Ans : (a) कुमारिल आत्मा को जड़बोधात्मक मानते है। कुमारिल के अनुसार द्रव्य के रूप में आत्मा नित्य, अभेदात्मक, अचिद्रूप तथा गुण-कर्म के रूप में अनित्य, भेदात्मक एवं चिद्रूप है।

37. चार्वाक ने अनुमान को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि
(a) अनुमान के विषय का सत्यापन प्रत्यक्ष द्वारा नहीं किया जा सकता है।
(b) हेतु और साध्य के अनिवार्य संबंध को हम स्थापित नहीं कर सकते।
(c) साधारणत: अनुमान का प्रयोग ईश्वर और आत्मा जैसे काल्पनिक विषयों को सिद्ध करने के लिये किया जाता है।
(d) अनुमान प्रत्यक्ष पर आधारित है।

Ans : (b) चार्वाकों ने प्रत्यक्ष के अलावा कोई प्रमाण स्वीकार नहीं किया। उनके अनुसार अनुमान में व्याप्ति मुख्य आधार है जिसकी स्थापना हेतु और साध्य के अनिवार्य संबंध को दिखाकर की जाती हैं चार्वाकों के अनुसार हेतु और साध्य के अनिवार्य संबंध को स्थापित नहीं किया जा सकता है।

38. किसने कहा है कि ''पूरा पश्चिमी जगत् ज्वालामुखी पर बैठा है जो कल फूटेगा और उसके टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।''?
(a) के.सी. भट्टाचार्य (b) राधाकृष्णन्
(c) कृष्णमूर्ति (d) विवेकानंद

Ans : (d) स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, ''पूरा पश्चिमी जगत् ज्वालामुखी पर बैठा है जो कल फूटेगा और उसके टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

39. कौन आधुनिक भारतीय दार्शनिक यह प्रतिपादित करता है कि व्यक्तिगत /आन्तरात्मिक विकास के लिए पुनर्जन्म अपरिहार्य है?
(a) गांधी (b) के. सी. भट्टाचार्य
(c) इकबाल (d) श्री अरविन्द

Ans : (d) श्री अरविन्द के अनुसार व्यक्तिगत/ आन्तरात्मिक विकास के लिए पुनर्जन्म अपरिहार्य है। श्री अरविन्द स्पष्ट कहते है कि ईश्वरत्व की उपलब्धि का ढंग जन्म तथा पुनर्जन्मों के मार्गों से होता हुआ क्रमिक उपलब्धि ही हैं। सम्भवत: ईश्वरीय 'लीला' का यह उपकरण है। उनके अनुसार, व्यक्ति को तब तक शरीर धारण करना है - जन्म, पुनर्जन्म लेना है- जब तक वह सृष्टि की अभिव्यक्ति के आध्यात्मिक स्तर को प्राप्त न कर लें।

40. रामानुज के अनुसार ईश्वर में
(a) सजातीय भेद है (b) विजातीय भेद है
(c) स्वगत भेद है (d) उपरोक्त मे से कोई नहीं

Ans : (c) रामानुज ईश्वर/ब्रह्म में स्वगत भेद को मानते है। शंकर का ब्रह्म सजातीय, विजातीय एवं स्वगत सभी प्रकार के भेदों से रहित हैं ईश्वर का जीव और जगत से रामानुज अपृथकसिद्धि सम्बन्ध मानते हैं।

41. नीचे दो कथन-अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। इन दो कथनों के संदर्भ मे नीचे दिए विकल्पों से सही का चयन करें:

अभिकथन (A) : धर्म के रूप में बौद्धधर्म के मूल तत्त्व हैं: बुद्ध धम्म और संघ।

कारण (R) : बौद्ध दर्शन की तीन मूलभूत विशेषताएँ है: अनेक, असत् और दु:ख।

विकल्प:
(a) (A) और (R) दोनों सत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(b) (A) सत्य है, (R) असत्य हैं, तथा (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।
(c) (A) और (R) दोनों असत्य हैं, तथा (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।
(d) (A) असत्य है, (R) सत्य है तथा (R), (A) की सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।

Ans : (b) 'धर्म' के रूप में बौद्ध धर्म के मूल तत्व है: बुद्ध धम्म, और संघ हैं। बौद्ध दर्शन की तीन मूलभूत विशेषताएं अनेक, असत् और दु:ख नहीं है।

42. नीचे दो समूह दिए गए है। समूह-I में ग्रंथों के नाम हैं और समूह-II में लेखकों के नाम हैं। सही सुमेलित कोड का चयन करें :

सूची I	**सूची II**
(A) निरुक्त	(i) उदयन
(B) वादविधि	(ii) धर्मकीर्ति
(C) आत्मतत्त्वविवेक	(iii) वसुबंधु
(D) न्यायबिन्दु	(iv) यास्क

कूट:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(c)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(d)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)

Ans : (b) यास्क का 'निरूक्त' वसुबंधु का 'वादाविधि, उदयन का 'आत्मत एवं विकेक, धर्मकीर्ति का 'न्यायबिन्दु' नामक ग्रन्थ है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

43. अद्वैत वेदान्त के प्रथम व्यवस्थित प्रवर्तक हैं

(a) शंकर (b) रामानुज
(c) गौड़पाद (d) वाचस्पति मिश्र

Ans : (c) गौड़पदाचार्य को अद्वैत वेदान्त के प्रथम व्यवस्थित प्रवर्तक माना जाता है। गौड़पदाचार्य वह प्रथम उद्वैत वेदान्ती है जिनकी कोई कृति उपलब्ध होती हैं उन्होंने मान्डूक्य उपनिषद पर भाष्य लिखा जिसे 'माण्डूक्यकारिका' या 'आगमशास्त्र' कहते हैं।
(भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा: राम मूर्ति पाठक)

44. स्पिनोज़ा देह-मन सम्बन्ध को निम्नलिखित सिद्धान्त के जरिये स्पष्ट करते हैं:

(a) अंत: क्रियावाद
(b) पूर्व-स्थापित सामंजस्यवाद
(c) मनो-दैहिक समानांतरवाद
(d) उपतत्ववाद या अनुघटनावाद

Ans : (c) स्पिनोजा का देह-मन सम्बन्ध मानो-दैहिक समानांतरवाद के नाम से जाना जाता है। डेकार्ट का सिद्धान्त अंत:क्रियावाद तथा लाइबनित्ज का सिद्धान्त पूर्वस्थापित सामंजस्यवाद कहलाता है।

45. 'भाषायी-खेल' का सिद्धान्त निम्नलिखित चिंतक के साथ जुड़ा है:

(a) विट्गेंस्टीन (b) रसेल
(c) अयर (d) मूर

Ans : (a) 'भाषायी-खेल' सिद्धान्त विट्गेन्सटाइन का भाषा से सम्बन्धित सिद्धान्त है। विट्गेन्सटाइन अपनी पुस्तक 'फिलॉसफिकल इन्वेस्टिगेसन्स' अर्थ एवं प्रयोग के सिद्धान्त को देता हैं। उनके अनुसार दार्शनिक समस्याओं के निराकरण की एक विधि यह है उसके भाषीय प्रयोग को देखना, जिससे शायद समस्या का निदान हो जाये, उलझन समाप्त हो जाय। भाषीय प्रयोगों को देखने की विधि को वे 'भाषीय खेल' कहते है।

46. सूची - I तथा सूची - II को सुमेलित करें तथा नीचे दिए कोडों में से सही विकल्प का चयन करें:

सूची I (विचारक)	**सूची II (पुस्तकें)**
(A) देकार्त	(i) ए ट्रीटइज़ ऑफ ह्यूमन नेचर
(B) स्पिनोज़ा	(ii) थियोडाइसी
(C) लाइब्नित्ज़	(iii) ऐथिका
(D) ह्यूम	(iv) मेडीटेशन्स

कूट:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(b)	(ii)	(iv)	(i)	(ii)
(c)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(d)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

Ans : (c)
देकार्त - मेडीटेशन्स
स्पिनोज़ा - ऐथिका
लाइब्नित्ज़ - थियोडाइसी
ह्यूम - ए ट्रीटाइज़ ऑफ ह्यूमन नेचर

47. नैयायिक भ्रम सम्बन्धित निम्नलिखि सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं:

(a) सत् - ख्याति (b) असत् - ख्याति
(c) अन्यथा - ख्याति (d) आत्म - ख्याति

Ans : (c) नैयायिकों का भ्रम सिद्धान्त अन्यथाख्यातिवाद हैं। 'अन्यथा' का अर्थ है 'अन्यत् ' और 'अन्य रूप में'। दृश्यमान वस्तु (शुक्ति) का अन्य रूप में (रजत रूप में) प्रत्यक्ष होना और स्मर्यमार्ण वस्तु (रजत) की सत्ता अन्यत्र (बाजार आदि में) होती है।

48. राधाकृष्णन के अनुसार आत्म का ज्ञान निम्नलिखित विधि के जरिये संभावित है:

(a) बुद्धिमता (b) अंत:प्रज्ञा
(c) अनुभव (d) कल्पना

Ans : (b) राधाकृष्णन अंत:प्रज्ञावादी दर्शनिक है। उनके अनुसार आत्म के ज्ञान का साधन 'अंत:प्रज्ञा' है।

49. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये और सूचियों के नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर चुनिये:

सूची I (कार्यकारण सिद्धांत)	**सूची II (सम्प्रदाय)**
(A) सत्कार्यवाद	(i) सांख्य
(B) असत्कार्यवाद	(ii) विशिष्टाद्वैत
(C) विवर्त्तवाद	(iii) न्याय
(D) ब्रह्मपरिणामवाद	(iv) अद्वैत-वेदान्त

कूट:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(b)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(c)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(d)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)

Ans : (a)
सत्कार्यवाद - सांख्य
असत्कार्यवाद - न्याय
विवर्त्तवाद - अद्वैत-वेदान्त
ब्रह्मपरिणामवाद - विशिष्टाद्वैत

50. ईश्वर को 'नेचुरा नेचुराटा' किसने कहा है?

(a) लॉक (b) कांट
(c) स्पिनोज़ा (d) ह्यूम

Ans : (c) स्पिनोजा अपने दर्शन में ईश्वर को 'नेचुरा-नेचुराटा' कहता है। स्पिनोजा ईश्वर के तीन रूपों की चर्चा करता है - 'नेचुरा-नेचुराटा, 'नेचुरा-नेचुरान्स' तथा पररूप (Ens absolutum Indetermiatum)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2013
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

नोट : इस प्रश्नपत्र में पचहत्तर (75) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक है। सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित में से किसमें वह साधन समाविष्ट है जो शक्तिग्रह का नही है?

(a) उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्याकरण
(b) आप्तवाक्य, उपाधिनिरास, व्याकरण, कोश
(c) उपमान, आप्तवाक्य, प्रसिद्धपद, सान्निध्य, वृद्ध-व्यवहार
(d) व्याकरण, वृद्ध-व्यवहार, उपमान, कोश

Ans. (b) : 'उपाधिनिरास' को छोड़कर उपमान, आप्तवाक्य, प्रसिद्धपद, सान्निध्य, वृद्ध-व्यवहार, कोश, व्याकरण आदि शक्तिग्रह का साधन है।

2. नीचे दिये गए सिद्धान्तों में से किसका मानना है कि ज्ञेय अपने अस्तित्व और अपने गुणधर्मों के लिए ज्ञाता मन् की सृजनात्मक क्रिया के प्रति ऋणी है?

(a) निरपेक्ष प्रत्ययवाद (b) संवृत्तिवाद
(c) तत्वमीमांसीय प्रत्ययवाद (d) ज्ञानमीमांसीय प्रत्ययवाद

Ans. (d) : ज्ञानमीमांसीय प्रत्ययवाद के अनुसार, ज्ञेय अपने अस्तित्व और अपने गुणधर्मों के लिए ज्ञाता मन् की सृजनात्मक क्रिया के प्रति ऋणी हैं। काण्ट एक प्रकार का ज्ञानमीमांसीय प्रत्ययवाद का प्रतिपादन करता है।

3. हुस्सर्लवादी अभिव्यक्ति 'ईपॉक' का अर्थ है

(a) वस्तुस्थिति का स्थगन (b) जगत का स्थगन
(c) निर्णय का स्थगन (d) अनुभव का स्थगन

Ans. (c) : हुस्सर्लवादी अभिव्यक्ति 'ईपॉक' का अर्थ 'निर्णय का स्थगन' (Suspension of Judgment) है। 'इपोजे' का अर्थ प्रकृति में या वस्तु में अविश्वास या निषेध नहीं, बल्कि कुछ काल के लिए उनके संबंध में निर्णय को स्थगित करना है।

4. अनाभिगम्य वास्तविकता के संवृत्तिक आभास (या प्रगटन) के बारे में हमारे ज्ञान को प्रतिबंधित करने वाला सिद्धान्त है

(a) संवृति/घटना-क्रिया विज्ञान
(b) आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद
(c) संवृत्तिवाद
(d) निरपेक्ष प्रत्ययवाद

Ans. (c) : अनाभिगम्य वास्तविकता के संवृत्तिक आभास (या प्रगटन) के बारे में हमारे ज्ञान को प्रतिबंधित करने वाला सिद्धान्त 'संवृत्तिवाद' है।

5. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए कोडों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I	सूची - II
A. आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद	i. कांट
B. सामान्य-बोध वस्तुवाद	ii. थॉमस रीड
C. निरपेक्ष प्रत्ययवाद	iii. हेगेल
D. आलोचनात्मक प्रत्ययवाद	iv. बर्कले

कोड:

	A	B	C	D
(a)	iv	iii	ii	i
(b)	i	ii	iii	iv
(c)	iv	ii	iii	i
(d)	iii	ii	iv	i

Ans. (c)

(A) आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद	(iv) बर्कले
(B) सामान्य-बोध वस्तुवाद	(ii) थॉमस रीड
(C) निरपेक्ष प्रत्ययवाद	(ii) हेगेल
(D) आलोचनात्मक प्रत्ययवाद	(ii) कांट

6. यदि 'O' असत्य है तो निम्नलिखित में से सत्य विकल्प ज्ञात करें:

(a) I और E सत्य है तथा A असत्य है।
(b) I और A सत्य है तथा E असत्य है।
(c) A और I असत्य है तथा E सत्य है।
(d) O सत्य है, परन्तु E और I असत्य है।

Ans. (b) : परम्परागत विरोध वर्ग में यदि 'O' असत्य है तो 'I' और 'A' सत्य होंगे तथा 'E' असत्य होगा।

7. नीचे दिए गए कथनों से असत्य कथन का चयन करें:

(a) 'A' का परिवर्तित रूप 'I' है।
(b) यदि 'A' असत्य है तो 'O' सत्य है।
(c) 'O' का प्रतिवर्तन 'I' है
(d) 'E' का प्रतिवर्तन 'I' है।

Ans. (d) : 'E' का प्रतिवर्तन 'I' में नहीं हो सकता है। 'E' का प्रतिवर्तन 'A' में होता है। प्रतिवर्तन में उद्देश्य पद अपरिवर्तित रहता है और प्रतिवर्तित होने वाला तर्कवाक्य का परिमाण भी अपरिवर्तित रहता है। किसी तर्कवाक्य के प्रतिवर्तन में हम तर्कवाक्य का गुण परिवर्तन करते हैं और विधेय के स्थान पर उसका पूरक पद रखते हैं। 'A' का 'E', 'E' का 'A', 'I' का 'O' में और 'O' का 'I' में प्रतिवर्तन होता है।

8. निम्नलिखित में से किस दार्शनिक का कहना है, "उपयोगिता का अर्थ किसी वस्तु के ऐसे गुणधर्म से है जिसके कारण लाभ, प्राप्ति, सुख, शुभ अथवा प्रसन्नता उत्पन्न किए जा सकते हैं अथवा उस व्यक्ति जिसके हित पर ध्यान दिया जा रहा है, के अनिष्ट, वेदना, बुराई, दु:ख को अवरुद्ध किया जा सकता है।"

(a) जेम्स मिल (b) जे.एस. मिल
(c) ह्यूम (d) जैरेमी बेन्थम

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : जैरेमी बेन्थम जो सुखवादी उपयोगितावाद के समर्थक है के अनुसार, ''उपयोगिता का अर्थ किसी वस्तु के ऐसे गुणधर्म से है जिसके कारण लाभ, प्राप्ति, सुख, शुभ अथवा प्रसन्नता उत्पन्न किये जा सकते हैं अथवा उस व्यक्ति जिसके हित पर ध्यान दिया जा रहा है के अनिष्ट, वेदना, दुःख को अवरुद्ध किया जा सकता है।''

9. निम्नलिखित में किस दार्शनिक ने कर्म के स्रोत के नैतिक श्रेणीकरण को प्रतिपादित किया है?

(a) कडवर्थ (b) सिजविक
(c) बटलर (d) मार्टिन्यू

Ans. (d) : मार्टिन्यू ने कर्म के स्रोत के नैतिक श्रेणीकरण के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। मार्टिन्यू एक अन्तःप्रज्ञावादी दार्शनिक है।

10. बेंथम से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर गौर करें तथा दिए गए कूट से सही का चयन करें:

कथनः

1. बेंथम ने सन्यासवादी नीतिशास्त्र को 'प्रतिलोमित सुखवाद' कर कर खारिज कर दिया।
2. सुख-सिद्धान्त को व्यवहार का मानदण्ड स्वीकार करने के कारण बेंथम नैतिक सुखवादी है।
3. अन्तःप्रज्ञावादी नीतिशास्त्र की आलोचना बेंथम द्वारा की गई क्योंकि यह व्यक्तिपरक, भावना के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

कूटः

(a) केवल 1 और 3 सत्य है।
(b) केवल 1 और 2 सत्य है।
(c) 1,2 और 3 सत्य है।
(d) केवल 2 सत्य है।

Ans. (c) : बेंथम के संबंध में तीनों कथन सत्य है। बेंथम को एक मनोवैज्ञानिक सुखवादी दार्शनिक माना जाता है। बेंथम के अनुसार ''प्रत्येक केवल एक है और कोई भी एक से ज्यादा नहीं है।''

11. प्राक्कल्पना

(a) एक स्वतंत्र मानसिक उड़ान है।
(b) एक अनुसंधान है।
(c) एक अटकल है।
(d) किसी समस्यामूलक घटना की व्याख्या के लिए प्रस्तुत एक सामयिके अटकल है।

Ans. (d) : 'प्राक्कल्पना' किसी समस्यामूल घटना की व्याख्या के लिए प्रस्तुत एक सामयिक अटकल (A provisional supposition) है। प्राक्कल्पनाओं के मूल्य या स्वीकार्यत्व के निर्धारण के लिए पांच मापदण्ड है। (तर्कशास्त्र का परिचय : आई.एम. कोपी)

12. शंकर के अनुसार ब्रह्म निम्नलिखित में से किन तीन भेदों से परे हैं?

(a) सजातीय भेद, विजातीय भेद, स्वगत भेद
(b) जागृत अवस्था, स्वप्न अवस्था, सुषुप्ति अवस्था
(c) आनुभविक विरोध, तार्किक विरोध, अतार्किक विरोध
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (a) : शंकर अपने अद्वैतवादी दर्शन में ब्रह्म को सजातीय, विजातीय तथा स्वगत भेदों से परे मानते हैं। ब्रह्म सभी प्रकार के भेदों से रहित एक अभेद सत्ता है। ब्रह्म सभी भेदों से रहित निर्गुण निर्विशेष सत्ता है।

13. कालक्रमानुसार तीर्थंकरों के सही उत्तर-क्रम को चुनेः

(a) ऋषभनाथ, अनंतनाथ, शांतिनाथ, नेमिनाथ, महावीर
(b) अनंतनाथ, शांतिनाथ, ऋषभनाथ, महावीर, नेमिनाथ
(c) पद्मप्रभ, अजितनाथ, मल्लिनाथ, ऋषभनाथ, शांतिनाथ
(d) ऋषभनाथ, अनंतनाथ, संभवनाथ, अजितनाथ, महावीर

Ans. (a) : जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए ऋषभनाथ (आदिनाथ) प्रथम तथा महावीर अन्तिम 24वें तीर्थंकर हुए। क्रमशः ऋषभनाथ, अजितनाथ, संभवनाथ, अभिनन्दन, सुमितिनाथ, पद्मप्रभु, सुदर्श्वनाथ, चंदाप्रभु, सुविधिनाथ, शीतलनाथ, श्रेयांसनार्थ, वासुपूज्य, विमलनाथ, अनंतनाथ, धर्मनाथ, शांतिनाथ, कुंधुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ तथा महावीर।

14. 'आभासों से परे सत् की कोई सम्पत्ति नहीं है और केवल आभास ही उसकी सम्पत्ति है तब वह दिवालिया हो जायेगा।'' यह किसका वक्तव्य है?

(a) ग्रीन (b) हेगेल
(c) ब्रेडले (d) प्लेटो

Ans. (c) : ब्रेडले के अनुसार 'आभासों से परे सत् की कोई सम्पत्ति नहीं है और आभास ही उसकी सम्पत्ति है तब वह दिवालिया हो जायेगा।' ब्रेडले निरपेक्ष सत् को प्रत्येक आभास में अन्तर्व्याप्त मानता है। यद्यपि निरपेक्ष सत् प्रत्येक आभास में विद्यमान है, यह सर्वत्र उपस्थित है, तथापि प्रत्येक आभास में इसकी अभिव्यक्ति विभिन्न मात्राओं में है।

15. 'आभास सत् के आभास है' यह कथन है

(a) काण्ट का (b) ब्रैडले का
(c) हेगेल का (d) ग्रीन का

Ans. (b) : 'आभास सत् के आभास है।' अतः सत् आभासों को भी अपने में समेटे है। सत् इन सबों को समेटे रहता है। ब्रैडले का कहना है कि सभी आभास निरपेक्ष सत् में संगत रूप में रहते हैं, उनका आभास रूप सत् में अपनी विसंगति खो देता है।

16. 'जीने के लिये मरो' यह वक्तव्य है

(a) काण्ट का (b) हेगेल का
(c) बर्कले का (d) मिल का

Ans. (b) : 'जीने के लिए मरो' और 'व्यक्ति बनो' ये हीगेल के नैतिक दर्शन के मूल में है। हीगेल ने सम्पूर्ण विश्व को एक अध्यात्मिक तत्व का विकास माना है।

17. किसने कहा, है -'मेरा स्थान और इसके कर्त्तव्य'?

(a) प्लेटो (b) बर्कले
(c) काण्ट (d) ब्रैडले

Ans. (d) : ब्रैडले अपने नीति-दर्शन में एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया है जिसे 'मेरा स्थान और इसके कर्तव्य' कहा है। उनके अनुसार मनुष्य अपने जीवनकाल में सभी उत्कृष्टताओं को हासिल नहीं कर सकता। कर्मक्षेत्र बहुत व्यापक और बहुआयामी होता है। अतः मनुष्य से सभी आदर्शों की प्राप्ति की आशा नहीं करनी चाहिए।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

18. शंकर के सत्कार्यवाद को क्या कहा जाता है?

(a) विज्ञान विवर्तवाद (b) ब्रह्म विवर्तवाद
(c) प्रकृति परिणामवाद (d) ब्रह्म परिणामवाद

Ans. (b) : शंकर के सत्कार्यवाद को 'ब्रह्म विवर्तवाद' कहा जाता है। सत्कार्यवादियों के अनुसार, कारण में कार्य उत्पत्ति पूर्व भी विद्यमान रहता है। शंकरवेदान्ती सत्कार्यवाद को तो मानते हैं, परन्तु कारण का कार्य के रूप में परिवर्तन को अतात्विक या प्रातीतिक मानते हैं। अतः यहाँ 'विवर्तवाद' का मतलब अतात्विक परिवर्तन है।

19. नीतिशास्त्र में 'स्वतंत्र-संकल्प' का अर्थ है

(a) व्यक्ति कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र है।
(b) व्यक्ति कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र नहीं है।
(c) व्यक्ति कुछ मानदण्डों को ध्यान में रखते हुए कर्म करने के लिए स्वतंत्र है।
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (c) : नीतिशास्त्र में 'स्वतंत्र-संकल्प' का अर्थ स्वेच्छाचारिता नहीं है। बल्कि कुछ नैतिक मानदण्डों को ध्यान में रखते हुए व्यक्ति कर्म करने के लिए स्वंत्र है। नीतिशास्त्र में 'संकल्प-स्वातंत्र' को एक नैतिक पूर्वमान्यता भी माना गया है।

20. आधुनिक पश्चिमी दर्शन में व्यक्तिगत पहचान की समस्या पर सर्वप्रथम किसने प्रकाश डाला है?

(a) स्ट्रासन (b) लॉक
(c) क्रिप्के (d) देकार्त

Ans. (b) : आधुनिक पश्चिमी दर्शन में व्यक्तिगत पहचान की समस्या पर सर्वप्रथम 'लॉक' ने प्रकाश डाला। जान लॉक स्मृति को वैयक्तिक अनन्यता का नियम मानता है। उसे इस सिद्धांत का जनक कहा जाता ह

21. भारतीय दर्शन के निम्नलिखित सम्प्रदायों में से किसने मोक्ष को निर्वाण के रूप में निर्दिष्ट किया है?

(a) जैन धर्म (b) बौद्ध
(c) योग (d) सांख्य

Ans. (b) : बौद्ध दर्शन में मोक्ष को 'निर्वाण' कहा गया है। इसे 'निब्बान' भी कहते हैं। 'निर्वाण' का अर्थ है 'बुझना'। जैसे तेल के क्षय से दीपक बुझ जाता है, वैसे ही अविद्या और क्लेश के क्षय से धीर पुरुष निर्वाण प्राप्त करते हैं।

22. कौन कहता है कि दर्शन का कार्य पूर्णतः आलोचनात्मक है?

(a) अरस्तू (b) एयर
(c) प्लेटो (d) हेगेल

Ans. (b) : 'एयर' के अनुसार दर्शन का कार्य पूर्णतः आलोचनात्मक है। एयर के दर्शन परिकल्पनात्मक नहीं है। एयर के अनुसार दर्शन का कार्य विश्लेषण और स्पष्टीकरण है।

23. 'सम्बन्ध' के आधार पर तर्कवाक्यों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जाता है:

(a) निरुपाधिक और सोपाधिक
(b) भावात्मक और निषेधात्मक
(c) सामान्य और विशेष
(d) अनिवार्य और समस्यामूलक

Ans. (a) : 'संबंध' के आधार पर तर्कवाक्यों को निरुपाधिक और सोपाधिक कथनों में विभाजित किया जाता है।

24. 'सामान्य अस्तिवाचक' और 'विशेष नकारात्मक' तर्कवाक्य इस रूप में प्रतीक द्वारा प्रस्तुत होते हैं

(a) A और E (b) A और I
(c) E और O (d) A और O

Ans. (d): 'सामान्य अस्तिवाचक' अर्थात् 'सर्वव्यापक सकारात्मक' का प्रतीक 'A' तथा 'विशेष नकारात्मक का प्रतीक 'O' है। इसके अतिरिक्त 'सामान्य नास्तिवाचक' का प्रतीक 'E' है तथा 'विशिष्ट सकारात्मक या अस्तित्ववाचक' का प्रतीक 'I' है।

25. निम्नलिखित में से किस बौद्ध-मत में 'त्रिशरण' के नाम से जाना जाता है?

(a) श्रवण, मनन, निदिध्यासन (b) दर्शन, ज्ञान, चरित्र
(c) मैत्री, करुणा, मुदिता (d) बुद्ध, धम्म, संघ

Ans. (d) : बौद्ध मत में बुद्ध धम्म, संघ को 'त्रिशरण' नाम से जान जाता है। बौद्ध मत के दो सम्प्रदाय हीनयान और महायान है।

26. भगवद्गीता अति महत्त्वपूर्ण कृति मानी जाती है क्योंकि यह प्रस्तुत करती है

(a) जीवन का सामंजस्यपूर्ण दर्शन
(b) कर्म, भक्ति और ज्ञान का संश्लेषण
(c) नैतिक शिक्षा
(d) उपर्युक्त सभी

Ans. (d) : 'भगवद्गीता' एक अति महत्वपूर्ण कृति है क्योंकि यह जीवन का सामंजस्यपूर्ण दर्शन है। नैतिक शिक्षा तथा कर्म, भक्ति संज्ञान का संश्लेषण है।

27. बेन्थम द्वारा बताये गये नैतिकता के चार आदेश हैं:

(a) प्राकृतिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक
(b) प्राकृतिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक
(c) प्राकृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक
(d) प्राकृतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक

Ans. (c): बेन्थम ने नैतिकता के चार आदेश बताये हैं - प्राकृतिक, राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक। इन्हें वे नैतिकता के चार अनुशास्तियां कहते हैं। बेन्थम ने सुप्राप्ति के सार्वजनीन हो सकने के लिए दिया है जो बाध्य है। जो व्यक्ति इनको नहीं मानता, उसे दण्डित किया जा सकता है जो मानता है उसे पुरस्कृत किया जा सकता है।

28. पुरुषार्थ के समस्त निम्नलिखित क्रम गलत है सिवाय इसके :

(a) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष (b) अर्थ, काम, मोक्ष, धर्म
(c) धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष (d) धर्म, मोक्ष अर्थ, काम

Ans. (a): भारतीय परम्परा में चार पुरुषार्थ माने गये हैं जो क्रमशः धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष है।

29. तीर्थंकर का तात्पर्य है

(a) एक धर्म (faith) का अनुयायी
(b) एक धर्म का प्रवर्तक
(c) एक तटस्थ व्यक्ति
(d) इनमें से कोई नहीं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : 'तीर्थंकर' का तात्पर्य एक धर्म प्रवर्तक व्यक्ति है। जैन धर्म के संबंध में इस शब्द बहुधा प्रयोग हुआ है। ये उन 24 व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो स्वयं तप के माध्यम से आत्मज्ञान (केवल ज्ञान) प्राप्त करते हैं। जो संसार सागर से पार लगाने वाले 'तीर्थ' की रचना करते हैं।

30. निम्नलिखित में से कौन पैगम्बरीय धर्म है?
(a) हिन्दू धर्म (b) इस्लाम धर्म
(c) बौद्ध धर्म (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : 'पैगम्बर' एक फारसी शब्द है जिसका अर्थ है- 'पैगाम' देने वाला। 'इस्लाम' धर्म में पैगम्बर शब्द का इस्तेमाल मोहम्मद साहब के लिए हुआ है। जो इस्लाम धर्म के अन्तिम पैगम्बर कहे जाते हैं। 'पैगम्बर' वह व्यक्ति होता है जिसे 'अल्लाह' ने 'इस्लाम धर्म' के प्रचार-प्रसार के लिए चुना हो।

31. 'दी इसेन्शल यूनिटी ऑफ आल रिलिजन्स' का लेखक कौन है?
(a) राधाकृष्णन् (b) टैगोर
(c) भगवानदास (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (c) :
'दी इसेन्शल यूनिटी ऑफ आल रिलिजन्स' - भगवानदास।
'दी रिलिजन ऑफ मैन - रवीन्द्र नाथ टैगोर।
'रिलिजन एण्ड सोसाइटी' - राधाकृष्णन।

32. अरस्तू ने शुभ की निम्नलिखित रूप में पहचान की है
(a) सुख (b) पूर्णता
(c) उपयोगिता (d) आत्म-सम्मान

Ans. (b) : अरस्तू के अनुसार परम शुभ यूडोमोनिया (Eudaimonia) है। वह मध्यम मार्ग को ही सर्वश्रेष्ठ नैतिक मार्ग कहता है। वह केवल सुख को एकांगी मानता है। वह 'शुभ' को सुख आनन्द (Happiness) कहता है।

33. दंड के प्रतिकारी सिद्धान्त का विचार है कि
(a) अपराधियों को सुधारा जा सकता है
(b) अपराधियों को दण्डित किया जाना चाहिए।
(c) अपराधियों को बिना किसी दण्ड के छोड़ा जा सकता है।
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : दण्ड के तीन सिद्धांत प्रचलित है- प्रतिफलनात्मक/प्रतिकारी, निवर्तनकारी तथा सुधारात्मक सिद्धान्त। प्रतिफलनात्मक या प्रतिकारी दण्ड सिद्धान्त के अनुसार अपराधियों को दण्डित किया जाना चाहिए। इसमें दण्ड स्वतः साध्य है। 'बुराई के लिए बुराई' सिद्धान्त का समर्थक है।

34. प्लेटो के अनुसार, मूलभूत सद्गुण है
(a) सही वाक् सही क्रिया, सही मानसिकता
(b) प्रज्ञा, साहस, संयमिता और न्याय
(c) बौद्धिक गुण और नैतिक गुण
(d) सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, चोरी न करना

Ans. (b) : यथार्थवादी प्लेटो ने न्याय का दार्शनिक और नैतिक अर्थ किया है। प्लेटो का नैतिक दर्शन भी उसकी तत्वमीमांसा से प्रभावित है। वह चार सद्गुणों क्रमशः प्रज्ञा (विवेक), साहस, आत्म-संयम और इन तीनों से उत्पन्न न्याय को मानता है। यह सभी सद्गुण शुभ है। ये प्रत्ययात्मक होने कारण बुद्धि ग्राह्य भी है।

35. आत्मपूर्णतावाद का अर्थ है
(a) योगक्षेम (b) सुखवाद
(c) उपयोगितावाद (d) पूर्णतावाद

Ans. (a): अरस्तू का आत्मपूर्णतावाद (Eudaimoniasm) परम कल्याण या योग क्षेम है। मानव श्रेय को ही अरस्तू परम कल्याण या योगक्षेम कहता है।

36. मेज़ का समवायीकरण क्या है?
(a) स्वयं मेज़ (b) मेज़ का रंग
(c) मेज़ के भाग (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (c): वह द्रव्य जिससे कार्य उत्पन्न होता है, समवायीकरण है। मेज का समवायीकरण 'मेज के भाग' है।

37. ''धर्मसंकट-मीमांसा नैतिक अनुसंधान का लक्ष्य है'' यह किसने माना है?
(a) जी.ई. मूर (b) ब्रैडले
(c) कांट (d) रैशडल

Ans. (a): ''धर्मसंकट-मीमांसा (Casuistry) नैतिक अनुसंधान का लक्ष्य है''- जी.ई. मूर। यह प्रयोगात्मक नीतिशास्त्र की एक विधि है।

38. अद्वैत वेदान्त के अनुसार निम्नलिखित कथनों में से कौन सा एक ब्रह्म के ज्ञान के संबंध में सत्य है?
(a) प्रत्यक्ष और अनुमान दोनों हमें ब्रह्म का ज्ञान प्रदान करते हैं।
(b) केवल अर्थापत्ति हमें ब्रह्म का ज्ञान प्रदान करती है।
(c) ब्रह्म के ज्ञान के लिये श्रुति एकमात्र स्रोत है।
(d) अर्थापति और अनुपलब्धि दोनों हमें ब्रह्म का ज्ञान प्रदान करती है।

Ans. (c): अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म-साक्षात्कार के लिए 'श्रुति' को ही एकमात्र स्रोत माना गया है। 'ब्रह्म' का ज्ञान वेदान्तशास्त्र से ही होता है। श्रुति रत्न ऋषियों के बुद्धि-सागर के मन्थन से निकले हैं। श्रुतिवाक्य ऋषियों के ब्रह्मविषयक स्वानुभव की शाब्दिक अभिव्यक्ति है, अतः श्रुति को शब्द ब्रह्म भी कहते हैं।

39. निम्नलिखित में से कौन सा नित्यद्रव्य नहीं है?
(a) परमाणु (b) आकाश
(c) द्वयणुक (d) दिक्

Ans. (c): परमाणु, आकाश, दिक् नित्य द्रव्य माने गये हैं। परन्तु द्वयणुको का निर्माण परमाणु संघात से हुआ है। अतः यह नित्य द्रव्य नहीं है क्योंकि यह नष्ट होते हैं।

40. न्याय दर्शन के अनुसार 'सीपी चाँदी है' यह एक मिथ्या संज्ञान है, क्योंकि:
(a) चाँदी अन्यत्र विद्यमान है।
(b) चाँदी चमकती है।
(c) चाँदी का ग्रहण स्मृति से होता है।
(d) दृष्टा एक रजतकार है।

Ans. (c): न्याय दर्शन का भ्रम-विषयक सिद्धान्त अन्यथाख्यातिवाद कहलाता है। नैयायिक अपने वस्तुवाद की रक्षा के लिए भ्रम में चांदी के वास्तविक प्रत्यक्ष की कल्पना ज्ञान लक्षण नाम असाधारण प्रत्यक्ष की सहारा लेकर करते हैं। जिसमें स्मृति में विद्यमान रजत (चांदी) रूप का बाहर सीपी (शुक्त) के स्थान पर ज्ञानलक्षण प्रत्यासति द्वारा असाधारण प्रत्यक्ष होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

41. दिए गए अभिकथन के लिए दिए गए प्रतीकात्मक रूपो में से सही का चयन करें:
अभिकथन
मक्खियाँ और ततैया तभी डंक चुभोती हैं जब वे या तो क्रुद्ध अथवा डरी हुई हों। (Bx, Wx, Sx, Ax, Fx)
प्रतीकात्मक रूप
(a) (∃x) {Bx. Wx) ⊃ [Ax v Fx)= Sx]}
(b) (x) {Bx vWx)⊃[Ax v Fx)⊃ Sx]}
(c) (x) (Bx v Wx) ⊃ Ax v Fx ⊃ Sx
(d) (x) (Bx v Wx) ⊃ (Ax v Fx) ⊃ Sx

Ans. (b): मक्खियाँ और ततैया तभी डंक चुभोती हैं जब वे या तो क्रुद्ध अथवा डरी हुई हो।
का प्रतीकात्मक रूप -
(x) {(BxsvWx) ⊃ {AxvFx) ⊃ Sx]}

42. न्याय दर्शन के अनुसार प्रमा है
(a) यथार्थ अनुभव
(b) विषय का प्रकटीकरण
(c) वह जो व्यवहार योग्य है
(d) अज्ञात विषय का ज्ञान

Ans. (a): न्याय दर्शन में प्रमा को यथार्थ अनुभव तथा अप्रमा के अयथार्थ अनुभव कहा गया है। प्रमा चार प्रकार की होती है- प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति और शब्द ज्ञान।

43. न्याय दर्शन के अनुसार 'जल शीतल दिखता है', उदाहरण है
(a) ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष का
(b) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष का
(c) योगज प्रत्यक्ष का
(d) लौकिक सन्निकर्ष का

Ans. (a): न्याय दर्शन में तीन प्रकार के अलौकिक प्रत्यक्ष माने गये हैं-सामान्य, लक्षण, ज्ञान लक्षण और योगज। 'जल शीतल दिखता है' ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष है। ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष तब होता है जब एक ज्ञानेन्द्रिय अपने गुण से विपरीत अन्य ज्ञानेन्द्रिय के गुण की भी कल्पना करती है तो वहां ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष होता है। प्रस्तुत वाक्य में 'चक्षु' के द्वारा जल और उसकी शीतलता दोनों का प्रत्यक्ष हो रहा है जबकि 'शीतलता' स्पर्श (त्वचा) का विषय है।

44. नैयायिकों के अनुसार शब्द-अर्थ -संबंध
(a) पाकृतिक है (b) परम्परा से प्राप्त है
(c) (A) और (B) दोनों (d) न तो (A) न ही (B)

Ans. (b): न्याय दर्शन के अनुसार, शब्द -अर्थ संबंध लंबी रूढ़ परम्परा के बाद आती है।

45. वाक्यार्थ-विषयक प्रभाकर-समर्थित मत का नाम है
(a) अभिहितान्वयवाद (b) अन्विताभिधानवाद
(c) तात्पर्यवाद (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b): वाक्यार्थ-विषयक प्रभाकर समर्थित मत 'अन्विताभिधानवाद' कहलाता है। जिसके अनुसार, अर्थवाद भी कर्म का सहायक बनकर ही प्रामाणिक हो सकता है। कुमारिल को मत अभिहितान्वयवाद कहलाता है।

46. न्याय ज्ञानमीमांसा एक उदाहरण है
(a) निरपेक्ष प्रत्ययवाद का (b) यथार्थवाद का
(c) आत्मगत प्रत्ययवाद का (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b): न्याय ज्ञानमीमांसा कट्टर वस्तुवादी/यथार्थवादी है। वह ज्ञान को ज्ञाता और ज्ञेय का संबंध मानता है। बिना ज्ञाता और ज्ञेय के ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता।

47. निम्नलिखित अनुमान उदाहरण है:
'कोई भी प्राणी जो आत्मरहित है प्राणयुक्त नहीं है।
सभी जीवित प्राणी प्राणयुक्त है।
अत: सभी जीवित प्राणी आत्मयुक्त है।'
(a) केवलान्वयी का (b) केवलव्यतिरेकी का
(c) अन्वय-व्यतिरेकी का (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) 'कोई भी प्राणी जो आत्मरहित है प्राणयुक्त नहीं है। सभी जीवित प्राणी प्राणयुक्त है।' में केवलव्यतिरेकी अनुमान का उदाहरण है। इसका आधार केवल व्यतिरेक-व्याप्ति है तथा इसमें अन्वय व्याप्ति की कोई उपयोगिता नहीं होती। इसमें अनुमान साध्य के अभाव के साथ हेतु के अभाव की व्याप्तिज्ञान से होता है।

48. ''स्त्री पैदा नहीं होती, बनाई जाती है''-यह कथन है
(a) मेरी वाल्स्टनक्राफ्ट (b) एम्मा गोल्डमैन
(c) सिमोन दि बुवा (d) लुस एरिगेरी

Ans. (c): ''स्त्री पैदा नहीं होती, बनाई जाती है'' यह कथन सिमोन दि बुवा का है। जो एक अस्तित्ववादी फ्रांसीसी लेखिका है। जो एक प्रतिक्रियावादी नारीवादी भी है।

49. निम्नलिखित दार्शनिकों में से किसने 'संभूति' की अवधारणा का प्रतिपादन किया है?
(a) पाईथागोरस (b) थेलेज
(c) हेराक्लीटस (d) डेमोक्रिटस

Ans. (c): हेराक्लाइट्स के अनुसार, प्रत्येक वस्तु क्षणिक है। कोई वस्तु उसी क्षण है भी और नहीं भी है। एक ही काल में वस्तुओं का होना और न होना उनका स्वभाव है। उसके इस मत को 'संभूति का सिद्धान्त' कहते हैं।

50. निम्नलिखित में से किस पक्ष का समर्थन बुद्ध ने किया?
(a) श्रेय (b) मध्यमप्रतिपदा
(c) कैवल्य (d) प्रेय

Ans. (b): गौतमबुद्ध प्रतीत्यसमुत्पाद को 'मध्यमा प्रतिपद (मध्यम मार्ग) कहते हैं। यह शाश्वतवाद (Eternalism) और उच्छेदवाद (Nihidism) के बीच का मार्ग है।

51. किसने कहा है कि दिक् और केवल आनुभविक यथार्थ किंतु प्रागानुभविक आदर्श है?
(a) पाईथागोरस (b) स्पिनोजा
(c) काण्ट (d) हेगेल

Ans. (c): काण्ट दिक् और काल आनुभविक यथार्थ किंतु प्रागनुभविक आदर्श (Ideal) अथवा प्रत्ययात्मक मानता है। सभी अनुभवगम्य वस्तुएं देशकाल में स्थित है, इसलिए प्रत्येक विषय का ज्ञान देशकाल से परिच्छिन्न है। ज्ञान का कोई भी विषय देश-काल

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

से परे नहीं हो सकता है। अतः आनुभविक दृष्टि से देश और काल वास्तविक (यथार्थ) है। इसके विपरीत देश और काल परमार्थिक दृष्टि से काल्पनिक या प्रत्ययात्मक या आदर्श है। यदि उनकी परमार्थिक दृष्टि से स्वीकार किया जाय तो वे काल्पनिक हो जायेंगे क्योंकि वे असंवेद्य आकार हो जायेंगे।

52. निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धान्त यह कहता है कि सामान्य का अर्थ 'सामान्य अवधारणाएँ हैं; न कि कोई ऐसी वस्तु जो हमारे मन के बाहर है'?

(a) वास्तववाद (b) नामवाद
(c) प्रत्ययवाद (d) सादृश्यवाद

Ans. (c): 'प्रत्ययवाद' के अनुसार सामान्य का अर्थ 'सामान्य अवधारणाएं हैं; न कि कोई ऐसी वस्तु जो हमारे मन के बाहर है। प्रत्ययवादी जो सामान्य की सत्ता को स्वीकार करते हैं यथार्थवादी या वस्तुवादी कहलाते हैं।

53. संवृत्तिशास्त्रीय पद्धति की अनिवार्य विशेषता है

(a) इंटेंशनीलिटी (b) जगत के प्रति संशय
(c) ब्रेकेटिंग तकनीक (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (c): संवृत्तिशास्त्रीय पद्धति की अनिवार्य विशेषता 'ब्रेकेटिंग' तकनीक है। यह पद्धति हुर्सल के द्वारा दी गयी। इस पद्धति में हम विभिन्न प्रकार के विश्वासों को कुछ समय के लिए ब्रेकेटिंग करना होता है। यह एपोजे के माध्यम से संभव होता है।

54. निम्नलिखित दार्शनिकों में से किसने व्याकरणीय निर्वचन तथा मनोवैज्ञानिक निर्वचन के बीच अंतर किया है?

(a) डेल्थी (b) हाईडेगर
(c) स्क्लेरमैकर (d) गायडामर

Ans. (c) : स्क्लेरमैकर ने व्याकरणीय निर्वचन और मनोवैज्ञानिक निर्वचन के बीच अन्तर किया है। हाईडेगर अस्तित्ववादी निर्वचनशास्त्री है।

55. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और सही मेलित कोड का चयन करें:

सूची - I	सूची - II (प्रमाण)
A. न्याय	i. दो
B. बौद्ध	ii. चार
C. चार्वाक	iii. तीन
D. सांख्य	iv. एक

कोड:

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	iii	ii	iv	i
(c)	iv	i	iii	ii
(d)	i	ii	iii	iv

Ans. (a): न्याय दर्शन चार प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान); बौद्ध दर्शन दो प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान); चार्वाक दर्शन एक (प्रत्यक्ष); सांख्य दर्शन तीन (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द) प्रमाण को मानते हैं।

56. ब्रह्मचर्य निम्नलिखित में से किससे मुक्ति का साधन है?

(a) ऋषिऋण (b) पितृऋण
(c) देवऋण (d) मनुष्यऋण

Ans. (a): ब्रह्मचर्य ऋषिऋण से मुक्ति का साधन है; सन्तानोत्पत्ति पितृऋण से; यज्ञ देवऋण से और अतिथि सत्कार मनुष्य ऋण से मुक्ति का साधन है।

57. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और सही विकल्प का चयन करें:

सूची - I	सूची - II
A. p= p v q	i. मेटेरियल इंप्लीकेशन
B. (p⊃q) = (-q⊃ -p)	ii. टॉटोलॉजी
C. (p⊃q) = (-p v q)	iii. कम्यूटेशन
D. (p V q) = (q V -p)	iv. ट्रांसपोर्टेशन

विकल्प:

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iv	iii
(b)	ii	iv	i	iii
(c)	iii	iv	ii	i
(d)	iv	ii	iii	i

Ans. (b):

(A) p ≡ p vq	ii. टॉटोलॉजी
(B) (p ⊃ q) ≡ (-q⊃-p)	iv. ट्रांसपोर्टेशन
(C) (p ⊃ q) ≡ (-p v q)	i. मेटेरियल इम्प्लीकेशन
(D) (p v q) ≡ (q v p)	iii. कम्यूटेशन

58. निम्नलिखित तर्क की जाँच करें और सही विकल्प बताइए:

तर्क:

p ⊃ (Q V R)
S ⊃ (T. U)
-T
∴ P ⊃ U

विकल्प:

(a) वैध (b) अवैध
(c) उपर्युक्त दोनों (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b): p ⊃ (Q v R)
S ⊃ (T. U)
- T
यह एक अवैध तर्क है।

59. वैशेषिक मत के संदर्भ में समूह - I को समूह - II के साथ सुमुलित करें और नीचे दिए कोड से सही उत्तर का चयन करें:

समूह - I	समूह - II
A. परमाणु	i. विभु
B. आत्मा	ii. निरावयव
C. मानस	iii. महत्
D. घट	iv. अणुपरिमाण

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

कोडः

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	i	iv	iii
(c)	i	iii	ii	iv
(d)	ii	iii	i	i

Ans. (b):
(A) परमाणु — (ii) निरावयव
(B) आत्मा — (i) विभु
(C) मानस — (iv) अणुपरिमाण
(D) घट — (iii) महत्

60. योग सूत्र का प्रथम भाग है

(a) केवल्यपाद (b) साधनापाद
(c) विभूतिपाद (d) समाधिपाद

Ans. (b): पातञ्जल योग-सूत्र के चार पाद है। प्रथम 'समाधिपाद' है जिसमें समाधि के रूप एवं भेदों का और चित्र तथा उसकी वृत्तियों का वर्णन है। द्वितीय साधनापाद, तृतीय विभूतिपाद तथा चतुर्थ कैवल्यपाद है।

61. गुणों में किस प्रकार का परिवर्तन सांख्य मतानुसार विकास क प्रारंभ का कारण होता है?

(a) सरूप परिणाम
(b) विरूप परिणाम
(c) दोनों सरूप तथा विरूप परिणाम
(d) न सरूप तथा न विरूप परिणाम

Ans. (c): गुणों की साम्यावस्था प्रलयकालीन अवस्था है। प्रकृति में जो व्यक्त है उसी का व्यक्त होना सृष्टि है। गुणों में विरूप परिवर्तन सांख्य मतानुसार विकास के प्रारंभ का कारण है। विरूप परिणाम गुणों की साम्यावस्था भंग होने के कारण होता है।

62. न्याय-वैशेषिक के अनुसार द्रव्य-गुण के संबंध का नाम है

(a) संयोग (b) समवाय
(c) तादात्म्य (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b): न्याय-वैशेषिक के अनुसार द्रव्य गुण संबंध को समवाय संबंध कहते हैं। समवाय संबंध दो अयुतसिद्ध पदार्थों के बीच होता है। जिन्हें एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता है। यदि पृथक किया गया तो उनका स्वरूप नष्ट हो जाता है।

63. शंकर के अनुसार 'तत्त्वमसि' जीव तथा ब्रह्म में तादात्म्य स्थापित करता है

(a) अपने मुख्य अर्थ में
(b) अपने गौण अर्थ में
(c) अपने मुख्य तथा गौण अर्थ में
(d) न मुख्य तथा न ही गौण अर्थ में

Ans. (b): शंकर के अनुसार 'तत्त्वमसि' महावाक्य जीव तथा ब्रह्म में तादात्म्य अपने गौण अर्थ में स्थापित करता है। वह (ब्रह्म) 'तत्' 'त्वम' हो।

64. रामानुज के अनुसार जीवात्मा

(a) केवल ज्ञाता है।
(b) ज्ञाता तथा कर्त्ता है।
(c) कर्त्ता तथा भोक्ता है।
(d) ज्ञाता, कर्त्ता तथा भोक्ता है।

Ans. (d): रामानुज के अनुसार जीवात्मा ज्ञाता, कर्त्ता तथा तथा भोक्ता है। जीव अणु है किन्तु उसका ज्ञान विभु है। आत्मा स्वप्रकाशक है परन्तु वह पदार्थों को प्रकाशित नहीं कर सकता। जीव एक नहीं, अनेक है। तथापि वह सवयं द्रव्य है यद्यपि वह ईश्वर का विशेषण, प्रकार या गुण है।

65. नैयायिकों के अनुसार हेतु तथा साध्य में व्यतिरेक व्याप्ति होती है जब

(a) हेतु के सभी उदाहरण साध्याभाव के सभी उदाहरण होते हैं।
(b) हेतु के कुछ उदाहरण साध्य के उदाहरण होते हैं।
(c) साध्य के कुछ उदाहरण हेतु के उदाहरण होते हैं।
(d) साध्यभाव के सभी उदाहरण हेतु के अभाव के उदाहरण होते हैं।

Ans. (d): नैयायिकों के अनुसार हेतु तथा साध्य में व्यतिरेक व्याप्ति होती जब साध्यभाव के सभी उदाहरण हेतु के अभाव के उदाहरण होते हैं। जैसे वृद्धि (कारण) के अभाव में धूम (कार्य) का अभाव।

66. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए कोडों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I	सूची - II
A. तर्कमूलक उपयोगितावाद	i. जी.ई. मूर
B. परिमाणात्मक उपयोगितावा	ii. सिजविक
C. आदर्शमूलक उपयोगितवाद	iii. बेन्थम
D. गुणात्मक उपयोगितवाद	iv. जे.एस. मिल

कोडः

	A	B	C	D
(a)	i	iv	ii	iii
(b)	iii	i	iv	ii
(c)	ii	iv	i	iii
(d)	ii	iii	i	iv

Ans. (d): जी.ई.मूर आदर्श उपयोगितावाद; सिजविक तर्कमूलक उपयोगितावाद; बेन्थम परिमाणात्मक उपयोगितावाद तथा जे.एस.मिल गुणात्मक उपयोगितावाद से संबंधित है।

67. जे.एस. मिल के निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही कोर्ड का चयन करें:

1. जे.एस. मिल का सिद्धान्त परार्थोन्मुख परसुखवाद और गुणात्मक उपयोगितावाद का है।
2. मिल प्रसन्नता तथा सुख का समानार्थी रूप में उपयोग करता है।
3. प्रेम इत्यादि को आंतरिक मूल्य समझते हैं।

कोडः

(a) 1, 2 और 3 सत्य है। (b) 1 और 2 सत्य है।
(c) 1 और 3 सत्य है। (d) केवल 2 सत्य है।

Ans. (b): जे.एस. मिल का सिद्धान्त परार्थोन्मुख परसुखवाद और गुणात्मक उपयोगितावाद का है। मिल प्रसन्नता तथा सुख का समानार्थी रूप में उपयोग करते है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

68. रसेल के दर्शन में, तर्कमूलक परमाणुवाद और सत्य का निम्नलिखित सिद्धान्त साथ-साथ चलते हैं

(a) संवाद सिद्धान्त (b) अर्थक्रियात्मक सिद्धान्त
(c) संसक्तता सिद्धान्त (d) शब्दार्थ विषयक सिद्धान्त

Ans. (a): रसेल के दर्शन में तर्कमूलक परमाणुवाद और सत्य का संवाद सिद्धान्त साथ-साथ चलते हैं। रसेल के तार्किक संवाद सिद्धान्त के अनुसार किसी प्रतिज्ञाप्ति की सत्यता का अर्थ तथ्यों से संवाद है, न कि अनुभव से संवाद।

69. यह किसने कहा है कि, ''जहाँ बोलना संभव नहीं हो वहाँ मौन रहना चाहिए''?

(a) हुस्सर्ल (b) हाइडेगर
(c) विट्गेंस्टीन (d) एयर

Ans. (c): 'ट्रैक्टटेस' में 'जो कहा जा सकता है' तथा जिसे दिखाया जा सकता है यह विचार है। प्रतिज्ञाप्तियों के चित्रण सिद्धान्त में विचार 'जो कहा जा सकता है'- तक ही सीमित है। विट्गेंस्टीन का कहना है कि जिसके विषय में हम कुछ नहीं बोल सकते उसके विषय में मौन ही वांछनीय है। किन्तु उसे दिखाया जा सकता है- प्रदर्शित किया जा सकता है।

70. न्याय के अनुसार चेतना है

(a) आत्म का आगन्तुक गुण (b) आत्म का शाश्वत गुण
(c) शाश्वत पदार्थ (d) अशाश्वत पदार्थ

Ans. (a): न्याय के अनुसार चेतना आत्मा का आगन्तुक गुण है। चैतन्य या ज्ञान आत्मा में तब उत्पन्न होता है जब इसका बाह्य विषयों के साथ सम्पर्क होता है। न्याय दर्शन आत्मा को द्रव्य तो मानता है किन्तु चेतना को उसका आकस्मिक धर्म मानता है। इसके अतिरिक्त न्याय दर्शन आत्मा को एक अभौतिक द्रव्य मानता है।

71. मानवाधिकार की चर्चा के संकल्प सिद्धान्त के संबंध में कौन सा कथन सत्य है?

(a) यह तर्क करता है कि मानवाधिकारों का मुख्य कार्य कुछ अनिवार्य मानव हितों को सुरक्षा करना और उन्हें प्रोन्नत करना है।
(b) यह स्वतंत्रता के लिए अद्वितीय मानव क्षमता पर आधारित मानवाधिकारों की वैधता स्थापित करने की चेष्टा करता है।
(c) उपरोक्त (B) सत्य है और (A) असत्य है।
(d) उपरोक्त (A) और (B) दोनों सत्य है।

Ans. (c): मानवाधिकारों की चर्चा के संकल्प सिद्धान्त में स्वतंत्रता के लिए अद्वितीय मानव क्षमता पर आधारित मानवाधिकारों की वैधता स्थापित करने की चेष्टा करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता है कि मानव के कुछ ऐसे अधिकार है जो छीने नहीं जा सकते। इसलिए संयुक्त राष्ट्र ने 10 दिसम्बर 1948 को 'मानव अधिकार की सार्वभौम घोषणा' के अंगीकार किया।

72. नीचे दिए गये कथनों (A) और (R) पर ध्यान दें और नीचे दिये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

अभिकथन (A) : मानव चेतना कृत्यों के औचित्य और अनौचित्य को किसी उद्देश्य या परिणामों से उसके संबंध पर ध्यान दिए बगैर तुरंत समझ लेती है।

कारण (R) : औचित्य और अनौचित्य कर्मों के अंतर्जात गुण हैं।

कूट:
(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R) (A) की सही व्याख्या है।
(b) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, परन्तु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(c) (A) सत्य है, परन्तु (R) असत्य है।
(d) (A) असत्य है, परन्तु (R) सत्य है।

Ans. (a): अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य है और (R); (A) की सही व्याख्या है।

73. हाइडेगर के अनुसार, शास्त्रार्थमीमांसा चक्र निम्नलिखित से संबंधित है:

(a) मूल ग्रंथ और उसके भागों /अंशों के बीच परस्परता
(b) मूल ग्रंथ और अर्थ के बीच परस्परता
(c) अर्थ और संदर्भ के बीच परस्परता
(d) स्व की समझ और जगत की समझ के बीच परस्परता

Ans. (d): हाइडेगर के अनुसार शास्त्रार्थमीमांसा चक्र स्व की समझ और जगत की समझ के बीच परस्परता से संबंधित है। मार्टिन हाइडेगर एक दार्शनिक शास्त्रमीमांसक है जो जर्मनी से संबंधित है।

74. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिए कोडों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची-I (नाम)	सूची-II (सम्प्रदाय)
A. मोक्ष	i. वेदान्त
B. निर्वाण	ii. सांख्य
C. अपवर्ग	iii. न्याय
D. कैवल्य	v. बौद्धधर्म
	v. जैन

कोड:

	A	B	C	D
(a)	i	iv	iii	v
(b)	ii	v	iv	i
(c)	iii	ii	i	iv
(d)	v	ii	iii	iv

Ans. (a): वेदान्त में मोक्ष; न्याय में अपवर्ग; बौद्धधर्म में निर्वाण; जैन और सांख्य में कैवल्य कहा जाता है।

75. संशयवाद है

(a) ह्यूम के दर्शन का प्रारंभ बिंदु
(b) ह्यूम के दर्शन का निष्कर्ष
(c) उपर्युक्त दोनों
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b): ह्यूम के दर्शन का अन्तिम निष्कर्ष 'संशयवाद' है। ह्यूम अनुभववाद से शुरू करता है और उसका अन्त संशयवाद पर होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2013
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. कर्म के वे फल जो अभी फलित होने शुरू नहीं हुए हैं, वे कहलाते हैं

(a) संचित कर्म (b) संचीयमान कर्म
(c) प्रारब्ध कर्म (d) अनारब्ध कर्म

Ans : (a) ऐसी मान्यता है कि कर्म के अनुरूप ही उसका फल मिलता है। भारतीय कर्मफल नियम के अनुसार अच्छे कर्म का अच्छा और बुरे कर्म का बुरा फल मिलता है। को तीन प्रकार का माना गया है- क्रियामाण कर्म, प्रारब्ध कर्म, तथा संचित कर्म। क्रियामाण कर्म या संचीयमान कर्म वो कर्म है जिन्हे व्यक्ति वर्तमान में करता है और भविष्य में प्रारब्ध एवं संचित कर्म बनते है। **प्रारब्ध कर्म** वह कर्मशक्ति है जो अतीत में सम्पादित कर्मों से उत्पन्न होती है और जिसका फल मिलना शुरू हो जाता है। **संचित कर्म , वह कर्मशक्ति या कर्म के फल जो अभी फलित होने शुरू नहीं हुए है।** हालांकि आयोग ने विकल्प (d) माना है जो कि गलत है।

2. देवऋण से उऋण हो सकते हैं

(a) यज्ञ करने से
(b) पुत्र को जन्म देने से
(c) (a) और (b) दोनों से
(d) (a) और (b) किसी से भी नहीं

Ans : (a) भारतीय नीतिशास्त्र में विभिन्न प्रकार के ऋण जो मानव पर जन्म के समय से रहते है बताएं गये है जिनमें - पितृऋण, ऋषि ऋण, और देव ऋण प्रमुख है। पुत्र को जन्म देकर वंशवृद्धि करने से पितृऋण, ब्रह्मचर्य पालन और अध्यापन कर ऋषि ऋण तथा यज्ञ करने से देव-ऋण से मुक्ति मिलती है।

3. निम्नलिखित में से सही क्रम का चयन कीजिए:

(a) जागृत, सुसुप्ति, स्वप्न
(b) जागृत, स्वप्न, सुसुप्ति
(c) स्वप्न, सुसुप्ति, जागृत
(d) सुसुप्ति, जागृत, स्वप्न

Ans : (b) माण्डूक्योपनिषद में जीव (आत्मा) की चार अवस्था का विशद् वर्णन मिलता है जो क्रमशः जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्त तथा तुरीय अवस्था का वर्णन मिलता है जो क्रमशः वैश्वानर, तेजस, प्राज्ञ तथा ब्रह्म स्वरूप में होती है तुरीय को लेकर आत्मा को चतुष्पात कहा गया है।

(भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण - संगम लाला पण्डेय)

4. प्रभाकर और भट्ट का निम्नलिखित में से किस पर मतभेद है?

(a) प्रमाण, प्रमेय, धर्म
(b) प्रमाण, प्रमेय, ख्याति
(c) प्रमेय, ख्याति, धर्म
(d) प्रमाण, धर्म, ख्याति

Ans : (b) प्रभाकर और भाट्ट मीमांसकों में प्रमाण, प्रमेय और ख्याति पर मतभेद है। प्रभाकर जहां प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान और अर्थापति को मिलाकर पांच प्रमाण मानते हैं वहीं कुमारिल भट्ट अनुपलब्धि को उपर्युक्त प्रमाणों में जोड़कर छः प्रमाण मानते है। प्रमेय के विषय में प्रभाकर आठ पदार्थो को मानते है- गुण, कर्म, सामान्य, समवाय, शक्ति, सादृश्य, संख्या वहीं कुमारिल पांच पदार्थों को द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य और आभाव को मानते है। 'ख्याति' के सम्बन्ध में प्रभाकर का मत 'अख्यातिवाद' तथा कुमारिल का मत 'विपरीत ख्यातिवाद' कहलाता है।

5. सूची - I के साथ सूची - II को सुमेलित कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए:

सूची I	सूची II
(A) अपोहवाद	(i) बौद्ध
(B) अंविताविधानवाद	(ii) न्याय
(C) अभिहितान्वयवाद	(iii) प्रभाकर
(D) अन्यथा ख्यातिवाद	(iv) भट्ट

कूट:

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(b)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(c)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(d)	(ii)	(iv)	(iii)	(ii)

Ans : (a)

अपोहवाद - बौद्ध
अंविताविधानवाद - प्रभाकर
अभिहितान्वयवाद - भट्ट
अन्यथा ख्यातिवाद - न्याय

6. आत्मा के अमरत्व के निषेध का सिद्धांत किसका है?

(a) पायथागोरस
(b) डेमोक्रीटस
(c) संत ऑगस्टाइन
(d) संत एन्सेल्म

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : ( ) यह प्रश्न संदिग्ध माना गया हैं।
पायथागोरस, संत ऑगस्टाइन और संत अन्सेल्म स्पष्ट रूप से आत्मा के अमरत्व की बात करते है। हालांकि परमाणुवादी आत्मा के पुनर्जन्म या आवागमन सिद्धान्त को असंभव मानते है। डेमॉक्टिस भी ग्रीक परमाणुवादी है जो मानता है कि मृत्यु के बाद आत्मा के परमाणु बिखर जाते है।
(पाश्चात्य दर्शन का द्भव और विकास : डॉ हरिशंकर उपाध्याय)

7. प्लेटो के अनुसार दर्शनशास्त्र है
(a) जीवन के लिए तैयारी
(b) अच्छे जीवन के लिए तैयारी
(c) मृत्यु के लिए तैयारी
(d) शांतिपूर्ण मृत्यु के लिए तैयारी

Ans : (c) प्लेटो के अनुसार 'दर्शनशास्त्र मृत्यु के लिए तैयारी है।

8. निम्नलिखित में से कौन सा सत्कार्यवाद का रूप है?
(a) पारिणामवाद
(b) स्याद्वाद
(c) अनेकान्तवाद
(d) इनमें से कोई नहीं

Ans : (a) सत्कार्यवाद वह सिद्धान्त है जिसमें 'कार्य' को उत्पत्तिपूर्व कारण में पहले से विद्यमान माना जाता है। भारतीय दर्शन में सत्कार्यवाद के दो रूप प्राप्त होते है - परिणामवाद और विवर्तवाद। सांख्य-योग और रामानुज का विशिष्ट द्वैत दर्शन परिणामवाद को और अद्वैत वेदान्त, महायान बौद्ध विवर्तवाद को मानते है।

9. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए:

सूची I	सूची II
(A) अन्याय	(i) सोलह पदार्थ
(B) वैशेषिक	(ii) सात पदार्थ
(C) प्रभाकर	(iii) आठ पदार्थ
(D) भट्ट	(iv) छः पदार्थ

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(c)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

Ans : (a) न्याय सोलह पदार्थों को, वैशेषिक स्यत पदार्थो को, प्रभाकर आठ पदार्थों को, तथा भट्ट छः पदार्थो को मानते है।

10. निम्नलिखित में से कौन सा समूह निरीश्वरवादी दार्शनिकों का है?
(a) बौद्ध, जैन, न्याय
(b) बौद्ध, महायान, न्याय
(c) पूर्व-मीमांसा, जैन-सर्वास्तिवाद
(d) सर्वास्तिवाद, महायान, अद्वैत वेदांत

Ans : (c) निरीश्वरवादी दार्शनिकों का समूह-पूर्व-मीमांसा, जैन, सर्वास्तिवाद। भारतीय दर्शन में निरीश्वरवादी दर्शन में चार्वाक, बौद्ध तथा जैन के साथ-साथ सांख्य एवं मीमांसा को रखा जाता है। वहीं ईश्वरवादी दर्शन में न्याय, वैशेषिक, योग, वेदान्त दर्शन को रखा जाता है।

11. निम्नलिखित सिद्धांतों का सही क्रम है:
(a) शून्यवाद, अजातिवाद, अद्वैतवाद, द्वैतवाद
(b) अजातिवाद, शून्यवाद, द्वैतवाद, अद्वैतवाद
(c) शून्यवाद, अद्वैतवाद, द्वैतवाद, अजातिवाद
(d) अद्वैतवाद, अजातिवाद, द्वैतवाद, शून्यवाद

Ans : ( ) यह प्रश्न संदिग्ध माना गया है।

12. चर्वाक द्वारा निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प अपनाया गया है?
(a) क्षिति, अप, तेज, आकाश
(b) सुखवाद, प्रत्यक्षप्रमाणवाद, तेज, आत्मा
(c) सुखवाद, देहात्मवाद, अप, तेज
(d) अप, तेज, मरुत, व्योम

Ans : (c) चार्वाक दर्शन एक भौतिकवादी दर्शन है जिसमें चार भूतों क्षिति (पृथ्वी), अप (जल), तेज और समीर (वायु) को माना गया है। शरीर के बिना आत्मा का अस्तितत्व नहीं माना गया है अर्थात् देहात्मवाद को माना गया है तथा 'सुख' को चरम लक्ष्य माना गया है। अतः सुखवाद, देहात्मवाद, अप, तजे को माना गया है।

13. जैन मत के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा अस्तिकाय द्रव्य नहीं है?
(a) जीव
(b) आकाश
(c) काल
(d) धर्म

Ans : (c) जैन दर्शन में द्रव्य के दो भेद माने गये है- अस्तिकाय और अनस्तिकाय। अस्तिकाय द्रव्य पांच हैं- जीव, पुद्‌गल, आकाश, धर्म और अधर्म। जबकि काल को एकमात्रा अनास्तिकाय तथा एक प्रदेशव्यायी द्रव्य माना गया है।
(भारतीय दर्शनः आलोचन और अनुशीलन - चन्द्रधर शर्मा)

14. द्वयगुक का असमवायिकारण क्या है?
(a) परमाणु
(b) परमाणुसंयोग
(c) द्वयणुक
(d) द्वयणुक-संयोग

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (b) असमवायिकारण समवायिकारण (उपादानकारण) में समवाय सम्बन्ध से रहते हुए कार्योत्पत्ति में सहायक होने से कारण कहा जाता हैं यह सदा गुण या कर्म होता हैं परमाणु संयोग जो परमाणुओं में (समवायिकारण में) समवाय सम्बन्ध में रहता है द्वयगुक का असमवयिकारण हैं।

15. 'अभिकथन' और 'तर्क' पर विचार कीजिए और मध्व दर्शन के संदर्भ में निम्नलिखित विकल्पों का मूल्यांकन कीजिए:

अभिकथन (A) : प्रकृति, जीव और ईश्वर एक दूसरे से स्वतंत्र हैं।

तर्क (R) : ये लौकिक हैं।

कूट:

(a) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही सही व्याख्या है।

(b) (A) और (R) दोनों असत्य हैं, और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(c) (A) सत्य हैं, और (R) असत्य है और (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(d) (A) असत्य है और (R) सत्य हैं। और (R), (A) की सही व्याख्या है।

Ans : (c) मध्व दर्शन में प्रकृति, जीव और ईश्वर को एक दूसरे से स्वतंत्र माना गया है। मध्वाचार्य के अनुसार ईश्वर, जीव एवं प्रकृति ये परस्पर भिन्न तत्व हैं और अपनी - अपनी स्वतंत्रत सत्ता रखते हैं। उनके अनुसार ईश्वर, जीव, एवं प्रकृति की अन्तिम एवं पारमर्थिक सत्ता है। अतः अभिकथन (A) सत्य है परन्तु तर्क (R) गलत है और सही व्याख्या नहीं है।

16. प्रत्येक प्रतिज्ञप्ति पर शंका करने के लिए देकार्त द्वारा प्रयुक्त ऊहा (अटकलों) के संभावित प्रकार हो सकते हैं:

(a) स्वप्न संबंधी अटकलें और ईश्वर

(b) दुःख स्वप्न अटकलें और पावन भूत (आत्मा)

(c) स्वप्न अटकलें और अशुभ शैतान संबंधी अटकल

(d) ईश्वर और पावन भूत अटकल

Ans : (c) डेकार्ट अपने 'संशयवादी पद्धति' के अन्तर्गत सभी प्रकार के प्रतिज्ञपितयों पर संशय करता है। वह स्वप्न और ईश्वर तक पर संशय करता है उसके द्वारा प्रयुक्त ऊहा (अटकलों) के संभावित प्रकार स्वप्न अटकलें और अशुभ शैतान संबंधी अटकलें है।

17. निम्नलिखित में से अष्टांगिक-योग का सही क्रम कौन सा है?

(a) यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि

(b) यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि

(c) यम, नियम आसन, प्रत्याहार, प्रणायाम, ध्यान, धारणा, समाधि

(d) नियम, यम, आसन, प्रत्याहार, प्राणायाम, धारणा, ध्यान, समाधि

Ans : (b) योग दर्शन मोक्ष-मांग के रूप में अष्टंगिक योग का मार्ग बताया गया है जिसका सही क्रम - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान समाधि है।

18. निम्नलिखित में से किस धर्म-ग्रंथ में कर्म, अकर्म, और विकर्म पर विचार किया गया है?

(a) मनुस्मृति

(b) श्रीमद् विष्णुपुराण

(c) भगवद्गीता

(d) श्री नारदपुराण

Ans : (c) भगवद्गीता में कर्म, अकर्म, विकर्म, पर विचार किया गया है। जहां तक विकर्म का प्रश्न है वह तो निषिद्ध कर्म है, झूठ बोलना, चोरी करना, आदि। कर्म और अकर्म के सम्बन्ध में गीता (4/18) में कहा गया है जो व्यक्ति कर्म में अकर्म तथा अकर्म में कर्म देखता है वह मनुष्यों में बुद्धिमान है और वह योगी अपने सभी करने योग्य कर्मों की कर लेने वाला होता है।

19. स्पिनोज़ा के अनुसार ईश्वर है:

(a) मात्र विश्वातीत

(b) मात्र अनुस्यूत

(c) अनुस्यूत तथा विश्वातीत दोनों

(d) अनस्तित्ववान

Ans : (c) स्पिनोजा का प्रसिद्ध कथन है 'सब ईश्वर है' और 'ईश्वर सब है'। उसके अनुसार ईश्वर अनुस्युत तथा विश्वातीत दोनों हैं उनका ईश्वर में विश्वास सर्वेश्वरवाद' कहलाता हैं वह एक सर्वेश्वरवादी दार्शनिक हैं।

20. सही युग्म का चयन कीजिए:

(a) अध्यास और अध्यवसाय

(b) अविद्या और पराविद्या

(c) मूलाविद्या और तूलाविद्या

(d) माया और संस्कार

Ans : (c) सही युग्म- मूलाविद्या और तूलाविद्या है शंकराचार्य के अनुसार मूलाविद्या व्यक्तिगत भ्रम की अवस्था है जबकि तुलाविद्या सामुहिक भ्रम की अवस्था है इसे स्पिनोजा नेचुरल्स एवं नेचुराल्स कहता है।

21. सी.एस. पर्स, विलियम जेम्स और जॉन ड्यूई जैसे व्यावहारिकतावादियों के अनुसार सत्य है

(a) सदैव परिवर्तनशील, यह समय और स्थान तथा प्रयोजन के सापेक्ष।

(b) स्थिर और समय और स्थान तथा प्रयोजन के सापेक्ष।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) सदैव परिवर्तनशील, लकिन समय और स्थान तथा प्रयोजन के सापेक्ष नहीं
(d) कभी परिवर्तनशील और कभी स्थिर

Ans : (a) सी. ए. पर्स., विलियम जेम्स तथा जॉन ड्यूई अर्थक्रियात्वादी (व्यावहारिकतावादी) दार्शनिक हैं। जिनके अनुसार सत्य सदैव परिवर्तनशील, यह समय और स्थान तथा प्रयोजन के सापेक्षा है इनका सिद्धान्त सत्य का आर्थक्रियावादी सिद्धन्त है।

22. निम्नलिखित में से कौन सा गुणाष्टक का भाग नहीं है ?
(a) ऐश्वर्य
(b) तेज
(c) अभिहित संकल्पत्व
(d) तीर्य

Ans : (c) अभिहित संकल्पत्व गुणाष्टक का भाग नहीं हैं।

23. निम्नलिखित में से किसने आत्मा स्वतन्त्र्य की संकल्पना का पतिपादन किया है?
(a) के. सी. भट्टाचार्य
(b) एम.एन. रॉय
(c) ए. के. कुमारस्वामी
(d) एस. राधाकृष्णन्

Ans : (a) के.सी. भट्टाचार्य आत्म स्वातन्त्र्य की संकल्पना' का प्रतिपादन करते है। कोट के नैतिकता एवं स्वतंत्रता विचार की विवेचना करते हुए के. सी. भट्टाचार्य ने दो प्रकार की 'स्वतंत्रता का उल्लेख किया है- संकल्पनात्मक स्वतंत्रता तथा तात्विक स्वतंत्रता और यह अभी कहा कि अनुभूति की प्रक्रिया पहले प्रकार्य की स्वतंत्रता से होकर दूसरे प्रकार की स्वतंत्रता तक के विकास की क्रमिक प्रक्रिया है।

(समकालीन भारतीय दर्शन- बसन्त कुमार लाल)

24. डॉ. एस. राधाकृष्णन् के अनुसार बौद्धिक ज्ञान निम्नलिखित में से किससे प्राप्त किया जा सकता है?
(a) कल्पना और संवेदना
(b) विश्लेषण और संश्लेषण
(c) संश्लेषण और अपाकर्षण
(d) कल्पना और अपाकर्षण

Ans : (b) डॉ. एस. राधाकृष्णन के अनुसार बौद्धिक ज्ञान विश्लेषण और संश्लेषण से प्राप्त किया जा सकता है। उनके अनुसार बौद्धिक विचार मन का व्यापार है। उनके अनुसार ज्ञानोपार्जन के तीन ढंग सम्भव है - इन्द्रिय- अनुभव, बौद्विक अवगति तथा अनृदृष्टि। सत् के ज्ञान के लिए 'अन्तदृष्टि' ही उपर्युक्त है।

25. 'अतिमन' की संकल्पना निम्नलिखित में से किस दार्शनिक से संबद्ध है?
(a) डॉ. एस. राधाकृष्णन्
(b) डॉ. टी. एम. पी. महादेवन्
(c) श्री अरबिन्द
(d) डॉ. के. सी. भट्टाचार्य

Ans : (c) 'अतिमन' की संकल्पना श्री अरविन्द के दर्शन में मिलता है। श्री अरविन्द अपने विकासवादी दर्शन के अनुसार सत् के आठ स्तर है प्रथम चार स्तर - शुद्ध अत्, चित्त-शक्ति आनन्द एवं आतिमानस उच्चतर गोलार्द्ध में तथा अन्तिम चार-मानव, मन, प्राण, जड़तत्व निम्नतर गोलार्द्ध में है। विकास प्रक्रिया सत्ता निम्नतर गोलार्द्ध में व्यक्त हो चुकी हैं अब यह उच्चतर गोलार्द्ध अतिमानस के रूप में विकसित होगी।

26. 'कॉमेंटरीज ऑन लिविंग' नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं?
(a) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर
(b) श्री जे. कृष्णमूर्ति
(c) एम. एन. रॉय
(d) श्री के. सी. भट्टाचार्य

Ans : (b) 'कॉमेंटरीज ऑन लिंविगं' फ्रीडम फ्रॉम द नोन, द बुक ऑफ लाइफ द फर्स्ट एण्ड लास्ट फ्रीडम आदि पुस्तके श्री जे. कृष्णमूर्ति की है।

27. निम्नलिखित में से किसने रामकृष्ण मठ और मिशन का अग्रणी संस्थापक माना जाता है?
(a) श्री रामकृष्ण परमहंस
(b) श्री रमण महर्षि
(c) स्वामी विवेकानंद
(d) श्री रंगनाथानंद महाराज

Ans : (c) रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्यों में से एक स्वामी विवेकानन्द को रामकृष्ण मठ और मिशन के अग्रणी संस्थापक माना जाता हैं उन्होंने कलकत्ता के निकट बेलमेर में स्वामी रामकृष्ण आश्रम की स्थापना की।

28. 'दर्शन' शब्द से तात्पर्य है
(a) ईश्वर के लिए प्रेम
(b) मानव मात्र के लिए प्रेम
(c) जीवन का प्रेम
(d) ज्ञान के लिए प्रेम

Ans : (d) 'अंग्रेजी में 'दर्शन' शब्द 'फिलॉसॉफी' से बना है।' 'फिल' तथा 'सोफिया' से बना है शब्द का अर्थ 'ज्ञान के लिए प्रेम' है।

29. प्लेटों और अरस्तू दोनों के अनुसार ज्ञान का संबंध होना चाहिए
(a) आकार से नहीं भौतिक द्रव्य से
(b) भौतिक द्रव्य और आकार दोनों से
(c) न तो भौतिक द्रव्य से ही आकार से
(d) भौतिक द्रव्य से नहीं आकार से।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) प्लेटो और अरस्तू दोनों के अनुसार ज्ञान का संबंध भौतिक द्रव्य से नहीं आकार से है। प्लेटो अपने आकार को प्रत्यय कहते हैं जिनका ज्ञान बुद्धि के द्वारा होता है ज्ञान का विषय शाश्वत और अनिवार्य सत्ता है।

30. क्या यह संभव है कि दो चिदगुओं में सभी गुण एक समान हों?

(a) हाँ
(b) संभवतः
(c) कुछ अपवादपूर्ण मामलों में
(d) नहीं

Ans : (d) लाइबनित्ज का दर्शन 'चिदगुवाद' कहलाता है। लाइबनित्ज के 'चिदगु' सजातीय है परन्तु उनकी अपनी विशिष्टता हैं प्रत्येक चिदगु की अलग पहचान हैं कोई भी दो चिदणु एक नहीं हैं। 'अदृश्यों के अभेद' नियम को स्वीकार करता है। अतः लाइबनित्ज के चिदगुणुओं में सभी गुण एक समान नहीं है।

31. निम्नलिखित में से कौन सी प्लेटोवाद और अरस्तूवाद की स्थायी विरासत है?

(a) वैश्विक दृष्टिकोण
(b) सप्रयोजन दृष्टिकोण
(c) अन्वेषणपूर्ण दृष्टिकोण
(d) अनौपचारिक दृष्टिकोण

Ans : (b) प्लेटोवाद और अरस्तूवाद विचारधारा सप्रयोजन दृष्टिकोण की मानते है। जहां प्लेटो अपने प्रत्ययों के अस्तित्व सिद्धि के लिए सप्रयोजनवादी दृष्टि अपनाता है वहीं अरस्तु विकास की प्रयोजन मानते है। इनके अनुयायियों ने भी श्रृष्टि की प्रयोजनमूलक मानकर ईश्वर की सत्ता की सिद्ध करने का प्रयास किया है।

32. अरस्तू के अनुसार ईश्वर है

(a) स्थिर, शाश्वत, परिपूर्ण, अमूर्त और विशुद्ध वास्तविकता
(b) स्थिर, शाश्वत, परिपूर्ण, अमूर्त और विशुद्ध क्षमता
(c) स्थिर, शाश्वत, परिपूर्ण, मूर्त और विशुद्ध क्षमता
(d) स्थिर, शाश्वत, परिपूर्ण, मूर्त और विशुद्ध वास्तविकता

Ans : (a) अरस्तू का ईश्वर एक निरपेक्ष (पूर्ण) आकार है। अरस्तू के अनुसार ईश्वर स्थिर (अचल), शाश्वत, परिपूर्ण, अमूर्त, विशुद्ध वास्तविकता हैं अरस्तु के अनुसार ईश्वर 'अचालित चालक' है। अरस्तु का ईश्वर शुद्ध विचार या विचार ही विचार है।

33. ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में सत्तामूलक प्रमाण का प्रतिपदन निम्नलिखित में से किसने किया है?

(a) संत एनसेल्म और रामानुज
(b) संत थॉमस एक्विनस और मध्व
(c) संत थॉमस एक्विनस और पतंजलि
(d) संत एनसेलम् और पतंजलि

Ans : (d) ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में सत्तामूलक प्रमाण का प्रतिपादन संत अन्सेलम ने और पतंजलि ने दिया हैं संत अन्सेलन को प्रत्यय सत्तामूलक पुस्तिका प्रवर्तक माना जाता हैं। संत अन्सेलम की युक्ति ईश्वर के जन्मजात प्रत्यय पर आधारित है। जबकि

34. बर्कले के अनुसार

(a) प्रत्ययों का अस्तित्व है, लेकिन मन का नहीं।
(b) मन का अस्तित्व है, लेकिन प्रत्ययों का नहीं।
(c) प्रत्ययों और मन दोनों का अस्तित्व है।
(d) प्रत्यय या मन किसी का भी अस्तित्व नहीं है।

Ans : (c) बर्कले के अनुसार प्रत्यय और मन दोनों का अस्तित्व हैं बर्कले प्रत्ययों के सम्बन्ध में लॉक द्वारा मान्य बाह्य जगत की सत्ता का खण्डन करते है। बर्कले के अनुसार आत्मा (मन) और प्रत्यय (ज्ञेय) के अतिरिक्त कोई जड़वस्तु सत् नहीं है। उनके अनुसार जो अनुभव का विषय है वही सत् है और अनुभव का विषय प्रत्यय है। इन प्रत्ययों को अनुभावकर्त्ता मन (आत्मा) है।

35. आगमन के युक्तियुक्त आधार को किसने चुनौति दी थी?

(a) देकार्त
(b) प्लेटो
(c) कांट
(d) ह्यूम

Ans : (d) ह्यूम ने अपने अनुभववादी दर्शन में सभी प्रकार के ज्ञानों पर संशय किया। वह कारण-कर्म संबंध पर भी संशय करते हैं इसी कड़ी में वह आगमन से प्राप्त निष्कर्षों पर भी संशय करते है। उनके अनुसार, आगमन से प्राप्त निष्कर्षों पर मनोवैज्ञानिक रूप से विश्वास तो किया जा सकता है परन्तु तार्किक रूप से नहीं। इसे दर्शन जगत में आगमन की समस्या के नाम से जानते है।

36. लाइब्नित्ज के अनुसुार

(a) पर्याय के चार प्रकार है।
(b) पर्याय के तीन प्रकार हैं।
(c) पर्याय के दो प्रकार हैं।
(d) पर्याय के पाँच प्रकार हैं।

Ans : ( ) लाइबनित्ज, चिदगुवाद के प्रणेता है जबकि स्पिनोजा पर्यायों का सिद्धान्त देते हैं स्पिनोजा के अनुसार, विकार द्रव्य की परिवर्तित आकृतियां है। विकार वह हैं जो दूसरों पर आश्रित होता है और उसके द्वारा समझा भी जाता है।

37. हेगल के अनुसार बुद्धि है

(a) ब्रह्माण्ड का द्रव्य, लेकिन इसकी अनंत ऊर्जा नहीं।
(b) ब्रह्माण्ड की अनंत ऊर्जा, लेकिन इसका द्रव्य नहीं।
(c) ब्रह्माण्ड की एकमात्र अनंत ऊर्जा।
(d) ब्रह्माण्ड का द्रव्य और अनंत ऊर्जा।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) हेगल के अनुसार 'बुद्धि' ब्रह्माण्ड का द्रव्य और अनन्त ऊर्जा हैं हेगल के दर्शन में 'बुद्धि' के नियामक होने के साथ-साथ उपादानात्मक भी है।

38. लॉक की मान्यता है कि द्रव्य की अवधारणा है

(a) सरल प्रत्यय
(b) जटिल प्रत्यय
(c) विशिष्टि प्रत्यय
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans : (b) लॉक की मान्तयता है कि द्रव्य की अवधारणा जटिल प्रत्ययों से बनती हैं द्रव्य कि जटिल प्रत्यय स्वतंत्र वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करने वाले सरल प्रत्ययों के सम्मिश्रण से बनते है। द्रव्य गुणों के जटिल प्रत्यया से बनता है जो विशेष वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करता है।

39. कांट के अनुसार नैतिक कर्तव्य है

(a) ईश्वरीय आदेश
(b) विशुद्ध तर्क का आदेश
(c) बहुमत से निधारित
(d) किसी के अंतःज्ञान द्वारा निर्दिष्ट

Ans : (b) काण्ट के अनुसार नैतिक कर्त्तव्य विशुद्ध तर्क (शुद्ध बुद्धि) का आदेश हैं काण्ट के दर्शन में 'आदेश' (Imperative) की परिभाषा यह है ''जो विषयगत सिद्धान्त किसी इच्छा के लिए आवश्यक कर्त्तव्य हो उसका प्रत्यय बुद्धि की आज्ञा है और इस आज्ञा का सूत्र आदेश हैं।''

(नीतिशब्द का सर्वेक्षण- संगमलाल पाण्डेय)

40. ''समाज का अस्तित्व समाज के लिए नहीं''। लेकिन ''उस व्यक्ति के लिए हैं, जो अपने उच्च कार्य में बढ़ना चाहता है और सत्ता के उच्च स्तर को प्राप्त करना चाहता है।'', यह कथन निम्नलिखित में से किसका है?

(a) हेगल
(b) नीत्शे
(c) श्री अरबिन्द
(d) मार्क्स

Ans : (b) नीत्शे के अनुसार 'समाज का अस्तित्व समाज के लिए नहीं लेकिन ''उस व्यक्ति के लिए है, जो अपने उच्च कार्य को बढ़ाना चाहता है और सत्ता के उच्च स्तर को प्राप्त करना चाहता है नीत्शे का दर्शन व्यक्तिकेन्दिर मूल्यवाद है जो एक तरह का अतिमानववाद है।

41. रसेल के आणविक तथ्य हैं

(a) आणिविक भौतिक के तथ्य
(b) इंद्रिय प्रदत्त
(c) तार्किक स्थान के तथ्य
(d) आणविक संवाक्य के तत्व

Ans : (b) रसेल के आणविक तथ्य' इन्द्रिय प्रदत्त (Sense Data) है सबसे सरल - अविभाज्य, तथा, जिसे और छोटा नहीं किया जा सके जिसके अंगों के विषय में सोचा न जा सके, उनके लिए 'आण्विक तथ्य' का व्यवहार रसेल के दर्शन में मिलता है इन्हे सरल तथ्य' भी कहा है।

42. हुसर्ल निम्नलिखित में से किसका समर्थक है?

(a) निरपेक्ष प्रत्ययवाद
(b) निरपेक्ष व्यवहारवाद
(c) अतीन्द्रिय प्रत्ययवाद
(d) अतीन्द्रिय बुद्धिवाद

Ans : (c) हुसर्ल अतीन्द्रिय प्रत्ययवाद का समर्थन करता है। हुसर्ल को यह स्वीकार्य है कि उनकी फेनोमेनोलॉजी की विधि अन्ततः एक अतीन्द्रिय (अनुभवातीत) आत्मनिष्ठता तक की जाती है। जिसका एक विवरण 'प्रत्यावाद' के रूप में करते है।

43. निम्नलिखित में से हाइडेगर ने डाज़ाइन के गुणों को किस में प्रकट किया है?

(a) सत्ता की प्रभावी एकान्तता
(b) स्वयं - सत्
(c) आस - पास के लोगों और वस्तुओं से प्रभावी संबंध
(d) स्वयं के लिए सत्

Ans : ( ) हाइडेगर मानव अस्तित्व (Dasein) के गुणों को आस-पास लोगों और वस्तुओं से प्रभवी संबंध के रूप में प्रकट किया है। हाइडेगर के अस्तित्व विश्लेषण के दो ढंगों की बात से ontical और दूसरा ontological

44. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए और प्रदत्त कूट से उत्तर का चयन कीजिएः

सूची I	सूची II
(A) मशीन में भूत	(i) जी.ई. मूर
(B) तत्वशास्त्र का निरसन	(ii) ऑस्टिन
(C) समान्य बुद्धि की रक्षा	(iii) ए.जे. एअर
(D) वाक् क्रिया	(iv) गिल्बर्ट राइल

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(b)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(c)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(d)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)

Ans : (d) गिल्बर्ट राइल का मशीन में भूत, ए.जे. एयर का तत्त्वमीमांसा का मिरसन, जी.ई. मूर का सामान्य बुद्धि की रक्षा, तथा ऑस्टिन का वाक्क्रिया।

45. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए और प्रदत्त कूट से उत्तर का चयन कीजिएः

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

सूची I		सूची II	
(A)	प्लेटो	(i)	क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन
(B)	कांट	(ii)	फाउंडेशन ऑफ इम्पीरियल नॉलेज
(C)	विट्गेन्सटाइन	(iii)	रिपब्लिक
(D)	एअर	(iv)	फिलोसोफिकल इन्वेस्टिगेशन

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(b)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(c)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

Ans : (b) प्लेटो द्वारा 'रिपब्लिक'; काण्ट द्वारा क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन' विट्गेन्सटाइन द्वारा 'फिलोसोफिकल इन्वेस्टिगेशन'; एअर के द्वारा फाउंडेशन ऑफ इम्पीरियल नॉलेज का लेखन किया गया है।

46. सूची - I को सूची - II से सुमेलित कीजिए और प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची I		सूची II	
(A)	रिलीजन ऑफ मैन	(i)	श्री अरबिन्दो
(B)	फ्रीडम फ्रॉम द नोन	(ii)	श्री आर. टैगोर
(C)	ईस्टर्न रिलीजन एण्ड वेस्टर्न थॉट	(iii)	श्री. जे. कृष्णमूर्ति
(D)	द लाइफ डिवाइन	(iv)	एस. राधाकृष्णन्

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(b)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(c)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(d)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

Ans : (d) श्री आर. टैगोर द्वारा 'रिलीजन ऑफ मैन'; श्री. जे. कृष्णमूर्ति द्वारा 'फ्रीडम फ्रॉम द नोन'; एस. राधाकृष्णन् द्वारा 'ईस्टर्न रिलीजन एण्ड वेस्टर्न थॉट' तथा श्री अरबिन्दो द्वार 'द लाइफ डिवाइन' नामक लिखी गई है।

47. लाइब्नित्ज़ चिदणु को परिभाषित करते हैं

(a) भौतिक द्रव्य जैसा
(b) मानसिक द्रव्य जैसा
(c) ऊर्जा के केन्द्र जैसा
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) लाइबनित्ज चिदणुओं को सम्बन्ध 'ऊर्जा (शक्ति) संरक्षण के नियम' में विश्वास करता है। लाइबनित्ज चिद्णुओं को ऊर्जा के केन्द्र जैसा परिभाषिद करता है। उसके अनुसार चिद्णुओं की ऊर्जा का योग सदैव एक बना रहता है।

48. समसामायिक समय में भारत में नव-बुद्धिष्ट विचारों की दृष्टि से निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?

(a) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, महात्मा गांधी, डॉ. एस. राधाकृष्णन्
(b) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, लोकमान्य तिलक, श्री एम. जी. रानाडे
(c) डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, श्री डी.डी, कोसाम्बी, डॉ, राहुल सांकृत्यायन
(d) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, श्री जे. कृष्णमूर्ति श्री दलाई लामा

Ans : (c) समसामयिक समय में भारत में नवबुद्धिष्ट विचारको का युग्म- डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, श्री डी. डी. कोसाम्बी, डॉ राहुल सांकृत्यायन आदि है।

49. जी. ई. मूर के अनुसार जब कभी दार्शनिक सिद्धांत और सामान्य बुद्धि के बीच टकराव होता है तो इस बात की अधिक संभावना होती है कि

(a) दार्शनिक सिद्धांतों की तुलना में सामान्य बुद्धि भटक जाती है।
(b) सामान्य बुद्धि की तुलना में तर्क भटक जाता है।
(c) तर्क और सामान्य बुद्धि दोनों भटक जाते है।
(d) तर्क और सामान्य बुद्धि में से कोई नहीं भटकता है।

Ans : (b) जी. ई. मूर के अनुसार जब कभी दार्शनिक सिद्धान्त और सामान्य बुद्धि का टकराव होता है तो इस बात की सम्भावना होती है कि सामान्य बुद्धि की तुलना में तर्क भटक जाता हैं मूर ने 'सामान्य-'ज्ञान' का समर्थन किया है।

50. सूची - I और सूची - II से सुमेलित कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची I (चिन्तक)		सूची II (सिद्धांत/कथन)	
(A)	श्री अरबिन्द	(i)	मानव का जैविक और आध्यात्मिक पहलू
(B)	आर. एन. टैगोर	(ii)	स्वतः सिद्ध का स्वतः सिद्ध विस्तार
(C)	के. सी. भट्टाचार्य	(iii)	सार्वभौम धर्म
(D)	विवेकानंद	(iv)	चैतसिक रूपान्तरण

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(c)	(iv)	(ii)	(i)	(iii)
(d)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

Ans : (b)

श्री अरबिन्द	-	चैतसिक रूपान्तरण
आर. एन. टैगोर	-	मानव का जैविक और आध्यात्मिक पहलू
के. सी. भट्टाचाय	-	स्वतः सिद्ध का स्वतः सिद्ध विस्तार
विवेकानंद	-	सार्वभौम धर्म

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2013
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

नोट : इस प्रश्नपत्र में पचहत्तर (75) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. न्याय के अनुसार प्रमा निम्नलिखित में से क्या है?

(a) पहले से अज्ञात वस्तु का सही संज्ञान
(b) सही स्मृति
(c) वस्तु जो वास्तव में वहाँ है के गुण का सही अनुबोधक संज्ञान
(d) सम्यक् ज्ञान

Ans. (c) : न्याय दर्शन के अनुसार, प्रमा या सम्यक् ज्ञान सदा 'यथा अर्थ' पदार्थ के अनुरूप-यथार्थ होता है। अर्थात् वस्तु जो वास्तव में वहाँ है के गुण का सही अनुबोधक संज्ञान। अविरुद्ध या सम्वादि तथा सफल प्रवृत्ति सामर्थ्य भी होना चाहिए।

2. न्याय-वैशेषिक के अनुसार, मुक्त आत्मा और सुखाभाव के बीच संबंध निम्नलिखित है:

(a) संयोग (b) स्वरूप
(c) समवाय (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : न्याय-वैशेषिक दर्शन में आत्मा एक अभौतिक द्रव्य है, जिसमें छह गुण है- इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान। आत्मा में यह गुण शरीर से संबंधित होने पर आते हैं। आत्मा अपनी मुक्तावस्था में निर्गुण है। उसमें गिनाये गये ये छह गुण अनित्य है। न्याय में मोक्ष एक आभावात्मक अवस्था माना गया है। इसका अर्थ है - दुःखनिवृत्तिमात्र, सुख-प्राप्त नहीं। मुक्त आत्मा में स्वरूपतः बुद्धि, इच्छा, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, द्वेष, संस्कार, सुख, दुःख आदि का आभाव होता है।

3. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I (बौद्ध सम्प्रदाय)	सूची- II (मत)
A. वैभाषिक	i. बाह्य वस्तुओं को अनुमान से जाना जाता है
B. माध्यमिक	ii. बाह्य वस्तुओं को सीधे अनुभव किया जाता है।
C. योगाचार	iii. ज्ञाता, ज्ञेय एवं ज्ञान परस्पर निर्भर होते हैं।
D. सौत्रान्तिक	iv. बाह्य जगत में वस्तुएँ संज्ञान की वास्तविक स्थितियाँ हैं।

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iii	ii	iv	i
(b)	iii	ii	i	iv
(c)	ii	iii	iv	i
(d)	ii	iii	i	iv

Ans. (c) :
a. वैभाषिक – बाह्य वस्तुओं को सीधे अनुभव किया जाता है।
b. माध्यमिक – ज्ञाता, ज्ञेय एवं ज्ञान परस्पर निर्भर होते हैं।
c. सौत्रान्त्रिक – बाह्य वस्तुओं को अनुमान से जाना जाता है।

4. अनुभव के विशिष्ट तथ्यों से सार्वभौम तर्कवाक्यों तक आने की प्रक्रिया कहलाती है

(a) मानसिक संरचना
(b) सरल कारणता
(c) आगमनात्मक सामान्यीकरण
(d) वैधता का आकारिक प्रमाण

Ans. (c) : अनुभव के विशिष्ट तथ्यों से सार्वभौम तर्कवाक्यों तक आने की प्रक्रिया आगमनात्मक सामान्यीकरण कहलाता है। इसमें विशेष-विशेष तर्क वाक्यों के आधार पर उससे व्यापक सामान्य निष्कर्ष निगमित करते हैं।

5. निम्नलिखित में से कौन सा कथन विचारधारा का शुद्ध गांधीवादी परिप्रेक्ष्य प्रकट नहीं करता है?

(a) अहिंसा बुराई के विरुद्ध सक्रिय नैतिक संघर्ष है।
(b) पाप से घृणा करो और पापी से नहीं।
(c) दण्ड का स्वरूप प्रतिशोधात्मक होना चाहिए।
(d) हिंसा सदैव गलत नहीं होती है।

Ans. (c) गाँधीवादी विचारधारा में अहिंसा और सत्याग्रह पर विशेष बल दिया गया है। दण्ड का प्रतिशोधात्मक स्वरूप अतिशय हिंसा को बढ़ावा देता है। अतः यह गांधीवादियों को मंजूर नहीं होगा।

6. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I धर्म	सूची - II प्रार्थना प्रक्रिया
A. बौद्ध धर्म	i. गुणस्थानक
B. इस्लाम	ii. नाम स्मरण
C. सिक्ख धर्म	iii. अष्टांग मार्ग
D. जैन धर्म	iv. दिन में पाँच बार प्रार्थना करना

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	i	iii	ii	iv
(c)	iii	iv	ii	i
(d)	iv	ii	i	iii

Ans. (c) : बौद्ध धर्म में अष्टांग मार्ग, इस्लाम धर्म में, दिन में पाँच बार प्रार्थना करना, सिक्ख धर्म में नाम स्मरण तथा जैन-धर्म में गुणस्थानक की मान्यता है।

7. गांधी के अनुसार, 'सर्वधर्म समभाव' का अर्थ है

(a) समस्त धर्मों का संश्लेषण किया जाना चाहिये।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(b) समस्त धर्म नैतिक मूल्य सिखाते हैं।
(c) सभी धर्मों को एक समान समझना चाहिये।
(d) सभी धर्मों में एकत्व है।

Ans. (c) : गाँधी जी 'सर्वधर्म समभाव' का अर्थ सभी धर्मों को एक समान समझना चाहिए। उनके अनुसार, धर्म एक दृष्टि से जीने का ढंग होता है। अतः व्यक्ति को अपने जीने के ढंग के चयन की स्वतंत्रता होनी चाहिए। यदि ऐसा है तो व्यक्ति के लिए यह भी अनिवार्य होता जाता है कि अन्य व्यक्तियों ने जो अपने-अपने ढंग चुने हैं, उन विभिन्न ढंगों के प्रति भी उसके मन में समान भाव हो, आदर भाव हो।

8. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I धर्म	सूची- II ग्रन्थ
A. पारसी धर्म	i. ग्रंथ साहिब
B. यहूदी धर्म	ii. अवेस्ता
C. सिक्ख धर्म	iii. त्रिपिटक
D. बौद्ध धर्म	iv. तालमड

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	iv	iii	ii
(b)	ii	i	iv	iii
(c)	iii	ii	iv	i
(d)	ii	iv	i	iii

Ans. (d) : पारसी धर्म का अवेस्ता, यहूदी धर्म का तालमड, सिक्ख धर्म का ग्रन्थ साहिब तथा बौद्ध धर्म का त्रिपिटक प्रमुख पवित्र ग्रन्थ है।

9. निम्नलिखित में से किस सिद्धान्त का मानना है कि एक सत्य प्रतिज्ञप्ति वास्तविक वस्तु-स्थिति का वर्णन करती है?

(a) संसक्तता सिद्धान्त (b) उपयोगितावादी सिद्धान्त
(c) संवृत्तिवादी सिद्धान्त (d) संवाद सिद्धान्त

Ans. (d) : 'संवाद सिद्धान्त' के अनुसार एक सत्य प्रतिज्ञप्ति वास्तविक वस्तु स्थिति का वर्णन करती है। सेल के अनुसार किसी प्रतिज्ञप्ति की सत्यता का अर्थ तथ्यों से संवाद है, न कि अनुभव से संवाद।

10. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I	सूची- II
A. रामानुज	i. अनिर्वचनीय ख्यातिवाद
B. बौद्ध विज्ञानवाद	ii. अन्यथा ख्यातिवाद
C. न्याय	iii. आत्म-ख्यातिवाद
D. अद्वैत वेदान्त	iv. सत् ख्यातिवाद

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	ii	iii	i	iv
(d)	iii	ii	iv	i

Ans. (b) : 'ख्याति' (भ्रम) के सम्बन्ध में रामानुज का मत सत्ख्यातिवाद; बौद्ध विज्ञानवाद का मत आत्म-ख्यातिवाद, न्याय का मत अन्यथा ख्यातिवाद, अद्वैत वेदान्त का मत अनिवर्चनीय ख्यातिवाद, प्रभाकर का मत आख्यातिवाद तथा कुमारिल का मत विपरीत ख्यातिवाद कहलाता है।

11. किसका मानना है कि संज्ञान की शर्तें वैधता की निर्धारक नहीं होती?

(a) स्वतः प्रामाण्यवादी (b) परतः प्रामाण्यवादी
(c) (A) और (B) दोनों (d) न (A) और न ही (B)

Ans. (b) : परतः प्रामाण्यवादी मानते हैं कि संज्ञान की शर्तें वैधता की निर्धारक नहीं होती है। उन्हें बाह्य सम्वादि होना पड़ता है। इनके अनुसार प्रामाण्य ज्ञान का स्वभाव या अन्तरङ्ग आवश्यक गुण नहीं है, अपितु बाहर से आता है। इसके लिए न्याय दर्शन में परतः प्रामाण्य सकलप्रवृत्ति सामर्थ्य में बताया गया है।

12. निम्नलिखित में से कौन अभिहितान्वयवादी नहीं है?

(a) गौतम (b) प्रभाकर
(c) मुरारी मिश्र (d) कुमारिल

Ans. (b) : प्रभाकर अन्विताभिधानवाद को मानते हैं जबकि कुमारिल अभिहितान्वयवादी है।

13. न्याय के अनुसार, निर्विकल्प ज्ञान निम्नलिखित में से क्या है?

(a) अभिव्यक्ति के अयोग्य तथा अतीन्द्रीय
(b) प्रत्यक्षीकरण की प्रथम अवस्था तथा अभिव्यक्ति के योग्य
(c) अभिव्यक्ति तथा अनुमान के योग्य
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (a) : न्याय के अनुसार निर्विकल्प ज्ञान आलोचना मात्र है जो नाम, जाति आदि कल्पना से रहित होता है। न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष ज्ञान के दो भेद निर्विकल्पक तथा सविकल्पक प्राप्त होते हैं। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष ज्ञान की पूर्व संख्या है। निर्विकल्पक ज्ञान अभिव्यक्ति के अयोग्य और इन्द्रिय सम्वेदन मात्र (अतीन्द्रिय) हैं।

14. नैयायिकों द्वारा स्वीकार्य 'लौकिक सन्निकर्ष' है

(a) संयोग, समवाय,संयुक्त-समवाय
(b) समवाय, संयुक्त-समवेत-समवाय
(c) समवेत-समवाय, विशेषण-विशेष्य-भाव
(d) उपर्युक्त सभी

Ans. (d) : नैयायिकों में लौकिक प्रत्यक्ष इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष के आभाव में सम्भव नहीं है। लौकिक सन्निकर्ष के पांच भेद है - संयोग, संयुक्त-समवाय, संयुक्त-समावेत, समवाय, समवेत, समवाय तथा विशेषण-विशेष्य भाव।

15. निम्नलिखित में से कौन सा एक न्याय के अनुसार व्याप्ति को प्रदूषित करने की शर्त है?

(a) उपाधि (b) असत् प्रतिपक्ष
(c) विरुद्ध (d) बाधित

Ans.(a) : व्याप्ति हेतु और साध्य का अनौपाधिक नियत साहचर्य सम्बन्ध है। न्याय दार्शनिक व्याप्ति की याथर्थता हेतु उपाधि-निरास पर बल देते हैं। व्याप्ति के सम्बन्ध में यह निश्चय कर लेना आवश्यक है कि कहीं स्थापित व्याप्ति में उपाधि तो नहीं है। अन्यथा व्याप्ति को उपाधि, प्रदूषित करता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

16. प्रातिभासिक सत, व्यावहारिक सत् और पारमार्थिक सत् सभी निम्नलिखित से संबंधित है:

(a) एक सत (या वास्तविकता)
(b) दो सत (या वास्तविकताएँ)
(c) तीन सत् (या वास्तविकताएँ)
(d) कोई भी सत् नहीं

Ans. (a) : प्रतिभासिक सत्, व्यावहारिक सत् तथा पारमार्थिक सत् एक ही सत्ता से संबंधित है। प्रतिभासिक सत् का बाध व्यावहारिक सत् से और व्यावहारिक सत् का बाध पारमार्थिक सत् से हो जाता है। जो वास्तव में एक ही सत् स्वरूपतः ब्रह्म है।

17. वैशेषिकों के अनुसार, परमेश्वर विश्व के लिये किस प्रकार का कारण है?

(a) समवायि कारण (b) सहकारी कारण
(c) असमवायि कारण (d) निमित्त कारण

Ans. (d) : वैशेषिक में ईश्वर की कल्पना परमात्मा के रूप में मिलती है जो विश्व के निमित्त कारण और परमाणु उपादान कारण है। ईश्वर का कार्य, सर्ग के समय अदृष्ट से गति लेकर परमाणुओं में आद्यस्पन्दन के रूप में सञ्चरित कर देना, और प्रलय के समय, इस गति का अवरोध करके वापस अदृष्ट में संक्रमित कर देना है।

18. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रकार के नित्यद्रव्यों का समूह हैं?

(a) मनस, आत्मा, आकाश (b) परमाणु, आकाश, काल
(c) आकाश, काल, आत्मा (d) मनस, काल, आत्मा

Ans. (c) : आकाश, काल, आत्मा, नित्य द्रव्यों का समूह है।

19. नैयायिकों के अनुसार, किस प्रकार के कारण का विनाश परिणाम या प्रभाव के विनाश का कारण है?

(a) समवायि कारण (b) असमवायि कारण
(c) निमित्त कारण (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : असमवायि कारण का विनाश परिणाम या प्रभाव के विनाश का कारण है ऐसा नैयायिकों का मानना है। असमवायि कारण केवल गुण एवं क्रिया होती और उसके विनाश से कार्य का भी विनाश हो जाता है।

20. गुणत्व कौन से प्रकार का सामान्य है?

(a) पर-सामान्य (b) अपर-सामान्य
(c) परापर-सामान्य (d) अखण्डोपाधि

Ans. (c) : 'गुणत्व' परापर -सामान्य है। वैशेषिक दर्शन में सामान्य के तीन भेद किये गये हैं - पर, अपर और परापर। जिस सामान्य की व्यापकता मध्यवर्ती होती है उसे परापर सामान्य कहते हैं। द्रव्यत्व, गुणत्व आदि परापर सामान्य है।

21. सूची - I को सूची- II से सुमेलित कीजिए और निम्नलिखित कूट से सही उत्तर चुनिए:

सूची - I	सूची- II
A. रामानुजाचार्य	i. चित्, अचित, ईश्वर
B. माध्वाचार्य	ii. शंकर पूर्व वेदान्त
C. योग-वशिष्ठ	iii. सविशेष ब्रह्मवाद
D. विवर्तवाद	iv. अद्वैत वेदान्त

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	i	iii	iv	ii
(c)	i	iii	ii	iv
(d)	i	iv	iii	ii

Ans. (c) :

a. रामानुजाचार्य	–	चित्, अचित, ईश्वर
b. माध्वाचार्य	–	सविशेष ब्रह्मवाद
c. योग-वशिष्ठ	–	शंकर पूर्व वेदान्त
d. विवर्तवाद	–	अद्वैत वेदान्त

22. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें औरे नीचे दिये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I	सूची- II
A. शंकर	i. द्वैतवाद
B. रामानुज	ii. अद्वैतवाद
C. निम्बार्क	iii. विशिष्टाद्वैतवाद
D. माध्व	iv. द्वैताद्वैतवाद

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	i	iii	iv	ii
(c)	ii	iii	iv	i
(d)	ii	iii	i	iv

Ans. (c) : शंकर का दर्शन अद्वैतवाद, रामानुज का विशिष्टाद्वैतवाद, निम्बार्क का द्वैताद्वैतवाद तथा माध्व का द्वैतवाद कहलाता है। ये सब मूलतः वेदान्त की परम्परा के दार्शनिक है।

23. जिस अचर से संख्यात्मक फलन प्रणाली के सभी अचरों की परिभाषा दी जा सकती है, कहलाता है

(a) स्ट्रासन का आघात/स्ट्रॉक फलन
(b) रसेल का स्ट्रॉक फलन
(c) शेफर का स्ट्रॉक फलन
(d) व्हाइटहेड का स्ट्रॉक फलन

Ans. (c) : जिस अचर से संख्यात्मक फलन प्रणाली के सभी अचरों की परिभाषा दी जा सकती है, वह शेफर का स्ट्रॉक फलन कहलाता है।

24. निम्नलिखित में से कौन सा मूलभूत विचार का नियम है?

(a) तर्क का नियम (b) मध्याभाव नियम
(c) योग्यता का नियम (d) द्वि-निषेध का नियम

Ans. (b): तर्कशास्त्र मूलभूत विचार के तीन नियम माने जाते हैं। परम्परा इनको तादात्म्य का नियम, व्याघात का नियम और मध्यम परिहार (मध्याभाव) का नियम कहा जाता है।

25. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये कूट से सही उत्तर का चयन करें:
सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I	सूची- II
A. $(p \supset).(r \supset s)/ \therefore -pv-r-qv-s$	i. डी मार्गन
B. $-(p.q)/\therefore -pv-q$	ii. वियोजक न्याय

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

C. pvq/∴q-p　　　　iii. विनिमय
D. (p ⊃ q)/ ∴ (- q ⊃ -p)　　　　iv. विनाशक उभयतोपाश

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iv	ii	i	iii
(b)	i	iii	iv	ii
(c)	iv	ii	iii	i
(d)	iv	i	ii	iii

Ans. (*) : इसमें प्रश्न गलत दिया गया है।
(i) डी मार्गन - ~ (p.q) ≡ (~ pv~q)
~ (pvq) ≡ (~ p~q)
(ii) वियोजक न्याय - pvq
∴ q
(iii) विनिमय (pvq) ≡ (qvp)
(p.q) ≡ (q.p)
(iv) विनाशक उभयतोपाश

26. दिए गए विकल्पों में सही उत्तर चुनेः
(∃x) [Kx. (y) (Ly ⊃ My)]
(x) Kx ⊃ [(∃y) (Ny. My) ⊃ Ox]
∴ (∃y) (Ny.Ly) ⊃ (∃x)
(a) वैध　　(b) अवैध
(c) सत्य　　(d) असत्य

Ans. (*) : उत्तर - संदिग्ध
यू0जी0सी0 ने इस प्रश्न को संदिग्ध माना है।

27. 'बहुत कम मनुष्य ईमानदार है' - इस कथन में
(a) केवल उद्देश्य पद व्याप्त है।
(b) केवल विधेय पद व्याप्त है।
(c) उद्देश्य पद और विधेय पद दोनों व्याप्त है।
(d) कोई भी पद व्याप्त नहीं है।

Ans. (d): 'बहुत कम मनुष्य ईमानदार हैं' जो अंशव्यापी स्वीकारात्मक कथन (I) है। जिसमें उद्देश्य और विधेय दोनों ही अव्याप्त होते हैं अर्थात् व्याप्त नहीं होते हैं।

28. पारम्परिक विरोध-वर्ग में यदि 'आई' तर्कवाक्य असत्य है, तो निम्नलिखित में से कौन सा निर्धारित हो सकता है?
(a) A, E और O अनिर्धारित है।
(b) A, E और O असत्य है।
(c) A सत्य है, E सत्य है और O असत्य है।
(d) A असत्य है, E सत्य है और O सत्य है।

Ans. (d): यदि परम्परागत विरोध वर्ग में 'I' तर्कवाक्य असत्य है तो 'A' असत्य, 'E' सत्य तथा 'O' सत्य होगा। यदि 'I' तर्कवाक्य 'सत्य' हो तो 'E' असत्य, 'A' और 'O' अनिश्चित हो जायेंगे।

29. ~ p ⊃ q का समतुल्य निम्नलिखित में से कौन सा है?
(a) p ⊃ ~ q　　(b) q v p
(c) q ⊃ ~ p　　(d) ~ q ⊃ ~ p

Ans. (b) :
p ⊃ ~ q
~ ~ pvq (शाब्दिक प्रतिपति)
pvq (द्वि या निषेध)
∴qvp (विनिमय)

30. 'p.q' 'p v q' और 'p = q' सभी केवल तभी सत्य है जब
(a) p सत्य है और q असत्य है।
(b) p असत्य है और q सत्य है।
(c) p और q दोनों असत्य है।
(d) p और q दोनों सत्य है।

Ans. (d) : 'p.q', 'pvq', 'p ⊃ q' और p ≡ q सभी केवल तभी सत्य हैं जब p और q दोनों सत्य है। सत्यता सारणी विधि का प्रयोग करने पर ज्ञात होगा।

31. जब एक ही विषय समग्री के बारे में दो तर्कवाक्य इकट्ठे सत्य नहीं हो सकते हैं, तो वो
(a) परस्पर व्याघाती हैं।
(b) विपरीत हैं।
(c) या तो परस्पर व्याघाती है या विपरीत हैं।
(d) परस्पर व्याघाती और विपरीत दोनों हैं।

Ans. (c) :यदि एक ही विषय सामग्री के बारे में दो तर्कवाक्य एक साथ सत्य नहीं हो सकते हैं तो वो या तो परस्पर व्याघाती है या विपरीत है।

32. निम्नलिखित में से कौन सा एक तर्कवाक्य सम्बन्धी फलन है?
(a) सभ गायें सफेद अथवा काली होती है।
(b) यदि सुकरात मानव है, तो वह नश्वर है।
(c) x मनोहर है।
(d) किसी भी x के लिये, यदि x मानव है, तो x बौद्धिक है।

Ans. (c): तर्कवाक्य संबंधी फलन है x मनोहर है। तर्कवाक्यीय फलन वह व्यंजक है- प्रथम, जिसमें एक वैयक्तिक चर होता है, दूसरा, जो वैयक्तिक चर के स्थान पर वैयक्तिक अचर रखने पर एक तर्कवाक्य बन जाता है। वैयक्तिक अचर किसी व्यक्ति के नाम होते हैं। (तर्कशास्त्र का परिचय : इरविंग एम. कोपी) (पाण्डेय और मिश्र)

33. जब कोई व्यक्ति एक प्रकार के तथ्यों के साथ किसी अन्य प्रकार के तथ्य समझने की गलती करता है, तो वो कौन सी प्रकार की गलती करता है?
(a) काल्पनिक गलती　　(b) विधि विषयक गलती
(c) नैतिक गलती　　(d) सुस्पष्ट गलती

Ans. (*): संदिग्ध
जब कोई व्यक्ति एक प्रकार के तथ्यों के साथ किसी अन्य प्रकार के तथ्य समझने की गलती करता है तो यह एक प्रकार की गलती है। यह प्रश्न संदिग्ध/गलत माना गया है।

34. प्रतिनिधानवाद के अनुसार विश्वास ज्ञान का स्पष्टीकरण सिर्फ तभी करता है
(a) जब यह असत्य धारणा है।
(b) जब यह सत्य धारणा है।
(c) जब यह सत्य और असत्यता के प्रति उदासीन है।
(d) जब यह सत को चित्रित नहीं करती है।

Ans. (b) : 'प्रतिनिधानवाद' के अनुसार विश्वास, ज्ञान का स्पष्टीकरण तभी करता है जब वह सत्य विश्वास हो।

35. जी.इ.मूर नैतिक
(a) संज्ञानवादी है।　　(b) अ-संज्ञानवादी है।
(c) वर्णनात्मकवादी हैं।　　(d) गैर-वर्णनात्मकवादी है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c): जी. ई. मूर नैतिक वर्णनात्मकवादी है। इन्हें नैतिक अप्रकृतिवादी भी कहा जा सकता है। इनके अनुसार जो भी लोग नैतिकता को प्राकृतिक या अतिप्राकृतिक रूप देना चाहते हैं वे सभी महान नीतिशास्त्री जी.इ.मूर के अनुसार भयंकर भूल करते हैं।

36. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I	सूची- II
A. गुणवत्ता का विप्रतिषेध	i. विश्व या तो सीमित या असीमित हैं
B. मात्रा का विप्रतिषेध	ii. पदार्थ या तो अविभाज्य या अनन्त रूप से विभाज्य है।
C. रूप का विप्रतिषेध	iii. विश्व का कारण होना चाहिए या कोई कारण नहीं है।
D. संबंध का विप्रतिषेध	iv. तमाम परिवर्तन तथा स्थितियाँ किसी बात की पूर्वकल्पना कर लेते हैं जो बदलता नहीं है और अनानुकूलित है।

कूट :

	A	B	C	D
(A)	iii	iv	i	ii
(B)	iv	iii	ii	i
(C)	i	ii	iii	iv
(D)	ii	i	iv	iii

Ans. (d):
A. गुणवत्ता का विप्रतिषेध – पदार्थ या तो अविभाज्य या अनंत रूप से विभाज्य है।
B. मात्रा का विप्रतिषेध – विश्व या तो सीमित या असीमित है।
C. रूप का विप्रतिषेध – तमाम परिवर्तन तथा स्थितियां किसी बात की पूर्व कल्पना कर लेते हैं जो बदलता नहीं है और अनुकूलित है।
D. रूप का विप्रतिषेध – विश्व का कारण होना चाहिए या नहीं कोई कारण नहीं है।

37. कांट के लिये निम्नलिखित में से कौन सा सत्य है?
(a) केवल प्रपंचदृश्य का ज्ञान ही संभव है।
(b) परमार्थ अज्ञात तथा अज्ञेय बना रहता है।
(c) दृश्यप्रपंच अज्ञात तथा अज्ञेय बना रहता है।
(d) परमार्थ का ज्ञान ही सम्भव है।

Ans. (c): संदिग्ध प्रश्न माना गया है।
कांट ने ज्ञानमीमांसीय दृष्टि से दृश्य प्रपंच (व्यवहार) और परमार्थ का भेद किया है। उसके अनुसार, दृश्य प्रपंच एक संबंध विषय और परमार्थ बौद्धिक चिंतन का विषय अर्थात् परमार्थ संबंध अनुभव का विषय नहीं।

38. कांट की 'लक्ष्यों के साम्राज्य' की अवधारणा गीता की निम्नलिखित में से कौन सी अवधारणा के लगभग समान हैं?
(a) तपस्या (b) मानवता की एकता
(c) मानववाद (d) अनीश्वरवाद

Ans. (b): कांट के अहैतुक आदेश के पांच सूत्रों में 'लक्ष्यों के साम्राज्य' (Kingdom of ends) सूत्र को अभिव्यक्त करता है। जहां सभी मनुष्य अपने लिए स्वयं विधायक है। वह सभी मनुष्यों को स्वयं विधायक मानता है और उनको एक नैतिक शासन व्यवस्था का नागरिक कहता है। यह अवधारणा गीता की 'मानवता की एकता' की अवधारणा से मिलता है।

39. सत्तामूलक द्वैतवाद एक सिद्धान्त है जो मानता है कि
(a) मन तथा शरीर एक साथ कार्य करने वाली भिन्न सत्ताएँ हैं।
(b) मन तथा पदार्थ एक दूसरे से स्वतंत्र हैं।
(c) दो परम सत्ताएँ हैं जो संसक्त रूप से इकट्ठे कार्य करती है।
(d) एक दूसरे से स्वतंत्र दो परम सत्ताएँ हैं।

Ans. (d): सत्तामूलक द्वैतवाद वह सिद्धान्त है जो एक दूसरे से परस्पर स्वतंत्र दो परम सत्ताओं को मानता है।

40. न्याय सम्प्रदाय के अनुसार हेतु और साध्य के बीच व्यतिरेक-व्याप्ति तब प्राप्त होती है जब
(a) हेतु की सब स्थितियाँ साध्य की अनुपस्थिति की स्थितियाँ हैं।
(b) हेतु की कुद स्थितियाँ साध्य की स्थितियाँ हैं।
(c) साध्य की कुछ स्थितियाँ हेतु की स्थितियाँ हैं।
(d) साध्य की अनुपस्थिति की सभी स्थितियाँ हेतु की अनुपस्थिति की स्थितियाँ हैं।

Ans. (d): न्याय सम्प्रदाय में व्याप्ति के तीन प्रकार केवल अन्वय, केवल व्यतिरेक तथा अन्वय-व्यतिरेक व्याप्ति है। व्यतिरेक व्याप्ति वहां होती है जब साध्य की अनुपस्थिति की सभी स्थितियाँ हेतु की अनुपस्थिति की स्थितियाँ है। जैसे -यह दिखलाना जहाँ-जहाँ अग्नि नहीं है वहाँ-वहाँ धूम्र भी नहीं है।

41. डब्ल्यू.वी.ओ. क्वाइन सत्तामूलक वास्तववादी है क्योंकि वे निम्नलिखित को मानते है:
(a) संदर्भ की अबोधगम्यता (b) अर्थ का चित्र सिद्धान्त
(c) जीवन के रूप (d) पारिवारिक अनुरूपता

Ans. (a): डब्ल्यू. वी. ओ. क्वाइन सत्तामूलक वास्तववादी है क्योंकि वह सन्दर्भ की अबोधगम्यता के सिद्धान्त को मानते हैं।

42. जे. कृष्णामूर्ति के अनुसार, सत्य ज्ञान निम्नलिखित में से क्या है?
(a) रहस्यवादियों द्वारा प्रकट (b) अनुभव द्वारा अनुकूलित
(c) धार्मिक चिंतन द्वारा प्राप्त (d) अप्रतिबन्ध जागरूकता

Ans. (d): जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार, सत्य ज्ञान अप्रतिबन्ध जागरूकता है।

43. अभिप्रेतता की समस्या निम्नलिखित के बीच सम्बन्ध को समझने की है:
(a) मानसिक अवस्था तथा समवर्ती शारीरिक अवस्था।
(b) भिन्न मानसिक अवस्थाएँ
(c) मानसिक अवस्था और वह वस्तु जिससे वह संबंधित है।
(d) भिन्न शारीरिक अवस्थाएँ

Ans. (c): अभिप्रेतता की समस्या मानसिक अवस्था और वह वस्तु जिससे वह संबंधित है के बीच संबंध को समझने की है। हुर्सल चेतना को अभिप्राय विषयक मानते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

44. हाइडेगर ने डाइसीन का चरित्र चित्रण निम्नलिखित के रूप में किया है:
(a) सत्ता का प्रभावी पार्थक्य
(b) अपने आप में सत्ता
(c) अपने लिये सत्ता
(d) आसपास के लोगों और वस्तुओं के साथ प्रभावी संबंध

Ans. (d): हाइडेगर ने 'Da-Sein' शब्द का अर्थ 'मानव-अस्तित्व' है। यह मानव-अस्तित्व, अस्तित्व की चेतना के साथ जीवन व्यतीत करने की एक विधा है। इस मानव अस्तित्व का विश्लेषण करने से उसकी विधाएं स्वतः प्रकट हो जाती है। 'Da-Sein' से तात्पर्य आस-पास के लोगों और वस्तुओं के साथ प्रभावी संबंध।

45. "हम किस प्रकार के जगत का प्रत्यक्ष बोध एवं अनुभव करते हैं वह इस पर निर्भर करता है कि हम (सत्ता) किस प्रकार के हैं।" यह किसका निष्कर्ष है?
(a) कांट (b) देकार्त
(c) अरस्तू (d) स्पिनोज़ा

Ans. (a): कांट के अनुसार, "हम किस प्रकार के जगत का प्रत्यक्ष बोध एवं अनुभव करते हैं वह इस पर निर्भर करता है कि हम (सत्ता) किस प्रकार से हैं।" कांट की प्रसिद्ध पुस्तक "The Perpetual Place" है।

46. तर्क की सत्यता निम्नलिखित के द्वारा सिद्ध होती है:
(a) विरोध का नियम तथा पर्याप्त कारण के सिद्धान्त
(b) केवल पर्याप्त कारण के सिद्धान्त
(c) केवल विरोध के नियम
(d) अंतः प्रज्ञात्मक कल्पना के नियम

Ans. (c): तर्क की सत्यता केवल विरोध (व्याघात) के नियम से सिद्ध होती है। व्याघात नियम के अनुसार, कोई वाक्य सत्य और असत्य दोनों नहीं हो सकता है।

47. तर्कवाक्यों के किसी वैज्ञानिक समुच्चय में
(a) सभी तर्कवाक्यों को प्रमाणित किया जा सकता है और सभी पदों की व्याख्या की जा सकती है।
(b) सभी तर्कवाक्यों को प्रमाणित नहीं किया जा सकता, परन्तु सभी पदों की व्याख्या की जा सकती है।
(c) सभी तर्कवाक्यों को प्रमाणित किया जा सकता है, परन्तु सभी पदों की व्याख्या नहीं की जा सकती है।
(d) सभी तर्कवाक्यों को प्रमाणित नहीं किया जा सकता है और सभी पदों की व्याख्या नहीं की जा सकती है।

Ans. (d) तर्कवाक्यों के किसी वैज्ञानिक समुच्चय में सभी तर्क वाक्यों को प्रमाणित नहीं किया जा सकता है, और सभी पदों की व्याख्या नहीं की जा सकती है।

48. मानवाधिकार निम्नलिखित में से किसे मान कर चलते हैं?
(a) मानव की गरिमा
(b) मानव की एक विशेष परिस्थिति में रहन-सहन की उचित स्थिति
(c) एक विशेष समाज में मानव के अधिकार
(d) एक विशेष समाज में मानव के सार्वभौम अधिकार

Ans. (a): 'मानवाधिकार' सभी मानकों के मूलभूत अधिकारों की बात करता है जिसमें मानव की गरिमा को विशेष आधार मानकर चला जाता है।

49. नैतिक दायित्व के साथ निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सुमेलित होता है?
(a) शारीरिक अनिवार्यता (b) स्व-आरोपण
(c) बाह्य प्राधिकारी (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b): नैतिक दायित्व में आन्तरिक अभिप्रेरण होता है जिसे 'स्व-आरोपण' कहा जाता है।

50. कांट के अनुसार नैतिक कर्तव्य का स्वरूप निम्नलिखित है:
(a) परमेश्वर का आदेश
(b) अपनी अंतःप्रज्ञा द्वारा प्रदत्त
(c) शुद्ध तर्क का आदेशसूचक
(d) नैतिकता द्वारा निर्धारित

Ans. (c): कांट के अनुसार नैतिक कर्तव्य का स्वरूप शुद्ध तर्क का आदेश सूचक है। काण्ट कर्तव्य के लिए कर्तव्य सिद्धान्त का समर्थक है। वह नैतिकता के क्षेत्र में अहेतुक आदेश और साहेतुक आदेश की बात करते हैं।

51. "हमें आत्म-हत्या करने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि हमारा जीवन हमारी अपनी और दूसरों की संयुक्त सम्पत्ति है।" - यह वाक्य निम्नलिखित में से किसके क्षेत्र में पड़ता है?
(a) हमारे समाज के प्रति हमारा कर्तव्य
(b) हमारे परिवार के प्रति हमारा कर्तव्य
(c) हमारे अपने प्रति हमारा कर्तव्य
(d) इन सबके प्रति हमारा कर्तव्य

Ans. (d): "हमें आत्म-हत्या करने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि हमारा जीवन हमारी अपनी और दूसरों की संयुक्त सम्पत्ति है।" यह वाक्य इन सबके प्रति हमारा कर्तव्य के क्षेत्र में पड़ता है।

52. निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(a) जे.एस. मिल नैतिक दायित्व का विवेकपूर्ण स्पष्टीकरण नहीं प्रस्तुत करते हैं।
(b) सिजविक उच्चत्तम शुभ के बारे में अपने विचार में सुखवादी है।
(c) नैतिक निर्णय नैतिक भावनाओं पर निर्भर है।
(d) सौन्दर्यात्मक- बोध सिद्धान्त के अनुसार, सुन्दरता नैतिकता का चरम स्तर है।

Ans. (c): 'नैतिक निर्णय नैतिक भावनाओं पर निर्भर है।' यह वाक्य गलत है।

53. नैतिकता को तत्त्वमीमांसीय आधार निम्नलिखित में से कौन प्रदान करता है?
(a) आधारभूत गुण (b) स्वतन्त्रता तथा उत्तरदायित्व
(c) आत्मा की अमरता (d) चरित्र का विकास

Ans. (c): नैतिकता को तत्त्वमीमांसीय आधार 'आत्मा की अमरता' की अवधारणा प्रदान करती है। हम तत्वमीमांसीय ढंग से आत्मा और उसके स्वरूप पर विचार करते हैं। कर्मवाद और पुनर्जन्म के परिप्रेक्ष्य में आत्मा की अमरता का विचार किया गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

54. सूची - I को सूची- II के साथ सुमेलित करें और नीचे दिये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I	सूची- II
A. कठोरतावाद	i. मूर
B. संवेगवाद	ii. कांट
C. अंतःप्रज्ञावाद	iii. बटलर
D. उपयोगितावाद	iv. एयर

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	ii	iv	i	iii
(c)	ii	iv	iii	i
(d)	i	iv	iii	ii

Ans. (c): कांट का कठोरतावाद, एयर का संवेगवाद, बटलर का अंतःप्रज्ञावाद तथा मूर का उपयोगितावाद नीतिशास्त्र के विभिन्न सिद्धान्त है।

55. सूची - I को सूची- II से के साथ सुमेलित करें और दिये गये कूटों से सही उत्तर का चयन करें:

सूची - I	सूची- II
A. आत्मा की वास्तविक सत्ता है	i. न्याय
B. वैश्विक समरसता के लिये सम्मान	ii. नैतिकता की अभिधारणा
C. आधारभूत गुण	iii. कर्तव्य
D. प्रतिकारी सिद्धान्त	iv. दण्ड

कूट :

	A	B	C	D
(A)	ii	iv	i	iii
(B)	iii	ii	iv	i
(C)	i	iii	ii	iv
(D)	ii	iii	i	iv

Ans. (d):

(A) आत्मा की वास्तविक सत्ता है — ii. नैतिकता की अभिधारणा
(B) वैश्विक समरसता के लिए सम्मान — i. कर्तव्य
(C) आधारभूत गुण — i. न्याय
(D) प्रतिकारी सिद्धान्त — iv. दण्ड

56. संवेदनावाद मानता है कि नैतिक कथन निम्नलिखित स्थिति को व्यक्त नहीं करते हैं:

(a) सत्य या असत्य (b) सत्तामूलक
(c) बौद्धिक/विवेकपूर्ण (d) प्रभावी

Ans. (a): संवेदनावाद (Emotivism) के अनुसार कोई भी नैतिक कथन सत्य या असत्य नहीं हो सकता है। यह नैतिक कथनों के संबंध में अवर्णनात्मक तथा ज्ञाननिरपेक्ष मत है। इस मत के अनुसार, नैतिक भाषा ज्ञान देने वाली या किसी प्रकार की वस्तुस्थिति का वर्णन करने वाली भाषा नहीं होती, वह तो संवेग या भावना को अभिव्यक्ति करने वाली भाषा होती है।

57. 'प्रकृतिवादी भ्रान्ति' है

(a) प्रकृतिवाद का परिणाम
(b) स्वाभाविक सिद्ध ज्ञानमीमांसा का परिणाम
(c) प्राकृति धर्ममीमांसा का परिणाम
(d) प्राकृतिक अवधारणा के साथ नैतिक अवधारणा की पहचान करने का परिणाम

Ans. (d): 'प्रकृतिवादी भ्रान्ति' प्राकृतिक अवधारणा के साथ नैतिक अवधारणा की पहचान करने का परिणाम है। जी.ई.मूर के अनुसार नैतिकता को प्राकृतिक या अतिप्राकृतिक रूप देना एक तरह की 'प्रकृतिवादी भूल' है।

58. नामवाद एक सिद्धान्त है जो कहता है

(a) 'सामान्य' वास्तविक नहीं है अपितु केवल नाम या शब्द है।
(b) 'सामान्य' नाम नहीं है।
(c) 'सामान्य' तर्क द्वारा स्थापित है।
(d) 'सामान्य अवधारणाएँ हैं।

Ans. (a): 'नामवाद' सामान्य की वास्तविक सत्ता को नहीं मानता है। इसके अनुसार 'सामान्य' केवल नाम या शब्द है। ओकम, हाब्स, बर्कले, ह्यूम आदि इसके समर्थक है।

59. निम्नलिखित में कौन-सा कथन मूल्यपरक कथन नहीं है?

(a) ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है।
(b) हम ईमानदारी को श्रेष्ठ नीति मानते हैं।
(c) कभी बेईमानी न करें।
(d) आओ हम सभी ईमानदार बनें।

Ans. (b): 'हम ईमानदारी को श्रेष्ठ नीति मानते हैं' यह मूल्यपरक कथन नहीं है।

60. कांट के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा प्रागानुभविक संश्लेषणात्मक निर्णय नहीं है?

(a) सभी वस्तुओं का वजन होता है।
(b) सभी वस्तुओं का निश्चित गुरुत्व होता है।
(c) 9 + 7 = 16
(d) प्रत्येक परिवर्तन का कारण होता है।

Ans. (*): <u>**उत्तर- कोई नहीं**</u>

दिया गया प्रश्न का उत्तर संदिग्ध है। प्रागनुभाविक संश्लेषणात्मक निर्णय कांट के दर्शन की खोज है। ज्ञान के आदर्श प्रतिमान के रूप में प्रागनुभाविक संश्लेषणात्मक निर्णयों की बात करता है।

61. देकार्त के लिये, 'मैं सोचता हूँ' स्वयं प्रमाणित है क्योंकि

(a) यह एक अनिवार्य सत्य है।
(b) यह एक तार्किक सत्य हैं।
(c) उस पर संदेह करना उसकी पुष्टि है।
(d) सोचना मेरा सार है।

Ans. (c): देकार्त जब अपनी संदेह पद्धति के अन्तर्गत सभी प्रकार के ज्ञानों पर संशय कर लेता है तो वह स्वयं पर संशय करता है। लेकिन देकार्त के अनुसार, जब मैं स्वयं पर संशय करता हूं तो संदेहकर्ता की आत्मा का अस्तित्व स्वतः प्रमाणित हो जाता है। इसलिए वह कहता है 'मैं संशय करता हूँ इसलिए मैं हूं।'

62. स्वधर्म का समर्थन कौन करता है?

(a) कृष्णा (b) रावण
(c) सीता (d) उपर्युक्त सभी

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a): भगवद्गीता में श्री कृष्णा ने स्वधर्म का उपदेश दिया है। लोकसंग्रह और स्वधर्म को भगवद्गीता का प्रमुख सिद्धान्त माना जाता है।

63. निम्नलिखित में से किसे त्रिरत्न कहा जाता है?

(a) श्रवण, मनन, निदिध्यासन (b) दर्शन, ज्ञान, चरित्र
(c) मैत्री, कामना, मुदिता (d) संघ, धम्म, बुद्ध

Ans. (b): 'त्रिरत्न' की संज्ञा जैन दर्शन में सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र को दी गयी है। जो मोक्ष के मार्ग माने जाते हैं। तीनों सम्मिलित रूप से जैन दर्शन भी मोक्ष के साधन है।

64. वैदिक जगत का ऋत किसके समीप है?

(a) विधिक आदेश (b) सत्य
(c) कर्म (d) सामाजिक आदेश

Ans. (b): वैदिक जगत का ऋत सत्य के ज्यादा निकट है। 'ऋत' को वेदों के आचार संबंधी सिद्धान्त के रूप में विवेचित किया गया है। वैदिक क्षेत्रों में यह विश्व व्यवस्था का अर्थ देता है।

65. महाभारत में कर्म, निम्नलिखित में से किसके साथ ज्यादा सरोकार रखता है?

(a) देव-ऋण (b) पितृ-ऋण
(c) मित्र-ऋण (d) भूत-ऋण

Ans. (*): उत्तर- कोई नहीं

यह प्रश्न गलत है। महाभारत में निष्काम कर्म की भावना का उपदेश दिया गया है।

66. आश्रम धर्म के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा समूह सुमेलित नहीं है?

(a) गांधी-ब्रह्मचार्य और गृहस्थ
(b) शंकर-ब्रह्मचार्य और संन्यास
(c) याज्ञवल्कय-गृहस्थ और संन्यास
(d) विवेकानंद-ब्रह्मचार्य और गृहस्थ

Ans. (d): गाँधी ब्रह्मचर्य और गृहस्थ, शंकर-ब्रह्मचर्य और संन्यास याज्ञवल्कय-गृहस्थ और संन्यास सन्य है, परन्तु विवेकानंद ब्रह्मचर्य और गृहस्थ गलत है।

67. ब्रह्मविहार निम्नलिखित को सम्मिलित करता है

(a) मैत्री, करुणा, विनय, उपेक्षा
(b) मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा
(c) विनय, करुणा, मुदिता, उपेक्षा
(d) मैत्री, मुदिता, उपेक्षा, विनय

Ans. (b): ब्रह्मविहार-मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा है।

68. कौन सा सम्प्रदाय धर्मग्रन्थ को प्रत्यक्षबोध से ज्यादा शक्तिशाली मानता है?

(a) जैन (b) बौद्ध
(c) अद्वैत वेदान्त (d) न्याय

Ans. (c): अद्वैत वेदान्त में धर्मग्रन्थ (शास्त्रों) को प्रत्यक्षबोध से ज्यादा शक्तिशाली मानता है। ब्रह्म के विषय में श्रुति के ही प्रबल प्रमाण मानता है। ब्रह्म का ज्ञान वेदान्तशास्त्र से ही होता है।

69. न्याय के अनुसार, हम समवाय को इन्द्रिय-वस्तु सन्निकर्ष मानते हैं, जिसे -----कहते हैं।

(a) समवाय (b) समवेत समवाय
(c) विशेषणता (d) संयोग

Ans. (b): न्याय के अनुसार, हम समवाय को इन्द्रिय-वस्तु सन्निकर्ष मानते हैं, जिसे विशेषता कहते हैं।

70. प्रत्यक्ष की परिभाषा 'प्रत्यक्षम् कल्पनापोढ़म् अभ्रान्तम्' के रूप में किसने दी है?

(a) वसुबंधु (b) कमलशील
(c) दिग्नाग (d) धर्मकीर्ति

Ans. (d): 'प्रत्यक्ष कल्पनापोढ़म अभ्रान्तम्' यह प्रत्यक्ष की परिभाषा आचार्य धर्मनीति की है।

71. पक्षधर्मता निम्नलिखित में से किसके मध्य संबंध है?

(a) हेतु और साध्य (b) पक्ष और साध्य
(c) पक्ष और हेतु (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (c): न्याय दर्शन में हेतु के सम्बन्ध में पांच गुण बताये गये हैं- पक्षधर्मता, सपक्षसत्व, विपक्षसत्व, असन्प्रतिपक्षत्व या अबाधित्व। पक्षधर्मता पक्ष और हेतु के मध्य सम्बन्ध है।

72. न्याय दर्शन के अनुसार, रूपत्त्व के अवबोध के दौरान किस प्रकार का सन्निकर्ष होता है?

(a) समवाय (b) संयुक्त-समवेत-समवाय
(c) समवेत समवाय (d) विशेषणता

Ans. (b): रूपत्व के अवबोध के दौरान संयुक्त-समवेत-समवाय सन्निकर्ष होता है। न्यायदर्शन के अनुसार, इस तरह का सन्निकर्ष में संयोग + समवाय + समवाय की अपेक्षा होती है।

73. कांटवादी नैतिक दर्शन में 'क्रिया का वस्तुपरक सिद्धान्त' कहलाता है:

(a) सूक्ति (b) नियम
(c) व्यावहारिक नियम (d) आदेश

Ans. (d): कांटवादी नैतिक दर्शन में 'क्रिया का वस्तुपरक सिद्धान्त' 'आदेश' कहलाता है।

74. केवल प्रयोजन बतला कर आगे बढ़ने वाली परिभाषा क्या कहलाती है?

(a) मानक परिभाषा (b) व्यापक परिभाषा
(c) विस्तृत परिभाषा (d) प्रत्यक्षबोधक परिभाषा

Ans. (d): केवल प्रयोजन बतला कर आगे बढ़ने वाली परिभाषा प्रत्यक्षबोध परिभाषा कहलाती है। परिभाषा के पांच प्रकार तर्कशास्त्र में बतलाये गये हैं- ऐच्छिक, कोशीय, निश्चायक, सैद्धान्तिक, प्रेरक परिभाषा है।

75. स्पिनोजा के अनुसार, गुण वह होता है जिसे

(a) बुद्धि पदार्थ के सार की रचना करते देखती है।
(b) बुद्धि पदार्थ के आकस्मिक गुणधर्म की रचना करते देखती है।
(c) बुद्धि पदार्थ के भौतिक गुणधर्म की रचना करते देखती है।
(d) बुद्धि पदार्थ के आध्यात्मिक गुणधर्म के रूप में देखती है।

Ans. (a) : स्पिनोजा के अनुसार, गुण वह होता है जिसे बुद्धि पदार्थ के सार की रचना करते देखती है। उसके अनुसार, "गुणों से मेरा अभिप्राय वह है जिसे बुद्धि द्रव्य का सारतत्व समझती है।"

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2012
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

नोट : इस प्रश्न पत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. वेदों के चार भागों का सही क्रम है:
(a) संहिता, आरण्यक, ब्राह्मण, उपनिषद
(b) संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद
(c) उपनिषद, आरण्यक, ब्राह्मण, संहिता
(d) संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद, आरण्यक

Ans. (b) : वेद का विभाजन वेदव्यास (कृष्णद्वैपायन या वादनारायण) ने किया था। वेद के चार भाग है- (1) ऋग्वेद (2) सामवेद (3) यजुर्वेद (4) अथर्ववेद। इन चारों भागों में प्रत्येक के चार भाग है। जो निम्न है -संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद।
(स्रोत-भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा-राममूर्ति पाठक)

2. उपनिषदों का मुक्ति के बारे में क्या विचार है?
(a) आत्मा का ज्ञान
(b) ब्रह्म का ज्ञान
(c) ब्रह्म और आत्मा की एकता
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (a) : उपनिषद् का अर्थ -'गुरु के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना' है। उपनिषद् को वेद का अंत माना जाता है। स्वयं उपनिषदों में कहा गया है कि वेद-वेदांग आदि शास्त्रों का अध्ययन कर लेने से मनुष्य का ज्ञान तब तक पूर्ण नहीं होता जब तक वह उपनिषदों की शिक्षा प्राप्त नहीं करता।
(स्रोत-भारतीय दर्शन-चटर्जी एवं दत्ता)

3. अथर्ववेद का निम्नलिखित में से कौन सा उदाहरण है?
(a) आमनायस्य क्रियार्थत्वात्
(b) स्वर्गकामो यजेत
(c) सप्तद्वीपा वसुमति
(d) अग्निना सिंचते

Ans. (c) : वेद चार है (1) ऋग्वेद इसमें देवताओं के अराधना के लिए श्लोक लिखे गये हैं। (2) सामवेद इसमें देवताओं की अराधना लयबद्ध गायन के माध्यम से किया गया है इस वेद को संगीत का जनक भी माना जाता है। (3) यजुर्वेद में यज्ञ संबंधी क्रिया-कलाप की विधि का वर्णन है। (4) अथर्ववेद - इसमें तंत्र-मंत्र, जादू-टोना, भूत-प्रेत की बात मिलती है। उसी में सप्तद्वीपों वसुमति की बात कही गयी है।
(स्रोत-प्रो. हरेन्द्र प्रसादे सिन्हा)

4. रामानुज के कारणता सिद्धान्त को किस नाम से जाना जाता है?
(a) विवर्तवाद (b) प्रकृति परिणामवाद
(c) ब्रह्म परिणामवाद (d) असत्कार्यवाद

Ans. (c) : विवर्तवाद आचार्य शंकर का सिद्धान्त है। प्रकृति परिणामवाद सांख्य दर्शन का सिद्धान्त है। ब्रह्म परिणामवाद आचार्य रामानुज का है। असत्कार्यवाद न्याय-वैशेषिक का सिद्धान्त है।
(स्रोत- डॉ. सी.डी. शर्मा)

5. मीमांसा पद्धति का प्रमुख उद्देश्य है:
(a) ब्रह्म सूत्रों के अधिकार को स्थापित करना
(b) वेदों के अधिकार को स्थापित करना
(c) त्रिपिटकों के अधिकार को स्थापित करना
(d) भगवद्गीता के अधिकार को स्थापित करना

Ans. (b) मीमांसा दर्शन वेद को अपौरुषेय मानता है। वही न्याय वैशेषिक वेद को पौरुषेय मानते हैं। मीमांसा वेद में प्रचलित कर्मकाण्डों को स्थापित करने का प्रयास किया तथा मुक्ति के लिए यज्ञ आदि कर्म को आवश्यक बताया।

6. 'सर्वम् दुःखम्' को किसने सत्य ठहराया है?
(a) जैन (b) सांख्य
(c) बौद्ध (d) योग

Ans. (c) : बौद्ध दर्शन चार आर्य सत्य की स्थापना करता है।
(1) सर्वम् दुःखम् -सब कुछ दुःख है। संसार में दुःख ही दुःख व्याप्त है।
(2) दुःखों का कारण है या दुःख समुदाय- इसी द्वितीय आर्य सत्य में दुःख के कारणों की खोज की गयी है।
(3) दुःख निरोध- दुःखों का निरोध सम्भव है।
(4) दुःख निरोध मार्ग-इसमें दुःख निरोध का मार्ग बताया गया है। इसी को दुःख निरोधगामिनी प्रतिपद् कहा जाता है इसी में अष्टांगिक मार्ग है।
(स्रोत-राममूर्ति पाठक)

7. बौद्ध दर्शन में दुःख के बारह कारणों का वर्णन किसमें है?
(a) प्रथम आर्य सत्य (b) द्वितीय आर्य सत्य
(c) तृतीय आर्य सत्य (d) चतुर्थ आर्य सत्य

Ans. (b) : बौद्ध दर्शन में चार आर्य सत्य की स्थापना की गयी है। द्वितीय आर्य सत्य में 'प्रतीत्यसमुत्पाद' या धर्म चक्र अथवा बारह कारणों का वर्णन है इसी को द्वादस निदान चक्र भी कहते हैं।
(स्रोत-राममूर्ति पाठक)

8. भारतीय दर्शन के अनुसार ख्याति का अर्थ है
(a) भ्रान्ति (त्रुटि) सिद्धान्त
(b) सत्य का सिद्धान्त
(c) असत्य का सिद्धान्त
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : भारतीय दर्शन में भ्रम का सिद्धान्त को ख्यातिवाद के नाम से जाना जाता है। भारतीय दर्शन अपनी परम्परा के अनुसार ख्यातिवाद (त्रुटिवाद) का वर्णन किया है।

(स्रोत-राममूर्ति पाठक)

9. वेदान्त ग्रंथों के अध्ययन का उद्देश्य क्या नहीं है?

(a) अज्ञान से मुक्ति
(b) आत्म साक्षात्कार
(c) ब्रह्म साक्षात्कार
(d) जागतिक समृद्धि

Ans. (d) : वेदान्त ग्रंथों का उद्देश्य आत्मसाक्षात्कार, प्रमा की प्राप्ति, आत्मा-परमात्मा का मिलन तथा ब्रह्म साक्षात्कार करना है। तत्त्वमसि ही इसका मुख्य उद्देश्य है।

(स्रोत-चटर्जी एवं दत्ता)

10. पक्ष में हेतु की विद्यमानता का ज्ञान कहलाता है

(a) पक्षधर्मता ज्ञान
(b) परामर्श ज्ञान
(c) व्याप्ति ज्ञान
(d) अनुमिती

Ans. (a) : पक्ष में हेतु का होना ही पक्षधर्मता है। जैसे -पर्वत पर धुआं होना। नियत सहचर्य संबंध को व्याप्ति कहते हैं। जैसे- धुआं के होने पर आग का निश्चित होना ही व्याप्ति ज्ञान है। प्रमा की प्राप्ति का साधन ही अनुमिती है।

(स्रोत- प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

11. वैशेषिकों के अनुसार मुक्ति (निःश्रेयस) के द्वारा प्राप्त की जाती है।

(a) केवल तत्त्व ज्ञान
(b) ईश्वर द्वारा निर्धारित धर्मों का पालन करते हुए
(c) ईश्वर द्वारा निर्धारित धर्मों का पालन करने के साथ तत्त्व ज्ञान
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (c) : वैशेषिक दर्शन एक वस्तुवादी दर्शन है। इसका वस्तुवाद बहुत्ववादी वस्तुवाद कहलाता है। वैशेषिक के अनुसार अंतिम मुक्ति (निःश्रेयस) को मोक्ष कहते हैं। जीवन के अंतिम लक्ष्य की प्राप्त 'तत्व ज्ञान' के साथ ही ईश्वर द्वारा निर्धारित धर्मों का पालन करने पर हो सकती है। न्याय वैशेषिक वेद के रचियता ईश्वर को मानते हैं।

(स्रोत-दत्ता और चटर्जी)

12. वैशेषिकाओं के अनुसार विश्व की रचना का असमवायि कारण है

(a) परमाणु (b) द्वयणुक
(c) परमाणुसंयोग (d) त्रसरेणु

Ans. (c) : वैशेषिक के अनुसार 'परमाणु' नित्य है जिससे जगत की रचना हुयी है। दो परमाणु के मिलन को द्वयणुक कहते हैं। तीन द्वयणक के मिलन को त्रसरेणु कहते हैं। परमाणु में अन्तर निहित संयोग की शक्ति के संबंध को असमवायि संबंध कहते हैं।

(स्रोत-डॉ. राममूर्ति पाठक)

13. किसी वस्तु पर वह गुण आरोपण किया जाए जो उसमें नहीं है, तब वह कहलाता है

(a) अविधा (b) अध्यास
(c) अख्याति (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : जो वस्तु जिस रूप में है उसे उस रूप में ना जानना ही अवधिा है। प्रभाकर के भ्रमविषयक सिद्धान्त को अख्यातिवाद कहते हैं। शंकराचार्य माया को अध्यास कहते हैं। माया के दो कार्य हैं। आवरण और विक्षेप अर्थात् वास्तविक वस्तु को ढक लेना तथा उस वस्तु पर किसी की प्रतीत करवाना है। इसी को अध्यास भी कहते हैं।

(स्रोत-डॉ. सी.डी. शर्मा)

14. चार्वाक दर्शन के अनुसार मानव का स्वरूप है

(a) भौतिक शरीर (b) चेतना
(c) आत्मा (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (a) : चार्वाक दर्शन नास्तिक सुखवादी दर्शन है। चार्वाक आत्मा, चेतना, शरीर सभी को भौतिक पदार्थों से ही बना मानता है। उसके अनुसार, चैतन्य विशिष्टः कायः पुरुषः चैतन्यविशेष से युक्त शरीर को मानव (पुरुष) मानता है। इस प्रकार वह ईश्वर, आत्मा, वेद का खण्डन करता है।

(स्रोत-डॉ. सी.डी. शर्मा)

15. नैयायिकों के अनुसार पंचावयवी न्याय के अवयवों का सही क्रम है

(a) उदाहरण, प्रतिज्ञा, हेतु, उपनय एवं निगमन
(b) प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय एवं निगमन
(c) प्रतिज्ञा, उदाहरण, हेतु, उपनय एवं निगमन
(d) प्रतिज्ञा, हेतु, उपनय, उदाहरण एवं निगमन

Ans. (b) : न्याय दर्शन के अनुसार-अनुमान के दो भेद होते हैं- पहला-स्वार्थानुमान स्वयं के ज्ञान प्राप्त करने के लिए। इसमें अवयवों के क्रम की जरुरत नहीं होती है। दूसरा-परार्थानुमान- दूसरे की शंका दूर करने के लिए किया जाता है इसमें पांच अवयव की क्रमशः जरुरत होती है।

(1) प्रतिज्ञा (2) हेतु (3) उदाहरण, (4) उपनय (5) निगमन
(1) पर्वत वहनिमान है - प्रतिज्ञा
(2) क्योंकि पर्वत धूमवान है - हेतु
(3) जो धूमवान है वही वाहिमान है - उदाहरण
(4) क्योंकि पर्वत धूमवान है -उपनय
(5) अतः पर्वत वहनिमान है - निगमन

(स्रोत-डॉ. सी.डी. शर्मा)

16. यह विचार कि ईश्वर विश्वसृजन का निमित कारण मात्र है, किसके द्वारा सही ठहराया गया है?

(a) न्याय (b) सांख्य
(c) अद्वैत वेदान्त (d) मीमांसा

Ans. (a) : न्याय-वैशेषिक के अनुसार -ईश्वर निमित कारण है पदार्थ (परमाणु) उपादान कारण है। इस प्रकार इस जगत का निमित कारण ईश्वर है। लेकिन वेदान्त ईश्वर (ब्रह्म) को जगत का उपादान तथा निमित्त दोनों ही कारण मानता है।

(स्रोत- भारतीय दर्शन की कहानी-प्रो. संगम लाल पाण्डेय)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

17. पतंजलि के अनुसार पांच प्रकार के यम है
(a) अहिंसा, अस्तेय, सत्य, ब्रह्मचर्य एवं आसन
(b) अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह
(c) सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह एवं ध्यान
(d) अस्तेय, ब्रह्मचर्य, सत्य, ध्यान एवं आसन

Ans. (b) : योग दर्शन के प्रणेता-महर्षि पतंजलि है उन्होंने अष्टांगयोग का सिद्धान्त है। (1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारण (7) ध्यान (8) समाधि इसी यम के पांच प्रकार है - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह।
(स्रोत-डॉ. सी.डी. शर्मा)

18. शङ्कर के अनुसार 'माया' का अर्थ है
(a) केवल सत्
(b) केवल असत्
(c) सत् और असत् दोनों
(d) न सत् और न ही असत् बल्कि अनिर्वचनीय

Ans. (d) : शंङ्कराचार्य ने माया को अविद्या, अध्यास, अध्यारोप भ्रान्ति, विवर्त, भ्रम, नामरूप, अव्यक्त, मूल प्रकृति आदि शब्दों के रूप में प्रयोग किया है। माया न सत् है न असत् है अनिर्वचनीय है, अनादि है। लेकिन माया अनन्त नहीं है। ज्ञान से माया का निराकरण संभव है।
(स्रोत-डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा)

19. अभिकथन (A) : शब्द प्रमाण है।
तर्क (R) : शब्द ईश्वर को सिद्ध कर सकता है।
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (A) का (R) सही स्पष्टीकरण है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है परन्तु (A) का (R) सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(c) (A) सही है और (R) गलत है परन्तु (A) का सही स्पष्टीकरण (R) है।
(d) (A) सही है और (R) सही नहीं है, परंतु (A) का सही स्पष्टीकरण (R) नहीं है।

Ans. (b) : शब्द एक प्रमाण है इसे सांख्य-योग, न्याय-वेदान्त मीमांसा ने स्वीकार किया है। शब्द अर्थात् शास्त्रों द्वारा ईश्वर को जाना जा सकता है। वेदान्त के अनुसार ईश्वर की सिद्धि शास्त्रों द्वारा होती है।

20. निम्नलिखित में से कौन सा अद्वैतीय परम्परा का सही क्रम है?
(a) व्यास, शंकर, गोविन्दपुर, गौड़पाद
(b) गौड़पाद, व्यास, शंकर, गोविन्दपाद
(c) शंकर, व्यास, गोविन्दपाद, गौड़पाद
(d) व्यास, गौड़पाद, गोविन्दपाद, शंकर

Ans. (d) : श्रीभगवान् नारायण, श्री ब्रह्मा, श्री वशिष्ठ ऋषि, श्री शक्ति ऋषि, श्री पराशर ऋषि, श्रीवेदव्यास ऋषि, श्री शुकदेव परमहंस, श्री गौड़पाद आचार्य मुनि, श्री गोविन्दभगवत्पादाचार्य, श्री आद्य शंकराचार्य है। शंकराचार्य ने चार दिशाओं के चारों पीठ पर पृथक-पृथक चार शिष्यों का अभिषिक्त किया था- जिनके माध्यम से गुरू परम्परा प्रवाहित हुयी। श्री सुरेश्वराचार्य (पश्चिम में) श्री पद्मपदाचार्य (पूर्व में) श्रीतोटकाचार्य (उत्तर में) श्री हस्तामलकाचार्य (दक्षिण में)।

21. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और कूट से सही क्रम का चयन कीजए।

सूची-I	सूची-II
A. शंकर	i. तत्वकौमुदी
B. जयराशिभट्ट	ii. तत्त्वोपप्लवसिंह
C. जयन्त भट्ट	iii. न्यायमंजरी
D. वाचस्पति मिश्र	iv. ब्रह्मसूत्र भाष्य

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	i	iv	iii	i
(c)	iv	ii	iii	i
(d)	i	iii	ii	iv

Ans. (c) :

सूची - I	सूची- II से
शंकराचार्य	ब्रह्मसूत्रभाष्य
जयरामशिभट्ट	तत्वोपप्लवसिंह
जयन्त भट्ट	न्यायमंजरी
वाचस्पति मिश्र	तत्व कौमुदी

22. निम्नलिखित में से किसने उपनिषद के इस कथन कि "उठो, जागो और उद्देश्य-प्राप्ति तक मत रुको" पर लोगों के ध्यान को आधुनिक काल में केन्द्रित किया?
(a) स्वामी दयानंद (b) राजा राममोहन राय
(c) स्वामी विवेकानन्द (d) महात्मा गांधी

Ans. (c) : उठो, जागो और उद्देश्य प्राप्ति तक मत रुको उपनिषदों का यह वाक्य स्वामी विवेकानन्द ने आधुनिक समाज में प्रचारित किया है। इसी प्रकार उन्होंने उपनिषदों की व्यवहारिक व्याख्या किया है जिससे उनके दर्शन को व्यवहारिक वेदान्त कहा जाता है।

23. निम्नलिखित में से किसे टैगोर द्वारा मानवीय आत्मा के लिए अनिवार्य पक्ष माना गया है?
(a) शारीरिक एवं मानसिक
(b) प्राणतत्त्व एवं मानसिक
(c) शारीरिक एवं आध्यात्मिक
(d) मानसिक एवं आध्यात्मिक

Ans. (c) : टैगोर ने अपनी पुस्तक 'जीवन देवता' और परसोनाल्टी में आत्मा के दो पक्ष शारीरिक एवं अध्यात्मिक की बात कही है।

24. के.सी. भट्टाचार्य के अनुसार दर्शनशास्त्र है
(a) परमतत्त्व का ज्ञान
(b) आत्मा का स्व-प्रमाणित विस्तारण
(c) स्वतः प्रमाणित का स्व-प्रमाणित विस्तारण
(d) स्वतः प्रमाणित का अध्ययन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : के. सी. भट्टाचार्य की पुस्तक आइडियाज इन स्वराज (विचारों में स्वराज) नामक पुस्तक लिखी। दर्शनशास्त्र को स्वतः प्रमाणित का स्व-प्रमाणित विस्तारण कहा है। जहां स्वयं का स्वयं विकास होता है।

25. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
A. सब्जेक्ट एज़ फ्रीडम	i. श्री अरविन्द
B. अज्ञेय तत्त्व	ii. रवीन्द्रनाथ टैगोर
C. सार्वभौम धर्म	iii. विवेकानन्द
D. जीवन देवता	iv. के.सी. भट्टाचार्य

कूट :

	A	B	C	D
(a)	i	ii	iii	iv
(b)	i	iii	ii	iv
(c)	iv	i	iii	ii
(d)	iv	ii	i	iii

Ans. (c) :

सूची - I	सूची- II
सब्जेक्ट	के.सी. भट्टाचार्य
अज्ञेय तत्व	श्री अरविन्द
सार्वभौम धर्म	श्री विवेकानन्द
जीवन देवता	रवीन्द्र नाथ टैगोर

26. द्वन्द्वात्मक पद्धति के प्रवर्तक कौन थे?

(a) अरस्तू (b) प्लेटो
(c) जीनो (d) थेलिस

Ans. (c) : अरस्तू ने अपनी पुस्तक 'सोलिस्ट' में जीनो को तर्कविद्या का अविष्कर्ता कहा है। जीनो पार्मेनाइडीज का अनुयायी था। जो द्वन्द्वात्मक पद्धति का प्रवर्तक था बाद में प्लेटो ने इसका प्रयोग किया तथा आधुनिक दर्शन में हिगेल ने प्रयोग किया।

(स्रोत-ग्रीक मध्य दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास-जगदीश सहाय श्रीवास्तव)

27. किसके दर्शन में ईश्वर को सृष्टिकर्ता कहा गया है?

(a) पारमेनिड़िज (b) हैराक्लिटस
(c) अनैक्जिमेंडर (d) प्लेटो

Ans. (d): प्लेटो के अनुसार ईश्वर (Dimurge) प्रत्ययों के अभाव में सृष्टि की रचना नहीं कर सकता है। प्रत्ययों या सामान्यों को प्लेटो सृष्टि का मूल प्रारूप (Prototype) कहता है। सृष्टि की रचना करने के लिए ईश्वर को जड़-द्रव्य (Matter) और प्रत्यय का सहारा लेना पड़ता है। ईश्वर सृष्टि का केवल निमित्त कारण है।

(स्रोत-डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

28. सुकरात ने कितनी पुस्तकें/निबन्ध लिखें?

(a) तीन (b) चार
(c) एक (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (d): सुकरात ने कई पुस्तक लिखी हैं।

29. ''विचार (चिन्तन) में जो व्याघातक है, वह वास्तविक नहीं हो सकता।'' यह कथन किसका है?

(a) प्लेटो (b) अरस्तु
(c) पारमेनिडिज़ (d) अनैक्जिमेंडर

Ans. (c) : पार्मेनाइडीज इलियाई सम्प्रदाय का संस्थापक है। उसके अनुसार सृष्टि का मूल आधार एक अपरिवर्तनशील अद्वितीय, अविनाशी विशुद्ध सत्ता (Being) है। इसलिए परिवर्तन असत् है तथा व्याघातक सत् नहीं है।

(स्रोत-डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

30. प्लेटो की द्वन्द्वात्मक पद्धति के अन्तर्गत आती है

(a) ज्ञानमीमांसा (b) तर्कशास्त्र
(c) तत्वमीमांसा (d) उपरोक्त सभी

Ans. (d) : द्वन्द्वात्मक पद्धति का प्रयोग सर्वप्रथम इलियाई दार्शनिक 'जीनो' ने किया था। इसके बाद प्लेटो ने अपनी समस्त विचारधारा में इसका प्रयोग किया।

31. यह किसी मान्यता है कि विचारों की सहमति अथवा असहमति ज्ञान है?

(a) प्लेटो (b) अरस्तु
(c) हेराक्लिटस (d) पाइथागोरस

Ans. (b) : अरस्तू ने नीति-विज्ञान (Ethics) में मध्यम मार्ग का अनुसरण किया है। अरस्तू के अनुसार form (आकार) और matter (द्रव्य) में अन्योन्याश्रय संबंध है। दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते हैं। इसी प्रकार आत्मा एवं शरीर के बीच भी अन्योन्याश्रय संबंध है। इस प्रकार वह कहता है कि विचारों की सहमति-असहमति ज्ञान है।

(स्रोत-जगदीश सहाय श्रीवास्तव) - ग्रीक दर्शन

32. यह किसका विश्वास था कि आध्यात्मिक एवं बुभुक्ष आत्मा के भाग के दो खण्ड है?

(a) प्लेटो (b) अरस्तु
(c) पारमेनिडिज़ (d) अनैक्जिमेंडर

Ans. (a): ग्रीक भाषा में 'आत्मा' का तात्पर्य किसी प्राणी की जीवन-शक्ति से है। रिपब्लिक में 'आत्मा' का संबंध अमरता से संयुक्त कर दिया गया । मृत्यु के बाद जो अंश अवशिष्ट रहता है वह आत्मा (Psyche) है। प्लेटो के अनुसार जीवात्मा-विश्वात्मा के ही समान है।

(स्रोत-जगदीश सहाय श्रीवास्तव) -ग्रीक दर्शन

33. वैज्ञानिक तर्कशास्त्र के संस्थापक है

(a) प्लेटो (b) अरस्तु
(c) पाइथागोरस (d) पारमेनिडिज

Ans. (b): नीतिशास्त्र में मध्यम् मार्ग का प्रतिपादन अरस्तू है, वही वैज्ञानिक तर्कशास्त्र के जनक भी अरस्तू है। प्लेटो-प्रत्ययवाद या copy theory के जनक है पाइथागोरस-सांख्यसिद्धान्त के जनक है वही पार्मेनिडिज परमसत् को Being तथा शाश्वत कहते हैं।

34. यह घोषणा किसने की कि संसार की सर्वोत्तम रचना मानव है?

(a) संत अन्सेलम (b) संत आगस्ताइन
(c) संत थामस अक्यूनास (d) उपरोक्त तीनों

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : यह सृष्टि ही ईश्वर की सर्वोत्तम रचना एवं सर्वाधिक शुभ है। प्लेटो की इस मान्यता का प्रभाव मध्य युग के ईसाई दार्शनिक संत आगस्ताइन, थॉमस एक्वीनॉस से लेकर आधुनिक युग में लाइबनित्ज एवं एफ. एच. ब्रैडले के दर्शन पर पड़ा।

(स्रोत-डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

35. संत आगस्ताइन के अनुसार नैतिक परिवर्तन का पड़ाव है

(a) आस्था (b) आशा
(c) स्पष्टता (d) उपरोक्त तीनों

Ans. (d): संत आगस्ताइन के अनुसार मैं विश्वास करता हूँ ताकि मैं समझ सकू, मैं समझ सकू इसलिए विश्वास करता हूं। अतः नैतिक अथवा अध्यात्मिक परिवर्तन के लिए आस्था, आशा, स्पष्टता का होना आवश्यक है।

36. देकार्त का प्राथमिक उद्देश्य है-

(a) शरीर और मस्तिष्क के बीच के सम्बन्ध को स्पष्ट करना
(b) ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करना
(c) बाह्य संसार की वास्तविकता का खण्डन करना
(d) स्पष्ट एवं असंदिग्ध ज्ञान तक पहुँचना

Ans. (d): देकार्त एक बुद्धिवादी गणितज्ञ है। देकार्त गणितज्ञ होने के नाते दर्शन को भी गणित की भांति शुद्ध एवं असंदिग्ध बनाना चाहता है। उसके अनुसार गणित निर्विवाद है जबकि दर्शन विवादों का केन्द्रे है। अतः विवादों का समाधान करके स्पष्ट एवं असंदिग्ध ज्ञान तक पहुंचा जा सकता है।

(स्रोत-डॉ. दयाकृष्ण)

37. कान्ट के अनुसार ज्ञान में सम्मिलित है

(a) संश्लेषणात्मक प्रागानुभविक निर्णय
(b) संश्लेषणात्मक आनुभविक निर्णय
(c) विश्लेषणात्मक निर्णय
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (a): कांट संश्लेषणात्मक प्रागानुभविक निर्णय को मानता है। उसके अनुसार ज्ञाने में तीन चीजें होनी चाहिए। निश्चितता, सार्वभौमिकता तथा नवीनता का यर्थाथता/संश्लेषणात्मक प्रागानुभविक निर्णय में सार्वभौमिकता के साथ नवीनता तथा निश्चितता भी है।

(स्रोत-डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

38. निम्नलिखित में से कौन सी रचना बेरट्रंड रसल की नहीं है?

(a) डिस्कोर्स ऑन मेथड
(b) अवर नालिज ऑफ दि एक्सटर्नल वर्ल्ड
(c) एन इनक्वायरी इन टू मीनिंग एण्ड टूथ
(d) ह्यूमन नालिजः इट्स स्कोप एण्ड लिमिट्स

Ans. (a): डिस्कोर्स ऑन मेथड-डेकार्ट की पुस्तक है।

39. ''ईश्वर मर चुका है।'' यह कथन किसका है?

(a) नित्शे (b) विट्गेनस्टीन
(c) हिडेगर (d) सी.एस. पर्स

Ans. (a): नित्शे, विट्गेनस्टीन, हिडेगर, सी0एस0 पर्स सभी ईश्वर का खण्डन करते हैं। नीत्शे कहता है कि ईश्वर मर चुका है। हाइडेगर निरीश्वरवादी अस्तित्ववादी है। पर्स निरीश्वरवादी अर्थ क्रियावादी (Pragmutism) के दार्शनिक है।

40. ईश्वर को 'न्यूज नेचूराटा' किसने कहा है?

(a) लॉक (b) कांट
(c) स्पिनोज़ा (d) ह्यूम

Ans. (c) : लॉक ईश्वर को निर्देशात्मक ज्ञान के रूप में मानता है। कांट-नैतिकता की पूर्वमान्यतओं के रूप में ईश्वर को मानता है। स्पिनोजा ने ईश्वर को नेचूरा नेचूराटा कहा है। ह्यूम के अनुसार ईश्वर की कोई संवेदना नहीं मिलती है इसलिए ईश्वर नहीं है।

41. देकार्त शरीर-मस्तिष्क के संबंध को किस प्रकार स्पष्ट करता है?

(a) मनोवैज्ञानिक-शारीरिक समानान्तरवाद
(b) अन्तर-क्रियावाद
(c) पूर्व स्थापित सामंजस्य
(d) उपतत्ववाद

Ans. (b): मनोवैज्ञानिक-शारीरिक समानांतर वाद, स्पिनोजा का सिद्धान्त है। अन्तर क्रियावाद या क्रियाप्रतिक्रियावाद-देकार्त का सिद्धान्त है। पूर्व स्थापित सामंजस्य वाद लाइब्नीज का सिद्धान्त है।

(स्रोत-डॉ. हरिशंकर उपाध्यय)

42. निम्नलिखित में से तार्किक प्रत्यक्षवादी का चयन कीजिए :

(a) हुसर्ल (b) हिडेगर
(c) ए.जे. अय्यर (d) सी.एस. पर्स

Ans. (c): हुसर्ल एक फेनोमेगेलॉजिस्ट दार्शनिक है। हाइडेगर अस्तित्ववादी निरीश्वरवादी दार्शनिक है। ए0जे0 एयर-तार्किक प्रत्यक्षवादी तथा असंज्ञानवादी है। सी0 एस0 पर्स एक अमेरिकी अर्थक्रियावादी दार्शनिक है।

43. पर्याप्त कारण सिद्धान्त के प्रतिपादक है

(a) लॉक (b) बर्कले
(c) लाइब्नित्ज़ (d) प्लेटो

Ans. (c): लाइब्नित्ज का दावा है कि केवल उसी वस्तु को सत्य माना जा सकता है जिसका कोई पर्याप्त कारण Sufficient reason हो। इसलिए सृष्टि का कोई न कोई पर्याप्त कारण अवश्य होगा। सृष्टि का पर्याप्त कारण ईश्वर ही हो सकता है।

(स्रोत-हरिशंकर उपाध्याय)

44. यह दार्शनिक कौन था जिसने 'इतिवृत्तात्मक' और 'प्रत्ययों का सहाचर्य' के बीच के अन्तर को दर्शाया?

(a) देकार्त (b) ह्यूम
(c) लाइब्नित्ज (d) स्पिनोजा

Ans. (b): ह्यूम अपनी पुस्तक A Treatise on Human Nature में लिखता है कि यदि हम धर्मशास्त्र अथग ज्ञानमीमांसा की कोई पुस्तक लेते हैं तो हमे पूछना चाहिए कि इसमें वस्तु-तथ्य और अस्तित्व संबंधी प्रयोजन का चिंतन है कि 'नहीं'। यदि नहीं तो इसमें कुतर्क और वितण्डा है, इसे जला देना चाहिए। अर्थात् ह्यूम ज्ञान को दो भागों में बांटता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(1) आकारिक ज्ञान Formal knowledge
(2) तथ्यात्मक ज्ञान Factual knowledge
ह्यूम ज्ञान का आधार संस्कार तथा प्रत्यय मानते हैं।
(स्रोत-डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

45. यह किसने कहा था कि कारण और परिणाम के बीच का संबंध तार्किक नहीं है, केवल मनोवैज्ञानिक है?
(a) ह्यूम (b) कांट
(c) रसल (d) हिडेगर

Ans. (a) : ह्यूम के अनुसार कारण कार्य का संबंध तार्किक न होकर केवल मनोवैज्ञानिक है। उसने कारण कार्य संबंध का खण्डन नहीं करता है बल्कि केवल तार्किक संबंध का खण्डन करता है। ह्यूम ज्ञान का आधार संस्कार तथा प्रत्यय को मानता है, जिसका संस्कार नहीं मिलता उसका ज्ञान भी नहीं हो सकता।

46. डेविड ह्यूम का दार्शनिक मत है
I. इंद्रियानुभविक
II. गोचरवादीप
IV. उपरोक्त सभी
प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) केवल I और II सही है।
(b) केवल II और III सही है।
(c) केवल I और III सही है।
(d) IV सही है।

Ans. (c) : डेविड ह्यूम एक अनुभववादी दार्शनिक है। वह इन्द्रियानुभव को ही ज्ञान का स्रोत स्वीकार करता है। इसलिए वह जगत को बाह्य संस्कारों का समूह कहता है। आत्मा को आंतरिक संस्कारों का समूह कहता है। वह अज्ञेयवादी नहीं बल्कि संशयवादी दार्शनिक है।

47. विट्गेनस्टाइन ने पुस्तकें लिखीः
I. ट्रैक्टेटस लोजीको फिलोसोफिकस
II. फिलोसोफिकल इनवेस्टिगेशन्स
III. आन सर्टेनटी
IV. जैट्टल
प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(a) केवल I और II सही है।
(b) केवल II और III सही है।
(c) केवल I और IV सही है।
(d) I, II, III और IV सही है।

Ans. (d) विट्गेनस्टाइन की पुस्तक - The Blue Book और The Brown Book है।

48. निम्नलिखित दो कथनों में से पहले को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): लॉक के अनुसार मस्तिष्क से प्रारम्भ करना रिक्त पट्टिका है।
तर्क (R): लॉक सहज प्रत्यय को रद्द करता है।
उपरोक्त कथनों में से, प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :
(a) (A) और (R) दोनों सही है और (A) का (R) सही स्पष्टीकरण है।
(b) (A) और (R) दोनों सही है परन्तु (A) का (R) सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(c) (A) सही है परंतु (R) गलत है।
(d) (A) गलत है परन्तु (R) सही है।

Ans. (a) : लॉक अनुभववादी दार्शनिक है। उसके अनुसार ज्ञान इन्द्रियानुभव से होता है। जन्म के समय हमारा मस्तिष्क सफेद कागज या टनुला रस्सा या रिक्त पट्टिका की भांति खाली होता है उस पर संवेदन स्वसंवेदन से ज्ञान अंकित होता है। जन्मजात ज्ञान का खण्डन करते हुए कहा है कि हमारी बुद्धि में ऐसा कुछ भी नहीं है जो पहले इन्द्रियों में न हों।
(स्रोत-डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

49. निम्नलिखित में से सही क्रम का चयन कीजिए:
(a) थेलस, प्रोटागोरस, प्लेटो, थामस अक्यूनास
(b) लाइब्नित्ज़, स्पिनोजा, देकार्त, लॉक
(c) लॉक, बर्कले, ह्यूम, देकार्त
(d) देकार्त, कांट, हीगल, लॉक

Ans. (a): क्रमशः दाशनिकों का नाम ग्रीक दार्शनिक थेलीज, ऐलेक्जमेण्डर, ऐनेक्जमीनीज, पाइथागोरस, पार्मेनाइडीज, हेराक्लाइटस, प्रोटागोरस, सुकरात, प्लेटो, आरस्तू, संत आगस्टाइन, संत अंसेलम, संत एक्वीनास, देकार्त, स्पिनोजा, लाइब्नीज, लॉक, बर्कले, ह्यूम, कांट, बैडले, हिगेल।
(स्रोत-डॉ. हरिशंकर उपाध्याय)

50. सूची - I को सूची- II से सुमेलित और प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची - I (विचारक)	**सूची - II (धारणा)**
A. देकार्त	i. पर्याय सिद्धान्त
B. बर्कले	ii. चिदणु सिद्धान्त
C. लाइब्नित्ज	iii. एस्से एस्ट परसिपी (दृश्यते इति चलते)
D. स्पिनोजा	iv. सहज प्रत्यय सिद्धान्त

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iv	i	ii	iii
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	ii	iii	iv	i
(d)	iii	iv	ii	i

Ans. (b)
देकार्त - सहज प्रत्यय सिद्धान्त
बर्कले - एस्से एस्ट परसिपी, (होना प्रत्यक्ष होना है।)
लाइब्नीज - चिदणु सिद्धान्त
स्पिनोजा - पर्याय सिद्धान्त
(स्रोत-डॉ. दया कृष्ण)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2012
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

नोट : इस प्रश्नपत्र में पचहत्तर (75) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. व्यावहारिक सत्ता खण्डन करती है
(a) परमार्थिका सत्ता
(b) प्रतिभाषिका सत्ता
(c) परमार्थिका सत्ता एवं प्रतिभाषिका सत्ता
(d) न परमार्थिका सत्ता और न ही प्रतिभाषिका सत्ता

Ans. (b) : आचार्य शंकर द्वारा तीन कोटियों की सत्ता का वर्णन किया गया है। प्रथम प्रातिभासिक सत्ता, दूसरी व्यावहारिक और तीसरी पारमार्थिक सत्ता कहलाती है। यद्यपि संसार एक रूप नहीं है लेकिन संसार समष्टिरूप में सत्-असत् अनिर्वचनीय है।

2. शरीर और आत्मा के बीच सम्बन्ध है
(a) संयोग (b) समवय
(c) स्वरूप (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (a) : कार्य समवाय संबंध में उपस्थित रहता है। समवाय कारण को उपादान कारण भी कहा जाता है। जैसे- तंतुओं के साथ पट का समवाय कारण है। संयोग संबंध दो द्रव्यों के मिलने से होता है। जैसे-पक्षी का पहाड़ पर बैठना संयोग संबंध है स्वरूप संबंध द्रव्य उस चीज़ का पूर्ण रहता है। जैसे-मीठा में कड़वापन का अभाव ही स्वरूप संबंध है।
नोट- आयोग ने इस प्रश्न का सबको समान लाभ दिया था।

3. किसी वस्त्र के अंश का रंग का असमवयी कारण है
(a) धागे (b) धागों का रंग
(c) धागों का संयोजन (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : असमवायी कारण वह गुण का कर्म है जो समवायी कारण में समवाय संबंध में रहते हुए कार्योत्पत्ति में सहायक होने से कारण कहा जाता है।

4. वैशेषिकाओं के अनुसार द्रव्यत्व किसका उदाहरण है?
(a) केवल सामान्य (b) केवल विशेष
(c) सामान्य विशेष (d) जातिबोधक

Ans. (c) : वैशेषिक के अनुसार सामान्य नित्य है, एक है, वस्तु में रहता है। सामान्य तीन प्रकार के होते हैं। पर सामान्य जैसे सत्तत्व। अपर सामान्य जैसे घटत्व है। परापर सामान्य जैसे- द्रव्यत्व।

5. दो अणुओं के समागम का निर्मित कारण है
(a) ईश्वर (b) ईश्वर-इच्छा
(c) अणुओं की प्रकृति (d) युग्मों की सृजना

Ans. (b) वैशेषिक एक परमाणुवादी दार्शनिक है जो जगत का निर्माण परमाणुओं से मानते हैं लेकिन परमाणु नित्य होते हुए भी चेतन नहीं है, परमाणु जड़-तत्व है। अतः ईश्वर के द्वारा ही दो परमाणुओं का संयोग सम्भव है।

6. उस सिद्धान्त को जो यह मानता है कि प्रभाव कारण में पहले से ही निहित रहता है, क्या कहते हैं?
(a) सत्कार्यवाद (b) असत्कार्यवाद
(c) परिणामवाद (d) प्रतीत्यसमुत्पादवाद

Ans. (c) : कारण में कार्य पहले से सत् रहता है यह सत्कार्यवादियों का मानना है। सत्कार्यवाद का समर्थक सांख्य, योग, वेदान्ती है। वही असत्कार्यवाद के समर्थक न्याय -वैशेषिक है। प्रतीत्यसमुत्पादवाद बौद्ध दर्शन का सिद्धान्त है।

7. किसी वस्तु में किसी वस्तु का जो उससे भिन्न हो, का आभास, शंकर के अनुसार है
(a) अविधा (b) अघस्य
(c) माया (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : जगत एवं ब्रह्म के बीच संबंध स्थापित करने के लिए शंकराचार्य ने मायावाद का प्रतिपादन किया। माया न सत् है, न असत् है, अनादि और अनिर्वचनीय है। माया अनन्त नहीं है क्योंकि विद्या (ज्ञान) से बाधित है।

8. स्वः के प्रति वैदिक सिद्धान्त की ओर बुद्ध का दृष्टिकोण है कि वह
(a) कट्टर (b) संशयशील
(c) उदासीन (d) अनीश्वरवादा

Ans. (a) : बुद्ध ईश्वर को नहीं मानते इसलिए वे अनीश्वरवादी है। वे वेद का खण्डन करते हैं इसलए बुद्ध नास्तिक है।
नोट- आयोग ने इस प्रश्न का सबको समान लाभ दिया था।

9. 'अपीअरेंस एण्ड रियल्टी' का लेखक कौन है?
(a) ब्रेडले (b) हेगल
(c) देकार्ते (d) ह्यूम

Ans. (a) : डिसकोर्स ऑफ मेथर्ड-यह देकार्त की पुस्तक है। ए ट्रेटराइज ऑफ ह्यूमन नेचर- ह्यूम की पुस्तक है। हेगल की पुस्तक 'स्पिरिट ऑफ माइंड है। अपीअरेंस एण्ड रियल्टी -ब्रैडले की पुस्तक है, जो 1893 में प्रकाशित हुई थी।

10. न्यायिकाओं के अनुसार हमें 'गोत्त्व' का ज्ञान किसके द्वारा होता है?
(a) अनुमान (b) तुलना
(c) इंद्रिय ज्ञान (d) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष

Ans. (c) : प्रशस्तपाद अपनी पुस्तक पदार्थ धर्म संग्रह में वैशेषिक के सात पदार्थों का वर्णन किया है।
द्रव्य, गुण, कर्म, समवाय, सामान्य, विशेष और अभाव। न्याय-वैशेषिक सामान्य या जाति नामक स्वतंत्र पदार्थ की सत्ता स्वीकार करके मनुष्य में अनुव्यत्व तथा सभी गायों में 'गोत्व' तत्व का विश्लेषण करता है।

11. वे विचारधाराएँ जो दो प्रमाणों को मानती है
(a) चार्वाक और बैद्ध (b) बौद्ध और वैशेषिक
(c) सांख्य और वैशेषिक (d) जैन और योग

Ans.(b) : चार्वाक केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को स्वीकार करता है। न्याय को चार प्रमाण स्वीकार है। सांख्य योग तीन प्रमाण स्वीकार करता है। वैशेषिक तथा बौद्ध दर्शन दो प्रमाण प्रत्यक्ष एवं अनुमान को स्वीकार करता है। जैन- प्रमाण स्वीकार करता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

12. निम्नलिखित में से कौन सा समस्त ज्ञान को प्रमा मानता है?

(a) कुमारिल (b) वसुबन्धु
(c) कणाद (d) प्रभाकर

Ans.(d) : भारतीय दर्शन में प्रमा को वास्तविक ज्ञान कहा गया है। न्याय-वैशेषिक के अनुसार समस्त यथार्थ ज्ञान प्रमा है। मीमांसा के अनुसार समस्त अनुभूति ज्ञान प्रमा है।

13. निम्नलिखित में से कौन सा 'शब्दग्रह' का माध्यम नहीं है?

(a) आपत वाक्य (b) तर्क
(c) वृद्ध व्यवहार (d) व्याकरण

Ans. (b) : शब्दग्रह -शब्द के मूल अर्थ (अविद्या) को जानने का साधन है जो आठ है। (1) व्याकरण (2) उपमान (3) कोश (4) आप्तवाक्य (5) व्यवहार (6) वाक्यशेष (7) विवृत्ति (विवरण) (8) सिद्धपद (सान्निध्य)।

14. अन्यथाख्यातिवाद का समर्थन करते हैं

(a) सांख्य और योग (b) मीमांसा और बौद्ध
(c) न्याय और वैशेषिका (d) रामानुज और कुमारिल

Ans. (c) : भारतीय दर्शन में भ्रम के सिद्धान्त को ख्यातिवाद कहते हैं।

सत्ख्यातिवाद	बौद्ध के विज्ञानवादियों का है
असत्ख्यातिवाद	बौद्ध के विज्ञानवादियों का है
आत्मख्यातिवाद	नागार्जुन का है
अख्यातिवाद	प्रभाकर का है
विपरीतख्यातिवाद	कुमारिल भट्ट
अन्यथाख्यातिवाद	न्याय वैशेषिक
सदसत्ख्यातिवाद	सांख्य योग
अनिर्वचनीयख्यातिवाद	शंकरचार्य (अद्वैतवेदान्त)

15. प्रमाणों की स्वीकृत संख्या के अनुसार सही क्रम वाले समूह का चयन कीजिए:

(a) चार्वाक, बौद्ध, वैशेषिक
(b) बौद्ध, वैशेषिका, सांख्य
(c) न्याय, वैशेषिका, अद्वैत वेदान्त
(d) बौद्ध, न्याय, वैशेषिक

Ans.(a) :

चार्वाक	-	प्रत्यक्ष प्रमाण।
सांख्य,योग, जैन	-	प्रत्यक्ष, अनुमान शब्द।
न्याय	-	प्रत्यक्ष अनुमान, उपमान, शब्द
बौद्ध और वैशेषिक	-	प्रत्यक्ष, अनमान।
वेदान्त/मीमांसा	-	प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अनुलब्धि।

प्रभाकर के पाँच प्रमाण स्वीकार किया है वहीं कुमारिलभट्ट छह प्रमाण स्वीकार किया है।

16. भ्रम सिद्धान्त जिसे भारतीय दर्शन में अख्यातिवाद कहा जाता है, इस सिद्धान्त को प्रस्तुत किसने किया?

(a) अद्वैत वेदान्त (b) मीमांसा
(c) सांख्य (d) न्याय

Ans. (b) : अख्यातिवाद प्रभाकर है वहीं विपरीतख्यातिवाद कुमारिल भट्ट का है।

17. विषयनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ ज्ञान की अनन्यता जो बाह्य वस्तु का रूप धारण करती है उसे कहते हैः

(a) प्रत्यक्ष ज्ञान (b) अनुमान
(c) शास्त्रीय प्रमाण (d) साम्यानुमान

Ans. (a) : ज्ञानेन्द्रियों एवं अर्थ के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान है। प्रत्यक्ष प्रमा तथा प्रमाण दोनों है। ज्ञान आत्मा में उत्पन्न होता है। अतः आत्मा भी प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए आवश्यक है। इस प्रकार प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए इन्द्रिय, विषय और सन्निकर्ष की आवश्यकता होती है।

18. समकालीन दार्शनिक पद्धति का झुकाव है

(a) विश्लेषणात्मक (b) संशयात्मक
(c) संश्लेषण (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (a) : समकालीन पाश्चात्य दार्शनिक मूर, रसेल तथा विटगेंस्टाइन एक भाषा विश्लेषणवादी दार्शनिक है। ह्यूम एक संशयवादी दार्शनिक है वह अनुभववादी भी है। कांट को अज्ञेयवादी कहा जाता है।

19. जैन प्रमानस सिद्धान्त का अत्यावश्यक तत्त्व है

(a) प्रत्यक्ष ज्ञान (b) नय
(c) धार्मिक ग्रंथ (शास्त्र) (d) अनुमान

Ans. (b) : जैन दर्शन बहुलवादी वस्तुवादी है। सप्तभंगीनय सिद्धान्त जैन दर्शन का है। आंशिक एक साक्षेप ज्ञान को नय कहते हैं। नय एक तरह का निर्णय/परामर्श भी है। तीन प्रकार का परामर्श या निर्णय हो सकते हैं। जिसे -दुनीर्ति, नय, प्रमाण कहते हैं। किसी वस्तु के सन्दर्भ में यह कहना कि यह घट है, इसे नय कहते हैं। यहाँ वस्तु के एक धर्म को बताया गया है परन्तु अन्य धर्म का निषेध नहीं किया गया है। वस्तु के अनंत धर्मों में से एक धर्म का ज्ञान और उसकी अभिव्यक्ति को ही नय कहते हैं।

20. पतंजलि योग का मूलभूत उद्देश्य है

(a) ईश्वर से मिलाप
(b) स्वः से मिलाप
(c) मन के आशोधन का समापन
(d) उत्कर्षों को प्राप्त करना

Ans. (c) : पतंजलि का मूल उद्देश्य चित्तवित्तओं का निरोध करना है। 'चित्तवित्त निरोध योगः' योग में चित्त की वित्तिया समाप्त हो जाती है।

21. गौतम के अनुसार अनुमान के पूर्ववत और शेषवत दो प्रकार हैं, तीसरा प्रकार क्या होगा?

(a) अन्वय (b) व्यतिरेक
(c) सामान्योदृष्ट (d) उपरोक्त में से कोई भी नहीं

Ans. (c) : न्यायदर्शन के अनुसार, अनुमान दो प्रकार के होते हैं। स्वार्थानुमान तथा परार्थानुमान। एक अन्य दृष्टि से अनुमान तीन प्रकार का होता है - (1) पूर्ववत् अनुमान (2) शेषवत् अनुमान (3) सामान्योतोदृष्ट अनुमान।
एक अन्य दृष्टि से अनुमान तीन प्रकार के हैं- (1) केवलीन्वयी (2) केवल-व्यतिरेक अनुमान (3) अन्वयव्यतिरेकी अनुमान।

22. व्याप्ति का ज्ञान किस के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है?

(a) तर्क (b) भूयो दर्शन
(c) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष (d) उपरोक्त सभी

Ans. (d) : व्याप्ति ही अनुमान का प्राण है। व्याप्ति का ज्ञान अन्वयविधि, व्यतिरेक विधि, अन्वय एवं व्यतिरेक विधि, व्यभिचारग्रह, उपाधिनिरास, तर्क और सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष से होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

23. यदि हम प्रत्यक्ष को ज्ञान के रूप में परिभाषित करते हैं तो हम किस प्रकार की भूल कर रहे होंगे?
(a) विरुद्ध (b) शंकर्य
(c) अतिव्याप्ति (d) अव्यप्ति

Ans. (c) : जब किसी परिभाषा के उद्देश्य के क्षेत्र से विधेय का क्षेत्र बढ़ा दिया जाता है तब उसमें अतिव्याप्त या अतिवृहत परिभाषा का दोष होता है। जैसे - मनुष्य पशु है। विधेय पद पशु है पशु में कुत्ता, बिल्ली, गाय, हाथी आदि आ जायेंगे।

24. बौद्ध ज्ञान-मीमांसा में 'कल्पना' का अर्थ है
(a) वास्तविक संरचना
(b) काल्पनिक संरचना
(c) वास्तविक और काल्पनिक संरचना दोनों
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (b): ⇒ द्विगनाग को बौद्ध का प्रमाण या तर्कशास्त्र का जनक माना जाता है उसके अनुसार ज्ञान सविकल्प न होकर केवल निर्विकल्प होता है। धर्मकीर्ति ने ज्ञान को अभ्रात कहा है।

25. इन्द्रिय-वस्तु के सम्पर्क द्वारा ज्ञानोदय कहलाता है
(a) अनुभव (b) अनुमान
(c) प्रत्यक्ष ज्ञान (d) प्रमाण

Ans. (c) :⇒ इन्द्रिय वस्तु के सम्पर्क से प्राप्त ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान कहा जाता है। प्रत्यक्ष स्वयं एक प्रमाण है इसे किसी अन्य प्रभाव की जरुरत नहीं होती है। अनुमान भी एक प्रमाण है, ज्ञान प्राप्ति का साधन है लेकिन प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष का ज्ञान ही अनुमान है। 'प्रमाप्रतीतिइति प्रमाणाम्' प्रमा की प्राप्ति प्रमाण से होती है।

26. किसान द्वारा खेत जोतना किसका उदाहरण है?
(a) निष्काम कर्म (b) स्वधर्म
(c) साधारण धर्म (d) ब्रह्म विहार

Ans. (b) : निष्काम कर्म तथा स्वधर्म का ज्ञान गीता में मिलता है। गीता के अनुसार सभी को अपने स्वधर्म का पालन करना चाहिए। अर्थात् क्षत्रियों की रक्षा करना ही क्षत्रिय का स्वधर्म है। उसी प्रकार किसान का खेत जोतना किसान का स्वधर्म है। ब्रह्म विहार का सिद्धान्त बौद्ध दर्शन का है।

27. देवऋण से कैसे उऋण हुआ जा सकता है?
(a) ब्रह्मचर्य (b) सन्तानोत्पत्ति
(c) यज्ञ-क्रिया (d) ईश्वर प्राणिधान

Ans. (c): वेद में तीन ऋण की व्याख्या मिलती है। ऋषिऋण - ब्रह्मचर्य का पालन करके ऋषिऋण से उऋण हुआ जा सकता है। पितृ ऋण -ग्रहस्थ आश्रम में पुत्र उत्पत्ति से इस ऋण से उऋण होते हैं। देवऋण -यज्ञ आदि क्रिया करके उऋण होते हैं।

28. निम्नलिखित में कौन सा ऋत नहीं है?
(a) सत्य (b) अनृत
(c) धर्म (d) यज्ञ

Ans. (d): ऋत एक नैतिक व्यवस्था है। ऋत का संरक्षण वरुण करता है। ऋत सत्य है ऋत धर्म है। इसीलिए ब्रह्माण्ड में सभी अपने धर्म का पालन करते हैं जो ऋत का ही आदेश है। इसे ब्रह्माण्डीय व्यवस्था भी कहते हैं।

29. निम्नलिखित में कौन पुरुषार्थ नहीं है?
(a) अर्थ (b) ईश्वर
(c) काम (d) धर्म

Ans. (b) : पुरुषार्थ चार है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। अतः ईश्वर पुरुषार्थ नहीं है।

30. सूची-I एवं सूची-II पर विचार कीजए एवं सही सुमेलित कूट का चयन करें :

सूची-I	सूची-II
(A) वेद	i. ऋत
(B) गीता	ii. लोक संग्रह
(C) जैन मत	iii. त्रिरत्न
(D) बौद्ध मत	iv. पंचशील

कूट :

	A	B	C	D
(A)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(B)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(C)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(D)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

Ans. (a) :

सूची - I	सूची- I
वेद	ऋत
गीता	लोक संग्रह
जैन मत	त्रिरत्न
बौद्ध मत	पंचशील

31. मानव अधिकार उस समाज में अपेक्षित होते हैं जिसमें निम्नलिखित विषमताएँ मौजूद है:
(a) जातिवाद (b) धर्म
(c) संस्कृति (d) सभी तीन

Ans. (d) : आधुनिक समय में मानवतावाद को बौद्धिकता धर्मनिरपेक्षतावाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित किया गया है। इस प्रकार मानवतावाद मानवता को पोषण करने का सिद्धान्त है जिसमें मानवीय मूल्यों की समाज में लाया जा सके तथा संरक्षित किया जा सके।

32. कॉन्ट द्वारा धार्मिक और सामाजिक दर्शन के बारे में निम्नलिखित में विचार किया गया है:
(a) क्रिटिक ऑफ जजमेंट
(b) क्रिटिक ऑफ प्योर रीज़न
(c) रिलीजन विदइन द लिमिट्स ऑफ रीज़न
(d) क्रिटिक ऑफ प्रैक्टिकल रीज़न

Ans. (c) : ये सभी कांट की पुस्तक है। क्रिटिक ऑफ प्योर रीज़न में ज्ञानमीमांसीय चर्चा है। क्रिटिक ऑफ प्रैक्टिकल रीजन में नीति या आचार्यमीमांसा की चर्चा है। क्रिटिक ऑफ जजमेंट सौन्दर्यशास्त्र से संबंधित है।

33. किस सिद्धान्त के अन्तर्गत समाज में अधिकतम व्यक्तियों के हित के बारे में उल्लेख किया गया है?
(a) पूर्णतावाद (b) उपयोगितावाद
(c) बुद्धिवाद (d) अन्तःप्रज्ञावाद

Ans. (b) : बेंथम, मिलु, सिजविक एक उपयोगितावादी सुखवादी दार्शनिक है। बेंथम के अनुसार अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख वाला कर्म ही नैतिक रूप से शुभ है। ब्रैडले, ग्रीन, हिगेल आत्मपूर्णतावादी दार्शनिक है।

34. कर्त्तव्य के लिए कर्त्तव्य, निम्नलिखित में से किसमें शामिल है?

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) निरपेक्ष द्वन्द्ववाद (b) निरपेक्ष आदेश
(c) निरपेक्ष तर्क (d) निरपेक्ष संवाद

Ans. (b) : ⇒ कांट सिद्धान्त कर्त्तव्य के लिए कर्त्तव्य करना ही निरपेक्ष आदेश है। कर्म का कोई वाह्य या आन्तरिक परिणाम नहीं होता बल्कि कर्म का अपना स्वयं का मूल्य होता है। काण्ट के अनुसार शुभ इच्छा ही नैतिक रूप से किया गया कर्म है। इसका वर्णन कांट अपनी पुस्तक 'क्रिटिक ऑफ प्रेक्टिकल रीजन' में करता है।

35. किस नैतिक सिद्धान्त के अनुसार बौद्धिक नियम सार्वभौमिक नियम हैं जो सभी के लिए है और सभी को स्वीकार्य है।
(a) मिल (b) सिजविक
(c) कॉन्ट (d) बैन्थम

Ans. (c): कांट अपनी पुस्तक ''ग्राउंडवर्क ऑफ दी मेटाफिजिक ऑफ मारल्स'' में पाँच सूत्रों को व्यक्त करता है।
1. सार्वभौम आदेश का सूत्र (2) प्रकृति आदेश का सूत्र
(3) स्वयं साध्य का सूत्र (4) स्वतंत्रता का सूत्र (5) साध्यों का राज्य का सूत्र।

36. नैतिकता अपने से आगे बढ़कर अच्छाई के उच्चतर रूप को ग्रहण करती है और उसकी यह यात्रा वहाँ सम्पन्न होती है जिसे धर्म कहा जा सकता है, यह कथन किसका है?
(a) मार्क्टैग्गर्ड (b) श्लेमरमेकर
(c) मैथ्यू अर्नाल्ड (d) एफ.एच. ब्रेडले

Ans. (d) : ब्रेडले अपनी पुस्तक 'एथिकल स्टडीज' में मानव जीवन के लिए मूल नैतिक आदर्श की व्याख्या की है। ब्रैडले का कथन है-'आत्म त्याग से आत्मसिद्धि'। 'मेरा स्थान और उसके कर्त्तव्य'।

37. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सुमेलित है?
(a) सभी समाजों में समान नैतिक सिद्धान्त नहीं होते : सांस्कृतिक निरपेक्षतावाद
(b) एक संस्कृति में दूसरी संस्कृतिक से रीति-रिवाजों, वर्जनाओं इत्यादि में भारी अन्तर होते हैं। : सांस्कृतिक सापेक्षवाद
(c) स्वतंत्रता निश्चयवाद के अनुरूप। : दृढ नियतत्त्ववाद
(d) यहाँ किसी भी प्रकार की कारणता नहीं है। : क्षीण नियतत्त्ववाद

Ans. (b): ⇒ सांस्कृतिक सापेक्षतावाद का जनक जे0एल0 मैकी को माना जाता है।

38. ईमानदारी अच्छी नीति है। यह कथन तर्क की दृष्टि से निम्नलिखित में से किस पर लागू नहीं होता?
(a) या तो ईमानदारी अच्छी नीति नहीं है अथवा बेईमान व्यक्तियों को सजा मिलेगी।
(b) यह असत्य है कि ईमानदारी अच्छी नीति है परन्तु बेईमान व्यक्ति सजा नहीं पाते।
(c) यदि ईमानदारी अच्छी नीति है तो बेईमान व्यक्ति सजा पायेंगे।
(d) ईमानदारी अच्छी नीति है यदि, केवल यदि बेईमान व्यक्तियों को सजा मिले।

Ans. (b): ⇒ ईमानदारी अच्छी नीति है। इस कथन पर दो दृष्टिकोण से विचार किया जा सकता है। पहला संज्ञानवाद के दृष्टि से यह सत्य-असत्य है, इसका वर्णन भी किया जा सकता है। दूसरी दृष्टि असंज्ञानवाद की दृष्टि से इसे सत्य-असत्य नहीं कहा जाता क्योंकि यह मनोभाव की अभिव्यक्ति है।

39. निम्नलिखित में से कौन सा नैतिकता का परम सिद्धान्त है?
(a) ईश्वर (b) समाज
(c) सद्व्यवहार (d) सामन्जस्यता

Ans. (a): नैतिकता के परम सिद्धान्त के रूप में कांट तीन चीजे मानता है। इसे नैतिकता की पूर्वमान्यताएं भी कहते हैं। (1) स्वतंत्रता (2) आत्मा की अमरमा (3) ईश्वर का अस्तित्व।

40. दण्ड का कौन सा सिद्धान्त फाँसी की सजा का अनुमोदन करता है?
(a) सुधारात्मक
(b) प्रतिशोधात्मक
(c) सुधारात्मक और प्रतिशोधात्मक दोनों
(d) निषेधात्मक

Ans. (b): ⇒ दण्ड का सुधारात्मक सिद्धान्त को छोड़कर शेष दोनों सिद्धान्त प्रतिरोधात्मक तथा प्रतिशोधात्मक मृत्यु दण्ड की वकालत करते हैं।

41. यदि ए (A) प्रतिज्ञप्ति सत्य है तो ई (E), आई (I) और ओ (O) प्रतिज्ञप्तियाँ हैं
(a) असत्य, सत्य और असत्य
(b) असत्य, असत्य और असत्य
(c) सत्य, असत्य और असत्य
(d) सत्य, सत्य और असत्य

Ans. (a): ⇒परम्परा विरोध वर्ग में यदि (A) तर्कवाक्य सत्य है तो E तथा ओ तर्कवाक्य असत्य होगा तथा आई तर्क वाक्य सत्य होगा।

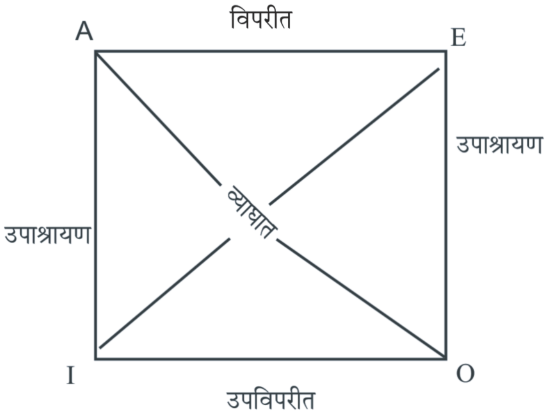

यदि E सत्य है तो -ओ सत्य होगा तथा A एवं I असत्य होगा।

42. न्यायवाक्य की भावदशा निर्भर करती है
(a) आधारिका की गुणवत्ता
(b) आधारिका की गिनती
(c) आधारिकाओं की गुणवत्ता और गिनती दोनों
(d) आधारिकाओं की गुणवत्ता और गिनती तथा निष्कर्ष

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d): निरपेक्ष न्यायवाक्य में तीन पद तथा दो या दो अधिक तर्कवाक्य होते हैं। न्यायवाक्य का भावदशा आधार वाक्यों की गुणवत्ता, गिनती निष्कर्ष, परिणाम पर निर्भर करता है।

43. न्यायवाक्य के प्रथम आकृति की व्यवस्था है

(a) $\begin{array}{c} P-M \\ \underline{S-M} \\ \underline{S-P} \end{array}$ (b) $\begin{array}{c} M-P \\ \underline{S-M} \\ \underline{S-P} \end{array}$

(c) $\begin{array}{c} P-M \\ \underline{M-S} \\ \underline{S-P} \end{array}$ (d) $\begin{array}{c} M-P \\ \underline{M-S} \\ \underline{S-P} \end{array}$

Ans. (b):
प्रथम आकृति

$\begin{array}{cc} m & p \\ \underline{s} & \underline{m} \\ \therefore sp \end{array}$

द्वितीय आकृति

$\begin{array}{cc} p & m \\ \underline{s} & \underline{m} \\ \therefore s\,p \end{array}$

तृतीय आकृति

$\begin{array}{cc} m & p \\ \underline{m} & \underline{s} \\ \therefore s\,p \end{array}$

चतुर्थ आकृति

$\begin{array}{cc} p & m \\ \underline{m} & \underline{s} \\ \therefore sp \end{array}$

44. युक्तियों की वैधता अथवा अवैधता के निर्धारण किसके विषय क्षेत्र में आता है?

(a) आगमन तर्क (b) निगमन तर्क
(c) प्रतीक तर्क (d) पारम्परिक तर्क

Ans. (b): तर्कवाक्य सत्य अथवा असत्य होते हैं। सभी तर्कवाक्य होते हैं लेकिन सभी वाक्य तर्कवाक्य नहीं होते हैं। निगमात्मक युक्तियां वैध-अवैध होती है। आगमात्मक युक्तियां उचित-अनुचित होती है।

45. निम्नलिखित न्यायवाक्य को पढ़िए और इसमें त्रुटि को चिन्हित कीजिए :
''सभी ग्रेजुएट मतदाता है।
जॉन ग्रेजुएट नहीं है।
जॉन मतदाता नहीं है।''

(a) चार पद की त्रुटि (b) अवितरित मध्य की त्रुटि
(c) अवैध पद आभास (d) गौड़ पद आभास

Ans. (c): ⇒ कोई भी निरपेक्ष न्यायवाक्य तभी वैध होती है जब निष्कर्ष में व्याप्त पद आधार में भी व्याप्त होना चाहिए। इस युक्ति के निष्कर्ष में मतदाता मुख्य पद व्याप्त है लेकिन आधार वाक्यों में मतदाता व्याप्त नहीं है। अतः यहां अव्याप्त मुख्य पद दोष है।

46. निरपेक्ष न्यायालय में मध्य पद निम्नलिखित में से किसमें आता है?

(a) केवल मुख्य आधार वाक्य में
(b) केवल अमुख्य आधार वाक्य में
(c) दोनों मुख्य और अमुख्य में
(d) केवल निष्कर्ष में

Ans. (c) : निरपेक्ष न्याय वाक्य में तीन और केवल तीन पद ही होने चाहिए। मुख्य पद, अमुख्य पद तथा मध्यम् पद। मध्यम् पद दोनों आधार वाक्यों में मुख्य या अमुख्य में होते हैं।

47. $p \supset q$ मिथ्या है, जब

(a) p सत्य है और q सत्य है।
(b) p सत्य है और q असत्य है।
(c) p असत्य है और q सत्य है।
(d) p असत्य है और q असत्य है।

Ans. (b)

p	q	$p \supset q$
T	T	T
T	F	F
F	T	T
F	F	T

$p \supset q$ केवल तभी असत्य है जब p सत्य हो लेकिन q असत्य हो।

48. उस कथन को जिसके असत्य स्थानापन्न उदाहरण होते हैं उसको कहते हैं

(a) पुनरुक्ति (b) व्याघाती
(c) आपातिक (d) आपादान

Ans. (b) : जिसके सभी सत्य स्थानापन्न उदाहरण होते हैं उसे पुनरुक्ति कहते हैं। जिसके स्थानापन्न उदाहरण सत्य तथा असत्य दोनों होते हैं उन्हें आपातिक कहते हैं।

49. निम्नलिखित में से कौन सी पुनरुक्ति है?

(a) $p \supset - q$ (b) $(p \supset \sim p) . (\sim p \supset p)$
(c) $p \supset (p \supset p)$ (d) $(p \supset p) \supset p$

Ans. (c) : जिनके सभी स्थापन्न उदाहरण सत्य होते हैं वही पुनरुक्ति कथन होते हैं।

(A)

P	~P	P ⊃ ~P
T	F	F
F	T	T

(B)

P,	~P,	(P ⊃ ~P),	(~P⊃P),	(P⊃P),	(P⊃~P)
T	F	F	T		F
F	T	T	F		F

(C)

P,	P	(P⊃ P),	P ⊃ (P ⊃ P)
T	T	T	T
F	F	T	T

(B)

P,	P	(P⊃P),	(P ⊃P) ⊃ P
T	T	T	T
F	F	T	F

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

50. सूची-I (प्रतीकात्मक रूप) को सूची-II (नियम) से सुमेलित कीजिए और प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I (प्रतीकात्मक रूप)	**सूची- II (अनुमान का नियम)**
A. $p \supset q$ p $\therefore$ q	i. वियोजक न्याययुक्ति
B. $p \supset q$ ~ q $\therefore$ ~ p	ii. परिकल्पित न्याययुक्ति
C. $p \supset q$ $q \supset r$	iii. मोडस टोलेन्स
D. p v q ~p $\therefore$q	iv. मोडस पोनेस

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iv	i	ii	iii
(b)	ii	i	iv	iii
(c)	iii	iv	i	ii
(d)	iv	iii	ii	i

Ans. (d) :

$P \subset q$

(a) $\dfrac{p}{\therefore q}$ → मोडस पोनेस

$P \quad \subset \quad q$

(b) $\dfrac{\sim q}{\therefore \sim P}$ → मोडस टोलेंस

$p \quad \subset \quad q$

(c) $\dfrac{q \quad \subset \quad \sim}{\therefore p \quad \subset \quad \sim}$ → परिकल्पित न्याययुक्ति

(d) $\dfrac{p \ v \ q \\ \sim p}{\therefore q}$ → वैकल्पित न्यायवाक्य

Disjunctiove syllogism (DS)

51. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची-I	**सूची-II**
A. जैन धर्म	1. गया
B. बौद्ध धर्म	2. आनन्दपुर साहिब
C. सिख धर्म	3. अजमेर
D. इस्लाम	4. वैशाली

कूट :

	A	B	C	D
(a)	4	1	2	3
(b)	4	2	3	1
(c)	3	2	1	4
(d)	3	4	1	2

Ans. (a) :

जैन धर्म → वैशाली

बौद्ध धर्म → गया

सिख धर्म → आनन्दपुर साहिब

इस्लाम → अजमेर

52. निम्नलिखित में से कौन सा धर्म है जो 'साधु' को अपना आदर्श मानता है?

(a) ईसाई धर्म (b) सिक्ख धर्म
(c) जैन धर्म (d) हिंदू धर्म

Ans. (c) : जैन धर्म के दो सम्प्रदाय दिगम्बर तथा श्वेताम्बर हैं दिगम्बर के मुनि होते हैं उनके वाक्यों को आगम कहा गया है। इन्हें तीर्थंकर भी कहते हैं। जैन धर्म में कुल 24 तीर्थंकर का नाम मिलता है। प्रथम ऋषभेदव थे 24वें महावीर थे।

53. निम्नलिखित में से कौन सा ईशदूतीय धर्मो का युग्म है?

(a) जैन धर्म और बाद्ध धर्म
(b) ईसाई धर्म और इस्लाम
(c) सिक्ख धर्म और इस्लाम
(d) हिंदू धर्म और जोरास्त्रियम धर्म

Ans. (b): ⇒ ईसाई और इस्लाम ईशदूतीय धर्म माने जाते हैं। जैन-बौद्ध धर्म श्रमण परम्परा के माने गये हैं।

54. निम्नलिखित में से किस पथ का समर्थन बुद्ध ने किया?

(a) श्रेय (b) मध्यम प्रतिपदा
(c) प्रेम (d) कैवल्य

Ans. (b): श्रोयस तथा प्रेयस उपनिषद की अवधारणा है। कैवल्य जैन धर्म के केवली के लिए प्रयोग किया है। मध्यम् प्रतिपदा महात्मा बुद्ध का मार्ग है।

55. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I	**सूची-II**
A. थिरुवल्लूवर	1. दश आदेश (टेन कमांडमेंट)
B. लॉर्ड स्वामीनारायण	2. कुरल
C. मोसिस	3. नैतिशतक
D. भ्रतृहरि	4. शिक्षापत्री

कूट :

	A	B	C	D
(a)	3	4	1	2
(b)	4	2	1	3
(c)	2	4	1	3
(d)	3	1	2	4

Ans. (c) :

(a) थिरुवल्लूर → कुरल
(b) लार्ड स्वामीनारायण → शिक्षापात्री
(c) मोसिस → दश आदेश (टेन कमाडमेंट)
(d) भ्रतृहरि → नीतिशतक

56. सुप्रसिद्ध पुस्तक 'लिंग्यूस्टिक टर्न' का लेखक कौन है?

(a) जी.ई.मूरे (b) बेरट्रंड रस्सेल
(c) विट्गिनस्टीन (d) रिचर्ड रोटरी

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) :

लेखक		पुस्तक
जी.ई. मूर	-	कॉमन सेंस (Comman sense)
विटगेंस्टाइन	-	टैक्टेटस,
रिचर्ड रोटरी	-	लिग्यूस्टिक टर्न

57. रस्सेल के विवरण सिद्धान्त को चुनौती दी

(a) ए.जे. अय्यर (b) पी.एफ. स्ट्रासन
(c) जे.एल. आस्टिन (d) डी. डेविडसन

Ans. (b) : रसेल का लेख On Denating के 45 वर्ष बाद पी.एस. स्ट्रासन ने अपने लेख On Refferring में रसेल के वर्णन सिद्धान्त का खण्डन करता है। रसेल The तथा A के आधार पर निश्चित वर्णन तथा अनिश्चित वर्णन का भेद करता है लेकिन स्ट्रासन अनुसार The का प्रयोग अनिश्चित तथा निश्चित वर्णन दोनों के लिए होता है।

58. संवेदन और संदर्भ में भेद किसने किया?

(a) फ्रेगे (b) विट्गेन्सटाइन
(c) क्वाइन (d) डमेट्

Ans. (a) : विट्गेन्सटाइन के अनुसार मेरी भाषा की सीमा मेरी जगत की सीमा है। भाषा विचार के अभिव्यक्ति करती है और विचार की सीमा जगत की सीमा है। फ्रेगे sense और reference में भेद करता है वही विट्गेन्सटाइन भेद नहीं करता है।

59. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I (दार्शनिक)	सूची-II (सिद्धान्त)
A. जे.एल. आस्टिन	i. भाषा के खेल
B. एल. विटगेन्सटाइन	ii. भाषण क्रियाएँ
C. डब्ल्यू.वी. कूआइन	iii. मन्तव्यता सिद्धान्त
D. जाह्न सीयरले	iv. इंद्रियानुभववाद के दो सिद्धान्त

कूट :

	A	B	C	D
(a)	iv	iii	ii	i
(b)	iii	iv	i	ii
(c)	ii	i	iv	iii
(d)	iii	iv	ii	i

Ans. (c) :

(a) जे. एल. आस्टिन	-	भाषण क्रियाएँ
(b) एल. विटगेन्सटाइन	-	भाषा के खेल
(c) डब्लू.वा. कूआइन	-	इंद्रियानुभववाद के दो सिद्धान्त
(d) जाह्न सीयरले	-	मन्तव्यता सिद्धान्त

60. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :

सूची-I (पुस्तक)	सूची-II (लेखक)
A. फाउंडेशन आफ अरिथमैटिक	i. डेविडसन
B. इंट्रोडक्शन टू मैथिमैटिकल फिलासोफी	ii. कूआइन
C. फ्रौम ए लाजिकल प्वाइंट ऑफ व्यू	iii. रस्सेल
D. इनक्वारीज़ इन टू ट्रूथ एण्ड इण्टरप्रिटेशन	iv. फ्रेगे

कूट :

	A	B	C	D
(a)	ii	i	iv	iii
(b)	iv	iii	ii	i
(c)	iv	i	ii	iii
(d)	iii	iv	i	ii

Ans. (b) :

(a) फाउंडेशन ऑफ अरिथमैटिक	-	फ्रेगे
(b) इंट्रोडक्शन टू मैथिमैटिकल फिलासोफी	-	रस्सेल
(c) फ्रैम ए लाजिकल प्वाइंट ऑफ व्यू	-	कूआइन
(d) इनक्वारीज इन टू ट्रूथ एण्ड इण्टरप्रिटेशन	-	डेविडसन

61. संवृत्तिशास्त्रीय गवेषणा की पद्धति है

(a) द्वन्द्वात्मक (b) आनुभूतिक
(c) लोकातीत (d) कोष्ठकीय तकनीक

Ans. (d) : एडमण्ड हुर्सरल वह पहला दार्शनिक है जो Phenomenology संवृत्तिशास्त्र (आभासिकीशास्त्र) शब्द का प्रयोग सम्पूर्ण दर्शन के लिए किया। अपनी पुस्तक 'लॉजिकल इन्वेस्टिगेंशन' में आभासिकी (Phenomenology) को आत्मनिष्ठ प्रक्रियाओं के वर्णनात्मक विश्लेषण के रूपे में परिभाषित किया है।

62. संवृत्तिशास्त्र है।

(a) आत्मनिष्ठ घटना की विवरणात्मक व्याख्या
(b) घटना का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
(c) जगत् का यथार्थवादी अध्ययन
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (a): हुर्सरल के अनुसार प्रत्येक चेतना का एक विषय होता है जो चेतना में अन्तरभूत वस्तुनिष्ठता के रूप में स्थित होता है। इसलिए चेतना को शुद्ध होना चाहिए। इसीलिए हुर्सरल कोष्टीकरण की तकनीक के चेतना को शुद्ध करता है।

63. आधुनिक संवृत्तिशास्त्र के संस्थापक है

(a) ब्रिन्टानो (b) मिनांग
(c) हुसर्ल (d) पर्स

Ans. (c) : ब्रिन्टानो का चेतना का विषयपक्षी सिद्धान्त है। मिनांग एक ज्ञानमीमांसीय दार्शनिक है। पर्स एक अमेरिकी अर्थक्रियावादी दार्शनिक है।

64. किसने कहा कि शब्दार्थ मीमांसा तत्त्वमीमांसा है?

(a) हाइडेगर (b) श्लेमरमेकर
(c) रैंकी (d) डिल्थी

Ans. (a): हाइडेगर की पुस्तक (Being and time) है। हाइडेगर हरमूनिटिम्स के साथ अस्तित्ववादी दार्शनिक है। शब्दार्थ मीमांसा तत्वमीमांसा है। उसके अनुसार शब्द का विश्लेषण तथा शब्द का अर्थ यह तत्वमीमांसा के अध्ययन का विषय है।

65. निम्नलिखित में से किसने समीक्षात्मक शब्दार्थ मीमांसा में योगदान किया है?

(a) हाइडेगर (b) हैबरमास
(c) रिचर्ड रोर्टी (d) गैडेमर

Ans. (b): हाइडेगर एक तत्वमीमांसीय व्योत्पत्तिशास्त्री है। हैबरमास की पुस्तक - द फिलॉसाफिकल डिस्कर्स ऑफ मॉडर्निटी है। हैबरभास नए सामाजिक आन्दोलन नारी आन्दोलन, पर्यावरण, दलित

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

एवं प्रति-संस्कृति आन्दोलन को विवेक सम्मत स्वरूप प्रदान करने का भी कार्य किया है। 'ज्ञान और मानव' सिद्धान्त भी दिया है।

66. निम्नलिखित में से कौन सा वैष्णवाद के वर्ग में नहीं आता?

(a) रामानुज (b) शंकर
(c) माधव (d) वल्लभ

Ans. (b) : शंकराचार्य अद्वैतवाद के संस्थापक है लेकिन गौडपाद सर्वप्रथम अद्वैतवाद की व्याख्या किया है। शंकराचार्य ज्ञानमार्गी है। रामानुज, मध्व, निम्बकाचार्य तथा बल्लभाचार्य से सभी भक्तिमार्गी है और वैष्णववादी है।

67. निम्नलिखित में से 'पुष्टि' का पक्षधर कौन है?

(a) रामानुजा (b) माधव
(c) वल्लभ (d) शंकर

Ans. (c) : रामानुज -विशिष्टाद्वैतवादी है। माधव द्वैतवादी है बल्लभाचार्य पुष्टि मार्ग का अनुसरण करते हैं। शंकराचार्य अद्वैतवादी तथा ज्ञानमार्ग है।

68. निम्नलिखित में से कौन शाश्वत नरक का उपबन्ध करता है?

(a) शंकर (b) माधव
(c) निम्बार्क (d) वल्लभ

Ans. (b) : मध्यवाचार्य के अनुसार जीव अविद्या का आश्रय है। आत्मा अणु रूप है तथा चेतना आत्मा का अनिवार्यगुण है। जीवों की चार रूपों में अभिव्यक्ति होती है।

1. जीवाच्छेदक - जीव के ऊपर एवं आनन्द के ऊपर आवरण डालती है।
2. परमाच्छेदक - परमात्मा के रूप में जानने में बांधा डालती है।
3. शैवल- जीव को जगत के बंधन में डालती है।
4. मायिक- माया जनित कार्यों की रचना करती है।

69. निम्नलिखित में से पंच भेद का समर्थन कौन करता है?

(a) शंकर (b) रामानुजा
(c) माधव (d) वल्लभ

Ans. (c) : माधवाचार्य ने भेदवाद की स्थापना किया है। वह पंच भेद का समर्थन करते है।

1. ईश्वर एवं जीव का भेद
2. जीव एवं जीव का स्पष्ट भेद
3. ईश्वर एवं जड़ का भेद
4. जड़ एवं जड़ का भेद
5. जीव एवं जड़ का भेद

70. शंकर के अनुसार 'तत्त्वमसि' का अर्थ है

(a) जगत और ईश्वर के बीच तादात्म्य
(b) ज्ञाता और ज्ञेय के बीच तादात्म्य
(c) जीव और ब्रह्म के बीच तादात्म्य
(d) जगत और आत्मा के बीच तादात्म्य

Ans. (c) : छांदोग्य उपनिषद में कहा गया है कि 'तत्त्वमसि' यह तीन शब्दों से मिलकर बना है। तत् + त्वम् + असि - यहाँ तत् पर-ब्रह्म के लिए, त्वम् सीमित जीव के लिए, जबकि असि का अर्थ है कि - ''है''। इस प्रकार तत्वमसि का अर्थ है- जीव ही ब्रह्म है। अर्थात् जीव एवं ब्रह्म में तादात्म्य संबंध है।

71. गांधीजी के अनुसार सत्य के उच्चतम आदर्श का पालन होना चाहिए

(a) विचार (b) कथन
(c) कर्म (d) उपरोक्त सभी

Ans. (d) : जैन दर्शन की भांति गांधी का विचार है कि अहिंसा का पालन, मन, वचन, कर्म से करना चाहिए। गांधी के कुल 11 धर्म है जिनका पालन मनुष्य को करना चाहिए।

72. जब किसी व्यक्ति ने अहिंसा को डरपोक का धर्म बतलाया तो गाँधी ने उस

(a) व्यक्ति की भर्त्सना की।
(b) प्रतिक्रिया की नहीं की।
(c) चुप रहे।
(d) व्यक्ति को मात्र नज़र-अंदाज किया।

Ans. (a) : गांधी के अनुसार मनुष्य स्वभावतः अहिंसाप्रिय है। वह हिंसक केवल परिस्थितिवश ही होता है। मनुष्य में निरंतर हिंसक वृत्ति का विकास हो रहा है। गांधी कहा करते थे कि अहिंसक होना हिंसक होने से कठिन है क्योंकि अहिंसक होने पर किसी को कष्ट नहीं देना है।

73. 'स्वदेशी' में गांधी विचारधारा में निहित है

(a) उसी का प्रयोग करना जिसका स्वयं ने उत्पादन किया है
(b) विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार
(c) अपने आसपास की सेवाओं तक सीमित रहना
(d) स्थानीय उत्पादों से परे न जाना

Ans. (c) : गांधी का मानना था कि उत्पादन आवश्यकतानुसार किया जान चाहिए। स्वदेशी स्वयं के क्षेत्र पर उत्पादन का उपभोग करना है। इसी स्वदेशी से ही स्वराज्य का निर्माण होता है। गांधी राज्यविहीन समाज की कल्पना की थी। इसलिए वे राज्य को न्यूनतम शक्ति प्रदान की थी।

74. गांधी के 'रोटी के लिए श्रम' के सिद्धान्त में अनिवार्यता सम्मिलित है

(a) मानसिक कार्य (b) शारीरिक कार्य
(c) सामाजिक कार्य (d) उपरोक्त सभी

Ans. (b): गांधी के अनुसार, मानसिक श्रम तथा शारीरिक श्रम का समन्वय होना चाहिए। वे कहते थे कि शारीरिक श्रम भोजन के लिए अथवा जीविकोपार्जन के लिए करना चाहिए तथा मानसिक श्रम सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए करना चाहिए।

75. गांधी विचारधारा के आर्थिक कार्यक्रम आधारित थे

(a) आर्थिक समझ के सैद्धान्तिक सिद्धान्त
(b) लोगों की आवश्यकताओं के लिए उत्पादन करना
(c) आत्म-निर्भरता का आदर्श
(d) समस्त आर्थिक उत्पादन में हिस्सेदारी

Ans. (c) : ⇒ गांधी ने समानता के लिए न्यासधारिता का सिद्धान्त दिया था उनके अनुसार सभी सम्पत्ति गोपाल की है, हम उसके रक्षक मात्र हैं। इस प्रकार समस्त निजी पूंजी एक ट्रस्ट के रूप में रखी जानी चाहिए और पूंजीपति को यह समझना चाहिए कि वह सम्पत्ति निजी लाभ के लिए नहीं है वरन् समस्त समाज के लाभ के लिए है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2012
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. वेदों के पक्ष में दी गई युक्तियों में सम्मिलित है :
(a) रचनाकार की शक्ति (b) रचनाकारों के पात्र
(c) रचनाकारों के उद्देश्य (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (d) वेद के अध्ययन से हमें लौकिक और अलौकिक विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। वेद ज्ञान के भंडार है। वेद के चार भाग है- पहला ऋग्वेद, दूसरा- यजुर्वेद, तीसरा- सामवेद, चौथा- अथर्ववेद। ज्ञान और सुख की प्राप्ति ही वेद का परम ध्येय है। सामान्यतः ईश्वर को रचनाकार माना गया है। अतः वेदों के पक्ष में दी गयी युक्तियों में से कोई सम्मिलित नहीं है।
'भारतीय दर्शन की रूपरेखा- प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा'

2. आत्मा की प्रकृति के प्रश्न पर चार्वाक दर्शन शास्त्रियों को वर्गीकृत किया जा सकता है:
(a) देहात्मवादी (b) प्राणवादी
(c) इन्द्रियात्मवादी (d) उपरोक्त सभी

Ans : (a) चार्वाक आत्मा को शरीर से भिन्न नहीं मानता है। आत्मा और देह के बीच अभेद मिटने के फलस्वरूप चार्वाक के आत्मा सम्बन्धी विचार को देहात्मवाद कहा जाता है। अर्थात आत्मा शरीर है शरीर आत्मा है।
भारतीय दर्शन के रूपरेखा- प्रो. हरेन्द्र प्रसद सिन्हा

3. यज्ञ का हव्य किसके लिए लाभप्रद होता है?
(a) ऋत्विक (b) हव्य का उपभोक्ता
(c) देवता (d) इनमें से कोई नहीं

Ans : (b) ऋग्वैदिक काल में यज्ञ करने की प्रथा प्रचलित थी, यज्ञ के समय अग्निकुण्ड में डलने वाली समाग्री को हव्य कहते हैं और यही हव्य अग्नि के माध्यम् से देवताओं को प्राप्त होते हैं। ऐसा माना जाता है। देवता हव्य प्राप्त करने के उपरान्त यज्ञानुरूप फल देने के लिए बाध्य होते थें। ऋत्विक एक नैतिक व्यवस्था है, जिसे 'ऋतम् सत्यं च धर्माः' कहा गया है, अर्थात ऋत् सत्य है और धर्म भी है।
भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा- डॉ. राममूर्ति पाठक

4. वैदिक शब्द ऋत् का अभिप्राय है-
(a) नैतिक आदेश
(b) सार्वभौमिक आदेश
(c) नैतिक एवं सार्वभौमिक दोनों आदेश
(d) न नैतिक और न ही सार्वभौमिक आदेश

Ans : (c) वेदों में आचार सम्बन्धी सिद्धान्तों का विवेचन 'ऋत की अवधारणा' के रूप में हुआ है। वेदो में देवताओं के वर्णन में 'ऋतस्य गोप्ता' (ऋत के परिरक्षक) और ऋतायु (ऋत का अभ्यास करने वाला) शब्दों का प्रयोग बार-बार हुआ है। 'ऋत' विश्वव्यवस्था के अतिरिक्त नैतिक व्यवस्था के अर्थ में प्रयुक्त हुआ हैं ऋग्वेद में वर्णित ऋत वह नियम है जो संसार में सर्वत्र व्याप्त है एवं सभी मनुष्य एवं देवता उसका पालन करते है। अतः ऋत सत्यं च धर्माः अर्थात ऋत सत्य और धर्म हैं। ऋत का संरक्षक (रक्षा करने वाला) वरूण को कहा जाता है।

5. निम्नलिखित में से कौन सा दर्शनशास्त्री यह विरोध नहीं करता कि ज्ञान के लिए प्रत्यक्ष वैध स्रोत है?
(a) जयराशि भट्ट (b) श्री हर्ष
(c) गौतम (d) नागार्जुन

Ans : (c) न्यायदर्शन के प्रणेता महार्षि गौतम ने ज्ञान प्राप्त करने के चार साधन बताए है, प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द तथा उपमान। उनके अनुसार ज्ञान यथार्थ अनुभव है। गौतम के अनुसार वैध ज्ञान प्राप्त करने में प्रत्यक्ष एक स्रोत हैं। गौतम की रचना 'न्यायसूत्र' में प्रत्यक्ष का लक्षण इस प्रकार है कि 'इन्द्रियार्थसन्निकर्षेत्पन्नं ज्ञानम् अव्यपदेशम् अव्यभिचारी व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्'' अर्थात इन्द्रिय-विषय के संपर्क से उत्पन्न होने वाला त्रुटिरहित, अव्यपदेश्यम् एवं व्यवसायात्मक ज्ञान प्रत्यक्ष है।

6. निम्नलिखित में से कौन सा ब्रह्म विहार का अंश नहीं है?
(a) मैत्री (b) दया
(c) मुदिता (d) उपेक्षा

Ans : (b) बौद्ध दर्शन के महायान सम्प्रदाय से सम्बन्धित मोक्ष (निर्वाण) की अवधारणा है जो मानता है कि निर्वाण प्राप्त व्यक्ति ब्रह्मविहार, मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा से सम्पुष्टि होता है। वह हीनयानीयों के स्वकल्याण (स्वमुक्ति) के विपरीत सर्वकल्याण (सार्वभौमिक मुक्ति) की कामना करता है।
भारतीय दर्शन की रूपरेखा- प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा

7. बौद्ध सिद्धान्त के प्रतीत्यसमुत्पाद को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है:
(a) कोई स्थायी आत्मा नहीं है।
(b) जो भी है, वह क्षणिक है।
(c) यहाँ कुछ तत्वों का उद्भव नहीं है।
(d) जिस किसी का उद्भव होता है, उसका किसी शर्त पर उद्भव होता है।

Ans : (d) बौद्ध दर्शन के द्वितीय आर्यसत्य- दुःख समुदाय के अन्तर्गत बुद्ध का केन्द्रिय सिद्धान्त प्रतीत्यसमुत्पाद आता है जिसे कारणता का सापेक्षता का सिद्धान्त भी कहते हैं (सापेक्ष कारणतावाद)। प्रतीत्य समुत्पाद में प्रतीत्य का अर्थ है 'अपेक्षा रखकरः या निर्भर या अश्रित रहकर एवं समुत्पाद का अर्थ है - उत्पत्ति। अतः प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ हुआ- कारण की अपेक्षा रखकर या कारण पर निर्भर रहकर कार्य की उत्पत्ति। इस प्रकर कार्य सदा कारण सापेक्ष होता है। इस प्रकार जिस किसी का उद्भव होता है उसका किसी शर्त पर उद्भव होता है।
स्रोत- भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन - डॉ. सी.डी. शर्मा

8. जैन धर्म के अनुसार मुक्ति है:
(a) जन्म और मृत्यु से छुटकारा (b) कर्म से छुटकारा
(c) द्रव्य से छुटकारा (d) उपरोक्त सभी

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) जैन दर्शन के अनुसार जीव (आत्मा) के बन्धन का कारण उसमें कर्म-पुदगल का होना है। जैन-दर्शन जीव को ही आत्मा माना गया है। जीव शरीर के साथ संयोग की कामना करता है। शरीर का निर्माण पुद्गल कणों से हुआ है। इस प्रकार जीव का पुद्गल के साथ संयोग ही बन्धन है। अज्ञान से अभिभूत होने के कारण जीव में वासनाएँ निवास करती है। इन वासनाओं के कारण जीव शरार के लिए लालायित रहता है। जीव अपने कर्म के अनुसार ही पुद्गल कणों को आकृष्ट करता है। इसलिए आकृष्ट पुद्गल कणों को कर्म-पुदगल कहा जाता है। इसी कर्म-पुद्गलों से छुटकारा पाना ही मुक्ति है। मुक्ति से जन्म और मृत्यु से छुटकारा मिल जाता है तथा जीव के गुण तथा पर्याय युक्त द्रव्य से भी मोहभंग हो जाता है।

स्रोत- भारतीय दर्शन की रूपरेखा- प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिंहा

9. जैन धर्म के अनुसार मुक्ति को कहा जाता है:

(a) भाव मोक्ष
(b) द्रव्य मोक्ष
(c) भाव मोक्ष और द्रव्य मोक्ष दोनों
(d) न भाव मोक्ष और न ही द्रव्य मोक्ष

Ans : (c) जैन दर्शन में कर्म- पुद्गलों से छुटकारा पाना ही मुक्ति है इसके दो भेद होते है। 1. भाव मोक्ष 2. द्रव्य मोक्ष। भावमोक्ष- जब कर्म-पुद्गलों से छुटकारा पाने का विचार मन में उठता है तब उसे भावमोक्ष कहते है, तथा जब कर्म-पुद्गलों से छुटकारा वास्तविक रूप में मिल जाता है तब उसे द्रव्य मोह या द्रव्यमुक्ति कहते है।

स्रोत- भारतीय दर्शन की रूपरेखा - प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिंहा

10. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म संगत है?

(a) शून्यवाद - चन्द्रकीर्ति (b) निर्गुण - रानामुज
(c) सत्कार्यवाद - गौतम (d) कर्मवाद - चार्वाक

Ans : (a) बौद्ध दर्शन के आचार्य नागार्जुन का सिद्धान्त शून्यवाद या माध्यमिकवाद है। चन्द्रकीर्ति ने इसी शून्यवाद को आगे बढ़ाया है। निर्गुण रामानुज को नहीं बल्कि शंकराचार्य को माना जाता है। सत्यकार्यवादी गौतम नहीं बल्कि सांख्य दार्शनिक मानते है। चार्वाक को छोड़कर सभी भारतीय सम्प्रदाय 'कर्मवाद' के सिद्धान्त को स्वीकार करते है।

स्रोत- भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन - डॉ. चन्द्रधर शर्मा

11. यह विचार कि प्रत्येक प्रकार के प्रत्यक्ष निर्विकल्पक होते हैं, इस विचार को किसने ठीक ठहराया है?

(a) न्याय (b) वैशेषिक
(c) बौद्ध (d) विशिष्टाद्वैत

Ans : (c) न्याय-वैशेषिक दर्शन में प्रत्यक्ष की दो अवस्थाए मानी गयी है - 1. निर्विकल्प प्रत्यक्ष, 2. सविकल्प प्रत्यक्ष
निर्विकल्प प्रत्यक्ष ज्ञान की प्रथम् अवस्था है। जब इन्द्रियाँ विषय के सम्पर्क में जाती है, तो उससे जो संवेदनाए लाती हैं। उन्ही शुद्ध संवेदनाओं को निवर्किल्प प्रत्यक्ष कहते है। जब ये संवेदनाएँ बुद्धि विकल्पों के माध्यम् से व्यवस्थित हो जाती है तब उनमें नाम, जाति, कल्पना का समावेश हो जाता है। इसे ही सविकल्पक प्रत्यक्ष कहते है। लेकिन जहां न्याय दर्शन सविकल्प प्रयक्ष को वास्तविक मानता है वहीं बौद्ध दर्शन या बौद्ध दार्शनिक आचार्य दिगनाग निर्विकल्प प्रत्यक्ष को ही वास्तविक प्रत्यक्ष कहते है।

स्रोत- भारतीय आलोचन और अनुशीलन- चन्द्रधर शर्मा।

12. प्रपत्ति इनके बीच का सम्बन्ध है:

(a) जीव और जगत (b) ब्रह्म और जगत
(c) जीव और ईश्वर (d) जीव और ब्रह्म

Ans : (d) विशिष्टाद्वैतवाद के संस्थापक श्री रामानुजाचार्य मोक्ष का एक अन्य मार्ग बताते है इसे प्रपत्तिमार्ग कहते है वैसे तो रामानुज भक्ति को ही मोक्ष का साधन मानते है। लेकिन प्रपत्ति भी एक मोक्ष मार्ग हैं ईश्वर के प्रति अपने को पूर्णतया समर्पण कर देना ही प्रपत्ति हैं यह सर्वसुलभ मार्ग है। जहां जीव ब्रह्म में पूर्णतया समर्पित होता है।

स्रोत- भारतयी दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा- डॉ. राममूर्ति पाठक

13. वैशेषिका स्कूल के अनुसार सार्वभौमिक 'गोत्व' है:

(a) अशाश्वत और कई
(b) शाश्वत और कई
(c) शाश्वत, एक और जो कइयों में निवास करता है।
(d) अशाश्वत और एक

Ans : (c) न्याय-वैशेषिक में सामान्य की विशेषताओं को इस प्रकार व्यक्त किया गया है "नित्यमेकमनेकानुगतं सामान्यतम्"। सामान्य नित्य, एक और अनेक वस्तुओं में सामविष्ट है। एक वर्ग के सभी व्यक्तियों में एक ही सामान्य होता है। इसका कारण यह है कि एक वर्ग के विभिन्न व्यक्तियों का एक ही आवश्यक गुण होता है। इस प्रकार मनुष्य का सामान्य गुण मनुष्यत्व और गाय का सामान्य गुण 'गोत्व' होता है। सामान्य शाश्वत, सार्वभौमिक, अनादि और अनन्त है।

स्रोत- भारतीय दर्शन की रूपरेखा- प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा

14. व्याप्ति को उचित रूप से इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है:

(a) अपरिवर्त्य सहवर्तन (b) कारणात्मक सम्बन्ध
(c) क्रम (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (a) व्याप्य और व्यापक का सम्बन्ध व्यप्ति है। इसे स्वभाविक सम्बन्ध, हेतु और साध्य का नियत साहचर्य सम्बन्ध या अविनाभाव नियम भी कहते है। व्याप्ति अनुमान का प्राण है क्योंकि बिना व्याप्ति ज्ञान के अनुमान सम्भव नहीं है व्याप्ति उपाधिरहित (अनौपधिक) नियत साहचर्य संबंध है। जैसे- जहाँ धुआ होगा वहाँ आग अवश्य होगी लेकिन यह सम्भव है कि किसी स्थल पर आग हो, किन्तु धुआँ न हो जैसे- तपा हुआ आग का गोला। अतः नियत सहचर्य संबंध ही व्याप्ति है।

स्रोत-राममूर्ति पाठक

15. ज्ञान के स्रोत के सम्बन्ध में मीमांसा दर्शन की एक अनूठी खोज है:

(a) अनुपलब्धि (b) अनुमान
(c) तुलनात्मक (d) साक्ष्य

Ans : (a) भारतीय दर्शन में ज्ञान प्राप्त करने के स्रोत (साधन) कुल छः प्रमाण (साधन) की चर्चा हुयी हैं प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि है। मीमांसा दर्शन अभाव का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनुपलब्धि को स्वतंत्र प्रमाण स्वीकार किया गया है वही न्याय दर्शन अभाव का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण स्वीकार करता है और अनुपलब्धि को स्वतंत्र प्रमाण नहीं मानता है उसे प्रत्यक्ष प्रमाण में ही स्वीकार करता है।

स्रोत-राममूर्ति पाठक

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

16. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प मीमांसा द्वारा स्वीकार्य है?

(a) स्वतः प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य
(b) परतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य
(c) स्वतः प्रामाण्य, परतः अप्रामाण्य
(d) परतः प्रामाण्य, स्वतः अप्रामाण्य

Ans : (c) मीमांसा के अनुसार प्रामाण्य स्वतः है, परन्तु अप्रामाण्य परतः है। इसका तात्पर्य यह है कि जिन कारणों से ज्ञान उत्पन्न होता है उन्ही कारणों से ज्ञान के प्रामाण्य की भी उत्पत्ति होती है। अतः प्रामाण्य स्वतोग्राह्य है, परन्तु जिन कारणों से ज्ञान उत्पन्न होता है उन्ही कारणों से ज्ञान का अप्रामाण्य नहीं उत्पन्न होता है। इसके लिए अन्य कारणों की उपेक्षा होती है इसलिए अप्रामाण्य परतोग्राह्य हैं। इसे याद करने की एक साधारण ट्रिक-

प्रामाण्यवाद
- प्रामाण्यवाद
  - स्वतः प्रामाण्यवाद: सांख्य दर्शन, → जैन दर्शन, → मीमांसा दर्शन, → वेदान्त
  - परतः प्रामाण्यवाद: न्यायदर्शन, → बौद्ध दर्शन
- अप्रामाण्यवाद
  - स्वतः अप्रामाण्यवाद: → बौद्ध दर्शन, → सांख्य दर्शन, → जैन दर्शन
  - परतः अप्रामाण्यवाद: न्यायदर्शन, मीमांसा दर्शन, वेदान्त

स्रोत- प्रमाण परिचय- डॉ. बी.एन. सिंह।

17. सांख्य का कारणता सिद्धान्त आधारित है:

(a) कार्य का कारण से सम्बन्ध नहीं है।
(b) कार्य पहले से ही कारण में अवस्थित नहीं रहता।
(c) कार्य शून्य से पैदा किया जाता है।
(d) कार्य पहले से ही कारण में अवस्थित रहता है।

Ans : (d) सांख्य के कारणता सिद्धान्त को सत्कार्यवाद कहते है। सत्कार्यवादियों के अनुसार कार्य उत्पत्ति के पूर्व अपने कारण में विद्यमान रहता है अतः कार्य कोई नवीन रचना नहीं है बल्कि केवल अव्यक्त का व्यक्त होना है। कारणावस्था अव्यक्ता अवस्था है जबकि कार्यावस्था व्यक्ता अवस्था है अतः कार्य पहले से ही कारण में अवस्थित रहता है।

स्रोत- भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा- राममूर्ति पाठक

18. पतंजलि के अनुसार सास्मिता है:

(a) योग (b) समाधि
(c) आसन (d) प्राणायाम

Ans : (b) समाधि का अर्थ है ध्येय वस्तु में चित्त की विक्षेपरहित एकाग्रता है। समाधि के दो भेद है संप्रज्ञात और असंप्रज्ञात, संप्रज्ञात समाधि चार प्रकार की होती है-

सवितर्क - चित्त पदार्थ के सम्पर्क में आकर उसका आकार ग्रहण कर लेता है एवं इस प्रकार वस्तु के स्वरूप का साक्षात्कार करता है अतः सवितर्क समाधि में स्थूल वस्तु की भावना की जाती है।

सविचार - जहाँ तन्मात्रा आदि सूक्ष्म वस्तु की भावना की जाती है उसे सविचार समाधि कहते है।

सानन्द - सानन्द समाधि में सूक्ष्म सुखात्मक इन्द्रियों की भावना की जाती है।

सास्मिता-सास्मित समाधि में नितान्त सूक्ष्म अस्मिता या चित्रकाशित बुद्धि की भावना की जाती है। यही योग का चरम लक्ष्य है।

स्रोत - भारतीय दर्शन आलोचन और अनुशीलन-चन्द्रधरशर्मा

19. शंकराद्वैत द्वारा प्रतिपादित कारणता के सिद्धान्त को परिपुष्ट किया:

(a) अनुभव (b) तर्क
(c) ग्रंथ (शास्त्र) (d) उपरोक्त सभी

Ans : (b) शंकराचार्य के अनुसार कारणता के सिद्धान्त को पुष्टि करते हुए विवर्तवाद का समर्थन किया है। और तर्को द्वारा उसे परिपुष्ट किया। विर्तवाद के अनुसार कारण अपने कार्य का वास्तविक रूपान्तरण न होरक केवल आभासात्मक परिवर्तन परिणाम होता है। अतः शंकर ने कारणता के सिद्धान्त को केवल तर्क द्वारा ही परिपुष्ट किया।

20. यह सिद्धान्त, कि कार्य केवल कारण का प्रत्यक्ष परिणाम होता है, इस सिद्धान्त को कहते हैं:

(a) सत्कार्यवाद (b) असत्कार्यवाद
(c) परिणामवाद (d) विवर्तवाद

Ans : (d) कार्य अपने कारण रूप में सत् रहता है यह सत्कार्यवाद हैं। कार्य अपने कारण रूप में असत् है यह असत्कार्यवाद हैं। कारण अपने कार्य रूप में वास्तविक परिवर्तन होता है यह यह परिणामवाद है। कारण अपने कार्य रूप में वास्तविक परिवर्तन न होकर न आभासमात्र होता है यह विवर्तवाद हैं इस प्रकार- सांख्य, योग, वेदान्त सत्कार्यवादी है तथा न्याय-वैशेषिक असत्कार्यवादी हैं।

स्रोत- चन्द्रधर शर्मा

21. निम्नलिखित तर्को के आधार पर बतलाइए कि डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने भारत में प्रचलित जाति प्रथा का विरोध क्यों किया?

(a) .... क्योंकि यह भारतीय राष्ट्र में भेदभाव, सामाजिक अन्याय और असमानता को उपजाता है।
(b) .... क्योंकि यह विदेशी प्रवर्तन है।
(c) .... क्योंकि यह वैदिक दाय है।
(d) .... क्योंकि इसका सुझाव स्मृतियाँ देती हैं।

Ans : (a) डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने भारतीय राष्ट्र में भेदभाव तथा असमानता से क्षुब्ध होकर बौध धर्म को ग्रहण कर लिया था उन्हे बौधिष्ठ कहते हैं। उन्होने जाति प्रथा का कट्टर विरोधी माना जाता है।

22. श्री अरबिन्दो द्वारा स्वीकृत विकास-सिद्धान्त कहा जाता है:

(a) उद्गामी विकास (b) यांत्रिक विकास
(c) समग्र विकास (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) श्री अरबिन्द 'The life Divine' नामक पुस्तक में वे स्पष्ट कहते है कि आरोह बिना अवरोहण के, उत्थान बिना अवतरण के, विकास बिना प्रतिविकास के अचिन्त्य है। श्री अरविन्द की दृष्टि में विकास का अर्थ निरन्तर का उच्चतर में विकसित होना और यह तभी सम्भव है जब उच्चतर का निम्नतर में अवतरण हो। इस प्रकार अरबिन्द का विकास समग्र विकास (Integral Theory of Evolution) हैं।

स्रोत- राममूर्ति पाठक

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

23. ''वह शंकर का अध्ययन हेगली दृष्टिकोण से करता है।'' यह कथन किसका है?

(a) स्वामी विवेकानन्द (b) श्री अरबिन्दो
(c) डॉ. एस. राधाकृष्णन् (d) जे. कृष्णामूर्ति

Ans : (b) श्री अरबिन्द की स्कूली शिक्षा दार्जिलिंग में हुयी फिर भी उनका लगाव भारतीय भाषा तथा अध्यात्मिकता से रहा है। अरबिन्द पहले उत्कट देशभक्ति से ओतप्रोत स्वतंत्रता सेनानी रहे फिर बाद में गम्भीर अध्यात्मिक विचारक हो गये। वे वेदान्त का अध्ययन जर्मन दार्शनिक हीगल की दृष्टिकोण से किये है। इनकी निम्नलिखित कृतयाँ है- सावित्री, एसेज आंन दि गीता, लाइफ डिवाइन, दि ह्यमन साइकिल आदि।

स्रोत-राममूर्ति पाठक

24. जे. कृष्णामूर्ति के अनुसार सत्य ज्ञान है:

(a) जिसे किसी धार्मिक ग्रंथ ने स्वीकार किया हो।
(b) जिसे गुरुओं द्वारा निर्धारित किया गया हो।
(c) अप्रतिबंधित चेतनता
(d) प्रतिबंधित प्रतिक्रिया

Ans : (c) जे. कृष्णामूर्ति के अनुसार जो वस्तु जैसी है उस वस्तु को वैसे ही जानना ही सत्य ज्ञान है। सत्य ज्ञान किसी के द्वारा प्राप्त नहीं होता है न ही गुरु द्वारा न ही ईश्वर द्वारा। सत्यज्ञान व्यक्ति के अन्तरिक अवाधित चेतना से ही स्वयं से ही प्राप्त किया जा सकता है। वे धार्मिक गुरु, धार्मिक पुस्तक, परम्पराओं आदि को सत्य ज्ञान प्राप्त करने में बाधक मानते है। उनकी पुस्तक- प्रथम और अन्तिम मुक्ति, ज्ञान से मुक्ति, आदि है।

स्रोत-First and last Freedom- J. Krishnamurti

25. महात्मा गांधी ने अपनी किस रचना में औद्योगीकरण की आलोचना की?

(a) आत्मकथा (b) हिंद स्वराज
(c) स्वास्थ्य की कुंजी (की टू हेल्थ) (d) हरिजन

Ans : (b) महात्मा गाँधी कहते हैं कि हम उत्पादक चाहते है लेकिन आवश्यकतानुसार। उनका मानना था कि औद्योगीकरण से व्यक्ति की आवश्यकता बढ़ती है और व्यक्ति बेरोजगार होते है जिसके कारण समाज में असमानता बढ़ती है इसलिए वे अपनी रचना 'हिन्द स्वराज' में इसकी आलोचना करते थे। उन्होने अपने आत्मकथा सत्य के साथ मेरे प्रयोग लिखी हैं वे दलित वर्गो के उत्थान के लिए 'हरिजन' नामक पत्रिका भी निकालते थे।

स्रोत- समाज दर्शन का सर्वेक्षण- डॉ. शिव भानु सिंह।

26. युवा सुकरात ने किस दार्शनिक का साक्षात्कार लिया था?

(a) हेराक्लाइटस (b) प्लेटो
(c) पार्मेनाइडीज़ (d) ज़ेनो

Ans : (c) युवा सुकरात ने पार्मेनाइडीज का साक्षात्कार लिया था। इलियाई सम्प्रदाय को एक व्यवस्थित विचारधारा के रूप में स्थापित करने का श्रेय पार्मेनाइडीज (520 ई.पू.) को है। उनके अनुसार सृष्टि का मूल आधार एक अपरिवर्तनशील, अद्वितीय, अविनाशी और कूटस्थ विशुद्ध सत्ता (Being) है।

स्रोत- पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास डॉ. हरिशंकर उपाध्याय।

27. संभूति के सिद्धान्त को किसने स्थापित किया?

(a) प्लेटो (b) पार्मेनाइडीज़
(c) हेराक्लाइटस (d) सेंट एन्सेल्म

Ans : (c) पार्मेनाइडीज के ही समकालीन हेराक्लाइटस ने पार्मेनाइडीज के ठीक विरूद्ध संभूति (Becoming) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उसके अनुसार परिवर्तन ही सत् है स्थिरता और अभेद मिथ्या है, भ्रामक है। जगत में कुछ भी शाश्वत नहीं है सब कुछ परिवर्तनशील है। जैसे- एक ही नदी में हम गोता लगाते भी है और नहीं भी लगाते हैं क्योकि वह निरन्तर प्रवाहित हो रहा हैं अतः सत् क्षणिक एवं परिवर्तनशील है।

स्रोत- डॉ. हरिशंकर उपाध्याय

28. ''मानव सभी वस्तुओं का मापदण्ड है।'' यह कथन किसका है?

(a) प्लेटो (b) अनाक्सिमेनेस
(c) प्रोटेगोरस (d) ज़ेनो

Ans : (c) प्रोटोगोरस का एक सुप्रसिद्ध सिद्धान्त है- मनुष्य प्रत्येक वस्तु का मानदण्ड है (Homo Mensura) प्रोटागोरस का यह कथन सम्पूर्ण सोफिस्ट दर्शन का सार तत्व है। ज्ञानमीमांसीय दृष्टि से प्रत्येक मनुष्य के लिए वही सत्य है, जो उसे सत्य प्रतीत होता है। पार्मेनाइडीज, हेराक्लाइटस, डिमॉक्रिटस आदि दार्शनिकों ने बुद्धि एवं इन्द्रिय में भेद करते हुए तत्व ज्ञान का आधार बुद्धि को माना था। इन्द्रियों के द्वारा केवल स्थूल जगत का सतही ज्ञान हो सकता है किन्तु प्रोटागोरस बुद्धि और इन्द्रियजन्य ज्ञान के इस भेद का निराकरण करता हैं सत्य व्यक्ति की संवेदना और अनुभूति तक ही सीमित है। इससे स्पष्ट है कि सोफिस्ट सत्य को आत्मनिष्ठ (Subjective) बना देते है।

स्रोत- पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास डॉ. हरिशंकर उपाध्याय

29. ''शुभ और अशुभ एक हैं''-ऐसा विश्वास किसका था?

(a) थेलीज़ (b) हेराक्लाइटस
(c) अरस्तू (d) अनाक्सिमेनेस

Ans : (b) हेराक्लाइटस के सिद्धान्त को संभूति का सिद्धान्त कहा जाता है। उसने संघर्ष, विरोध और समन्वय अर्थात विरोधी शक्तियों के सामन्जस्य सिद्धान्त का भी प्रतिपादन किया इसके अन्तर्गत दो परस्पर विरोधी शक्तियों में समन्वय हो जाता है। विरोधी का अर्थ परिवर्तन है। एक भौतिक तत्व का दूसरे तत्व में परिवर्तन निषेध के द्वारा होता है। गतिशील जीवन के लिए विरोध का होना आवश्य है हेराक्लाइटस ने यह दावा किया कि संघर्ष एवं विरोध प्रकृति तथा विकास के लिए आवश्यक है। हेराक्लाइटस का दर्शन सापेक्षतवादी होने के साथ-साथ बुद्धिवादी है। 'परिवर्तन-सिद्धान्त'- सापेक्षता का द्योतक है।

स्रोत- डॉ. हरिशंकर उपाध्याय

30. किसने कारणों की संख्या को चार से घटाकर दो कर दिया?

(a) पार्मेनाइडीज़ (b) पाइथोगोरस
(c) प्लेटो (d) अरस्तू

Ans : (d) अरस्तू इन चार कारणों के संयुक्त रूप में किसी कार्य के सम्पादन के लिए अनिवार्य और पर्याप्त मानता है। अरस्तू ने इनमें से तीन कारणो-निमित्त कारण, आकारिक कारण और प्रयोजन कारण का अन्तर्भूत आकार (Form) में कर लिया हैं। वास्तव में ये

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

तीनों कारणों आकार के ही भिन्न-भिन्न रूप (अवस्थाए) है। आकारिक कारण किसी वस्तु का सारतत्व या प्रत्यय है। प्रयोजन मूलक कारण उस वस्तु के संप्रत्यय का यथार्थ रूप में रूपान्तरण है। किसी वस्तु का अन्तिम लक्ष्य अपने यथार्थ स्वरूप को प्राप्त करना हैं इस प्रकार अरस्तू समस्त कारणों का अन्तर्भूत आकार (Form) और जड़ द्रव्य (Matter) इन दो कारणों में कर लेते है।

स्रोत- पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास डॉ. हरिशंकर उपाध्याय

31. प्लेटो के अनुसार निम्नलिखित में से सत् क्या है?

(a) वस्तुएँ (b) प्रत्यय
(c) आत्मा (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (b) प्लेटो के अनुसार प्रत्ययों की वास्तविक सत्ता है। रिपब्लिक में प्लेटों ने 'ज्ञान' और 'मत' में इस दृष्टि से भेद किया हैं कि ज्ञान के विषय प्रत्यय है और मत के विषय प्राकृतिक (दृश्य) वस्तुएं हैं वह ज्ञान के विषयों अर्थात प्रत्ययों को स्थिर, अपरिवर्तनशील और वास्तविक सत्ता कहता है। अतः ज्ञान सदैव सत्य अनिवार्य, असंदिग्ध और अपरिवर्तनशील होता है।

स्रोत- पाश्चात्य दर्शन का उद्दीव और विकास डॉ. हरिशंकर उपाध्याय।

32. सम्पूर्ण पाश्चात्य दर्शन किसके दर्शन की पाद-टिप्पणी है?

(a) सुकरात (b) अरस्तू
(c) प्लेटो (d) पार्मेनाइडीज़

Ans : (c) प्रायः प्लेटो दर्शन के उन सभी सिद्धान्तों के आदि प्रवर्तक है जिनका विकास उनके बाद के दार्शनिकों ने किये हैं। यहाँ तक कि मध्यकाल के धर्मपरायण दार्शनिक भी बाइबिल की मान्यताओं पर आधारित विचारधाराओं को प्लेटो अथवा अरस्तू द्वारा समर्थित मानते है। अतः प्लेटों के बारे में 'ए. एन. ह्वइटहेड' का यह कथन कि - समस्त दर्शनिक परम्परा प्लेटों के दर्शन पर धारावाहिक टिप्पणी मात्र है।

स्रोत- डॉ. हरिशंकर उपाध्याय

33. 'एक अपरीक्षित जीवन रहने योग्य नहीं है।' यह किस दार्शनिक का विचार है?

(a) प्लेटो (b) अरस्तू
(c) सुकरात (d) थेलीज

Ans : (c) सोफिस्टों के सिद्धान्त 'मनुष्य प्रत्येक वस्तु का मानदण्ड है' को सुकरात ने खण्डन किया है तथा एक परीक्षित जीवन जीने की वकालत की है। वे कहते हैं कि ज्ञान ही सद्गुण हैं ज्ञान अर्थात विवेकयुक्त जीवन ही ज्ञानयुक्त है और ज्ञान ही मूल्य है, मूल्य ही ज्ञान है। अतः ज्ञान ही समस्त सत् कर्मों एवं शुभत्व का मूल आधार है।

स्रोत- पाश्चात्य दर्शन का इतिहास - डॉ. दयाकृष्ण

34. सत्ता पर आधारित युक्तियों द्वारा किसने सिद्ध किया कि ईश्वर का अस्तित्व है?

(a) सेंट थामस एक्विनॉस (b) सेंट एन्सेल्म
(c) सेंट ऑगस्टाइन (d) उपरोक्त तीनों

Ans : (b) एनसेल्म के अनुसार ईश्वर एक ऐसी सत्ता है जिससे अधिक महान तत्व की कल्पना नहीं की ज सकती है। एन्सेल्म यह कहता है कि हमारी बुद्धि में निहित ईश्वर का प्रत्यय केवल काल्पनिक नहीं बल्कि एक वास्तविक सत्ता है इससे सिद्ध होता है कि ईश्वर की पूर्णता के पत्यय में उसकी सत्ता निहित है पूर्ण ईश्वर का प्रत्यय होना और उसके अस्तित्व का होना दोनो परस्पर विरोधी सम्प्रत्य है अतः यदि हमारी बुद्धि में पूर्ण ईश्वर का प्रत्यय विद्यमान है तो उसे ईश्वर की सत्ता निश्चित रूप से सिद्ध हो जाती है।

स्रोत- पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास डॉ. हरिशंकर उपाध्याय।

35. ईश्वर के लिए अचलायमान संचालक की अवधारणा का विकास किसने किया?

(a) सेंट थॉमस एक्विनॉस (b) सेंट एन्सेल्म
(c) अरस्तू (d) प्लेटो

Ans : (c) अरस्तू का ईश्वर एक निरपेक्ष (पूर्ण) आकार है निरपेक्ष आकार होने के कारण ईश्वर ही सृष्टि का निमित्त, आकारिक और प्रयोजनमूलक कारण है ईश्वर ही परम लक्ष्य और निः श्रेयस है चूँकि ईश्वर निमित्तकारण है, इसलिए वह समस्त गति एवं संभूति का लक्ष्य कारण अथवा आदि प्रवर्तक है। यद्यपि ईश्वर समस्त विकास, परिर्वन, गति एवं संभूति का मूल आधार एवं चालक है, तथापित वह विकासशील एवं गतिशील नहीं है अरस्तु इसे 'अथालिक चालक' (Unmoved mover or prime mover) कहता है।

स्रोत- पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास डॉ. हरिशंकर उपाध्याय

36. 'प्रारम्भ में मस्तिष्क एक कोरी स्लेट होता है।'' यह कथन किसका है?

(a) प्लेटो (b) देकार्त
(c) स्पिनोज़ा (d) लॉक

Ans : (d) अनुभव वादी के अनुसार कोई भी ज्ञान जन्मजात नहीं होता जन्म के समय हमारा मस्तिष्क अंधेरी कोठरी या सफेद कागज की भाँति होती है जिससे ज्ञान का प्रकाश अनुभव रूपी खिड़की के माध्यम् से प्रवेश होता है इसीलिए लॉक कहता है कि हमारी बुद्धि में ऐसा कुछ भी नही है जो पहले हमारी इन्द्रियों में नही लॉक के अनुसार ज्ञान अनुभव पर आधारित होता है अतः वैध ज्ञान की प्राप्ति का आधार इन्द्रियानुभव है। लॉक के अनुसार ज्ञान अनुभव पर आधारित होता है अतः ज्ञान अनिवार्य एवं सार्वभौम सत्य न होकर नवीन एवं यथार्थ होता है।

स्रोत- पाश्चात्य दर्शन का इतिहास डॉ. दयाकृष्ण

37. ''तर्क को प्रकृति तक एक शिक्षार्थी के रूप में नहीं बल्कि एक निर्णायक के रूप में पहुँचना चाहिए''-यह कथन किसका है?

(a) कांट (b) लॉक
(c) हेगल (d) स्पिनोज़ा

Ans : (a) कांट के अनुसार इन्द्रिय सम्बेदन बिना बुद्धि विकल्प पंगु है तथा बुद्धि विकल्प बिना इन्द्रिय सम्बेदन अंधे है अपनी इसी मान्यता के आधार पर काण्ट यह कहता है कि ''बुद्धि प्रकृति का निर्माण करती है'' लेकिन ऐसा वह तत्वमीमांसी आधार पर नहीं कहता जैसे बढ़ई मेज का निर्माण करता है तथा कुम्भकार घड़े का इसका प्रयोग काण्ट शुद्ध रूप से ज्ञानमीमांसी आधार पर करता है जिसके अनुसार बिना बुद्धि के 12 कोटियों से व्यवस्थित किये हुए कोई संवेदन हमारे ज्ञान का आधार नहीं बन सकती।

स्रोत- पाश्चात्य दर्शन का उद्भव और विकास डॉ. हरिशंकर उपाध्याय

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

38. वह दार्शनिक, जिसने सामान्य बुद्धिदर्शन का प्रतिरक्षण किया है:

(a) बर्कले (b) हेगल

(c) मूर (d) ग्रीन

Ans : (c) मूर ने दार्शनिक दृष्ट को सामान्य ज्ञान के अनुरूप निरूपित किया। उन्होने अपनी वास्तववादी दृष्टि को सामान्य ज्ञान पर बिठाया तथा बिना किसी हिचक सामान्य ज्ञान के अनुरूप ऐसे तर्कों का उपयोग किया। मूर की यह देन है कि उन्होने सामान्य ज्ञान को दार्शनिक प्रतिष्ठा दी। उन्होने अपने लेख 'A defence of commonsense' में खीची है वैसे अपने एक भाषण जो 'Proof of an Eternal world' के नाम से प्रकाशित लेख है।

स्रोत समकालीन पाश्चात्य दर्शन, प्रो. बी. के. लाल

39. निम्नलिखित कथनों में से किसे विटेगिन्सटाइन ने प्रतिपादित किया?

(a) सत्ता दृश्यता हैं।

(b) मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ।

(c) मैं हूँ क्योंकि मैं सोचता हूँ।

(d) जहाँ कोई बोल नहीं सकता वहाँ उसे अवश्य चुप रहना चाहिए।

Ans : (d) सत्ता दृश्यता है, यह सिद्धान्त अनुभववादी दार्शनिक बर्कले का है। 'मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ' यह डेकार्ट का सिद्धान्त हैं। विटेगिन्सटाइन के अनुसार - दर्शन भाषा का आलोचनात्मक मात्रा है क्योंकि भाषा अभिव्यक्ति का एक मात्रा साधन है, लेकिन भाषा मानवीय भावना, विचार को छुपा ले जाती है। जैसे- परिधान (वस्त्र) का कपड़ा का कार्य शरीर को ढकना है लेकिन कभी-कभी परिधान में शरीर प्रदर्शन के लिए किया जाता हैं इसीलिए विंटेगेंस्टाइन अपनी पुस्तक 'टैक्टेटस' में कहा है कि जो कुछ कहा जा सकता है, वह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है, जिसके विषय में नहीं कहा जा सकता है वहां मौन रहना चाहिए।

40. भाषायी खेलों के सिद्धान्त से जिस दार्शनिक का सम्बंध है, उसका नाम है:

(a) मूर (b) रसेल

(c) विटेगिन्सटाइन (d) विलियम जेम्स

Ans : (c) भाषायी खेल का सिद्धान्त विटगेंस्टाइन है। अपनी पुस्तक इंविस्टीगेशन में किया है उसका कहना था सोचो नहीं, देखो। भाषा के अर्थ को न देखे उसके प्रयोग को देखे।

41. अर्थ के सत्यापनीयता सिद्धान्त का प्रारम्भ किसके द्वारा हुआ?

(a) अस्तित्ववादी (b) तार्किक प्रत्यक्षवादी

(c) दृश्यप्रपंचवादी (d) अर्थक्रियावादी

Ans : (b) तार्किक प्रत्यक्षवादी दार्शनिकों को उद्देश्य तत्वमीमांसा का निरसन करना था। इसके लिए वे सत्यापन सिद्धान्त का प्रयोग करते हैं तार्किक प्रत्यक्षवादी के सत्यापन के दो रूप मिलते है पहला - मॉरिक श्लिक।

दूसरा - ए. जे. एयर।

ए.जे. एयर के अनुसार- सत्यापन का प्रयोग एक मापदण्ड के रूप में, तथा सत्यापन का अर्थ- केवल और केवल अनुीव द्वारा सत्यापन है।

स्रोत- समकालीन पाश्चात्य दर्शन - प्रो. बी. के. लाल

42. वह दार्शनिक जिसने देकार्त के द्वैतवाद की आलोचना यह कह कर की कि यह - 'मशीन में भूत होने का सिद्धान्त' है-

(a) ए.जे. एयर (b) जी.ई.मूर

(c) बर्ट्रेन्ड रसेल (d) गिल्बर्ट राइल

Ans : (d) गिलबर्ड राइल अपनी पुस्तक 'The concept of mind' में लिखा है कि देकार्त के मन शीर शरीर संबंध में कोटि दोष (catgory mistake) है, क्योंकि देकार्त एक तरफ मन शरीर को एक दूसरे का विरोधी कहता है और दूसरी ओर उनके बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है। इस प्रकार दो स्तर की सत्ताओं का एक स्तर पर लाकर उनके बीच संबंध स्थापित करना कोटि दोष है। अतः वह इसे व्यंग्यात्मक भाषा में 'the dogmos of ghosh in the moshine' "मशीन में स्थित प्रेत का सिद्धन्त कहता है" अर्थात शरीर रूपी कोई यंत्र है, जिसे मन रूपी प्रेत नियंत्रित कर रहा है। राइल के अनुसार जब तक इस प्रेत को बाहर नहीं किया जायेगा तब तक मन शरीर के संबंध का समाधान नहीं हो सकता इसलिए वह इस समस्या के समाधान के लिए व्यवहारवादी समाधान प्रस्तुत करता है।

स्रोत- समकालीन पाश्चात्य दर्शन प्रो. बी. के लाल

43. किस सिद्धान्त के अनुसार सत्य व्यवहारीक परिणामों पर आधारित है?

(a) संवादिता सिद्धान्त (b) संसक्तता सिद्धान्त

(c) व्यवहारवादी सिद्धान्त (d) अर्थ - विषयक सिद्धान्त

Ans : (c) सत्यता के सम्बन्ध में मुख्यता तीन प्रकार के सिद्धान्त प्रचलित हैं 1. सम्भाव्यता का सिद्धान्त (Correspondence theory) 2. सुसंगत सिद्धान्त (Coherence theory) 3. उपयोगिता का सिद्धान्त (Pragmatic theory) इसे ही व्यवहारिक सिद्धान्त भी कहा जाता है। सत्यता का अर्थ क्रियावादी सिद्धान्त का समर्थन मुख्य रूप से (पीयर्स, जेम्स, शिलर, डीवी आदि अमेरिकी दार्शनिकों ने किया है। इसके अनुसार सत्यता का निर्धारण उसकी उपयोगिता पर ही होता है। अर्थात जो जितना उपयोगी है वह उतना ही सत्य है।

44. निम्नलिखित युग्मों में से कौन सा युग्म सिद्धान्ततः संगत नहीं है?

(a) मूर और रसेल (b) पीयर्स और जेम्स

(c) श्लिक और कोर्नप (d) हाइडेगर और हुसर्ल

Ans : (d) मूर और रसेल - समकालीन भाषा विश्लेषणात्मक के दार्शनिक है। पीयर्स और जेम्स तथा शीलर एवं जॉन डीवी- अर्थ क्रियावादी दार्शनिक है। श्लिक और कोर्नप दोनों तार्किक प्रत्यक्षवादी दार्शनिक है। हाइडेगर तथा हुसर्स क्रमशः अस्तित्ववादी तथा फेनोमेनोलॉजी के संस्थापन दार्शनिक हैं अतः दोनों अलग-अलग परम्परा के दार्शनिक है।

45. 'वियाना सर्कल' सम्बंधित है:

(a) तार्किक प्रत्यक्षवाद (b) परिणामवाद

(c) अस्तित्ववाद (d) दृश्यप्रपंचवाद

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (a) तार्किक प्रत्यक्षवद या तार्किक भववाद (Logical empiricesim) का उद्भव बीसवी शताब्दी के तीसरे दशक में **'विएना'** में हुआ। जिसे विएना सर्कल (vienna circle) के नाम से जाना जाता है। इसमें प्रमुख व्यक्ति मौरिज स्लिक (moritz schlick) था। 1921 में वैचारिक पार्टी का रूप मिल गया। बाद में यह Philosophical movement बन गया।

स्रोत- बी.के. लाल

46. रसेल द्वारा निम्नलिखित में से किसे दर्शन का सार माना गया है?

(a) सौंदर्यशास्त्र (b) नीतिशास्त्र
(c) तर्कशास्त्र (d) मूल्यशास्त्र

Ans : (c) रसेल एक गणितज्ञ दार्शनिक है। उसकी पुस्तक का नाम Logical construction तथा Mysticisms logic है। उसके सिद्धान्त का नाम - Logical description

47. देकार्ट ने प्रारम्भ किया

I. गणित शास्त्रीय पद्धति
II. ईश्वर के अस्तित्व के पक्ष में दिए गए प्रमाण
III. शरीर-मन के सम्बन्धों की व्याख्या
IV. प्राथमिक एवं गौण गुणों के बीच के भेद का प्रारम्भ

प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए -

कूटः

(a) केवल I और II सही हैं।
(b) केवल II और III सही हैं।
(c) केवल III और IV सही हैं।
(d) केवल I, II और III सही हैं।

Ans : (d) रेने डेकार्ट एक गणितज्ञ या उसने संदेह पद्धति का प्रयोग साधन के रूप में प्रयोग करके एक स्वयं सिद्ध सत्य की खोज करना चाहता था। इसके लिए उन्होने सर्वप्रथम् गणितीय पद्धति का प्रयोग किया, जिससे आत्मा, ईश्वर तथा जगत और मन-शरीर सिद्धान्त की व्याख्या किया। प्राथमिक एवं गौण गुणों के बीच का भेद जांन लॉक नामक दार्शनिक ने किया।

स्रोत- डॉ. हरिशंकर उपाध्याय।

48. निम्नलिखित दो कथनों में से पहले को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है।

अभिकथन (A) : पूर्ववर्ती विटेगिन्सटाइन ने अर्थ के चित्र सिद्धान्त को दिया है।

तर्क (R) : पश्चात्वर्ती विटेगिन्सटाइन के लिए भाषा का कार्य तथ्यों का कथन है।

इन दोनों कथनों में, प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए।

कूटः

(a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (A) का (R) सही स्पष्टीकरण है।
(b) (A) और (R) दोनों सही हैं, परन्तु (A) का (R) सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(c) (A) सही हैं परन्तु (R) गलत हैं।
(d) (A) सही हैं परन्तु (R) सही हैं।

Ans : (b) विटगेंस्टाइन की पुस्तक 'टैक्टैटस लॉजिको फिलोसॉफिकल' भाषा- विश्लेषण पर पहली पुस्तक थी, जो 1921 में जर्मन भाषा में छपी थी, विटगेंस्टाइन के अनुसार - दार्शनिक समस्या भाषा की समस्या है। जगत तथ्यों की समग्रता है न कि वस्तुओं की। इस प्रकार वह पहले भाषा से दार्शनिक समस्या का समाधान करता है तथा बाद में भाषा के प्रयोग से दार्शनिक समस्याओं का समाधान करता है। उसके अनुसार भाषा के अर्थ को मत देखे भाषा को सन्दर्भानुसार देखें।

स्रोत- प्रो. वी. के. लाल

49. निम्नलिखित रचनाओं के सही क्रम का चयन कीजिए।

(a) एन एसे कंसरनिंग ह्यूमन अण्डरस्टैंडिंग, मेडिटेशन्स, आर्गनान, रिपब्लिक
(b) रिपब्लिक, मेडिटेशन्स, आर्गनान, एन एसे कंसरनिंग ह्युमन अण्डरस्टैंडिंग
(c) रिपब्लिक, आर्गनान मेडिटेशन्स, एन एसे कंसरनिंग ह्यूमन अण्डरस्टैंडिंग
(d) मेडिटेशन्स, रिपब्लिक, एन एसे कंसरनिंग ह्यूमन अण्डरस्टैंडिंग, आर्गनान

Ans : (c)

पुस्तक		**लेखक**
रिपब्लिक	-	प्लेटो
मेडिटेशन्स	-	रेने डेकार्ट
एन एसे कंसरलिंग ह्यूमन अण्डर स्टैडिंग	-	जॉन लॉक
डिसकोर्स ऑन दि मेथर्ड	-	रेने डेकार्ट
मोनार्ड	-	लाइब्नीज

50. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए।

सूची I (लेखक)	**सूची II (पुस्तक)**
(A) गिल्बर्ट राइल	(i) फिलॉसाफिकल स्टडीज
(B) बर्ट्रेन्ड रसेल	(ii) आइदर/ऑर
(C) हाइडेगर	(iii) दि कंसैप्ट ऑफ माइंड
(D) जी. ई. मूर	(iv) एन इनक्वायरी इनटू मीनिंग एण्ड ट्रूथ

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(b)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(c)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(d)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)

Ans : (*) कोई उत्तर सही नहीं है।

लेखक		**पुस्तक**
गिल्बर्ट राइल	-	दि कंसेप्ट ऑफ माइंड
बर्टेन्ड रसेल	-	एन एनक्वायरी इनटू मीनिंग एण्ड टुथ'
हाइडेगर	-	बीइन एण्ड टाइम
जी.ई.मूर	-	फिलॉसाफिकल स्टडीज
किर्केगार्ड	-	आइदर/ऑर

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2012
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित तृतीय प्रश्न-पत्र का हल

1. चित्त और अचित्त ब्रह्म के दो भाग हैं, इस विचार को किसने ठीक ठहराया है?
(a) शंकर (b) मध्व
(c) रामानुज (d) जैमिनि

Ans : (c) रामानुज के अनुसार जब चित् और अचित दोनों ब्रह्म का अंश है तब भौतिक विकार का अर्थ हुआ ब्रह्म का विकार। इस तरह ब्रह्म का परिणामी होना सूचित होता है। इसी प्रकार जब जीव ब्रह्म के वास्तविक अंश है। जिस तरह शरीरिक विकारों या त्रुटियों से आत्मा प्रभावित नहीं होता। उसी तरह जगत् के विकारों या त्रुटियों से ईश्वर प्रभावित नहीं होता, वह (ईश्वर या ब्रह्म) उन सबसे परे हैं कभी-कभी रामानुज इस विषय को समझने के लिए राजा और प्रजा की उपमा देते हैं। राजा की आज्ञा के पालन या उल्लंघन से प्रजा को जो सुख-दुःख होता है उसका भागी राजा नहीं होता।
स्रोत- भारतयी दर्शन-दत्ता और चटर्जी

2. एक वस्त्र और उसके धागों के बीच कारणता है
(a) असमवायि (b) समवायि
(c) असमवायि और समवायि दोनों (d) निमित्त

Ans : (b) न्याय दर्शन में तीन प्रकार के कारण माने गये हैं ये है:
1. उपादान कारण
2. असमवायी कारण
3. निमित्त कारण
उपादान कारण उस द्रव्य को कहा जाता है जिसके द्वारा कार्य का निर्माण होता है। असमवायी कारण उस गुण या कर्म को कहते है जो उपादान कारण में समवेत रहकर कार्य की उत्पत्ति में सहायक होता है। निमित्त कारण उस कारण को कहा जाता है, जो द्रव्य से कार्य उत्पन्न करने में सहायक होता है। समवाय सम्बन्ध के पाँच भेद बताये गये हैं, ये हैं- अवयव-अवयवी सम्बन्ध, गुण-गुणी - सम्बन्ध, क्रिया-क्रियावन सम्बन्ध, सामान्य-विशेष सम्बन्ध और विशेष-नित्य द्रव्य सम्बन्ध मेज तथा उसके अवयवों का सम्बन्ध अवयव-अवयवी सम्बन्ध है, फलतः समवाय सम्बन्ध है मेज तथा उसके रंग का सम्बन्ध गुण-गुणी समबन्ध है, फलतः समवाय सम्बन्ध इसी प्रकार मेज तथा मेजत्व का सम्बन्ध सामान्य-विशेष सम्बन्ध है अतः यह भी समवाय सम्बन्ध है।
स्रोत- भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा- डॉ. राममूर्ति पाठक

3. आत्मन् और मनस् का सम्बन्ध है।
(a) समवाय (b) संयोग
(c) स्वरूप (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (b) न्याय दर्शन के अनुसार आत्मा विभु हैं। चेतना आत्मा का आगुन्तुक गुण है अतः मुक्त आत्मा आध्यात्मिक जड़ हैं जबकि न्याय मन को परमाणु मानती है, जो नित्य है। लेकिन आत्मा के संयोग से ही सुख-दुःख का ज्ञान होता है। इस प्रकार आत्मा एवं मन का संबंध संयोग संबंध है।
स्रोत- भारतीय दर्शन- दल और चट्र्जी

4. निम्नलिखित में से कौन सा नित्य द्रव्य नहीं है?
(a) आकाश (b) काल
(c) सावयव (d) निरवयव

Ans : (c) द्रव्य नौ प्रकार के होते हैं-
1. पृथ्वी 2. अग्नि 3. वायु 4. जल 5. आकाश 6. दिक् 7. काल 8. आत्मा 9. मन।
इन द्रव्यों में से प्रथम पाँच यानी पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को पंचभूत (Five physical elements) कहा जाता है प्रत्येक का एक-एक विशिष्टि गुण होता है पृथ्वी का विशेष गुण 'गन्ध' है। जल का विशेष गुण 'रस' है। वायु का विशेष गुण 'स्पर्श' है। अग्नि का विशेष गुण 'रूप' है तथा आकाश का विशेष गुण 'शब्द' है। वैशेषिक का कहना है जिस भूत के गुण का ज्ञान जिस इन्द्रिय से होता है वह इन्द्रिय उसी भूत से निर्मित है। वैशेषिक के मतानुसार पृथ्वी, जल, वायु तथा अग्नि के द्रव्य दो प्रकार के होते हैं- 1. नित्य 2. अनित्य। पृथ्वी जल वायु और अग्नि के परमाणु नित्य है और उनसे बने कार्य द्रव्य अनित्य हैं। आकाश निरवयव है। निरवयव होने के कारण यह उत्पादन और विनाश से परे है। एक होने के कारण यह सामान्य से रहित है। 'काल' भी 'दिक्' की तरह नित्य और सर्वव्यापी है। मन को वैशेषिक ने नित्य माना है मन, आकाश, काल, दिक् आदि से भिन्न है। इस भिन्नता का कारण यह है कि न मन सक्रिय है जबकि आकाश, काल, दिक् इत्यादि निष्क्रिय है।
स्रोत- भारतयी दर्शन की रूप रेखा- प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा

5. किस सत्ता का खण्डन नहीं किया गया है?
(a) व्यावहारिक
(b) पारमार्थिक
(c) व्यावहारिक और पारमार्थिक दोनों
(d) न व्यावहारिक और न ही पारमार्थिक

Ans : (b) संशोधित उत्तर-(d)
भारतीय दर्शन में ऐसा लगता है कि परमार्थिक सत्ता का खण्डन व्यवहारिक सत्ता से होता है और व्यवहारिक सत्ता का खण्डन परमार्थिक सत्ता से होता है। लेकिन यह सही नहीं है। न ही व्यवहारिक सत्ता का खण्डन सम्भव है और न ही पारमार्थिक सत्ता का खण्डन सम्भव है। बल्कि दोनों सत्ता अपनी-अपनी दृष्टिकोणों से सत्य है।

6. मन द्वारा वस्तु को प्रसारित किया जाता है, इस विचार का पक्षधर कौन है?
(a) देकार्त (b) स्पिनोज़ा
(c) लाइबनीत्ज (d) ह्यूम

Ans : (c) इस पूर्व-स्थापित सामञ्जस्य के नियम से लाइबनित्ज ने देहात्मसमस्या का भी समाधान किया है। देह और आत्मा, जड़ और चेतन नाम दो विरुद्ध द्रव्य या दो विरुद्ध गुण नहीं है। सुप्त चेतन को ही जड़ कहते हैं, अतः इनमें कोई विरोध नहीं। चेतना के अतिरिक्त अन्य कोई सत्ता नहीं। देह के चिदणु-समूह में एक केन्द्रिय चिदणु, जो अधिक क्रियाशील और अधिक विकसित चैतन्य होता है, 'आत्मा' कहलाता है। सारे चिदणु अपने अन्तरंग नियमों के आधार पर विकसित होते रहते है प्रत्येक चिदणु अपने नियम पर

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

चल रहा है। देह के चिदाणु और आत्मा-चिदणु परस्पर निर्भर नहीं है और न इनमें कोई क्रिया प्रतिक्रिया ही हो सकती है और न ये समानान्तर गुण है। इनमें केवल पूर्वस्थापित एकतन्त्रता है।

स्रोतः पाश्चात्य दर्शन, चन्द्रधर शर्मा

7. निम्नलिखित कथनों में से ह्यूम के इस कथन के प्रसंग में कि 'आत्मा एक कल्पित वस्तु' है, सही कथन का चयन कीजिए।

(a) आत्मा अहम् हैं

(b) आत्मा अवास्तविक 'मैं' सत्त्व है।

(c) आत्मा इन्द्रिय संस्कारों का साहचार्य मात्रा है।

(d) आत्मा एक साक्ष्य है।

Ans : (c) ह्यूम के अनुसार ह्यूम का उत्तर है कि संवेदना या विज्ञान के अतिरिक्त अन्य किसी का ज्ञान नही हो सकता इसलिए अन्तर्बोध की कल्पना व्यर्थ हैं वस्तुजगत में हम विशेष संवेदनों और विशेष विज्ञानों के आगे नहीं जा सकते और इनके द्वारा न अन्य जीवों का बोध होता है और न ईश्वर का। अतः जीवों की और ईश्वर की कल्पना कोरी कल्पना है, वास्तविक तथ्य नहीं। हमें अपनी आत्मा की भी प्रत्यक्ष अनुभूति नहीं होती। जिनकी हमें अनुभूति होती है वे है पृथक-पृथक विशेष और क्षणिक संवेदना या विज्ञान। इस विज्ञानों के किसी नित्य और एक अधिष्ठान की प्रतीति हमें नहीं होती। इन क्षणिक विज्ञानों की धारा निरन्तर वह रही है। इनमें आनन्तर्य तो है, किन्तु तादात्म्य और नित्यत्व नहीं। अनुभव कभी नित्य संवेदना या नित्य विज्ञान उपस्थित नहीं करता। अतः नित्य आत्मा का विज्ञान या संवेदन भी हो सकता।

स्रोत- पाश्चात्य दर्शन चन्द्रधर शर्मा

8. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें और प्रदत्त कूट से सही क्रम का चयन कीजिए:

सूची I (दार्शनिक)	सूची II (सिद्धान्त)
(A) स्पिनोज़ा	(i) ईश्वर के प्रति बौद्धिक प्रेम
(B) लाइबनित्ज	(ii) अचालित संचालक
(C) अरस्तू	(iii) संप्रत्यक्ष की अतीन्द्रिय एकता
(D) कांट	(iv) पूर्व स्थापित सामंजस्य

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)
(b)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(c)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

Ans : (a)

स्पिनोजा - ईश्वर के प्रति बौद्धिक प्रेम

लाइबनित्ज - पूर्व स्थापित सामंजस्य

अरस्तू - अचालित संचालक

कांट - संप्रत्यय की अतीन्द्रिय एकता

स्रोत पाश्चात्य दर्शन का इतिहास, डॉ. दयाकृष्ण

9. शंकर के आत्मा के दर्शन का आधार है

(a) द्वैतवाद (b) अद्वैतवाद

(c) अर्ह एकत्ववाद (d) बहुत्त्ववाद

Ans : (b) शंकर का मत विशुद्ध अद्वैतवाद है उनके अनुसार एक विषय का दूसरे विषय में भेद, ज्ञाता-ज्ञेय का भेद तथा जीव और ईश्वर का भेद, ये सब माया की सृष्टि है। उनका विचार है कि वस्तुतः एक ही तत्व है। आत्मा और परमात्मा वस्तुतः एक है वह स्वतः प्रकाश, अनंत चैतन्य स्वरूप है। अनंत आत्मा वस्तुतः जीवात्मा की तरह भासित होता है, उसका कारण है अविद्याजनित शरीर के साथ संबंध है।

10. निम्नलिखित कारणों में से कौन सा अरस्तू के दर्शन से सम्बन्धित नहीं है?

(a) आवश्यक (b) आकारिक

(c) भौतिक (d) निमित्त

Ans : (a) अरस्तू ने चार कारण स्वीकार किये है।

1. उपादान कारण
2. निमित्त कारण
3. आकारिक कारण
4. प्रोयोजन मूलक कारण

अतः अरस्तू ने बाद में दो ही कारण स्वीकार किया

1. निमित्त कारण (Form)
2. भौतिक कारण (matter)

11. बौद्धों के अनुसार प्रमा है

(a) अजन्ता तत्त्वार्थ ज्ञान (b) तद्वती ततप्रकारकम् ज्ञानम्

(c) समयक् ज्ञानम् (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (*) उत्तर सही नहीं दिया गया है। बाद में हटा दिया गया। बौद्धों के अनुसार परिवर्तन ही सत् है इसलिए कहा गया है। सर्वम् अनित्यम् सर्वम् अनात्मन निर्माणम् शान्तम् यह त्रिसूत्री शिक्षा बौद्धदर्शन का आधार स्तम्भ है।

12. सूची - I को सूची - II के साथ सुमेलित कीजिए और प्रदत्त कूट से सही क्रम का चयन कीजिए:

सूची I	सूची II
(A) अख्याति	(i) न्याय
(B) अनिर्वचनीय ख्याति	(ii) कुमारिल
(C) विपरीत ख्याति	(iii) प्रभाकर
(D) अन्यथा ख्याति	(iv) अद्वैत वेदान्त

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(c)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(d)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)

Ans : (b)

अख्याति - प्रभाकर

अनिर्वचनीय ख्याति - अद्वैत वेदान्त

विपरीत ख्याति - कुमारिल

अन्यथा ख्याति - न्याय

13. उस कूट का चयन कीजिए जो सुमेलित नहीं है:

(a) उपमान, भूयोदर्शन, विवरण

(b) व्याकरण, कोश, विवरण

(c) कोश, आप्तवाक्य, वाक्यशेष

(d) व्याकरण, कोश, आप्तवाक्य

Ans : (a) सभी शब्द में निहत अर्थ के स्पष्टीकरण का साधन है, इसे शक्तिग्रहोपाय भी कहते हैं। यह सात है- 1. उपमान, 2. व्याकरण, 3. कोश, 4. आप्तवाक्य, 5. वाक्यशेष 6. विवरण, 7. सिद्धपद सन्निध्य।

इसमे से भूयोदर्शन, चार्वाक के दर्शन को कहा जाता है। यह भौतिकवादी है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

14. निम्नलिखित में से अनविताभिधानावादिन कौन है?
(a) गौतम (b) शंकर
(c) प्रभाकर (d) कुमारिल

Ans : (c) मीमांसा दर्शन में शब्दार्थ संबंध के दो सिद्धान्त प्रचलित है।
पहला - कुमारिल भट्ट का अभिनाविधानवाद (अभिहितान्वयवाद)
दूसरा - प्रभाकर का - अनविताभिधानावादिन (अन्विताभिधानवाद) है।
तात्पर्यवाद नैयायिक जयन्तभट्ट का मत है।

15. निम्नलिखित में से किसका यह विश्वास है कि ज्ञान की कारण सामग्री वैधता की कारण सामग्री भी है?
(a) गौतम (b) कनाड़
(c) कुमारिल (d) नागार्जुन

Ans : (c) मीमांसा के अनुसार प्रामाण्य स्वतः है, परन्तु अप्रामाण्य परतः है। इसका तात्पर्य यह है कि जिन कारणों से ज्ञान उत्पन्न होता है उन्ही कारणों से ज्ञान के प्रामाण्य की भी उत्पत्ति होती है। अतः प्रामाण्य स्वतोग्राह्य है, परन्तु जिन कारणों से ज्ञान उत्पन्न होता है उन्ही कारणों से ज्ञान का अप्रामाण्य नहीं उत्पन्न होता है। इसके लिए अन्य कारणों की अपेक्षा होती है इसलिए अप्रामाण्य परतोग्राह्य है।

16. प्रमा का शाब्दिक अर्थ है, वह अनुभव जो है
(a) वास्तविक (b) अवास्तविक
(c) संशयपूर्ण (d) उपरोक्त सभी

Ans : (a) यथार्थज्ञान को भारतीय दर्शन में प्रमा कहते हैं। यर्थाथ अनुभव ही प्रमा है। स्मृतिभिन्न ज्ञान को अनुभव कहते हैं। अनुभव दो प्रकार का होता है- यथार्थ और अयथार्थ। किसी वस्तु को जो वह है, उसी रूप में ज्ञान यथार्थ अनुभव है और किसी वस्तु का जो वह नहीं है उस रूप में ज्ञान अयथार्थ अनुभव है। प्रमा चार प्रकार की होती है- प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति, और शब्द ज्ञान। यह चार प्रमाणों से उत्पन्न होती है जिन्हे क्रमशः प्रत्यक्ष, अनुमान, श्ब्द तथा उपमान प्रमाण कहते है।

स्रोत- डॉ.सी.डी. शर्मा

17. न्याय दर्शन में 'हेतु' और साध्य के बीच अभेद्य सम्बन्ध को कहते हैं।
(a) परामर्श (b) अनुमान
(c) व्याप्ति (d) तुलना

Ans : (c) न्याय दर्शन के अनुसार अनुमान एक प्रमाण है। व्याप्ति अनुमान का 'प्राण' नाड़ी (Nerve) है जिसके अभाव में अनुमान सम्भव नहीं है। वस्तुतः व्याप्ति ही अनुमान प्रमाण से प्राप्त ज्ञान (अनुमिति) की प्रमाणिकता का निर्णायक हैं व्याप्ति का अर्थ है- हेतु और साध्य का व्यापक संबंध। यह हेतु और साध्य का अनौपाधिक नियत साहचर्य संबंध है जैसे, जहाँ धुँआ होता है वहाँ आग होती है- यह एक व्याप्तिवाक्य है और धुएं (हेतु) और आग (साध्य) के नियत साहचर्य-संबंध का कथन करता है।

18. न्यायदर्शन में किसी नाम और किसी वस्तु के बीच सम्बन्ध का ज्ञान कहलाता है
(a) प्रत्यक्ष ज्ञान (b) अनुमान
(c) तुलना (d) प्रमाण

Ans : (c) न्याय दर्शन का चरम उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है। मोक्ष की अनुभूति तत्व-ज्ञान अर्थात वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को जानने से हो सकती है। न्याय दर्शन में सोलह पदार्थों की व्याख्या की गयी है। जो निम्न है- प्रमाण, प्रमेय, प्रमाता, संशय, प्रयोजन, दृष्टन्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णयवाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, हल, जाति, निग्रह-स्थान।

स्रोत- प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा

19. शंकर के अनुसार मिथ्या ज्ञान है
(a) ब्रह्मण (b) आत्मन
(c) जीव (d) माया

Ans : (d) मायावाद केवल अद्वैत वेदान्त का सिद्धान्त है इन्होने महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'ब्रहमसूत्र भाष्य' की शुरूआत ही अध्यास भाष्य से किया है आचार्य के दर्शन में माया शब्द का प्रयोग मुख्यतः दो अर्थो में किया गया है-
1. यह ब्रह्म तक पहुचने का एक सोपान है।
2. ब्रह्म के एकत्व एवं जगत के नानात्व में संबंध माया के द्वारा ही संभव है।

यद्यपि आचार्य शंकर माया, अविद्या, भ्रम, अध्यास, अनिर्वचनीय ख्याति आदि में कोई भेद नहीं करते है।

स्रोत- डॉ. चन्द्रधर शर्मा

20. किसी भ्रम के कारण किसी वस्तु पर दूसरी का आरोपित करना कहलाता है
(a) आत्मख्यातिवाद् (b) अन्यथाख्यातिवाद्
(c) अख्यातिवाद् (d) असतख्यातिवाद्

Ans : (b) किसी वस्तु पर दूसरे वस्तु जो यहाँ नहीं है कही और है (स्मृति आदि है) का आरोपण ही अन्यथाख्यातिवाद है।
आत्मख्यातिवाद - नागार्जुन का है।
अख्यातिवाद - प्रभाकर की मीमांसा है।
असतख्यातिवाद - कुमारिल की मीमांसा है।

स्रोत- राममूर्ति पाठक

21. भारतीय दर्शन के अनुसार ख्याति का अर्थ है
(a) भ्रम का सिद्धान्त (b) सत्य का सिद्धान्त
(c) असत्यता का सिद्धान्त (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (a) भारतीय दर्शन में ख्यातिवाद को भ्रम का सिद्धान्त कहते है। सभी भारतीय सम्प्रदाय अपनी-अपनी मान्यता के अनुसार भ्रम (ख्यातिवाद) की व्याख्या करते है।
सत्ख्यातिवाद - रामानुज
अख्यातिवाद - प्रभाकर ⎤ मीमांसा
विपरीत ख्यातिवाद - कुमारिल भट्ट ⎦
अन्यथाख्यातिवाद - न्याय - वैशेषिक दर्शन
आत्मख्यातिवाद - नागार्जुन (माध्यामिकवादी) (बौद्ध दर्शन)
असतखतिवाद - विज्ञानवादी (बौद्ध दर्शन)
अनिवर्चनीय ख्यातिवाद - शंकराचार्य (अद्वैतवादी)
सद्सत्ख्यातिवाद - सांख्या एवं योग दर्शन।

22. बौद्ध ज्ञान-मीमांस में सविकल्प प्रत्यक्ष है
(a) कभी-कभी वैध (b) सदैव वैध
(c) किसी प्रकार वैध नहीं (d) अनिर्धार्य

Ans : (c) बौद्ध दर्शन प्रमाण व्यवस्था को स्वीकार करता है इसके अनुसार प्रमेय दो है- स्वलक्षण और सामान्य। पहला प्रत्यक्ष का विषय है तो दूसरा अनुमान का। इन दोनों क्षेत्र पूर्णतः पृथक है, जो स्वलक्षण है, वह सामान्य नहीं हो सकता तथा जो सामान्य है, वह स्वलक्षण नही हो सकता। एक के क्षेत्र में दूसरे का प्रवेश पूर्णतः वर्जित या निषिद्ध है। यही प्रमाण व्यवस्था है।

स्रोत- प्रमाण- परिचय - डॉ. बी. एस. सिंह पृष्ठ

23. व्यापित को ठीक तरह से इस प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है
(a) नियत साहचर्य (b) कारणात्मक सम्बन्ध
(c) क्रम (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (a) व्यापित और व्यापक का संबंध व्यक्ति हैं इसे स्वभाविक संबंध, हेतु और साध्य का नियतसाहचर्य संबंध या अविनाभाव नियम भी कहते हैं। व्यापित अनुमान का प्राण है क्योंकि उपाधिरहित (अनौपाधिक) नियत साहचर्य संबंध है। जैसे जहाँ धुआ होगा वहाँ आग अवश्य होगा, लेकिन यह सम्भव है कि किसी स्थल पर आग हो, किन्तु धुआँ न हो। जैसे आग का गोला, अतः नियत सहचर्य संबंध ही व्याप्ति है।

स्रोत- राममूर्ति पाठक।

24. न्याय के अनुसार कारण की अनुमिती है

(a) पक्षधर्मता ज्ञान (b) भूयोदर्शन
(c) व्याप्ति ज्ञान (d) सादृश्य ज्ञान

Ans : (c) अनुमान के लिए दो शर्ते आवश्यक हैं।
1. हेतु एवं साध्य के बीच अनिवार्यता का ज्ञान पहले से हो।
2. पुनः हेतु का दर्शन हो। अनुमान का प्राण व्याप्ति है। दो घटनाओं के बीच नियत एवं अनिवार्य सम्बन्ध को व्याप्ति कहते हैं। यह हेतु एवं साध्य के बीच का अनिवार्य ज्ञान देता है। जो कारण से कार्य का अनुमान करता है तथा कार्य से कारण का ज्ञान भी करवाता है।

स्रोत- चन्द्रधर शर्मा।

25. नाद शाश्वत है क्योंकि इसमं नादत्व है जो उदाहरण है

(a) विरुद्ध हेत्वाभाषा (b) स्वभिकार हेत्वाभाषा
(c) एक वैध अनुमान (d) असिद्ध हेत्वाभाषा

Ans : (b) हेत्वाभासा अर्थात हेतु के आभास को हेत्वाभास कहते हैं। सत्यभिचार जिसे अनैकांतिक भी कहते है। हेतु केवल सपक्ष एवं पक्ष में होना चाहिए परन्तु यहाँ पर हेतु पक्ष, सपक्ष, विपक्ष सभी जगह व्याप्त होता है।
1. साधारण, जिसमें हेतु पक्ष, सपक्ष एवं विपक्ष तीनों में ही होता है। अतः यहाँ पर अतिव्याप्य दोष हो जाता है। जैसे- पर्वत प्रमेय होने के कारण वहिनमान है।
2. असाधरणतया यहाँ पर हेतु केवल पक्ष में होता है, न सपक्ष में न विपक्ष में अतः यहाँ पर अव्याप्त दोष है जैसे शब्द शब्दत्व के कारण नित्य है।
3. अनुपसंहारी-यहाँ हेतु इतना व्यापक होता है कि अन्वय एवं व्यतिरेक के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ता जैसे सभी प्रमेय होने के कारण अनित्य है। प्रमेय (object)

स्रोत- भारतीय दर्शन की रूपरेखा- रामामूर्ति पाठक

26. जैन नीतिशास्त्र में समयक् दर्शन का अर्थ है

(a) सम्यक् प्रत्यक्ष
(b) सत्यानुभूति
(c) तीर्थङ्करों के ज्ञान का सम्मान करना
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (c) सम्यक् दर्शन-जैन दर्शन ज्ञान के लिए 'आस्था' पर बल देता है। जैन दर्शन, धर्म एवं इसके तीर्थकरों के उपदेशों में दृढ़ विश्वास सम्यक् दर्शन है। इसकी आवश्यकता संशय के निवारण के लिए होती है। सम्यक् दर्शन का उदय दर्शनावरणीय कर्मों के विनाश से होता है। उल्लेखनीय है कि सम्यक् दर्शन अन्धविश्वास नहीं है। जैन दार्शनिक मणिभद्र का कथन है कि न महावीर के प्रति मेरा पक्षपात है और न कपिल आदि अन्य दार्शनिकों के प्रति द्वेष है मैं केवल तर्कसंगत वचन को स्वीकार करता हूँ वह चाहे जिस किसी का हो। इस प्रकार जैन में सम्यक् दर्शन बौद्धिक श्रद्धा है जो सम्यक् ज्ञान के लिए आवश्यक है।

स्रोत- भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा राममूर्ति पाठक

27. सूची - I को सूची - II के साथ सुमेलित कीजिए एवं सही सुमेलित कूट का चयन कीजिए:

सूची I	सूची II
(A) ब्राह्मण	(i) शैक्षणिक कार्य
(B) क्षत्रिय	(ii) देश के लिए संघर्ष करना
(C) वैश्य	(iii) अन्य वर्गों की सेवा करना
(D) शूद्र	(iv) व्यवसाय

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(b)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(c)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(d)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)

Ans : (c)

ब्राह्मण	-	शैक्षणिक कार्य
क्षत्रिय	-	देश के लिए संघर्ष करना
वैश्य	-	व्यवसाय
शूद्र	-	अन्य वर्गों की सेवा करना

28. पुरुषार्थ के चार प्रकारों का सही क्रम क्या है?

(a) अर्थ, काम, धर्म, मोक्ष (b) कम, अर्थ, धर्म, मोक्ष
(c) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष (d) मोक्ष, धर्म, अर्थ, काम

Ans : (c) बैदिक काल में पुरूषार्थों का उदय हो चुका था, किन्तु उस समय केवल अर्थ, धर्म, एवं काम की ही प्रधानता रही मोक्ष को अधिक महत्व नहीं दिया गया। उपनिषदों में चारों पुरुषार्थ क्रमशः धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, में मोक्ष को अधिक प्रमुखता दी गयी। उपनिषद्कारों ने 'मोक्ष' का ही अन्तिम ध्येय माना तथा धर्म, अर्थ, काम को उसका साधन स्वीकर किया।

स्रोत- प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा।

29. आश्रम धर्म का सही क्रम है

(a) गृहस्थ, वानप्रस्थ, ब्रह्मचर्य, संन्यास
(b) वानप्रस्थ, गृहस्थ, ब्रह्मचर्य, संन्यास
(c) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास
(d) ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संन्यास, गृहस्थ

Ans : (c) ऋग्वैदिक काल में ही वर्णाश्रम-धर्म प्रचलन में था। चार वर्णाश्रम हैं-
1. ब्रह्मचर्याश्रम- 25 वर्ष तक, ऋषि के साथ रहकर शिक्षाग्रहण करना, इसमें मनुष्य के सम्पूर्ण शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है।
2. गृहस्थ आश्रम - 25 से 50 तक, उचित उपायों द्वारा धनोपार्जन तथा संयमित सुख-भोग काल होता है।
3. वानप्रस्थ आश्रम - 50 से 75 वर्ष तक इस काल में समाज संग तथा योग आदि क्रिय करके अंतिम आश्रम के लिए तैयार होना।
4. संन्यास आश्रम - 75 से 100 वर्ष तक अपनी अध्यात्मिक उन्नति एवं मुक्ति के लिए प्रयास।

स्रोत- डॉ. सी. डी. शर्मा

30. ब्रह्म विहार की अवधारणा निम्नलिखित में किसमें उल्लेखित है?

(a) अद्वैत वेदान्त
(b) द्वैत वेदान्त
(c) द्वैत एवं अद्वैत वेदान्त दोनों में
(d) बौद्ध मत

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (d) बौद्ध दर्शन के महायान सम्प्रदाय से संबंधित मोक्ष (निर्वाण) की आवधारणा है जो मानता है कि निर्वाण प्राप्त व्यक्ति ब्रह्मविहार, मैत्री, करुणा, मुदिता उपेक्षा से सम्पुष्टि होता है। वह हीनयानियों के स्वकल्याण (स्वमुक्ति) के विपरीत सर्वकल्याण (सार्वभौमिक मुक्ति) की कामना करता हैं

स्रोत- भारतीय दर्शन की रूपरेखा- प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा

31. निम्नलिखित में से उस समूह को चुनिए जिसमें कांट की नैतिकता के तीन मूल सिद्धान्त हैं:

(a) स्वतन्त्रता, संकल्प और अन्तःप्रज्ञा
(b) स्वतन्त्रता, ईश्वर और अमरता
(c) स्वतन्त्रता, ज्ञान और संवेग
(d) आवश्यकता, वर्गणा और संवेदन शक्ति

Ans : (b) कांट का कथन है कि ''आस्था को स्थान प्रदान करने के लिए मैने (अतीन्द्रिय) ज्ञान का निषेध आवश्यक समझा'' का वस्तुतः यही अर्थ है- हठवादी तत्व-मीमांसा का यह अभिमान कि वह अतीन्द्रिय को भी जान सकती है, नैतिकता को असुरक्षित बना देता है इसलिए ज्ञान का निषेध करके कांट प्राकृतिक ज्ञान के आगे एक 'रिक्त स्थान' छोड़ देता है और वह 'रिक्त स्थान' व्यवहारिक बुद्धि के नियमों का कार्य स्थल है। व्यावहारिक बुद्धि की यह माँग है कि वह 'रिक्त स्थान' स्वतंत्रता, ईश्वर तथा अमरता के विश्वास से पूरित हो, क्योंकि इनके अभाव में नैतिक जीवन असंभव हो जाएगा।

स्रोत- कांट का दर्शन सभाजीत मिश्र।

32. दर्शन की योग विचारधारा के अनुसार घृणा और आसक्ति का सम्बन्ध है

(a) क्लेश (b) चित्तभूमि
(c) यम (d) नियम

Ans : (a) योग दर्शन में पाँच प्रकार के क्लेश माने गये है अविधा, अस्मिता, राग द्वेष एवं अभिनिवेश। इन क्लेशों के कारण सत्व, रजस एवं तमस् गुणों में परिणाम उत्पन्न होते रहते हैं। ये गुण अन्योन्याश्रित है अविद्या से राग आदि की उत्पत्ति होती है और राग आदि से अविद्या की। इस प्रकार ये पारस्परिक सहयोग से जीव के कर्मविपाक को उत्पन्न करते है। इनमें अविद्या सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि उसी से अन्य क्लेशों की उत्पत्ति होती है।

स्रोत- भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा- राममूर्ति पाठक

33. चार्वाक द्वारा किस नैतिक मापदण्ड को चुना गया?

(a) अन्त; प्रज्ञात्मक (b) तर्कबुद्धि वादात्मक
(c) सुखवादात्मक (d) आत्मपूर्णतावाद

Ans : (c) प्रत्यक्ष के क्षेत्र के बाहर किसी भी वस्तु को यथार्थ नहीं मानने के फलस्वरूप चार्वाक को प्रत्यक्षवादी (Positivist) कहा जाता है। सुख अथवा काम को जीवन का अन्तिम ध्येय मानने के कारण चार्वाक को सुखवादी (Hedonist) कहा जाता हैं।

स्रोत- प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा।

34. एक व्यक्ति जो सुख की प्राप्ति चाहता है, परन्तु इसमें असफल रहता है तो उस व्यक्ति को किस प्रकार के विरोधाभास का सामना करना है?

(a) आत्मपूर्णतावाद (b) सुखवाद
(c) निग्रहवाद (d) परार्थवाद

Ans : (b) मनुष्य वास्तव में सुख की नहीं अपितु उन वस्तुओं की इच्छा करता है जिनसे उसे सुख प्राप्त होता है अथवा हो सकता है उदाहरणार्थ भूखा होने पर मनुष्य मूलतः भोजन की इच्छा करता है उससे प्राप्त होने वाले सुख की नहीं। इसलिए सिजविक के उपयोगितावाद को बौद्धिक उपयोगितावाद कहा जाता है अनेक विचारकों ने उसे अंतः प्रज्ञात्मक 'उपयोगितावाद' की संज्ञा दी है। सिजविक के अनुसार सुख प्राप्त करने के लिए कर्म करते समय सुख को भूल जाना आवश्यक होता है। इसे ही 'सुख का विरोधाभास' कहा जाता है।

स्रोत- वेद प्रकाश वर्मा

35. उस कूट को चुनिए जिसमें दण्ड के दो सिद्धन्त हैं।

(a) प्रतिक्रियात्मक एवं पुनराश्वासनता
(b) प्रतिशोधात्मक एवं सुधारात्मक
(c) निषेधात्मक एवं प्रतिक्रियात्मक
(d) पुनराश्वासनता एवं प्रतिशोधात्मक

Ans : (b) दण्ड के तीन सिद्धान्त है।

1. प्रतिशोधात्मक सिद्धानत - जिसमें आँख के बदले आँख और दॉत के बदले दॉत का दण्ड दिया जता है। इसे प्रतिफलात्मक सिद्धान्त भी कहता है।

2. प्रतिक्रियात्मक सिद्धान्त- इसमें दण्ड भेड चुराने के लिए नहीं बल्कि भेड़ की चोरी फिर से न हो इसलिए समाज में दण्ड का भय व्याप्त रहे।

3. सुधारात्मक सिद्धान्त - दण्ड इसलिए दिया जाता है कि व्यक्ति का सुधार हो। इसमें मृत्यु दण्ड नहीं दिया जाता है। व्यक्ति को सुधारने के लिए दण्ड दिया जाता है।

36. निम्नलिखित में से किसने 'सती प्रथा' का विरोध करके महिलाओं के उद्धार के लिए कार्य किया?

(a) दयानन्द सरस्वती (b) राजा राम मोहन राय
(c) महात्मा गांधी (d) वल्लभ भाई पटेल

Ans : (b) सतीप्रथा से मुक्ति दिलाने वाले, ब्रह्म समाज की स्थापना करने वाले राजा राम मोहन राय थे। जिन्हे आधुनिक समाज का जनक भी कहा जाता है। भारतीय समाज में एक कुप्रथा प्रचलित थी जिसमें किसी भी महिला के पति की मृत्यु होने उस महिला को चिता में जला दिया जाता था जिसे सतीप्रथा कहा जाता है। लेकिन सतीप्रथा का वास्तविक अर्थ था कि पति के वियोग से स्त्री के शरीर का ताप इतना अधिक हो जाता था कि शरीर जल जाया करता था उसे सती कहा गया लेकिन बाद में महिलाओं को जबरन चिता पर सती किया जाने लगा। इसी का विरोध सर्वप्रथम राजा राममोहन राय ने किया था।

37. कॉन्ट ने नैतिक सिद्धान्तों का उल्लेख किसमें किया है?

(a) द क्रिटिक ऑफ प्योर रीज़न
(b) द क्रिटिक ऑफ प्रैक्टिकल रीज़न
(c) रिलीज़न विद-इन द लिमिट्स ऑफ रीज़न
(d) इनमें से कोई नहीं

Ans : (b)

1. द क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन यह कांट की पुस्तक है इसमें बुद्धि के द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के मापदण्डों का उल्लेख किया गया है जो एक ज्ञानमिमांसी पुस्तक है।

2. द क्रिटिक ऑफ प्रैक्टिकल रीजन यह भी कांट की पुस्तक हैं इसमें नैतिक सिद्धान्तों का उल्लेख किया गया है। इसी में कांट ने नैतिकता की पूर्व तीन मान्यताए स्वतंत्रता, ईश्वर, अस्तित्व एवं आत्मा की अमरता को स्वीकार्य किया है।

38. निम्नलिखित में से रिक्त स्थान की पूर्ति करें:
अन्तः प्रज्ञावाद, अन्तःप्रज्ञात्मता .... है।

(a) के समकक्ष (b) के समान
(c) से भिन्न (d) इनमें से कोई नहीं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans : (c) अन्तः प्रज्ञावाद का समर्थन 17वीं शताब्दी के दार्शनिकों ने किया। कडवर्थ, क्लार्क, बोलस्टन, रीड, प्राइस, शेफ्टसबरी, मार्टिन्यू, बटलर, जी.ई.मूर, प्रिचर्ड, रॉस आदि क नाम उल्लेखनीय हैं अन्तः प्रज्ञावादी यह मानते है कि हमें अपनी अन्तः प्रज्ञाद्वारा इस बात का साक्षात् ज्ञान हो जाता है कि कौन-सा कर्म अथवा नियम नैतिक दृष्टि से उचित या अनुचित है। अन्तः प्रज्ञात्मक साक्षात् ज्ञान की सीमा के सम्बन्ध में अन्तः प्रज्ञावादियों में मतभेद है। कुछ अन्तःप्रज्ञावादई अन्त प्रज्ञा को बौद्धिक ही मानते है कुछ अन्तः प्रज्ञा को मुख्यता भावनात्मक मानते हैं।

स्रोत- वेद प्रकाश वर्मा

39. निरपेक्ष आदेश निर्देशित करता है........

(a) सोपाधिक
(b) निरुपाधिक
(c) उपर्युक्त (a) और (b) दोनों नहीं
(d) उपर्युक्त (a) और (b) दोनों

Ans : (b) इस भांति आचरण करो कि तुम्हारी इच्छा का नियम उसी समय सार्वभौम आदेश की स्थापना करने वाले सिद्धान्त बन सके। नैतिकता का आदेश ऐसा आदेश है जे कि विवेकयुक्त इच्छा रखने वाले मनुष्यों के आचरण को निश्चित रूप से नियन्त्रित करता है। यह आदेश किन्ही परिणामों को प्राप्त करने के उद्देश्य से नहीं दिया जाता; यह हमारी इच्छा को प्रागनुभविक रूप से तथा हमारे कार्यों के नियमों के आकार को निर्धारित करता है। कांट का यही निरपेक्ष आदेश है।

स्रोत- कांट का दर्शन- समाजीत मिश्र

40. निम्नलिखित में से कौन सी पद्धति नैतिकता के आधार स्वरूप ईश्वर मीमांसा, सुख या व्यावहारिक परिणामों को नहीं मानती है?

(a) वास्तववाद (b) अन्तः प्रज्ञावाद
(c) समीक्षात्मक आदर्शवाद (d) उपयोगितावाद

Ans : (c) काण्ट को समीक्षात्मक आदर्शवादी कहा जाता है क्योंकि काण्ट किसी कर्म के परिणाम के आधार पर उचित-अनुचित या शुभ-अशुभ नहीं मानता है वह कर्म के स्वयं किये जाने योग्य मानता है वह कहता है वही कर्म नैतिक रूप से उचित है जो कर्त्तव्य प्रेरणा से किया गया हो। कर्त्तव्य के लिए कर्त्तव्य का सिद्धान्त देता है।

स्रोत- नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण-संगम लाल पण्डेय।

41. न्याय युक्ति की आकृति का निर्धारण किसकी स्थिति से होता है?

(a) मुख्य पद (b) मध्यम् पद
(c) गौण पद (d) युग्मक

Ans : (b) मध्यम पद दोनों आधार वाक्यों में होता है और माध्यम पद की स्थिति से ही न्यायवाक्य की आकृति का पता लगया जाता है कुल 4 प्रकार की आकृतियां होती है।

प्रथाम आकृति	द्वितीय आकृति	तृतीय आकृति	चतुर्थ आकृति
म. वि.	वि. म.	म. वि.	वि. म.
उ. म.	उ. म.	म. उ.	म. उ.
उ. वि.	उ. वि.	उ. वि.	उ. वि.

स्रोत- तर्कशास्त्र एक परिचय कोपी कोहेन

42. वैध न्याय युक्ति में 'मध्य पद' अनिवर्यतः व्याप्त रहता है

(a) मुख्य आधारवाक्य (b) गौण आधारवाक्य
(c) किसी भी एक आधारवाक्य में (d) निष्कर्ष वाक्य

Ans : (c) किसी भी वैध मानक निरपेक्ष न्यायवाय में मध्यम पद कम से कम एक आधार वाक्य में अवश्य प्राप्त होना चाहिए। अन्यथा अव्याप्त मध्यम पद दोष होगा।

स्रोत- तर्कशास्त्र एक परिचय- कोपी कोहेन

43. सत्य और असत्य अभिलक्षित करते हैं

(a) प्रतिज्ञप्ति (b) युक्तियाँ
(c) (a) और (b) दोनों (d) न (a) और न ही(b)

Ans : (a) तर्कशास्त्र में सत्यता (Truth) एवं असत्यता (Falsity) का प्रयोग कर्तवक्यों (Propositions) के लिए किया जाता है। सत्यता, असत्यता तर्कवाक्यों के गुण है। तर्क वाक्य सत्य या असत्य हो सकते है। इसी प्रकार युक्ति के भी अपने विशिष्ट गुण है। युक्ति के लिए वैधता (Validity) एवं अवैधता (Invalidity) का प्रयोग किया जाता हैं। वैधता, अवैधता, निगमनात्मक युक्तियों की विशेषताए है। जो युक्तियाँ तर्कवाक्य का ढाँचा होती है वे युक्तियां तर्कवाक्यों के सत्य या असत्य होने के अनुसार वैध या अवैध नहीं होती हैं। यदि सभी तर्कवाक्य सत्य हो तो यह निश्चित नहीं करता कि युक्ति भी वैध होगी क्योंकि असत्य तर्कवाक्यों से बनी युक्ति भी वैध हो सकती है और सत्य तर्कवाक्य से बनी युक्ति भी वैध हो सकती है।

स्रोत- तर्कशास्त्र के सिद्धान्त अविनाश तिवारी

44. सार्वभौमिक नकारात्मक प्रतिज्ञप्तियों में निम्नलिखित में से कौन सा/से पद व्याप्त होते हैं?

(a) उद्देश्य पर
(b) विधेय का पद
(c) न उद्देश्य और न ही विधेय पद
(d) कर्त्ता और विधेय पर दोनों

Ans : (d) 1. सभी दार्शिनिक चिन्तनशील प्राणी हैं। विन्ध्यात्मक सर्वव्यापी 'A'
2. कोई दार्शनिक चिन्तनशील प्राणी नहीं हैं निषेधात्मक सर्वव्यापी 'E'
3. कुछ दर्शिनिक चिन्तनशील प्राणी है। विन्धात्मक अंश व्यापी 'I'
4. कुछ दार्शीनिक चिन्तनशील प्राणी नहीं है। निषेधात्मक अंश व्यापी 'O'

A तर्कवाक्य का उद्देश्य पद व्याप्त होता है और विधेय अव्यापत रहता है 'E' तर्कवाक्य का उद्देश्य एवं विधेय दोनों पद व्याप्त होता है। 'I' तर्कवाक्य में कोई पद व्याप्त नहीं होता तथा 'O' तर्कवाक्य का उद्देश्य अव्याप्त होता है, जबकि विधेय पद व्याप्त होता हैं।

स्रोत- दर्शन पुञ्ज विनोद तिवारी

45. निम्नलिखित युग्मों से कौन सा युग्म E और O प्रतिज्ञप्ति को इंगित करता है?

(a) कोई भी मनुष्य अच्छा नही है; कुछ मनुष्य अच्छे नहीं हैं।
(b) सभी मनुष्य अच्छे हैं; कुछ मनुष्य अच्छे हैं।
(c) सभी मनुष्य अच्छे हैं; कोई मनुष्य अच्छा नहीं है।
(d) कुछ मनुष्य अच्छे हैं; कुछ मनुष्य अच्छे नहीं हैं।

Ans : (a) निरुपधिक तर्क वाक्य प्रायः वर्गो (classes) के बारे में कथन होते है। इसमें तर्क वाक्य के वर्गो के बीच विभिन्न संबंधों का विधि या निषेध किया जाता है।
1. सभी दर्शनिक चिन्तनशील प्राणी हैं विन्ध्यात्मक सर्वव्यापी 'A'
2. कोई दार्शनिक चिन्तनशील प्राणी नहीं हैं। निषेधात्मक सर्वव्यापी 'E'
3. कुछ दार्शनिक चिन्तनशील प्राणी है। विन्ध्यात्मक अंश व्यापी 'I'
4. कुछ दार्शनिक चिन्तनशील प्राणी नहीं है। निषेधात्मक अंश व्यापी 'O'

स्रोत- दर्शन पुञ्ज- विनोद तिवारी

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

46. विपरीतात्मक तर्कवाद के युग्म का चयन कीजिए:
(a) आई (I), ओ (O) का तर्कवाद
(b) ए (A), ई (I) का तर्कवाद
(c) ए (A), ओ (O) का तर्कवाद
(d) ई (E), आई (I) का तर्कवाद

Ans : (b) जब दो सर्वव्यापी तर्कवाक्य एक साथ सत्य नहीं हो सकते किन्तु असत्य हो सकते है, तो उसे विपरीत कहा जाता है।
पहचान- जब समान उद्देश्य एवं विधेय पद वाले दो सर्वव्यापी तर्कवाक्य A और E के गुण भिन्न हों, तो उसमें विपरीत का संबंध होता है।
जैसे- सभी जानवर स्तनपायी है (A)
और, कोई जानवर स्तनपायी नहीं है (E)
यहाँ A तर्कवाक्य का जो उद्देश्य एवं विधेय पद है, वही उद्देश्य और विधेय पद E का भी है किन्तु A तर्कवाक्य का गुण स्वीकारात्मक है और E तर्कवाक्य का निषेधात्मक इसलिए इन दोनों सर्वव्यापी तर्कवाक्यों A और E में विपरीत का संबंध है।
स्रोत- तर्कशास्त्री एक परिचय कोपी कोहन।

47. p v q मिथ्या है जबकि
(a) p सत्य है और q सत्य है।
(b) p सत्य है और q मिथ्या है।
(c) p मिथ्या है और q सत्य है।
(d) p मिथ्या है और q मिथ्या है।

Ans : (d) विकल्प वाक्य का सत्यता मूल्य तब सत्य होता है जब उनके दोनों विकिल्पावयवों में कम से कम एक सत्य हो अर्थात् दोनों विकल्पावयवों के असत्य होने पर विकल्प वाक्य का सत्यता मूल्य असत्य होता है। विकल्प अर्थात 'या' को 'U' प्रतीक से प्रदर्शित किया जाता है।

P	q	Pvq
T	T	T
T	F	T
F	T	T
F	F	F

स्रोत- तर्कशास्त्र का परिचय - कोपी कोहेन

48. कथन का वह रूप, जिसमें केवल सत्य ही स्थानापन्न उदाहरण हैं, कहलाता है
(a) पुनरुक्ति (b) व्याघात्
(c) आपातिक (d) आपादन

Ans : (a) वाक्य आकार तीन प्रकार को होता है-
1. पुनकर्थन (Tautology)
2. व्याघातक (Contradiation) एवं
3. संभाव (contingent)
1. **पुनकर्थन -** जिस वाक्य - आकार के केवल सत्य प्रतिस्थापन उदाहरण हों, उसे पुनकर्थन वाक्य आकार कहते है।।
2. **व्याघातक -** जिस वाक्य आकार का प्रतिस्थापन उदाहरण केवल असत्य हो, उसे व्याघातक वाक्य आकार कहते हैं।
3. **संभाव्य -** जिस वाक्य आकार का प्रतिस्थापन उदाहरण सत्य एवं असत्य दोनों हो उसे संभाव्य वाक्य-आकार कहते है।
स्रोत- प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र एक अध्ययन अविनाश तिवरी

49. यदि A और B सत्य कथन हैं और X और Y असत्य कथन हैं, तो संयुक्त कथन ~ (A v X) है।
(a) सत्य (b) असत्य
(c) संशयपूर्ण (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans : (b)
= ~ (A . X) जहाँ दिया गया है कि A = T सत्य
= ~ (T . F) X = F असत्य
= ~ T . ~ F
= F . T
= F
संयुक्त कथन असत्य है। क्योंकि सूत्र छोटा है

p	q	p . q
T	T	→ T
T	F	→ F
F	T	→ F
F	F	→ F

50. निम्नलिखित युक्तियों को पढ़िए:
(i) यदि मैं भारत का राष्ट्रपति हूँ तो मैं प्रसिद्ध हूँ। मैं भारत का राष्ट्रपति नहीं हूँ। अतः मैं प्रसिद्ध नहीं हूँ।
(ii) यदि मौसम बढ़िया है तो मैच होगा। मौसम बढ़िया नहीं है। अतः मैन नहीं होगा।
प्रदत्त कूट से उपरोक्त युक्तियों का युक्ति रूप का चयन कीजिए:
(a) $p \supset q$
$\sim p$
$\therefore q$
(b) $p . q$
p
$\therefore q$
(c) $p \supset q$
$\sim p$
$\therefore \sim q$
(d) $p \wedge q$
$\sim \sim q$
$\therefore p$

Ans : (c) अनुमान के नियम में मोड्स टोलेन्स (शेषवत् अनुमान) का नियम एक महत्वपूर्ण नियम हैं इस नियम के अनुसार
$P \supset q$
$\sim p$ होता है।
$\overline{\sim p}$
जहाँ $p \supset q$ एक सोपाधिक वाक्य है जिसमें 'याद' और 'तो' होता है।
स्रोत- अविनाश तिवारी

51. निम्नलिखित में से कौन सा धर्म अपने 'धार्मिक ग्रंथ' को 'ईश्वरीय वाणी' मानकर पूजा करता है?
(a) हिंदू धर्म (b) ईसाई धर्म
(c) जैन धर्म (d) सिख धर्म

Ans : (d) सभी धार्मिक ग्रंथ प्रामाणित माने जाते है, हिंदू धर्म, ईसाई धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म सभी का अपना-अपना प्रामाणिक शास्त्र है लेकिन स्लामधर्म कुरान को ईश्वरवाणी मानता है लेकिन पूजा नहीं करता है वही सिख धर्म का ग्रंथ 'गुरुबानी' को ईश्वर की वाणी मानकर पूजा की जाती हैं पारसी धर्म में अग्नि की पूजा की जाती है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

52. **निम्नलिखित धर्मों के युग्मों से किस युग्म को निरीश्वरवादी स्वरूप माना जा सकता है?**
(a) जूडा धर्म - ईसाई धर्म
(b) इस्लाम - जोरास्रीयन धर्म
(c) जैन धर्म- बौद्ध धर्म
(d) हिंदू धर्म - सिख धर्म

Ans : (c) आधुनिक भारतीय साहित्य में आस्तिक एवं नास्तिक पदों का एक अन्य अर्थ प्राप्त होता है इसमें ईश्वर की सत्ता में विश्वास करने वाला आस्तिक कहलाता है और ईश्वर की सत्ता में विश्वास न करने वाला नास्तिक। इस दृष्टि से चार्वाक, जैन एवं बौद्ध दर्शनों के साथ सांख्य एवं मीमांसा दर्शन भी नास्तिक दर्शन की कोटी में आता है, क्योंकि ये भी निरीश्वरवादी हे इसके अतिरिक्त अन्य सभी विचारधारांए (योग, न्याय, वैशेषिक एवं वेदान्त) ईश्वरवादी होने के कारण आस्तिक दर्शन की कोटि में आती है।
स्रोत- भारतीय दर्शन की समीक्षात्मक रूपरेखा राममूर्ति पाठक

53. **निम्नलिखित धर्मों के समूह में से कौन सा समूह उद्धारणा की अवधारणा में विश्वास है?**
(a) जैन धर्म और इस्लाम
(b) इस्लाम और ईसाई धर्म
(c) हिंदू धर्म और ईसाई धर्म
(d) बौद्ध धर्म और जैन धर्म

Ans : (b) इस्लाम और ईसाई धर्म का धार्मिक ग्रंथ क्रमशः कुरान तथा बाइबिल है दोनों धर्म में समानता दिखाई देता हैं दोनों ही धर्म परम आत्मा के जन्म को स्वीकार करते है।

54. **निम्नलिखित में से कौन सा धर्म-समूह सिमेटिक धर्म समूह है?**
(a) इस्लाम-जैन धर्म- जूडा धर्म
(b) जैन धर्म- बौद्ध धर्म- सिख धर्म
(c) हिंदू धर्म- इस्लाम - ईसाई धर्म
(d) जूडा धर्म- ईसाई धर्म- इस्लाम

Ans : (d) जैसे बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म को सिमेटिक धर्म माना जाता है वैसे ही जूडा धर्म, ईसाई धर्म तथा इस्लाम धर्म को सिमेटिक धर्म कहा जाता है। भारतयी दर्शन में भी चार्वाक, बौद्ध-जैन धर्म की नास्तिक धर्म कहा जाता है तथा बौद्ध तथा जैन धर्म का श्रवण परम्परा का माना जाता है।
स्रोत- राममूर्ति पाठक।

55. **सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए प्रदत्त कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए :**

सूची I	सूची II
(A) हिंदू धर्म	(i) बाइबल
(B) जोरास्ट्रीयन धर्म	(ii) अवेस्ता
(C) जैन धर्म	(iii) भगवद्गीता
(D) ईसाई धर्म	(iv) तत्त्वार्थसूत्र

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(b)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(c)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(d)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)

Ans : (d)

सूची I		सूची II
हिंदू धर्म	-	भगवद्गीता
जोरास्ट्रीयन धर्म	-	अवेस्ता
जैन धर्म	-	तत्त्वार्थसूत्र
ईसाई धर्म	-	बाइबल

56. **''ऑन डीनोटिंग'' नामक प्रसिद्ध निबन्ध का लेखन कौन है?**
(a) क्वाइन (b) डेविडसन
(c) रस्सेल (d) फ्रेगे

Ans : (c) रसेल अपने वर्णन सिद्धान्त की चर्चा अपने लेख Om Demoting (mind, 1905) में करता है। रसेल कहता है कि कुछ पद ऐसे होते है जो लगता तो है कि किसी वस्तु को सूचित करते है लेकिन उसकी वस्तु सूचकता भ्रामक होती है रसेल मानता है कि कुछ पद ऐसे होते है जिनके अनुरूप वस्तु है तथा जो हमारे प्रत्यक्ष के विषय है। ऐसे पदों को रसेल नाम कहता है, उसके अनुसार नाम है तो नामी है और नामी है तो नाम हैं लेकिन जो नाम की तरह प्रतीत होते है लेकिन नाम नहीं होते, उनका वर्णन करना होता है।
स्रोत- प्रो. वी. के. लाल

57. **फ्रेगे निम्नलिखित में से किसमें भेद करता है?**
(a) संवेदना और सामान्य बुद्धि
(b) संवेदना और संदर्भ
(c) संवेदना और सत्यावस्था
(d) संवेदना और असंवेदना

Ans : (b) फ्रेगे संवेदना तथा संन्दर्भ में अन्तर करता है। वही विटगेस्टाइन दोनों में अन्तर नहीं करता है फ्रेगे Sencse तथा Reference में अन्तर करता है।

58. **जे. एल. ऑस्टिन केव अनुसार स्थान-निर्धारण कार्य एक कर्म है**
(a) व्याकरणबद्ध और बुद्धिमतापूर्ण कुछ कहना
(b) उच्चरित करने के लिए करना
(c) कुछ कहने से कुछ करना
(d) उपरोक्त सभी

Ans : (a) आस्टिन अपने वाक् क्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है। इसका वर्णन उसकी पुस्तक- 'हाऊ टू डॅ थिंग्स विद वर्डस' में मिलता है। इस प्रकार आस्ट्रिन समग्र वाक् स्थिति में समग्र वाक् क्रिया सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है। आस्टिन अपने वाक् क्रिया सिद्धान्त को तीन भागों में विभक्त करता है।
1. लोकेशनरी क्रिया Locutionary Act
2. इलोकेशनरी क्रिया Illocutionary Act
3. परलोकेशनरी क्रिया Perlocutionary ACT

59. **यह किसकी मान्यता है कि भाषा वाक्य से वाक्य के आधार पर नहीं अपितु समग्र रूप से कार्य करती है?**
(a) फ्रागे (b) रस्सेल
(c) प्रारम्भिक विट्गिन्स्टीन (d) कूआइन

Ans : (d) W.V.O. Quine मूलतः अनुभववादी दार्शनिक थे। Quine के अनुसार अनुभव से स्वतंत्र ज्ञान की संकल्पना असम्भव है क्योंकि अनुभव ही ज्ञान का आधार है अतः अनिवार्य ज्ञान की सम्भावना नहीं है। इस मान्यता की स्थापना क्वाइन अपने एक पुस्तक Two Dogmas of Empiricism: Form a Logical Point of View में करते है।
स्रोत- प्रो. वी. के. लाल

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

60. पी.एफ. स्ट्रासन की आत्म विद्या को कहते हैं
(a) विवरणात्मक (b) संशोधात्मक
(c) आदर्शात्मक (d) शून्य वादात्मक

Ans : (a) स्ट्रासन के अनुसार हमारा अनुभव इतिहास विकासधारा के अनुसार बदलता रहता है, परन्तु कुछ समप्रत्यय ऐसे है जिनमें केई परिवर्तन नहीं होता, ऐसे समप्रत्यय को स्ट्रासन मूल समप्रत्यय कहते है। इसमें से एक समप्रत्यय व्यक्ति का समप्रत्यय है। इसी आत्म विद्या को स्ट्रासन विवरणात्मक समप्रत्यय कहता है। व्यक्ति न तो शरीर है न है ही केवल आत्मा है और न ही शरीर एवं आत्मा दोनों का योग हैं स्ट्रासन के अनुसार व्यक्ति का समप्रत्यय एक मूल का समप्रत्यय है।
स्रोत- प्रो. वी. के. लाल

61. निम्नलिखित में से वह दार्शनिक कौन है जो दृश्य प्रपंचवादी नहीं है?
(a) ब्रेनटानो (b) मीनोंग
(c) हुस्सर्ल (d) क्वाइन

Ans : (d) कूआइन एक तार्किक अनुभववादी दार्शनिक हैं हुस्सर्ल एक फेनोमेनोलॉजिस्ट है, ब्रेनटानों एक मनोवैज्ञानिक दार्शनिक हैं मीनोंग एक विश्लेषणवादी है।

62. लॉजिकल इन्वेस्टीगेशन का लेखन कौन है?
(a) विट्गिनस्टीन (b) हस्सर्ल
(c) डूम्मट्ट (d) हीडेगर

Ans : (b)

लेखक	**पुस्तक**
हुस्सर्ल	लॉजिकल इन्वेस्टीगेंशन
हाइडेगर	बीइन एण्ड टाइम
विटगेंस्टाइन	फिलोसोफिकल इन्वेस्टीगेंशन और टैक्टेटस।

63. हस्सर्ल का प्राग्नुभविक दृश्य प्रपंचात्मक आकृत्यंतर का उद्देश्य किसको खोजना है?
(a) इंद्रियानुभविक आत्मा (b) दृश्यप्रपंचात्मक अहम्
(c) अन्तर-व्यक्तिनिष्ठ अहम् (d) प्रग्नुभविक अहम्

Ans : (d) हुर्सल की फेनोमेनोलाजी शुद्ध रूप से ज्ञानमीमांसीय अन्वेषण है। लेकिन जब वह विभिन्न प्रकार के अपचयन (Reductions) से वस्तु के सारतत्व (essence) तक पहुचता है। हुसर्रल इसे Immanent कहता है क्योंकि ये चेतना को प्रदत्त होते हैं। ये Transcendent है। यही वस्तु का आद्य अर्थ है यदि इसी प्रकार के अर्थो को पकड़ा जा सके, तो हमें अपने ज्ञान का वास्तविक आधार मिल सकता है। इस प्रकार वह दृश्य प्रपंचात्मक आकृत्यंतकरण का उद्देश्य प्राग्रनुभविक अहम् की खोज कहता है।
स्रोत- प्रो. बी. के. लाल

64. शब्द शब्दार्थ मीमांसा के अन्तर्गत आ जाता है
(a) मूल पाठ की समझ (b) मूल पाठ की व्याख्या
(c) (a) और (b) दोनों (d) न (a) और न ही (b)

Ans : (c) हेर्मेन्यूटिक्स कला, समझ का सिद्धान्त है। व्याख्या के सामान्य सिद्धान्त जर्मन दार्शनिक और धर्मशास्त्री फ्रेडरिक श्लेस्माकर द्वारा रखे गये थें यूरोपीय दार्शनिकों मार्टिन हाइडेगर और गैडामर की 20 शदी काम करता हैं के बीच Avtora .v अवटोरा, वी. जी. दार्शनिक सिद्धान्त में मानविकी की एक विधि से हेर्मेनेयूटिक्स बदल गया। बाद में गैडामर ने शब्दार्थ-मीमांसीय मानववाद की व्याख्या की है।

65. शब्दार्थ-मीमांसीय मानववाद का प्रतिपादक है
(a) हीडेगर (b) गाडामेर
(c) रोनाल्ड बार्थेस (d) रिचर्ड रोरटी

Ans : (b) शब्द शब्दार्थ मीमांसा को हेर्मेनेयुटिक्स के रूप में जाना जाता है। हेर्मेनेयुटिक्स (व्युत्पत्तिशास्त्र भी कहते है) दार्शनिक पाठ प्रौद्योगिकी एवं प्राचीन शास्त्र, धर्म, इतिहास, भाषा विज्ञान, मनोविज्ञान और साहित्यिक सिद्धान्त के दार्शनिक प्राणाली हैं। यह पाठ खुद के अनुसार पाठ की व्याख्या और सक्षम के एक सिद्धान्त के रूप में वर्णित किया जाता है। अर्थात मूलपाठ की समझ तथा उसकी व्याख्या दोनों की कार्यो के लिए हेर्मेनेयुटिक्स पद्धति का प्रयोग किया जाता है। इसके मुख्य दार्शनिक गैडामर, इमली बेट्टी, हाइडेगर, श्लेस्माकर, डिरिडा आदि है।

66. अद्वैत वेदान्त में माया है
(a) वास्तविक
(b) अवास्तविक
(c) वास्तविक और अवास्तविक दोनों
(d) न वास्तविक और न ही अवास्तविक

Ans : (d) माया जड़ है और अपनी सत्ता के लिए बह्य पर आश्रित हैं माया अनादि है किन्तु (Infinite) नहीं है। माया ब्रह्म की स्वाभाविक शक्ति हैं। जिससे वह इन नाम-रूपमय प्रपंचात्मक जगत् को उत्पन्न करता है। माया सदसद्विलक्षण एवं अनिवर्चनीय है। माया अध्याय हैं। माया विवर्तमाल (Appearance only) है। और इसकी व्यावहारिक सत्ता (Empirical reality) है। माया का आश्रय और विषय वहा हैं। माया विज्ञान-निरस्या (Removeable) by right knowledge) है। माया की दो शक्तियाँ हैं आवरण (concealmet) और विक्षेप (Projection)। आवरण का अर्थ है।, ढंकना, छिपाना और विक्षेप का अर्थ है।, उस पर दूसरी वस्तु को आरोपित करना। माया आवरण-शक्ति से ब्रह्म की एकता को छिपा देती हैं या उसके वास्तविक स्वरूप को ढक लेती है। और विक्षेप शक्ति के द्वारा ब्रह्म के स्थान पर प्रपंचात्मक जगत का आरोप करके उसका अन्यथा आभास कराती है।
स्रोत - राममूर्ति पाठक।

67. रामानुज के अनुसार जीवात्मा है
(a) सर्वत्र है (b) अणु के आकार की है।
(c) मध्यम आकार की है। (d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

Ans : (b) जीवात्मा शरीर 'मन' इन्द्रियों से भिन्न है। जीवात्मा ईश्वर पर आश्रित है। ईश्वर जीवात्मा का संचालक हैं जीवात्मा संसार के भिन्न-भिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करता हैं। इसलिये वह ज्ञाता है वह संसार के भिन्न-भिन्न कर्मो में भाग लेता है। इसलिए वह कर्ता हैं। जीव अपने कर्म का फल भोगता हैं। वह अपने शुभ - अशुभ कर्मों के अनुसार सुख और दुःख को प्राप्त करता है। जीव को कर्म करने में पूरी स्वतंत्रता है जीव नित्य है। जीव अनेक है रामानुज के अनुसार जीवात्मा चेतना द्रव्य है। चैतन्य आत्मा का गुण धर्म है आत्मा चेतना से उसी प्रकार संबंधित है जिस प्रकार विशेष्य विशेषण से जीवात्मा रामानुज के मतानुसार 3 प्रकार होते है- 1. बुद्ध जीव 2. मुक्त जीव 3. नित्य जीत
स्रोत- भारतीय दर्शन प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिंह

68. रामानुज के अनुसार आत्मा और परमत्मा के बीच का सम्बन्ध है
(a) तादात्म्य (b) भेद
(c) तादात्म्य और भेद दोनों (d) न तादात्म्य और न ही भेद

Ans : (c) तादात्म्य और भेद दोनों के अनुसार जीव स्वरूपतः ब्रह्म से भिन्न है। किन्तु ब्रह्म एवं जीव में 'अपृथक् सिद्धि सम्बन्ध है। इसका अर्थ है कि जीव (और जगत भी) ईश्वर के बिना नहीं रह सकते और ईश्वर जीव और जगत के बिना नहीं रह सकते उल्लेखनीय है कि अपृथक सिद्धि सम्बन्ध संयोग एवं समवाय से

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

भिन्न है। संयोग दो स्वतन्त्र वस्तुओं का सम्बन्ध है। इनमें सम्बन्धित एक दूसरे कके बिना भी रह सकती है। जैसे-मेज एवं पुस्तक में संयोग सम्बन्ध है। समवाय वो अयुतद्धि वस्तुओं का सम्बन्ध है। जिसमें एक दूसरी पर आश्रित होती है। किन्तु दूसरी पहले पर आश्रित नहीं होती। द्रव्य और गुण में अंगी एवं अंग में सम्बन्ध समवाय है। रामानुज दर्शन में अपृथक सिद्धि एक विलक्षण सम्बन्ध है। ईश्वर जीव के बिना नहीं रह सकते और जीव ईश्वर के बिना नहीं रह सकते। यद्यपि जीव स्वरूपतः ब्रह्म से भिन्न हैं यद्यिपि ब्रह्म से उसका सम्बन्ध अविच्छेद्य है। पुनः ब्रह्म एवं जीव में विशेष्य - विशेषण, अंशी-अंश एवं आत्मा - शरीर जैसा सम्बन्ध हैं ब्रह्म विशेष्य हैं जीव विशेषण है। ब्रह्म अंशी है और जीव अंश है, ब्रह्म आत्मा है और जीव उसका आन्तरिक शरीर है।

69. रामानुज के अनुसार मोक्ष का अर्थ है,

(a) परमात्मा और आत्मा के बीच तादात्म्य
(b) परमात्मा और आत्मा के बीच समानता
(c) परमात्मा और आत्मा के बीच तादात्म्य और समानता दोनों
(d) परमात्मा और आत्मा के बीच न तादात्म्य और न ही समानता

Ans : (b) रामानुज की मान्यता है कि मोक्ष प्राप्त होने पर मुक्तात्मा ईश्वर के स्वरूप को प्राप्त करता है, यद्यपि वह उसके स्वरूप को नहीं प्राप्त करता (ब्रह्मणोभावः न तु स्वरूपैक्यम्) यह सर्वज्ञ हो जाता है और उसे सदैव अन्तर्दृष्ट द्वारा ईश्वर का ज्ञान होता है। (परिपूर्णब्रह्मानुभवम्) अर्थात मुक्तात्मा ब्रह्मभाव को तो प्राप्त होता है, किन्तु उसका पृथक व्यक्तित्व भी बना रहता है। उसका व्यक्तित्व ब्रह्म में विलीन नही होता। उसका पृथक अस्तित्व मोक्ष का विरोधी नहीं हैः तात्पर्य यह है कि मुक्ति का अर्थ जीवात्मा का परमात्मा से एकाकार होना नहीं है, अपितु जीवात्मा का शुद्ध निर्मल ज्ञान से युक्त होना तथा दोषरहित होकर ब्रह्म-सदृश (ब्रह्म-प्रकार) होना।

स्रोत- राममूर्ति पाठक

70. शंकर द्वारा स्वीकृत त्रुटि सिद्धान्त को कहा जाता है

(a) अख्यातिवाद (b) अनिर्वचनीयख्यातिवाद
(c) अन्यथाख्यातिवाद (d) सत्ख्यातिवाद

Ans : (b) भारत के प्रत्येक दार्शनिक सम्प्रदाय ने प्रमा (सम्यक् ज्ञान) के साथ भ्रम (मिथ्या ज्ञान) का भी निरूपण किया है। प्रभाकर के भ्रम विषयक मत को अख्यातिवाद कहते हैं। कुमारिल भट्ट के भ्रम विषयक मत को विपरीत ख्यातिवाद कहते हैं। अन्यथाख्यातिवाद न्याय-वैशेषिकों का मत है। सत्ख्यातिवाद रामानुज का भ्रम विषयक मत है।

71. गांधीजी के अनुसार राज्य का राजनीतिक एवं आर्थिक संगठन, निम्नलिखित में से, किस पर आधारित होना चाहिए?

(a) यांत्रिक एवं भौतिक सनतुष्टि की उन्नति
(b) व्यक्ति का नैतिक एवं बौद्धिक विकास
(c) राज्य का पूर्ण नियन्त्रण और पूर्ण दिशा-निर्देश
(d) वर्करों का प्रतिनिधित्व

Ans : (b) गाँधी जी अनुसार व्यक्ति का अध्यात्मिक तथा बौद्धिक विकास हो तभी व्यक्ति का भौतिक विकास सम्भव हो सकता है। गाँधी जी व्यक्ति के सर्वाङ्गीण विकास चाते थे। राज्य का राजनीति नैतिक होना चाहिए तथा धर्म के सारतत्व से बंधा होना चाहिए बिना नैतिकता के राजनीतिक राज्य कल्याणकारी नहीं हो सकता है। अतः राज्य का राजनीतिक एवं आर्थिक संगठन, व्यक्ति के नैतिक एवं बौद्धिक विकास पर आधारित होना चाहिए।

72. समस्त सामाजिक समस्याओं का समाधान गांधीजी की दृष्टि में निहित है

(a) इस धरती पर रामराज्य स्थापित हो
(b) सम्पूर्ण अद्वितीय मानववादी दृष्टिकोण
(c) सम्पूर्ण आत्मत्याग
(d) सभी के लिए पूर्ण प्रेम और संवेदना

Ans : (a) गाँधी के अनुसार समस्त सामाजिक समस्याओं का समाधान इस धरती पर रामराज्य स्थापित होने से हो सकता है। इसी अहिंसक रामराज्य की अवधारणा पर गाँधी को कल्पना आधारित आदर्शवादी का आक्षेप लगाया जाता है। बैद्धों ने स्वीकार किया कि सभी के लिए पूर्ण प्रेम और संवेदना से ही ब्रह्मविहार सम्भव है। गीता ने सम्पूर्ण आत्मत्याग की शिक्षा दिया है। हाइडेगर तथा सार्त एक सम्पूर्ण अद्वितीय मानववादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

73. गांधीजी ने 'सर्वोदय' के सिद्धान्त को विकसित किया

(a) हेनरी डेविड और थॉरो की रचनाओं से प्रभावित होकर
(b) श्रीमद् राजचन्द्र की रचनाओं से प्रभावित होकर
(c) रस्किन की रचनाओं से प्रभावित होकर
(d) लियो टॉलस्टाय की रचनाओं से प्रभावित होकर

Ans : (c) गाँधी जी पर जॉन रस्किन की पुस्तक Un to The lost का पर्याप्त प्रभाव पड़ा। गाँधी के अनुसार सर्वोदय में सभी का उदय होना है गरीब को अपनी गरीबी से निकलना है वही अमीर व्यक्तियों को अपनी अमीरी के अहंकार से निकलना है। अर्थात सर्वोदय में अपने-अपने स्तर से सभी का उदय होना है अर्थात सभी का सम्पूर्ण विकास होना है।

स्रोत - गाँधी का एक समग्र मूल्यांकन - प्रदीप सिंह

74. गांधी के अनुसार हिंसा के ढंग को होना पड़ेगा।

(a) अन्यों से बिलकुल भी अन्तर्ग्रस्त न होना।
(b) अन्यों से झगड़ों में अन्तर्ग्रसत न होना।
(c) दुश्मन की अवज्ञा करना और ऐसा करते हुए उसका हृदय परिवर्तन करना उसे जीतना।
(d) उपरोक्त सभी।

Ans : (c) गाँधी के अहिंसा में कोई कमजोर व्यक्ति अहिंसक नहीं हो सकता है। गांधी के अनुसार यदि तुम्हारा शत्रु भूखा है, तो उसे रोटी दो, यदि प्यासा है, तो पानी दो, यदि वह असफल है, तो उस पर हंसो मत तथा यदि वह ठोकर खाकर गिरता है, तो तुम्हारा हृदय प्रसन्न नहीं होना चाहिए लेकिन दुःश्मन की अवज्ञा करना तथा उसका हृदय परिवर्तन कर उसे जीतना चाहिए। अतः अहिंसा का दूसरा मूल आधार धैर्य है और उसके बिना अहिंसा के मार्ग पर चलना संभव नहीं है।

75. अहिंसा प्रेम विधि के रूप में है

(a) उन्हें प्रेम करना जो स्नेही हैं।
(b) उन्हें प्रेम करना जो उसकी पसन्द के हैं।
(c) उन्हें प्रेम करना जो उसे घृणा करते हैं।
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं।

Ans : (c) गाँधी के अनुसार अहिंसक अपने प्रतिद्वन्द्वी की अच्छाई को स्वीकार करने व उसके अपराध को क्षमा करने के लिए हमेशा तैयार रहता है, वह बुराई से घृणा करता है बुराई करने वाले से नहीं, वह स्वयं सहर्ष कष्ट कर लेता है पर अपने प्रतिद्वन्दी को कष्ट नहीं देता। इस प्रकार अहिंसा का मूल आधार प्रेम है और शांतिपूर्ण विरोध करते हुए अपनी प्रतिद्वन्दी का हृदय परिवर्तन करने की आशा करता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

राजस्थान लोक सेवा आयोग कॉलेज लेक्चरर-2014
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)

व्याख्या सहित हल प्रथम प्रश्न-पत्र (परीक्षा तिथि : 08.07.2016)

1. According to Shankara's essential character of reality is -
शंकर के अनुसार सत्-की अनिवार्य विशेषता है

(a) Trikalabadhitva/त्रिकालाबाधित्व
(b) Arthakriyakaritva/अर्थक्रियाकारित्व
(c) Utpadvyayadhrauvyayuktata
उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तता
(d) Satva, Abhidheyatava and Jneyatva
सत्व, अभिधेयत्व और ज्ञेयत्व

Ans. (a) : शंकर के अनुसार 'त्रिकालाबाधित्व' सत की अनिवार्य विशेषता है। शंकर ब्रह्म को एक मात्र सत्य मानते हैं। ब्रह्म स्वयं ज्ञान है, उसे स्वयं प्रकाश कहा गया है। सभी विषयों का आधार होते हुए भी वह द्रव्य नहीं है। वह दिक-काल की सीमा से परे है उस पर कार्य कारण के नियम लागू नहीं होते है। यह जगत का विर्वत है परिणाम नहीं। शंकर कहते है कि ब्रह्म त्रिकाल अबाधित है। अर्थात् इसका कभी बाध नहीं होता है।

2. According to Ramanuja world is-
रामानुज के अनुसार जगत है–

(a) Real change of Brahamana
ब्रह्म का वास्तविक परिणाम
(b) Vivarta of Brahamana/ब्रह्म का विवर्तरूप
(c) Real change of Prakriti
प्रकृति का वास्तविक परिणाम
(d) Shunya/शून्य

Ans. (a) : रामानुज का जगत विचार उसके कार्य-कारण सिद्धान्त पर आधारित हैं कार्य कारण में अपनी उत्पत्ति के पूर्व भी रहता है अतः उत्पत्ति तो केवल रूपान्तर है। रामानुज के अनुसार जगत ब्रह्म का रूपान्तर है परिणाम है। ब्रह्म सत् है अतः जगत भी सत् है। सत् कारण का ही सत् कार्य सम्भव है।

3. According to the Vaisheshika universal are-
वैशेषिक दर्शन के अनुसार सामान्य –

(a) Concepts/धारणायें हैं
(b) Names/नाम हैं
(c) Eternal categories/नित्यपदार्थ हैं
(d) Qualities/गुण हैं

Ans. (c) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार सामान्य नित्य पदार्थ है। वैशेषिक दर्शन में सामान्य की विशेषता को इस प्रकार व्यक्त किया गया है, "नित्यमेकमनेकानुगतं सामान्यम्' दूसरे शब्दों में सामान्य नित्य, एक और अनेक वस्तुओं में समाविष्ट हैं। व्यक्तियों का जन्म होता है, नाश होता है परन्तु उनका सामान्य अविनासी होता है।

4. In Buddhism the basis of the denial of eternal substances is the principle of-
बौद्ध दर्शन के अनुसार नित्य द्रव्य की सत्ता के खंडन का आधार-

(a) Noble truths/आर्यसत्य का सिद्धांत है
(b) Dependent origination (pratityasamptpad)
प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत है
(c) Anatmavada/अनात्मवाद का सिद्धांत है
(d) j/शून्यवाद का सिद्धांत है

Ans. (b) : बौद्ध दर्शन में नित्य द्रव्य की सत्ता का खंडन किया गया है, इसका आधार प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत हैं। इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक वस्तु कारण, अनुसार होती है। कारण के नष्ट हो जाने पर वस्तु का भी नाश हो जाता हैं। इससे प्रमाणित होता है कि विश्व की प्रत्येक वस्तु नश्वर है, अनित्य है चाहे वह जड़ हो अथवा चेतन हो। बौद्ध दर्शन के ही एक सिद्धांत छणिकवाद के अनुसार विश्व की प्रत्येक वस्तु अनित्य ही नहीं क्षणभंगुर भी है।

5. According to nyaya system
न्याय के अनुसार-

(a) Self is conciousness as such
आत्मा चैतन्य स्वरूप है
(b) Conciousness is necessary quality of the self
चैतयन्य आत्म द्रव्य का अनिवार्य गुण है
(c) Consciousness is accidental quality of the self
चैतन्य आत्म द्रव्य का आकस्मिक गुण है
(d) Body qualified with consciousness is self
चैतन्य विशिष्ट शरीर ही आत्मा है

Ans. (c) : न्याय आत्मा को स्वरूपतः अचेतन मानता है आत्मा में चेतना का संचार एक विशेष परिस्थिति में होता है, चेतना का उदय आत्मा में तभी होता है जब आत्मा का संपर्क मन के साथ तथा मन का संपर्क इन्द्रियों के साथ होता है। यदि आत्मा का ऐसा संपर्क न हो तो आत्मा में चैतन्य का आविर्भाव नहीं होगा इस प्रकार चैतन्य, आत्मा का आकस्मिक गुण है।

6. Which of the following statements is true regarding individual soul and absolute in Shnakara's philosophy
निम्न में से जीव और ब्रह्म के विषय में शंकर दर्शन में कौन सा सिद्धांत सत्य है–

(a) Individual soul and absolute are one
जीव और ब्रह्म एक ही है
(b) Individual soul and absolute are separate
जीव और ब्रह्म दोनों भिन्न है
(c) Individual soul and absolute are void
जीव और ब्रह्म शून्य रूप है
(d) Individual soul and absolute do not exist
जीव और ब्रह्म का अस्तित्व नहीं है

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : शंकर ने अपने अद्वैत वेदान्त में बताया कि जीव और ब्रह्म एक ही है। शंकर कहते हैं की दोनों के बीच जो भेद दिखलाई पड़ता है वह सत्य नहीं है। इसका कारण यह है की दोनों का भेद उपाधि के द्वारा निर्मित हैं। दोनों का भेद व्यावहारिक है। सच तो यह है कि जीव और ब्रह्म में परमार्थतः कोई भेद नहीं है। शंकर का कथन की 'तत्व-मसि' ब्रह्म और जीव की अभिन्नता को प्रमाणित करता है।

7. Kumaril's theory of error is known as-
कुमारित के भ्रम विषयक सिद्धांत को जाना जाता है

(a) Akhyait/अख्याति।
(b) Sat-Asat-khyati/सत्-असत् ख्याति।
(c) Viparit Khyati/विपरीत ख्याति।
(d) Atama khyait/आत्म ख्याति।

Ans. (c) :

विपरीत ख्याति	–	कुमारिल।
सत-असत ख्याति	–	माध्यमिक बौद्ध।
अख्याति	–	प्रभाकर।

8. According to samkhya system, what is the real nature of purusha-
साँख्य दर्शन के अनुसार पुरुष का वास्तविक स्वरूप क्या है–

(a) Agent and enjoyers/कर्त्ता और भोक्ता
(b) Pure consciousness and witness
शुद्ध चैतन्य और साक्षी
(c) Stream of consciousness /चैतन्य प्रवाह
(d) Consciousness as necessary quality
चैतन्य अनिवार्य गुण के रूप में

Ans. (b) : सांख्य दर्शन पुरूष को शुद्ध चैतन्य मानता है। चैतन्य आत्मा में सर्वदा निवास करता है। आत्मा को जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्त में किसी भी अवस्था में माना जाए उसमें चैतन्य वर्तमान रहता है। सांख्य का पुरूष कारण-कार्य शृंखला से मुक्त है। सांख्य कहता है कि विश्व में कोई ऐसा तत्व होना चाहिए जो अत्रिगुण हो, वह अत्रिगुण तत्व पुरूष है। पुरूष विभिन्न गुणों का साक्षी है परन्तु वह स्वयं इनसे परे है।

9. Which of the following is not a constituent of the method of Vyapti establishment, according to Nyany system-
न्याय दर्शन के अनुसार निम्नलिखित में से व्याप्ति स्थापना पद्धति का घटक नहीं है–

(a) Cause and effect-relation
कार्य कारण सम्बन्ध का ज्ञान
(b) Anvaya/अन्वय
(c) Vyatirek/व्यतिरेक
(d) Samanya Lakshan Pratyaksha
सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष

Ans. (a) : न्याय दर्शन के अनुसार व्याप्ति सथापना पद्धति के छः घटक है-

(i) अन्वय – एक वस्तु के भाव से दूसरी वस्तु का भी भाव होना।
(ii) व्यतिरेक – एक वस्तु के अभाव से दूसरी वस्तु का अभाव हो जाना।
(iii) व्यभिचाराग्रह – दो वस्तुओं के बीच व्यभिचार का अभाव।
(iv) उपाधिनिरास – व्याप्ति सम्बन्ध के लिए नैयायिकों के अनुसार अनौपाधिक सम्बन्ध का होना अत्यावश्यक है।
(v) तर्क – नैयायिक तर्क के द्वारा भी अपने मत की पुष्टि करते हैं ताकि किसी संशयवादी के मन में संदेह न रहे।
(iv) सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष– व्याप्ति में पूर्ण निश्चयात्मकता लाने के लिए सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष का सहारा लिया जाता है।

10. According to Kumaril the knowledge of knowledge is-
कुमारिल के अनुसार ज्ञान का ज्ञान-

(a) Through self illumination (Swayam Prakashana)/स्वयं प्रकाशक होता है
(b) Through implication (Arthapatti)
अर्थापत्ति द्वारा होता है
(c) Through collection of immediate past knowledge (Anuvyavasya)
अनुव्यवसाय द्वारा होता है
(d) Never known/कभी नहीं होता

Ans. (b) : कुमारिल के अनुसार जिस ज्ञान से ज्ञान होता है, उसे प्रमाण कहते हैं। कुमारिल के अनुसार प्रमाण अर्थात ज्ञान के साधन छः है- (i) प्रत्यक्ष (ii) अनुमान (iii) उपमान (iv) शब्द (v) अर्थापत्ति (vi) अनुपलब्धि।
अतः स्पष्ट है- ज्ञान का ज्ञान अर्थापत्ति द्वारा होता है।

11. "The sky flower is fragrant because it is flower, and all flowers are fragrant". Which of the fallacy (hetvabasa) is committed in the above inference-
''आकाश कुसुम सुगंधित है क्योंकि वह कुसुम है तथा समस्त कुसुम सुगंधित होते हैं।'' उपर्युक्त अनुमान में कौन सा हेत्वाभास है-

(a) Asiddha/असिद्ध
(b) Satpratipaksha/सत् प्रतिपक्ष
(c) Savyabhichar/सव्यभिचार
(d) Virudha/विरुद्ध

Ans. (a) : न्याय दर्शन के अनुसार हेत्वाभास पांच प्रकार के होते हैं- (i) सव्यभिचार (ii) विरूद्ध (iii) सतप्रतिपक्ष (iv) असिद्ध (v) बाधित।
प्रश्नगत अनुमान ''आकाश कुसम सुगंधित है, क्योंकि वह कुसुम है तथा समस्त कुसुम सुगंधित होते हैं।'' में असिद्ध हेत्वाभास होगा, क्योंकि असिद्ध हेतु में, हेतु का प्रयोग साध्य को सिद्ध करने के लिए होता है, परन्तु प्रश्नगत अनुमान में ऐसा साध्य है जिसका हेतु असिद्ध है अतः इसे असिद्ध हेत्वाभास का उदाहरण माना गया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

12. According to Jainism the cause of ontological error is-/जैन दर्शन के अनुसार सत्तामीमांसीय भ्रम का कारण है–

(a) Gyanavarniya karma/ज्ञानवरणीय कर्म
(b) Name karma/नाम कर्म
(c) Mohaniya karma/मोहनीय कर्म
(d) Antaraya karma/अन्तराय कर्म

Ans. (c) : जैन दर्शन में कुल आठ प्रकार कर्म माने गए हैं- (i) ज्ञानावरणीय कर्म (ii) दर्शनवरणीय कर्म (iii) वेदनीय कर्म (iv) मोहनीय कर्म (v) आयु कर्म (vi) नाम कर्म (vii) गोत्र कर्म (viii) अन्तराय कर्म।
मोहनीय कर्म वे होते हैं जो जीव को भ्रम में डालते हैं अर्थात् जीव को मोहित करते हैं।

13. According to Ramanuja the relation between Chit, Achit and god is-
रामानुज के अनुसार चित् अचित् एवं ईश्वर के मध्य–

(a) Samavya /समवाय सम्बन्ध है
(b) Sanyoga/संयोग सम्बन्ध
(c) Bhokta-Bhogya/भोक्ता-भोग्य का सम्बन्ध है
(d) Aprithaksiddhi/अपृथकसिद्धि का सम्बन्ध है

Ans. (d) : रामानुज के दर्शन में चित और अचित को ईश्वर का विशेषण माना गया है अर्थात् चित और अचित विशेषणों से ईश्वर विशिष्ट है। इसलिए ईश्वर को चिदचिदविशिष्ट कहा गया है। चित और अचित का ईश्वर के साथ अपृथक सम्बन्ध माना गया है। ईश्वर इनका सृष्टा नहीं है ये भी ईश्वर के समान ही सनातन तत्व है। चित-अचित अवयव हैं ईश्वर अवयवी है।

14. In Plato's view, forms or ideas are-
प्लेटो के मत में आकार या प्रत्यय है-

(a) Do not have existence independent of their particulars /विशेषों से स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रखते।
(b) Arche types of which particulars belonging to the world of experience are copies
वे आदर्श रूपः व्यावहारिक जगत के विशेष पदार्थ जिनके प्रतिरूप हैं।
(c) Concept which are formed form experience of particulars /विशेषों के अनुभव के आधार पर निर्मित सम्प्रत्यय हैं।
(d) Mere names which have no counter parts in really/नाममात्र, वास्तविक जगत में जिनके अनुरूप कोई पदार्थ नहीं है।

Ans. (d) : प्लेटो के मत में आकार या प्रत्यय हैं "वे आदर्श रूप-व्यावहारिक जगत के विशेष पदार्थ जिनके प्रतिरूप हैं। प्लेटो के प्रत्यय पर कई दार्शनिकों का प्रभाव दिखलाई पड़ता है। प्लेटो ने सुकरात की भांति बुद्धिवाद और ज्ञान की वस्तुनिष्ठता स्वीकार किया। प्लेटो के प्रत्ययवाद पर पाइथागोरस के संख्यावाद का भी प्रभाव दिखलाई पड़ता है। प्लेटो ने,पार्मेनाइडीज से प्रभावित होने के बावजूद परिवर्तनीय जगत को पूर्णतः असत नहीं माना। इन सबके बावजूद प्लेटो का दर्शन मौलिक है।"

15. "Force, not extention is the essential property of the substance is a view held by"-
"शक्ति, न कि विस्तार द्रव्य का सार गुण है। यह मत है-

(a) Descartes/देकार्ते का (b) Newton/न्यूटन का
(c) Leibnitz/लाइबनित्स का (d) Spinoza/स्पिनोजा का

Ans. (c) : बुद्धिवादी दार्शनिक लाइबनित्ज ने द्रव्य की व्याख्या करते हुए कहा कि "द्रव्य का सार गुण शक्ति है, न की विस्तार।" ध्यातव्य है की लाइबनित्ज ने द्रव्य का नामकरण किया 'चिदणु'। लाइबनित्ज का द्रव्य स्वतंत्र शक्तिमान चेतन परमाणु है। यह तात्विक बिन्दु, द्रव्य बिन्दु या चिदबिन्दु है। यह शक्तिमान विशेष है। यह अपनी शक्ति का स्वयं केंद्र है। यह अनादि, अनंत और नित्य है।

16. Descartes holds that the two methods of obtaining real knowledge are-
देकार्ते मत में "यथार्थज्ञान की प्राप्ति" के दो साधन हैं-

(a) Deduction and testimony/निगमन एवं शब्द प्रमाण
(b) Intuition and deduction/सहजज्ञान एवं निगमन
(c) Intuition and experience /सहजज्ञान एवं अनुभव
(d) Deduction and experience /निगमन एवं अनुभव

Ans. (b) : डेकार्ट ने यथार्थ ज्ञान प्राप्ति के दो साधन माने हैं - सहजज्ञान एवं निगमन। डेकार्ट बुद्धिवादी हैं वे ज्ञान का साधन प्रत्यक्ष या आगम को न मानकर बुद्धि को मानते हैं। सहज ज्ञान के अलावा वे निगमन तर्क को भी ज्ञान प्राप्ति का साधन मानते हैं। वे कहते हैं कि मुझे अपने स्वतः सिद्ध आत्मा की निर्विकल्पक अनुभूति होती है। जिस पदार्थ की इतनी सुस्पष्ट अनुभूति हो उसे आत्मा के समान ही सत्य होना चाहिए। साथ ही डेकार्ट ने निगमानात्मक तर्क के माध्यम से ईश्वर की सत्ता को भी सिद्ध करने का प्रयास किया है।

17. "Really is a process of logical revolution (spiritual process)"- who says-
"सत् एक तार्किक विकास (आध्यात्मिक विकास) की प्रक्रिया है।" किसने कहा-

(a) Locke/लॉक ने (b) Aristotle /अरस्तू ने
(c) Kant/कांट ने (d) Hegal/हेगल ने

Ans. (d) : हेगल का कथन है की "सत् एक तार्किक विकास की प्रकिया है।" हेगल ने विज्ञान और सत्, बोध और सत्ता, चित और सत् में कोई अंतर नहीं किया है। हेगल कहते हैं कि इस विश्व में चैतन्य या विज्ञान की ही एक मात्र सत्ता है। अखिल विश्व इसी का परिणाम है।

18. "Absolute idealism" subscribes to which one of the following views-
"निरपेक्ष प्रत्ययवाद" निम्नांकित में से किस एक मत का पोषक है-

(a) Ultimate reality is entirely material
मूलतत्व पूर्णतः भौतिक है
(b) Ultimate reality is both material and spiritual
मूलतत्व भौतिक एवं चेतन दोनों है
(c) Ultimate reality is entirely spiritual
परसत्ता पूर्णतः चेतन है
(d) Ultimate reality is uniquely non material and non spiritual /मूलतत्व विलक्षण रूप में से अ-भौतिक एवं अ-चेतन है

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : निरपेक्ष प्रत्ययवाद हेगल के दर्शन में चरम पर दिखलाई पड़ता है। निरपेक्ष प्रत्ययवाद इस मत का पोषक है कि परमसत्ता पूर्णतः चेतन है। यह पूर्ण है। इसमें विषयी और विषय का ज्ञान और ज्ञेय का, जीव और जगत का द्वैत नहीं रहता। यह अवयवी, मूर्त सामान्य, समष्टि पूर्ण, व्यक्ति पूर्ण, स्वचेतन पूर्ण, विशिष्टाद्वैत है।

19. Aristole holds that-
अरस्तू मत में-
(a) Universals alone are substance
केवल सामान्य ही द्रव्य है
(b) Universals and particulars both are separate substance /सामान्य एवं विशेष दोनों ही पृथक द्रव्य हैं
(c) Particulars alone are substances
केवल विशेष ही द्रव्य है
(d) Universal as immanent in particulars are substances /विशेषों में अन्तरवर्ती सामान्य ही द्रव्य है

Ans. (d) : अरस्तू ने "विशेषों में अन्तर्निहित सामान्य को द्रव्य कहा।" विश्व की प्रत्येक वस्तु में द्रव्य और स्वरूप दोनों ही प्रत्येक वस्तु साध्य से सिद्ध की ओर अग्रसर हो रही है, क्योंकि उसमें एक कमी या अभाव है जो उसमें नहीं होना चाहिए था और जिसको दूर करने की शक्ति उसमें अन्तर्निहित है। संसार की वस्तुओं में एक अखण्ड तारतम्यता है द्रव्य को अरस्तू साध्य और स्वरूप को सिद्ध कहते हैं।

20. Which philosopher has described the "god" as "natura-naturance" and "natura-naturance"-
किस दार्शनिक ने ईश्वर को "नेचुरा-नेचुरन्स (विश्वात्मरूप) और नेचुरा (विश्वरूप)" से वर्णित किया है।
(a) Hume/ह्यूम ने (b) Kant/कांट ने
(c) Spinoza/स्पिनोजा ने (d) Berkeley/बर्कले ने

Ans. (c) : स्पिनोजा ने अपने दर्शन में ईश्वर के तीन रूप बताए हैं-
(i) ईश्वर का विश्वरूप (नेचुरा नेचुरोटो) इसमें संसार ईश्वर के स्वातंत्र्य की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, यह ईश्वर का विश्वरूप है।
(ii) विश्वात्मा रूप (नेचुरा नेचुरान्स)- विश्व के अन्तर्यामी अधिष्ठान की दृष्टि से इस चिदचिद्रूप संसार शरीर की आत्मा ईश्वर का विश्वात्मरूप है।
(iii) पररूप (इन्स आब्सोल्यूटम इन्डिटरमिनेटम)- शरीर और आत्मा के सगुण रूप में प्रतीत होने वाला निर्गुण और अनिर्वचनीय तत्व ईश्वर का पररूप है।

21. According to leibnitz "Monad" is not-
लाइबनित्स के अनुसार "मोनेड" नहीं है-
(a) Substance/द्रव्य
(b) Windowless/गवाक्षहीन
(c) Extended object/विस्तारवान पदार्थ
(d) Unique in itself/अपने आप में अद्वितीय

Ans. (c) : लाइबनिज ने 'मोनेड' को ही द्रव्य कहा। इन्होंने कहा कि द्रव्य या मोनेड में कोई छिद्र नहीं होता जिससे कोई वस्तु बाहर या भीतर आ जा सके। इस प्रकार मोनेड गवाक्षहीन होते हैं। इन्होंने अपने द्रव्य को अद्वितीय कहा।

22. Which of the following is Locke's statement-
निम्न में से लॉक का कथन है-
(a) Cogito, ergo sum, /मैं सोचता हूँ, अतः मैं हूँ,
(b) Ess est percipi/दृष्टि सृष्टि है,
(c) All knowledge is recollection
समस्त ज्ञान स्मरण है
(d) Mind is tabula rasa
मन एक सफेद पट्टी के समान है

Ans. (d) : लॉक ने अपने दर्शन में कहा कि 'मन एक सफेद पट्टी के समान है।' लॉक अनुभववादी थे इन्होंने कहा कि मन एक कोरे कागज या सफेद पट्टी के समान है जिस पर अनुभव अपनी संवेदन और स्वसंवेदन रूपी ऊँगलियों से ज्ञान रूपी अक्षर लिखता रहता है। इन्होंने कहा कि बुद्धि का प्रत्येक विज्ञान अनुभव से प्राप्त किया जा सकता है।

23. Point out the steps of becoming according to Hegel from the following-
हीगेल के मतानुसार विकास क्रम के तीन सोपान निम्न में से क्या हैं-
(a) Being, truth and becoming
सत् तत्व, सत्य और विकास
(b) Man, soul and being/मनुष्य, आत्मा और सत् तत्व
(c) God, man and being/ईश्वर, मनुष्य और सत् तत्व
(d) Thesis, anit-thesis and synthesis
वाद, प्रतिवाद और संवाद

Ans. (d) : हीगेल ने विकास क्रम के तीन सोपान बताए- वाद, प्रतिवाद और संवाद। हीगेल के अनुसार प्रत्येक विचार और घटना परस्पर दो विरोधीनीतियों वाद और प्रतिवाद के संघर्ष से उत्पन्न होती है। इन दोनों के सत्य तत्वों को ग्रहण करके एक नया रूप जन्म लेता है जिसे संवाद कहते है। यह वाद और प्रतिवाद दोनों से श्रेष्ठ होता है। इसमें दोनों के गुण पाए जाते है- कालांतर में यही वाद बन जाता है और यही त्रिमुखी प्रक्रिया फिर से दुहराई जाती है। यह प्रक्रिया निरंतर विकास के उच्चतर स्तर की ओर ले जाती है।

24. The author of "appearance and reality" is-
"आभास और सत्" के लेखक है–
(a) Hegal/हेगल (b) Bradley/ब्रेडले
(c) Kant/कांट (d) Locke/लॉक

Ans. (b) :

आभास और सत्	–	ब्रेडले
आत्म तत्व की अभिव्यक्ति	–	हेगेल
शुद्ध ज्ञान की परीक्षा	–	काण्ट
मानवी बुद्धि पर निबंध	–	लॉक

25. According to "yoga" philosophy "Chitta" is-
योग दर्शन में "चित्" है-
(a) Nature of Jiva/जीव का स्वरूप
(b) Pure Consciousness/शुद्ध चैतन्य
(c) Purush/पुरुष
(d) Effect of Prakriti/प्रकृति का विकार

Ans. (d) : योग दर्शन के अनुसार 'चित्' न तो जीव का स्वरूप है, न तो शुद्ध चैतन्य अथवा न तो पुरुष ही है बल्कि चित् प्रकृति का विकार है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

26. "Consciousness is freedom" this is the view of-
''चेतना स्वतंत्रता है'' यह मत है-

(a) Sartra/सार्त्र (b) Hegal/हेगल
(c) Kant/कांट (d) Hume/ह्यूम

Ans. (a) : जान पाल सार्त्र एक अस्तित्ववादी विचारक थे। यह मनुष्य को अस्तित्ववादी चेतन सत् के रूप में स्वीकार करते हैं। सार्त्र कहते हैं कि ''चेतना युक्त अस्तित्ववान मानव का स्वरूप है स्वतंत्रता। स्वतंत्रता का तात्पर्य है संकल्प स्वातंत्र्य, अर्थात विभिन्न कार्य मार्गों में से किसी एक का चयन तद्नुसार आचरण। इस प्रकार सार्त्र का मानना है कि मनुष्य चेतना युक्त और अस्तित्ववान ऐसा जीव है जिसका स्वरूप स्वतंत्रता है।''

27. "The meaning of a word is negative" this notion is given by-
''शब्द का अर्थ निषेधात्मक है'' यह मत दिया है-

(a) Shanta Raksit/शांतरक्षित
(b) Kamal sheel/कमलशील
(c) Dharmkriti/धर्मकीर्ति
(d) Ratnakriti/रत्नकीर्ति

Ans. (a) : बौद्ध दर्शन में शब्दार्थ का खंडन करके नाम, जाति आदि संयुक्त अर्थ को शब्दार्थ माना गया है। 'शब्दों' के अर्थ से संबंधित सिद्धांत को 'अपोह' का सिद्धांत कहा गया है। इसके विकास में तीन बौद्ध दार्शनिकों का नाम मुख्य रूप से आता है। (i) दिंगनाग (ii) शांतरक्षित (iii) रत्नकीर्ति। अपोहवाद के दो रूप है (i) भावात्मक (ii) निषेधात्मक। परवर्ती बौद्ध दार्शनिक शांतरक्षित, निषेधात्मक अर्थ को ही शब्द के वाच्य अर्थ के रूप में इसे स्वीकार करते हैं।

28. Mind is a kind of theatre where several perceptions successively appear and pass away-who said it-
''मनस एक प्रकार का थियेटर है, यहाँ अनेकों प्रत्यक्ष क्रमशः आते जाते हैं'' यह कथन-

(a) Loke/लॉक का है (b) Kant/कांट का है
(c) Berkley/बर्कले का है (d) Hume/ह्यूम का है

Ans. (d) : अनुभववादी ह्यूम ने कहा कि 'मनस एक प्रकार का थियेटर है' यहाँ अनेकों प्रत्यक्ष, क्रमशः आते-जाते हैं।'' ह्यूम कहते हैं कि हमारे मनस में विज्ञानों का प्रवाह नियमित रूप से चलता रहता है। एक के बाद दूसरा क्रमशः आता रहता है। यदि इनमें कोई सम्बन्ध न होता तो ये विज्ञान अर्थहीन हो जाते। ये आकस्मिक और असम्बद्ध नहीं है। इनमें निश्चित क्रम रहता है।

29. According to the Charvaka system, Vyapti cannot be established through inference because -
चार्वक दर्शन के अनुसार व्याप्ति स्थापना अनुमान द्वारा संभव नहीं है, क्योंकि

(a) It is matter of perception/प्रत्यक्ष का विषय है
(b) it is based on testimony/शब्द प्रमाण पर निर्भर है
(c) Fallacy of interdependence
अन्योन्याश्रय का दोष है
(d) Fallacy of contradiction/व्याघात नियम का दोष है

Ans. (c) : चार्वाक कहते हैं कि व्याप्ति की स्थापना अनुमान द्वारा संभव नहीं है। चार्वाक के अनुसार यदि व्याप्ति को अनुमान से अपनाया जाए तो उसकी अनुमान-सत्यता भी एक दूसरी व्याप्ति पर निर्भर होगी। इस प्रकार अन्योन्याश्रय दोष उत्पन्न हो जाता है, क्योंकि व्याप्ति अनुमान पर निर्भर है और अनुमान व्याप्ति पर।

30. "Man is the measure of all things" who says-
''मनुष्य ही सब वस्तुओं का मापदण्ड है'' किसने कहा-

(a) Socretes/सुकरात (b) Plato/प्लेटो
(c) Protagors/प्रोटोगोरस (d) Aristotle/अरस्तू

Ans. (c) : ''मनुष्य ही सब वस्तुओं का मापदण्ड है'' यह कथन प्रोटोगोरस का है। प्रोटेगोरस का 'मानव' इन्द्रियानुभूति का ही मानव रह गया है और उनका सापेक्षवाद व्यक्तिवाद के ऊपर नहीं उठ सका। प्रोटेगोरस को उपयोगितवाद का जन्मदाता कहा जा सकता है।

31. According to Purvamimansa the knowledge of "Abhava" is through-
पूर्व मीमांसा के अनुसार अभाव का ज्ञान कराने वाला प्रमाण-

(a) Perception/प्रत्यक्ष है
(b) Inference/अनुमान है
(c) Anupalabdhi/अनुपलब्धि है
(d) Arthapati/अर्थापत्ति है

Ans. (c) : पूर्व मीमांसा में अनुपलब्धि को एक स्वतंत्र प्रमाण माना गया है। किसी विषय के अभाव का साक्षात् ज्ञान हमें अनुपलब्धि द्वारा होता है। अनुपलब्धि को प्रत्यक्ष नहीं कहा जा सकता है। प्रत्यक्ष ज्ञान के लिए इन्द्रिय का विषय के साथ संपर्क होना आवश्यक है।

32. According to Nyaya system the fourth member of the five membered syllogism is-
न्याय दर्शन के अनुसार पंचावयव-न्याय वाक्य का चौथा अवयव है

(a) Upanaya/उपनय (b) Hetu/हेतु
(c) Nigaman/निगमन (d) Udaharana/उदाहरण

Ans. (a) : न्याय के अनुमान के पंचावयव निम्नलिखित है-
(i) प्रतिज्ञा (ii) हेतु (iii) उदाहरण (iv) उपनय (v) निगमन।
न्याय पंचावयव में 'उपनय' का स्थान चौथा है। उदाहरण के साथ हेतु और साध्य का व्यापक सम्बन्ध दिखलाने के पश्चात् अपने पक्ष में उसे दिखलाना ही उपनय कहा जाता है।

33. What was the basis of the division of Varna system according to gita-
गीता के अनुसार वर्ण व्यवस्था का आधार क्या था-

(a) Guna and Karma /गुण और कर्म
(b) Caste/जाति
(c) Colour/रंग
(d) Economic/आर्थिक स्थिति

Ans. (a) : गीता में वर्ण का आधार केवल गुण और कर्म को माना गया है। तभी तो अर्जुन को उपदेश देते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं ''चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः।'' अर्थात् गुण और कर्म के आधार पर चारों वर्णों का विभाजन मैं ही करता हूँ।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

34. The ashram related to Rnaparisodh of Pitra-rna is and dev-rna is-
पितृ और देव ऋणपरिशोध की अवधारणा से सम्बन्धित आश्रम है-
(a) Brahmcharya/ब्रह्मचर्य (b) Sanyasa/संन्यास
(c) Vanaprastha/वानप्रस्थ (d) Grihasth/गृहस्थ

Ans. (d) : भारतीय विचार परंपरा में चार आश्रम माने गए हैं। (i) ब्रह्मचर्य (ii) गृहस्थ (iii) वानप्रस्थ (iv) संन्यास। और चार प्रकार के ऋण माने गए हैं– (i) देवऋण (ii) ऋषि ऋण (iii) पितृ ऋण (iv) ब्रह्म ऋण। परिशोध की अवधारणा से संबंधित आश्रम है- गृहस्थ आश्रम।

35. Speaking truth is-
सत्य बोलना है-
(a) Varna-Dharma/वर्णधर्म है
(b) Ashram-Dharma/आश्रम धर्म है
(c) Vishes-Dharma/विशेष धर्म है
(d) Sadharan-Dharma/साधारणधर्म है

Ans. (d) : व्यावहारिक जीवन में सत्य बोलना एक साधारण सामाजिक धर्म माना जा सकता है।

36. "Vishesa-Dharma" is determined by one's-
''विशेष-धर्म'' का निर्धारण-
(a) Varna alone/केवल वर्ण से होता है
(b) Ashrama alone/केवल आश्रम से होता है
(c) Varna-Ashram/वर्ण आश्रम से होता है
(d) Religion/धर्म-सम्प्रदाय से होता है

Ans. (c) : विशेष-धर्म का निर्धारण न तो केवल वर्ण से होता है, न केवल आश्रम से होता है तथा न तो धर्म सम्प्रदाय से होता है विशेष धर्म का निर्धारण वर्ण-आश्रम से होता है।

37. Aristotle believed that-
अरस्तू का विश्वास था
(a) Virtues are innate/सद्गुण जन्मजात होते हैं
(b) Virtues are given by god/सद्गुण ईश्वर प्रदत्त हैं
(c) Virtues are acquired through continuous practice/सद्गुण निरंतर अभ्यास द्वारा अर्जित किये जाते हैं
(d) Virtues are given by society
सद्गुण समाज द्वारा प्रदत्त हैं

Ans. (c) : अरस्तू ने सद्गुणों को परिभाषित करते हुए कहा कि ''सद्गुण मनुष्य की ऐसी स्थाई मानसिक अवस्था है जो निरंतर अभ्यास के फलस्वरूप विकसित होती है तथा मनुष्य के स्वैच्छिक कार्यों में व्यक्त होती है। जैसे संयम वासनाओं तथा साहस को नियंत्रित करता है।''

38. The aim of meta-ethics is-
अधिनिति शास्त्र का उद्देश्य है-
(a) To establish moral principles or ideas
नैतिक सिद्धान्तों या आदर्शों की स्थापना करना
(b) To analyse the nature and meaning of moral terms and judgments/नैतिक निर्णयों एवं नैतिक पदों के स्वरूप व अर्थ का विश्लेषण करना
(c) To describe the nature of god
ईश्वर के स्वरूप का वर्णन करना
(d) To describe human emotions
संवेगों का वर्णन करना

Ans. (b) : अधिनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र की वह शाखा है जिसका मुख्य उद्देश्य है नीतियों को दावों, गुणों और मनोदृष्टियों तथा निर्णयों को समझाने का प्रयास करना। इसके अन्तर्गत नैतिक निर्णयों एवं नैतिक पदों के स्वरूप व अर्थ का विश्लेषण किया जाता है।

39. The postulates of morality, according to kant are
कांट के अनुसार नैतिकता की तीन पूर्वमान्यताऐ हैं-
(a) Freedom of will, existence of god and voluntary action /संकल्प की स्वतंत्रता, ईश्वर का अस्तित्व एवं एच्छिक कर्म
(b) Freedom of will, immortality to soul and voluntary action/संकल्प की स्वतंत्रता, आत्मा की अमरता एवं एच्छिक कर्म
(c) Existence of god, immortality of soul reason /ईश्वर का अस्तित्व, आत्मा की अमरता और तर्कबुद्धि
(d) Freedom of will, existence of god and immortality of soul/संकल्प की स्वतंत्रता, ईश्वर का अस्तित्व और आत्मा की अमरता

Ans. (d) : काण्ट के अनुसार नैतिकता की तीन पूर्व मान्यताएँ इस प्रकार हैं-
(i) संकल्प स्वातंत्र्य (ii) ईश्वर का अस्तित्व (iii) आत्मा की अमरता।
संकल्प स्वातंत्र्य का अर्थ है- प्रत्येक व्यक्ति अपने निर्णय स्वयं लेता है और इसके लिए उसे उत्तरदायी ठहरया जा सकता है।
नैतिकता की स्थापना के लिए ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया जाना चाहिए। इससे व्यक्ति कर्तव्य पथ पर चलने के लिए प्रेरित होता है।

40. According to Moore naturalistic fallacy is-
''मूर'' के अनुसार प्रकृतिवादी तर्कदोष है-
(a) Natural phenomena are not good
प्राकृतिक सत्तायें शुभ नहीं है
(b) To define moral terms in terms of natural qualities/नैतिक पदों की परिभाषा प्राकृतिक गुणों द्वारा करना
(c) To define moral terms in terms of morals/नैतिक पदों की परिभाषा नैतिक पदों द्वारा करना
(d) Nature is not rational /प्रकृति बौद्धिक नहीं है

Ans. (b) : ब्रिटिश दार्शनिक मूर के अनुसार 'नैतिक पदों की परिभाषा प्राकृतिक गुणों द्वारा करना' प्रकृतिवादी तर्कदोष है। प्रकृतिवादी तर्कदोष ऐसे तार्किक भ्रम को संदर्भित करता है, जिसमें लोग कुछ उद्देश्य प्राकृतिक तथ्यों के आधार पर सही या गलत के बारे में नैतिक मूल्यों के गलत तरीके से प्राप्त करते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

41. -(p & q) ≅(-p v-q) This is-
-(p & q) ≅(-p v-q) यह है-
(a) Distribution /वियोजन
(b) De Morgan's law/डी मार्गन का नियम
(c) Material implication/शाब्दिक प्रतिपत्ति
(d) Commutation/विनियम

Ans. (b) : -(p & q) ≅(-p v-q) यह डी. मार्गन का नियम है।

42. Which factor in Bentham's "Hedonistic calculus" distinguish him theory form egoistic hedonism-
बैंथम के ''सुखवादी गणक'' का कौन सा तत्व है जो उसके सिद्धांत को स्वार्थवादी सुखवाद से भिन्न करता है-
(a) Propinquity/निकटता
(b) Fecundity/उत्पादकता
(c) Extention/विस्तार
(d) Purity/शुद्धता

Ans. (c) : बेथम के 'सुखवादी कलन' में बिस्तार ही एक ऐसा तत्व है जो उसे स्वार्थवादी सुखवाद से भिन्न करता है। शेष अन्य तत्व जैसे-शुद्धता, निकटता आदि की समानता दोनों में देखी जा सकती है। बैंथम के सुखवादी कलन के अनुसार समाज के अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख ही सुखवाद है।

43. Mill's utilitarianism differs from Bentham's because he admits - the difference in-
मिल का उपयोगितावाद बैंथम से इस अर्थ में भिन्न है कि यह-
(a) The intensity of pleasures
सुखों की तीव्रता में भेद मापता है
(b) The duration of pleasures
सुखों की अवधि में भेद मापता है
(c) The certainty of pleasures
सुखों की निश्चितता में भेद मापता है
(d) The quality of pleasures
सुखों में गुणात्मक भेद मापता है

Ans. (d) : मिल और बेथम के उपयोगितावाद में कुछ बिन्दुओं में समानता देखी जा सकती है जैसे-सुखों की तीव्रता, सुख की अवधि और सुख की निश्चितता आदि परन्तु मिल सुखों में गुणात्मक भेद मापते हैं। मिल और बेंथम के उपयोगितावाद में मूल अंतर यह है कि बेंथम ने जहाँ उपयोगितावाद में सुखवाद और भौतिकवाद को महत्व दिया वहीं मिल ने भौतिकवादी विचाराधारा में नैतिक तत्वों का समावेश किया।

44. According Sidgwick "in the world, pleasure alone is known intrinsically good and desirable" through-
सिजविक के अनुसार ''जगत में केवल सुख ही स्वतः शुभ और वांछनीय है'' इसका ज्ञान हमें-
(a) Sense experience /इन्द्रिय अनुभव से होता है
(b) Tradition/परम्परा से होता है
(c) Intuition/अंतःप्रज्ञा से होता है
(d) Public opinion/लोकमत से होता है

Ans. (c) : सिजविक के अनुसार ''जगत में केवल सुख ही स्वतः शुभ और वांछनीय है।'' इसका ज्ञान हमें अंतः प्रज्ञा से होता है। सिजविक का सुखवाद मिल और बेंथम के सुखवाद से थोड़ा सा भिन्न है। सिजविक का तर्क है कि ''सुख के पीछे भागते रहने में दुःख निहित है मनुष्य जो प्राप्त करता है उसमें वह संतुष्ट नहीं है उसे जो अप्राप्त है वह सदैव आकर्षित करता रहता है। इस प्रकार सिजविक ने सुखवाद की सीमाओं को निर्धारित करने का प्रयास किया।''

45. Kant's "categorical imperative" is a-
''कांट का निरपेक्ष आदेश'' एक–
(a) Conditional and universal command
सोपाधिक एवं सार्वभौमिक आदेश है
(b) Unconditional and universal command
निरुपाधिक एवं सार्वभौमिक आदेश है
(c) Conditional and assestorial commoand
सोपाधिक एवं स्वाग्रही समादेश है
(d) Unconditional and non-universal command
निरुपाधिक एवं असार्वभौमिक आदेश है

Ans. (b) : काण्ट का 'निरपेक्ष आदेश' निरूपाधिक एवं सार्वभौमिक आदेश है। काण्ट ने अपने निरपेक्ष आदेश में कहा कि मानव प्रकृति में प्रमुख अंश 'नैतिक भावना' का है। वह कहता है कि कर्तव्यपालन की मांग शेष सभी मांगों से अधिक अधिकार रखती है। काण्ट ने यह भी कहा कि निरपेक्ष आदेश की दृष्टि में सारे मनुष्य एक समान साध्य हैं, कोई भी मनुष्य साधन मात्र नहीं है।

46. We can not hold a kleptomanial responsibility for stealing becuase-
हम चोरोन्मादी को चोरी के लिये उत्तरदायी नहीं ठहरा सकते क्योंकि-
(a) He is a habitual offenders/वह आदतन अपराधी है
(b) He steals out of need
वह आवश्यकता की पूर्ति के लिए चोरी करता है
(c) Steals under external pressure
वह बाह्य दबाव में चोरी करता है
(d) He suffers from psychological disease and needs treatment /वह मानसिक रोग से पीड़ित है और उसे उपचार की आवश्यकता है

Ans. (d) : हम 'चोरी के उन्मादी' को चोरी के लिए उत्तरदायी नहीं ठहरा सकते क्योंकि वह मानसिक रूप से पीड़ित है और उसे उपचार की आवश्यकता है। मानसिक रूप से पीड़ित व्यक्ति में अच्छे-बुरे के निर्णय की क्षमता का अभाव होता है। जबकि आदतन अपराधी और आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए चोरी करने वाले को उत्तरदायी ठहराया जा सकता है क्योंकि यह ऐसे अपराधी हैं जो मानसिक रोग से पीड़ित नहीं है। तथा जो चोरी न करने का विकल्प तलाश सकते थे।

47. The school of Indian philosophy which accepts Karmavada and permanent soul substance, but denies the existence of god, is -
भारतीय दर्शन का वह मत जो कर्मवाद और स्थायी आत्म द्रव्य स्वीकार करता है, किन्तु ईश्वर की सत्ता स्वीकार नहीं करता है-
(a) Charvaka/चार्वाक
(b) Buddhism/बौद्ध दर्शन
(c) Jainism/जैन दर्शन
(d) Nyaya/न्याय दर्शन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : भारतीय दर्शनों में से एक जैन दर्शन नास्तिक दर्शन की कोटि में आता है। जैन दर्शन कर्मवाद और स्थायी आत्म द्रव्य तो स्वीकार करता है, किन्तु ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है।

48. The school of Indian philosophy according to which the empirical world is ultimately unreal, is -
भारतीय दर्शन का वह मत जिसके अनुसार आनुभविक जगत् अन्ततोगत्वा असत् है-

(a) Advait Vedant/अद्वैत वेदान्त
(b) Purva Mimansa/पूर्व मीमांसा
(c) Samkhya/सांख्य
(d) Vishishtadvait Vedant /विशिष्टाद्वैत वेदान्त

Ans. (a) : भारतीय दर्शन में अद्वैत वेदांत एक ऐसा दर्शन है जो आनुभविक जगत को अन्तोगत्वा असत मानता है। शंकर ने जगत की व्याख्या में कहा कि 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या, जीवों ब्रह्मैव नापरः - अर्थात् ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है। जगत मिथ्या है तथा जीव और ब्रह्म अभिन्न हैं।' शंकर ने कहा की सपूंर्ण जगत ब्रह्म का विवर्त मात्र है।

49. According to the Vaisheshika view atoms are ..... karan of creation.
वैशेषिक मतानुसार परमाणु सृष्टि के-

(a) Upadan Karan/उपादान कारण है
(b) Samvayee Karan/समवायि कारण है
(c) Asamvayee Karan/असमवायि कारण हैं
(d) Nimit Karan/निमित्त कारण है

Ans. (b) : वैशेषिक दर्शन के मतानुसार परमाणु सृष्टि के समवायी कारण है। समवाय एक प्रकार सम्बन्ध है। समवाय वह सम्बन्ध है जिसके कारण दो पदार्थ परस्पर समवेत रहते हैं। यह सम्बन्ध अयुतसिद्ध वस्तुओं के बीच होता है। अयुतसिद्ध वस्तुएं वे हैं जिनका पृथक अस्तित्व नहीं रह सकता है।

50. According to Vaisheshika view-
वैशेषिक मतानुसार

(a) Guna and Karma depend upon Dravya for their existence./गुण तथा कर्म अपने अस्तित्व के लिए द्रव्य पर आश्रित हैं।
(b) Guna and Karan are independent padarthas therefore not related with Dravya in any way. गुण तथा कर्म स्वतंत्र पदार्थ हैं अतः द्रव्य से किसी भी प्रकार से सम्बन्धित नहीं हैं।
(c) Gunas inhere in Dravya therefore they are material and pleasure, pain and desire are not their kinds /गुण द्रव्य में रहते हैं अतः जड़ हैं और सुख, दुख तथा इच्छा गुण के प्रकार नहीं हैं।
(d) Karmas do not inhere in dravya because Akash, Dik, Kala and self are static /कर्म द्रव्यों में अन्तर्निहित नहीं है क्योंकि आकाश, दिक्, काल और आत्मा गतिहीन हैं।

Ans. (a) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार 'द्रव्य, गुण और कर्म का अधिष्ठान है। अर्थात् द्रव्य के बिना गुण और कर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।'

51. A theory of causation according to which the effect is latently existent in its material cause, prior ot its production, is called-
कारणता का वह सिद्धांत जिसके अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व अपने उपादान कारण में अव्यक्त रूप से अस्तित्वमान रहता है, कहलाता है-

(a) Asatkaryavada/असतकार्यवाद
(b) Satkaryavada/सतकार्यवाद
(c) Asadkaranvada/असद्कारणवाद
(d) Arambhavada/आरम्भवाद

Ans. (a) : कारणता का वह सिद्धांत जिसके अनुसार कार्य अपनी उत्पत्ति से पूर्व अपने उपादान कारण में अव्यक्त रूप से अस्तित्ववान रहता है, 'सत्कार्यवाद' कहलाता है। सांख्य दर्शन में सत्कार्यवाद को इस प्रकार व्यक्त किया गया है-कार्य सत् है। यह सत् अपनी उत्पत्ति से पूर्व कारण में भी सत् था। अतः कार्य से कारण की उत्पत्ति का अर्थ सत कारण से सत कार्य का आविर्भाव है। यदि तिल के कणों में तेल पहले से नहीं होता तो तिल से तेल का आविर्भाव नहीं होता। यही सांख्य का सत्कार्यवाद है।

52. According to Nyaya - Vaisheshika view-
न्याय वैशेषिक मत है-

(a) Dik and Akash are not different from each other/दिक् एवं आकाश अभिन्न हैं
(b) Dik and Akash are different but both are substratum of quality of sound /दिक् एवं आकाश भिन्न हैं किन्तु दोनों ही शब्द गुण के आधार है
(c) Dik is ground of cognition of far and near and Akash is substratum of quaintly of sound दिक् दूर एवं निकट के ज्ञान का आधार है तथा आकाश शब्द गुण का आधार है
(d) Akash is gourd of cognition of far and near and dik is substratum of quality of sound आकाश दूर एवं निकट के ज्ञान का आधार है जबकि दिक् शब्द गुण का आधार है

Ans. (c) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार सभी भौतिक द्रव्यों का अस्तित्व दिक और काल से ही है। दिक संसार की वस्तुओं को आश्रय प्रदान करता है। यह दूर और निकट के ज्ञान का आधार है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार आकाश का प्रत्यक्षीकरण नहीं होता। इसके गुणों के आधार पर इसका अनुमान किया जाता है। प्रत्येक गुण का आधार अवश्य होता है। शब्द, आकाश का गुण है। इस प्रकार आकाश को शब्द गुण का आधार माना जाता है। यह सर्वव्यापी और नित्य है।

53. According to Aristotle god is world's-
अरस्तू के अनुसार ईश्वर जगत का-

(a) Formal, final and efficient cause स्वरूप, लक्ष्य और निमित्त कारण है।
(b) Material, efficient and final cause उपादान, निमित्त और लक्ष्य कारण है।
(c) Creator, provider and destroyer सृष्टिकर्ता, पालक और संहारक है।
(d) Material, and efficient cause उपादान और निमित्त कारण है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : ग्रीक दार्शनिक अरस्तू ने ईश्वर और जगत की व्याख्या में बताया कि ईश्वर जगत का स्वरूप लक्ष्य और निमित्त कारण है। अरस्तू विज्ञान को विश्व का स्वरूप कारण मानते हैं। विज्ञानरूपी, नित्य बिम्बों को आदर्श मानकर ईश्वर उनके अनुरूप सृष्टि के पदार्थों की रचना करते हैं।

54. Philosopher who has challenged the concept of causation and considered the notion of causation as grounded in customs and habits, is-
कारणता की अवधारणा को चुनौती देने वाला तथा कारणता की धारणा को रिवाज एवं आदत पर आश्रित मानने वाला दार्शनिक है-

(a) Aristolte/अरस्तू (b) Leibnitz/लाइबनित्स
(c) Hume/ह्यूम (d) Berkeley/बर्कले

Ans. (c) : ह्यूम अनुभववादी थे उन्होंने कारणता की अवधारणा की आलोचना की तथा कारणता की धारणा को रिवाज एवं आदत पर आश्रित माना। ह्यूम ने इन्द्रियानुभववाद की प्रतिष्ठा की।

55. According to Knat, space and time are-
कांट के अनुसार देश तथा काल हैं-

(a) The ultimate realties/निरपेक्ष सत्ताएं
(b) Apriori forms of sensibility
संवेदना के प्रागानुभाविक आकार
(c) Insignificant for the knowledge of the phenomenal world/प्रपंचनात्मक जगत के ज्ञान की दृष्टि से महत्वहीन
(d) Characteristics of the Noumena
नोमिना के चारित्रिक लक्षण

Ans. (c) : काण्ट ने देश-काल को सवंदेना के प्रागनुभविक आकार कहा। काण्ट कहते हैं कि जिस प्रकार वाह्य विषयों के अवलोकन में चश्में की अनिवार्यता है उसी प्रकार संवेदनाओं को ग्रहण करने में देश और काल की। काण्ट आगे कहते हैं कि हमारा अनुभव देश काल के कारण सम्पन्न होता है। यदि देश और काल की सत्ता पहले से विद्यमान न हो तो हम निकट और दूर तथा पूर्व और पश्चिम का अनुभव नहीं कर पाएंगे।

56. In the philosophy of Descartes "interactionism" is necessary to explain-
देकार्ते के दर्शन में "अर्न्तक्रियावाद" आवश्यक है-

(a) Relation of god and the world
ईश्वर और जगत के सम्बन्ध की व्याख्या के लिए
(b) Relation of mind and body
मनस और शरीर के सम्बन्ध की व्याख्या के लिए
(c) "I think, therefore i am"
"मैं सोचता हूँ अतः मैं हूँ" की व्याख्या के लिए
(d) Relation of god and soul
ईश्वर और आत्मा के सम्बन्ध की व्याख्या के लिए

Ans. (b) : डेकार्ट के दर्शन में 'अंतक्रियावाद' मन और शरीर के सम्बन्ध की व्याख्या के लिए है। अन्तःक्रियावादी मन और शरीर के सम्बन्ध को घटना के द्वारा स्पष्ट करते हैं जैसे-मैं अपने मन में इंट को लात मारने की इच्छा रखता हूँ और में लात मार देता हूँ। यह शारीरिक क्रिया का कारण है। इसके विपरीत दीवार से पैर टकराने से उत्पन्न दर्द मानसिक घटना का कारण हो सकती है।

57. The causal proof for the existence of god, as employed by descartes, asserts that god must exist-
देकार्ते द्वारा ईश्वर के अस्तित्व हेतु प्रयुक्त कारण मूलक प्रमाण की यह मान्यता है कि ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध है-

(a) As the cause of the universe of pluralities
नानत्व पूर्ण सृष्टि के कारण के रूप में
(b) As cause of the goodness in the world
जगत में शुभत्व के कारण के रूप में
(c) As cause of the idea of god in human mind/मानव मन के विद्यमान ईश्वर के प्रत्यय के कारण के रूप में
(d) Because of perfection cannot be devoid of existence/क्योंकि पूर्णत्व में अस्तित्व का अभाव नहीं हो सकता

Ans. (c) : डेकार्ट के, ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि हेतु कार्य कारण मूलतक तर्क के अनुसार प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होना चाहिए। बिना कारण के कार्य नहीं होता। असत् से असत की उत्पत्ति नहीं हो सकती। मेरी बुद्धि में 'ईश्वर है' ऐसा विचार उत्पन्न होता है। इस विचार का भी कोई न कोई कारण अवश्य होना चाहिए। यह विचार पूर्ण और अनन्त ईश्वर का विचार है। अतः ईश्वर को ही इस विचार का कारण मानना पड़ता है।

58. Which of the following is not acceptable to spinoza-
निम्नलिखित में से क्या स्पिनोज़ा को स्वीकार्य नहीं है-

(a) God is the only substance and therefore whatever exists that is god/ईश्वर ही एकमात्र द्रव्य है। इसलिए जो भी अस्तित्ववान है वह ईश्वर है।
(b) Thought and extension are the two essencial attributes of god/विचार और विस्तार ईश्वर के दो सार गुण हैं।
(c) Attributes of god are infinite
ईश्वर के अनन्त गुण हैं।
(d) Thought and extension influences each other
विचार और विस्तार एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

Ans. (d) : स्पिनोजा बुद्धिवादी है। वे कहते हैं कि ईश्वर एक मात्र द्रव्य है और वे हर अस्तित्ववाद को ईश्वर मानते हैं। वे कहते हैं कि ईश्वर से पृथक और कोई सत्ता नहीं है। स्पिनोजा ने ईश्वर के अनन्त गुण माने हैं। किन्तु चैतन्य और विस्तार ईश्वर के दो सार गुण हैं। परन्तु विचार और विस्तार एक दूसरे को प्रभावित करते हैं ऐसा स्पिनोजा ने नहीं कहा।

59. Kant's stand that "Noumena cannot be know", means-
"नोमिना का ज्ञान संभव नहीं है, कांट की इस मान्यता का अभिप्राय है-

(a) Noumena does not exist, because to be is to be perceived/नोमिना की सत्ता नहीं, क्योंकि सत्ता दृश्यता है

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(b) Our knowledge is limited to phenomena in space and time, Noumena a beyond space and time as the ground of phenomena/हमारा ज्ञान देश और काल में अवस्थित प्रपंच तक सीमित है। नोमीना प्रपंच का देशकालातीत आधार है

(c) We must accept skepticism, because certain knowledge of the ultimate reality is not possible/हमें संशयवाद स्वीकार कर लेना चाहिए क्योंकि अंतिम सत्ता का निश्चित ज्ञान संभव नहीं है

(d) Noumena being beyond space and time can be known not be senses, but by reason/देशकालातीत होने के कारण नोमीना का ज्ञान इन्द्रियों का नहीं अपितु बुद्धि का विषय है

Ans. (b) : काण्ट कहते हैं कि हमारा ज्ञान सत्य और सार्वभौम होता है। यह इन्द्रिय संवेदनों के कारण सत्य और बुद्धि विकल्पों के कारण सार्वभौम होता है। काण्ट कहते हैं कि हमारा ज्ञान देश काल तक ही सीमित है और नोमिना देश-काल के प्रपंच से परे है। अतः नोमिना का ज्ञान संभव नहीं है।

60. "Inconsistent empiricism" means-
''असंगत अनुभववाद'' का अर्थ है-

(a) All empiricism is inconsistent empiricism
समस्त अनुभववाद असंगत अनुभववाद हैं

(b) If there is an inconsistency, it is due to empiricism/यदि असंगतता है तो उसका कारण अनुभववाद है

(c) Accepting certain assumptions and explanations from sources other than experiences/कुछ मान्यताओं और व्याख्याओं को अनुभव से भिन्न किसी अन्य स्रोत पर आधारित करना

(d) Different experiences of same objects in different conditions/एक ही विषय का भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न अनुभव होना

Ans. (c) : अनुभववादियों का कहना है कि ''जब हम अपनी कुछ मान्यताओं और व्याख्याओं को अनुभव से भिन्न किसी श्रोत पर आधारित करते हैं तो इसे असंगत अनुभववाद कहते हैं।''

61. According to Jainism meaning of the word "Syat" is-
जैन दर्शन के अनुसार 'स्यात्' शब्द का अर्थ है

(a) A certain standpoint
एक निश्चित अपेक्षा (परिप्रेक्ष्य)

(b) Doubt/संशय

(c) Possibility /सम्भवतया

(d) Personal belief/व्यक्तिगत विश्वास

Ans. (a) : जैन दर्शन के अनुसार वस्तु के आंशिक ज्ञान को नय कहा जाता है। नय को सत्य का आंशिक रूप कहा जा सकता है। इनसे सापेक्ष सत्य की प्राप्ति होती है। जैन मत के अनुसार प्रत्येक दर्शन में जो मतभेद पाए जाते हैं उसका कारण यही है कि प्रत्येक दर्शन अपने दृष्टिकोण को ठीक मानता है जबकि दूसरे दर्शन के उसी दृष्टिकोण की उपेक्षा करता है। इसी कारण जैन दर्शन के प्रत्येक 'नय' के आरंभ में 'स्यात' शब्द जोड़ने का निर्देश दिया गया है। 'स्यात' शब्द जोड़ देने से मत दोषरहित हो जाता है।

62. "Anupurvi" is a Mimansa's principle according to which-
'आनुपूर्वी' एक मीमांसक सिद्धांत है, जिसके अनुसार

(a) God is the creator of Vedas
ईश्वर वेदों का स्रष्टा है

(b) Meaning to the words is determined by their conventional use /शब्दों के अर्थ उनके परम्परागत प्रयोग द्वारा निर्धारित होते हैं।

(c) The words are eternal and their order in the vedas is also eternal /शब्द शाश्वत हैं तथा वेदों में उनका क्रम भी शाश्वत है

(d) The words and their meanings have no necessary relation./शब्दों और उनके अर्थों के मध्य कोई अनिवार्य सम्बन्ध नहीं है

Ans. (c) : आनुपूर्वी, मीमांसकों का एक ऐसा सिद्धांत है जिसके अनुसार ''शब्द शाश्वत हैं तथा वेदों में उनका क्रम भी शाश्वत है। मीमांसा दर्शन में शब्द को नित्य माना गया है। इसकी न तो उत्पत्ति होती है और न तो विनाश। मीमांसक का कहना है कि शब्द की नित्यता इस बात से प्रमाणित होती है कि बार-बार उच्चारण करने से जो ध्वनि पैदा होती है उससे एक ही शब्द का बोध होता है।''

63. Knower, known and the knowledge each is an object of every knowledge, this view is held by-
ज्ञाता, श्रेय और ज्ञान प्रत्येक ज्ञान का विषय है, यह मत है-

(a) Kumaril/कुमारिल

(b) Prabhakar/प्रभाकर

(c) Bauddhist Vigyanvadi /बौद्ध विज्ञानवादी

(d) Nyaya/न्याय

Ans. (b) : प्रभाकर का ज्ञान सिद्धांत 'त्रिपुटी प्रत्यक्षवाद के नाम से जाना जाता है। प्रभाकर कहते हैं कि ज्ञान स्वप्रकाश है।' प्रत्येक ज्ञान में तीन तत्वों का रहना अनिवार्य है-ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान/आत्मा को ज्ञाता कहा जाता है वह कभी भी ज्ञान का विषय नहीं हो सकता है। जिस विषय का ज्ञान होता है उसे ज्ञेय कहते हैं। प्रत्येक ज्ञान में ज्ञान की त्रिपुटी अर्थात् ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान को प्रकाशित किया जाता है।

64. All knowledge is neutral at the time of the origin and it is validated for invalidated by successful or unsuccessful subsequent activity, is a view held by-
अपनी उत्पत्ति के समय समस्त ज्ञान उदासीन होता है तथा प्रमाण्य अथवा अप्रमाण्य का निर्धारण कार्य की सफलता या असफलता के आधार पर होता है। यह मत है।

(a) Buddhists/बौद्ध
(b) Naiyayikas/नैयायिक
(c) Mimamsakas/मीमांसक
(d) Samkhyan/सांख्य

Ans. (b) : न्याय दर्शन के अनुसार ज्ञान अपनी उत्पत्ति के समय उदासीन होता है तथा प्रमाण और अप्रमाण का निर्धारण कार्य की सफलता अथवा असफलता के आधार पर होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

65. Intrinsic validity and extrinsic invalidity of knowledge is held by-
स्वतः प्रामाण्य और परतः अप्रमाण्यवाद का सिद्धांत मान्य है

(a) Bhatt Mimansaka/भट्ट मीमांसकों को
(b) Early naiyayikas/प्राचीन नैयायिकों को
(c) Buddhists/बौद्धों को
(d) Navya Naiyayikas/नव्य नैयायिकों को

Ans. (a) : भट्ट मीमांसक स्वतः प्रमाण्य तथा परतः अप्रमाण्यवाद को मानते हैं। स्वतः प्रमाण्य का आशय है कि जिस साधन से ज्ञान का ग्रहण होता है उसी साधन से ज्ञान की प्रमाणिकता का भी ग्रहण हो जाता है।
परतः अप्रमाण्यवाद का अभिप्राय है-ज्ञान की अप्रमाणिकता ज्ञानजन्य सामग्री से भिन्न कुछ अन्य वाह्य तत्वों पर निर्भर है। इस अतिरिक्त या वाह्य सामग्री को यहाँ कारण दोष कहा गया है। कारण दोष होने पर ही यह विषय का यथार्थ प्रकाशन नहीं कर पाता है और वस्तु संबंधी हमारा ज्ञान गलत हो जाता है। स्पष्ट है कि ज्ञान की अप्रामाणिकता कारण दोष पर निर्भर है। यह कारण दोष अतिरिक्त तत्व है। अतः प्रमाण्यवाद का ग्रहण परतः होता है।

66. Illusary experience explained by way of Smrtipramosha and vivekagrah is called-
स्मृतिप्रमोष तथा विवेकाग्रह के माध्यम से भ्रम की व्याख्या करने वाला सिद्धान्त है

(a) Anyathakhyativada/अन्यथाख्यातिवाद
(b) Akhyativada/अख्यातिवाद
(c) Asatkhyativada/असदख्यातिवाद
(d) Atmakhyativada/आत्मख्यातिवाद

Ans. (b) : अख्यातिवाद वह सिद्धांत है। जो स्मृति-प्रमोष तथा विवेकाग्रह के माध्यम से भ्रम की व्याख्या करता है। प्रभाकर का भ्रम विचार अख्यातिवाद कहलाता है। प्रभाकर भ्रम की तात्विक यथार्थता को अस्वीकार करते हैं। वे कहते हैं कि भ्रम के दो ज्ञान है और दोनों के दो अलग-अलग विषय होते हैं। भ्रम में इन दोनों के भेद का और उनके अलग-अलग विषयों के भेद का ज्ञान नहीं होता है। इस प्रकार हम भ्रमवश भूल जाते हैं कि दो ज्ञान है। वे रज्जू और सर्प के उदाहरण में कहते हैं कि प्रत्यक्ष और सृष्टि का सम्मिश्रण है। जब हम स्मृतिदोष के कारण रज्जु के प्रत्यक्षज्ञान और सर्प के संस्मरणात्मक ज्ञान में भेद नहीं कर पाते तो भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है।

67. Advaita vedanta's theory of error is called as-
अद्वैत वेदांत का भ्रम का सिद्धांत कहलाता है-

(a) Vipritakhyativada/विपरीतख्यातिवाद
(b) Stkhyativada/सत्ख्यातिवाद
(c) Anivachnivakhyativada/अनिर्वचनीयख्यातिवाद
(d) Vivekhyativada/विवेकख्यातिवाद

Ans. (c) : शंकर का अद्वैत वेदांत को अनिर्वचनीयख्याति नाम से जाना जाता है। इसमें भ्रम को अध्यास कहा गया है जिसका अर्थ है 'असत्' में 'सत्' की प्रतीति। अध्यास के तीन पक्ष हैं- अधिष्ठान, अध्यस्तवस्तु तथा आरोप या तादात्म्य की क्रिया। इन तीनों के एक साथ होने पर भ्रम होता है। अध्यस्त वस्तु के बुद्धि की चारों कोटियों से अनिर्वचनीय होने के कारण इस मत को अनिर्वचनीय ख्यातिवाद के नाम से जाना जाता है।

68. According to Mimamsa, "Arthpatti" (presumption) pramana is-
मीमांसा मतानुसार 'अर्थापत्ति' प्रमाण है

(a) A variant of anumana parmana
अनुमान प्रमाण का एक प्रकार
(b) Necessary praman to resolve appearant inconsistency between facts
दो ज्ञात तथ्यों के मध्य प्रतीत होने वाली असंगति का निराकरण करने वाला प्रमाण
(c) A replacement of Sabda Pramana
शब्द प्रमाण के स्थान पर स्वीकृत
(d) Necessary to establish vyapti relation between two things/दो वस्तुओं के मध्य व्याप्ति सम्बन्ध की स्थापना हेतु आवश्यक

Ans. (b) : मीमांसादर्शन में अर्थापत्ति को पांचवे प्रमाण के रूप में माना गया है। अर्थापत्ति का अर्थ है "किसी विषय की कल्पना करना।" जब कोई ऐसी घटना देखने में आती है जिसको समझने में कुछ विरोध मालूम पड़ता है तो उस विरोध की व्याख्या के लिए कोई आवश्यक कल्पना करते हैं, तो जो आवश्यक कल्पना की जाती है उसे अर्थापत्ति कहते हैं।

69. "Arthakriyakaritva-Laksanam" means-
'अर्थाक्रियाकारित्व - लक्षणं सत्' का अर्थ है

(a) Universals are real because their meaning is their effect/सामान्यों की सत्ता है क्योंकि उनका अर्थ उनका प्रभाव है।
(b) There are effects without causes
कार्य की उत्पत्ति कारण पर निर्भर नहीं है।
(c) The criterion of existence of thing in its ability to produce some effect /वस्तु की सत्ता का लक्षण उस वस्तु में कार्य उत्पन्न करने का सामर्थ्य है।
(d) Reality is unconditional, eternal and describalbe/सत्ता निरपेक्ष, शाश्वत और वर्णनीय है।

Ans. (c) : 'अर्थाक्रियाकारित्व-लक्षणं सत्' का अर्थ है वस्तु की सत्ता का लक्षण उस वस्तु में कार्य उत्पन्न करने का सामर्थ्य है।

70. A theory of meaning according to which, words, independently express separate meanings and their use in a sentence expresses a connected idea, is called-
अर्थ का वह सिद्धांत जिसके अनुसार शब्द स्वतंत्र रूप से पृथक अर्थ प्रकट करते हैं तथा जब इन शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त किया जाता है तो संयुक्त अर्थ प्रस्तुत होता है, कहलाता है

(a) Anvitabhidhanavada/अन्विताभिधानवाद
(b) Shabdashaswatvada/शब्दाशाश्वतवाद
(c) Abhihitanvayavada/अभिहितान्वयवाद
(d) Arthakriyavada/अर्थक्रियावाद

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : वह सिद्धांत "जिसके अनुसार शब्द स्वतंत्र रूप से पृथक अर्थ प्रकट करते हैं तथा जब इन शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त किया जाता है तो संयुक्त अर्थ प्रस्तुत होता है" इसे अभिहितान्वयवाद कहते हैं। इस मत के प्रवर्तक कुमारिल भट्ट है। अभिहितान्वयवाद का अर्थ है- 'पदार्थानाम अन्वय:' पद अपने अर्थ को कहते हैं उसका वाक्य में अन्वय हो जाता है। इस अन्वय से एक विशिष्ट प्रकार का वाक्यार्थ निकलता है।

71. The meaning of word is determined by its use in a sentence, this view of meaning is in held by-
शब्द का अर्थ, वाक्य में उसकी प्रयुक्ति पर निर्भर करता है। अर्थ के इस मत को मानने वाले है

(a) Kumaril Bhatta/कुमारिल भट्ट
(b) Prabhakar/प्रभाकर
(c) Prabhakar and Kumaril/प्रभाकर तथा कुमारिल
(d) Kumaril and Nyaya/कुमारिल तथा न्याय

Ans. (b) : प्रभारकर जो कि कुमारित भट्ट के शिष्य हैं उनका मानना है कि "शब्द का अर्थ वाक्य में उसकी प्रयुक्ति पर निर्भर करता है।" प्रभाकर अन्विताभिधानवाद के प्रवर्तक है। इस सिद्धांत के अनुसार शब्द का अर्थ वाक्य पर निर्भर रहता है। वाक्य अपने आप में सार्थक है, वाक्य ही भाषा की इकाई है।

72. According to Nyaya, which of the following is not a condition for intelligible sentence-
न्याय मतानुसार निम्नलिखित में से क्या वाक्य के अर्थपूर्ण होने की आवश्यक शर्त नहीं है

(a) Akanksa (expectancy)/आकांक्षा
(b) Tatparya (intended meaning)/तात्पर्य
(c) Adesa (imperative)/आदेश
(d) Yogyata (mutual fitness of words)योग्यता

Ans. (c) : न्याय दर्शन के प्रवर्तक आचार्य गौतम को माना जाता है। न्याय दर्शन के अनुसार- आकांक्षा, तात्पर्य, योग्यता वाक्य के अर्थपूर्ण होने की आवश्यक शर्त है। जबकि न्याय मत में वाक्य के अर्थपूर्ण होने के लिए 'आदेश' आवश्यक शर्त नहीं है।

73. All is flux and nothing is permanent this view is expressed by-
सबकुछ प्रवाहमान है और कुछ भी स्थायी नहीं है। यह मत व्यक्त किया है

(a) Parmenides/पारमेनाइडीज़
(b) Zeno/जीनों ने
(c) Heraclitus /हेराक्लाइटस ने
(d) Anaxagoras/एनेक्सागोरेस ने

Ans. (c) : "सब कुछ प्रवाहमान है और कुछ भी स्थायी नहीं है" यह मत हेराक्लाइट्स का है। हेराक्लाइट्स के अनुसार गति या परिणाम ही एक मात्र तत्व है। विश्व गति है, परिणाम है, धारा है, प्रवाह है। ये कहते थे कि कोई भी व्यक्ति एक नदी में दो बार नहीं नहा सकता क्योंकि जिस पानी से प्रथम बार स्नान किया वह बह जाता है और उसके स्थान पर तुरंत दूसरा पानी आ जाता है। हेराक्लाइट्स क्षणभंगवादी थे।

74. "Yogah Karmasu Kaushlam" is propounded in
'योगः कर्मसु कौशलम्' प्रतिपादित है

(a) Yoga-Sutra of Patanjali/पंतजलि योग - सूत्र में
(b) Yogachaya system/योगाचार मत में
(c) Bhagavadgita/भगवद्गीता में
(d) Yoga-Bhasya/योग-भाष्य में

Ans. (c) : कृष्ण, अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं कि "योगः कर्मसु कौशलम्'अर्थात् समत्व बुद्धि रूप योग ही कर्मों में कुशलता है। अर्थात् कर्म बंधन से छूटने का उपाय है। कृष्ण कहते हैं कि "हे अर्जुन जो पुरुष मन से इन्द्रियों को वश में करके अनासक्त हुआ कर्मेन्द्रियों से कर्म योग का आचरण करता है वह श्रेष्ठ है।"

75. According to Socrates, knowledge is-
सुकरात के अनुसार, ज्ञान

(a) Not a virtue/सद्गुण नहीं है।
(b) Not necessary for virtue
सद्गुण हेतु आवश्यक नहीं है।
(c) Sometimes necessary for virtue
सद्गुण हेतु यदा-कदा आवश्यक होता है।
(d) Necessary and sufficient condition for virute
सद्गुण की आवश्यक और पर्याप्त शर्त है।

Ans. (d) : सुकरात के अनुसार ज्ञान व सद्गुण में अनिवार्य व अभेद सम्बन्ध है। सद्गुण, ज्ञान का परिणाम है। ज्ञान से ही समस्त सद्गुणों का उद्भव होता है। ज्ञान, सद्गुणी बनने की आवश्यक एवं पर्याप्त शर्त है।

76. According to Descartes, the idea of god which exists is knowers mind is not-
देकार्ते के अनुसार ज्ञाता के मनस में विद्यमान ईश्वर का प्रत्यनन नहीं है

(a) Innate/सहजात
(b) Absolutely clear and distinct
पूर्णतया स्पष्ट एवं सुभिन्न
(c) A construct of reason/बुद्धि द्वारा निर्मित
(d) Caused by god himself
स्वयं ईश्वर द्वारा किया गया कार्य

Ans. (c) : रेनेडेकार्ट बुद्धिादी दार्शनिक थे। इन्होंने कहा की ज्ञाता के मन में विद्यमान ईश्वर का प्रत्यय, सहज उत्पन्न होता है। यह पूर्णतया स्पष्ट होता है तथा यह प्रत्यय स्वयं ईश्वर द्वारा किया गया कार्य है।

77. Pragmatic criterion of truth suggests-
सत्य की प्रयोजनवादी (प्रेगमेटिक) कसौटी द्वारा समर्थित है

(a) Truth is subjective/सत्य आत्मनिष्ठ है
(b) Truth is that which works
सत्य वह है जो कार्यसाधक है
(c) No truth can ever be taken as objective/कोई भी सत्य कभी भी वस्तुनिष्ठ स्वीकार नहीं किया जा सकता
(d) Truth is universal and unchanging
सत्य सार्वभौम एवं अपरिवर्तनशील है

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : सत्य के प्रयोजनवादी सिद्धांत के अनुसार सत्य वह है जो कार्य साधक है। सत्य का प्रयोजनवादी सिद्धांत निश्चित रूप से मानवतावादी दर्शन है जो यह मानता है कि मनुष्य क्रिया में भाग लेकर अपने मूल्यों का निर्धारण करता है।

78. The correspondence theory of truth pre-supposes-
सत्य के संवादिता सिद्धांत की पूर्वमान्यता है

(a) The object of knowledge is independent of knower /ज्ञान का विषय ज्ञाता से स्वतंत्र है
(b) The known is dependent on knower
ज्ञेय का अस्तित्व ज्ञाता पर आश्रित है
(c) There are no realities or any kind
किसी भी प्रकार की कोई भी सत्ता नहीं है
(d) There are realities but truth is independent of them/सत्ताए हैं किन्तु सत्य उनसे पूर्णतया स्वतंत्र है

Ans. (a) : सत्य के संवादिता सिद्धांत की पूर्व मान्यता है की ज्ञान का विषय ज्ञाता से स्वतंत्र है। सत्य के संवादिता सिद्धांत के अनुसार हमारे अपने विचार और वाह्य स्थिति में समानता होनी चाहिए। हमें अपने विचारों का तो स्पष्ट बोध होता है। पर बाहर की स्थिति को हम कैसे जानते हैं? संवादिता सिद्धांत में यह मान लिया जाता है कि वाह्य स्थिति का ज्ञान पहले से ही है।

79. The verifiability principle is adopted as the criterion of meaning by-
सत्यापनीयता सिद्धांत को अर्थ की कसौटी स्वीकार करने वाले हैं

(a) Bertrend ressell/बर्ट्रेण्ड रसल
(b) G.E. Moor/जी.ई. मूर
(c) Rudolph camp/रूडोल्फ कार्नेप
(d) William James/विलियम जेम्स

Ans. (c) : 'सत्यापनीयता' सिद्धांत को अर्थ की कसौटी के रूप में स्वीकार करने वाले दार्शनिक है 'रूडोल्फ कार्नेप'।

80. Philosopher associated with the "theory of falsifiability" is-
'असत्यापनीयता सिद्धांत' से सम्बन्धित दार्शनिक है

(a) William James/विलियम जेम्स
(b) Karl Popper/कार्ल पॉपर
(c) J.L. Asutin/जे.एल. ऑस्टिन
(d) Karl Marx/कार्ल मार्क्स

Ans. (b) : दार्शनिक 'कार्ल पापर' का संबंध- 'असत्यापनीयता सिद्धांत' से है।

81. According to Nyaya theory of sense-object contact, the contact of sense with qualities things, is called-
न्याय दर्शन के इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष सिद्धांत के अनुसार इन्द्रिय का द्रव्य के माध्यम से उसके गुण के साथ सम्पर्क कहलाता है

(a) Samyoga/संयोग
(b) Samyukta samvaya/संयुक्त समवाय
(c) Visesanavisesyabhava/विशेषणविशेष्याभाव
(d) Samyukta samveta samvaya
संयुक्त समवेत समवाय

Ans. (b) : न्याय दर्शन के सन्निकर्ष के छः भेदों में से एक संयुक्त समवाय है। संयुक्त समवाय में इन्द्रिय का सीधा सम्बन्ध वस्तु के साथ न होकर एक माध्यम के द्वारा होता है जैसे-घड़े की लालिमा का ज्ञान।

82. "Kalpanapodhabhrantam Pratyaksham", this definition of perception in given by-
कल्पनापोढमभ्रान्तम प्रत्यक्षम् की यह परिभाषा दी गई है

(a) Nyaya/न्याय दर्शन में
(b) Samkhya/सांख्य दर्शन में
(c) Buddhism/बौद्ध दर्शन में
(d) Mimamsa/मीमांसा दर्शन में

Ans. (c) : 'कल्पनापोढमभ्रान्तम प्रत्यक्षम्' यह परिभाषा बौद्ध दर्शन में दी गई है।

83. Which of the following terms is not a constituent of the definition of perception given by gotama nyaya sustra-
निम्नलिखित में से कौन सा पद गौतम के न्याय सूत्र द्वारा प्रस्तुत प्रत्यक्ष की परिभाषा का घटक नहीं है

(a) Avyapadesya/अव्यपदेश
(b) Vyavsayatmka/व्यवसायात्मक
(c) Namjatyadyadiasanyukata/नामजात्यातिअसंयुक्तता
(d) Avyabhichari/अव्यभिचारी

Ans. (c) : न्यायदर्शन में प्रत्यक्ष की परिभाषा इस प्रकार दी गई है– 'इन्द्रियार्थसन्निकर्ष जन्य ज्ञानं प्रत्यक्षम्'। जो ज्ञान इन्द्रिय और विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न हो उसे प्रत्यक्ष कहा जाता है। न्याय सूत्र में प्रत्यक्ष की परिभाषा के घटक इस प्रकार है-(i) अव्यपदेश (ii) व्यवसायात्मक (ii) अव्यभिचारी।

84. According to Nyaya "Sheshavat Anuman" is-
न्याय दर्शन के अनुसार "शेषवत् अनुमान"

(a) Inference of cause from the effect
कार्य से कारण का अनुमान है
(b) Inference of effect from the cause
कारण से कार्य का अनुमान है
(c) Not based on cuase and effect relation
कार्य-कारण सम्बन्ध पर आधारित नहीं है
(d) Not based on Vyapti relation
व्याप्ति सम्बन्ध पर आधारित नहीं है

Ans. (a) : न्याय दर्शन के अनुसार शेषवत अनुमान वह अनुमान है जिसमें ज्ञान कार्य के आधार पर अज्ञान कारण का अनुमान किया जाता है। जैसे- प्रातःकाल चारों ओर पानी जमा देखकर, रात में वर्षा के हो चुकने का अनुमान करना शेषवत अनुमान है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

85. Which in that is Virrudha "Hetvabhasa" form inference.
वह हेतु विरुद्ध 'हेत्वाभास कहलाता है जिसके द्वारा अनुमान में'

(a) Sadhya is not proved certainly
साध्य की सिद्धि निश्चित रूप से नहीं होती

(b) Hetu does not prove Sadhya but prove its absence/हेतु साध्य को नहीं वरन् साध्य के अभाव को सिद्ध करता है।

(c) In which conclusion is contradicted by another inference /विद्यमान साध्य का अन्य अनुमान द्वारा खण्डन हो जाता है

(d) In which conclusion is contradicted by Pratyasha Praman or other then anuman
साध्य का खण्डन प्रत्यक्ष अथवा किसी अन्य अनुमानेतर प्रमाण द्वारा हो जाता है

Ans. (b) : न्यायदर्शन के अनुसार विरुद्ध हेत्वाभास तब होता है जब हेतु साध्य को न सिद्ध करके उसके विरोधी को ही सिद्ध कर देता है तब विरुद्ध हेत्वाभास का उदय होता है। जैसे-हवा भारी है, क्योंकि वह खाली है।

86. The eternal and inexorable order called rta-
ऋत् कही जाने वाली शाश्वत एवं अलंघ्य व्यवस्था

(a) Does not apply to Devatas as they are its guardians/देवताओं पर लागू नहीं है क्योंकि वाह उसके संरक्षक है

(b) Applies only to Devtas as they alone are perfect moral beings/केवल देवताओं पर ही लागू है क्योंकि वही पूर्णतया नैतिक हैं

(c) Does not apply to the physical world/भौतिक जगत् पर लागू नहीं है

(d) Is a cosmic natural moral order and applies to everything /एक ब्रह्माण्डीय प्राकृतिक नैतिक व्ययवस्था है जो समस्त चराचर पर लागू है।

Ans. (d) : ऋत् एक ब्रह्माण्डीय प्राकृतिक नैतिक व्यवस्था है जो समस्त चराचर पर लागू है। ऋत का अर्थ है- जगत की व्यवस्था। ऋत वह नियम है जो प्राकृतिक एवं नैतिक जगत में कार्यान्वित है। ऋत नियम के द्वारा ही वैदिक ऋषि विश्व की व्यवस्था तथा नैतिक जगत की व्यवस्था की व्याख्या कर पाते थे।

87. The concept of Trivarga excludes the purusartha
पुरुषार्थ जो त्रिवर्ग में सम्मिलित नहीं है

(a) Dharma/धर्म (b) Artha/अर्थ
(c) Kama/काम (d) Moksa/मोक्ष

Ans. (d) : पुरुषार्थ लोगों को समाज में क्रिया करने का मार्गदर्शन करता है। मनुष्य का उद्देश्य संसार में सुखी जीवन व्यतीत करना है। यह सब तभी संभव है जब उसकी इच्छा एवं आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इसके लिए हिन्दू शास्त्रों में चार प्रकार के पुरुषार्थ माने गए हैं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म, अर्थ और काम को सामूहिक रूप से त्रिवर्ग कहा जाता है।

88. Niskamakarma means-
निष्कामकर्म का अर्थ है

(a) Renunciation of action but desire for fruits
फल की इच्छा रखते हुए, कर्मों का त्याग

(b) Renunciation of fruits of action
कर्म के फलों का त्याग

(c) Renunciation of desire for fruits of action
कर्म फल की इच्छा का त्याग पूर्वक कर्त्तव्यपालन

(d) Renunciation of all actions as they are all meaningless/समस्त कर्मों का त्याग क्योंकि समस्त कर्म अर्थहीन हैं।

Ans. (c) : गीता में निष्काम कर्म का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया गया है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
या कर्मफल हेतुर्भूमातेसंगोऽस्त्वकर्मणि।।

कर्म फल का हेतु भी मत बनो और अकर्मण्यता में तुम्हारी आसक्ति न हो।
गीता का प्रतिपाद्य विषय ही है निष्काम कर्म योग। अर्थात् कर्मफल की इच्छा का त्याग कर, कर्तव्य का पालन करना।

89. Virtues have been classified into moral virtues intellectual virtues by-
सद्गुणों को नैतिक सद्गुण और बौद्धिक सद्गुण में वर्गीकृत करने वाला है

(a) Aristole/अरस्तू (b) Socrates/सुकरात
(c) Mill/मिल (d) Sidgwic/सिजविक

Ans. (a) : सद्गुणों को नैतिक और बौद्धिक सद्गुण के रूप में अरस्तू ने वर्गीकृत किया है। अरस्तू ने कहा कि सद्गुण मनुष्य की ऐसी स्थाई मानसिक अवस्थाएँ हैं जो निरंतर अभ्यास के फलस्वरूप विकसित होती हैं तथा मनुष्य के स्वैच्छिक कार्यों में व्यक्त होती हैं। अरस्तू ने विवेक को प्रमुख बौद्धिक सद्गुण कहा क्योंकि यह मनुष्य के कर्मों को नियंत्रित करता है।
अरस्तू के अनुसार नैतिक सद्गुण वे हैं जो मनुष्य के निर्बौद्धिक तथा भावनात्मक पक्ष को नियंत्रित करते हैं। इस सद्गुण के द्वारा मनुष्य की प्रवृत्तियों, संवेगों एवं वासनाओं पर नियंत्रण रखा जाता है।

90. Emotivism is a kind of
संवेगवाद है एक प्रकार का

(a) Ethical cognitivism /नैतिक संज्ञानवाद
(b) Ethical non - cognitivism/नैतिक असंज्ञानवाद
(c) Ethical realism/नैतिक वास्तववाद
(d) Ethical consequentialism/नैतिक परिणामवाद

Ans. (b) : संवेगवाद, नीतिशास्त्र का एक सिद्धांत है जिसे नैतिक असंज्ञानवाद के रूप में भी परिभाषित किया जाता है।

91. The conversion of "all mothers are women" is-
'सभी माताएं स्त्रियां हैं' का परिवर्तन है

(a) All women are mothers/सभी स्त्रियां माताएं हैं
(b) Some women are mothers/कुछ स्त्रियां माताएं हैं
(c) No women are mothers/कोई स्त्रियां माताएं नहीं हैं
(d) Some women are not mothers
कुछ स्त्रियां माताएं नहीं हैं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : सभी माताएँ स्त्रिया हैं। (a)

इस तर्क वाक्य की परिवर्तन (I) तर्कवाक्य में होगा।

कुछ स्त्रियां माताएं हैं। (I)

Note-

(i) परिवर्तन करते समय आधार वाक्य के उद्देश्य पद को निष्कर्ष में विधेय पद बना देते हैं।

(ii) आधार वाक्य का विधेय पद निष्कर्ष में उद्देश्य पद हो जाता है।

(iii) आधार वाक्य का गुण निष्कर्ष में नहीं बदलता है।

92. In a standard form categorical syllogism the fallacy of undistributed middle term arises only when-

मानक आकार निरपेक्ष न्याय वाक्य में अव्याप्त मध्यम पद का तर्कदोष केवल तब उत्पन्न होता है, जब

(a) Middle term is not distributed in the conclusion/मध्यम पद निष्कर्ष में व्याप्त न हो

(b) there is no middle term in the syllogism न्याय वाक्य में मध्यम पद न हो

(c) Middle term is not distributed in at least one of the premises/मध्यम पद कम से कम एक आधार वाक्य में व्याप्त न हो

(d) Minor term is distributed in any of the premisses/अमुख्य पद किसी भी आधार वाक्य में व्याप्त हो

Ans. (c) : निरपेक्ष न्याय वाक्य में अव्याप्त मध्यम पद का तर्कदोष तब उत्पन्न होगा जब मध्यम पद कम से कम एक आधार वाक्य में व्याप्त न हो।

93. Which of the following is not correct about valid standard form categorical syllogism-

वैध मानक आकार निरपेक्ष न्याय वाक्य के विषय में क्या सही नहीं है

(a) It has three propositions only इसमें केवल तीन ही तर्कवाक्य होते हैं

(b) All its propositions have only two terms each इसमें प्रत्येक तर्कवाक्य में केवल दो पद होते हैं

(c) There are only three terms in all syllogism न्याय वाक्य में केवल तीन ही पद होते हैं

(d) Middle term is present in all the proposition of syllogism /न्यायवाक्य के समस्त तर्कवाक्यों में मध्यम पद उपस्थित रहता है

Ans. (d) : निरपेक्ष न्याय वाक्य की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(i) निरपेक्ष न्याय वाक्य में केवल तीन ही पद होते हैं।

(ii) न्याय वाक्य में केवल तीन ही पद होते हैं।

(a) मुख्य पद (b) अमुख्यपद (c) मध्य पद

(iii) प्रत्येक तर्क वाक्य में केवल दो ही पद होते हैं

(a) उद्देश्य (b) विधेय

उदाहरण– सभी जीव मरणशील हैं।

सभी मनुष्य जीव हैं।

∴ सभी मनुष्य मरणशील है।

94. Which of the following is not logically equivalent to p → ___ q

निम्नलिखित में से कौन सा p → ___ q की तार्किक समानता नहीं है

(a) -pv –q (b) -(p & q)

(c) -q v – p (d) - (p&-q)

Ans. (d) : p → ___ q की तार्किक समानताएँ

(i) p → – q

(ii) –p (q)

(iii) –qv–p

जबकि –(p &–q) की तार्किक समानता नहीं है।

95. "No philosophers are cunning", is correctly symoblized as-

'कोई दार्शनिक चालाक नहीं हैं, का सही प्रतीकात्मक रूप है'

(a) (x) (px --> cx) (b) (x) (px-->-cx)

(c) (x) (px & cx) (d) (Bx) (Px & - Cx)

Ans. (b) : कोई दार्शनिक चालाक नहीं है का प्रतीकात्मक रूप इस प्रकार है–

= (x) (px –> –cx)

96. The process of arriving at general or universal proposition from the facts of experience is called-

आनुभाविक तथ्यों के आधार पर सामान्य अथवा सार्वभौम प्रतिज्ञप्ति प्राप्त करने की प्रक्रिया कहलाती है

(a) Deduction/निगमन

(b) Analogy/साम्यानुमान

(c) Inductive generalization / आगमनात्मक सामान्यीकरण

(d) Empirical verification/आनुभविक सत्यापन

Ans. (c) : आगमनात्मक सामान्यीकरण – आनुभाविक तथ्यों के आधार पर सामान्य अथवा सार्वभौम प्रतिज्ञप्ति प्राप्त करने की प्रक्रिया।

निगमन – निगमन वह प्रक्रिया है जिसमें सामान्य से विशेष की ओर अग्रसर होते हैं।

97. This Venn diagram does not show

यह वैन आरेख नहीं दर्शाता है

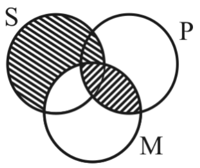

(a) सभी s m हैं (b) कोई s, m नहीं है

(c) कोई m, p नहीं है (d) कोई s, p नहीं है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : यह वेन आरेख निरपेक्ष न्याय वाक्य की प्रथम आकृति से सम्बन्धित है-

E M p = 0

A S $\bar{m}$ = 0

E ∴ S P = 0

यह वेन आरेख कोई S, m नहीं है, को दर्शाता है।

98. Which school of philosophy upholds "Gyanam Swa Pharbhasi"?
'ज्ञानं स्वः परभासी' को स्वीकार करना आवश्यक है क्योंकि यह मानता है-

(a) Buddha school/बौद्ध दर्शन की
(b) Nyaya school/न्याय दर्शन की
(c) Vedanta school/वेदांत दर्शन की
(d) Jain School/जैनदर्शन की

Ans. (c) : 'ज्ञानं स्वः परभासी' है यह वेदांत दर्शन की मान्यता है। वेदांत के अनुसार ब्रह्म परमार्थिक दृष्टि से पूर्णतः सत् है। वह एक मात्र सत्य है। ब्रह्म स्वयं ज्ञान है। वह प्रकाश की तरह ज्योतिर्मय है इसलिए ब्रह्म को स्वयं प्रकाश कहा गया है। शंकर ब्रह्म को सर्वोच्च ज्ञान कहते हैं।

99. It is necessary to accept "Vyavaharik Satta" because-
'व्यावहारिक सत्ता' को स्वीकार करना आवश्यक है क्योंकि

(a) Day-to-day life in the world not possible
इसके बिना दैनिक जीवन या लोक व्यवहार संभव नहीं।
(b) It is necessary to obtain grace of god
ईश्वर की कृपा पाने के लिए आवश्यक है
(c) "parmarthik Satta" depends on it
'पारमार्थिक सत्ता' इसी पर आधारित है
(d) Practicality is skillfulness
व्यवहारिकता ही कुशलता है

Ans. (a) : व्यावाहारिक सत्ता को स्वीकार करना नितान्त आवश्यक है क्योंकि व्यवहारिकता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक होती है इसके बिना दैनिक जीवन अथवा लोक व्यवहार का संपादन नहीं किया जा सकता है।

100. When the object of one sense is grasped by another sense then the perception, received in this way, is called-
जब एक इंद्रिय के विषय का दूसरी इंद्रिय द्वारा ग्रहण कर लिया जाए तो इस प्रकार के प्रत्यक्ष को कहा जाता है-

(a) Samanya Lakshana Pratyaksha
सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष
(b) Yogaj Pratyaksha/योगज प्रत्यक्ष
(c) Pratyabhigya/प्रत्यभिज्ञा
(d) Gyan Lakshana Pratyaksha/ज्ञानलक्षण प्रत्यक्ष

Ans. (d) : न्याय दर्शन में वर्णित ज्ञानलक्षण प्रत्यक्ष, अलौकिक प्रत्यक्ष का एक भेद है जिसके द्वारा इन्द्रिय अपने विषय से भिन्न विषय का भी ज्ञान ग्रहण करती है। जैसे-रसगुल्ले को देखकर मुँह में पानी का भर आना ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष का उदाहरण है।

101. "Vivartvada" is a kind of "Satkaryavada", in this kind, a cause
"विर्ववाद" "सत्कार्यवाद" का एक प्रकार है। इसमें कारण-

(a) Converts into effect/कार्य में बदल जाता है
(b) Appears to be converted into effect
कार्य रूप में परिवर्तित हुआ प्रतीत होता है
(c) Remains a cause/कारण, कारण ही रहता है
(d) Gets perished as soon as effect is perished
कार्य नष्ट होने पर कारण भी नष्ट हो जाता है

Ans. (b) : विवर्तवाद में कारण, कार्य रूप में परिवर्तित हुआ प्रतीत होता है। सत्कार्यवाद के दो रूप है- (i) परिणामवाद (ii) विवर्तवाद। विवर्तवाद में ऐसा प्रतीत होता है कि कार्य-कारण का वास्तविक रूपांतर है परन्तु वास्तविक दूरी रहती है। कारण का कार्य में परिवर्तित होना एक आभास मात्र है। जैसे मिट्टी से घड़े का निर्माण होता है, घड़ा मिट्टी का वास्तविक रूपान्तर नहीं है, यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि घड़ा मिट्टी का बदला हुआ रूप है।

102. "My right is someone's duty and someone's right is my duty." The basis for this is-
मेरा अधिकार अन्य के लिए कर्तव्य है और अन्य का अधिकार मेरे लिए कर्तव्य है। इसका आधार है-

(a) All have their own duties/सभी के कर्तव्य होते हैं
(b) No one has a right
किसी का कोई अधिकार नहीं होता
(c) No right is dutyless
कोई अधिकार कर्तव्यरहित नहीं होता
(d) Right has no relation with duty
अधिकार का कर्तव्य से कोई सम्बन्ध नहीं होता

Ans. (c) : अधिकार और कर्तव्य का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है प्रस्तुत अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जब हम कहते हैं कि अमुक व्यक्ति का अमुक वस्तु पर अधिकार है तो इसका दूसरा अर्थ यह भी होता है कि अन्य व्यक्तियों का कर्तव्य है कि उस पर अपना अधिकार न समझकर उस व्यक्ति का ही अधिकार समझे। तात्पर्य यह है कि मेरा अधिकार अन्य के लिए कर्तव्य है और अन्य का अधिकार मेरे लिए कर्तव्य है। इससे स्पष्ट है कि कोई भी अधिकार कर्तव्यरहित नहीं होता है।

103. If a pot exists in clay or clay itslef is pot, then what is the need to create a pot out of clay? This argument is supportive of-
मिट्टी में ही यदि घड़ा है तो घड़ा बनाने की क्या आवश्यकता है? यह तर्क निम्न में से किसका समर्थन करता है-

(a) Satkaryavada/सत्कार्यवाद का
(b) Vivartvada/विवर्तवाद का
(c) Asatkaryavada/असत्कार्यवाद का
(d) Pratiyasamutpad/प्रतीत्यसमुत्पाद का

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : "मिट्टी में ही यदि घड़ा है, या घड़ा मिट्टी ही है तो घड़ा बनाने की क्या आवश्यकता है।" यह तर्क असत्कार्यवाद का समर्थन करता है। असतकार्यवाद के अनुसार कार्य की सत्ता उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान नहीं है। असत्कार्यवाद, कार्य की उत्पत्ति के पूर्व कारण की सत्ता का अभावात्मक उत्तर है। असत्कार्यवाद के अनुसार कार्य कारण की नवीन सृष्टि है। असत्कार्यवाद को आरम्भवाद भी कहा जाता है।

104. G.E. Moore is known as the author of famous book-
जी.ई. मूर जिस प्रसिद्ध कृति के द्वारा जाने जाते हैं, वह है-

(a) Ethical understanding/एथिकल अंडरस्टेंडिंग
(b) Principia Ethica/प्रिन्सिपिया एथिका
(c) Nicomechanion ethics/निकोमेकेनियन एथिक्स
(d) Ethical essays/एथिकल ऐसेस

Ans. (b) : प्रिन्सिपिया एथिका ब्रिटिश दार्शनिक जी.ई. मूरे की कृति है। इनकी अन्य रचनाएँ हैं–

द रिफ्यूटेशन ऑफ आइडियलिज्म।
ए डिफेंस ऑफ कामन सेंस।
ए प्रूफ आफ द एक्टर्नल वर्ल्ड।

105. Eudaimonism is that ethical principle according to which-
यूडोमोनिज्म वह नीतिशास्त्रीय सिद्धांत है जिसके अनुसार-

(a) Sensuous pleasure is the only good
इन्द्रिय सुख ही शुभ है।
(b) Self control of senses and ascetic life is good
इन्द्रिय दमन और तपस्वी जीवन ही शुभ है।
(c) Duty for duty's sake is good
कर्तव्य के लिए कर्तव्य पालन शुभ है।
(d) Virtuous life is pleasant and that is the good
सद्गुणमय जीवन ही सुखमय है और वही शुभ है।

Ans. (d) : नीतिशास्त्र के 'यूडोमोनिज्म' सिद्धांत के अनुसार "सद्गुणमय जीवन ही सुखमय है और वही शुभ है।"

106. In comparison to sense contact, "Sakshatkarittva" is more justified in perception this is the option of-
"साक्षात्कारित्व" प्रत्यक्ष के लिए अधिक उपयुक्त है, इन्द्रिय सन्निकर्ष की तुलना में।" यह मान्यता है-

(a) Maharshi Gautam/महर्षि गौतम की
(b) Udayana/उदयन की
(c) Gangeshoadhyaya/गंगेशोपाध्याय की
(d) Vachaspati Mishra/वाचस्पत्ति मिश्र की

Ans. (c) : नव्यनैयायिक गंगेशोपाध्याय का जन्म तेरहवीं शताब्दी के आस-पास माना जाता है। इनका मानना है कि "इन्द्रियसन्निकर्ष की तुलना में 'साक्षात्कारित्व'प्रत्यक्ष के लिए अधिक उपयोगी है।

107. "Devrin is settled through performing yajna and rishi rin is settled through purusharth in acquiring knowledge in Vedic tradition this is prescribed for- "
"देवऋण का परिशोध यज्ञ द्वारा और ऋषिऋण का परिशोध ज्ञानार्जन हेतु पुरुषार्थ द्वारा किया जाता है।"वैदिक परम्परा में यह विधान किया गया है-

(a) Brahamin, Kshatriya, Vaishya, Shudra for all the four Varnon/ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र : इन चारों वर्णों के लिए
(b) Brahmin, Kshartriya and Vaishya
ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के लिए
(c) Only for Bhrahmin & Kshatriya
मात्र ब्राह्मण और क्षत्रिय के लिए
(d) Only for Bharhmins/मात्र ब्राह्मण के लिए

Ans. (b) : भारतीय परंपरा के अनुसार प्राणियों में ज्ञान, शक्ति, विद्या, बल बुद्धि आदि की कम या अधिकता के कारण अधिकार अनुरूप प्राणि कल्याण के अनेक साधन बतलाए गए हैं। उनमें से यज्ञ भी प्राणि कल्याण का एक उत्कृष्ट साधन है। हिन्दू परंपरा में मुख्य रूप से पाँच प्रकार के यज्ञ माने गए हैं- ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, भूत यज्ञ, अतिथि यज्ञ। पुरुषार्थ चार माने गए हैं- धर्म, अर्थ काम और मोक्ष। इनमें से देवऋण का परिषोधन यज्ञ द्वारा और ऋषि ऋण का परिशोधन पुरुषार्थ द्वारा किया जाता है। वैदिक परंपरा में यह विधान केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के लिए था।

108. According to Berkeley
बर्कले के अनुसार-

(a) Knowledge always known only itslef
ज्ञान सदैव मात्र स्वयं को ही जानता है।
(b) Knowledge known an independent object from itself/ज्ञान अपने से स्वतंत्र पदार्थ को जानता है।
(c) Knowledge is innate/ज्ञान जन्मजात होता है।
(d) Knowledge is given by god/ज्ञान ईश्वर प्रदत्त है

Ans. (b) : बर्कले अनुभववादी है बर्कले ने ज्ञान पर अपने विश्लेषण में कहा कि "ज्ञान सदैव मात्र स्वयं को ही जानता है।"

109. A word has many meanings and these meaning have family resemblance, this view is held by-
एक शब्द के कई अर्थ होते हैं और उन अर्थों में पारिवारिक सादृश्य विद्यमान है। यह मत है-

(a) Moore/मूर का
(b) Rusell/रसल का
(c) Wittgenstein/विटेगेन्सटाइन का
(d) Carnap/कार्नेप का

Ans. (c) : विटेगेन्सटाइन, आस्ट्रियाई दार्शनिक थे। विटगेन्सटाइन पहले दार्शनिक थे जिन्होंने भाषा का दर्शन गढ़ा। इन्होंने भाषा को ईश्वर कहा है। इनका मत है कि "एक शब्द के कई अर्थ हैं" और उन अर्थों में पारिवारिक सादृश्य विद्यमान है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

110. The metaphisical problems related to space, time, etc are only linguistic problems and the only way to resolve these problems is to see the usage of these terms in different contexts. This view held by-
देश काल आदि से संबंधित तत्वमीमांसीय समस्याएं भाषा जनित समस्याएँ हैं तथा इन समस्याओं के निराकरण का एक मात्र उपाय इन पदों के विभिन्न सन्दर्भों में किये जा रहे प्रयोगों को देखना है। यह मत है-

(a) Ryle/राइल
(b) Austin/आस्टिन
(c) A.J. Ayer/ए.जे. एयर
(d) None of the above/उपरोक्त में से कोई नहीं

Ans. (d) : देशकाल आदि से संबंधित तत्वमीमांसीय समस्या भाषा जनित समस्याएँ हैं तथा इन समस्याओं के निराकरण का एक मात्र उपाय इन पदों के विभिन्न संदर्भों में किए जा रहे प्रयोगों को देखना है। यह मत प्रश्नगत विकल्पों में से किसी का नहीं है। ध्यातव्य है कि दर्शन जगत में भाषा का दर्शन गढ़ने का श्रेय बिटगेन्सटाइन को जाता है। इन्होंने 'भाषा को ईश्वर' कहकर दर्शन जगत में एक क्रांति ला दी।

111. According to Buddhism Anuman is-
बौद्ध दर्शन के अनुसार अनुमान है-

(a) Parmarthic Satya/पारमार्थिक सत्य
(b) Samvriti Satya/संवृत्ति सत्य
(c) Only imagination/कल्पना मात्र
(d) Indeterminate knowledge /निर्विकल्पक ज्ञान

Ans. (b) : बौद्ध दर्शन का माध्यमिक शून्यवाद नामक संप्रदाय दो प्रकार के सत्य मानता है। (i) संवृत्ति सत्य (ii) परमार्थिक सत्य। माध्यमिक शून्यवाद में संवृत्ति सत्य को ही अनुमान कहा गया है। संवृत्ति सत्य साधारण मनुष्यों के लिए है।

112. According to Buddhism Bharhmvihar is-
बौद्ध दर्शन के अनुसार ब्रह्मविहार हैं-

(a) Ahimsa, Satya, Achaurya, Brahmacharya
अंहिसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य
(b) Sheel, Samadhi, Pragya/शील, समाधि, प्रज्ञा
(c) Maitree, Karuna, Mudita, Upeksha
मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा
(d) Four noble truths/चार आर्य सत्य

Ans. (c) : बौद्ध दर्शन के अनुसार चार ब्रह्म बिहार इस प्रकार हैं-
(i) मैत्री– सभी के प्रति सक्रिय सद्भावना।
(ii) करुणा–यह मैत्री से उत्पन्न होती है, इसमें दूसरों की पीड़ा को स्वयं के रूप में पहचाना जाता है।
(iii) मुदिता– यह सहानुभूतिपूर्वक आनंद का एक रूप है।
(iv) उपेक्षा– इसका अभिप्राय है आशक्ति के प्रति उपेक्षा का भाव।

113. According to Buddhism types of relation are-
बौद्ध दर्शन के अनुसार सम्बन्ध के प्रकार हैं-

(a) Tadatmya Sambandh and sanyog sambandh
तादात्म्य सम्बन्ध और संयोग सम्बन्ध
(b) Sanyog Sambandh and Samavaya
संयोग सम्बन्ध और समवाय
(c) Tadutapatti Sambandh and Sanyog Sambandh
तदुत्पत्ति सम्बन्ध और संयोग सम्बन्ध
(d) Tadatmya Sambandh and tadutpatti Sambandh
तादात्म्य सम्बन्ध और तदुत्पत्ति सम्बन्ध

Ans. (d) : बौद्ध दर्शन के अनुसार सम्बन्ध दो प्रकार के हैं-
(i) तादात्म्य संबंध और
(ii) तदुत्पत्ति सम्बन्ध

114. According to Jainism Dravya is-
जैन दर्शन के अनुसार द्रव्य है-

(a) Substratum of Guna and Karma
गुण और कर्म के आधार
(b) Nirguna and Niskriya/निर्गुण और निष्क्रिय
(c) Gunaparyayavan/गुणपर्यायवान
(d) Only a name imposed on a cluster of Gunas
गुणों के समूह पर आरोपित एक नाम मात्र

Ans. (c) : जैन दर्शन के अनुसार द्रव्य के तीन लक्षण हैं– उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य। द्रव्य में, उत्पत्ति, विनाश और स्थिरता नामक तीन गुण पाए जाते हैं। द्रव्य में गुण होता है जो स्थिर होता है परन्तु द्रव्य में पर्याय भी होते हैं जो अस्थिर होते हैं। इस प्रकार स्थिरता और अस्थिरता दोनों के रहने से द्रव्यगुण पर्यायात्मक कहलाता है। जैन दर्शन में द्रव्य की परिभाषा इस प्रकार दी गई है- गुण पर्यायवद् द्रव्यम्। अर्थात् जिसमें गुण और पर्याय हो वही द्रव्य है।

115. A cause is called necessary cause only if-
एक कारक को अनिवार्य कारण तभी कहा जाता है जबकि

(a) In its presence effect must be produced necessarily/इसका सद्भाव होने पर कार्य अनिवार्य रूप से उत्पन्न हो।
(b) In its absence effect cannot be produced
इसका अभाव होने पर कार्य उत्पन्न नहीं हो सकता है।
(c) It its absence effect must be proudced necessarily/इसका अभाव होने पर कार्य अनिवार्यतया उत्पन्न होता हैं।
(d) In its absence effect may be produced some times/इसका अभाव होने पर भी कभी कभी कार्य उत्पनन हो सकता है।

Ans. (b) : एककारण को अनिवार्य कारण तभी कहा जाता है जब कारण का अभाव होने पर कार्य उत्पन्न नहीं हो सकता है। न्याय के अनुसार कारण और कार्य में व्यतिरेकी सम्बन्ध होता है। इस सम्बन्ध का अभिप्राय यह है कि जब कारण रहता है तभी कार्य होगा। कारण के अभाव में कार्य का प्रादुर्भाव सोचा भी नहीं जा सकता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

116. According to deterrent theory of punishment, it is given-
दण्ड के प्रतिरोधात्मक सिद्धांत के अनुसार दण्ड दिया जाता है-

(a) To reform the criminal/अपराधी के सुधार के लिए
(b) To prevent others from committing crime in future/भविष्य में अन्य व्यक्तियों को अपराध करने से रोकने के लिए
(c) As a consequence of their crime
अपराध के परिणामस्वरूप
(d) None of the above/उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (b) : दण्ड के प्रतिरोधात्मक सिद्धांत के अनुसार "अपराधी को ऐसा दण्ड मिलना चाहिए" जिससे समाज के अन्य व्यक्ति भयभीत हो सके और और अपराध करने से बचें। इसमें अपराधी को उसके अपराध की तुलना में ज्यादा दण्ड दिया जाता है ताकि वह स्वयं भविष्य में कोई अपराध न करें।

117. Moral sense theory is accepted by-
नैतिक संवित्तिवाद सिद्धांत स्वीकार किया गया है-

(a) Shaftsbury/शेफ्ट्सबरी (b) Kant/कांट
(c) Butler/बटलर (d) Moore/मूर

Ans. (a) : नैतिक संवित्तिवाद (Moral sense theory) का सिद्धांत स्वीकार करने का श्रेय 'शेफ्टसबरी' को है।

118. Prechard rejects that :-
प्रिचर्ड यह अस्वीकार करना है कि–

(a) Good is a fundamental concepts
शुभ एक मूल प्रत्यय है तथा उचित और कर्तव्य की परिभाषा शुभ द्वारा दी जाती है।
(b) Both good and duty are fundamental concepts
शुभ और कर्तव्य दोनों मूलभूत प्रत्यय हैं।
(c) Both good and duty are simple and unanalyzable and therefore indefinable
शुभ और कर्तव्य दोनों सरल और अविश्लेष्य हैं और इसलिए ये अपरिभाष्य हैं।
(d) Duty is known through institution
कर्तव्य का ज्ञान अन्तः प्रज्ञा द्वारा होता है।

Ans. (a) : हेरोल्ड आर्थर प्रिचार्ड एक अंग्रेज दार्शनिक थे। पश्चिमी दर्शन के विद्वानों में से एक थे। इन्होंने शुभ और कर्तव्य पर अपने विचार व्यक्त किए। इन्होंने कहा भी "शुभ और कर्तव्य दोनों मूल प्रत्यय हैं और कर्तव्य का ज्ञान अन्तः प्रज्ञा द्वारा होता है। साथ ही यह भी कहा की यह दोनों अपरिभाष्य हैं क्योंकि यह दोनों सरल और अविश्लेष्य हैं।"

119. According Jainism the Praman form which the knowledge of Vyapati relation is acquired is-
न्याय दर्शन के अनुसार व्याप्ति सम्बन्ध की स्थापना जिस प्रमाण से होती है वह है-

(a) Pratyaksha/प्रत्यक्ष (b) Anuman/अनुमान
(c) Sabda/शब्द (d) Tarka/तर्क

Ans. (d) : न्याय दर्शन के अनुसार व्याप्ति की स्थापना छः विधियों द्वारा पूरी होती है-
(i) अन्वय – एक वस्तु के भाव से दूसरी का भी भाव होना।
(ii) व्यतिरेक – एक वस्तु के अभाव से दूसरी का अभाव हो जाना।
(iii) व्यभिचाराग्रह – दो वस्तुओं के बीच व्यभिचार का अभाव व्यभिचाराग्रह कहा जाता है।
(iv) उपाधिनिरास– नैयायिकों के अनुसार अनौपाधिक सम्बन्ध का होना अत्यावश्यक है।
(v) तर्क– नैयायिक तर्क के द्वारा भी अपने मत की पुष्टि करते हैं ताकि किसी संशयवादी के मन में संदेह न रह सके।

120. Memory is Prama according-
स्मृति प्रमा है-

(a) Jainism/जैन दर्शन के अनुसार
(b) Buddhism/बौद्ध दर्शन के अनुसार
(c) Nyaya philosophy/न्याय दर्शन के अनुसार
(d) Kumaril/कुमारिल के अनुसार

Ans. (a) : जैन दर्शन के अनुसार 'स्मृति प्रमा' है। जैन दर्शन में 'स्मृति' को अप्रत्यक्ष प्रमाण माना गया है। अप्रत्यक्ष प्रमाण पाँच हैं। (i) स्मृति (ii) प्रत्यभिज्ञान (iii) तर्क (iv) अनुमान (v) आगम।
न्याय दर्शन में यथार्थ ज्ञान को प्रमा कहा गया है।

121. According to Ramanuja, Moksh is attained through
रामानुज के अनुसार मोक्ष प्राप्ति का उपाय है-

(a) Brahamgyan/ब्रह्मज्ञान
(b) Niskam Karma/निष्काम कर्म
(c) Performing Nitya and Naimittik Karma according to Vedas
वेद विहित नित्य और नैमित्तिक कर्मों का सम्पादन
(d) Bhakti and Prapatti of god
ईश्वर की भक्ति और प्राप्ति

Ans. (d) : रामानुज कहते हैं कि "सच पूछा जाए जो ईश्वर की भक्ति तथा ईश्वरोपासना ही मोक्ष के असली साधन है। गहरी भक्ति और शरणागति से प्रसन्न होकर ईश्वर जीव के संचित कर्मों और अविद्या का नाश कर देते हैं। इसका फल यह होता है कि जीव जन्म और मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। दुख, पीड़ा, शोक आदि का अन्त हो जाता है और जीव परमात्मा से साक्षात्कार कर मुक्त हो जाता है।"

122. According to Indian tradition Dharma is not that
भारतीय परम्परा के अनुसार धर्म वह नहीं है-

(a) From which Abhyudaya and Nishreyasa can be attained/जिसके द्वारा अभ्युदय और निश्रेयस प्राप्त किया जाता है।
(b) That which bears the society or makes social order possible/जो समाज को धारण करता है अर्थात सामाजिक व्यवस्था को सम्भव बनाता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) That which is the nature of a thing
जो जिस वस्तु का स्वभाव है।

(d) That which commists of only visiting temples, worshiping, going for pilgrimage and other external rituals
जो मात्र मंदिर जाना, पूजा, करना, तीर्थ यात्रा करना आदि बाहरी क्रियाकाण्ड रूप ही है।

Ans. (d) : भारतीय परंपरा के अनुसार धर्म को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है–
"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।" अर्थात् धर्म वह अनुशासित जीवन क्रम है जिसमें लौकिक उन्नति तथा आध्यात्मिक परमगति दोनों की प्राप्ति हो।
इससे स्पष्ट है कि जो अभ्युदय और निःश्रेयस की प्राप्ति के मार्ग में सहायक हो तथा जो समाज को धारण करे अर्थात् सामाजिक व्यवस्था को संभव बनाए वही धर्म है।
धर्म में, मंदिर, पूजा, तीर्थयात्रा आदि को वाह्य क्रियाकाण्ड रूप माना गया है।

123. For rational intuitionist philosophers that which is not correct is-
बौद्धिक अन्तः प्रज्ञावादी दार्शनिकों के अनुसार जो सही नहीं है वह है-

(a) Moral principles are known through intution
नैतिक नियमों का ज्ञान अन्तः प्रज्ञा द्वारा होता है।

(b) Moral principles are rational as mathematical priniciples /नैतिक नियमों का ज्ञान गणित के नियमों के समान बौद्धिक होता है।

(c) Moral principles are emotional as aesthetic priniciples/नैतिक नियमों का ज्ञान सौन्दर्यशास्त्र के नियमों के समान भावनात्मक होता है।

(d) Moral principles are eternal and objective
नैतिक नियम शाश्वत और वस्तुनिष्ठ होते हैं।

Ans. (c) : बौद्धिक अन्तःप्रज्ञावादी दार्शनिकों के अनुसार नैतिक नियमों की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार है–
(i) नैतिक नियम शाश्वत एवं वस्तुनिष्ठ होते हैं।
(ii) नैतिक नियमों का ज्ञान अन्तः प्रज्ञा द्वारा होता है।
(iii) नैतिक नियमों का ज्ञान गणित के नियमों के समान बौद्धिक होता है।

124. According to Buddhism Panchseel are-
बौद्ध दर्शन के अनुसार पंचशील हैं-

(a) Maitri, Karuna, Ksham, Dhairya, Shanit
मैत्री, करुणा, क्षमा, धैर्य,शांति

(b) Samyak Dristi, Samyak Sankalp, Samyak, vak, Samyak Karmant, Samyak Aajivak
सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक कर्मान्त, सम्यक् आजीवक

(c) Ahinsa, Satya, Achaurya, Brahmachrya, Nashe ka Tyaga/अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, नशे का त्याग

(d) Ahinsa, Maitri, Karuna, Mudita, Upeksha
अहिंसा, मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा

Ans. (c) : भगवान बुद्ध ने पालिभाषा में पंचशील के सिद्धांत दिए हैं जो इस प्रकार हैं–
(i) प्राणि मात्र की हिंसा से विरत रहना (अहिंसा)
(ii) चोरी करने से विरत रहना। (अचौर्य)
(iii) लैंगिक व्यभिचार से विरत रहना। (ब्रह्मचर्य)
(iv) असत्य बोलने से विरत रहना। (सत्य)
(v) मादक पदार्थ का सेवन न करना। (नशे का त्याग)

125. In a categorical proposition a quantifier determines the quantity of :-
एक निरुपाधिक तर्कवाक्य में परिमाणक द्वारा परिमाण निर्धारित किया जाता है-

(a) Subject term/उद्देश्य पद का,
(b) Prodicate term /विधेय पद का,
(c) Both subject and predicate form
उद्देश्य और विधेय दोनों पदों का,
(d) Neither subject nor predicate term
न उद्देश्य और न ही विधेय पद का

Ans. (a) : एक निरुपाधिक तर्कवाक्य में परिमाणक द्वारा उद्देश्य पद का परिमाण निर्धारित किया जाता है।
जब दो पदों का सम्बन्ध सीधे स्वीकार या निषेध किया जाता है और उसमें कोई शर्त नहीं होती तो उसे निरूपाधिक तर्कवाक्य कहते हैं।
जैसे सभी मनुष्य मरणशील हैं। यह एक निरूपाधिक तर्कवाक्य है, क्योंकि इसमें मनुष्य को बिना किसी शर्त के मरणशील कहा गया है। प्रत्येक निरूपाधिक तर्कवाक्यों का निर्माण चार तत्वों से होता है–
(i) परिमाणक (Quantifier) (ii) उद्देश्य (Subject) (iii) बिधेय (Predicate) (iv) संयोजक (Coupula)

126. The above diagram shows that :-

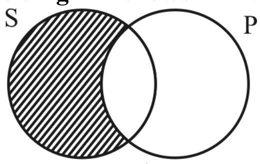

उपरोक्त रेखांकन दर्शाता है कि

(a) All s is p/सभी 'एस' 'पी' हैं,
(b) no s is p/कोई 'एस' 'पी' नहीं हैं,
(c) some s is p/कुछ 'एस' 'पी' हैं,
(d) some s is not p/कुछ 'एस' 'पी' नहीं हैं,

Ans. (a) : प्रश्नगत वेन आरेख, निरपेक्ष न्यायवाक्य से सम्बन्धित है। वेन आरेख वह दर्शाता है कि सभी 'एस.' 'पी.' हैं ।

127. Are premises of an inductive argument
एक आगमनात्मक तर्क के आधार वाक्य :

(a) are necessary and unviersal propositions
अनिवार्य और सर्वव्यापी तर्कवाक्य होते हैं।
(b) Apriori propositions
प्रागानुभविक तर्कवाक्य होते हैं।
(c) Provide conclusive ground for its conslusion
अपने निष्कर्ष के लिए निर्णायक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।
(d) Do not provide conclusive ground for its conclusion/अपने निष्कर्ष के लिए निर्णायक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं करते

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : आगमनात्मक तर्क, तर्क की एक विधि है जिसमें परिसर के कुछ सबूतों की आपूर्ति के रूप में देखा जाता है, परन्तु आगमनात्मक तर्क वाक्य अपने निष्कर्ष के लिए निर्णायक साक्ष्य प्रस्तुत नहीं करते हैं। आगमनात्मक तर्क वाक्य को ऐसी विधि के रूप में वर्णित किया गया है जहाँ किसी के अनुभव और अवलोकन, जिसमें दूसरों से सीखा गया है, को एक सामान्य सत्य के साथ आने के लिए संश्लेषित किया जाता है।

128. Which of the following has a free variable :-
निम्नलिखित में जिस तर्कवाक्य में मुक्तचर है, वह है :

(a) (∃x) (Lxy)
(b) (∃x) (Ey) (Lxy)
(c) (∃x) (∃y) [Lxy &(∃z) (Hxz)]
(d) (X) (Mx →Wx)

Ans. (a) : तर्क वाक्य
(∃x) (Lxy) में मुक्तचर है।

129. Meaning of completeness of an axiomatic system is-/एक निगमनात्मक तंत्र (axiomatic system) की पूर्णता का आशय है कि इस तंत्र में आधारवाक्यों के समूह से

(a) In this system from a given set of premises, p and -p both cannot be derived/p और -p दोनों को निगमित नहीं किया जा सकता
(b) All conclusions which logically follow from the given set of premises can be derived/तार्किक रूप से निगमित होने वाले सभी निष्कर्षों को निगमित किया जा सकता है।
(c) No conclusion can be derived from the given set of premises /किसी भी निष्कर्ष को निगमित नहीं किया जा सकता।
(d) Any conclusion can be derived from the given set of premises/किसी भी निष्कर्ष को निगमित किया जा सकता है।

Ans. (b) : एक निगमनात्मक तंत्र की पूर्णता का आशय यह है कि इस तंत्र में आधारवाक्यों के समूह से तार्किक रूप से निगमित होने वाले सभी निष्कर्षों को निगमित किया जा सकता है।
तर्क की वह प्रक्रिया जिसमें एक या अधिक ज्ञात सामान्य कथनों के आधार पर किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है निगमनात्मक तर्क कहते हैं। निगमनात्मक तर्क आगमनात्मक तर्क से बिलकुल भिन्न होते हैं।
उदाहरण– सभी मनुष्य मरणशील हैं।
मोहन मनुष्य है।
अतः मोहन मरणशील है।।

130. From the following which is a standard form categorical propositions-/निम्न में से मानक आकार का निरुपाधिक तर्क वाक्य है

(a) Socrates is mortal/सुकरात मरणशील है।
(b) If there is smoke there is fire also
यदि धुआँ है तो आग भी है।
(c) Man is intelligent/मनुष्य बुद्धिमान है।
(d) Some men are player/कुछ मनुष्य खिलाड़ी हैं।

Ans. (d) : निरुपाधिक तर्कवाक्य में चार प्रकार के मानक तर्कवाक्य होते हैं–

		परिमाण	उद्देश्य	विधेय	संयोजक (गुण)
(i)	(A)	सभी	'अ'	'ब'	हैं।
(ii)	(E)	कोई	'अ'	'ब'	नहीं है।
(iii)	(I)	कुछ	'अ'	'ब'	हैं।
(iv)	(O)	कुछ	'अ'	'ब'	नहीं हैं।

131. All rabbits are vary fast rnners. Some horses are vary fast runners. Therefore some horses are rabbits. Thename of the mood and figure of the above categorical syllogism is -
सभी खरगोश बहुत धावक हैं। कुछ घोड़े बहुत तेज धावक हैं। अतः कुछ घोड़े खरगोश हैं। उपरोक्त निरुपाधिक न्यायवाक्य की अवस्था और आकृति का नाम हैः-

(a) aii -1 (b) aii -2
(c) aii-3 (d) aii-4

Ans. (b) :
(A) सभी खरगोश तेज धावक हैं।
(I) कुछ घोड़े बहुत तेज धावक हैं।
अतः कुछ घोड़े खरगोश हैं (I)
अतः इस न्याय वाक्य की अवस्था और आकृति है।
AII –2

132. A deductive argument is invalid only if-
एक निगमनात्मक युक्ति तभी अवैध होती है जबकि

(a) Its all permises are true and conclusion is true/इसके सभी आधारवाक्य सत्य होते हैं और निष्कर्ष सत्य होता है।
(b) Its all permises are true and conclusion is false/इसके सभी आधारवाक्य सत्य होते हैं और निष्कर्ष असत्य होता है।
(c) Its all permises are false and conclusion is true/इसके सभी आधारवाक्य असत्य होते हैं और निष्कर्ष सत्य होता है।
(d) Its all premises are falses and conclusion is false/इसके सभी आधारवाक्य असत्य होते हैं और निष्कर्ष असत्य होता है।

Ans. (b) : एक निगमनात्मक युक्ति तभी अवैध होती है जब उसके सभी आधार वाक्य सत्य हों और निष्कर्ष असत्य हों।
जैसे- यदि मनोज पहला पुरस्कार जीतता है तो या तो उमेश दूसरा पुरस्कार जीतता है, या सुकान्त निराश होता है। उमेश दूसरा पुरस्कार नहीं जीतता है। अतः यदि सुकान्त निराश होता है। पुरस्कार नहीं जीतता है। अतः यदि सुकान्त निराश होता है। अतः यदि सुकान्त निराश होता है तो मनोज पुरस्कार नहीं जीतता है।
प्रतीक– म ⊃(उ V स)
˜ उ
∴ स ⊃ ˜ न
इस युक्ति को अवैध सिद्ध करने के लिए सर्वप्रथम निष्कर्ष स ⊃ म को असत्य सिद्ध करेंगे। यह तभी असत्य होगा जब स और म दोनों को सत्यता मूल्य 'T' प्रदान करें। आधार वाक्यों को सत्य सिद्ध करने

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

के लिए 'उ' के लिए 'F' सत्यता मूल्य प्रदान करनी होगी। अब इस प्रकार लिखेंगे।

म	उ	स	म ⊃ (उ V स)	˜उ	स ⊃˜ म
T	F	T	T⊃ (F ⊃ T)	˜F	=T ⊃˜ T
			= T⊃T	=T	= T⊃F
			=T		=F

133. **Which of the following is a subsitution instance of the argument form-P→ q**
युक्ति आकार p → q का निम्न में से प्रतिस्थापन उदाहरण है ∴ p
(a) A→B
∴ A
(b) (A→B) & (C→D)
∴ A→B
(c) (A&B) →-C
--C
(d) ∴ – (A & B)
A v B
∴ A

Ans. (a) : युक्ति आकार p → q का प्रतिस्थापन उदाहरण है–
∴ P
A→B
∴ A

134. **Subject term and predicate term both are undistributed in-**
उद्देश्य और विधेय दोनों पद अव्याप्त होते हैं
(a) Universal affermative proposition
सर्वव्यापी विध्यात्मक तर्कवाक्य में,
(b) Universal negative proposition
सर्वव्यापी निषेधात्मक तर्कवाक्य में,
(c) Existential affermative proposition
अंशव्यापी विध्यात्मक तर्कवाक्य में,
(d) Existential negative proposition
अंशव्यापी निषेधात्मक तर्कवाक्य में,

Ans. (c) : अंशव्यापी विधेयात्मक तर्क वाक्य में उद्देश्य एवं विधेय दोनों पद अव्याप्त होते हैं। जब किसी तर्क वाक्य का उद्देश्य पद का वर्ग विधेय पद के वर्ग में अंशतः समाहित रहता है तो उसे अंशव्यापी तर्क वाक्य कहा जाता है।
पहचान- इस तर्क वाक्य का परिमाण 'कुछ' है एवं संयोजक 'है' गुण के रूप में होता है। जैसे- (I) कुछ नेपाली कांग्रेसी हैं।

135. **"The proposition "p is" and "p is not" cannot be true simultaneously". This law of thought is called-**
""p है" और p नहीं है" तर्क्वाकय एक साथ नहीं हो सकते। "विचार के इस नियम को कहा जाता है :-"
(a) Law is identity/तादात्म्य का नियम
(b) Law of contradiction/व्याघात का नियम
(c) Law of excluded middle/मध्यपरिहार का नियम
(d) Demorgan's Law/डेमार्गन का नियम

Ans. (b) : "P है" और p नहीं है" यह तर्कवाक्य व्याघात नियम के अनुसार एक साथ सत्य नहीं हो सकते। जब दो तर्क वाक्य न तो एक साथ सत्य हों और न ही एक साथ असत्य तब उनके बीच व्याघात का संबंध होगा।
पहचान- जब दो तर्कवाक्यों के उद्देश्य एवं विधेय पद समान हों किन्तु परिमाण और गुण दोनों भिन्न हों तो ऐसी स्थिति में उन दोनों तर्कवाक्यों में व्याघाती संबंध होता है।
जैसे– सभी उद्योगपति समाजवादी हैं (A)
और
कुछ उद्योगपति समाजवादी नहीं है (I)

136. **Formula- (∃x) (Fx & -Gx) is not equivalent to which of the following-**
सूत्र - (∃x) (Fx & -Gx) निम्न में से किसके समतुल्य नहीं है :-
(a) (x) – (Fx & -Gx) (b) (x) – (Fx V Gx)
(c) (x) (Fx →Gx) (d) (x) (Fx v – Gx)

Ans. (*) : प्रश्नगत सूत्र की प्रकृति स्पष्ट न होने से इस प्रश्न की व्याख्या संभव नहीं है।

137.
(I) (X) Hx → Mx
(II) Hx
(III) Hx →Mx
(IV) Mx
In the above derivation, the rule of inference used in the line no. III is/
उपर्युक्त निगमन की पंक्ति संख्या III में अनुमान के जिस नियम का प्रयोग किया गया है, वह है :-
(a) Universal Generalization/सर्वव्यापी सामान्यीकरण
(b) Universal Specification/सर्वव्यापी दृष्टान्तीकरण
(c) Existational Generalization
अंशव्यापी सामान्यीकरण
(d) Existational Specification/अंशव्यापी दृष्टान्तीकरण

Ans. (b) : निगमन की पंक्ति संख्या (III) में
= Hx →Mx में अनुमान के सर्वव्यापी दृष्टांतीकरण (Universal Specification) का नियम प्रयोग में लाया गया है।

138. **Which of the following moods is valid in all four figures?**
निम्नलिखित अवस्थाओं में से कौन सी सभी चार आकृतियों में प्रमाणिक है
(a) aee (b) eio
(c) eae (d) iai

Ans. (*) : द्वितीय आकृति में भी चार वैध अवस्थाओं AEE, AOO, EIO, EAE से चारों आकृतियों में प्रामाणिक निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।
(i) मुख्य आधार वाक्य सर्वव्यापी होता है।
(ii) एक आधार वाक्य निषेधात्मक अवश्य होता है, चाहे वह मुख्य आधार वाक्य हो।
जबकि IAI तृतीय आकृति की वैध अवस्था है। इस प्रकार प्रश्नगत चारों विकल्प सही हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

139. Which of the following is a truth - functional Sentence-
निम्न में से कौन सा सत्यपनात्मक वाक्य है

(a) Clolse the door/दरवाजा बन्द करो
(b) One should always speak the truth सदैव सत्य बोलना चाहिए
(c) If today is Sunday then tomorrow will be Monday/यदि आज रविवार है तो कल सोमवार होगा
(d) All of the above/उपर्युक्त सभी।

Ans. (c) : यदि आज रविवार है तो कल सोमवार होगा। यह सत्यपनात्मक वाक्य है।

140. According to Jainsim Samyak Charitra is-
जैन दर्शन के अनुसार सम्यक् चरित्र है

(a) from which a person can attain maximum happiness in this life/वह आचरण जिसके द्वारा व्यक्ति का यह जीवन अधिकतम सुखमय होता है।
(b) Vedavihit Karma/वेद विहित कार्य।
(c) Those actions which are cause of asrav and bandh of Karmas/कर्मों के आस्रव और बंध की कारणभूत क्रियाएँ
(d) Those actions which are cause of samvar and nirjara of Karmas/कर्मों के संवर और निर्जरा की कारणभूत क्रियाएँ

Ans. (d) : जैन दर्शन के अनुसार मोक्ष प्राप्त करने के लिए सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र तीनों को आवश्यक माना गया है। जैन दर्शन के अनुसार "कर्मों के संवर और निर्जरा की कारणभूत क्रियाएँ सम्यक चरित्र कहलाती हैं।" जिन द्वारों से कर्म का आश्रव होता है उन्हें बन्द कर देना ही 'संवर' है। साथ ही साथ जब पुराने पुदगल नष्ट हो जाते हैं तो यह 'निर्जरा' की स्थिति होती है जैनों के मतानुसार सम्यक् चरित्र के पालन से जीवन अपने कर्मों से मुक्त हो जाता है।

141. According to Jainism Samyakgyaan is-
जैन दर्शन के अनुसार सम्यक ज्ञान है

(a) True knowledge of worldly objects जगत के पदार्थों का यथार्थ ज्ञान
(b) True information related to the seven tatvas such as jive ajive etc/जीव, अजीव आदि सात तत्वों की यथार्थ जानकारी
(c) Knowledge of jive and other tatvas with reverence/जीवादि तत्वों का श्रद्धा से सम्पन्न ज्ञान
(d) Indeterminate knowledge/निर्विकल्पक ज्ञान

Ans. (b) : जैन दर्शन के अनुसार 'सम्यक ज्ञान वह है जिसके द्वारा जीव और अजीव के मूल तत्वों का पूर्ण ज्ञान होता है। जीव और अजीव के अंतर को न समझने के फलस्वरूप बन्धन का प्रादुर्भाव होता है जिसे रोकने के लिए ज्ञान आवश्यक है। यह ज्ञान संशयहीन तथा दोषपूर्ण है।'

142. Buddhist philosophers refute the existence of a parmanent soul. The memory, bondage, liberation karm siddhant are-
बौद्ध दार्शनिक नित्य आत्मा की सत्ता को अस्वीकार करते हैं। वे स्मृति, बन्धन और मोक्ष, कर्म सिद्धांत आदि

(a) Explained through the notion of anadi vasana./की व्याख्या अनादि वासना की अवधारणा द्वारा करते हैं।
(b) Explained through the realtion of sacusation in vigyaan kshans./की व्याख्या विज्ञान क्षणों के मध्य कारणकार्य सम्बन्ध के आधार पर करते हैं।
(c) Not able to explain them, hence are doubtful about these./की व्याख्या नहीं कर पाते और इनके प्रति संशयात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं।
(d) They do not accept bandhan, moksh, karmvaid, etc./बन्धन मोक्ष कर्मवाद आदि को अस्वीकार करते हैं।

Ans. (b) : बौद्ध नित्य आत्मा की सत्ता को अस्वीकार करते हैं इस जैन दर्शन में अनात्मवाद कहा गया है। जैन दर्शन के अनुसार आत्मा पाँच स्कन्धों की समष्टि का नाम है। ये पांच स्कन्ध हैं रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान। स्कन्धों के परिवर्तनशील होने के कारण आत्मा भी परिवर्तनशील है।
इसी प्रकार बौद्ध दर्शन में स्मृति, बन्धन और मोक्ष, कर्म सिद्धांत आदि की व्याख्या विज्ञान क्षणों के मध्य कारण कार्य सम्बन्ध के आधार पर करते हैं।

143. Among the following which does not advocate group right, as a variant of Human rights-
निम्न में से कौन मानवाधिकारों के परिवर्त्य के रूप में समूह अधिकारों का समर्थन नहीं करता।

(a) Liberalism/उदारवाद
(b) Communitarionism/समुदायवाद
(c) Multi-Culturism/बहुसंस्कृतिवाद
(d) Differentiated citizenship/विभेदीकृत नागरिकताएँ

Ans. (a) : उदारवाद मानवाधिकारों के परिवर्त्य के रूप में समूह अधिकारों का समर्थन नहीं करता है। उदारवाद एक राजनैतिक और नैतिक दर्शन है जो स्वतंत्रता, शासित की सहमति और कानून के समक्ष समानता पर आधारित है। उदारवाद आम तौर पर व्यक्तिगत अधिकारों, पूंजीवाद (मुक्त बाजार), लोकतंत्र, धर्म निरपेक्षता, लिंग समानता, नस्लीय समानता और अन्तर्राष्ट्रीयता का समर्थन करता है।

144. Who of the following, differentiate between natural and traditional inequalities-
निम्न में से किसने प्राकृतिक एवं परम्परागत असमानाताओं के भेद को निरुपति किया।

(a) Locke/लॉक (b) Cisero/सिसरो
(c) aristotle/अरस्तू (d) Rousseau/रूसो

Ans. (d) : रूसों का जन्म अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ था। इन्होंने अपने राजनैतिक दर्शन से फ्रांसीसी क्रांति के पहलुओं और आधुनिक राजनैतिक, आर्थिक और शैक्षिक विचारों को प्रभावित किया। रूसों ने अपने सामाजिक राजनैतिक चिंतन में प्राकृतिक एवं परंपरागत असमानाताओं के भेद को निरूपति किया।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

145. Which one of the following groups of thinkers supports "gender equality"
निम्न में से कौन सा विचारक समूह ''लैंगिक समानता'' का समर्थन करता है

(a) Aristotle-benthan-hobbes/अरस्तू-बैन्थम-हॉब्स
(b) Plato -j.s. mill-engels/प्लैटो-जे.एस. मिल- ऐगंल्स
(c) Rousseau-hegal-mill/रूसो-हेगल-मिल
(d) Hobbes - hegal mill/हॉब्स-हेगल-मिल

Ans. (d) : लैंगिक समानता आधुनिक विश्व का एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। सामाजिक और राजनैतिक चिंतकों में बहुत से ऐसे हैं जो अपने-अपने तर्कों के साथ इसका समर्थन और विरोध करते हैं। इसी तरह के विचारक यथा प्लेटों जे.एस. मिल तथा एंगल्स ऐसे हैं जो लैंगिक समानता का समर्थन करते हैं।

146. Consider the following statements regarding marxism on liberal perspective of human rights : i. Civil rights are claimed to be human rights in liberal discourse. ii. Due to alienation in capitalist society, liberal claim is a fraud.
मनवाधिकारों के उदारवादी परिपेक्ष्य पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण के निम्न कथनों पर विचार करिये i. उदारवादी विमर्श में सिविल अधिकारों के मानवाधिकार होने का दावा किया जाता है। ii. पूंजीवादी समाज में अलगाव के कारण यह उदारवादी दावा छल है।

(a) Only i is correct/केवल i सही है
(b) Only ii is correct/केवल ii सही है
(c) Both i and ii are correct/i और ii दोनों सही है
(d) Neither i, nor ii is correct
न तो i एवं ना ही ii सही है।

Ans. (c) : मार्क्सवादी उदारवादी दृष्टिकोण के अनुसार–
(i) ''उदारवादी विमर्श में सिविल अधिकारों के मानवाधिकार होने का दावा किया जाता है।''
(ii) पूँजीवादी समाज में अलगाव के कारण वह उदारवादी दावा छल है।
इस प्रकार उपरोक्त दोनों कथन सत्य हैं।

147. According to sunyavad pamarthik satta-
शून्यवाद के अनुसार पारमार्थिक सत्ता

(a) Has relative nature/सापेक्ष स्वरूप से युक्त है।
(b) Is describable/वर्णन योग्य है।
(c) Chatushkotivinirmukta/चतुष्कोटिविनिर्मुक्त है।
(d) Is pure absence/शुद्ध अभाव है।

Ans. (c) : शून्यवाद के प्रवर्तक नागार्जुन हैं। इनके अनुसार परमार्थिक सत्ता चतुष्कोटि विनिर्मुक्त हैं। नागार्जुन ने परमार्थिक सत्ता में विश्वास किया है। उनके अनुसार चतुष्कोटि न्याय, दृश्य जगत के लिए लागू हैं। दृश्य जगत के सभी अनुभव सापेक्ष है परन्तु निर्वाण में जो अनुभूति होती है वह परमार्थिक है, नित्य तथा निरपेक्ष है।

148. "My station and its duties" this is said by-
''मेरा स्थान और उसके अनुरूप कर्तव्य'' यह कहा गया है :-

(a) Mill/मिल
(b) Hegal/हीगल
(c) Herbert Spencer/हर्वर्ट स्पेंसर
(d) Bradley/ब्रैडले

Ans. (d) : एफ.एच. ब्रेडले का स्थान ब्रिटिश के महान दार्शनिकों में है। ब्रेडले की पहचान एक आदर्शवादी नैतिक दार्शनिक के रूप में है। इन्होंने मेरा स्थान और उसके अनुरूप कर्तव्य का सिद्धान्त दिया। ब्रेडले ने कहा कि '' हमारा नैतिक कर्तव्य हमारे बुरे आत्म के विरोध में हमारे आदर्श अच्छे आत्म को विकसित करने की आवश्यकता पर आधारित होने चाहिए। ब्रेडले की सबसे महत्वपूर्ण रचना थी 'अपीयरेंस एण्ड रियलिटी।'

149. Knowledge by aquintence and knowledge by description : These two types of knowledge are accepted by-/परिचयात्मक ज्ञान और वर्णनात्मक ज्ञान : ज्ञान के ये प्रकार स्वीकार करता है।

(a) Locke/लॉक
(b) Russell/रसल
(c) Pierce/पर्स
(d) Wittgenstein/विटेगेन्सटाइन

Ans. (b) : रसेल ने दो प्रकार के ज्ञान स्वीकार किए-
(i) परिचयात्मक ज्ञान
(ii) वर्णनात्मक ज्ञान
रसेल के अनुसार परिचयात्मक ज्ञान बड़ा ही सरल है क्योंकि यह बिना किसी माध्यम अथवा बिना किसी उपकरण के तत्काल प्राप्त होता है। यह ऐसा ज्ञान है जिसकी हमें साक्षात प्रतीति होती है। अभिप्राय है कि जब परिचयात्मक ज्ञान होता है तो इसका अर्थ है कि ''कोई विषय साक्षात ढंग से विषयी के सामने प्रकट होता है।''
रसेल ने विवर्णात्मक ज्ञान के बारे में कहा कि ''वे प्रायः सदा ही निश्चित विवरण जैसे होते हैं, क्योंकि सामान्यतः जहाँ विवरण के द्वारा प्राप्त ज्ञान की बात करते हैं, वहाँ हमारा यह ध्यान रहता है कि इस विवरण के अनुरूप कोई निश्चित व्यक्ति या वस्तु है अतः विवरणात्मक ज्ञान की विवेचना में हम सामान्यतः निश्चित विवरण की ही बात करते हैं।''

150. The author of brahmsutrashreebashya is-
ब्रह्मसूत्र श्रीभाष्य के लेखक हैं : -

(a) Sankara/शंकर
(b) Nimbark/निम्बार्क
(c) Madhva/मध्व
(d) None of the above/इनमें से कोई नहीं।

Ans. (d) :

ब्रह्मसूत्र श्रीभाष्य	–	महर्षि बादरायण
ब्रह्मसूत्र भाष्य	–	शंकराचार्य
गीताभाष्य	–	मध्वाचार्य
वेदान्त सौरभ	–	निम्बकाचार्य

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

राजस्थान लोक सेवा आयोग कॉलेज लेक्चरर-2014
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित द्वितीय हल प्रश्न-पत्र
(परीक्षा तिथि : 08.07.2016)

1. अधोलिखित में कौन संसार को सत्य मानता है?

(a) अद्वैतवेदान्त (b) माध्यमिक शून्य वाद
(c) योगाचार विज्ञान वाद (d) मीमांसा

Ans. (d) : मीमांसा दर्शन में जगत और उसके विषयों को सत्य माना गया है। इसका फल यह होता है कि मीमांसक बौध मत के शून्यवाद और छणिकवाद तथा अद्वैत दर्शन के मायावाद के कटु आलोचक बन जाते हैं। प्रत्यक्ष जगत के अतिरिक्त मीमांसा आत्मा, स्वर्ग, नरक तथा वैदिक यज्ञ के देवताओं का भी अस्तित्व स्वीकार करती है। मीमांसक परमाणु की सत्ता को भी सत्य मानते हैं। यह कहते हैं कि परमाणु आत्मा की तरह नित्य है।

2. सांख्य दर्शन के अनुसार महत् है-

(a) ईश्वर (b) अचेतन
(c) चेतन (d) चेतन और अचेतन दोनों

Ans. (b) : सांख्य दर्शन में सृष्टि के विकास क्रम को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इसके अनुसार प्रकृति और पुरुष के योग से सर्वप्रथम महत की उत्पत्ति हुई। सांख्य में महत का अर्थ है-बुद्धि। सांख्य दर्शन बुद्धि को अचेतन मानता है। सांख्य का मत है कि चेतन पुरुष अचेतन बुद्धि को प्रकाशित करता है। सांख्य का स्पष्टीकरण है कि इन्द्रियां मन, बुद्धि सब अचेतन प्रकृति से निर्मित है अतः यह सब अचेतन है।

3. निम्नलिखित में से आगम (शब्द) है-

(a) विकल्प (b) प्रमाण
(c) स्मृति (d) निद्रा

Ans. (b) : भारतीय दार्शनिक परंपरा में प्रमाण को लेकर वृहद रूप से चर्चा हुई है। भारतीय दर्शन मे प्रमाणों को ज्ञान के साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। यद्यपि सभी दर्शन में प्रमाण शास्त्र पर चर्चा हुई है परन्तु प्रमाण शास्त्र पर वृहद विवेचना न्याय दर्शन में देखने को मिलती है। न्याय में प्रमाणों को ज्ञान के साधन के रूप में माना गया है। न्याय दर्शन में 6 प्रकार के प्रमाण माने गए हैं-(I) प्रत्यक्ष (II) अनुमिति (III) शब्द (IV) उपमिति (V) शंसय (VI) भ्रम (VII) तर्क।

अतः स्पष्ट है शब्द एक 'प्रमाण' है।

4. रामानुज विश्वास करते है :

(a) जीवन्मुक्ति में
(b) विदेहमुक्ति में
(c) जीवन्मुक्ति और विदेहमुक्ति दोनों
(d) न जीवन्मुक्ति, न विदेहमुक्ति

Ans. (b) : रामानुज के अनुसार मुक्ति, मृत्यु के उपरांत ही संभव है। जब तक शरीर विद्यमान है जीव मुक्त नहीं हो सकता है इस प्रकार रामानुज विदेह मुक्ति के समर्थक हो जाते हैं। रामानुज के अनुसार मोक्ष ब्रह्म से साम्य प्राप्त करने की अवस्था है। उनका यह विचार शंकर के विचार का विरोधी है शंकर के अनुसार मोक्ष का अर्थ आत्मा और ब्रह्म का एकीकरण है। मोक्ष की अवस्था में आत्मा और ब्रह्म के बीच अभेद हो जाता है। रामानुज को शंकर का मत मान्य नहीं है। उनका कहना है कि आत्मा जो सीमित है कैसे असीमित ब्रह्म से तादात्म्य स्थापित कर सकती है? मुक्त आत्मा ईश्वर जैसी हो जाती है। वह सभी दोषों और अपूर्णताओं से मुक्त होकर ईश्वर से साक्षात्कार ग्रहण करती है। वह ईश्वर जैसा बनकर अनन्त चेतना तथा अनन्त आनन्द का भागी बनती है।

5. जैनदर्शन के अनुसार मोक्ष की अवस्था में जीव

(a) सत्-चित्-आनन्दरूप होता है
(b) मात्र आनन्दमय होता है
(c) अनन्तदर्शन, ज्ञान, आनन्द तथा वीर्यमय होता है
(d) मात्र ज्ञानमय होता है

Ans. (c) : जैन दर्शन के अनुसार मोक्षावस्था में जीव, अनंत दर्शन, ज्ञान, आनन्द तथा वीर्यमय हो जाता है। जैन दर्शन कहता है कि मोक्षानुभूति के लिए सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र तीनों आवश्यक है। मोक्ष की प्राप्ति तीनों के सम्मिलित सहयोग से ही संभव है। जैन दर्शन कहता है कि मोक्ष का अर्थ सिर्फ दुखों का विनाश ही नहीं बल्कि आत्मा के अनन्त चतुष्टय-अर्थात् अनन्त ज्ञान, अनन्तशक्ति (वीर्य), अनन्त दर्शन और अनन्त आनन्द की प्राप्ति भी है।

6. चार्वाक ज्ञानमीमांसा स्वीकार करती है-

(a) केवल अनुमान को
(b) केवल प्रत्यक्ष को
(c) प्रत्यक्ष और अनुमान दोनों को
(d) केवल शब्द को

Ans. (b) : चार्वाक प्रत्यक्ष को ही ज्ञान का एक मात्र साधन मानता है। सही ज्ञान को प्रमा कहते हैं, ज्ञान के विषय को प्रमेय तथा ज्ञान के साधन को प्रमाण कहा जाता है। चार्वाक के अनुसार प्रमा अर्थात् यथार्थ ज्ञान, की प्राप्ति प्रत्यक्ष से ही संभव है। चार्वाक दर्शन की मुख्य उक्ति है-'प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्' (Perception is the only source of knowledge)।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

7. किस आधार पर भारतीय भौतिकवादियों ने अनुमान प्रमाण का खण्डन किया है?

(a) विपक्ष के साथ साध्य और हेतु का अवियोज्य सम्बन्ध नहीं देखा जाता है
(b) हेतु और माध्य का अवियोज्य सम्बन्ध नहीं देखा जाता है
(c) साध्य और पक्ष का अवियोज्य सम्बन्ध नहीं देखा जाता है
(d) हेतु और पक्ष का अवियोज्य सम्बन्ध नहीं देखा जाता है

Ans. (b) : न्याय दर्शन में अनुमान को दूसरा प्रमाण माना जाता है। न्याय दर्शन के अनुसार अनुमान का अर्थ है वह ज्ञान जो एक ज्ञान के बाद आए। वह ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान है जिसके आधार पर अनुमान की प्राप्ति होती है। पहाड़ पर धुएं को देखकर वहाँ आग होने का अनुमान किया जाता है। इसीलिए गौतम मुनि ने अनुमान को "तत्वपूर्वकम प्रत्यक्ष मूलक कहा है। अनुमान वह ज्ञान है जिसमें प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर जाया जाता है। भौतिकवादियों ने अनुमान प्रमाण का खण्डन किया है उनके खण्डन का आधार यह है की हेतु और साध्य का अवियोज्य सम्बन्ध नहीं देखा जाता है।

8. परोक्ष ज्ञान को जैन दर्शन वर्गीकृत करता है-

(a) मति एवं श्रुत में (b) अवधि एवं मति में
(c) मति और केवल में (d) अवधि और केवल में

Ans. (a) : जैन दर्शन के अनुसार ज्ञान दो प्रकार का है-(I) अपरोक्ष (II) परोक्ष। अपरोक्ष ज्ञान के भी तीन भेद हैं-
(I) अवधि (II) मनः पर्याय। (III) केवल।
परोक्ष ज्ञान के दो भेद है-(I) मति (II) श्रुत।
मति-मति ज्ञान के अंतर्गत बाह्य इन्द्रियजन्य ज्ञान (वाह्य प्रत्यक्ष), मानस ज्ञान (मानस प्रत्यक्ष) और अनुमान आते हैं।
श्रुत-श्रुत ज्ञान (शब्द), मतिपूर्वक होता है। इसमें शब्दों का उल्लेख रहता है। जैनागमों का ज्ञान श्रुत ज्ञान है।

9. ज्ञान के सिद्धांत को ज्ञाततावाद के रूप में जाना जाता है-

(a) रामानुज के दर्शन में (b) कुमारिल के दर्शन में
(c) उदयन के दर्शन में (d) श्रीधर के दर्शन में

Ans. (b) :

सिद्धांत	प्रणेता
विशिष्टद्वैतवाद	रामानुज
ज्ञाततावाद	कुमारिल

कुमारिल अपने 'ज्ञाततावाद' सिद्धान्त में ज्ञान को स्वयं प्रकाश नहीं मानते हैं। वह कहते हैं कि ज्ञान का प्रत्यक्षीकरण नहीं होता है। वह साक्षात रूप से नहीं जाना जा सकता है।

10. प्रभाकर के भ्रम सिद्धांत को जाना जाता है-

(a) अख्याति (b) आत्मख्याति
(c) अन्यथा ख्याति (d) सत् ख्याति

Ans. (a) :

सिद्धांत	प्रवर्तक
अख्यातिवाद	प्रभाकर
आत्मख्याति	योगाचार विज्ञान
अन्यथा ख्याति	न्याय दर्शन
सत ख्याति	रामानुज एवं पूर्व सांख्य

11. न्यायदर्शन में भूयोदर्शन का अर्थ है-

(a) आत्मसाक्षात्कार (b) भूमि दर्शन
(c) पुनः पुनः निरीक्षण (d) अलौकिक प्रत्यक्ष

Ans. (c) : न्याय दर्शन में भूयोदर्शन का तात्पर्य है-पुनः पुनः निरीक्षण।

12. निम्नलिखित में से कौन-सा एक अनुपलब्धि को स्वतंत्र प्रमाण मानता है :

(a) भट्ट मीमांसक (b) बौद्ध
(c) सांख्य (d) प्रभाकर मीमांसक

Ans. (a) : भट्ट मीमांसक अनुपलब्धि को स्वतंत्र प्रमाण मानते हैं। भट्ट मीमांसक कुमारिल कहते हैं कि अभाव से इन्द्रिय सन्निकर्ष न होने से अभाव प्रत्यक्ष का विषय नहीं है। कुमारिल कहते है कि अभाव का ज्ञान अनुमान, शब्द अथवा अर्थापत्ति से भी नहीं हो सकता। अतः अभाव के लिए अनुपलब्धि नामक प्रमाण आवश्यक है। प्रभाकर का कथन है कि "अभाव अधिकरण से भिन्न है।" कुमारिल, प्रभाकर के इस मत का खण्डन करते हैं अभाव अधिकरण मात्र नहीं है अपितु एक अलग पदार्थ है। घट प्रत्यक्ष और घटाभाव का ज्ञान, दोनों ही भूतलमात्र के प्रत्यक्ष से भिन्न है। अतः अभाव के लिए अनुपलब्धि नामक प्रमाण आवश्यक है।

13. न्याय स्वीकार करता है :

(a) प्रमा एवं अप्रमा दोनों के लिये स्वतः प्रमाण्य को
(b) प्रमा एवं अप्रमा दोनों के लिये परतः प्रमाण्य को
(c) प्रमा के लिये स्वतः प्रमाण्य को और अप्रमा के लिये परतः प्रमाण्य को
(d) प्रमा के लिये परतः प्रमाण्य को और अप्रमा के लिये स्वतः प्रमाण्य को

Ans. (b) : न्याय दर्शन प्रमा और अप्रमा दोनों के लिए परतः प्रमाण्य को स्वीकार करता है। न्याय कहता है कि प्रमाण्य और अप्रमाण्य दोनों परतः हैं, बाहर से आते हैं। ज्ञान की उत्पत्ति के बाद उसके प्रामाणिक अथवा अप्रामाणिक होने का प्रश्न उठता है। यथार्थता, सम्वाद और सफल वृत्ति-सामर्थ्य से ज्ञान में प्रमाण्य आता है और अयथार्थता, विसम्वाद तथा प्रवृत्ति की असफलता से ज्ञान से अप्रामाण्य आता है। ज्ञान की उत्पत्ति के बाद प्रमाण्य तथा अप्रामाण्य की उत्पत्ति होती है एवं उनका ज्ञान होता है।

14. न्याय दर्शन के अनुसार प्रत्यक्ष की प्रथम अवस्था कही जाती है-

(a) सविकल्पक (b) सावधि
(c) निर्विकल्पक (d) बाधित

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : न्याय दर्शन प्रत्यक्ष की दो अवस्थाएं मानता है-(I) निर्विकल्पक (II) सविकल्पक। न्याय के अनुसार प्रत्यक्ष ज्ञान है और ज्ञान सदा सविकल्पक होता है। अतः प्रत्यक्ष ज्ञान भी सविकल्पक होता है। किन्तु सविकल्पक बनने से पूर्व यह ज्ञान निर्विकल्पक अवस्था में रहता है अतः निर्विकल्पक प्रत्यक्ष ज्ञान की पूर्वावस्था है।

15. सुकरात की पद्धति है-

(a) अनुभवातीत पद्धति (b) वार्तालाप की विधि
(c) गणितीय (d) प्रयोगात्मक

Ans. (b) : "सुकरात की पद्धति वार्तालाप की विधि है।" सुकरात ग्रीक के महानदार्शनिकों में से एक थे। सुकरात वाद-विवाद अथवा वार्तालाप के माध्यम से दार्शनिक विचारों का आदान-प्रदान करते थे।

16. लॉक के अनुसार

(a) केवल अनुभव ही ज्ञान का साधन है
(b) केवल जन्मजात प्रत्यय ही ज्ञान का साधन है
(c) अनुभव और ज्ञान मे कोई संबंध नहीं है
(d) ज्ञान ईश्वर की अनुकम्पा से प्राप्त किया जाता है

Ans. (a) : लाक अनुभववादी दार्शनिक थे। वह अनुभव को ज्ञान का साधन मानते थे। लाक कहते थे कि इन्द्रियानुभव, ज्ञान का मूल श्रोत है। लाक के अनुसार इन्द्रियातीत अनुभव असंभव है। अतः अनुभव शब्द का अर्थ इन्द्रियानुभव ही समझना चाहिए। यह अनुभव दो प्रकार का है- (I) वाह्य प्रत्यक्ष (II) आन्तर प्रत्यक्ष। वाह्य प्रत्यक्ष होता है, पश्चज्ञानेन्द्रियों के संवेदन से और आन्तर प्रत्यक्ष होता है अन्तःकरण के संवेदन से। इन्हीं दोनों संवेदनों के माध्यम से ज्ञान आत्मा में प्रवेश करता है। लाक कहते है कि आत्मा कोरे कागज की भाँति होती है अनुभव अपने संवेदन और स्वसंवेदन रूपी ऊँगलियों से इस पर ज्ञानरूपी अक्षर लिखता है।

17. "जगत् वस्तुओं की सम्पूर्णता नहीं, तथ्यों की है "यह कथन निम्न में से है-

(a) विट्गेंस्टाईन (b) ह्यूम
(c) गेटियर (d) नोज़क

Ans. (a) : समकालीन दार्शनिक विटगेन्स्टीन का कथन है कि "जगत तथ्यों की संपूर्णता है न की वस्तुओं की।" विटगेन्स्टीन के अनुसार-
(I) दुनिया तथ्यों की समग्रता है, चीजों की नहीं।
(II) दुनिया तथ्यों से निर्धारित होती है।
(III) तथ्यों की समग्रता यह निर्धारित करती है कि मामला क्या है।
(IV) दुनिया तथ्यों में विभाजित है।
(V) तार्किक स्थान में तथ्य ही संसार है।

18. निम्नलिखित में कौन-सा कारण अरस्तू के दर्शन से संबंधित नहीं है?

(a) अनिवार्य (b) आकारिक
(c) उपादान (d) निमित्त

Ans. (a) : अरस्तू के अनुसार संसार परिणामी और गतिशील है। यह परिणाम और गति एक निश्चित लक्ष्य के कारण होती है। अरस्तू ने प्रत्येक गति या परिणाम के चार कारण माने-(I) उपादान कारण (Material cause) (II) निमित्त कारण (Efficient cause) (III) स्वरूप या आकारिक कारण (Formal cause) (IV) लक्ष्य कारण (Final cause)
स्पष्ट है कि अनिवार्य कारण (Necessary cause) अरस्तू के दर्शन से सम्बन्धित नहीं है।

19. ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि के लिये दिया गया विश्वमूलक तर्क मुख्यतः सम्बन्धित है-

(a) सन्त अन्सेलम से (b) सन्त थामस एक्वीनास से
(c) प्लेटों से (d) सुकरात से

Ans. (b) : ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि के लिए 'विश्वमूलक तर्क' सन्त थामस एक्वीनास ने दिया है। एक्वीनास ने कहा की "जगत की गति और परिणाम के लिए एक स्वयंभू और अपरिणामी चेतन कारण आवश्यक है। ईश्वर सिद्ध स्वरूप है। वे समस्त जगत में अन्तर्निहित है। और सबके लक्ष्य है। समस्त जगत उनकी ओर आकर्षित होकर विकसित हो रहा है। वे विशुद्ध विज्ञानस्वरूप है। विश्व जड़ है, अतः जड़ता के अभाव और विशुद्ध चैतन्य के भाव के रूप में ईश्वर की सत्ता सिद्ध होती है।

20. लाइबनित्स के अनुसार चिदणु है-

(a) बाह्य साधनों पर आश्रित (b) अचेतन
(c) अन्योन्याश्रित (d) स्वतंत्र

Ans. (d) : लाइबनित्ज ने अपने द्रव्य का नाम 'चिदणु' किया। लाइबनित्ज का 'चिदणु' स्वतंत्र, शक्तिमान चेतन परमाणु है। लाइबनित्ज ने कहा कि चिदणु निरवयव, तात्विक अविभाज्य और चेतन हैं। यह तात्विक बिन्दु द्रव्य बिन्दु या चिदबिन्दु है। यह शक्तिमान विशेष है। यह अपनी शक्ति का स्वयं केन्द्र है।

21. 'दृश्यते इति वर्तते' के आधार पर बर्कले ने किया:

(a) जड़ तत्व का खण्डन (b) आत्मा का खण्डन
(c) ईश्वर का खण्डन (d) प्रत्ययों का खण्डन

Ans. (a) : 'दृश्ते इति वर्तते' के आधार पर 'बर्कले' ने जड़तत्व का खण्डन किया। बर्कले कहते हैं कि प्रत्यक्ष होता है 'गुणों' का न की वाह्य पदार्थ का। बर्कले के अनुसार 'जो जड़ है, अशक्त है जो न द्रष्टा है न दृश्य है, व ज्ञाता है, न ज्ञेय है वह तथाकथित वाह्य पदार्थ हमारी चेतन आत्मा पर कैसे अपने गुणों की छाप छोड़ सकती है? बर्कले कहते है कि विज्ञानों को उत्पन्न करने का सामर्थ्य जड़ पदार्थ मे नहीं वरन ईश्वर में है जो इन्द्रिय संवेदन रूपी विज्ञानों को हमारी आत्मा में उत्पन्न करते हैं। यह सामर्थ्य जड़ द्रव्य में नहीं हो सकता। अतः सिद्ध होता है कि वाह्य जड़ पदार्थ की कोई वास्तविक सत्ता नहीं है।

22. काण्ट के अनुसार :

(a) केवल दृश्य प्रपञ्च को जाना जा सकता है
(b) केवल पारमार्थिक को जाना जा सकता है
(c) दृश्य प्रपञ्च और पारमार्थिक दोनों को जाना जा सकता है
(d) किसी को भी नहीं जाना जा सकता है

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : काण्ट के अनुसार केवल दृश्य प्रपंच को जाना जा सकता है। काण्ट कहते हैं कि हमारे व्यवहार (Phenomenon) का ज्ञान सत्य, असंदिग्ध, निश्चित और सार्वभौम है। सत्य इसलिए की इस ज्ञान की सामग्री इन्द्रिय संवेदन या स्वसंवेदन द्वारा प्रसूत होने से इस ज्ञान के संवादी परमार्थ वस्तुतः विद्यमान है और निश्चित और सार्वभौम इसलिए कि इस सामग्री को हमारे बुद्धि विकल्पों ने निरूपित किया है।

23. 'वह न तो जर्मन है और न पुर्तगाली' इस तर्क वाक्य का सही प्रतीकात्मक आकार चुनिये :

(a) —G*—P (b) —(G*P)
(c) —G V—P (d) —G ⊃—P

Ans. (a) : 'वह न तो जर्मन है और न पुर्तगाली' इसका प्रतीकात्मक आकार- —G*—P होगा।

24. निगमनमूलक युक्ति के आधार वाक्य

(a) निष्कर्ष के लिये पूर्ण साक्ष्य प्रदान करते हैं
(b) निष्कर्ष के लिये कुछ साक्ष्य प्रदान करते हैं
(c) निष्कर्ष के लिये कोई साक्ष्य प्रदान नहीं करते हैं
(d) निष्कर्ष के लिये अप्रासंगिक होते है

Ans. (a) : निगमन मूलक युक्ति के आधार वाक्य-"निष्कर्ष के लिए पूर्ण साक्ष्य प्रदान करते हैं।"

25. निम्न में कौन सा p ⊃ q का समतुल्य है?

(a) p ⊃ q (b) —p ⊃ —q
(c) —p V q (d) —p * q

Ans. (c) : p ⊃ q का समतुल्य —p V q होगा।

26. अनुमान अव्यवहित कहलाता है यदि वह आधारित है-

(a) दो आधार वाक्यों पर
(b) एक से अधिक आधार वाक्यों पर
(c) केवल एक आधार वाक्य पर
(d) तीन आधार वाक्यों पर

Ans. (c) : जब अनुमान केवल एक आधार वाक्य पर आधारित होता है तो वह कहलाता है-'अव्यवहित अनुमान'।

27. 'संयोजन' सत्य है यदि

(a) इसके सभी संयोजक सत्य है
(b) इसका एक संयोजक सत्य है
(c) इसके सभी संयोजक असत्य है
(d) इसका एक संयोजक असत्य है

Ans. (a) : अगर किसी संयोजन के सभी संयोजक सत्य हों तो वह 'संयोजन' सत्य होता है।

28. यह न्याय वाक्य कि 'सभी बिल्लियाँ जानवर है, सभी कुत्ते जानवर हैं अतः सभी कुत्ते बिल्लियाँ है, अवैध है क्योंकि

(a) निष्कर्ष असत्य है
(b) आधार वाक्य असत्य है
(c) मध्यम पद आधार वाक्यों में अव्याप्त है
(d) मुख्य पद निष्कर्ष में अव्याप्त है

Ans. (c) : कोई भी न्याय वाक्य तब अवैध होता है जब मध्यम पद आधारवाक्यों में अव्याप्त होता है। प्रश्नगत न्याय वाक्य 'सभी बिल्लियां जानवर हैं, सभी कुत्ते जानवर हैं अतः "सभी कुत्ते बिल्लियाँ हैं।" में मध्यम पद व्याप्त होने से अवैध है।

29. परम्परागत विरोधवर्ग में यदि 0 तर्क वाक्य असत्य है तो निम्न में से कौन-सा सत्य होगा-

(a) i असत्य a और e होंगे
(b) a सत्य e और i असत्य होंगे
(c) a असत्य e और i सत्य होंगे
(d) e असत्य i और a सत्य होंगे

Ans. (d) : परंपरागत विरोध वर्ग में यदि 'O' तर्क वाक्य असत्य हो तो 'e' तर्कवाक्य भी असत्य होगा, परन्तु 'I' तर्कवाक्य तथा 'a' तर्कवाक्य सत्य होंगे।

30. व्याप्ति एक संबंध है-

(a) पक्ष और हेतु के मध्य
(b) सपक्ष और साध्य के मध्य
(c) पक्ष और साध्य के मध्य
(d) हेतु और साध्य के मध्य

Ans. (d) : व्यक्ति का सम्बन्ध हेतु और साध्य के मध्य पाया जाता है।

31. लिङ्ग परामर्श है-

(a) अनुमान (b) उपमान
(c) शब्द (d) अर्थापति

Ans. (a) : अनुमान को लिङ्ग, परामर्श कहते हैं। एक ज्ञान के बाद और उसके कारण उत्पन्न होने वाला दूसरा ज्ञान अनुमान है। जैसे- धूम से वहिन का ज्ञान। किसी हेतु या लिङ्ग के ज्ञान से उस लिङ्ग को धारण करने वाले लिनङ्गी का ज्ञान अनुमान है। यह परोक्ष ज्ञान है जो हेतु से उत्पन्न होता है।

32. ऋत का मूल अर्थ है-

(a) यज्ञ आदि (b) आत्मा की अमरता
(c) शाश्वत नैतिक व्यवस्था (d) बहुदेव वाद

Ans. (c) : ऋत् का अर्थ है जगत की शाश्वत नैतिक व्यवस्था। ऋत वह नियम है जो प्राकृतिक और नैतिक जगत में कार्यान्वित है। ऋत नियम के द्वारा वैदिक ऋषि विश्व की व्यवस्था तथा नैतिक जगत की व्यवस्था की व्याख्या कर पाते थे।

33. योग दर्शन के अनुसार इनमें से कौन-सी चित्तवृत्ति नहीं हैं?

(a) प्रमाण (b) विपर्यय
(c) अविद्या (d) विकल्प

Ans. (c) : योग दर्शन के अनुसार चित्त की वृत्तियां पांच प्रकार की होती हैं-(I) प्रमाण (II) विपर्यय (III) विकल्प (IV) निद्रा (V) स्मृति।
स्पष्ट है अविद्या योग दर्शन के अनुसार चित्त की वृत्ति नहीं है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

34. कर्मफल से छुटकारा पाने के लिये

(a) नित्य कर्म का परित्याग
(b) काम्य कर्म का परित्याग
(c) नित्य, काम्य एवं नैमित्तिक कर्म का परित्याग
(d) नैमित्तिक कर्म का परित्याग

Ans. (b) : कर्मफल से छुटकारा पाने के लिए काम्य कर्म से छुटकारा पाना अनिवार्य है। गीता में भी इसी पर प्रकाश डाला गया है। गीता कर्म का निषेध नहीं करती बल्कि काम्य कर्म का निषेध करती है। गीता के अनुसार यही काम्य कर्म ही कर्ता को बन्धन में बांधता है। इसीलिए गीता में कामना रहित कर्म की बात की गई है।

35. निम्नलिखित में से कौन-सा अनुपयुक्त युग्म है?

(a) स्वधर्म - वर्णधर्म (b) ब्रहमचर्य - विवाह
(c) गृहस्थ - महायज्ञ (d) स्थितप्रज्ञ - समत्वयोगी

Ans. (c) : प्रश्नगत विकल्प में 'ब्रह्मचर्य-विवाह' अनुपयुक्त युग्म है। भारतीय सनातन परंपरा में निर्धारित आश्रमों में एक आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम है। इस आश्रम में मनुष्य गृहस्थ जीवन से मुक्त रहता है।

36. जैन एवं बौद्धों के अनुसार सहिंसा है :

(a) मनुष्य की हत्या नहीं करना
(b) मन, वचन एवं कर्म से हिंसा नहीं करना
(c) किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं करना
(d) किसी भी प्राणी की जान नहीं लेना एवं मैत्री भाव रखना

Ans. (b) : जैव और बौद्ध दोनों विशुद्ध अहिंसावादी धर्म है। दोनों अहिंसा में विश्वास करते हैं। दोनों का मानना है कि मनुष्य को मन, वचन एवं कर्म से हिंसा नहीं करनी चाहिए।

37. अधिनीति शास्त्र है-

(a) विश्लेषणात्मक नीतिशास्त्र (b) मूल्यात्मक नीतिशास्त्र
(c) व्यवहारिक नीतिशास्त्र (d) व्यावसायिक नीतिशास्त्र

Ans. (a) : अधिनीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र की वह शाखा है जो नीतियों के गुणों, दावों, मनोदृष्टि आदि का विश्लेषण करती है। इसलिए इसे विश्लेषणात्मक नीतिशास्त्र भी कहा जाता है।

38. भारतीय दर्शन में 'प्रस्थानत्रयी' से क्या तात्पर्य है?

(a) उपनिषद, भगवद गीता, ब्रह्मसूत्र
(b) ऋग वेद, साम वेद, अथर्व वेद
(c) राग, द्वेष, अभिनिवेश
(d) प्रमाण, विकल्प, विपर्य

Ans. (a) : भारतीय दर्शन के अनुसार तीन ग्रंथों यथा-उपनिषदों, भगवतगीता, ब्रह्म सूत्र' को सम्मिलित रूप से प्रस्थानत्रयी कहा जाता है। इन त्रयी में प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों मार्गों का विवेचन है। इनमें उपनिषदों को श्रुति प्रस्थान, भगवदगीता को स्मृति प्रस्थान तथा ब्रह्मसूत्र को न्याय प्रस्थान कहते हैं।

39. कान्ट के अनुसार :

(a) सुख ही स्वतः शुभ है
(b) शुभ संकल्प ही स्वतः शुभ है
(c) आत्मसिद्धि ही स्वतः शुभ है
(d) ज्ञान ही स्वतः शुभ है

Ans. (b) : कांट ने न केवल दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में अपितु नीतिशास्त्र के क्षेत्र में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। काण्ट का 'शुभ संकल्प' और 'कर्तव्य के लिए कर्तव्य' का सिद्धांत, नीतिशास्त्र के क्षेत्र में मील का पत्थर है। काण्ट का मानना था कि शुभ संकल्प ही स्वतः शुभ है।

40. काण्ट के द्वारा बतलाई गई नैतिकता की मान्यताओं के विषय में कौन-सा कथन सत्य नहीं है?

(a) आत्मा की अमरता एक मान्यता है
(b) ईश्वर का अस्तित्व एक मान्यता है
(c) मान्यताओं का आधार बौद्धिक तत्व मीमांसा है
(d) संल्कल की स्वतंत्रता एक मान्यता है

Ans. (c) : काण्ट द्वारा नैतिकता की आधारभूत मान्यताएं निम्न हैं-
(I) आत्मा की अमरता एक मान्यता है।
(II) ईश्वर का अस्तित्व एक मान्यता है।
(III) संकल्प की स्वतंत्रता।
परन्तु बौद्धिक तत्व मीमांसा, नैतिकता की मान्यता नहीं है।

41. दण्ड के तीन सिद्धांत है प्रतिकारात्मक सुधारात्मक, और-------

(a) सकारात्मक
(b) उपचारात्मक
(c) काल्पनिक
(d) प्रतिरोधात्मक या निवर्तनात्मक

Ans. (d) : दण्ड के तीन सिद्धांत हैं-
(I) प्रतिकारात्मक
(II) सुधारात्मक
(III) प्रतिरोधात्मक या निर्वतनात्मक।

42 . "हमारा प्रत्यक्ष और तात्कालिक प्रयोजन सुख न होकर वस्तुओं की प्राप्ति है"-यह कथन है-

(a) बेंथम का (b) बटलर का
(c) ब्रैडले का (d) सिजविक का

Ans. (b) : समकालीन दार्शनिक न्यूडिथ बटलर का प्रसिद्ध कथन है "हमारा प्रत्यक्ष और तात्कालिक प्रयोजन सुख न होकर वस्तुओं की प्राप्ति है।"

43. "धर्मनिरपेक्ष नैतिकता" का संप्रत्यय निम्न में से सम्बन्धित है-

(a) टैगोर (b) गाँधी
(c) एम.एन. रॉय (d) अरविन्द

Ans. (c) : धर्म निरपेक्ष नैतिकता दर्शन का वह पहलू है जो धार्मिक परंपराओं के बाहर नैतिकता से संबंधित है। इसके अंतर्गत, मानवतावाद, स्वतंत्र विचार और परिणामवाद को सम्मिलित किया जा सकता है। प्रश्नगत विकल्पों में 'धर्मनिरपेक्ष नैतिकता' का संप्रत्यय एम.एन. राय से सम्बन्धित है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

44. नव्य बौद्ध धारणा है निम्न की

(a) अम्बेडकर (b) गाँधी
(c) टैगोर (d) विवेकानन्द

Ans. (a) : नव्य बौद्ध धर्म अम्बेडकर द्वारा चलाया गया है। इसे बौद्ध मत की एक साखा के रूप में माना जाता है। इस मत के सारे अनुयायी 'अम्बेदकर वादी बौद्ध' होते हैं। इन बौद्धों का अम्बेडकर द्वारा निर्धारित बाइस प्रतिज्ञाओं का पालन अनिवार्य तथा महत्वपूर्ण माना जाता है जो अम्बेडकर ने 14 अक्टूबर, 1956 को धर्म परिवर्तन समारोह में दी थी।

45. 'चेतना के स्तर' के प्रस्तावक निम्न में से है-

(a) कृष्ण चन्द्र भट्टाचार्य (b) गाँधी
(c) राधाकृष्णन् (d) कृष्णमूर्ति

Ans. (a) : के.सी. भट्टाचार्य 'चेतना के स्तर' के प्रस्तावक थे। भट्टाचार्य विशेष रूप से इस समस्या में रुचि रखते थे की मन (या चेतना) एक स्पष्ट रूप से भौतिक ब्रह्माण्ड कैसे बनाता है। भट्टाचार्य ने एक व्यापक सर्वदेशीयवाद के विचार को प्रोत्साहित किया जिसमें यूरोपीय विचारों की अंधी नकल के बजाय दर्शन की भारतीय प्रणालियों को आत्मसात के माध्यम से आधुनिक बनाया गया था।

46. उत्तर आधुनिकतावाद, आधुनिकता का विकास है, निम्न के मत में-

(a) ल्योटटार्ड (b) डराइडा
(c) गाडामर (d) हेबरमास

Ans. (d) : हेबर मास एक जर्मन दार्शनिक और आलोचनात्मक सिद्धान्त तथा व्यावहारिकता की परंपरा के समाजशास्त्री हैं। इनके मत में उत्तर आधुनिकतावाद आधुनिकता का विकास है।

47. नारीवादी ज्ञानमीमांसा से सम्बन्धित नाम है-

(a) सिमोन दि बोउआ (b) मेरी वॉल स्टोन क्राफ्ट
(c) डॉना हैरावे (d) ई. गेटियर

Ans. (c) : डॉना हैरावे नारीवादी ज्ञानमीमांसा से सम्बन्धित अमेरिकी शिक्षाविद हैं। नारी वादी ज्ञानमीमांसा एक ऐसी अवधारणा है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के बराबर स्त्रियों के अधिकारों के समर्थन में उत्पन्न हुए सामाजिक/दार्शनिक आंदोलन को इंगित करती है। यह एक ऐसा विचार है जो पुरुष और स्त्री के बीच समानता को स्वीकार कर नारी के बौद्धिक और व्यावहारिक रूप में सशक्तीकरण पर बल देता है।

48. निम्नलिखित में से कौन-सा सुमेलित है-

(a) अनेकान्तवाद - चार्वाक
(b) अपोहवाद - जैन दर्शन
(c) जड़ ही सब कुछ है - बौद्ध दर्शन
(d) बहुआत्मा का सिद्धान्त - सांख्य दर्शन

Ans. (d) : सांख्य दर्शन आत्मा को एक नहीं अनेक मानता है। अद्वैत वेदांती शंकराचार्य के अनुसार आत्मा की अनेकता अज्ञान के कारण उपस्थित होती है जिसके फलस्वरूप वह अयथार्थ है परन्तु सांख्य अनेकता को सत्य मानता है। साथ ही सांख्य आत्मा को नित्य मानता है।

49. रामानुज के अनुसार ब्रह्म में निम्न में से कौन-सा भेद अस्तित्व रखता है :

(a) विजातीय (b) सजातीय
(c) स्वगत (d) बाह्य

Ans. (c) : रामानुज के अनुसार ब्रह्म भेद से रहित नहीं है। शंकर दर्शन की व्याख्या में बतलाया गया है कि वेदान्त दर्शन में तीन प्रकार का भेद माना गया है। सजातीय भेद, विजातीय भेद और स्वगत भेद। जबकि रामानुज शंकर के विपरीत 'स्वगतभेद' मानते है क्योंकि उसके दो अंशों चित और अचित में भेद है।

50. वैशेषिक द्वारा निम्नलिखित दो प्रमाणों के किस युग्म को स्वीकार किया गया है :

(a) प्रत्यक्ष और अनुमान (b) अनुमान और उपमान
(c) प्रतयक्ष और उपमान (d) प्रत्यक्ष और शब्द

Ans. (a) : वैशेषिक दर्शन में 'प्रत्यक्ष और अनुमान' नामक दो प्रमाणों को स्वीकार किया गया है।

51. रामानुज का कारणता का सिद्धांत जाना जाता है :

(a) विवर्तवाद (b) प्रकृति परिणामवाद
(c) ब्रह्म परिणामवाद (d) असत्कार्यवाद

Ans. (c) : रामानुज परिणामवाद जो सत्कार्यवाद के एक रूप में है को स्वीकार करते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार कारण का पूर्णतः रूपांतर कार्य के रूप में होता है। जगत ईश्वर की शक्ति प्रकृति का परिणाम है। ईश्वर जो विद्या का कारण है, स्वयं कार्य के रूप में परिणित हो जाता है। जिस प्रकार कारण सत्य है उसी प्रकार कार्य भी सत्य है।

52. न्याय वैशेषिक दर्शन के अनुसार चेतना है :

(a) आत्मा का आगन्तुक गुण
(b) आत्मा का अनिवार्य गुण
(c) आत्मा से अभिन्न
(d) जड़ का उप-उत्पाद

Ans. (a) : न्याय-वैशेषिक आत्मा को स्वरूपतः अचेतन मानता है। आत्मा में चेतना का प्रसार तभी होता है जब आत्मा का संपर्क मन के साथ तथा मन का इंद्रियों के साथ संपर्क होता है। तथा इन्द्रियों का बाह्य जगत के साथ संपर्क होता है। यदि आत्मा का ऐसा संपर्क न हो तो आत्मा में चैतन्य का आविर्भाव नहीं हो सकता इस प्रकार चैतन्य आत्मा का आगन्तुक गुण है।

53. सांख्य दर्शन स्वीकार करता है :

(a) परतः प्रामाण्य और स्वतः अप्रामाण्य
(b) स्वतः प्रामाण्य और परतः अप्रामाण्य
(c) स्वतः प्रामाण्य और स्वतः अप्रामाण्य
(d) परतः प्रामाण्य और परतः अप्रामाण्य

Ans. (c) : सांख्य दर्शन स्वतः प्रमाण्य तथा स्वतः अप्रामाण्य को स्वीकार करता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

54. अद्वैत वेदान्त द्वारा अभाव के ज्ञान को किस प्रकार स्पष्ट किया गया है :
(a) इन्द्रिय प्रत्यक्ष द्वारा (b) अनुमान द्वारा
(c) प्रकटन द्वारा (d) अनुपलब्धि द्वारा

Ans. (d) : शंकराचार्य प्रणीत अद्वैत वेदान्त में अभाव के ज्ञान को अनुपलब्धि द्वारा स्पष्ट किया गया है। अद्वैत वेदान्त के अनुसार अनुपलब्धि एक स्वतंत्र प्रमाण है। किसी विषय के अभाव का साक्षात ज्ञान हमें अनुपलब्धि द्वारा प्राप्त होता है।

55. पतंजलि के अनुसार पांच प्रकार के यम है :
(a) अहिंसा, अस्तेय, सत्य, ब्रह्मचर्य, एवं आसन
(b) अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, एवं अपरिग्रह
(c) सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह एवं ध्यान
(d) अस्तेय, ब्रह्मचर्य, सत्य, ध्यान एवं आसन

Ans. (b) : पतंजलि ने अपने योगदर्शन में पांच प्रकार के यम बताएं है-
(i) अहिंसा-मन, वचन, कर्म से किसी प्राणी के प्रति हिंसा न करना अहिंसा है।
(ii) सत्य-जो जैसा है उसे उसी रूप से जानना, धारण करना अथवा बतलाना सत्य है।
(iii) अस्तेय-दूसरे के स्वामित्व का अपहरण न करना ही अस्तेय है।
(iv) ब्रह्मचार्य : मन, वचन अथवा कर्म से यौन क्रिया में लीन न होना ही ब्रह्मचर्य है।
(v) अपरिग्रह : अपने स्वार्थ के लिए धन सम्पत्ति, एवं भोग सामग्री में संयत्र न करना परिग्रह है और इसका अभाव अपरिग्रह है।

56. 'बन्धन का कारण अज्ञान है' यह मत स्वीकार्य किया गया है :
(a) चार्वाक, बौद्ध, एवं जैन दर्शन द्वारा
(b) अद्वैत वेदान्त, सांख्य और बौद्ध दर्शन द्वारा
(c) सांख्य, मीमांसा और चार्वाक द्वारा
(d) बौद्ध, चार्वाक और मीमांसा द्वारा

Ans. (b) : अद्वैत वेदान्त के अनुसार आत्मा का शरीर और मन में अपनापन का सम्बन्ध होना बंधन है। आत्मा शरीर के पार्थक्य के ज्ञान के अभाव में शरीर के सुख दुख, को निजी सुख-दुख समझने लगती है यही बन्धन है। आत्मा शुद्ध चैतन्य होते हुए भी अज्ञान के वशीभूत होकर बन्धन ग्रस्त हो जाती है।
सांख्य दर्शन के अनुसार बन्धन जीव का होता है। शुद्ध पुरुष का नहीं। सांख्य कहता है कि ज्ञान से मोक्ष और अज्ञान से बंधन होता है।
इसी तरह बौद्ध दर्शन भी मानता है कि अज्ञान के कारण बन्धन होता है।

57. सांख्य दर्शन में प्रकृति को माना गया है :
(a) सत्व्, रज एवं तम् का अधिष्ठान
(b) सत्व्, रज एवं तम् का समन्वय
(c) सत्व, रज एवं तम् के रूप में एक चेतन सिद्धांत
(d) सत्व, रज एवं तम् निहित एक निष्क्रिय द्रव्य

Ans. (b) : सांख्य दर्शन के अनुसार अतीन्द्रिय होने से प्रकृति का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होता है, उसके कार्यों से ही उसके कारण रूप में अनुमान किया जाता है। वह जड़ और अचेतन है, विवेकशून्य है स्वतंत्र है, नित्य है, एक है, व्यापक है। सामान्य या एक पुरुष भोग्य है। विषय है अर्थात् पुरुष द्वारा ज्ञेय है। त्रिगुणात्मक है अर्थात सत्व, रज, तम नामक तीन गुणों से बनी है और इसीलिए सुख-दुख मोहात्मक है किन्तु अचेतन होने से सुख-दुख मोह का अनुभव नहीं कर सकती है। इस प्रकार हम कह सकते है कि सांख्य दर्शन में प्रकृति में सत्व, रज एवं तम का समन्वय माना गया है।

58. अरस्तु के अनुसार
(a) केवल सामान्य द्रव्य है
(b) केवल विशेष द्रव्य है
(c) द्रव्य न तो सामान्य और न विशेष है
(d) द्रव्य विशेषों में सामान्य है

Ans. (d) : अरस्तू के अनुसार सामान्य और विशेष स्वयं द्रव्य नहीं है, द्रव्य विशेषों में सामान्य है। सामान्य और विशेष द्रव्य के अभाव में नहीं रह सकते है और द्रव्य भी सामान्य और विशेष के अभाव में अपना अस्तित्व खो देता है।
इस प्रकार अरस्तू द्रव्य को सामान्य और विशेष का अपृथक रूप से सम्मिलित या समरस रूप मानता है। फिर भी वह सामान्य को अधिक सत मानता है इसीलिए अरस्तू का द्रव्य विशेषों में सामान्य है।

59. निम्न में से कौन-सा स्पिनोज़ा द्वारा स्वीकृत नहीं है :
(a) द्रव्य आत्मनिर्भर है (b) द्रव्य असीमित है
(c) द्रव्य नित्य है (d) द्रव्य का कारण है

Ans. (d) : स्पिनोजा के द्रव्य की कुछ विशेषताएं निम्न प्रकार है-
(I) द्रव्य निरपेक्ष है।
(II) द्रव्य असीमित है।
(III) द्रव्य अद्वितीय है।
(IV) द्रव्य स्वतः सिद्ध, स्वयंभू है।
(V) द्रव्य पूर्ण है, नित्य है, निर्गुण है।
स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य का कारण नहीं है।

60. सांख्य दर्शन में निम्न में से कौन-सा कथन सही है :
(a) पुरुष सक्रिय है
(b) पुरुष एक है
(c) प्रकृति चेतन है
(d) प्रकृति निरन्तर परिवर्तनशील है

Ans. (d) : सांख्य दर्शन में प्रकृति को शक्ति कहा जाता है क्योंकि इसमें निरन्तर गति विद्यमान रहती है। प्रकृति जिस अवस्था में भी है निरन्तर गतिशील दीख पड़ती है। सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति अचेतन है, फिर भी वह सक्रिय है। प्रकृति में क्रियाशीलता निरन्तर दीख पड़ती है क्योंकि उसमें गति अन्तर्भूत है। प्रकृति एक क्षण के लिए भी निष्क्रिय नहीं हो सकती है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

61. सूची-I और सूची-II का मिलान कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये :

सूची-I		सूची-II
1. विशिष्टद्वैत दर्शन का मूल विचार	a.	आस्रव
2. कर्म पुद्गलों का प्रवाह	b.	अत्यन्ताभाव
3. अप्रत्यक्ष कारण का प्रत्यक्ष कार्य	c.	अपृथक सिद्धि
4. पूर्ण अस्तित्वहीन	d.	शेषवत्

(a) 1-c, 2-a, 3-d, 4-b
(b) 1-c, 2-b, 3-a, 4-d
(c) 1-c, 2-d, 3-b, 4-c
(d) 1-a, 2-b, 3-c, 4-b

Ans. (a) : सही कूट निम्न प्रकार है-

1. विशिष्टद्वैत दर्शन का मूल विचार	-	अपृथक सिद्धि
2. कर्म पुद्गलों का प्रवाह	-	आस्रव
3. अप्रत्यक्ष कारण का प्रत्यक्ष कार्य	-	शेषवत्
4. पूर्ण अस्तित्वहीन	-	अत्यन्ताभाव

62. प्रकृति की सत्ता सिद्ध करने के लिये निम्न में से कौन-सी सांख्य द्वारा दी गई युक्ति नहीं है :

(a) भेदानाम परिमाणात्　(b) समन्वयात्
(c) कारण कार्य विभागात्　(d) भोक्तृभावात्

Ans. (d) : प्रकृति की सत्ता सिद्ध करने के लिए सांख्य द्वारा दी गई कुछ युक्तियां निम्न प्रकार है-
(1) भेदानामपरिमाण
(2) समन्वयात
(3) कारण कार्य विभागात
जबकि भोक्तृभावात, सांख्य दर्शन द्वारा प्रकृति की सत्ता सिद्ध करने का तर्क नहीं है।

63. निम्नलिखित में से कौन-सा सुमेलित है-

(a) जो सत् है वह क्षणिक है - जैन
(b) हाथी की आत्मा चींटी का आत्मा से बड़ी होती है - चार्वाक
(c) ईश्वर बिना इन्द्रियों के देख सकता है - न्याय
(d) अनुमान ज्ञान का विश्वसनीय स्रोत नहीं है - वैशेषिक

Ans. (c) : न्याय दर्शन ईश्वरवादी दर्शन है। वह ईश्वरीय सत्ता में विश्वास करता है। न्याय दर्शन का मानना है कि "ईश्वर बिना इन्द्रियों के भी देख सकता है।"
चावार्क का आत्मा सम्बन्धी मत है कि "आत्मा शरीर से भिन्न नहीं है चेतन शरीर ही आत्मा है। चार्वाक में हांथी और चींटी के आत्मा की तुलना जैसी कोई बाते नहीं की गई है।

64. सार्त्र के दृष्टिकोण से, "जब कोई चयन करता है, तो वह चयन कर रहा है" :

(a) केवल स्वयं के लिये
(b) स्वयं के परिवार के लिये
(c) सभी मित्रों के लिये
(d) सभी मानव जाति के लिये

Ans. (d) : सार्त्र एक अस्तित्ववादी दार्शनिक है। वे कहते है कि स्वतंत्रता का अर्थ है 'चयन की स्वतंत्रता'। मनुष्य के सामने विभिन्न स्थितियों में कई विकल्प उपस्थित होते हैं स्वतंत्र व्यक्ति वह है जो उपयुक्त विकल्प का चयन अपनी अंतरात्मा के अनुसार करता है। सार्त्र के अनुसार जब कोई चयन कर रहा है तो वह सभी मानव जाति के लिए चयन कर रहा है।

65. सूची-I और सूची-II का मिलान कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये :

सूची-I		सूची-II
1. अविभेदों का तादात्मय	a.	रसल
2. तार्किक अणुवाद	b.	ए.जे. एयर
3. सत्यापनीयता का सिद्धांत	c.	जी.ई. मूर
4. आदर्शवाद का खण्डन	d.	लाइबनित्ज़

कूट संकेत :
(a) 1-b, 2-c, 3-a, 4-d
(b) 1-d, 2-a, 3-b, 4-c
(c) 1-d, 2-b, 3-c, 4-a
(d) 1-a, 2-b, 3-c, 4-d

Ans. (b) : सही सुमेल निम्न प्रकार है-

सूची-I		सूची-II
अविभेदों का तादात्म्य	-	लाइबनित्ज़
तार्किक अणुवाद	-	रसल
सत्यापनीयता का सिद्धांत	-	ए.जे. एयर
आदर्शवाद का खण्डन	-	जी.ई. मूर

66. हाइडेगर का डसाइन है एक :

(a) विचारशील सत्ता　(b) आध्यात्मिक सत्ता
(c) भौतिक सत्ता　(d) सांसारिक सत्ता

Ans. (d) : हाइडेयर के डासाइन का सम्बन्ध सांसारिक सत्ता से है। हाइडेगर ने डासाइन अभिव्यक्ति का उपयोग उस अनुभव को संदर्भित करने के लिए किया है जो मनुष्य के लिए विशिष्ट है। इस प्रकार यह अस्तित्व का एक रूप है जिसे सांसारिक मुद्दों के बारे में पता होना चाहिए और उसका सामना करना चाहिए।

67. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही है :

(a) हीगल - अर्थ और उपयोग
(b) काण्ट - द्वन्द्वात्मक पद्धति
(c) विट्गेन्सटाइन - आलोचनात्मक दर्शन
(d) हुस्सर्ल - विषयोन्मुखता

Ans. (d) :

हीगल	-	निरपेक्ष विज्ञानवाद
काण्ट	-	आलोचनात्मक विज्ञानवाद
विटगेन्सटाइन	-	भाषा का दर्शन
हुस्सर्ल	-	विषयोन्मुखता

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

68. नामवाद सिद्धान्त के अनुसार–

(a) सामान्य सत-नहीं बल्कि केवल नाम है
(b) सामान्य नाम नहीं है
(c) सामान्य वस्तुएं है
(d) सामान्य प्रत्यय है

Ans. (a) : नामवाद वह सिद्धांत है जिसके अनुसार "केवल नाम या लेबल होने के अलावा सार्वभौमिक और अमूर्त वस्तुएं वास्तव में मौजूद नहीं है। नामवाद यह मानता है कि सामान्य सत नहीं बल्कि केवल नाम है।

69. रसल के आणविक तथ्य है :

(a) आणविक भौतिकी के तथ्य
(b) इन्द्रिय प्रदत्त
(c) तार्किक देश में तथ्य
(d) आणविक प्रतिज्ञप्तियों के तत्व

Ans. (d) : वर्ट्रेंड रसल ने विश्लेषणात्मक दर्शन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। रसेल ने आणविक तथ्यों को आणविक प्रतिज्ञप्तियों के तत्वों के रूप में परिभाषित किया रसेल तार्किक परमाणुवादी थे इनके अनुसार तार्किक परमाणु मौलिक होते हैं हमें इनका साक्षात प्रत्यक्ष होता है।

70. 'सभी मूल्यों के मूल्यान्तरण' का आह्वान करने वाला विचारक कौन है :

(a) नीत्शे (b) हाइडैगर
(c) काण्ट (d) सार्त्र

Ans. (a) :

सभी मूल्यों का मूल्यांतरण	-	नीत्शे
अस्तित्ववाद का सिद्धांत	-	हाइडेगर
आलोचनात्मक विज्ञानवाद	-	काण्ट
अस्तित्ववाद	-	जान पाल सार्त्र

71. सूची-I और सूची-II का मिलान कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये :

सूची-I (वैध न्यायोक्ति)	सूची-II (आकृति)
a. AAA	1. Fig-II
b. AOO	2. Fig-I
c. OAO	3. Fig-IV
d. IAI	4. Fig-III

कूट संकेत :

(a) a-2, b-1, c-3, d-4 (b) a-1, b-2, c-3, d-4
(c) a-2, b-1, c-4, d-3 (d) a-1, b-2, c-4, d-3

Ans. (c) : सही सुमेल

सूची-I		सूची-II
AAA	-	Fig-I (आकृति I)
AOO	-	Fig-II (आकृति II)
OAO	-	Fig-III (आकृति III)
IAI	-	Fig-IV (आकृति IV)

72. परवर्ती विट्गेन्सटाइन में अर्थ और उसके प्रयोग का सिद्धांत इंगित करता है :

(a) दीर्घ अवधि तक प्रयुक्त न होने पर वाक्य निरर्थक हो जाता है।
(b) एक वाक्य सार्थक है यदि लोकजन द्वारा इसका प्रयोग होता है।
(c) वाक्य विन्यास के नियम वाक्य को सार्थक बनाते हैं।
(d) एक वाक्य का अर्थ उसके प्रयोग में निहित होता है ।

Ans. (d) : परवर्ती विटगेन्सटाइन में अर्थ और उसके प्रयोग का सिद्धांत यह इंगित करता है कि एक वाक्य का अर्थ उसके प्रयोग में निहित होता है।

73. अनुरूपता का सम्बन्ध है :

(a) प्रतिज्ञप्ति और उसके सत्यता मूल्य के मध्य
(b) प्रतिज्ञप्ति और वाक्य के मध्य
(c) प्रतिज्ञप्ति और तथ्यों के मध्य
(d) वाक्य और उसके अर्थ के मध्य

Ans. (c) : अनुरूपता का सम्बन्ध वाक्य और उसके अर्थ के मध्य होता है।

74. आनुभविक ज्ञान वह है जो :

(a) तार्किक शक्ति के प्रमाण पर आधारित है
(b) प्रत्येक को जन्म के समय ज्ञात होता है
(c) दार्शनिक विवाद द्वारा निगमित
(d) इन्द्रियानुभव के प्रमाण द्वारा प्राप्त

Ans. (d) : पाश्चात्य अनुभववादियों के अनुसार आनुभविक ज्ञान वह है जो इन्द्रियानुभव के प्रमाण द्वारा प्राप्त होता है।

75. निम्न में कौन-सा $p \supset q$ के समतुल्य है?

(a) $-(p \bullet q)$ (b) $(p \bullet -q)$
(c) $-(p - \bullet q)$ (d) $-(p - \bullet --q)$

Ans. (c) : $-(p - \bullet q)$, $p \supset q$ के समतुल्य होगा।

76. 'सभी गुलाब लाल नहीं होते' प्रतिज्ञप्ति का तार्किक आकार है :

(a) $(x)(Rx \supset Dx)$ (b) $(x)(Rx \supset -Dx)$
(c) $(\exists x)(Rx \& Dx)$ (d) $(\exists x)(Rx \& -Dx)$

Ans. (d) : 'सभी गुलाब लाल नहीं होते' प्रतिज्ञप्ति का तार्किक आकार है- $(\exists x)(Rx\ s - dx)$

77. एक न्यायोक्ति के निष्कर्ष का अमुख्य पद यदि अवितरित है तो इसका :

(a) अमुख्य आधारवाक्य विध्यात्मक है
(b) अमुख्य आधारवाक्य सर्वव्यापी है
(c) अमुख्य आधारवाक्य विशिष्ट है
(d) मुख्य आधारवाक्य निषेधात्मक है

Ans. (*) : इस प्रश्न की प्रकृति स्पष्ट न होने से इसका सटीक उत्तर नहीं निकाला जा सकता।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

78. एक व्यवहारवादी के अनुसार एक प्रतिज्ञप्ति की सत्यता निम्न में से किसका द्वारा निर्धारित होती है?

(a) दूसरी प्रतिज्ञप्तियों के साथ इसकी संसक्तता से
(b) वास्तविकता के साथ इसकी संवादित से
(c) व्यवहारिक जीवन में इसकी उपयोगिता से
(d) यह वाक्यविन्यास के नियमों के अनुसार है

Ans. (c) : व्यवहारवादियों के अनुसार "एक प्रतिज्ञप्ति की सत्यता तभी निर्धारित हो सकती है जब व्यवहारिक जीवन में इसकी उपयोगिता हो।

79. निम्न में से कौन-सा युग्म सुमेलित है?

(a) विट्गेन्सटाइन-अपूर्ण प्रतीक
(b) हुस्सर्ल-अर्थ एवं प्रयोग
(c) रसल-कोष्ठकता
(d) जेम्स-व्यवहारवाद

Ans. (d : व्यवहारवाद एक नवीन दार्शनिक विचारधारा है वर्तमान युग में दर्शन एवं शिक्षा के क्षेत्र में इस विचारधारा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। जेम्स एक व्यवहारवादी दार्शनिक है।

80. यदि p और q सत्य है तो निम्न में से कौन-सा सत्य है?

(a) $-(p \supset Q)$ (b) $p \supset -Q$
(c) $-p \supset -Q$ (d) $-(-p \supset Q)$

Ans. (c) : p और q के सत्य होने पर $-p \supset -Q$ भी सत्य होगा।

81. देवऋण से कैसे उऋण हुआ जा सकता है।

(a) ब्रह्मचर्य द्वारा (b) सन्तानोत्पत्ति द्वारा
(c) यज्ञ-क्रिया द्वारा (d) ईश्वर-प्राणिधान द्वारा

Ans. (c) : भारतीय विचार परंपरा में कुल चार ऋणों का उल्लेख है-(I) देव ऋण, (II) ऋषि ऋण (III) पितृ ऋण (IV) ब्रह्म ऋण। चारों ऋणों को उतारना प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य माना गया है। देव ऋण से उऋण होने के लिए यज्ञ आदि का विधान किया गया है।

82. जैन दर्शन के अनुसार अणुव्रत है :

(a) सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह
(b) केवल ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह
(c) ब्रह्मविवर्तवाद
(d) असत्कार्यवाद

Ans. (a) : जैन दर्शन के अनुसार अणुव्रत की संख्या पांच है-
(I) सत्य-राग द्वेष से युक्त असत्य भाषा का त्याग।
(II) अहिंसा-जीव हिंसा का परित्याग अहिंसा है।
(III) अस्तेय-दूसरे की वस्तु चुराने का त्याग अस्तेय है।
(IV) ब्रह्मचर्य-यौन भावना का परित्याग ही ब्रह्मचर्य है।
(V) अपरिग्रह-सांसारिक वस्तुओं से निर्लिप्तता अपरिग्रह है।

83. 'षड् पारमिताऐं' सम्बंधित हैं-

(a) बौद्ध दर्शन (b) सांख्य दर्शन
(c) चार्वाक दर्शन (d) न्याय दर्शन

Ans. (a) : बौद्ध दर्शन के महायान ग्रंथ के अनुसार छः परिमिताएं निम्न है-
(I) दान पारमिता, (II) शील पारमिता, (III) शान्ति पारमिता, (IV) वीर्य पारमिता, (V) ध्यान पारमिता, (VI) प्रज्ञा पारमिता।

84. मनोवैज्ञानिक सुखवाद मानता है कि प्रकृति ने मनुष्य को दो संप्रभु के अधीन रखा है, वे हैं

(a) उचित और शुभ (b) सुख और दुःख
(c) साध्य और साधन (d) शुभ और कर्त्तव्य

Ans. (b) : मनोवैज्ञानिक सुखवाद मानता है कि सभी मानवीय क्रियाएं अंततः इच्छाओं से ही प्रेरित होती हैं। मनोवैज्ञानिक सुखवाद यह भी मानता है कि प्रकृति ने मनुष्य को दो संप्रभु सुख और दुख के अधीन रखा है।

85. ए.जे. एयर के अनुसार नीति के कथन होते है :

(a) संज्ञानात्मक (b) अ-संज्ञानात्मक
(c) विश्लेषणात्मक (d) प्रागानुभविक

Ans. (b) : ए.जे. एयर के अनुसार असंज्ञानात्मक सिद्धान्त यह मानता है कि नीति के कथन न तो सही है और न तो झूठे क्योंकि वे वास्तविक प्रस्तावों को व्यक्त नहीं करते। असंज्ञानात्मक का तात्पर्य है कि गैर संज्ञानात्मक दृष्टिकोण नैतिक कथन के अंतर्गत आते हैं।

86. जैन नीतिशास्त्र में 'त्रिरत्न' संकेत करता है।

(a) सम्यक स्मृति, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र
(b) सम्यकदर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र
(c) सम्यकदर्शन, सम्यक स्मृति और सम्यक ज्ञान
(d) सम्यकदर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक स्मृति

Ans. (b) : जैव दर्शन में त्रिरत्न को मोक्ष का साधन माना गया है। त्रिरत्न (सम्यक दर्शन, सघ्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र) के सम्मिलित सहयोग से ही मोक्ष संभव है। त्रिरत्न की संक्षिप्त व्याख्या निम्नवत है-
सम्यक दर्शन-सत्य के प्रति श्रद्धा की भावना रखना।
सम्यक ज्ञान-जीव और अजीव के मूल तत्वों का पूर्ण ज्ञान।
सम्यक चरित्र-हितकर कार्यों का आचरण और अहितकर कार्यों का परित्याग।

87. 'रंग अनित्य है क्योंकि वह श्रव्य है' यह किसका उदाहरण है :

(a) स्वरुपसिद्धि हेत्वाभास (b) बाधित हेत्वाभास
(c) विरुद्ध हेत्वाभास (d) अनेकान्तिक हेत्वाभास

Ans. (a) : रंग अनित्य है क्योंकि यह श्रव्य है यह स्वरूपसिद्धि हेत्वाभास का उदाहरण है। स्वरूप सिद्ध हेत्वाभास वहाँ होता है जहाँ पक्ष तो असत नहीं किन्तु जहाँ स्वरूप ही ऐसा है कि वह पक्ष में नहीं रह सकता। जैसे रंग दृश्य होने के कारण अनित्य है।

88. नैयायिकों के अनुसार पंचावयव अनुमान के अवयवों का सही क्रम है :

(a) उदाहरण, प्रतिज्ञा, हेतु, उपनय, निगमन
(b) प्रतिज्ञा, उदाहरण, हेतु, उपनय, निगमन
(c) प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन
(d) प्रतिज्ञा, हेतु, उपनय, उदाहरण, निगमन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : अनुमान के पंचावयव क्रमानुसार निम्न प्रकार से है-
(I) प्रतिज्ञा' -अनुमान द्वारा जिस वाक्य को सिद्ध करना चाहते हैं।
(II) हेतु-प्रतिज्ञा को सिद्ध करने के लिए दी जाने वाली युक्ति।
(III) उदाहरण-जिस उक्ति के आधार पर साध्य को प्रमाणित किया जाता है उसकी पुष्टि के लिए दृष्टांत उपस्थित करना उदाहरण है।
(IV) उपनय-उदाहरण के साथ हेतु और साध्य का व्यापक सम्बन्ध दिखलाने के पश्चात् अपने पक्ष में उसे दिखलाना ही उपनय है।
(V) निगमन-अनुमान का सिद्ध हो जाना निगमन कहलाता है।

89. वैज्ञानिक आगमन आरम्भ होता है :
(a) प्राक्कल्पना के प्रतिपादन से
(b) तथ्यों के अवलोकन और विश्लेषण से
(c) प्राक्कल्पना के परीक्षण से
(d) प्रमाण से

Ans. (a) : जब किसी वर्ग के कुछ सदस्यों के गुण ज्ञात हों तो उनके आधार पर उस वर्ग विशेष के गुणों के बारे में अनुमान लगाना आगमन कहलाता है। जैसे अ.ब.स. आदि मरणशील प्राणी हैं इस आधार पर कहा जा सकता है कि सभी मनुष्य मरणशील प्राणी हैं। वैज्ञानिक आगमन का आरम्भ प्राकल्पना के प्रतिपादन से होता है।

90. दण्ड का वह सिद्धांत जो फाँसी की सजा का अनुमोदन करता है :
(a) सुधारात्मक
(b) प्रतिकारात्मक
(c) सुधारात्मक और प्रतिकारात्मक दोनों
(d) निरोधात्मक

Ans. (b) : दण्ड का प्रतिकारात्मक सिद्धांत फांसी की सजा का अनुमोदन करता है। प्रतिकारात्मक सिद्धांत के अनुसार जब कोई अपराधी कानून तोड़ता है तो न्याय की यह मंशा होती है कि वे बदले में भुगतें और अपराध की प्रतिक्रिया अपराध के समानुपाती हो।

91. श्री अरविन्द के अनुसार विकास की त्रिविध प्रक्रिया का सही क्रम क्या है?
(a) उर्ध्वीकरण, विस्तारण और एकीकरण
(b) विस्तारण, उर्ध्वीकरण, और एकीकरण
(c) एकीकरण, उर्ध्वीकरण और विस्तारण
(d) एकीकरण, विस्तारण और उर्ध्वीकरण

Ans. (b) : अरबिन्दो कहते हैं कि मानव विकास की वर्तमान स्थिति अस्तित्व के विकास में एक मध्यवर्ती चरण है जो आत्मा के प्रकट होने और सभी चीजों में देवत्व के आत्म प्रकटीकरण के रास्ते पर है। श्री अरबिन्द के अनुसार विकास की विविध प्रक्रिया होती है जिसका सही क्रम इस प्रकार है-(I) विस्तारण, (II) उर्ध्वीकरण, (III) एकीकरण।

92. 'उठो, जागो और रूको मत जब तक लक्ष्य प्राप्त न कर लो' ये कथन किसका है?
(a) डॉ. राधाकृष्णन (b) श्री अरविन्द
(c) स्वामी विवेकानन्द (d) एम.एन. रॉय

Ans. (c) : स्वामी विवेकानंद पुनर्जागरण के अग्रदूतों में से एक थे। विवेकानंद ने सामाजिक और आध्यात्मिक जागृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनका प्रसिद्ध नारा था "उठो, जागो, और रूको मत जब तक लक्ष्य न प्राप्त कर लो।"

93. सूची-I और सूची-II का मिलान कीजिये और नीचे दिये गये कूट से सही उत्तर का चयन कीजिये :

सूची-I	सूची-II
1. कर्ता स्वतन्त्रता के रूप में	(i) श्री अरविन्द
2. आध्यात्मवादी सत्	(ii) रवीन्द्रनाथ टैगोर
3. सार्वभौमिक धर्म	(iii) विवेकानन्द
4. जीवन देवता	(iv) के.सी. भट्टाचार्य

कूट संकेत :
(a) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii), d-(iv)
(b) 1-(i), 2-(iii), 3-(ii), d-(iv)
(c) 1-(iv), 2-(i), 3-(iii), d-(ii)
(d) 1-(iv), 2-(ii), 3-(i), d-(iii)

Ans. (c) : सही उत्तर निम्न प्रकार है-

सूची-I	सूची-II
कर्ता स्वतन्त्रता के रूप में	के.सी. भट्टाचार्य
आध्यात्मवादी सत्	श्री अरविन्द
सार्वभौमिक धर्म	विवेकानन्द
जीवन देवता	रवीन्द्रनाथ टैगोर

94. निम्न में से कौन-सा सही सुमेलित नहीं है :
(a) अम्बेडकर-जाति का अस्तित्व मिटाना
(b) के.सी. भट्टाचार्य-कर्ता स्वतन्त्रता के रूप में
(c) अरविन्द-एकीकृत योग
(d) एम.एन. रॉय-साधना

Ans. (d) : सही सुमेल इस प्रकार है-

एम.एन. राय	उत्कट मानववाद
अम्बेडकर	जाति का अस्तित्व मिटाना
के.सी. भट्टाचार्य	कर्ता स्वतंत्रता के रूप में
अरबिन्द	एकीकृत योग

95. श्री अरविन्द के अनुसार सही क्रम क्या है :
(a) जड़, प्राण, मन, उच्चतर मन
(b) उच्चतर मन, प्राण, जड़, मन
(c) मन, प्राण, जड़, उच्चतर मन
(d) जड़, मन, प्राण, उच्चतर मन

Ans. (a) : अरबिन्द ने मस्तिष्क की धारणा को स्पष्ट करते हुए बताया कि मस्तिष्क के विचार स्तर चित्त, मनस, बुद्धि तथा अंतर्ज्ञान होते हैं जिनका क्रमशः विकास होता है। विकास की प्रक्रिया का सही क्रम इस प्रकार है- जड़, प्राण, मन, उच्चतर मन।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

96. नारीवाद का मुख्य लक्ष्य है :
(a) नारी को हस्तान्तरण से सुरक्षित करना
(b) अल्पसंख्यकों के अधिकारों का समर्थन
(c) समाज के पितृसत्तात्मक स्वरूप को परिवर्तित करना
(d) मतदान व्यवहार में परिवर्तन

Ans. (c) : नारीवाद एक ऐसी विचारधारा है जिसके चिन्तन का केन्द्रबिन्दु 'नारी' है। 'नारीवाद' सम्पूर्ण नारी जाति के हित की बात करता है। 'नारीवाद' का मुख्य लक्ष्य है समाज के पितृसत्तात्मक स्वरूप को परिवर्तित करना।

97. विज्ञान की कसौटी निम्न में से किसको सम्मिलित नहीं करती?
(a) प्राक्कल्पना (b) असत्य सिद्ध करने योग्य
(c) परीक्षणीयता (d) अन्तःप्रज्ञा

Ans. (d) : विज्ञान की कसौटी में सम्मिलित है-
(I) प्राक्कल्पना, (II) असत्य सिद्ध करने योग्य, (III) परीक्षणीयता
स्पष्ट है 'अन्तःप्रज्ञा' विज्ञान की कसौटी में सम्मिलित नहीं है।

98. प्रभाकर के अन्विताभिधानवाद के अनुसार-
(a) शब्द स्वतन्त्र रूप से अर्थपूर्ण होते है
(b) शब्दों का स्थायी अर्थ होता है
(c) शब्द संदर्भानुसार अर्थ ग्रहण नहीं करते है
(d) शब्द अन्य शब्दों के प्रसंग में अर्थपूर्ण होते है

Ans. (d) : प्रभाकर के अन्विताभिधानवाद के अनुसार "वाक्य अपने आप में सार्थक है उसे सार्थक शब्दों के योग से बनाने की आवश्यकता नहीं। इस सिद्धांत के अनुसार जब शब्द आज्ञार्थक वाक्य में अन्य शब्दों से अन्वित होता है तभी वह अर्थ'-विशेष का अभिधान करता है। इनके अनुसार शब्द, अन्य शब्दों के प्रसंग में अर्थपूर्ण होता है।

99. 'तत्त्वत्रय' है-
(a) अविद्या, अध्यास और अज्ञान
(b) अविद्या, जीव और अजीव
(c) जीव, अजीव और बन्धन
(d) चित्त, अचित्त और ईश्वर

Ans. (d) : डेकार्ट दर्शन के अनुसार 'तत्वत्रय' में चित्त, अचित्त और ईश्वर आते हैं। ये तीनो तत्व अर्थात द्रव्य है। डेकार्ट के अनुसार द्रव्य की सत्ता स्वतंत्र है।

100. बन्धन दो प्रकार का होता है-भावबन्ध और द्रव्य बन्ध-यह मत किस दर्शन से सम्बंधित है?
(a) न्यायदर्शन में (b) जैन में
(c) वेदान्त में (d) योग में

Ans. (b) : जैन दर्शन के अनुसार बन्धन दो प्रकार के है-(I) भावबन्ध, (II) द्रव्यबंध।
कषाय और कर्म का उदय भावबन्ध है। तथा कर्म-पुदगलों का जीव में घुसकर उसे बाँध लेना द्रव्यबंध हैं।

101. वैशेषिक दर्शन के अनुसार सार्वभौमिक 'गोत्व' है?
(a) शाश्वत और अनेक
(b) अशाश्वत और अनेक
(c) अशाश्वत और एक
(d) शाश्वत, एक और जो अनेक में निवास करता है।

Ans. (d) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार सार्वभौमिक गोत्व शाश्वत, एक और जो अनेक में निवास, करने वाला होता है।

102. "ईश्वर प्रणिधान" का प्रत्यय स्वीकार किया है-
(a) न्याय (b) रामानुजाचार्य
(c) योग (d) मीमांसा

Ans. (c) : योग दर्शन में मूलतः ईश्वर का व्यावहारिक महत्व है। योग दर्शन का मुख्य उद्देश्य है चित्तवृत्तियों का निरोध, जिसकी प्राप्ति 'ईश्वर प्राणिधान' से ही सम्भव है। ईश्वर प्राणिधान का अर्थ है 'ईश्वर की भक्ति'। यही कारण है कि योग दर्शन में ईश्वर को ध्यान का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण माना गया है।

103. निम्न में से कौन-सा तर्क न्याय के द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए नहीं दिया गया?
(a) वाक्यात (b) धृत्यादे
(c) अदृष्टात् (d) अपूर्व

Ans. (d) : न्याय के द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए दिए गए तर्क-
(I) वाक्यात।
(II) धृत्यादे।
(III) अदृष्टात
स्पष्ट है 'अपूर्व' न्याय दर्शन के अनुसार ईश्वर के अस्तित्व हेतु तर्क नहीं है।

104. न्याय के अनुसार निम्न में से कौन-सा प्रमा का प्रकार है।
(a) तर्क (b) उपमान
(c) विपर्यय (d) संशय

Ans. (b) : न्याय दर्शन के अनुसार प्रभा चार प्रकार की होती है। ये हैं प्रत्यक्ष, अनुमिति, शब्द और उपमिति। प्रमा की प्राप्ति जिस साधन के द्वारा होती है उसे 'प्रमाण' कहा जाता है। न्याय के अनुसार प्रमाण चार प्रकार के है-प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द और उपमान।

105. पूर्व मीमांसा के अनुसार निम्न में कौन-सा गुण प्रमा की आवश्यक शर्त नहीं है?
(a) कारण दोषरहित (b) बाधक ज्ञान रहित
(c) अग्रहीतग्राही (d) ईश्वरकृत

Ans. (d) : पूर्व मीमांसा के अनुसार प्रमा के लिए आवश्यक गुण-
(I) कारण दोषरहित।
(II) बाधक ज्ञान रहित।
(III) अग्रहीतग्राही।
स्पष्ट है 'ईश्वरकृत' गुण प्रमा की आवश्यक शर्त नहीं है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

106. न्याय के अनुसार वैध ज्ञान (प्रमा) की मुख्य विशेषता है :

(a) अर्थक्रियाकारित्व
(b) तर्क संगत
(c) बाधक ज्ञानरहित
(d) सफल क्रिया प्रवृत्ति

Ans. (d) : न्याय दर्शन के अनुसार वैध ज्ञान (यथार्थ ज्ञान) प्रमा है। न्याय दर्शन में प्रमा की तीन विशेषताई बतलाई गयी है-
(I) अनुभवत्व
(II) असंदिग्धत्व
(II) यथार्थत्व
सफल क्रिया प्रवृत्ति को प्रमा की मुख्य विशेषता माना गया है।

107. नव्य नैयायिक गंगेश के अनुसार 'प्रत्यक्ष' है-

(a) सामान्य लक्षण
(b) इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष
(c) साक्षात प्रतीति
(d) योगज

Ans. (c) : नव्य न्याय दर्शन के प्रणेता गंगेश उपाध्याय हैं। इन्होंने पुराने न्याय दर्शन को ही आगे बढ़ाया इन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'तत्वचिन्तामणि' में अद्वैत वेदान्त के कुछ सिद्धांतों का समर्थन किया और न्यायदर्शन के कुछ सिद्धान्तों का खण्डन किया है। इन्होंने साक्षात प्रतीति को 'प्रत्यक्ष' माना है।
नव्य न्याय में व्याख्यान कारण को कारण कहकर असाधारण कारण का परिष्कार किया गया है अतः इन्द्रिय प्रत्यक्ष ही प्रमाण है, क्योंकि इन्द्रियां ही यहाँ व्याख्यान हैं।

108. "देवदत्त दिन में भोजन नहीं करता है फिर भी वह मोटा होता जा रहा है। अतः वह निश्चित रूप से रात में भोजन करता होगा" यह किस प्रमाण का उदाहरण है?

(a) अभाव (b) अनुपलब्धि
(c) अनुमान (d) अर्थापत्ति

Ans. (d) : "देवदत्त दिन वे भोजन नहीं करता फिर भी वह मोटा होता जा रहा है। अतः वह निश्चित रूप से रात में भोजन करता होगा।" यह अर्थापत्ति नामक प्रमाण का उदाहरण है।
मीमांसा दर्शन के अनुसार अर्थापत्ति वह आवश्यक कल्पना है जिसके द्वारा किसी अदृश्य विषय की कल्पना की जाती है। अर्थापत्ति के द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे किसी अन्य प्रमाण से पाना असम्भव है। उक्त उदाहरण में देवदत्त रात में अवश्य खाता है-का ज्ञान प्रत्यक्ष नहीं होता है क्योंकि देवदत्त को हम रात में खाते हुए नहीं देख पाते। प्रत्यक्ष के लिए इन्द्रियों का विषय के साथ सम्पर्क अनिवार्य है।

109. किस दर्शन के अनुसार 'शब्द' अपना अर्थ परम्परा और ईश्वर से प्राप्त करता है?

(a) मीमांसा (b) न्याय
(c) सांख्य (d) चार्वाक

Ans. (b) : न्याय दर्शन में शब्द को एक स्वतंत्र प्रमाण के रूप में माना गया है। न्याय दर्शन में शब्द का विभाजन दो वर्गों में हुआ- (I) वैदिक शब्द, (II) लौकिक शब्द। वैदिक शब्द संशयहीन होता है तथा लौकिक शब्द संदेहयुक्त भी हो सकते हैं।
लौकिक शब्द मानवकृत होते है जबकि वैदिक शब्द ईश्वरकृत होते हैं। वैदिक शब्द ईश्वरीय वचन होने के कारण सत्य होते हैं जबकि लौकिक शब्द सांसारिक मनुष्य के वचन होने के कारण सत्य और असत्य दोनों हो सकते हैं। अतः स्पष्ट है शब्द अपना अर्थ, परम्परा (लोक) एवं ईश्वर (वेद) से प्राप्त करता है।

110. सांख्य के अनुसार पुरुष है :

(a) विकास का कार्य
(b) विकास का कारण
(c) न तो कार्य और न ही कारण
(d) प्रकृति पर आश्रित

Ans. (c) : सांख्य दर्शन के अनुसार पुरुष कार्य कारण की शृंखला से मुक्त है। पुरुष को न तो किसी वस्तु का कारण कहा जा सकता है और न कार्य। कार्य और कारण शब्द का प्रयोग किसी पुरुष पर किया जाए तो यह प्रयोग अनुचित होगा।

111. न्याय दर्शन के अनुसार बोधगम्य वाक्य की चार शर्तों का सही क्रम है-

(a) आकांक्षा, योग्यता, सन्निधि, तात्पर्य
(b) सन्निधि, योग्यता, आकांक्षा, तात्पर्य
(c) सन्निधि, आकांक्षा, योग्यता, तात्पर्य
(d) आकांक्षा, सन्निधि, योग्यता, तात्पर्य

Ans. (a) : न्याय दर्शन के अनुसार बोधगम्य वाक्य की चार शर्तें इस प्रकार हैं-
(1) **आकांक्षा**-वाक्य सार्थक तभी हो सकता है जब उसके शब्दों में पारस्परिक शब्दों की योग्यता हो।
(2) **योग्यता**-योग्यता का अर्थ है "पारस्परिक विरोध का अभाव"। जैसे-आग से सींचो। यहाँ शब्द आत्म विरोधी है क्योंकि आग से सींचना संभव नहीं है।
(3) **सन्निधि**-सन्निधि का तात्पर्य है-स्थान अथवा समय की समीपता।
(4) **तात्पर्य**-कहने वाले अथवा लिखने वाले का अभिप्राय जानना।

112. देकार्ते ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करते है :

(a) जन्मजात प्रत्यय से
(b) 'कोगिटो इरगो सम' से
(c) सन्देह की विधि से
(d) पिनीयल ग्रंथी से

Ans. (a) : डेकार्ट प्रसिद्ध गणितज्ञ, दार्शनिक और वैज्ञानिक थे इन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को जन्मजात प्रत्यय से सिद्ध किया।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

113. प्लेटों के दर्शन को जाना जाता है :

(a) वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद (b) व्यक्तिनिष्ठ प्रत्ययवाद
(c) प्रतिनिधित्ववाद (d) यथार्थवाद

Ans. (a) : प्लेटो का दर्शन 'वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद' के नाम से जाना जाता है। प्लेटो के अनुसार "संसार भौतिकता में नहीं है बल्कि उसकी वास्तविकता प्रत्ययों एवं विचारों से है।" मनुष्य का मन प्रत्ययों का निर्माण करता है।

114. "वास्तविक बौद्धिक है और बौद्धिक ही वास्तविक है" यह दर्शन है-

(a) हुसर्ल का (b) हेगल का
(c) ह्यूम का (d) रसेल का

Ans. (b) : जर्मन दार्शनिक हेगल के अनुसार दर्शन का लक्ष्य परमतत्व के विकास का अध्ययन करना है। हेगल अपने दर्शन में वास्तविक को बौद्धिक और बौद्धिक को वास्तविक मानते हैं।

115. ह्यूम के अनुसार आत्मा का अस्तित्व नहीं है क्योंकि :

(a) मुझे तेरे अन्दर किसी चेतन नित्य सत्ता की जानकारी नहीं है।
(b) आत्मा के कोई जन्मजात प्रत्यय का ज्ञान मुझे नहीं है।
(c) आत्मा और शरीर में कोई कारण-कार्य संबंध नहीं है।
(d) आत्मा अमर है।

Ans. (a) : ह्यूम अनुभववादी दार्शनिक हैं। ह्यूम का मानना है कि आत्मा का अस्तित्व नहीं है क्योंकि मुझे मेरे अंदर किसी चेतन नित्य सत्ता की जानकारी नहीं है।

116. हुसर्ल समर्थन करते हैं :

(a) निरपेक्ष अनुभववाद का
(b) अत्कृष्ट मानववाद का
(c) दृष्यप्रपंचवाद
(d) अस्तित्ववाद

Ans. (c) : हुसर्ल अपने दर्शन में दृश्यप्रपंचवाद (Phenomenology) का समर्थन करते हैं।

117. निम्नलिखित में से किस विचारक का यह मानना है कि सत्य वह जिससे प्रयोजन सफल होता है?

(a) विलियम जेम्स (b) सार्त्र
(c) एयर (d) रसेल

Ans. (a) : विलियम जेम्स एक अमेरिकी दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक थे। इनका मानना है कि सत्य वह है जिससे प्रयोजन सफल होता है।

118. मानवीय संदर्भ में अस्तित्व सार का पूर्वगामी है, यह मानना है-

(a) हाइडेगर (b) विटगेन्सटाईन
(c) सार्त्र (d) जी.ई. मूर

Ans. (c) : ज्ञान पाल सार्त्र एक फ्रेंच दार्शनिक हैं। इनका दर्शन अस्तित्ववाद के नाम से जाना जाता है। सार्त्र का मानना है कि "मानवीय संदर्भ में अस्तित्व सार का पूर्वगामी है।" अर्थात अस्तित्व सार से पहले आता है।

119. लॉक मानते हैं ज्ञान के संदर्भ में

(a) संसक्तता सिद्धांत को
(b) संवादिता सिद्धांत को
(c) बौद्धिकता सिद्धांत को
(d) अन्तःप्रज्ञात्मक सिद्धांत को

Ans. (b) : ब्रिटिश दार्शनिक लाक की गणना अनुभववादी दार्शनिकों में होती है। लाक ज्ञान (Knowledge) के संदर्भ में संवादिता सिद्धांत को मानते हैं।

120. निम्न में से विटगेन्सटाईन में किस कथन को प्रतिपादित किया?

(a) मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ।
(b) मैं हूँ इसलिए मैं सोचता हूँ।
(c) जहाँ कोई बोल नहीं सकता वहां उसे चुप रहना चाहिए।
(d) सत्ता दृश्यता है।

Ans. (c) : जहाँ कोई बोल नहीं सकता उसे वहाँ चुप रहना चाहिए- विटगेन्सटाइन।
मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ-डेकार्ट।
सत्ता दृश्यता है-बर्कले।

121. किस के अनुसार वस्तुओं के बीच द्वन्द्वात्मक संबंध होता है?

(a) सुकरात (b) प्लेटो
(c) मार्क्स (d) देकार्ते

Ans. (c) : मार्क्स की गणना उन्नीसवीं शताब्दी के महान विद्वानों में होती है। यह अर्थशास्त्री, दार्शनिक, समाजशास्त्री और वैज्ञानिक समाजवाद के प्रणेता थे। इनका द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का सिद्धांत एक क्रांतिकारी सिद्धांत है जिसमें इन्होंने बताया कि वस्तुओं के बीच द्वन्द्वात्मक संबंध होता है।

122. "किसी भी वाक्य के सार्थक होने का अर्थ है कि वह सिद्धांत रूप से सत्यापनीय हो, या तो सशक्त रूप से या दुर्बल रूप से", यह मानना है :

(a) ए.जे. ऐयर (b) विटगेन्सटाईन
(c) कारनेप (d) शिलिक

Ans. (a) : ए.जे. एयर अपने सत्यापनीय सिद्धांत के लिए जाने जाते हैं। इनका मानना है कि "किसी भी वाक्य के सार्थक होने का अर्थ है कि वह सिद्धांत रूप से सत्यापनीय हो या तो सशक्तरूप से या दुर्बल रूप से।"

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

123. आगमनात्मक युक्ति की मुख्य विशेषता है-
(a) निष्कर्ष केवल संभावित होता है।
(b) आधार वाक्य निश्चित साक्ष्य प्रदान करते हैं।
(c) तर्कयुक्ति सदैव तर्कसंगत होती है।
(d) तर्कयुक्ति वैध होती है।

Ans. (a) : आगमनात्मक तर्क वाक्य में विशेष से सामान्य की ओर चला जाता है। आगमनात्मक तर्क वाक्य में निष्कर्ष आधार वाक्यों से अधिक व्याप्त होता है। आगमनात्मक तर्क वाक्यों में सर्व प्रथम विभिन्न तर्क वाक्यों का प्रयोग करके एक संभावति निष्कर्ष की प्राप्ति करते हैं। इस प्रकार के तर्क वाक्य सामान्यीकरण एवं सिद्धांत निर्मा में सहायक होते हैं।

124. सभी मनुष्य मरणशील हैं। सुकरात मनुष्य है। अतः सुकरात मरणशील है। उक्त उक्ति है-
(a) आगमनात्मक (b) सत्य
(c) तर्कसंगत (d) निगमनात्मक

Ans. (d) : सभी मनुष्य मरणशील हैं। सुकरात मनुष्य है। अतः सुकरात मरणशील है। यह उक्ति 'निगमनात्मक' है। निगमनात्मक उक्ति में सामान्य से विशेष की ओर अग्रसर होते हैं।

125. विपरीत कथनों की मुख्य विशेषता है कि
(a) वह एक साथ असत्य नहीं हो सकते
(b) वह एक साथ सत्य नहीं हो सकते
(c) वह निषेधात्मक होते हैं।
(d) दोनों विशेषात्मक कथन होते हैं।

Ans. (b) : एक साथ सत्य न होना यह विपरीत कथनों की मुख्य विशेषता होती है।

126. ''सभी भारतीय ईमानदार है'' तर्कवाक्य का प्रतिपरिवर्तन होगा-
(a) कोई भी भारतीय गैर ईमानदार नहीं है।
(b) कोई भी गैर भारतीय ईमानदार नहीं है।
(c) सभी गैर भारतीय गैर ईमानदार हैं।
(d) सभी गैर ईमानदार गैर भारतीय हैं।

Ans. (d) : प्रतिपरिवर्तन अव्यवहित अनुमान की वह प्रक्रिया है जिसमें निष्कर्ष का उद्देश्य पद आधार वाक्य के विधेय पद का पूरक एवं निष्कर्ष का विधेय पद आधार वाक्य के उद्देश्य पद का पूरक लिखकर एक ऐसे तर्क वाक्य को निष्कर्ष के रूप में निकालते हैं जिससे मूल तर्क वाक्य के अर्थ और निष्कर्ष के अर्थ में किसी प्रकार का अंतर नहीं आता है। जैसे-
सभी भारतीय ईमानदार हैं।
यह (A) प्रकार का तर्क वाक्य है। इसका प्रतिपरिवर्तन (A) में ही होगा-
सभी गैर ईमानदार गैर भारतीय है।

127. निरपेक्ष न्याय युक्ति के बारे में निम्न में से कौन-सा कथन गलत है।
(a) मानक आकार निरपेक्ष न्याय युक्ति में केवल तीन पद होने चाहिए।
(b) मानक आकार निरपेक्ष न्याय युक्ति में दो निषेधात्मक आधार वाक्य नहीं हो सकते।
(c) मानक आकार निरपेक्ष न्याय युक्ति में दो अंशव्यापी आधार वाक्य नहीं हो सकते।
(d) मानक आकार निरपेक्ष न्याय युक्ति में दो सर्वव्यापी आधार वाक्य नहीं हो सकते।

Ans. (d) : निरपेक्ष न्याय युक्ति की कुछ विशेषताएं है जैसे-
(I) मानक आकार निरपेक्ष न्याय वाक्य युक्ति में केवल तीन पद होने चाहिए।
(II) मानक आकार निरपेक्ष न्याय युक्ति में दो निषेधात्मक आधार वाक्य नहीं हो सकते।
(III) मानक आकार निरपेक्ष न्याय युक्ति में दो अंशव्यापी आधार वाक्य नहीं हो सकते।

128. निम्नलिखित में से कौन-सा यज्ञ गृहस्थ व्यक्ति के लिए आवश्यक नहीं है?
(a) भूत यज्ञ (b) मनुष्य यज्ञ
(c) देव यज्ञ (d) गुरू यज्ञ

Ans. (d) : भारतीय आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में विभिन्न प्रकार के यज्ञों का उल्लेख मिलता है यथा-ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ, गुरु यज्ञ, भूत यज्ञ आदि। गुरु यज्ञ, गृहस्थ व्यक्ति के लिए आवश्यक नहीं है।

129. बौद्ध दर्शन के किस सिद्धांत को मध्यम मार्ग के रूप मे जाना जाता है?
(a) क्षणिकवाद (b) प्रतीत्यसमुत्पाद
(c) संघातवाद (d) अष्टांग मार्ग

Ans. (b) : बौद्ध दर्शन में 'प्रतीत्यसमुत्पाद' के सिद्धांत को मध्यममार्ग के रूप में जाना जाता है। प्रतीत्य का अर्थ है किसी वस्तु के उपस्थित होने पर, समुत्पाद का अर्थ है किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति। इसलिए प्रतीत्य समुत्पाद का शाब्दिक अर्थ होगा एक वस्तु के उपस्थित होने पर किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति।

130. प्लेटो के अनुसार निम्न में से कौन-सा मुख्य सद्गुण नहीं है?
(a) साहस (b) विवेक
(c) सत्य (d) संयम

Ans. (c) : प्लेटो के अनुसार चार मुख्य सद्गुण हैं-
(I) विवेक
(II) साहस
(III) आत्म संयम
(IV) न्याय
स्पष्ट है कि प्लेटो ने 'सत्य' को मुख्य सद्गुण नहीं माना है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

131. ''हम चेतन रूप से सुख प्राप्त नहीं करते, और यदि हम जानते बूझते सुख प्राप्त करना भी चाहें तो हमें सुख की अनुभूति नहीं होगी'' सुख से संबंधित यह है-

(a) नैतिक सुखवाद (b) प्राकृतिक दोष
(c) मनोवैज्ञानिक सुखवाद (d) सुख का विरोधाभास

Ans. (d) : ''हम चेन रूप से सुख प्राप्त नहीं करते और यदि हम जानते बूझते सुख प्राप्त करना भी चाहे तो हमें सुख की अनुभूति नहीं होगी।'' यह कथन सुख का विरोधाभासी है।

132. उपयोगितावाद के अनुसार नैतिक कार्यों के मूल्यांकन का प्रमुख मापदण्ड है :

(a) अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम शुभ
(b) व्यक्ति का अधिकतम शुभ
(c) प्रत्येक व्यक्ति को साध्य के रूप में माने।
(d) कर्ता की इच्छा।

Ans. (a) : उपयोगितावाद की मान्यता है कि आचरण एक मात्र तभी नैतिक है जब वह अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख की अभिवृद्धि करता हो। उपयोगितावाद के प्रमुख प्रतिपादकों में जरमी बेंथम का नाम अग्रणी है।

133. नैतिकता के संज्ञानात्मक सिद्धांत, नैतिक वाक्यों के बारे में दावा करते हैं कि :

(a) नैतिक वाक्य सदैव सत्य होते हैं।
(b) नैतिक वाक्य प्रतिज्ञप्तियों को व्यक्त करते हैं अतः वह सत्य, या असत्य कहे जा सकते हैं।
(c) नैतिक वाक्यों की सत्यता का मौलिक आधार नहीं है।
(d) नैतिक वाक्य भावों को अभिव्यक्त करते हैं अतः उन्हें सत्य या असत्य नहीं कहा जा सकता।

Ans. (b) : नैतिकता के संज्ञानात्मक सिद्धांत का नैतिक वाक्यों के बारे में मत है कि नैतिक वाक्य प्रतिज्ञप्तियों को व्यक्त करते हैं अतः वह सत्य या असत्य कहे जा सकते हैं।

134. नैतिक प्रकृतिवाद यह दावा करता है कि:

(a) नीतिशास्त्र एक वर्णनात्मक विज्ञान है।
(b) नीतिशास्त्र एक मूल्यात्मक विज्ञान है।
(c) नैतिक प्रत्यय अंतःप्रज्ञा पर आधारित होते हैं।
(d) नैतिक प्रत्यय स्वतंत्रता की ओर ले जाते हैं।

Ans. (a) : नैतिक प्रकृतिवाद पाश्चात्य चिंतन की वह धारा है जो प्रकृति को मूल तत्व मानती है। इसी को वह ब्रह्माण्ड का कर्ता और उपादान मानती है। नैतिक प्रकृतिवाद का यह दावा है कि नीतिशास्त्र एक वर्णनात्मक विज्ञान है।

135. ''नैतिक प्रत्यय वर्णनात्मक और संवेगात्मक नहीं हैं अर्थ की दृष्टि से वह परामर्शात्मक हैं और एक मार्ग प्रशस्त करते हैं।'' इस मत का समर्थन किसके द्वारा किया गया?

(a) सी.एल. स्टीवेन्सन (b) आर.एम. हेयर
(c) जी.ई. मूर (d) ब्रेडले

Ans. (b) : आर.एम. हेयर का मत है कि ''नैतिक प्रत्यय वर्णनात्मक और संवेगात्मक नहीं हैं, अर्थ की दृष्टि से वह परामर्शात्मक हैं और एक मार्ग प्रशस्त करते हैं।''

136. निम्नलिखित में से किस दार्शनिक का सिद्धांत 'पदीप्त मन' से संबंद्ध है?

(a) डी.पी. चट्टोपाध्याय (b) जे. कृष्णामूर्ती
(c) विवेकानंद (d) श्री अरविन्द

Ans. (d) : प्रदीप्त मन (Illumined mind) का सिद्धांत श्री अरबिन्द का है।
डी.पी. चट्टोपाध्याय-मार्क्सवादी चिंतक-भौतिकवाद का सिद्धांत।
जे. कृष्णमूर्ति-मानसिक क्रांति का सिद्धांत।

137. उग्र मानववाद की अवधारणा को विकसित किया था-

(a) एम.के. गांधी (b) एम.एन. रॉय
(c) विवेकानंद (d) बी.आर. अम्बेडकर

Ans. (b) : एम.एन. राय मार्क्सवादी/गांधीवादी/वैज्ञानिक विकासवादी थे।
इन्हें उत्कट मानवतावाद के प्रतिपादन का श्रेय है।

138. निम्न में से कौन-सा विचारक 'अन्तः प्रज्ञा' को सत् को जानने का माध्यम मानता है?

(a) राधाकृष्णन (b) जे. कृष्णामूर्ती
(c) अरविन्द (d) अम्बेडकर

Ans. (a) : डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के महान दार्शनिकों में से एक थे। इनका मत है कि अन्तःप्रज्ञा, सत को जानने का सबसे अच्छा माध्यम है।''

139. जे. कृष्णामूर्ति के अनुसार सत्य ज्ञान का मूल आधार है-

(a) अप्रतिबंधित चेतना (b) गुरुओं द्वारा प्रदत्त ज्ञान
(c) प्रतिबंधित प्रतिक्रिया (d) धार्मिक ग्रंथों से स्वीकृत

Ans. (a) : मानसिक क्रांति, मस्तिष्क की प्रकृति और समाज में सकारात्मक परिवर्तन कैसे लाएं जैसे विषयों पर अपने विचार व्यक्त करने वाले जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार 'अप्रतिबंधित चेतना' सत्य ज्ञान का मूलाधार है।

140. निम्न में से कौन-सी शर्त सत्याग्रही के लिए अनिवार्य नहीं है?

(a) सत्याग्रही को ईमानदार व निष्ठवान होना चाहिए।
(b) सत्याग्रही को खुले-विचारों का होना चाहिए।
(c) सत्याग्रही को निर्भयी होना चाहिए।
(d) सत्याग्रही को भौतिक रूप से शक्तिशाली होना चाहिए।

Ans. (d) : सत्याग्रही के लिए कुछ आवश्यक शर्ते-
(I) सत्याग्रही को ईमानदार व निष्ठावान होना चाहिए।
(II) सत्याग्रही को खुले विचारों का होना चाहिए।
(III) सत्याग्रही को निर्भय होना चाहिए।
सत्याग्रही को भौतिकरूप से शक्तिशाली होना अनिवार्य शर्त नहीं है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

141. लोकायत : ''ए स्टडी इन एशियन्ट इंडियन मैटिरीयलइज़्म'' यह दार्शनिक ग्रन्थ किसके द्वारा रचित है?

(a) डी.पी. चट्टोपाध्याय (b) कृष्णामूर्ति
(c) अम्बेडकर (d) वात्स्यायन

Ans. (a) : 'लोकायत-ए स्टडी इन एंशिएन्ट इन्डियन मैटीरियल्जि्म' नामक ग्रंथ के रचयिता डी.पी. चट्टोपाध्याय हैं।

142. निम्नलिखित में नैतिक अर्थ में अच्छा शब्द का प्रयोग किस वाक्य में किया गया है?

(a) मेरा कुत्ता बहुत अच्छा है
(b) ताजमहल बहुत अच्छा है
(c) कलाकृति बहुत अच्छी है
(d) मेरा भाई अच्छा है

Ans. (d) : 'मेरा भाई अच्छा है।' इस वाक्य में अच्छा शब्द का प्रयोग नैतिक अर्थ में किया गया है।

143. जब हम नैतिक प्रत्ययों का प्रयोग हमारी भाषा में करते हैं तो हमारा निहितार्थ होता है कि

(a) कोई व्यक्ति ऐसा कार्य कर सकता है।
(b) किसी व्यक्ति को यह कार्य करने की आवश्यकता है।
(c) किसी व्यक्ति को यह कार्य अनिवार्यतः करना है।
(d) किसी व्यक्ति को यह कार्य करना चाहिए।

Ans. (d) : नैतिकता सदैव सकारात्मकता की अपेक्षा रखती है। नैतिक प्रत्ययों का प्रयोग जब हम हमारी भाषा में करते हैं तो हमारा निहितार्थ होता है कि ''किसी व्यक्ति को यह कार्य करना चाहिए।''

144. प्रयोग और निरिक्षण स्रोत है-

(a) प्रत्ययवादी ज्ञान के (b) वैज्ञानिक पद्धति के
(c) अन्तः प्रज्ञात्मक ज्ञान के (d) निगमनात्मक पद्धति के

Ans. (b) : कोई भी वैज्ञानिक/दार्शनिक किसी भी तथ्य को बगैर उसकी सत्यता की जांच के स्वीकार नहीं करता साथ ही किसी तथ्य का अनुसरण करने से पहले सुव्यवस्थित तरीके से उसकी सत्यता की जांच पड़ताल करता है ऐसा करने में जिस विधि/पद्धति का प्रयोग किया जाता है उसे वैज्ञानिक विधि कहते हैं। प्रयोग और निरीक्षण वैज्ञानिक पद्धति के श्रोत हैं।

145. वैज्ञानिक अन्वेषण की सहायता से हम खोज पाते है-

(a) इच्छित परिणाम
(b) जो भी हम खोजना चाहें
(c) हमारी पद्धति और उपकरणों के अनुसार जिन्हें वह प्राप्त करने में सक्षम हैं।
(d) हमारी कल्पना के अनुसार

Ans. (c) : वैज्ञानिक अन्वेषण किसी नियंत्रित प्रेक्षण का क्रमबद्ध एवं वस्तुनिष्ठ अभिलेख एवं विश्लेषण है जिसके आधार पर सामान्यीकरण, नियम या सिद्धांत विकसित किया जाता है। हमारी पद्धति और उपकरणों के अनुसार वैज्ञानिक अन्वेषण की सहायता से हम नहीं खोज पाते हैं जिन्हें प्राप्त करने में सक्षम हैं।

146. सर्वजीववाद (Hylozoism) का सिद्धांत यह मानता है कि

(a) ईश्वर, आत्मा, ब्रह्म अवास्तविक हैं।
(b) वर्तमान अतीत का बच्चा और भविष्य का पिता है।
(c) प्रकृति में सभी जीवित अर्थात् सक्रिय है।
(d) घटनाएँ परस्पर निर्भर हैं।

Ans. (c) : सर्वजीववाद वह सिद्धांत है जो यह मानता है कि आत्मा न केवल मनुष्यों में होती है वरन सभी, वनस्पतियों, चट्टानों तथा प्राकृतिक घटनाओं में भी होती है। यह सिद्धांत कभी-कभी इसके आगे जाकर शब्दों नामों उपमाओं आदि में भी आत्मा के अस्तित्व की बात करता है। इस सिद्धांत के अनुसार प्रकृति में सभी जीवित अर्थात् सक्रिय हैं।

147. निम्न में से कौन-सा सिद्धांत यह मानता है कि वस्तुओं के बीच द्वन्द्वात्मक संबंध होता है?

(a) द्वैतवाद (b) प्रत्ययवाद
(c) भौतिकवाद (d) समग्रवाद

Ans. (c) : मार्क्स के दर्शन को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद कहा जाता है। मार्क्स के लिए वास्तविकता विचार मात्र ही नहीं भौतिक सत्य है, विचार स्वयं पदार्थ का विकसित रूप है। मार्क्स और हेगल यह मानते है कि विरोधी तत्वों के संघर्ष द्वारा ही सत्य की प्रतिष्ठा होती है। भौतिकवाद सिद्धांत यह मानता है की वस्तुओं के बीच द्वंद्वात्मक सम्बन्ध होता है।

148. संरचनावाद का प्रत्यय दर्शनशास्त्र की किस शाखा से संबंधित है?

(a) विज्ञान दर्शन से (b) कला दर्शन से
(c) इतिहास दर्शन से (d) धर्म दर्शन से

Ans. (a) : संरचनावाद मानव विज्ञान की एक ऐसी पद्धति है जो संकेत विज्ञान और सहजता से परस्पर संबंध भागों की एक पद्धति के अनुसार तथ्यों का विश्लेषण करने का प्रयास करती है। संरचनावाद का प्रत्यय दर्शनशास्त्र की विज्ञान दर्शन शाखा से सम्बन्धित है।

149. काण्ट के अनुसार कार्य का शुभत्व निर्भर करता है :

(a) परिस्थितियों पर (b) परिणाम पर
(c) भावना पर (d) बौद्धिकता पर

Ans. (c) : काण्ट के अनुसार कार्य का शुभत्व न तो परिस्थितियों पर न तो परिणाम पर अथवा न भावना पर अपितु यह बौद्धिकता पर निर्भर करता है।

150. विज्ञान के अनुसार 'विकास' है :

(a) वस्तुओं की प्राकृतिक प्रक्रिया
(b) मनस की चेतना
(c) आध्यात्मिक प्रक्रिया
(d) वस्तुओं का प्रतिबिम्बन

Ans. (a) : विज्ञान की दृष्टि में विकास वस्तुओं की प्राकृतिक प्रक्रिया है जो सतत चलती रहती है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग असिस्टेंट प्रोफेसर-2017
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)

व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र

(परीक्षा तिथि : 29.06.2018)

1. Atheists are said to be in Indian Philosophy as-
भारतीय दर्शन में नास्तिक कहे जाते हैं-

(a) Who don't believe in God
जो ईश्वर में विश्वास नहीं करते
(b) Who don't believe in heaven and hell
जो स्वर्ग नर्क में विश्वास नहीं करते
(c) Who don't believe in Veda
जो वेदों में विश्वास नहीं करते
(d) Who don't believe in Upanishads
जो उपनिषदों में विश्वास नहीं करते

Ans. (c) : भारतीय दर्शन को दो शाखाओं में बाँटा गया है-
(I) आस्तिक दर्शन (II) नास्तिक दर्शन। आस्तिक दर्शन वे हैं जो वेदों की प्रामाणिकता में विश्वास करते हैं। इनमें मुख्य रूप से छः दर्शनों को माना गया है जैसे- न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त। तथा नास्तिक दर्शन के अंतर्गत वे आते हैं जो वेदों की प्रामाणिकता में विश्वास नहीं करते हैं जैसे- जैनदर्शन, बौद्ध दर्शन और चार्वाक दर्शन।

2. Which is known as the Fifth Veda?
पंचम वेद कौन है?

(a) Gita/गीता (b) Mahabharatha/महाभारत
(c) Purana/पुराण (d) Bhagawat/भागवत्

Ans. (b) : भारतीय दार्शनिक परंपरा में वेदों की संख्या चार मानी गई है जिन्हें ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद के रूप में जाना जाता है। इनके अतिरिक्त महाभारत को भी पांचवे वेद के रूप में, भारतीय दार्शनिक परंपरा में स्थान प्राप्त है। महाभारत को विश्व के सबसे लंबे साहित्यिक ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया जाता है। महाभारत का प्राचीन नाम जय संहिता भी है। इसमें कुल श्लोकों की संख्या एक लाख से भी अधिक है।

3. Who is the author of 'Beyond good and Evil'?
बियान्ड गुड एण्ड एविल किसकी रचना है?

(a) Nietzsche/नीत्शे (b) Locke/लॉक
(c) Spinoza/स्पिनोजा (d) Kant/कांट

Ans. (a) : 'बियाण्ड गुड एण्ड एविल' जर्मनी के महान दार्शनिक 'नीत्से' की रचना है। इन्होंने मनोविश्लेषण, अस्तित्ववाद और परिघटनामूलक चिंतन पर अधिक जोर दिया। 'बियाण्ड गुड एण्ड एविल' नामक रचना में नीत्से ने कहा की ''अच्छा आदमी बुरे आदमी के विपरीत है, न की केवल उन्हीं मूल आवेगों की एक अलग अभिव्यक्ति है जो बुरे आदमी में अधिक प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति पाते हैं।''

4. Brahmana Treatises are-
ब्राह्मण ग्रंथ है-

(a) Where there are illustrations of vedic mantras and plurality of rituals/जिनमें वैदिक मंत्रों की व्याख्या मिलती है और जहां कर्मकाण्डों का बाहुल्य है।
(b) Where there are Philosophical dialogues
जहाँ दार्शनिक संवाद है
(c) Written by Brahmins/जिसको ब्राह्मणों ने लिखा है
(d) Those written in Forest/जो जंगल में लिखे गये हैं

Ans. (a) : ब्राह्मण ग्रंथ कर्मकाण्ड प्रधान होते हैं इनमें वैदिक मंत्रों की व्याख्या मिलती है। ब्राह्मण ग्रंथो में मूल रूप से वेदों की गद्य में व्याख्या मिलती है। यह ग्रंथ वैदिक संस्कृत में लिखे गए हैं। हर वेदों के अपने अलग-अलग ब्राह्मण ग्रंथ हैं जैसे- ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रंथ-ऐतरेय, कौषीतकि।
सामवेद- पंचविंश, षडविंश, जैमिनीय।
यजुर्वेद- (I) शुक्ल यजुर्वेद- शतपथ ब्राह्मण।
(II) कृष्ण यजुर्वेद- तैत्रीय, मैत्रायणी, कठ, कपिष्ठल।
अथर्ववेद- गोपथ ब्राह्मण।

5. In which of the following Upanishad Indra-Virochan dialogue is found?
इंद्र-विरोचन संवाद किस उपनिषद में है?

(a) Chandogyopanishad/छान्दोग्योपनिषद
(b) Kenopanishad/केनोपनिषद
(c) Brihdaranaka Upnishad/बृहदारण्यक उपनिषद
(d) Ishopanishad/ईशोपनिषद

Ans. (a) : इन्द्र-विरोचन संवाद छान्दोग्य उपनिषद में मिलता है। पौराणिक परंपरा के अनुसार विरोचन को प्रहलाद का पुत्र माना जाता है। इन्द्र और विरोचन दोनो प्रजापति से शिक्षा प्राप्त करने गए थे जहाँ पर दोनों ने आत्मा की अमरता के बारे में शिक्षा प्राप्त किया था। विरोचन ने शिक्षा का दुरूपयोग किया और दैत्यों को शिक्षा देने लगे अंत में देवराज इन्द्र ने ब्राह्मण का रूप धारण कर विरोचन से उनका मस्तक दान स्वरूप मांग लिया।

6. Which of the following Upanishads mentions 'Pragyanam Brahma'?
प्रज्ञान ब्रहम किस उपनिषद में कहा गया है?

(a) Aitreyopanishad/एतरेयोपनिषद
(b) Chandogyopanishad/छान्दोग्योपनिषद
(c) Mandookya Upanishad/मांडूक्यउपनिषद
(d) Taitteriya Upanishad/तैत्तिरीय उपनिषद

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : ऐतरेय उपनिषद, ऋग्वेद का उपनिषद है ऐतरेय आरण्यक के अध्याय संख्या- 4, 5 और 6 को ऐतरेय उपनिषद कहा जाता है। ब्रह्म विद्या प्रधान होने के कारण इसे प्रज्ञानम् ब्रह्म भी कहा जाता है।

7. The nature of Brahman in Upanishad is defined as
उपनिषदों में ब्रहम के स्वरूप का वर्णन है-

(a) Immanent/अनतर्यामी
(b) Transcendent/परात्पर
(c) Immanent and Transcendent/अन्तर्यामी-परात्पर
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (c) : उपनिषदों में ब्रह्म के दो स्वरूप माने गए है- पर और अपर तथा सगुण और निर्गुण। परब्रह्म, निर्गुण, निर्विशेष, निष्कलुष और निरूपाधि है इसका निषेधात्मक वर्णन है। अपर ब्रह्म, सगुण, सविशेष, सोपाधि ईश्वर है। उपनिषद के अनुसार परम तत्व एक अद्वैत, अनन्त ब्रह्म है। पर अपर, सगुण निर्गुण में कोई मौलिक भेद नही है। इस प्रकार उपनिषदीय ब्रह्म अन्तर्यामी-परात्पर है।

8. The Atman imposed by the Awakened state is known as-
जाग्रत अवस्था से अवछिन्न आत्मा को कहते है-

(a) Vaishwanar/वैश्वानर
(b) Taijas/तेजस्
(c) Prajna/प्राज्ञ
(d) Tureeya/तुरीय

Ans. (a) : हिन्दू परंपरा के अनुसार मृत्यु और जन्म के बीच तीन अवस्थाएँ होती हैं- (I) जाग्रत (II) स्वप्न (III) सुषुप्ति। कुछ लोग ऐसे होते है जो एक ही समय में तीनो अवस्थाओं में रहते हैं, जागते हुए स्वप्न देख लेते है अर्थात् गहरी कल्पना में चले जाते हैं। उक्त तीनो अवस्थाओं से बाहर निकलकर खुद का अस्तित्व कायम कर लेने को ही जाग्रत अवस्था में अवच्छिन्न आत्मा कहते है, इसे ही दर्शन की परंपरा में 'वैश्वानर' कहा जाता है।

9. Avidya-Lesh is related to:
अविद्या-लेश सम्बंधित है-

(a) Videha Mukti/विदेह मुक्ति से
(b) Sadeha Mukti/संदेह मुक्ति से
(c) Maya/माया से
(d) All of three/तीनों से

Ans. (b) : वेदान्त दर्शन के अनुसार यथार्थतः आत्मा और ब्रह्म में कोई अंतर नही है। जब ब्रह्म के साक्षात्कार से आत्मा परमब्रह्म में सम्यक रूप से प्रतिष्ठित होकर देहादि के विकारों से उपर उठ जाती है तो यह स्थिति सदेह मुक्ति कही जाती है। दार्शनिक परंपरा मे यही अविद्या-लेश है।

10. In the context of Shrutis, Apaurusheya means-
श्रुति संदर्भो में अपौरूषेय का अर्थ है-

(a) Which is not created by man
जिसकी रचना किसी व्यक्ति ने ना की हो
(b) Rishis did not write the mantras but they are only seers/ऋषियों ने मंत्रो की रचना नही की अपितु उसके द्रष्टा मात्र है
(c) The Vedic sentences unfold the eternal truth/वेद वाक्य शाश्वत् सत्य का अनावरण करते हैं।
(d) All of these/सभी सही है

Ans. (d) : श्रुति के संदर्भ में अपौरूषेय परंपरा का अर्थ है- जो व्यक्ति द्वारा न रचे गए हों अर्थात् जिनकी रचना ऋषियों ने न की हो वे केवल उसके द्रष्टा मात्र हों। श्रुति के संदर्भ में अपौरूषेय का अर्थ यह भी माना जाता है की 'वेद शाश्वत सत्य हैं।'

11. Nididhyasan means
निदिध्यासन का आशय है-

(a) Meditation in sleep/निद्रा में होने वाला ध्यान
(b) To constantly meditate upon the nature of Brahmatma/ब्रहात्म के स्वरूप का सतत ध्यान
(c) A type of Asanas/आसनों एक प्रकार
(d) To listen to the experiences of the learned
ज्ञानी जन के अनुभवों के सुनना

Ans. (b) : भारतीय दार्शनिक विचार परंपरा के अनुसार जब समस्त वाह्य विकारों से मुक्त होकर ब्रह्मात्म के स्वरूप के सतत ध्यान की स्थिति आ जाती है तो इसे निदिध्यासन कहा जाता है।

12. Which of the following is the form of Unreal knowledge?
अयथार्थ ज्ञान का स्वरूप कौन है?

(a) Sanshaya (Doubt)/संशय
(b) Viparyaya (Error)/विपर्यय
(c) Tark (Reasoning)/तर्क
(d) All of these/सभी सही है

Ans. (d) : अयथार्थ ज्ञान के स्वरूप है- संशय, विपर्यय और तर्क।

13. Jiva and Ajiva are-
जीव और अजीव है-

(a) Anasti-kaya substance/अनस्तिकाय द्रव्य
(b) Asti-kaya substance/अस्तिकाय द्रव्य
(c) Both Anasti-kaya and Asti-kaya
अस्तिकाय और अनस्तिकाय द्रव्य दोनों
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (b) : जैन दर्शन के अनुसार जीव और अजीव आस्तिकाय द्रव्य हैं। जैन दर्शन के अनुसार जीव एक स्वतंत्र द्रव्य है, चेतना, जीव का असाधारण धर्म है। चेतना की दो अवस्थाएं हैं- अंतर्मुख और बहिर्मुख।
अजीव द्रव्य वे हैं जिनमें चेतना का अभाव होता है इसके पांच भेद हैं- पुदगल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

14. What is Leshya in Jaina Philosophy?
जैन दर्शन में लेश्या क्या है?
(a) The Paudgalic atmosphere created due to false vision, Pramad and Kashaya/मिथ्यादर्शन, प्रमाद और कषाय से उत्पन्न पौद्गलिक वातावरण
(b) The substances found in Pudgals
पुदगलों में पाया जाने वाला द्रव्य
(c) Relation of Jiva and Ajiva
जीव और अजीव का सम्बन्ध
(d) Avidya/अविद्या

Ans. (a) : जैन दर्शन के संदर्भ में लेश्या कर्म का एक सिद्धांत है। यह सिद्धांत कर्मों को आत्मा से लिप्त करता है, जिसके द्वारा आत्मा पुण्य पाप से अपने को लिप्त करती है अभिप्राय यह है की लेश्या, मिथ्यादर्शन, प्रमाद और कषाय से उत्पन्न पौदगलिक वातावरण है।

15. Which of the following is the attribute of Atma according to Vaisheshika Philosophy
वैशेषिक दर्शन में चेतना आत्मा का निम्नलिखित में से कौन सा गुण है
(a) Accidental Attribute/आगन्तुक गुण
(b) Natural Attribute/भाविक गुण है
(c) Universal Attribute/सार्वभौमिक गुण
(d) Secondary Attribute/द्वितीयक गुण

Ans. (a) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार आत्मा वह सत्ता है जो चैतन्य का आधार है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार आत्मा अमर है, यह अनादि और अनन्त है। इस दर्शन के अनुसार प्रत्येक गुण का कुछ न कुछ आधार है। इस गुण का आधार आत्मा है। चेतनता आत्मा का स्वरूप गुण नही अपितु आगन्तुक गुण है।

16. Kritapranash means
कृत प्रणाश है-
(a) What must be done!/क्या किया जाये
(b) The fruits of the karmas are never ruined
किये कर्मो का फल नष्ट नही होना
(c) The fruits of the karmas are ruined
किये कर्मो का फल नष्ट होना
(d) To get the fruits of other's karmas
दूसरे के कर्मो का फल मिलना

Ans. (b) : भारतीय विचार परंपरा के अनुसार कृत प्रणाश वह स्थिति है जिसमें मनुष्य द्वारा किए गए कर्मों का फल नष्ट नही होता है।

17. Who followed the momentary thought of Buddhism in modern era?
बौद्धो का क्षणिकवादी विचार आधुनिक काल में किसने अपनाया है
(a) Kant/कांट
(b) Berkeley/बर्कले
(c) Bergson/बर्गसां
(d) Satre/सार्त्र

Ans. (c) : बौद्धों का क्षणिकवादी सिद्धांत आधुनिक दार्शनिक बर्गसां ने भी अपनाया था। बौद्धों के क्षणिकवाद के अनुसार प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व क्षणमात्र के लिए ही रहता है। क्षणिकवाद के अनुसार विश्व की प्रत्येक वस्तु न केवल अनित्य है, अपितु क्षणभंगुर भी है।

18. Which of the following encompasses 'Right vision' and 'Right resolve'
निम्न में से कौन 'सम्यकदृष्टि' एवं 'सम्यक संकल्प' को समाहित करते है
(a) Conduct/शील के भीतर
(b) Concentration/समाधि के भीतर
(c) Knowledge/प्रज्ञा के अंदर
(d) All three/तीनो में

Ans. (c) : बौद्ध दर्शन में चार आर्यसत्यों के पालन के लिए अष्टांगिक मार्ग पर चलने पर जोर दिया गया है। इस दर्शन के अनुसार सम्यक दृष्टि और सम्यक संकल्प नामक मार्ग प्रज्ञा (ज्ञान) के अंदर समाए हैं। मिथ्या दृष्टि का अंत सम्यक दृष्टि से तथा अशुभ संकल्पों को सम्यक संकल्प से दूर किया जा सकता है।

19. The Prakriti of samkhya is
सांख्य की प्रकृति है-
(a) Non-eternal/अशाश्वत
(b) Eternal/शाश्वत
(c) Both Non-eternal and Eternal
दोनों अशाश्वत एवं शाश्वत
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (b) : सांख्य दर्शन प्रकृति को शाश्वत मानता है क्योंकि वह संसार की सभी वस्तुओं का मूल कारण है जो वस्तु संसार का मूल कारण है वह अशाश्वत नही हो सकती इसलिए प्रकृति को शाश्वत अर्थात् अनादि और अनंत कहा गया है।

20. Samkhya Philosophy believes in-
सांख्य दर्शन को कौन सी दृष्टि मान्य है
(a) Brahma Parinamvad/ब्रहम परिणामवादी
(b) Prakriti Parinamvad/प्रकृति परिणामवादी
(c) Purush Prainamvad/पुरूष परिणामवादी
(d) Guna Prainamvad/गुण परिणामवादी

Ans. (b) : सांख्य विश्व का कारण मानने के लिए प्रकृति की स्थापना करता है। प्रकृति एक है, जड़ तथा सूक्ष्म भी है। इसलिए संपूर्ण विश्व की व्याख्या करने में समर्थ है। सांख्य ने विश्व का आधार प्रकृति को माना है। विश्व का मूल कारण होने से प्रकृति को परिणामवादी कहा जाता है।

21. Ksipta is a stage of Chitta in which-
क्षिप्त चित्त की वह अवस्था है जिसमें
(a) Chitta is dominated by Rajas guna
चित्त रजोगुण से प्रभावित होता है
(b) Chitta is dominated by Tamas guna
चित्त तमोगुण से प्रभावित होता है
(c) Chitta is dominated by Sattva guna
चित्त सतोगुण से प्रभावित होता है
(d) Chitta is beyond Gunas/चित्त गुणातीत होता है

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : भारतीय दार्शनिक विचार परंपरा के अनुसार गुण तीन प्रकार के है- (I) सत्वगुण-ज्ञान का प्रतीक है। (II) रजोगुण-यह क्रियाप्रेरक है। (III) तमोगुण-यह अन्धकार का प्रतीक है। दार्शनिक विचार के अनुसार चित्त की वह अवस्था जो रजोगुण से प्रभावित होती है क्षिप्त कहलाती है।

22. Sannidhi is related to
सन्निधि का संबंध है-

(a) Inference/अनुमान से
(b) Comparison/उपमान से
(c) Perception/प्रत्यक्ष से
(d) Verbal Testimony/शब्द से

Ans. (d) : सन्निधि का संबंध 'शब्द' से है। न्याय दर्शन के अनुसार अर्थपूर्ण शब्दों के संयोग से वाक्य बनता है। वाक्यों के सार्थक होने के लिए चार शर्तों का पालन आवश्यक माना गया हैं। वे है- (1) आकाँक्षा (2) योग्यता (3) सन्निधि (4) तात्पर्य। नैयायिकों के अनुसार वाक्य का अर्थ निकालने के लिए शब्दों में स्थान अथवा समय की समीपता होनी चाहिए इसे सन्निधि कहते हैं।

23. The regulating element of karma-phal in Mimamsa Philosophy is:
मीमांसा दर्शन में कर्म फल का नियामक तत्व है-

(a) Akritabhyupagam/अकृताभ्युपगम
(b) Apurva/अपूर्व
(c) Adrishta/अदृष्ट
(d) Rta/ऋत

Ans. (b) : मीमांसा दर्शन कर्म फल के निर्धारण के लिए अपूर्व के सिद्धांत को अंगीकार करती है। कुमारिल के अनुसार अपूर्व अदृश्य शक्ति है जो आत्मा के अंदर उदय होती है। इसे कर्म की दृष्टि से कर्म सिद्धांत कहा जाता है। अपूर्व सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक कारण में शक्ति निहित है जिससे फल निकलता है जैसे- एक बीज में शक्ति अन्तर्भूत है जिसके कारण वृक्ष का उदय होता है।

24. Inherence (Samavaya) is said-
समवाय कहते है

(a) A relation between equals
दो समान वस्तुओं मे सम्बन्ध
(b) The relation of things that cannot be separated/वस्तुओ में ऐसा संबंध जिसे अलग करना संभव नही
(c) The relation that can be separated
ऐसा संबंध जो अलग हो सके
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (b) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार समवाय एक प्रकार का ऐसा संबंध है जिसके कारण दो पदार्थ एक दूसरे से समवेत रहते है। यह सम्बन्ध अयुत्त सिद्ध वस्तुओं के बीच होता है। अयुत्त सिद्ध वे हैं जिनका पृथक अस्तित्व नहीं रहता। जैसे गुण और द्रव्य, कर्म और द्रव्य, सामान्य और व्यक्ति, अवयवी और अवयव। इन्हीं के बीच समवाय सम्बन्ध विद्यमान रहता है। अर्थात् वस्तुओं में ऐसा सम्बन्ध जिसे अलग करना संभव नही है।

25. Which of the following is mismatched?
कौन बे-मेल है?

(a) Yogachar - Mahayana/योगाचार-महायान
(b) Asatkaryavada - Samkhya/असत्कार्यवाद-सांख्य
(c) No soul Theory - Buddhism/नैरात्म्यवाद-बौद्ध
(d) Vivartvada - Advaita Vedanta
विवर्ततवाद-अद्वैत वेदांत

Ans. (b) :

सिद्धांत	–	दर्शन
असत्कार्यवाद	–	न्याय दर्शन
योगाचार	–	महायान
नैरात्मवाद	–	बौद्ध
विवर्तवाद	–	अद्वैत वेदान्त

26. The Khyati Principle of kumarila is-
कुमारिल का ख्याति सिद्धांत है-

(a) Anyatha khyativada/अन्यथा ख्यातिवाद
(b) Viparita khyativada/विपरीत ख्यातिवाद
(c) Sat khyativada/सत् ख्यातिवाद
(d) Anirvacaniya khyativada/अनिर्वचनीय ख्यातिवाद

Ans. (b) : कुमारिल के ख्याति सिद्धांत को विपरीत ख्यातिवाद के नाम से जाना जाता है।

27. The commentry 'Padartha Dharma Sangrah' is written by
पदार्थधर्म संग्रह किसका भाष्य है?

(a) Kanad/कणाद
(b) Prashasta Pada/प्रशस्तपाद
(c) Sridhara/श्रीधर
(d) Vachaspati Mishra/वाचस्पति मिश्र

Ans. (c) : 'पदार्थ धर्म संग्रह' प्रशस्तपाद का भाष्य है। कणाद कृत वैशेषिक सूत्र रावण भाष्य है।

28. The teleological explanation of Ahimsa means
अहिंसा की प्रयोजनमूलक व्याख्या का अर्थ है-

(a) Man should work in the interest of others welfare/व्यक्ति सदैव दूसरों के कल्याण की इच्छा से कर्म करे
(b) So that ethical and spiritual force can be established/जिससे नैतिक एवं आध्यात्मिक बल की स्थापना हो सके
(c) Both Man should work in the interest of others welfare and so that ethical and spiritual force can be established/दोनो (व्यक्ति सदैव दूसरों के कल्याण की इच्छा से कर्म करे) एवं (जिससे नैतिक एवं आध्यात्मिक बल की स्थापना हो सके)
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (c) : 'अहिंसा' की प्रयोजनमूलक व्याख्या, आधुनिक दर्शन का चिंतन है। अहिंसा के प्रयोजनमूलक का अभिप्राय है- जिसमें व्यक्ति सदैव दूसरे के कल्याण की भावना से कर्म करे तथा जिससे नैतिक एवं आध्यात्मिक बल का विकास हो।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

29. Meta Ethics refers to
अधिनीतिशास्त्र है-

(a) The Metaphysical aspects Ethics
नीतिशास्त्र का तत्वमीमांसीय पक्ष

(b) Analysis and verification of Ethical words and concepts/नैतिक शब्दों एवं प्रत्ययों का विश्लेषण और सत्यापन

(c) Primary nature of Ethics
नीतिशास्त्र का प्रारंभिक स्वरूप

(d) Comparative study of Ethics and Sociology
नीतिशास्त्र और समाजशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन

Ans. (b) : अधिनीतिशास्त्र, नैतिक शब्दो एवं प्रत्ययों का विश्लेषण और सत्यापन करती है। यह नीतियों के दावों, गुणों, मनोदृष्टि एवं निर्णयों को समझने का प्रयास करती है। अधिनीतिशास्त्र "अच्छाई क्या है? हम अच्छे एवं बुरे में अंतर कैसे समझ सकते हैं? जैसे गूढ़ प्रश्नों के उत्तर को खोजने का प्रयास करती है।

30. "All the ethical principles as philosophical principles - Intuitionism, Naturalism, Realism and other principles are neutral regarding actual behavior". Whose opinion is this?
दार्शनिक सिद्धांतो के रूप में सभी नैतिक सिद्धांत-: "अन्तः प्रज्ञावाद, प्रकृतिवाद, वस्तुनिष्ठवाद तथा आचरण के संबंध में तटस्थ है" किसका मत है

(a) P.H. Noble smith/पी.एच. नोबेलस्मिथ
(b) C.L. Stevenson/सी.एल. स्टीवेन्सन
(c) A.J. Ayer/ए.जे. एअर
(d) R.M. Hare/आर.एम. हेयर

Ans. (c) : बींसवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लंदन में जन्मे ब्रिटिश दार्शनिक ए.जे. एअर का कथन है की "दार्शनिक सिद्धांतों के रूप में सभी नैतिक सिद्धांत - अंतः प्रज्ञावाद, प्रकृतिवाद, वस्तुनिष्ठवाद आचरण के संबंध में तटस्थ है।"

31. The book 'Dialogue Concerning Natural Religion' is written by
"डायलॉग कन्सर्निग नेचुरलरिलीजन" किसकी पुस्तक है?

(a) Descartes/डेकार्ट (b) Hume/ह्यूम
(c) Locke/लॉक (d) Kant/कांट

Ans. (b) : ह्यूम	–	'डायलॉग कन्सर्निंग नेचुरलरिलीजन।'
डेकार्ट	–	'प्रिन्सिपिया फिलोसोफिया।'
लॉक	–	'एसे कन्सर्निंग ह्यूमन अन्डरस्टैंडिंग।'
काण्ट	–	'क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन।'

32. The Monads of Leibnitz differ from the atoms of Democritus as
लाइबनिज के चिदणु डेमाक्राईटस के परमाणुओं से भिन्न हैं क्योंकि-

(a) They are extensionless and non-material
वे विस्तारहीन और अभौतिक हैं

(b) They are real and actual
वे वास्तविक और यथार्थ है

(c) They are not lifeless and material
वे जड़ और भौतिक नहीं है

(d) All of these/सभी सही है

Ans. (d) : लाइबनिज के चिदणु, डेमाक्राइट्स के परमाणुओं से भिन्न हैं क्योंकि लाइबनिज के अणु-विस्तारवादी और अभौतिक हैं परन्तु वे जड़ और भौतिक नही हैं तथा वास्तविक और यथार्थ हैं।

33. Who among the following upheld that "The soul is self active and the body is its expression or habit. In this way, body cannot be separated from soul".
"आत्मा स्वतः क्रियाशील है और शरीर इसकी अभिव्यक्ति या आदत है। इस रूप में शरीर-आत्मा एक दूसरे से अलग नहीं रह सकते।" किसका कथन है?

(a) Aurobindo/अरविंद
(b) Iqbal/इकबाल
(c) Tagore/टैगोर
(d) Gandhi/गांधी

Ans. (b) : ब्रिटिश भारत में उन्नीसवीं शताब्दी में पैदा हुए इकबाल एक प्रसिद्ध सामाजिक, राजनैतिक विचारक थे। इन्होंने आत्मा और शरीर पर विचार करते हुए कहा कि "आत्मा स्वतः क्रियाशील है और शरीर इसकी अभिव्यक्ति या आदत है। इस रूप में शरीर और आत्मा एक दूसरे से अलग नहीं रह सकते।"

34. Maya according to Swami Vivekananda is-
स्वामी विवेकानंद के अनुसार माया है-

(a) Pure illusion/विशुद्ध भ्रम
(b) Pure non existence/विशुद्ध असत्
(c) Full of inconsistency and contradictions
असंगति एवं व्याघात से पूर्ण
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (c) : स्वामी विवेकानंद, आधुनिक भारत में पुनर्जागरण के अग्रदूत, और सामाजिक सुधारक्रांति के प्रणेता थे। इन्होंने अपने दार्शनिक चिंतन में 'माया' पर विचार करते हुए कहा कि "माया असंगति एवं व्याघात से पूर्ण है।"

35. Who among the following is not convinced with Vivartvada-
निम्न में से विर्वतवाद से असहमत है-

(a) Sri Aurobindo/अरविंद
(b) Ramanuja/रामानुज
(c) Both Sri Aurobindo and Ramanuja
दोनो (अरविंद) एवं (रामानुज)
(d) Both not/इनमें से कोई नहीं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : आधुनिक भारत के महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनैतिक, दार्शनिक विचारकों मे से एक अरविन्द घोष, और विशिष्टाद्वैत दर्शन के प्रणेता रामानुज विवर्तवाद का निषेध करते हैं।

36. 'Subject as Freedom' is written by-
''सब्जेक्ट एज फ्रीडम'' किसकी रचना है

(a) Krishnamurti/कृष्णमूर्ति
(b) Radhakrishnan/राधाकृष्ण
(c) K.C. Bhattacharya/के.सी. भट्टाचार्य
(d) B.R. Ambedkar/बी.आर. अम्बेडकर

Ans. (c) :

सब्जेक्ट ऐज फ्रीडम	–	के.सी. भट्टाचार्य
शिक्षा और संवाद	–	जे. कृष्णमूर्ति
जीवन की आध्यात्मिक दृष्टि	–	राधाकृष्णन
अनहिलेशन ऑफ कास्ट	–	बी.आर. अम्बेडकर

37. Which among the following statements is true about 'Forms' according to Plato?
आकारों के विषय में निम्न कथनों में से कौन सा प्लेटो के अनुसार सत्य है

(1) Forms are actual existences
आकार वास्तविक सत्तायें है
(2) There is diversity in for/आकार में विविधता है
(3) Forms are superior to particulars
आकार विशेषों से उत्कृष्ट है

(a) 1, 2, 3/1, 2, 3
(b) 1 and 2/1 और 2
(c) 2 and 3/2 और 3
(d) 1 and 3/1 और 3

Ans. (a) : प्लेटो ने आकार (form) पर विचार करते हुए कहा कि– ''आकार वास्तविक सत्ताएं हैं, यह विशेषों से उत्कृष्ट हैं तथा इनमें विविधता है।''

38. "We should believe first so that we can know", is stated by
''हम जान सके इसलिए पहले हमे विश्वास करना चाहिए'' यह कथन है

(a) St. Aquinas/सन्त एक्विनास
(b) St. Augustine/सन्त आगस्टाइन
(c) St. Anselm/सन्त एन्सेलम
(d) Plotinus/प्लोटिनस

Ans. (c) : मध्ययुगीन दार्शनिकों में केन्टरवरी के सन्त एन्सेलम दर्शन जगत में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इनका कहना था कि ''हमे जानने के लिए सबसे पहले विश्वास करना सीखना होगा।''

39. Which Philosopher finally reduces Four Causes to Two?
कौन दार्शनिक अन्ततः चार कारणों को दो में सीमित कर देता है?

(a) Descartes/देकार्त
(b) Aristotle/अरस्तू
(c) Spinoza/स्पिनोजा
(d) Plato/प्लेटो

Ans. (b) : अरस्तू ने (I) उपादान कारण (II) निमित्त कारण (III) स्वरूप कारण (IV) लक्ष्य कारण। नामक चार कारण बताए जो प्रत्येक गति या परिणाम के कारण है। अरस्तू ने इन चार कारणों को अन्ततः दो कारणों द्रव्य तथा स्वरूप कारण में सीमित कर दिया।

40. Which of the following causes is not included in Aristotle's philosophy?
निम्न में कौन सा कारण अरस्तू के दर्शन में शामिल नही है?

(a) Inevitable cause/अनिवार्य कारण
(b) Formal cause/आकारिक कारण
(c) Final cause/अंतिम कारण
(d) Efficient cause/निमित्त कारण

Ans. (a) : अरस्तू के दर्शन में आकारिककारण, अंतिम कारण और निमित्तकारण तो विद्यमान है परन्तु अनिवार्य कारण अरस्तू के दर्शन में शामिल नही है।

41. Pythagoras does not accept-
पाइथागोरस को मान्य नही है-

(a) World is an eternal intellectual unity
विश्व एक शाश्वत बौद्धिक एकता है
(b) World runs by Mathematical Principles
विश्व गणितीय सिद्धांतो के अनुसार चलता है
(c) World is made of Monads
विश्व चिदणुओ से बना है
(d) Reality cannot be known by sense organs
सत का ज्ञान केवल इंद्रियो से नही हो सकता

Ans. (c) : छठीं शताब्दी ईसा पूर्व दार्शनिक पाइथागोरस का मानना था कि– विश्व एक शाश्वत बौद्धिक एकता है और यह गणितीय सिद्धांतो के अनुसार चलता है। साथ ही यह भी कहा की सत्ता का ज्ञान केवल इन्द्रियों से नहीं हो सकता। चिदणु से विश्व की व्याख्या पाइथागोरस को मान्य नही है।

42. Which pair is not matching-
कौन सा जोड़ा सुमेलित नहीं है?

(a) Heraclitus - Being/हेराक्लाइटस-सत्
(b) Parmenides - Complete Reality
पार्मेनाइडीज-पूर्णसत्
(c) Anaxagoras - Nous/एनेक्जेगोरस-नाउस
(d) Protagoras - Man is the Measure of all things
प्रोटेगोरस-मानव सभी पदार्थों का मानदण्ड है

Ans. (a) :

हेराक्लाइट्स	–	छणभंगवाद
पार्मेनाइडीज	–	पूर्णसत
एनेक्जेगोरस	–	नाउस
प्रोटेगोरस	–	मानव सभी पदार्थों का मानदण्ड

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

43. 'An unexamined life is not worth living' is the thought of?
एक अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नही है, यह विचार है
(a) Socrates/सुकरात
(b) Pythagoras/पाईथागोरस
(c) Democritus/डेमाक्रिटस
(d) Protagoras/प्रोटैगोरस

Ans. (a) : "एक अपरीक्षित जीवन जीने योग्य नही है" यह कथन सुकरात का है। सुकरात का विचार है की ज्ञान ही धर्म या सद्गुण है। शिवतत्व का ज्ञान सर्वोत्तम धर्म है, अज्ञान ही अधर्म है। लौकिक दृष्टि से सत्कर्मों को धर्म कहते हैं यह अभ्यास से प्राप्त किए जा सकते है।

44. The Knowledge according to Plato means-
प्लेटो के अनुसार ज्ञान का अर्थ है-
(a) Only opinion/केवल मत
(b) Only sense experience/केवल इंद्रियानुभव
(c) Opinion and sense experience
मत एवं इंद्रियानुभव
(d) Idea/प्रत्यय

Ans. (d) : प्लेटो ने अपने प्रत्ययवाद में कहा की ज्ञान का अर्थ 'प्रत्यय' है। प्लेटो का प्रत्यय ही विज्ञानवाद है (Theory of Idea)। प्लेटो ने विज्ञानवाद पर पांच दृष्टियों से विचार किया है– (I) ज्ञान की दृष्टि से (II) स्वरूप की दृष्टि से (III) उद्देश्य की दृष्टि से (IV) सत्ता की दृष्टि से (V) रहस्य की दृष्टि से।

45. 'The two forces of 'Love' and 'Hate' determine the material phenomenon'. This thought is given by-
'प्रेम' और 'घृणा' की दो शक्तियाँ भौतिक तत्वों को संयुक्त करती है। यह विचार देते है
(a) Empedocles/एम्पेडाक्लीज
(b) Anaxagoras/एनेग्जागोरस
(c) Democritus/डेमाक्रिटस
(d) Socrates/सुकरात

Ans. (a) : एम्पेडाक्लीज का विचार है कि "प्रेम और घृणा की दो शक्तियाँ भौतिक तत्वों को संयुक्त करती हैं।"

46. 'On Nature' is the work of
'आन नेचर' किसकी पुस्तक है?
(a) Anaximander/एनेक्जिमेण्डर
(b) Anaximenes/एनेक्जेमेनीज
(c) Aristotle/अरस्तू
(d) Spencer/स्पेन्सर

Ans. (a) : आन नेचर – एनेक्जिमेण्डर
तत्वविज्ञान – अरस्तू

47. Who has written the Dialogue- 'Parmenides'?
पार्मेनाइडीज संवाद किसका रचित है?
(a) Aristotle/अरस्तू (b) Plato/प्लेटो
(c) Parmenides/पार्मेनाइडीज (d) Protagoras/प्रोटैगोरस

Ans. (b) : 'पार्मेनाइडीज संवाद' प्लेटो द्वारा रचित है।

48. The journey of a particular substance would always be left half as journey from one place to another place is impossible, is the view upheld by
किसी दूरी की यात्रा में हर बार आधा शेष रह जायेगा अतः एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा संभव है। कौन कहता है?
(a) Zeno/जेनो
(b) Parmenides/पार्मेनाइडीज
(c) Leucippus/ल्युसिपस
(d) Melissus/मेलिसस

Ans. (a) : "किसी दूरी की यात्रा में हर बार आधा शेष रह जाएगा अतः एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा संभव है।"
यह कथन ग्रीक दार्शनिक जीनो का है।

49. Which statement is true about Plato's concept of good?
प्लेटो के शुभ के बारे में कौन सा कथन सत्य है?
(a) It is the highest knowledge from Epistemological perspective
ज्ञान मीमांसा की दृष्टि से यह सर्वेच्च ज्ञान है
(b) It is the cause of the world from a Metaphysical perspective
तत्वमीमांसा की दृष्टि से यह विश्व का कारण है
(c) It is a standard of all the values from Axiological perspective/मूल्य मीमांसा की दृष्टि से यह सभी मूल्यों का मापदण्ड है
(d) All of these/सभी सही है

Ans. (d) : प्लेटो ने शुभ की व्याख्या कई दृष्टियो से की है यथा–
ज्ञान की मीमांसा की दृष्टि से यह सर्वोच्च ज्ञान है।
तत्वमीमांसा की दृष्टि से यह विश्व का कारण है।
मूल्यमीमांसा की दृष्टि से यह सभी मूल्यों का मापदण्ड है।

50. According to Aristotle the 'Substance' and 'Forms' are-
अरस्तू के अनुसार 'द्रव्य' और 'आकार' है-
(a) Inseparable/अवियोज्य
(b) Separable/वियोज्य
(c) Mixed/मिश्र
(d) Uncertain/अनिश्चित

Ans. (a) : अरस्तू के अनुसार प्रत्येक तत्व मे दो बातें पाई जाती हैं– एक उसका द्रव्य दूसरा उसका स्वरूप (form)। द्रव्य परिणाम और गति का आधार है। अरस्तू ने कहा कि विशुद्ध द्रव्य है मूल प्रकृति और विशुद्ध स्वरूप है ईश्वर (Pure form)। अतः संसार के प्रत्येक तत्व में द्रव्य और स्वरूप (form) का सम्मिश्रण अनिवार्य है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

51. Meaning of Sophist is-
'सोफिस्ट' का अर्थ है-
(a) Illogical/कुतार्किक
(b) Benevolent/शालीन
(c) Orator/वक्ता
(d) Grand/शानदार

Ans. (a) : सोफिस्ट ग्रीक दर्शन की वह विचारधारा है। जिसकी पहचान व्यर्थ का कुतर्क करने वाले के अर्थ में की है।

52. Which of the following statement informs about Critical Realism?
कौन सा कथन सभी समीक्षात्मक यथार्थ को सूचित करता है?
(a) Physical things are directly perceptible
भौतिक वस्तुओं का सीधा प्रत्यक्षण होता है
(b) A part of physical thing is directly perceptible
भौतिक वस्तु के एक अंश का प्रत्यक्षण होता है
(c) Sense data is perceptible
प्रदत्त का प्रत्यक्षण होता है
(d) Causal attributes of things are perceptible
वस्तु के कारणात्मक गुणों का प्रत्यक्षण होता है

Ans. (a) : भौतिक वस्तुओं का सीधा प्रत्यक्ष होना यह समीक्षात्मक यथार्थवाद की विचारधारा है।

53. Ryle does not accept Descarte's dualism because-
राइल देकार्तीय द्वैतवाद को अस्वीकार करता है क्योंकि-
(a) It is based on skepticism/संदेह पर आधारित है
(b) It is based on Metaphysical logics
तत्वमीमांसीय तर्कणा पर आधारित है
(c) It is based on human thought
मनुष्य की सोच पर आधारित है
(d) There is a category mistake/कोटि त्रुटि है

Ans. (d) : गिल्बर्ट राइल डेकार्टियन द्वैतवाद को अस्वीकार करते है। उनका मानना है कि इसमें कोई त्रुटि है इसलिए इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

54. Which philosopher said 'Truth is Subjectivity'?
किस दार्शनिक ने कहा कि सत्य आत्मनिष्ठता है
(a) Locke/लॉक
(b) Berkeley/बर्कले
(c) Hegel/हेगेल
(d) Kierkegaard/किर्केगार्ड

Ans. (d) : सोरेन किर्केगार्ड एक डेनिश दार्शनिक थे, इन्हे अस्तित्ववाद का जनक माना जाता है। इन्होंने सत्य (Truth) का विश्लेषण करते हुए कहा कि 'सत्य आत्मनिष्ठ है।'

55. 'Known depends of knower's mind' this thought is found in-
ज्ञेय ज्ञाता के मन पर निर्भर है। यह विचार है-
(a) Realism/वस्तुवाद का
(b) Criticism/समीक्षावाद
(c) Idealism/प्रत्ययवाद का
(d) Pragmatism/प्रयोजनवाद का

Ans. (c) : ज्ञेय, ज्ञाता के मन पर निर्भर है यह विचार है प्रत्ययवाद का। प्रत्ययवाद उन विचारों की वह समेकित विचारधारा है जिसके अनुसार इस जगत की समस्त वस्तुएँ विचार या चेतना की अभिव्यक्ति है। सृष्टि का सार तत्व जड़ पदार्थ नही अपितु मूल चेतना है प्रत्ययवाद जड़ता या भौतिकवाद का विपरीत स्वरूप प्रस्तुत करता है।

56. Which existentialist does not believe in God?
निम्न में से कौन अस्तित्ववादी ईश्वर में विश्वास नहीं करता?
(a) Kierkegaard/किर्केगार्ड (b) Sartre/सार्त्र
(c) Jaspers/जास्पर्स (d) Marshal/मार्शल

Ans. (b) : अस्तित्ववाद मानव केन्द्रित दृष्टिकोण है। यह विचारधारा मानव को सबसे ज्यादा महत्व प्रदान करती है इसकी दृष्टि में मानव एक मात्र साध्य है। प्रसिद्ध अस्तित्ववादी सार्त्र के अनुसार मनुष्य स्वतंत्र प्राणी है यदि ईश्वर का अस्तित्व होता तो संभवतः वह मनुष्य को अपनी योजना के अनुसार बनाता किन्तु सार्त्र कहते हैं की ईश्वर नहीं है अतः मनुष्य स्वतंत्र है।

57. Who is not related to Pragmatic view of Truth among the following?
निम्न में से कौन सत्यता के फलवादी मत से सम्बद्ध नहीं है?
(a) Bradley/ब्रेडले (b) James/जेम्स
(c) Dewey/डयुयी (d) Schiller/शिलर

Ans. (a) : ब्रेडले का संबंध सत्यता के फलवादी मत से नही है। इस मत के अनुसार कोई भी क्रिया या प्रयोग पहले होता है फिर उसके फल के अनुसार विचारों अथवा सिद्धांतों का निर्माण होता है। इसलिए प्रयोजनवाद को फलवाद के नाम से भी जाना जाता है।

58. Correct most description of Phenomenology is-
संवृत्तशास्त्र का सर्वाधिक उपयुक्त वर्णन है-
(a) This is the analysis of subject
यह विषयी का विश्लेषण है
(b) This is the analysis of object
यह विषय का विश्लेषण है
(c) This is the analysis of experience
यह अनुभव का विश्लेषण है
(d) This is the analysis of language
यह भाषा का विश्लेषण है

Ans. (a) : 'फेनोमेनालाजी' विचारधारा की शुरूआत बीसवीं शताब्दी में एडमंड हुसर्ल द्वारा की गई। इस विचारधारा में व्यक्तिनिष्ठ अनुभवों और चेतना के संरचनाओं का दार्शनिक अध्ययन किया जाता है। यह विचारधारा विषय का नहीं अपितु विषयी का वर्णन करती है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

59. Consciousness according to Sartre is
सार्त्र के अनुसार चेतना है-
(a) Nonsubstantial existence/अद्रव्य सत्ता है
(b) Unconditional property of soul
आत्मा का अनोपाधिक लक्षण
(c) Inevitable property of soul
आत्मा का अनिवार्य लक्षण
(d) Soul itself/स्वयम् आत्मा

Ans. (a) : सार्त्र ने 'चेतना' की व्याख्या करते हुए कहा कि यह आत्मा का न तो अनोपाधिक लक्षण अथवा न तो अनिवार्य लक्षण है अपितु यह (चेतना) अपद्रव्य सत्ता है।

60. "Where of one cannot speak, there of one must remain silent", is the view of
जिसके बारे में कोई बोल नहीं सकता उसके बारे में मौन रहना चाहिए, किसका मत है?
(a) Wittgenstein/विट्गेन्सटीन
(b) Sartre/सार्त्र
(c) Ayer/एअर
(d) James/जेम्स

Ans. (a) : प्रसिद्ध आधुनिक दार्शनिक विट्गेन्सटीन का मत है की "जिसके बारे में कोई बोल नही सकता उसके बारे में मौन रहना चाहिए।"

61. Which of the following is related to 'state of affairs'
वस्तु स्थिति से संबंधित है-
(a) Tautologies/पुनरूक्तियां
(b) Contradictory statements/व्याघाती उक्तियां
(c) Descriptive statements/वर्णनात्मक उक्तियां
(d) All of these/सभी सही हैं

Ans. (c) : 'वर्णनात्मक उक्तियों' का संबंध वस्तुस्थिति से है।

62. 'Proposition is a picture of state of affairs'. This is the thought of-
तर्कवाक्य वस्तु स्थिति का चित्र होता है। यह चिंतन है-
(a) Wittgenstein/विटगेन्सटीन
(b) Husserl/हुसर्ल
(c) Newrath/न्यूराथ
(d) Ayer/एअर

Ans. (a) : विटगेंसटाइन ने अपने तर्कवाक्यीय विश्लेषण में कहा कि "तर्कवाक्य वस्तु स्थिति का चित्र होता है।"

63. Who has written the article 'refutation of Idealism'?
'प्रत्ययवाद का खंडन' नामक लेख किसका है?
(a) Minong/माइनांग (b) Moore/मूर
(c) Locke/लॉक (d) Hume/ह्यूम

Ans. (b) : 'प्रत्ययवाद का खंडन' नामक लेख मूर का है।

64. Which characteristic is true about Kant's categorical imperatives?
कांट के अहेतुक आदेशों के बारे में निम्न विशेषताओं में से कौन सत्य है?
(a) These are Universal/ये सार्वभौम है
(b) These are the rules of Pure reason
ये शुद्ध बुद्धि के विधान है
(c) They harmonize the individual and Universal approaches/इनमें व्यक्तिगत एवं समष्टीगत सिद्धांतों का समन्वय है
(d) All of these/सभी सही है

Ans. (d) : कांट के अहेतुक आदेश की निम्नलिखित विशेषताएं है–
(I) इनमें व्यक्तिगत एवं समष्टिगत सिद्धांतो का समन्वय है।
(II) यह शुद्ध बुद्धि के विधान हैं।
(III) यह सार्वभौम है।
इस प्रकार प्रश्नगत विकल्पों में सभी सत्य है।

65. The will which works for 'duty for duty's sake' is said to be
जो इच्छा कर्तव्य के लिए कर्तव्य करे उसे कहते है-
(a) Good will/सदिच्छा
(b) Ultimate will/परमइच्छा
(c) Private will/निजी इच्छा
(d) Others will/पर इच्छा

Ans. (a) : कर्तव्य के लिए कर्तव्य की इच्छा सदिच्छा कहलाती है। काण्ट का कर्तव्य के लिए कर्तव्य का सिद्धांत प्रसिद्ध है।

66. How many categorical Imperatives of kant are there?
कांट के अहेतुक आदेश कितने है?
(a) One/एक (b) Three/तीन
(c) Five/पाँच (d) Four/चार

Ans. (c) : कांट ने अपने आलोचनात्मक दर्शन में कुल पांच प्रकार के अहेतुक आदेश बताए।

67. Where can the roots of 'Intuitionism' be found?
प्रज्ञावाद का मूल कहा ढूढ़ा जा सकता है?
(a) In Socrates/सुकरात में
(b) In Pythagoras/पाइथागोरस में
(c) In Descartes/डेकार्ट में
(d) In Spinoza/स्पीनोजा

Ans. (a) : सुकरात एक प्राचीन ग्रीक दार्शनिक थे। सुकरात के दर्शन का ज्ञान मुख्यतः प्लेटो की कृतियों में उपलब्ध होता है। सुकरात के दार्शनिक विश्लेषण में प्रज्ञावाद के बीज को देखा जा सकता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

68. Which one is not the component of Human nature according to Butler?
कौन सा एक बटलर के अनुसार मानव प्रकृति का घटक नहीं है?
(a) Passion/वासना
(b) Conscience/अन्तरात्मा
(c) Benevolence/परहित
(d) Self love lessness/स्वप्रेमहीनता

Ans. (d) : बटलर ने मानव प्रकृति के कई घटक माने जैसे– वासना, अन्तरात्मा, परहित आदि। परन्तु बटलर के अनुसार स्वप्रेमहीनता मानव प्रकृति का घटक नही है।

69. Which is not a postulate of morality?
कौन नैतिकता की पूर्व मान्यता नहीं है?
(a) Emancipation/मुक्ति
(b) Immortality of soul/आत्मा का अमरत्व
(c) Existence of God/ईश्वर की सत्ता
(d) Result lessness of karma/कर्म फलहीनता

Ans. (d) : ईश्वर की सत्ता, आत्मा की अमरता और मुक्ति नैतिकता की पूर्व मान्यताएं है परन्तु कर्मफलहीनता नैतिकता की पूर्वमान्यता नहीं है।

70. 'Happiness is nothing but more pleasure' this opinion is found in-
आनंद केवल अधिक सुख का नाम है, यह विचार मिलता है
(a) Egoistic Hedonism/स्वार्थपरक सुखवाद में
(b) Psychological Hedonism/मनोवैज्ञानिक सुखवाद में
(c) Ethical Hedonism/नैतिक सुखवाद में
(d) Utilitarianism/उपयोगितावाद में

Ans. (a) : आधुनिक दार्शनिक सुखवादी विचारधारा के अनुसार आनंद केवल अधिक सुख का नाम है। यह विचार स्वार्थपरक सुखवाद में मिलता है।

71. 'By knowing the ethical laws by intuition we can make the 'maximum pleasure of maximum number' more strong'.
हम अन्तः प्रज्ञा से नैतिक नियमों को जानकर अधिकतम संख्या के अधिकतम सुख को और मजबूत करते है-
(a) Bentham/बेंथम का
(b) Sidgwick/सिजविक का
(c) Mill/मिल का
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (b) : सिजविक एक सुखवादी विचारक हैं।
इनका विचार है की "हम अन्तः प्रज्ञा के नियमों को जानकर अधिकतम संख्या के अधिकतम सुख को मजबूत करते हैं।

72. 'Rigorous Ethics' is presented by-
'कठोरतावादी नीतिशास्त्र' प्रस्तुत करते है-
(a) Socrates/सुकरात (b) Kant/कांट
(c) Bergson/बर्गसां (d) Butler/बटलर

Ans. (b) : 'कठोरतावादी नीतिशास्त्र' का संबंध इमैनुअल कांट से है। काण्ट का दर्शन आलोचनात्मक विज्ञानवाद के नाम से जाना जाता है।

73. 'You are not punished for stealing the sheep but for there should be no stealing of sheep'. Which theory of punishment is applied here?
तुम्हें भेड़े चुराने के लिए दंडित नहीं किया ताजा बल्कि इसलिए कि भेड़ चोरी न हो इससे दंड का......
(a) Retributive/प्रतिकारवादी
(b) Deterrent/निवर्तनवादी
(c) Reformative/सुधारवादी
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : समाजदर्शन की आधुनिक अवधारणा है– दण्ड का सिद्धांत। इन्ही सिद्धांतों में से एक है दण्ड का निवर्तनवादी सिद्धांत। इसकी प्रसिद्ध उक्ति है कि "तुम्हे भेड़े चुराने के लिए दण्डित नही किया जाता बल्कि इसलिए की दुबारा भेड़ की चोरी न हो।"

74. Moral Judgments are given on-
नैतिक निर्णय दिये जाते हैं
(a) All the actions of man/मनुष्य के सभी कर्मों पर
(b) Voluntary actions of man
मनुष्य के ऐच्छिक कर्मों पर
(c) Will of man/मनुष्य की इच्छा पर
(d) Non-voluntary actions of man
मनुष्य के अनैच्छिक कर्मों पर

Ans. (b) : नैतिक निर्णय का संबंध न तो मनुष्य के अनैच्छिक कर्मों पर निर्भर है, और न तो सभी कर्मों पर अपितु इसका संबंध मनुष्य के ऐच्छिक कर्मों से है।

75. 'The Means are always to be thought in comparison to the end'. This is the opinion of
साध्य की तुलना में साधन सर्वदा विचारणीय है यह मत है-
(a) Gandhi/गांधी का (b) Marx/मार्क्स का
(c) Kant/कांट का (d) Mill/मिल का

Ans. (a) : आधुनिक सामाजिक दार्शनिकों में गाँधी ऐसे दार्शनिक हैं जिन्होंने साध्य और साधन पर पर्याप्त चिंतन किया है। उन्होंने कहा की साध्य की तुलना में साधन सर्वदा विचारणीय है। गांधीजी साधन की तुलना में साध्य (मनुष्य) को ज्यादा महत्व देते थे।

76. Ethics is-/नीतिशास्त्र है
(a) Real science/यथार्थमूलक विज्ञान
(b) Normative science/आदर्शमूलक विज्ञान
(c) Hypothetical science/परिकल्पना पूर्ण विज्ञान
(d) Human science/मानवीय विज्ञान

Ans. (b) : नीतिशास्त्र को आदर्शमूलक विज्ञान के अंतर्गत रखा जाता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

77. Rta is-
ऋत् है-
(a) Eternal moral order of world
जगत की शाश्वत नैतिक व्यवस्था
(b) Law of karma/कर्म का नियम
(c) Comic science/सृष्टि विज्ञान
(d) Aesthetic science/सौन्दर्य विज्ञान

Ans. (a) : वैदिक दर्शन में 'ऋत' के विचार का बड़ा महत्व है। ऋत नैतिक नियम है। ऋत का अर्थ है जगत की व्यवस्था। इसे प्राकृतिक नियम भी कहा गया है। ऋत नित्य, शाश्वत एवं सर्वव्यापी नियम है।

78. Dharmanupreksha is found in-
धर्मानुप्रेक्षा पाई जाती है-
(a) Buddhist ethics/बौद्ध नीति शास्त्र में
(b) Jaina ethics/जैन नीति शास्त्र में
(c) Samkhya ethics/सांख्य नीति शास्त्र में
(d) Charvaka ethics/चार्वक नीति शास्त्र में

Ans. (b) : धर्मानुप्रेक्षा का संबंध जैन नीति शास्त्र से है।

79. 'Synthesis of Yoga' is written by
'योग समन्वय' किस के द्वारा लिखी गई है
(a) Gandhi/गांधी
(b) Patanjali/पतंजली
(c) Sri Aurobindo/अरविंद
(d) Ramanuja/रामानुज

Ans. (c) : महर्षि अरविंद बीसवीं शताब्दी के महान दार्शनिक चिंतक के रूप में जाने जाते हैं। इनके द्वारा लिखी गई महत्वपूर्ण पुस्तके इस प्रकार है– भारतीय संस्कृति के आधार, योग समन्वय, गीता, गीताप्रबंध आदि।

80. Which thought differentiates Jaina Ethics from Buddha Ethics?
जैन आचार शास्त्र से कौन सा विचार अलग करता है?
(a) Freedom from desires/इच्छा से मुक्ति
(b) Negation of God/ईश्वर का निषेध
(c) Ahimsa/अहिंसा
(d) Flow of Karma Pudgals towards Atma
कर्मअणुओं का आत्मा की ओर प्रवाह

Ans. (d) : जैन दर्शन और बौद्ध दर्शन में वैचारिक स्तर पर काफी समानता है जैसे– दोनो ईश्वर का निषेध करते हैं, दोनों इच्छा से मुक्ति पर बल देते हैं, दोनों अहिंसा में विश्वास करते हैं। परन्तु कर्म अणुओं को आत्मा की ओर प्रवाह जैन दर्शन को मान्य है परन्तु बौद्ध दर्शन इस सिद्धांत को नही मानता है।

81. Pratyahara means-
प्रत्याहार से आशय है-
(a) Others food/दूसरे का आहार
(b) Complementary food/पूरक का आहार
(c) To revert senses from their objects
इंद्रियों को उनके विषय से लौटाना
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (c) : योगदर्शन में अष्टांग मार्ग इस प्रकार है (I) यम (II) नियम (III) आसन (IV) प्राणायाम (V) प्रत्याहार (VI) धारणा (VII) ध्यान (VIII) समाधि।
प्रत्याहार का आशय है इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाना और उन्हें मन के वश में रखना।

82. Karma in the context of Bhavadgita should be understood
गीता में कर्म को किस अर्थ में समझना चाहिए
(a) In form of voluntary karmas
एच्छिक कर्म के रूप में
(b) In form of traditional karmas
ऐसा कर्म जो परम्परा प्रदत्त हो
(c) In form of ordered karmas
ऐसा कर्म जो आदेशित हो
(d) In form of Swadharm
ऐसा कर्म जो स्वधर्म समर्थित हो

Ans. (d) : गीता में कर्म का अभिप्राय ऐसा कर्म है जो स्वधर्म समर्थित हो। स्वधर्म की अवधारणा सभी कर्मों की समानता पर बल देती है। स्वधर्म की दृष्टि से सभी कर्मों को एक ही धरातल पर रखा गया है सभी कर्म मूलतः समान है। स्वधर्म पालन के माध्यम से गीता में कर्म की गरिमा को बढ़ाया गया है।

83. Which property is not present in a Monad?
कौन सी विशेषता चिदणु में नही होती?
(a) Indivisibility/अविभाज्यता
(b) Windowlessness/गवाक्षहीनता
(c) Extention/विस्तारता
(d) Eternality/शाश्वतता

Ans. (c) : चिदणु में अविभाज्यता का गुण होता है। चिदणु गवाक्षहीन एवं शाश्वत होते है, परन्तु चिदणु में विस्तारता का गुण नहीं पाया जाता है।

84. If ideas are innate then what is the need of observation and experimentation to find them is the view of
प्रत्यय अगर सहज है तो प्रेक्षण और प्रयोग से उसके अनुसंधान की आवश्यकता ही क्यों है; ऐसा......?
(a) Locke/लॉक (b) Berkeley/बर्कले
(c) Spinoza/स्पिनोजा (d) Kant/कांट

Ans. (a) : लॉक ने प्रत्ययों के संबंध में अभिव्यक्ति की कि "प्रत्यय अगर सहज है तो प्रेक्षण और प्रयोग से उसके अनुसंधान की आवश्यकता ही क्यों है।" ध्यातव्य है कि लॉक अनुभववादी दार्शनिक है। वे कहते थे की सत्य के स्वरूप को जानने के पहले अपने ज्ञान के स्वरूप को जान लेना अधिक आवश्यक है। इनका मानना था की तत्व मीमांसा की अपेक्षा, ज्ञान-मीमांसा दार्शनिक चिन्तन का प्रमुख विषय होना चाहिए।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

85. Hume is skeptic because-
ह्यूम संदेहवादी हैं क्योंकि वे-
(a) He does not believe in God
ईश्वर में विश्वास नही करते
(b) He does not believe in soul
आत्मा में विश्वास नही करते
(c) He does not believe in matter
भौतिक तत्व में विश्वसा नहीं करते
(d) He does not believe in Necessary and Universal knowledge/अनिवार्य और सार्वभौमिक ज्ञान में विश्वास नहीं करते

Ans. (d) : अनिवार्य और सार्वभौमिक ज्ञान में विश्वास नही करने के कारण ह्यूम को संदेहवादी भी माना जाता है। यद्यपि ह्यूम मूलरूप से अनुभववादी है ह्यूम में इन्द्रियानुभववाद अपनी चरम सीमा पर पहुँचा है। ह्यूम अपने लक्ष्य तक पहुँच गये यह कहना थोड़ी कठिन है, परन्तु यह सत्य है कि वे वहाँ तक पहुँचे जिसके आगे जाने का कोई मार्ग नहीं।

86. The source of knowledge for Locke is-
लॉक के अनुसार ज्ञानप्राप्ति का साधन है-
(a) Sensation/संवेदन
(b) Reflection/स्वसंवेदन
(c) Both Sensation and Reflection
दोनो (संवेदन) और (स्वसंवेदन)
(d) Not both/इनमें से कोई नहीं

Ans. (c) : लॉक ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में संवेदन और स्वसंवेदन दोनों को मानते हैं। इनका मानना है कि बाह्य प्रत्यक्ष ज्ञान इन्द्रियों के संवेदनों से प्राप्त होता है। तथा आन्तर प्रत्यक्ष ज्ञान स्वसंवेदनो से प्राप्त होता है। लॉक आन्तर प्रत्यक्ष ज्ञान को सर्वाधिक प्रामाणिक मानते हैं। लॉक द्वारा तृतीय प्रकार का ज्ञान परोक्ष ज्ञान को माना जाता है। यह निगमनात्मक तर्क की प्रणाली है।

87. A priori Synthetic Judgments are established by-/प्रागानुभविक संश्लेषणात्मक निर्णयों की स्थापना करते है-
(a) Kant/कांट (b) Hegel/हीगेल
(c) Descartes/डेकार्त (d) Green/ग्रीन

Ans. (a) : आलोचनात्मक विज्ञानवाद के प्रणेता काण्ट प्रागनुभविक संश्लेषणात्मक निर्णयों के लिए जाने जाते है। काण्ट ने अपने दर्शन को आलोचनात्मक, अतीन्द्रिय अथवा विज्ञानवाद कहा है। काण्ट पर उनके पूर्ववर्ती दार्शनिको का पर्याप्त प्रभाव था।

88. 'Treatise on Human Nature' is the work of
ट्रिटाइज आन ह्यूमननेचर के लेखक है-
(a) Hume/ह्यूम (b) Berkeley/बर्कले
(c) Descartes/डेकार्ट (d) Kant/कांट

Ans. (a) :

लेखक		ग्रंथ
ह्यूम	–	ट्रिटाइज ऑन ह्यूमन नेचर
काण्ट	–	क्रिटिक ऑफ प्रेक्टिकल रीजन
बर्कले	–	थ्री डायलॉग बिटविन हाइलस एण्ड फिलोनाउस
डेकार्ट	–	प्रिन्सिपिया फिलोसोफिया

89. Who among the following states that 'When I open my eyes in day light and just perceive the ideas only'
मै जब दिन के प्रकाश में आँखे खोलता हूँ तो केवल प्रत्ययों का ही प्रत्यक्ष करता हूँ; यह किसका.....?
(a) Locke/लॉक (b) Berkeley/बर्कले
(c) Bacon/बेकन (d) Hume/ह्यूम

Ans. (b) : "मै जब दिन के प्रकाश में आँखे खोलता हूँ तो केवल प्रत्ययों का ही प्रत्यक्ष करता हूँ।" यह कथन अनुभववादी बर्कले का है।

90. The statement 'Every determination is negation' is related to?
प्रत्येक निर्वचन निषेध है- किस से सम्बन्धित है?
(a) Spinoza/स्पिनोजा (b) Hegel/हीगेल
(c) Kant/कांट (d) Bradley/ब्रैडले

Ans. (a) : बुद्धिवादी दार्शनिक स्पिनोजा का विचार है की "प्रत्येक निर्वचन निषेध है।" द्रव्य, गुण और पर्याय को स्पिनोजा के दर्शन का आधार स्तम्भ माना जाता है। द्रव्य वह है जिसकी स्वतंत्र सत्ता है और गुण हैं द्रव्य के स्वरूप धर्म अर्थात् वे धर्म जिनको बुद्धि द्रव्य का स्वरूप समझती है। पर्याय है- द्रव्य का परिणामी धर्म।

91. The method of Empiricism is-
अनुभववादी पद्धति है?
(a) Deductive/निगमनात्मक
(b) Inductive/आगमनात्मक
(c) Descriptive/वर्णनात्मक
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (b) : अनुभववाद, आगमन की पद्धति है। आगमन विधि उस विधि को कहते हैं जिसमें विशेष तथ्य और घटनाओं के लक्षण एवं विश्लेषण द्वारा सामान्य नियम और सिद्धांतो का निर्माण किया जाता है। इस विधि में ज्ञात से अज्ञात की ओर, विशिष्ट से सामान्य की और मूर्त से अमूर्त की ओर बढ़ते हैं।

92. Materialism involves:
भौतिकवाद में उपस्थित है-
(a) Mechanism/यंत्रवाद
(b) Naturalism/प्रकृतिवाद
(c) Atheism/अनीश्वरवाद
(d) All of these/सभी सही है

Ans. (d) : भौतिकवाद दर्शन जगत की वह विचारधारा है जो यंत्रवाद, प्रकृतिवाद और अनीश्वरवाद सभी का प्रतिनिधित्व करती है। इस प्रकार प्रश्नगत सभी विकल्प सही है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

93. The 'Freedom of will' in philosophy of Spinoza is
स्पिनोजा के दर्शन में इच्छा स्वातंन्त्रय

(a) Possible/संभव है
(b) Impossible/असंभव है
(c) Unclear/अस्पष्ट है
(d) Ambiguous/भ्रामक है

Ans. (b) : स्पिनोजा के अनुसार इच्छा की स्वतंत्रता असंभव है। स्पिनोजा के अनुसार मन में कोई स्वतंत्र या निरपेक्ष सत्ता नही होती। लेकिन मन इस या उस कारण से इच्छा करने के लिए दृढ़ संकल्पित है जो दूसरे द्वारा भी निर्धारित किया जाता है।

94. Consciousnes (Chit) and Matter (Achit) in Spinoza philosophy are-
स्पिनोजा के दर्शन में चित्त और अचित हैं-

(a) Two substances/दो द्रव्य
(b) Parallel/समानांतर
(c) Bound by cause-Effect relation
कार्य कारण में संबद्ध
(d) They are one and same/एक ही है

Ans. (b) : स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य के अनंत गुणों में से केवल दो गुण चित (विचार) एवं अचित (विस्तार) को ही मनुष्य जान सकता है। चित और अचित नामक यह दोनो गुण एक दूसरे से भिन्न है किन्तु एक दूसरे के विरूद्ध नही हैं। दोनो अपनी सत्ता के लिए ईश्वर पर निर्भर हैं एक ही ईश्वर के यह दोनों गुण आपस में समांतर है।

95. Descartes Dictum 'I think therefore I am'- refers to
में सोचता हूँ इसलिए मै हूँ प्रदर्शित करता है-

(a) An inference/एक अनुमान
(b) A perception/एक प्रत्यक्ष
(c) An immediate experience/एक सद्यः अनुभूति
(d) A Postulate/एक पूर्वमान्यता

Ans. (c) : मै सोचता हूँ इसलिए मै हूँ यह एक सद्यः अनुभूति है। मै सोचता हूँ इसलिए मै हूँ यह दार्शनिक विचार रेने डेकार्ट का है। डेकार्ट बुद्धिवादी है परन्तु संदेह उनके लिए साधन है, साध्य नहीं। परन्तु वे कहते है की निश्चय पर पहुँचने के लिए संदेह आवश्यक है, इसीलिए वे कहते है की "मै सोचता हूँ इसलिए मै हूँ।"

96. Who among the following attempts Philosophy in terms of Mathematics?
निम्न में से कौन दर्शन में गणित की प्रणाली चाहता है?

(a) Leibnitz/लाईबनीज (b) Hume/ह्यूम
(c) Descartes/डेकार्ट (d) Kant/कांट

Ans. (c) : प्रश्नगत विकल्पों मे से डेकार्ट गणित की प्रणाली चाहता है। डेकार्ट कहते थे कि गणित में निश्चयात्मकता है। दर्शन में विवाद है। डेकार्ट कहते थे कि गणित की नीव सुदृढ़ है और दर्शन की नीव बालू की बनी है।

97. The Harmony originates in the philosophy of Leibnitz because-
लाइबनीज के दर्शन में सामंजस्य जन्म ले पाता है क्योंकि-

(a) He tries so/वह ऐसा प्रयास करते हैं
(b) Harmony leads to understand the World order
सामंजस्य से ही विश्व व्यवस्था समझी जा सकती है
(c) There is internal unity in Monads
चिदणुओं में आंतरिक एकता है
(d) Monads are non-potential/चिदणु शक्तिहीन है

Ans. (c) : लाइबनीज के चिदणुवाद में आंतरिक एकता होने के कारण, इनके दर्शन में सामंजस्य जन्म ले पाता है। सभी चिदणुओं का लक्ष्य है सर्वोत्तम चिदणु या ईश्वर के समान बनना। ज्यो ज्यो चिदणु इस लक्ष्य की ओर बढ़ते जाते हैं त्यो-त्यो वे अधिक उच्चतर होते जाते हैं अधिक विकसित और सक्रिय होते जाते है।

98. With regard to the question regarding the relation of the God and World - Berkeley is
ईश्वर और जगत के बीच संबंधों के प्रश्न पर बर्कले है-

(a) Pantheist/सर्वेश्वरवादी
(b) Panentheist/अतीश्वरवादी
(c) Theist/ईश्वरवादी
(d) Ditheist/द्विश्वरवादी

Ans. (b) : ईश्वर और जगत के बीच संबंधों के प्रश्न पर बर्कले अतीईश्वरवादी है। ईश्वर में अटल विश्वास रखने और जगत विज्ञानों को ईश्वरसृष्ट मानने के कारण बर्कले दृष्टिसृष्टिवाद के दोषों से सर्वथा बच जाते हैं। जगत विज्ञान जो निष्क्रिय एवं विषयरूप है, ईश्वरसृष्ट होने के कारण सत्य है।

99. Who among the following is representationst?
कौन प्रतिनिधित्ववादी है?

(a) Berkeley/बर्कले (b) Hume/ह्यूम
(c) Locke/लॉक (d) Leibnitz/लाइबनिज

Ans. (c) : अंग्रेज दार्शनिक जॉन लॉक प्रतिनिधिवादी है। लॉक ने अपने पूर्ववर्ती दार्शनिकों के बुद्धिवाद के विपरीत इन्द्रियानुभववाद की प्रतिष्ठा की। लॉक का विचार है की हममें कोई सहज प्रत्यय नही है। हमारी आत्मा में कोई जन्मजात प्रत्यय नही है। समस्त ज्ञान की जननी इन्द्रियानुभूति है।

100. According to Locke modes are-
लॉक के अनुसार पर्याय है-

(a) Simple ideas/सरल विज्ञान
(b) Complex ideas/मिश्र विज्ञान
(c) Both Simple ideas and Complex ideas
दोनो (सरल विज्ञान) और (मिश्र विज्ञान)
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (b) : लॉक के अनुसार पर्याय मिश्र विज्ञान है। मिश्र विज्ञान सरल विज्ञानों के मिश्रण से बनते हैं। इन विज्ञानों के मिश्रण करने में आत्मा सक्रिय रहती है किन्तु इनको उत्पन्न नहीं करती है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

101. The difference between 'Impression' and 'Idea' is-
'संस्कार' और 'विज्ञान' में यह अंतर है-

(a) The perception that is intense and clear is Impression/प्रत्यक्ष जो तीव्र व स्पष्ट होते हैं, संस्कार है
(b) The perception that is weak and unclear is idea/प्रत्यक्ष जो क्षीण और अस्पष्ट होते हैं, विज्ञान है
(c) Both are Correct/दोनो सही है
(d) Both are wrong/दोनो गलत है

Ans. (c) : संस्कार और विज्ञान दोनो परस्पर इस अर्थ में भिन्न है की, प्रत्यक्ष जब तीव्र और स्पष्ट होगा तो वह संस्कार कहा जाएगा और प्रत्यक्ष जब क्षीण और अस्पष्ट होगा तब वह विज्ञान की कोटि में आएगा।

102. The 'Middle Term' is found in-
मध्यम पद पाया जाता है-

(a) Categorical propositions/निरपेक्ष तर्कवाक्यों में
(b) Categorical Syllogisms/निरपेक्ष न्याय वाक्यों में
(c) Conclusion of an argument/युक्ति के निष्कर्ष में
(d) Inductive Logic/आगमन तर्कशास्त्र में

Ans. (b) : मध्यम पद निरपेक्ष न्याय वाक्य की विशेषता होती है।

103. Which one of the following is not an example of informal Fallacies?
निम्न में से कौन एक अनौपचारिक तर्कदोष का उदाहरण नही है?

(a) Abusive fallacy/व्यक्तिपरक लांछनात्मक दोष
(b) Petitio principii/आत्माश्रय दोष
(c) Complex question fallacy/वाक्छल दोष
(d) Existential fallacy/सत्तात्मक दोष

Ans. (d) : सत्तात्मक दोष, अनौपचारिक तर्कदोष के अंतर्गत नहीं आता है, शेष जैसे- व्यक्तिगत लांक्षनात्मक दोष, आत्माश्रय दोष एवं वाक्छल दोष अनौपचारिक तर्कदोष के उदाहरण है।

104. S

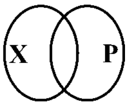

This venn diagram shows-
यह वेन रेखा चित्र दर्शाता है-

(a) I - proposition/ I प्रतिज्ञपति को
(b) E - proposition/ E प्रतिज्ञपति को
(c) A - proposition / A प्रतिज्ञपति को
(d) O - proposition / O प्रतिज्ञपति को

Ans. (d) :
S

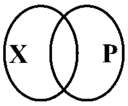

प्रश्नगत रेखाचित्र प्रतिज्ञप्ति (O-Proposition) को प्रदर्शित करता है।

105. The Obvertend of 'All S is P' is-
सभी 'उ' 'वि' हैं, का सही प्रतिवर्तित रूप है-

(a) All S is non P/सभी उ अवि है
(b) No S is non P/कोई उ अवि नही है
(c) No Non P is S/कोई अवि उ नही है
(d) All non P is S/सभी अवि उ है

Ans. (b) : सभी 'उ' 'वि' हैं, का सही प्रतिवर्तित रूप है-
कोई उ अवि नही है।

106. The limit of Truth Table is
सत्यता सारिणी की सीमा है कि-

(a) It is effective on small arguments
छोटी युक्तियों पर ही कारगर है
(b) Large and having more variables argument create confusion/अधिक चर और बड़ी युक्तिया भ्रम करती है
(c) It is a long process/लम्बी प्रक्रिया है
(d) All of these/सभी सही है

Ans. (d) : सत्यता सारिणी की कुछ सीमाएं होती हैं
जैसे– (I) यह छोटी युक्तियों पर ही कारगर होती है।
(II) यह लम्बी प्रक्रिया है।
(III) इसमें अधिक चर और बड़ी युक्तियां भ्रम करती है।

107. Figure determining Term is-
आकृति का निर्धारक पद है-

(a) Predicate Term/विधेय पद
(b) Subject Term/उद्देश्य पद
(c) Middle Term/मध्यम पद
(d) Fourth Term/चतुष्पद

Ans. (c) : तर्कवाक्यों में किसी भी आकृति का निर्धारण मध्यम पद (Middle Term) से होता है।

108. Which term must be distributed once in a syllogism?
किस पद का न्याय वाक्य के एक बार व्याप्त होना आवश्यक है?

(a) Major/मुख्य
(b) Middle/मध्यम
(c) Minor/पक्ष
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (b) : मध्यम पद (Middle term) के लिए शर्त है कि उसका न्याय वाक्य से एक बार व्याप्त होना आवश्यक है।

109. $(A \supset B) \equiv (\sim B \supset \sim A)$

This rule of replacement is-
पुर्नस्थापित का यह नियम है-

(a) Material Implication/शाब्दिक प्रतिपत्ति
(b) De-Morgan/डे.मार्गन
(c) Transposition/स्थानांतरण
(d) Distribution/वियोजन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : $(A \supset B) \equiv (\sim B \supset \sim A)$
पुर्नस्थापित का यह स्थानान्तरण नियम है।

110. Propositional function is such an expression where there is-
तर्क वाक्य फलन ऐसा व्यंजक है जिसमें-
(a) Individual non-constant/व्यक्ति अचर होता है
(b) Individual constant/व्यक्ति चर होता है
(c) Both Individual non-constant and Individual constant/दोनो होते है
(d) Both not/दोनो नही होते

Ans. (b) : तर्कवाक्यीय फलन व्यंजक में व्यक्ति चर होता है।

111. In the traditional Square of opposition if 'E' Proposition is false the 'A'?
परम्परागत विरोध वर्ग में यदि E तर्कवाक्य असत्य है तो A?
(a) True/सत्य
(b) Uncertain/अनिश्चित
(c) False/असत्य
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : तर्कवाक्यीय परंपरा में, परंपरागत विरोध वर्ग में यदि 'E' तर्कवाक्य असत्य है तो 'A' तर्कवाक्य अनिश्चित होगा।

112. *M.P*
M.S
$\therefore$ *S.P*
This figure is-
यह आकृति है-
(a) First/प्रथम (b) Second/द्वितीय
(c) Third/तृतीय (d) Fourth/चतुर्थ

Ans. (c) :
M.P
M.S
$\therefore$ *S.P*
यह आकृति तृतीय प्रकार की है।

113. Material equivalence means-
शाब्दिक समता का अर्थ है-
(a) When two statements differ in Truth value and both can be true of False together
जब दो वाक्यों के सत्यतामूल्य अलग हो और दोनो एक साथ सत्य या असत्य हो
(b) When two statements same in Truth value and both can be true of False together
जब दो वाक्यों के सत्यता मूल्य समान हो और वे एक साथ सत्य या असत्य हों
(c) When both statements keep the same meaning
जब दोनो वाक्य अपने कथ्य में समान हो
(d) When both have equal amount of words
जब दोनो वाक्यों के शब्द समान हो

Ans. (b) : जब दो वाक्यों के सत्यता मूल्य समान हो और वे एक साथ सत्य या असत्य हों तो वे शाब्दिक समता कहे जाते है।

114. Which of the following according to Plato leads us to Dialectic
प्लेटो के अनुसार निम्न में से कौन हमे द्वन्द्व न्याय की ओर प्रेरित करता है
(a) Intellectual Curiosity/बौद्धिक जिज्ञासा
(b) Changing nature of things
वस्तु का परिवर्तनशील रूप
(c) Love for Truth/सत्य के प्रति प्रेम
(d) Sense of wonder/आश्चर्य का भाव

Ans. (c) : प्लेटो के अनुसार 'सत्य के प्रति प्रेम' हमे द्वन्द्व न्याय की ओर प्रेरित करता है।

115. The Validity of an Argument depends upon-
युक्ति की वैधता निर्भर करती है-
(a) Facts in it/उसमें निहित तथ्यों पर
(b) Terms in it/उसके पदो पर
(c) Formal structure of it/उसकी आकारिक संरचना पर
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (c) : युक्ति की वैधता उसकी आकारिक संरचना पर निर्भर करती है।

116. Which of the following is true about Inductive Inference?
आगमनात्मक अनुमान के बारे में निम्न में से कौन सत्य है?
(a) Here the conclusion is lesser than premises
इसमें निष्कर्ष आधारवाक्य से कम व्याप्त होता है
(b) Here the conclusion is broader than premises
इसमें निष्कर्ष आधारवाक्य से अधिक व्याप्त होता है
(c) Here the conclusion is equal to premises
इसमें निष्कर्ष आधारवाक्य के सम व्याप्त होता है
(d) All of these/सभी सही है

Ans. (b) : आगमनात्मक अनुमान न्यायवाक्य में, निष्कर्ष आधार वाक्य से अधिक व्याप्त होता है।

117. If the conclusion of a syllogism is negative then for its validity-
यदि किसी न्यायवाक्यीय युक्ति का निष्कर्ष निषेधात्मक हो तो उसकी वैधता के लिए-
(a) Both the premises should be negative
दोनो आधारवाक्य निषेधात्मक होने चाहिए
(b) One premise should be negative
एक आधारवाक्य निषेधात्मक होना चाहिए
(c) Only major premise should be negative
केवल साध्य आधार वाक्य निषेधात्मक हो
(d) Only minor premise should be negative
केवल पक्ष आधार वाक्य निषेधात्मक हो

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : यदि किसी न्यायवाक्यीय युक्ति का निष्कर्ष निषेधात्मक हो तो, उसकी वैधता के लिए एक आधार वाक्य निषेधात्मक होना चाहिए।

118. 'Substitution Instances' are made of-
प्रतिस्थापन उदाहरण बनते है-

(a) Argument forms/युक्ति आकारों के
(b) Statement forms/वाक्य आकारों के
(c) Both Argument forms and Statement forms दोनो (युक्ति आकारों के) और (वाक्य आकारों के)
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (c) : प्रतिस्थापन उदाहरण, दोनो आकारो यथा-युक्ति आकारों और वाक्य आकारों से बनते हैं।

119. In rule of Disjunctive syllogism that is $\frac{Pvq}{\therefore q}$ what should be added in the premise to derive the conclusion
वैकल्पिक न्यायवाक्य के नियम में $\frac{Pvq}{\therefore q}$ के साथ आधार वाक्य में क्या जोड़ा जाये जिससे निष्कर्ष?

(a) ~P/~P
(b) ~q/~q
(c) Both ~P and ~q/दोनो (~P) और (~q)
(d) None of these/इनमें से कोई नही

Ans. (a) : वैकल्पिक न्यायवाक्य में निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए नियम में $\frac{Pvq}{\therefore q}$ के साथ आधार वाक्य में '~P' जोड़ा जाए।

120. The point at which the opponent is defeated in a debate is called by Nyaya philosophy:
विवाद में जिस बिन्दु पर विपक्षी परास्त हो जाता है उसे न्याय दर्शन में कहा गया है:

(a) Jati/जाति
(b) Nirnaya/निर्णय
(c) Vada/वाद
(d) Nigrahasthana/निग्रह स्थान

Ans. (d) : विवाद में जिस बिन्दु पर विपक्षी परास्त हो जाता है उसे न्याय दर्शन में 'निग्रह स्थान' कहा जाता है।

121. Which of the following is an instance of 'Atyantabhava' according to Vaisesika Philosophy?
वैशेषिक दर्शन के अनुसार निम्नलिखित में कौन अत्यन्ताभाव का दृष्टांत है?

(a) Absence of pot after destruction ध्वंस के बाद का घटाभाव
(b) Absence of pot in cloth/पट में घट का अभाव
(c) Son of a barren women/वन्ध्या पुत्र
(d) Absence of pot before it is made उत्पत्ति के पूर्व का घटाभाव

Ans. (c) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार 'वन्ध्यापुत्र' 'अत्यन्ताभाव' का दृष्टांत है। दो वस्तुओं के सम्बन्ध का अभाव जो, भूत, वर्तमान और भविष्य में रहता है अत्यन्ताभाव कहलाता है। अत्यन्ताभाव अनादि और अनंत कहा जाता है।

122. 'Abhinivesa' in Yoga Philosophy refers to:-
योग दर्शन में अभिनिवेश का अर्थ है:-

(a) Anger/क्रोध
(b) Desire/इच्छा
(c) Fear of death/मृत्युभय
(d) False knowledge/मिथ्याज्ञान

Ans. (c) : योगदर्शन में 'अभिनिवेश' का अर्थ है 'मृत्युभय'।

123. According to Mimamsa system the sentence that 'one must perform scarifies to attain heaven' can be classified as-
मीमांसा के अनुसार यह वाक्य कि 'स्वर्ग की कामना वाले को यज्ञ करना चाहिए' किसमें वर्गीकृत.....-

(a) Mantra/मन्त्र
(b) Arthavada/अर्थवाद
(c) Vidhi/विधि
(d) Namadheya/नामधेय

Ans. (c) : मीमांसा के अनुसार यह वाक्य कि "स्वर्ग की कामना वाले को 'विधि' यज्ञ करना चाहिए।" यह एक प्रकार का यज्ञीय नियम है। मीमांसा वेद वाक्य को अपौरूषेय मानती है। वेद वाक्य दो प्रकार के है (I) सिद्धार्थवाक्य– सिद्ध विषय के बारे में ज्ञान (II) विधायक वाक्य– इसमें किसी क्रिया के लिए विधि या आज्ञा का निर्देशन होता है। वेदो का महत्व इस कोटि के वाक्यों को लेकर ज्यादा है।

124. Which one of the following is not included in 'Prasthantrayi'?
निम्नलिखित में से कौन प्रस्थानत्रयी में सम्मिलित नही है?

(a) Brahmasutra/ब्रह्मसूत्र
(b) Upanishads/उपनिषद
(c) Srimadhagavat/श्रीमदभागवत
(d) Bhagavadita/भगवदगीता

Ans. (c) : प्रस्थानत्रयी में ब्रह्मसूत्र, उपनिषद, भगवदगीता आते हैं। श्रीमदभागवत, प्रस्थानत्रयी का अंग नहीं है।

125. The view that knowledge is intrinsically invalid is held by:-
ज्ञान स्वतः अप्रमाण्य है- यह किसका मत है?

(a) Nyaya/न्याय
(b) Buddhism/बौद्ध
(c) Mimamsa/मीमांसा
(d) Samkhya/सांख्य

Ans. (b) : बौद्धों का मानना है कि "ज्ञान स्वतः अप्रमाण्य है।" बौद्ध ज्ञान को प्रमाण की कोटि में नही मानते है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

126. The term 'Unmoved Mover' for God has been used by :
ईश्वर के लिए 'अचालित चालक' पद का प्रयोग किसने किया है?
(a) Plato/प्लेटो
(b) Aristotle/अरस्तू
(c) Socrates/सुकरात
(d) St.Anselm/संत एन्सेलम

Ans. (b) : अरस्तू प्राचीन ग्रीक दार्शनिकों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अरस्तू ने ईश्वर के लिए 'अचालित चालक' का प्रयोग किया है।

127. Descartes solves the problem of the relation between mind and body through-
देकार्त ने मन-शरीर सम्बंध की समस्या का समाधान किया है-
(a) Parallelism/समानान्तर वाद द्वारा
(b) Occasionalism/अवसरवाद द्वारा
(c) Interactionism/क्रिया प्रतिक्रियावाद द्वारा
(d) Pre-established harmony
पूर्व स्थापित सामंजस्य द्वारा

Ans. (c) : रेने डेकार्ट बुद्धिवादी दार्शनिक है। इन्होंने 'क्रिया प्रतिक्रियावाद' द्वारा मन शरीर सम्बन्ध की समस्या का समाधान किया है।

128. Hume refutes Causality as he believes that:-
ह्यूम कारणता का खण्डन करता है क्योंकि वह मानता है कि:-
(a) Cause and effect are not logically related
कारण एवं कार्य तार्किक रूप से सम्बद्ध नही हैं
(b) Everything that happens, happens by chance
जो भी होता है, संयोग से होता है
(c) Any effect can arise from any cause
कोई कार्य किसी कारण से उत्पन्न हो सकता है
(d) Causality is an innate idea
कारणता जन्मजात प्रत्यय है

Ans. (a) : ह्यूम अनुभववादी दार्शनिक है। ह्यूम संपूर्णज्ञान को इन्द्रिय संस्कार और विज्ञान पर आधारित मानते हैं। ह्यूम ने कारणता का भी खण्डन किया है, इनका मानना है कार्य और कारण तार्किक रूप से सम्बद्ध नहीं हैं।

129. Space and time according to Kant are:-
काण्ट के अनुसार दिक् तथा काल है:-
(a) Necessary for human knowledge
मानव ज्ञान के लिए अनिवार्य
(b) Real objects/वास्तविक वस्तुएँ
(c) Attributes of objects/वस्तुओं के गुण
(d) Imaginary objects/काल्पनिक वस्तुएँ

Ans. (b) : आलोचनात्मक विज्ञानवादी काण्ट ने दिक् और काल के विषय में कहा है कि "दिक् और काल मानव ज्ञान के लिए अनिवार्य हैं। साथ ही काण्ट ने ज्ञान के विषय में भी कहा कि ज्ञान की उत्पत्ति इन्द्रिय संवेदन और बुद्धि विकल्पों दोनो से होती है, यह दोनों ज्ञान के माता-पिता है।

130. The basic drive of human behavior according to Nietzsche is:-
नीत्शे के अनुसार मानवीय व्यवहार का मूलभूत प्रेरक है :
(a) Will to power/शक्ति की इच्छा
(b) Will to live/जीने की इच्छा
(c) Will to pleasure/सुख की इच्छा
(d) Will to be kind/दयालुता की इच्छा

Ans. (a) : नीत्शे 'शक्ति की इच्छा' को मानवीय व्यवहार का मूलभूत प्रेरक मानते है।

131. According to Kant stealing is wrong because:-
काण्ट के अनुसार चोरी करना गलत है क्योंकि:-
(a) Nobody approves of it
कोई उसका अनुमोदन नही करता
(b) Law does not approve of it
कानून उसका अनुमोदन नही करता
(c) It produces bad consequences
उसके परिणाम बुरे होते हैं
(d) It cannot be Universalized
उसका सार्वभौमीकरण नही किया जा सकता है।

Ans. (d) : काण्ट के अनुसार चोरी करना गलत है क्योंकि इसका हम किसी प्रकार से सार्वभौमीकरण नहीं कर सकते हैं।

132. 'Pratityasamutpada' rejects
'प्रतीत्य समुत्पाद' खण्डन करता है
(a) Causation/कार्य-कारण वाद का
(b) Dependence of effect on cause
कार्य के कारण पर आश्रित होने का
(c) That cause is eternal/कारण के शाश्वत होने का
(d) Arthakriyakaritva/अर्थक्रिया कारित्व का

Ans. (c) : प्रतीत्य समुत्पाद कारण के शाश्वत होने का खण्डन करता है। प्रतीत्य समुत्पाद के सिद्धांत के अनुसार कोई भी घटना केवल दूसरी घटनाओं के कारण ही एक जटिल कारण परिणाम के जाल में विद्यमान होती है। प्राणियों के लिए इसका अर्थ है कर्म और विपाक के अनुसार अनंत संसार का चक्र।

133. According to Vishistadvita, God is possessed of
विशिष्टाद्वैत मान्यता के अनुसार, ईश्वर है
(a) Heterogeneous distinction/विजातीय भेद से युक्त
(b) Homogeneous distinction/सजातीय भेद से युक्त
(c) Internal distinction/स्वगत भेद से युक्त
(d) Free of all kinds of distinctions
समस्त प्रकार के भेद से मुक्त

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : विशिष्टाद्वैत के अनुसार "ईश्वर स्वगत भेद से युक्त है।" इस दर्शन के अनुसार ईश्वर द्रव्य है और चित तथा अचित इसके गुण हैं, चित और अचित ईश्वर के शरीर हैं ईश्वर स्वयं चित और अचित की आत्मा है।

134. Shankara and Ramanuja Vedanta agree on the point that
शंकर और रामानुज वेदान्त इस बिन्दु पर सहमत है कि

(a) Brahaman alone is ultimately real
ब्रह्म ही अन्ततोगत्वा सत् है
(b) Jnana alone is the way to Moksha
केवल ज्ञान ही मोक्ष प्राप्ति का साधन है
(c) Bhakti alone is the way to Moksha
केवल भक्ति ही मोक्ष प्राप्ति का साधन है
(d) World is the real transformation of Brahaman
जगत ब्रह्म का वास्तविक परिणाम है

Ans. (a) : शंकर और रामानुज के वेदांत इस विन्दु पर सहमत हैं कि "ब्रह्म ही अन्ततोगत्वा सत् है।" शंकर और रामानुज दोनो ब्रह्म को सत्य मानते हैं। दोनो एक ब्रह्म को परम सत्य मानने के कारण एकवादी हैं। शंकर के ब्रह्म को अद्वैत कहा जाता है। परन्तु रामानुज का ब्रह्म एक विशेष अर्थ में एकवाद का उदाहरण कहा जा सकता है।

135. Famous work 'Summa Theogiae' is written by
सुप्रसिद्ध कृति 'सुम्मा थियोलॉजी' के लेखक है

(a) Saint Anselm/सन्त एनसेल्म
(b) Saint Aquinas/सन्त एक्विनास
(c) Saint Augustine/सन्त अगस्टाइन
(d) Saint Justin/सन्त जस्टिन

Ans. (b) : सुम्मा थियोलॉजी के लेखक सन्त एक्विनास हैं।

136. Contemporary Indian Philosopher who explains the existence and the reality with the concepts of 'Involution' and 'Evolution' is
'अन्तर्वलन' और 'उद्विकास' के सम्प्रत्यदों के माध्यम से अस्तित्व तथा सत की व्याख्या करने वाले दार्शनिक है

(a) K.C. Bhattacharya/के.सी. भट्टाचार्य
(b) Rabindranath Tagore/रवीन्द्रनाथ टैगोर
(c) Sri Aurobindo/श्री अरविन्द
(d) J. Krishnamurthy/जे. कृष्णमूर्ति

Ans. (c) : अन्तर्वलन और उद्विकास के माध्यम से अस्तित्व तथा सत की व्याख्या करने वाले दार्शनिक अरबिन्द घोष है। अरबिन्द घोष का स्थान, आधुनिक भारत के दर्शन जगत में महत्वपूर्ण है।

137. The Work 'Freedom from the Known' is related with the philosophy of
कृति 'फ्रीडम फ्रॉम द नोन' जिसके दर्शन से सम्बन्धित है, वह है

(a) Radhakrishnan/राधाकृष्णन
(b) J. Krishnamurthy/जे. कृष्णमूर्ति
(c) Gandhi/गाँधी
(d) Rabindranath Tagore/रवीन्द्रनाथ टैगोर

Ans. (b) : फ्रीडम फ्रॉम द नोन – जे. कृष्णमूर्ति के दर्शन से संबंधित है।

138. 'Tattvachintamani' is a work by
'तत्वचिन्तामणि' कृति है

(a) Kanada/कणाद की
(b) Gotama/गौतम की
(c) Jayanta/जयन्त की
(d) Gangesha/गंगेश की

Ans. (d) :

तत्वचिन्तामणि	–	गंगेश
कणाद	–	वैशेषिका दर्शन
गौतम	–	न्यायदर्शन

139. Nyaya sysyem believes in the
न्याय मत की निम्न में से क्या मान्य है

(a) Intrinsic validity and intrinsic invalidity of knowledge/ज्ञान का स्वतः प्रामाण्य एवं स्वतः अप्रामाण्य
(b) Extrinsic validity and extrinsic invalidity of knowledge/ज्ञान का परतः प्रामाण्य एवं परतः अप्रामाण्य
(c) Intrinsic validity and extrinsic invalidity of knowledge/ज्ञान का स्वतः प्रामाण्य एवं परतः अप्रामाण्य
(d) Extrinsic validity and intrinsic validity of knowledge/ज्ञान का परतः प्रामाण्य एवं स्वतः प्रामाण्य

Ans. (b) : न्यायदर्शन को ज्ञान का परतः प्रामाण्य एवं परतः अप्रामाण्य दोनो मान्य है।

140. 'Error' is explained by way of Smriti Prmosha and non-discrimination (vivekagraha) by
स्मृतिप्रमोष एवं विवेकाग्रहके माध्यम से भ्रम की व्याख्या करने वाला मत है-

(a) Prabhakar Mimamsaka/प्रभाकर मीमांसक
(b) Bhatta Mimamsaka/भट्ट मीमांसक
(c) Advaita Vedanta/अद्वैत वेदान्त
(d) Buddhist/बैद्ध

Ans. (a) : मीमांसकों में प्रभाकर एक ऐसे मीमांसक हैं जो स्मृति प्रमोश एवं विवेकाग्रह के माध्यम से भ्रम की व्याख्या करते हैं। प्रभाकर के अनुसार भ्रम दो ज्ञानों का संयोजन है। (I) लम्बी टेढ़ी वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान (II) पूर्वकाल में प्रत्यक्ष की हुई साँप की स्मृति प्रत्यक्ष और स्मृति के भेद के ज्ञान के अभाव के कारण भ्रम उत्पन्न होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

141. Prabhakar's view with reference to knowledge is called
ज्ञान के स्वरूप के विषय में प्रभाकर का मत कहलाता है

(a) Triputipratyakshvada/त्रिपुटिप्रत्यक्षवाद
(b) Jnatatavada/ज्ञाततावाद
(c) Anekantavada/अनेकान्तवाद
(d) Uchchedavada/उच्छेदवाद

Ans. (a) : ज्ञान के स्वरूप के विषय में प्रभाकर का मत त्रिपुटिप्रत्यक्षवाद है। प्रभाकर के अनुसार ज्ञान में तीन तत्वों का रहना अनिवार्य है– ज्ञाता, ज्ञेय एवं ज्ञान। आत्मा को ज्ञाता कहा जाता है। यह ज्ञान का विषय नही होता। जिस विषय का ज्ञान होता है उसे ज्ञेय कहते हैं। प्रत्येक ज्ञान में ज्ञान की त्रिपुटि अर्थात् ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय को प्रकाशित किया जाता है। ज्ञान स्वप्रकाश है जबकि आत्मा और विषय, प्रकाशित होने के लिए ज्ञान पर निर्भर करते है।

142. Two main types of Virtues according to Aristotle are
अरस्तू के अनुसार सद्गुणों के दो मुख्य प्रकार है

(a) Intellectual Virtues and Moral virtues
बौद्धिक सदुगण और नैतिक सदुगण
(b) Religious virtues and Secular virtues
धार्मिक सदुगण और इहलौकिक सदुगण
(c) Social virtues and Political virtues
सामाजिक सदुगण और राजनैतिक सदुगण
(d) Master virtues and Slave virtues
शासक सदुगण और दास सदुगण

Ans. (a) : अरस्तू के अनुसार सदगुण के दो मुख्य प्रकार है। (I) बौद्धिक सदगुण (II) नैतिक सदगुण अरस्तू ने सदगुणों को परिभाषित करते हुए कहा कि "सदगुण मनुष्य की ऐसी स्थाई मानसिक अवस्था है जो निरंतर अभ्यास के फलस्वरूप विकसित होता है तथा मनुष्य के स्वैच्छिक कार्यों में व्यक्त होता है।"

143. According to J.S. Mill
जे.एस. मिल के अनुसार

(a) Pleasure is desirable but immoral
सुख वांछनीय किन्तु अनैतिक है
(b) There is only quantitative difference between pleasures/सुखों में केवल मात्रात्मक भेद होता है
(c) There is only qualitative difference between pleasures/सुखों में केवल गुणात्मक भेद होता है
(d) Pleasures differ both in quality and quantity
सुखों में गुणात्मक तथा मात्रात्मक, दोनो प्रकार के भेद होते है

Ans. (d) : जे.एस. मिल का मानना है कि "सुखों में गुणात्मक तथा मात्रात्मक दोनो भेद होता है।" मिल मूलतः उपयोगितावादी थे उनका मानना था की अधिकतम का अधिकतम सुख ही उपयोगितावाद का आधार है।

144. Mills methods of inductive inference does not include
मिल की आगमनात्मक अनुमान की पद्दतियों में सम्मिलित नहीं है

(a) Agreement/अन्वय
(b) Difference/व्यतिरेक
(c) Tautology/पुनः कथन
(d) Residues/अवशेष

Ans. (c) : मिल की आगमनात्मक अनुमान की पद्धति में, अन्वय, व्यतिरेक, अवशेष तो सम्मिलित है परन्तु पुनर्कथन (Tautology) सम्मिलित नही है।

145. The proposition 'No players are non-professional' is
कोई खिलाड़ी अ-पेशेवर नही है, यह तर्क वाक्य सार रूप में है

(a) Universal Negative/सार्वभौम नकारात्मक
(b) Universal Affirmative/सार्वभौम स्वीकारात्मक
(c) Existential Negative/अंशव्यापी नकारात्मक
(d) Existential Affirmative/अंशव्यापी स्वीकारात्मक

Ans. (b) : कोई खिलाड़ी अ-पेशेवर नही है, यह सार्वभौम स्वीकारात्मक तर्क वाक्य है। एक सार्वभौमिक सकारात्मक और एक सार्वभौमिक नकारात्मक प्रस्ताव में विषय शब्द और विधेय शब्द दोनों को उनके अस्वीकृत समकक्षों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है।
जैसे– कोई S, P नही है।
और सभी S, गैर P हैं।

146. The Mood, valid in all four figures is
सभी चार आकृतियों में वैध अवस्था है

(a) AEE (b) EAE
(c) AAA (d) EIO

Ans. (d) : सभी चार आकृतियों में 'EIO' वैध अवस्था है।

147. 'Logical Atomism' was propounded by
'तर्कीय परमाणुवाद' का प्रतिपादक है

(a) Ryle/राइल
(b) Wittgenstein/विट्गेन्सटाइन
(c) Russell/रस्सेल
(d) A.J. Ayer/ए.जे. आयर

Ans. (c) :

तर्कीय परमाणुवाद	–	रसेल
भाषा विज्ञान	–	विट्गेन्सटाइन
तार्किक सकारात्मकता	–	ए.जे. एअर

148. Philosopher associated with clear distinction between knowledge by description and knowledge by acquaintance is
'वर्णनात्मक ज्ञान' और 'परिचयात्मक ज्ञान' का स्पष्ट भेद प्रस्तुत करने वाला दार्शनिक है

(a) Hegel/हेगेल
(b) Russell/रस्सेल
(c) Moore/मूर
(d) Wittgenstein/विट्गेन्सटाइन

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : वर्ट्रेंड रसेल जो कि विश्लेषणात्मक दर्शन के संस्थापकों मे से एक माने जाते है ने ''वर्णनात्मक ज्ञान और परिचयात्मक ज्ञान का स्पष्ट भेद प्रस्तुत किया।

149. Philosopher associated with the notion of "Dasein" is
'डासाय' की अवधारणा से सम्बद्ध दार्शनिक है
(a) Husserl/हुसर्ल
(b) William James/विलियम जेम्स
(c) C.S. Peirce/सी.एस पीयर्स
(d) Heidegger/हेडेगर

Ans. (d) : हेडेगर डासाय की अवधारणा से संबंधित दार्शनिक हैं। मार्टिन हाइडेगर को अस्तित्ववादी दार्शनिक के रूप में जाना जाता है।

150. 'Theory of Types' is
'प्रारूपों' का सिद्धान्त है
(a) An idealist theory to explain forms
आकारों की व्याख्या का एक प्रत्ययवादी सिद्धान्त
(b) A realistic theory to explain externality of relations/सम्बन्धों की बाध्यता की व्याख्या का एक यथार्थवादी सिद्धान्त
(c) A pragmatic theory to explain meaning of Truth/सत्य का अर्थ स्पष्ट करने हेतु एक प्रयोजनवादी सिद्धान्त
(d) A phenomenological theory to explain the phenomena/प्रपंच की व्याख्या का संवृत्तिशास्त्रीय सिद्धान्त

Ans. (b) : प्रारूपों का सिद्धांत 'सम्बन्धों की बाध्यता की व्याख्या का एक यथार्थवादी सिद्धान्त है।'

151. According to Pragmatism, Truth is ascertained in terms of
प्रयोजनवाद के अनुसार सत्य की कसौटी है
(a) Practical consequences/व्यावहारिक परिणाम
(b) Rigidity of principle/सिद्धान्त की कठोरता
(c) Personal beliefs/व्यक्तिगत विश्वास
(d) General opinion/सामान्य मत

Ans. (a) : प्रयोजनवाद के अनुसार 'व्यवहारिक परिणाम' सत्य की कसौटी है। प्रयोजनवाद के अनुसार हम न केवल अपने सत्यों का ही किन्तु विविध अनुभवों का भी निर्माण करते हैं। हमारा मूलभूत अनुभव एक अविच्छिन्न धारा जैसा होता है और हम स्वप्रयोजनों से प्रेरित होकर विश्लेषण तथा चुनाव आदि करने की अपनी मानसिक क्रियाओं द्वारा, उसका विभाजन, विभिन्न पदार्थों तथा उनके पारस्परिक संबंधों के रूप में कर लिया करते हैं।

152. Which of the following is a 'O' proposition
निम्नलिखित में से 'O' तर्कवाक्य है
(a) $(\exists x)(Px.\sim Qx)$ (b) $(x)(Px \supset \sim Qx)$
(c) $(\exists x)(Px.Qx)$ (d) $(x)(Px \supset Qx)$

Ans. (a) : $(\exists x)(Px.\sim Qx)$ यह 'O' तर्कवाक्य है।

153. According to Husserl, consciousness is
हुसर्ल के अनुसार चेतना है-
(a) Absolute and independent/निरपेक्ष एवं स्वतंत्र
(b) Intentional in nature/स्वरूपतया विषयापेक्षी
(c) Non-relational/सम्बन्धों से रहित
(d) An essential quality of the self
आत्मा का सार गुण

Ans. (b) : हुसर्ल के अनुसार चेतना स्वरूपतया विषयापेक्षी है। हुसर्ल ने कहा कि चेतना मन में अंदर नही है बल्कि चेतना स्वयं के अलावा किसी और चीज के प्रति सचेत है, चाहे वह वस्तु एक पदार्थ हो या कल्पनात्मक हो।

154. Satkhyativada is held by
सत्ख्यातिवाद के समर्थक है-
(a) Udayana/उदयन
(b) Ramanuja/रामानुज
(c) Kumarila/कुमारित
(d) Dingnaga/दिङ्नाग

Ans. (b) : विज्ञानवादी बौद्धो के अनुसार आत्मा के साथ जो बुद्धि है उसकी ख्याति विषय के रूप में प्रतिभाषित होती है जैसे सीप को देखकर चाँदी का भ्रम होना। इस भ्रम का कारण बुद्धि द्वारा उसका तदाकार मान लिया जाता है इस स्थिति में अन्य के बाह्य विषयों की उपेक्षा नहीं होती है। यह स्थिति आत्मख्याति अथवा सत्ख्याति के नाम से जानी जाती है। रामानुज ने भी सत्ख्याति का समर्थन किया है।

155. A Critical Realist (Bahyarthanumeyavadi) Buddhist school is
बाह्यार्थानुमेयवादी बौद्ध मत है
(a) Sautrantika/सौत्रान्तिक
(b) Vaibhashika/वैमाषिक
(c) Shoonyavada/शून्यवाद
(d) Yogachara/योगाचार

Ans. (a) : बाह्यार्थानुमेयवादी बौद्ध मत को सौत्रान्तिक सम्प्रदाय के नाम से भी जाना जाता है। इस सम्प्रदाय के अनुसार बाह्यार्थ अनुमेय है परन्तु दृष्टि के भेद से एक के लिए चित्त निरपेक्ष तथा दूसरे के लिए चित्त सापेक्ष अर्थात अनुमेय सत्ता है। सौत्रान्तिक मत में सत्ता की स्थिति बाह्य से अन्तर्मुखी है।

156. According to Nasdiya sukta of Rig veda in the beginning of creation there was:
ऋगवेद के नासदीय सूक्त के अनुसार सृष्टि के पहलेः-
(a) Only Sat (existence)/केवल सत् था
(b) Only Asa (Non-existence)/केवल असत् था
(c) Light all around/चारो ओर प्रकाश था
(d) Darkness all around/चारों ओर अन्धकार था

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : ऋग्वेद का नासदीय सूक्त ऋग्वेद के 10वें मंडल का 129वां सूक्त है। यह ब्रह्माण्ड विज्ञान और ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति से संबंधित है। नासदीय सूक्त यह मानता है कि सृष्टि के पहले चारों ओर अंधकार था। यह सूक्त मुख्य रूप से इस तथ्य पर आधारित है की ब्रह्माण्ड की रचना कैसे हुई।

157. Which of the following duties is said to be the protector of Rta by vedas
वेदो में निम्नलिखित में से किस देवता को ऋत् का संरक्षक कहा गया है:-

(a) Indra/इन्द्र
(b) Agni/अग्नि
(c) Varun/वरूण
(d) Visvakarma/विश्वकर्मा

Ans. (c) : वैदिक परंपरा के अनुसार ऋत् वस्तुतः सत्य का नियम है। ऋत् के माध्यम से सत्य की प्राप्ति स्वीकृत की गई है। यह ऋत् तत्व वेदों की दार्शनिक भावना का मूल रूप है। वरूण को ऋत् का संरक्षक कहा गया है।

158. Which of the following dharma is beyond the casual series according to Vaibhashik Buddhism
बौद्धो के वैभाषिक सम्प्रदाय के अनुसार निम्न में से कौन सा धर्म कार्य कारण श्रृंखला से परे है?

(a) Rupa/रूप
(b) Vedana/वेदना
(c) Akasa/आकाश
(d) Chitta/चित्त

Ans. (c) : बौद्ध धर्म के वैभाषिक मत बाह्य वस्तुओं की सत्ता तथा स्वलक्षणों के रूप में उनका प्रत्यक्ष मानता है। इसे बाह्य प्रत्यक्षवाद अथवा सर्वास्तिवाद भी कहा जाता है। बौद्ध मत में कार्य कारण की श्रृंखला को प्रतीत्य समुत्पाद के नाम से भी जाना जाता है इस श्रृंखला के कुल बारह अंङ्ग हैं। जो इस प्रकार है– अविद्या, संस्कार, विज्ञान (चेतना), नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति, जरामरण। स्पष्ट है की आकाश इस श्रृंखला का अंङ्ग नही है।

159. The concept of Vijnapti matrata is associated with
विज्ञप्तिमात्रता की अवधारणा किससे सम्बन्धित है?

(a) Shunyavada/शून्यवाद
(b) Vijnanavada/विज्ञानवाद
(c) Sautrantika/सॉत्रीन्तिक
(d) Vaibhashika/वैभाषिक

Ans. (b) : बौद्धधर्म में विज्ञानवाद का प्रवर्तक मैत्रेयनाथ को माना जाता है। बौद्धधर्म के विज्ञानवाद के अनुसार बाह्य पदार्थों की सत्ता नही हैं हमें जो कुछ दिखाई देता है वह विज्ञान मात्र है। विज्ञप्तिमात्रता का संबंध इसी विज्ञानवाद से है।

160. According to Nyaya which one of the following rule is related in inference that Fire is cold because it is a substratum like water
न्याय के अनुसार 'अग्नि शीतल है क्योंकि वह द्रव्य है जैसे जल' इस अनुमान में किस नियम का.......

(a) Paksavrithi/पक्षवृत्ति
(b) Sapaksavrithi/सपक्षवृत्ति
(c) Abadhita vishaya/अबाधित विषय
(d) Asat pratipaksha/असत्प्रतिपक्ष

Ans. (c) : न्याय के अनुसार 'अग्नि शीतल है, क्योंकि वह द्रव्य है जैसे जल' यह अनुमान अबाधित विषय का उदाहरण है। न्यायदर्शन के अनुसार सत हेतु में पाँच गुण होते हैं– पक्षसत्व, सपक्षसत्व, विपक्षासत्व, असत्प्रतिपक्षत्व और अबाधितत्व इनमें से किसी भी गुण की त्रुटि होने पर वह हेतु न रहकर हेत्वाभास बन जाता है।

161. Which of the following Hetvabhasa is committed in 'Hill is fiery because it is know able'.
पर्वत पर अग्नि है क्योंकि वह प्रमेय है न्याय के अनुसार इसमें कौन सा हेत्वाभास है

(a) Virudha/विरूद्ध
(b) Satprati paksa/सत्प्रतिपक्ष
(c) Sadharana svyabhichara/साधारण सव्यभिचार
(d) Asdharana savyabhichara/असाधारण सव्यभिचार

Ans. (c) : पर्वत पर अग्नि है क्योंकि वह प्रमेय है न्याय के अनुसार इसमें साधारण सव्यभिचार नामक हेत्वाभास है। सव्यभिचार तीन प्रकार का होता है (क) साधारण (ख) असाधारण (ग) अनुपसंहारी। साधारण सव्यभिचार वह है जिसमें हेतु विपक्ष मे भी विद्यमान रहता है अतः यहाँ हेतु के विपक्षासत्वगुण का अतिक्रमण होता है।

162. Which of the following is not a feature of Atom according to Vaisesika Darshan
वैशेषिक दर्शन के अनुसार कौन सा परमाणु का लक्षण नही है

(a) One/एकत्व
(b) Many/अनेकत्व
(c) Partless/निरवयत्व
(d) Eternal/नित्यत्व

Ans. (a) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार 'एकत्व' परमाणु का लक्षण नही है। वैशेषिक मतानुसार विश्व का निर्माण परमाणुओं से हुआ है। परमाणु शाश्वत होते हैं इनकी न तो सृष्टि होती है और न तो नाश होता है। परमाणुओं के संयुक्त होने से वस्तुओं का निर्माण होता है। दो परमाणुओं के संयुक्त होने से एक द्वयणुक तथा तीन द्वयणुओं के संयोग से एक त्रयणुक का निर्माण होता है। चार त्रयणुओं के संयोग से एक चतुरणुक का प्रादुर्भाव होता है जब चतुरणुक छोटी बड़ी संख्या में संयुक्त होते हैं तब छोटे बड़े द्रव्यों का विकास होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

163. Match the List-I with List-II and choose the correct code
सूची का सूची से मिलान करे और सही कूट का चयन करेः

List-I/सूची-I (Theory of Causation) (कारणता का सिद्धान्त)	List-II/सूची-II (Schools) (दर्शन)
(a). A real is born out of real/सत् से सत् उत्पन्न होता है	(1) Advaitavedanta अद्वैत वेदान्त
(b). Real is born of unreal/असत् से सत् उत्पन्न होता है	(2) Nyaya/न्याय
(c). Unreal is born of Real/सत् से असत् उत्पन्न होता है	(3) Samkhya/सांख्य
(d). Apparent is born of the real/सत् से आभास उत्पन्न होता है	(4) Baudha/बौद्ध

Codes:/कूट :

	A	B	C	D
(a)	3	4	2	1
(b)	3	2	4	1
(c)	2	3	4	1
(d)	4	3	2	1

Ans. (b) : सही सुमेल इस प्रकार है–

	कारणता का सिद्धांत	–		दर्शन
(a)	सत से सत उत्पन्न होता है	–	3.	सांख्य दर्शन
(b)	असत से सत उत्पन्न होता है	–	2.	न्याय दर्शन
(c)	सत से असत उत्पन्न होता है	–	4.	बौद्ध दर्शन
(d)	सत से आभास उत्पन्न होता है	–	1.	अद्वैत वेदांत

164. Match the List-I with List-II and choose the correct code
सूची का सूची से मिलान करे और सही कूट का चयन करेः

List-I/सूची-I	List-II/सूची-II
(a). Prakriti/प्रकृति	(1). Prakriti-Vikriti /प्रकृति-विकृति
(b). Purusha/पुरूष	(2). Vikriti only /केवल विकृति
(c). Buddhi/बुद्धि	(3). Prakriti only /केवल प्रकृति
(d). Panch Mahabhuta /पंच महाभूत	(4). Neither Prakriti nor Vikriti/न प्रकृति न विकृति

Codes :/कूट :

	A	B	C	D
(a)	3	4	2	1
(b)	4	3	2	1
(c)	3	4	1	2
(d)	3	2	1	4

Ans. (c) : सही सुमेल इस प्रकार है–

	सूची-I			सूची-II
(a)	प्रकृति	–	3.	केवल प्रकृति
(b)	पुरूष	–	4.	न प्रकृति न विकृति
(c)	बुद्धि	–	1.	प्रकृति – विकृति
(d)	पंचमहाभूत	–	2.	केवल विकृति

165. Which of the following is incorrect in the light of Shunyata
शून्यता के सन्दर्भ में कौन सा कथन गलत है

(a) Things are always interdependent/लक्षण शून्यता
(b) Things have no positive essence भावस्वभाव शून्यता
(c) Things are non-existent as the affirm them to be in a particular place and time/इतरेतर शून्यता
(d) Things are demonstrable Lingusitically अभिलाप शून्यता

Ans. (d) : 'शून्यता' का सिद्धांत बौद्धों की महायान शाखा के माध्यमिक विभाग का सिद्धांत या मत है। यह मत संसार को शून्य और उसके सब पदार्थ को सत्ताहीन मानता है। यह विज्ञानवाद से भिन्न मत है। यह लक्षण शून्यता, भावस्वभाव शून्यता और इतरेतर शून्यता का विश्लेषण करता है। अभिलाप शून्यता का संबंध इस सिद्धांत से नही है।

166. According to Yoga which of the following refers to a stage when mind concentrates on panchtanmatras with remembrance of their qualities
योग के अनुसार वह कौन सी अवस्था है जिस में चित पंचन्मात्राओ एवं उनके गुणो पर केन्द्रित ......

(a) Savitarka/सवितर्क (b) Savichara/सविचार
(c) Sananda/सानन्द (d) Sasmita/सास्मित

Ans. (b) : योग दर्शन के अनुसार समाधि के चार अंग है– (I) सवितर्क (वितर्कानुगत)। (II) सविचार (विचारानुगत)। (III) सानन्द (आनन्दानुगत)। (IV) सास्मित (अस्मितानुगत)।
सविचार समाधि की वह अवस्था है जिसमें चित्त पंचतन्मात्राओं एवं उनके गुणों पर केन्द्रित रहता है। इस अवस्था में साधक ध्येय विषय पर सूक्ष्मता से विचार करता है।

167. Which of the following pair suppose that illusion takes place because an account of mal observation of the distinction between two mental processes
किन दो विचारधाराओं के अनुसार ख्याति दो मनः चेतनाओं के भेद को न पहचानने से उत्पन्न होती.....

(a) Viparitkhyati – Anyathakhyati विपरीत ख्याति-अन्यथाख्याति
(b) Akhyati - Viparitkhyati/अख्याति-विपरीतख्याति
(c) Anyathakhyati - Akhyati/अन्यथा ख्याति-अख्याति
(d) Akhyati - Atmakhyati/अख्याति-आत्मख्याति

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : विपरीत ख्याति और अन्यथा ख्याति के अनुसार ख्याति दो मनः चेतनाओं के भेद को न पहचानने से उत्पन्न होती है। विपरीत ख्याति का संबंध कुमारिल से है। कुमारिल के अनुसार भ्रम का कारण यह नहीं की हम दोनों में भेद नहीं कर पाते बल्कि भ्रम इस कारण होता है कि हम दोनों (रस्सी और सर्प) को मिलाकर एक कर देते है।

अन्यथाख्याति का संबंध न्यायदर्शन से है इसके अनुसार "जब एक वस्तु दूसरे वस्तु के आकार की प्रतीति होती है तो इसे अन्यथा ख्याति कहते है जैसे– सदोष इन्द्रियों के संयोग के कारण ही सीप, चाँदी का जान पड़ता है।

168. 'Sound is eternal, since it is created' is an example of which Hetvabhasa
'शब्द नित्य है क्योंकि वह उत्पन्न होता है' इसमें कौन सा हेत्वाभास है

(a) Abadhita/अबाधित
(b) Virudha/विरूद्ध
(c) Anaikantika/अनैकान्तिक
(d) Prakaranasama/प्रकरण सम

Ans. (b) : "शब्द नित्य है क्योंकि वह उत्पन्न होता है" यह विरूद्ध हेत्वाभास है। हेत्वाभास न्याय दर्शन की अवधारणा है। इसके अनुसार "सद हेतुओं का लक्षण न रहने पर भी जो सद हेतुओं के कुछ धर्मों से युक्त होकर हेतु के समान प्रतीत है उसे हेत्वाभास कहते है। हेत्वाभास पांच प्रकार का होता है– (I) सव्यभिचार (II) विरूद्ध (III) प्रकारणसम (IV) असिद्ध (V) कालातीत

विरूद्ध हेत्वाभास तब होता है "जब हेतु साध्य के अभाव से व्याप्त हो तो हेतु साध्य का व्याप्य न होकर साध्याभाव का व्याप्त हो जाता है।

169. The term 'Avyakta' in samkhya stands for
सांख्य दर्शन में 'अव्यक्त' पद किसके लिए प्रयुक्त है

(a) Purusha/पुरूष
(b) Prakriti/प्रकृति
(c) Manas/मनस्
(d) Ahamkara/अहंकार

Ans. (b) : सांख्य दर्शन मे 'अव्यक्त' पद प्रकृति के लिए प्रयोग किया गया है। इस दर्शन के अनुसार संसार के सभी कार्य (पदार्थ) व्यक्त हैं, इसका अंतिम कारण (प्रकृति) अव्यक्त है, अतः जगत का अंतिम कारण होने से इसका नाम अव्यक्त है।

170. Which of the following is an example of 'Vikalpa' according to yoga philosopher
योग दर्शन अनुसार 'विकल्प' का दृष्टान्त कौन सा है:

(a) To presence distinction between Purusha and consciousness/पुरूष और चैतन्य में भेद देखना
(b) To presence snake in a rope/रज्जु में सर्प देखना
(c) To presence rope as a rope
रज्जु रज्जु के रूप में देखना
(d) To presence two moons by putting fingers on eyes/आँखों पर उँगली रखने से दो चन्द्रमा देखना

Ans. (a) : पुरूष और चैतन्य में भेद, योग दर्शन के विकल्प का दृष्टांत है।

171. Mimamsa school proves the existence of Apurva by
मीमांसा दर्शन मे अपूर्व की सत्ता सिद्ध किस से होती है:-

(a) Implication/अर्थापत्ति से
(b) Inference/अनुमान से
(c) Verbal testimony/शब्द से
(d) Perception/प्रत्यक्ष से

Ans. (a) : मीमांसा दर्शन के अनुसार अपूर्व की सत्ता अर्थापत्ति से सिद्ध होती है। अर्थापत्ति वह प्रमाण है जिसके द्वारा अन्यथा अनुपपन्न विषय उपपन्न हो जाता है। जिसकी सहायता से विषय की उत्पत्ति होती है उसे ही अर्थापत्ति कहते हैं।

172. On the day of Moon Eclipse to have a bath in river, must be an act of what kinf according to Mimamsa
भीमासा दर्शन के अनुसार चन्द्रग्रहण पर नदी में स्नान करना कौन सा कर्म है

(a) Nitya/नित्य
(b) Naimittika/नैमित्तिक
(c) Kamya/काम्य
(d) Nishidha/निषिद्ध

Ans. (b) : मीमांसा दर्शन के अनुसार चन्द्रगहण पर नदी में स्नान करना नैमित्तिक कर्म है। मीमांसकों के अनुसार किसी अवसर विशेष पर किए गए श्राद्ध आदि कर्मकाण्डीय कर्म नैमित्तिक कर्म कहलाते हैं। मीमांसा दर्शन चार प्रकार के कर्म मानता है- (I) नित्यकर्म (II) नैमित्तिक कर्म (III) प्रतिषिद्ध कर्म (IV) काम्य कर्म।

173. Use the codes given below to put the following five Koshas in correct order:-
नीचे दिए गए कूटों का प्रयोग करके पंचकोशी को सही क्रम में रखिए :

1. Annamaya Kosha/अन्नमय कोश
2. Manomaya Kosha/मनोमय कोश
3. Pranamaya Kosha/प्राणमय कोश
4. Anandamaya Kosha/आनन्दमय कोश
5. Vijnanamaya Kosha/विज्ञानमय कोश

Codes:/कूट :

(a) 1, 3, 2, 5, 4
(b) 1, 2, 4, 5, 3
(c) 2, 3, 1, 5, 4
(d) 4, 5, 2, 3, 1

Ans. (a) : पंचकोशों का सही क्रम इस प्रकार है-
अन्नमय कोश → प्राणमय कोश → मनोमय कोश → विज्ञानमय कोश → आनंदमय कोश।

174. Knowledge according to shankaracharya is
शंकराचार्य के अनुसार ज्ञान

(a) Object dependent/वस्तुतन्त्र है
(b) Subject dependent/ज्ञाता तन्त्र
(c) Mental activity/मानसिक क्रिया है
(d) Spiritual activity/अध्यात्मिक क्रिया है

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : शंकराचार्य के अनुसार ज्ञान, वस्तुतंत्र (वस्तुनिष्ठ) होता है शंकराचार्य के अनुसार ज्ञान दो प्रकार का होता है- एक पराविद्या कहा जाता है और दूसरा अपराविद्या कहा जाता है। पहला सगुण ब्रह्म है लेकिन दूसरा निर्गुण। शंकराचार्य कहते हैं की ज्ञान, मोक्ष का साधन है।

175. The soul according to Ramanuja is
रामानुज के अनुसार आत्मा है:-

(a) Knower, doer, enjoyer/ज्ञाता, कर्ता, भोक्ता
(b) Only Doer/केवल कर्ता
(c) Only knower/केवल ज्ञाता
(d) Only enjoyer/केवल भोक्ता

Ans. (a) : रामानुज के अनुसार आत्म तत्व तथा अचित अर्थात् प्रकृति तत्व ब्रह्म या ईश्वर से पृथक नही है बल्कि ये विशिष्ट रूप से ब्रह्म के ही दो स्वरूप है एवं ब्रह्म या ईश्वर पर ही आधारित हैं वे ब्रह्म या ईश्वर का शरीर हैं तथा ब्रह्म या ईश्वर उनकी आत्मा सदृश्य है। इस प्रकार रामानुज की आत्मा ज्ञाता, कर्ता और भोक्ता है।

176. Which of the following upholds 'Being' and 'thought' as one
निम्नलिखित में से कौन मानता है कि 'सत्ता' और 'विचार' एक है

(a) Parmenides/पार्मेनाईडीज
(b) Pythagoras/पाईथागोरस
(c) Heraclitus/हेराक्लाइटस
(d) Thales/थेलीज

Ans. (a) : पारमेनाइडीज, ग्रीक दार्शनिकों में दूसरी पीढ़ी के माने जाते हैं। इनका जन्म छठीं शताब्दी ई.पू. के पूर्वार्द्ध में हुआ था। इन्होने सत्ता और विचार को एक माना।

177. The author of 'Appearance and Reality' is
'अपीयरेन्स एन्ड रियलटी' का लेखक है:-

(a) Kant/कांट (b) Hegel/हेगेल
(c) Moore/मूर (d) Bradley/ब्रैडले

Ans. (d) :

पुस्तक		लेखक
अपीयरेन्स एन्ड रियलटी	–	ब्रैडले
ऑन द फाल्सटलिटी ऑफ द फोर सिलोजिस्टिक फिगर्स	–	काण्ट
फिलासफी ऑफ राइट	–	हेगल
द नेचर ऑफ मोरल फिलासफी	–	मूर

178. Consider the following statements
निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. **Self is substratum of consciousness**
आत्मा चेतना का आश्रय है
2. **There is no past life/पूर्वजन्म नहीं है**
3. **Death is liberation/मृत्यु ही अपवर्ग है**

Which of above statement represent the Charvaka position and answer from the codes given below:
उपर्युक्त में से कौन से कथन चार्वाक मत का प्रतिनिधित्व करते हैं? नीचे दिये गये कूटों से उत्तर.....

(a) 1, 2 and 3/1, 2 और 3
(b) 1 and 2/1 तथा 2
(c) 1 and 3/1 तथा 3
(d) 2 and 3/2 तथा 3

Ans. (d) : चार्वाक मुख्य रूप से नास्तिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानते हैं। आत्मा और ईश्वर में इनका बिल्कुल भी विश्वास नही है। इनके अनुसार पूर्व जन्म की बाते केवल बकवास हैं और मृत्यु ही एक मात्र मोक्ष (अपवर्ग) है।

179. Use the codes given below to put the following conditions of meaningfulness of a sentences in correct order according to the Nyaya Philosophy
न्यायदर्शन के अनुसार वाक्य के सार्थकता की निम्नलिखित शर्तों को उचित क्रम में लिखिए?

1. akanksha/आकांक्षा
2. sannidhi/सन्निधि
3.tatparya/तात्पर्य
4.Yogyata/योग्यता

(a) 1, 4, 2, 3 (b) 1, 3, 2, 4
(c) 1, 2, 4, 3 (d) 1, 3, 4, 2

Ans. (a) : न्याय दर्शन के प्रणेता गौतम है। न्याय दर्शन के अनुसार वाक्य के सार्थकता के लिए उचित क्रम इस प्रकार हैं–
आकांक्षा ⟶ योग्यता ⟶ सन्निधि ⟶ तात्पर्य।

180. Consider according to Socrates
सुकरात के अनुसार विचार कीजिए:

1. **Knowledge is virtue/ज्ञान सद्गुण है**
2. **Virtue is one/सद्गुण एक है**
3. **Virtue makes life painless and pleasant**
सद्गुण जीवन को दुःखरहित तथा सुखपूर्ण बनाता है

Which of the above statements or statement correctly present or presents Socrates' view?
निम्न में से कौन सा कथन सुकरात के मत को सही रूप में प्रस्तुत करते है?

(a) 1, 2 and 3/1, 2 तथा 3
(b) 1 and 2 only/1 तथा 2
(c) 1 and 3 only/1 तथा 3
(d) 1 only/1 केवल

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : सुकरात ग्रीक दर्शन के आधार स्तम्भों में से एक माने जाते हैं। यद्यपि सुकरात ने कोई ग्रंथ नही लिखा तथापि इनके दार्शनिक विचारों का प्रभाव परवर्ती दार्शनिक परंपरा पर स्पष्ट देखा जा सकता है। इनका मानना था कि "ज्ञान ही सद्गुण है और सद्गुण एक है। यही जीवन को दुखरहित तथा सुखपूर्ण बनाता है।"

181. Ideas according to Plato:
प्लेटो के अनुसार प्रत्ययः

(a) Reside in human mind/मानव-मन में रहते है
(b) Reside in divine mind/दैवी मन में रहते है
(c) Reside in an imaginary world
एक काल्पनिक जगत् में रहते है
(d) Exist in a world of their own
स्वयं अपने जगत् में रहते है

Ans. (d) : प्लेटो के प्रत्ययवाद के अनुसार प्रत्यय स्वयं अपने जगत मे रहते हैं। प्लेटो के अनुसार प्रत्यय या 'विचार' ही चरम सत्य है वह शाश्वत और अखण्ड है इसलिए अपने जगत में रहते है।

182. Which one of the following arguments has not been used by Plato to prove the immortality of soul?
निम्नलिखित में से किस युक्ति का प्रयोग प्लेटो ने आत्मा की अमरता सिद्ध करने के लिए नहीं किय...?

(a) Soul is inactive/आत्मा निष्क्रिय है
(b) Soul is simple/आत्मा सरल है
(c) Soul has knowledge of forms
आत्मा को आकारों का ज्ञान है
(d) Soul has capacity of reminiscence
आत्मा में पुर्नस्मरण की क्षमता है

Ans. (a) : प्लेटो ने अपने विचार के केन्द्र में प्रत्ययवाद को रखा। उन्होंने प्रत्ययवाद के माध्यम से ही आत्मा की अमरता को सिद्ध करने का प्रयास किया और आत्मा के संदर्भ मे कुछ युक्तियों की व्याख्या की जैसे– (I) आत्मा सरल है (II) आत्मा को आकारों का ज्ञान है (III) आत्मा में पुनरस्मरण की क्षमता है। परन्तु आत्मा निष्क्रिय है, ऐसा प्लेटो ने नहीं कहा।

183. Match the List-I with List-II and choose the correct code
सूची का सूची से मिलान करे और सही कूट का चयन करे :

List-I/सूची-I (Science) (विज्ञान)	List-II/सूची-II (Subject-matter) (विष्य वस्तु)
(A) Logic तर्कशास्त्र	(1) Use of knowledge for creation/रचना के लिए ज्ञान
(B) Metaphysics तत्वमींमासा	(2) Use of knowledge to some end/किसी लक्ष्य के लिए ज्ञान
(C) Ethics नीतिशास्त्र	(3) Pure knowledge शुद्ध ज्ञान
(D) Aesthetics सौन्दर्य शास्त्र	(4) Method of inquiry जिज्ञासा की विधि

Codes:/कूट:

	A	B	C	D
(a)	4	3	1	2
(b)	4	3	2	1
(c)	3	4	2	1
(d)	3	2	4	1

Ans. (b) : सही सुमेल निम्नवत है-

सूची-I (विज्ञान)	सूची-II (विषय वस्तु)
A. तर्कशास्त्र	4. जिज्ञासा की विधि
B. तत्वमीमांसा	3. शुद्ध ज्ञान
C. नीतिशास्त्र	2. किसी लक्ष्य के लिए ज्ञान का प्रयोग
D. सौन्दर्य शास्त्र	1. रचना के लिए ज्ञान

184. In view that 'mind is a clean slate' is held by:
मन सादे स्लेट की तरह है-, यह किसका मत है?

(a) Leibnitz/लाइबनिट्ज
(b) Descartes/देकार्त
(c) Locke/लॉक
(d) Plato/प्लेटो

Ans. (c) : अनुभववादी लॉक के अनुसार "मन सादे स्लेट की तरह है।" लॉक कहते है कि हमारे मन में कोई सहज प्रत्यय नहीं है। हमारी आत्मा में कोई जन्मजात प्रत्यय नही है। समस्त ज्ञान की जननी इन्द्रियानुभूति है। लॉक ने बुद्धिवादियों के विपरीत इन्द्रियानुभववाद की प्रतिष्ठा की।

185. Kant's philosophy is
कॉट का दर्शन हैः

(a) Transcendental realism/अनुभवातीत वस्तुवाद
(b) Empirical idealism/इंद्रियानुभविक प्रत्ययवाद
(c) Empirical idealism and transcendental Realism/इंद्रियानुभविक प्रत्ययवाद तथा अनुभवातीत वस्तुवाद
(d) Empirical realism and transcendental idealism
इंद्रियानुभविक वस्तुवाद तथा अनुभवातीत प्रत्ययवाद

Ans. (d) : कांट का दर्शन इंद्रियानुभविक वस्तुवाद तथा अनुभवातीत प्रत्ययवाद का सार है। काण्ट द्वारा संवेदनों के रूप में ज्ञान की सामग्री उपस्थित करना देश काल के द्वारों से इस सामग्री को निकालना और बुद्धि विकल्पों के ढांचे मे ढालकर सार्वभौम और निश्चित ज्ञान के रूप में परिणित करना, इन्द्रिय संवेदनो और बुद्धि विकल्पों की अतीन्द्रिय और बुद्धि द्वारा अगम्य परमार्थ तक गति न मानना आदि सिद्धांत काण्ट के दर्शन की उपलब्धि है।

186. The thing-in-itself according to Kant is:
कांट के अनुसार स्वयं मे वस्तु है

(a) Knowable/ज्ञेय
(b) Unthinkable/सोचने योग्य नही

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) Thinkable but not Knowable
सोचने योग्य किन्तु अज्ञेय

(d) Knowable but not thinkable
ज्ञेय किन्तु सोचने योग्य नही

Ans. (c) : कांट के अनुसार स्वयं मे वस्तु है "सोचने योग्य किन्तु अज्ञेय"।

187. God or Idea according to Hegel:
हेगल के अनुसार ईश्वर अथवा प्रत्ययः

(a) Exists before the creation of the World
जगत की सृष्टि के पहले विद्यमान है

(b) Is absorbed into the World/जगत में व्याप्त है

(c) Becomes self-conscious through something other than itself/अपने से भिन्न सत्ता के माध्यम से स्व-चेतन होता है

(d) Is eternally self-conscious/नित्य रूप से सचेतन है

Ans. (c) : हेगल के अनुसार ईश्वर अथवा प्रत्यय अपने से भिन्न सत्ता के माध्यम से स्व-चेतन होता है। हेगल का ईश्वर काण्ट के परमार्थिक सत्ता के सदृश अज्ञेय नही है। वह हमारे चिंतन का विषय बन सकता है। चूकी हमारे सीमित विचार के नियम वही है जो सार्वभौम ईश्वर या उसके विचाररूप विश्व के, अतः ईश्वर को बुद्धि द्वारा जाना जा सकता है।

188. Match the List-I with List-II and select your answer from the codes given below the lists:
सूची का सूची से मिलान करे और सही कूट का चयन करेः

List-I/सूची-I (Theory) (सिद्धान्त)	List-II/सूची-II (Thinker) (विचारक)
A. Intentionality विषयापेक्षा	1. Wittgenstein विटगेन्स्टीन
B. Man's throwness in the World मनुष्य का जगत में फेका होना	2. Ryle/राइल
C. Ghost in the Machine मशीन में प्रेत	3. Husserl/हुसेर्ल
D. Picture Theory चित्र सिद्धांत	5. Heidgger हाइडेगर

Codes:/कूट :

	A	B	C	D
(a)	3	4	2	1
(b)	3	4	1	2
(c)	4	3	2	1
(d)	4	2	1	3

Ans. (a) :

सिद्धांत	विचारक
A. विषयपेक्षता	3. हुसर्ल
B. मनुष्य का जगत में फेका होना	4. हाइडेगर
C. मशीन मे प्रेत	2. राईल
D. चित्र सिद्धांत	1. विटगेन्सटाइन

189. Metaphysical statements according to Ayer are meaningless because:
एयर के अनुसार तत्वमीमांसीय कथन निरर्थक हैं क्योकिः

(a) They are false/वे मिथ्या है
(b) They are doubtful/वे संदिग्ध है
(c) They are analytic/वे विश्लेषणात्मक है
(d) They are neither true nor false
वे न सत्य हैं न असत्य

Ans. (d) : प्रसिद्ध दार्शनिक ए.जे. एअर के अनुसार "तत्वमीमांसीय कथन निरर्थक हैं क्योंकि वे न तो सत्य है और न तो असत्य।"

190. Which one of the following believes that Universal is only a name?
निम्नलिखित में से कौन मानता है कि सामान्य नाममात्र है?

(a) Nyaya/न्याय (b) Buddhism/बौद्ध
(c) Vedanta/वेदांत (d) Mimamsa/मीमांसा

Ans. (b) : बौद्ध दार्शनिक मानते हैं कि सामान्य की सत्ता नाममात्र की है।

191. Which one of the following does not subscribe to the teleological ethics?
निम्नलिखित में से कौन प्रयोजनवादी नीतिशास्त्र का समर्थन नहीं करता?

(a) Bentham/बेन्थम (b) Mill/मिल
(c) Butler/बटलर (d) Epicurus/इपीक्यूरस

Ans. (c) : हर्बट बटलर प्रयोजनवादी नीतिशास्त्र के समर्थक नही हैं। शेष सभी यथा- जर्मी बेंथम, स्टुअर्ट मिल, एपीक्यूरस आदि प्रयोजनवादी नीतिशास्त्र के समर्थक है।

192. According to Kant moral will originates in:
कांट के अनुसार नैतिक इच्छा उत्पन्न होती हैः

(a) Reason/बुद्धि में
(b) Tendency/प्रवृत्ति में
(c) Emotion/भावना में
(d) Experience/अनुभव में

Ans. (a) : आलोचनात्मक विज्ञानवादी एमान्युएल काण्ट के अनुसार "नैतिक इच्छा बुद्धि में उत्पन्न होती है।"

193. Which one of the following advocates 'rational Utilitarianism'?
निम्नलिखित में से कौन सा बौद्धिक उपयोगितावाद का समर्थन करता है-

(a) Bentham/बेन्थम (b) Mill/मिल
(c) Spencer/स्पेन्सर (d) Sidgwick/सिजविक

Ans. (d) : सिजविक बौद्धिक उपयोगितावादी हैं, शेष सभी यथा- बेंथम, मिल, स्पेन्सर बौद्धिक उपयोगितावाद का समर्थन नहीं करते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

194. Which one of the following accepts that moral judgments are prescriptive?
निम्नलिखित में से कौन मानता है कि नैतिक निर्णय परामर्शात्मक होते है?
(a) A.J. Ayer/ए.जे. एयर
(b) G.E. Moore/जी.ई. मूर
(c) Nowel - Smith/नावेल-स्मिथ
(d) Ross/रॉस

Ans. (c) : 'नावेल स्मिथ' का मानना है की नैतिक निर्णय परामर्शात्मक होते हैं।

195. "To know a Christ, there must be a mind of Christ" who says?
"एक ईसा मसीह को समझने के लिए ईसामसीह का मस्तिष्क होना आवश्यक है" कौन कहता है
(a) Tagore/टैगोर
(b) J. Krishnamurthy/जे. कृष्णामूर्ती
(c) Radhakrishnan/राधाकृष्णन
(d) Ambedkar/अम्बेडकर

Ans. (c) : "एक ईसा मसीह को समझने के लिए ईसामसीह का मस्तिष्क होना आवश्यक है।" यह कथन डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का है।

196. 'Yavat Jeevet Sukham Jeevet' who puts this thought?
'यावत जीवेत् सुखम् जीवेत्' यह विचार कौन देता है
(a) Vedanta/वेदांत
(b) Mimamsa/मीमांसा
(c) Charvaka/चार्वाक
(d) Sudhadvaita/शुद्धाद्वैत

Ans. (c) : 'यावत जीवेत् सुखम् जीवेत्' यह उक्ति चार्वाक की है। चार्वाक नास्तिक दर्शन है। यह ईश्वर, आत्मा, परमात्मा की सत्ता में विश्वास नहीं करता है। यह प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है। इसका मानना है की 'जब तक जियो सुख से जियो अगर ऋण लेकर घी पीना पड़े तो इसमें कोई बुराई नही है।'

197. Which of the following statement is unaffected by the doubt principle of Descartes?
निम्न में से कौन सा कथन डेकार्ट के संदेह सिद्धांत से अप्रभावित है?
(a) I doubt/मुझे संदेह है
(b) 4 and 4 are 7/चार और चार सात होते है
(c) I am saying that 'I doubt'
मै कह रहा हूं मुझे संदेह है
(d) I am in bliss/मैं आनंद में हूँ

Ans. (c) : कथन 'मै कह रहा हूँ मुझे संदेह है' डेकार्ट के संदेह सिद्धांत से अप्रभावित है, शेष सभी प्रभावित है। डेकार्ट मूलतः बुद्धिवादी है। लेकिन उन्होंने संदेह की पद्धति भी अपनाई है, परन्तु वे सन्देहवादी नही है, संदेह उनके लिए साधन मात्र है साध्य नहीं। वे कहते हैं सत्य निश्चयात्मक है परन्तु निश्चय पर पहुँचने के लिए संदेह आवश्यक है।

198. 'Abstract ideas are the reason of our faith in matter'. Who thinks so?
जड़ वस्तुओं में हमारे विश्वास का कारण अमूर्त विचार है किसका मत है
(a) Locke/लॉक
(b) Hume/ह्यूम
(c) Berkeley/बर्कले
(d) Moore/मूर

Ans. (c) : जड़ वस्तुओं में हमारे विश्वास का कारण अमूर्त विचार है यह मत बर्कले का है। बर्कले अपने सिद्धांत में जड़ तत्व का खंडन करते है। वे कहते हैं की सत्ता अनुभवमूलक है। वे कहते हैं अनुभव कर्ता है आत्मा और अनुभव के विषय हैं विज्ञान।
बर्कले कहते हैं कि बाह्य जड़ पदार्थ का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं, हम इसका प्रत्यक्ष नहीं करते क्योंकि प्रत्यक्ष होता है केवल गुणों का बाह्य पदार्थों का नहीं, बाह्य जड़ पदार्थों में हमारे विश्वास का कारण हमारे अमूर्त विचार है।

199. Modern logic accepts 15 valid moods of categorical syllogism out of 19 in Traditional logic because?
परंपरागत न्यायवाक्यीय तर्कशास्त्र में कुल 19 वैध अवस्थाओं में आधुनिक तर्कशास्त्र 15 वैध मानता है शेष ....
(a) Four keep the fallacy of infinite regress
चार में अनवस्था दोष है
(b) Four keep the fallacy of Middle Term
चार में मध्यम पद दोष है
(c) Four keep the fallacy of existentaility
चार में सत्तात्मक दोष है
(d) Four have no deduction/चार में निगमन दोष है

Ans. (c) : परंपरागत न्यायवाक्यीय तर्कशास्त्र में कुल 19 वैध अवस्थाएं हैं, परन्तु आधुनिक तर्कशास्त्री केवल 15 को वैध मानते हैं शेष चार में उनके अनुसार सत्तात्मक दोष है।

200. According to Nyaya Philosophy the thread is related to the cloth as its:-
न्याय दर्शन के अनुसार तन्तु का पट से सम्बन्ध है:
(a) Nimitta karana/निमित्त कारण का
(b) Samvayi Karana/समवायि कारण का
(c) Asamvayi Karana/असमवायि कारण का
(d) Aupadhika Karana/औपाधिक कारण का

Ans. (c) : न्याय दर्शन के अनुसार तंतु का पट में असमवायि कारण का संबंध है। असमवायि कारण उस गुण या कर्म को कहते हैं जो उपादान कारण में समवेत रहकर कार्य की उत्पत्ति में सहायक होता है। जैसे कपड़े का निर्माण सूतों से होता है। यही सूतों का संयोग (कर्म) कपड़े का असमवायि कारण है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

राजस्थान लोक सेवा आयोग असिस्टेंट प्रोफेसर-2020
दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)
व्याख्या सहित हल प्रथम प्रश्न-पत्र (परीक्षा तिथि : 03.10.2021)

1. 'Anadhigatata' of Prama is criticised by
प्रमा के 'अनधिगतता' लक्षण की आलोचना किस दार्शनिक ने की है?

(a) Vatsyayan/वात्स्यायन
(b) Shaliknath/शालिकनाथ
(c) Dharmotaracharya/धर्मोत्तराचार्य
(d) Jayant/जयन्त

Ans. (d) : यथार्थ ज्ञान को प्रमा कहा गया है। वस्तु को उसी रूप में ग्रहण करना जिस रूप में वस्तु है 'प्रमा' कहा जाता है। जैसे- रस्सी को रस्सी के रूप में ग्रहण करना अथवा घड़े को घड़े के रूप में ग्रहण करना प्रमा है। प्रमा के अनधिगतता लक्षण की आलोचना जयन्त ने की है।

2. Which 'Pramaan-system' could be compared with Russel's Knowledge by acquaintance?
रसेल के परिचयात्मक ज्ञान (Knowledge by acquaintance) की तुलना किस प्रमाण व्यवस्था की जा सकती है?

(a) Bauddh system/बौद्ध प्रमाण व्यवस्था
(b) Jain system/जैन प्रमाण व्यवस्था
(c) Charvak system/चार्वाक प्रमाण व्यवस्था
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : रसेल के परिचयात्मक ज्ञान के अनुसार 'जब हमें किसी वस्तु का परिचय होता है तो यह भी परिचय होता है कि मुझे उस वस्तु का परिचय है।' जैसे- मै इस कलम को देख रहा हूँ। कलम के साथ कलम को देखने का भी परिचय हो रहा है। रसेल के अनुसार यही परिचय ज्ञान है। रसेल के परिचय ज्ञान की तुलना बौद्ध प्रमाण व्यवस्था से की जा सकती है।

3. By which 'Indriya-sannikarsh' according to Nyaya, sound perception is created?
न्याय-दर्शन के अनुसार ध्वनि का प्रत्यख कौन से इन्द्रिय-सन्निकर्ष से होता है।

(a) Samyoga/संयोग
(b) Samvaya/समवाय
(c) Sanyukt-Samavaya/संयुक्त-समवाय
(d) Samvet Samavaya/समवेत-समवाय

Ans. (b) : न्याय दर्शन के अनुसार समवाय सन्निकर्ष में, इन्द्रिय का सन्निकर्ष एक ऐसी वस्तु से होता है जिसमें एक गुण, गुण के रूप में इन्द्रिय में समवेत हो जाता है। जैसे कर्णेन्द्रिय द्वारा ध्वनि का प्रत्यक्ष होना। चूँकि कर्णेन्द्रिय का निर्माण आकाश से होता है जिसका गुण 'ध्वनि' है इसलिए कर्णेन्द्रिय में 'ध्वनि' गुण के रूप में समवेत है अतः समवाय का इन्द्रिय (कर्ण) से सन्निकर्ष होने पर ध्वनि का प्रत्यक्ष होता है।

4. 'Tatrendriyajany sukhadi pratyaksham' is accepted by
'तत्रेन्द्रियाजन्यं सुखादि प्रत्यक्षम्' कौन सा दर्शन स्वीकार करता है?

(a) Vedanta/वेदान्त
(b) Jain/जैन
(c) Bauddha/बौद्ध
(d) Yoga/योग

Ans. (b) : 'तत्र इन्द्रियाजन्य सुखादि प्रत्यक्षम्' की अवधारणा जैन दर्शन की है।

5. The statement in which praise, condemnation, prakriti are described are following
जिन वाक्यों में स्तुति, निंदा, प्रकृति आदि अभिव्यक्ति होती है, कहलाते हैं:

(a) Vidhi/विधि वाक्य
(b) Siddharthak/सिद्धार्थक वाक्य
(c) Arth/अथवाक्य
(d) Vidhayak/विधायक वाक्य

Ans. (c) : स्तुति, निन्दा, प्रकृति आदि की अभिव्यक्ति के लिए जिन वाक्यों का प्रयोग किया जाता है उन्हें अर्थ वाक्य कहते हैं।

6. In how many categories, Pramanyvaad has been classified by madhvacharya?
माध्वाचार्य ने प्रामाण्यवाद को कितनी कोटियों में बाँटा है?

(a) One/एक (b) Two/दो
(c) Three/तीन (d) Four/चार

Ans. (d) : मध्वाचार्य ने प्रमाण्यवाद को चार कोटियों में बांटा है। मध्वाचार्य, कुमरिल भट्ट परंपरा के मीमांसक है। मध्वाचार्य का मत है कि ज्ञान का प्रमाण्य उसके बोध स्वरूप होने से है और ज्ञान का अप्रमाण्य कारणगत दोष से होता है। ज्ञान स्वतः प्रमाण होता है उसका अप्रमाण्य तब ज्ञात होता है जब उसके कारणों के दोषों का ज्ञान होता है। किसी दूसरे ज्ञान के कारण उसका प्रमाण्य नहीं होता है। प्रत्यक्ष अनुमान आदि प्रमाणों द्वारा ज्ञान उत्पन्न होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

7. **Which relation between Term and Sentence is held by Prabhakar?**
निम्न में से पद व वाक्य के संबंध का कौन-सा सिद्धान्त प्रभाक को मान्य है?
(a) Anvitabhidhanvad/अन्विताभिधानवाद
(b) Abhihitanvayvad/अभिहितान्वयवाद
(c) Samuchayavada/समुच्यवाद
(d) Taatparyavada/तात्पर्यवाद

Ans. (a) : अन्विताभिधानवाद का सिद्धान्त प्रभाकर का है। इस सिद्धान्त के अनुसार 'वाक्य में पदों के अर्थ समन्वित रूप से विद्यमान रहते हैं।' वाक्य को तोड़ने से पृथक-पृथक पदों का अर्थ ज्ञात होता है। इसके अनुसार पदो की स्वतंत्र सत्ता नहीं है। वे वाक्य के अवयव हैं और वाक्य विश्लेषण से उनका अर्थ निकलता है। इस वाद में वाक्य को महत्व दिया गया है अतः इसे वाक्यवाद भी कहते हैं। इस अवधारणा को प्रभाकर इस प्रकार कहते हैं 'अन्वितानाम पदार्थानाम् अभिधानम्'।

8. **Which doctrine holds Terms as a unit in language?**
कौन सा मत भाषा की इकाई 'पद' को स्वीकार करता है?
(a) Prabhakar/प्रभाकर मत
(b) Bhatta/भाट्ट मत
(c) Murari/मुरारी मत
(d) All of these/ये सभी

Ans. (a) : भाषा की इकाई 'पद' का मत 'प्रभाकर' का है। यह मत अन्विताभिधानवाद कहलाता है। इस मत के अनुसार पदों की स्वतंत्र सत्ता नहीं है। वे वाक्य के अवयव हैं और वाक्य विश्लेषण से उनका अर्थ निकलता है। इस मत के अनुसार वाक्य ही भाषा की सार्थक इकाई है।

9. **According to Kumarila the shell is appearing as silver because**
कुमारिल के अनुसार शुक्ति रजत के रूप में दृष्टिगोचर होती है, क्योंकि
(a) it is caused by purely Psychological Factors./ऐसा विशुद्ध रूप से मनोवैज्ञानिक कारकों के कारण होता है।
(b) appearances are devoid of ultimate reality and relative.
प्रतीतियाँ परम सत् से रहित हैं और सापेक्षिक हैं।
(c) it is caused by positive wrong synthesis of two unrelated imperfect cognitions.
ऐसा दो असम्बन्धित अपूर्ण संज्ञानों के सकारात्मक त्रुटिपूर्ण संश्लेषण (संसर्ग) के कारण होता है।
(d) it generally happens when we are in hurry.
ऐसा अकसर तब होता है जब हम जल्दी में होते हैं।

Ans. (c) : कुमारिल के अनुसार शुक्ति रजत के रूप में दृष्टिगोचर होती है क्योंकि ऐसा दो असम्बन्धित अपूर्ण संज्ञानों के सकारात्मक त्रुटिपूर्ण संश्लेषण (संसर्ग) के कारण होता है।

10. **As a separate source of knowledge Anuplabdhi is accepted by**
कौन सा दर्शन अनुपलब्धि को स्वतन्त्र प्रमाण स्वीकार करता है?
(a) Charvaka/चार्वाक
(b) Nyaya/न्याय
(c) Bauddha/बौद्ध
(d) Shankar-Vedanta/शंकर-वेदान्त

Ans. (d) : अद्वैत-वेदान्त और भट्ट मीमांसक दोनों अनुपलब्धि को स्वतंत्र प्रमाण मानते हैं। किसी विषय के अभाव का साक्षात ज्ञान हमें अनुपलब्धि द्वारा होता है। अनुपलब्धि को प्रत्यक्ष नहीं कहा जा सकता है। प्रत्यक्ष के लिए इन्द्रिय का विषय के साथ सम्पर्क होना अनिवार्य हो जाता है इन्द्रियों का सम्बन्ध उन विषयों से हो सकता है जिनका अस्तित्व है। जो अविद्यमान है उसका सम्पर्क इन्द्रियों से कैसे हो सकता है? आँखों का सम्पर्क घड़े के साथ हो सकता है परन्तु घड़े के अभाव के साथ नहीं। इसे अनुमान जन्य ज्ञान भी नहीं कह सकते क्योंकि अनुमान की सम्भावना व्याप्ति सम्बन्ध के पूर्व ज्ञान पर निर्भर करती है। इसे शब्द और उपमान के द्वारा भी नहीं जाना जा सकता है क्योंकि आप्त वाक्य अथवा सादृश्य ज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती है। अतः अनुपलब्धि को एक स्वतंत्र प्रमाण मानना आवश्यक हो जाता है।

11. **The entirely accomplished yogi who has eternal and accomplished knowledge according to Nyaya is called.**
न्याय दर्शन के अनुसार पूर्णतः सिद्ध योगी जिनहें शाश्वत व सिद्ध ज्ञान है, कहलाते हैं:
(a) Yukt/युक्त
(b) Yunjaan/युञ्जान
(c) Siddh/सिद्ध
(d) Kevali/केवली

Ans. (a) : न्याय दर्शन में 'युक्त' योगी उन्हें कहा जाता है जिन्हें साश्वत और सिद्ध ज्ञान प्राप्त होता है।

12. **The associated, parallel, conceptual form knowledge which comes after the knowledge of the subject, according to Dharmkirti is**
धर्मकीर्ति के अनुसार अपने विषय के पश्चात् विषय के सहकारी, समनन्तर प्रत्यय रूप ज्ञान से उत्पन्न होने वाले ज्ञान को कहते हैं
(a) Sensual/इन्द्रिय-ज्ञान
(b) Psychology/मनोविज्ञान
(c) Self sensation/आत्म संवेदन
(d) Yogic Knowledge/यौगिक ज्ञान

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (b) : धर्मकीर्ति का सम्बन्ध बौद्ध दर्शन के 'योगाचार-विज्ञानवाद' सम्प्रदाय से है। योगाचार सम्प्रदाय को सुदृढ़ करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। धर्मकीर्ति ने मनोविज्ञान को इस प्रकार परिभाषित किया है 'अपने विषय के पश्चात विषय के सहकारी समनन्तर प्रत्यय रूप ज्ञान से उत्पन्न होने वाले ज्ञान को मनोविज्ञान कहते हैं।'

13. न्याय दर्शन के अनुसार यह अनुमान-अग्नि शीतल है क्योंकि यह द्रव्य है-भ्रान्तिजनक है क्योंकि यह द्रव्य है- भ्रान्तिजनक है क्योंकि

(a) हेतु विरुद्ध है।
(b) हेतु व्यभिचारी (अनैकान्तिक) है।
(c) हेतु आश्रयासिद्ध है।
(d) हेतु अनुमान से नहीं अन्य प्रमाण से बाधित है।

Ans. (d) : जब हेतु के द्वारा सिद्ध साध्य को दूसरे प्रमाण से निश्चित रूप से खण्डन हो जाए तो उसे बाधित हेत्वाभास कहते हैं जैसे-

अग्नि शीतल है,
क्योंकि यह द्रव्य है।

यहाँ द्रव्य के आधारपर आग का शीतल होना प्रमाणित किया गया है। स्पर्श ज्ञान के द्वारा यह खंडन हो जाता है। स्पर्श ज्ञान इसका उल्टा सिद्ध करता है कि आग में गर्मी है बाधित हेत्वाभास का निगमन अनुभव द्वारा खण्डित हो जाता है।

14. When of the following instrument of knowledge has been called as adhipati?
ज्ञान के हेतु के रूप में अधिपति किसे कहा गया है?

(a) Light/प्रकाश
(b) Senses/इन्द्रिय
(c) Chitta/चित्त
(d) Vijnan/विज्ञान

Ans. (b) : ज्ञान के हेतु के रूप में इन्द्रिय को अधिपति कहा गया है। इन्द्रिय के द्वारा हमें बाहरी विषयों जैसे-रूप, रस, गंध, स्पर्श एवं शब्द तथा आभ्यंतर विषयों-सुख-दुख का ज्ञान होता है। इन्द्रियों के अभाव में हम विषयों का ज्ञान किसी भी प्रकार से प्राप्त नहीं कर सकते हैं। तर्क भाषा के अनुसार इन्द्रिय वह प्रमेय है जो शरीर से संयुक्त, अतीन्द्रिय तथा ज्ञान का हेतु है। (शरीरसंयुक्तं ज्ञानं करणमतींन्द्रियम)।

15. Who define upmaan as 'Sadrasya pramakaran-upmanam'?
उपमान प्रमाण के लिए किसने कहा है 'सादृश्यप्रमाकरणमुपमानम्' ?

(a) Kapil/कपिल
(b) Vatsyayan/वात्स्यायन
(c) Shabar/शबर
(d) Dharmraaj Dhwairendra/धर्मराज ध्वरीन्द्र

Ans. (d) : 'सादृश्यप्रमाकरणमुपमानम्' यह धर्मराज ध्वरीन्द्र की उक्ति है जो उपमान प्रमाण के सम्बन्ध में कही गई है।

16. Which form of Arthapatti is used to explain a contarary or contradictory statement?
विरोधी या व्याघाती वाक्य की व्याख्या हेतु किस अर्थापत्ति का सहारा लिया जाता है?

(a) Drastharthapatti/दृष्टार्थापत्ति
(b) Abhihitanupapatti/अभिहितानुपपत्ति
(c) Abhidhananupapatti/अभिधानानुपपत्ति
(d) Shrutanupapatti/श्रुतानुपपत्ति

Ans. (b) : दृश्य या श्रुत अर्थ की उपपत्ति जिस अर्थ के अभाव में न हो सके, उस अर्थ की कल्पना को अर्थापत्ति कहते है, किसी अर्थ की उपपत्ति के लिए जो अर्थात्तर की कल्पना की जाती है, उसे अर्थापत्ति कहते हैं। अर्थापत्ति के माध्यम से दो तथ्यों का विरोधाभास दूर किया जाता है। विरोधी या व्याघाती वाक्य की व्याख्या के लिए जिस अर्थापत्ति का सहारा लिया जाता है उसे अभिहितानुपपत्ति कहते हैं।

17. According to Jainism
जैन दर्शन के अनुसार:

(a) Self is the living body with the atitude of consciousness.
चेतना गुण से संयुक्त शरीर ही आत्मा है।
(b) Self is a series of cognitions.
आत्मा संज्ञानों का एक प्रवाह है।
(c) Self is a one unchanging and self-shining consciousness.
आत्मा एक अपरिवर्तनशील एवं स्वप्रकाश्य चेतना है।
(d) Self is essentially constituted of consciousness.
आत्मा का अनिवार्य स्वभाव (स्वरूप) चेतना है।

Ans. (d) : जैन दर्शन में आत्मा को 'जीव' कहा गया है। जैनियों के अनुसार 'चेतन द्रव्य' ही जीव है। चेतना जीव का मूल लक्षण है। जीव की परिभाषा इस प्रकार की गई है 'चेतना-लक्षणो जीवः'। जैनो का यह जीव (आत्मा) संबंधी विचार न्याय-वैशेषिक से भिन्न है। न्याय-वैशेषिक के अनुसार चेतनता आत्मा का आगन्तुक गुण है परन्तु जैनों ने चेतना को आत्मा का स्वाभाविक गुण माना है। इनके अनुसार चेतनता के कारण जीव को सर्वदा प्रकाशमान माना जाता है।

18. Which of the following form of khyativad is held by Samkhya?
सांख्य दर्शन का ख्याति सिद्धान्त कौन सा बतलाया गया है?

(a) Asatkhyativad/असतख्यातिवाद
(b) Vivekkhayativad/विवेकख्यातिवाद
(c) Vipritkhyativad/विपरीतख्यातिवाद
(d) Sadkhyativad/सद्ख्यातिवाद

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : सांख्य दर्शन का ख्याति सिद्धांत सदख्यातिवाद के नाम से जाना जाता है। सांख्य के अनुसार प्रकृति के विकास में तन्मात्राओं से जब पंचमहाभूत बनते हैं तो विभिन्न महाभूतों में एक दूसरे का मिश्रण होता है इस कारण रस्सी में रस्सी का मुख्यांश तथा सर्प में सर्प का सीमितांस वस्तुतः होता है। भ्रम का अर्थ मात्रा इतना है कि हमें रस्सी के मुख्यांश के स्थान पर सर्प के सीमितांश का प्रत्यक्ष होता है।

19. In Vedanta, the relation between term and sentence is called
वेदान्त मत के अनुसार पद व अर्थ के संबंध को कहते हैं
(a) Vritti/वृत्ति
(b) Guna/गुण
(c) Hetu/हेतु
(d) All of these/ये सभी

Ans. (a) : वेदान्त ज्ञान प्राप्ति का वह स्रोत है जो मनुष्य को ज्ञान प्राप्ति की दिशा में उत्प्रेरित करता है। इसका मुख्य स्रोत उपनिषद है जो वेद ग्रंथों और वैदिक साहित्य का सार समझे जाते हैं। वैदिक साहित्य का अंतिम भाग होने के कारण उपनिषद को वेदान्त कहा जाता है। वेदान्त मत के अनुसार पद व अर्थ के सम्बंध को वृत्ति कहते हैं।

20. In Nyaya-system, a Term denotes
न्याय दर्शन के अनुसार 'पद' सूचित करते हैं
(a) Individual/व्यक्ति को
(b) Figure/आकृति को
(c) Class/जाति को
(d) All of these/इन सभी को

Ans. (d) : न्याय दर्शन में पद के द्वारा व्यक्ति, आकृति तथा जाति का बोध होता है।

21. The subject-matter of Indian Logic is
भारतीय तर्कशास्त्र की विषयवस्तु है
(a) Anuman/अनुमान
(b) Pramanyavada/प्रामण्यवाद
(c) Khyativaad/ख्यातिवाद
(d) All of these/ये सभी

Ans. (a) : प्रमाण्यवाद का उल्लेख विभिन्न दर्शनों यथा- न्याय, सांख्य, वैशेषिक, जैन, बौद्ध में तथा ख्यातिवाद का उल्लेख मूल रूप से मीमांसा दर्शन में मिलता है। जबकि अनुमान का सम्बन्ध भारतीय तर्कशास्त्र से है।
तर्कशास्त्र में अनुमान तर्क वितर्क द्वारा आधार कथनों से तार्किक निष्कर्ष निकालने की प्रक्रिया को कहते हैं।

22. Nyaya and Buddhist philosophy are unanimous in believing that
न्याय एवं बौद्ध दर्शन यह विश्वास करने में एक मत है
(a) Knowledge is intrinsically invalid and externally valid./ज्ञान आन्तरिक दृष्टि से अवैध है और बाह्य दृष्टि से वैध।
(b) Knowledge is intrinsically and externally valid./ज्ञान आन्तरिक और बाह्य दृष्टि से वैध है।
(c) Knowledge is externally valid.
ज्ञान बाह्य से वैध है।
(d) Knowledge is externally valid and intrinsically neither valid nor invalid.
ज्ञान बाह्य दृष्टि से वैध है एवं आन्तरिक दृष्टि से न तो वैध है और न ही अवैध।

Ans. (c) : 'ज्ञान' के विषय में न्याय और बौद्ध एकमत हैं। दोनों का मानना है कि ज्ञान बाह्य दृष्टि से वैध है।

23. Anuman is the knowledge of Hetu combined with the memory of Vyapti is defined in
व्याप्ति स्मरण सहित हेतु ज्ञान अनुमान है, कथन मिलता है
(a) Nyaya-Sar/न्याय-सार
(b) Nyaya-Manjari/न्याय-मंजरी
(c) Nyaya-Bindu/न्याय-बिन्दु
(d) Tark-Samgrah/तर्क-संग्रह

Ans. (b) : 'न्याय मंजरी' के लेखक जयन्त भट्ट हैं। इनके अनुसार 'व्याप्ति स्मरण सहित हेतु ज्ञान अनुमान है।'

24. The founder of the Buddhist logic is considered
बौद्ध तर्कशास्त्र के प्रणेता कहलाते हैं
(a) Dingnaag/दिंगनाग
(b) Vasubandhu/वसुबन्धु
(c) Nagarjuna/नागार्जुन
(d) Dharmkirti/धर्मकीर्ति

Ans. (a) : बौद्ध दार्शनिक दिंगनाग को बौद्ध तर्कशास्त्र का प्रणेता माना जाता है। दिंगनाग की कुछ रचनाएँ निम्नलिखित हैं-
(1) युक्तानुयायी सौत्रान्तिक
(2) प्रमाण समुच्चय

25. Who of the following does not accept the difference between 'Anuman' and 'Anumiti'?
अनुमान व अनुमिति में अन्तर को स्वीकार नहीं करते
(a) Dharmkriti/धर्मकीर्ति
(b) Annabhatt/अन्नभट्ट
(c) Dingnaag/दिंगनाग
(d) Gangesh/गंगेश

Ans. (c) : दिङ्नाग को बौद्ध तर्कशास्त्र का जनक माना जाता है इनके अनुसार 'अनुमान और अनुमिति में कोई अंतर नहीं है।'

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

26. Who is considered to be the founder of Jain logic?
जैन तर्कशास्त्र का आरम्भ किस दार्शनिक से माना जाता है?

(a) Akalank/अकलंक
(b) Sidhson/सिद्धसेन
(c) Hemchandra/हेमचन्द्र
(d) Hembhadra/हेमभद्र

Ans. (b) : सिद्धसेन को जैन दर्शन के प्राचीन विद्वानों में माना जाता है। जैन दर्शन के क्षेत्र में अनेकान्तवाद की तार्किक स्थापना करने वाले वे प्रथम दार्शनिक हैं। जैन दर्शन के आद्य तर्क शास्त्री होने के साथ-साथ वे भारतीय दर्शन के आद्य समीक्षक भी हैं।

27. The knowledge produced by 'Vyaptivishist-pakshadharmata' is called
व्याप्ति विशिष्ट पक्षधर्मता ज्ञान से उत्पन्न होने वाले ज्ञान को कहते हैं

(a) Anuman/अनुमान
(b) Anumiti/अनुमिति
(c) Paksha-dharmta/पक्षधर्मता
(d) Distribution (Vyapti)/व्याप्ति

Ans. (b) : व्याप्ति विशिष्ट पक्षधर्मता ज्ञान से उत्पन्न होने वाले ज्ञान को अनुमिति कहा जाता है। न्याय दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के साधनों को प्रमाण के रूप में बतलाया गया है। न्याय दर्शन के अनुसार अनुमिति वह ज्ञान है जिसे अनुमान के द्वारा प्राप्त किया जाता है।

28. Three steps of resolution have been considered in Indian ethics. Which of the following shows the correct sequence of occurrence of these steps?
भारतीय नीतिशास्त्र में संकल्प के तीन सोपान माने गए हैं। निम्नलिखित में से किसमें इन सोपानों के घटित होने का सही क्रम दर्शाया गया है?

(a) Karytajan, Chikeersha, Kriti
कार्यताज्ञान, चिकीर्षा, कृति
(b) Chikeersha, Kriti, Karytajan
चिकीर्षा, कृति, कार्यताज्ञान
(c) Kriti, Chikeersha, Karytajan
कृति, चिकीर्षा, कार्यताज्ञान
(d) Chikeersha, Karytajan, Kriti
चिकीर्षा, कार्यताज्ञान, कृति

Ans. (a) : भारतीय नीतिशास्त्र में संकल्प के तीन सोपान माने गए हैं। इनका घटित होने का सही क्रम इस प्रकार है-
कार्यताज्ञान, चिकीर्षा, कृति।

29. Which thinker has defined Vyapti as Siddant Lakshan Vyapti?
किस दार्शनिक की व्याप्ति की परिभाषा को 'सिद्धान्त-लक्षण व्याप्ति' कहा जाता है?

(a) Gangesh/गंगेश
(b) Gautam/गौतम
(c) Parthsarathi/पार्थसारथी
(d) Manikya Nandi/माणिक्य नन्दी

Ans. (a) : गंगेश की व्याप्ति की परिभाषा को 'सिद्धांत लक्षण व्याप्ति' कहा जाता है।

30. What is the meaning of the theory 'Pudgalnairatamaya', according to Buddist Philosophy?
बौद्ध दर्शन के अनुसार, 'पुदुगलनैरात्म्य' सिद्धान्त का अर्थ है

(a) Acceptance of only one eternal spiritual substance and prohibition of material substance./केवल एक शाश्वत आध्यात्मिक द्रव्य की स्वीकारोक्ति एवं भौतिक द्रव्य का निषेध
(b) Prohibition of eternal substance. In addition to the spiritual, also the material./शाश्वत द्रव्य का निषेध, आध्यात्मिक के अतिरिक्त भौतिक भी
(c) Acceptance of material substance and prohibition of spiritual substance./भौतिक द्रव्य की स्वीकारोक्ति एवं आध्यात्मिक द्रव्य का निषेध
(d) Acceptance of ultimate reality
परम सत्ता की स्वीकारोक्ति

Ans. (b) : बौद्धों के 'पुद्गल नैरात्म्य' के अनुसार द्रव्य, शाश्वत नहीं अपितु आध्यात्मिक और भौतिक का समन्वय है।

31. Ramanuja's theory of causation is known as
रामानुज के कारण सिद्धान्त को जाना जाता है

(a) Vivartavada/विवर्तवाद
(b) Prakritiparinamavada/प्रकृति परिणामवाद
(c) Brahma parinamavada/ब्रह्म परिणामवाद
(d) Asatkaryavada/असत् कार्यवाद

Ans. (c) : रामानुज के कारण सिद्धांत को ब्रह्म परिणामवाद कहा जाता है। यह कार्य को नवीन न मानकर परिणाम मानते हैं। परिणामवाद के अनुसार कार्य कारण का परिणाम है, तात्विक परिवर्तन है। कारण सचमुच कार्य के रूप में परिवर्तित हो जाता है। कार्य के कारण का आकार परिवर्तित हो जाता है और यह आकार परिवर्तन वास्तविक होता है। जैसे मिट्टी से उत्पन्न घड़ा मिट्टी का वास्तविक रूपांतरण है, दूध से निर्मित दही में दूध का तात्विक परिवर्तन होता है। सांख्य, योग भी रामानुज के परिणामवाद को स्वीकार करते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

32. 'Bhuyo-Darshan' means
'भूयो दर्शन' का तात्पर्य है

(a) To perceive Earth/भूमि दर्शन
(b) Repeated observation/बार-बार निरीक्षण
(c) To be in existence /भाव का होना
(d) To visualize Abhava/अभाव का दर्शन

Ans. (b) : 'भूयो दर्शन' का अभिप्राय बार-बार निरीक्षण से है।

33. Who included 'violation-lens association' as a characteristic to establish distribution (Vyapti)?
व्याप्ति ग्रहण के साधन के रूप में किसने 'व्यभिचार ज्ञान रहित सहचार दर्शन' को माना है?

(a) Gautam/गौतम
(b) Gangesh/गंगेश
(c) Ishwarkrishna/ईश्वरकृष्ण
(d) Udayan/उदयन

Ans. (b) : 'गंगेश' ने 'व्यभिचार ज्ञान रहित सहचार दर्शन' को व्याप्ति ग्रहण के साधन के रूप में स्वीकार किया है।

34. The main objective of mimamsa system is
मीमांसा दर्शन का मुख्य उद्देश्य है:

(a) to establish the authority of the Brahmansutras.
ब्रह्मसूत्र की प्रामाणिकता स्थापित करना।
(b) to establish the authority of the Vedas.
वेदों की प्रामाणिकता स्थापित करना।
(c) to establish the authority of the Tripitakas
त्रिपिटकों की प्रामाणिकता स्थापित करना।
(d) to establish the authority of the Bhagwad Gita
भगवद्गीता की प्रामाणिकता स्थापित करना।

Ans. (b) : मीमांसा दर्शन को आस्तिक दर्शन कहा जाता है मीमांसक न केवल वेद को प्रामाणिक मानते हैं अपितु वेद पर पूर्णतः आधारित भी है। कुल मिलाकर मीमांसा दर्शन का मुख्य उद्देश्य वेदों की प्रामाणिकता स्थापित करना है।

35. According to Indian ethics, the Purusartha that included in political values are
भारतीय नीतिशास्त्र के अनुसार जो पुरुषार्थ राजनीतिक मूल्यों में सम्मिलित हैं, वे हैं

(a) Aratha and Kama/अर्थ तथा काम
(b) Dharma, Aratha and Kama/धर्म, अर्थ तथा काम
(c) Dharma and Aratha/धर्मा तथा अर्थ
(d) Dharma, Aratha, Kama and Moksha
धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष

Ans. (b) : भारतीय नीतिशास्त्र के अनुसार धर्म, अर्थ तथा काम नामक पुरुषार्थ राजनीतिक मूल्यों में सम्मिलित हैं। नीतिशास्त्र के अनुसार धर्म आदमी को पशुता से मानवता की ओर प्रेरित करता है। अनुशासन के अनुसार चलना धर्म है। धर्म का सार जीवन में संयम होना है।
शास्त्रों ने अर्थ को मानव की सुख सुविधाओं का मूल माना है। सभी सुख के लिए अर्थ की कामना करते हैं। इसीलिए आचार्य कौटिल्य ने भी अर्थ को प्रधान मानते हुए, धर्म और काम का मूल कहा है।
नीतिशास्त्र में काम के माध्यमों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि आत्मा से संयुक्त मन से अधिष्ठित तत्व, चक्षु जिह्वा तथा घ्राण एवं इन्द्रियों के साथ अपने विषय शब्द, स्पर्श, रूप रस एवं गन्ध में अनुकूल रूप से प्रवृत्ति काम है।

36. Arthapatti (implication) is an independent means of valid knowledge because
अर्थपत्ति वैध ज्ञान का एक स्वतंत्र प्रमाण है क्योंकि

(a) Vedas so desire./वेदों की ऐसी इच्छा है।
(b) it gives the knowledge of negation (Abhava).
यह अभाव (अनुपलब्धि) का ज्ञान कराता है
(c) it reconciles two apparently inconsistent perceived facts./प्रत्यक्षतः दो विरोधी दिखाई देने वाले तथ्यों में सामंजस्य करता है।
(d) similarity between two objects can only be known by it./दो वस्तुओं के बीच सादृश्य का ज्ञान इसके द्वारा होता है।

Ans. (c) : जब कोई ऐसी घटना देखने में आती है जिसको समझने में कुछ विरोध मालूम पड़ता है तो उस विरोध की व्याख्या के लिए कोई आवश्यक कल्पना करते हैं, इस प्रकार जो आवश्यक कल्पना की जाती है उसे अर्थापत्ति कहते हैं। अर्थापत्ति को मीमांसा दर्शन में स्वतंत्र प्रमाण के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। इसके द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे अन्य प्रमाण से प्राप्त करना असंभव है। अर्थापत्ति द्वारा मुख्य रूप से दो विरोधी दिखाई देने वाले तथ्यों में सामंजस्य स्थापित किया जाता है।

37. 'Paksh' is defined as 'Sandigdha Sadhyadharma Dharma Paksh' in
पक्ष की परिभाषा 'संदिग्ध साध्यधर्मा धर्मि पक्षः' मिलती है

(a) Advaitsiddhi/अद्वैतसिद्धी
(b) Tark Bhasa/तकभाषा
(c) Tark Sangrah/तर्क संग्रह
(d) Tattva Chintamani/तत्त्व चिन्तामणि

Ans. (b) : पक्ष की प्रश्नगत परिभाषा केशवमित्र कृत तर्कभाषा नामक ग्रंथ में मिलती है। संदिग्ध साध्य धर्मा धर्मी पक्षः अर्थात संदिग्ध साध्यधर्म से युक्त धर्मी (अधिकरण या आधार) को पक्ष कहते हैं। इसी प्रकार तर्कसंग्रहकार अन्नभट्ट ने भी पक्ष के विषय में कहा है- 'संदिग्ध साध्यवान् पक्षः' अर्थात पक्ष वह अधिकरण है जहाँ संदिग्ध साध्य होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

38. In example of "wherever there is smoke there is fire", fire is
'जहाँ-जहाँ धुआं है वहाँ-वहाँ आग है' के उदाहरण में अग्नि है

(a) Paksh/पक्ष
(b) Hetu/हेतु
(c) Sadhya/साध्य
(d) Paksha Dharmi/पक्ष धर्मी

Ans. (c) : न्याय दर्शन के अनुसार अनुमान के तीन अवयव है- पक्ष, साध्य और हेतु। पक्ष अनुमान का वह अवयव है जिसके सम्बन्ध में अनुमान किया जाता है। जैसे-जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ आग है। पहाड़ पर धुआँ है अतः पहाड़ पर आग है में पहाड़ पक्ष है क्योंकि पहाड़ के विषय में अनुमान किया गया है। पक्ष के सम्बन्ध में जो कुछ सिद्ध किया जाता है उसे साध्य कहा जाता है। यहाँ आग साध्य है क्योंकि पहाड़ पर आग का होना ही सिद्ध किया गया है। जिसके द्वारा पक्ष में साध्य का होना बतलाया गया है उसे हेतु कहा जाता है। इस उदाहरण में धुआँ हेतु है क्योंकि धुएँ को देखकर ही पहाड़ पर आग होने का अनुमान किया गया है।

39. The indicator of indirect object (Sadhya) is called
जो परोक्ष अर्थ (साध्य) का बोध कराता है उसे कहते हैं

(a) Hetu/हेतु (b) Lingi/लिंगी
(c) Vyapti/व्याप्ति (d) Paksh/पक्ष

Ans. (a) : न्यायवाक्य में हेतु का स्थान दूसरा है अपनी प्रतिज्ञा को सिद्ध करने के लिए जो युक्ति दी जाती है उसे हेतु कहते हैं। हेतु के द्वारा परोक्ष अर्थ (साध्य) का बोध होता है जैसे पर्वत पर आग (साध्य) को सिद्ध करने के लिए हम हेतु (धूम) का सहारा लेते हैं। हम हेतु के द्वारा ही साध्य का अस्तित्व सिद्ध कर सकते हैं।

40. Which of the following system acknowledge 'Ananytha-Anupanatva' as a characteristc of Hetu?
किस दर्शन ने 'अन्यथानुपन्नत्व' को हेतु का लक्षण माना है?

(a) Charvaka/चार्वाक (b) Jain/जैन
(c) Bauddha/बौद्ध (d) Mimamsa/मीमांसा

Ans. (b) : जैन दर्शन ने 'अन्यथानुपन्नत्व' को हेतु का लक्षण माना है।

41. The meaning of Samyagvyayama is
सम्यग्वायाम का तात्पर्य है:

(a) Right exercise for good health.
सुस्वास्थ्य के लिए सही व्यायाम
(b) Right effort to withdraw from evil thought.
अशुभ विचारों को मन से हटाने के लिए सही प्रयत्न
(c) Right effort to increase physical strength.
शारीरिक शक्ति संवर्द्धन के लिए सही प्रयत्न
(d) Right effort to increase mental ability.
मानसिक योग्यता संवर्द्धन के लिए सही प्रयत्न

Ans. (b) : बौद्ध दर्शन के अनुसार चार प्रकार के प्रयत्न यथा
1. पुराने बुरे विचारों को मन से बाहर निकालना।
2. नये बुरे विचारों को मन में आने से रोकना।
3. अच्छे भावों को मन में भरना तथा
4. इन भावों को मन में कायम रखने के लिए सतत क्रियाशील रहना ही 'सम्यक व्यायाम' कहा जाता है। अतः स्पष्ट है कि 'सम्यग्व्यायाम' का तात्पर्य 'अशुभ विचारों को मन से हटाने के लिए सही प्रयत्न करना है।'

42. According to Vaisheshika Universal (Jati) exists because
वैशेषिक दर्शन के अनुसार सामान्य (जाति) की सत्ता है क्योंकि

(a) Reality is mind dependent./सत् (की सत्ता) मनस पर आधारित है।
(b) There should be an independent cause of the motion of commonness (classessence)/समानता के प्रत्यय का कोई स्वतन्त्र कारण होना चाहिए।
(c) It resides in Brahman/यह ब्रह्म में अवस्थित है।
(d) It is based of testimony./यह शब्द प्रमाण पर आधारित है।

Ans. (b) : वैशेषिक दर्शन के अनुसार सामान्य वह पदार्थ है जिसके कारण एक ही प्रकार के विभिन्न व्यक्तियों को एक जाति के अंदर रखा जाता है। प्रश्न यह उठता है कि वह कौन सी वस्तु है जिसके आधार पर संसार की विभिन्न वस्तुओं को एक ही नाम से पुकारा जाता है? उसी सत्ता को सामान्य कहा जाता है जिसके सभी जातिवाचक शब्दों में कुछ सामान्य गुण पाए जाते हैं। जिनके आधार पर उन्हें भिन्न-भिन्न वर्गों ने रखा जाता है। संसार के सभी व्यक्तियों में 'मनुष्यत्व' समाहित होने के कारण उन्हें मनुष्य वर्ग में तथा सभी गायों में 'गोत्व' सामान्य के समाहित होने के कारण उन्हें गाय कहा जाता है। अतः सिद्ध होता है कि सामान्य व्यक्तियों अथवा वस्तुओं में समानता प्रस्तावित करती है।

43. Synonyms of 'Kalatit Hetvabhasa' is
कालातीत हेत्वाभास का अन्य क्या नाम है?

(a) Prakaransam/प्रकरणसम
(b) Badhit/बाधित
(c) Sadhyasam/साध्यसम
(d) Asidha/असिद्ध

Ans. (b) : कालातीत हेत्वाभास को बाधित हेत्वाभास के नाम से भी जाना जाता है। जब हेतु के द्वारा सिद्ध साध्य का दूसरे प्रमाण से खंडन हो जाए तो उसे बाधित हेत्वाभास कहा जाता है।
जैसे- आग ठण्डी है
क्योंकि यह द्रव्य है।
यहाँ द्रव्य के आधार पर आग का ठंडा होना प्रमाणित किया गया है परन्तु स्पर्श ज्ञान के द्वारा यह खंण्डित हो जाता है क्योंकि स्पर्श ज्ञान इसका उलटा सिद्ध करता है कि आग में गर्मी है। बाधित हेत्वाभास का निगमन अनुभव द्वारा खंडित हो जाता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

44. 'Word is a quality, for it is visible' has a fallacy of
शब्द गुण है, चूँकि वह दृश्य है-इसमें दोष है
(a) Svarupasidh/स्वरूप सिद्ध
(b) Ashrayasidh/आश्रयासिद्ध
(c) Sadhya-vishesanasidh/साध्य-विशेषणासिद्ध
(d) Sopadhik/सोपाधिक

Ans. (a) : 'शब्द गुण है, चूँकि वह दृश्य है'- इसमें स्वरूप सिद्ध दोष है। न्याय दर्शन में शब्द को एक प्रकार का प्रमाण माना गया है।

45. Types of Hetvabhas acknowledged by Nagarjuna are
नागार्जुन ने हेत्वाभास के कितने प्रकार स्वीकार किए हैं?
(a) Five/पाँच (b) Six/छः
(c) Seven/सात (d) Eight/आठ

Ans. (d) : बौद्ध दार्शनिक नागार्जुन, बौद्ध दर्शन में माध्यमिक मत के संस्थापक थे। नागार्जुन ने हेत्वाभास की कुल संख्या आठ मानी थी।

46. According to Samkhya philosophy there are many selves (Purush) because
सांख्य दर्शन के अनुसार अनेक पुरुष है क्योंकि
(a) There are many object in the world./जगत् में अनेक वस्तुएँ हैं।
(b) There is a difference in birth-death, sensory and motor endoments of different individuals./भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के जन्म-मृत्यु ज्ञानेन्द्रियों औश्र कर्मेन्द्रियों में स्पष्ट अन्तर पाया जाता है।
(c) Prakriti is unconscious./प्रकृति जड़ है।
(d) None of these./इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : सांख्य दर्शन में वर्णित पुरुष और आत्मा एक ही सत्ता है। सांख्य के अनुसार पुरुष की संख्या अनेक है जितने जीव हैं उतनी आत्माएँ हैं। सभी आत्माओं का स्वरूप चैतन्य है। गुण की दृष्टि से सभी आत्माएँ समान हैं, परिणाम की दृष्टि से वे भिन्न-भिन्न हैं। सांख्य का एक तर्क यह भी कि चूँकि भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के जन्म मृत्यु, ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों में स्पष्ट अंतर पाया जाता है अतः इससे भी सिद्ध होता है की पुरुष अनेक हैं।

47. The Vedic idea of 'Dharma' is transformation of
'धर्म' का वैदिक विचार, रूपान्तरण है
(a) Rta/ऋत का
(b) Satya/सत्य का
(c) Both of these/इन दोनों का
(d) None of these/इनमें से किसी का नहीं

Ans. (c) : धर्म का वैदिक विचार ऋत और सत्य से रूपांतरित है। ऋत का अर्थ है जगत की व्यवस्था। ऋत वह नियम है जो प्राकृतिक और नैतिक जगत में कार्यान्वित है ऋत नियम के द्वारा ही वैदिक ऋषि विश्व की व्यवस्था तथा नैतिक जगत की व्यवस्था की व्याख्या कर पाते थे। यही ऋत का नियम उपनिषद दर्शन में कर्मवाद में रूपांतरित हो जाता है।

48. Which scripture states- 'Rta is victorious in every place on Earth, Space, Zodiac, Directions and Heaven'?
किस संहिता में कहा गया है- 'ऋतु की पृथ्वी, अंतरिक्ष, घुलोर, दिशाओं व स्वर्गलोक में सभी स्थानों पर विजय होती है'?
(a) Vaajseni/वाजसेनी (b) Tettriya/तैत्तिरीय
(c) Shukla/शुक्ल (d) Gaupath/गौपथ

Ans. (b) : तैत्तिरीय संहिता में कहा गया है कि 'ऋत की पृथ्वी, अंतरिक्ष, दिशाओं व स्वर्गलोक में सभी स्थानों पर विजय होती है।'

49. 'I wish to discover Truth form Anrit' is stated in
किसमें कहा गया है- 'मैं अनृत से सत्य को प्राप्त करूँ'?
(a) Rigveda/ऋग्वेद
(b) Yajurveda/यजुर्वेद
(c) Samveda/सामवेद
(d) Atharvaveda/अथर्ववेद

Ans. (b) : 'मैं अनृत से सत्य को प्राप्त करूं' यह उक्ति यजुर्वेद से संबंधित है।

50. In Vedas 'Dhiyaspati' is
वेदों में 'धियस्पति' कहा गया है
(a) Guardian of Good/शुभ का रक्षक
(b) Guardian of Truth/सत्य का रक्षक
(c) Guardian of the Earth/भूमि का रक्षक
(d) All of these/ये सभी

Ans. (b) : वेदों में सत्य के रक्षक को 'धियस्पति' कहा जाता है।

51. To be unindebted from 'Rishi- Rna' the entry in which 'Ashram' is commanded?
'ऋषि-ऋण' से उऋण होने के लिए किस 'आश्रम' में प्रवेश की आज्ञा दी गई है?
(a) Brahmcharya/ब्रह्मचर्य
(b) Grishasth/गृहस्थ
(c) Vanprasth/वानप्रस्थ
(d) Samnyas/संन्यास

Ans. (a) : ऋषि ऋण से उऋण होने के लिए ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश करना पड़ता है। ब्रह्मचर्य आश्रम में मनुष्य ऋषियों तथा गुरू की कृपा से ज्ञानवान बनता है। अतः मनुष्य को गुरूओ के प्रति ऋणी होना चाहिए उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान को स्वयं प्रयोग में लाना तथा प्राप्त ज्ञान से औरों को लाभान्वित करना ऋषि ऋण से मुक्ति का उपाय है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

52. Only 'Brahamins' are indebted by the "Three Rna' according to
किस ग्रंथ के अनुसार केवल 'ब्राह्मणों' पर ही 'तीन ऋणों' को स्वीकार किया गया है?
(a) Gaupath Brahman/गौपथ ब्राह्मण
(b) Shatpath Brahman/शतपथ ब्राह्मण
(c) Manusmriti/मनुस्मृति
(d) Yajnyvalkya Smriti/याज्ञवल्क्य स्मृति

Ans. (b) : शतपथ ब्राह्मण केवल 'ब्राह्मणों' पर ही तीन ऋणो यथा- देव ऋण, ऋषि तथा पितृ ऋण को स्वीकार करता है।
मनुष्य देव कृपा से ही उपलब्धियों को हासिल कर पाता है, अतः मनुष्य को देवताओं के प्रति ऋणी होना चाहिए तथा यज्ञ व देवस्तुति द्वारा उऋण होने का प्रयास करना चाहिए।
ब्रह्मचर्य आश्रम में रहकर मनुष्य ऋषियों से ज्ञान प्राप्त करता है फलस्वरूप ऋणी हो जाता है। अतः ऋषियों द्वारा प्राप्त ज्ञान से स्वयं तथा दूसरों को लाभान्वित करना ऋषि ऋण से उऋण होना है।
मनुष्य को संसार में लाने का श्रेय माँ-बाप को है। माँ-बाप तथा पूर्वजों के आशीर्वाद से मनुष्य सांसारिक सुख समृद्धि को प्राप्त करता है अतः इनके प्रति मनुष्य ऋणी होता है यही है पित्र ऋण। श्राद्ध तथा पितरों के तर्पण के द्वारा मनुष्य इस ऋण से मुक्त होता है।

53. Which scripture holds the view that 'everybody is a shudra, by birth'?
किस ग्रन्थ के अनुसार 'जन्म से प्रत्येक व्यक्ति शूद्र होता है'?
(a) Gita/गीता
(b) Manusmriti/मनुस्मृति
(c) Kathopanishad/कठोपनिषद
(d) Ishavasyopanishad/ईशावास्योपनिषद

Ans. (b) : मनुस्मृति हिन्दू धर्म का एक प्राचीन धर्मशास्त्र है। मनुस्मृति में समाज के संचालन की व्यवस्था का उल्लेख प्राप्त होता है। इसे हिन्दू समाज का प्रथम संविधान कहा जाता है। मनुस्मृति में कहा गया है 'जन्मना जायते शूद्रः' अर्थात जन्म से सभी शूद्र होते हैं और कर्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य होते हैं।

54. Which contemporary thinker suggests that- 'Gita teaches not Samnyas from Actions, but Samnyas in Actions'?
किस समकालीन विचारक के अनुसार, 'गीता कर्मों से सन्यास की नहीं, अपितु कर्मों में सन्यास की शिक्षा देती है'?
(a) Gandhi/गांधी
(b) Aurobindo/अरविन्द
(c) Radhakrishnan/राधाकृष्णन
(d) Vivekananda/विवकानंद

Ans. (c) : समकालीन विचारकों में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ऐसे विचारक हैं जिन्होंने कहा कि 'गीता कर्मों से सन्यास नहीं, अपितु कर्मों में सन्यास की शिक्षा देती है।' यहाँ कर्मों में सन्यास का अभिप्राय है, अनासक्त कर्म करना। इसी को गीता के दूसरे अध्याय के सैंतालीसवें श्लोक में इस प्रकार कहा गया है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूमा ते सङ्गोस्त्व कर्मणि।।

(2/47-गीता)

अर्थात 'कर्म में तेरा अधिकार हो, फल में कभी नहीं, तुम कर्म फल का हेतु भी मत बनो, अकर्मण्यता में तुम्हारी आसक्ति न हो।'

55. The Purusanrtha to motivate for action is
कर्म के लिए प्रेरित करने वाला पुरुषार्थ है
(a) Dharma/धर्म
(b) Artha/अर्थ
(c) Kaam/काम
(d) All of these/ये सभी

Ans. (d) : भारतीय विचार परंपरा में धर्म, अर्थ, काम को कर्म के लिए प्रेरित करने वाला पुरूषार्थ माना गया है। यद्यीप पुरूषार्थों की संख्या चार मानी गई है, चौथा पुरूषार्थ मोक्ष है।
धर्म आदमी को कर्म के प्रति प्रेरित करता है, पशुता से मानवता की ओर अग्रसरित होने की प्रेरणा देता है। अनुशासन में रहकर कर्म करना धर्म है। हृदय की पवित्रता ही धर्म का वास्तविक स्वरूप है।
अर्थ को मानव की सुख-सुविधा का मूल माना गया है। इसके लिए अर्थ की कामना अपेक्षित है और अर्थ की प्राप्ति बिना कर्म के संभव नहीं है, इसलिए कहा जा सकता है कि अर्थ भी कर्म को प्रेरित करता है। जब आत्मा बुद्धि के द्वारा विषयों को भोगता हुआ सुख का अनुभव करता है तो जो सुख है वही सामान्यतया काम है और काम की प्राप्ति सुख के द्वारा ही संभव है।
हिन्दू विचार परंपरा में मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है, जिसकी प्राप्ति सभी का परम लक्ष्य है। गीता में ज्ञान भक्ति एवं कर्म को मोक्ष प्राप्ति के साधन के रूप में स्वीकार किया गया है।

56. The co-ordination of 'Pravritti and Nivritti' is found in
'प्रवृत्ति और निवृत्ति' का समन्वय इस ग्रन्थ में मिलता है
(a) Gita/गीता
(b) Vishun Puran/विष्णु पुराण
(c) Garud Puran/गरुड़ पुराण
(d) Vaajsaneyi Samhita/वाजसनेयी संहिता

Ans. (a) : प्रवृत्ति और निवृत्ति का समन्वय गीता में दिखाई पड़ता है। गीता के अनुसार इन दो शब्दों के पारिभाषिक अर्थ क्रमशः कर्म मार्ग और सन्यास मार्ग है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में प्रवृत्ति और निवृत्ति के संतुलन की अपेक्षा की जाती है। प्रवृत्ति मार्ग गृहस्थ जीवन यापन करने वालों के लिए तथा निवृत्ति मार्ग संतो के लिए है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

57. Nyaya is a realistic philosophy because it holds that.
न्याय वास्तववादी (या यथार्थवादी) दार्शनिक तंत्र है क्योंकि इसके अनुसार

(a) Liberation in the ultimate aim of life.
मोक्ष जीवन का अन्तिम (चरम) लक्ष्य है।
(b) Only Vedas are supreme.
केवल वेद ही सर्वोत्तम है।
(c) The objects of world have an independent existence of their own apart from all knowledge and experience.
सभी ज्ञान एवं अनुभव से स्वतंत्र जगत् की वस्तुओं की अपनी स्वतंत्रता सत्ता है।
(d) God is the creator of everything.
ईश्वर सभी वस्तुओं का सृष्टा है।

Ans. (c) : न्याय दर्शन के अनुसार 'सभी ज्ञान एवं अनुभव से स्वतंत्र जगत की वस्तुओं की अपनी स्वतंत्रत सत्ता है।' इसीलिए न्याय दर्शन को वास्तववादी (या यथार्थवादी) दार्शनिक तंत्र के रूप में माना गया है।

58. The part of Vedas which enlighten the unknown objects is, called
वेदों का वह भाग जो अज्ञात अर्थों का ज्ञान करवाता है, कहलाता है-

(a) Vidhi/विधि (b) Nisedh/निषेध
(c) Vikalpa/विकल्प (d) Khyati/ख्याति

Ans. (a) : 'विधि' वेदों का वह भाग है जो अज्ञात अर्थों का ज्ञान करवाता है।

59. In the phrase 'Yog-Kshema', the term 'Kshema' means
वाक्यांश 'योग-क्षेम' में 'क्षेम' का तात्पर्य है

(a) Attainment/प्राप्ति
(b) forgivencess/क्षमा
(c) Preservation of the attained/प्राप्त की संरक्षा
(d) Excellence/उदात्तता

Ans. (c) : 'योग-क्षेम' में क्षेम का तात्पर्य है- प्राप्त की संरक्षा करना। गीता में कहा गया है कि
'अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाःपर्युपासते।'
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। (9/22)
अर्थात 'जो अनन्य भक्त मेरा चिन्तन करते हुए, मेरी उपासना करते हैं मेरे में निरंतर लगे हुए भक्तों का योगक्षेम (अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा) मैं वहन करता हूँ।'

60. The persons, who choose the 'Shreya-marg' are motivated by
'श्रेय मार्ग' को चुनने वाले व्यक्तियों की प्रेरणा है

(a) Yog-kshema/योग-क्षेम (b) Vivek/विवेक
(c) Pleasure/सुख (d) Abhyudaya/अभ्युदय

Ans. (a) : 'श्रेय मार्ग' का तात्पर्य है 'ऐसा मार्ग जो दुखों से अत्यंतिक निवृत्ति दिलाए।' मनुष्य को अपने विवेक से प्रेरित होकर इस मार्ग का चयन करना चाहिए।

61. According to Gita, 'Swadharma' is determined on the basis of
गीता के अनुसार 'स्वधर्म' के निर्धारण का आधार है

(a) Varna/वर्ण
(b) Aashrama/आश्रम
(c) Purusartha/पुरुषार्थ
(d) Varna-Aashrama/वर्णाश्रम

Ans. (d) : गीता के अनुसार स्वधर्म के निर्धारण का आधार 'वर्णाश्रम' है। वर्णाश्रम धर्म या वर्ण-आश्रम धर्म, जीवन के लक्ष्यों सामाजिक विभाजन और जीवन के चरणों की वैदिक प्रणाली है और इसके द्वारा सभी चार लक्ष्यों के संतुलन और सदभाव के लिए प्रयास करने और दूसरे के पक्ष में एक की उपेक्षा नहीं करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है यह जीवन के आदर्श वर्ण-आश्रम प्रणाली का आधार है।

62. According to Gita, God created 'Varna-system' on the basis of / गीता के अनुसार ईश्वर-रचित 'वर्णव्यवस्था' का आधार है

(a) Guna and Karma/गुण और कर्म
(b) Birth/जन्म
(c) Preya/प्रेय
(d) Shreya/श्रेय

Ans. (a) : गीता के अनुसार ईश्वर रचित वर्ण व्यवस्था का आधार 'गुण और कर्म है' गीता में कहा गया है-
ब्राह्मण क्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः।। (18/41)
अर्थात् 'हे परंतप ब्राह्मणों क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों के कर्म स्वभाव से उत्पन्न गुणों के अनुसार विभक्त किए गए हैं।'

63. In Buddhism, which of the following is not a type of Karma?
बौद्धमत में कर्म का प्रकार निम्न में से कौन सा नहीं है?

(a) Kayik/कायिक (b) Vachik/वाचिक
(c) Bhaav/भाव (d) Maansik/मानसिक

Ans. (c) : बौद्ध मत में कर्म की अवधारणा पर प्रकाश डाला गया है। बौद्ध परंपरा के अनुसार कर्म चेतना द्वारा संचालित कार्यवाई को संदर्भित करता है। चेतना को पुनर्जन्म रूपी चक्र के निर्धारण का एक कारक माना जाता है। बौद्ध मत के अनुसार कायिक कर्म वे हैं जो दिखलाई पड़ते हैं। जैसे किसी को शारीरिक रूप से चोट पहुँचाना।
वाचिक कर्म वे है जो मनुष्य द्वारा मौखिक रूप से किए जाते हैं जैसे- किसी को गाली देना या बुराई करना। इसी प्रकार मानसिक कर्म वे है जो मन में किए जाते हैं। जैसे- मन में किसी के प्रति बुरी भावना लाना।
जबकि 'भाव' बौद्ध धर्म में कर्म का प्रकार नहीं है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

64. In which of the following motion, physical and spiritual pleasures both ate given importance?
निम्न में से किस विचार में भौतिक व आध्यात्मिक सुख, दोनों को महत्त्व प्रदान किया गया है?
(a) Purusartha/पुरुषार्थ
(b) Ashrama/आश्रम
(c) Yama and Niyama/यम व नियम
(d) Yoga/योग

Ans. (a) : पुरूषार्थ से तात्पर्य मानव के लक्ष्य या उद्देश्य से है (पुरुषैर्थ्यते इति पुरुषार्थः)। अभिप्राय यह है कि विवेकशील मनुष्यों द्वारा लक्ष्यों की प्राप्ति ही पुरुषार्थ है। प्रायः वेदों में मनुष्य के लिए चार प्रकार के पुरुषार्थ यथा- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का उल्लेख किया गया है।
भारतीय विचार परंपरा के अनुसार पुरुषार्थ मनुष्य को कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं। पुरुषार्थ से प्रेरित होकर मनुष्य अपना सर्वांगीण (भौतिक एवं आध्यात्मिक) विकास करता है। पुरुषार्थ भारतीय सामाजिक जीवन के नैतिक एवं मनोवैज्ञानिक आधार भी है।

65. 'Dhaarnad-dharmityahu, Dharmodharyate praja' is stated by
'धारणाद्-धर्मित्याहु, धर्मोधारयते प्रजाः' किसके द्वारा कहा गया है?
(a) Jaimini/जैमिनि (b) Manu/मनु
(c) Vedvyasa/वेदव्यास (d) Valmiki/वाल्मिकी

Ans. (c) : 'धारणात्-धर्मित्याहु धर्मो धारयते प्रजाः' अर्थात् धारणा से धर्म आता है तथा प्रजा धर्म को धारण करती है। धर्म के सम्बन्ध में यह कथन वेदव्यास जी का है। वेदव्यास जी ने महाभारत की रचना की है। महाभारत को भारतीय धर्म और संस्कृति का आधार स्तम्भ कहा जाता है।

66. In the system of yoga, the external conduct of a person is controlled by
योग-दर्शन में व्यक्ति के बाह्य आचरण पर नियंत्रण किसके द्वारा किया जाता है?
(a) Yama/यम
(b) Niyama /नियम
(c) Dhaarana/धारणा
(d) Dhyaan/ध्यान

Ans. (a) : योग दर्शन में व्यक्ति के वाह्य आचरण पर नियंत्रण 'यम' द्वारा किया जाता है। योग के आठ अंग माने गए हैं जिन्हें अष्टांग योग कहा जाता है। ये आठ अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।
इन योगांगो का प्रयोजन है विवेक ज्ञान की प्राप्ति तथा अशुद्धि या अविद्या का नाश। विवेक ज्ञान से ही कैवल्य का लाभ होता है।
यम का अर्थ है अभाव। हिंसा, मिथ्या, स्तेन, मैथुन तथा परिग्रह का अभाव ही 'यम' है। यम के पांच अंग हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

67. The base of 'Samyak-Charitra' (right conduct) in Jainism is
जैन धर्म में 'सम्यक-चरित्र' का आधार है
(a) Non-violence/अहिंसा
(b) Non-stealing/अस्तेय
(c) Truth/सत्य
(d) Non-possession/अपरिग्रह

Ans. (a) : जैन दर्शन के अनुसार चरित्र के दो अंश है- प्रवृत्तिमूलक, निवृत्तिमूलक। प्रवृत्तिमूलक चरित्र बंधन का कारण है जबकि निवृत्तिमूलक चरित्र मोक्ष का कारण है।
सम्यक चरित्र के निम्नलिखित अंग हैं-
(1) अहिंसा (2) सत्य (3) अचौर्य (4) ब्रह्मचर्य (5) अपरिग्रह
अहिंसा को जैन दर्शन में वर्णित सम्यक-चरित्र का आधार माना गया है। अहिंसा को धर्म तो सभी भारतीय दर्शन मानते हैं परन्तु अहिंसा को परमधर्म मानने वाले केवल जैन लोग हैं। अभिप्राय यह है कि सभी प्रकार की हिंसा को जैन धर्म में पाप माना गया है। 'सर्वतोभावेन' अहिंसा का व्रत पालन तो जैन दर्शन में ही देखने को मिलता है।

68. Which one of the following is not a part of the eight fold path of Buddha?
निम्न में से कौन सा बुद्ध के अष्टांगिक-मार्ग का अंग नहीं है?
(a) Samyak Dristi/सम्यक् दृष्टि
(b) Samyak Darshan/सम्यक् दर्शन
(c) Samyak Aajiva/सम्यक् आजीव
(d) Samyak Sankalp/सम्यक् संकल्प

Ans. (b) : बौद्ध दर्शन में चतुर्थ आर्य सत्य को दुख निरोध मार्ग कहा गया है। बुद्ध ने बताया कि दुखों का निरोध संभव है। बौद्ध मत के अनुसार दुखों का निरोध एक मार्ग पर चलकर किया जा सकता है इसे अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है। यह अष्टांगिक मार्ग इस प्रकार हैं- (1) सम्यक दृष्टि (2) सम्यक संकल्प (3) सम्यक वाक (4) सम्यक कर्मान्त (5) सम्यक आजीविका (6) सम्यक व्यायाम (7) सम्यक स्मृति (8) सम्यक समाधि।
बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग को प्रज्ञा, शील, समाधि, नामक विशेष अंगों में विभाजित किया जा सकता है। सम्यक दृष्टि और सम्यक संकल्प प्रज्ञा के अंतर्गत आते हैं। सम्यक वाक, सम्यक कर्मान्त, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम शील के अंतर्गत आते हैं जबकि सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि को समाधि के अंतर्गत रखा जाता है।

69. In Buddhism, the use and discovery of means according to the eligibility
बौद्धमत में साधक की योग्यतानुसार साधनों का उपयोग व खोज, कहलाती है
(a) Brahma-Vihar/ब्रह्म-विहार
(b) Aagam/आगम
(c) Parmita/पारमिता
(d) Upaya-kaushalya/उपाय-कौशल

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : साधक की योग्यतानुसार साधनों का उपयोग व खोज को बौद्ध मत में 'उपाय कौशल्य' कहा जाता है। बौद्ध मत में 'उपाय कौशल्य' का तात्पर्य है- 'साधन में कुशलता'।
उपाय कौशल्य एक अवधारणा है जो इस बात पर जोर देती है कि अभ्यासी अपनी विशिष्ट विधियों या तकनीकों या साधनों का अपनी योग्यता अनुसार उपयोग कर सकते हैं जो ज्ञान प्राप्ति में सहायक हो। उपाय कौशल्य की अवधारणा महायान बौद्ध मत की देन है।

70. The feeling to attach non- gratification with pleasure in Brahma-Vihar is
ब्रह्म-विहार में सुख से अवियोग कराने की भावना है
(a) Maitri/मैत्री
(b) Karuna/करुणा
(c) Mudita/मुदिता
(d) Upeksha/उपेक्षा

Ans. (c) : बौद्ध दर्शन में ब्रह्म विहार का अर्थ है- (उत्कृष्ट व्यवहार)। ब्रह्म-विहार पूर्व बौद्ध अवधारणा है। इसका वर्णन दीघ्घनिकाय में मिलता है।
चार ब्रह्म विहार इस प्रकार हैं-
1. **मैत्री (प्रेम कृपा) -** सभी के प्रति सक्रिय सद्भावना।
2. **करूणा -** दूसरों की पीड़ा को स्वयं के रुप में पहचानना।
3. **मुदिता (सहानुभूतिपूर्ण आनंद) -** सुख से अवियोग कराने की भावना।
4. **उपेक्षा (समता) -** यह समचित्तता और शांति है जो सभी के साथ निष्पक्ष व्यवहार करती है।

71. Contemporary India Philosophy is considered to begin with
समकालीन भारतीय दर्शन का प्रारंभ किसके साथ माना जाता है?
(a) Swami Dayananda/स्वामी दयानंद
(b) Radhakrishnan/राधाकृष्णन
(c) Gandhi/गांधी
(d) Raja Ram Mohan Roy/राजा राममोहन राय

Ans. (d) : समकालीन भारतीय दर्शन का प्रारम्भ राजा राम मोहन राय से माना जा सकता है। राजा राम मोहन राय आधुनिक भारत के पुनर्जागरण के पिता तथा एक समर्पित समाज सुधारक थे। इन्होंने भारत में प्रबोधन और उदार सुधारवादी आधुनिकीकरण के युग का सूत्रपात किया।
राजा राम मोहन राय की विचारधारा आधुनिक पश्चिमी विचारधारा से बहुत प्रभावित थी। ये पश्चिमी बुद्धिवाद तथा आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बल देते थे।
राजा राममोहन राय का दर्शन सभी धर्मों की एकता में विश्वास रखता था। राय को भारत में पहले बौद्धिक दार्शनिक आंदोलनकर्ता के रुप में माना जा सकता है इन्होंने भारत में आधुनिक तर्कवाद की नींव डाली जिससे राष्ट्रवादी आंदोलन में काफी सहयोग मिला।

72. After independence, the most powerful philosophical system in India, has been
स्वतंत्रता के पश्चात, भारत में सबसे प्रबल दार्शनिक धारा रही है?
(a) Idealism/प्रत्ययवाद
(b) Empericism/अनुभववाद
(c) Materialism/भौतिकवाद
(d) Analytical/विश्लेषणात्मक

Ans. (a) : स्वतंत्रता के बाद भारत में सबसे प्रबल दार्शनिक विचारधारा 'प्रत्ययवाद' की रही है। प्रत्ययवाद को आदर्शवाद अथवा विचारवाद के नाम से भी जाना जाता है। प्रत्ययवाद उन विचारों अथवा मान्यताओं की समेकित विचारधारा है जिसके अनुसार इस जगत की समस्त वस्तुएं विचार या चेतना की अभिव्यक्ति है। सृष्टि का सारतत्व जड़ पदार्थ नहीं अपितु मूल चेतना है।

73. According to whom, 'Vedanta teaches units in plurality
किसके अनुसार, 'वेदान्त बहुत्व में एकत्व की शिक्षा देता है'?
(a) Ramakrishna/रामकृष्ण
(b) Vivekananda/विवेकानंद
(c) Gandhi/गांधी
(d) Tagore/टैगोर

Ans. (b) : स्वामी विवेकानन्द के अनुसार 'वेदान्त बहुत्व में एकत्व की शिक्षा देता है।' विवेकानन्द के अनुसार विश्व में जो बहुत्व दिखता है जो भिन्नताएँ दृष्टिगोचर होती हैं वस्तुतः वह केवल प्रतीत होती हैं। सभी भिन्नताओं के नीचे एकता का सूत्र वर्तमान है। एकत्व में ही बहुत्व प्रतीत होता है। उन्होंने इसे नदी और समुद्र के उदाहरण से समझाया है उन्होंने कहा कि जैसे सारे संसार की नदियां विभिन्न दिशाओं से आकर समुद्र में मिल जाती है, उसी प्रकार छोटे-छोटे तिनको की भांति हम भी बहे जा रहे हैं। हम भले ही इधर-उधर जाने की चेष्टा करें पर अन्त में हम भी जीवन और आनंद के उस समुद्र में (एकत्व में) अवश्य ही पहुँच जाएंगे।

74. In view of Vivekananda, 'Maya' is
विवेकानंद के अनुसार 'माया' है
(a) Pure idealism/विशुद्ध विज्ञानवाद
(b) Pure Materialism/विशुद्ध वस्तुवाद
(c) Abhasvaad/आभासवाद
(d) Description of events/घटनाओं का वर्णन

Ans. (d) : स्वामी विवेकानंद के अनुसार माया न तो विज्ञानवाद है न तो वस्तुवाद। वह कोई मतवाद भी नहीं है। वह तो समस्त जगत की जिनको हम देख रहे हैं घटनाओं का सहज वर्णन मात्र है।
माया को विवेकानन्द सत और असत में विलक्षण होने के कारण अनिर्वचनीय स्वीकार करते हैं परन्तु माया को विवेकानन्द जगत की व्याख्या के लिए उपयुक्त नहीं मानते उनके अनुसार माया कोई सिद्धांत विशेष न होकर जगत के स्थिति मात्र की बोधक है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

75. The keyword for 'Universal religion', according to Vivekananda is
विवेकानंद के अनुसार 'सार्वभौमधर्म' का मूलमंत्र है
(a) Tolerance/सहिष्णुता
(b) Non-violence/अहिंसा
(c) Acceptance/स्वीकृति
(d) Ignorance/अबोधता

Ans. (c) : विवेकानंद के अनुसार सर्वभौम धर्म का अर्थ है 'स्वीकृत'। विवेकानंद ने कहा कि सार्वभौम धर्म 'सत्यम शिवम सुंदरम' की अभिव्यक्ति है। सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं और जो धर्मपूर्ण है वही शुभ है। फिर यदि धर्म मानवता के लिए कल्याणकारी है तो वह अवश्य ही सुंदर है। अतः अन्तः करण की एक प्रेरक शक्ति के रूप में धर्म सत्य, शिव और सुंदर में समाहित है।

76. Aurobindo describes the process of Evolution is opposite to the process of
अरविन्द ने विकास प्रक्रिया को किसकी विपरीत प्रक्रिया कहा है?
(a) Avataran/अवतरण
(b) Arohan/आरोहण
(c) Prati-Vikas/प्रति-विकास
(d) Utthan/उत्थान

Ans. (b) : ईश्वर द्वारा इस जगत के निर्माण की प्रक्रिया का विश्लेषण श्री अरबिन्द ने दो प्रकार से किया है। विकास की दो विपरीत दिशाएं हैं- अवरोहण एवं आरोहण। ब्रह्म अवरोहण द्वारा अपने को वस्तु जगत में परिवर्तित करता है। इसके सात सोपान हैं- सत्, चित्, आनन्द, अतिमानस, मानस, प्राण एवं द्रव्य।
विकास की मानवीय परत में उभरते ही मनुष्य को आत्मबोध की नई उपलब्धि हस्तगत होती है। विकास अविरल गति से चलता है इसे मानवीय संदर्भ में भौतिक उन्नति एवं आध्यात्मिक प्रगति के नाम से जाना जाता है यही उत्कर्ष की दो दिशाएं है।

77. The middle level between the higher and the lower level of Existence, according to Aurobindo is
सत्ता के उच्चतर व निम्नतर स्तरों के बीच की अवस्था, अरविन्द के अनुसार है
(a) Mind/मानस (मनस)
(b) Super-mind/अतिमानस
(c) Higher-mind/उच्चतर मानस
(d) Illuminated-mind/प्रदीप्त मानस

Ans. (b) : श्री अरविन्द विकासवादी हैं वे कहते हैं कि निम्नतर एक छलांग में उच्चतर में नहीं पहुँच सकता है। साथ ही उच्चतर भी एक झटके में निम्नतर पर नहीं आ सकता। अतः श्रीअरबिन्द दोनों के बीच शृंखला के रूप में अतिमानस की तार्किक आवश्यकता को स्वीकार करते हैं। अनन्त चेतना अपनी अनन्त क्रिया में केवल अनन्त परिणामों को उत्पन्न कर सकती है। जो कुछ निश्चित किया गया है उसके अनुसार जगत का निर्माण करने के लिए एक ज्ञानात्मिक शक्ति की आवश्यकता है जिसका कार्य अनन्त परमार्थ तत्व से शांत रूप तत्व की रचना करना है और यह शक्ति अतिमानस है।

78. The levels of internal yoga, discussed by Aurobindo are
अरविन्द ने आंतरिक योग के कितने सोपानों की चर्चा की है?
(a) One/एक (b) Two/दो
(c) Three/तीन (d) Four/चार

Ans. (c) : अरविन्द ने आंतरिक योग के तीन सोपानों की चर्चा की है। अरविन्द के योग को समग्र योग के नाम से जाना जाता है।

79. Idealism of Radhakrishnan is
राधाकृष्णन का आदर्शवाद है
(a) Pragmatic/प्रयोजनवादी
(b) Mechanical/यंत्रवादी
(c) Materialistic/भौतिकवादी
(d) Mystic/रहस्यवादी

Ans. (a) : राधाकृष्ण का आदर्शवाद प्रयोजनवादी है। प्रयोजनवादी आदर्शवाद परिवर्धन की वह अवस्था है जो वास्तविकता का पूरा ध्यान रखता है। क्रियात्मक और आत्मिक मूल्यों का समन्वय करता है और ऐसी संस्कृति का निर्माण करता है जो दक्षता और श्रेष्ठता की सूचक होती है।

80. How many means of attaining knowledge of reality is accepted by Radhakrishnan?
राधाकृष्णन ने सत् के ज्ञान की प्राप्ति के कितने साधन स्वीकार किए है?
(a) One/एक (b) Two/दो
(c) Three/तीन (d) Four/चार

Ans. (c) : राधाकृषणन ने सत ज्ञान प्राप्ति के तीन साघन स्वीकार किए है।

81. According to Radhakrishnan, 'Intution' includes
राधाकृष्णन के अनुसार, 'अंत:प्रज्ञा' में समाहित है
(a) Self-evidence/स्वयंसिद्धता
(b) Self-illumination/स्वप्रकाशता
(c) Self-consciousness/स्वचेतना
(d) All of these/ये सभी

Ans. (c) : राधाकृष्णन के अनुसार अंत:प्रज्ञा में स्वचेतना समाहित है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

82. In Gandhian view, which of these ins 'older than mountains'?
गांधी की दृष्टि में, इनमें से कौन 'पहाड़ों से भी प्राचीन है'?

(a) Truth and Non-violence/सत्य और अहिंसा
(b) God/ईश्वर
(c) Nature/प्रकृति
(d) Heart/पुरुष

Ans. (a) : गांधी जी सत्य और अहिंसा को उतना ही पुराना मानते थे जितना की 'पहाड़' इस धरती पर प्राचीन है। गांधी जी के अनुसार सत्य वह है जो हमारे वाणी, विचार और व्यवहार में परिलक्षित हो। गांधी जी के अनुसार सत्य हमारा आराध्य है। यदि हम सत्य के लिए जीना सीख जाएं तो जीवन में शेष नियमों का पालन सरल हो जाता है। गांधी जी के अनुसार किसी को मन, वचन और कर्म से कष्ट न पहुँचाना ही अहिंसा है।

83. Gandhi holds that, 'Satyagraha transforms opponents———
गांधी मानते हैं कि 'सत्याग्रह' द्वारा विरोधी के ________ में परिवर्तन किया जा सकता है।

(a) Body/शरीर
(b) Reason/बुद्धि
(c) Feelings/भावनाओं
(d) Heart/हृदय

Ans. (d) : सत्याग्रह का अर्थ है सत्य पर आग्रह करते हुए अत्याचारी का प्रतिरोध करना, उसके सामने सिर को न झुकाना तथा उसकी बात को न मानना। अत्याचारी जब पर समझ जाता है कि उसके दमन का प्रजा के सत्याग्रह पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तो वह दमनकारी प्रवृत्ति को छोड़ देता है इसके उसके हृदय पर सत्याग्रहियों द्वारा झेली जाने वाली यातनाओं और कष्टों का भी प्रभाव पड़ता है। उस समय वह सत्याग्रहियों से समझौता कर लेता है और सत्याग्रह की विजय होती है। सत्याग्रह आत्मबल द्वारा अत्याचारी के हृदय परिवर्तन पर बल देने वाली प्रक्रिया है।

84. Gandhi criticses modern civilsation in his book
गांधी ने आधुनिक सभ्यता की आलोचना अपनी पुस्तक ________ में की है।

(a) Hind-Swaraj/हिन्द-स्वराज
(b) My Experiments with Truth
सत्य के साथ मेरे प्रयोग
(c) Art of Living/आर्ट ऑफ लिविंग
(d) My Non-Violence/मेरी अहिंसा

Ans. (a) : हिन्द स्वराज गांधी जी की पुस्तक है इसमें उन्होंने आधुनिक सभ्यता की आलोचना की है।
सत्य के साथ मेरे प्रयोग भी गांधी जी की पुस्तक है। आर्ट ऑफ लिविंग के रचयिता-श्री श्रीरविशंकर हैं। मेरी अहिंसा नामक पुस्तक भी गांधी जी ने ही लिखी है।

85. According to K.C. Bhattacharya, how many levels are there of "Theoretic consciousness'?
के.सी. भट्टाचार्य के अनुसार 'सैद्धान्तिक चेतना' के स्तर हैं

(a) One/एक
(b) Two/दो
(c) Three/तीन
(d) Four/चार

Ans. (d) : के.सी. भट्टाचार्य ने सैद्धांतिक चेतना के चार स्तर बताए हैं।

86. In K.C. Bhattacharya's view. 'Subjec' is related to
के.सी. भट्टाचार्य की दृष्टि में 'विषयी' का संबंध है

(a) The knowledge of Ideas/विज्ञान-दर्शन से
(b) The knowledge of Self/आत्म-दर्शन से
(c) The knowledge of Chitta/चित्त-दर्शन से
(d) The knowledge of Objects/विषय-दर्शन से

Ans. (b) : के.सी. भट्टाचार्य के अनुसार 'विषयी' का संबंध आत्म दर्शन से है।

87. Which of the following is Non-Buddhist?
निम्न में से 'नव-बौद्धवादी' है:

(a) Gandhi/गांधी
(b) Tagore/टैगोर
(c) B.R. Ambedkar/बी.आर. अम्बेडकर
(d) Vinoba Bhave/विनोबा भावे

Ans. (c) : डॉ. बी.आर. अम्बेडकर नव बौद्धवादी हैं। 14 अक्टूबर, 1956 को पांच लाख अनुयायियों को अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी। यह नव बौद्ध धर्म था इसके प्रतिपादक डॉ. अम्बेडकर थे। इसमें सभी अनुयायी अम्बेडकरवादी होते थे। अनुयायियों को अम्बेडकर द्वारा निर्धारित बाइस प्रतिज्ञाओं का पालन करना होता था। नव बौद्धवाद में जाति प्रथा, वर्णभेद, लिंङ्गभेद कुरीतियों का स्थान नहीं है।

88. Which of the following books is not authored by B.R. Ambedkar?
निम्न पुस्तकों में कौन सी, बी.आर. अम्बेडकर द्वारा लिखित नहीं है?

(a) Destruction of Caste/जाति का विनाश
(b) Thoughts on Pakistan/पाकिस्तान पर विचार
(c) Shudra-who and how?/शूद्र-कौन और कैसे
(d) Buddh- Vaani/बुद्ध-वाणी

Ans. (d) : बुद्धवाणी पुस्तक के लेखक 'वियोगी हरि' हैं। जबकि शेष पुस्तकें जैसे-जाति का विनाश, पाकिस्तान पर विचार, शूद्र-कौन और कैसे? के लेखक डॉ. अम्बेडकर हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

89. 'New orientation' is written by
'न्यू ऑरियेन्टेशन' के लेखक हैं
(a) K.C. Bhattacharya/के.सी. भट्टाचार्य
(b) M.N. Roy/एम.एन. राय
(c) J.Krishnamurti/जे. कृष्णामूर्ति
(d) D.P. Chattopadhyay/डी.पी. चट्टोपाध्याय

Ans. (b) : 'न्यू ओरियन्टेशन' के लेखक एम.एन. राय हैं। ध्यातव्य है कि एम.एन. राय को उत्कट मानववादी माना जाता है।

90. The author of the book 'Indian Materialism' is
'इंडियन मैटिरियलिज्म' पुस्तक के लेखक हैं
(a) M.N. Roy /एम.एन. राय
(b) D.P. Chattopadhyay /डी.पी. चट्टोपाध्याय
(c) Iqbal/इकबाल
(d) M.G. Ranade/एम.जी. रानाडे

Ans. (b) : 'इंडियन मैटेरियलिज्म' पुस्तक के लेखक देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय हैं।

91. Which of the following thinkers is influenced by Marxism?
निम्न में से किस विचारक के दर्शन पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण प्रभावी है?
(a) Ranade/रानाडे
(b) M.N. Roy/एम.एन. राय
(c) D.P. Chattopadhyay/डी.पी. चट्टोपाध्याय
(d) Gandhi/गांधी

Ans. (c) : देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय भारत के गणमान्य मार्क्सवादी दार्शनिक है। इन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन में, भौतिकवादी संस्कृति की खोज में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनके दार्शनिक विचार मार्क्सवाद से प्रभावित है।

भौतिकवाद दार्शनिक एकत्ववाद का एक प्रकार है जिसका यह मत है कि प्रकृति में पदार्थ ही मूल द्रव्य है और साथ ही सभी दृष्ट विषय जिसमें मानसिक दृष्ट विषय तथा चेतना भी शामिल है, परस्पर भौतिक संक्रिया के परिणाम है।

92. Which of these books is not written by J. Krishnamurti?
निम्न में से कौन सी पुस्तक जे. कृष्णामूर्ति द्वारा लिखित नहीं है?
(a) Freedom from the Known/फ्रीडम फ्रॉम द नॉन
(b) The Wonder of Life/द वण्डर ऑफ लाइफ
(c) Wholeness of Life/हॉलनेस ऑफ लाइफ
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : 'द वण्डर ऑफ लाइफ' के लेखक जाने माने पत्रकार वीर सांघवी हैं। शेष सभी पुस्तके-'फ्रीडम फॉर द नॉन', 'हॉलनेस ऑफ लाइफ', के लेखक जे. कृष्णमूर्ति हैं।

93. Who said, 'Philosophy is materialism'?
किसके अनुसार 'दर्शन भौतिकवाद' है?
(a) Ranade/रानाडे
(b) M.N. Roy/एम.एन. राय
(c) K.C. Bhattacharya/के.सी. भट्टाचार्य
(d) B.R. Ambedkar/बी.आर. अम्बेडकर

Ans. (b) : उत्कट मानववादी एम.एन. राय के अनुसार 'दर्शन भौतिकवाद है।' भौतिकवाद दार्शनिक एकत्ववाद का एक प्रकार है। जिसका यह मत है कि प्रकृति में पदार्थ ही मूल द्रव्य है और साथ ही सभी दृष्ट विषय जिसमें मानसिक दृष्टविषय और चेतना भी शामिल है, परस्पर भौतिक संक्रिया के परिणाम हैं।
राय ने अपने मानववादी दर्शन से मानव को स्वयं अपना केन्द्र बताकर मानव की स्वतंत्रता एवं उसकी गरिमा का प्रबल समर्थन किया है।

94. M.N. Roy describes man as
एम.एन. राय मनुष्य को मानते हैं
(a) Selfish/स्वार्थी
(b) God oriented/ईश्वरोन्मुख
(c) Both (1) & (2)/दोनों (a) और (b)
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (d) : एम.एन. राय की दृष्टि में मनुष्य-
1. मनुष्य मानव जाति का मूल है।
2. मनुष्य प्रत्येक वस्तु का मापदण्ड है।
3- मनुष्य स्वभावतः विकासवान है।
4- मनुष्य ही समाज का सृजनकर्ता है।
इस प्रकार स्पष्ट है कि राय मनुष्य को न तो स्वार्थी मानते हैं और न तो इश्वरोन्मुख।

95. The real freedom, according to J. Krishnamurthy
सच्ची स्वतंत्रता को जे. कृष्णामूर्ति क्या स्वीकार करते हैं?
(a) New-Form/नवीन स्वरूप
(b) Absolute existence/परम सत्ता
(c) Self/स्वयं का स्वरूप
(d) Knowledge/ज्ञान

Ans. (c) : जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार सच्ची स्वतंत्रता 'स्वयं का स्वरूप' है। कृष्णमूर्ति के अनुसार, 'आप जो भी दृष्टिकोण करते हैं वह आपके भीतर से प्रक्षेपित होता है। इसके बाद स्व सम्मोहन की एक प्रक्रिया बन जाती है। जो की संगठित धर्म है।' सत्य को खोजने के लिए स्वयं के पूर्वाग्रहों और विचारों तथा निष्कर्षों को बहुत स्पष्ट रूप से देखना होगा। वह स्पष्टता आपको उस स्वतंत्रता के लिए धन्यवाद देती है जो गुण हैं। सदाचारी मन के लिए सत्य हर जगह है। यदि आप किसी संगठित धर्म से नहीं हैं तो आप स्वतंत्र हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

96. Ramanuja holds that the relation between Brahman, Jiva and Jagat is
रामानुज ब्रह्म, जीव व जगत में सम्बन्ध मानते हैं-
(a) Abheda/अभेद
(b) Svagat-bheda/स्वगत भेद
(c) Sajatiya-bheda/सजातीय भेद
(d) Vijatiya-bheda/विजातीय भेद

Ans. (b) : रामानुज ब्रह्म, जीव व जगत में स्वगत भेद मानते हैं। रामानुज के अनुसार ब्रह्म के दो अंशों चित और अचित में भेद है। रामानुज ब्रह्म और जीव में भेद नहीं करते हैं। रामानुज ब्रह्म और जीव में अपृथक सम्बन्ध मानते हैं। रामानुज अपने दर्शन में जगत को सत्य मानते हैं। जिस प्रकार ईश्वर सत्य है उसी प्रकार यह जगत भी सत्य है। जगत के सत्य होने का अर्थ यह नहीं कि जगत की वस्तुएं नित्य हैं। जगत सत्य है यद्यपि एक जगत की वस्तुएं अनित्य हैं।

97. "Param Brahman' is described as 'Vishnu' by
किसने 'परम ब्रह्म' को विष्णु कहा है?
(a) Shankar/शंकर
(b) Madhvacharya/माध्वाचार्य
(c) Vallabhacharya/वल्लभाचार्य
(d) Chaitanya Mhaprabhu/चैतन्य महाप्रभु

Ans. (b) : माध्वाचार्य ने अपने दर्शन में 'परमब्रह्म' को विष्णु कहा है। इनके अनुसार विष्णु ही परमात्मा है। यही ब्रह्म है। ब्रह्म ही निरपेक्ष सत है। इसी को नारायण, विष्णु, वासुदेव, परमात्मा आदि नामों से पुकारा जाता है।

98. Shankar holds that Ishwar is world's
शंकर के अनुसार ईश्वर हैं जगत का
(a) Creator/सृष्टा
(b) Guardian/पालक
(c) Destroyer/संहारक
(d) All of these/ये सभी

Ans. (d) : शंकर के अनुसार विश्व ईश्वर की सृष्टि है। सृष्टि की विपरीत क्रिया को प्रलय कहा जाता है। सृष्टि और प्रलय का क्रम निरंतर चलता रहता है। ईश्वर विश्व का निर्माण माया से करता है। माया ईश्वर की शक्ति है। जगत ईश्वर से उत्पन्न होता है और पुनः उसी में विलीन हो जाता है। इस प्रकार ईश्वर जगत का स्रष्टा, पालनकर्ता एवं संहारकर्ता है। वह जीवों के भोग के लिए भिन्न-भिन्न लौकिक वस्तुओं का निर्माण करता है।

99. Shankar describe Maya' as the special power of
शंकर के अनुसार माया विशिष्ट शक्ति है
(a) Ishwar/ईश्वर की
(b) Brahman/ब्रह्म की
(c) Jiva/जीव की
(d) All of these/इन सभी की

Ans. (b) : शंकर के अनुसार माया ब्रह्म में निवास करती है। यद्यपि माया का आश्रय ब्रह्म है फिर भी ब्रह्म माया से प्रभावित नहीं होतो माया ब्रह्म की शक्ति है जिसके आधार पर वह विश्व का निर्माण करता है। जिस प्रकार जादूगर अपनी जादू की निपुणता से विभिन्न प्रकार के खेल दिखाता है उसी प्रकार ब्रह्म माया की शक्ति से विश्व का नाना रूपात्मक रूप उपस्थित करता है।

100. Which object was not raised against 'Maya' by ramanuja?
रामानुज ने 'माया' की कौन सी आपत्ति नहीं उठायी है?
(a) Ashrayanupatti/आश्रयानुपपत्ति
(b) Svarupanupatti/स्वरूपानुपपत्ति
(c) Virodhanupatti/विरोधानुपपत्ति
(d) Pramananupapatti/प्रमाणानुपपत्ति

Ans. (c) : रामानुज द्वारा माया की आपत्तियों में 'विरोधानुपपत्ति' नहीं है। शेष सभी आपत्तियों को रामानुज ने माया के विरूद्ध लगाया है।
रामानुज कहते हैं कि अविद्या अथवा माया का आश्रय स्थान कहाँ है? यदि कहा जाए कि माया का आश्रय ब्रह्म है तो शंकर का अद्वैतवाद खण्डित हो जाता है क्योंकि ब्रह्म के अतिरिक्त माया का अस्तित्व मानना पड़ता है। जीव भी अविद्या का आश्रय नहीं होगा क्योंकि वह स्वयं अविद्या का कार्य है। इस प्रकार अविद्या का आश्रय कोई भी नहीं कहा जा सकता, इस तर्क को 'आश्रयानुपपत्ति' तर्क कहते हैं।
रामानुज ने माया के स्वरूप पर भी आपत्ति उठाई है और इस तर्क को 'स्वरूपानुपपत्ति' कहा है, क्योंकि यह माया के स्वरूप के विषय में है। रामानुज कहते हैं कि अविद्या का प्रमाण क्या है? अविद्या का अर्थ है ज्ञान का अभाव। इसे भावात्मक रूप से कैसे जाना जा सकता है? अविद्या को प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द से कैसे जाना जा सकता है? इस तर्क को प्रमाणानुपपत्ति कहते हैं।
इन आपत्तियों के अतिरिक्त रामानुज ने माया पर विरोधानुपपत्ति तथा 'अनिर्वचनीयानुपपत्ति' भी उठाई है।

101. According to Upanisada the purist state of soul or atma is
उपनिषदों के अनुसार 'आत्मा' की विशुद्ध अवस्था है
(a) Awakening State/जाग्रत
(b) Dreaming State/स्वप्न
(c) Dreamles deep sleep/सुषुप्ति
(d) Turiya or beyond deep sleep/तुरीय

Ans. (d) : छांदोग्य उपनिषद के अनुसार आत्मा चार स्तरों में स्वयं के होने का अनुभव करती है-
(1) जाग्रत (2) स्वप्न
(3) सुषुप्ति (4) तुरीय
तुरीय आत्मा की विशुद्ध अवस्था है। इस अवस्था में मन और मस्तिष्क में कुछ भी नहीं चलता है। यह ध्यान की चौथी अवस्था है। इससे पहले की तीन अवस्थाओं में इन्द्रियों द्वारा महसूस की गई बात, कल्पना द्वारा की गई बात और शून्य महसूस किया जाता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

102. Which system of Indian philosophy propounds that soul is primarily unconscious?
आत्मा मूलत: 'अचेतन है' मानने वाला भारतीय दर्शन संप्रदाय है
(a) Jain/जैन (b) Charvaka/चार्वाक
(c) Samkhya/सांख्य (d) Vedanta/वेदान्त

Ans. (b) : चार्वाक कहते हैं कि चेतना आत्मा का गुण नहीं है। चार्वाक के अनुसार चेतनता शरीर का गुण है। शरीर में चेतना का अस्तित्व रहता है। चेतना शरीर का ही एक विशेष गुण है। शरीर के साथ चेतना वर्तमान रहती है और शरीर के अन्त के साथ ही चेतना का भी अन्त हो जाता है। इस प्रकार चेतना का अस्तित्व शरीर से स्वतंत्र नहीं है। इसलिए चार्वाक आत्मा को शरीर से भिन्न नहीं मानता। चेतन शरीर ही आत्मा है। चैतन्य विशिष्ट देह को चार्वाक ने आत्मा कहा है।

103. Types of 'Arth-Naya' in Jainism are
जैन दर्शन में 'अर्थ-नय' कितने माने गए हैं?
(a) Two/दो (b) Three/तीन
(c) Four/चार (d) Five/पाँच

Ans. (d) : जैन दर्शन में 'अर्थ-नय' की कुल संख्या पांच मानी गई है।

104. 'If this exists that exists' - is the fundamental basis of which doctrine?
'इसके होने पर उसका होना' निम्न में से किस मत का मूल आधार है?
(a) Bauddha Pratitya Samutpada
बौद्ध प्रतीत्य समुत्पाद
(b) Jain Saptabhangi Naya/जैन सप्तभंगी नय
(c) Nyaya Asatkaryavada/न्याय असत्कार्यवाद
(d) Vedantic Vivartavada/वेदान्तीय विवर्तवाद

Ans. (a) : 'इसके होने पर उसका होना' यह बौद्ध प्रतीत्य समुत्पाद का मूल आधार है। प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार प्रत्येक वस्तु कारणानुसार होती है। कारण के नष्ट हो जाने पर वस्तु का भी नाश हो जाता है। इससे प्रमाणित होता है कि प्रत्येक वस्तु नश्वर है। प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत अनित्यवाद में प्रतिफलित होता है। विश्व की प्रत्येक वस्तु समुद्र के जल की तरह चलायमान है। संसार में कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है जो परिवर्तनशील न हो। इस प्रकार क्षणिकवाद के अनुसार विश्व की प्रत्येक वस्तु अनित्य है, चाहे वह जड़ हो अथवा चेतन।

105. Purush-Prakriti relation in Samkhya is of
सांख्य में प्रकृति-पुरुष सम्बन्ध है
(a) Tadatmya/तादात्मय
(b) Teleological/प्रयोजनात्मक
(c) Samyoga/संयोग
(d) Samavaya/समवाय

Ans. (b) : सांख्य दर्शन के अनुसार पुरुष प्रकृति का पथ प्रदर्शन करता है। अचेतन प्रकृति चेतना पुरुष के प्रयोजन को प्रमाणित करने के लिए जगत का विकास करती है। प्रकृति का विकास प्रयोजनात्मक है। प्रकृति अचेतन होने के बावजूद प्रयोजन संचालित होती है इसलिए सांख्य का सिद्धान्त अचेतन प्रयोजनवाद का सिद्धांत है। जिस प्रकार अचेतन वृक्ष मनुष्यों के भोग के लिए फल का निर्माण करते हैं उसी प्रकार अचेतन प्रकृति पुरुषों के लाभ के लिए विकास करती है। इस प्रकार सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति-पुरुष का सम्बन्ध प्रयोजनात्मक है।

106. Which thinker considers 'Shabda' as 'Dravya'?
किस दार्शनिक ने 'शब्द' को द्रव्य स्वीकार किया है?
(a) Kumaril/कुमारिल (b) Kapil/कपिल
(c) Kanaada/कणाद (d) Gautam/गौतम

Ans. (a) : कुमारिल ने 'शब्द' को द्रव्य स्वीकार किया है। मीमांसको ने शब्द को नित्य माना है। इसकी न तो उत्पत्ति होती है और न तो विनाश होता है। शब्द का अस्तित्व अनादिकाल से चला आ रहा है। शब्द की नित्यता इस बात से प्रमाणित होती है कि बार-बार उच्चारण करने से जो ध्वनि पैदा होती है उससे एक ही शब्द का बोध होता है। जैसे-दश बार 'क' शब्द एक ही रहता है। इससे प्रमाणित होता है कि ध्वनि अनित्य है जबकि शब्द नित्य हैं।

107. In yoga system, the classes of yogis are
योग दर्शन में योगियों के कितने प्रकार स्वीकार किये हैं?
(a) One/एक (b) Two/दो
(c) Three/तीन (d) Four/चार

Ans. (d) : योग दर्शन चार प्रकार के योगियों को स्वीकार करता है।

108. Who describes 'Moksha' as a state without pleasure?
किसने मोक्ष की अवस्था को आनन्द रहित स्वीकार किया है?
(a) Nimbarka/निम्बार्क (b) Ramanuja/रामानुज
(c) Gautam/गौतम (d) Shankar/शंकर

Ans. (c) : न्याय दर्शन के प्रणेता गौतम ने मोक्ष की अवस्था को आनन्द रहित स्वीकार किया है। न्याय दर्शन के अनुसार मोक्ष की अवस्था में आत्मा मे न केवल दुखों का अन्त होता है बल्कि सुखों का भी अन्त हो जाता है। गौतम ने मोक्ष की अवस्था को आनन्द विहीन माना है। आनन्द सर्वदा दुख से मिले रहते हैं दुख के अभाव में आनन्द का भी नाश हो जाता है। मोक्षावस्था में शरीर के साथ आनन्द का भी नाश हो जाता है। इससे प्रमाणित होता है कि मोक्ष में आत्मा अपनी स्वाभाविक अवस्था में आ जाती है, तथा सुख दुख से शून्य होकर बिलकुल अचेतन हो जाती है, किसी भी प्रकारकी अनुभूति उसमें शेष नहीं रह जाती है यही आत्मा की चरम अवस्था है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

109. Which of the following is 'Prakriti-Vikriti' in Samkhya?
निम्न में से कौन सी सांख्य में 'प्रकृति विकृति' है?
(a) Mula-Prakriti/मूल प्रकृति
(b) Ahamkara/अहंकार
(c) Askash/आकाश
(d) Purush/पुरुष

Ans. (b) : सांख्य दर्शन के अनुसार 'अहंकार' 'प्रकृति-विकृति' है। सांख्य दर्शन के अनुसार अहंकार का कारण बुद्धि है। किसी वस्तु के सम्बन्ध में बुद्धि में 'मैं' या 'मेरा' का भाव रखना ही अहंकार है। अहंकार स्वयं भौतिक है। अहंकार ही विश्व के समस्त व्यवहारों का आधार है। अहंकार के वशीभूत होकर पुरुष अपने को कर्ता समझने लगता है यद्यपि वह अकर्ता है। इस प्रकार अहंकार के कारण पुरुष मिथ्या भ्रम में पड़ जाता है। सांख्य दर्शन तीन प्रकार के अहंकार मानता है-
(1) वैकारिक अथवा सात्विक अहंकार।
(2) भूतादि अथवा तामस अहंकार।
(3) राजस अथवा तेजस अहंकार।

110. According to Vaishesika, Parmanus (Atom) have
वैशेषिक के अनुसार परमाणुओं में पाया जाता है
(a) Difference in quantity, uniformity in quality
संख्यात्मक भेद, गुणात्मक अभेद
(b) Difference in quantity difference in quality
संख्यात्मक भेद, गुणात्मक भेद
(c) Uniformity in both/दोनों में अभेद
(d) Uniformity in quantity, difference in quality
संख्यात्मक अभेद, गुणात्मक भेद

Ans. (b) : वैशेषिक दर्शन में कणाद ने परमाणुओं के गुणात्मक तथा संख्यात्मक दोनों भेद माना है। परमाणुओं को उन्होंने गुण से युक्त कहा है। पृथ्वी के परमाणुओं में गन्ध रस और स्पर्श निहित है। जल के परमाणुओं में रुप, रस और स्पर्श के गुण विद्यमान हैं। वायु के परमाणुओं में स्पर्श के गुण निहित है।

111. Deh-Parimani Atama is supported by
कौन सा दर्शन आत्मा को देहपरिमाणी स्वीकार करता है?
(a) Charvaka/चार्वाक
(b) Jainism/जैन
(c) Mimansa/मीमांसा
(d) Vishisthadvaita/विशिष्टाद्वैत

Ans. (b) : जैन दर्शन में आत्मा को देहपरिमाणी स्वीकार किया गया है। जैन दर्शन में जीव (आत्मा) को शरीर के बराबर बताया गया है, क्योंकि शरीर के प्रत्येक अंग में आत्मा व्याप्त है जिस प्रकार छोटे या बड़े स्थान को पाकर प्रकाश कम या अधिक होता है उसी प्रकार आत्मा भी छोटे या बड़े शरीर की आकृति के अनुसार होता है। तात्पर्य यह है कि शरीर के परिमाण के अनुसार ही आत्मा का परिमाण है। बाल्यावस्था का शरीर युवावस्था में बदल जाता है तो आत्मा भी युवावस्था के शरीर के परिमाण को धारण करता है।

112. To attain Moksha 'Pushti marg' is suggested by
मोक्ष हेतु पुष्टिमार्ग का समर्थन किसने किया है?
(a) Ramanuja/रामानुज
(b) Madhavacharya/माध्वाचार्य
(c) Vallabha/वल्लभ
(d) Bhaskaracharya/भास्कराचार्य

Ans. (c) : मोक्ष हेतु पुष्टि मार्ग का समर्दन वल्लभाचार्य ने किया है।

113. Pittar-Pak process in Atoms is supported by
परमाणुओं में पित्तर-पाक प्रक्रिया को कौन स्वीकार करता है?
(a) Nyaya/न्याय
(b) Vaishesika/वैशेषिक
(c) Mimansa/मीमांसा
(d) Vedanta/वेदान्त

Ans. (a) : परमाणुओं में पित्तर पाक प्रक्रिया न्याय दर्शन स्वीकार करता है।

114. Which of the following is not a 'Padartha' in Nyaya?
न्याय दर्शन में किसे पदार्थ नहीं माना गया है?
(a) Pramana/प्रमाण
(b) Tark/तर्क
(c) Pramanya/प्रामाण्य
(d) Shabda/शब्द

Ans. (d) : न्याय दर्शन में शब्द को पदार्थ नहीं माना गया है। न्याय दर्शन में सोलह प्रकार के पदार्थ माने गए हैं- (1) प्रमाण (2) प्रमेय/प्रमाण्य (3) संशय (4) प्रयोजन (5) दृष्टांत (6) सिद्धांत (7) अवयव (8) तर्क (9) निर्णय (10) वाद (11) जल्प (12) वितण्डा (13) हेत्वाभास (14) छल (15) जाति (16) निग्रह स्थान।

115. According to Jain philosophy soul is
जैन मत के अनुसार आत्मा का
(a) Bondage is with a beginning and end and Moksha is also with a beginning and end.
बन्धन सादि व सांत है और मोक्ष भी सादि व सांत है।
(b) Bondage is begnningless and endless, and Moksha or Librationis also beginningless and endless
बन्धन अनादि व अनंत है और मोक्ष भी अनादि व अनंत है।
(c) Bondage is with beginning and endless, and liberation is beginningless and with an end
बन्धन सादि व अनंत और मोक्ष अनादि व सांत है।
(d) Bondage is beginningless and with an end and liberationis with beginnin and endless
बन्धन अनादि व सांत है और मोक्ष सादि व अनंत है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : जैन मत के अनुसार बन्धन अनादि व शांत है और मोक्ष सादि व अनंत है। जैन दर्शन के बंधन सम्बन्धी विचारो में विशिष्टता है। जैन दर्शन कहता है कि शरीर का निर्माण पुदगल कणों से हुआ है यही बंधन है। जैन मत दो प्रकार का बन्धन मानता है- (1) भाव बन्ध (2) द्रव्य बन्ध। मन में दूषित विचारों का आना ही भाव बन्ध है और जब पुदगल कण आत्मा में प्रविष्ट हो जाते हैं तब जीव और पुदगल का सम्बन्ध 'द्रव्य बन्ध' कहलाता है। जैनों के अनुसार यह बन्धन अनादि व शांत है।
मोक्ष के सम्बन्ध में जैनियों का मत है कि जीव का पुदगल से वियोग ही मोक्ष है। जैन दर्शन में सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र को मोक्ष का मार्ग माना गया है। जैन मत में मोक्षावस्था सादि व अनंत है।

116. The effect is latant in the cause and the effect. is real transformation of cause. This view is acceptable to
'कारण में कार्य अव्यक्त रूप में रहता है और बाह्य कारण से कार्य की उत्पत्ति वास्तविक है।' ये मत मान्य है-

(a) Bauddha and Nyaya schools
बौद्ध व न्याय सम्प्रदाय को
(b) Mimansa and Jain schools/मीमांसा व जैन मत को
(c) Charvaka and Vedanta schools
चार्वाक व वेदान्त मत को
(d) Sankhya and Yoga Schools/सांख्य व योग मत को

Ans. (d) : 'कारण में कार्य अव्यक्त रूप में रहता है और वाह्य कारण से कार्य की उत्पत्ति वास्तविक है।' यह मत सांख्य व योग का है। सांख्य के कार्य कारण सिद्धांत को सत्कार्यवाद के नाम से जाना जाता है। सत्कार्यवाद के अनुसार कार्य उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में अव्यक्त रूप में मौजूद रहता है। सत्कार्यवाद के सिद्धांत को एक उदाहरण से समझ सकते हैं, यदि 'क' को कारण माना जाय तथा 'ख' को कार्य माना जाए तो सत्कार्यवाद के अनुसार 'ख', 'क' में अव्यक्त रूप से निर्माण के पूर्व अंतर्भूत होगा।

117. According to Yoga philosophy, God is———of the universe.
योग दर्शन में ईश्वर विश्व का

(a) Only material cause/केवल उपादान कारण है।
(b) Both material and efficient cause
निमित्त व उपादान दोनों कारण है।
(c) Only efficient cause/केवल निमित्त कारण है।
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं।

Ans. (c) : योग दर्शन में ईश्वर को विश्व का सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता नहीं माना गया है। विश्व की सृष्टि प्रकृति के विकास के फलस्वरूप हुई है। विश्व की सृष्टि प्रकृति और पुरुष के संयोग से हुई है। पुरुष और प्रकृति दोनों एक दूसरे से भिन्न एवं विरूद्ध कोटि के हैं। दोनों को संयुक्त कराने के लिए ही योग दर्शन में ईश्वर की मीमांसा हुई है। अतः ईश्वर विश्व का निमित्त कारण है जबकि प्रकृति विश्व का उपादान कारण है।

118. Who acknowledges five type of differences among Brahman, Jiva and Jagat?
ब्रह्म, जीव व जगत में पंच भेद को स्वीकार किया है-

(a) Sharnkar/शंकर
(b) Ramanja/रामानुज
(c) Bhaskaracharya/भास्कराचार्य
(d) Madhvacharya/माध्वाचार्य

Ans. (d) : ब्रह्म, जीव और जगत में भेद को माध्वाचार्य ने स्वीकार किया है। इन तीनों सत्ताओं के बीच माध्वाचार्य ने पांच प्रकार के भेद स्वीकार किए। यह भेद निम्नलिखित हैं-
(1) भौतिक (जगत के) चीजों के बीच अंतर।
(2) जगत और जीव के बीच अंतर।
(3) जगत और ब्रह्म के बीच अंतर।
(4) जीव और ब्रह्म के बीच अंतर।
(5) विभिन्न आत्माओं के बीच अंतर।
यह अंतर न तो अस्थायी है न तो केवल व्यवहारिक यह हर चीज की एक अचल और प्राकृतिक संपत्ति है। माधव इसे तारतम्यता कहते हैं।

119. Prasthan-Trayi of Shankar Vedanta does not include
शंकर वेदान्त के प्रस्थानत्रयी में नहीं है

(a) Brahman-Sutra/ब्रह्म-सूत्र
(b) Upnishadas/उपनिषद्
(c) Geeta/गीता
(d) Shrimad-Bhagwat/श्रीमद्भागवत

Ans. (d) : शंकर वेदान्त के प्रस्थानत्रयी में श्रीमदभागवत को नहीं रखा गया है। शंकर वेदान्त के प्रस्थानत्रयी में- ब्रह्म सूत्र, उपनिषद और गीता को रखा जाता है।
वेदान्त दर्शन का आधार बादरायण का 'ब्रह्मसूत्र' कहा जाता है। ब्रह्मसूत्र उपनिषदों के विचारों में सामंजस्य लाने के उद्देश्य से ही रचा गया था। बादरायण ने बताया की समस्त उपनिषद विचार में एकमत हैं। ब्रह्मसूत्र को वेदान्त सूत्र भी कहा जाता है।
गीता की रचना सुंदर छन्दों में की गई है। महाभारत के युद्ध में अर्जुन को जो कृष्ण ने उपदेश दिया था उसी का नाम गीता है। गीता में तत्व-विचार, नैतिक-नियम, ब्रह्म-विद्या और योग शास्त्र निहित है। गीता समस्त भारतीय दर्शन का निचोड़ है।

120. The system which supports 'Dehatmavada' is
कौन सा दर्शन देहात्मवाद को मानता है?

(a) Charvaka/चार्वाक
(b) Buddhism/बौद्ध
(c) Mimamsa/मीमांसा
(d) Shaiva/शैव

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : चार्वाक दर्शन देहात्मवाद को मानता है। चार्वाक के अनुसार चेतना, शरीर का एक विशेष गुण है शरीर से अलग चेतना का अनुभव नहीं होता है। शरीर के साथ चेतना वर्तमान रहती है और शरीर के अन्त के साथ चेतना का भी अन्त हो जाता है, इस प्रकार चेतना का अस्तित्व शरीर से स्वतंत्र नहीं है। चार्वाक कहते हैं की चेतन शरीर ही आत्मा है, आत्मा और शरीर के बीच अभेद मानने के फलस्वरूप ही चार्वाक के आत्मा सम्बन्धी विचारों को 'देहात्मवाद' कहा जाता है।

121. In 'Nasdiya-Sukta', latent conscious energy is called
नासदीय सुक्त में अव्यक्त चेतन शक्ति को क्या कहा गया है?

(a) Purusa/पुरुष (b) Indra/इन्द्र
(c) Astta/असत्त (d) Tapas/तपस

Ans. (d) : नासदीय सूक्त में अव्यक्त चेतन शक्ति को 'तपस' कहा जाता है। नासदीय सूक्त ऋग्वेद के 10वें मण्डल का 129वाँ सूक्त है। इसका सम्बन्ध ब्राह्मण्ड विज्ञान और ब्राह्मण्ड की उत्पत्ति के साथ है।
नासदीय सूक्त में कहा गया है कि सृष्टि के पूर्व न तो सत् था और न तो असत था, उस समय न तो अंतरिक्ष था न कोई लोक था और न कोई व्योम था और न जल तत्व ही था, उस समय केवल अव्यक्त चेतन शक्ति थी जिसे 'तपस' कहा जाता था।

122. 'Like as vegetables grow from the earth or hair grows from a body everything evolves from the 'Avinashi-Brahman' is described in which of the following Upanisada?
'जैसे पृथ्वी से औषधियाँ निकलती हैं या शरीर से रोये निकलते हैं वैसे ही अविनाशी ब्रह्म में सब उत्पन्न होता है' लिखा है-

(a) Chhandogya Upanisada /छान्दोग्य उपनिषद में
(b) Mundaka Upanisada/मुण्डक उपनिषद में
(c) Tettiriya Upanisada/तैतिरीय उपनिषद में
(d) Katopanisada/कठोपनिषद में

Ans. (b) : 'जैसे पृथ्वी से औषधियां निकलती है या शरीर से रोएं निकलते हैं वैसे ही अविनाशी ब्रह्म से सब उत्पन्न होता है।' यह विचार मुण्डक उपनिषद से सम्बन्धित है। मुण्डक उपनिषद का सम्बन्ध अथर्ववेद से है। इसमें पदार्थ और ब्रह्म-विद्या का विवेचन है। इसमें आत्मा और परमात्मा की तुलना की गई है। मुण्डक का अर्थ है मस्तिष्क को अत्यधिक शक्ति प्रदान करने वाला। 'सत्यमेव जयते' मुण्डक उपनिषद से ही लिया गया है।

123. How many forms of Brahma described in Aranyaka?
आरण्यकों में ब्रह्म के कितने स्वरूप कहे गये हैं?

(a) One /एक (b) Two/दो
(c) Three/तीन (d) Four/चार

Ans. (c) : आरण्यकों में ब्रह्म के तीन स्वरूप कहे गये हैं। आरण्यक का अर्थ है जो अरण्य में पढ़ाया जाए- 'अरण्वे भवम आरण्यकम्' वेदों का गद्य वाला खण्ड आरण्यक कहा जाता है। यह वैदिक वाङ्मय का तीसरा हिस्सा है। इसमें दर्शन और ज्ञान की बातें लिखी हुई हैं। वानप्रस्थियों और सन्यासियों के लिए आत्मतत्व और ब्रह्मविद्या के ज्ञान के लिए मुख्य रूप से इन ग्रंथों की रचना हुई है।

124. Which is the key element in Geeta?
गीता में किस तत्त्व को प्रधान तत्त्व स्वीकार किया गया है?

(a) Prakriti/प्रकृति
(b) Para-Prakriti/परा-प्रकृति
(c) Apara-Prakriti/अपरा-प्रकृति
(d) Purusottam/पुरुषोत्तम

Ans. (d) : गीता में 'पुरुषोत्तम' को प्रधान तत्व के रूप में स्वीकार किया गया है। गीता में वर्णित 'ईश्वर' ही 'पुरुषोत्तम' है। इस पुरुषोत्तम को प्रकृति और पुरुष से परे माना गया है तथा परमात्मा या परम ब्रह्म कहा गया है।
गीता में ईश्वर को अनन्त और ज्ञान स्वरूप कहा गया है। वह शाश्वत है। यह ईश्वर विश्व की नैतिक व्यवस्था को कायम रखता है। यह जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल देता है। इस प्रकार यह ईश्वर कर्म फल दाता है।

125. In Jainism, 'Shabda' is a product of
जैन दर्शन में 'शब्द' किस द्रव्य का परिणाम माना गया है?

(a) Ether/आकाश (b) Pudgala/पुद्गल
(c) Space/दिक (d) Time/काल

Ans. (*) : जैन दर्शन में 'शब्द' को पुदगल नामक द्रव्य का परिणाम नहीं माना गया है। पुदगल के अन्य गुण रूप, रस, गन्ध एवं स्पर्श है। जैनों ने 'शब्द' को स्कन्धों का आगन्तुक गुण कहा है।

126. In Vasihesika 'Nitya-dravya' are
वैशेषिक दर्शन में नित्य द्रव्य स्वीकार किया गया है

(a) Earth atoms/पृथ्वी परमाणु
(b) Aakash/आकाश
(c) Fire-atoms/अग्नि-परमाणु
(d) All of these/ये सभी

Ans. (d) : वैशेषिक दर्शन में पृथ्वी परमाणु, आकाश तथा अग्नि परमाणु को नित्य द्रव्य के रूप में स्वीकार किया गया है।
वैशैषिक दर्शन में नौ प्रकार के द्रव्य स्वीकार किए गए हैं-
(1) पृथ्वी (2) अग्नि (3) वायु (4) जल (5) आकाश (6) दिक् (7) काल (8) आत्मा (9) मन।
वैशेषिक के मतानुसार पृथ्वी, जल वायु तथा अग्नि के द्रव्य दो प्रकार के होते हैं- (1) नित्य (2) अनित्य। पृथ्वी, वायु, जल तथा अग्नि के परमाणु नित्य हैं और उनसे बने कार्य-द्रव्य अनित्य।
इस विवेचन से स्पष्ट है कि परमाणु चार प्रकार के हैं- पृथ्वी, जल, वायु तथा अग्नि के परमाणु। परमाणु को नित्य माना जाता है। परमाणु दिखाई नहीं पड़ते इनका अस्तित्व अनुमान से प्रमाणित होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

127. Yogachars are also known as Vijnanavadins (idealists) because they believe that
योगाचारों को विज्ञानवादी भी कहा जाता है क्योंकि उनका मानना है कि

(a) All dharmas except consciousness are unreal
चेतना के अतिरिक्त सभी धर्म असत् है।
(b) Objects should be studied scientifically
वस्तुओं का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति से किया जाना चाहिए।
(c) Ultimate source of knowledge is inference
अनुमान ही ज्ञान का एकमात्र प्रमाण है।
(d) External objects are momentary.
बाह्य वस्तुएँ क्षणिक हैं।

Ans. (a) : योगाचार विज्ञानवाद के अनुसार विज्ञान या चेतना (Consciousness) सत्य है बाकी सभी धर्म असत है। माध्यमिकों ने वाह्य वस्तुओं तथा चित्त के अस्तित्व को नहीं माना है। विज्ञानवादी वाह्य वस्तुओं की सत्ता का खंडन करते हैं परन्तु चित्त (चेतना) की सत्ता में विश्वास करते हैं।
उनका कहना है कि यदि विज्ञान अर्थात मन की सत्ता को नहीं माना जाए तब भी विचार असिद्ध हो जाते है। अतः विचार की सम्भावना के लिए चेतना (चित्) को मानना अपेक्षित है।

128. Which thinker holds that Buddha accepts 'Nitya-Atman'?
किस दार्शनिक के अनुसार बुद्ध ने नित्य आत्मा को स्वीकार किया है?

(a) Iqbal/इकबाल
(b) Gandhi/गांधी
(c) Vivekananda/विवेकानन्द
(d) Radhakrishnan/राधाकृष्णन

Ans. (d) : डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार बुद्ध ने नित्य आत्मा को स्वीकार किया है।

129. What is 'Jna', in Sankhya?
सांख्य-दर्शन में 'ज्ञ' किसे कहा गया है?

(a) Prakriti/प्रकृति (b) Purush/पुरुष
(c) Vyaakta/व्यक्त (d) Mahat/महत्

Ans. (b) : सांख्य दर्शन में 'ज्ञ' पुरुष को कहा गया है। सांख्य दर्शन का पुरुष ज्ञाता है। वह कार्य कारण से मुक्त है। पुरुष अपरिवर्तनशील है। पुरुष विवेकी और अपरिणामी है।
पुरुष की सत्ता स्वयं सिद्ध है। यह शुद्ध चैतन्य स्वरूप है। पुरुष अर्थात आत्मा स्वयं प्रकाश रूप है। वह स्वयं तथा संसार की अन्य वस्तुओं को प्रकाशित करता है। पुरुष काल और दिक् की सीमाओं से परे है।

130. Theories of causation are basically classified into group (s)
कारणता के सिद्धान्त को मूल रूप से कितने वर्गों में बाँटा गया है?

(a) One/एक (b) Two/दो
(c) Three/तीन (d) Four/चार

Ans. (b) : भारतीय दर्शन में दो विचारधारा ऐसी है जो कारणता सिद्धांत पर विशेष बल देती है।
(1) न्याय-वैशेषिक (2) सांख्य
न्याय वैशेषिक का कारणता सिद्धांत असतकार्यवाद के नाम से तथा सांख्य के कारणता सिद्धांत को सत्कार्यवाद के नाम से जाना जाता है।
असत्कार्यवाद के अनुसार कार्य का अस्तित्व कारण में नहीं है। इस सिद्धांत को आरम्भवाद के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि यह कार्य को एक नया आरम्भ मानता है।
सांख्य दर्शन के कारणता सिद्धांत सत्कार्यवाद के अनुसार 'कार्य उत्पत्ति के पूर्व उपादान कारण में अव्यक्त रूप में मौजूद रहता है।' अतः कार्यकारण उत्पत्ति के पूर्व कारण में कार्य की सत्ता स्वीकार करता है।
इस प्रकार स्पष्ट है कि कारणता सिद्धांत के दो वर्ग है-
(1) सतकार्यवाद (2) असतकार्यवाद।

131. In Nyaya' relation among threads is———of cloth
न्याय के अनुसार धागों के बीच का संबंध कपड़े का _______ है।

(a) Nimitta cause/निमित्त कारण
(b) Samavaayi cause/समवायी कारण
(c) Asamavaayi cause/असमवायी कारण
(d) Lakshya cause/लक्ष्य कारण

Ans. (c) : न्याय दर्शन में तीन प्रकार के कारण माने गए हैं-
(1) उपादान कारण (2) असमवायि कारण (3) निमित्त कारण
उपादान कारण- वह द्रव्य जिसके द्वारा कार्य का निर्माण होता है। जैसे-मिट्टी घड़े का उपादान कारण है।
असमवायि कारण- वह गुण या कर्म जो उपादान कारण में समवेत रहकर कार्य की उत्पत्ति में सहायक होता है। जैसे- कपड़े का निर्माण सूत्रों के संयोग से होता है। यही सूत्रों का संयोग कपड़े का असमवायि कारण है।
निमित्त कारण- वह कारण जो द्रव्य से कार्य उत्पन्न करने में सहायक होता है। जैसे- मिट्टी के घड़े का निर्माण कुम्भकार द्वारा होता है अतः कुम्भकार घड़े का निमित्त कारण है।

132. Which of the following pair supports 'Parinam-vada of Satkaryvada?
निम्न में से कौन सा युग्म सत्कार्यवाद के परिणामवाद का समर्थक है?

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) Samkhya-Vishishtadvait/सांख्य-विशिष्टाद्वैत

(b) Nyaya – Samkhya/न्याय-सांख्य

(c) Samkhya – Shankar/सांख्य-शंकर

(d) Nyaya – Vaisheshika/न्याय-वैशेषिक

Ans. (a) : सांख्य-विशिष्टाद्वैत, सतकार्यवाद के परिणामवाद का समर्थन करते हैं। सतकार्यवाद के सामने एक प्रश्न उठता है कि क्या कार्य-कारण का वास्तविक रूपांतर है। इस प्रश्न के दो उत्तर है- (1) भावात्मक (2) निषेधात्मक। भावात्मक उत्तर से परिणामवाद तथा निषेधात्मक उत्तर से विवर्तवाद का उद्भव होता है।

सांख्य-योग, तथा विशिष्टाद्वैत के अनुसार जब कारण से कार्य का निर्माण होता है तो कार्य में कारण का वास्तविक रूपांतर होता है। कार्य कारण का बदला हुआ रूप है। जब मिट्टी से घड़े का निर्माण होता है तब मिट्टी का पूर्ण परिवर्तन घड़े में होता है। जब दूध से दही का निर्माण होता है तब दूध का परिवर्तन दही के रूप में हो जाता है। परिणामवादियों के अनुसार कार्य-कारण का परिणाम होता है।

133. In Samkhya, material form of sufferings is
सांख्य में दुःख का वस्तुगत प्रकार कहलाता है:

(a) Adhyatmika Dukh/आध्यात्मिक दुःख

(b) Adhibhautik Dukh/आधिभौतिक दुःख

(c) Adhidaivik Dukh/आधिदैविक दुःख

(d) All of these/ये सभी

Ans. (b) : सांख्य दर्शन में दुख का वस्तुगत प्रकार आधिभौतिक दुख कहलाता है।

सांख्य दर्शन तीन प्रकार के दुख मानता है-

1. **आध्यात्मिक दुख-** वह दुख जो मनुष्य के निजी शरीर तथा मन से उत्पन्न होते हैं। जैसे- भूख, सरदर्द, क्रोध, भय, द्वेष आदि।
2. **आधिभौतिक दुख-** वह दुख जो वाह्य पदार्थों के प्रभाव से उत्पन्न होता है। इस प्रकार का दुख मनुष्य, पशुओं तथा पक्षियों से प्राप्त होता है।
3. **आधिदैविक दुख-** इसमें वाह्य और अलौकिक कारण से उत्पन्न दुख को शामिल किया जाता है। नक्षत्रों, भूतप्रेत, सर्दी, गर्मी से मिलने वाला दुख।

134. 'Lshwar-Pranidhan' is accepted as a way to attain 'Moksha' by the schools of
कौन से दर्शन में 'ईश्वर-प्रणिधान' को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है?

(a) Nyaya/न्याय

(b) Vishishtadvaita/विशिष्टाद्वैत

(c) Yoga/योग दर्शन

(d) Adavaita-Vedanta/अद्वैत-वेदान्त

Ans. (c) : योग के अष्टांग साधनों में से एक 'नियम' भी है। नियम के पांच प्रकार माने गए हैं-

1. **शौच-** वाह्य और आंतरिक शुद्धि।
2. **सन्तोष-** उचित प्रयास से प्राप्त में संतुष्ट रहना।
3. **तपस-** शारीरिक कष्टों को सहने की क्षमता।
4. **स्वाध्याय-** शास्त्रों का अध्ययन तथा ज्ञानी पुरुषों का अनुकरण।
5. **ईश्वर प्रणिधान:-** ईश्वर के प्रति श्रद्धाभाव।

ध्यातव्य है कि योग दर्शन में ईश्वर प्रणिधान को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है।

135. 'Shat-Sampati' is necessary for 'Moksh' is accepted by
मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक हेतु 'षट् सम्पत्ति' को आवश्यक किसने माना है?

(a) Shankara/शंकर (b) Samkhya/सांख्य

(c) Patanjali/पतंजलि (d) Gautam/गौतम

Ans. (a) : मोक्ष प्राप्ति के लिए 'षट् सम्पत्ति' की आवश्यकता पर शंकर ने बल दिया है। वह 'षट् सम्पत्तियाँ' इस प्रकार है-

1. **शम-** मन का संयम।
2. **दम-** इन्द्रियों का संयम।
3. **श्रद्धा-** शास्त्र में निष्ठा।
4. **समाधान-** ज्ञान के साधन में चित्त लगाना।
5. **उपरति-** विक्षेपकारी कार्यों से अलग होना।
6. **तितिक्षा-** शीतोष्ण को सहने की शक्ति।

136. According to Ramanuja the form of God represented in an Idol.
रामानुज ने मूर्ति में प्रकट ईश्वर को ईश्वर का कौन सा रूप कहा है?

(a) Vyuh/व्यूह (b) Vibhav/विभव

(c) Archavatar/अर्चावतार (d) Prakat/प्रकट

Ans. (c) : रामानुज के अनुसार भक्तों की मुक्ति के लिए ईश्वर अपने को पांच रूपों में प्रकाशित करता है-

1. **अन्तर्यामी-** ब्रह्म या ईश्वर का प्रथम रूप। यह जीवों के अन्तःकरण में प्रवेश कर सभी प्रवृत्तियों को गति प्रदान करता है।
2. **नारायण या वासुदेव-** इस रूप को देवतागण बैकुण्ठ से देखते हैं।
3. **व्यूह-** यह स्त्रष्टा, संरक्षक तथा संहारक रूप है।
4. **अवतार-** पृथ्वी पर मनुष्य या पशु के रुप में प्रकट होना।
5. **अर्चावतार-** भक्तों के प्रति दया के वशीभूत मूर्तियों में प्रकट होना।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

137. In which book Udayan presented the proofs for existence of god?/उदयन ने किस ग्रंथ में ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण दिये हैं?

(a) Nyaya–Kusumanjali/न्याय कुसुमांजलि
(b) Nyaya–Vartika/न्यायवार्तिक
(c) Nyaya–Sutra/न्याय सूत्र
(d) Tark–Bhasa/तर्कभाषा

Ans. (a) : उदयनाचार्य ने ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए नौ प्रमाण दिए है जिसका उल्लेख उन्होंने न्यायकुसुमांजलि में किया है- (1) कार्यात (2) आयोजनात (3) धृत्यादेः (4) पदात् (5) प्रत्यतः (6) श्रुतेः (7) वाक्यात (8) संख्याविशेषात (9) अदृष्टात।

138. Ishwar related to the level of existence, according to Shankar, is/शंकर के अनुसार ईश्वर सत्ता के किस स्तर का विषय है?

(a) Parmarthik/पारमार्थिक
(b) Vyavharik/व्यावहारिक
(c) Pratibhasik/प्रातिभासिक
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : शंकर के मतानुसार सत्ता की तीन कोटियां हैं-
(1) परमार्थिक सत्ता
(2) व्यावहारिक सत्ता
(3) प्रातिभासिक सत्ता
शंकर ने परमार्थिक सत्ता के अंतर्गत ब्रह्म को रखा है। इनके अनुसार ब्रह्म परमार्थिक दृष्टि से पूर्णतः सत्य है वह एकमात्र सत्य कहा जाता है। ब्रह्म स्वयं ज्ञान है। ब्रह्म को स्वयं प्रकाश कहा जाता है।
शंकर ने व्यावहारिक सत्ता के अंतर्गत ईश्वर को रखा है। इनके अनुसार जब हम ब्रह्म को विचार से जानने का प्रयास करते हैं तब यह ईश्वर हो जाता है। ईश्वर सगुण ब्रह्म है। ईश्वर सर्वज्ञ है। ईश्वर जगत का सृष्टा, पालनकर्ता एवं संहारकर्ता है।

139. Contact of a thing with other via another thing is called/जब किसी वस्तु का संयोग किसी अन्य वस्तु के माध्यम से होता है उसे कहते हैं

(a) Ubhay-Karmaj/उभय कर्मज
(b) Karmaj/कर्मज
(c) Sanyoga/संयोग
(d) Prati Samyogej/प्रतिसंयोगज

Ans. (c) : किसी वस्तु का संयोग किसी अन्य वस्तु के माध्यम से होने को संयोग कहते हैं।
संयोग तीन प्रकार का होता है-
(1) अन्यतर कर्मज- यह संयोग दो द्रव्यों में से एक द्रव्य की गति के कारण उत्पन्न होता है।
(2) उभय कर्मज- यह संयोग दो द्रव्यों की गति के कारण होता है।
(3) संयोगज संयोग- जब एक संयोग से दूसरा संयोग हो जाता है तो उस संयोग को संयोगज संयोग कहते हैं।

140. Which of the following holds 'Ayut-sidh' relation?
निम्न में 'अयुतसिद्ध' संबंध कौन सा है?

(a) Universal – Individual/सामान्य व व्यक्ति
(b) Dravya – Guna/द्रव्य व गुण
(c) Part – Whole/अवयव व अवयवी
(d) All of these/ये सभी

Ans. (d) : अयुतसिद्ध सम्बन्ध उन वस्तुओं के बीच होता है जिनका पृथक अस्तित्व नहीं रह सकता है। जैसे- गुण और द्रव्य, सामान्य और व्यक्ति, अवयवी और अवयव। इन्हीं अयुतसिद्ध वस्तुओं के बीच समवाय सम्बन्ध विद्यमान रहता है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार समवाय सम्बन्ध नित्य होता है।

141. Classification of Samvaya in Nitya and Anitya is accepted by
नित्य व अनित्य समवाय का भेद किसने माना है?

(a) Prabhakar/प्रभाकर
(b) Kanaad/कणाद
(c) Kumaril/कुमरिल
(d) Prashastpaada/प्रशस्तपाद

Ans. (a) : नित्य, अनित्य समवाय का भेद प्रभाकर ने माना है। प्रभाकर ने सात पदार्थों का उल्लेख किया है। वे हैं- द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, परतंत्रता, शक्ति, सादृश्य। वैशेषिक दर्शन में जिसे समवाय कहा गया है उसे मीमांसा दर्शन में परतंत्रता कहा गया है। प्रभाकर के सात पदार्थों में प्रथम पाँच पदार्थ वैशेषिक के द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य और समवाय से मिलते हैं।

142. Kaal (Time) is anastikaya, according to
किसने काल को अनस्तिकाय द्रव्य बताया है?

(a) Charvaka/चार्वाक (b) Jain/जैन
(c) Bauddha/बौद्ध (d) Mimansa/मीमांसा

Ans. (b) : जैन दर्शन में द्रव्य का विभाजन दो वर्गों में हुआ है- (1) अस्तिकाय (2) अनस्तिकाय। जैन ने काल को अनस्तिकाय द्रव्य बताया है। काल ही ऐसा द्रव्य है जिसमें विस्तार नहीं है। काल के अतिरिक्त सभी द्रव्यों को अस्तिकाय कहा जाता है क्योंकि वे स्थान घेरते हैं। अस्तिकाय द्रव्य का विभाजन जीव और अजीव में होता है।

143. Jainism classifies Akash into group (s)
जैन दर्शन आकाश के कितने भेद स्वीकार करते हैं?

(a) One/एक (b) Two/दो
(c) Three/तीन (d) Four/चार

Ans. (b) : जैन दर्शन आकाश के दो भेद स्वीकार करता है- (1) लोकाकाश (2) अलोकाकाश। लोकाकाश में, जीव, पुदगल, धर्म और अधर्म निवास करते हैं। अलोकाकाश जगत के बाहर है। जैनों के मतानुसार आकाश उसे कहा जाता है जो धर्म, अधर्म, जीव, पुदगल जैसे अस्तिकाय द्रव्यों को स्थान देता है। आकाश का ज्ञान अनुमान से प्राप्त होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

144. According to Charvaka Sruti (Testimony) is not a valid source of knowledge because
चार्वाक दर्शन के अनुसार श्रुति (आप्तवाक्य) ज्ञान का प्रमाण नहीं है क्योंकि:
(a) It is based on hearing/यह सुनने पर आधारित है।
(b) It gives indirect knowledge
यह परोक्ष ज्ञान देती है।
(c) It talks about such entities which can't be verified by sense perception (their perception is impossible)/यह ऐसी सत्ताओं की चर्चा करती है जिन्हें इन्द्रिय-प्रत्यक्ष से प्रमाणित नहीं किया जा सकता (अर्थात् उनका प्रत्यक्ष असम्भव है)
(d) It gives contradictory knowledge
यह विरोधी ज्ञान देती है।

Ans. (c) : श्रुति (आप्तवाक्य) ऐसी सत्ताओं की चर्चा करती है जिन्हें इन्द्रिय प्रत्यक्ष से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है (अर्थात उनका प्रत्यक्ष असम्भव है)। जबकि चार्वाक दर्शन में केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण माना गया है। अतः चार्वाक के अनुसार श्रुति ज्ञान का प्रमाण नही है।

145. 'Dik' in Vaisheshika is a
वैशेषिक दर्शन में 'दिक्' को माना है
(a) Dravya/द्रव्य
(b) Guna/गुण
(c) Karma/कर्म
(d) Samyoga/संयोग

Ans. (a) : वैशेषिक दर्शन में 'दिक्' को 'द्रव्य' माना गया है। वैशेषिक दर्शन में नौ द्रव्य माने गये हैं जो इस प्रकार हैं-

(1) पृथ्वी	(2) अग्नि	(3) वायु
(4) जल	(5) आकाश	(6) दिक्
(7) काल	(8) आत्मा	(9) मन

इनमें प्रथम पाँच को पंचभूत कहा जाता है। सभी का अपना विशेष गुण होता है।

146. According to Prashastapaad, two main types of knowledge are
प्रशस्तपाद के अनुसार ज्ञान के दो प्रमुख प्रकार हैं
(a) Prama – Aprama/प्रमा व अप्रमा
(b) Vidya – Avidya/विद्या व अविद्या
(c) Samyak – Asamyaka/सम्यक व असम्यक
(d) Anubhav –Smriti/अनुभव व स्मृति

Ans. (b) : प्रशस्तपाद के अनुसार ज्ञान के दो प्रकार हैं-
(1) विद्या, (2) अविद्या।
प्रशस्तपाद के अनुसार जो ज्ञान दोषपूर्ण नहीं है उसे विद्या कहते हैं तथा जो ज्ञान दोषपूर्ण है उसे अविद्या कहते हैं (तद् दुष्टज्ञानम्)।
जो मनुष्य विद्या तथा अविद्या के सच्चे स्वरूप को साथ-साथ जान लेता है और उसी के अनुरूप कर्म करता है वह कर्म तथा उपासना के द्वारा यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

147. Knowledge is divided into Blav Roop and Abhav-Roop by
ज्ञान का भाव रूप व अभाव रूप में भेद कौन करता है?
(a) Shankara/शंकर
(b) Kumaril/कुमारिल
(c) Prabhakar/प्रभाकर
(d) Panchshikhacharya/पंचशिखाचार्य

Ans. (c) : ज्ञान के भाव रूप तथा अभाव रूप में भेद मीमांसक प्रभाकर मिश्र स्वीकार करते हैं।

148. Prabhakar hold that knowledge is a
प्रभाकर ज्ञान को मानते हैं:
(a) Dravya/द्रव्य
(b) Guna/गुण
(c) Aagantuk guna/आगन्तुक गुण
(d) Kriya/क्रिया

Ans. (d) : प्रभाकर के अनुसार ज्ञान क्रिया है।

149. Which thinker hold 'Avisamvaditva' as a characteristic of 'Prama'?
'अविसंवादित्व' को प्रमा का लक्षण किसने स्वीकार किया है?
(a) Dharmkirti/धर्मकीर्ति
(b) Naagsen/नागसेन
(c) Vasubandhu/वसुबन्धु
(d) Dingnaaga/दिंगनाग

Ans. (a) : अविसंवादित्य को 'धर्मकीर्ति' ने प्रमा का लक्षण स्वीकार किया है। प्रमाण का लक्षण जैन दर्शन में 'अविसंवादि' बताया गया है अर्थात 'अविसंवादी' ज्ञान ही प्रमाण है।

150. Which philosophy accepts anadhigat, asandigdha and avipreet as characteritic of Prama?
कौन सा दर्शन अनधिगत, असंदिग्ध व अविपरीत को प्रमा का लक्षण मानता है?
(a) Jain /जैन
(b) Bauddha/बौद्ध
(c) Samkhya/सांख्य
(d) Nyaya/न्याय

Ans. (c) : सांख्य दर्शन के अनुसार अनधिगत, असंदिग्ध व विपरीत प्रमा के लक्षण हैं।
सांख्य के अनुसार प्रमा किसी विषय का यथार्थ या असंदिग्ध अनुभव है। प्रमा के करण को ही प्रमाण कहा गया है। सांख्य दर्शन के अनुसार चित्तवृत्ति से उत्पन्न पुरुष का बोध ही प्रमा है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

राजस्थान लोक सेवा आयोग असिस्टेंट प्रोफेसर-2020

दर्शनशास्त्र (PHILOSOPHY)

व्याख्या सहित हल द्वितीय प्रश्न-पत्र

(परीक्षा तिथि : 03.10.2021)

1. The theory of universals accepted by Plato is :
प्लेटो द्वारा स्वीकृत सामान्य का सिद्धान्त है
(a) Idealism/प्रत्ययवादी
(b) Realism/यथार्थवादी
(c) Nominalism/नामवाद
(d) Conceptualism/संप्रत्ययवाद

Ans. (b) : प्लेटो द्वारा स्वीकृत सामान्य का सिद्धान्त यथार्थवादी है। प्लेटो के अनुसार जगत के विविध विशेषों या व्यक्तियों की सत्ता सामान्यों के कारण ही है। सामान्य अपनी जाति के विशेषों में अनुगत रहते हैं और उनको अन्य जाति के विशेषों से पृथक् रखते हैं। सामान्य अनेक विशेषों मे अनुगत एकता है। यह हमारी बुद्धि की कल्पना नही हैं इनकी वास्तविक सत्ता है। विशेष सामान्य के प्रतिबिंब या प्रतिरूप हैं।

2. Bradley rejected/ब्रेडले खण्डन करते हैं :
(a) Pluralism/बहुतत्ववाद
(b) Hedonism/सुखवाद
(c) Empirical epistemology/अनुभववादी तत्त्वमीमांसा
(d) All of these/यह सभी

Ans. (d) : ब्रेडले एक ब्रिटिश दार्शनिक थे। ब्रेडले आदर्शवाद के समर्थक थे। इन्होंने बहुतत्ववाद, सुरववाद, तथा अनुभववादी तत्वमीमांसा की आलोचना की।
ब्रेडले का नैतिक दर्शन वर्तमान उपयोगितावादी सिद्धान्तों में स्वयं के उपयोग के विचार की आलोचना से प्रभावित था।
ब्रेडले का नैतिक चिंतन का दायरा समाज है, ब्रेडले समाज में प्रत्येक व्यक्ति के कर्तव्य के निर्धारण का प्रयास करते हैं। वास्तव में ब्रेडले का नैतिक सिद्धान्त कांट एवं हीगल के समन्वय पर आधारित है। यद्यपि वह इसमें बहुत सफल नहीं है।

3. Real, Universal and necessary knowledge is found in innate ideas alone. Who pointed this?
वास्तविक, सामान्य और अनिवार्य ज्ञान केवल सहजात/आत्मजात प्रत्ययों में पाये जाते हैं। यह किसने कहा?
(a) Descartes/देकार्त (b) Spinoza/स्पिनोज़ा
(c) Leibnitz/लाइब्नित्ज़ (d) Knat/कांट

Ans. (a) : देंकार्त का कथन है की "वास्तविक, सामान्य और अनिवार्य ज्ञान केवल सहजात/आत्मजात प्रत्ययों में पाए जाते हैं। रेने डेकार्ट बुद्धिवादी दार्शनिक थे। बुद्धिवादी बिचारधारा के अनुसार दर्शन शास्त्र में भी वास्तविक सामान्य और अनिवार्य ज्ञान की खोज होनी चाहिए। बुद्धिवाद के अनुसार हमारे मन में कुछ जन्मजात प्रत्यय होते हैं जो अनुभव के पहले होते हैं जिनमें अनिवार्यता का अभाव होता है। अनिवार्य और वास्ताविक ज्ञान केवल गणित में ही संभव है इसलिए दर्शन को केवल गणितीय पद्धति पर आधारित होना चाहिए।

4. Who said "Substance, as understood by philosophers, is an Unintelligible Chimera"?
यह किसका कथन है: 'दार्शनिकों द्वारा समझा गया द्रव्य एक अचिंत्य काल्पनिक जीव है'?
(a) Locke/लॉक (b) Berkeley/बर्कले
(c) Hume/ह्यूम (d) Kant/कांट

Ans. (c) : "दार्शनिकों द्वारा समझा गया द्रव्य एक अचिंत्य काल्पनिक जीव है"– हयूम।
"हमारा साक्षात संपर्क द्रव्य से न होकर उसके गुणों से होता है– 'लॉक'
"सत्ता अनुभव मूलक है"– वर्कले
"मैं वस्तुओं को विज्ञान नहीं बनाता मैं विज्ञानों को वस्तु बना रहा हूँ।"– बर्कले
"देश और कालवाह्य पदार्थ नहीं हैं। ये हमारे मानसिक धर्म हैं"– काण्ट।

5. The view which explains everything in terms of matter and motion as the effect of necessary laws advocates
वह मत जो सभी कुछ को जड़ और गति के रूप में समझता है, उसे अनिवार्य नियमों का परिणाम मानता है निम्न विचारधारा का पक्षधारी है:
(a) Skepticism/वैज्ञानिकवाद (b) Spinoza/भौतिकवाद
(c) Leibnitz/साम्यवाद (d) Knat/यथार्थवाद

Ans. (b) : वह मत जो सभी कुछ को जड़ और गति के रूप में समझता है उसे अनिवार्य नियमों का परिणाम मानता है, वह भौतिकवाद का समर्थक है।
भौतिकवाद दार्शनिक एकत्ववाद का एक प्रकार है, जिसका यह मत है की प्रकृति में पदार्थ ही मूल द्रव्य है, और साथ ही सभी दिखाई पड़ने वाले विषय जिसमें मानसिक ट्विषय् और चेतना भी शामिल है, भौतिक संक्रिया के परिणाम है।

6. To the question 'Does consciousness exist'? William James replied:/क्या चेतन का अस्तित्व है?
(a) No, not at all/नहीं, बिलकुल नहीं
(b) No, if by consciousness one means some sort of entity or mind stuff/नहीं, यदि चेतना का अर्थ किसी प्रकार की सत्ता या मानसिक पदार्थ से है।
(c) Yes, if by consciousness one means a functional unity/हाँ, यदि चेतना का अर्थ एक क्रियाशील एकता है।
(d) Both (2) & (3)/दोनों (2) और (3)

Ans. (d) : विलियम जेम्स ने चेतना के अस्तित्व के सम्बन्ध में दो तरह से उत्तर दिया–
(1) जेम्स ने कहा की 'अगर चेतना का अर्थ किसी प्रकार की सत्ता या मानसिक पदार्थ से है तब चेतना का अस्तित्व है।'
(2) यदि चेतना का अर्थ एक क्रियाशील एकता है तब चेतना का अस्तित्व है।

7. Mark the correct option in the light of Kant:
कांट के संदर्भ में निम्न में से सही विकल्प चुनें:
(a) Universality, necessity & Novelty are the criterion of knowledge.
सार्वभौमिकता, अनिवार्यता और नवीनता
(b) Synthetic a priori judgement fulfills all the required criterion of knowledge.

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

संश्लेषणात्मक प्रागुनभविक निर्णय ज्ञान की सभी कसौटियों पर खरे उतरते है।
(c) Knowledge appears in the form of judgement. ज्ञान निर्णय के रूप में प्रस्तुत होता है
(d) All of these/यह सभी

Ans. (d) : काण्ट के अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति इन्द्रिय संवेदन और बुद्धि विकल्प दोनों के सम्मिश्रण से होती है। इन्द्रिय संवेदनो से ज्ञान में सत्यत्व और बुद्धि विकल्पों से सार्वभौमता तथा अनिवार्यता आती है।
काण्ट ने कहा की ज्ञान संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णयों की व्यवस्था है। काण्ट ने कहा की निर्णय एक प्रतिज्ञप्ति है जिसमे एक उद्देश्य व एक विधेय होता है। प्रतिज्ञप्तियाँ भी उद्देश्य व विधेय के आधार पर दो तरह की होती है (1) संश्लेषणात्मक (2) विश्लेषणात्मक।
संश्लेषणात्मक प्रतिज्ञप्ति वह है जिसका विधेय पद उद्देश्य पद के सम्बन्ध मे कोई नई सूचना प्रदान करे, जबकी विश्लेषणात्मक प्रतिज्ञप्ति वह है जिसका विधेय पद, उद्देश्य पद की ही व्याख्या करता है कोई नई सूचना नहीं देता है।
प्रतािप्तियां भी अनुभव के आधार पर दो प्रकार की होती है
(1) आनुभविक प्रतिज्ञप्ति (2) प्रागनुभविक प्रतिज्ञप्ति/आनुभविक प्रतिज्ञप्ति की सत्यता हमारे अनुभवों के आधार पर सत्य होती हैं जबकी प्रागनुभविक प्रतिज्ञप्ति, हमारे अनुभवों से निरपेक्ष और अनिवार्य होती है।

8. The philosopher who rejected the approac h of most philosophers since Descartes who had been trying to prove the existence of the external world is–/वह दार्शनिक जिसने डेकार्ट के पश्चात् उन अधिकांश विचारकों के दृष्टिकोण का खण्डन किया जो बाह्य जगत के अस्तित्व को सिद्ध करने की कोशिश कर रहे थे-
(a) Berkeley/बर्कले (b) Locke/लॉक
(c) Kant/कांट (d) Leibnitz/लाइब्नित्ज़

Ans. (a) : डेकार्ट के पश्चात बर्कले ने भी वाह्य जगत की सत्ता के अस्तित्व का खण्डन किया। बर्कले कहते हैं कि "वाह्य जड़ जगत का कोई अस्तित्व नहीं है। हम इसका प्रत्यक्ष नहीं कर सकते हैं, क्योंकि प्रत्यक्ष होता है केवल गुणों का वाह्य पदार्थों का नहीं। गुणों के अधिष्ठान के रूप में हम वाह्य पदार्थ का अनुमान भी नहीं कर सकते, क्योंकि गुण वास्तव में संवदेन मात्र हैं और इसलिए आत्मा पर निर्भर हैं, वाह्य पदार्थ पर नहीं। वे आत्मनिष्ठ होते हैं वस्तुनिष्ठ नहीं।

9. What does Aristotle call that which brings about a certain result?/जो किसी प्रकार का परिणाम संपादित करता है अरस्तू उसे क्या कहते हैं?
(a) Material cause/उपादान कारण
(b) Efficient cause/निमित्त कारण
(c) Formal cause/स्वरूप कारण
(d) Final cause/लक्ष्य कारण

Ans. (b) : जो किसी प्रकार का परिणाम संपादित करता है अरस्तू उसे निमित्त कारण कहते हैं। निमित्त कारण एक चालक शक्ति है जिसके द्वारा वस्तु में परिवर्तन उत्पन्न होता है यह प्रत्येक प्रकार के परिवर्तन का कारण है। जैसे-किसी पत्ती का हरे रंग से पीले रंग में परिवर्तन होना अरस्तू के लिए उसी प्रकार गति है जिस प्रकार किसी पत्थर का गिरना। यह सभी प्रकार के परिवर्तन का कारण है। घट के उदाहरण में कुंभकार यह परिवर्तन करता है वह मिट्टी को घट के रूप में परिवर्तन करता है। अतः कुम्भकार निमित्त कारण है।

10. What kind of object of human inquiry does Hume think can never imply a contradiction? ह्यूम के विचार में मानव जाँच में किस प्रकार की विषयवस्तु का कोई भी व्याघाती/विरोधाभास नहीं हो सकता?
(a) Relation of Ideas/प्रत्ययों के संबंध
(b) Matters of fact/यथार्थ तथ्य
(c) A prior knowledge/पूर्वानुभविक ज्ञान
(d) Any object can imply a contradiction किसी भी विषय-वस्तु का विरोधाभास संभव है।

Ans. (b) : ह्यूम के विचार मे मानव जाँच मे यथार्थ तथ्य की विषयवस्तु का कोई भी व्याघाती/विरोधाभास नहीं हो सकता। विज्ञानों के पारस्परिक सम्बन्ध का ज्ञान (Relation of Ideas) (2) वस्तु जगत का ज्ञान (Matters of Fact)। पहले प्रकार का ज्ञान निश्चित और असंदिग्ध होता है यह गणित और तर्कशास्त्र में ही होता है। किन्तु वस्तु जगत का ज्ञान इन्द्रियानुभव पर आधारित है अतः यहाँ निश्चित और असंदिग्ध ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। यहाँ केवल आनन्तर्य संभव है, अनिवार्यता संभव नहीं। वस्तु जगत के सम्बन्ध में' हमारे अनुभव के लिए सार्वभौम और अनिवार्य नियमों की सिद्धि असंभव है और इसलिए वस्तु जगत का ज्ञान सदा संभावित होता है निश्चित नहीं।

11. The truth of the conclusion of an argument is logically derivable from the truth to its premises. It holds true for/किसी भी युक्ति के निष्कर्ष की सत्यता तार्किक रूप से उसके आधार-वाक्यों की सत्यता से निगमित की जा सकती है। यह सत्य है:
(a) Coherence theory/सामंजस्य के सिद्धान्त पर
(b) Correspondence theory/अनुरूपता के सिद्धान्त पर
(c) Pragmatic theory/अर्थक्रियाकारित्व के सिद्धान्त पर
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : अनुरूपता के सिद्धान्त के अनुसार किसी भी युक्ति के निष्कर्ष की सत्यता तार्किक रूप से उसके आधार वाक्यों की सत्यता से निगमित की जा सकती है। इसके अनुसार यदि हमारे ज्ञान के अनुरूप वास्तविकता में भी तथ्य हो तो हमारा ज्ञान सत्य होगा अन्यथा असत्य होगा।

12. You know salt is white if and only if salt is white. Identify the theory of truth. आप जानते हो नमक सफेद है यदि और केवल यदि तो नमक सफेद है। कौन सा सत्यता का सिद्धान्त है?
(a) Pragmatic/अर्थक्रियाकारित्व
(b) Correspondence/अनुरूपता
(c) Logical/तार्किक
(d) Coherence/सामंजस्य

Ans. (b) : आप जानते हैं नमक सफेद है, यदि और केवल यदि तो नमक सफेद है।
इस प्रकार के तर्कवाक्य का सम्बन्ध अनुरूपता के सिद्धांत से है।

13. According to Frege the reference of a sentence is :/फ्रेगे के अनुसार वाक्य का संदर्भ है
(a) Objective/वस्तुनिष्ठ (b) Mental/मानसिक
(c) Spiritual/आध्यात्मिक (d) Subjective/व्यक्तिनिष्ठ

Ans. (a) : फ्रेगे के अनुसार वाक्य का संदर्भ वस्तुनिष्ठ होता है।
फ्रेगे एक भाषाशास्त्री, तर्कशास्त्री थे। फ्रेगे ने कार्य (एक विशेष मामले के रूप में अवधारणाओं के साथ) और वस्तुओं के बीच मौलिक और औपचारिक अंतर का स्पष्टीकरण दिया।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

14. The technique of 'Bracketing' of the factual dimension of our experience in order to focus attention on its essential ideal aspect is essential feature of :
अनुभव के मुख्य शुद्ध आदर्श स्वरूप पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए अनुभव के तथ्यात्मक पक्ष को कोष्ठीकृत' करने की तकनीक मुख्य विशेषता है:
(a) Pragmatism/अर्थक्रियावाद की
(b) Phenomenology/फेनोमेनालोजी की
(c) Essentialism/पदार्थवाद की
(d) Existentialism/अस्तित्ववाद की

Ans. (b) : अनुभव के मुख्य शुद्ध आदर्श स्वरूप पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए अनुभव के तथ्यात्मक पक्ष को कोष्ठीकृत करने की तकनीक 'फेनोमेनोलॉजी' की मुख्य विशेषता है।
'फेनोमेनालॉजी' व्यक्तिनिष्ठ अनुभवों और चेतना के संरचनाओं का दार्शनिक अध्ययन है।

15. Which of the below given philosophers does bot deny metaphysics?/निम्न दर्शनिकों में से कौन सा तत्त्वमीमांसा को नहीं नकारता है?
(a) Kant/कांट (b) Hume/ह्यूम
(c) Berkeley/बर्कले (d) Ayer/एयर

Ans. (c) : बर्कले ने दर्शन की तत्वमीमांसीय व्याख्या की है इन्होंने ईश्वर, आत्मा, परमात्मा का विश्लेषण किया है। काण्ट ने कहा की "ईश्वर, जीव और जगत हमारी प्रज्ञा की कल्पनामात्र है, इनको वस्तु सत के रूप में सिद्ध नहीं किया जा सकता। काण्ट ने दार्शनिक रीति से यह सिद्ध किया की तत्वमीमांसा के अर्थ में दर्शनशास्त्र संभव नहीं है। ह्यूम भी कहते हैं की संवदेना या विज्ञान के अतिरिक्त अन्य किसी का ज्ञान नहीं हो सकता इसलिए अन्तर्बोध की कल्पना व्यर्थ है। ह्यूम कहते हैं इन्द्रियानुभव को मानने पर किसी तत्व की प्रतिष्ठा नहीं हो सकती।
काण्ट और ह्यूम की तरह ए.जे. एअर भी दर्शन के तत्वमीमांसीय विश्लेषण से बचते हैं।

16. Which statement is not true about Hume's view on substance?/कौन सा कथन ह्यूम के द्रव्य संबंधी विचार में सत्य नहीं है?
(a) Material substance exists.
भौतिक द्रव्य अस्तित्ववाद है
(b) Indivisible, immortal, soul substance is unknown./अविभाज्य, अनश्वर, आत्म द्रव्य अज्ञात है
(c) Idea of substance applied to matter or mind is meaningless.
द्रव्य का प्रत्यय चाहे मानसिक हो या जड़ अर्थहीन है
(d) No empirical evidence for the existence of mental substance./मानसिक द्रव्य के अस्तित्व को सिद्ध करने हेतु कोई भी अनुभववादी साक्ष्य नहीं है

Ans. (b) : ह्यूम के द्रव्य संबंधी विचार–
(1) ह्यूम के अनुसार भौतिक द्रव्य का अस्तित्व है भले ही वह जड़ ही क्यों न हो।
(2) द्रव्य का प्रत्यय अर्थहीन है भले ही वह मानसिक या जड़ ही क्यों न हो।
(3) मानसिक द्रव्य का अस्तित्व, अनुभववादी साक्ष्य से सिद्ध नहीं हो सकता है।

17. According to _______ philosophy is the activity by means of which the meaning of statements is clarified and defined.
_______ के अनुसार दर्शन ऐसी क्रिया है जिसके माध्यम से कथनों का अर्थ स्पष्ट और परिभषित होता है
(a) W.V. Quine/डब्ल्यू.वी. क्वाइन
(b) Wittgenstein/विटगेन्स्टाइन
(c) A.J. Ayer/ए.जे. एयर
(d) Schlick/श्लिक

Ans. (d) : 'श्लिक' कहते हैं की "दर्शन ऐसी क्रिया है जिसके माध्यम से कथनों का अर्थ स्पष्ट और परिभाषित होता है।

18. "A human being is absolutely free and absolutely responsible, anguish is the result," Who said this?/"मनुष्य पूरी तरह से स्वतन्त्र और पूरी तरह से उत्तरदायी है पीड़ा उसका परिणाम है "यह किसका कथन है?
(a) Sartre/सार्त्र (b) Camus/कामू
(c) Jaspers/जेस्पर्स (d) Nietzsche/नीत्शे

Ans. (a) : जान पाल सार्त्र अस्तित्ववादी दार्शनिक हैं। इन्होंने कहा की मनुष्य पूरी तरह से स्वतंत्र और पूरी तरह से उत्तरदायी है, पीड़ा उसका परिणाम है।
अस्तित्ववाद आधुनिक दर्शन का वह सिद्धान्त है जो मानव जीवन को संभव बनाता है और जो यह मानता है की प्रत्येक सत्य और कर्म का संबंध परिवेश तथा उसकी आत्मपरकता में निहित है। अस्तित्ववाद के अनुसार आत्मपरकता का अर्थ व्यक्ति की स्वतंत्रता से है।

19. Soren Kierkegaard identified _______ possible stages that a person can move through in their life time./सोरेन किर्केगार्ड के अनुसार व्यक्ति अपने जीवन काल में___संभावित अवस्थाओं से गुजर सकता है
(a) 2 (b) 4
(c) 5 (d) 8

Ans. (c) : सोरेन किर्कगार्ड के अनुसार व्यक्ति अपने जीवन काल में पांच (5) संभावित अवस्थाओं से गुजर सकता है।

20. Everything tends to change, to pass over into contradiction. This process is
प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है, विरोधाभास से गुजरती है। यह प्रक्रिया है :
(a) Organic process/आंगिक/जैविक प्रक्रिया
(b) Dialectical process/द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया
(c) Speculative process/चिन्तनशील प्रक्रिया
(d) Abstraction process/अमूर्तीकरण की प्रक्रिया

Ans. (c) : परिवर्तनशीलता और विरोधाभास चिन्तनशील प्रक्रिया की ओर संकेत करता है चिन्तनशील प्रक्रिया में विचारों में परिवर्तन आता है।

21. Which statement does not hold true for Spinoza's conception of God?
निम्न में से कौन सा कथन स्पिनोजा की ईश्वर की धारणा पर लागू नहीं होता?
(a) God is substance/ईश्वर द्रव्य है
(b) God is impersonal/ईश्वर निर्वैयक्तिक है
(c) God has a personality/ईश्वर का व्यक्तित्व है
(d) God is self-creative./ईश्वर स्व-रचयिता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : स्पिनोजा के अनुस्पर ईश्वर व्यक्तित्व परक नहीं हैं स्पिनोजा के ईश्वर की निम्नलिखित विशेषताएं है-
(1) अपरिमित और अद्वितीय द्रव्य ही ईश्वर है। ईश्वर ही एक मात्र द्रव्य है।
(2) ईश्वर स्वतः सिद्ध है, स्वयंज्योति है क्योंकि वह अपनी सत्ता और ज्ञान के लिए आश्रित नहीं है।
(3) ईश्वर निर्वैयक्तिक है उसका कोई व्यक्तित्व नहीं है।
(4) ईश्वर स्व रचयिता है। वह अपना कारण स्वयं है। उसका कोई कारण नही है, वह सबका कारण है
(5) ईश्वर नामक द्रव्य अन्तर्यामी, निर्गुण और अनिर्वचनीय है।

22. Aristotle's concept of causation is:
अरस्तू की कारणता की धारणा
(a) Scientific/वैज्ञानिक है
(b) Mechanical/यांत्रिक है
(c) Metaphysical/तत्त्वमीमांसीय है
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (c) : अरस्तू की कारणता की धारणा तत्वमीमांसीय है।
अरस्तू ने चार प्रकार के कारणों की कल्पना की है-
(1) भौतिक कारण (2) निमित्त कारण (3) औपचारिक कारण (4) अन्तिम कारण
अरस्तू ने उपर्युक्त चारों कारणों को द्रव्य और आकार नामक दो कारणों में सीमित कर दिया। अरस्तू के अनुसार "द्रव्य और आकार अवियोज्य है, इनका वास्तविक वियोजन संभव नही है।"

23. Identify the theory of truth which best characterizes the following description: Truth is a property of an extensive body of inter-related statements hence, statements have a degree of truth and falsity./सत्यता के उस सिद्धान्त को चिह्नित करें जो निम्न विवरण को सबसे सही दर्शाता है :
सत्य अन्तर-सम्बन्धित कथनों के विस्तृत निकाय का एक गुण है इसलिए कथनों में सत्यता व असत्यता की मात्रा होती है
(a) Coherence/सामंजस्य सिद्धान्त
(b) Correspondence/अनुरूपता का सद्धान्त
(c) Pragmatic/अर्थक्रियाकारित्व का सिद्धान्त
(d) Semantic theory/अर्थ-सम्बंधी सिद्धान्त

Ans. (a) : सत्यता के सामंजस्य सिद्धान्त के अनुसार "सत्य, अन्तर-सम्बन्धित कथनों के विस्तृत निकाय का एक गुण है, इसलिए कथनों में सत्यता व असत्यता की मात्रा होती है।"

24. Existence precedes essence is the central themes of/अस्तित्व सार का पूर्वगामी है- यह किस विचारधारा का केन्द्र-बिन्दु है?
(a) Idealism/प्रत्ययवाद
(b) Dialectical materialism/द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
(c) Existentialism/अस्तित्ववाद
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (c) : अस्तित्ववादी विचारधारा के अनुसार "अस्तित्व सार का पूर्व गामी है।"
अस्तित्वाद की मान्यता है की सर्वप्रथम व्यक्ति का अस्तित्व है फिर उसका सार है,। अगर वस्तु ही नही होगी तो सार कैसे होगा? व्यक्ति में 'मैं' की स्थिति को आवश्यक माना। अस्तित्ववाद व्यक्ति की स्वतंत्रता को महत्वपूर्ण मानता है। वाह्य परिस्थितियों, मान्यताओं को उसपे थोपा नहीं जाना चाहिए, उसे अपने जीवन का चुनाव स्वयं करना है उसे अपने विषय मे निर्णय, स्वयं लेना होगा।

25. God is dead-who made this statement
ईश्वर मृत है- यह कथन किसका है?
(a) Hume/ह्यूम (b) Francis Bacon/फ्रेंसिस बेकन
(c) Husserl/हुसर्ल (d) Nietzsche/नीत्शे

Ans. (d) : 'ईश्वर मृत है' यह कथन नीत्शे का है प्रतिद्ध जर्मन दार्शनिक नीत्शे कहते हैं की ईश्वर की मृत्यु हो चुकी है क्योंकि मनुष्य जितना असहाय है, दर्द में है यदि ईश्वर होता तो ऐसा न होता। ईश्वर ने मनुष्य को बनाया ही नही है और इसलिए ईश्वर जैसा कुछ भी नही है।
नीत्शे देवत्व की स्थापना को खारिज करते हैं और मनुष्यता को सभ्यता के सर्वश्रेष्ठ सोपान पर स्थापित करते हैं।

26. The philosophy of Hegel is known as:
हीगल का दर्शन है:
(a) Phenomenal Idealism/प्रपंचात्मक प्रत्ययवाद
(b) Personal Idealism/व्यक्तिनिष्ठ प्रत्ययवाद
(c) Absolute Idealism/निरपेक्ष प्रत्ययवाद
(d) Transcendental Idealism/अतींद्रिय प्रत्ययवाद

Ans. (c) : हेगल का दर्शन निरपेक्ष प्रत्ययवाद है। हेगल के अनुसार एक मात्र तत्व निरपेक्ष या पूर्ण विज्ञान है संपूर्ण विश्व इसी का परिणाम है। इन्द्रिय संवेदन, भावना, संकल्प आदि सब विज्ञान के ही विविध रूप है। विज्ञान की ही नित्य सत्ता है। विशुद्ध विज्ञान और विशुद्ध विज्ञाता में कोई अंतर नही है। विज्ञाता द्रव्य रूप नही है और न विज्ञान उसका आगन्तुक धर्म या गुण है। विज्ञाता, विज्ञान स्वरूप ही है।

27. It is the art of———which brings other men's ideas to birth./अन्य/दूसरे व्यक्तियों की अवधारणों को जन्म देने का कला है :
(a) Deception/धोखाधड़ी
(b) Oratory/वक्तृत्व-कला
(c) Intellectual midwifery/बौद्धिक धातृत्व
(d) Argumentation/तर्क-वितर्क

Ans. (c) : अन्य/दूसरे व्यक्यिों की अवधारणाओं को जन्म देने की कला बौद्धिक धातृत्व कहलाती है।
बौद्धिक धातृत्व वह कला है जिसके माध्यम से दूसरों के दिमाग में पहले से छिपे बिचारों और अवधारणाओं को सामने लाया जाता है।

28. According to Kant———judgments are always a posteriori./कांट के अनुसार———निर्णय सदैव प्रागनुभविक होते है।
(a) Analytical/विश्लेषणात्मक
(b) Synthetic/संश्लेषणात्मक
(c) Ethical/नैतिक
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : काण्ट के अनुसार मन ग्रहण किए हुए संवेदनों को अपने आकारों में ढालकर व्यवस्थित करता है तथ निर्णयों का निर्माण करता है। इस प्रकार संवेदन ग्राह्यता तथा बोध दोनों के सहयोग से निर्णय का निर्माण होता है। यह निर्णय संश्लेषणात्मक होते हैं क्योंकि यह अनुभव संवेदन ग्राह्यता पर आधारित होते हैं। ज्ञान में अनुभव आश्रित तथा प्रागनुभविक दोनों ही प्रकार के तत्व सम्मिलित होते हैं। इसलिए यह ज्ञान, नवीन तर्थ सार्वभौम एवं अनिवार्य होता है। इस प्रकार काण्ट के अनुसार संवेदन शक्ति तथा बोध दोनों से संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णयों का निर्माण होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

29. Everything has a cause. How does Kant interpret it?/सभी घटनाओं का कारण होता है। कांट इसकी व्याख्या कैसे करते है?

(a) It is the habit of mind/यह मनस की एक आदत है
(b) We have seen events being preceded by causes./हमने अनुभव में कारण को घटनाओं का पूर्वगामी देखा है।
(c) It is a case of pre-established harmony यह पूर्व-स्थापित सामंजस्य के कारण होता है
(d) It is because of the application of the category of causality. कारणता की मूल-धारणा लागू होने की वजह से

Ans. (d) : काण्ट कारणता की मूल-धारणा के आधार पर सभी घटनाओं के कारण की व्याख्या करते हैं। कांट कहते हैं की प्रत्येक घटना कार्य कारण नियम से संचालित होती है।

30. According to Berkeley/बर्कले के अनुसारः

(a) Ideas but not the mind exists प्रत्यय अस्तित्ववान है परन्तु मनस् नहीं।
(b) Minds but not the ideas exist मनस् अस्तित्ववान है परन्तु प्रत्यय नहीं।
(c) Both ideas and the mind exist प्रत्यय और मनस् दोनों अस्तित्ववान हैं
(d) Neither ideas nor the mind exist न तो प्रत्यय और न ही मनस् अस्तित्ववान है

Ans. (c) : बर्कले के अनुसार प्रत्यय और मनस दोनों अस्तित्ववान है। बर्कले कहते है की आत्म (मनस) और विज्ञान (प्रत्यय) के अतिरिक्त किसी की सत्ता नही है। हमारे विज्ञान ही सत्य वस्तुएं हैं। विज्ञान ही सत्य विषय है और उसकी सत्ता आत्मा के बाहर नहीं है।

31. 'A good clockmaker can construct two clocks which will keep such perfect time that they forever strike the hours at the same moment'. This position is acceptable to:
'एक अच्छा घड़ीसाज दो ऐसी घड़ियों को रच सकता है जो बराबर एक-दूसरे से मिली हैं और सदैव एक ही समय बताती हैं।' यह स्थिति स्वीकार्य है :

(a) Spinoza/स्पिनोजा को (b) Leibnitz/लाइब्नित्ज़ को
(c) Descartes/देकार्त को (d) Locke/लॉक को

Ans. (b) : लाइबनित्ज ने पूर्व स्थापित सामंजस्य को दो उदाहरणों से प्रस्तुत किया (1) आकेस्ट्रा का उदाहरण आकेस्ट्रा में सभी प्रतिभागी सिर्फ अपने वाद्ययंत्र से सम्बन्ध रखते है किन्तु सभी के प्रयास संगीतकार द्वारा पूर्वस्थापित सामंजस्य से बंधे होते हैं। इसलिए सभी क्रियाएं परस्पर स्वतंत्र होते हुए भी उनका परिणाम सुनियोजित होता हैं दूसरा उदाहरण दो घड़ियों का है। एक घड़ी साज दो अलग-अलग घड़ियों को ऐसा बनाता है की वे परस्पर असम्बद्ध होकर भी व्यवस्था है।

32. To whom is this statement attributed "It is vain to do with more what can be done with fewer"? यह कथन किसने कहा है 'जब थोड़े से काम चल सकता है, तो ज्यादा से काम लेना व्यर्थ है?

(a) Frege/फ्रेगे
(b) Russel/रसेल
(c) Willaiam of Ockhams/विलियम ऑफ ओक्हेम्स
(d) Wittgenstein/विटगेनस्टाइन

Ans. (c) : ''जब थोड़े से काम चल सकता है तो जादा से काम लेना व्यर्थ है।'' यह कथन विलियम आफ ओक्हेम्स का है।

33. Who highlighted the problem of personal identity in his book 'Individuals'? अपनी पुस्तक 'इन्डिविड्यूल्स' में किसने वैयक्ति अनन्यता की समस्या को रेखांकित किया?

(a) Kripke/क्रिपके
(b) Locke/लॉक
(c) P.F. Strawson/पी.एफ. स्ट्रॉसन
(d) Austin/ऑस्टिन

Ans. (c) : पी.एफ. स्ट्रासन ने अपनी पुस्तक 'इन्डिविजुअल्स' में वैयक्तिक अनन्यता की समस्या को रेखांकित किया।
स्ट्रासन ने 'इन्डिविजूअल्स' में विवरणात्मक तत्वमीमांसा की चर्चा करते हुए मूल विशेषों का सिद्धांत दिया। स्ट्रासन कहते हैं कि 'मूल विशेषों की समस्या सिर्फ पहचान (Identification) की समस्या है।' मूल प्रश्न यह है कि हम सामान्य जीवन में जिन विशेषों को जानते है क्या उनमें से कुछ ऐसे है जो अपनी पहचान के लिए अन्य विशेषों पर निर्भर नहीं हैं? उदाहरण के लिए जैसे-वह राम है। किन्तु कभी-कभी यह आधार लेना पड़ता है जैसे- 'यह वही राम है जो श्याम का भाई है। स्ट्रासन की मान्य समस्या यही है कि क्या कुछ विशेषों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है जो अपनी पहचान हेतु अन्य किसी पर निर्भर नहीं है। ऐसे विशेषों को ही मूल विशेष कहते है।

34. Naturalism is the philosophical belief that the world process is/प्रकृतिवाद वह दार्शनिक विचारधारा है जिसके अनुसार विश्व-प्रक्रिया

(a) Purposeless and deterministic उद्देश्यविहीन और नियत है
(b) Created by God in accordance with the laws of nature/ईश्वर द्वारा प्रकृति के नियमों के अनुरूप रचित है।
(c) Primarily for human beings मनुष्यों के लिए मुख्यतः
(d) Only understood through religious beliefs केवल धार्मिक विश्वासों द्वारा ज्ञात।

Ans. (a) : प्रकृतिवाद वह दार्शनिक विचार धारा है जिसके अनुसार विश्व प्रक्रिया उद्देश्य विहीन और नियत है।
प्रकृतिवादी विचारधारा के अनुसार प्रकृति ही मूल तत्व है यही ब्रहमाण्ड का कर्ता एवं उपादान कारण है। इस विचार के अनुसार विश्व में केवल प्राकृतिक नियम ही कार्य करते है न की आप्राकृतिक या आध्यात्मिक नियम।

35. _______ suggests that the idea of substance is a complex idea.
_______ के अनुसार द्रव्य एक जटिल प्रत्यय है।

(a) Spinoza/स्पिनोज़ास (b) Descartes/देकार्त
(c) Locke/लॉक (d) Hume/ह्यूम

Ans. (c) : लॉक के अनुसार द्रव्य एक जटिल प्रत्यय है।
लॉक कहते हैं की द्रव्य वह पदार्थ है जिसमे मूल गुण रहते हैं। लॉक द्रव्य को अज्ञेय मानते हैं किन्तु न्यूटन तथा इसाइयत प्रभाव के कारण भौतिक तथा आाध्यात्मिक द्रव्य की भी सत्ता स्वीकार करते हैं। लॉक का कहना है कि अनुभव में हमें कई बार प्रत्ययों का समुच्चय एक साथ मिलता है। प्रत्ययों के इस नियत साहचर्य के कारण हम इसे जटिल प्रत्यय होने के बावजूद सरल प्रत्यय की तरह स्वीकारते हैं और आत्मा में निहित अमूर्तिकरण तथा नामकरण क्षमताओं का प्रयोग करके द्रव्य की संज्ञा देते है। लाक कहते हैं की ''द्रव्य सर्वत्र एक सा' में नहीं जानता क्या।''

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

36. Hypotheses cannot be 'known' to be true because the next study might produce different results that refutes the hypotheses, This is known as :/प्राक्कल्पना कभी भी सत्य नहीं मानी जा सकती है क्योंकि आगामी अध्ययन भिन्न परिणाम उत्पन्न कर सकता है जो उस प्राक्कल्पना का खण्डन करती है। इसे कहा जाता है:

(a) The problem of proof/साक्ष्य की समस्या
(b) The problem of induction/आगमन की समस्या
(c) The problem of replication/पुनरावृत्ति की समस्या
(d) The problem of deduction/निगमन की समस्या

Ans. (a) : प्राकल्पना कभी भी सत्य नहीं मानी जा सकती है क्योकि आगामी अध्ययन भिन्न परिणाम उत्पन्न कर सकता है जो उस प्राकल्पना का खण्डन करती है। इसे साक्ष्य की समस्या कहा जाता है।

37. Which one of the following is not implied by Kant's Copernican Revolution?/निम्नोक्त काण्ट की कोपरनिकन क्रांति द्वारा अभिप्रेरित नहीं है :

(a) Rejection of Naïve Realism
सहज वस्तुवाद का खण्डन
(b) Blindness of sensible intrusion without concepts/प्रत्यय के बिना ऐन्द्रिक अन्त:प्रज्ञा का अंधापन
(c) Rejection of transcendental idealism
अनुभवातीत प्रत्ययवाद का खण्डन
(d) Emptiness of thought, or concepts without sensible intuition/बिना ऐन्द्रिक अन्त:प्रज्ञा के प्रत्ययों का खोखलापन

Ans. (c) : काण्ट की कोपरनिक्स क्रांति द्वारा निम्नलिखित अभिप्रेरित है-
(1) सहज वस्तुवाद का खण्डन
(2) प्रत्यय के बिना ऐन्द्रिक अन्त:प्रज्ञा का अंधापन
(3) बिना ऐन्द्रिक अन्त:प्रज्ञा के प्रत्ययों का खोखलापन।

38. Berkeley rejects physical substance because बर्कले भौतिक द्रव्य का खण्डन करता है क्योंकि

(a) It is an abstract idea/वह एक अमूर्त प्रत्यय है।
(b) It is an pure idea/वह एक विशुद्ध प्रत्यय है।
(c) It is an imminent idea/वह एक अन्तर्वर्ती प्रत्यय है
(d) It is given by God/ईश्वर द्वारा प्रदत्त है।

Ans. (b) : बर्कले भौतिक द्रव्य का खण्डन करते हैं क्योंकि वह एक विशुद्ध प्रत्यय है।
बर्कले ने यह सिद्ध किया की भौतिक द्रव्य का वास्तव में कोई अस्तित्व नहीं हैं हम इसका प्रत्यक्ष नहीं कर सकते, क्योकि प्रत्यक्ष होता है केवल गुणों का, वाह्य पदार्थ का नहीं। गुणों के अधिष्ठान के रूप मे हम वाह्य पदार्थ का अनुमान भी नहीं कर सकते, क्योकि गुण वास्तव में संवेदनमात्र हैं और इसलिए आत्मा पर निर्भर हैं, वाह्य पदार्थ पर नहीं वे आत्मनिष्ठ होते हैं वस्तुनिष्ठ नहीं।

39. Subjective idealism accepts: आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद स्वीकार करता है:

(a) Object exists independent of knowing mind
विषय की ज्ञाता मनस से स्वतन्त्र सत्ता है
(b) Object does not exist independent of knowing mind/विषय की ज्ञाता मनस से स्वतन्त्र सत्ता नहीं है
(c) Mind is dependent on matter
मनस पदार्थ पर आश्रित है
(d) Mind and matter are interdependent
मनस एवं पदार्थ दोनों परस्पर आश्रित हैं

Ans. (b) : आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद के अनुसार विषय की ज्ञाता मनस से स्वतंत्र सत्ता नहीं है। बर्कले कहते हैं की सत्ता अनुभव मूलक है, अर्थात उसी की है जिसका अनुभव है। यदि यह मान लें तो हमें स्वीकार करना होगा की प्रत्येक आत्मा को जो अनुभव होते हैं वे आत्मनिष्ठ होते हैं। पुनः अन्य व्यक्ति अथवा आत्माओं को तो जाना ही नहीं जा सकता क्योकि अन्य व्यक्ति प्रत्यय समूहों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं हैं। हम यह भी नहीं जान सकते की सभी व्यक्तियों का अनुभव एक जैसा है कि भिन्न-भिन्न इसमें किसी भी व्यक्ति को सिर्फ अपना तथा अपने प्रत्ययों का ही ज्ञान होता है। इसे मार्क्सवाद भी कहते हैं, क्योंकि किसी भी भौतिक सत्ता को नहीं स्वीकारने के कारण, सिर्फ मानसिक अनुभवों की ही सत्ता शेष रहती है। यह आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद की स्थिति है।

40. According to More the definition of good which does not commit naturalistic fallacy is मूर के अनुसार शुभ की परिभाषा जिसमें प्राकृतिक दोष नहीं है, वह निम्नोक्त है :

(a) good means command of god/शुभ ईश्वराज्ञा है
(b) All good actions produce pleasure
सभी शुभ कर्म सुख उत्पन्न करते हैं
(c) Good is virtuous/शुभ सद्गुण है
(d) good is indefinable/शुभ अपरिभाष्य है

Ans. (d) : मूर के अनुसार 'शुभ' 'शुभ' है अर्थात शुभ की परिभाषा नहीं दी जा सकती है। मूर ने 'शुभ' को अपरिभाष्य माना है 'शुभ' वस्तु को नहीं। मूर कहते हैं की 'शुभ अपरिभाष्य है' में प्राकृतिक दोष नहीं है।

41. Which of the following holds true for temperance as a virtue in Platonic framework? निम्नोक्त में से प्लेटो की व्यवस्था में संयम रूपी सद्गुण पर सटीक बैठता है:

(a) Temperance is the virtue which only offers resistance to the allurements of pleasure
संयम ऐसा सद्गुण है जो सुख के प्रलोभनों का प्रतिरोध करता है
(b) Temperance is antagonistic to pleasure
संयम सुख का विरोधी है
(c) Temperance demads a reasonable moderation of human nature./संयम बुद्धि और मानव स्वभाव की अन्य प्रवृत्तियों में उचित संतुलन स्थापित करता है।
(d) Temperance is negative virtue engaged only in repressing the appetites/संयम नकारात्मक सद्गुण है जो केवल क्षुधाओं को दबाती है।

Ans. (c) : प्लेटों के संयम रूपी सद्गुण के अनुसार "संयम बुद्धि और मानव स्वभाव की अन्य प्रवृत्तियों में उचित संतुलन स्थापित करता है।"

42. In which theory of punishment capital punishment can find justification?/दण्ड के किस सिद्धान्त मे मृत्युदण्ड औचित्यपूर्ण हो सकता है?

(a) Reformative/सुधारात्मक
(b) Deterrent/प्रतिरोधात्मक
(c) Retributive/प्रतिकारात्मक
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (c) : दण्ड का प्रतिकारात्मक सिद्धान्त मृत्युदण्ड को औचित्यपूर्ण मानता है। प्रतिकारात्मक सिद्धान्त बदले की भावना पर आधारित है। यह आँख के बदले आँख के सिद्धांत में विश्वास करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार जितनी छति अपराधी द्वारा पहुँचाई गई है उतनी ही छति उसे भी पहुँचनी चाहिए तभी वह 'अपराधी प्रवृत्ति' से मुक्त हो सकेगा।

43. Who said : ethical predicates are not factual, they do not describe any feature of the situation to which they are applied
यह कथन किसका है नैतिक विधेय तथ्यात्मक नहीं होते है। वे उस परिस्थिति के किसी वैशिष्ट्य का वर्णन नहीं करते जिस पर वे लागू होते हैं''?
(a) R.M Hare/आर.एम.हेयर
(b) Braithwaite/ब्रेथवैट
(c) A.J Ayer/ए.जे.ऐयर
(d) C.L. Stevenson/सी.एल.स्टीवेन्सन

Ans. (c) : नैतिक विधेय तथ्यात्मक नहीं होते हैं वे उस परिस्थिति के किसी वैशिष्ट्य का वर्णन नहीं करते जिस पर वे लागू होते हैं''। यह कथन ए. जे एअर का है।

44. Which pair of the below given matches is not correct?/निम्नोक्त युग्म में से कौन सा सही युग्म नहीं है?
(a) R.M Hare- Universal prescriptivism
आर.एम.हेयर – सार्वभौमिक परामर्शवाद।
(b) A.J. Ayer- Ethical statements are meaningless
ए.जे.ऐयर – नैतिक कथन अर्थहीन हैं
(c) C.L. Stevenson- Moral judgments are commands/सी.एल. स्टीवेनसन–नैतिक शब्द आज्ञा हैं।
(d) P.H. Nowell smith- Ethical words and descriptive words/पी.एच. नॉवल-स्मिथ – नैतिक शब्द वर्णनात्मक शब्द हैं।

Ans. (d) : निम्नलिखित युग्म सही हैं-
(1) आर.एम.हेयर– सार्वभौमिक परामर्शवाद
(2) ए. जे एअर– नैतिक कथन अर्थहीन हैं।
(3) सी. एल.स्टीवेनसन– नैतिक निर्णय आज्ञा हैं।

45. Moral judgments are absolute This notion was refuted by/नैतिक निर्णय निरपेक्ष होते हैं। इस विचारधारा का खण्डन किया गया :
(a) Kant/कांट द्वारा
(b) Logical Positivists/तार्किक प्रत्यक्षवादियों द्वारा
(c) Plato/प्लेटो द्वारा
(d) All of these/इन सभी के द्वारा

Ans. (a) : कांट ने "नैतिक निर्णय निरपेक्ष होते है" का खंडन किया है। काण्ट का विश्वास था की मनुष्यों में कारण के प्रति सहभागी होने की क्षमता नैतिकता का आधार होनी चाहिए और यही वह क्षमता है जो मनुष्यों को नैतिक रूप से महत्वपूर्ण बनाती है इसलिए उसका मानना था की सभी मनुष्यों की समान गरिमा तथा समान अधिकार होना चाहिए।

46. Which one of the following ethical throes is a form of Ethical Naturalism?/निम्नोक्त में से कौन सी नैतिक अवधारणा नैतिक प्रकृतिवाद का रूप है?
(a) Emotivism/संवेगवाद
(b) Prescriptivism/परामर्शवाद
(c) Utilitarianism/उपयोगितावाद
(d) Positivism/प्रत्यक्षवाद

Ans. (c) : उपयोगितावाद नैतिक प्रकृतिवाद का रूप है। उपयोगितावाद के अनुसार "आचरण एक मात्र तभी नैतिक है जब वह अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख की अभिवृद्धि करता है। नैतिक प्रकृतिवाद नैतिक अत्नौकिकता के विपरीत है नैतिक प्रकृतिवादियों का मानना है की नैतिक दावे अन्ततः प्राकृतिक दुनियाँ की विशेषताओं के बारे में है, जो आमतौर पर वैज्ञानिक अध्ययन के लिए उत्तरदायी हैं। उपयोगितावाद के अनुसार कोई भी कार्यवाई नैतिक रूप से उस सीमा तक सही है जहाँ वह खुशी और नैतिक रूप से उस सीमा तक गलत है जो इसे करने में विफल रहता है।

47. Moral sense theory represents
नैतिक संवित्ति सिद्धान्त प्रतिनिधित्व करता है:
(a) Philosophical intuitionism
दार्शनिक अन्तः प्रज्ञावाद का
(b) Unphilosophical intuitionism
अदार्शनिक अन्तः प्रज्ञावाद का
(c) Logical intuitionism/तार्किक अन्तःप्रज्ञावाद का
(d) Ethical intuitionism/नैतिक अन्तःप्रज्ञावाद का

Ans. (d) : नैतिक संवित्ति सिद्धान्त (Moral sense theory) नैतिक अन्तःप्रज्ञावाद का प्रतिनिधित्व करता है। नैतिक अन्तःप्रज्ञावाद के अनुसार मनुष्य के अंदर अन्तःप्रज्ञा नामक ऐसी शक्ति विद्यमान है, जो किसी कर्म के उचित अनुचित का सहज और साक्षात ज्ञान, बिना परिणाम और उद्देश्य का विचार किए ही प्राप्त कर लेती है।

48. Which one of the ethical theories holds that moral judgments entail imperatives?
निम्नोक्त नैतिक सिद्धान्तों में से कौन सा यह मानता है कि नैतिक निर्णय से आदेश निर्गमित होते हैं?
(a) Emotivism/संवेगवाद
(b) Positivism/प्रत्यक्षवाद
(c) Utilitarianism/उपयोगितावाद
(d) Prescriptivism/परामर्शवाद

Ans. (d) : नैतिक सिद्धांत परामर्शवाद के अनुसार नैतिक निर्णय से आदेश निर्गमित होते है।

49. The element that separates moral judgments from other imperatives is/वह तत्त्व जो नैतिक निर्णयों को अन्य आदेशों से भिन्न करते है
(a) Principle of universality/सार्वभौमिकता का नियम
(b) Existence of spirituality/आध्यात्मिकता का अस्तित्व।
(c) Subjectivity/विषयनिष्ठता
(d) Commands of god/ईश्वराज्ञा।

Ans. (a) : सार्वभौमिकता का नियम वह तत्व है जो नैतिक निर्णयों को अन्य आदेशों से भिन्न करता है।

50. According to Kant the characteristic which makes willing right is/काण्ट के अनुसार संकल्प को उचित बनाने वाली विशेषता है :
(a) It must lead to good consequences
वह शुभ परिणामों को उत्पन्न करता है।
(b) It ensures happiness for all
वह सबके सुख को सुनिश्चित करता है।
(c) It is in accordance to the law of land
वह प्रचलित कानून के अनुरूप है।
(d) It is in accordance to a rational principle.
वह बौद्धिक सिद्धान्त के अनुसार है।

Ans. (d) : काण्ट के अनुसार संकल्प को उचित बनाने वाली विशेषता बौद्धिक सिद्धान्त के अनुरूप है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

51. Who said 'self-sacrifice for its own, sake is always irrational and immoral'?
यह किसका कथन है आत्म-त्याग अपने आप के लिए सदैव अबौद्धिक और अनैतिक हैं?
(a) Bradley/ब्रेडले
(b) Hastings Rashdall/हेस्टिंग्स रैशडल
(c) J.S. Mill/जे.एस.मिल
(d) Kant/कांट

Ans. (b) : ''आत्म त्याग अपने आप के लिए सदैव अबौद्धिक और अनैतिक है।'' यह कथन हेंस्टिग्स रैशडल का है।

52. The view that it is the moral duty of an individual to seek the good of the community as a whole is ascribed to :/वह धारणा कि व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य सम्पूर्ण समुदाय के सुख के लिए है निम्न विचारधारा से जुड़ी है
(a) Universalism/सार्वभौमवाद
(b) Altruism/परोपकारावाद
(c) Utilitarianism/उपयोगितावाद
(d) Hedonism/सुखवाद

Ans. (a) : ''व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य सम्पूर्ण समुदाय के सुख के लिए है।'' यह धारणा सार्वभौमवाद से जुड़ी है। सार्वभौमवाद का तात्पर्य है कि सभी लोगों और संस्कृतियों के लिए सामान्यीकृत मानदण्डों, मूल्यों को लागू करना संभव है, चाहे किसी भी संदर्भ में स्थित हों। इन मानदण्डों में मानवीय जरूरतों, अधिकारों पर ध्यान केन्द्रित करना शामिल हो सकता है, और यह इस परिप्रेक्ष्य पर आधारित है की सभी लोग अनिवार्य रूप से समान है।

53. Theory which believes in apprehension of moral object immediately without there being any reasoning about it is known as :/वह सिद्धान्त जो बिना किसी युक्ति से नैतिक विषय के बोध को तात्कालिक मानता है, उसे निम्नोक्त कहा जाता है
(a) Intuitionism/अन्तःप्रज्ञावाद
(b) Deontology/परिणामनिरपेक्षवाद
(c) Perfectionism/पूर्णतावाद
(d) Teleology/परिणामवाद

Ans. (a) : अन्तःप्रज्ञावाद वह सिद्धान्त है जो बिना किसी युक्ति के नैतिक विषय के बोध को तात्कालिक मानता है। इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य के अंदर अन्तःप्रज्ञा नामक ऐसी शक्ति विद्यमान है जो किसी कर्म के उचित अनुचित का सहज और साक्षात ज्ञान, बिना परिणाम और उद्देश्य का विचार किए ही प्राप्त कर लेती है।

54. Philosophical position of T.H. Green is:
टी.एच.ग्रीन की दार्शनिक विचारधारा है:
(a) Objective Idealism/वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद
(b) Critical Idealism/समीक्षात्मक प्रत्ययवाद
(c) Subjective Idealism/व्यक्तिनिष्ठ प्रत्ययवाद
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : टी.एच. ग्रीन की दार्शनिक बिचारधारा वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद है।
ग्रीन के वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद के अनुसार इस जगत की सभी वस्तुएं विचार या चेतना की अभिव्यक्ति हैं। सृष्टि का सारतत्व जड़ पदार्थ नहीं अपितु मूल चेतना है। प्रत्ययवाद, भौतिकवाद का विपरीत है।

55. G.E. Moore's refutation of Idealism is hased on which of the following?/जी.ई.मूर का 'प्रत्ययवाद का खण्डन' निम्न में से किस पर आधारित है?
(a) Distinction between mind & matter
मन और जड़ के भेद पर।
(b) Distinction between sense & reference
बोध और संदर्भ के भेद पर।
(c) Distinction between knower & the act of knowing
ज्ञाता और जानने के कृत्य के भेद पर।
(d) Distinction between act of awareness and object of awareness
संवेदन की वस्तु व संवेदन के भेद पर।

Ans. (d) : मूर द्वारा प्रत्ययवाद का खण्डन संवेदन की वस्तु व संवेदन के भेद पर आधारित है।''
मूर के अनुसार हमारे संवेदनों की भिन्नता का कारण यह है कि चेतना हमारे भीतर है जबकी विषय हमारे बाहर। प्रत्ययवादी विषय को चेतना में निहित मानते हैं किन्तु सिद्ध नहीं कर सकते क्योंकि (क) यदि विषय चेतना का अंश है तो अंश व पूर्णता को समानार्थक मानना संभव नहीं है।
(ख) यदि विषय और चेतना दोनों ज्ञान के अंश है तो दो भिन्न अंशों का पर्याय मानना भी असंगत होगा।
(ग) यदि विषय चेतना की अंतर्वस्तु है तो चेतना को भिन्न-भिन्न ज्ञान नहीं होने चाहिए किन्तु होते हैं।
(घ) यदि विषय का प्रतिबिंब चेतना की अन्तर्वस्तु है तो मानना होगा की विषय बाहर है जिससे वस्तुवाद ही सिद्ध होगा।

56. Good is what man does actually desire. This statement of equivocation
'शुभ वह है जिसकी मानव इच्छा करता है
(a) Fallacy of equivocation/ समानार्थकता का दोष
(b) Fallacy of begging the question/आत्मश्रय दोष
(c) Fallacy of ambiguity/संदिग्धता का दोष
(d) Naturalistic fallacy/प्राकृतिक दोष

Ans. (d) : ''शुभ वह है जिसकी मानव इच्छा करता है।'' मिल के इस कथन में प्राकृतिक दोष है।

57. Which of the following definitions is correct? Psychological Hedonism holds:/निम्नलिखित परिभाषाओं में से कौन सी परिभाषा सही है?
(a) Man naturally seeks pleasure and shuns pain
मनुष्य स्वभावतः सुख की प्राप्ति व दुख की निवृत्ति की ओर प्रवृत्त होता है।
(b) Man ought to seek pleasure
मनुष्य को सुख की ओर प्रवृत्त होना चाहिये।
(c) Man does not naturally seek pleasure but ought to seek pleasure/मनुष्य को स्वभावतः सुख की ओर प्रवृत्त नहीं होना चाहिए
(d) Man naturally seeks pleasure and ought to seek pleasure/मनुष्य स्वभावतः सुख की ओर प्रवृत्त होता है व उसे सुख की ओर प्रवत्त होना चाहिए

Ans. (a) : मनोवैज्ञानिक सुरववाद के अनुसार मनुष्य स्वभावतः सुख की प्राप्ति व दुख की निवृत्ति की और प्रवृत्त होता है।
मनोवैज्ञानिक सुखवाद के अनुसार सुख ही मनुष्य के कर्मों का प्रेरक तत्व है। मनुष्य की मनोवैज्ञानिक संरचना ही इस प्रकार है कि वह स्वभाव से ही सुख की इच्छा करता है। यही सुख की भावना मनुष्य को कर्म करने के लिए प्रेरित करती है। सुख ही कर्म का विषय है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

58. According to Butler conscience is:
बटलर के अनुसार अन्तर्विवेक है:
(a) Intuitive/अन्तःप्रज्ञात्मक (b) Reflective/चिंतनशील
(c) Rational/बौद्धिक (d) All of these/यह सभी

Ans. (d) : बटलर के अनुसार अन्तर्विवेक अन्तःप्रज्ञात्मक, चिंतनशील औ बौद्धिक होता है।
बटलर, ने आदर्श मानव-स्वभाव की संरचना में विशिष्ट वासनाओं या आवेगों, आत्म प्रेम और परोपकार के अतिरिक्त सर्वोपरि तत्व के रूप में अन्तःकरण को सम्मिलित किया है। अन्तःकरण मूल रूप से बौद्धिकता वह तत्व है जो मनुष्य को उचित कार्य करने तथा अनुचित कार्य न करने के लिए सदैव उत्प्रेरित करता रहता है।

59. Good conduct for evolutionists means:
विकासवाद के अनुसार शुभ आचरण से तात्पर्य है:
(a) Involuntary action/अनैच्छिक कर्म
(b) Survival action/अस्तित्वहेतु कर्म
(c) Habitual action/आदतजन्य कर्म
(d) Virtuous action/सदगुणयुक्त कर्म

Ans. (b) : 'विकासवाद के अनुसार' "शुभ आचारण से तात्पर्य है अस्तित्व हेतु कर्म।"
विकासवादी शुभ के अनुसार "जो कर्म व्यक्ति या जाति के जीवन रक्षा या विकास में सहायक सिद्ध होता है वह शुभ और जो कर्म बाघक सिद्ध होता है वह अशुभ है। इसके अनुसार मनुष्य अपने अस्तित्व को बनाए रखने में जो कर्म करता है वह शुभ कर्म कहे जाते हैं।

60. Which of the following statements are true?
निम्नोक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?
(a) Sedgwick held that pleasure was the only thing of intrinsic value/सिजविक के अनुसार एकमात्र सुख आन्तरिक रूप से मूल्यवान है।
(b) Kant held virtue combined with an appropriate amount of happiness is intrinsically good/काण्ट के अनुसार उपयुक्त मात्रा में सुख युक्त सदगुण आंतरिक रूप से शुभ है।
(c) Moore held that intrinsically good object are organic wholes/आंतरिक रूप से शुभ वस्तुएँ जैविक सम्पूर्ण हैं।
(d) All of these/यह सभी

Ans. (d) : प्रश्नगत सभी विकल्प सत्य है जैसे-
(1) एक मात्र सुख आन्तरिक रूप से मूल्यवान है- सिजविक।
(2) उपयुक्त मात्रा में सुख युक्त सदगुण आन्तरिक रूप से शुभ है– काण्ट।
(3) आंतरिक रूप से शुभ वस्तुएं जैविक संपूर्ण हैं। जी.ई. मूर।

61. According to Hegel the highest state of morality is:/हीगल के अनुसार नैतिकता की उच्चतम अवस्था है
(a) Intuitive morality/अन्तःप्रज्ञात्मक नैतिकता।
(b) Social obligatoriness/सामाजिक बाध्यता।
(c) Unity of Individual and social welfare
व्यक्तिगत एवं सामाजिक हित का एकीकरण।
(d) Altruism/परार्थवाद।

Ans. (c) : हेगल के अनुसार नैतिकता की उच्चतम अवस्था वह है जिसमे व्यक्ति तथ समाज का पूर्ण तादात्म्यीकरण हो जाता है। इस अवस्था में व्यक्ति के विवेक का इतना अधिक विकास हो जाता है कि वह अपने को समाज का अभिन्न अंग समझने लगता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य अपना हित समाज के ही हित में समझता है। व्यक्ति और समाज में जो व्यक्तिगत स्वार्थ को लेकर विभेद बना रहता है वह समाप्त हो जाता है यह अवस्था नैतिक विकास की उच्चतम अवस्था होती है।

62. 'My station and its duties' Bradley implies:
ब्रेडले का 'मेरा स्थान एवं उसके कर्त्तव्य' का तात्पर्य है:
(a) Each to his own/हर किसी का अपना
(b) Each individual has a particular role in the society and duties related to that role
प्रत्येक व्यक्ति की समाज में एक विशिष्ट पात्रता और उससे सन्निहित कर्त्तव्य होते हैं
(c) Each individual chooses his own moral values
प्रत्येक व्यक्ति अपने नैतिक मूल्यों का चयन स्वयं करता है।
(d) Duty for duty's sake/कर्त्तव्य के लिए कर्त्तव्य।

Ans. (c) : ब्रेडले का 'मेरा स्थान एवं उसके कर्तव्य' का तात्पर्य है प्रत्येक व्यक्ति की समाज में एक विशिष्ट पात्रता एवं उसके कर्तव्य होते हैं। मनुष्य का कर्तव्य है की वह अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार समाज में रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करे। इसी में उसका श्रेय निहित है। ब्रैडले का मत है की व्यक्ति का नैतिक उत्थान उसके कर्तव्य पालन से ही संभव है। अपनी सामर्थ्य और योग्यता के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति समाज में अपना स्थान या पद प्राप्त कर सकता है।

63. Boolean Interpretation of categorical proposition does not entail :
बूल द्वारा निरूपाधिक तर्कवाक्यों की व्याख्या से निम्नलिखित नहीं निगमित होता है:
(a) Particular propositions have existential import
विशेष तर्कवाक्य का सत्तात्मक तात्पर्य है
(b) A & E propositions are not an empty class
A और E तर्कवाक्य रिक्त वर्ग नहीं है
(c) I & O propositions are not sub-contraries
I और O तर्कवाक्य अनुविपरीत नहीं है
(d) A & E proposition are contraries
A और E तर्कवाक्य विरोधी है।

Ans. (b) : बूल द्वारा निरूपाधिक तर्कवाक्य की व्याख्या से निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते है-
(1) विशेष तर्कवाक्य का सत्तात्मक तात्पर्य है।
(2) A और E तर्कवाक्य विरोधी हैं।
(3) 'I' और 'O' तर्कवाक्य अनुविपरीत नहीं है।

64. Name the fallacy committed by the invalid syllogism of form :/निम्न आकार वाली अवैध न्याययुक्ति में कौन सा दोष उत्पन्न होता है?
AIO-3
(a) Illicit major/अव्याप्त मुख्य पद
(b) Illicit minor/अव्याप्त अमुख्य पद
(c) Undistributed middle term/अव्याप्त मध्यम पद
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : AIO-3 आकृति अवैध न्याययुक्ति आकृति है इसके द्वारा अव्याप्त मुख्य पद दोष उत्पन्न होता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

65. When we assume the truth of the very point we have set out to prove we are committing a fallacy which of the following is Not a name of this fallacy?/जब हम एक वाक्य की सात्यता को सिद्ध करने के लिए उसकी सत्यता को मान लेते है तब एक दोष उत्पन्न होता है निम्न मे से कौन सा उस दोष का उत्पन्न होता है?

(a) Begging the question/आत्माश्रय दोष
(b) Petitio principii/पेटिटीयो प्रिंसिपाई
(c) Circular reasoning/चक्रक दोष
(d) Ignoration Elenchi/असंगत निष्कर्ष दोष

Ans. (d) : जब हम एक वाक्य की सत्यता को सिद्ध करने के लिए उसकी सत्यता को मान लेते हैं तब एक दोष उत्पन्न होता है जिसे असंगत निष्कर्ष दोष कहते है।

66. Which of the following states a valid rule of syllogism?
निम्न में से कौन सा न्याययुक्ति का वैध नियम है?

(a) The minor term must be distributed at least once in the premises/अमुख्य पद कम से कम एक बार आधार वाक्य में व्याप्त हो।
(b) No conclusion follows from two negative premises/दो निषेधात्मक आधारवाक्यो से निष्कर्ष निगमित नहीं हो सकता है।
(c) If both the premises are particular the conclusion must be particular./यदि दोनों आधारवाक्य विशेष हैं तो निष्कर्ष भी विशेष ही होगा।
(d) No term can be distributed in the premise if is not distribute in the conclusion
कोई भी पद आधारवाक्यों मे व्याप्त नहीं हो सकता यदि वह निष्कर्ष में व्याप्त नहीं है।

Ans. (b) : दो निषेधात्मक आधारवाक्यों से निष्कर्ष निगमित नहीं हो सकता है।
जैसे- कोई पनडुब्बी आनंदप्रद जलयान नहीं है।
कोई जलयान आनंदप्रद पनडुब्बी नहीं है।

67. Which class of the following classes is complementary class of the class of fathers?
निम्नलिखित में से कौन सा वर्ग पिताओं के वर्ग का पूरक हो सकता है यदि वह निष्कर्ष में व्याप्त नहीं है

(a) The class of mothers/माताओं का वर्ग
(b) The class off children/बच्चों का वर्ग
(c) The class of parents/माँ-बाप का वर्ग
(d) The class of non-fathers/अ-पितओं का वर्ग

Ans. (d) : 'अ-पिताओं का वर्ग' पिताओं के वर्ग का पूरक वर्ग है।

68. $\sim(p \vee q) \equiv (\sim p . \sim q)$

$\sim(p \vee q) \equiv (\sim p . \sim q)$ **क्या ये:**

(a) Logically equivalent?/तार्किक समतुल्य है?
(b) Materially equivalent?/शाब्दिक प्रतिपत्ति समतुल्य है?
(c) Logically and materially equivalent
दोनों तार्किक और शाब्दिक प्रतिपत्ति समतुल्य है।
(d) Neither of the two/दोनों में से कोई भी नहीं।

Ans. (c) : $\sim(p \vee q) \equiv (\sim p . \sim q)$ से इंगित होता है की दोनों तार्किक और शाब्दिक प्रतिपत्ति समतुल्य है।

69. In a conditional statement, unless means if not and introduces/एक हेतुमत् कथन में जब तक का अर्थ है यदि नहीं और परिचित कराता है

(a) Negation/निषेध को
(b) The conjunct/संयोजन को
(c) The consequent/अनुवर्ती को
(d) The antecedent/पूर्ववर्ती को

Ans. (d) : एक हेतुमत कथन में जब तक का अर्थ है 'यदि नहीं' और पूर्ववर्ती को परिचित कराता है।

70. Propositional logic uses symbols to stand for statements and ———.
तर्कवाक्य तर्कशास्त्र कथनों और———के स्थान पर प्रतीकों का प्रयोग करता है।

(a) Non-statements/अ-कथन
(b) Truth values/सत्यता मूल्य
(c) The relationships between subject & predicate
उद्देश्य और विधेय के संबंध
(d) The relationships between statements
कथनों के मध्य संबंध

Ans. (d) : तर्कवाक्य में तर्कशास्त्रीय कथनों और कथनों के मध्य संबंध के स्थान पर प्रतीकों का प्रयोग करता है।

71. In a deductive argument the relationship between premises and conclusion is of
निगमनात्मक युक्ति में आधार-वाक्य और निष्कर्ष के मध्य जो संबंध है वह है

(a) Conjunction/संयोजन
(b) Implication/हेत्वाश्रय
(c) Hypotheses/प्राक्कल्पना
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : निगमनात्मक युक्ति में आधारवाक्य और निष्कर्ष के मध्य संबंध को हेत्वाश्रय कहा जाता है।

72. In a valid categorical syllogism major term is the/वैध निरूपाधिक युक्ति में मुख्य पद होता है:

(a) Subject term in the minor premise
अमुख्य पद वाक्य का उद्देश्य पद
(b) Predicate term in the major premise
मुख्य पद वाक्य का विधेय पद
(c) Subject term in the conclusion
निष्कर्ष का उद्देश्य पद
(d) Predicate term in the conclusion
निष्कर्ष का विधेय पद

Ans. (d) : वैध निरूपाधिक युक्ति में मुख्य पद निष्कर्ष का विधेय पद होता है
जैसे-सभी जीव मरणशील हैं।
सभी मनुष्य जीव है।
सभी मनुष्य मरणशील हैं।
यहाँ निष्कर्ष का विधेय पद मरणशील है जो न्याय वाक्य में मुख्य पद है।

73. Categorical proposition may refer to
निरूपाधिक तर्कवाक्य संकेत कर सकते है:

(a) All members of a class
वर्ग के सभी सदस्यों की ओर।
(b) Some member of a class
वर्ग के कुछ सदस्यों की ओर।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) Both all & some members
सभी और कुछ सदस्यों की ओर।
(d) Neither all nor some members
न ही सब न ही कुछ सदस्यों की ओर।

Ans. (c) : सभी और कुछ सदस्यों की और निरूपाधिक तर्कवाक्य संकेत करता है। जब दो पदों का सम्बन्ध सीधे स्वीकार या निषेध किया जाता है तो उसमें कोई शर्त नहीं होती तो इसे निरूपाधिक तर्कवाक्य कहते हैं। सभी सरल वाक्य निरूपाधिक तर्कवाक्य होते हैं। जैसे सभी मनुष्य मरणशील हैं।

74. The Amazon Basin produces roughly 20% of the Earth's oxygen] creates much of its rainfall and harbors many unknown species. This sentence asserts
एमेजॉन बेसिन पृथ्वी की 20% ऑक्सीजन पैदा करती है, अधिकांश वर्षा उत्पन्न करती है और अनेक अज्ञात जातियों को आश्रय देती है। यह वाक्य है:
(a) Single proposition/सरल तर्कवाक्य
(b) Conjunction of 3 propositions
तीन तर्कवाक्यों का संयोजन
(c) conjunction of 2 propositions
दो तर्कवाक्यों का संयोजन
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : एमेजान बेसिन पृथ्वी का 20% आक्सीजन पैदा करती है, अधिकांश वर्षा उत्पन्न करती है और अनेक अज्ञात जातियों को आश्रय देती है। इसमें तीन तर्कवाक्यों का संयोजन है।

75. Which of the following statements in not true?
निम्न में से कौन सा कथन सत्य नहीं है?
(a) All valid arguments contain only true propositions/सभी वैध तर्क युक्तियाँ केवल सत्य न्यायवाक्य सम्मिलित करती है।
(b) An argument may be valid even if one or more of its premises in not true.
एक युक्ति तब भी वैध हो सकती है जबकि उसके एक या अधिक आधारवाक्य सत्य नहीं हैं।
(c) An argument can be valid with two false premises and a true conclusion
एक युक्ति वैध हो सकती है जबकि उसके दो असत्य आधारवाक्य और निष्कर्ष सत्य हों।
(d) The fact that an argument is valid does not guarantee the truth of its conclusion.
एक युक्ति वैध है, यह उसके निष्कर्ष की सत्यता को सुनिश्चित नहीं करता।

Ans. (a) : सत्य कथन निम्नवत हैं-
(1) एक युक्ति तब भी वैध हो सकती है जबकि उसके एक या अधिक आधारवाक्य सत्य नही हों
(2) एक युक्ति वैध हो सकती है जबकि उसके दो असत्य आधारवाक्य और निष्कर्ष सत्य हों।
(3) एक युक्ति वैध है यह उसके निष्कर्ष की सत्यता को सुनिश्चित नही करता।

76. All compound proposition assert the truth of their components/सभी यौगिक प्रतिज्ञप्तियाँ अपने अवयवों की सत्यता स्थापित करती हैं। क्या यह :
(a) Always true/सदैव सत्य है।
(b) Always false/सदैव असत्य है।
(c) Sometimes true, sometimes false
कभी सत्य, कभी असत्य
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (c) : सभी यौगिक प्रतिज्ञप्तियां अपने अवयवों की सत्यता स्थापित करती हैं ये कभी सत्य तथा कभी असत्य होती हैं

77. (x) $(H_x \supset M_x)$ Which kind of traditional categorical proposition is expressed in the above mentioned symbolic form :
(x) $(H_x \supset M_x)$ उपरोक्त प्रतीकात्मक आकार निम्नलिखित किस पारंपरिक तर्कवाक्य का प्रतिनिधित्व करता है?
(a) A (b) E
(c) I (d) O

Ans. (a) : प्रतीकात्मक आकार
(x) $(H_x \supset M_x)$
पारंपरिक तर्कवाक्य 'A' का प्रतिनिधित्व करता है।

78. $\sim(p \cdot q) \equiv \sim p \vee \sim q$ This is:
$\sim(p \cdot q) \equiv \sim p \vee \sim q$ यह है:
(a) Rule of distribution/व्याप्ति का नियम
(b) Rule of De Morgan/डी मार्गन का नियम
(c) Rule of Material Implication
वस्तुगत आपादान का नियम
(d) Commutation/विनियम का नियम

Ans. (b) : $\sim(p.q) \equiv \sim p \vee -q$
यह डी. मोर्गन का नियम है।
डी मार्गन का नियम-
"(A और B) नहीं एवं (A नहीं) या (B नहीं) समान है।

79. Which of the following proposition is tautology?
निम्न में कौन सा तर्कवाक्य पुनर्कथन है?
(a) $(p \vee q) \to q$
(b) $P \vee (q \to p)$
(c) $P \vee (p \to q)$
(d) Both (2) and (2)/दोनों (2) और (3)

Ans. (d) : तर्क वाक्य
$p \vee (q \to p)$
तथा
तर्कवाक्य
$p \vee (p \to q)$
दोनों तर्कवाक्य पुनर्कथन है।

80. Which law of thought is symbolically represented by $p \vee \sim p$?
$p \vee \sim p$ द्वारा विचार के कौन से नियम का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व किया गया है?
(a) Law of contradiction/व्याघात का निमय
(b) Law of identity/तादात्म्य का नियम
(c) Principle of excluded middle/मध्य परिहार का नियम
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (c) : $P \vee \sim p$ द्वारा विचार के मध्य परिहार का नियम का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व किया गया है।

81. On the ground of relation propositions are divided into:
संबंध के आधार पर तर्क वाक्य विभाजित होते है
(a) Necessary and divided problematic
अनिवार्य और अनिश्चित
(b) Categorical and conditional
निरूपाधिक और हेत्वाश्रित

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(c) Affirmative and Negative
सकारात्मक और निषेधात्मक
(d) Universal and Particular/सामान्य और विशेष

Ans. (d) : संबंध के आधार पर तर्कवाक्य दो प्रकार के होते हैं-
(1) सामान्य तर्क वाक्य– जब उद्देश्य और विधेय का सम्बन्ध उद्देश्य वर्ग के सभी सदस्यों पर लागू होता है।
(2) विशेष तर्कवाक्य– जब तर्कवाक्य में बताया गया संबंध उद्देश्य वर्ग के कुछ सदस्यों पर लागू होता है।

82. A necessary condition for the occurrences of a specified event is a circumstance:
किसी विशेष घटना के घटित होने के लिए आवश्यक अवस्था या हेतु वह परिस्थिति है
(a) In whose presence the event cannot occur
जिसकी उपस्थिति में घटना घटित नहीं हो सकती।
(b) In whose absence the event cannot occur
जिसकी अनुपस्थिति में घटना घटित नहीं हो सकती।
(c) No circumstance is essential
कोई परिस्थिति आवश्यक नहीं।
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं।

Ans. (b) : जिसकी अनुपस्थिति में घटना घटित नहीं हो सकती वह किसी विशेष घटना के घटित होने के लिए आवश्यक अवस्था या हेतु है।

83. We fall into fallacious appeal to authority by:
हम श्रद्धोत्तेजन दोष तब करते है जब
(a) Checking an experts credentials
किसी विशेषा की विश्वसनीयता की जाँच करते हैं।
(b) Regarding a non-expert as an expert
किसी अ-विशेषज्ञ को विशेषज्ञ मानते हैं।
(c) Regarding an expert as a expert
किसी विशेषज्ञ को अ-विशेषज्ञ मानते हैं।
(d) None of these/इनमे से कोई नहीं।

Ans. (b) : किसी अ-विशेषज्ञ को विशेषज्ञ मानना श्रद्धोत्तेजन दोष है। जब तर्क का सहारा न लेकर आप्तवचन के प्रति आदर और श्रद्धा का भाव उत्पन्न किया जाता है तब ऐसी स्थिति में श्रद्धामूलक युक्ति दोष होता है।

84. The Vann diagram of categorical syllogism exhibits the mood figure:

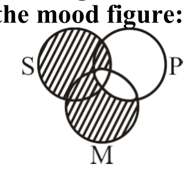

(a) AAE-I (b) EAE-II
(c) AEE-IV (d) AAA-I

Ans. (d) : प्रश्नगत वेन आरेख
AAA-I अवस्था को प्रदर्शित करता है
जैस- घेराव केवल हड़तालों में ही किए जाते हैं
यहाँ घेराव की एक पंक्ति है
∴ कारखानों में अवश्य हड़ताल होगी।

85. The four truth———connectives are :
चार सत्यता फलन संयोजक है :
(a) Conjunction, conditional, compound and disjunction
संयोजन, हेत्वाश्रित, यौगिक और वियोजन
(b) Conjunction, disjunction, conditional, logical equivalence
संयोजन, वियोजन, हेत्वाश्रित, तार्किक समतुल्यता
(c) Conjunction & conditional
संयोजन, निषेध, वियोजन और हेत्वाश्रित
(d) Conjunction implication and bi-conditional
संयोजन, वस्तुगत आपादान और द्विपादिक

Ans. (c) : संयोजन, निषेध, वियोजन और हेत्वाश्रित यह चार सत्यता फलक संयोजन है।

86. Correct symbolization of statement - It is false that he is poor but not honest is:
यह असत्य है कि वह गरीब है पर ईमानदार नही' तर्कवाक्य का सही प्रतीकात्मक आकार बतायें:
(a) $\sim(p.\sim q)$ (b) $\sim p.\sim q$
(c) $\sim(p\supset\sim q)$ (d) $\sim p\supset\sim q$

Ans. (a) : यह असत्य है कि "वह गरीब है पर इमानदार नहीं" इसका सही प्रतीकात्मक आकार इस प्रकार होगा
$\sim(p.\sim q)$

87. Common valid argument forms are:
सामान्य वैध युक्ति आकार है:
(a) Disjunctive syllogism, hypothetical syllogism and categorical syllogism/वैकल्पिक न्याययुक्ति, हेतुहेतुमत् न्याययुक्ति और निरपेक्ष न्याययुक्ति
(b) Modus ponens, Modus Tollens, Hypothetical syllogism and disjunctive syllogism
विधायक हेत्वाश्रित अनुमान, निषेधक हेत्वाश्रित अनुमान, हेत्वाश्रित न्याययुक्ति और वैकल्पिक न्याययुक्ति
(c) Both (1) and (2) / दोनों (1) और (2)
(d) Neither (1) nor (2) / (1) और (2) दोनों ही नहीं

Ans. (c) : वैकल्पिक न्याय युक्ति हेतु हेतुमत न्याय युक्ति और निरपेक्ष न्याययुक्ति तथा विधायक हेत्वाश्रित अनुमान, निषेधक हेत्वाश्रित अनुमान, यह सभी वैध युक्ति आकार हैं।

88. Who is the founder of Modern Logic?
आधुनिक तर्कशस्त्र का संस्थापक कौन है?
(a) Gottlob Frege/गोटलॅब फ्रेगे
(b) George Boole/जॉर्ज बूल
(c) De Morgan/डी मॉगर्न
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : आधुनिक तर्क शास्त्र का संस्थापक गोटलब फ्रेगे को माना जाता है।

89. Hindustan Lever is a very important corporation and Mr. Sen is an official of that corporation therefore, Mr. Sen is very important person.
Identify the fallacy committed:
हिन्दुस्तान लीवर एक बहुत महत्त्वपूर्ण कॉरपोरेशन है और श्री सेन उस कॉरपोरेशन के एक अधिकारी हैं इसलिए श्री सेन एक बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं।
(a) Accident/उपलक्षण दोष
(b) Converse accident/परिवर्तित उपलक्षण दोष
(c) Division/विग्रह दोष
(d) Composition/संहति दोष

Ans. (d) : प्रश्नगत तर्कवाक्य में संहति दोष है। जब व्यष्टि से 'समष्टि' निष्कर्ष निगमित होता है तो संहति दोष होता है। इसमें यह मान लिया जाता है की जो व्यष्टि के लिए सत्य है वही समष्टि के लिए भी सत्य होगा। जिसके कारण संग्रह या संहति दोष उत्पन्न हो जाता है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

90. What linguistic function is involved in the following expression?
Come of the window the sea is calm tonight
खिड़की के पास चली आओ समंदर आज रात शान्त है:
इस अभिव्यक्ति में भाषा के किस कार्य की अपेक्षा की गई है?

(a) Informative/सूचनात्मक
(b) Directive/निर्देशात्मक
(c) Informative & Directive
सूचनात्मक और निर्देशात्मक
(d) Expressive & Informative
अभिव्यक्तात्मक और सूचनात्मक

Ans. (c) : खिड़की के पास चली आवो समंदर आज रात शान्त है। इस अभिव्यक्ति में भाषा के सूचनात्मक और निर्देशात्मक कार्य की अपेक्षा की गयी है।

91. If R is a relation from A to B then A & B are
यदि R एक संबंध है A से B तक तो A और B है

(a) A can be empty B non-empty
A रिक्त और B अ-रिक्त हो सकते हैं
(b) A can be non-empty & B empty
A अ-रिक्त और B रिक्त हो सकते हैं
(c) Both are non-empty/दोनों अ-रिक्त है
(d) Both are empty/दोनों रिक्त है।

Ans. (c) : यदि R एक संबंध है A से B तक तो A और B दोनो अ-रिक्त होंगे।

92. Truth table method is a powerful tool to:
सत्यता-सारिणी एक सशक्त उपकारण है:

(a) Test the validity of every truth-functional argument/प्रत्येक सत्यता-फलक युक्ति की वैधता का जाँचने के लिए
(b) Test the validity of any argument
किसी भी युक्ति की वैधता जाँचने के लिए
(c) Assign truth value to only simple statements
सरल कथनों का सत्यता मूल्य निर्धारित करने के लिए
(d) All of these/उपरोक्त सभी

Ans. (a) : सत्यता सारणी के द्वारा प्रत्येक सत्यता फलक युक्ति की वैधता की जांच की जाती है।

93. Write the negation of the statement:
If it is raining, you take your umbrella.
निम्नलिखित कथन का निषेधात्मक रूप लिखो
यदि बारिश आ रही है, तुम छतरी ले लो

(a) It is raining and you do not take your umbrella
बारिश आ रही है और तुम अपनी छतरी मत लो।
(b) If it is raining, you do not take your umbrella
यदि बारिश हो रही है, तुम अपनी छतरी मत लो
(c) It is not raining and you do not take your umbrella
बारिश नहीं हो रही है और तुम अपनी छतरी मत लो
(d) It is a not raining & you take your umbrella
बारिश नहीं हो रही हो और तुम अपनी छतरी ले लो।

Ans. (b) : "यदि बारिश आ रही है तो तुम छतरी ले लो" का निषेधात्मक रूप इस प्रकार होगा-
यदि बारिश हो रही है, तुम अपनी छतरी मत लो।

94. If proposition P is true, Q is false & R is true which of the following is true:
यदि तर्कवाक्य P सत्य, Q असत्य और R सत्य है तो निम्न मे से कौन सा कथन सत्य है?

(a) P . Q. R (b) P . ~ Q . R
(c) ~ P . Q . R (d) P. Q . ~ R

Ans. (b) : यदि P सत्य है
Q असत्य है और
R सत्य है तो निम्नलिखित कथन बनेगा-
P. ~ Q. R

95. An argument involving quantifiers is invalid if:
परिमाणक युक्त युक्ति अवैध है यदि:

(a) There is a possible universe containing at least one individual such that premises are true and its conclusion false.
'ऐसा जगत संभव है जहाँ कम-से-कम एक व्यक्ति है' जिससे की आधारवाक्य सत्य है और निष्कर्ष असत्य
(b) There is a model in which any one premise is false and conclusion false too
ऐसा प्रतिमान है जिसमें कोई भी एक आधारवाक्य असत्य है और निष्कर्ष भी असत्य है
(c) There is a model containing all individuals such that premises are true and its conclusions are false
ऐसा प्रतिमान है जहाँ सभी व्यक्ति हैं जिससे की आधरवाक्य सत्य है और उसका निष्कर्ष असत्य।
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : यदि ऐसा जगत संभव हो जहाँ कम से कम एक व्यक्ति है जिससे की आधारवाक्य सत्य है और निष्कर्ष असत्य तो यह परिमाणक युक्ति अवैध होगी।

96. Let A and B be two non-empty relations on a set S. Which of the following statements is false?
मान लीजिये और अरिक्त संबंध सेट पर है निम्न में से कौन सा कथन असत्य है:

(a) A & B are transitive $\Rightarrow A \cap B$ is transitive
A और B संचारी है $\Rightarrow A \cap B$ संचारी है
(b) A & B are symmetric $\Rightarrow A \cup B$ is symmetric
A और B सममित है $\Rightarrow A \cup B$ सममित है
(c) A & B are transitive $\Rightarrow A \cup B$ is transitive
A और B संचारी है $\Rightarrow A \cap B$ संचारी नहीं है
(d) A & B are reflexive $\Rightarrow A \cap B$ is reflexive
A और B प्रतिवर्ती $\Rightarrow A \cap B$ प्रतिवर्ति है

Ans. (c) : A और B संचारी है। $\Rightarrow A \cap B$ संचारी नहीं है।
यह कथन असत्य है।
प्रश्न के संदर्भ में सत्य कथन निम्नवत है-
(1) A और B संचारी है $\Rightarrow A \cap B$ संचारी है। संचारी है।
(2) A और B $\Rightarrow A \cup B$ सममित है।
(3) A और B प्रतिवर्ती है $\Rightarrow A \cap B$ प्रतिवर्ती हैं।

97. Let X be a family sets and R be a relation in X, defied by 'A' is disjoint from B': Then 'R' is
मान लीजिये X एक सेट्स का परिवार है और R के X संबंध में है जो 'A' द्वारा परिभाषित है एवं जो B से अलग है ऐसी स्थिति में 'R'

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

(a) Reflexive/प्रतिवर्ती संबंध
(b) Symmetric/सममित संबंध
(c) Anti-Symmetric/सममित-विरोधी संबंध
(d) Transitive/संचारी संबंध

Ans. (b) : मान लीजिए X सेट्स का परिवार है और R, X के संबंध में है जो A द्वारा परिभाषित है एवं जो B से अलग है ऐसी स्थिति में 'R' सममित संबंध से जाना जाएगा।

98. Which of the following two sets are equal?
निम्न में से कौन से दो सेट बराबर है?
(a) A = {1, 2} and B = {1}
(b) A = {1, 2} and B = {1, 2, 3}
(c) A = {1, 2, 3} and B = {1, 2, 3}
(d) A = {1, 2, 3} and B = {2, 1, 3}

Ans. (c) : प्रश्नगत विकल्पों में सेट
A = {1, 2, 3} और सेट B = {1, 2, 3}दोनों बराबर है।

99. State the contrapositive of the following proposition:
All gentlemen are non-degenerates
निम्नलिखित तर्कवाक्य का परिवर्तित प्रतिवर्तन बताइये
सभी सज्जन अ-पतित है
(a) All gentlemen are degenerates
सभी सज्जन पतित हैं
(b) No gentlemen is non-non-generates
कोई भी सज्जन अ-पतित नहीं है
(c) All degenerates are non-gentlemen
सभी पतित अ-सज्जन हैं
(d) All non-degenerates are non-gentlemen
सभी अ-पतित अ-सज्जन है।

Ans. (c) : 'सभी सज्जन अ-पतित हैं' का परिवर्तित प्रतिवर्तन, का सभी पतित अ-सज्जन है।
प्रतिवर्तन करने का नियम-
(1) आधार वाक्य (प्रतिवर्त्य) एवं निष्कर्ष (प्रतिवर्तित) तर्कवावक्य का उद्देश्य पद समान रहता है।
(2) आधारवाक्य (प्रतिवर्त्य) का विधेय पद निष्कर्ष (प्रतिवर्तित) में पूरक बन जाता है।
(3) आधारवाक्य (प्रतिवर्त्य) का गुण निष्कर्ष (प्रतिवर्तित) में बदल जाता है।
(4) आधारवाक्य (प्रतिवर्त्य) एवं निष्कर्ष (प्रतिवर्तित) तर्क वाक्य का परिमाण समान रहता है।

100. Validity for logicians is applicable to:
तर्कशास्त्रियों के लिए वैधता लागू होती है
(a) Any argument/किसी भी युक्ति पर
(b) Hypothetical syllogism/हेतुहेतुमत् न्यायवाक्य पर
(c) Inductive argument/आगमनात्मक युक्ति पर
(d) Deductive argument/निगमनात्मक युक्ति पर

Ans. (d) : तर्क शाक्तियों के लिए वैघता-निगमनात्मक युक्ति लागू होती है। वैध युक्ति ऐसे कथन वाक्यों की शृंखला है जिनमें प्रत्येक कथन वाक्य या तो उस उक्ति का कोई आधार वाक्य है या फिर उसका निगमन पूर्ववर्ती कथन वाक्यों से किसी प्राथमिक वैध युक्ति द्वारा होता है और शृंखला का अंतिम वाक्य उसी युक्ति का निष्कर्ष होता है। जिसकी वैधता हम प्रमाणित करना चाहते है।

101. There are———rules of inference to prove the validity of deductive arguments.
निगमनात्मक युक्ति की वैधता को सिद्ध करने के लिए ———अनुमान के नियम हैं–
(a) 19 (b) 09
(c) 10 (d) 02

Ans. (b) : निगमनात्मक युक्ति की वैधता को सिद्ध करने के लिए अनुमान के 9 (नौ) नियम है। यह नियम इस प्रकार है-
(1) पूर्ववत अनुमान (2) शेषवत अनुमान (3) हेतुहेतुमत न्यायवाक्य (4) वैकल्पिक न्यायवाक्य (5) विधायक उभयत:पाश (6) समविलयन (7) सरलीकरण (8) संयोजन (9) योग।

102. What holds true for argument by analogy?
साम्यानुमान युक्ति के लिए सत्य है
(a) There are premises and a conclusion
आधारवाक्य और एक निष्कर्ष होता है।
(b) Probability is all that is claimed for them
इनके लिए केवल संभाव्यता का दावा किया जा सकता है।
(c) It is the most common type of inductive argument
आगमनात्मक युक्ति का सबसे प्रचलित उदाहरण है।
(d) All of these/यह सभी।

Ans. (d) : साम्यानुमान युक्ति आगमनात्मक युक्ति का सबसे प्रचलित उदाहरण है। इसमें एक आधारवाक्य और एक निष्कर्ष होता है। साम्यानुमान युक्ति के लिए केवल संभाव्यता का दावा किया जा सकता है।

103. The declarative sentences to which it is possible to assign one and only one of the two possible truth-values are called
वर्णनात्मक वाक्य जिनके दो सत्यता मूल्य में से केवल एक और सिर्फ एक का मूल्य निर्धारित किया जा सकता है– उन्हें कहा जाता है
(a) Conjunctions/संयोजक (b) Disjunctions/वियोजक
(c) Statements/कथन (d) Connectives/संयोजन

Ans. (c) : कथन वह वर्णनात्मक वाक्य होते है जिनके दो सत्यता मूल्य में केवल एक और सिर्फ एक का मूल्य निर्धारित किया जा सकता है।

104. What does not hold true of propositional logic?
तर्कवाक्य तर्कशास्त्र के संदर्भ में निम्न सत्य नहीं है
(a) We can represent relations like all, some or none with propositional logic
प्रतिज्ञप्ति तर्कशास्त्र में सभी, कुछ या कोई भी नहीं जैसे संबंध दर्शाये जा सकते है।
(b) It has limited expressive power
इनमें सीमित अभिव्यक्ति क्षमता होती है।
(c) In propositional logic, we cannot describe statements
प्रतिज्ञप्ति तर्कशास्त्र में हम कथनों की व्याख्या उनके गुणों या तार्किक संबंधों द्वारा नहीं कर सकते।
(d) Propositional logic consists of an object, relations and logical connectives.
प्रतिज्ञप्ति तर्कशास्त्र में विषय-वस्तु, संबंध और तार्किक संयोजन होते हैं।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : तर्कवाक्य तर्कशास्त्र के संबंध में निम्नलिखित सत्य हैं-
(1) इनकी अभिव्यक्ति क्षमता सीमित होती है।
(2) प्रतिज्ञप्ति तर्कशास्त्र में हम कथनों की व्याख्या उनके गुणों या तार्किक संबंधो द्वारा नहीं कर सकते।
(3) प्रतिज्ञप्ति तर्कशास्त्र में विषयवस्तु, संबंध और तार्किक संयोजक होते हैं।

105. Social inequality in a society occurs when
समाज में सामाजिक असमानता तब होती है जब

(a) Resources in a given society are unevenly distributed along links of caste, religion gender etc
किसी एक समाज में संसाधन जाति, धर्म, लिंग आदि कड़ियों से जुड़कर असमान रूप से वितरित होते है।
(b) There is discrimination based on income
आय के आधार पर भेद-भाव है।
(c) There is a gap between rich & poor
अमीर और गरीब के बीच खाई है।
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं।

Ans. (a) : जब किसी समाज में संसाधनों का वितरण जाति, लिंग, धर्म, आदि के आधार पर किय जाता है तो इसे संसाधनों का असमान वितरण कहा जाता है और वह सामाजिक असमानता की स्थिति कही जाती है।

106. What was the immediate purpose of the Commission on Human Rights?
मानवाधिकार आयोग का तात्कालिक उद्देश्य क्या था?

(a) To draft the Universal Declaration of Human Rights/मानव अधिकारों की सर्वभौम घोषणा के लिए मसौदा तैयार करना
(b) To organize peace-keeping force in the Congo
कान्गो में शांति व्यवस्था बनाए रखने की व्यवस्था करना
(c) To prosecute military dictators
सैन्य तानाशाहों पर मुदमा चलाना
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : संयुक्त राष्ट्र ने मानव अधिकार आयोग की स्थापना 1946-47 में की थी। इसका तात्कालिक उद्देश्य था- मानव अधिकरों की सार्वभौम घोषणा के लिए मसौदा तैयार करना, नागरिक स्वतंत्रता, स्त्रीदशा एवं मानवाधिकार संबंधी विषयो पर अपनी अनुशंसाएं प्रकट करना।

107. All the properties of a given system cannot be determined by its component parts alone but are determined by the system as a whole. This is the essence of which philosophy?
किसी भी निकाय के सभी प्रदत्त गुणों को केवल अवयवों द्वारा निर्धारित नहीं किया जा सकता है बल्कि एक संपूर्ण निकाय के परिप्रेक्ष्य में निर्धारित किया जा सकता है। यह किस दर्शन का सार है?

(a) Atomism/अणुवाद (b) Reductionism/विघटनवाद
(c) Holim/साकल्यवाद (d) Idealism/प्रत्ययवाद

Ans. (c) : साकल्यवाद के अनुसार ''किसी भी निकाय के सभी प्रदत्त गुणों को केवल अवयवों द्वारा निर्धारित नहीं किया जा सकता है बल्कि एक संपूर्ण निकाय के परिप्रेक्ष्य में निर्धारित किया जा सकता है।''

108. A difficulty with the application of virtue ethics is :/सदगुण नैतिकता को लागू करने में एक कठिनाई है:

(a) The applicable categorical imperatives
उपयुक्त निरपेक्ष आदेश।
(b) The applicable principle of rights
उपयुक्त अधिकारों का सिद्धान्त।
(c) The lack of agreement regrinding which rules on balance produce the greatest amount of pleasure for the greatest, number of people.
किन नियमों द्वारा अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख उत्पन्न होगा, उस पर भी सहमति का अभाव।
(d) The lack of agreement about the meaning of the good life.
'शुभ जीवन' से तात्पर्य को लेकर सहमति का अभाव।

Ans. (d) : 'शुभ जीवन' से तात्पर्य को लेकर सहमति का अभाव सदगुण नैतिकता को लागू करने में एक कठिनाई है।

109. Medical ethics rests on four main principles
चिकित्सा नीतिशास्त्र चार मुख्य सिद्धान्तों पर टिका हुआ है:

(a) Autonomy, Confidentiality, Beneficence and Non-Malfeasance
स्वायत्तता, गोपनीयता, अपकार और गैर हानिकारक।
(b) Autonomy, Consent, Respect, for life and Justice
स्वायत्तता, सहमति, जीवन और न्याय के लिए सम्मान।
(c) Autonomy, Justice, Beneficence and Non-Malfeasance
स्वायत्तता, न्याय, उपकार और गैर-हानिकारक।
(d) Consent, Justice, Transparency and respect for life.
सहमति, न्याय, पादर्शिता व जीवन के लिए सम्मान।

Ans. (c) : आज चिकित्सा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में भ्रष्टाचार की जड़े काफी गहरी फैल चुकी हैं। इसी समस्या को दूर करने के लिए चिकित्सा के क्षेत्र में नैतिक आचार की आवश्यकता महसूस हुई। चिकित्सा नीतिशास्त्र नैतिक सिद्धांतो की एक प्रणाली है जो नैदानिक चिकित्सा के अभ्यास और वैज्ञानिक अनुभंधान में मूल्यों को लागू करती है। चिकित्सा नीतिशास्त्र मुख्यतया स्वायत्तता, न्याय उपकार और गैर हानिकारक सिद्धांतो पर टिका है।

110. According to most contemporary feminists what is sender?/अधिकांश समकालीन नारीवादियों के अनुसार लिंग क्या है?

(a) A natural behaviour linked to someone's sex.
किसी के जैविक लिंग से जुड़ा एक प्राकृतिक व्यवहार।
(b) One's biological sex/किसी का जैविक सेक्स।
(c) An identity one can choose at will
एक पहचान जिसे कोई भी चुन सकता है।
(d) A social and cultural construct
एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना।

Ans. (d) : नारीवाद वह राजनैतिक सामाजिक आंदोलन है जो राजनैतिक, आर्थिक और लैंगिक समानताओं को स्थापित करने के लक्ष्य को साझा करते हैं नारीवाद महिलाओं के लिए करने पर बल देता है। नारीवादियों की दृष्टि में लिंग एक सामाजिक सांस्कृतिक संरचना मात्र है। नारीवादियो ने लिंग आधारित भेदभाव का विरोध किया है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

111. Karl Popper argued for which of the following views?/कार्ल पॉपर ने निम्नलिखित मे से किस विचार के लिए तर्क दिया?

(a) Knowledge is only science if it is falsifiable, ज्ञान तभी विज्ञान है यदि वह मिथ्यापित किया जा सकता है
(b) Scientific statements cannot be falsified वैज्ञानिक कथन मिथ्यापित नहीं किये जा सकते
(c) Scientific laws and scientific trends are really the same things वैज्ञानिक नियम और वैज्ञानिक रूझान दोनें एक ही बात है
(d) Anything goes when it comes to scientific methodologies./जहाँ तक वैज्ञानिक पद्धतियों की बात है कुछ भी चल सकता है।

Ans. (a) : कार्ल पॉपर एक आस्ट्रियाई ब्रिटिश दार्शनिक थे। इन्होने प्राकृतिक दर्शन और सामाजिक विज्ञान में महान योगदान दिया। कार्ल पापर के विचार इस विचार के इर्द गिर्द घूमते हैं की "ज्ञान दिमाग के अनुभवों से विकसित होता है।" उन्होंने इस विचार के लिए तर्क दिया की "ज्ञान तभी विज्ञान है यदि वह मिथ्यापित किया जा सकता है।"

112. Which of the following is most closely associated with the views of Thomas Kuhn? थॉमस कुह्न के विचारों के साथ निम्नलिखित में से कौन सबसे निकट है?

(a) The observation of paradigm shifts in science विज्ञान में प्रतिमान बदलाव का अवलोकन
(b) Science as social knowledge सामाजिक ज्ञान के रूप में विज्ञान
(c) Permanent standards of assessing scientific claims/वैज्ञानिक दावों के आकलन के स्थायी मानक
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : कुह्न ने तर्क दिया की प्रतिमान, वैज्ञानिको द्वारा किए जाने वाले प्रयोगों के प्रकार उनके द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार और उन समस्याओं को निर्धारित करता है जिन्हे वे महत्वपूर्ण मानते हैं। प्रतिमान में एक बदलाव मौलिक अवधारणाओं को अनुसंधान में बदल देता है। कुह्न के प्रतिमान दर्शन ने क्रांति ला दी और प्रतिमान बदलाव की उनकी अवधारणा को राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र यहाँ तक की व्यवसाय प्रबंधन जैसे विषयों तक बढ़ा दिया गया।

113. Which of the following is most closely associated with the views of Thomas Kuhn? भारत में नारीवाद का पहला चरण जो उन्नीसवीं सदी के मध्य में शुरू हुआ था, उसका उद्देश्य

(a) सती की सामाजिक बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकना
(b) विधवा पुनर्विवाह को अनुमति देना
(c) अशिक्षा को कम करना और संपत्ति के अधिकार को सुनिश्चित करना
(d) यह सभी

Ans. (d) : उन्नीसवीं सदी के मध्य भारत में शुरू हुए नारीवाद के पहले चरण के प्रमुख उद्देश्य-
(1) सती प्रथा एक क्रूर सामाजिक बुराई थी उसे जड़ से उखाड़ फेंकना।
(2) विधवाओं का सामाजिक जीवन बड़ा कठिन था, अतः विधवा पुनर्विवाह के लिए अधिकतम प्रयास करना।
(3) नारी समाज शिक्षा की दृष्टि से काफी पिछड़ा था और उनको संपत्ति में अधिकार भी न के बराबर थे अतः शिक्षा और संपत्ति में अधिकार सुनिश्चित करना भी एक महत्पूर्ण उद्देश्य था।

114. The first phase of feminism in India started in mid-19th century was imitated to कांट के द्वितीय नीतिवाक्य "मानवता को सदैव साध्य न कि साधन मानों' का तात्पर्य है:

(a) Human beings deserve respect मनुष्य सम्मान के पात्र हैं
(b) Entitlement to certain basic rights कुछ मूल अधिकारों के हकदार हैं
(c) People as things of value in themselves apart from the services that they render us. लोगों का मूल्य अपने आप में है न कि केवल उन सेवाओं के लिए जो वे हमें देते हैं
(d) All of these/यह सभी

Ans. (c) : काण्ट की पहचान दर्शन जगत में अपने आलोचनात्मक विज्ञानवाद के लिए है। नैतिक दर्शन में काण्ट अपने निरपेक्षता के दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं। काण्ट के द्वितीय नीतिवाक्य 'मानवता को सदैव साध्य न की साधन मानों का तात्पर्य है "लोगों का मूल्य अपने आप में है न की केवल उन सेवाओं के लिए जो वे हमें देते हैं।"

115. Primary feature f structuralism is: संरचानावाद की प्रमुख विशेषता नहीं है:

(a) Attacking any thought that claims to have a firm foundation on which we can construct beliefs./प्रत्येक ऐसे विचार पर आक्रमण करना जो एक सुदृढ़ नींव का दावा करता है, जिस पर हम अपने विश्वास को निर्मित करते हैं
(b) Truth is not something we discover or can own./सत्य की न तो हम खोज करते है और न ही स्वामित्व जता सकते हैं
(c) Truth is a structure which society invents सत्य एक संरचना है जिसका आविष्कार समाज करता है
(d) All of these/यह सभी

Ans. (a) : संरचनावाद की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं-
(1) सत्य की न हम खोज करते हैं और न ही हम स्वामित्व जता सकते हैं।
(2) सत्य एक संरचना है जिसका आविष्कार समाज करता है।

116. The name associated with deconstructionalism in post structuralism beginnings is उत्तर-संरचनावाद की शुरूआत में किसका नाम विखंडनवाद से जुड़ा है?

(a) Sartre/सार्त्र (b) Derrida/डेरेडा
(c) Freud/फ्रायड (d) Levi-Strauss/लेवी-स्ट्रॉस

Ans. (b) : उत्तर संरचनावाद के शुरूआती चिंतकों में डेरेडा का नाम 'विखण्डनवाद' से जुड़ा है।

117. Business Ethics is the study of: बिजनेस नीतिशास्त्र अध्ययन है:

(a) Morally right and wrong in business. बिजनेस मे नैतिक रूप से उचित और अनुचित
(b) Business situations, activities and decisions where issues of right and wrong are addressed ऐसी बिजनेस परिस्थितियाँ, गतिविधियाँ और निर्णय जहाँ सही और गलत के मुद्दों पर विचार किया जाता है
(c) Commercially and financially right or wrong व्यावसायिक और वित्तीय दृष्टि से सही या गलत
(d) Both (1) and (2) / दोनों (1) और (2)

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (d) : बिजनेस नीतिशास्त्र के अंतर्गत मुख्यतया इस बात का अध्ययन किया जाता है कि "बिजनेस में नैतिक रूप से क्या उचित है और क्या अनुचित है साथ ही ऐसी विजनेस परिस्थितियाँ, गतिविधियाँ और निर्णय तथा सही और गलत के मुद्दों का अध्ययन किया जाता है।

118. Business Ethics results is a set of decisions :
बिजनेस नीतिशास्त्र का प्रतिफल एक निर्णयों का समुच्चय है :

(a) Always financially beneficial
सदैव वित्तीय दृष्टि से लाभकारी
(b) In the interest of all stake holders
सभी पक्षधारियों के पक्ष में
(c) Always in accordance to law of land
सदैव प्रचलित कानूनो के अनुरूप
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (d) : व्यावासायिक नीतिशास्त्र का प्रतिफल निम्न तथ्यों पर आधारित होता है
(1) नैतिकता के उल्लंघन का जल्द से जल्द सुधार करना।
(2) व्यावसायिक नैतिकता दिशा निर्देशों पर आधारित हो।
(3) नैतिकता का प्रतिफल इस पर आधारित हो की क्या किया जाना चाहिए और क्या टाला जाना चाहिए।
(4) इस बात की धारणा हो कि क्या सही है और क्या गलत।

119. Environmental Ethics finds virtue in:
पर्यावरणीय नीतिशास्त्र को सद्गुण दिखाई देता है

(a) Saving and Recycling Resources
संसाधनों के बचाने और पुनर्चक्रण में।
(b) Rejection of unnecessary consumption
अनावश्यक उपभोग और अतिशय दिखावे को नकारने में।
(c) Fostering consideration for the interests of all
सभी संवेदनशील जीवों के हित के विचार को बढ़ावा देने में।
(d) All of these/यह सभी।

Ans. (d) : पर्यावरणीय नीतिशास्त्र का सदगुण निम्न में दिखलाई पड़ता है-
(1) सभी संवेदनशील जीवों के हित के विचार को बढ़ावा देने में
(2) अनावाश्यक उपभोग और अतिशय दिखावे को नकारने में
(3) संसाधनों को बचाने और पुनर्चक्रण में।

120. What does life-centered environmental ethics believe about the value of various parts of nature?/जीवन-केन्द्रित पर्यावरण नैतिकता प्रकृति के विभिन्न भागों के मूल्य के बारे में क्या विश्वास करती है?

(a) Human life is the most valuable
मानव-जीवन सबसे मूल्यवान है
(b) Human life is the most valuable
मानव-जीवन सबसे कम मूल्यवान है
(c) Lives of creatures with conscious awareness are more valuable
चेतनायुक्त जीवों का जीवन अधिक मूल्यवान होता है
(d) All living things have intrinsic value
सभी सजीव आंतरिक रूप से मूल्यवान होते है

Ans. (d) : पर्यावरण नैतिकता जीवन केन्द्रित होती है जो प्रकृति के विभिन्न भागों के मूल्य के बारे में विश्वास करती है कि "सभी सजीव आंतरिक रूप से मूल्यवान होते है।"

121. The personal is political. Is it:
व्यक्तिगत राजनीतिक है, क्या यह-

(a) Title of an essay/निबंध का शीर्षक है
(b) Slogan of second wave of feminism
द्वितीय लहर नारीवाद का नारा
(c) Neither (1) nor (2)
(1) और (2) दोनों में से कोई नहीं
(d) Both (1) & (2)/(1) और (2) दोनों

Ans. (d) : व्यक्तिगत राजनीतिक है- यह निबंध का शीर्षक है तथा द्वितीय लहर नारीवाद का नारा है।

122. Social rights which form a part of Universal Declaration of Human Rights (1948) address cover which of the following aspects?
मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा (1948) के तहत स्वीकृत सामाजिक अधिकार निम्न में से कौन से आयाम को सम्मिलित करते है?

(a) Housing/आवास (b) Food/भोजन
(c) Education/शिक्षा (d) All of these/यह सभी

Ans. (d : मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा 1948 के तहत स्वीकृत समाजिक अधिकारों में निम्नलिखित आयाम सम्मिलित हैं-
(1) भोजन (2) आवास (3) शिक्षा

123. Feminists argue that women's values are based primarily on/नारीवादियों का तर्क है कि महिलाओं के मूल्य मुख्य रूप से आधारित होते हैं-

(a) Prescribed social roles
निर्धारित सामाजिक भूमिकाओं पर
(b) Biology & prescribed social roles
जीव-विज्ञान और निर्धारित सामाजिक भूमिकाओं पर
(c) Biology/जीव-विज्ञान पर
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : नारीवादी चिंतन बीसवीं शताब्दी में अपने चरम पर था। नारीवादी चिंतको ने सामाजिक मूल्यों तथा अधिकारों पर मुखरता से अपने पक्ष रखे। नारीवादियों के तर्क हैं कि महिलाओं के मूल्य मुख्य रूप से निर्धारित सामाजिक भूमिकाओं पर आधारित होते हैं।

124. Liberal Feminism really began with:
उदार नारीवाद वास्तव में शुरू हुआ:

(a) Second wave feminism/दूसरी लहर नारीवाद के साथ
(b) First wave feminism/पहली लहर नारीवाद के साथ
(c) The Second World War/द्वितीय विश्व-युद्ध के साथ
(d) The Great Depression/महान मंदी के साथ

Ans. (b) : उदारनारीवाद की शुरूआत पहली लहर नारीवाद के साथ हुई। उदारनारीवाद के चरण में परंपरागत उदारवाद ने मुख्य रूप से अधिकारों की बहस पर जोर दिया।

125. Which of the following is not true?
निम्न मे से कौन सा सत्य नहीं है?

(a) Pythagoras held that universe is a concrete substance
पाइथागोरस मानते थे कि विश्व एक मूर्त द्रव्य है।
(b) Atomists held that something is permanent and something changes/अणुवादी मानते थे कि कुछ स्थायी है और कुछ परिवर्तनशील है।
(c) Parmenides held that being is permanent
पारमनाइडिज मानते थे कि सत् स्थायी है।
(d) Heraclitus held that being is in constant change.
हेरेक्लाइटिस मानते थे कि सत् सतत परिवर्तनशील है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a) : निम्नलिखित तथ्य सत्य है-
(1) सत् स्थायी है, ऐसा पारमानाइडीज का मानना था।
(2) हेराक्लाइटिस के अनुसार सत् सतत परिवर्तनशील है।
(3) अणुवादी मानते थे की कुछ स्थायी है और कुछ परिवर्तनशील है।

126. A question and answer dialogue in which propositions are methodically scrutinized to uncover the truth is known as–/सत्य को उजागर करने हेतु प्रश्न-उत्तर संवाद में जिसमें तर्क वाक्यों की विधिपूर्वक जाँच की जाती है, उसे कहते हैं।
(a) Dialectic method/द्वन्द्वात्मक पद्धति
(b) Socratic method/सुकरातीय पद्धति
(c) Inductive method/आगमानत्मक पद्धति
(d) Deductive method/निगमनात्मक पद्धति

Ans. (b) : सुकरातीय पद्धति के अंतर्गत सत्य को उजागर करने हेतु प्रश्न उत्तर संवाद में तर्कवाक्यों की विधिपूर्वक जांच की जाती है।

127. To this philosopher the process of learning could be put into these three categories: Theoretical Practical & Productive
इस दार्शनिक के लिए सीखने की प्रक्रिया को तीन श्रेणियों मे डाला जा सकता है:
(a) Socrates/सुकरात
(b) Plato/प्लेटो
(c) Aristotle/अरस्तू
(d) Thomas Aquinas/टॉमस एक्विनास

Ans. (c) : अरस्तू ने सीखने की प्रक्रिया के तीन श्रेणियों में बॉटा-
(1) सैद्धान्तिक (2) व्यावहारिक (3) उपजाऊ

128. What kind of reality according to idealists the idea of God is?/प्रत्ययवादियों के अनुसार ईश्वर का प्रत्यय किस प्रकार का सत् है?
(a) Modal objective reality/रूपात्मक वस्तुनिष्ठ सत्।
(b) Infinite formal reality / अनंत औपचारिक सत्।
(c) Finite formal reality / सीमित औपचारिक सत्।
(d) Infinite objective reality / अनंत वस्तुनिष्ठ सत्।

Ans. (c) : प्रत्ययवादियों के अनुसार ईश्वर का प्रत्यय सीमित औपचारिक सत् है।

129. Whose is the metaphysical system that reconstructs the universe into a harmonious whole from a single piece?
किस विचारक की तत्वमीमांसीय व्यवस्था विश्व को एकांगी भाग से सामंजस्यपूर्ण समग्र में पुनर्गठित करती है?
(a) Bishop Berkeley/बिशप बर्कले
(b) Leibnitz/लाइब्नित्ज
(c) Frederich Hegel/फ्रेडरिक हीगल
(d) Immanuel Kant/इमानुअल कांट

Ans. (c) : हीगल की तत्वमीमांसीय व्यवस्था विश्व को एकांगी भाग से सामंजस्यपूर्ण समग्र मे पुनर्गठित करती है। हेगल के अनुसार एक मात्र तत्व निरपेक्ष या पूर्ण विज्ञान है। संपूर्ण विश्व इसी का परिणाम है।

130. Libnitz tried to bridge the gulf between mind and matter through/लाइब्नित्ज़ ने चित और अचित के बीच की खाई को पाटने की कोशिश निम्न तरीके से की:
(a) Doctrine of pre-established harmony पूर्व-स्थापित सामंजस्य के सिद्धान्त द्वारा
(b) Law of Continuity/निरन्तरता के नियम द्वारा
(c) Law of Individuality/व्यक्तित्व के नियम द्वारा
(d) Doctrine of Monads/मोनाड के सिद्धान्त द्वारा

Ans. (a) : लाइब्नित्ज ने चित और अचित के बीच की खाई को पूर्व-स्थापित सामंजस्य के द्वारा पाटने की कोशिश की है। इस सिद्धांत के अनुसार जगत की इस व्यवस्था का मूल कारण यह है की चिदणुओं की उत्पत्ति से पूर्व ही ईश्वर ने उनमें एक सामंजस्य पैदा कर दिया था जिसके कारण वे परस्पर व्यवस्थित रूप से रहते हैं।

131. According to Hume, "We can go beyond the evidence of our memory and senses by———.
ह्यूम के अनुसार ''हम स्मृति और प्रत्यक्ष के साक्ष्य के परे———जा सकते है''।
(a) Intuition/अन्तःप्रज्ञा द्वारा
(b) Reason/विवेक द्वारा
(c) Relation of causation/कारणता-संबंध द्वारा
(d) Inference/अनुमान द्वारा

Ans. (c) : ह्यूम के अनुसार हम स्मृति और प्रत्यक्ष के साक्ष्य के परे कारणता संबंध द्वारा जा सकते हैं।
ह्यूम की मान्यता है की कारणता वस्तुगत और अनिवार्य नियम नहीं बल्कि एक मनौवैज्ञानिक विश्वास मात्र है। ह्यूम के अनुसार कारणता का ज्ञान बुद्धि से नहीं हो सकता क्योंकि (1) बुद्धि प्रत्ययों का विश्लेषण मात्र कर सकती है और नया ज्ञान नहीं दे सकती है जबकी कारणता का ज्ञान नया है (2) पुनः प्रत्ययों के संबंधो का ज्ञान विश्लेषणात्मक प्रतिज्ञप्ति में व्यक्त होता है जिसमें विधेय उद्देश्य में निहित होता है।

132. Descartes 'Meditation' that led him to conclude that perhaps even mathematical laws are not true is referred to as/वह तर्क जिसके द्वारा डेकार्ट मेडिटेशन में निष्कर्ष निकालते हैं कि शायद गणितीय नियम भी सत्य नही है निम्न है:
(a) The Evil demon argument/धूर्त दैत्य तर्क
(b) The foundationalism argument बुनियादी/मूलभूत तर्क
(c) The Cartesian argument/देकार्तीय तर्क
(d) The cosmological argument/विश्वमूलक तर्क

Ans. (a) : वह तर्क जिसके द्वारा डेकार्ट मेडिटेशन में निष्कर्ष निकालते हैं कि शायद गणितीय नियम भी सत्य नही है, वह धूर्त दैत्य तर्क है। इसे मशीन में भूत का तर्क भी कहते है।

133. According to———the ideas of imaginations are produced by us and real perceptions are produced by God.
———के अनुसार कल्पना के प्रत्यय का उत्पादन हम करते हैं और यथार्थ प्रत्यक्षों का उत्पादन ईश्वर करते हैं।
(a) Berkeley/बर्कले (b) Locke/लॉक
(c) Hume/ह्यूम (d) Plato/प्लेटो

Ans. (a) : बर्कले के अनुसार कल्पना के प्रत्यय का उत्पादन हम करते हैं और यथार्थ प्रत्यय का उत्पादन ईश्वर करते हैं। बर्कले कहते हैं की ईश्वर प्रत्यय का निमित्त कारण भी है और उपादान कारण भी उपादान कारण होने से वह प्रत्यय जगत में व्याप्त है और निमित्त कारण होने से वह प्रत्यय जगत से परे भी है।

134. What point of view is central to the phenomenological method?
फिनोमिनोलोजिकल पद्धति का केन्द्र विचार है
(a) Third person point of view/अन्य पुरूष दृष्टिकोण
(b) First person point of view/प्रथम पुरूष दृष्टिकोण
(c) Second person point of view/मध्यम पुरूष दृष्टिकोण
(d) Absences of point of view/दृष्टिकोण का अभाव

Ans. (b) : फिनोमिनोलाजिकल दृस्टिकोण का केन्द्रीय विचार प्रथम पुरूष दृष्टिकोण है।

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

135. Who is widely known as first existentialist despite never having used the word existentialism?
बिना अस्तित्ववाद शब्द का प्रयोग किए प्रथम अस्तित्ववादी के रूप में व्यापक रूप से जाना माना नाम है
(a) Jean Paul Sartre/ज्यॉं पॉल सार्त्र
(b) Soren Kierkegaard/सोरेन किर्केगार्ड
(c) Albert Camus/एलबर्ट कामू
(d) Nietzsche/नीत्शे

Ans. (b) : बिना अस्तित्ववाद शब्द का प्रयोग किए प्रथम अस्तित्ववाद जीवन से जुड़ा हुआ दर्शन है यह बीसवी शताब्दी का दर्शन है। यह मानक स्थितियों से अनिवार्यतः जुड़ा हुआ दर्शन है।

136. Existential Nihilism insists that
अस्तित्ववादी शून्यवाद जोर देता है
(a) Humans are naturally co-dependent
मनुष्य स्वभावतः सहनिर्भर है।
(b) Knowledge is limited/ज्ञान सीमित है।
(c) The human condition has on meaning
मानवीय स्थिति अर्थहीन है।
(d) Death in not the end/मृत्यु जीवन का लक्ष्य नहीं है।

Ans. (c): अस्तित्ववादी शून्यवाद 'मानवीय स्थिति अर्थहीन है' पर जोर देता है। चेतना की संरचना में निषेध तीन प्रकार का होता है (1) शून्यताभाव (2) निषेध (3) निषेधिता।
शून्यताभाव का अर्थ है कि मनुष्य की चेतना में अभाव की चेतना अन्तर्निहित है। शून्यताभाव मानवीय चेतना का अनिवार्य लक्षण है। ज्ञानमीमांसीय अर्थ में इसे निषेध कहा गया है क्योंकि ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया में 'क' का ज्ञान 'ख' 'ग' आदि के निषेध पर ही आधारित है यही निषेधभाव तात्विक स्वत्व पर निषेधिता है।

137. According to skepticism knowledge is
संदेहवादियों के अनुसार ज्ञान है
(a) Uncertain/अनिश्चित
(b) Possible/संभाव्य
(c) Not possible/असंभाव्य
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : संदेहवाद के अनुसार ज्ञान अनिश्चित है।
संदेहवाद कहता है कि पूर्ण, अनिश्चित, असंदिग्ध अथवा अविश्वसनीय ज्ञान की प्राप्ति असंभव है अथवा किसी क्षेत्र विशेष (तत्वमीमांसा) में या साधन विशेष से ऐसा ज्ञान नहीं प्राप्त हो सकता है।

138. Which of the following grouping is not correct?
निम्न मे से कौन सा समूह सही नहीं है?
(a) Existential thinkers-Heidegger, Jaspers, Sartre
अस्तित्ववादी विचारक – हाइडेगर, जेसपर्स, सार्त्र
(b) Idealist thinkers-Hegel, Bradley, A.J Ayer
प्रत्ययवादी विचारक – हीगल, ब्रेडले, ए.जे. एयर
(c) Empirical-Locke, Berkeley, Hume
अनुभववादी विचारक – लॉक, बर्कले, ह्यूम
(d) Rationalist-Descartes, Leibnitz, Spinoza
बुद्धिवादी विचारक – देकार्त, लाइब्नित्ज़, स्पिनोजा

Ans. (b) : सही समूह इस प्रकार है-
हाइडेगर, जेस्पर, सार्त्र– अस्तित्ववादी विचारक।
लाक,बर्कले ह्यूम – अनुभववादी।
डेकार्ट, लाइबनित्ज, स्पिनोजा – बुद्धिवादी विचारक।

139. It is impossible of form an idea of a triangle which is neither equilateral nor isosceles nor scalene. This view is the same as saying that
यह असंभव है कहना कि त्रिभुज का ऐसा प्रत्यय बनाया जा सकता है जो कि न तो समद्विबाहु न तो असमबाहु और न तो समबाहु ही है। यह कथन निम्न में से किसके तुल्य है?
(a) There can be an imageless thought
एक प्रतिभारहित विचार हो सकता है
(b) It is possible for the mind to form any kind of abstract idea/मन के लिए अमूर्त प्रत्यय बनाना सम्भव है
(c) General ideas exist over and above particular ideas.
सामान्य प्रत्यय विशेष प्रत्यय के उपरांत अस्तित्ववान है
(d) Any word the common designating the common features of a class of things is a mere name/कोई भी शब्द जो एक वस्तुओं के वर्ग की समान विशेषताओं को इंगित करता है नाममात्र है।

Ans. (a) : यह प्रतिभारहित विचार हो सकता है की "यह असंभव है कहना की त्रिभुज का ऐसा प्रत्यय बनाया जा सकता है जो कि न तो समद्विबाहु, न तो असमबाहु, न तो समबाहु ही है।

140. The theory which restricts our knowledge to phenomenal appearances of an inaccessible reality is/वह सिद्धान्त जो ज्ञान को अगम्य सत् के प्रपंचात्मक आभास तक सीमित करता है, कहलाता है
(a) Phenomenalism/प्रपंचवाद
(b) Absolute Idealism/निरपेक्ष प्रत्ययवाद
(c) Phenomenology/फिनोमेनोलोजी
(d) Subjective Idealism/सापेक्ष प्रत्ययवाद

Ans. (a) : वह सिद्धांत जो अगम्य सत के प्रपंचात्मक आभास तक सीमित करता है, प्रपंचवाद कहलाता है।

141. From what theory does Russell draw his theory of universals?/रसेल ने अपना सामान्य का सिद्धान्त किस सिद्धान्त से प्रेरित हो कर निकाला था?
(a) Berkeley theory of Ideas/बर्कले का प्रत्यय सिद्धान्त
(b) Hegel's theory of the Universe
हीगल का वैश्विक सिद्धान्त
(c) Plato's theory of Ideas/प्लेटो का प्रत्यय सिद्धान्त
(d) Socrates theory of knowledge
सुकरात की ज्ञानमीमांसा

Ans. (c) : रसेल का सामान्य सिद्धान्त प्लेटो के प्रत्यय सिद्धांत से प्रभावित है। प्लेटो के दर्शन का केन्द्रीय सिद्धान्त प्रत्यय है। प्लेटो का प्रत्यय सत्ता की दृष्टि से द्रव्य है क्योंकि वे स्वतंत्र तथा देश कालातीत है प्रयोजन की दृष्टि से वह नित्य सांचे है जिसके आधार पर ईश्वर जागतिक वस्तुएं बनाता है।

142. Which of the following in the version of the Cogito?/निम्न में से कौन सा 'कोजिटो' का संस्करण है?
(a) I think I walk therefore I am
मैं सोचता हूँ कि मै चलता हूँ, इसलिए मै हूँ
(b) I think I walk therefore I walk
मै सोचता हूँ कि मै चलता हूँ। इसलिए में चलता हूँ।
(c) I walk therefore I am
मै चलता हूँ इसलिए मै हूँ
(d) I walk therefore I walk.
मै चलता हूँ इसलिए मै चलता है

CLICK HERE FOR FREE MATERIAL
https://t.me/uppcstestseries2023pdf

Ans. (a): डेकार्ट कहते है कि "मै हूं मेरा अस्तित्व है, मैं ज्ञाता हूँ ज्ञान, मेरा स्वरूप है। यदि मैं अपने अस्तित्व का निराकरण भी करू तो उस निराकरण में भी मेरा अस्तित्व प्रकट होकर सामने आता है क्योकि मै ही तो निराकर्ता हूँ मेरी सत्ता का अपलाप नहीं हो सकता है। ज्ञाता का ज्ञान, ज्ञान नहीं हो सकता है। यह सिद्धांत अत्यंत सुस्पष्ट निःसंदेह, स्वतः सिद्ध है कि "मै ज्ञाता हूँ अतः मेरी सत्ता अनिवार्य है (Cogito Ergo Sum)"

143. Spinoza's method is/स्पिनोजा की प्रणाली है:

(a) Axiomatic and Geometrical
स्वयंसिद्ध और ज्यामितिक
(b) Geometrical/ज्यामितिक
(c) Mathematical/गणितीय
(d) Transcendental/अनुभवातीत

Ans. (a) : स्पिनोजा की प्रणाली स्वयंसिद्ध और ज्यामितिक है। स्पिनोजा बुद्धिवादी दार्शनिक हैं। उन्होंने घोषित रूप से ज्यामिति को अपने दर्शन का आधार बनाया है। उसका द्रव्य सिद्धान्त भी इसी पद्धति से व्यक्त हुआ है। उसके अनुसार द्रव्य वह है जो सत्ता व ज्ञान के लिए स्वतंत्र है।

144. A theory is a conclusion whereas a method is a
सिद्धान्त निष्कर्ष है वही पद्धति-

(a) Inference/अनुमान (b) Style/अंदाज
(c) Procedure/प्रक्रिया (d) Manner/शैली

Ans. (c) : सिद्धान्त निष्कर्ष है वह पद्धति प्रक्रिया कहलाती है।

145. According to logical positivists a sentence like 'a soul is unified and indivisible' is
"आत्मा एकीकृत एवं अविभाज्य है" – तर्कीय प्रत्यक्षवादियों के अनुसार इस जैसा वाक्य–

(a) A part of religion rather than philosophy
धर्म का, न कि दर्शन का भाग है।
(b) Meaningless/अर्थहीन है।
(c) Imprecise and needs to be restated in definite language/अनिश्चित है और निश्चित भाषा में पुनःपरिभाषित।
(d) An example of what makes philosophy worthwhile
ऐसा उदाहरण है जो दर्शन को सार्थक बनाता है।

Ans. (b) : 'आत्मा एकीकृत है एवं अविभाज्य है' तर्कीय प्रतयक्षवाद के अनुसार इस जैसा वाक्य अर्थहीन है तर्कीय प्रत्यक्षवाद के अनुसार दर्शन शास्त्र के दो तरह के कार्य हैं (1) निषेधात्मक और (2) भावनात्मक। दर्शनशास्त्र का निषेधात्मक कार्य तत्वमीमांस का निरसन या खंडन करना है।
तार्किक प्रत्यक्षवाद के अनुसार हम ईश्वर को नही जानते इसलिए ईश्वर नहीं है। हमारे ज्ञान के साधनों से हमे किसी परमसत्ता की प्राप्ति नहीं होती है। आत्मा अविभाज्य है जैसे वाक्य अर्थहीन हैं।

146. According to Plato, why do people live happily in ignorance?
प्लेटो के अनुसार लोग अज्ञानता में क्यों सुखी रहते है

(a) Because ignorance is all they know
क्योंकि अज्ञानता ही वे जानते है।
(b) Because ignorance is bliss
अज्ञानता परम आनंद है।
(c) Because it is better to live in ignorance but happy than in knowledge & unhappy
क्योकि अज्ञानता पर सुखी रहना ज्ञानी व दुखी होने से बेहतर है।
(d) Knowledge brings sadness & ignorance gives power/ज्ञान से दुख व अज्ञानता से शक्ति मिलती है।

Ans. (a) : प्लेटो को दर्शन के इतिहास में सर्वप्रथम एक सर्वतोमुखी, परिपूर्ण एवं सुसम्बद्ध दर्शन की स्थापना का श्रेय है। प्लेटो के अनुसार लोग अज्ञानता में इसलिए सुखी रहते है क्योकि अज्ञानता ही वे जानते हैं।

147. According to———the structure of language is determined by the structure of reality.
——के अनुसार भाषा की संरचना सत् की संरचना से निर्धारित होती है।

(a) Husserl/हुसर्ल (b) Wittgenstein/विटगेनस्टाइन
(c) Carnap/कार्नेप (d) Russell/रसेल

Ans. (b) : विटगेन्सटाइन के अनुसार भाषा की संरचना सत की संरचना से निर्धारित होती है।
विटगेन्सटाइन ने पहली बार दर्शन और जीवन की भाषा को एक ही स्तर पर लाने का प्रयास किया जो सीमित रूप से मूर के 'सहज बुद्धि के समर्थन' में दिखता था। विटगेन्सटीन के इसी विचार पर आगे चलकर साधारण भाषा दर्शन का विकास हुआ।

148. The dictum 'Know thyself is attributed to:
'स्वयं को जानो' यह उक्ति किस दार्शनिक से जुड़ी है?

(a) Protagoras/प्रोटगोरस (b) Socrates/सुकरात
(c) Anaxagoras/एनेक्सागोरस (d) Sophists/सोफिस्ट

Ans. (b) : सुकरात की दार्शनिक युक्ति है "स्वयं को जानों। सुकरात ने संप्रत्ययों को समस्त ज्ञान का आधार बताकर ज्ञान को बुद्धि पर आधारित किया न की इन्द्रिया प्रत्यक्ष पर। सुकरात दर्शन जगत में अपनी नैतिक शिक्षा के लिए भी जाने जाते है।

149. According to Austin, the act of doing something by saying something is called :/ऑस्टिन के अनुसार कुछ कहने भर से कुछ करना कहलाता है :

(a) Locutionary act/लोक्यूशनरी एक्ट
(b) Illocutionary act/इलोक्यूशनरी एक्ट
(c) Perlocutionary act/परलोक्यूशनरी एक्ट
(d) None of these/इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : कुछ कहने भर से कुछ करना इलोक्यूशनरी एक्ट कहलाता है। यह आस्टिन का मत है।

150. Which one of the following statements is not admitted by Plato?
प्लेटो निम्न में से किस कथन को नहीं स्वीकारता है?

(a) Universal are unchanging and eternal.
सामान्य अपरिवर्तनशील और शाश्वत है।
(b) Universals are more real than particulars.
सामान्य विशेष से अधिक यथार्थ है।
(c) Universals have an independent existence while particulars have only a borrowed existence./सामान्य का स्वतन्त्र अस्तित्व है जबकि विशेष का उधार का/माँगा हुआ अस्तित्व है।
(d) Universals can exist only in particulars.
सामान्य केवल विशेष में ही अस्तित्ववान होता है।

Ans. (d) : प्लेटो के निम्न कथन सत्य है:-
(1) सामान्य अपरिवर्तनशील और शाश्वत है।
(2) सामान्य का स्वतंत्र अस्तित्व है जबकी विशेष का उधार का/मागा हुआ अस्तित्व है।
(3) सामान्य विशेष से अधिक यथार्थ है।